# व्हर्गन्य-भूतान।

फ्शबोन् (वर्षव्याम श्रामेष्ठ म्राम् व वस्ताम ।

খ্শাহর-মলীকপুর-নিবাদী

ननाप्रशित मिकानी श्राम विमान कर्न्

পদ্যে অনুবাদিত।



1. L=6169

" ইদং পাপছরং পুণাং যশসাং ধর্মকর্মুং
পঠেরা শৃগুবাদাপি সর্বাপালেও প্রমূচতে
বাসবাকা



কাতা, ১ৰ্নং গ্রাণহাটা ষ্ট্র দাক্ষায়ণী প্রকালয় ধইতে )

শ্ৰীগণেশচন্দ্ৰ ঘোষ কৰ্তৃক

প্রকাশিত। 
বিশ্ব সংকরণ।
কলিকাতা,



5 नर निम्रदेशी क्षामीत लग, प्रांकाशी घटडी

• विमाध्यमान क्या बाता बुदिछ।

Minister of Standard Standard

**बहै शृक्षक है: तांकी ১৮৪१ जात्नत २० व्याहेनोजा**दत

রেজিফারি করা হইল।

্লগণেশচন্ত্ৰ যোৰ।

ভগবান বেদবায়-প্রণীত অঞ্চারশংমহাপুরাণ ও উপপুরাণ আমারিরের भत्रय जारदत्रत गायकी मत्मह नाहे ; क्लुकः भूतान दि जाराहित्यत गर्मधान ধর্মগ্রন্থ, ইহা মুক্তকণ্ঠে স্বীকার করিতে হইবে। আর্য্যন্তাতির নিভাবৈদি खिक किया, मद्यावनीमा **७**र्थन, श्राम, यात्र-बळ, डे॰मन, स्व-स्वेर्डन्या, মদাচার, যে কোন বিষয়ই হউক্ না কেন, তৎসমস্তই এই পুরাণ-পূদর্শিত পথাবলম্বনে নির্কাহিত হইয়া থাকে। পুরাণে যাহা না আছে, পুরাণে ষাহা দৃষ্ট না হয়, তাহা আর কুত্রাপি কোন এতেই অক্সিড হইবার নতে 👢 ताबनीठि, ममाबनीडि, मृष्टि विमृष्टि, वित्यार्थायन, अक्वउत्त मगस्टे भूतात्व বিষদরূপে বর্ণিত আছে। ছুরাচার যবনদিগের অধিকারকালে আমা দিগের উদৃশ মহোপকারী হিতপ্রদ অন্থসমূহ নিলুগু, ছিন্ন ভিন্ন, খণ্ডিত 📽 াবপর্যান্ত হইয়া ধার। সেই কারণেই সকল পুরাণের সম্পূর্ণ খণ্ড প্রায় প্রাপ্ত হওয়া যায় না; যাহাও পাওয়া যায়; ভাহার অধিকাংশই ভ্রমপ্রমাদে পরিপূর্ণ। যতগুলি পুরাণ ও উপপুরাণ আছে, তমধ্যে শিবপুরাণ সকলের শীর্ষসামায় বলিলেও অভ্যক্তি হয় ন।। এই অন্তে শিব-মাহাত্ম্য বর্ণন প্রদক্ষে রাজনীতি, ধর্মনীতি, সমাজনীতি, সদাচার, দেবপূজা, দেবমাহাত্যু, विविधवन्त, जमःशा जमःशा उलाशान धवः विविध পृकाशनानीत विवस ৰৰ্ণিত আছে। যে ভাবে যে প্ৰণালীতে ইহা বৰ্ণিত, তদমুদারে কাৰ্য্যসাধন করিলে যে, আৰু চতুর্বর্গ লাভে সমর্থ হণয়া যায়, তাহা বলা বাত্শ্যমাত্ত। আমরা এই ধর্মগর্ভ পুরাণখানির সারকতা দেখিয়া নেপাল, তৈলক ও স্রাবিড় হইতে কয়েকখানি প্রাচীন হস্তলিখিত গ্রন্থ আনরন করি। ক্রিস্ত कुः रथतं विषयं अहे रवः, रमहे मकल अहः अक्रिश क्रिकि अक्टतः ७ खर्थशारः পরিপূর্ণ যে, সহকে কোধপমা করা একান্ত তুরহ। অধিকম্ভ একখানির সহিত অপর খানির স্থানে স্থানে প্রায় কিছুক্ত ঐক্য নাই, আবার মধ্যে মধ্যে অনেক হলে ঐক্য ও দুক্ত হয়। আমরা যে কয় থানি এন্<del>ড সংগ্</del>ৰহ করি, ভক্ষাে ছই খানিতে এন্থের নাম বহুৎ শিবপুরাণ বলিয়া উল্লেখ আছে ; এতভিন্ন একখানি শিশপুরাণ ভাবং অবশিষ্ট ছই খানি শিবপুরাণ সংহিতা नाटम वर्निङ्का कल कथा, यवनाधिकाटतत्र भटत अयदक्रनीत्र अल्लाविकी लियक-দিগের দোর ব্য এইরপ বিপর্যয় ঘটিয়াছে, তাহাতে সন্দেহণাত নীইঃ আমরা কভিপর ছবিজ্ঞ পণ্ডিভবর্ণের মতাত্মসালে রহৎ শিবপুরাণখানিকেই প্রধান অবলম্বন করিয়া এই পুস্তক অসুবাদিত করিলায়। শিবপুরাণ ও শিরপুরাণ সংছিতা নামক অন্থের মহিত রহৎ শিবপুরাণের যে যে অংশের প্রকালাছে, তাহাও ইহাতে সন্নিবেশিও ছইল। অল্পবিদ্য সাধারণ লোকে নিহলে এই রহৎ শিবপুরাণের তত্ত্ব অবগত হইয়া ঘাহাতে ধর্মে মতি প্রবৃত্তি করে, সেই উদ্বেশ্যই আমরা সরল পাদ্যে ইহার অনুবাদ করিলাম, একণ শক্ষার শার্ণণ বাদ্রে গ্রহণ করিলেই ক্যুতার্থমন্য হইব কিম্বিক্মিতি।

্ধার পুরতেক আমার নাম ঝতীত অক্ত কোন সন্ত্ব রহিল না, প্রকাশকই বিহার সন্তাধিকারী রহিলেন। সন ১২৯৯ সাল তারিখ ৫ ভাতে।

मीकपूत, पर्भारत

क्षीकाली अनम विन्तान्य ।

# স্চীপত্ত। পূৰ্মখত।

व्यशास বিষয় ১ম নৈমিষারতে খাষিগতের নিকট মহাজা সনৎকুমারের আগ্মন ১ ২য় শিবপুরাণের মাহাত্তা ধৰ্মাধৰ্ম কথন ৩য প্রক্লতিবর্ণন 34 ৪র্থপ্রকৃতি মাছাজ্মওশিবেরদর্শচূর্ণ২৩ ৫মশিবপ্রিয় পুষ্পনির্ণয়,ভুজবলনামক তম্বরের উপাশ্যানওবিলোৎপত্তি২৫ ७छे निरवत नीलकर्छ नाम धात्र १ শিবের মাহাজ্য भ्य मःरक्रां ज्ञांबायन वर्गन क्षेत्ररक निकार ७ मोजा मर त्राटमत वनगमन, স্প্ৰধার নাসাচ্ছেদ্ওদীতাহরণ্ড৬ ৮ম রাবণের সহিত জটায়ুর যুদ্ধ, সাতাকে অশোক বনে স্থাপন এবংসীতার দিব্য চরু ভোজন ৪৩ ৯ম সরমা কর্তৃক দীতাকে প্রবোধ দান, রামের সহিত সুঞীবহমু-गाना जित भिनन, रस्यादनत लक्षां श्राट्यम्, हश्रीशृक्षा, नक्षां प्रम শীতাসহ কথোপকথন ও হয়-মানৈর পুনরাগমন 89 ১०म जीतारमत लक्कास भगन, तारण ় বধ **ও সীতা উদার** ৫৬ ১১শ হনুগানের যাহাত্যাপ্রসম্প ভोष्यत नौल्यक जानस्म, इसं-মানের সহিত সাক্ষাৎ একং কপিধজের বর্ণনা **52म भियत्रक्षा वर्गन श्रीटक वर्जे** 

বিষর হইতে গণেশের উৎপর্বি তলীয় গলমুডের বিবরণ कार्किटकंत्र विवत्र ১৪শ প্রকামীয়াতা, ও সহজ্ঞায় ১৫শ গৰাস্থানবিধি ও তথাপ্ৰীয়া ৯ ১৬**भ जार**याशा **जरती नंदा** काशी কাশী ও মধুরার মাহাত্ম্য এমংজাহ ধীতীয়ে কর্ডন্যাকর্ডনা ১१ ज्छलारपत त्रजास वर्गन वानरण जमनियंत्र आखंदम कार्खवीटर्गतं আতিখ্য ১৮শব্দবদ্যিসহকার্ডবীর্ঘ্যেরসংগ্রাম১২৩ ১৯শ ঋষি সহ পুনযুদ্ধ ও প্রজাপতির আগমন ২০শ সমরে জমদগ্রির দেহত্যাপ ২১শ ঋষিণত্তীর সহগামিনীহওন১৩১ ২২শ ক্ষত্রিয় নিধনে ভৃগুরাবের শপ্র ও প্রজাপতির দিকট গদন २७व किलारम ज्ञतारमत ग्रेमन ७ . পান্তপত অস্ত্রলাভ 78. ২৪শ পরতরামের যুদ্ধযাত্রা ২৫শকার্ক্টবীর্ষ্যের বিভাষিকা দর্শন১৪৭ ২৬শ রাণীকর্ক ঘৃপতিকে সাস্থনা১৪৯ २१म क्रेजजागीज एक विमर्कान अवर রাণীশোকে নরপতির বৈষ্ ২৮শ ভৃত্তরাম সহ কার্ত্তবীর্য্যের যুদ্ধ১৫৯ २৯म तर्ग असकानी पर्यम् ७ तामकर्क्क স্তৃতিবাদ 705 , ७०भ कार्खवीर्धात भरन

warts fars ्रे, श्रञ्जानिकिम्हरम्**कार्गदवास्थास्थानः १५ १४म** विकृष्टिकाम्नीज्ञक्याराका ७७७ ७१म ভाগবের रेकलामगुरत ८७म शुक्तागारीचा अमरक भूल-नात, क्षा किनार विकास धाना বাহনোপাৰ্যান कारवज का का के किया हो। भगवं ১৭৩ थ १ वर्षाक बामनी अ नवन रम्भू-জ্ঞাত্তরারপ্রতিভাষ্টার্লোব>৭৭ প্রভৃতি ভতের বিবরণ क्षेत्र विमहत्त्व देवनाइन रहिन १ । प उड़ार्गा वि कना गत्र ७ इका वि नामन प क्वजारक छेवान ३०० প্রতিষ্ঠা এবং সৌভাগাশয়নত্রত৩৬৯. अर्थ होन कर्बन देश्वजीत छन, eaৰ যোগিনীগণের উংপত্তি अस्मिन साम नाति । ७०म र्यात्र रेमकावश 964 क्रोट्यत कामकरण शका ७५ म दबनीत दबसाना सदत निरंदत **७५न मनग**िख्क অন্তত দৰ্শন 9+b वि भ नृतिर इ अवजात ७ दक्षाप-৬২শ তক্ষে বিখের হিতি প্রসঞ্চে विवज्ञन 200 **उ**टकंड जन्म इंखास ৩৮শ ৰংখাৰভাৱ ৰৰ্ণন ১৯৬ 92¢ ७७२ शकरकः भूका 809 प्रभूष **ए जरोह जहीत जे**नासानऽठठ ৬৪ম পিওবানমাহাত্যা 850. ৪০শ পাহৰতা সংবাদ ७०म बिद्रनिक ज्ञांत्रन, स्त्रान, 200 **८४**ण कुरमामविवज्ञन পুশাদান প্রভৃতির ফল ও শিবের 30.b. 8২-৪৪শ হরিভক্তিনির্ণয় ও সন্ত্রকীবিধান 878: कीटनत्र साटकाणात ७७-७१ममान ७ पिन तित्यदे छेन-\$78 leশ নিয়তি ও অব**ত্**য 235 বাসের ফল 815: পূৰ্ব দেহাতে পরিবাদ 236 ७৮म जरुमीविशि 825. विश महाशालाति स्थन 229 ७५४ म मना प्रेमी 838: भने अपमगार्थिक शहर विश्व २०० १०म सावधर्मिति 826 कर जाजूदराव 1248 १३ महोम धारः शालांशंडा ७ मारा-भी प्रश्नाणित भागीत जेगायान े शनकित कन प अस्तर दीवार विश्व 824. ৭৬৫ ৭২ৰ শিবশিরে চাজাৎপত্তি 805 ুৰ স্থা<del>নসংমাৰ বাহাৰা ও ড০</del> ৭৩৭ বিভূতি কীৰ্তন প্ৰসঙ্গে পৰ্ণাদ वर्गत्न गैतरमत्नामानान २५-४ वनित्र छेशायान 808 ६२४ डोब्रोड मार्शक्ष कर्यम् ७२७ नश्रम स्रोटप्रदेश ্ অুউনামের ধ্বৰ ত্ৰত্যাহাত্য 1900a বাংপতি ও केंद्र में हिल्ल छैकार्य स्नामितिह 804

'विश्वयः a णितित अकेत्किमः पाक অবস্থান পাঠ ও দদীশর যোগঃ৪৫ ৭৬-৭৮ম ধ্যানের ফল 884 १२म (यांश्रेमाधन • 883 ৮০ম বারাণ্দীমাহাত্ম্য 800 ৮১ম হরিকেশ নাদক ঘন্দের উপাখ্যান GU8 . ৮২ম শিবের তপশ্চরণাখি তেতান্ত্র-क्षीरनत कात्रण ७ उर्धानरण অপূর্ব উপাধ্যান 899

শ্বাম বিষয় পৃষ্ঠা

১৮৬৭ নারায়নের দাহাত্মবালক

গালব তপত্তীয় উপাধ্যান ৪৮৪

৮৪৭ নৃপতিলহ গালবধ্বির মুদ্ধ ৪৮৪

৮৫৭ ত্রসার বরে তিপুরনগর নিজাক

তিপুরাত্মবের পৌরাজ্যে লিবের

নিকট দেবগংগর সমম ও ভ্রম্ভর

৮৬৭ ত্রিপুর বহল

৮৬৭ নাহেশ্বর যোগ

প্রথিতের ত্রীপ্ত করাপ্তঃ

## উত্তর খণ্ড।

অধ্যায় বিষয় পৃষ্ঠা

১ম প্রয়াগে বাদদেবাজনে ভূপ্তি
খাবির গমন

৫০৫

২য় তুথির নিকট বাদদেবের শিবশুণ
বর্ণন প্রসাক্ত ক্রকার্ণকার্বাধ্যে শিবশুন
লিকের উৎপক্তি, জন্ধা ও বিষ্ণুন
কর্ত্বক লিকের সীয়াকেশণ,
কেতকীর প্রতি অভিনাল এবং
শিবের আন্তেশ্বে জন্মার স্কৃতি
আরম্ভার বিষ্ণু কর্ত্বক প্রাসন ৫০৭

অধ্যায় বিষয়

তর হিমালয়ে একার তপকা, শিবলাকাৎ, শিব কর্তৃক তরীর প্রবীন
দুর্জীলনিক কীর্তন্ত বিভ্নমেন্ট্রর
দিক্তর বাহান্তর বর্ণন ৫১৯
৪র্থ বেবগান কর্তৃক ভারলান্ত্রন
লিকি শৃক্তর
৫১৭
৫ম নিশুন শিবরেক্টের সম্প্রশাস্তর
কারণ বর্ণনালানে দ্বিপ্রকর্তৃক
দেবরাক্তর প্রস্তিক-বন্ধ-মত্রণান্তির
দেবরাক্তর প্রস্তিক-বন্ধ-মত্রণান্তির
দেবরাক্তর প্রস্তিক-বন্ধ-মত্রণান্তির
দেবরাক্তর প্রস্তিক-বন্ধ-মত্রণান্তির
দ্বিরাক্তর

MALITY TOWN 38न यहम नहत् ः, यनवादन सत्तव । अवस्थि व्हार्यः ं जामन कार्ने से विशानकार्यन **७३म जिल्लिमा**श ७ तिबादपुरम भट्यत्र श्रामकाम শবর গৃত্ত রতির অবস্থান ৫৫৮ 🚧 जनाहि रंपनगरपूत्र निकृष्टे छेश-১৬, উদারতপত্তশিবেরজাবির্ভাব৫৬১ अक्रा अधित जात्रमन, उनापि ১৭শ শিবের ক্জীর মূর্ডি ধারণ ও ्री अर्जुक् मिद्देश 'छन धारः मिद्देश শিশুরূপ ধরিয়া পার্ব্বতীরক্রোডে ্বারিকাব ইত্যাধি উপবেশন ও শিবের উমালাভ৫৬৫ अ भिवकईक अक्दोर्ग जिथूत जह ১৮শতারকাম্বর বধওমর্ণোৎপতি৫৬৯ ১৯শকার্ডিকের তীর্থযাত্রা ও গণে-े गुम्स कर्गर परम 🙀 ত্রিপুশ্ববাত্তে তদীর বক্ষোপরি শের বৌবরাজ্যও গণপতিত ৫৭২ ২০ ষড়াননের বিবিধ তীর্ণ জ্রমণ৫৭৬ শিবের শৃত্য, দেবগণের বাদ্য-क्रिंत्रन, महामात्रात्र चाविडीव छ २८म नमी एकी इ बग ছব্নি কর্ত্ত্বক শিবকে ব্রব প্রদান ৫৩৪ ২২শ মণিকাৰ্ণকা মাহাত্যা 623 ২৩শ কাশীক্লত পাপের ফল ৯ম জন্ম কর্ত্ত হিমালয়গুহায় 640 ২৪শ অন্তগৃহিষাত্রাবিধি ্রুসতীকে শিবকরে অর্পণ f CV D ava ২৫শ বাণরাজার বাহুচেছদ,উষা-১০ম হিষালয় শরিত্যাগ করিয়া मछी नष्ट निरात रिकनामवाम, হরণ, মহাকালের উৎপত্তি ৫৮৭ ২৬শ হরগৌরীর গোপবেশ 🖰 এবং সভীর পিতৃগৃহে গমন ও অগ্নি প্ৰবেশ ইত্যাদি ২৭শ শিবকর্ত্বক উমার পদসেবা. 480 শঙ্করবাপীর উৎপত্তি **১৯শ দক্ষত ধ্রংসপ্রসঙ্গে** বীরভদের ư አደ ্রী **অস্ম, শিবকর্ত্তক তাহাকে অভে**দ্য ২৮শ হরগৌরীর রাসলীলা たちせ २५म जि ज्रात्वादात अच्छो छत পর শু-শত নাম \$ 25 ৩০শ একান্ত্রমাহাত্ম্য ৬০২ ৩১শ হিরণ্যক্ষ বধ <u> ১২</u>খ বীয় ক্লা সম্বার প্রতি জুদার 300 ৩২শ শিবের ক্লালক্ট ছক্লণ ৬০৮ 🐉 কাৰ্ম্ভাৰ, প্ৰক্ষা ও সন্ধার মুগ্রপ-😚 শারণ, শিবকর্তৃক মুগরপী একার ৩৩শ মার্কণ্ডেইয়ের চিরজীবিত্তভেত ৩৪ শিবচতুর্দলী বুতবিধি निव्रत्नहरू 35¢ ३७म - मात्रदश्त मिकडे शिशालद्वत ध्वर्भ क्षुत्रभवीत छेनाम्याम °৫৫২ °৩৯৭চছৰ্মনীৰ ভ গুৰুলীঞাভিড১৯৮ ्रिक्षेत्रपता असून १७ भीतीत सन्

#### ्श्वम अशास ।

# देनचित्र ब्राट्स अस्तिहरूटन व निक**र्षे येशेष्** अस्तिहरूमार प्रव

श्रमेशका (पंचकीतानः नक्षकारणका विकरः । नक्षके नुकाकुणानांग्नाणिः तिथा जावनः ॥ नाताकार नक्षकण नवाकेण न वाक्षकः । एकोः नवप्योगकेन जेग्ल स्वयूगीतरावः ॥ दन्यकृष्णकार्याणः त्रमा भागाव्यक्षन्यः । जव द्रावाक्षक्षण्याच्या वक्षण्यनाः क्षण्टः । सक्ष्यकृष्णेयुक्तीयाः स्त्रम्य ग्रज्यान् वस्तिः ॥

A TRICK CHILE CHE AND THE RESERVE OF THE PARTY OF THE PAR COLUMN CO कि बेरी गुरू मेर निष्ठ गरत। निरुत्तिरक हातिगरक शानिम चकरत। क्षि दिला करत नाकृत महिला नक्ष कृषक कर चुन्तक शनिल। शिक्ष कि विकास कि मार्ग कुरारक। माण्डिक एक जारन जारन दक्का रकका है।। इस इस इस करत ये निकंश। चित्ररी जरनत रेत जाकून जीवन। किएम गट्ड किया मनत गमीत। अपुरात जीवन किन्त वित्रही अधीत।। का बहु जांदन शूटल शूटल शिट्य । धन धन तरव वटन शूनक श्रमट्य।। ত্ৰ গ্ৰহী-বাদি অতি ছলীতল। ছালচাই ক্ষমীকুল ভাষিছে সকল।। क्षा व गाम मा विष्त्रण करत । दिःगा नाहि बरह दक्ष काराज जैनात ॥ बागी अपि केल लाइ लगनन। हत्काल दारमाह गर लेलिन रगन॥ হৈ হৈছি বলে বলে হয় অসুমান। বলেরা করিছে তপ তাপস সমান।। ৰেন প্রম কেত্র পাপবিনাশন। তথায় বসতি করে ক্লক-ছৈপায়ন।। জানর পিতা তার জানে সর্ব নরে। জনম ধরিল সুত্যবতীর জঠরে॥ महत्रका वर्ष-चाचा उमर्वि चाथान। (माक्ख्य उम्हाती महामिष्टिमान॥ বিদিকে বিদি আছে যত খৰিগণ। তদার সমান শোভে কুফুদৈপায়ন॥ ভাগে বেদ ভাগ করিয়া যতনে। খবিগণে শিক্ষা দেন আনন্দিত ন ১ কৰের ইগর বক্তি খ্যাত চরাচর - শিযা উপশিষ্য আদি আছ্যে श्रिका । नकटन मिनिज रदत शूनकिज मदन । विनिहा आदिन नदव कूटनित विका शतमात्र कथातार्थ। इटल्टर विख्या। प्रशास्त्रामा (यम विश्व श्रमकार नमाग्रंज नमञ्ह्यात्र । जाशास-धर्मास द्रन्तिसार स्मात् ॥ कात गण परित्र जेशात्री। प्रनित्र पिटलन प्यानि समात्र द्वाष्ट्रत ॥ हिं। द्वरणम स्रु शिव जागमा । चारगट जाटरन रिने काल रहन ॥ त जनवर त्रवि एउ प्रतिशर्भ। भाग्न वर्ग दिवा कादव केविन श्वन ॥ कर जन जनके नक्षा राज्यता। महाप्रसम्बद्धाः दनस्य स्थानः जानदम् ॥ अपूर्व चानीन जात्व कान काम . जाराबर विकास करने वर्ज प्रनिशन ॥ नार्कन रिवि मात्र निरम्त पर्यक्तः । अगाम-संकामा प्राप्त किक्न प्रविगान French and Roll All Ber Brief &

এ সব জিজান। কর এক ক্ষিণ। উচিত আসনে সন্ধ নহয় তথ্য।
তপ্তা বয়ন আহি বিষেচনা করি। বিসিণ সকলে উত্ত নীচাসনোপাঁই
হবেত আনক্ষ বলি ক্ষায় হ্যার। কথা আয়াজিল হবে ওবের আনার।
ক্ষীবিবপুরাণ কথা ভতি তথায়য়। বিরচিয়া বিজ কালী সান্দ ক্ষায়

# দিতীয় অধায়।

শিবপুবাণের মাছাত্ম্য ও ধর্মাধর্ম কথন ह

ভগবন্ শ্রোত্বিছাম মহাপুণ্যং স্নাতনং।
শিবং পুরাণং দেকত যত্তং তদুবীছি নঃ।
নহি বিক্লিবিদিতং তেলোক্যজানবাননি।
স এবমুক্তভৈবিপ্রের নপুরোহরবীতলা।

স্থ্যসম মহাতেজা যত ঋষিগণ। বসিলেন চারিদিকে করিয়া বেউন 💨 বোটিত হইয়া দেব বিধির তনয়। শোভিত হলেন কিবা বর্ণিবার নয়। जनस्त अविभाग क्रजाक्षनिकदत। विनय्त क्रिकामा करत विवित्र क्रमादत 🞼 শুনিতে বাসনা করি ওগে। ভগবান। মহাপুণ্য সনাতন ঐশিবপুরান 🛍 ত্রিভূবনে মহাজ্ঞানী ভূমি মহোদয়। জগতে অজ্ঞাত তব কিছু মাত্র নয় 🎏 ঋষিদের বাক্য শুনি বিধির নন্দন। সম্মোধিয়া ক**হে সবে মধুর বচন**্ধ क्षम क्षम समिशन अभूर्स आयान। वर्गन कतिव आमि अभिन भूतान দেবগুরা সনাতন পুরাণ প্রবর। শুনিলে বিনাশ পায় পাতক বিজয় েই জন ভক্তিভাবে করয়ে এবণ। সেই জন হয় শিবচিতা-পরারণ 🕍 ভাবিতাত্মা রুতক্ত্য দেই জন হয়। যশস্ব সায়্কর পুরাণ নিশ্বয়। 🛶 বর্গলাভ নীরোগিতা কামনা পূরণ। ইহার প্রসাদে হয় শাজের বচন 🞉 এ ছেন পবিত্র কথা করিব কীর্তন। শিবোক্ত পুরাণ এই এবতি পুশ্যতম ॥ 🕻 (एवजूना महाम्हि वारनाज दंशाहरत । एटनहि शूर्व्यट देश क्ला**ए जवर**ज ॥ रवज्ञ अरमि भाषि अरह भविश्व। वनिक मर्रिक्ष जाहा मनाज मध्म ॥ বর্ণিতে নারিব কর্তু করিয়া বিজ্ঞার। শতবর্ষে বর্ণিবারে আহে সাধ্য কার।। अना विकू देवेदबादेश शटकरह कुनव । राहेब्राटर्श गृथिवानि इरब्राटर गुजन ॥

विमानिक्-निवतनं रार्यतं निर्वतं। मलत्रीर्ग-छन्।भागन और संविष्टता। क्रें प्र- १र्वेर आदि कति धर-दिवद्यन । १ विजीवन छ नायान निरक्त शूक्त ॥ क्रिक्ममूर्शिख जात्र निरमत थनत्र। निकार्फनिविधि जानि ७ इह सविष्य।। কিন্ত্রপৈ করিবে পূজা দেবদেব হরে। প্রসাদ মহাত্ম্য আদি বলিব স্বাহ্মে। , আবর্তিকবিধি আদি করিব বর্ণন। পুনরাবর্তিক বিধি ওছে ঋষিচয়।। শিবতত্ত্ব মূর্ভিভেদ বলিব সর্বারে। লিঙ্গ উৎপত্তি কথা কহিব সাদরে।। শুপদানে যেই ফল করিব কীর্ত্তন। কিরুপে করিতে হয় লিজ সংস্থাপন।। ক্রেনা-বিষ্ণু-বিমোহন অপূর্বে আখ্যান। আদনের বিধি আর ধূপের বিধান।। अनगनविधि পরে করিব কীর্তন। অনুত্য দানবিধি ওছে ঋষিগণ।। 🔊 🙀 के भी विधि আর অটমীর বিধি । নামাইটী বিধি আর শিবের বিভূতি।। শ্বন্থ-অফমীবিধি করিব কীর্ত্তন। লিক্ষার্চন ফলকথা অতি মনোরম।। জ্যোহাতার বীরাচার যোগের বিধান। নন্যাভিষেতন আদি অপূর্যর আখ্যান॥ करिभागत অবিমৃক্ত মাহাত্মা সবার। তীর্থের বর্ণনা আদি করিব প্রচার।। যেরপে ত্রিপুর দেব লভিল জনম। নীলকণ্ঠ-সমুদ্ভব করিব কীর্ত্তন।। বাস্থদেব বিধি আর তাঁহার মহিমা। সর্ব্বধর্মরহস্থাদি করিব বর্ণনা॥ জ্ঞান প্রশংসন আর মুক্তির বর্ণন। ইত্যাদি বিবিধ কথা করিব কীর্তন।। ঞ্সের বিস্তারে আর কিবা ফল আছে। সংক্ষেপে বলিব সব তোমাদের कारह ॥

পূর্বেতে আছিল বিশ্ব খোর তমাময়। অপ্রজান অলকণ ওহে খবিচয়।।

তিমাত্রি ছিল রুদ্র পর্য-কারণ। আপনি শেষেতে প্রভু করিয়া চিন্তন।।
ভানের সূজন অথ্যে করিয়া হরিষে। অহন্ধার সৃষ্টি প্রভু করিলেন শেষে॥
ভানের সূজন অথ্যে করিয়া হরিষে। অহন্ধার সৃষ্টি প্রভু করিলেন শেষে॥
ভানির সূজ মন লভিল জন্ম। পঞ্চ মহাভূত পরে হইল সূজন।
আন অপানাদি ক্রমে হইল সূজন। সন্ধু রজ তম এই ত্রিগুণ জন্ম।
ভান হতে একা বিহু জন্মিলেন পরে। একা বিহু তুই জনে মাহিবার তরে।
ভানি হতে প্রেট্রের কিছুমাত্র নাই। জীনিব স্বার্গ্র প্রেট্রের সূজন।
ভানি হতে প্রেট্রের কিছুমাত্র নাই। জীনিব স্বার্গ্র প্রেট্রের সূজন।
ভারশে কল্পে একা বিহু লভেন জন্ম। কল্পে কল্পে হয় স্বর্ধ বিখের সূজন।
ভারশে স্বার্গ্র সৃষ্টি করি মহেশ্র। সংহার ক্রেন প্রায়- দেবদেব হর॥
ভারশে স্বার্গ গত যত দিনে হয়। মন্ত্রের দাম তার শাস্ত্রের বিচারে।
ভাক্তিন মন্তর গতে হলে পরে। এক কল্পে রুহে তারে শাস্তের বিচারে।
ভিত্তিন মন্তর গতে হলে পরে। এক কল্পে রুহে তারে শাস্তের বিচারে।
ভিত্তিন মন্তর গতে হলে পরে। এক কল্পে রুহে তারে শাস্তের বিচারে।
ভিত্তিন মন্তর গতে হলে পরে। এক কল্পে রুহে তারে শাস্তের বিচারে।
ভিত্তিন মন্তর গতে হলে পরে। এক কল্পে রুহে তারে শাস্তের বিচারে।
ভিত্তিন মন্তর গতে হলে পরে। এক কল্পে রুহে তারে শাস্তের বিচারে।
ভিত্তিন মন্তর গতে হলে পরে। এক কল্পে রুহে তারে শাস্তের বিচারে।
ভিত্তিন মন্তর গতে হলে পরে। এক কলেপ্র রুহে তারে শাস্তের বিচারে।
ভিত্তিন মন্তর গতে হলে পরে। এক কলেপ্র রুহি তারে শাস্তের বিচারে।
ভিত্তিন স্থান স্



**এইর** अक कण्ण यक शिटन इत्र । विश्वांकांत्र अक विन जोशांदाई क्रें ॥ धरेत्रण अक कण्ण गर्ड राम शदा । अक निमा रह दांत भारत्वे विषारंत् । এইরপে মাস, আর বর্ষ নিরপণ। তাহার শতেক বর্য বিধির জীবন है বিধাতার পরমায় এইরপ হয়। শিবের নিমেন তাতে জানিবে নিক্র ॥ চম্ম আদি গ্রহ সহ বিশ্ব চরাচর। নিমেষ জীবিত রহে জানিবে স্কুল । সর্ববিশ্বে সপ্তলোক আছে বিদ্যমান।ভূলোক ও ভ বর্লোক ইত্যাদি আখ্যান। युजन विजन आपि भाजान निर्गय। मकिन श्राप्त नौना कानित्य निक्य । সংহার করেন পুনঃ অখিল সংসারে। তাঁহার নিগুড় তত্ত্ব কে বুঝিতে পায়ে। অপূর্বর পুরাণ কথা করহ এবণ। শুনিলে পাতক নাশ শাত্মের বচন॥ নিয়ত সবার মন থাকুক ধরমে। ধর্ম বিনা নাহি গতি জানিবে ভ্রনে॥ সংসার মাঝারে যারা হয় সাগুজন। একাত যতনে ধর্ম করিবে পালন if অধর্মিরা পদে পদে মহা বিদ্ন পায় ॥ অধর্মেতে মন যেন কভু নাহি যায়। কেবা পি ड। কেবা মার্ডা কেছ কিছু নয । ধর্মই সকল মাত্র জানিবে নিশ্চর ॥ গুরুর পরম গুরু ধর্মেরে জানিবে। সুগতির হেতু ধর্ম জানিবে এ ভবে॥ জগতে ধর্মের তুল্য বন্ধু আর নাই। কহিন্থ নিশ্চর তত্ত্ব তোমাদের ঠাই॥ তীর্থের প্রধান ধর্ম জানিবে সকলে। সাধুজন রক্ষা পার ধর্মের কৌশলে।। यञ किছू धन ভবে কর দরশন। नर्दर अर्थ धन धर्म भारत्र वहन ।। धर्मत जाल्य नाहि नय एरे नद्य ॥ মানব জনম ধরি এ ভব সংসারে। বিফল জনম তার বিফল জীবন। মহাপাপে ভুবে সেই শাস্থের বচন।। সতত ধর্মেতে মতি রাখে যেই নর। বিম্নরাশি তারে ছাড়ি পলায় **অন্তর** 🕸 মঞ্জ নিয়ত তারে করিবে আশ্রয়। শান্তের বিধান এই বেদের নির্ণয়। অধর্মেতে নিরম্ভর অন্তর যাহার। मकल विनाटन जांत मकलि जमांत्र॥ পদে পদে विপদেতে পড়ি যেই জন। ধর্মের আশ্রয় কভু না করে বর্জন 🖟 সুধীর তাহারে বলে শান্তের বিচারে। মঙ্গল তাহার হয় জানিবে জন্তরে। করিবেক দার গ্রহ ধর্মের কারণ। ধর্ম হেতু নারীগভে জন্মাবে নন্দন। পৃহেতে করিবে বাস সত্য বটে মানি। ধর্ম হেতু কিন্তু তাহা শুন যত মুনি। थन छे भार्कन गांज धर्मात कातन। धर्मात कातरन गांज गतीत त्रकन म ধর্বে প্রতিষ্ঠিত। ধর। জানিরে অন্তরে। ধর্মার্থে তপন তার্পী দেন শৃহাভরে॥ অমর নগরে ইন্দ্র করিছেন বাস। ধর্মের কারণ মাত্র জানিবে নির্বাস № বহিছেন ধর্ম হেড়ু সভত প্রন। জ্লিছে সদত অগ্নি ধর্মের কারণ।। युटर्पत मानिता गाज स्टाउटर भूतानं। अथिन मरमादत आटर शर्षिटकत्र, मान॥

SHEARING OF THE PROPERTY WAS STATE THE FRANCE WHILE नग्रीम न्यर्रामें श्रीके कड़िएवं क्लीन । । चहिर्टन नीफरक रमद्रे काय निगयस ॥ वर्ग हर्माटन कटन नाटशत मरहात। नाट्यत विशास और द्वरात विचास ॥ कार्निद्रकत्र। निवम् कि करते (यह शारत । जीर्वताक त्महे शान मारखन्न विशास ॥ करण वर्षकरण जन्न त्वटनत वहन। विश्वतामि शार्षिटकरत्न ना त्वटन कथन ॥ क्षित्र शादन प्रत्नािक धर्म महागत्र। धत्रम भानित्र भृथी कािनत्व मिक्स ॥ বেই কর্মপদে নতি করি ভক্তিভরে। মানস না বাদ্ধে যেন অধর্মের ভোরে॥ अने अम संविग् श्रामात वहन। हातिशारक शतिशृ श्राम म ক্রতাহুগে চারিপাদে স্থশোভিত রয়। ত্রেতাতে তাহার হয় একপাদ কর।। ৰাশরেতে ছই পাদ বিনাশে তাহার। একপাদ কলিযুগে অবশিষ্ট তার॥ ক্রি-অত্তে চারি পাদ নইহরে যায়। অধর্ম নাগরে জীব ভূবিয়া বেড়ায়॥ হৈছে বলিতেছি শুন সর্বজন। সদত ধর্মের প্রতি রাখিবে নয়ন॥ ক্রিকা বর্মের বল কে বলিতে পারে। মহাভয়ে নিরন্তর জীবে রক্ষা করে॥ ৰাক। অধর্ম কিন্তু অতি বিভীষণ। মহাভয় করে দান জানিবে সুজন॥ ক্রিড়া দরা শস্তি আর অহিংদা এ চারি। ধর্মের চারিটী পাদ জানিবে বিচারি॥ ৰ্ম্বশব্দে যেই জন রহে দক্ষেণ। শমন তাহার কাছে বাই জন ইহকালে থাকিয়া হরিষে। অন্তিমে চলিয়া ক্ষয় অমর সকাশে॥ ৰবের চারিটা পাদ করিত্ব বর্ণন। তাহার বিশেষ বলি করহ প্রবণ॥ পুত্র মাতৃভক্তি আর গুরুর অর্চন। প্রিয় বাক্য সত্যবাক্য ব্রতাদি সাধন॥ 🕶 চিত্র আন্তিক্য আর স্বীকার রক্ষণ। সাধুসঙ্গ এই সব সত্যের লক্ষণ॥ ক্ষিত্র প্রথম পাদ ইহারেই কয়। দুয়ার লক্ষণ এবে শুন খবিচয়॥ পর উপ-কার দান সিত-আলাপন। নততা সুধীর বৃদ্ধি হুন্ততা-এহণ ॥ ইহারেই দয়া শাত্রের নিয়ম। শান্তির লক্ষণ বলি শুন খবিগণ॥ অস্থা-ছীনতা আর ক্রির মুখন। দেবার্চনা মৌনত্রত রমণী-বর্জন॥ স্থিরচিত্ত নির্ভীকতা গঞ্জী-वात । निर्वामना मर्कफरवा क्रक-शतिशैत ॥ यान अश्रीयान मरव मय-कार हिंदत । शहतत अगरमा मन् निक्रमूर्थ करत ॥ जीर्थ निया क्रश होग अधिनि श्वान । क्या शिंड जमार्ट्सर्ग जकारी वर्ष्क्रम ॥ भौष्टित नक्ष्म धारे জানিবে অন্তরে । অহিংশার বিবরণ শুন অতঃপরে॥ পরেরে ক্লেশ নাহি मिर्निद क्षम । रेजित नगन गरा जाबिद्य प्रथम ॥ धकांख यज्दन गरा जिजि पुंचित्व । श्रांत्रात जाशन गण मन्त्र कावित्व ॥ तथावेत्व मार्चकार भवात्र शिविष् । अस्तिशानका अरे शादवात विवादत ॥ अर्ताक व्यक्ति शांक कवित्र



यामा विश्व करणे कर्षे कार्य वाचिर्यक मन्। विश्व करणे हरेंच नानामरह भारा विश्व करणे कीरनत मन विश्व पढ़ीय । व्यवस्थित करण कीय नतरकरं क्षेत्रकर्ष नाक्षणे याकना नश्यद्व कारण केरेकः वरत ॥

এতেক বচন শুনি যত খবিচয়। জিজ্ঞাসা করেন পুনঃ শুদ্ধে কত থা নরক আছে শমন-সদনে। কিরুপ, যাতনা পায় পঞ্জি সেই স্থানে।। কি পাপে কিরূপ শান্তি পায় জীবগণ। মহাপাপ কার্কে বলে ওছে মহাজন ॥ এই সব বিস্তারিয়া বল কুপা করি। শুনিয়া পুণ্যের, কথা মহাপাপে তরি॥ এতেক বচন শুনি বিধির তনয়। কহিলেন শুন শুন যত শ্বিচয়।। নরক তুর্বার অতি অতি বিভীষণ। তাহাতে যাতনা পার পড়ি পাপীগণ।। যতেক পুরাণ আছে ব্লোও-মাঝারে। নরক বর্ণনা আছে, তাহার ভিতরে॥ সংক্ষেপে কোথাও আছে কোথা বিস্তারিয়ে। বলিডেছি আমি তাহা শুন মন দিয়ে॥ একবৈবর্তেতে আছে বিস্তার আখ্যান। কডক করেছে ব্যক্ত ধরম পুরাণ।! ক চ যে নরক আছে শমন সদন। না পারে কেহ ওছে ঋষিগণ॥ বহ্নিকৃত তপ্তকৃত কারকৃত আর। বিষ্ঠাকৃত মূত্রকুও অতীব তুর্বার ॥ অশ্রুকুও মজ্জাকুও মাংসকুও আদি। বিষকুও হর্ম-কুও নাছিক অবধি ॥ অসংখ্য নরক আছে কে গণিতে পারে । চুরাশী প্রধান তাহে জানিহে অন্তরে॥ পাপীগণ ইহলোকে ত্যজিয়া জীবন। তুন্তর নরক-মাঝে করয়ে গমন।। যেই ছুট হিংসা করে পরের উপরে। সেই জন পড়ে বহ্নিকুণ্ডের ভিতরে॥ তাহার দেহেতে থাকে যত রোমচয়। তত বর্ষ নর-কেতে মহাকট সয়॥ তার পর পশুযোনি লভে তিনবার। শাস্ত্রেতে আছয়ে বিধি কহিলাম সার।। ভৃষার্ভ ত্রাহ্মণ কেছ অতিধি হইয়ে। জলপান হেতু यक्ति आहेरम बनलरत ॥ जाहारत मिलन कान राहे नाहि करत । जलकुरा पर्छ সেই জানিবে অন্তরে॥ তার পর শত জন্ম বিহক্তিনী হয়। শান্তের বিধান এই কৃষ্টিমু নিশ্চর।। আদ্ধদিনে যেই জন সানন্দ অন্তরে। ক্ষারেতে আপন বস্ত্র সুরঞ্জিত করে॥ যত দিনে এক ইন্দ্র বিনিপাত হয়। ততদিন কারকুতে সেই জন রয় ॥ রজকী জঠরে শেবে লভয়ে জনম। ব্তিবার এইরপ শাস্ত্রের বচন ॥ দান কুরি পুন তাহা যেই জন হরে। পরধানে লোভ হয় যাুহার অন্তরে # जनव नहेट वाक्षा करत (यह जन। (प्रवधन कानक्र प्रो प्य करत इत्र ॥ অমৃত বরষ লেই বিষ্ঠাকুতে রয়। বিষ্ঠাভোগ তার ভাগ্যে জানিবে নিশ্চয়।। পরের ভড়াগ থেই করিয়া হরণ। তথার ভড়াগ নিজ কররে খনন। মুত্রকুণ্ডে त्नरे जन महीकुर्के भाग्न । मूजारांत कंति त्नरे जीवन कांग्रेश ।। जात भन मश्र

क्रिक्र त्राधिकां करणहरू । प्रशंकके शांक जानि जनतीशरंग्ट ॥ धकारी ব্ৰিক্সনৈ বসি যেই অভাজন। নানাবিধ মিউর্জব্য করয়ে ভোজন ॥ শ্লেয়া-ক্তিওে সেই জন শতবর্ষ রয়। কত কউ দেয় তারে যমদূতচয়।। স্মবশেষে প্রেত-ধ্রিখানি ধারণ করিয়ে। অবনীমাঝারে আনে বিকল হৃদয়ে।। অতিখি আগত হেরি যেই অভাজন। ফিরায় আপন মুখ ফিরায় নয়ন।। তক্ষহত্যা পাপে শিশু সেই জন হয়। তাহার যতেক কট বর্ণিবার নয়।। তার দত্ত পিও নাহি লুয় পিতৃগণ। দুষিকানরকে পড়ে সেই ত্রজন।। শত বর্ষ তথা থাকি মহা-क्रिके পায়। দরিদ্র হইয়া শেষে ধরাধামে যায়।। সপ্তজন্ম এইরূপ দরিদ্র 💘 ইয়ে। মহাকট পায় আসি মানব আলয়ে।। বিপ্রকরে ধনরত্ন করিয়া অর্ণ। পুনরায় যেই জন করয়ে হরুণ।। যক্ষাকুতে সেই জন বহুকট পেয়ে। সাতবার জন্ম লয় ক্বকলাস হয়ে।। পরনারী প্রতি যেই করে অত্যাচার। कार्याटक माकिया जारत करत्र वनाएकात्र।। ऋषाक्रम अध्यक्रिक स्मे अम পড়ে। শত বর্ষ রহে সেই নরক ভিতরে।। ইউদেবে অস্ত্রাঘাত করে যেই 🛸 ন। অথবা বিপ্রের দেহ করয়ে ছেদন।। অথবা গোদেহে করে অস্ক্রের ্ঞাছার। সেই জন পড়ে অসৃক্কুণ্ডের মাঝার।। তার পর সাতবার নিষাদী कृष्ठेदत्र। क्रमम लङ्खा जानि जनमायोद्य ॥ नाधकुत्भ वत्न वत्न क्रिया জ্বশ। কত যে যাতনা পায় কে করে বর্ণন।। যেই খানে হরিগুণ সংকীর্ত্তন 💐 য় । গলাদভাবেতে যত ভূক্তগণ রয় ॥ সে ভাব হেরিয়া যেই পরিহাস করে। ্রত্রক্রতে পড়ে সেই শাস্ত্রের বিচারে।। নরক ভিতরে সদা করি অবস্থান। হাহাকার করে কত কে করে বাখান।। শত বর্ধ এইরূপে থাকিয়া তথায়। চণ্ডাল যোনিতে শেবে ধরাতলে যায়।। তিনবার এইরপে চণ্ডালী উদরে। জনম লভিয়া কটে দিবাপাত করে।। অপরেরে ছিংনা করে যেই গাত্র্যলকুণ্ডে পড়ে মেই মূঢ়জন।। শতবর্ষ দেই স্থানে করি আবহান। স্থনে ঈশ্রে ডাকে "কর পরিত্রাণ।।" অবশেষে ধররপে ্যর্ড্য-ধানৈ যায়। বনে বনে বিচরিয়া মহাকট পায়।। তিন জন্ম এইরূপে গর্দভ জনম লভয়ে আুসি মানব আগারে॥ वंशिदत्रदत्र पत्रगन क्रित रारे अन । उपराम कर्ति श्रेगा करत मर्सक्या। कर्यम क्रुंट पड़ि मरे মুরাচার। তাহি তাহি বলি দদা করে হাহাকার॥ বধির হুইয়া শেষে ধরা-**उटन** , स्रामि । महाकरें পেয়ে পाशी कार्ट किवामिनि॥ धरेक्ररण मश्च सम করিয়া ধারণ। মহাকট পেয়ে কাল কাটায় চুর্জন।।তারপরে সাত জন্ম দরিক্র बहेरत। मान्य जानरत जारून काष्ट्र कार्या। ज्या क काहात भाग बहेरव

भारत । भिरवत वहन देश भारत्र वहन ॥ भारत्र वनी कुछ दस स्वर हत्रक्ष । जीदित अधूना थ्यान कत्रदत्तं इनन ॥ नक्त्वर्व मक्काकूट लहे असे आता: তাহার তুর্গতি যত বর্ণিবার নয় ॥ শশক হইয়া শেষে লভরে জনম। সাত বার এইরূপ শাস্ত্রের নিয়ম॥ তার পর সাত জন্ম মৎসারূপ ধরে। শহা ক্লেশ পেয়ে থাকে জলের ভিতরে॥ আপন কন্যারে পালি অতীব ষ্তনে। जर्थलाट विक्री करत ज्ञानतत शास्त्र । धर्मजीव परन मरन मा करत চিন্তন। অর্থলোভে বশীভূত হয় যার মন॥ মাংসকৃত নরকেতে পড়ে ছুরা-, চার। তথায় পড়িয়া করে সঘনে চীৎকার॥তাহার শরীরে থাকে বত স্নোম-চয়। তত কাল সেই কুতে মহাক্ট সয়॥ যমের কিঙ্কর তারে করয়ে পীড়ন। মাংসভার সর্বক্ষণ করয়ে বছন॥ তার পর তিন জন্ম শ্কর আকারে। জনম লভয়ে আসি মানব-আগারে॥ তার পর সপ্ত জন্ম ক্রুর হইরে। জনম ধরয়ে আদি ব্যাকৃল ফলয়ে।। তার পর সপ্তজন্ম ভেকরপ হর। জলৌক। ছইয়া পরে সাত জন্ম রয়।। তার পর সাত জন্ম নররূপ ধরে। বোবা হয়ে রহে কিন্তু অবনী মাঝারে।। তবে ত তাহার পাপ হবে বিশো-চন। শাস্ত্রের প্রমাণ এই শিবের বচন।। আদ্ধৃদিনে ক্ষৌর কর্ম যদি কেছ করে। শত বর্ষ রহে নথকুণ্ডের ভিতরে ।। যমদুত তারে দদা করছে পীড়ন। ত্রাহি ত্রাহি বলি শব্দ করে উচ্চারণ।। কেশ সহ শিবলিক যদ্ধি কেছ পূজে। অভাজন সেইজন মহাপাপে মজে।। কেশকুওে সেই জন করয়ে গ্রন। মহাকট পায় তথা শিবের বচন।। শিবের শাপেতে **শে**ষে যবন হইয়ে। জন্ম লভয়ে আসি মান্ত আ**ল**য়ে।। ভারতে পর্য ক্ষেত্র গ্রানাম ধাম। পিতৃপিও দিবে তথা আছম্মে বিধান।। ट्रन चात्न (यह जन कतिया गमन। वि्रुपित िश्वनान ना करत कथन।। সেই জন পড়ে অন্থিকুণ্ডের ভিতর। বহুকট পায় তথা থাকি সেই নর। তার পর অক্হীন হয়ে ছুরাচার। জন্ম লভয়ে আদি মানব আগার॥ नगर्डा त्रभी नह कतित्व त्रभे। जासकृत्य तमेरे अम कत्रतः ग्रमेम॥ শতবর্ষ দেই স্থানে করি অবস্থিতি। কত কৃষ্ট পায় তার নাহিক অবধি॥ অকুঢ়ার অন্ন যেই করয়ে ভোজন। লোহকুও নরকেতে পুড়ে সেই জন 🎚 শত বর্ষ সেই স্থানে করি অবস্থিতি। কত যে যাতনা পায় নাছিক অববি॥ णात भात भाक जमा तजकी जिल्दा। जनम माञ्चा जानि जननीयांता॥ पत्रिम रहेशा करे शांश अभिवात । जयदन देवटत छाटक तक अदेवात ॥ पर्यरस्य रेष्ट्रवेश क्षमिता न्यूनि । वर्षक्थ नज्ञरकरण भरक् स्नरे बन।।

भूक वर्ष मिटे प्राप्त कति अवस्था । कठ कछ भाग जात्र कि करत महान ॥ विद्यू रंद्र मूज अब कतित्व एकाजन। मठ वर्ष छूत्राकृत्य तदर त्नरे जन॥ बिदंबपन नार्थि कत्रि (ভाजन कतित्न । क्रिक्ट् भए , गरे त्मरे भाभकरन ॥ ক্রমিস্কী হয়ে তথা সেই ছুট রয়। তাহার যাতনা থেরি বিদরে অদয়। পুদ্রেশব যেই জন ক্রয়ে দাহন। প্রকৃত নরকেতে পড়ে দেই জন॥ মুদুত খন খন প্রহারে তাহারে। তাহার যাতনা হেরি হুদর বিদরে॥ কুদ্রে ক্ষুদ্র জীবয়ণে করিলে হনন। দংশকৃও নরকেতে পড়ে সেই জন॥ দুৰুত্ত তথা তারে রাখি অনাহারে। হস্ত পদ আদি বান্ধি সদত প্রহারে॥ ম্মুলোভে মধুকরে করিয়া হনন। মধুচক্র ভাঞ্চি মধু করয়ে এছণ। ারলকুতেতে পড়ে সেই ছুরাচার। গুরুল ভোজন করি করে হাহাকার॥ লারণ যাতনা (দেয় যাদুতচয়। তাহার যতেক ছঃখ বর্ণিবার নয়॥ বিপ্রপরে দণ্ডাঘাত করে যেই জন। বজ্রদংক্ত কুণ্ডে সেই করয়ে গমন॥ শূর্বলোভে প্রজাগণে করিলে পীড়ন। রশ্চিককুণ্ডেতে করে দে নৃপ গমন । 🐺 🗷 কষ্ট পায়, তথা বর্ণিবার নয়। নীচকুলে জম্মে শেষে মানব-আলয় 🕍 🎮 🕇 কর্ম বিদর্ভিন্না যেই দ্বিজ্বর। অস্ত্র ধরি আরোহিয়া অশের উপর॥ অধর্ম পথেতে সদা করে বিচরণ। বসাকৃত্তে সেই জন হয় নিমগন॥ তাহার কেশেতে ধরি যমদূতচয়। কত যে প্রহার করেঁ বলিবার নয়॥ ৰিনা দোষে কোন জনে যেই বন্দী করে। আবদ্ধ করিয়া রাখে অন্ধকার ঘরে॥ পোলক্ও নরকেতে সে করে গমন। তাহার যাতনা যত না হয় বর্ণন।। <u>পরনারী-বকোপরি কৃ</u>চ মনোহর। হেরিয়া যে জন হয় কামুক-অন্তর ॥ কিমিভাবে ঘন ঘন কটাক প্রহারে। সেই জন পড়ে কাককুণ্ডের ভিতরে॥ ্রকাকেতে উপাড়ি লয় নয়ন যুগল। যেমন করম তার সমুচিত ফল। লৈভি বশে স্বর্ণ চুরি করে যেই জন। সঞ্চান কুণ্ডেতে সেই হয় নিমগন॥ ভাহার শরীরে রহে যত রোমচয়। তত কাল সেই কুণ্ডে মন্থাকট সয়॥ বিক্যু ভোগ করি তথা রহে কট দুয়ে। দরিদ্র হইয়া জন্ম ভূমেছে আসিয়ে॥ স্থাৰ বাসিত দেব্য যে করে হরণু। কিম্বা তৈল চুরি করে যেই অভাজন।। ক্লাক্ষ ক্লে সেই জন অন্তিমেতে পঁড়ে। শাস্ত্রের বিধান ইহা কহিছ সবারে। শাল করি ভূমি হরি লয় যেই জন। হিংসা করি কিন্তা করে যে কিছু হরণ।। दिजनकृत्य त्मरे कन निमर्गन रहा। जिल्लाक कृशित एक रहा योह कहा।। লভেও ভৈলেতে পড়ি করে হাহাকার।কে শুনে, তাহার বাঁক্য দক ল অসাঁর। वेष्ट अन्य त्मरे पारन कत्रदश ट्यांकन। मंध म्यापत्र जथा थारक निमर्शन।।

यगमूज घन घन थराटत जोराहत । जारात याजना (रति सपत विपटत ।। जारा-चाउ कत्रि त्यरे कारात्र उर्णत्र । अपूना कीवन थन निर्फरत्र उर्दता। अनिर्भक्ष নরকেতে তাছার গমন। যতকাল রহে তাহা করছ প্রবণ।। চতুর্দ্ধশ ইন্দ্রপাত যত দিনে হয়। তত কাল নরকেতে সেই জন রয়।। এই রূপে বিপ্রাদেহে করিলে হনন। শতমৃত্বত্তর রহে শান্ত্রের বচন।।যমদূত খন ধন করয়ে প্রহার 🖰 চীৎकांत कतिया कटर तक अरेवांत ॥ भूकत रहेंग्ना भारत आरर्ग वहवादित वि কত কট্ট পায় পড়ি কানন ভিতরে॥ অগ্নিদিয়া গৃহ দ্বা করে যেই জন । কুরধার কুতে হয় তাহার মগন॥ বহুকাল সেই স্থানে করি অবস্থিতি। কত যে যাতনা পায় নাহিক অবধি॥ তার পর প্রেত-যোনি করিয়া ধারণ। সাত জন্ম মল ভোগ করে অনুকণ।। তার পর নর জন্ম ধরে ছ্রাচার। শূল রোগে ৰক্ষ তার হয় ছারধার॥ তার পর্রুষ্ঠ রোগী দাত জন্ম হয়। তবে ত পাপের মৃক্তি জানিবে নিশ্চয় ॥দ্বিজের ।উপরে ছণা করে যেই জন । দেবতা উপরে ভক্তি না রাখে কখন। পরনিন্দা দদা করে আপন বদনে। স্চি কুতে পড়ে সেই শাস্ত্রের বিধানে ॥ তিন যুগ সেই স্থানে করে অবস্থান । অবশেষে ধরাধামে করয়ে প্রয়াণ ॥ সপ্ত জন্ম সর্প হয়ে লভয়ে জনম। বজু কীট হয় পুনঃ সপত জনম। ভদ্ম কীট সাত জন্ম হয় তার পরে 🖡 শত জন্ম বিছা হয় শান্ত্রের বিচারে॥ দিবানিশি কত কট পায় সেই জন। তাহার যতেক ছঃখ না হয বর্ণন॥ লোভবশে বাদ ভগ্ন যেই জন করে। কিলা গৃহ কাড়ি লয় অতি বল করে॥ দারুণ নরক ভোগ করে সেই জন। ছাগ নেষ হযে শেষে লভয়ে জনম । প্রতি জন্মে ভাগ্যে তার এইত নির্ণয়। দারুণ যাতনা দেয় যমদূতচয়।। তার পর গোপ গুহে লভয়ে জনম । वाधि धक्त हरत करे भात अपूक्त ॥ नपू प्रवा हति करत राहे अञ्चल । नखमूर्थ नतरकरङ তাহার গমन॥ এक यूग मেই স্থানে থাকিয়া বিষাদে।. নরজন্ম ধরে শেষে আসিয়া ধরাতলে॥ অশ চুরি গজ চুরি করে যেই জন। বদ্ধনাকুতে হয় তীহার পতন॥ যমদূত গজ ছও ধরিয়া সঘনে। সবলে প্রহার করে তাহার বদনে॥ বহু কট পেয়ে দেই জন। তিন জন্ম গজরপ করয়ে ধারণ॥ তার পর তিন জন্ম মেচছরপী হয়। শান্তের বিধান ইহা জানিবে নিশ্চয়। তৃষ্ণার্ভ হইয়া, কেছ জলপান তেরে। ব্যাক্লিত হয়ে যায় জ্লাশয় তীরে । তারে জলপানে বাধা দের থেই জন। মহাপাপে ভূবে সেই অধম ছুৰ্জন ॥ গৈয়ির্থ নরকে পড়ে সেই ছরচোর। এক মহতার তথা করে হাহাকার।

ভার পর যোগী হলে ধরাধানে বার । তাহার হাতৃনা হৈরি খবা কেটে বার ।। বৈশ্বহত্যা গরুহত্যা বেই জন করে। অগ্যাগ্যন করে কামার্স্ত অন্তরে। ে বেই বিপ্র ডিন সন্থা বিবর্জিড হয়। দেবল হইয়া দান নানা মতে লয়। भूज 'शृंदर भाक करत जामा इरेरा । त्रमीत रत कामी मानम कपरा ॥ ভিকুকেরে হিংসা করে যেই ছুরাচার। ক্রণহত্যা করে থেই অবনী মাঝার॥ ্ষহাপাপী বলি খ্যাত এই সবঁ জন। দারুণ নরকে সবে হয় নিমগন। খ্যদুতে কত কট দেয় স্বাকারে। কখন কেলিয়া দেয় কণ্টক উপরে॥ ু জপ্ত তৈলে কেলি কভু মারে ঘন ঘন। উষ্ণ জলে ফেলে কভু যমদূভগণ॥ ক্রিখন কেলিরা দের পাষাণ উপরে। কখন কেলিয়া দের অনল ভিতরে॥ এই মৃত শাস্তি কত বলা যাহি যায়। তাদের যাতনা হেরি বক্ষ ফেটে যায়॥ 🏙 বার পর যুরু জন্ম সাভ বার ধরে। সাত বার জন্ম শেষে শৃকর আকারে॥ 👣 🖚 সর্প হয় পরে সপত জনম। তার পর মলকুতে পড়ে সেই জন॥ ৰাষ্ট্র হাজার বর্ষ সেই কুণ্ডে রয়। দীন হয়ে জন্মে শেষে মানব আলয়॥ 🙀 🕳 বোগী হয়ে কট পায় অনুক্ণ। যক্ষা রোগী হয় সেই নারকী ছুর্জন।। বিংশহীন হয়ে রহে সেই তুরাচার। ভার্য্যাহান হয়ে সদা করে হাহাকার॥ এত ভনি ঋষিগণ আনন্দেতে কয়। শুনিমু অপূর্ব্ব কথা ওগো মহাশয়॥ এখন জিজ্ঞাসি যাহা করহ বর্ণন। ত্রন্ধহত্যা কারে বলে ওহে মহাজন॥ , জ্বাসম্যাগ্যন বল কাহারে বা বলে। সন্ধ্যাহীন কোন জন এই ভূমগুলে।। '.পুজারি ভান্ধণ বল হয় কোন জন। শৃদ্ধ অন্নপাককারী কোন বা ভান্ধণ॥ ্বেশ্বলীর পতি কারে বলে মহাশয়। এই দব শুনিবারে কৌতুকী ছদয়। ুর্ত্রেতেক কন শুনি বিধির নন্দন। কহিলেন শুন শুন যত ঋষিগণ॥ "**প্ৰক তন্ত্ৰ দৰ্ব্ব শ্ৰেষ্ঠ জানিবে অন্ত**রে।শাক্ত শৈব গাণপত্য দৌর আদি করে॥ शृक्ष य विक् छ उ उटर श्रिशन। धरे शक नर्स ए जादन नर्स जन।। শুলিব নিবা নারায়ণ হুর্য্য গণপতি। ইহাদের ভেদ ভাবে বেই ছুরুফতি।। - खन्नहजा প্রাপে ময় হয় সেই জন। শান্তের প্রমাণ ইহা শিবের বচন॥ . বেশ মাতা বিমাতাদী গুরুর তনর। ইহাদের ভেদ ভাবে देहे ছরাশয়।। অন্য দেব ভক্ত সহ শিবের ভকতে। যেই জন সম ভাবে আপনার চিতে।। দেব ফ্লেচ্ছ ছুই জনে সমজ্জান যার। তাহার ন্সভৃত্টে আছে নরক তুর্বার॥ क्षमहजा शाल मध इत तारे जन। भारता विधान रेश तरमज नहन।। रायुका भूमन नाहि करत राहे सन। थिए गर्ज थिए नाहि केंद्रत पार्शन।। বিছু উপাসকে আম শিব উপাসকে।নিলা করে বেই ছুট অতীব কৌছকে।

जगरको भारमं का दश (मर्व कम) केलिएम मिक्स दश सहरक भक्त हैं। তুর্গানিনা যদি করে কোন তুরাচার। একহত্যা আক্রমিবে শরীরে তাহার 🖟 निवज्ञाजि जरु माहि करत रारे जन। जनारका भारत रारे हरेरव मनेन क **धकान**नी त्रविरात अनम अकेंगी। धरे कग्न निन आंत्र खेताम এই সব পর্কে ত্রত যেই নাহি করে। ত্রন্ত্রতা পাপ অনুস যেরিবে তাহারে। भिव लिक रारे जन कडू नांदि शृष्छ। उन्नरजा शाल रारे अवगरे मरक পোগণ যখন যায় আহার কারণ । তখন ভাহারে বাধা দের যেই জন 🗓 গোছত্যা পাতকে মগ্ন দেই জন হয়। শিবের বচন ইহা कञ्च मिश्रा नय ।। উष्टिके मारे कराय व्यर्थ। द्वराज्याहक इस खरे विश्वक्रम 🗗 শত গরুহত্যা পাপ ইহাদের হয়। শাস্ত্রের বচন ইহা ওহে ঋষিচয় 🎼 অগ্নিদেবে পদাঘাত করে যেই জন। গোদেহে চরণাঘাত করয়ে অর্পন 🗗 স্নান অত্তে পদ ধৌত কভু নাহি করে। ক্রতপদে যায় যেই বরের ভিতরে 🎉 পদ ধৌত নাহি করি করয়ে আহার। বিপ্র হয়ে দিবাভাগে খায় ছুই ৰাক্রী অহুঢ়া কন্যার অর খায় যেই জন। ত্রিসদ্ধা বর্জিত হর হইয়া তাদ্শা यथाकारल পिতृপिও ना करत वर्ष। विशास एका नाहि कतरत शृजन।। গোহত্যা পাপেতে মগ্ন যেই জন হয়। শিবের বচন কভু মিখ্যা নাহি হয়। जिम्र जन जीवनर्ग निका राया यात्र। अन भूला निर्देश निकास विकास মিখ্যাকথা নিরস্তর বলে যেই জন। প্রতারণা করি করে সকলি হরণ। গোহত্যা পাতকে মজে এই সব জন ছুর্ব্বার নরকে শেষে হয় নিমগন 📦 थ्रांग कतित्व मृद्ध (यहे विश्र कन। आमीर्काफ नाहि करत विशास उपन 15 গোহত্যা পাতকে মজে সেই ছুরাচার । তাহার অদৃষ্টে শেষে সকলি ছুর্বার ।। বিদ্যার্থীরে বিদ্যাদান যেই নাহি করে। গোহত্যা পাতক তার বেরিবে শঙ্গীরে।। শুদ্র হরে বিপ্রপত্নী ক্রিলে হরণ ।। বিপ্র হয়ে শুদ্রাণীতে ক্রিলে গমন।। অগম্যাগমন বলে শান্তের বিচারে। বন্ধহত্যা পাপ জাসি ঘেরিবে॥ जाहारत॥ इवनीत रमवा करत हरेशा जाका । अकामभी जेनवाम ना करत रमकम्। क्छीशांक नदरकटा राष्ट्रे जम यात्र। मात्रण याजना शिरत करत सात्र झात्राहा खननी वियाजा जात अक्रत পणिनी। পুরবধু निक कन्। यखत-त्रमणी l काज्यम् निक ज्यो बात शिज्यमा । माजूनानी शिजामदी बात माज्यमा ॥ क्षाणात हरिका जात माणात्र जनसी । गिरा भिषामात्री जात नूटजब समी ॥ रत (यरे जम ' जकराजा शारण करें रत निममन ॥

किरोगोंक नव्रत्कटण तारे जन यात्र। मावर्ग योजना शीत्र थोकियों ज्योत्र ॥ विकास जीदवरण जात्र मात्रायण चारन। क्रिक्टकटल व्यविशटक वस्त्रिकार्श्वरम्॥ ৰারাণদী হরিভার দাগর দক্ষ। প্রভাদ জীরাদপঞ্চ আর র্নাবন । সত্ত্বতিতীরে আর নৈমিষকাননে। ত্রিবেণী কৌশিকী আর হিমালয় স্থানে। ইভ্যাদি তীর্ণেতে দান যেই জন লয়। তীর্ণগ্রাহি বলি সেই মহাপাপী হয়। কুরীপাক নরকেতে তাহার পতন। শাস্ত্রের বিধান ইহা শিবের বচন। নিপ্তৰ্দ্ধ অভিরিক্ত যাজক যে হয়। গ্রামযাজী বিপ্র সেই শাল্রে হেন কর।। 🙀 আর পাক করে হইয়া ত্রাহ্মণ। শূদ্রস্থপকারী সেই শান্তের বচন।। इनिष्ठ। नतीत अब করিলে আহার। মহাপাপে মগ্ন হয় সেই তুরাচার॥ বৈশা সহ রতি করে যেই ছুরজন। শিমুলের রক্ষ হয়ে লভয়ে জনম।। **্লিক্র্য্তাহণেতে যেই তুরজন।** সুখেতে পায়স অন্ন করয়ে ভোজন॥ ক্রিক মাঝারে যায় দেই তুরাচার। দারুণ যাতনা পেয়ে করে হাহাকার। 🛊 क्रिक कथा पिन्ना जना বরে বরে। সেই কন্যা মহাপাপী জানিবে অন্তরো বিতে নামা নরকেতে সেই কন্যা যায়। তথায় যাতনা লভি করে হায়হায় II শিক্ষিরি পুনঃ তাহা করিলে হরণ। পাংশুভোজী নরকেতে যায় সেই জন। ষদুত পাশে বন্ধ করিয়া তাহায়ে। সখনে লোহার কাঁটা অদংখ্য প্রহারে॥ শ্বলিকে অবহেলা করে যেই জনা বিধানে তাহার পূজা না করে কখন।। 🏗 ক্রেবেডে পড়ে দেই হুরাচার।প্রেতকুও তার ভাগ্যে অতীব হুর্বার॥ তি প্রতি ক্রোধ করে যদ্যপি যুবতী।তাহার পাপের শাক্তি নাহিক অবধি॥ **শ্বামুখ নরকেতে তাহার পতন। কিছুকাল রহে তথা কে করে গণন॥** ছিরি শরীরে থাকে যত রোমচয়। তত দিন সেই কুতে সেই নারী রয়।। 🖫 জন্ম তার পর বিধবা হইয়ে। দারুণ যাতনা পায় মানব আলয়ে।। প্রাণী হইয়া করে শুদ্র অভিলায়। শুদ্রের রমণে বিপ্রা প্রায় বে আশা। দৈহও নরকেতে সেই নারী যায়। চৌদ ইক্রপাতাবধি রহিষ্ তথায়।। ध হরে অন্ত বিপ্রা করিলে হরও। ক্তাণীতে অন্ত ক্তর করিলে গমন। 🕸 হয়ে অন্ত বৈশ্যা সহ রতি করে। শুদ্র হয়ে অন্ত শুদ্রা সহিত বৈহরে।। স্থাদ নরকে পুড়ে এই সব জন। ছাদশ বরষ তথা কররে যাপন।! ক্রিপে পাপীসণ মহা কট পায়। নরক কত যে আছে বলা নাহি যায়॥ পের যতেক শান্তি কে বলিতে পারে! অনন্ত অনন্তমুখে বর্ণিবার নারে ! है बलि यम पिता छम सविशंग । नन्छ ध्रम श्रीय 'ता थिएँवक मन ॥ ভিক্তি শি**ত্তভক্তি মাতভক্তি আর। এই সবে মহাপুণ্য শা**জের বিভার **ম**ে

নারীগণ রত হবে স্বামীর উপরে । তবেত পুণ্যের রদ্ধি তাহার শ্রীরে 🗗 এতেক বচন শুনি খবিগণ কয়। শুনিতেছি পুণ্যকথা ওছে মুহাশর।। গুরুভক্তি পিতৃভক্তি মাতৃভক্তি আর।বামীভক্তি কাদি করি ওহে গুণাধার। विराग कतिशा नव कतर की र्वन्। एनिशा भूर्तात इक्षि कति नर्वक्र ॥ সনত- কুমার কহে শুন ঋষিগণ। গুরুই পরম গতি গুরুই জীবন।। গুরু বিনা ভবধানে গতি নাহি আর । গুরু গতি গুরু মুক্তি গুরুপদ সার ।। যত জীব ধরাধামে লভয়ে জনম। মানব তাহার শ্রেষ্ঠ শান্তের বচন।। এহেন যানবজন্ম ধারণ করিয়ে । গুরুমন্ত্র নাহি পশে যাহার হৃদয়ে।। खरुषश्चिमत्त्व पीका नाहि इस यात्र। नताथम इस त्मई वित्यंत मावात्र। ওরু অনুগ্রহে হয় একাদরশন। সে ধনে বঞ্চিত হয় যেই নরাধম। তাহার জীবনে বল কিবা কল আর । নরাধম সেই জন অবনী মাঝার । সেই জন যেই দ্রব্য করয়ে ভোজন। বিষ্ঠা সম সেই দ্রব্য শান্তের বচন ॥ অজ্ঞানে আরত থাকে মনুষ্য হৃদয়। গুরুমন্ত্রে হয় তাহে জ্ঞানের উদয়।। গুরুর সদৃশ নাহি ভুবন মাঝারে। সদত পৃঞ্জিবে তাঁরে একান্ত অন্তরে।। ভুরু বিনা হেন সাধ্য ধরে কোন জন। অজ্ঞান জনেরে করে জ্ঞান সমর্পণ।। গুরু অনুগ্রহে হয় কুতান্ত বিজয়। গুরুর প্রদাদে নাহি রহে যমভয়॥ গুরু আরাধিতে যেই করয়ে যতন। ভববদ্ধ ঘুচে তার শাস্ত্রের বচন। গুরুদেবে মহেশ্বরে কিছু ভেদ নাই। গুরুরূপে মহেশ্বর আছে সর্ব্ব ঠাই॥ সরল স্বভাব যার ধর্মে আছে মতি ! শাস্তবেত। দরাবান্ স্থাত প্রকৃতি ॥ शृंहरामी अहेत्रल (यहे जन हरा। अक्तर्याशा मिहे जन जानित्व निक्का। শঠতা নাহিক কভু যাহার অন্তরে। সদা হাস্য শোভে ষার বদন বিবরে 🛭 ধরম পথেতে দদা রহে যার মন। সুখভোগে অভিলাষ নাহিক কখন॥ গুরুপদে উপযুক্ত সেই জন হয়। শাস্ত্রের প্রমাণ ইছা জানিবে নিক্রেয়। গুরুর তনর কিম্বা পোত্র আদি করে। সবারে গুরুর সম ভাবিবে অন্তভর॥ ভেদভাব ভাবে যদি পাপেতে মজিবে। গুরুষনে ভেদজ্ঞান কভূ না করিবে॥ अक्टूरन रारेखन नाउरा जनग। पूर्व यपि दत्त ककू रारे वाजाबन ॥ তথাপি তাহার পূজা করিবে সাদরে। নতুবা নিশ্চয় যাবে ব্রক মাঝারে॥ গুরুদেব বছমূর্ত্তি করিয়া ধারণ। পুত্র পৌত্র আদিরূপে করে বিচরণ॥ গুরুদেবে দেবতাতে ভেদ না ছিন্তিবে। চিন্তিলে নিরয় মাঝে নিশ্চয় পড়িবে॥ দাঁড়ায়ে রছিবে সদা ওরুর সকাশ।. বসিবে যতাপি হয় অসুজা প্রকাশ। ্বিশাস বসন বিয়ে রবে অফুক্ণ। ভীতচিত্তে রবে সহা শুরুর সহন 🛭

मैं। जादता जिल्हार वर्गन कानि मैं। जादन। वनितन कमुका नदत्र शहतर वितर्व।। भवन कतित्व जांत त्मवित्व ठत्रण। धारे उभारत्वत्र विधि छट्ट श्रियाण॥ रामन कतिरम एक असूरामी इरव । जाहात निकटि नाहि हासेना एसारव।। লংগতি তাঁহার পাশে করিবে বর্জন। অহকার তাঁরে নাহি দেখাবে কখন। বিনা বিজ্ঞাসাতে কভু কথা না কহিবে। বিজ্ঞাসিলে ধীরে ধীরে প্রভাতর क्रिंद्व ॥ अतं आंठत पादा कतित्व पर्यन । जाबाट नित्यथ नाहि कतित्व ক্র্রন। এতক্র-চরণোদক লইয়া সাদরে। রাখিবেক ভক্তিভরে নিজশিরো-পরে॥ ওর্নর চরণধূলি লইয়া নিয়ত। ভোজন করিবে হয়ে সদা ভক্তিযুত॥ ক্ষর চরণে সদা রাখিবেক মন। গুরুর প্রসাদ স্থাধ করিবে ভৌজন। **ওক্তাব** সাক্ষাতেতে যতদিন রবে। তাঁহার চরণ পূজা ভক্তিতে করিবে॥ विषक शृक्षा ना कतिरव मिकाल कथन। कतिरल विकल मव भारखंत वहन॥ इक्र. थ छिन्यान् (यहे जन इत्र । युत्रभूत्त जात्र गिंज जानित्व निक्तत्र ॥ देश कर तार्य ভिक्ति थिन् गान्थता। युगीन युगास ति विविधानीयादता। নিবের উপরে, সদারাখয়ে ভকতি। শিবপৃত্বা হেতু সদা ব্যাকুলিতমতি॥ ৰুন্দিতে যে জন পারে শিব্যের হুদর। গুরু উপযুক্ত সেই শান্তের নির্ণর॥ চতুর্বর্ণ যথ্যে প্রেষ্ঠ দিজজাতি হয়। বিপ্রজাতি নারীশুরু জানিবে নিশ্চয়॥ कादन महाकानी यपि दश विकक्त। वश्राम किन्छ दल कित्राव कर्फन জক্ষর যতনেতে গোপনে রাখিবে। প্রকাশেতে মহাবিদ্ধ নিশ্চর জানিবে॥ क्रम नइ দেবতারে ভিন্ন ভাবে যেই। দারুণ নরক মধ্যে পড়িবেক সেই॥ ্ডিক্সতে দেবেতে সদা ভাবিবে সমান। যেই গুরু সেই হন দেবতা ঈশান॥ ব্ৰীন ভাবেতে সদা গুৰুরে পৃজিবে।ভাঁহা হতে ভিন্ন ভাব কভু না ভাবিবে॥ विश्वक (यमन ध्यर्क जननी मोस्रोटत । নারীর তেমন পতি জানিবে অন্তরে॥ ে শুরু এক পতিযাত্র হয়। পতি গতি পতি মুক্তি জানিট্র নিশ্চর।। শতির সদৃশ নাহি সংসার মাঝারে। পতি বিনা প্রাণে বল কিবা কল কংর॥ মান্তর পতির পদ করিবে চিন্তদ। পতির সমান নাহি এতিন ভূবন॥ शिक्ति नम त्रम्भीत्र किर नाहि जाता। जातित्वक পिक्तिता साम जिनताता। মানুশি পতিত হয় পতি মহোদয়। তথাপি শুরুর সম জানিট্র নিশ্চর।। किया जग किया बन किया एक पान। किहूरे किहूरे नहर निर्ध गणित गणान॥ भिजित हत्व भूजा कतितन मानदा। अववद्यः पूर्व खात्र तिरे भूगाकतम्। প্ৰতিক্ৰ নিহনে ভূবে বকলি স্পার। পত্তি বিনা রমণীর কিছু নাহি আরু॥ "जिंगण जन्मातः तारे नाजी स्त्र। जनमित्राभारत तारे गारेटर निगात क

रेटा प्राप्त के अवस्थान कारण कारण कार्य मात्री । अवकारण साथ हाना आहा हा हा । গামুক কার বালে। কমু নাহি বাস। তাহার তেকেতে দুভ ভয়েতে প্রকার ছিল। মত্তে বিশ্ববীদ পূজিবে মেনন। সেইরপ নারীক্তম পতির 🙌 পাতি মারাধনা সদা করিবে অন্তরে। তবেত তরিবে সেই ছতর সামার প্রিপরারণ। দল যেই নারী রয়। পাতক না করে কভু তাহারে ভাতত সভত নির্মাণ রহে তাহার অত্তর। তার দর্শনে হর পুণাবান না गाइम कुष्टन नक्का तमनीत दश । नितरत नक्कानी ना थाकित्व मिन्छत्। लाख পরিভাগ নারী সদত করিবে। লোভেতে কমলা তারে নিশ্বর ছাড়িকে भारत कत्रिद्य पद शिव्यन मत्न। उथन निर्मा हर्द भारत्र राज्य महाक उत्तरम मना कतिरव भगन। পতिপार्ग गरमानाथा ना करव सम्ब শক্তিশালে কলা প্রেম করাবে দর্শন।। তবে ত তাহার যশ রটিবে ছুবন मछान अधिरन शदा अकार एजरन। तकन कतिरन मन नत्ररम सहस्य शहनत उसरा नामा शूरजत मगान। प्राचित्व तमनी धरे भारजत विश्वान পতিছেশে सूथी हरव या नाती जाि । পতिছঃ स्थ हःशी नाती तरव नित्रविश প্রতি যদি করে কছু বিদেশে গ্রন। সুখভোগ দব নারী দিবে বিস্কৃত্ गृरक्ता निविधान महिल त्राचित । मयद्व मकल जत्न क्वा क्वा क्वा क्वा क्व পতিছাতি যেই নারী না জানে কখন। খাইলে তাহার অন্ন পাতকী নে জন। এক জ জন্তরে যেই পতি ধনে ভজে। পতিত্রতা কারে বলে জগত ন্যাক্ষে। কাষ্য্রশে হুই পতি করে যেই নারী। কুদটা তাহারে কহে শান্তের বিচারি। मात्र काम जिम शिव धरिंगी त्म रहा। हाति शिव रत्न शत्त शूरकनी निकास विक्रिक दारे नाही करत्र कामनत्न। त्वणा विन त्वरे कृषो भद्वाशास সাক্ষা তাহার স্থিক পতি যদি কভু করে। মহাবেকা বলি নেই গ্রাভ एका अध्यक्ष अपनी गर कविएन तर्ग। प्रखत निवस्य शर्फ लाहे अखासन्। পদ্ধ নত বৰ্ষ পাছক নমকে পড়িয়া। তিৰ্য্যক-যোনি ধৰে লেবে ধরাধানে शिशा (स्रोत कावरणरण क्यों) रामशी। यति छाटर शक्ति श्रावि स्नावरम्य कविश्व केलाध्ये समस्य के साम । महाक्ये तात प्राप्त श्रमकृत्य है THE REPORT OF THE PROPERTY OF विकास विकास है। विकास सामित स्थानक आहे कार विकास स्थान

अधिकन नारम जीरह नवकं हर्साव। जाहारड निष्या कंगें नाव जिनाइ। किंबिरंग्रह नाती किंचा रियरणात त्रयंगी। अथवा मृटाम्त्र गृटक करेता मूलांगी ॥ শিল নিজ পতি ছাড়ি সজাতি অপরে। লইয়া সানন্দ মনে কার্যেতে বিহুদ্ধে। শ্বিতিৰে ভাছার গতি নরক মাঝার। নরকে পড়িয়া কট পায় জনিবার॥ शृष्टिका त्यहे नाती अगठ गांखारत । विधारन गुरुत काल त्यहे नाती करत ॥ कि जिल्डात महा धर्म যে করে পালন। পতি বিনা অন্ত জনে নাহি যার মন ॥ ্বিশ্বপ্রত্তে তাহার পূজা করে সর্বলোকে।ইহকালে বাস কার সেই নারী স্বব্ধে॥ ैं बताबादम मिरे नाती দেবতারপিণী। তাহে প্রতিষ্ঠিতা রহে নিখিল অবনী। \* জনির বিহনে গৃহ শোভা নাহি পায়। পণ্ডিত সভার ভূষা বিদিত স্বায়॥ ্ষ্টিবৃদ্ধি নরের ভূষা জানিবে নিশ্চিত। রমণীর ভূষা লজ্জা। আছরে বিহিত।। বিপ্রায়ত সম জানিবে স্থজন। সভাতলে মৃত সম বুদ্ধিহীন জন॥ निर्मका तम्गी इत मृञात ममान। जनिक यक मृञ कानिटव शीमान॥ শীলবহীনা নদী যেমন র্থায়। কৃষ্ণহীনা বৃদ্ধি যথা শোভা নাহি পায়॥ ্রি**র্কাকীন রাজ্য যথা ছঃখে**র কারণ। পতিহীনা নারীজাতি জানিবে তেমন॥ বিবিধ ভূষণ কিন্তা নবীন যৌবন। চারুবর কেশপাশ স্থবেণী ধারণ॥ াশহা কিছু মধুরতা নারীজাতি ধরে। কিছু নাহি পায় শোভা বিধবা-শরীরে॥ ি শিবপুরাণ কথা অতি মধুময়। শুনিলে পাতক নাশ দ্বিজ কালী কয়॥

# তৃতীয় অধ্যায়।

#### প্রক্ষতি বর্ণন 1

শবিগণ সম্বোধিয়া সনত কুমারে। সম্বোধিয়া জিজ্ঞাসেন সুমধুর স্বরে॥

শা প্রক্ষতি লক্ষণ এবে শুনিতে বাসনা। প্রকাশ করিয়া তাহা পুরাও কামনা॥

ক্ষণ সম্বর্জমার কহে শুন ঋষিগণ। কার সাধ্য বর্ণিবারে প্রকৃতি লক্ষণ॥ এ: মন
পত্তি সভা কারো নাহিক ধরায়। প্রকৃতির গুণাগুণ যেই জন গায়॥ যাহা ছান্দি
ক্রিছা বলি করহ প্রবণ। প্রকৃতি করেন সদা ত্রিগুণ ধারণ॥ ত্রিগুণে পুরুষিত

ক্ষিত্র শক্তি-ধারিণী। সৃষ্টি কারণেতে হয় প্রধানা কামিনী॥ দ্বিভাগে বিভাগ

ক্ষাত্রা পুরুষ করিল। ছক্ষিণে পুরুষ বামে রমণী জ্যাল। যেমন জগ্রুত পিতা

ক্ষাত্রন। নিক্ষ জানিও সবে প্রকৃতি তেমন॥ ধর্মায় সৃষ্টি তার সব

ক্ষাত্রী সাভাগনী ক্ষেত্র জনাত্রী ॥ বহাদেবপ্রণার্কী সংশেশ

ক্ষাত্রী সাভাগনী ক্ষাত্রী । বহাদেবপ্রণার্কী সংশেশ

ক্ষাত্রী সাভাগনী ক্ষাত্রী । বহাদেবপ্রণার্কী সংশেশ

# THE PROPERTY.

গণ। সে দেবীর রাজাপদ করেন পূজন।। দয়া ধর্ম সভাপ্রদা পাপ্রবিনাশিরী। बाझा छात्रा काछि की वि पक्लमाशिमी॥ प्रथ याक वर्तमाबी पुनि गूर्कि শান্তি। মান্তা লভ্জা ধৃতি ক্ষমা সিদ্ধিলাত্রী কান্তি॥ কাম ক্রোম লোভ শোভ जीहांद्र मा जारह। एन गरालको कथा किर नवा कारह॥ गरालकी कि ঠেতে আনন্দিতমনে। অনুদিন পতিসেবা করেন যতনে ॥সর্গেতে স্বর্গলক্ষী আছেন নিয়ত। রাজ্বরে রাজ্বক্ষী রাজ্জোগেরত॥ গৃহলক্ষী আহে গৃহীগণের ভবনে। তগবান্ প্রেনাধীনী সাধী স্থলোচনে ॥ ভক্তময়ী তিনি ষাতি ভক্তজনধন। পাপীর গৃহেতে তিনি না যান কখন॥ যেই জনে ভিনি कुषा ना करतन पान। ७ जव जवन जात यानान ममान ॥ मर्वनम्परपत जिन्हि হম অধিকারী। তাঁহার মহিমা আমি কি বলিতে পারি॥ শুদ সবে একে সরস্বতীর কথন। সকলের পূজ্য তিনি সর্বজনধন॥ বিদ্যা বৃদ্ধি জ্ঞান আৰ্ কাক্যবিধায়িনী। সুবুদ্ধি কবিতা সর্ব্ধ বিধানকারিণী॥ নানাবিধ তাল গাৰু वाळावशाश्चिमो । यहगीएक निक्लामा कगक्रामहिनी ॥ रेन्सूमूची वित्र नामा কমল আসনে। একমনে ভাবে নদা সাধনের ধনে।। তাঁহার না হলে রূপাঃ বাক্য মনোহর। নাহি ক্ষরে কি মানব কি যতি অমর।।কোন জনে যদি पश्ची না করেন দান। না থাকে তাহার গুণ নাহি থাকে জ্ঞান ॥সাবিত্রীকথন একে করহ প্রবণ। দেবের জননী তিনি ওহে ঋষিগণ॥ অতি তেজামন্ত্রী তিনিঃ ব্রদার ভাষিনী। তপে জপে বিশারদ হন তপদিনী॥ সর্ব্ব তার্থ শুদ্ধ ভাঁত্রে করিলে স্পর্ণন। স্পর্শিলে সে পদরজ মুক্ত তীর্থগণ॥ রাধার লক্ষণ এবে করহ শ্রবণ। ছরিপ্রাণপ্রণয়িনী গুরুতিজীবন॥ গোপীবেশ ধরি দেবী গোলোক निर्वारम । जानत्म करत्न वान गरनद जैज्ञारम ॥ जश्कात-शैना स्वी भाष्टि-. বিধায়িনী। তাঁর এচরণ হয় পবিত্র কারিণী॥ সতত এছিরি সেই স্থাপতী রতবে। আপনার বক্ষোপরি রাখেন যতনে॥ ঘন মেঘে শোভা পায় চপলা যেমন। ক্ষবিকেশ-ক্ষদে শোভে শ্রীমতী তেমন।। সহত্র বৎসর বিধি তপশ্চর্য্য করি। যাহাঁর চরণ হলে অবিরত মারি॥ পেয়েছিল একবার চরণ দীর্শন। তাহাতে সম্ভুক্ত বিধি হেরি সে চরণ॥ যোগীগণ যেই ধনে স্থপনে না পায়। अक्ष्यदम गाँदिक नना दिक्षदि (श्याय॥ इन प्रती प्रतीपृत्ति कित शिक्षकांत्र। ज्ञाना अहे शक शक् जि कुनन ॥ जीहारमत ज्ञारम जात कनात कनन। क्षिक्रिंद्रम गुंठ नाती क्रिन धार्ग। अथान तम्मी यक जात विवत्रन ছালিডেছি শ্বিপ্লা কর্ছ ভাৰণ ।। পুণাতোয়া ভাগীরবী স্বায় অধান

#### 

ক্ষিত্রত বৈদ্যা হার সভা অভিযান। লাগানের সর্বপাপ করিন্দ্র কালতার পানরীতে পানতীর্বা জাহুবী এখন।। যদি কেহ স্থান করে জাহুবী হালিছে। अजित निर्णाण १८व शका गतनिटन ॥ गरिवटित नकटनटेड शिक्ताक ক্ষামে। সোপানের সম গল। হয়েছে ভূবনে॥ পুনাভোমা बर्बी नश्किन २८७। निरवत कठोत्र जिनि शिलन शृर्छर्ड। निकृतन-बिट्नाहिनी पूलमी नामिनी। विकूत इत्रत थन विकूत तम्बी নাৰল পুলোর সার সে ফুল রতন। দেখিলে স্পর্নিলে হয় পাপ বিনাশন।। কোন কার্য্য নাহি হয় তাঁহার বিহনে। পাপের অনল সম তিনি এ ভূবনে। প্রির দেহ করিয়া ধারণ। পবিত্র হইল ধরা করিয়া স্পর্ণন ॥ ব্যক্ত ভীর্থের ইচ্ছা স্পর্শ করে তাঁরে। ধন্ত ধন্ত দে তুলদী এ ভবদাঝারে॥ ক্রাপ-নন্দিনী দেবী মনসা যে হয়। নাগের ঈশ্বরী নাগপ্জ্যা অভিশয়। সানিরাজ সমতের তিনি যে ভগিনী। নাগের ভূষণ তাঁর ভূজজবাহিনী। ে পতিত্রতা সতী আন্তিকজননী। জরৎকারু মুনিপত্নী নাগেন্দ্রবন্দিনী॥ সামত্র-অধিষ্ঠাত্রী স্থাসিদ্ধ যোগিনী। অকলক চারুমুখী বিহু পরায়ণা॥ বাহ হল মনসার কথা সমাপন। শুন ঋযিগণ দেবসেনা বিবরণ।। गर्मप्रयात निख-भाननकातिगी। वक्षीक्रभा (पवी वजानत्तत्र कामिनी॥ শ্রিকাপুত্ততে সবে করিয়া যতন। ষষ্ঠদিনে তাঁর পূজা করে জনগণ॥ किनिः म पित्न পূজা করে দর্বজন। পুত্র পৌত্র হদ্ধি হয় করিলে পূজন।। আজি ভক্তিভরে যেই পূজা করে তাঁর। সর্বাদা রাখেন শিশু যতনে তাহার।। विकारिको स्वती छन अविशेष। मक्टल अक्रना छाँदत करतन शृकन।। নভক্তিতে যেই করে দেবীর পূজন। পুত্র পৌত্র বাড়ে তার বাড়ে যশোধন।। ৰুট্টিলি সম্ভূটা হন তাহার পূজনে। বরদান দেন তারে প্রফুলিতমনে।। ক্র যদি সে পূজনে অসম্ভূতা হয়। তা হলে তাহার সর্ব্ব সংহার করয়।। वर्तात्र श्रीमाना कानी रत्नविनामिनी। यटरममस्यी जात्न कर्त्म जिनसम्।। ব্রম্ব নিওডের রণ বাজিল যখন। কালিকা ভূগার ভালে জন্মিল তখন।। শাবি শক্তি নাম তার শ্রেষ্ঠা বলবতী। কৃষ্ণভক্তিপরায়ণা অতি গুণৰতী। ক্ষতি ভবিত্ত তার যে করে পূজন। চতুর্কর্গ কল দেন করির। যতন। বৈশ্ব বৃদ্ধি প্রতিযোগ কেই হয় তাঁর।নিখানে করিতে পারে নকল সংহার॥ ক্ষেক্ত্রধান দেবী বহারর মতী। রত্তের আধার কর্ম্ব শতের প্রাক্তি।। ভীষাৰ কুপার যিলে সকল আছার। তিনি না গান্তির সামে ভিত্র বাকার। अपने अधिमें अति कर अविशेष । जनतम श्रे द्वारा विक्रिक्टिया

पुरुषकु (का करा) ८६ महाराव अस्तिरत । छोश्च दिनी मर्क वर्ष नित्रजनशैरत ॥ पर्व बड़ी स्था एकरी अने अधिने । डीका विना विथा कर अधिक मिना है তিনি নবাকার পূজা নৰে পূজে তাঁয়। নহিলে তাঁহার হুপ।ধর্ম নাহি লার।। সন্তি দেবী প্রনের প্রিয় পত্নী হয়। আদান প্রদান তিনি বিনা নাই স্থানী मिक्रमा गरनर ने कार्या शुक्ति दश । नात्री नत जा विद्रत्न दी नवन इस াগরাজ-পত্নী তুকি ত্রিলোকপূজন। অসম্ভূম সবে যার বিনা দরশন 😢 महर्माहमी हुनी (जन श्रिशन)। (पर नत्त्र शृंद्ध याद्र कतिया यज्या। দরিদ্র ভিকুক আদি কিবা ধনী আর।নাহি কিছু অগোচর নিকটে তাঁহার किंशन यूनित भन्नी श्रुं ि श्रविग्। मर्व्यत्नाक अर्थर्या ना ८१ति त्म प्रत्ने चुक्रभा चुनीला क्रमा घटमत घत्री। मर्व्यत्लाटक क्रम् इत्र विना म तम्भी ति में अन्दर्भत क्राय-शतिभी। क्रीड़ा-अविश्राकी प्रियो कामविद्यादिनी। অন্ধা সুশীলা রতি নাহিক যথায়। শৃন্ধার কৌতুক রস নাহিক তথায়। সত্যের গৃহিণা মুক্তি জেন ঋষিগণ। যাঁহার মারায় বদ্ধ দবিগণ। মোহপত্নী দয়া দেবী পূজ্য এ ভূবনে। করে দবে নিষ্ঠুরতা তাঁহার বিহনে ॥ প্রতিষ্ঠা পুণ্যের ভার্য্যা ভূবনে পূজন। জীবনে মরণ তাহা বিনা সর্বজন 📭 कीर्छि नात्म जात अक भूत्गात तम्भी। यत्भाविधातिनी त्मवी यत्भन्न जननी উদ্যোগ নাষেতে আর আছে একজন। ক্রিয়া নামে ভার্য্যা তাঁর রমনী রতন। এই দেবী প্রতি ভক্তি না আছে যাহার। সত্তরে উচ্ছন্ন যান বিহনে ভাঁহার। অধর্ণদেবের পত্নী মিখ্যা নাম হয়। বিধাতা নির্শিল তার শুন পরিচয়। সত্যৰুগৈ দেহ তার হয় অদর্শন। বেদেতে কথিত ইহা শুন ঋষিগণ না खिञोशूर्ग ज्ञाप्तर वर्ष दाशरत्उ। किनशूर्ग शूर्ग (पर धरत राष्यरः ॥. কপট তাহার ভাতা শুন পরিচয়। শান্তি লজ্জা ছুই পত্নী তাহার যে হয়। ানের তৃতীয় ভার্য্যা শুন ঋষিগণ। বুদ্ধি মেধা স্মৃতি নাম বেদের বচনা। তাহাদের হুপা বিনা হয় মূচ্মতি। কদাচার কুরমন মহাপাপী 'অতি॥ ধর্মের স্থানরী পত্নী মৃতি নাম তার। কন্মচার হয় নর বিহনে মাহার। कराइक यत्रभी निका मठी-भितामि। मर्कशान बाह्य निका त्यात मात्राविनी। कान भूकरवत्र जिन (अयुनी तजन। निवा ७ यामिनी नक्षा अरे जिन जन। लारकत त्रांगी कुश पृथा हुई जन। याँत उत्त कालगुक गरा कमाना। रिवतांत्रा मात्मरूठ जात जारह अकजन । श्रदा छक्ति मात्म पूरे (श्रती त्रजन। এ এই ৰেবীরে যেই নাহি করে ভক্তি। বিধাতা বঞ্জিত সেই নাছি পান্ধ हिका अस्टिक स्टबर्स (प्रवेगदेशक जननी । एककि ब्राधनगांका विश्वतिहरास्ति॥

क्रुपान अवित् मने थार्गविदगहिनी। विकि कक्क विनर्शिक छैदान कामिनी 🛊 वाक्रांचि व्यर्टम (बन्दे मांजीशन इस । अकांक त्रांशी माकि-व्यरण क्या नय ॥ भनारकत्र थित्रक्षा इत त्र त्राहिगी। नः का इन विवाकत-मनविटगहिमी ॥-রেবছা সিরির পত্নী ছুর্গার জননী। রন্দাবলী লোপাযুদ্রা বরুণা কামিনী। কাশিক্ষী রেবভী মিত্রা কৃতি জায়ুবভী। রুক্মিণী লক্ষণা সীভা এ সব যুবভী ॥ জার যথে দীতা আর লক্ণা কৃষিণী। এ তিন রমণী হয় লক্ষীসরপিণা। আক্রতি অংশেতে জন্ম যে করে এছণ। কৃষ্ণি ভাছাদের নাম শুন ঋষিগণ ॥" ভিত্তেশা সভাবতী যেই ব্যাসমাতা। প্রভাবতী রোহিণী যে বলভদেষতা।। ক্রকভর্মিনী ভটো দেবী ভাত্মতী। রেণুকা ভৃগুর মাতা অবলা যুবতী। প্রকৃতি অংশেতে জন্ম এসব নারীর। বেদের বচন জেম যত সব ধীর॥ 🛤 হেন নারীরে যদি নিন্দে কোন জনে।তা হলে প্রকৃতি নিদা হয় সেইক্সণে। **্রাক্ন অলন্ধার আর স্থচা**রু অম্বরে। বাসিত চন্দন দিয়া অতি ভক্তিভরে॥ পতিপুত্রবতী নারী যে করে পূজন। সুশীল সুজন সাধু হয় সেই জন II ষ্ঠানে করিলে পূজা ত্রাহ্মণনারীর। তা হলে হবে পূজা দেবী ভবানীর॥ **শুন নবে রম্ণীরা তিন জাতি হয়। কহি আমি এবে তাহাদের পরিচয়।।** বাতিত্রতা ধর্ম লক্ষা করি যেই জন। একমনে সেবা করে পতির চরণ॥ 🕊 ভৰভবনে হয় সে উত্তমা নারী। পতিরতা সত্ত্তণে হয় অধিকারী॥ मंग्री রমণী শুদ্ধ ভোগের কারণ। অনুদিন করে থাকে পতির সেবন।। ভোগ আশে সেবে পতি করিয়া যতন।রজোগুণ অধিকারী সে নারী রতন॥ दियं नाजी नर्दता सूथ वादक अयूका। अथवीं छुर्दात नीछ कार्द्या विष्ठका।। क्लेंगे हुई श अं क्रिक्ट क्रिक क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक क्रिक्ट क्रिक क्रिक्ट क्रिक क्रिक्ट क्रिक क्र । धरी अक (परिविनामिनी। जनम निज्न मिरे जामिया सिपिनी॥ জার অংশে যত সব নারী জনমিল। সেই হেতু তারা সব কুলটা হইল।। बार्स श्रेक्षाजित कथा छनितन शीयान। मकन छेलात रत्न श्रुक्षाजि श्रिथान॥ विषेत्य भृष्टिन पूर्वा यूत्रथ द्वाबन। विजीता शृष्टिन ताम तार्व कांत्रण।। ক্রিলোক নিবাদীয়া করিয়া যতন। তার পরে প্জিলেন তাঁহার চরণ। পারে দেবী সে জনম কল্পি পরিহার। প্রস্থতির গর্ভে জন্মিলেন পুনর্ববার।। विषय पानवगर्ग निधन कत्रिया। प्रकालत्य शिजिनिका चकर्ण छनित्य।। अविक्ति तम अनम रमनका-छपरत । शून ज्विहनन जानि दिनांकित घरत ॥ महोतिमं अकारम लिवि गठनिछ। शहरीड अछितास शार्ड मार्च म

সংশ্ব দাং পাতে জন্ম নিল গ্লানন। বিশ্বর দংলেতে জনিবেদ বঢ়ানক। গণেশ কার্তিক নাম উভরের হয়। জগতবদিনী যাতা ছুগার ভারতা। প্রথমে কমলা পূজে মলল রাজন। পরেতে জিলোকবাদী করিল পূজন। প্রথমে দাবিত্রী পূজা করে সৃষ্টিকর। জিলোকনিবাদী তাঁরে পূজে তার পরা। কালীরে প্রথমে জেলা করিল পূজন। পরেতে পূজিল দেবাহুর মুনিগণ। গোলোকেতে রাধানাথ করিয়া যতন। প্রথমেতে জীমতীর করিল পূজন। কার্তিকপূর্ণিমা দিনে আনন্দিতমনে। জীহরি পূজিল গোপ গোপিকার মনো। তৎপরে করিল পূজা ত্রন্ধা দেবগণ। পরেতে করিল তাঁর পূজা স্বর্বজন। গ্রহ ত প্রকৃতি কথা অতি মধুময়। বিরচিয়া পুলকিত দ্বিজ কালী কয়।

# চতুর্থ অধ্যায়।

### প্রকৃতি-মাহাত্ম্য ও শিবের দর্পচূর্ণ।

সন্মোধিয়া ঋষিগণ সনত-কুমারে। জিজ্ঞাসা করেন পুনঃ সুমধুর স্বরে। অপূর্ব জ্ঞানের কথা করিনু এবণ। এখন জিজ্ঞানি যাহা করহ কনি। প্রকৃতি-রূপিণী দেবী শুভা হৈমবতী। তাঁহার ছদয়-ধন দেব পশুপতি।। কেবা শ্রেষ্ঠ ইহাঁদের উভয়-মাঝারে। প্রকাশ করিয়া তাহা বলহ স্বারে।। এতেক বচন শুনি সনত কুমার। কহিলেন শুন শুন করিব বিশুরি॥ প্রকৃতিতে মহেশেতে কিছু ভেদ নাই। এক দেহ ছুই ভাগ জানিবে সবাই।। তথাপি প্রকৃতি-বশ দেব পঞ্চানন। প্রকৃতি-মহিমা বল কে করে বর্ণন। সৰু আদি তিন গুণ ধরিয়া প্রকৃতি। শিব-অনুগতা সদা আছেন যুবতী ত্রশাবিষ্ণু শিব আদি অমর-নিকর। প্রভুত্ব নাহিক কারো প্রকৃতি উপর।। প্রকৃতি উপরে দর্প যদি কেহ করে। প্রকৃতি অমনি তার গরব সংহারে।। তাহার প্রমাণ বলি করহ প্রবণ। একদিন দেবদেব শিব পঞ্চানন॥ বীনিয়া चारहन यूर्य देवेलाम नगरत। निकर्षे श्रक्ति वर्ग-मिः शामरनाशरत्।। নানবিধ প্রিয়ালাপ করিয়া তখন। মৌনভাবে উভয়েতে রহে কতকর।। मत्न महन हिला कहत (प्रव महत्यत्र । नवात्र श्रमान जामि विस्त्र उपत्र ॥ नित्यस्य कतिराज् भाति नकनि नःशति । त्क जार् जागात नम जाज-गावाता (तय रेमणा गरेव कहत यम छेशीमता। खरकत शुनारे वामि घरणंक कामना। कति अवत्रविकदतं। ভिक्तिष्ठति कदत्र श्रृका मरु जोगोदृत् ।

विकास गाइन काम १७ व्यक्तिकों है। यह जास करने कि अंदर्श अभिन माअट्यार पा नाम बादन नर्सकर। श्वार नर्सन्न पाना दर हराह त्यांका প্ৰকৃষ্ণ থারি স্থানি কন্তু, একযুগ। আনা হতে সগতের যত ক্রম রুখ। মত विद्रों जिल्हारवटन विजार यानारम । क्रवंत जाजाती किन्न मम विष्रामारम । যতেক এখা আছে অবনী যাঝার। আমা বিনা কেবা আর আইকারী তার। কেওঁ মুক্তি ধরি আমি কে ব্ঝিতে পারে। বিষ ভক্ষি রাখিলাম জগত সংসারে। প্রেরপে আত্মগর্ব করি পঞ্চানন। মৌনভাকে কৈলাসেতে করেন চিত্তন ।। প্রদিকে আপন মনে জানিল শিবানী।গর্কিত হয়েছে এবে দেব শূলপাশি। বিবের গরব আমি করিব ভঞ্জন। এত ভাবি নখে ভূমি করে বিলিখন। नद्यटण मुखिका (परी निथन कतिरत्र। लिलन विकि। मम छिका जूनिएम्॥ শিবের হত্তেতে তাহা করেন অর্পণ। দেখি বিমোহিত হন দেব পঞ্চানন। শপুর্ব ওটিকা সেই কি বর্ণিতে পারি।তাছার তেজেতে মণি যায় বলি হারি।। ছেন গুটীর সৃষ্টি বিধি নাছি পারে। হাতে করি পঞ্চানন বিশেষে নেহারে॥ ছে খিলেন এক পার্থে দার মনোছর। দেখিতে দেখিতে বাড়ে উত্তর-উত্তর॥ সংশিক্ত কৰাট আহা বিচিত্ৰ নিৰ্মাণ। মণি মুক্তা ঠাই ঠাই অতি শোভমান॥ দৈৰিতে দেখিতে দার উন্মুক্ত হইল। পঞ্চানন অবিলয়ে প্রবেশ করিল।। বিস্তীর্ণ প্রান্তর ভূমি অতি ভয়কর। নবদুর্কা শোভে কিবা অভি মনোহর।। ক্রারিখারে রক্ষ শ্রেণী কিবা শোভা পায়। এ হেনতকর শোভা নাহিক ধরায়॥ বর্গ মন্ত্রা রসাতলে যত তরু আছে। হেন রক্ষ তার মাঝে কে কোথা দেখেছে॥ মাবে মাবে সরোবর অতি মনোহর। সারস সারসী আদি ভ্রমে জলচর।। নীলপন্ন স্বৰ্পন্ন পীত পদ্ম আর। ফুটিয়া রয়েছে কত শোভার আধার॥ করণে প্রতির ক্রমে করিয়া লঙ্গন। অপর দ্বারের কাছে যান পঞ্চানন।। ছারেতে বসিয়া এক দেব মহেশর। দশমুখ ধরে সেই অতি ভর্কর। ভুজক কুরণ পেহে কিবা শোভা পায়। চক্রকলা ভালোপরি মরি কিবা তার।। ক্রকবীদ্য গালবাদ্য ঘন ঘন করে। প্রকৃতির জয় মুখে নিয়ত উচ্চারে। वसम् बादत्र व्यामितन शकान्त। वादत्रक क्रोक्याव क्रिन उसन्। কিছুমাত্র বাধ। নাহি দিলেন তাঁছারে। বিময়ে প্রবেশে শিব পুরীর ভিতরে। विशिष्ठ अभूक् भौका कि विश्वनित । विस्थाहिक हरत निव ब्रह्म क्रक्रमा চারিদিকে নেত্রপাত করি পশুপতি। কত যে দেবতা ছেরে নাছিক অবধি। कुछ देख कुछ पहि कुछ प्रमान । कुछ नाइ कुछ पूर्व कुछ जानन ।। कुछ क्षेत्र विश्व दक्ष शिल्क शांद्व। तदीहरू सगरश्च यम कामके शत्क

क्षक पूर्व 'पूर्व दिन पूर्व काजा। एक्यू व नक्षेत्र 'विविध प्राकृति ।। क्लोब्स भेड़पुर्य महत्त्व यूर्य कति। कंड उन्हों कड विक्र-शनिवादत नीस्त्रि गर्ने একমুখ পাঞ্যুধ কার পাঞ্চানন। সামাত্ত দেবের মত আছে আমুণন ষেখিতে দেখিতে শিব চলিতে লাগিল। সন্মুখে অপূর্বে গৃহ দেখিতে পাইল 🍇 बारतटङ मंजारत न्यारह (नव अर्गनन। शिरत शीरत यात उथा राज अर्थामने পুত্তে প্রবেশ করি দেখে পওপতি। ব সিংহাসনে শোভে এক্তি-মুরতি 🌋 চারিদিকে অগণন যত দেবগণ। সম্মুখেতে ব্রহ্মা বিষ্ণু আ एनस्य मंडर्थ महसर्थ काता जना विक निव मव अहू- जीवां है। ষেই দেব বেই কার্য্যে আছে নিয়ে।জিত।কার্য্যের হিসাব সবে দিতেই ত্ররিতা সিদ্ধ সাধ্য যতি খানি কত অগণন। কর্যোত্তে করিতেছে দেবীর স্তর্ক h এই সব নিরখিণা দেব মহেশর। ধিকার করেন কত আত্মার উপর্ 🎎 অবশেষে নেত্র মুদি দেব পঞ্চানন। বেদবাক্যে করে কত প্রকৃতি-শুবন 🎉 স্তব শেষ কৰি চকু যেমন মেলিল। কিছুই নাছিক তথা বিষয়ে জন্মিল। পূৰ্বৰত আছে বিসি কৈলাস নগরে। সন্মুখে শিবানী সতী-ভুলিখন করে 👢 তাহা দেখি গর্কত্যাগ করি পঞ্চানন। অধোমুখে লক্ষাভরে রহেন তখন। পুরাণে সুধার কথা অতি মনোহর। বিরচিয়া দ্বিজ কালী দানন্দ অন্তর।

#### পঞ্ম অধাায়।

নিবিপ্রিস পুষ্পনির্ণা, ভুজবল নাম তন্ধরের উপা**খ্যান** ও বিলোৎপত্তি।

শ্বিষিণ সধােধিয়। সনত কুমারে। জিজ্ঞানা করেন পুনঃ সুমধুর স্বরে॥
শিবের পরম তত্ত্ব শুনিতে বাসনা। যত শুনি তত বাড়ে মনের কামনা॥
এখন জিজ্ঞানি যাহা ওতে মহােদ্য। প্রকাশ করিয়া তাহা করহ নির্ণর॥
কোন্ পুলে অভিত্ত হন পঞ্চানন। প্রকাশ করিয়া তাহা করহ বর্ণন॥
এতেক বচন শুনি বিধির কুমার। বলিলেন শুন বলি করিয়া বিশুার॥
বিবিধ ভূষণে ধেনু করিয়া ভূষিত। বিপ্রকরে যদি দেয় বংশের সহিত॥
তাহে যেই পুণ্য হয় ওতে খবিগণ। করবীর পুলে যদি পুজে পঞ্চানন॥
নেই পুণ্য লাভ হয় নাহিক সংশয়। খেত করবীরে কিয় ওতে খবিচয়॥
শ্ভেকরবীরে হয় য় পুণ্য সঞ্চার। লাহিতে হিগুণ পুণ্য শান্তের বিভার॥
শিবে ফরি কয়য়য় অর্পণ। তাতে ঘেই পুণ্যলাভ করে পন্নাশ।

किर कन नाक दत्र त्नेकांनी क्छरर। उक्तिकरत शूरक बान त्वन नकानत्न क ভাহা হতে শততা কুন্দ পুলে হয়। শাস্ত্রের বচন ইহা ভহে খবিচয়॥ ্রাপুলেতে যদি পূজে মহেশ্বরে। কুন্দ হতে শতত। ফল পায় নরে॥ 🛾 🌠 বিবলিক করিয়া নির্মাণ। মুক্তা দিয়া যদি করে পুজার বিধান ॥ े छार्ड के भूग भात भूगावान् नत । एता भूरक राहे भूग यकि भूरक इत ॥ ्रिवरेप . लंशा लिक कतिरल शृष्टन। তाट राहे भूगा भाग भूगानान् जन। ্রুপক ফুর্শেতে যদি পূজে মহেশ্বরে। সেই পুণ্য পায় সেই শাক্রের নিচারে॥ বৈশাখে শবিত্র মাদে যেই সাধুজন। শুলুবর্ণ চামরেতে কর্মে ব্যজন। ি**জাহে যেই ফল দেন দেবদেব ছর। শিরী**ষ ফুলেতে নেই পুণ্য পায় নর॥ স্প্রেধ মহাযতে যেই পুণ্য হয়। কোটি গঙ্গান্ধানে হয় যেই ফলোদয়॥ ্লাগকেশরেতে যদি পূজে মহেথরে। সেই পুণ্য হয় লাভ কহিনু সবারে॥ क्षेष्ट्रक्म ফুল শিবে করিলে অর্পণ। গয়াপ্রাদ্ধ ফল পায় সেই সামুজন॥ ্ছুলনী অর্পণে পায় নেই পুণ্য নর। চান্দ্রায়ণ ফল পায অর্পিলে তগর॥ **কাশীধামে উপঝান যদি কেহ** করে। তাহে যেই পুণ্য পায় পুণ্যকান্ নরে॥ িবজ্বপুষ্পে যদি শিবে করয়ে পৃজন। সেই পুণ্য পাঘ তাহে দেই পুণ্যজন॥ পারমাত্মা শিবে যদি কোন সাধু নরে। ধুস্তুর রুপুন বিয়া পুজে ভক্তিভরে॥ 🛶 কাদশী উপবাদে যেই পুণ্য হয়। সেহ পুণ্য পায় সেই,নাহিক নংশয়॥ কেতকী পুষ্পেতে শিবে কছু না পূজিবে। পূজিনে বিফন পূতা অন্তরে জানিবে। ্र শিৰপ্ৰিয় পুষ্প যাহ। করিত্ব বৰ্ণন। এই সব ফুলে গুজা করিলে সুজন॥ ্**ষেই পুণ্য উপার্জ্জন দেই জন করে। পর্নপুষ্পে সেই পুণ্য শাস্থের বিচারে॥ শেষ পুপা হতে** শ্রেষ্ঠ নাহি পুষ্প আরে। পরম সন্তুফী ইথে শিব দয়াধার॥ াকিছুমাত্র পুষ্প যদি কভু নাহি মিলে। পৃজিবে শঙ্করণেবে ওজ বিলদলে॥ , বিঅপতে মহাতুষ্ট দেব পঞ্চানন। ইহার সমান নাহি এ তিন ভুবন॥ ্লু**ভক্তির বিল্পত্তে** যদি পূজে হরে।অভক্তিতে কিম্বা দেয় শিবের উপুরে॥ **্ষাহার নিকটে** হয় শমন ৮মন্। অন্তিমেঁদে জন যায় কৈলাস ভূবন॥ তাহার প্রমাণ বলি শুনহ দকলে। শুনিলে পাতক মুক্তি শাক্ষে হেন বলে॥ ্রশ্বর্কেতে সাছিল এক দারুণ তক্ষর। চৌর্যারতি দস্মারতি কার্কেতে তৎপর॥ পুরিদ্রব্য সলা সেই করিত লুঠন। চক্ষের নিমেবে সব করিত হরণ॥ चिकाक बरेशा मद्य जाबात शीज़्रान। मन्ज कृतिक हम्को क्रिकेत प्यान॥ ্রিশ্রতিবাসী সবে ঐক্য হইয়া তখন। রাজদ্বারে তারে ধরি করিল অর্পণ।। ্রিক্সক্র নাম্ ধরে তারণ তক্ষ। গ্রুকরি-তারে-বিল রাজার গোচর 🏖

বিশেষ প্রমাণ পৈরে সেই ররণতি। নির্বাদনে দেই ছতে দিল অবুষ্ঠি। রাজার আদেশ পেয়ে কিন্ধর সকলে। দুরীক্বত করি দল দুট ভুজবলে 📳 সে দেশ ছাড়িয়া দুষ্ট করিল গমন। ক্রন্থে উপনীত আসি অবস্তীভবম। রাজ্য-প্রান্তভাগে গিয়া কুটার নির্বিল। শেই স্থানে ভুজবল বদতি করিল ॥ সভাব যাহার যাই। কভু নাহি যার। চৌর্যা হেতু ছুই সদা ঘুরিরা বেড়ার 🏗 গোপনে উদ্যানে পশি ফলমূল লয়ে। বিক্রয় করত্বে ছুট বাজারেতে গিয়ে। জীবিকা নি দাহ স্কুট এইদপে করে। উত্যক্ত হইনা লোক চিডয়ে **অন্তরে ॥** এইরূপে দ্রব্য যত করয়ে হর।। কিনু কেছ নাছি জানে চোর কোনু জন 📢 अकम। উग्राटन जिल्ल शतना कितिए। विख्वतम उठि क्रिके कमार्थी इरेएस । নিশীথ রজনী যোর অন্ধকারময়। অপপ অপপ হৃষ্টি তাহে দেখি লাগে ভার ॥ মোমবার সেই দিন চতুর্দেশী তিথি। বিল্লমলে ছিল লিঞ্চ দেব পশুপতি 🗱 তশুর হক্ষেতে ক্রনে করি তারোহণ। অসংখ্য এফল পাড়ি করিল এহণ 🕼 ভাহাতে প্রের জন নিজোপ্রি পড়ে। বিল্পত্র পড়ে কত **নিবের উপরে ॥** ন্জল বিজের দন গেযে মহেশর। পরম সম্বন্ধ হন তক্ষর উ<mark>পর।</mark>। এইরণে বিল্পলন লবে হুটাতি। ধীরে ধীরে চলি গেল আপন বনতি।। কালকুমে েই ছুউ তাজিল জীবন। যমদুত তার পাশে করিল গমন। হেনকালে শিবদূত গাগত হইল। দুট দূতে বাক্যনুদ্দ ক্রমেতে বাধিল। যাৰ্ত কহে ওন শিল্পপুর। যত দিন বেঁচেছিল দকণ তক্ষর।। ধর্ম বোধ নাহি হুদে আছিল বান। চৌর্যায়ত্তি করি কাল করিল যাপন।। সেই নাপে লয়ে যাব শান গোচরে। চিরদিন রবে ছুট নরক ভিতরে। এত শুনি শিবদুদ রক্তনের করি। চণেট আখাত করে মাদুতোপরি।। সভরে খ্যের দূত করে প্রাথন। শ্যননিকটে গিয়া করে নিবেদন।। চ্চতপ্রে য্রাজ আপ্নি সানিল। শিবনুত নিকটেতে লেখিতে পাইল। শিবদূতে জিজ্ঞানিল ইহার কার।। শিবদূত কহে ওন শমন রাজন। শিবের পরম ভক্ত এই হ্রুমতি। চত্র্দেশী দিনে পূজে দেব পশুপতি।। সজল জীফলপত্রে করিল পূজন। তাহে পরিতুষ্ট হন দেব পঞ্চানন। শিবের আজ্ঞায় আমি লইতে ইহারে। আসিয়াছি দওগর কৃহিনু তোমারে।। কৈলাস নগরে লয়ে করিব গমন। শিবের কিষ্ণর তথা হবে এই জন।। দূতমুখে এই কথা তানি দঞ্ধর। উদ্দেশে প্রণাম করে শিবের উপর 🕸 जकरत ছाড़िया शैन भगन ताजन। भिवमूछ शिन शरत रेकनाम छाम।। · भिटवह अमारम मिर्म माझमा जकत। दिनमामभूतीरण तरह इरा अव्हात ।)

বিষ্পুত্র যদি পূর্বে দেবদেব হরে। অবহেলে তরে দেই ভবপারাবারে॥ ভবডোর তারে কভুনা করে বন্ধন। শান্তের বচন ইহা বেদের বচন।। প্রেড ধনি ঋষিগণ সুষধুর অরে। জিজ্ঞাসা করেন পুন বিধির কুমারে।। विकास इक्स्त अया कृतर की उन। শুনিয়া পবিত্র হৌক পাতকা অবন।। জুঁজ ভান বিধিয়ত কহে পুনরায়। তন তন দেই কথা বলিব স্বায়।
ভ কাহিনী সেই অতি মনোহর। তনিলে পবিত্র দেহ পবিত্র অন্তর।। ক্রিলালে কোন দিন বৈক্ঠ নগরে। বসিয়া আছেন হরি নিংহাননোপরে॥ বিশ্বিতে কমলা বসি পুলকিতমন। জিজ্ঞাসা করেন নাথে ওহে প্রাণধন॥ আমাপেকা কেবা তব প্রিয় এ সংসারে। কহ তাহা বিবরিয়া অধীনী গোচরে॥ জত শুনি মিষ্ট ভাষে কহে জনাৰ্দন। তুমি মম প্ৰাণধন জীবন-জাবন॥ িক্স এক কথা বলি কমল-আলয়ে। ভক্তিভাবে যেই ডাকে আমারে হৃদয়ে॥ ক্রোপেকা দেই প্রিয় জানিবে আমার। সদত ব্যতি মম নিকটে তাহার॥ ্রেন্ ভক্ত একমাত্র দেব পঞ্চানন। শিবাপেকা প্রিয় নাহি এ তিন ভুবন।। শিবের অর্চনা করে যেই সাধুমতি। শিব হতে প্রিয় সেই শুনহ যুবতি॥ শিবপুরা নাহি করে যেই ছুরজন। তাহার উপরে রুট আমি সর্বকে।। পুত্রপ পূজা আদি যাহা কিছু করে। সকলি বিফল তার জানিবে অন্তরে॥ বিবেরে পৃজিলে হয় সকল মঙ্গল। নৈলে পদে পদে তার ঘটে অমঙ্গল॥ ক্রারণ প্রিয় মম শিব পশুপতি। যেই জন তাঁরে পুঞ্চে করিয়া ভকতি॥ সকল জনম তার সার্থক জীবন। অন্তিমে সে জন পায় আমার চরণ॥ ক্ষিত শুনি লক্ষ্মী দেবী মলিন-বদনে। ধীরে ধীরে কহে নাথ নিবেদি চরণে॥ জিউাসিনী আমি অতি নাহিক সংশর। জীবন জনম মম বিফল নিশ্চয়॥ ্ৰিক্ধিক্শত ধিক্এই পাপীনীরে। বঞ্চিত করেছে বিণি হায়রে আমারে॥ ৈ তের পূজন আমি নাকরি কখন। জনম বিফল মম বিফল জীবন।। कि कल भम छटर शनाधतु। ना शृक्तिय कच् आमि द्वारापत रत्न ॥ বিক্রার করে বিঞু-প্রণয়িণী। সাস্ত্রনা করিয়া কহে दুরি গুণমণি॥ ्खन প্রাণপ্রিয়ে না কর রোদন। ইথে তব দোষ নাহি জানিবে কখন ॥ হুবুর মাহাত্ম্য আমি ভোমার গোচরে। কীর্তন করেছি নাহি কখন সাদরে॥ किए जानित्व प्रि देशैंत महिमा। हेटथ उव ताहि लाव छन स्टानाना॥ আমার বাক্য করহ প্রবর্গ। অন্ত হতে শিবপূজা কর জাচরণ॥ थि किन शक्य नामरत । अवर्थ श्रुपन क्रूमे निष उदबानदन ॥

পৰপূপ নকভেঁত কহিছ তোমার। অভ হতে এত হও নিবের পূজার। বিধানে সংকল্প করি অতি ভক্তিভরে। শতপল্লে প্রতিদিন পূজ মহেশ্বরে 🖟 ইশে পরিতৃষ্ট হবে দেব পঞ্চানন। পর্ম সম্ভুষ্ট হব আমি জনার্দ্ধন॥ শিতবর তৃতিতে তৃত অমরনিকর। সর্বপৃজাফল পায় পৃতে হাই নর 🛊 শিবের পূজনে হয় সবার অর্জনা। পূরণ করেন শিব মনের বাসনা 🛊 এত শুনি লক্ষী দেবী বিমল অন্তরে। পূজিতে গ্রন্ত হন দেব মহেশরে ॥ দংকশ্প করিয়া শিবে করেন পূজন। শত পদ্ম প্রতিদিন করেন অর্পণ। নিজহত্তে পুষ্প দেবী চয়ন করিয়ে। গণনা করেন নিজে একার্ত্ত ছদুয়ে। তার পর গঙ্গাজলে করিয়া কালন। পুনশ্চ গণেন দেবী হয়ে একমন ॥ তার পর পূজাকালে পুনশ্চ গণিযে। পূজায প্রহত্ত হন একান্ত হলহো॥ এইরপে প্রতিদিন করেন পূজন। বর্ষাবিধি হবে পূজা একপ মনন॥ বংসর অতীত ক্রমে এরপে হইল। শেষ দিন বংসরের আসি দেখা দিল।। সেই দিনে পূর্ব্বত করিয়া চরন। পূর্ব্বত গঙ্গাজলে করিয়া কালন 🛊 ব্রিবার গণনা করি একান্ত অন্তরে। পূজায বসিল দেবী অতি ভক্তিভরে॥ এদিকে পরীকা হেতুদেব পঞ্চানন। ছুই পদ্ম তাহা হতে করেন হরণ॥ এদিকে কমলা দেবী এক এক করি। শত পুপা ক্রমে দেন শিবলিক্ষোপরি ॥ ক্রমেতে দেখেন ছুই পুপ হ্যান হয়। তাহা হেরি পদ্মালয়া বিদিত-ক্রদয় # गरन गरन श्रानश करतन हिस्त। हांग्र हांग्र क कतिन क्यूम इत्।। ভ্রমেতে হয়ত আমি কালন করিয়ে। গণি নাই পুন তাহা মনেতে ভূলিষে।। প্রত্যহ সাদরে আমি গণি তিনবার। ভ্রমে আজি গণিয়াছি শুদ্ধ ছুইবার। ভক্তির শৈথিলা মন হয়েছে নিশ্চয়। বিফল সকলি মম নাহিক সংশয়। দ্বিপন্ন হয়েছে ম্যুন কোথায় পাইক। কিরূপে অপর দ্বার। কুমুম আনাব॥ নিজহত্তে প্রতিদিন করেছি চয়ন। প্রহত্তে আনয়ন অযোগ্য এখন। নিঙ্গেও উঠিতে নারি আসন হইতে। উপায় কি হয় এবে ভাবিতেছি চিতে।। এইরূপ চিতা করি বৈকুণ্ঠ-ঈথরী। মৌন হয়ে রহে নেত্র নিমীলিত করি॥ কাকাল ভিন্তা করি কছেন তখন। স্মৃতিপটে দিব্যকথা হয়েছে বরণ।। একদিন জনার্দ্দন ভয়ে শয়াতিলে। বলেছিল প্রিয়ভাষে মোরে করে কোলে। তুমি মম প্রিয়তমে ফুল সরোবর। তব কুচন্বয় ইথে পদ্ম মনোহর।। হরির বচন মিখ্যা না হয়। কখন। মম তন্ত্র পদ্ম হরির বচন।। एनणरम श्रिट्य आर्पि शृष्टिय मायदा। ইर्थ कृषे इत्य इति आयात उत्परत्रं॥ मरन मरन अन्न किया केत्रिया जैसन। जाशन करबरण ह्वी करनम धारण।



্ডাহা দেখি গুনদ্ধ বলিতে লাগিল। জনমি তোমার অঞ্চেজনম সফল॥ আমা কোঁছা দিয়া ভূমি পৃজিবে শিবেরে। ধরা ধরা মোরা দোঁছা জগত সংসারে। এতেক বচন শুনি ক্মলা তখন। মিউভাষে শুনদ্বয়ে কৈছেন বচন। े आभीत মন্তক যথা দেবদেব হরে। সদত করয়ে পূজা অতি ভক্তিভয়ে॥ দেরপ তোমরা দোঁহে হয়ে একান্তর। শিবের পূজনে অদ্য হও ততপর।। . শিবেতে হরিতে ভেদ নাহিক যেমন। পদ্ম সহ তোমা দোঁহে জানিবে তেমন॥ **হস্ত পদ মুখ শির নখ আদি করে। যেমন জন্মেছে সবে আমার শরীরে॥** শেরপ তোমরা অঙ্গে লভেছ জনম। এখন আফার বক্যে করহ প্রবণ।। **ছিপর হয়েছে হান শিবের পৃজনে। তাহার প্রক হও তোমরা ছজনে।** এজ বলি বামস্তন বামকরে ধরি। দক্ষিণ হাতেতে ছুরী নিলেন ঈশ্বরী।। **প্রকাতরে হাস্তমুখে** করিয়া ছেদন। শিবের উপরে তাহা করেন অর্পণ।। পঞ্চাকর মন্ত্র দেবী মরণ করিয়ে। শিবের শিরেতে দেন একান্ত কদরে॥ ষেই স্তন হরি পূর্বেক করিত মর্দন। অবহেলে সেই স্তন করিল ছেদন॥ <mark>খাতনা কিছুই বোধ না করি অন্তরে। হাসিতে হাসিতে দেন শিবশিরোপরে।।</mark> এইরপে বাম স্তন করিয়া ছেদন। ক্লতার্থ করেন জ্ঞান কমল। তখন॥ তদন্তরে অহা শুন ছেদিবার তরে। উদ্যুত হলেন দেবী একান্ত অন্তরে॥ বাম শুন এইরূপে করিতে কর্তুন। দেখিয়া ছুঃখিত হল দেব পঞ্চানন॥ অ্যু স্তন ছেনিবারে বৈকুণ্-ঈশ্রী। যেমন উদ্যত হন শিবনাম শ্রি॥ अपनि पट्र (फर-एव श्रक्षानन। वर्गलिकाशित जागि फिल्न पर्गन॥ ভল্রবর্ণ শ্রেতকায় অতি মনোহর। ভন্মাধা নীলকণ্ঠ ব্রিলোচন হর। জটাজুট শোভে শিরে লোহিত বরণ। কটিতটে ব্যাঘ্রচর্ম অতি স্থশোভন॥ নাগ্যজ্ঞ উপবীত দোলে গলদেশে। আৰিভ ৃত দেব-দেব মনোহর বেশে॥ इस जूनि कमनादत कदतन वाता। ना कत ना कत माठः ध सन एकन॥ জানিয়াছি তব ভক্তি আপন অন্তরে। পূর্ণ তুব মনোরধ কহিন্দ তোমারে॥ (यहे खन ज्ञि गांठः करतह (इफ्न। शूनक इहेरव ठांहा शूर्देवत गठन॥ অপিয়াছ ছিন্ন স্তন মম লিকোপরে। রুখা নাহি হবে তাহা জানিবে অন্তরে॥ খুই স্তন রক্ষ্রপে লভিবে জনম। ঞীফল হইবে নাম ভূনহ বচন॥ ৰিব্লাতনে চন্দ্র হুর্যা যতদিন রবে। ততকাল তব কীর্ত্তি ঘোষণা করিবে॥ , আমার পরম প্রিয় হবে তরুবর । সেই পছে মম পূজা করিবেক নর॥ अक्षांक विश्वभटक कतित्म भूजन ! श्रीय महारे द्वं आपि भिकानन ॥ श्राट्यंट आक्रांत लिए कतिया निर्यान । वर्ग द्वार्ती यपि केंद्रत श्रुजात विशान ॥ অথবা প্রবাল মুক্তা ইত্যাদি অপিরে। ঘণ্যাপি অর্জনা করে প্রকাশ্ব হলরে।
তথাপি তেমন তৃষ্ট না হব কৈখন। বিশ্বপত্তে পরিতৃষ্টি লভিব বেমন।
বিশ্বদলে গলাজুল মিপ্রিত করিয়ে। মম লিকোপরি দিলে ভক্তি যুত হরেঁ।।
তাহারে করি যে আনি কৈবল্য অর্পন। আমাতে তাহাতে ভেদ না রহে কখুন।।
কাস্ত হও এবে দেরি সাগরনন্দিনি। জননী স্বরূপা তৃমি হরি বিমোহিনী।।
মনোরথ পরিপূর্ণ হইল তোশার। তোমার অন্তর শুর্দ্ধ ভক্তির আধার।।

কমলা এতেক শুনি সানন্দ অন্তরে। ভক্তিভরে স্তব করে দেব মহেশ্বরে।। নমে। নম দেবদেব শশাক্ষ শেখর। ত্রিকারণ-হেতু ভূমি ওছে দিগন্দর ।। ' মন প্রাণ আত্মা সামি করিত্ব অর্পণ। সলা যেন ভাবি হৃদে তোমার চরণ।। শশধর সন ভব মূর্ত্তি মনোহর। শিরে শোভে চন্দ্রকলা অতীব স্থানর। পাপকোট-নাশী তুনি ওহে ত্রিপুরারি। মৃত্ হাস্থ আস্থ পাশে যাই বলি হারি। ত্রিলোচন কিবা শোভে মনোবিমোহন। ধবল রুয়ভোপরি কর আরোহণ।। প্রদীদ প্রদীদ দেব নমামি তোমারে। করুণা কটাক্ষ কর আমার উপরে।। তুমি সত্ত্ব রজ তম গুণন্যময়। ডিগুম বাজাও সদা তুমি মহোদয়। সুখদাগরেতে তুমি কর দন্তরণ। জয জয় জয় দেব ওহে পঞ্চানন।। সৃষ্টি স্থিতি লয়কর্তা তুণি গুণাধার। কখন সাকার তৃমি কভু নিরাকার।। ত্রিনয়ন হেরি তব ললাট উপরে। স্থ্য চন্দ্র অগ্নি দম কিবা শোভা ধরে।। ইচ্ছাবশে কর তুমি বিশ্বের সূজন। ইচ্ছাবশে করিতেছ জগত পালন॥ ইচ্ছাবশে কর তুমি পুনশ্চ সংহার। কে বুঝিবে তব লীলা ওছে গুণাধার।। শশানে শশানে তুমি কর বিচরণ। প্রেতধূলি তব অঙ্গে অতি সুশোভন।। ভুতনাথ তব নাম ভুত অনুচর। কটিতটে ব্যাঘ্রচর্ম তুমি দিগম্বর।। বিরাজ করহ তুমি লাধুর অন্তরে। প্রেতভূমি এর তুমি নমামি তোমারে 🦫 মহেশ ত্রিপুরহর তুমি ত্রিনয়ন। নীলকণ্ঠ ত্রিলোচন ভন্মবিভূষণ।। ছঃখুহর ওছে হর করি নমসার। পুনঃ পুনঃ নতি করি চরণে তোমার।। এই রূপে স্তব করে কমনা ব্যুতী। পরম সম্ভূট হয়ে কহে পশুপতি ।। সন্তোষ লভিন্ম ফাতঃ স্তবেতে তোমার। বর্র মাগ ওগো দেবী বচনে আমার॥ এত শুনি লক্ষী দেবী কহে পুনরায় । নমস্কার নমস্কার এণমি তোমার।। বিষ্ণুর গৃহিণী আমি সাগর-নন্দিনী। ভক্তিবশে হেরিতেছি তোমা শূলপাণি॥ ভাগ্যবশে লভিলাম তোমার দুর্শন। ইহাপেকা কিবা বর ওছে পঞ্চানন।। এইমাত্র মালি আমি ভহে মহেশর। তবোপরে থাকে যেন সদত অন্তর।। क्षा छनि देवर दिरदिष्ठ शिकानन। अविदेव इदा यान् दिन्तान छन्।।।

अन्यव रेन्नार्यव श्रक्कः नाकः निरंत । क्रम्मनने क्रिया अरम् क्रमा ने-स्थाप्रस्य। জ্তীয়া তিথিতে হয় জীকল জন্ম। ঋণুবর পবিত্র রক্ষ মতি বিশোহন ।। আঁগত হইল তথা অমর-নিকর। ত্রন্ধা বিক্ত জাদি করি আর মহেশুর।। रमन्भिज्ञोगन मत्त करत जागमन। रमिश्लन मत्नोहत जरू विस्माहमु॥ ষ্ট্র ত্রিশত্র শোভে অতি মনোহর। স্বীয়তেজে দীপ্তিমান অতীব স্থানর।। दिवत्रा। जरूरत कति पत्रगत। ভक्ति छटत थन्मिन मकरल ज्यून।। असारत मदताबि भदत दिवक्षं देशत। कहिलन छन छन अगत निकत।। মটনাছর বিশ্ব রক্ষ করিছ দর্শন। ইহার যতেক নাম করহ এবণু।। শালুর ঐফ ব বিশ্ব শিব তীর্থপদ। শাণ্ডিল্য শৈলুষ পুণ্য ও কোমলচছদ।। कुषाक भाभव विकू प्रवावाम जन्न । जिनशन एक्नवर्ग मः यगी विजन्न ॥ শিবপ্রির আদ্ধদেব বর তার পর। একবিংশ নামধারী এই তরুবর।। প্রকবিংশ নামে তরু প্রসিদ্ধ হইবে। পরম পবিত্র রক্ষ ধরায় জানিবে।। শূৰ হতে শত ধনু পরিমিত স্থান। পরম পবিত্র কেত্র শাস্তের বিধান।। ষ্থ্য হতে ভূমিতলে অই পরিমাণে। পরম পবিত্র ক্ষেত্র জান সর্বজনে।। ব্রিপত্র শোভিছে যাহা করিছ দর্শন। দেবত্রয়রূপী উহা ওহে দেবগণ।। ভূৰ্ত্বপত্ৰ স্বয়ং শিব বামপত্ৰ বিধি। দক্ষপত্ৰে আমি বিজু আদি নিরবধি॥ হার। পত্র কভূ নাহি করিবে লজন। কভু নাহি তা ্রারি অর্পিবে চরণ॥ শক্তিলে অথবা স্পর্শ করিলে চরণে। আয়ুঃশেষ হয় তার শান্তের বিধানে॥ निकारीन ताहे जन हरेंद्र निक्त । आभात वहन रेहा क जूमिथा। नत्र॥ শার পুষ্প সহম্রেতে করিলে পূজন। যেই ফল সাধু নর করে উপার্জ্জন।। পুজিলে ঐকলপতে নেই কল হয়। পরম সম্ভুট ইথে শিব গুণ্ময়॥ ্রাখা ভাঙ্গি কভু নাহি করিবে পূজন। আরোহণ না করিবে বুদ্ধিনান জন।। নিম্মহতে পত্র যদি পাড়িবারে নারে তা হলে উঠিবে হক্ষে অতি ধীরে ধীরে।। সাবধানে উঠি পত্র করিবে চয়ন। কলাপি না হয় যেন শাখার ভঞ্জন।। বিৰপ্ৰ যদি হয় কলাচ খণ্ডিত। অথবা প্ৰকৃত থাকে মেন অখণ্ডিত।। नकरनाट पूर्व रन (नव शकानीन। मकल शादार रह है। हो इ श्रुक्त ।। ছয় মাস পরে পতা পয় যিত হয়। শাতের প্রমাণ ইহা কাতু মিখ্যা নয়।। স্পূর্বেবে বিঅপত্ত করিবে পূজন। কভুনা পূজিবে কিন্তু দেব গজানন।। रकारकर क्यू नाहि विद्युश्व किरव। गारखन विशान देश मकत्न जानित्व।। রশার বিরাজ করে বিজের কানন। বারাণদী দম তাই। ওছে ঋষিগণ।। किना वा निवनक थादक त्यरे शांदन । जथा निव मुना त्रदर जानिक शदन ॥

मेरी भरेपी विश्वहक विजादक यथाम । इत श्रीती छेजेदसटल सरस्त प्रताह ॥: বর্ধার বিরাজে একমাত্র তরুবর। উমা নহ শিব তথা রহে নিরন্তর। বাটীর ঈশান কোণে অতীব যতনে। রোপিবেক বিল্পতর পুলকিত মনে 🎉 তথায় বিপদপাত কভু নাহি হয়। শাস্ত্রের বচন ইহা কভু মিধ্যা नेह 🕍 বাটীর পূরব দিকে যদ্যপি জনমে। স্থভাগী হয় সৃহী শাস্তের বচনে 🖹 রাটীর দক্ষিণে যদি জন্মে তরুবর। নাহি রহে যমভয় বেদের গোচর। বাটীর পশ্চিমে রক্ষ যালাপি জনমে। পুত্রবান হয়ে গৃহী থাকে ফুলমনে। भागात उठिनी-उटि था खदत वा वटन। वित्व तक जत्म यनि এই मव जातन ॥ নিদ্ধপীঠ সেই স্থান নাহিক সংশয়। যোগলাভ নিদ্ধিলাভ সেই স্থানে হয়। প্রাঙ্গন মাঝেতে ৰিল্প না রোবে কখন। দৈবে যদি স্বত হতে লভয়ে জনাই।। কদাপি তাহারে নাহি তুলিয়া ফেলিবে শিবজ্ঞানে সেই রক্ষে দত পুজিবে॥ চৈত্র হতে চারি মাস করিয়া যতন। বিল্পতে যদি পুজে দেব পঞানন ॥; लकरश्यू मानकन तमहे जन शाया असकारन रिक्नारमरेड तमहे माधू यात्र॥. মধ্যাহ্নকালেতে যদি অতি ভক্তিভারে। সংযত হইয়া বিল্প প্রদাস্কিণ করে 👪 সুমের প্রদক্ষিণের ফল তার হয়। ইহাতে নাহিক কভু জানিবে সংশয়॥ विवाहक कञ्च नाहि कतिरव (इपन। विवाकार्थ कञ्च नाहि कतिरव पारन 🗱 বিষয়ক কভু নাহি করিবে বিক্রয়। করিলে পাতকভাগী সে জন নিশ্য ॥ যজ্ঞার্থ বিক্রম্নাত্র করিবারে পরে। তাহে না হইবে পাপ শান্তের বিচারে॥ বিজ্ঞের চন্দন যদি করয়ে ধারণ। সদত তাহার পাশে শমন দমন। বিল্লফল ধরাতলে পতিত হইলে। নিজে শিব ধরে তাহা আপনার শিরে॥ চৈত্র হতে চারি মাস যতন করিয়ে। বিল্নমূলে দিবে জল ভক্তিযুক্ত হয়ে !! এইরূপ আচরণ করে যেই জন। পিতৃকুল হয় তার পরিতৃপ্ত মন । নেত্রপথে বিশ্বর্ক নিপতিত হলে। বিগানে পড়িবে মন্ত্র শাস্ত্রে হেন্বলে॥ চয়নকালেতে মন্ত্র পড়িতে হইবে। স্পর্শনে বিহিত মন্ত্র যতনে পড়িবে॥ মন্ত্র পড়ি বিশ্বত্র করিবে মার্জ্জন। যেমন লিখিত আছে শান্তের বচন 💵 অশান্ত পুরাণে আছে মন্ত্রের বাখান। সেইরূপ উচ্চারিকে এইত বিধান ॥৺ (धरेक्राप (प्रवर्गां मार्याधन करि । विनातन विखक्या. (प्रवर्ण स्ति ॥

এইরপে দেবগণে সম্বোধন করি। বাললেন বিল্লকথা দেবদেব হার॥
তদন্তরে এফা আদি যত দেবগণ। বিল্লপত্তে পূজিলেন দেব পঞ্চান্দ।।
যথাবিধি পূজাশেষ করিয়া সকলে। আপন আগন হানে যান কুতৃহদে ।
এইরপে ,বিল্লরক লভিল জনম। পরম পবিত্ত রক্ষিণিত কুন্দ।।
ভিতিতর পর্য প্রিয় বিশ্বদল হাঁ। বিল্লে ভুক্ত আভতোষ নাহিক নান্ধীয়।

100

্রিবের প্রদাবে মুক্তি লভে দাধুনর । ইহার সমান নাছি ত্রিলোক ভিতর দা শিবের পর্য তত্ত্ব ঞ্জীশিব পুরাণে। বিরচিল দ্বিজ কালী আনন্দিত মনে।। ভবডোর কাটিবারে ধনি চাহ মন। একান্ত অন্তরে লহ শিবের শরণ।।

## वर्छ अशास ।

#### निटवत नीलकर्थ नाम थात्र । अ

### শিবের মাহাত্ম।

🥄 ঋষিগণ জিজ্ঞাসিল সনত-কুমারে। নমস্কার বিধিপ্তত জিজ্ঞাসি তোমারে॥ শিবের পর্ম তত্ত্ব করিয়া প্রবণ। সফল হইল এবে মোদের জীবন ॥ ,বিভার করিয়া বল ভাহার মহিমা। শুনিয়া পুরাই সবে মনের কামনা॥ শীলকণ্ঠ নাম শিব ধরে কি কারণ। বিস্তারিয়া কহ তাহা বিধির मन्দন॥ 🕊ত শুনি বিধিস্থত কহে পুনরায়। শুন শুন সেই কথা কহিব সবায়॥ পূর্বকালে স্থরাস্থর মিলিয়া যতনে। সাগর মন্তন করে অমৃত কারণে॥ সম্বনের দও তাহে মন্দর ভূধর। বাহাকি হলেন রজ্জু খ্যাত চরাচর॥ ছুই দলে ছুই দিক করিয়া ধারণ। আরম্ভ করিল যত্ত্বে সাগর মন্থন।। ৰাত্মকির মুখদেশ অত্মর ধরিল। পুচছদেশ দেবগণ ধরিয়া রহিল।। সম্বনের বেগে পৃথী কাঁপে পন খন। সুরাসুর ছই দলে করিছে যতন॥ कर्य कृत्य नाना प्रवा छेठिए लागिल। मकरल वामना यक धार्व कतिल।। শাগর মন্তনে উঠে দেব শশধর। রহিলেন তিনি গিয়া আকাশ উপর॥ ট্রকৈঃশ্রবা অশ্ব উঠে দাগর হইতে। দেবেন্দ্র নিলেন তাহ। পুলকিতচিতে॥ ্রীরাবত গজ ক্রমে মন্থনে উঠিল। ইন্দ্রদেব সেই গজ এহণ করিল। **ালমেতে উত্থিত হন কমল-আল**য়া। বৈকৃঠে হলেন তিনি ঞীহরির প্রিয়া॥ **এইর**পে কত রত্ন কত বিভূষণ। সাগর হইতে ক্রমে উঠিল তখন।। একে একে দবে তাহা এহণ করিল। হলাহল বিষ পরে উথিত হইল।। ভাহা হেরি ভয়াকুল সুরাসুরগণ। উপায় কি হবে ভাবি ব্যাকুলিতমন॥ ক্লালকুট মহাবিষ অতি ভয়ন্ধর। তাহা হেরি সুরাস্থর চিন্তিত অন্তর॥ ব্রিষের তেজেতে ধরা বিনাশিত হয়। বিশ্বসৃষ্টি লোপ পায় নাহিক সংশয়॥ উপার কি হবে ভাবি চিন্তিয়া সকলে। উপনীত, ধীরে ধীরে শিবের গোচরে॥ শিবেরে প্রণমি সবে কহেন তখন। বিশ্বসৃষ্টি লোপ হয় ওহে পঞ্চানন॥ कांककृष्ठे विष छेट मात्रत पद्धता । कि इत्य छेशात अत्य कर गया दात्म ॥

বেষের তেতেতে মরে এ তিন ভূবন। উপায় করহ এবে ওচহ পঞ্চানন ॥ র্নাকার নদকার ওহে আশুতোষ। ইহার উপায় করি করহ সন্তোর 🕊 তোমার মহিষা দেব কে বুঝিতে পারে। রুপামর হও তুমি যাহার উপরে 📭 তাহার ভাবনা কিবা ওহে মহেশব। ইহকালে মহামুখী হয় সেই नेत ॥ অন্তিমে মুকতি পায় নাহিক সংশয়। এখন মোদের প্রতি হও হে সদয়। এতেক বচন শুনি দেব পঞ্চানন। জগত রক্ষিতে প্রভু করিয়া মনন। গণ্ডুবে দে কালকূট করিলেন পান। অদ্ভূত শিবের তত্ত্ব কে পায় সন্ধান 🞉 যাহার তেজেতে দহে এ তিন ভুবন। সেই বিষ করে পান দেব 'পঞ্চানন। বিষপান হেতু শিব নীলকণ্ঠ নামে। হইলেন স্থবিখ্যাত এ তিন স্থবনে॥ অধিক বলিব কিবা ওছে ঋষিগণ। শিব সম নাছি কেছ এ তিন ভূবন। সত্ত্বরজ তম এই তিন গুণ ধরি। বিরাজ করেন সদা দেব ত্রিপুরারি 🖫 সত্ত্তেণে হরিরপে দেব পঞ্চানন। করিছেন নিরস্তর জগত পাশন ॥ तक्रथण धति जिनि जन्नात जाकारत। मृजन करतन मना क्रगठ-मःमास्त्र॥ শিবরূপে অন্তকালে করেন সংসার। কে বুঝিবে শিবতত্ত্ব ভূবন মাঝার 🗈 বায়ুরূপে বিশ্বরক্ষা করিছেন হর। শশাক্ষরূপেতে আছে আকাশ উপর 🕻 ভাক্ষররূপেতে তাপ দেন শূলপাণি। কালরূপে সংহারেন সকলি আশনি 🏗 আত্মারপে জীবহৃদে আছে পঞ্চানন। সর্ক্রসাক্ষী সেই শিব ওছে ঋষিগণ॥ ভক্তিভাবে সদা তাঁরে করিলে অর্চ্চনা। পূরণ করেন তিনি মনের কামনা। তাঁহার মহিমা কত কে বুঝিতে পারে। তাহার প্রমাণ দেখ বলি সবাকারে॥ त्रामक्राप्त व्यवजीर्ग हत्न नाताव्य। महाय हत्नन जाटह एव श्रक्षानन॥ বানররপেতে শিব গিয়া ধরাতলে। প্রকাশিল মহাশক্তি বিদিত সকলে। रैनटल किया भक्ति धटत तचूत नमन। जानकी छेषात कटत नामि प्रभानन 🏗 অতএব ভক্তিভাবে পূজহ শিবেরে। লভিবে পরম পদ কহি সবাকারে॥ শিহবর সভোষে তুট যত দেবগণ। শিবের পূজনে হয় সবার পূজন ॥ সর্বাদেবশ্রেষ্ঠ দেবদেব পশুপতি। তাঁহার উপরে সদা রাখিবে ভক্তি॥ তাই বলে দ্বিজ কালী ওরে মূঢ় মন। একান্ত অন্তরে ভাব সাধনের ধন ॥

### সন্তম অধ্যায়।

## সংক্রেপে রামায়ণ বর্ণনপ্রসক্রে লক্ষ্মণ ও নীতা সহ রামের বনগ্যন, স্থানখার নাসাচ্ছেদ ও নীতাহরণ।

📳 मानम অন্তরে পুনঃ যত ঋষিগণ। জিজ্ঞাসা করিল পুনঃ ওছে মহাত্মন্॥ শ্বীমন্ত্ররপেতে জয়ে কেন পশুপতি। কেন বা কাননবাসী হন রঘুপতি। ক্রিকাপে জানকী দেবী হইল হরণ। কিবা অদভূত কার্য্য করে পঞ্চানন॥ আই সৰ বিবরিয়া কহ মহামতি। শুনিতে স্বার হৃদি কু হুলী অভি॥ 🌉ত ভনি মিটভাবে বিধির নন্দন। কহিলেন শুন শুন ওহে ঋষিগণ॥ সাক্ষদের রাজা ছিল দশানন নামে। বসতি করিত ছুট সদা লক্ষাগমে॥ **জাহার পীড়নে সদা হইয়া পীড়িত। হইলেন দেবগণ অতি ব্যাকুলিত।।** ছিতুবন দশক্তিত তাহার পীড়নে। বস্থমতী নাহি পারে সে ভার সহনে॥ राक्नि रात्र यङ (प्रवर्ग। खन्नात निकर्षे भरव कतिल शमन।। প্রশাস করিয়া ভাঁরে বহুস্তব করি। কহিলেন শুন শুন ওহে সৃষ্টিকারী।। নতোমার প্রসাদে বর পেয়ে দশানন। নিরন্তর করিতেছে গবার পীড়ন।! প্রাহার ছঃসহ ভার সহিবারে নারি। কাঁপিতেছে বস্থমতী ওছে সৃষ্টিকারী।। ্রোমার সৃজিত বিশ্বয় বিনাশন। রূপা করি রক্ষ এবে ওছে ভগবন্॥ এতেক বচন শুনি সৃষ্টি-অধিকারী। রহিলেন ক্ষণকাল মৌনভাব ধরি॥ ক্লণকাল চিন্তা করি দেবগণে লয়ে। উপনীত হন আসি বৈকুণ্ঠ আলয়ে! 👼 मना नहिट्ड हित আছেন তথায়। ধীরে ধীরে উপনীত দেবতা স্বায়।। প্রাণাম করিয়া পরে বছ স্তব করি। রহিলেন দেবগণ মৌনভাব ধরি।। ৰুষুর বুচনে হরি কছেন তখন। বুঝিয়াছি তোমাদের আনুসার কারুল।। কুকতরে প্রপীড়িত হইয়া সকলে। আসিয়াছ মন পাশে ব্যাকুল অন্তরে।। **র্জনার বরেতে তুউ রক দশানন। করিতেছে নিরন্তর জগত-পীড়ন।।** ্রাবা হতে অবধ্যত্ত্ব বর লাভ করি। গর্বিত হয়েছে তুট মহাপাপাচারী।। স্থান্ত্রৰ তাহার ভক্ষ্য করিয়া চিন্তন। তাহা হতে অবধ্যত্ত্ব না করে এছণ।। ্লিডএব নর্রূপে ঘাইয়া ভূতলে। বিনাশ কুরিব লেই ছুট ছরাচারে।। किंख अकः श्री जाटक छन रचनगरी गिरवर शतम एक इसे प्रभानन॥ क्षिक्राक नार्त दर्ग गांध जारह कात । निव विमा नाहि दरव अ कांक देवाहा

### 

শিব-শিবা পূজা করে সেই চুইনতি। বোঁহার প্রনাবে গর্কী হইরাছে পতি। জত এব শিবপালো করিব গদন। শিবের সাহায্য আমি করিব এহণ । তামরা সকলে যাও নিজ নিজ স্থানে। জনম ধরহ সবে মানব-ভবনে॥ বানরী-উদরে সবে লভহ জনম। ভরুকী উদরে জন্ম ধর কোন জন ॥ আযোধ্যাতে দশর্থ প্রবল নূপতি। নাহিক তাঁহার কিছু সন্তান সন্ততি। খ্যাপৃদ্ধ ক্ষবিবরে করি আন্রন। পুত্র হেতু যজ্ঞ রাজা করিছে এখন। তাঁহার গৃহহতে আমি জনম লভিযে। বিনাশিব রক্ত্রল বানর সহায়ে।

এতেক বচন শুনি যত দেবগণ। আপন আপন ধামে করিয়া গমন॥ অংশে অংশে মর্ত্ত্যলোকে জন্মিতে লাগিল। বানরী-ভল্পুকী-গর্ভে জনম ধরিল। এদিকেতে নারায়ণ একার দহিতে। উপনীত হন আসি কৈলাস পুরেতে॥, দেবীর সহিতে বসি দেব পঞ্চানন। করিছেন মহাস্থাংখ মি**ই আলাপন**। নারায়ণে নির্ধিয়া দেব পশুপতি। পুলকে পূরিত তকু আনন্দিতমতি।। ব্যস্তভাবে টুই হনে করে আলিজন। ছুই জনে নমকার করেন তগন। যথাবিধি অভার্থনা করিয়া বিধিরে। বসিলেন তিন জন সিংহাসনোপরে॥ জিজ্ঞাসা করেন শিব আসার কারণ। বলিলেন মিইভাবে দেব নারায়ণ। তোমার পরম ভক্ত রক্ষ অবিপতি। পীতৃন করিছে লোক ওহে পশুপতি॥ তাহার পীড়ন সহ্য করিবারে নারি। কাঁপিতেছে বস্থুমতী ওহে ত্রিপুরারি॥ বিধাত। দিয়াছে বর জানহ শক্ষর। তাহাতে গবিতে সেই অধম পামর॥ অবধ্য স্বার সেই ওহে পঞ্চানন। নরবানরের হাতে হইবে নিধন॥ এহেতু জরিয়া আমি অবনামগুলে। বিনাশ করিব দেই ছুট ছুরাচারে॥ আমার সাহায় হেতু যত দেবগণ। বানর-ভল্করপে লভেছে জনম॥ কিন্তু এক কথা বলি ওহে পশুপতি। তব ভক্তে বিনাশিতে কাহার শক্তি॥ শিব শিব। পূজা করে সেই দশানন। কিরুপে তাহারে আমি করিব নিধন॥ শিক্ষকে শিবাভক্তে আমার তকতে। বিভিন্ন নাহিক কিছু ভাবিবেক চিতো। এত শুনি হৈমবতী কংখন বচন। শুন খন মম বাক্য ওছে নারায়ণ॥ গর্বিত হয়েছে বঁটে সেই ছুট্মতি। উচ্তি বিনাশ তার ওছে মহামতি ॥ কিন্তু আমি অধিষ্ঠাত্রী দে পুরী লক্ষার। আমি বিদ্যমানে নাশে হেন দাধ্য ক্ষান্ধ। পাডএৰ যাহা বলি করহ প্রবণ। ধরাতলে লক্ষী দেবী লভুন জনসং। শীভারণে জনমিবে মিথিলা, নগরে। তুমি হরি লভ জন্ম सুশরগধরে॥ নারিভাগে জন্ম ধর তুমি নারায়ণ। তোমার করেতে সীতা হইবে জর্পা ীফারে ছরিনা লবে নেই ছুইনতি। তখন ত্যজিব আমি লছার ক্লাভি।

नका भूती यत आमि कतित वर्जन। अनासात्म एक उत्व ताकम निर्धन 🕏 ৈ এক শুনি পশুপতি কহে ধীরে ধীরে। কি খার বলিবে হরি ভূমি হে আমারে॥ আমাতে ভোমাতে ভেদ কিছুমাত্র নাই। এখন শুনহ যাহা 'বলি তব চাঁই॥ वानती-गटर्डट जामि निख्य जनम। महाय हरेय जय ७८ मातायण॥ ছুকর অদ্ভুত কার্য্য, সাধন করিয়ে। অনুগত রব তব সানন্দ ছাদরে॥ আৰা হতে তব কাৰ্য্য হইবে উদ্ধার। অবিলম্বে যাহ তুমি অবনী মাঝার॥ এত বলি তিন জনে বিদায় হইয়ে। আপন আপন স্থানে গেলেন চলিয়ে॥ পঞ্না-বানরি-গর্ভে দেব পঞ্চানন। হনুমানরপে আসি লভিল জনম। ভলুকী-উদরে বিধি জনম ধরিল। জামুবান নাম তার প্রসিদ্ধ হইল।। क्यला अधिन जानि मिथिना नगरत। এই त्राप एन वर्ग नरत अध भरत।। এদিকে এইরি দেব বৈকুণ্ঠ ত্যজিয়ে। জনম লভেন আসি মানব আলয়ে॥ কৌশল্যা-উপরে রাম লভেন জনম। ভরত কৈকেয়ী গর্ভে জানে সর্ব্বজন॥ স্থমিত্রাগর্ভেতে জন্মে যমজ সন্তান। লক্ষণ শত্রুত্ব এই ছু-জনের নাম॥ জ্বমে ক্রমে চারি শিশু বাড়িতে লাগিল। রাজার নয়ন মন পরিতৃপ্ত হৈল॥ বিদ্যাশিকা দেন রাজা চারিটা কুমারে। দিন দিন শিশুগণ জনমন হরে॥ শক্ষণ শৈশব হতে রাম-অনুগত। শক্রন্ন ভরত দোঁহে জানিবে তেমত।। সর্বাপেকা জ্যেষ্ঠ রাম লোক-অভিরাম। জগতে নাহিক কেহ তাঁহার সমান॥ ভাঁহারে হেরিয়া লোক পুলকে মগন। সদত করেন তিনি লোকের রঞ্জন॥ ধশুর্বিদ্যা শিক্ষা করে চারিটা কুমার। মহাযোদ্ধা হৈল সবে অবনা মাঝার॥ একদিন বিশ্বামিত্র আসিয়া নগরে।রামেরে চাহেন ভিক্ষা রাজার গোচরে॥ যভাবিদ্ন করে সদা রাক্ষ্যের গণ। তাদের নাশিতে হবে এই সে কারণ।। -দুপবর বহু চিন্তা করিয়া অন্তরে। রামেরে অর্পণ করে বিশ্বামিত্রকরে॥ বিশ্বামিত্র সহ রাম করেন গমন। অনুগামী হন তাহে অনুজ লক্ষণ॥ পৰিমাৰ স্বাহুকে করিয়া সংহার। মারীচেরে এক বাণ করেন প্রহার॥ ৰাণাৰাতে ছরাচার খুরিতে খুরিতে। নিপতিত হৈল বহু যোজন দুরেতে॥ **তার পর यक्कक्टल** केরিয়া গ্রমন। তাড়কা রাক্সী রাম केट्रেस निधन॥ अरेक्र १ यक तका कतिया यज्य । विश्वामित मर यान मिथिना छ्वरम ॥ হুর্থকু ভাকি তথা রাম রঘুবর। জানকীরে লাভ করি হরিষ অন্তর।। नद शूज पर्यत्र १ कति जानमन। हाति कन्।। (पन श्रूप्य मिथिना-ताजन।। शीजादत्र ब्राट्यत करत्र कत्रिरलन पान । लकार विर्मिना देपन यूम्पत श्रुठीय ॥ बेंद्विनी नेरक्टक करा। দেন ভরতেরে। এতকীর্তি কন্য দেন শতাংশর করে।।

এইরপে চারি কন্যা করিয়া অর্পণ। যৌতুরু দিলেন কত মিবিলা-রাজন।। নারী লাভ করি সবে আনন্দিতমনে। চলিলেন অযোধ্যায় 🚁 আদি সনে ॥ পথেতে ভার্গব সহ হয় দরশন। রাম সহ তাঁর দ্বন্দ্ব হইল ঘটন।। ঠাছার হাতের ধনু লয়ে রবুবর। যোজনা করেন তাহে একমাত্র শার্ম। সেই শরে দর্শ চূর্ণ করিয়া তাঁহার। স্বর্গপথ রুদ্ধ করে রাম দয়াধার॥ এইরূপে দর্পচূর্ণ করিয়া তখন। অযোধ্যানগরে রাম করেন গমন॥ ভরত তাহার পর মাতুল সহিতে। মাতামহগৃহে যান পুলকিত চিতে॥ কিছু দিন পরে দশরথ নরপতি। রামেরে করিতে রাজা করিলেন মতি॥ প্রজাগণ তাহা শুনি পুলকিত মন। কৈকেয়ী দাসীর মুখে করেন প্রবণ॥ বর্ষাবশে নদী যথা কলুষিত হয়। দাসীবাক্যে হৈল তথা কৈকেয়ী-ক্ষু ॥ দাসীর বচনে তিনি বিমুগ্ধ অন্তরে। উপনীত হন গিয়া রাজার গোচরে॥ পূর্ব্ব অঙ্গীকার তাঁরে করায়ে শরণ। ভরতেরে রাজ্য দিতে বলেন তখন ॥ कोक वर्ष उद्ध क्षाप यादिन कानता। माशित्नन धरे वह क्षात्रथ शाता। দেবীর বচনে রাজা হইয়া কাতর। বিনয়-বচন তারে ক**হেন বিশুর।**। किছতেই काछ नाहि महियी हरेल। तारमत्त काननवारम (श्रद्धा कतिला। बाबा थि जिनिधि अदर इरेल कानन। कं हो हो त श्री काम हिलान यन। অনুজ লক্ষণ গেল সহিতে তাঁহার। চলিলেন সীতা দেবী নন্দিনী রাজার॥ তিন জনে বনবাসে করেন গমন। শোকাকুল নরপতি বিষাদিত মন 🎚 কৌশল্যা কাঁদেন কত বর্ণিবারে নারি। সৌমিত্রি জানকী রাম রুপোপরি চড়ি॥ সুমন্ত্র সহিতে যান ছাড়িয়া নগর। পুরবাসী সবে সঙ্গে বিষয় অন্তর॥ পথিমাঝে রঘুবর পুলক অন্তরে। রহিলেন একনিশা গুহকের ঘরে॥ जांत्र भन्न मकरनटत कतिया विलाय। वनगांत्य यान नाम नहेया मीजाया। সঙ্গে সঙ্গে অস্ত্রধারী অনুজ লক্ষণ। ভৃত্যের সমান অনুগামী সর্বকণ।। ভরদাজ মহামুনি রহেন যথায়। উপস্থিত রবুবর সানন্দে তথায়॥ ভরদ্বাজ-অনুমতি লয়ে তার পর। চিত্রকৃট গিরিবরে যান রঘুবর॥ পাতার কুটীর তথা করিয়া নির্মাণ। তিন জনে পুলকেতে করে অবস্থান॥ श्यूर्वां श्री मा द्राह्म लक्ष्म। अवस्त्र करत मा कानकी तक्ष्म। द्रांगरभारक प्रभावथ काम्पिया काम्पिया। हिलातन वर्गवारम जीवन जानिया।। জরাজক হৈল রাজ্য ব্যজার বিহনে। তাহা দেখি বশিষ্ঠাদি যত মন্ত্রীগণে॥ মাডামহগৃহ হতে জরতে আনিল। ভরত পিতার ঘত সৎকার করিল।। कान शत्र अनमीदम् कति जित्रकति । तादपदत्र आनित् यान कामन मानाता।

ৰুশিগুদি শূৰৰ গৈল ভাৰার সহিতে। মাতৃগণ যান সৰে ব্যাক্লিত ভিত্তা। ভিত্রীজ-আপ্রমেতে করিয়া গ্রমা ভাঁহার চরণ বন্দি ভরত সুজুন। ্র্টুলিলেন সবা সহ চিত্রকৃট গিরে। উপনীত ক্রমে সবে রামের গোচরে॥ **ভরত রামেরে গিয়া করেন প্রণাম। আলিজন দেন রাম যেমত বিধান্**। ্শাত্গণে প্রণমিল রাম রবুবর। বশিষ্ঠাদি স্বাকারে বন্দে তার পর্॥ ভারত রাথেরে কত কহেন বচন। অনুরোধ করে কত আসিতে ভারন।। প্রবোধ বচনে রাম করিয়া বিশায়। নিজের পাতুকা ন্যাস দিলেন ভাঁছায়। পাছকা লইয়া পরে ভরত আসিল। নন্দী গ্রামে জটাধারী হইয়া রহিল।। স্থামের পাতুকা রাখি সিংহাসনোরি। ভরত করেন রাজ্য রামনাম স্মরি॥ **একিকেতে চিত্রকৃট ত্যজি রম্ববর। ক্রমেতে পশেন গিয়া দণ্ডক ভিতর॥** कुष्टीत করিয়া সেই গহন কাননে । রহিলেন সীতা সহ লইয়া লক্ষণে॥ ্দে বনে রাক্ষ্মী রহে ভূপনিখা নাম। তাহার হৃদয়ে পশে মদনের বাণ। সামের পর্য রূপ করি দরশন। কামবশে সূর্পন্ধা ব্যাকুলিতমন॥ ভক্ষ করিয়া সেই জানকী দেবীরে। বাসনা করিল পতি লভিতে রামেরে॥ তাঁহা হেরি মহারোবে সৌমিত্রি লক্ষণ। পাপিষ্ঠার নাসাকর্ণ করেন ছেদন॥ ক্লান্দিতে কান্দিতে ছুটা গিয়া নিজঘরে ৷ খরদূষণাদি সবে নিবেদন করে ॥ ক্রোধভরে রাক্ষ্যেরা লয়ে সৈম্মগণ। রাম সহ যুঝিবারে করিল গমন।। রাষের হাতেতে ,নব হইল সংহার। সহস্র সহস্র রক্ষ সবে তুরাচার।। যুক্তেক রাক্ষ্য ছিল দণ্ডক কাননে। রামকরে মরি গেল হুরগ ভবনে॥ শূর্পন্থ। এই নব করি দরশন। লঙ্কাধামে ক্রতগতি করিল গমন॥ রাবণ-দদনে সব কহিল বিবরি। মহারোষে জ্বলি উঠে অমরের অরি॥ সীতার পরম রূপ করিয়া শ্রবণ। বাসনা করিল ছুট করিতে হরণ॥ শারীচেরে সম্বোধিয়া কহে ছুট্মতি। আমার সহায় হও ভূমি মহামতি॥ এতেক বচন শুনি মারীচ তখন। বিনয় করিয়া কছে নিবেধ বচন॥ লে ক্লখা ব্লাবণ নাহি শুনিল প্রবণেং আসর কালেতে হিত কেরা কোথা শোনে ! হাবৈশের ভয়ে পরে মারীচ তখন। রামহাতে শ্রেয়কর জাবিল মরণ॥ ध्रुवर्ग মুগের রূপ ধারণ করিয়ে। দণ্ডক কাননে যায় হেলিয়ে দীভার সন্মুখে মুগ করি আগমন। রঙ্গ ভঙ্গ করে কত অতি বিমোহন ॥ ভারা হৈরি দীতা দেবী বিষুগ্ধ হইল! মিট ভাবে রঘুকরে কহিতে লাগিল ॥ क्लिशाब स्किंगी थित दश्च त्रपूरत। दश्म द्वा कि नादि महानदशाद्ध है प्राणि गुछलिः मारि गण्यादत शाति । जीवने छाजिवे माथ श्रातिता जिस्ति। হৈর হের বন্ধাকে করে পাঁলারন। যাও শীব্র ওহে নাথ করহ গ্রাম্থ্য দীতারে মোহিত হেরি রাম রব্বর। মিফভাযে সম্বোধিয়া করেন উপ্রের্থা কাঞ্চন হরিণী আনি এখনি অপিব। তোমার মনের সাধ অবশ্য প্রাব্ধা এত বলি লক্ষণেরে করি সম্বোধন। কহিলেন শুন ভাই আমার বচন স্যতনে রক্ষা করে জানকী সতীরে। মৃগ হেতৃ যাই আমি কানন ভিতরে শালিক্ষণেরে কিরি আমি আগিব হেথায়। যতনে রক্ষহ তুমি প্রাণের সীতায়॥ লক্ষণেরে এইরপ বলিয়। বচন। মৃগ হেতৃ বনে রাম গেলেন, তখন য় যুগ হেতৃ বনে বনে ঘ্রিয়া ঘ্রিয়া। শুখাল কমল মুখ আতপ লাগিয়া॥ চারিদিকে ঘন ঘন করেন দর্শন। কোন দিকে মৃগ নেত্রে না হয় পতন ॥ অবশেষে রঘ্বর কাতর-অন্তরে। আন্তি হেতৃ বসিলেন পাদপের মূলে। শালিকাথ বর্ণমৃগ করেন দর্শন। হেলিতে ছলিতে বামে করিছে গ্রামা। শালাকাতি উঠি রাম ধন্বর্বাণ ধরি। তাহার পশ্চাতে যান শর্ষোগ করি য়িলকা করি মৃগে শার করেন কেপণ। শরাঘাতে স্বর্ণম্ব হইল পতন।। রামের কঠের স্বর অনুরূপ করি। চীৎকার করিল মুগ হা লক্ষণ বলি।। রামহক্ষে স্বর্থ্য হইয়া নিধন। বিমানে আরোহি গেল বৈকৃষ্ঠ ভূবন।।

এত শুনি ঋষিগণ বিধির কুমারে। জিজ্ঞানা করেন পুনঃ সুমগুর স্বরে।। রামহত্তে তুরাচার হইয়া নিধন। বৈকুঠে চলিয়া গেল কিলের কারণ ॥ বিধিপুত বলে শুন যত ঋষিবর। অধম পাপিষ্ঠ হৌক যেই কোন নর।! অন্তকালে রামহত্তে যদি সেই মরে। নির্ববাণ পাইয়া সেই যাবে সুরপুরে।। বিশেষ মারীত ছিল বৈকুণ্ঠ ভুবন। এছরির দারী ছিল জানিবে সে জন !! मनक श्रवित भार्य ताकम रहेरा। जत्मिहिन महे जन गोनव-जालस्य।। त्रामशाटक व्यवस्थित इहेशा निधन। श्रूनताश घाती दिन दिक्छ चूरन।। যখন তাছারে মারে রাম রঘুবর। তখন চীৎকার করে অধম পামর।। কোষারে লক্ষণ ভাই বলিয়া ডাকিল। রামের কঠের অনুকরণ করিল। সেই স্বর প্রবেশিল সীতার প্রবণে। কাঁপিরা উঠিল সীতা ভয়াকুল মনে।। অকমাৎ পুন শব্দ উঠিল তখন। শীঘ্র আসি দেখ ভাই কোথারে লক্ষণ। ছে রাক্স-হাতেতে আমি এইবার মরি। প্রাণের লক্ষণ ভাই এস ত্রা করি।। भूनजात्र अहे भक्त कतिया खरा । वाक्ल श्रेश डिट्रि जानकीत सन ॥ विनत्र-वहरम करक (बन्द्र नक्मर्ग। त्रांकरम गातिरह छन ताम थानंधरम।। क्रज्यांकि . जीइ कोट्ड कड़ड शर्म । थान मेम ग्राक्**लि**ड नाटबंड काड़न ।। नक्तन अटडक ें बेर्ग कंत्रिरह । नाखुना करतन कछ अछीय विनस्त ।। ब्रास्टित

ু শুদ্ধিতে পাত্রে হেন সাধ্য করে। হির হও ওগো মাতঃ ভয় কি তোমার।। **এরপে সাত্ত্**না করে সৌমিত্রি লক্ষণ। কিছুতে না শান্ত হয়,জানকীর মন।। বঙ্গিলেন অবশেষে দেবর লক্ষণে। ঘদ্যপি না যাহ ভূমি রামের কারণে।। ্বিষ পান করি আমি ত্যজিব জীবন। পাপভাগী হবে তুমি দেবর লক্ষণ।। ্তি এই রপে কত কটু লক্ষণে কহিয়া। কান্দিতে লাগিল সীতা ব্যাকুল হইয়া।।
ভিশ্বন লক্ষণ প্রভু হয়ে ক্ততগতি। রামের উদ্দেশে বনে করিলেন গতি।। ্ষাত্রাকালে গণ্ডী দিয়া কুটীর ভিতরে।বসালেন তাহা মাঝে জানকী সতীরে॥ \*বলিলেন শুন দেবি আমার খচন। গণ্ডী হতে বাহিলেতে না করো গমন।1 এখনি আদিব আমি রামেরে লইয়ে।ভাদিবে আনন্দনীরে তাহারে হেরিয়ে॥ , এত বলি গণ্ডিমাঝে বসায়ে তখন। রামের উদ্দেশে যান গৌমিত্রি লক্ষ্মণ।। হেনকালে ভিক্ষুবেশে লক্ষা-অধিপতি। সীতার ক্টার-ছারে আসে ক্রতগতি॥ **মিষ্টভাষে জানকীরে করি সম্বোধন। কহিতেছে শুন নতি আমার বচন।।** কুধার কাতর আমি হইয়াছি অতি। ভিক্ষা দেহ ভিক্ষাকেরে হয়ে ক্রতগতি।। জানকী এতেক বাক্য করিয়া শ্রবণ। ভিক্তুকেরে মিষ্টভাবে কহেন তখন।। আমার বচন শুন ওহে মহামতি। বনমাঝে গিয়াছেন মন প্রাণপতি॥ ফণেক অপেকা কর আমার আশ্রমে। আসি ভিকা নিবে নাগ হোষা তিক্ষুজনে।। মুগ হেতু গিয়াছেন কানন ভিতর। কিঞ্চিৎ প্রতীক্ষা কর ওছে ভিম্ফুবর।। এতেক বচন শুনি দুই দশানন। হাসিয়া হানিয়া কহে মধুর বচন ॥ তোমার বচন শুনি লাগিল বিষয়। ভিকা দেহ যাই চলি আপন আলয়।। জানকী এতেক বাক্য করিয়া এবণ। পুনরায় কহে ভারে ংহে যোগীজন।। স্বর্ণেক বিশ্রাম কর পাদপের মূলে। এখনি আসিবে নাথ মুগ লয়ে কোলে।। বাং প করেছে যোরে দেবর লক্ষণ। গণ্ডীর বাহিরে সেন ন। সেও কখন।। শুনি দশানন পুনরায় কয়। ফিরি যাই ওগে। ২তি আপন আলর।। ভিক্ষায় নাহিক কাজ করি গো গমন। কুপায় কাতর দেহ দকাতয় মন।। বিলম করিতে আমি কভু নাহি পারি। চলিলাম গৃহে ফিরে গুন গো সুন্দরি।। ভিকুক কিরিয়া যায় করি দরশন। ভিক্ষাদ্রত্য হাতে সীতা করিয়া গ্রহণ॥ প্রতীর বাহিরে দেবী আদিল যেমন। অমনি তাঁহার হাও ধরে দশানন।। জ্বতগতি রপোপরি লইযা ভাঁহারে। শ্রভরে যায় ছট আপন নগরে। उर्थन जानकी (परी करतन त्रापन। काथा त्राप त्रपूर्त काथाय नक्षन।। দেবর তোমার বাক্য এবণে না শুনি। 'পাইছ তাহার কল ওছে গুণম্ণি।। জ্ঞার মত্ন আমি হইন্দু বিদায়। আরু না হৈরিব মাথে আর যে ভোমায়।

'হার রাম দাশরথি তৃমি রবুশক্তি। তোমার দরিতা হরে দুই রক্ষণিত ।। এইরপে দীতা-দেবী করেন রোদন। গাত হতে কেলি দেন যও বিভূষণ।। বৈক্ঠ-ঈশ্বর মিনি মিনি চিত্তামণি। রাক্ষ্যে হরিল হায় তাঁহার ভামিনী ।। বিধির অপুর্বেশীলা কে বুঝিতে পারে। কত ছল কত থেলা তাঁহার অন্তরে। ।। তাই বলে দ্বিজ কাণী ওরে মূত্র মন। চিন্তামণি হাদে দদা করহ সরণ।। ভথেরঃ যাতনা তায় অবশ্য যুঁচিবে। পুরাণ এবণ ফল অবশ্য পাইবে।।

# अधीय अधारा।

রাবণের মণিত উটাযুর যুদ্ধ, এবং রাবণ কর্তৃক দীতাকে গুলোক বনে স্থাপন এবং দীতার

### শিব্য চক্তোজন।

এইরপে জান ोट: করিব। হরণ। লক্ষা অভিমুখে যায় তুট দশানন।। অবিরভ রোদনেতে হাতা গুণবতী হইলেন অতিশয় ব্যাকুলিতমতি !! গার হতে উলোচন করি বিভূদ্ধ। চলিলেন দীতা দেবী করিয়া রোদন॥ কোন হানে ফেলিলেন কল। কেলুর। কোথাও ফেলিয়া দেন চরণ-ছপুর।। মনোল্ডখে ফেলি দিল। উত্তরীয় বাস। রবের উপরে বসে হইয়া উদাস ॥ এনিচে তাহারে লগে দ্ট নশানন। লঙ্কাধামে ক্রতগতি করিছে গমন॥ হেন গলে শৃত্তে ছিব এই পণীবর। জটারু তাহার নাম যোদ্ধার প্রবর॥ দী হারে হারতে দেখি মেই মহোদন। রাবণেরে সম্বোধিয়া ক্রোধভরে কয়। শোন্ শোন্ হরা হুন্ আমার বচন। কি পাপ করিলি ছুই দীতারে হরণ। এখনি বহিব ছুট জীবন ভোগার। রথ রাখ রাখ রথ ওরে ছুরাচার॥ জাবংশে জন্ম তেরে ওরে দশানন। করিয়াছি**স্ দশমুতে শিবের পূজন।**। কলাগ তুলিয়াছিলি নিজ ভুজবরে। জিনেছিস দেবগণে অতি কুতৃইলে॥ करतिकिम् वद्यम् था। भाषा भाषन। এ प्रमृति किन देश करत प्रतासन ॥ ধনুর্দ্ধর বলি ভুই বিখাতি ভুবনে। বীরত্ব প্রকাশ কৈলি দীতার হরণে॥ ধিক ধিক শাঁচ ধিক ওরে ছুরাচার। এখনি বধিব আমি ভুনিবন তোমার। वारमत यत्रनी मीजा कमनाक्रिभिनी। आएग्रामक्ति मवाकात देनिहे जननी॥ আমার সাকাতে ভুই,করিবি হরণ। কভুন। পারিবি ছট ওরে দূরাছান ॥ এখনো দীতারে শীগ্র কর পরিহার। নতুবা অকালে ঘাবি শমন-আগার ॥

কৈ বীরত্তোর ভরে দশানন। শুগালের মত তুই করিলি ছয়গ্ন। अंतर्य छर्भन। करत विश्वकथातत । किंदू नांदि आहा करत त्रांकन शायत ॥ ু জুখি। বেশি পক্ষীবর অতি রোষভরে। গর্জন করিয়া কহে ছুফ ছরাচারে॥ দেখেছিন্ চঞু মম বজের সমান। ইহা দিয়া বিনাণিব তোমার পরাণ।। ভীত হয়ে ক্রতগতি কর পলায়ন। উচিত ইহার শান্তি পাবি তুরাজ্মন্॥ ্রীপকীমুখে তিরস্কার শুনিয়া শুবণে। অগ্নিসম ক্রোধ বাড়ে রাবণের মনে॥ ক্রোধভরে পকীবরে করি সম্বোধন। কহিতে লাগিল রক্ষ ওঁরে বিহল্পম ॥ শাষার সৃহিতে কর সমরের আশ। কেবা তুই চুফ পশী কোথায় নিবাস॥ ক্রিভুবনে খ্যাত আমি রাজা দশানন।আমার প্রতাপে কাঁপে এতিন ভূবন॥ **শ্রমী হয়ে কট বাক্য কহিস আমায়। ইহার উচিত শাস্তি দিবরে তোমায়॥** প্রতিক বচন পকী করিয়া এবণ। লক্ষ দিয়া রখোপরি পড়িল তখন॥ ্চিষ্ণুতে টানিয়া ধূজা ছিঁড়িয়া কেলিল। পদাঘাতে চারি অশ্ব জীবন ত্যজিল।। স্থানর মুকুট ছিল রাবণের শিরে। নখাঘাতে টানি তাহা ফেলি দিল দূরে॥ ভোহা দেখি মহাক্রুদ্ধ হয়ে দশানন। ত্রন্ধ অস্ত্র ধনুকেতে যুড়িল তখন॥ यह পড়ি পকীপরে মারে দেই বাণ। ভূমেতে পড়িল পকী হইয়া অজ্ঞান॥ পক্ষর ছির তার হইয়া পড়িল। কুয়াও সমান হযে ধরায় রহিল॥ প্রকাগতপ্রাণ হয়ে রহিল পড়িযে। রাক্ষ্য চলিয়া গেল আপন আলয়ে। স্পাদকীরে লক্ষাধানে লইয়া তখন। অশোক-কাননে মুট করিল স্থাপন॥ ্চারিদিকে রাক্সীরা প্রহর্মী রহিল। ব্যাকুল হইয়া সীতা কান্দিতে লাগিল।। ৢবেশার আদেশে ইন্দ্র হইয়। গোপন। রাত্রিযোগে সাতাপাশে করে আগমন॥ - दिवा চরু আনি তাঁরে অর্পণ করিল। সেই চরু সাত। দেবী ভোজন করিল॥ চরুর প্রসাদে তাঁর কুধা তৃঞা যায়। যাবত জানকা দেবা ছিলেন তথায়॥ তত দিন কুথা ভৃষ্ণ কিছু নাহি ছিল। অনাহারে সাত। দিন যাপন করিল॥ ঞ্জিকে জ্রীরাম মুগ করিয়া হরণ। ক্রতগতি আশ্রমেতে করে আগমন।। **্পিথিখাঝে জাতৃ সহ দরশন হয়। তাহা দেখি রাম্চন্দ্র বিশ্বিত-হৃদয়।।** ব্যাকুল ছইয়া কছে প্রাপের লক্ষ্মণ। সীতারে রাখিয়া কেন ক্রৈলে আগ্রমন।। একাকিনী রাখি তাঁরে কান্তার মাঝারে। আনিয়াছ কেন শীঘ্র বৃশ্ রে আমারে।। লীতারে হারাই বুঝি ও ভাই লক্ষণ। ব্যাকুল পরাণ মম ব্যাকুলিত মন।। ীরামের এতেক বাক্য এবণ করিয়ে। লক্ষ্য কছেন তাঁরে অতীব বিনয়ে।। 🛊 ভোষার বিলম্ব সীতা করি দরশম। ভয়েতে কাতর যাতা, হলেন তথ্য।। ুখান্নবি। সাক্ষ্যবর শুনিয়া অবণে। আমারে পাঠান দেবী তব অবেষ্ধে।

को योका करि कड करतन थ्रितंगा গতी पित्रा जानिशाहि **এই সৈ का**त्रणा ভষ্ন বাই চল প্রভু আঅনেতে যাই। হেরিবেন ওগো প্রভু দীতা লেই ঠাই।। এত বলি ছুই জনে হয়ে ক্রতগতি। তপোবন উদ্দেশেতে করিলেন গতি<sup>শা</sup> जितिनास जाअरमा कि कि का निवास के कि जी का निवास में जिता की का निवास के जी कि তিন কোণ অন্বেষিয়া রাম রবুবর। লক্ষণে কছেন পরে হইয়া কাউর গ্ তিন কোণু অন্বেষিয়া জানকী রতন। নাহি পাই দেখিবারে প্রাণের লক্ষণ 🍇 চতুর্থ কোণেতে যেতে মন নাহি সরে। অদৃষ্টে কি আছে ভাই বলরে আমাল্কে ।। মনে মনে ছেন বোধ করিরে লক্ষ্মণ। ভুলিয়া আমরা হেখা করি আগ্রমন।। (धेर त्मरे भर्गाला ककू वृत्रि नय। यत्न यत्न (धेर ভाব क्टलक छेनत्र॥ আমাদের পর্ণশালা যক্তপি হইত। প্রিয়ার চরণ-চিহ্ন অবশ্য থাকিত॥ এইরপে কত খেদ করি রবুবর। অধ্বেষণ করে কত আশ্রম ভিতর। কোন স্থানে জানকীরে না করি দর্শন। অজ্ঞান ছইয়া ভূমে পড়েন তখন।। চেতন পাইয়া পুন উঠেন বিদিয়ে। লক্ষ্য প্রবোধ দেন দান্ত্রনা করিয়ে। কাতর হইয়া রাম বনচরগণে। জিজ্ঞাসা করেন কত মিট সম্ভাষণে। দেখেছ তোমরা মম জানকী রতন। আমারে ছাড়িয়া কোথা করেছে গমন। রক্ষেরে সম্বোধি কহে রাম রবুবর। শুন শুন গুহে রক্ষ পাদপপ্রবর। আমার জানকী ধন বলহ কোথায়। বসিয়া ছিলেন কি হে তোমার ছায়ায়।। হরিণীরে সম্বোধিয়া কহেন বচন। শুন শুন ওহে মৃগী করহ প্রবণ্। দেখেছ তোমরা কিহে জানকী সতীরে। কোন জন হরিয়াছে মম প্রেয়সীরে। এরপে বিলাপ করি রাজার কোঙর। পুনশ্চ প্রবেশে গিয়া ক্টীর ভিতর। দেখিলেন পদ্ম এক ধরার পড়িষে। প্রফুল হতেন সীতা শিরে যাহা দিয়ে। সেই পদ্ম রবুবর তুলিয়া তখন। লক্ষণেরে সম্বোধিয়া কহেন বচন।। হের রে লক্ষণ ভাই পুষ্প মনোহর। বসতি করিত যাহা সীতা-শিরোপর। সেই পদ্ম রহিয়াছে কর দরশন। কিন্তু হায় নাহি মম জানকী রতন। হায় হায় শত ধিক ধিক ধিক মোরে। রাখিতে নারিমু আমি আপন নারীরে বিক্ষণ জীবনে আর কিবা প্রয়োজন। অগ্নি কিম্বা জলে পশি ত্যজিব জীবন। বিষম গরল কিন্তা করিব যে পান। মরণ মঞ্চল মম মরণ কল্যাণ।। হার হার কোথা দীতা রাজার কুমারী। তোমার বিচ্ছেদ আমি রহিতে না **পারি**। কোথা প্রাণপ্রিয়ত্যা দেহ দর্রশন। সুধামাখা মিটভাবে জুড়াও জীবন। यात्र ज्यत इत्रथणू कतिष्ठ एक्षन। नज्य नत्रत्न यादत कत्रिणू पर्णन। যার ৩৭ প্রাণ্ ভরি করিতাম গান। যাহার বছনত্থা করিতাম পান।

ঞ্কাসনে যদিতাম যাহার সহিতে। যার ক্লপ দলা ধ্যান করিতাম চিতে। লৈই প্রিরা কোথা হার করিল গদন। তাহার বিরহে দদ ব্যাকুল জীবন। আহা প্রিয়ে তব সহ মিউ সম্ভাষণে। থাকিতাম নিরন্তর বসি একাসনে॥ स्न বল এর ভাই বল রে লক্ষণ। কোথার প্রাণের প্রিয়া জানকী রতন।। ুঁধাহ ফিরি তুমি ভাই অযোধ্যা নগরে।আর নাহি যাব আমি জননী গোচরো। तिनि जात्र मर्च ठव तामधन। विनाय इरेया शिष्ट ममन-जवन।। ু 🖛 খনি জীবন আমি করি পরিহার। যন্ত্রণা এড়িয়া যাব শমন-আগার॥ কেন ভাই কট পাও আমার সহিতে।ফিরি যাহ অবিলপ্তে অযোধ্যা পুরেতে **এইরেপে রবুবর করিয়া রোদন। কাননে কাননে ভামে করি অন্থেষণ॥ ভাষিতে ভ্রমিতে বসে পাদপের মূলে। চিন্তা করে গণ্ড**স্থল রাখি করতলে॥ পীতার মোহন মূর্ত্তি করেন চিন্তন। অবিলম্বে নিদ্রাবশে হন অচেতন। ক্ষিপরে সংজ্ঞা পেয়ে উঠিয়া বসিল। হৃদয়- গগনে সীতা-শশাঙ্ক উদিল॥ বিশাপ করিয়া পুনঃ করেন রোদন। হায় হায় কোথা প্রিয়ে করিলে গমন।। 🐮 প্রিয়ে জানকী দেবী বিরহে তোমার। প্রাণ ওষ্ঠাগত মম রক্ষা নাহি আর॥ **धारेक्राट** निर्वेखक त्रवृत नकन। काक्तिया काक्तिया खरम कानन ॥ সক্তে লক্ষ্মণ ভাই অনুগামী রয়। মুখে নাহি বাকা সরে বিষয়-হৃদয়॥ এদিকে অশোক বনে জনককুমারী ! বিষাদে কাটান কাল স্থরিয়া এইরি॥ क्षार्ल आघां क कति करतन तालन। वर्ल शांय (कांथ) ताम कानकोत्र उन ॥ **দাধনের ধন নাথ রহিলে কোথায়। তোমার রমণী হ**য়ে কান্দিছে হেণায়॥ ্ডব আদর্শন নাথ সহিবারে নারি। মরণ মলল মম তব নাম খ্রি॥ कड पित हक्तपूर्थ इत प्रतम्त । कड पित उव शप शाव जनामन ।। ্ছারে বিধি নিদারুণ কোন্ কর্মের কলে। অভাগীরে হেন শাস্তি কি দোষেতে দিলে। রাজার মহিষী হব বড় সাধ মনে। সে সাধ কোথায় আজ রাক্স-স্থবনে । বনে বনে পতিসনে ছিবু নিরস্তর। তাহাতেও সুখী ছিল আমার শহরেনা বিধাতার কিবা লোব হায় হায় হায়। অনুষ্ট দোনেতে সব কপালে ঘটার॥ কোপা নাথ দরাময় দেহ দরশন। কি হবে দাসীর গৃতি ওহে জনা-र्भन । রাজকতা রাজবধু হয়ে অভাগিনী। রাক্ষ্যের গৃহে বন্দী যেন কাঞ্চা-দিনী॥ এইরপে, সীতা-দেবী করেন রোদন। অঞ্জলে ভাসি যায় যুগল লোচন । তাই বলে দ্বিন্স কালী ভাবিয়া অন্তরে। বিধিলীলা কি আন্চর্যা কে ৰুঝিতে পারে॥ হরির ঘরণী যিনি জগত-জননী। রাক্স-হাতেতে তিনি হলেন विमिनी॥

### নবম অধ্যায়।

সর্মা কর্ত্ব সীতাকে প্রবোধ দান ও রামের সহিত প্র্যীব-হনুমানাদির মিলন, হনুমানের লক্ষা প্রবেশ, চতীপূজা, লক্ষাদগ্ধ, সীতার সহিত কথোপকথন ও হনুমানের পুনরাগ্মন।

অশোক কাননে কান্দে জানকী সুন্দরী। হেনকালে তথা আসে রমণীয়া नाরী।। গজেন্দ্-গদনে ধনী করি আগমন। সীতার নিকটে আসি বৃসিল তখন।। সম্বোধিয়া নিউভাবে জানকীরে কয়। রোদন করিয়া সতি নাহি ফলোদয়॥ রোদন সম্বর ধনি ওগো গুণবতি। অবশ্য লভিবে তুমি আপনার পতি॥ একি: প্রম বদ্ধ রাজার নন্দন। লক্ষ্মী অবতার তুমি জানে সর্বজন॥ ছরণ করিল তোমা রাবণ দুর্মতি। ইহার উচিত ফল দিবে দীতাপতি॥ দবংশে মরিবে তুট রামকোপানলে। উদ্ধার করিবে তোমা রাম **কুভূহলে।** ধৈর্য্য ধরি কিছুকাল করহ যাপন। অবশ্য পাইবে নতি রাম দরশন॥ সন্নমার বাকা শুনি জনক-নন্দিনী। কান্দিতে কান্দিতে কহে মৃতু মৃতু বাণী॥ দর্মে কহিলে যাহ। নাহিক সংশয়। প্রবোধ মানে না কিন্তু আমার হাদ্য ॥ মুহ্র অদক্ষ হয অদর্শনে যাঁর। কিরুপে দহিব বল বিরহ ভাঁহার।। তাঁর অদর্শনে বুঝি যায় গো জীবন। কিরুপে বাঁচিব বল সরমে এখন।। কোথা রাম গুণ্দয় করিছ বস্তি। তোমার বিরহে মরি ওহে রমাপতি।। দারুণ শিবের ধনু করিয়া ভঞ্জন। করেছিলে তুমি নাথ আমারে গ্রহণ।। নয়নে নয়নে দদা রাখিতে হে যায়। সেই সীতা রক্ষগৃহে জীবন হারায়। মিণ্ট্ভাষে সদা তুমি তুষিতে যাহারে। কেশ বান্ধি দিতে যার নিজ পদ্ধকরে॥ আপন অঞ্চলে যার মুছাতে আনন। আপনি যাহার চক্ষে দিতে হে অঞ্চন।! নে গীতা তোমান্ন আজি অশোক-কাননে ৷ বেক্টিত হইয়া আছে যত রক্ষগণে॥ ত্র্মতি রাবণ কবে করে বলাৎকার। এই ভয়ে সদা কান্দে অন্তর আমার।। ত্রা করি আসি নাথ দেহ দর্শন। নতুবা হারাই বৃঝি অকালে জীবন।। এইরপে দীতা দতী রাজার নন্দিনী। অবিরল ডাকে রামে কোখা রঘুমণি॥ व्यवस्थित मी छा-तारी मू जिया नयन। तारमत स्थारन क्षा करतन विखन।। বলে দতী আহা বিশ্বি কি কাজ করিলে। অভাগীরে কট দিলে কোন ক্ষিলে।। কোণা, নাথ রবুমণি দেহ দরশন। অন্ধকার চারিদিক করি

শিরীকণ ।। বারেক সাসিয়া দেখ ওছে রধুশতি। কি ভাবে রয়েছে আজ ভব সীতা সতী ॥ আদর করিতে কত চিরুক ধরিয়ে। কত আশা দিতে নাথ কোলেতে লইয়ে ।। করিতে ছে প্রেমালাপ মধুর বচনে । রাখিতে সতত নাথ নিয়নে নরনে ।। এইরূপে রঘুনাথে করিয়া স্বরণ। কান্দিয়া জানকী হন

🏧 🖟 🖟 এদিকে দীতার লাগি কমললোচন। বনে বনে অবিরত করেন ভ্রমণ।। क्षिरिक কান্দিতে কহে লক্ষণ দেবেরে।কাননে গেলেম কেন মুগ ধরিবারে॥ শিত্বা জানকী যথ হতো না হরণ। রাখিতে নারিনু হায় রমণারতন। কেন আর শরাসন ধরিয়াছি করে। আমার উচিত নহে ধন্ম ধরিবারে।। করে হয়ে নারী রক্ষা করিতে নারিল। উচিত তাহার পক্ষে বনবাস ভাল।। করেছেন স্থবিচার জনক আমার। কাপুরুষ মম সম কেবা আছে আর।। ্ষেই জন ধর্মপত্নী রাখিবারে নারে। কিরুপে পৃথিবী সেই শাসিবারে পারে॥ ক্লীবুৰিংশে পূৰ্ববতন যত রাজগণ। কত কীর্ত্তি করেছেন জানে দর্ববজন।। ভাল কীর্ত্তি রাখিলাম আমি পাপমতি। রক্ষিতে নারিত্র হায় সংর্থিণী সতী॥ क्षेत्र विन রযুনাথ সে স্থান ত্যজিয়ে। কুঞ্জের ভিতরে পরে পণিলেন গিয়ে।। কুঞ্জের পর্য শোভা করি দর্শন। অঞ্জলে এরামের ভাসিল নয়ন।। लक्षात्वरत मरवाधिया करहन उथन। सिर्वे कुछ धरे छारे कत पत्रमन।। খানিস তৃষিত মম হেরিলে নয়নে। এখন হেরিয়া হৃদি বিধিতৈছে বাণে। শুর্বের গোলাপ অই দরশন করি। হৃদয় বিরহে জ্বলে প্রাণে বুবিং মরি॥ বহুল পাদপ অই কর দরশন। উহার কুমুম সীতা করিয়া এহণ।। কবরী বন্ধা শীতা করিত যতনে। এখন বকুল হেরি দহিতেছে প্রাণে।। সীতা বিনা খাঁর বুঝি আমার জীবন। হায় হায় কোথা গেল জানকী-রতন।। কোথন অিয়ে পরশন দেহ একবার। তোমার বিরহে যায় জীবন আমার।। এরপে कां किया वाम लग्मर्ग छ। किया। কহিলেন সকাতরে কঞ্ণা করিয়।। व्यासानिशत किति या अद्य नक्ष्म । श्रियात वित्रदृ त्यात यांग्र द्व कीवन ॥ निरवनन करता मम माठा कोमन्तारत ! यडन कतिएड मना भूके वनि वारत ॥ ষ্ট্ৰমন করিতে দদা চাঁদমুখে যার। যারে না হেরিলে প্রাণ ব্যাক্ল ভোমার।। পাঁপন হাতেতে বারে করাতে ভোজন। দীতার বিরহে তার গিয়াছে জীবন॥ विगोड़ोट मिरवनन करता त्र नक्षम । भूक नरेत्र श्रूट्य रपुन काहीन , जीवन ॥ न्द्रमांगा नेवटत जात किति नादि यात । नेवादं कित्रदेश तन वहम दिशात ॥ किलार्व वर्मपाटक कविहा शालत । अवश्राका मनाव लाग अस्ति क्या

জিজানা করিবে মোরে পুরবাসীগণে। দেশে এলে রঘুনাথ লইরা লক্ষাণে ।

দীতা সতী কোথা রৈল বলহ বচন। তখন উত্তর কিবা দিব রে লক্ষাণ ।

কিরূপে বলিব সীতা হরণ হয়েছে। কিরূপে বদন বল দেখাব সমাজে ।

হায় হায় কি কঠিন আমার জীবন। এখনো ত্যজিছে নাহি মানব ভবন ।

এরপে রোদন করি রাম রঘুনর। নয়ন মুদিয়া বদে কানন ভিতর।। চকু

মুদি সীতারূপ করেন চিন্তন। দিগুণ বাড়িল তাহে অন্তর-দহন ॥ সে হার্লাল

ভূমিতে লমিতে বনে রঘুর নন্দন। অকমাৎ এক হানে করেন দর্শন॥

দীতার মুপুর আছে ভূমিতে পড়িয়ে। ব্যস্ত হয়ে রঘুবর নিলেন ভূলিয়ে ।

লক্ষণে সম্বোধি পরে কহেন বচন। প্রাণের লক্ষ্মণ এই কর দর্শন ॥ প্রিয়ার্ক্ক,

মুপুর এই পড়িয়া ভূতলে। হেরিয়া হদ্য মম জ্বিছে অনলে ॥ এ মুপুরে

কত শোভা হইত চরণ। এখন পড়িয়া হায় হতেছে লুঠন ॥ রুণু রুণু শক্ষ

হতো প্রিয়ার চরণে। এখন পড়িয়া হায় হুর্গম কাননে ॥ চারিদিক অব্বেষণ

কর রে লক্ষ্মণ। দেখ দেখ আছে কি না অন্ত বিভূষণ॥

এতেক বচন শুনি সুমিত্রাতনয়। বিনয় বচনে পরে জীরামেরে কয়॥ নিরস্তর হেরিতাম শীতার চরণ। কিরুপে জানিব প্রভু অন্য বিভূষণ 🕊 এত শুনি রগুবর মুপুর লইয়ে। কাননে কাননে ফিরে কান্দিয়ে কান্দিয়ে ॥ অকমাৎ এক স্থানে হয় দরশন। সীতার উত্তরী বস্ত্র হতেছে লুঠন॥ তাহা দেখি রঘুবর আনন্দের ভরে। তুলিলেন ব্যস্ত হয়ে আপনার করে॥ একদুক্টে তার প্রতি করি নিরীকণ। অশুজলে ভাসি যায় রামের নয়ন॥ বসন স্থাপন করি হৃদয় উপরে। লক্ষণে সম্বোধি কন সুমধুর স্বরে॥ প্রিয়ার॥। বসন ভাই কর দরশন। দীতা-অঙ্গে শোভা পেতো উত্তরী বসন ॥ হায় হায় শেই বস্ত্র ভুতলে পড়িয়ে। জানকী কোপায় মম রহিয়াছে গিয়ে॥ কোপা প্রিম্নে একবার দেহ দরশন। দেখু আদি তব রাম করিছে রোদন॥ এক্সপে কান্দিয়া ভ্রমে রামু রঘুপতি। কোথা প্রিয়ে কোথা হায় মম সীত। সতী। ভ্রমিতে ভ্রমিতে রাম করেন দর্শন। পক্ষা এক ধরাতলে হতেছে ভুঠন। জটায়ু তাহার নাম মহাবলধর। বাণাঘাতে হয়ে আছে জ্রীর্ণ কলেবর ॥ शास्त्र मर्वाप पिरव धारे (म कांत्रल। कांनक्रल (वैंट) आर् धतिशा পরাণে । রামেরে সমীপবর্তী করি দরশন। জটায়ু সীতার বার্ছা কহিল ॥ শীতার হরণ বার্তা রাবেরে রলিয়ে। দেহত্যাগ করে পক্ষী রাবেরে

ब्रिट्स ॥ ज्ञाटमत त्मार्टन क्रथ केंद्रि पत्रमन । कोग्र व्यापन थान दिन दिनकीन

'शकी तक्दके हनिन। छागत जाता है किया जीताय करिन। मत्म कतित्रा लग्ग। अगुज महित्य किरत तपुत्र नम्ममे ॥ ক্ষামুক নামে ঝিরি অতি মনোহর। ভামিতে ভামিতে তথা 'যান রম্বর॥ ক্ষামুক বালির ভাতা বানর প্রধান। সে পর্বতে দিবানিশি করে অবস্থান ॥ নাল হতুমান পর আদি করি। তথার বসতি করে গিরির উপরি। সমারল বালী সেই কিছিয়া-রাজন । ভাতার ভার্যারে সেই করিল এছণ। **পার্কা, কাড়ি সুত্রীবেরে ডাড়াই**য়া দিল। ঋষ্যমূকে আসি পরে সুত্রীব র**হিল।** বে পর্বতে আসিবারে বালী নাহি পারে। নির্বিছে সুগ্রীব তথা নিবস্তি করে ॥ হয়মান আদি করি বানর প্রধান। সুগ্রীবের অনুচর করে অবস্থান।। কামেরে হেরিয়া তথা স্থতীব সুমতি। বন্ধতা করিয়া কহে ওছে নীতাপতি॥ ্রাম্যুপি **আমার রাজ্য করহ উদ্ধার। সীতার করিব তত্ত্ব প্রতিজ্ঞা আমার** 🛚। ক্রান্থের বানরসেনা আছে বিদ্যমান। মম অনুগত হয়ে করে অবস্থান। ক্ষুক্ত যে আছে কে গণিতে পারে। জায়ুবান সর্বশ্রেষ্ঠ হেরছ ইহারে॥ হাদিসে চারিদিকে করিয়া গ্রেরণ। সীতার করিব তত্ত্ব আমার বচন ॥ ক্রেক বচন শুনি রাম রযুবর। সৌহার্দ্দ করিয়া কহে ওহে কপিবর॥ ক্ষিক্ষা রাজ্যেতে তোমা বসাব আসনে। বিহার করিবে দদা পলীভার্য্যা সানে ॥ পশ্চিমে মদ্যপি হয় ভাকর উদয়। তথাপি রামের বাক্য কভু মিথ্যা নার। রামের এতেক বাক্য করিয়া শ্রবণ। পরম আনন্দ লভে সুগ্রীব রাজন।। কর্ষাৰ কর্মাড়ে রামপাশে আসি। বিনয় বচনে কহে ওহে কালশৰী॥ ব্রিব্রেক তুমি রাম জেনেছি অন্তরে। অধীনে করিয়া দয়া এখানে আসিলে। প্রম ভকত আমি ওহে রদুবর। তব রূপ সদা চিন্তে আমার অন্তর॥ কি ভয় कि ভয় নাথ জামি বিদ্যমানে। তোমার প্রসাদে আমি ঘাব অন্বেষণে॥ সমাস্ত্রা বস্ত্ররা করি অবেষণ। সীতাতত্ত্ব আনি দিব কম লোচন ॥ যাহার ক্রিপাকে তোমার উপরে। অসাধ্য তাহার কিবা বনহ সংসারে॥ ছব নাম যেই জন করয়ে শ্ররণ। ভববন্ধ সেই জনে না করে বন্ধন।। ভোষার ্**চরণে করি শত ন**মস্কার। তবোপরি ভক্তি ষেন রহে অনিবার

হয়দান এইরপ করিছে শুবন। পর্ম সম্ভূট তাহে ক্মললোচন।।
আলিতে হানিতে ক্ন প্রনক্ষারে। তুমি মদ্ভক্তপ্রেষ্ঠ জানিছে অন্তরে॥
কোনা হতে মদ কার্যা হইবে উদ্ধার। রটিবে তোমার কীর্তি জগতসংসার॥
ক্ষেত্রপ্র আলাপন করিয়া সকলে। প্রম আনন্দভ্রে রহে গিরিপরে॥
ক্রিত্র প্র রামচক্র বানীরে ব্যিয়া। ক্র্মীবেরে দেন রাজ্য পুলুক্ষার্যা।

बाक्षा त्यारम कियाक क्षेत्रक क्षेत्रक तारपटक । नगत क्षारतम करत्र मेंट्स क्यूकेटन क অত্ত সহিতে রাম রহে সিরিপর। শীতার উদার আলে ব্যাহ্স অনুষ্ঠ কার্ত্তিক মানেতে পরে স্থানীব ধীমান। পূর্ণিমাতে উপনীত রাম বিধানী বিনয়-বচনে কথে রাম রবুবরে। শুন শুন ওহে প্রভূ বলি হে ভোমারে 📸 অসংখ্য অসংখ্য কুপি হয়েছে আগত। মহাবল সকলেই তব অমুগীত অসংখ্য ভল্লুক আছে মন অনুচর। প্রবলপ্রভাপ সবে ওছে রগুবর।। সীত অংহষণে সবে করুক্ গমন। আসিবে মাদেক মধ্যে পুনঃ সর্জন॥ এই ৰলি রঘুবরে কপির রাজন। পাঠাইল দূতগণে দীতার কারণু॥ কভঞ্চী উত্তরে গেল কভক পশ্চিমে। পূর্ব্বদিকে গেল কত না যায় গণনে।। দক্ষিক দিকেতে গেল বীর হন্ত্যান। অঙ্গদ করিয়া আদি আর' জান্তুবান।। রাষের অঙ্গুরী হতু করিয়া এহণ। সীতা অন্থেষণে করে দক্ষিণে গমন। কশৈছু 💰 মহেশ্বর তুক্তর সাধিতে। অন্ধুরী লইয়া চলে দক্ষিণ দিকেতে।। সীতা न নানাস্থান কলি সম্বেষ্ণ। বিষয় হইয়া সবে বসিল তখন॥ মাসেক মধোঁটে কিরি যাইতে হইবে। সুগ্রীবের আজ্ঞা নৈলে পরাণ যাইবে।। নিয়মিজ কাল গত হইল দেখিয়া। মরণ নিশ্যর ভাবে বিষয় হইয়া। হতুমান জাধুবান अञ्चलापि कति। भत्ररा निक्ष स्य ताम नाम ऋति॥ (सनकारल तिरे शासः কাননভিতরে। সংপাতী নামেতে পক্ষী ছিল রকোপরে॥ বতুদিন দর্শক ছিল বিহাদ্য। রামনাম শুনি পাদ উঠিল তখন ॥ তখন বানরগণে সংখাধনঃ করি। কহিল যে শুন শুন যত বনচারী॥ দীতাব লাগিয়া দবে করিছ-ভ্রমণ। লক্ষাধানে সীতাদেবী আছেন এখন॥ রাবণ হরিয়া গেল আপন্ত নগরে রাখনী-বেটিতা নীতা নদা খেদ করে॥

পশীর মুখেতে ইহ। করিয়া এবণ। আনন্দে পূরিত হয় য়ত কিপির্গ ।
ব্যস্ত হয়ে উঠি নবে নান্দ অন্তরে। কণ্মধ্যে উপনীত জলনিধি-তীরে ॥
ভীমণ নাগরজল করি নিরাক্ষণ। চকিত-অন্তর হয় য়ত কিপিরণ ॥ হয়মান্
শিবমুত্তি সান্দ অন্তরে। জলনিধি-পারে য়েতে অভিলাষ করে। রামনাম্
ভাদিমাঝে করিয়া মরণ। বায়ুবেগে মহাবীর উঠিল তখন॥ শূলমার্গে লক্ষ্
দিয়া উঠি কপিবর। গমন করিল বীর রাক্ষ্য-নগর॥ প্রিমাঝে সিংহিকারে করিয়া নিধন। মৈনাক পর্বত স্পর্শ করিয়া তখন॥ সম্বাকালে
এবেশিল রাক্ষ্য নগরে। পুরীমধ্যে চারিদিকে বিচরণ করে॥ সপ্তরাজি
কেইরপে করি বিচরণ। অসংখ্য রহস্য বীর করে দর্শন॥ কিন্তু নাহি
ক্রিণা জানকী দেবীরে। মরিয়াছে দীতা দেবী হেন বাম কুরে॥

বিষয়ে তথন। অনিতে অনিতে যায় অংখাক কালন।
বিজ্বৰণ পূলে বন কিবা শোভা ধরে। তথায় যাইয়া থীর দরশন করে।
বারশ স্থানী এক বসিয়া তথায়। চারিদিকে রাক্ষসীরা বেড়িয়া তাঁছায়॥
কালির সাধীচিক্ত করি দরশন। জানিল জানকী এই প্রীরামের ধন॥ ধীরে
বার্রের কোপরি আরোহণ করি। দেখিতে লাগিল বীর রামনাম ফ্রিনা
কাক্রাৎ দেখে তথা আসি দশানন। সীতারে দিতেছে ছুই্ট নানা প্রলোভন॥
ভাষাকী তাহারে কত করে তিরস্কার। তার পর গেল ছুই্ট আপন আগার॥
ভাষা দেখি কপিবর নামিয়া তখন। ধীরে ধীরে সীতাপাশে করিল গমন॥
রামদাস আমি দেবী নাম হল্পমান। এত বলি জানকীরে করিল প্রণাম॥
অন্তুত আকার সীতা করি দরশন। অভুত বানর-বাক্য করিয়া প্রবণ॥
কিন্তাপা করেন বাছা কহ সত্য করি। ছলনা করিছ না কি বুঝিবারে নারি॥
বতেক বচন হন্ম করিয়া প্রবণ। রামের অন্ধুরী তাঁরে করিল প্রপণ। সে
অন্ধুরী রাখি সীতা নিজ বক্ষোপরে। রামের লাগিয়া খেদ নানামতে করে॥
ক্রিরে সম্বোধি পরে কহেন বচন। চিরস্থী হও ভূমি বানর-নন্দন॥

এতেক বচন শুনি বীর হমুদান। প্রণাম করিয়া পুন উঠিল ধীমান॥ নগরী দেখিয়া হন্তু ভ্রমিতে লাগিল। ঈশান কোণেতে গিয়া দেখিতে পাইল॥ ভিত্তিত্বী কাননমধ্যে অশোকের মূলে। স্থঠাম মন্দির এক কিবা শোভা ধরে॥ বিরিশৃত্ব সম উচ্চ অতি মনোহর। ভীষণ কবাট তাহে অতীব স্থন্দর॥ মণি-মুক্তা-বিভূষিত মন্দির শোভন। সমুক্ত্বল চারিদিক অতি বিমোহন॥ শূপীঠ শোভে কিবা মন্দির-ভিতরে।দেবীমূর্ত্তি তছপরি কিবা শোভা ধরে॥ কানবর্ণা চতুতু জা দেবী ত্রিনয়না। অট্র অট্র হাস্য মুখে রুধির-বদনা॥ মুখ-শালা শোভে গলে আহা মরি মরি। মনার-কুমুম্মালা যাই বলি হারি॥ विन योजना (क्वी सूर्वूड ठत्रा। क्रिक्त गुज् करत श्रकूलवकरन॥ ক্ষাকে মুদনভাব হয় দরশন। শঙা ঘণ্টা আদি দেবী করিছে বাদন॥ ক্রিকাং 💔 যোগিনীর। বেড়ি চারিধারে। অটবুর্ণে শোভে তারা জনমন হরে॥ কাষামুখে নিরম্ভর রাবণের জয়। মারুতি দেখিয়া তাহা হইল বিষয়।। हकां क्र किया नक पिया रस्मान। म्य रूट एपती-अट्य करत अवसान। ক্রের ছকার শব্দ ক্ররিয়া এবণ। যোগিনীর। ভয়ে হয় ব্যাক্লিত মন।। শ্রীবাসিয়া দিগম্বরী যোগিনীগণেরে। হন্ত্যানে সঁমোধিয়া কছে তার পরে।। कि कृषि वानतक्षी (पट शतिहत्र। कि कांत्ररंग मगांगल त्राद्धा जानत्र॥ रम् नीत अरज्क वाका कतिया अवन । इस्मानं शीरत भीरत कहिन जयन॥

গায়ুর দশন জ্যাম নাম হস্থান। হইয়াছি রাম্দাস আমি বলবান। त्रोकम-व्यानस्य कामि मीजा व्यस्यरा। कि विनव यय मक्ति जव विख्यार्स्य ॥ দসাগরা সপ্রহতা এই বস্তুমতী। গরাসিতে পারি মম এ হেন শক্তি॥ দশত করিছ তুমি রাবণের জয়। কে তুমি বলহ দেবী আলুপরিচয়, হতুর এতেক বাক্য করিয়া প্রবণ। চণ্ডিকা মধুর ভাবে বলেন তখন 🏨 হিম্পিরিকন্তা আমি শুন পরিচয়। চণ্ডিকারপেতে থাকি রাবণ-আলয়॥ রা**ক্ষনের অধিপতি লক্ষা**র রাজন। আমার উপরে ভক্তি কর**রে দর্শন।**। ভক্তিবলে বশীভূত করিয়াছৈ মোরে। এ হেতু তাহার জয় বদন বিবরে॥ পার্ব্বতী ইত্যাদি নাম আছয়ে আমার। এবে বলিতেছি যাহা শুন গুণাধার॥ তোমার ভীষণ রূপ কর প্রদর্শন। দেখিব মনেতে মম এই আকিঞ্চন ॥ দেবীর এত্তেক বাক্য শুনিয়া প্রবণে। বায়ুস্তুত মনে মনে সুরি রামধনে । অচিরে ধরিল বার ভীষণ আক্রতি। বিস্তারিত নেত্রযুগ অদ্ভুত বিক্লতি॥ তাহার শরীরে একী করেন দর্শন। সংলগ্ন রয়েছে যত রাক্ষসের গণ।। নখে লগ্ন আছে কেহ কেহ বা দশনে। মৃত দম সব রক্ষ মুদিত লোচনে॥ প্রতি রোমসন্ধিদেশে যতেক বানর। শীর্যদেশে ধনুষ্পাণি রাম রঘুবর॥ মহাবল মহাসত্ত্ব কমললোচন। হনুর মস্তকোপরি কৌশল্যা-নন্দন॥ রামের হাতেতে ধনু কিবা শোভা ধরে। রাবণ আছয়ে লগ্ন ধনুকের শরে॥ বামকরে চাপমুষ্টি ধরে রঘ্তর। কুস্তকর্ণ তাহে লগ্ন মহাবলধর॥হমুর ললাটদেশে শোভিছে লক্ষণ। রোচনাতিলক সম অতি বিমোহন॥ নক্ষণের চাপমুক্টি কিবা শোভা পায় । অতিকার লগ্ন আছে মরি কিবা তায়॥ ইন্দ্রজিত আছে লগ্ন লক্ষ্মণ-চরণে। পরম আশ্চর্য্য আছা না যায় বর্ণনে॥ শক্ষণের কিরীটেতে জনকনন্দিনী। বিরাজ করিছে কিবা রাঘব-ভাষিনী॥ জানকীর দৃষ্টি আছে রামের চরণে। রাবণ চাহিয়া আছে জানকীর পানে॥ হমুর ভুরুর মধ্যে রাক্য-নগরী। জ্লিতেছে রক্ষ সহ আহা মরি মরি॥ আরো দেবী দেখিলেন বানর-হৃদবে । শোভিতেছে বিভীষণ আনন্দিত হয়ে॥ মূর্ত্তিমান ধর্ম সম শোভে বিভীষণ। লক্ষারা জ্য সিংহাসনে তিনিই রাজন॥ (धरेत्रिंश किंशि-व्यक्ति पत्रभन कित्। विनय विषय करह (पवी पिश्वती॥ জানি জানি কপিরপী তুমি মহে্থর। রাবণ-বিনাশ হেতু হঁয়েছ বানর॥ রাখবে তোমাতে ভেদ কিছুমাত্র নাই। আমি কি করিব এবে বল মম ঠাই॥ এখন আমার বাক্য করহ অব্। এরপ তোমার রূপ কর সম্বরণ। (प्रवीत अंटें क वाका छिन रह्मानं। (मोग्रमूर्डि ध्रति उटन कटत , व्यवसान।।

रंगनीरत मत्नाधि भटत करहम तहन। आगृत वहन स्वि केत्रह अवने हैं শ্বিনিখে লছা পুরী করি পরিহার। হানাতরে যাহ দেবি বচনে আমার।। শানকীয় অপমান করে দশানন। তার জয় ইচ্ছা কর ইহা বা কেবন।। स्मि इमि भाक (पवि तक्ति-दिक्जिता। नातित्व विश्व ताम कृषे प्रभानत्न॥ শ্বৰণ যন্ত্ৰি নাহি হয় বিনাশন। সমূলে ত্ৰন্ধাও দেবি হবে নিপ্তন। হৰুর বচন শুনি কহে মহেশ্রী। শুন শুন কপিরপী ওহে ত্রিপুরারি। জানকীর অপমানে মম অপমান। হয়েছে সন্দেহ নাহি ওহে মতিমান॥ ভাজিতে বলিলে তুমি রাবণ-আলয়। সমুচিত ইছা বটে ওছে মহোদর॥ দেবীয় এতেক বাক্য করিয়া শ্রবণ। হনুমান গুৰবাকের ক্ষেম তখন।। শ্রুবভন দিনী দেবী তুমি মহে থরী। পুনঃ পুনঃ তবোদেশে নমকার করি॥ कानक्रण। তুমি সতী বিশ্বনিকেতনা। সৈশ্ববী লক্ষেশী তুমি বিমলবদনা॥ अक-বিষ্-শিবারাধ্যা তুমি সনাতনী। সৃষ্টি-স্থিতি-কর্ত্রী তুমি সংহারকারিণী॥ শান্তা শক্তি ভূমি দেবি ভকত-বৎসলা। বিপক্ষনাশিনী ভূমি শিবমনোহরা। রবুবরে বর দেবি করহ অর্পণ। যাহাতে বধিতে পারে ছুই দশানন॥ শাহায্য করিবে তুমি রাবণ-নিধনে। এই বর দেহ দেবি আমা বিভাষানে॥ হবুর এতেক বাক্য করিয়া শ্রবণ। মিউভাবে চণ্ডা দেবী কহেন তখন॥ कंयूर्द् वत आगि कतिलू श्रामा। म्यानटन श्राज्य कतित्व धीमान॥ পুনশ্চ লভিবে রাম জানকী সতীরে। রটিবে রামের কীর্ত্তি জগত-মাঝারে॥ শাহায়। উচিত বটে করিতে আমার। কিন্তু এক কথা বলি শুন গুণাধার॥ ষাৰতীয় কাৰ্য্য সিদ্ধ করিতে হইলে। বোধন করিতে হয় শাস্ত্রে হেন বলে॥ **অকালে সাহা**য্য নৈলে কিরূপে করিব। বোধিত হইয়া পরে সাহায্য করিব॥ পাতএবে রামচন্দ্র করিয়া বোধন। যথাবিধি মম পূজা করিলে সাধন॥ সাহায্য করিব আমি রাবণ নিধনে। জয়ী হবে রঘুবর কহি তব স্থানে॥ পেবীর এতেক বাক্য করিয়া এবণ। হনুমান্ মিটভাষে কা্ছন চখন॥ দেৰতার প্রতি হেতৃ ভূমি সনাতনী। স্বাহারপে বিরাজিত কৈৰ্প্যদারিনী॥ পিড়ভুকি হৈতু ভূমি স্থার আকারে। নিয়ত বিরাজ কর সাদদ অন্তরে॥ ঋধারূপে রামপূজ। করহ গ্রহণ। দর্শপর্কে পিতৃগণ হর্ষেছে সৃজ্ঞন॥ अपरे पिटन পিতৃগণ कवाटाकी इहा। भारकत विधान दे**हा जा**निह निक्या। व्यक्त वर शार्म अरे व्यक्तिकन। त्राप्तक कर्म पूमि कन्न छक्त।। ः इषुत्र अटिक वाका छनि ममालनी । कहिरलन छन छनं जुरह खनेपनि ॥ विनिद्धं जादा दृद्व श्वनमन्त्र। आमिरक त्रपुरत त्राक्शक्तुन् ॥

শিতৃরপা হব আমি ভোমার বচনে। পার্কাণিক আদ রাম করিবে যতনে। शक्षमण पिन जामि शिज्क्रशैं तव। तामम्ख शृक्षा जामि धार्ग कतिय 🖟 मयदञ्ज मर्थाभ मत्त कति अ मर्याम । विजयी दरेत्व त्राम जानित्व जलति ॥ এতেক বচন শুনি কহে হয়ুমান। আমরা করিব যুদ্ধ যেমত বিধান। धार्यन ज्यामात्र वाकाः कत्रह धावन। कनकाल धारे भीठ कत्रह वर्जन ॥ হকুর এতেক বাক্য শুনি সনাতনী। ক্ষণকাল পীঠ দেবা ত্যজিল তখনি॥ তখন স্থার বন ভাঙ্গে হতুবান। লোকমুখে শুনে তাহা রাবণ ধীমান #-বছ রক্ষ দশানন করি সম্বোধন। হনুমানে বিনাশিতে করিল প্রেরণ॥ প্রননন্দন সবে করিয়া সংহার। চণ্ডিকার পূজা করে হনু গুণাধার॥ দেবীর উদ্দেশে হনু করয়ে পৃজন। রাক্ষসের রক্তে পাত্য করেন অর্পণ॥ কুসুমিত তরু কত পড়িতে লাগিল। সেই পুলো চণ্ডিকার অর্চনা হইল।। অক আদি রাজপুত্রে করিয়া নিধন। চণ্ডিকা উদ্দেশে বলি করিল অর্পণ। তদন্তর রাত্রিখেলেগ মেখনাদ সনে। খোরতর যুদ্ধ হয় না যায় কহনে॥ প্রাতঃকালে মেঘনাদ করিল বন্ধন। তাহার কারণ বলি করহ প্রবণ।। त्रांवर्णद्ध पिथिवाद्ध वामना हरेल। हनुमान मिरे रहजू निर्क ध्वा पिल ॥ নতুবা কাহার সাধ্য বান্ধিতে তাহারে। নিমেষে যে জন শব্দ জগত সংহারে॥ रसूमात्न (এইक्राप्ट) कतिया वस्ता । क्रांचिश लाख (शन तांवर्ग महन्।। বিরূপ করিতে তারে রাক্ষ্যের পতি। লাঙ্গুলে আগুণ দিতে দিল অনুষ্ঠি॥ লাফুল অ্লিয়া উঠে অতি বিভীষণ। পূজার্থ প্রদীপ হইল জান সর্বজন॥ खनर नाम्नुतन रूजू गृंदर गृंदर फिरत। এর পে অসংখ্য गृंर क्राय पक्ष करत ॥ धुপর্রপে সেই সব করিয়া প্রদান। চণ্ডিকার পূজা করে বীর হনুমান॥ ছমুক্ত পূজা দেবী করিয়া গ্রহণ। লঙ্কা ত্যজি কামরূপে করিল গমন॥ তার পর কপিবর জানকী সদনে। প্রণাম করিল গিয়া যুগল চরণে॥ আশীষ করিয়া দীতা কহেন তখন। মন বাক্য শুন বংস প্রনন্দন। গ্রমন করছ ভূমি রামের গোচরে। বলিবে আমার কথা দেব রঘুবরে ॥ অবিলম্বে মোরে যেন করেন উদ্ধার। প্রতীক্ষা করিয়া রহি রাক্ষ্স আগার॥ যদি ত্রাণ নাছি পাই দ্বিমাস ভিতরে। নিশ্চয় ত্যজিব প্রাণ কহিত্ম তোমারে॥ এই সৰ রাখবেরে করে। নিকেন। মোরে উদ্ধারিতে তুমি করিবে যতন। দেবীর এতেক বাকা প্রবণ ক্রিয়ে। তথাস্ত বলিয়া হন্ম নানদ স্বদয়ে।। त्रोपनाप कृषिभारतः कतियां यत्र। लक्ष्य पिया भ्राष्ट्रत উठिन उसन।। मागन मिलना भरत अभारत कामिल। जक्तांकि नदः जामि विलिख दरेन।।



। বসুরে হেরিরা সবে সানন্দ অন্তরে। অবিলয়ে চলি গেল রামের গোচরে।। । হসুষান রামপদে করিয়া প্রণাম। সীতা-বিবরণ সব কহিল ধীমান।।

### দশ্ম ভাষাায়।

জীরামের লঙ্কায় গমন, রাবণ বধ ও সীতা উদ্ধার।
ভাবণে মাসি বৈ রামো দশম্যাং রপুনন্দনঃ।
মহতা সেনয়া সার্দ্ধং প্রযথো জলধেস্তটং॥

আশীর্কাদ করি রাম প্রননন্দনে। উদ্যোগ করিতে থাকে লঙ্কাতে গমনে॥ **শ্রাবণে দশ**মী দিনে রম্বর নন্দন। কপিসেনা সহ যাত্রা করিল তখন॥ অহোরাত্র পর্য্যটন করিয়া সকলে। দাদশীতে উপনীত সাগরের কুলে॥ 'आभाध ममूज मत्व कति पत्रभन। किक्रत्थ यारेत्व शात्र कतित्व िष्ठन॥ **ट्रिकाट**ल विकीयन ब्रियामिश पित्न। भारत लहेल जानि तार्यत हत्रतन ॥ <sup>ই</sup> পরীকা করিয়া তারে রবুর নন্দন। স্থ**হ**ৎ বলিয়া তারে করিল গ্রহণ। ভার পরামর্শে রাম করিয়া নিয়ম। সিদ্ধুরাজে স্থপ্রসন্ন করেন তখন॥ ভার পর সেতৃ বাদ্ধে সাগর উপরে। অপূর্বে হুন্দব সেতু হেরি মন হরে। এক্লপে সাগবে হৈল সেতুর বন্ধন। জয় জয় ধনি উঠে এ তিন ভূবন। ভার পর কপিদৈশ্য সহ রবুবর। সিন্ধুপারে চলিলেন সানন্দ-অন্তর॥ ক্লফপক ত্রয়োদশী তিথি সেই দিনে । উপনীত সেই দিনে কপিলৈ সনে॥ বিভীষণ সঙ্গে করেছে গমন। রাবণ শুনিল ক্রমে এই বিবরণ॥ 😕 শোক বুদ্ধিমোহ প্রলাপ চিন্তন। দিগ্রেম আদি করি গার যে কম্পন॥ এই দাব একেবারে রাবণে খেরিল। বিমুগ্ধ হইয়। রাজা চিন্তিতে লাগিল॥ ভার পুত্র রামচন্দ্র অঞ্চল কপিরে। পাঠালেন দৃতরূপে রাবণগোচরে॥ আক্রদ রাবণপাশে করিয়া গমন। অনেক ভং সনা তারে করিল তখন। রাবণের শিরোহিত মুক্ট লইয়ে। অঙ্গদ চলিয়া আদে প্রফুলছদয়ে॥ তখন আপন মনে করিয়া চিন্তন। নিশ্চয় হইল যুদ্ধ ভাবিল রাবণ॥ পুরগুপ্তি আরম্ভিল দতর্ক হইয়ে। চতুরক দেনা দাজে উদেযাগী কদয়ে॥ এখিকে এরামচন্দ্র সেনার সহিতে। প্রবেশিক লঙ্কাপুরী আনন্দিত চিতে॥ কিনা জলে কিবা হলে কিবা রক্ষোপরে ৷ গৃহপ্রান্তরেতে গৃহে অথবা প্রাচীরে मरे पिटक छूड़े एकू रह निभाजन। मारे पिटक रह मय यानह पर्यन ॥

অনস্তর মহাবাত রাম র্মুবর। আহ্বান করিয়া সবে ,কভেন সত্র 🕴 चु और अक्रम विजीयन रगमान। नल नील शर आह वीत आहुरान । ইহাদিকে নুদোধিয়া কছেন তখন। আমার বচন দবে করহ এবশ 🖠 পূর্কাপেক। স্থপন্ন আদার অন্তর। অপর্কেতে পিতৃযজ্ঞ করিব সভ্রা অত্য হতে পঞ্চদুশ দিবন যতনে। করিব আদ্ধের বিধি যেনত বিধানে 🌉 এত বলি আদ্ধ রাম কৰেন তখন। অমনি রাক্ষ-সৈতা হয় দরশান<sup>ি</sup> अ म् अन तमनाथाक तावन-आटक्टन । मटेमना मः शादम आटम तारमत मकाटना অকে হিণীপতি দেই বীর অক-পন। হনুমান যুদ্ধে তারে করিল নিধন। পরম আনন্দ তাহে পান রগুবর। এইরূপে যুদ্ধ হয় অতি ঘোরতর॥ প্রতিদিন যুদ্ধ হয় রাক্ষদের সনে। ধুমাক মরিল পরে ঘোবতর রণে 🕻 তার পরে বজ্রদং ঐ রণেতে পড়িল। তাহা দেখি দশানন ব্যাকুলিত হৈল। বহু চিত্তা করি শেযে বীর দশানন। মাতুল প্রছস্তে যুদ্ধে করিল প্রেরণ 🕊 রাত্রিকালে 📑 মুদ্ধ বাধে ছোরতর। দেবাসুর তাহা হেরি ভয়ার্ভ অন্তর 🌡 প্রভাতে প্রহন্ত পরে দারুণ সমরে। পতিত হইযা গেল অমর-নগরে 🛊 মাতুল রণেতে যদি হইল পতন। চিন্তায় কাতর হয় বীর দশানন। তাহা দেখি দেঘনাল রাবণ-চনয। शोत्र धीत्र পিতৃপাশে উপনীত হয়॥ মায়াবী সে নেবনাৰ মহামায়। জানে। পিতারে কছিল পিত ননানি চরণে 🎏 কেন চিন্তাকুল পি তঃ আজি বিল্যান। সমরে এখনি আমি করিব প্রাণ॥ রামলক্ষ্মণেরে বল কিবা নাহে ভ্যা সমরে পাঠাব দৌহে শ্মন আলয়। এত বলি যুদ্ধ সজ্জ। কি যে। তখন। সমর উদ্দেশে চলে রাবণ-নন্দন।। চতুরক সেনা চলে সজ্জিত হইয়ে। রণকেত্রে উপনীত সানন ছদেয়ে॥ রাম লক্ষণের সহ বাধিল সমর। কি বলিব সেই যুদ শতি ঘোরতর। সমরেতে মেঘনাল অতি বিচক্ষণ। জীরামলক্ষণে বীর করিল বন্ধন। নাগপাশে বন্দীভূত করে দোঁহাকারে। গরুড় আসিয়া পরে বিমোচন করে॥ मार्केंग मकि পरा कतिया धर्ग। नक्षण উপরে বীর করিল কৈপ।। মেঘনাদক্ষিপ্র শক্তি আসিয়া সবলে। পড়িল বেগেতে লক্ষণের বক্ষঃস্থলে॥ অমনি অজ্ঞান হয়ে পড়িল লক্ষ্মণ। হাহাকার করি রাম করেন রোদন।। খন খন করাঘাত করেন কপালে। বলে বিধি কিবা দোৰে এরূপ ঘটালে॥ অংথাধ্যানগরে আর না যাব কখন। লোকের নিকটে নাহি দেখাব বদন॥ · হার হার কেন আদি করিতু সমর। কেন বা আসিতু আমি রাক্ষ্য-নগর 🕸 সিয়াছিল দীতা তাহে কতি নাহি ছিল।প্রাণের অত্মজ আজি প্রাণেতে মরিত্র

্রাক্লের বীজ তুমি পরমা ঈশরী। সবার প্রধানা তুমি জগত ঈশরী। গৈতির গতি তৃহি মহিষমর্দ্দিনী। মঙ্গল-আলয় 'দেবী মঞ্চল কারিণী।। শ-নাশিনী দেবী তুমি পরাৎপরা। পরমা প্রকৃতি তুমি সার হতে সারা॥ শ্বিশের গতি তুমি আদিমা শকতি। মহামায়া সর্কেইরী সর্কভুতে গতি॥ জুমি লক্তা তুমি কমা তুমি মা গো ধতি। তুমি রদ্ধি তুমি মোক তুমি শান্তি মতি॥
জুমি শ্রদ্ধা তুমি দয়া তুমি বেদমাতা। তুমি লক্ষী ধরম্বতী সবাকার মাতা॥ ্রিরাজ করহ তুমি দদা দর্বস্থলে। তব তত্ত্ব কে বৃঝিবে জগত মাঝারে।। যোগের ঈশ্রী তুমি আঅমরপিণী। কার-কারণ তুমি নিস্তারকারিণী।। ্তুমি শ্তা ত্মি মর্ত্তা ত্মি শশধর। ত্মি বক্ষা ত্মি বিরু ত্মি দিবাকর॥ ্ৰিম নদ তুমি নদী তুমি জলাশয। তোমা হতে উৎপত্তি তোমা হতে লয়।। ক্রিকা প্রখ কিবা হঃখ তুমিই কারণ। রক্ষ রক্ষ দেবগণে ধরি গো চরণ।। ্রিতেণ-সতীত তুমি জগতপালিনী। তত্ত্মধী ওগো তারা তোমারে নমামি।। শৃতমোহিনী তুমি সর্ক মাযাময়। তোমা হতে হয় মাতঃ ভবভয় কয়॥ 💘 মবতী হরজায়া বিশের ঈশ্রী। প্রকৃতিরূপিণী মাতঃ তুমি ষজ্ঞেশরী॥ ্<mark>রিখের হইল সৃষ্টি তোমা</mark>র হইতে। বিশ্বের পালন লয় হয় তোমাহতে॥ সময়ী শক্তিরপা পরমা রূপিণী। শঙ্করী শিবাণী মাতঃ জগত-জননী॥ সম্বার নমকার পুন পুনঃ নমকার । পুনঃ নতি করি চরণে তোমার॥ এইরপ স্তববাকা করিয়া প্রবৃৎ। ক্রারূপে দেবী আসি দিলেন দর্শন।। ক্রারে দেখিয়া যত অমরনিকর । নমকার করে তার চরণ উপর॥ িহে দেবী নমস্কার তোমার চরণে। ভ্য হতে রক্ষ মাতঃ আমা স্বাগণে॥ এতেক বচন কন্সা করিয়া শ্রবণ। কহিলেন শুন শুন যত দেবগণ॥ হুৰ্গান্ন আদেশে আমি এনেছি হেথাব। তাঁহার খাদেশ বলি শুনহ সবায়॥ कृत्ना তোমা সবে মিলি যত দেবগণ। বিল্লহক্ষে যথাবিধি করহ বোধন॥ द्धियोत्र উদ্দেশে সবে বোধন করিলে। বোধিত হবেন তিনি কহিনু সবারে॥ ুবোরন করিয়া পরে যত দেবগণ। যধানিধি দেবীপূজা কর**হ সাধন**॥ ব্ধিখানে তাঁহার স্তব করিবে সকলে।কার্য্যসিদ্ধি হবে তাহে না যাবে বিফলে সামের বাসনা সিদ্ধি হইবে নিশ্চয়। এত বলি কন্যা দেবী অন্তর্হিত হয়॥ ভার পর পদ্মযোলি দেবগণ সনে। উপনীত হন জাসি মানবভবনে॥ **লিমিতে ভামিতে পরে করেন দর্শন। বিলারক একস্থানে হতেছে শোভন ।** স্থাহর পত্র তার কিবা শোভা পায়। সেই পঞ্জে ক্লা এক মনোহরকায়। ্রিজ্বনে পরের পরে করিয়া শয়ন। নরমালা গুলাদেশে হতেছে শোভন।

স্থতপ্ত কাঞ্চন সম বরণ তাঁহার। ক্ষীণকটি বিদ্ব-ওন্তী স্থচারু আকার। অনায়ত অক্টে আছে করিয়া শয়ন। নবপদ্মালা গলে ছতেছে শোভন্য তাঁহারে দর্শন করি কমল-আকর। চিত্রপুত্তলিকা নম বিক্ষিত অন্তর।। পুনরায় দেবগণ দহিত মিলিয়ে। স্তব আরম্ভিল ত্রন্ধা সানন্দ ছদয়ে 🖫 জানি জানি তুমি মাতঃ অতিমায়াবিনী।মায়া করি ভূমিতলে এসেছজননী 🛚 শক্রপা তুমি দেবি তমি মিত্রপা। যোগার সম্ভরে থাক তুমি সত্ত্রপা॥ তুমি স্থূল তুমি স্থান জগত-রপিণী। তোমার চরণে মাতঃ পুনশ্চ নমামি॥ কিবা বিষ্ণু কিবা আমি কিবা মহেশ্বর। কিবা দেবগণ আর দানব কিল্লর॥ ত্রব তত্ত্ব কোন জন বুঝিবারে নারে। তোমার চরণে নতি করি ভক্তিভরে॥ তুমি সাহা তুমি সলা তুমি ববট্কার। খ্রীক্ষাররূপিণী তুমি তুমিই হক্কার,॥ দৰ্বরূপ। তুমি দেবী সভ্য সনাভনী। পুনঃ পুনঃ ভব পদে নমামি ।। তুমি মাস তুমি পাক তুমি সত্তপর। তুমি ঋতু হি-অয়ন তুমিই সকল॥ তুমি হব্য তুনি কব্য তুমি গো জননী। সত্যস্তরূপিণী তুমি তোমারে নমামি॥ তোমার বোধন মোরা করিছি যতনে। সুপ্রসন্না হও মাতঃ যত দেবগণে॥ উস্কলনে নীচ তুমি কর গো ফুন্বি। নীচজনে উচ্চ কর জগত-ঈশ্রী॥ চক্রকে করিতে তুমি পার দিবাকর। সূর্য্যেরে করিতে তুমি পার শশধর॥ অকালে তোমার মাতঃ করিছি বোধন। সুপ্রসন্না হও দেবি এই আকিঞ্চন॥ এইরূপ স্তববাক্য করিয়। শ্বন। কন্সারূপ অবিলম্বে ত্যজিয়া তখন॥ স্বন্দরী যুবতীরূপ ত্যজিয়া ঈশ্বরী। নিদ্রা ত্যজি উঠিলেন নয়ন উন্মীলি॥ উগ্রচণ্ডা মূর্ত্তি দেবী করিয়া ধারণ। দেবগণে মম্বোধিয়া কছেন তখন॥ স্তবেতে সম্ভট আমি হয়েছি সবার। বর মাগ দেবগণ যাহা ইচ্ছা যার॥ এতেক বচন শুনি কমল-আসন। দেবীরে সম্পোধি কন মধুর বচন॥ নিবেদন করি দেবি তোমার চরণে। সুপ্রদলা ছও মাতঃ যত ছেবুগণে॥ অকালেতে করিলাম তোমার বোধন। রামোপরি অনুগ্রহ কর বিতর্ণ॥ যেরপে নিহত হয় রাক্ষ্যের পতি। তাহার উগায় কর ওগো ভগবতি॥ অদ্য হতে আগামী নবমী যাবত। অর্চনা করিব তোমা যথা বিধিমত॥ যাবৎ রাবণ নাহি হইবে নিধন। তাবং তোমার দেবি করিব পুজন। তার পর বিসর্জ্জন করিব তোমারে। তখন ঘাইবে দেবি ইচ্ছামত স্থলে॥ এইরপে স্বর্গ মর্ত্য পাতাল নগরে। সকলে পৃজিবে তোমা অতিভক্তিভরে॥ यञ पिन अरे विश्व थाकित्व जन्मी। তত पिन তव शृका इत्व मनार्जन ॥ 📭 🕫 শক্ষীতে ভোমার বোধন। যুতনে করিবে দবে আমার বচন॥

ं अर्डक रहन अनि जगंड-जननी। खजादत मरकारि कंन उंदर शवरयानि। য়া বলিলে তাই হবে নাহি হবে আন।ভোমার বাঞ্চিত আমি করিব বিধান। , **ইবাধিত হইমু আ**মি রামের কারণে। শিবের আদেশ আছে জানিবেক ননে॥ **শৈবের আদেশ** ভিন্ন কিছু নাহি পারি। পরম পুরুষ শিব জগত-কাণ্ডারী॥ র্ভব্যর , মহাজ্ঞানী দেব পঞ্চানন। তাঁহার আদেশ করি সভত পালন॥ রামের কারণে শিব সদাই চঞ্চল। রামহিত সাধিবারে নিয়ত তৎপর॥ विनिट्छि । এবে यादा कत्रह धावन। जाना तक कूछकर्न इटेरव निधन॥ खर्माप्रीपिटन যুদ্ধ করিবে লক্ষণ। সেই যুদ্ধে অতিকায় ত্যজিবে জীবন॥ **ठेकुर्फगौरित** यूरक त्रावर्ग याहेटव। त्ययनाम अयावच्या मितनटच मतिरव॥ প্রতিপদে মকরাক্ষ হইবে নিধন। দ্বিতীয়াতে বহুবীর ত্যক্তিবে জীবন॥ তার পর রামচন্দ্র দিব্য ধনু লয়ে। সপ্তমীতে রণমাঝে প্রবেশিবে গিয়ে॥ **ঘটিবেক অন্ট**মীতে দারুণ সমর। রামরাবণের যুদ্ধ অতি **ঘো**রতর॥ अर्थेमी नरमी मिक्क रत्व तमरे काल। तावर्गत प्रख्तामि পतित्व छ छल।। পুনঃ পুনঃ শিরোর্ক হবে নিপতন। আবার মন্তক পুনঃ হবে উৎপাদন॥ নবশীর অপরাকে রাবণ মরিবে। দশমীতে রামচন্দ্র বিজয়ী হইবে॥ এরপে পোনের দিন আমার পূজন। করিবে যতন করি ওহে দেবগৃণ॥ विश्वपृत्न মম পূজা করিয়া বিধানে। সপ্তমীতে গৃহে মোরে জানিবে যতনে॥ তিম দিন গৃহে মোরে করিবে পূজন। নানাবিধ ভক্ষ্য ভোজ্য করিবে অর্পণ॥ ভক্তিভরে জাগরণ করিবে সকলে। থাকিবেক অফদীতে সবে অনাহারে॥ নবমীতে বলিদান করিবে অর্পণ। যোগিনীগণেরে নোর করিবে পূজন॥ দর্বব্য অর্পণ করি প্রজিলে আমারে। ফুফল হইবে তার কহিছু দবারে॥ বিপ্র ক্ষত্র বৈশ্য শুদ্র এই সব জন। তিন দিন সর্বকর্ম করিবে বর্জ্জন। হিংসা ছেল নাৎসর্য্য কভু না করিবে। কলছ বিবাদ সবে সর্বাধা ত্যজিবে॥ কেনি হৈত অপচয় যদি কিছু হয়। তাহে নাহি হবে কভু বিষধ-শ্বদয়॥ অধ্যাপন অধ্যয়ন কভুনা করিবে। ক্রয়'বিক্রয়াদি কার্য্য সর্বঞ্চা ত্যজিবে॥ केन मिन ना कतित्व वर्ष डेशार्ब्बन। कृषिकार्या जिन मिन कतित्व वर्ब्बन॥ ভিন দিন মহানদে করিবেক গান। বিপ্রগণে ভোজা দ্রব্য করিবে প্রদান॥ माद्रीक मरखाय मना कतिरव यज्या । विचलर हामकार्या कतिरव विधारम ॥ बरेंक्ररण भुका करत यह माधूकन। मर्स्क्यत दश मिरे आयात कन। भाषात्र भाति । श्रुषा (यहे नाहि करतः । महाभाशी इत्रं त्महे क्षितित जलता ॥ भिष्ट्यभी त्मवस्रभी इत्र त्महे कन । जल्दिम नितत्र मार्क कन्नत्र शर्मा॥

্ষ্ত্ৰ বিপদ হইতে করে পরিতাণ। এই হেতু মহাক্ষী হয়েছে, আখ্যান॥ पृष् मण्या ए पाजी अहे तम कांतरण। यहां नवसी आ नाम जानित्वक यहन। বিজয়া দশমা হয় অতি শুভদিন। ইহার প্রশংসা করে যতেক প্রবীণ। केर फित्न শুভকর্ম আরম্ভিতে হয়। সুকল ফলিবে তাহে নাহিক সংশয় ॥ শ্রিদীয়া মহাপূজা ক্রিলে সাধন। আমার পরম ীতি হইবে যেমন। -শেইরূপ রাবণেরে নিধন করিলে। রামের রহিবে কীর্ত্তি অবনীমগুলে॥ ক্রমি মম এই পূজা করিলে স্থাপন। এই হেতু তব কীর্ত্তি রবে পদ্মাসন॥ এখন আমার বাক্য শুনহ সকলে। অত্য হতে পূজারম্ভ কর ভবিভেরে। এত বলি ভগবতী তিরোহিত হন। যথাবিধি দেবীপূজা করে দেবগণ॥ मानय-आकात मर्य थात्र कतिरा। छलिरलन थताउरल मानम इपरा ॥ নেপ। গিহা। মহাপজা করেন দাধন। মহাপূজা পেয়ে দেবী মহাপুষ্ট হন॥ এ। পকে নবমা দিনে রাম রবুবর। কুন্তকর্ণ সহ যুদ্ধ করে বছতর।। मिरे यूफा कृष्ठ किने निधन। জয় জয় শ্বনি করে কপি**দৈতাগণ॥** তার পর অতিকায় দমরে মরিল। দশানন তার পর রণেতে চলিল॥ ইক্রজিত তার পার হইল নিধন। কত রক্ষ মরে রণে কে করে গণন॥ দ্বিতীয়াতে মকরাক নিহত হইল। অসংখ্য অসংখ্য রক্ষ জীবন ত্যজিল। কপি দৈন্য মরে কত কে গণিতে পারে। রাক্ষ্য পড়িল কত ভীষণ সমরে॥ অসংখ্য অসংখ্য ক্ষম উঠিতে লাগিল। অসংখ্য অসংখ্য মুগু হাসিতে থাকিল मुख्याना २८० तक वादित रहेए। अमर्था अमर्था नहीं वहिन छनिएस। কাকগণ উর্দ্ধানেশ সানন্দ অন্তরে। রক্তপান আরম্ভিল থাকিয়া সমরে॥ তার পর তৃতীয়াতে দারুণ সমর। রাম সহ রাবণের অতি ঘোরতর॥ छूरे जात वाका युक्त विश्वत रहेल। तामहन्त्र पिवा धन् धात्र। कविल। তখন রামের রূপ অতি ভয়ঙ্কর। রাবণ উপরে শর মারেন বিস্তর॥ ক্রমাগত কয় দিন দারুণ সমরে। দোঁহাকার কেহ নাহি স্থির হতে পাইন অন্ট্রমী নবমীসন্ধি হইল যখন। তরাবণের মুগুরাশি পড়িল তখন॥ ययन (इपन करत ताम तपूरत। शूनण जनरम नित करसत उँभत॥ এক শত আটবার করেন ছেদন। পুনঃ পুনঃ উঠে শির আশ্চর্য্য ঘটন॥ नवशीत जाशतारू ताम तथूवत्। किलिटलन मेंगानरन छूमित छेंशत ॥ ষেমন ক্লাবণ রবে হইল পত্ন। পৃথিবী কাপিয়া উঠে অতি খন খন।। পূর্বত সাগর আবি কাৃশিতে লাগিল। বিংশহন্ত মহাবীর রণেতে পড়িল্॥ रेक्ट्र रुगानन इरेन अउन। नातीश्य आंत्रिय कतिए त्रीपन ॥

রণে ভক দিয়া যত রাক্ষ্য নিকর। পলায়ন করে দবে দিক দিগন্তর। রাক্সরমণী যত আসিয়া সমরে। করাঘাত করি শিরে নানা খেদ করে। र्पैप्पानती यन यन करतन तानन। हाग्र नाथ काथ। এবে कतिल গगन। কেন নাথ ফেলি মোরে ছঃখের সাগরে অকালে চলিয়া গেলে অমর নগরে 🛭 বারেক করুণা করি দেহ দরশন। অধীনীরে রক্ষা কর ওহে মহাজুন ル ় বিংশ শিরে শোভা পেত যেই কলেবর। হায় হায় সেই দেহ ধূলায় ধুসর<sup>্</sup>॥ উঠ নাথ চল যাই কুমুম কাননে। স্নগন্ধ কুমুম সদা ফুটিত যেখানে। সৌরভে আকুল হতে সদত যথায়। বারেক চলহ নাথ উল্লান তথায়। শই স্থানে ভালবাস। জানাতে আমারে।বসাতে করণা করি অঙ্কের উপরে॥
মধুমাখা কত কথা কহিতে আমার। এখন পড়িয়া কেন ধূলায় হেথায়।। যখায় আমাকে লয়ে করিতে গমন। নিয়ত কোকিলস্বর করিতে শ্রবণ।। মন প্রাণ প্রফুল্লিত করিতে ঘথায়। বারেক চলহ নাথ চল গো তথায়॥ বসত্তের সমাগ্যে ৬তে প্রাণধন। আমারে সঙ্গতে করি করিয়া যতন॥ যথায় সদত তুমি করিতে বিহার। সেই স্থানে চল নাথ চল একবার॥ কেন নাথ ধরাতলে নীরবে পড়িয়ে। বারেক বলহ কথা দেখহ চাহিয়ে॥ সুধামখা তব কথা করিতে প্রবণ। সদত উৎস্থক আমি ওছে প্রাণধন॥ অধিক বলিব কিবা ওহে প্রাণেশ্র। তোমার বিহনে মম ব্যাকুল অন্তর॥ এক মাত্র পতি গতি রমণীর.হয়। পতি বিনা নাহি কিছু ওগো মহোদয়॥ \*পতি হীনা যেই নারী অবনীমাঝাবে। বিফল জীবন তার এ ভব সংসারে॥ পতি হেতু প্রাণত্যাগ স্থাখন কারণ। পতিহীনা রমণীর বিফল জনম॥ তোমা বিনা কিবা তুখ এভব সংসারে।জীবন ত্যজিব আমি পশিয়া সাগরে॥ অথবা অনুলে পশি ত্যজিব জীবন। বিষপান করি কিম্বা করিব পতন॥ তোমা সহ সুরপুরে মিলিত হইব। ছুই জনে মনানন্দে বসতি করিব।। ক্লেক্স: বিনা কিবা ফল ধরিয়া জীবন। সদত তোমারে নাথ ইইবে সরণ।। শ্বরনে স্বপনে নাথ কিন্তা জাগরণে। গ্যন্তন আসীনে নাথ অথবা ভোজনে॥ সতত তোমারে নাথ করিয়া দরণ। অন্তর্দশ্ব অন্তর্দ্দদ্বা হব সর্বক্ষণ 🕻 ৃসহস্র সহস্র ছঃখ করি উপভোগ। নারী জাতি যদি পায় পতির সংযোগ।। ্দকল বিশ্বত হয় সেই স্থােদয়ে। সানন্দ অন্তরে রহে প্রফুল্লিত হয়ে॥ ু 💆 নাথ কথা কহ কর দরশন। তোমার দয়িতা হয়ে করিছে রোদন॥ হৈন বন্ধু নাহি আর জগত সংসারে। যার মুখ হেন্দিরহি প্রফুল অন্তরে॥

ুষ্মানায়ে একাকী রাখি ওহে প্রাণেশ্বর। কি হেতু চলিয়া গেলে স্মন্ত নার 🔏

বাহারে বাসিতে ভাল অধীনী ভোষার। হাহারেকরিলে ভাগ একি ব্যবহার
বিনিলাম ভালবাসা মুপের কেবল। নৈলে সক্ষে নাহি কেন নিলে প্রাণেশন 
ভিচে নাথ রপুবর করণাসাগর। জানি জানি ভোসা ভানি ভূমিই কথব ।
জগতের নাথ ভূমি সদা দ্বাময়। তোসা হতে রক্ষা পায় ব্রহ্মাও নিক্সার্কা
কামি ত ব্রলাও মাবের নিবসতি করি। কেন তবে নাহি,রফ বৈক্ঠ-বিহারী ।
ফ্রাময় নাম তব বিদিত ভূবন। এই কি ভোষার দ্বা অধিল-রঞ্জন ।
ভূমে কেন নাহি দ্বা আঘার উপরে। নানার হল্য কভূ তোমা ভিন্ন নয়।
তবে কেন নাহি দ্বা আঘার উপরে। কেল তেবে ভোমার নাম জগত থাঝারে।
সকলি ভোষার মামা কমললোচন। ভূমি স্বাকার পতি অধিলকারণ।
কেবা কার পতি বল কে কার তন্য। কবা পাই। কেবা পিতা কেহ কিছু নয়া।
কর্মকার বিতর পারি ওহে দ্বাময়। বন্ত্ নিল্র মন নাহি হিরীভূত হয় ॥
তামার মান্য রুল্ল থনে জীলগণ। বাল মান্য রুল্ল থনে বিরুদ্ধ।
অবলা অজ্ঞান নামি কি বুলিতে পানি। ভোনার মানায় মুক্ল ভোমার চাভুরী।
অধিক বলির কিমা ক্রম ননন। কিলাটোটা মানায় মুক্ল ভোমার চাভুরী।
অধিক বলির কিমা ক্রম ননন। কেলাটোটা মানায় মুক্ল ভোমার চাভুরী।

এইরতে বেদ বর্গে রাব্যর্গী। গ্রেগ প্রদান করে রাম রঘুমণি। প্রবোধিয়। স্বাকারে সাম্বন করিলে।পাঠাথে দিলেন সবে সাপন আলয়ে॥ তার পর বিভীঘণ ধর্মপ্রামণ । নথাবিধি সংকার করিল সাধ্রন্য পরদিন প্রাতঃকালে রাম রহুকর। বর্ষাত্রন সামকীরে স্বার গোচর। সীতারে হেরিয়া যত কপিসৈত্রগণ সান ক্রানেতে পদ করিল বন্দন।। আনন্দে কহিল সবে আহা মরি দরি। হেন কপ কভু নাহি নয়নে নেহারি॥ ইহাঁরি কারণে মোরা করেছি ভ্রমণ । না । হান ধরাতনে করি অহেনণ ॥ हेराँत कातर वाली कराउट निधन। य्भीव महिल देश विक्र स्थित।। ইহার কারণে দক্ষ হৈল লক্ষাপুরী। নাগবে হইল সেতু আছা মরি মারী ে हेर्देश कांतर देश तावन निधन । देश कांतरन यरना ताकरमत गन। त्रांखवशू गीजा (नवी भवात कमनी। गांकार इ स्वतिषु भरव कमनात्रांशिशी॥. এইরপে হর্ষভরে কপিনৈছগণ। নানা কথা বলি দবে বন্দিল চরণ॥ তার পর রধুবর স্বার সাক্ষাতে। অগ্রিকুও করি কহে সীতারে পশিতে॥ अधिर विश्व हरन क्तिरव शृह्ण। এই त्रण घरन छ। रव कमन लाइन ॥३ হেনকালে একা আদি অমর-নিক্র। উপনীত হন আসি রামের গোচর ॥ नकर्टन व्यक्तिंत्री कटर ताम तब्बवत । व्यक्तित्व प्रमित्व नारि नित्व दूर मी बादता।

ক্ষেদারশিণী ধেবী স্বার জননী। ইছারে করিবে শুদ্ধ ক্ছু নাহি শুনি।। द्धिन কথা মুখে কভু না বলো কখন। এইরপে দেবগণ করেন বারণ॥ ক্ষার পর দেবরাজ অমৃতবর্ষণে। বাঁচালেন মৃত কপিনৈত আদি গণে॥ শিক্তর দেবগণ করিল প্রস্থান। বিভীষণে রাজ্য রাম করিলেন দান।। **ারাজ্যে বিভীষণে বসায়ে যতনে। শব। শহ যাত্রা করে অযোধ্যা ভবনে ॥** ুশুবোকালে সেতৃবন্ধে ক্ষললোচন। মহাযত্ত্বে শিবলিক্ষ করেন স্থাপন॥ প্রায় পবিত্র কথা যেই জন শুনে। অন্তিমে সে জন যায় অমর-ভবনে। 'রিল্যার্থ' দলপি ইহা করে অধ্যয়ন। বিদ্যালাভ হয় তার শাস্থের বচন। व्यक्तिका अर्थ পার ইহার রূপার। কামার্থীর কাম পূর্ণ কহিতু স্বাস্ট্র **ন্দ্র্যানারী পুত্র লভে ইহার কুপা**য়। পুত্রার্থীর পুত্র হয় জানিবে সবার॥ ্**ষ্ত্রে লিখিয়া ইহা যেই সাধুজন । কঠে কিম্বা বাতদেশে** করয়ে ধ্রুণ। বিষরাশি তার কাছে কভু নাহি যায়। পদে পদে স্থাকল দেই জন পায় ॥ क्रिकामा করিয়াছিলে যাহা ঋষিগণ। সংক্রেপে সবার কাছে করিত্ব বর্ণন।। इस्मान महावीत विथा । ভুবনে। ভাষার সাহাযো রাম জ্য়ী হন রণে॥ ভাহার প্রভাবে হয় দীতা অন্বেষণ। তাহার প্রভাবে হয় রাক্ষ্স নিধন॥ **তাহার প্রভাবে পায় শক্ষণ জীবন। হতু**র মাহাত্মাবল্কে করে বর্ণন॥ হন্তর বীরত্বল কে বলিতে পারে। যার রোমে ক্রিপ্রজ কলিখ্র ধরে॥ **অধিক ব**লিব কিবা তেশ্ব্যাধির ইয়। পার্কি ক্লিতে বাঞ্জা কহ সর্বজন॥

#### नक्राम्स अशारा।

হত্নমানের মাহাত্ম প্রসঙ্গে ভামের নীলপদ্ম আন্য়ন ও হন্তুমানের সহিত সাক্ষাৎ এবং কপিশ্বজের বর্ণনা। সনৎকুমার উবাচ।

অধাতঃ সংপ্রবক্ষ্যামি যথা পাণ্ডোক্ষ নন্দনঃ। কপিশ্বজেতি নাম্নাভূৎ প্রথিতো ধরণীতলে॥

খবিগণ সম্বোধিয়া সনত-ক্মারে। পুনশ্চ জিজ্ঞাসা করে স্মধুর স্বরে॥
তনিমু অপূর্বে কথা ওহে মহাত্মন। বিধির নন্দন তুমি অতি বিচক্ষণ॥
কুপিছজ নাম কেন অর্জুনের হয়। সেই কথা প্রকাশিয়া বল মহাশয়॥
কিন্তেপ হয়র রোম ধনপ্রয় পায়। বিস্তারিয়া বল তাহা আমা স্বাকায়॥
ক্রেক বচন তনি বিধির নন্দন। কহিলেন শুন শুন ওল্হ ঋষিগণ॥
কুর পাচ্টি পুত্র বিখ্যাত ভূবনে। মধ্যম এই টিমসেন জানে স্বজ্জনে।

ज़ हो । ज़र्ज न काम "महाननध्त । जन जन जर बट यह जीशनितकत् है भा ७व-महिशो विनि ट्योभनी आशान। कमनात्रभिनी पार्वी सुमान स्रोम । একনা বাসনা জার হইল অন্তরে। পূজিবেন নীলপদ্ম দেবদেবেশকে কে আনিবে নীলপদ্ধ করেন চিন্তন। হেনকালে রকোদর উপনীত হর্ম। কুফারে চিন্তিত দেশি কহে রকোদর। কেন প্রিয়ে হেব্লিতেছি বিষঃপন্তর 🛊 আমা সৰা বিদ্যাদানে কি খেদ ভোষার।কেন আজি পূর্ববিত না কর বিহার কেন চিন্তাকুল তুমি কিলের কারণ। প্রকাশ করিয়া বল আমার সদন কিসের অভাব তব ওগো প্রিয়ত্তম। বিবরিয়া বল দেবি আমা সারিধানে 🏗 মনের বাদনা তব করছ বর্ণন। তোমার কামনা আমি করিব পূরণ । সাগিতে তোমার ির যদি প্রাণ যায়। তাহাতে বর্গ শ্রেষ্ঠ ক**হিন্তু নিশ্চয় 🎼** এতেক বচন শুনি দৌপদী অনুদরী। বদন ত্লিয়া কহে সবিনয় করি॥ শুন শুন প্রাণনাথ করি নিবেদন। যে কারণে বিষাদিত হইয়াছে মন թ মনে মনে পাকেঞন পুজিব ইণরে। দশশত নীলপত্ম দিব ভক্তিভরে॥ কে আনিবে নীলপন কোথায় পাইব। মনের বাসনা আমি কিরূপে পুরাব 🏗 এই চিন্তা ক। মামি সরে হি কাতর। এই ছেতু দলা মম ব্যাকুল অন্তর। নতুবা অপর আর নাহিক কারণ। প্রাণনাথ তব পাশে করি নিবেদন।। এতেক বচন শুনি রুকোদর ক্য। সামান্য কারণে তব ব্যাকুল হৃদয় ॥' সহজে অবলা জাতি অপ্প বুদি ধরে।সামান্য কারণে আছ ব্যাকুল অন্তরে। দশশভ নীলপল অতি ভুক্ত ভান। আনি দিতে পারি শামি সহিত উদ্<mark>তান।</mark> হির ছও বিধন্থ না ছও কাতর। পুষ্প হেতু যাব আমি অতীব সত্তর।। পূজার উদ্যোগ তুমি করহ ফুলরী। আনি দিব নীলপত্র যত শীঘু পারি In তোষার বাদনা নামি করিব পূরণ । আমার প্রতিজ্ঞা কভুনা হবে খণ্ডন। এতেক বচন বলি পাও র নন্দন। নীলপদ্দ হেতু শীস্ত্র করেন গুমুন্। দ্রোপদা পরম তুট হইয়া অন্তরে। পূজা অয়োজন করে অতি ভট্টিভরে। ভীমের প্রতিজ্ঞা কভু না হবে খওন। দ্রোপদীর এ বিশাস ওহে ঋষিগণ॥ গন্ধকের উপবন অতীব স্থন্দর। তাহে শোভা পায় কিবা হচ্ছ দরোবর 📳 সেই সরোবরে নীল পদারাশি রাজে। শোভা পায় সেই বন ছোর বনমাঝে। সেই বন উদ্দেশেতে ভীমদেন লায়। প্রান্তর ত্যজিয়া ক্রমে মহাবন পার॥ নির্ভয়ে পশিল তাহে পুরুর নন্দুন। কোপা বন কোপা পদ্ম করেন দর্শন্ 🕏 मत्न मत्न िखा कटत चीत इटकामत । यि त्मादत वाशा तम् शक्रव निकंत ॥ **Eशादत शांतियं जानि भागनमहत्ना कात्र नाशा त्यादत जाँदि अ जिन जुराना** 

ু**দ্বাবে মাৰে নোমগাছি করি**বে চীৎকার। চীৎকারে অনুত**েশত হইবে মংছার** ্রেরপে চাৎকার রোম করিবে যখন। শত্রুটেন্স দশ শত হইবে প্তন। **আশির্কাদ করি তোমা ওুহে রকো**দর।আপন কাজেতে এবে.হও**হে সত্তর**॥ 🕬ত ধলি হতুমান হন তিরোধান। আর কিছু নাহি হেরে ভীম মতিমান॥ 'উদ্দেশে প্রণাম করি শঙ্কর-চরণে। নীলপদ্ম হেতু যান গন্ধর্ক-উজ্ঞানে॥ হছর আদেশমত সেই পথ দিয়ে। গদ্ধব-উজ্ঞানপাশে উপনীত গিয়ে॥ शैरत शैरत वनमर्था कतिया भगन। नीलशत मरतायरव करतन पर्यन॥ অথা হতে নীলপদ লইয়া যতনে। হাসিতে হাসিতে দেন কৃষ্ণার সদনে॥ नीम १ (१ दिश धनी आनिम उपन । यज्दन करतन (५वी शृका आरयाकन ॥ (यरे রোম দিয়াছিল বীর হন্তুমান। অঞ্চনের রথধ্জে হৈল অধিষ্ঠান॥ এই হৈতু কণিরজ নাম পার্থ ধরে। বিস্তার বর্ণন। আছে পুরাণ-অন্তরে॥ শাকাং শঙ্কর বীর অঞ্জনানন্দন। তাঁহার মাহাত্যু বল কে করে বর্ণন H জগতে এ হেন নাধ্য আছে বল কার। শিবের মাহাত্মা কহে করিয়া বিস্তার॥ 'এই বিশ্ব শিবময় ওচে ঋষিগা। অগতির গতি শিব অ।খন কারণ।। ভাঁহারে তুষিতে যেই পারে ভক্তিভরে।অন্তিমে দে জন যায় কৈলাস নগরে **শুরাণে সু**ধার কথা অতি মধুময়। বিবরিয়া ছিজ কালী হরিব হৃদয়॥

## मान्य अथारा।

শিব-বংশ বর্ণনপ্রনঙ্গে বস্ত্র হইতে গণেশের উৎপত্তি ও ভণীয় গজমুণ্ডের বিবরণ।

শিবাত্মকাশ্চ পুরুষাঃ স্থ্রিয়ঃ সর্কাস্ত পার্ক্তী।
শিবঃ পুংলিজরূপশ্চ দেবা স্থিলিঙ্গরূপিণী।
শিবদেবিলিঙ্গরূপং জগৎ স্থাবরজঙ্গমং।
তদাদিদং জগৎ সর্কং শিববংশঃ শিবাত্মকঃ॥

ব্যাস আদি ঋষিগণ সনতক্মারে। পুনশ্চ জিজ্ঞাসা করে অতি সমাদরে॥
নিবের মাহাত্মা দেব করির প্রবণ। এখন জিজ্ঞাসি যাহা করহ বর্ণন॥
নিবের শাহাত্মা দেব করিয়া বিস্তার। বর্ণন করহ এবে ওহে গুণাধার॥
নিবের নন্দন সেই দেব লখোদর। কি কারণে গজমুও মন্তক-উপর॥
স্বর্ম-অথ্যে তাঁর পূজা হয় কি কারণ। বিস্তার করিয়া তাহা কহ মহাত্মন॥
কর্ম-অথ্যে তাঁর পূজা হয় কি কারণ। বিস্তার করিয়া তাহা কহ মহাত্মন॥
ক্রিজ শুনি অক্ষত্ত কহে থীরে ধীরে। শুন শুন খনিগণ কহিব সবারে॥

প্রকৃতিক্রপিণী দেবী নগেক্রনন্দিনী। পর্য পুরুষ হন দেব পুলপাণি॥ এ শোহা হইতে হয় জগত-সূজন। সৃষ্টিকর্তা নাহি জান অন্ত কোন জন্ 🕸 যতেক পুরুষ আছে সংসার মাঝারে। শিবাত্মক সবে হয জানিবে অন্তরে 🛊 জগতে যতেক নারী কর দরশন। পার্বতীরূপিণী সবে ওছে খবিগণ্ঞা পুংলিঙ্গরপক হন দেব মহেশ্ব। ত্রীলিঙ্গরপিণী দেবী তাপসনিকর॥
এই যে হেরিছ বিশ্ব স্থাবরজঙ্গন। শিব-দেবী-লিঙ্গরপী ওচে ঋষিগণ॥ অখিল জগত এই শিববংশ হয়। শিবাতাক সর্ব্ব বিশ্ব নাহিক সংশয়॥ পৃথক্ শিবের বংশ কিছুমাত্র নাই। বলিকু নিগুড় কথা সবাকার ঠাই॥ শিবশক্তিযুত হন দেব নারাষণ। শিবশক্তিযুত ত্রন্ধা আর দেবগণ । শিবশক্তিম্য বিশ্ব কহিনু সবারে। শিবশক্তিভিন্ন কিছু নাহিক সংসারে॥ শুন শুন ঋষিগণ কবিব বর্ণন। গণেশের দিবরণ অতি পুণ্যতম॥ ভক্তি করি যেই জন অধ্যয়ন করে। অথবা প্রবণ করে একান্ত অন্তরে॥ গণপতি তার এতি পরিতৃষ্ট হন। অন্তিমে দে জন যায় গণেশ সদন॥ বিস্তাকামী বিস্তা লভে গণেশের বরে। তত্তুজ্ঞান পায সেই আপন অস্তরে॥ ধনাথীর ধন হয় কামার্থীর কাম। মোক্ষার্থী মুকতি লভে নাহি হয় আন॥ এক দিন জগন্মাতা কৈলাস-ঈশ্বরী।শঙ্করে সম্বোধি কহে ওহে ত্রিপুরারি॥ শুন শুন মহেশ্বর আমার বচন। অপত্যে অখিল বিশ্ব আছে পঞ্চানন॥ বংশহীন যেই জন সংসার মাঝারে। ক্রিয়া-অধিকারী নাহি হয় সেই নরে॥ অতএব মম বাক্য করহ এবণ। পুত্রবান হও ভূমি এই আকিঞ্চন॥ আমার উদরে তুমি ওছে ত্রিপুরারি। অল্তই জন্মাও পুত্র এই বাঞ্চা করি॥ দেবীর এতেক বাক্য করিয়া শ্রবণ। মিউভাষে কহে তাঁরে দেব পঞ্চানন ॥ শুন শুন গিরিম্বতে বচন আমার। অনুচিত বাক্য কেন কহ বার বার॥ জগত সংসারে যেই হয গৃহী জন। তাহার অবশ্য হয পুত্র প্রয়োজন॥ আমি কভু গৃহী নহি পর্বতনন্দিনী। পুলে মন কিবা কাজ বল দেখি শুনি।। কুচক্র সকলে করি যত দেবগণ। তোমারে আমার করে করেছে **অর্পণ।** নৈলে প্রয়োজন কিবা আমার ভার্য্যায়। সুস্থে নহিক আমি কৃতিকু তোমায়।। যেই জন গৃহী হয জগত মাঝারে। পুল্ল আর ধন সেই অভিলাব করে॥ ুত্তের কারণ শুদ্ধ ভার্য্যা প্রয়োজন। গৃহীজন পুত্র বাঞ্চে শিণ্ডের কারণ॥ আয়ার মরণ নাহি শুনহ স্থানর। পুত্রে মম কিবা কাজ বুঝিবারে নারি॥ যেই জন বিশে করে বুগাধি নিরূপণ। ঔষধ শইয়৷ তার কিবা প্রয়োজন॥ পরম পুরুষ আমি ভূমি ছে প্রক্ষতি। সহানদ রূপে দোঁছে করি অবস্থিতি।

निवासाम्बर्ध लाउर कि विकार। भूव नर्दर तम स्मिन किया बदराबन प्रदेशक वहन अनि: म विक्रोसिनी। विनयं वहत्व करहे खरह म्नेशानि॥ ব্লিবদেব ভগৰান ওহে জিনয়ন। যা বলিলে নহে তাহা অযুক্ত কখন॥ जिस् निटर्यक्त कति छनर भक्त। अथा वामन। गन कतिए अछत् ॥ শপত্য জন্মারে তুমি আমার উপরে।যোগে মন দেছ প্রভু নিবেদি ভোষারে।। পুত্র লয়ে সদা আমি করিব পালন। যোগী হয়ে তুমি সদা কর বিচরণ।। **ছিলিতে পুত্রের মুখ হ**রেছে বাসনা। ক্লপা করি পূর্ণ কর আঘার কামনা।। कामादा रिख्न नि কর ভার্য। বলি জ্ঞান। পুত্র উৎপাদন কর ওছে গুণ্ধাম।। শ্বীর এতেক বাক্য করিয়া শ্রবণ। রোষভরে উঠি যান দেব পঞ্চানন। कहिटलन छन प्रित तहन आगात। तथ्म देख्या कि इट कत श्रीत्रात।। দতত করিছ তুমি পুত্র আকিঞ্ন। যদি পুত্রধন দেবি লভ কদাচন। বিবাহবিমুখ হবে সে পুত্র তোমার। বংশ নাহি রবে দেবি কহিলাম সার॥ এত বলি চলি যান দেব পঞ্চানন। বিমনা হইয়া দেবী রহেন তখন।। শাৰ্ক তীর ছুই সখী জয়। ও বিজয়া। তাহারা দেখিল বিষাদিত হরজায়া।। শিবের নিকটে তার। করিয়া গ্রন। প্রশোধ বচনে কত করিল সান্তন। চাহে রোষ পরিহার করি মহেশ্র। পুনশ্চ আদিল ফিরি দেবীর গোচর।। विभना (पवीदत द्वति कट्ट श्रक्षानन। छन छन पञारपति जागात वहन।। বু**দ্রাভাবে কেন হুঃ**খ করিছ ফুন্দরি। কৈলাস ঈশর আমি তুমি স্বরেশ্রী ॥ বুঁ**ভ লাভে** যদি তব হয সাকিঞ্চ। যদি বাঞ্জ। হয় পুত্রে করিতে চুম্<mark>বন।।</mark> শিদ্রা পূরণ কর ওগো স্থারেখরী। এখনি তোমারে পুত্র সমর্পণ করি।। . ত বলি দেবদেব দেব পঞ্চানন। পাকা তীর বস্তু এক করি আকর্ষণ।। 🎁 নী করিয়। তাহ। পাব্ব তার কোলে। ফেলিয়া দিলেন"পুত্র লহ"এই বলো। ভোষারে তনয় এই করিনু অর্পণ। বাদনা পুরায়ে কর বদন চুম্বন।। এতেক বচন শুনি পক্ষ তকুমারী! কহিলেন শুন শুন ওছে ত্রিপুরারি॥ শ্বে রক্তবর্ণ বস্ত্র করিয়া গ্রহণ। পুত্র লহ বলি ক্রোড়ে করিলে অর্পণ।। াজ শয়ে কি করিব ওহে মহেশর। পুত্র বাঞ্চা করিতেছে <sup>°</sup>আ**শার অন্তর**।। বুক্রকার্থ্য কভু নাহি হইবে বদনে। পরিহাদ কর ত্যাগ ধরি গো চরণে।। ভিষতি নহি আমি ওহে পঞ্চানন। রওবর্ণ বস্ত্রে মম কিবা প্রয়োজন।। ঠুজ লাভে শভিতাৰ যে সুখ অন্তরে। বসনে সে মুখ বলু ছবে কি প্রকারে॥ এরশ বিশাপ করি গিরিজ। সুন্দরী। অংগ্যুখে চিন্তা করে বন্ত্র কোলে করি 🛦 ব্দীপদার অকোপরি রাখিয়া বসন। পরিহাসবাক্য দৈবী করেন চিউদ।।

অক্সাৎ ুক্ আক্রা বেশ ধবিগণ। সেই বন্ত পুতরণ করিল ধারণ ॥ দেবীর অত্তেতে বন্ত পুতরণী হয়ে। স্পন্দন করিতে থাকে থানিরে থানি পুনঃ পুনঃ দেই পুত্র করয়ে স্পদন। তাহা দেখি গিরিজার আনন্দিত মন জীব জীব বলি সতী আশীর্কাদ করে। ঘন ঘন পুত্রমুখ নয়নে নেহারে ॥ জীবন পাইয়া শিশু করয়ে রোদন। মাতার আনন্দ হলে বাড়িল তখন । আনন্দে গিরিজা তারে করে শুনদান। শুনছুশ্ব অবিরাম শিশু করে পান। স্তনপান করি শিশু প্রফুল বদন। মুহুর্যুত হাস্থ করে অতি মনোরম ॥ খন খন পিতৃপানে শেই শিশু চায়। জননী চুম্বন করে মুত্র্যুত্তু তায়॥ कन्कान वानरकरत कति वानिक्रन। नत्याधि निरवत राष्ट्री करहन उथन। শুন শুন মহেশ্বর প্রণমি চরণে। তোমার ক্রপায় পুত্র লভিন্ন একণে। দয়া করি পুত্র তৃমি করিলে প্রদান। আশুতোষ তব নাম ওছে মতিমান !! এখন আমার বাক্য করছ প্রবণ। পুরধনে একবার করছ এছণ একবার তারে শহ এই পুরধনে। একবার দেখ প্রভু আপন নয়নে। পুরুষ্ধ দরশনে কিবা অথ হয়। বুঝিতে পারিবে প্রভু ভূমি দয়াময়॥ কি সুখে পুলের মুখ করয়ে চুম্বন। রুঝিতে পারিবে তাহা ওহে পঞ্চানন ॥ এতেক বচন শুনি দেব শুলপাণি ৷ কহিলেন শুন শুন পর্বতনন্দিনি 🛚 বিধির অপূর্বে লীলা কে বুঝিতে পারে । হেন সাধ্য কার আছে জগতসংসারে॥ পরীহাস করি তোমা দিলাম বসন। ভাগ্যবশে হৈল তাহে তব পুত্রধন॥ অদ্ভুত বিধির লীল। বুঝিবারে নারি। অর্পণ করহ পুত্র দেখি পো সুন্দরি॥ বস্ত্র হতে এই পুত্র হইল সূজন। কিরুপে পাইল দেখি আপন জীবন॥ এত বলি পরহন্ত করিয়। বিস্তার। পুত্র লযে অক্ষোপরি রাখে আপনার॥ নিপুণ নয়নে পুত্রে করেন দর্শন। পুনঃ পুনঃ দেখে শিব করি নিরীকণ। । বত্কণ দরশন করি শ্লপাণি। কহিলেন শুন শুন কৈলাসভামিনিশা জিমিয়াছে পুত্র তব অতীব দুন্দর। কিন্তু এহ প্রতিকুল ইহার' উপর। অর্পেকাল তব পুত্র ধরিবে জীবন। অর্পেকাল মধ্যে হবে জীবন নিধন॥ একরূপ ভাল তাহা শুন গো সুন্দরি। <sup>প্</sup>রলে বর্দ্ধিত হয়ে বড় ছঃখ করি॥ বড় হয়ে যথায়থ হয়ে গুণবান্। মরিলে তাহাতে করে অতি কট দান ॥ অতএব শুন দেবি না হও কাতর। অপ্পকাল মধ্যে তব শরিবে কোঙর॥ এইরূপ বলিতেছে দেব পঞ্চানন। সহসা আশ্চর্য্য দেখ ওছে ঋষিগণ॥ উত্তরশিরেতে শিশু ছিল হস্তোপরে। অকষাৎ হস্ত হতে পড়িল ভুত্লে॥ মুহেশের হস্ত হতে পড়িল যেমন। অমনি সে শিশু ত্যক্তে আপন জীবন।।

ক্ষেত্র হতে শির তার পৃথক হইল। তাহা দেখি উমা দেবী কান্দিতে লাগিল।
হা বংস হা বংস বলি করেন রোদন। বিশ্বরে আকুল হন দেব পঞ্চানন।
দেবীরে কাতর দেখি দেব শূলপাণি। মধূর বচনে কহে তুন ত্রিনয়নি॥
রোদন করহ দেবি আও সম্বরণ। ক্ষণেক বিলম্ব কর পাইবে নন্দন।।
পুর্ত্তিধনে তুমি দেবি পাইবে অচিরে। পুত্রশোক নাহি কর আপন অন্তরে॥
পুর্ত্তেশোক ত্যজ্ব দেবি করহ এবণ। পুত্রেরে বাঁচাব আমি কহিনু বচন।।
হিন্ন শির পড়ি আছে অবনী মাঝারে।তুলিয়া যোজনা কর অতি শীঘ্র করে॥

শিবের এতেক বাক্য করিয়া প্রবণ। ব্যস্ত হয়ে ছিন্ন শির করিয়া গ্রহণ ॥ যোজনা করিল দেবী ছিন্নদেহপরে। কিন্তু নাহি যুক্ত হয় ওনহ সকলে॥ ভাছা দেখি চিন্তাকুল কৈলাস-ঈশ্রী।অংশমুখে চিন্তা করে দেব ত্রিপুরারি॥ আকঁষাৎ দৈববাণী হইল তখন। ওন ওন ওহে শভু দেব পঞানন।। তব পুত্র ছিন্নশির। এহলোষে হয়। এ শির যোজনা নাহি হইবে নিশ্চয়॥ অপর কাহার শির করি আনয়ন। যোজনা করহ ক্ষমে ওচে পঞ্চানন॥ **আর এক কথা বলি শুন মন দি**য়ে। তব হক্তে ছিল শিশু উত্তর হইয়ে॥\* অত্তরে যার শির করিবে ছেদন। ইত্তর শিয়রে দেই হবে পঞ্চানন॥ তাহার মন্তক শতু আনহ ত্বরায়। বাঁচিবে তবে ত শিশু কহিনু তোমায়॥ এতেক আকাশবাণী করিয়া প্রবণ। দেবীরে আশাদ দেন দেব পঞ্চানন॥ মানামতে প্রবোধিয়া পার্ক্ষতী সতীরে। তুবীর নন্দীরে নিব ডাকিলেন পরে॥ **আজ্ঞামাত্র নন্দী আ**দি উপস্থিত হয়। তাহারে সম্বোধি শিব মিটভাবে ক্যা। **ঙ্বল শুন ওহে ন**ন্দী আদেশ আমার।তোমার উপরে দিন্তু যে কার্য্যের ভার॥ অবিলম্বে গিয়া তুমি কর অন্বেষণ। উত্তর শিয়রে ওয়ে আছে কোন জন॥ যেরপে পারহ তার মস্তক আনিবে। তবে ত আমার শি ও জীবন পাইবে।। আদেশ পাইয়া নন্দী মরি ত্রিনয়ন। অবিলম্বে ক্রতগতি করিল গ্রমন। ক্রমে ক্রমে বিচরিল এ তিন ভুবনে । উত্তর শিয়রে নাহি দেখে কোন জনে॥ পরেতে অমরাবতী করিয়া গ্রমন। দেখে এরাবত গ্রজ করিয়া শ্রম। শয়ন করিয়া আছে উত্তর শিয়রে। তাহারে হেরিয়া নন্দী, হঙ্গি অন্তরে। উদেষাগ করিল শির করিতে ছেনন। অমনি চীৎকার করে ইন্দের বারণ।। ব্লংছিত নিনাদ করে অতি ঘোরতর। চকিত হইয়া সবে আদিল সত্তর।। ইক্স স্বাদি সবে তথা করে আগমন। ননীরে হৈরিয়া ইক্র কহেন তখন।। কে তুরি কোপায় থাক বল শীঘ্রতর। নাশিতে উদ্ভত কেন এই গজবর॥

<sup>•</sup> এথানে উত্তর শব্দে উত্তরশিরা বুঝিতে হইবে

কি কারণে আসিষাছ ইন্দ্রের ভবনে। কোন জন পাঠায়েছে বল এই স্থানে॥ ভোষার হাতেতে অসি কিনের কারণ। অন্তুত আকার তব করি দর্শন্।। কে ভূমি কাহার লোক বল ত্রা করি। আসিয়াছ কিবা হেতু আমার নগরী॥

এতেক বচন শুনি ননী বীর কয়। শুন শুন মহোদয় মম পরিচয়ু। শিবের কিন্তর আবি নদী অভিধান।শিবের আদেশে আমি আদি এই হান। ঐরাবতশির আমি করিয়া গ্রহ। শভুর নিকটে ত্রা করিব গমন॥ শিবের তন্য হয় পর্ম সুন্দর। উত্তর শিষরে ছিল সেই শিশুবর॥ অকশাৎ হন্ত হতে হফেছে পতন। তাহাতেই শির তার হয়েছে । ছেদন। সে শির যোজন। নাহি ক্ষন্ধোপরি হয। সেই হেতু আসিয়াছি ওহে মহোদয়া ছইযাছে দৈববাণী শুনহ রাজন। গ্রহদোষে শিশুশির হথেছে পত্ন ॥ উত্তরশিষ্বরে শিশু ছিব সম্ভোপরে। এ হেতু যে জন আছে উত্তরশিষ্করে 🖡 তাহার মন্তক আনি করিলে যোজন। পুনশ্চ বালক পাবে আপন জীবন **৳** এই ছেতু আলিয়। ছি ভোমার নগরে। দেখিলাম তব গজ উত্তরশিয়রে। অতএব গজশির করিব গছণ। ঐরাবত-আশা ভূমি কর বিসর্জ্**ন।**। ষদি বাধা দেহ তুনি ২হাতে আমাষ। যাইবে শমনগৃহে কহিনু তোমায় u শিবের তনয়ে প্রাণ এদান করিতে। নিশ্চয় বধিব আজি গজ ঐরাবতে 🕨 নন্দীর এতেক বাক্য করিয়। গ্রা । মহাক্রোধে রোষি উঠে দেবেক্র তখন। অবিলম্বে দেবগণে করিয়। শ'ত্রান। স্বার সাক্ষাতে ক্রে নন্দীরে ধীশান ! শুশানে শুশানে থাকে দেব প্রধানন। তান তান ওহে নন্দী করহ প্রবণ । আদিষাছ তুমি তার হইবা কি রর। কি হেতু বধিবে বল মম গজবর॥ অমর নগরে আজি আমি বিসমানে। কার সাধ্য বধে বল আমার বারণে । এত বলি শূল তুলি দেবেন্দ তখন। নন্দীরে বধিতে যান হয়ে ক্রেদ্ধমন # তাহা দেখি নন্দী করে ভীষণ হলার। ভশীভূত হয়ে শূল হয় ছার**খার ।** ध्कारतराज मृल लग विति पर्भाग असे हरा श्रेषा हेन्स कतिल धाहन ॥ निर्फ्ल करतन गण ननी । उलर्त । अनायारम ननी जारा धरत वामकरत ॥ সেই গদা ফেলে নন্দী ইন্দ্রের উপর। ইন্দ্র<কে গিয়া গদা পড়ে ঘোরতর॥ গদার আঘাতে ইন্দ্র ব্যবিত হইয়ে। কণকাল রহে ভূমে ব্যাকুল ছাদয়ে॥ তার পর পুনঃ শ্ল করিয়া এহণ। নন্দীর উপরে ইন্দ্র করে বিদর্জ্জন। नषूररस नमी वीत अगि नरा कृतत । हे अकिश परे भून जिथा एक करत ॥ তাহা দেখি দৈবরাজ হয়ে ক্রেদ্ন। পুনশ্চ ভীষণ বন্ধ করিল এছণ। छाहा (पर्य नमी वीत अठि (ताय अहत । मक्स्त यतिशा ज्ञाप अग्रहत धरत।।

সহসা যাতদি তথা করিয়া গমন। এরাবত, গম ইজ্রে করিল অর্পন্। জিয়াবতে আরোহিরা দেবরাজ পরে। নন্দীর সহিত যুদ্ধ মহারোধে করে॥ ু**ইন্দ্র সহ মিলি আসি** যত দেবগণ। নন্দীর উপরে করে বাণ বরিষণ॥ স্কাবোর বর্ষাকালে জলদপটল। যেমন নিকেপ করে পর্বত সকল। লৈইরূপ শরর্**টি** করে নন্দীপরে। দৃক্পাত তরু নন্দী তাহে নাহি করে।। ভীষণ-আকার নন্দী অতি ভয়ন্ধর। পাষাণকঠিন দেহ মহাবলধর॥ , বামকরে অসি শোভে অতি সশোভন। হুঞ্চার শব্দেতে শর করে বরিষণ॥ ্বিশাস ছাড়িয়া শর নিবারণ করে। তাহা দেখি দেবগণ বিমুগ্ধ অন্তরে॥ **প্রকশ্বাৎ নন্দী বীর ছাড়িয়া ছঙ্কার। এরাবত গজবরে করিল সংহার॥** গজের- মন্তক ছিল্ল হইয়া পড়িল। দেবগণ হাহাকার করিয়া উঠিল॥ য়জনির লয়ে নন্দী করি আগমন। শিবের নিকটে আসি করিল অর্পণ।। मन्दीत বিক্রম দেখি দেব মহেশ্বর। মহানন্দে আলিঙ্গন দিলেন বিশুর।। **তার পর গজশির** করিযা গ্রহণ! শিশুর স্কলেতে লয়ে করেন যোজন॥ যোজন মাত্রেতে শি 🗖 বাঁচিয়া উঠিল। পরম সুন্দর রূপ নয়ন ভুলিল॥ ছুলতমু খর্ককায় গজেন্দ্রবদন। জবাপুষ্প সম তার অঙ্গের বরণ॥ भेगोक मनृग मूर्थ स्नुम्त ध्वल । यमग्रद्ध खर्म मन् व्याकृत खम्त ॥ **নিবের সমীপে শিশু** কিবা শোভা পায়।আনন্দে পার্বতী দেবী পুলকিতকায়॥ ধন খন পুত্রমুখ করেন চুম্বন । আনন্দে আনন্দ-অঞ হয় নিপতন।। শিবের হয়েছে পুত্র অতীব সুন্দর। ঘোষণা হইল ক্রমে ত্রিলোক ভিতর ॥ অনন্তর দেবগণ মিলিয়া সকলে। উপনীত হন আসি কৈলাস অচলে॥ দেখিতে সবার ইচ্ছা শিবের নন্দন। আহা মরি মরি পুত্র অতি সুশোভন 🛚 শহ্র অঙ্কেতে শিশু কিবা শোভা পায়। স্থন্দর বদন আহা মরি কিবা তায়।। আৰা আদি দেবগণ করি আগমন। বালকেরে অভিষেক করেন তখন।। শ্বিষোনি দিল নাম বলি লফোদর। সর্বদেব মধ্যে শোভে শিশু মনোহর।। লৈই ছেতু সর্বদেব অত্যেতে পূজন। হইবে শিশুর ইছা শাল্তের বচন। मत्रवरी महानत्म लिथनी लहेर्य। निखदत वर्णन कर्दत श्रूलकक्षपदा॥ व्यथमाना श्रव्यानि करतन वर्शन। श्रव्याक मिल हेन्द्र इस्त्र कृत्रमन॥ 'পদাবতী পদা দিল আনন্দের ভরে। ব্যাঘ্রচর্ম- দেন শিব হরিষ অন্তরে॥ वृह्णां विक्रम् करतम वर्ण। पृथिनी, मानत्म निम मुनिक वाहन ॥ ब्रुनिश्रं क्रक्टवर्ग निरवत नन्मरन। नानामर्छ छव कहत क्रिक्सरम ॥ অমন্তর পদ্মধানি করি সম্বোধন। পুশ্বেদতে পঞ্চাননে কছেন তথ্য।

अमे जिन यम योका शब्द महर्यत्र। তব পুত্র তব সম आर्वनी-ভিত্র।। मर्न्बरणव व्याया शृक्षा इन्टर वेदाँ । मर्न्वरणट्य उर्व शृक्षा ७८१ छना धार कानि करस नर्दगृष्ट তोगांत शृक्त। इहेरव व्यवनीवतन करह श्रकांसमा। সর্বব দেবগণ মধ্যে তোমার নন্দন। অধীশ্ব হৈল শভু আমার ব্যে তব গণ যাহা আছে তোমার সদনে। তাহা হতে গ্রেপ্ত হ্লেক হি তব স্থানে এই হেডু গণাধিপ আখ্যান ইহার। রটিবে অব্নীতলে ওহে গুণাধার 🕪 গজমুখ হেতু নাম হৈল গজানন। আরো এক নাম বলি করহ ভাবণ।। তোমার কিন্ধর নন্দী করিয়া সমর। এরাবতে নাশিয়াছে ওহে ধহেশর।। এক দম্ভ ভগ্ন করি মন্তক আনিয়ে। দিয়াছে শিশুর ক্ষ**নে সানন্দ আসিয়ে**।। এই হেতু একদন্ত হৈল এক নাম। বীজরূপ নাম হৈল হেরম্ব **আখ্যান !!** তব পুলে যেই জন করিবে হরণ। বিশ্বরাশি তার পাশে না যাবে কখন॥ এই হেতু নিম্মেণ্ডর আখ্যান ইহার। রটিবে ধরণীতলে ওছে গুণাধার॥ यथाकारल (परे जन कतिरव यत्र। यत्र कतिरव कियातरा रारे जन।। মনোরণ পূর্ণ তার অচিরেতে হয়। আমার বচন ইহা কভু মিখ্যা নয়। যাবত মঙ্গলকর্মে তোমার নন্দন। পূজনীয় হবে অথে ওছে পঞ্চানন॥ ইইার পূজায় হবে দবার অর্চনা। দিদ্ধ হবে মনোরথ পূরিবে কামনা॥ এত বলি ক্ষান্ত হন দেব পদ্মাসন। এরাবতত্বঃখে ইন্দ্র মৌনভাবে রন॥ কিয়ৎকণ মৌনভাবে করি অধিষ্ঠান। শিবেরে সম্বোধি কহে ওহে মতিমান। দেবদেব মহাদেব ওহে ত্রিনয়ন। পার্বতী-ঈখর তুমি জগত-কারণ । তোমার কিন্তুর নন্দী মহাবলাধার। মম এরাবত গজে করেছে সংহার॥ অপরাধ করিয়াছি তোমার সদনে। ক্ষমা কর ওহে দেব নমামি চরণে॥ স্বশির যাঁহারে পারি করিতে অর্পণ। গজশির ভাঁরে দিতে করেছি বারণ॥ এই হেতু অপরাধ হয়েছে আমার। ক্যা কর তব পদে করি নুমস্কার॥ ইন্দের এতেক বাক্য করিয়া প্রবণ। মিউভাবে কহে তাঁরে দেব পঞ্চানন।। ছিন্নশিরা ঐরাবতে দাগর-দলিলে। অবিলম্বে দেবরাজ দেহ গিয়ে ফেলে॥ যখন ছইবে ইন্দ্র সমুদ্রমন্থন। সেই কালে পুনঃ পাবে বারণ-রতন ॥ শুন শুন দেবরাজ বচন আমার। এরাবত গজ তব হয়েছে সংহার॥ ঐরাবতশির তুমি করেছ অর্থণ। আমিও তোমারে দিব বিষয়াদি ধন। এতেক বচন শুনি ত্রিদিব দুখর। প্রণমিয়া চলি গেল অমর-নগর। একা আদি সুরগণ হরিষ অস্তরে। অবিলম্বে চলি গেল নিজ নিজ পুরে। शार्वकी महिक (प्रवर्षिय जिल्लाहन। शर्मर्गद्र मधकत करतृन भारता

গাণেশ, পর্ম যোগী মহাতভ্বজানী। বিমুখ সংসারস্থা হইলেন তিনি। অনন্তর ঋষিগণ আসিয়া কৈলাসে। গণেশের স্তব করে মনের উল্লাসে॥ ' शरণশ হেরদ্ব গণনাথ মহোদয়। পার্বতী-নন্দন দেবগিরিশতনয়॥ দেবরাজ গৈলানন বিশ্ববিনাশন। যোগীধর লম্বোদর মূষিকবাহন॥ অত্যপূজ্য চতুর্বাহু লিপির ঈশর। মঙ্গল-আলয় দেব ব্যাঘ্রচর্মামর॥ একদন্ত মেকিদায়ী স্থভ্রবদন। পরকর দওকর বিকুপরায়ণ॥ সাকাৎ শঙ্কর তুমি পরমার্থজ্ঞানী। হরিগুণকারী দেব তোমারে নমামি॥ সদানন্দময় দেব অতি মনোরম। জয় ও বিজয় দেব তুমি মহাত্মন॥ গণেশের নামস্ভোত্র যেই জন পড়ে। পদে পদে সুমঞ্চল লভে সেই নরে॥ যাত্রা-কালে পূজাকালে কিম্বা দানকালে। তিন সন্ধ্যা স্নানকালে কিম্বা গ্রাদ্ধকালে॥ অথবা মঞ্চলকর্ম যেই কালে হয়। পড়িবেক এই স্তোত্র নাহিক সংশয়॥ অধবা ভকতি করি করিলে প্রবণ। বিম্নরাশি তার পাশে না যায় কখন॥ ধনলাভ পুত্রলাভ দে জনের হয়। প্রত্যাহ মঙ্গল তার ঘটিবে নিশ্চয়॥ ইউদেবে মহাভক্তি জনমে তাহার। বাঞ্চিত দাধন হয় শাস্ত্রের বিচার॥ এইরপে স্তব করি যত ঋষিগণ। আপন আপন স্থানে করিল গমন॥ গণেশের জন্মকথা কহিনু স্বায়। পৃথক্ শিবের বংশ নাহিক ধরায়॥ মহেশর এই বিশ্ব অন্তিমে সংহারে। তাঁহার মাহাত্ম্য বল কে বুঝিতে পারে॥ ্শিবের অপর পুত্র আছে ঋদিগণ। কার্ত্তিকেয় তার নাম জানে সর্বজন॥ সে পুত্র কৌমারত্তত করে আচরণ। তাহারো বিবাহ নাহি ওহে ঋষিগণ॥ জিজ্ঞাসা করিয়াছিলে যে সব বিষয়। বর্ণন করিনু তাহা ওহে ঋষিচয়॥ এখন বাসনা যাহা বলহ সকলে। কীর্ত্তন করিব তাহা স্বার গোচরে॥ একমনে যেই জন করয়ে প্রবণ। অথবা ভকতি করি করে অধ্যয়ন॥ সৈদ্ধ হয় সুনিশ্চয় বাসনা তাহার। অন্তিমে সে জন যায় কৈলাস-আগার॥ দেবতা উপরে ভক্তি যেই নাহি করে। গুরুভক্তি নাহি কভু যাহার অস্তরে॥ পিতৃ মাতৃপরে ভক্তি না করে কখন। শিব বিষ্ণু ভেদ ভাবে যেই মূঢ়জন॥ (एवनिन्नः। (यहे कटत हतिव अखदत । शतनाता (हति काटम अमि निहटत ॥ শারদ্রব্য দেখি হুয় লোভিত অন্তর। দান করি পুনহরে যেই মূঢ়নর॥ ভাহার নিকটে নাহি পড়িবে কখন। তাহার সমীপে নাহি করাবে এবণ। ভাহার নিকটে পড়ে সেই মূঢ়মতি। অন্তিয়ে তাহার হয় নরকেতে গতি। পুরাণে স্থার কথা অতি মনোরম। বিবরিষা দিজ কালী পুলুকে মগন॥

# ब्रांमण अशांत्र।

## কার্ত্তিকেয়বিবরণ।

শ্রুত্বরং বচনং তেষাং মহাত্মা ব্রহ্মণঃ স্থতঃ। উবাচ পরমা প্রীত্যা পরমং পুণ্যদং হ্রিদং॥

ঋষিগণ সম্বোধিয়া সনতকুমারে। পুনশ্চ জিজ্ঞাস। করে সুমধুর স্বরে॥ শুনিতেছি তব মুখে অমৃত কথন। জুড়াল অন্তর আর জুড়াল প্রবণ ॥ তোমার রূপায় মোর। লভি তত্তান। এখন জিজ্ঞাসি যাহা কহ মতিমান 🛚 গণেশের জন্মক্ষা করিলে কীর্তন। এখন বলহ কার্ত্তিকের বিবরণ॥ কিরপেতে ষড়ানন নিজজন্ম ধরে। কেন বল দেই দেব বিবাহ না করে॥ কোপায় জনম হয় কহ মহাজ্ন। কার্তিকেয় নাম পরে কিনের কারণ।। শর্জনা এক নাম শুনেছি তাহার। দেবদেন।-অধিপতি দেই গুণাধার॥ কাছারে ব্রিটে হন সেনার ঈশ্র। এই সব বিবরিয়া বল যোগীশর॥ কৌতুকী হয়েছি মোরা করিতে শ্রবণ। বিস্তার কবিয়া বল ওহে মহাত্মন ॥ তোমার পাশেতে মোরা শুনিয়া সকলে। সংসার-নাগর ঘোর তরি অবহেলে॥ मः मारत जामिया नत गांसाकारल পড़ि। युक्ष रास थारक मना ज्लासा और हि।। আত্মপুর্বে নিরন্তর করে অভিলাষ। পরকালে ফল তার হয় যে প্রকাশ। আগে নাহি বুঝি শেষে করে পরিতাপ। সতত অন্তর দহে পেয়ে মনস্তাপ॥ এতেক বচন শুনি বিধির নন্দন। কহিলেন শুন শুন ওহে ঋষিগণ। যেইরূপ শুনিয়াছি আপন এবণে। সেরূপ বলিন সব সবা বিজ্ঞানে । পবিত্র পুরাণকথা করিয়া শ্রবণ । পবিত্র করিব হৃদি ওছে ঋষিগণ॥ কার্ভিকের বিবরণ অতি মধুময়। মন দিয়া শুন সবে ওছে ঋষিচয়॥ বিবাহবিমুখ সেই শিবের নন্দন । এমন স্থরূপ নাহি হেরি কদাচন॥ তাঁহার জনমকথা বলিব সবারে। মন দিয়া শুন সবে অতি ভক্তিভরে॥ দক্ষজ্ঞে সতী দেহ করি বিসর্জ্জন। দ্বিধারূপে মেনাগর্ভে করেন গমন। তুই ভাগে জন্ম লন হিমালয়-ঘরে। প্রথমতঃ গঙ্গা জন্মে উমা তার পরে॥ জনমিয়া গঙ্গা দেবী সুরপুরে যান। তাহে মেনা হিমগিরি মহাছঃখ পান॥ তার পর উম। দেবী লভেন জনম। উমারে পাইয়া শোক করে বিসর্জ্জন॥ শশিকলা সম উমা দিন দিন বাঁড়ে। পিতা মাতা হর্ষ পান হেরিয়া তাঁহারে॥ একলা নারদ ঋষি করি আগর্থন। হিমাল্য পাশে আসি দেন দরশন॥ নানাকথা কহি ঋষি অন্তঃপুরে যায়। মেনকা সহিত দেখা হইল তথায়॥

अभीविधि सना राती करतन भूजन। भूजा श्रीत रात-श्रवि जानरक मगन॥ কিখার কথার ধবি মেনকারে কয়। তোমার কতার দেবি শুন পরিচর। मामाज। नटहरू (पवि তোমার निमनी। পরম। প্রকৃতি ইনি ভবের জননী॥ নির্জ্জনে মুনির পাশে করিয়া প্রবণ। কন্তাপরিচয় মেনা জানিল তখন॥ আর পর দেব-ঋষি বাহিরে আসিয়ে। হিমগিরি পাশে বলে পুলকহৃদয়ে॥ কথায় কথায় ঋষি কহেন তখন। শুন শুন গিরিরাজ আমার বচন॥ ক্ষণলোচনা গিরি তোমার নন্দিনী। হইয়াছে দানযোগ্যা হেন মনে গণি॥ কাহার করেতে তারে করিবে অর্পণ। কি হেতু নিশ্চিন্ত আছ বলহ রাজন॥ এতেঁক বচন শুনি গিরি হিমালর। কহিলেন শুন শুন ওহে মহোদয়॥ আমার নন্দিনী ঋষি কানন-ভিতরে। করিতেছে তপশ্চর্য্যা একান্ত অন্তরে॥ ষোণ্য পতি পাবে সতী এই সে কারণ। বনমধ্যে তপ করে ওছে মহাজ্ম ॥ পূর্বজন্মে পতি যিনি আছিল ইহাঁর। বাসনা তাঁহারে পাবে ওছে গুণাধার॥ এ হেতু নিশ্চিম্ত আছি ওবে মহাত্মন। নিজে যত্নবতী কন্যা পতির কারণ।। এতেক বচন শুনি দেব-শ্ববি কয়। যা বলিলে সত্য বটে ওহে হিমালয়।। তথাপি উদ্যোগী থাকা উচিত তোমার।অনুদ্যোগী হলে পরে বিপদ তাহার॥ উদ্যোগী পুরুব নাহি হয় যেই জন। তার কার্য্য নট হয় শান্তের বচন।। ষক্তপি আপন পতি লভিবার তরে। তব কন্যা আছে তপে কানন ভিতরে।। তথাপি উদ্যোগী থাকা উচিত তোমার। কন্যাদান-ফল হেতু ওহে গুণাধার॥ निस्ता निरुट नाहि छैन्याशी य छन। शृशी विन श्रा तरह ना द्य कथन॥ 🚧 🗷 এব হিমালয় শুনহ বচন। কন্তার বিবাহ হেতু করহ যতন।। বিপ্রগণ সহ তৃমি মন্ত্রণ। করিয়ে। যোগ্য বরে দান কর সানন্দ হাদয়ে॥ এতেক বচন গুনি হিমালয় কয়। নিবেদন শুন বলি ওছে মছোদয়।। কাহার করেতে কন্সা করিব প্রদান। বিচার করিয়া বল তুমি মতিমান।। **হাহার** করেতে কন্স। অর্পা করিলে। সুথিনী হইবে তাহা বলহ, আমারে॥ শুর্ববেত। তত্ত্বজানী তুমি মহাশয়। প্রকাশ করিয়া বল উচিচ যা ইয়॥ এতেক বচন শুনি নারদ পীমান। কহিলেন শুন শুন গুহে মতিমান॥ যোগ্যপতি আহে গিরি তোমার কন্তার। যাহার কারণে কন্তা কার্ননমাঝার॥ শ্বাহারে লভিতে যুত্র করিছেন সতী। উপযুক্ত পাত্র তিনি কৈলাসের পতি॥ স্থ্যশাত্ম। মহাবাত যেই মহেশর। কুবের ঘাঁহার গৃছে নিরত কিলর॥ দেবগণ-পৃজনীয় সেই পঞ্চানন। তাঁহার করেতে কন্সা করছ অর্পণ।। এতেক বচন শুনি হিমালয় কয়। আমার্রা বাসনা তাই ওছে মছোদর।। র্জার্থ করিব কন্তা মহেশের করে। অন্তথা নাছিক ইথে কছির্ব ভোনারে ॥ শুন শুন দেব খবি আমার বচন। শিবেরে আনহ তুমি আমার সদম,

দেব-ঋষি এই কথা শুনিয়া এবণে। তথাস্ত বলিয়া যান মহেশ-সদমে 🌃 কৈলানে শিবের পাশে করিয়া গমন। বিনয় বচনে কছে নারদ তখন। শভো তব মনোরথ হইল পূরণ। তব সতী পুনর্বারে লভেছে জনম। গ্রাপা বেবী জন্মিয়াছে যাঁহার আগারে। সতী ও জন্মেছে তথা কহিনু তোমারে তোমাকে পাইবে পতি এই দে কারণ। মহাবনে তপ করে ওছে পঞানন ॥ হিমালয় পাশে আর মেনার গোচরে। বলিয়াছি তব কথা সানন্দ অন্তরে । তোমার করেতে কন্স। করিবে গর্পণ। দম্পতীর মনোবাঞ্চা ওছে পঞ্চানন॥ অতএব মম বাক্য শুন মহেশ্র। অবিলম্বে চল যথা হিম গিরিবর # তোমারে সেবিবে গৌরা একাস্ত অন্তরে।তুমিও লভি বে সতী ক**হিন্ত তোমারে॥** এতেক বচন শুনি দেব পঞ্চানন। কহিলেন শুন শুন ওছে মহাত্মন ॥ গঙ্গারূপ। শতী লাভ করিয়াছি আমি।শিরেতে রেখেছি তাঁরে ওহে মহামুনি। অন্ত নারী এবে আর কিবা প্রযোজন। যেই গঙ্গা সেই সতী ওছে মহাজন। এতেক বচন শুনি দেবঋষি কয়। শুন শুন মম বাক্য ওছে মহোদয়॥ দিধারপে মতা দেবা লভেছে জনম। গঙ্গা উমা এই ছুই ওছে পঞ্চামন॥ গঙ্গারে ধরেছ তুমি আপনার শিরে। উমারে বামা**লে ধর অ**তীব **সাদরে॥** ঋষির এতেক বাক্য করিয়া শুবণ। তথাস্ত বলিয়া দেবদেব পঞ্চানন **॥** নারদ সহিতে যান হিমালয় পুরে। বিএবেশে উপনীত উমার গোচরে॥ যেই ভানে উম। সভী তপেতে মগন। বিপ্রবেশে সেহ ভানে যান পঞ্চানন। ধীরে ধীরে উমাপাশে গমন করিযে। মধুর বচনে তারে, কহে সম্বোধিয়ে॥ কাহার নন্দিনী ভুমি বলহ সুন্দরি। কি নাম ধরহ ভুমি বল ভ্রা করি॥ এ ছেন বয়দে তপ কিদের কারণ। তপস্থাসময় তব নহে কদাচন ॥ सूक्पांती कृषि (ज्वो शत्र क्रश्मो। कि रहकू कति ह ज्श वनमात्य विम ॥ এতেক বচন ভূনি উমা দেবী কয়। শুন শুন বলিতেছি মম পরিচয়। হিমালয়কন্তা আমি উমা নাম ধরি। । বের লাগিয়া তপ কাননেতে করি॥ শিবেরে পাইব পতি এই সে কারণ। কাননে বসিয়া তপ করিছি সাধন॥ পূর্বজন্মে ছিনু আমি দক্ষের আগারে। দক্ষয়তে দেহ ত্যজি খ্যাত চরাচরে॥ পতিনিদা নিজ কর্ণে করিয়া শ্রন। দক্ষজ্ঞে ত্যজেছিক আপন জীবন 🗗 शूनक सम्मि स्मिन हिमानतं यदत । कति उटि उर्वक्षा गरहरणत उद्या ্রেতেক বচন শুনি দেব পঞ্চানন। কহিলেন গুন সতি আয়ার বচন ॥

শিভত প্রবেদ শিব শ্রশানে শ্রশানে। কুরুপ দেরিতে তায় জানে সর্বজনে। नाहि वत्र नाहि वाड़ी नाहि किहू धन। व्याख्यकर्थ किंदिषटन कतिरह शांत्र ॥ পাগল সমান ফিরে যেখানে সেখানে । তাহারে বাঞ্চিছ পতি কিসের কারণে। জনে গুণবভী তুমি পরম হন্দরী। শিবে অভিলাষ কেন বল ত্রা করি॥ ইক্রাদি দেবভাগণে করি বিশর্জ্জন। শিবেরে পাইতে সাধ কিলের কারণ॥ কঠোর তপস্থা কেন শিবের কারণে। তুমি সতী গুণবতী কহি তব স্থানে॥ টিভ হতে শিব-আশা কর বিসর্জ্জন। অনুরূপ পতি লাভে কর আকিঞ্চন॥ **্ডোমার যেমন রূপ ভনহ সু**দ্রি। তব নখ সম নহে সেই ত্রিপুরারি॥ **ুঁএতেক বচন শুনি উমা সতী** কয়। শুন শুন ব্ৰন্মচারী ওহে মহোদয়॥ **শিক নিন্দা মম পাশে না কর কখন। হেন বাক্য মুখে নাছি আন কদাচন॥** থেই বাক্য শুনি আমি পূর্ব জন্মে। ত্যুজেছিমু নিজ দেহ দক্ষের ভবনে॥ সেই বাক্য কেন তুমি কহ এক্ষচারী। অগতির গতি সেই দেব ত্রিপুরারি॥ 'এখন আমার বাক্য করহ প্রবণ। মহেশের স্তব কর ওচে মহাত্মন।। ছোহা হলে উভয়ের প্রায়শ্চিত্ত হবে। নৈলে আমি কিন্তা তুমি নরকে ডুবিঝো উষার এতেক বাক্য করিয়া এবণ। ত্রন্ধচারী শিবস্তুতি করেন তখন॥ শিব হর ত্রিনয়ন ওহে ত্রিপুরারি। প্রমথ-অধিপ তুমি কৈলাস-বিহারী॥ স্বানন্দময় দেব অখিল-কারণ। ব্যাপিয়া র্যেছ ভূমি অখিল ভূবন॥ কালরপী তুমি দেব করি নমসার। অগতির গতি তুমি সার হতে সার॥ विकाती-पूर्य खर করিয়া এবণ। আনদে উৎফুল হয় উমার নয়ন॥ অক্ষারীরূপী শিবে সম্বোধন করি। মিটভাবে কহে উদা নগেন্দ্র-কুমারী॥ ভন ভন বেশ্বচারী করি নমস্কার। শিবতত্ত্বজানী তুমি ওহে গুণাধার॥ শিবের স্বরূপ তুমি তোমারে নমামি। প্রসাদ এসীদ দেব করি যোড়পাণি॥ ক্রামাতে শিবেতে ভেদ না করি দর্শন। পুনঃ পুনঃ নমস্কার ওছে মহাজ্মন ॥ 👺 উমার এতেক বাক্য করিয়া প্রবণ। ত্রন্ধচার।রূপী শিব হরিংব মর্মন॥ **व्यक्तित्य निकत्र** भारत कतिरत्। उमात मन्नूर्थ तट थूनक-कप्रत्।। ষ্মাহা মরি কিবা শোভা রুসভ-উপরে। বিভূতি ভূবণ অঙ্গে জনমন হরে॥ ু**নাগবক্ত উপবীত গলদেশে তাঁর। ব্যা**ন্ত্রচর্ম কটিতটে সুন্দর আকার॥ শশিকলা শোভে শিরে আহা মরি মরি। ববম ববম মুখে বাই বলি হারি॥ **উথার সম্মুখে** থাকি দেব ত্রিলোচন। কহিলেন মিউভাবে করহ এবণ।। लामाद्र शाहरत पृथि अनह समाति। अं विल अवर्शन हर्न जिश्रताति॥ मुद्दार्थां श्री श्रेष्टा श्री कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य करेंद्र ।।

त्म रहेपू जनते मोहा बाक्ष साहि करत । मर्गामर के ब्रह्म कि मेका मेरत निर्देश छेगाँदत्र पर्मन पिता कदंतम ध्यक्षान। शिमालत-भृतक वतम राम प्राचीन् द . যোগেতে আপনু মন করে নিবেশন। নারদের মুখে গিরি করিল অবশ্রা ব্যস্ত হয়ে কন্যা লয়ে শিবের সদনে। পরিচর্য্যা হেতু রাখে অতীব যতনে॥ উমা সতী পিতৃ-আজ্ঞা ধরি শিরোপরে। মহেশের সেবা করে অতি ভক্তি ভরে।। শিশিরে শিশিরে কট করেন স্থকরী। মনে মনে পতি পাবে পেৰ-ত্রিপুরারি॥ কিন্তু মহাযোগে রত দেব পঞ্চানন। উমার উপরে মন না দেন কখন।। এদিকে দেবতা সহ দেব পদ্মাকর। বহুক্ষণ প্রামর্শ করেন বিশুর। কিরূপে শিবের যোগ হইবে ভঞ্জন। কিরূপে উমারে শিব করিবে' এছণ। এইরূপ বিবেচনা করি পল্লযোনি। পাঠালেন কামদেবে যথা শূলপাণি॥ ভাঙ্গিতে শিবের যোগ চলিল মদন। পুপাধনু হাতে কিবা অতি সুশোভন ! ধীরে ধীরে হিমালয়ে হয়ে উপস্থিত। শিবের পাশেতে যায় মদন ত্রিত।। আকর্ণ টাণিরা ধন্ম করেন টক্ষার। মোহনাদি বাণ তাহে যুড়ে **গুণাধার।!** তাহা হেরি কামদখা বদন্ত গীমান। সখার পাশেতে রহে হয়ে মূর্জিমান।। নানাবিধ পুপ্রাশি ফুটিল তখন। গঙ্গে আমোদিত হয়ে অখিল কানন। এদিকে শিবের চিত্তে জন্মিল বিকার।তাহা দেখি আত্মারাম করেন বিচার॥ চিত্তের বিকার জয়ে কিশের কার। কেন আজি বিচলিত হইতেছে মন।। এইরূপ বিবেচনা করিয়া অন্তরে। নয়ন মেলিয়া শিব দৃ**টিপাত করে।**। চারিদিকে দৃষ্টিপাত করে পঞ্চানন। অকসাৎ দেখে পাশে মদন তখন।। মগুলী করিয়া ধনু রয়েছে দাঁড়ায়ে। পঞ্চবাণ পঞ্শর কান্মুকে মুড়িয়ে। তাহা দেখি রোসবশে দেব পঞ্চানন। আর छ- त्युत करत यह परिन पर्यन ॥ তখন ললাটনেত্র হইতে তাঁহার। বাহিরিল অগ্নিকণা ভীষণ আকার।। দেখিতে দেখিতে অগ্নি করিয়া গমন। মদনেরে ভদ্মীভূত করিল তখন। হায় হায় কি হইল দেবগণ করে। করাঘাত করে রতি বক্ষের ভৌপরে॥ কার সাধ্য শিবপাশে করয়ে গমন্। কার শক্তি মহেশেরে করে নিবারণ। ভশীভূত হয়ে কাম আনন্দ আকারে। গুগুভাবে রহে গিয়া উমার শরীরে। কামদেহভন্ম পরে লয়ে পঞ্চানন। আপনার কলেবরে করেন লেপন। তার পর উমা দেবী কামভাব ধরি। মহেশেরে নিরীকণ করেন স্থামী। তখন সকাম হন দেব পঞ্চানন। তাহা দেখি পরিতুট যত দেবগণ। সেইকালে হিমালয় সানন্দ অভরে। উদেহাগ করেন কন্সা অর্পিতে শিবেরে किया विक आपि कति वर्ज (प्रवर्ग्। मगदवर मदव आमि इत्मन उपम

विवाद जगारत त्यरपर जिल्डाति । जगारत अद्यु कटक जगायक कडिंग विवादन जेगात गर रह गतिनम् । जगारतः गारेश भिर प्रतिन काला ॥ - শুন শুন জার পর আন্ধর্যা ঘটন। ভারক নামেতে দৈত্য আছিল ছুর্জন 🛊 ভাষার পীড়মে যত অমর নিকর। জালাতন হয়ে কই পান নিরন্তর।। দেৰতার রাজ্য স্থা কররে হরণ। যজ্ঞভাগ লয় কাড়ি সেই ছুরাজ্মন।। হেন দেনাপতি নাহি বিনাশে তাহায়। এই হেতু দেবগণ বাাকুল চিন্তায়। শিবতেজে যদি জন্মে একটা নন্দন। তবে ত তারক দৈত্য হবে বিনাশন।। এই হেতু ব্রহ্মা আদি অমর নিকর। করযোড় করি কহে শিবের গোচর।। 🗳 শুন শহেশ্বর করি নিবেদন। তোমা হতে এই বিশ্ব হয়েছে সুজন॥ 🏟 খন বিন্ট হয় দেখ ত্রিপুরারি। তারক নামেতে দৈতা দেবতার অরি।। পীতৃন করিছে দলা এ তিন ভুবন। আর নাহি রহে বিখ ওহে পঞ্চানন।। ষদি তব তেজে জন্মে একটা কুমার। তবে রক্ষা পায় প্রভু জগত সংসার।। **অভএব রূপা কর দে**বগণোপরে। বিহার করহ প্রভূ লইয়া উমারে।। তিমার তেজেতে যদি জনমে নকন। তবে ত মরিবে সেই ছুফ্ট ছুরজন।। েতক বচন শুনি কৈলাদের পতি। তথাস্ত বলিয়া করে ইলারতে গতি।। **দেবতার কার্য্য**সিদ্ধি করিবার তরে। ইলাহতে যান শিব লইয়া উমারে।। **ীইলারতবর্ষে পরে করিয়া গমন। বিহারেতে মত হন দেব পঞ্চানন।।** উমার সহিতে দেব করেন বিহার। বিহারে নহেন তৃপ্ত প্রভু দ্যাধার।। हार पिता गंड वर्ष অভীত হইল। তথাপি বিহারে নাহি বিশ্বতি জন্মিল।। ি হো দেখি ত্রন্ধা আদি যত দেবগণ। ভীত হয়ে পরামর্শ করেন তখন।। শরতার কহে সবে কি বলিব আর। জনগে না হেরি কভু এ হেন বিহার।। **িক অনর্থ হবে ইথে** বুঝিবারে নারি। কিরুপে হবেন কান্ত দেব ত্রিপুরারি।। **ি বিব্যু শত বর্ষ গেল যাঁহার মৈথুনে। ভাঁহার তনয়ে পৃথী ধরিবে কেমনে।।** স্ক্রনীর সাধ্য নহে ধরিতে তাঁহায়। এইরূপ চিন্তা করে দেবতা স্বায়।। ্রিরপ বন্ত চিন্তা করিরা তখন। কতিপয় ত্রান্মণেরে করেন প্রেরণ।। **র্ক্রিকার আদেশে যত তাদ্ধণ নিকর। উপনীত হন গিয়া শিবের গোচর।।** শিব-শিবা দুই জনে বিহরে যথায়। বিপ্রগণ উপনীত অচিরে তথায়।। ক্রিপ্রসংগ পুরোভাগে করি দরশন। অবনত করে দেবী লক্ষায় বদন।। ক্ষিতাবে বজ দেবী করে পরিধান। লজ্জাবশে অধ্যেমুখে করে অবস্থান।। ভাৰতী ক্ষিত্র স্থানে পুরুষ না যায়। পুরুষ রুধায় গেলে রুষ্ণীক পায়।। कार्यक क्षेत्रक मान जात्न गर्कजन। तारे यात्न यपि क्य कत्रक श्रमन ।

भूकरक बहुता वहां अपनिवर्गा अने । १५ वर्ग वर्गा अपने श्रीक नावत्र । विकासरेन निवारियां जितिका समग्री। नकावरेन अर्थापूर्य बर्ट वेक मुन्ति। প্রক্রমাৎ শিবতের পড়িল ধরায়। ব্যস্ত হয়ে অগ্নিদেব নিলেম ভাইছি কিন্তু তেজ ধরিবারে দক্ষম না হয়ে। ভীত হয়ে গঙ্গাগর্ভে দিলেন কেলিয়ের। গঙ্গাদেবী ধরিবারে ন। হন সক্ষ। কৈলাসেতে শরবনে ফেলেন ভবাইনী সেই বনে শিবতেজে জন্মিল নন্দন। মহাবাস্ত্ মহাকল অন্তত গঠন। কনক সমান গৌর অতীব স্থুন্তর। বিবিধ ভূষণে তার শোভে কলেবর ।। দেবগণ সেই পুত্রে করিয়া গ্রহণ। দেনাপতি পদে তাঁরে করেন বরণ । ফুতিকাদি ছয় জন স্তন করে দান। ছয়মুখে শিবস্থত হুগ্ধ করে পান। এই হেতু কার্তিকেয় নাম তাঁর হয়। ছয় মুখ হেতু ষড়ানন পরিচয়।। সেনাপতি পদে তাঁরে করিল বরণ। দেবগণ অস্ত্র শস্ত্র করেন অর্পণ ।। সেনাপতি হয়ে পরে শিবের কুমার। দারুণ সমরে করে তারকে সংহার। উমা সহ ভেপতি কৈলাসশিখরে। পরম স্থাখতে রহে হরিব অন্তরে ।। জিজ্ঞানা করিয়াছিলে যাহা ঋষিগণ। দবার পাশেতে তাহা করিমু কীর্ত্তন।। মহাপুণ্য কথা এই যেই জন শুনে। ইফীদিদ্ধি হয় তার শান্তের বচনে॥ সাধুগণ এই কথা করিবে শুবণ। পড়িবে ভকতি করি সিদ্ধির কারণ॥ যতনে করিবে জপ ওহে ঋষিচয়। বিরচিয়া দ্বিজ কালী পুলক হৃদয় ॥

# **ठ कुर्फम** अशात।

গঙ্গামাহাত্ম্য ও গঙ্গার সহজ্ঞনাম কীর্ত্তন।
সত্যাপ্রয়া রাজকন্মা ত্রিনেত্রা শিবসুন্দরী।
শান্তিঃ ক্ষান্তিঃ ক্ষা শক্তিঃ পরা পরমদেবতা।
মহাকালী রুদ্রকালী অপর্ণা অপরাজিতা।
রাজসিংহাসন্তটা যাতনাচয়নাশিনী॥

খবিকুল মিউভাষে করি সম্বোধন। পুনশ্চ জিজ্ঞাসে ওহে বিধির নন্দম ।
তব মুখে সুধাকণা ঘতবার শুনি। বাসনা ততই বাড়ে ওহে মহামুনি।।
এখন জিজ্ঞাসি ঘাহা কহ মহোদয়। শুনিয়া পবিত্র কৃথা জুড়াই জদরা।।
বর্ণন করিলে তুমি শিবশিরোপরে। জাহ্নবী বিরাজ করে কলকল স্বরে।।
জগজিম গতি যিনি অখিল-কারণ। গলারে মন্তকে ধরে। সেই পঞ্চানন।
জরে জুলায়াল নহি জাহ্নবী সুন্দরী। তাঁহার মাহাজ্য খবি বল কৃপা করি।।

यहन छनि विधित्र नयम। कहिरामा अमें अमें मेर्क सरिशन है শিক্ষার মহিমা বল কে বলিতে পারে। বাঁহার নামেতে পাপী অবহেলে তরো শতেক যোজন হতে গঙ্গা গঙ্গা বলি। উচ্চেঃশ্বরে ডাকে যেই হবে ভক্তি করি। ज्ञार्था भाउक जात रस विनामन। अखिटम ट्य जन यात रैवक्र ज्वन॥ গ্রাহার মাহাত্ম্য গাই কি সাধ্য আমার 1 কিঞ্চিৎ জানেন শিব দয়ার আধার॥ আর বিছু জানে মাক্র দেব নারায়ণ। নৈলে বুঝে হেন জন নাহি ত্রিভুবন॥ **ইতিহাস বলি এক ও**নহ সকলে। বুঝিতে পারিবে সবে আপন অন্তরে॥ **এক দিন এক্ষ**ণামে যত খ্যিগ্ণ । ব্ৰহ্মার নিকটে আসি সমবেত হন॥ শানাবিধ কথা সবে কহে পরস্পে । ত্রকারে জিজ্ঞাসা করে তাপস নিকর॥ श्रेकांत्र भाष्टाच्या वल ७ टर शक्तरया नि । वामना मवात मतन ७ वर्ष कथा छनि॥ প্রতেক বচন ব্রহ্মা করিয়া প্রবণ। কহিলেন শুন শুন ওহে ঋযিগণ॥ গলার **মাহাত্ম্য আমি** বলিতে না পারি। কিঞ্চিৎ জানেন যদি বৈকুণ্ঠবিহারী॥ আর কি। জানে মাত্র দেব পঞ্চানন। অতএব মম বাক্য ভন ঋষিগণ॥ শকলে : নিয়া যাও কৈলাদ-আগারে। জিজ্ঞাসা করহ সবে শিরের গোচরে। भाषता दिक्रके मत्व कत्रह भगन। वनित्वन मवाभारम एक कर्नामन॥ এত শুনি ঋষিগণ কছে পুনরায়। ওন ত্রন্নিবেদন করি ছে তোমার॥ শিবের সভায় মোরা করিতে গমন। কদাপিচ না পারিব ওহে পদ্রাসন।। বৈকুঠে গমন মোরা করিতে নারির। গঙ্গার মাহাত্ম্য ভবে কিরূপে জানিব॥ প্রত্ঞার শুন বলি ওহে পদাসন। তুমি নিজে কৈলাসেতে করহ গমন॥ ্রি**র্দ্ধবা বৈকৃঠে ঘাহ অ**তি ত্বরা করি। যথায় বিরাজ করে বৈকৃঠ-বিহারী॥ প্রকার মাহাত্ম্য তুমি জানিষা সাদরে। তুরা করি ফিরি আস মোদের গোচরে॥ তোষার নিকটে মোরা করিব প্রবণ। এই ত মোদের বাঞ্জা ওহে পদাসন।। কারী তুমি দেব কি বলিব আর। ক্লপা করে পূর্ণ কর বাসনা সবার॥ পুরেতেক বচন শুনি দেব পদাসন। তথাস্ত বলিয়া প্রভু করেন গমন। विवास । শূলি বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব করিয়ে। শূল্য শূলি তিঠি দেব হরিষ কাদের ॥ इक्टबर्ग চতুমুখ দেব পদাকর। কমওলু শোভে করে অতি মনোহর॥ ্ব শুন্যভরে যায় দেব পবনগতিতে। সহসা প্রবল বায়ু উঠিল ছরিতে॥ कि निक्र निक्र कि कि कि कि कि निक्र कि निक्र कि निक्र में शिष्ठ । शिष्ठ मिल परिक्र परिक्र कि निक्र में शिष्ठ ॥ ্রিকাদ দিকে যান বিধি নাহি নিরূপণ। মুযলের ধারে র্ভি হয় বরিষণ॥ ু চুপলা চমকে কিবা অতি ঘন ঘন। বজাঘাত পুনঃ পুনঃ হয় নিপতন। ্বাহ্বেশে পদ্বোনি ঘুরিতে ঘুরিতে। উপুনীত হন গিয়া সপর হানেতে॥

करत इकि बुड़ जारि इस नियात्र। विशाज रहत्रन मह जेड्डी होता। অন্তত আকার তথা নরগণ ধরে। অন্তত বিশের রূপ নারি বর্ণিবারে। হেরেন তথায় ত্রকা আছেন বসিয়ে।চারিদিকে নানাগ্রি আছেন বৈভিন্ন শতমুখ ধরে সেই দেব পদাসন। তাহা দেখি সবিষয় চতুর-আনদ্ ধীরে ধীরে তাঁর পাশে গমন করিয়ে। বসিলেন সভামারে অতীব বিনয়ে 🖟 ধীরে ধীরে শতমুখে করে নিবেদন। নদস্কার ওছে বিধি শতেক-বদ্দ কাহার ভক্ষাও এই বলহ আমারে।কে নিযুক্ত কৈল তোমা বিশ্ব শাসিহারে। কিরপে ধরিলে তুমি শতেক বদন। বিবরিয়া বল সব এই নিবেদন। শতমুখ জন্ম কহে শুন সৃষ্টিকারী। একমাত্র জন্ম যিনি সরার উপরি॥ সকলি জানিবে বিধি তাঁর অধিকার। তিনি বিনা কেবা কর্তা সংসার-মাঝার। তাঁহার আদেশে আমি এই রাজ্যপতি। সূজন পালন করি ওন ওছে বিধি॥ যেরপে কুটল মোর শতেক আনন। বলিতেছি সেই কথা করহ এবণ॥ ভূমওলে ছিন্ম আমি ব্যাধের তনয়। বধিতাম নিরস্তর পশুপকীচয়॥ করিতাম বনে বনে নিয়ত ভাষা। ধনুর্বাণ লয়ে হাতে ওছে পদাসন ॥ দয়ার কণিকামাত্র না ছিল অন্তরে। করিতাম কত কাও স্বার্থনিদ্ধি তরে॥ এইরপে বন্তকাল করিয়া যাপন। গঙ্গাতীরে একদিন করিছ গমন॥ জাহবীতারেতে এক ছিল তরুবর। পঞ্চীর কুলায় ছিল তাহার উপর 🛚 পক্ষীশিশু ধরিবারে করিয়া মনন! অবিলম্বে রুক্ষোপরি করি আরোহণ ॥ শাখায় শাখায় বাহি উঠিয়া উপরে। হস্ত প্রসারিখা যাই পক্ষী ধরিবারে॥ হের হের পলাসন বিধির ঘটন। পক্ষীনীতে ছিল এক কাল ভুজকম ॥ (यमन अमाति रख शकी धतिवादत। जमनि पर्मन त्मरे जुजकम करत । বিষের জ্বালায় আমি ছট্ফট্ করি। জ্বানশূত হয়ে পড়ি গঙ্গার উপরি॥ গঙ্গাগর্ভে পড়ি আমি ত্যজিনু জীবন। বিমান লইয়া আসে দেবকঞাগণ॥। যমদুত্র এসেছিল লইতে আমারে। দেবগণ যমদুতে নিবারণ করে॥ ভয়ে যমদূতগণ করে পলায়ন। বিমানে চড়িনু জামি ওহে পলাসন ! (एवनात्रीर्गं । भात थाकि गतिशात्म । वीजन कतिए थात मत्नत छेनात्म ॥ গলায় মরিন্দু আমি এই দে কারণ। শতেক বদন মোর হইল তথ্য। केटनत जारतरम जागि এই विद्या जागि। जजातरथ मनस्र आहि पिना-নিশি॥ कि বলিব তোমা পালে। গজার মহিমা! গজার প্রসাদে পুরে মনের, কামনা ॥ বলিই তোমার পাশে মম বিবরণ। এখন আপন স্থানে কর্ছ গমন।। কত যে জন্মতি আছে কে বলিতে পারে। কত একা কত ইক্র আছমে সংসারে॥

Control of the Contro MINISTER OF THE PROPERTY OF TH मा बार्किक दर्शत (कर अवागन) हिलाइल बरत कर कर कर बन अवा विविधिक परिय किन्छ नाश्कि निर्गत्त । योब्द्यटम कोन्न माश्च अध्यक्षक का क्ष তে ব্রদ্ধিতে পরে দেব পদাসন। অপর ওদাতে সিরা দিরেন দর্শন । करने जमा धक उमा मरामीन। कठाकुठ लाएं निरंत कडीर सरीम ह ৰ বৰ্ম জার কিবা শোডা ধরে। উঠিতেছে হোমগ্র দিক দিগুরুরে॥ ছারে হেরিয়া কেব চতুর-আনন। প্রণাম করিয়া বলে সবিষয়-মুন। बादम शिर्द किकारमन गरेख-जानरन। পतिहास एक एपर ७ करीन करन । হিরপে ব্রিলে তুমি সহত আনন। তকাও ঈশ্বর বল কিলের কারণ। ক্ষান্ন কহে তন পলাকর। একমাত্র জগৎপাতা পবার ইশার। का बाररटन जारि उन्न भटन रित । जाररन भानन कति इस्य नितानि ॥ কারণে ধরি আদি সহত্র-আনন। বলিতেছি সেই কথা তন প্রায়াসন।। ছবিক উদ্বে আমি জনম ধরিয়ে। বহুদিন ছিনু বিবি ধরাখালে বিজে॥ বিবর করিয়া সদা করিতাম বাস। মার্জার হেরিলে হতো অন্তরেতে জাস। প্রিক্তেরের সর্ভ হতে উঠি ধীরে ধীরে। ভ্রমিতাম খাল্ল হেতু উদরের তরে॥ ক্রিক্টানাই তাহা করিয়া ভোজন। করিতাম পুনরায় বিবরে গদন॥ ৰ বিভ্ৰমান জীবন কাটাই। তার পর ঘটে যাহা বলি তব ঠাই॥ তি উঠিয়াই আহারের তরে। সহসা মার্জার এক হেরিল আমারে। করে মহতে কামি নারিসু তখন। ভয়ে উর্ন্থানে করি বেগে প্রশাসন। ক্ষাত্র শশ্চাহত মোর ধাইল মার্জার। পড়ি কিন্তা মরি নাছি দৃষ্টি সঞ্জার। ক্ষাতে দৌড়িতে আমি করিনু গমন। অক্ষাৎ গৰাগর্ত্তে হই, নিপত্তন প্রাপ্তিত হই জাহ্বী-স্বিলে। অস্নি তাজিত্ব প্রাণ কহি যে ছোমায়ে ॥ क्षिक करके त्यांत बहेन यतन। तारे त्वक धारे भेर शर में कार में कार में क्षा कारि धरे शर थति। शत्र प्रत्य जाहि किया विकायहै॥ के बहुत एपि तस्त्र माश्रास्त्राति । नमन्त्रेष्ठ कवि पुस्तः हिल्ल एसमि ह PROPERTY DES LES METALS RETERED MANAGES

প্রবল বড়েতে পড়ি দেব প্রাসন। নানাম্বানে ঘুরি যান ইরির সদন॥ शेरत शीरत छेननो छ रेवक्र के आगारत। प्रिश्तिन एव कति निःकामरनोन्द्रमः ছরি দেব জনার্দ্ধন। একমনে গ্রন্থান্তব করে অধ্যয়ন॥ नश्न युक्तिश পারিষদ সবে আছে নয়ন মদিযে। গঙ্গান্তব তানে নবে একান্ত হৃদয়ে॥ প্রের সময় নাহি পাইয়। তথায়। ধীরে ধীরে প্রাসন তথা হতে বায় ॥ বিষ্যিত অন্তরে যান কৈল। দলগর। যথায় বিরাজ করে দেবদেব হর॥ ক্রমে ক্রমে কৈলানেতে করিন। গমন। কৈলানের হারদেশে উপনীত হন। আশ্চর্য্য হেরেন নিয়া কেলানেব বারে। শিবদুর্তি চারিজন বনি সেই হলো। তাহ। দেখি স্বিশ্ব দেব প্রাস্ন। ক্ষিতে নারেন স্তা শিব কোন্ জন॥ বিলিবে ব্যাক্তন ছেজি ভিতার স্মার্তি। কহিলেন শুন শুন শুক সৃষ্টিকারী॥ মোদের কেছ২ নহে কেব পঞ্চানন। খামরা শিবের ছারী শুন পল্লাসন॥ প্রপতি বসি গাছে মিংহামনোগছ । ক্সক্ররতে গ্রন্থ বিরা**জেন শিরে॥** নানেতে পাৰ্বে তী দেব আছেন ধনি যে। আত্মানতে আত্মানতে আছেন মজিয়ে ব্যাকুণ ভোষালে কেন হেরি প্রাসন। কিনের কংলে বল ছেখা আগমন॥ এত শুনি পালাৰ ক্ৰে থাৱে গাবে। ওন শুন ম্ম বাক্য বলি স্বাকারে॥ তোম। মবে কেব। হিনে কছ বিশ্বর । শিবরূপ কিব। রূপে কবিলে ধারণ॥ দারীগণ কছে মবে শুন প্রাক্ত । মোদের রতান্ত অতি বিষয়-আকর॥ এবন তে ছিলু নোর, ক্লিকাশ ধনি। দারণ পাশিষ্ঠ মোরা ওছে সৃষ্টিকারী॥ কু হু রের শব এক গঞ্চায় পড়িয়ে।স্রোতেলবেগে চার্যায় ভাগিয়ে ভাগিয়ে। সেই শবে বত কীট লভিল জনম । আমরা তাহার মধ্যে এই চারি জন॥ বায়স আসিয়া বিদি শবের উপর। ক্লমি পবি ভোজনেতে হইল তৎপর॥ তার চঞ্পুট হতে মোর। এই চারি। পতিত হইয়া বাই দলিল উপরি॥ গঙ্গাগভে পড়ি মোরা তাজিকু জাবন। নেই ফলে হই মোরা তুল্য পঞ্চা-ন॥ গঞ্জায়ু মন্ত্রণফলে এই পদ পাই। শিবের দ্যারী হই কহি তব ঠাই॥ গঙ্গার মাহাত্ম্য বল কে বুঝিতে পারে। গঙ্গাদ্ম নাহি কহ ব্রহ্মাও ভিতরে॥ এই চেতু দেবদের দেব পঞানন। ন্যত্নে শিরোপরি করেন ধারণ॥ অধিক বলিব কিবা ওহে পদাকর। ইচ্ছা হলে যেতে পার শঙ্কর-গোচর॥ এতেক বচন শুনি দেব পদ্দাসন। কহিলেন এবে আমি করিব গমন॥ এনেছিনু যেই হেন্ জানিনু সকল। এখন থাকিখা আর কিবা বল ফল॥ ঋসিগণ আছে বসি আমার সভায়। তাদের সকাশে ত্রা যাইব তথার। আমার প্রতীকা করি আছে, স্ব জন। নমস্কার তোমা সবে ওছে। সাধুজন॥

শিবের সদৃশ সঁত্য তোমরা সকলে। নমস্কার তোমা সবে যাই নিজন্থলে। উট্ছেমে শঙ্করপদে করি নমস্কার। চলিলাম এবে আমি আপন আগার॥ **জানিমু গজার সম নাহি কোন জন। যাহা হতে সুপবিত্র এ তিন ভুবন। বাঁহারে শিরেতে ধরে শশাক্ষশেখর। বুঝিতে মহিমা ভাঁর পারে কোন্নর।।** এত বলি নমস্কার কুরি প্রাসন। বিশ্বাসিত মনে যান আপন ভবন। किषिगारको कारूवोदत ऋत्र किति हा। शमन करतन विधि शूलक कारस ॥ শব চিন্তা দুরে গেল গঞ্চা চিন্তা সার। সতত ভাবেন গঞ্চা হৃদয় মাঝার॥ গ্রমান্তব অধ্যয়ন করিতে করিতে। নিজ ধামে চলে ব্রহ্মা পুলকিত চিতে॥ ওকাররপিণী দেবী খেতা সত্ত্বরপিণী। শান্তিঃ শান্তা কমা শক্তিঃ পরা পর্মদেবতা ॥ বিষ্ণুর্ণারারণী কাম্যা কমনীরা মহাকলা। ছুর্গা ছুর্গতিসংহ দ্রী প্রদা গগনবাসিনী ॥ শৈলেজকাসিনী ভূর্গবাসিনী ভূর্গমিভিয়া। নিরঞ্জনা চ मिर्लिशा निक्ता निরহ हि রা॥ প্রসন্না ভক্লদশনা প্রমার্থা পুরাতনী। নিরাকার। চ 🖰 का छ ज्ञकांगी जन्मज्ञिभिगी॥ দয়া দয়াবতা দীর্ঘা দীর্ঘবক্ত্রা হুরোদর।। भिनकमा रेगलबाकवामिनो रेगलनिकनी ॥ यक्ताकिनी महानका वर्धनी वर्शन वारिनी॥ योकाया। योकमत्रिकिकृकिश्वाकिश्वानि। জলরপা জলম্যী **জলেশী জলবাসিনী ॥ দীর্ঘজিহ**লা করালাকী বিথাকা বিশ্বতোমুখী। বিশ্ববর্ণা বিষদৃতিবিষেশী , বিশ্বন্দিতা ॥ বৈফ্বী বিফুপাদাক্তস্ত্রবা বিফুবাছিনী। বিশ্বরপিণী বন্দা বালা হদা রহতরা॥ পীযুষপূর্ণা পীযুষবাসিনা মধুরদ্রবা। **पंत्रचंजी ह यमूना (भाषा (भाषावती वती ॥ वरत्या) वत्रमा वीता वत्रक्या वरत्-**। রী। বলবী বলবভোষ্ঠা বাখীরা বিশ্বরূপিণী॥ বারাহী বনসংস্থাচ রক্ষয়। । কর্মরী। বারুণী বরুণজ্যেষ্ঠা বরা বরুণবল্লভা॥ বরুণপ্রণতা দেবী বরুণানন্দ-**गितिभी । तम्मा त्रमावली त्रमातमा।** त्रच वाहिनी ॥ माकाश्मी मक्कका भाषा 'রমস্থুব্দরী। শিবপ্রিয়া শিবারাধ্যা শিবমস্তকবাদিনী॥ শিবমস্তকভূষা চ বিষ্ণু-শাদবহা তথা। বিপত্তিনাশিনী তুর্গতারিণী জগদীশরী॥ গীতা পুণ্যচরিত্রা চ গ্রেনারী সুবিশ্রবা। জীরামা রাষরপা চ রামচল্রৈকচন্দ্রিকা॥ রাঘবী রঘুবং-শৰী সূর্য্যবংশপ্রতিষ্ঠিতা। সূর্য্যা পূর্য্যপ্রিয়া গৌরী সূর্য্যমণ্ডলভেদিনী ॥ ভগিনী গাগাদা ভব্যা ভাগাপাপা ভগেধরী। ভব্যোচ্চয়োপলনা চ কোটিজন্মতপঃ-লো ॥তপবিনী ভাপসী চ তপন্তী ভাপনাল্লিনী। বিশ্বভেদদ্রবাকারা শিৰগা-নাষ্টেভান্তবা। আনন্দ্রবন্ধপা চ পূর্ণানন্দময়ী দ্বীবা।।কোটিপ্র্যাপ্রভা পাপধাত ং**হারকারিণী। পবিত্রা পরমা পুণ্যা তেজ**ধিনী শশিপ্রভা ॥ শশিকোটিপ্র-गेंगी ह खिल्माकी शिकांत्रिगी। मणा मणायुक्तभा ह॰ मणाब्या मणामखवा॥

मञाख्या मञो श्वामा नवीनानद्रकारका । महत्रभीशा (परवनी महत्वाकी महत्व-পাং ॥লকবক্ত ।লকপাদা লকহন্তা বিলক্ষণা ।দদা হতনরপা চ হুর ভা হুল্ভা শুভা ॥রক্তবর্ণা চ রক্তাকী ত্রিনেত্রা শিবসুন্দরী। ভদ্ধকালী মহাকালী লক্ষী। ্থাগনবাসিনী ॥ মহাবিতা। সিদ্ধ বতা মন্ত্রপা সুমন্ত্রিতা। রাজসিংহাসনত্তি রাজরাজেশ্বরী রমা॥ রাজকল্যা রাজপুজ্য মন্দমারুতচাম্রা।বেদরন্দপ্রপুঞ্চা চ (দবরন্দ প্রবন্দিতা ॥ দেবর দস্তু তা দিব্যা বেদর্শ্দস্থবর্ণিতা। সুরাণাং বর্ণ**দীরা** চ স্থবৰ্ণগাননন্দিতা ॥ স্থবৰ্ণদানশত্যা চ গানানন্দপ্ৰিয়ামলা ॥ মালা মালাবঙী মালতাকু পুমপ্রিয়া। দিগদ্বরী হুউহন্ত্রী সদা হুর্গদ্বাসিনী। অভয়া পদ্মহন্তা চ পীযুষকরশোভিতা॥ খড়াহন্তা ভীমরূপা শেত-মকর-বাহিনা। শুদ্ধশ্রেতা বেগবতা মহাপাষাণভেদিনী॥ পাপালি- মোচন-कत्रो পाপमःशातकात्रिणे। গভীরালকনন্দা চ মেরুসদৃশভেদিনী ! স্থালোক্র তাবাদা স্থানোপানরপিকা॥ স্থাপা মোকদা গলা নরসেব্য नद्रवती। পार्क्क ही राक्षणि हिजी रामका गर्डमञ्जरा। अत्यानिमञ्जरा मुक्सा পরমাত্ম। পর হল ॥ বিফুজা বিফুজননী বিফুপাদনিবাসিনী। দেবী বিফুপদী পতা জাহ্নী পরবাসিনী ॥ পরা পরাবতী পদ্ধারিণী পদ্মলোচনা। পদ্মপাদা প 🛵 ী পর্নাভ। চ পরিনা ॥ পদ্মার্জা পদ্মায়া মহাপদ্মগুণাধিকা। পদ্মাকা পরললিত। পরবর্ণা সুপরিনী ॥ সহস্রদলপরতা পরাকরনিবাসিনী । মহাপদ্ধ+ পুরহা স পুরেশী পর নেধর ।। হংদী হংদবিভূষা চ হংদরাজবিভূষণা।হংদ-রাজপুরণ। চ হংসারতা চ হংসিনী ॥মন্ত্রাক্ষরস্বরূপ। চ মন্ত্রবর্ণস্বরূপিণী। আনন্দ-শদংপূর্ণা শ্বেতবারি প্রপৃরিক। ॥ অনায়াসসদামুকি যোগ্যা যোগ্যবিচারিণী। তেজোরপজলপূর্ণা তেজনাং দীপিরপিণী॥ প্রদীপকলিকাকারা প্রাণায়াম-স্ক্রপিণী। প্রাণদা প্রাণনীয়া চ মহৌষধস্ক্রপিণী॥ মহৌষধজ্ঞলা চৈব পাপ-রোগচিকিৎসকা। কোটিজন্মতপোলক্ষী প্রাণ্ড্যাল্যোত্তরামূতা । নিঃসন্দেহা নির্দ্ম নির্দ্রলা মলনাশিনী। শবার্তা শবস্থানবাদিনী শবব্রতী॥ খুশান-বাসিনী কেশকীকশা চিত্তারিণী 'ভৈরবী ভৈরবশ্রেষ্ঠা সেবিতা ভৈরবপ্রিয়া॥ ভৈরৰপ্রাণরপা চ বীররসনিবাদিনী। বীরপ্রিয়া বীরপত্নী রুলীনা রুলপতিতা॥ क्नइक विञा कोनी क्न का यन वा निनी। क्न प्रविश्वा क्ना क्न याना अभ-প্রিরা॥ কৌলনা কুলমাতা চ কুলুবারিষরপিণী। রণস্ত্রী রণ্ডুরম্যা রণোৎসাব প্রিয়ারণিঃ॥ নুমুওমালাভরণা ক্যুওকরধারিণী। বিবস্তা চ সৰক্রা চ ক্লাবস্তা চ যোগিনী ॥ রসিকা চ স্বরূপা চ জিতাহারা জিতে জিয়া। যামিনী চার্দ্ধরাক্রয়া कुर्फरीक्यक्रिभी॥ लक्कांगिक्कि राग्नाभा नाही नहकहाहिगी। जाहा

তারকরম্যা চ তারিণী তাররপণী॥ অনন্তা চাদিরহিতা মধ্যশ্নাহরপণী। नकुजर्गानिनो कीना नकजङ्गवानिनौ॥ जङ्गनारिखाःकाना माउकी मुजा-বর্জ্জিতা। অমরামরসংদেব্যা উপাস্যা শক্তিক্রিণারী। ধূনাকারাগ্রিসংভূতা ধূমা ধূমাবতী রতিঃ। কামাখ্যা কামরূপা চ কাশী কাশীপুরস্থিত।॥ বারা-नमी वात्रयासिः कामीनाथिनिवः विजा। जत्याधा मथुता मात्रा कामी काकी অবস্তিকা।। দারক। স্থাদ্যাণ্ড কেবলা কেবলত্বা। বরবীরপুরস্থা চ কাবেরী করবা শিবা॥ রক্ষিণী চ করালাক্ষ্যী কঙ্কালা শরণপ্রিয়া। জ্বালামুখী ক্ষারিণী চ ক্ষীর গ্রাণমনিবাসিনী ॥ রক্ষাকরী দীর্ঘকর্ণা সুদ্রা দণ্ডবর্জি তা। দৈ সাদা-'ম্বদংহন্ত্রী তুট্টহন্ত্রী বলিপ্রিয়া॥ বলিমাৎস্প্রিয়া শ্রামা ব্যাঘ্রচর্মপিশারিনী। জন্মুকুমুমমংকাশা সাজ্বিকী রাজনী তথা। নামনী তরুণী রছ। মুগতী নদা ভদ্রুখা রিক্তা বিজয় জয়ন জয়। ত্রিনী পূর্বি পূর্ণচক্তনি ছা-बना। শুরুপূর্ব। দে ম্যত্রা বিটিঃ সংকেশক। বিণী। শনি-বুধ-কুজ-জর্ম-সিদ্ধিলা সিদ্ধির পিনী। সমতামূতর বাটে বিতী চ দ্বামূতা ।। নিরভেক্ষা निরালদা নিজ্পপ্র বিশোষণি। নিয়ে। টিছরপা চগরিষ্ঠ যোগিকং वर्ता ।। यमिक्रमी को खिंग को महारेमना धवानिनी । १८। १ति वी १तिनी मिक्रव हुं সবান্ধবা॥ সম্পত্তিঃ সম্পদাশা চ বিপত্তিপরিনোচিনী। জন্ম প্রবাহহারিণী ष्ट्रयम् ग्रामिविम्रिनी ।। नार्शालभा नार्शनाना क्रेशेय छन्दाति । अञ्जलक क्रे क्रुप्ते। জটাধরশিরঃস্থিত।। পটাম্বরধর। বীর। কবিকাব্যরম্পিরা। পুণামে ন পাপহরা হরিণী হারিণী হরা॥ হরিদানগরতা চ বৈদ্যনাঁথপ্রিয়া বলিঃ। বক্রেশ্বরী বক্রপারা বক্রেশ্বরপুরস্থিত।।। পেতগঙ্গা শীতলা ৮ উফোদকমরী রুচিঃ। চোলরাজপ্রিয়করী চন্দ্রওলবর্ত্নি।। সাদিত্যযুগুলগতা দদা নিত্যা চ কাশ্যপী। দহনাকী ভয়হরা বিবজ্বানিবারিণা॥ হরা দশহর। (अश्पात्रिमी कलून। भनिः 1 क्यालमालिनी काली मशकालयक्र थिनी।।

ধনঞ্জা।। চিৎ সংচিৎ কৃঃ কুবেরী ভূতিভূমির্ধরাধরী। ঈশ্রী হ্রীমতী द्रीन। की जात्र । जर्भना ।। जीवशी जीवनी जीवज्याकाता जरम्भती। সর্কোপদ্বসংশূলা সর্কাপাপবিবর্জিত।। সাবিত্রী তিব গাঘরী গণেশী গণবন্দিতা। তুজ্ঞেক্যা তুজ্ঞবেশা চ তুর্দেশ্য চ হুবোধিনী।। তুঃখহন্ত্রী তুঃখহন্ত हर्फि ७। यमर एवं । । गृहर पवी कृमिर एवी धरमे । धराल्या খোররপা মহাবোরনিত্থিনী। স্ত্রী চঞ্চলা পাপমুক্তিশারুনেত্রা লরাজিকা ॥ का खिः का गा निर्श्व ना ह त कः ग द उटमा स्वी। का नता विर्म ह। ता विकी दक्ष शा भना उनो ॥ সুখত্ব, খাদিভোক্ত্রী চ স্তখহুঃখাদিবর্জিতা। মহাইজিনসংহারা রজিনপ্লান্তমোচিনী ॥ জননা খলহন্ত্রী ৮ বারুণী পালকারিণী । নিলোঘোগ্যা भवानिजा (यागनिजा (यारगरुतो ॥ उन्नादिश्व वर्गदा उवादग्रुता मिडि । ্রত। উত্তাহারা লোকোদ্বারণকারিণী॥ শংখেররী শংখহস্তা শংখরাজ-বিদারিশা। পশ্চিমাস্থা মহাম্মোতা প্রেদিশ্বাহিনা॥ মার্ক্রযোজনবিস্তার্শ পাবনা তারবাহিনী। পতিতোদারিণা দোমক্ষিণা দোমবজিতা। শরণা শর তেওঁ জীব্র প্রাক্তির হা। যাহা যথা বিরুপাকী স্বরুপাকী শুভাননা॥ कोमूनो क्मूनाकाता क्मूनाकत्रङ्ग्यः। (२, मा ख्वानी छुटिया छोमक्रभा বর।নন ॥ বর।হকাম্যা বছি ছা রহৎশ্রেটি বলাহকা। কেশিনী কেশপাশাদ্যা নং ভামওনবানিনী॥ মলিকা মলিকাপুস্পরণা লাঙ্গলধারিণী। তুলসীদল-প্রাচ্য তুলনীদামভ্যণ। ॥ তুলদী ভক্ষসংস্থা চ তুলদীরসমোহিনা ৷ তুলদীরস-সুষাধুনলিলা বিশ্ববাদিনী॥ বিশ্বরুক্ষনিবাদা চ বিশ্বপত্রসদ্রবা। মান্তুরপত্র-দলালা বৈশ্বী শৈবাৰ্দ্ধদেহিনী॥ অশোকা শোকরহিতা শোকদাবাগ্নি-পজাব। মশোকর্কনিলয়া রন্তা শিবকরায়তা॥ দাড়িমী দাড়িমীবর্ণা র্ণ ডিমন্তন্ত্রে। রক্তাফী মারর্ম্ব রিজিনী রক্তর্নত্তিকা। রাগিণী ागं छा याँ। ७ मना द्रागविद ऋिं छ।। दिहागहा १ भर रामा र र द्रागय क्रिया।। শব্দুরপিণী তালরপিণা তারকেখর। বালীকিবদনস্থাত ভেতা হানন্ত-বিণিণ। মাতা উমাদপত্রী ৮ ধরাহারবিদী শুচিঃ। খেতবর্ণভাকা চ ইউভোগী রসা ইলা॥ স্বর্গত রামতজলা চারুবী চিন্তর জিনী। একতীরা এরজন। নিরিদারণকারিণী॥ একাওভেদিনী ঘোরনাদিনী ঘোর**যোগিনী।** অপাওবাসিনা চৈব গিরিরাজপ্রভেদিন'॥ শুক্লধারাময়ী দিব্যশংখবাভ্যানু-गातिनी। श्रविञ्च जा जूतञ्च जा ज्वर्य अश्विक जा। स्टामनीर्वनिनमा ज्वा में जा मरह बती। जमनानक नना ह रेन्नरमा शानहातिनी॥ त्नाका माश्राप-कता नर्वमानमरपाइनी । दिवरणाकाभावनी धना भरीकत्रभकातिनी ॥ धत्रभी

পার্থিবী পৃথু কীর্তিনিরাবর।। বেলপুত্রী চ বেলাণী বেলকতা বলাপ্ররা॥ লক্ষরণা বিষ্ণুরূপা শিবরূপা হির্গায়ী। ত্রন্সবিষ্ণুশিবত্বাচ্যা ত্রন্সবিষ্ণুশিব-पुना ॥ मब्ब कात्मातिनो ह यत्नार्खिनामिनो । छूर्ग्रखी यूथन्त्रभा यूथ-रमाक वक्कि । । आद्वागाना विनो वगा नाना जाभविना मिनो। जाटभा कनावन-শীলাচ তপোধাম প্রমাপহা॥ সর্বরেঃখপ্রশমনা সর্বলোকবিনাশিনী। সর্ব এনহর। সর্ব হুধনা মুধ্নে বিভা॥ সর্ব প্রায় শ্চিত্তনতী বাসনাত্রনহাতপা। সতকুর্নিস্তনুস্তহা তনুধারণকারিণী॥ মহ । তকদাবাগ্রিঃ শীতলশশধারিণী। গেয়া জ'শ্যা ভিত্তশীলা খ্যেয়া অরণলন্দিত।॥ চিকানন্দমরপা চ জ্ঞানরপা গণেশ্রী। আগম্যা আগমন্তা চ সর্বোগমনিরূপিতা । ইন্টনেবী মহাদেবী দেবনীয়া দিবিস্থিতা। দওবনগৃহতা চ শঙ্করাচার্য্যরূপিণী॥ শঙ্করাচার্য্য-প্রণতা শক্ষরাচার্য্যসংস্কৃতা। শক্ষরাভরণোপেতা সদা শক্ষরভূষণা॥ শক্ষরা-চারশীৰ। চ শঙ্কা চ শঙ্কবোধিনী।শিবত্রোত। শঙ্কুমুখী গৌরী গগনদাহিনী॥ দুর্গমা তুর্গমগোপ্যা গোপিনী গোপবন্নভা। গোমতী গোপকতা চ মশোদা-नकनिक्ती ॥ क्रकानुका कः महान्त्री उन्नताकमरमाठनी। भाषमः रमाठनी लक्षा नक्ति ह विভोषणा ॥ विভोषा जूरणी जुमा शातावनित्रमूखमा । डोर्थ स्र डा मश-তীর্থা তীর্থকন্তা তীর্থপ্রস্থঃ॥ কন্সা কম্পলতা কেলিঃ কল্যাণী কম্পেবা-मिनो। कलिकन्ययमः रश्चो कालकाननवामिनो॥ कालरमवा। कालमधी कलिका কালিকোত্তমা। কামদা কারণাখ্যা চ কামিনা কীর্তিধারিণী॥ কেবনামুখা কেকরাকা কুরঙ্গনয়নী কলিঃ! কজ্ঞলাকী কান্তিরূপা কামাখ্যা কেশরী-বিতা ॥ বহুখলপ্রাণহর। ঘূর্ণ২ক্রোতা ঘনোপদা । ঘূর্ণাক্ষদোষহরণী ঘূর্ণয়য়্টা জগত্রং ॥ ঘোরামৃতোপন জল। ঘর্ষরা ঘরখোষিণী। ঘোরা ঘোরতরা ঘূর্ণা যোষা ঘর্ষরনাদিনী॥ পোষরাজী গোষকরা। ঘোষনীয়া ঘনালয়। ঘটুঘর্ণর-ষ্ট্রাচ ঘটারী ঘট্টবারিণী॥ ওঙা একারিণা ওেশী একারবর্ণসংখ্যা। চকোর-নয়নী চারুয়ৢ৺ চায়রধারিণী॥ চিন্দ্রিকা ওক্রসলিলা চন্দ্রয়ঞ্জলবাসিনী। চোহারবাসিনী চর্য্যা চর্যারাহর্ঘবাসিনী।। চর্মাহস্তা চর্মামুখী চুচুকত্বয়শো-ভিতা। ছব্রিতা ছব্রনিলয়া ছব্রচামরশোভিতা॥ছব্রিতা ছদ্দশংইক্সী ছব্রবন্দ-সর্পেণী। ছায় চ ছলণ্ডা চ ছলয়তী ছলাবিতান্॥ ছিল্পতা ছলধরা ছবণা ছু वि उ ऋषिः। को मू उ वाहिनो कि स्व। क्वांकू यम् प्रसी। कता मृता कवा-काता करिना करत्यतो। (का। जिक्री। कामग्री कन्मिन्यरनात्रम। ॥ बक्तांत्रकातिगी वस्तां वर्त्ततीवाछगानिनो। समझुश्वमः मका अती अभवतासमा अकारमणी अकातका अंवर्गमशुनीयिका। हेक्सानकातिणी

इक्स ति ने देक का देने ॥ ठीकू तानी ठेव दशानी ठीकाती ठीकू तिथा थे। जामती ছমরাধাশা ভামরেশীশিরঃক্ষিতা॥ ভমরুধ্নিনৃত্যন্তী ভাকিনীভয়হারিণী॥ ত্রীনা ভয়িনী ভিঞা চ ভিঞাধনিসদাগ্রিয়া।। ঢক্কারবা চ ঢক্কারী ঢক্কাবাদন-তুষণা। পকারবর্ণধানিশী পকারীয়ানভাবিণী। তৃতীয়া তারপাপদ্ধা তারতরণি-ाधान ॥ जूपातकत जूपाणा जूपातकतवामिनो ॥ थकाताको थवर्गश प्रमृक-বিভূষণা । দীর্ঘজিহ্বা দীর্ঘরব ধনরূপা ধনেশ্বরী ।। দূরদৃষ্টি দুরিগম্য জততগন্ত্রী দ্রবস্তবা । নীরজাক্ষা নীররপা নিকলা নির্ব্ব তিপ্রিয়া ॥ পারা পরায়ণা পদ্ম পারায় পরায়ণা। পাবনা চ পণ্ডিত। চ পণ্ডাপণ্ডিতমোচিত, ॥ । পরা পবিত্রা পুণ্যাখ্যা পালিক। পাতকাদিনী। ফৃৎকারদূররদূরিতা ফাণয়ন্তী দগা শ্রা।। ফেলিলা ফেণ্দশনা ফেণ্ ফেণ্বতী ফণা। ফেংকারিণী ফণাধার। ফণিলোকনিবাসিনী। ফণিকতালয়া ফুলা ফুলারবিন্দলোচনা।বেণীংরা বলবতী বেগবতী বলাধরা। বন্দারুবন্দ্যা বীরা চ বলবতীবলাগ্রয়া। ভীমরাজী ভীম-পত্নী ভবশীর্যক্রতাল্যা। ভাস্করা ভাস্করেগরা ভ্যা ভাস্করবাদিনী। ভয়ম্বরী ভয়হর। ভুষণা ভূমিভেদিনী॥ ভগভাগ্যবতী ভব্যা ভবছুঃখনিবারিণী। ভেরতা ভেরত্বগদা ভদ্রকালী ভবহিতা॥ মনোরমা মনোজা চ মৃতা (माका महामिजि:। मिजिनाको मिजिना मिक्टी (माक्र तिनी।। यमशुक्रा यख्न भा यक्रमानी यमस्मा। यमन ७ दत्र ना ह यमन ७ हता य जि: !! রাত্রিরপা চ রমণীয়া রমা রতিঃ। লয়াকী লেশরপা চ লেশনীয়া লয়প্রদা।। বিরুদ্ধা বিশ্বহস্তা চ বিশিষ্টা বেশধারিণী। শ্যামরূপা শরংক্তা শারদী শরণা আচতা।। অফতিগম্যা অফতিস্তত্যা এমুখী শরণপ্রদা। মন্তিষট্কোণ-নিলয়া ষট কর্মপরিসেবিতা।। সাত্ত্বিকী সভ্যবাদিনী নানন্দা সুধরূপিণী। হরিকন্যা হরিজন্যা হরিদর্গ হরীশ্বী।। কেমকরা কেমরপা সুরধারায়ু-শোষिণী। जनका देनिता केना छेमा खेवा अवर्गिका ॥ अव्यक्तश्र इकात्रका ৯৯কারী এবিতা তথা। ঐশ্বর্যালাহিনী ওকারিণী ঔকাররপিণী ॥ অঙ্কান্ত-ग्ना अक्रथता अन्त्रन्श अञ्चर्शाति । मर्दर्गभगी वर्ग अक्रम् भाषिका। প্রমন্না শুরুদশনা প্রমার্থা পুরাতনী।।

এইরপ ন্তব পাঠ করিতে করিতে। উপনীত হন একা আপন বাবেতে। একারত এই ন্তব পড়ে যেই জন। গঙ্গাদৈবী তার প্রতি মহাতুই হন। মানব জনম ধুরি সংসার মাঝারে। পড়িবেক এই ন্তব অভি ভক্তিভারে। অথবা আকা দারা করাবে পঠন। মনোরথ রিছ ববে শান্তের বচন।। ত্রপারি তুই হয়ে বিশেষসামিনী। অভিনত বর

THE STREET HER REPORT TO STREET STORT STREET, STREET क्षा । व अध्या व अध्या अदि का त्राव अध्या अध्या । अति गृहर विकार की अधिकें के बार की दी वर्ग किया है किया हो है किया है क क्षेत्रशास्त्रक क्षेत्रस्य क्षेत्रस्य । अवया शाफ्रिय खर स्टब्न असम्म । सुनिक्त भिकात नाम भारता वहन । धनार्थीत धन दश देशात अमारत । आयार्थीत প্রায়া হয় জানিবেক তিতে॥ অপুজের পুত হয় গাতের বচন। চত্ত্রপ बर ९८३ अतिशन।। पूर्गाण निवटन चात्र शृर्गमा जिक्टिज । त्रिवि-क्रिक्नर्त दिनकरत्र वाजीशाटज।। अमावश्रा मिटन किथा इतिवाताद्वरक। ৰাভিবেক এই তাৰ ভিৰুক্ত চিত্তে।। অধবা অতিথি যবে হবে আগ্ৰান। লেই বিন এই ভব করিবে পঠন॥ যেই নর এই তব পড়ে ভক্তিতরে। সঙ্গালেনী সভা ভূক ভাছার উপরে।।রোগ শোক তার কাছে কভু নাহি যায়। ছাহার সদুশ নাহি এতিন ধরায়।। কিন্তু এক কথা বলি শুন ঋষিগ্ৰ। ৰাতে করিবে এই শুব অধ্যয়ন॥ মহামতি ব্যাসলেব ঋষি যে ইহার। ক্ষুত্র হন জান শান্তের বিচার॥ সে মূল প্রকৃতি হয় পর্ম দেবতা। त्न देवती विचमाद्य नर्क्ट एका त्राधा।। विनित्यां ग्राट्य याट्य कत्र व्याद्य। সহত্রেক স্থান্দেধ ওতে খবিগণ॥ বাজপেয় রাজস্যু শত শত করি। গ্যা-আৰু শত আৰু শান্তের বিচারি॥ ত্রনহত্যাপাপক্ষয়ে পর উপকারে। এই সংক্রেনিয়োগ জানিবে অন্তরে॥ এরপে ঋন্যাদি ন্যাস করি তার প্রায়। পড়িবেক এই স্তব তাপসনিকর॥ এইক্লপে স্তব পাঠ করিতে করিতে। বিশ্বনিত হন একা আপন ধানেতে॥ অপেকা করিয়া ছিল যত খবিগণ। कारमञ्जिकित्वे तर करतन वर्गन॥ जनामूर्य नव कथा कतिया धार्ग। বিষয়ে আছুল হয় যত খবিগণ॥ তদবধি অন্য কাৰ্য্য করি বিশক্তন। দেশত সম্ভুৱে করে গদারে বারণ॥ গদা আরাধনা করে অতি ভক্তিভরে। किटिंद करतन नात सरह गोवादत ॥ जनात निकटें शदा महेश विमाह। ৰাপন সাপন হানে কৰিগণ যায়। এতেক রতাত বানি সনত কুমার। ৰবিশ্বনে নৰোধিয়া কহে পুনৰ্কার ॥অধিক বলিব কিবা এটে খাৰিগায়। শঙ্কার संबंधित कर नाहि (इन क्षत ॥ शकात नमान छीर्थ क्षता (क्ष्या काहें) विनिष् विश्व जब रजा करियन है। है से वर्ज जो र इस सदन मरमात्र के बादस महान विकारण गुका प्रानिद्द पातरत ॥ जनगुकि शाटक ज्ञाटक प्राटक विर्णत । गुना राज्यक क्षित्र मक्षण बन्धामर्वाणे विक्रमान बाकरी नद्योदन विक्रवानी ट्राई TO THE TOTAL PARTY TOTAL TOTAL TOTAL PROPERTY OF THE TOTAL PROPERT

ALCH SERVICE BERT SELLED SERVICE SERVICE SELLED SERVICE SERVIC गानक विकास स्मानक भटिक शहर दर्द मार्क्स शमा समा करित भाक क्षेत्र क्षेत्र भाका भावाम विशादन एकि हारे जाई नाह । भटना सरमहस्त्र का ৰেক্ত নগা । তেৰন দয়াহয়ী দাতা নাহি কোথা আর। তাঁহারে ভারি হয় প্ৰায় । সগরের পুরগণ গদার কুপায়। সগতি করেছে প্ जा सिंद स्याप ॥ - अधिक यत्ति किंता ७८१ श्रीतिश्री। श्रकात समान ना এ জিন ভুরন। পাশা প্রকৃতি দেবী জাত্বী সুন্দরী। তাঁছার তুলনা ক किया नाहि दिति ॥ डारात छत्रत्। मना कत्रर वसन। चूछि गाद्य अधिक তবের বর্মন।। ভাঁহারে নিয়ত ভজ একান্ত অন্তরে। আর না আসিতে হরে জব-কারাগারে॥ জ্ঞানাজ্ঞানে যত পাপ করে নরগণ। গঙ্গার শ্বরণে ইয় नकन (माठन ॥ विधारन यनानि करत जारुवोट आर्म। अस विश्व नाहि आर् তার বিজ্ঞান। কুমহ কখন নাহি করে আক্রমণ। শাত্রের প্রমাণ 😘 নিবের ব্রুম । যেরাপ নিয়ম আছে স্থান করিবারে। সেরপে করিবে স্থান একান্ত অন্তরে । গঙ্গালান প্রতিদিন করে যেই জন। রোগ নাছি ভার বেই कदंत्र आक्रमा। मदनत मानि। जात ग्रंत पूरत यात्र। मदनात्र मिन् দেবীর ফুপার। অতএব ঋষিগা করহ প্রবা। একান্ত অন্তরে লহ জান্তবী অরণ।। সদত তাঁহার পদে কর নমকা।। ন। ঘটিবে ভব্যাবে কখন জন্ধান।। জিজ্ঞাসা করিরাছিলে যাহা খবিগা। সংক্ষেপে সকলি আমি করিছ কীর্তনা আর কি শুনিতে বল বাসনা অন্তরে। বর্ণন করিব আহা স্বার গোচরে। তাই বলে দ্বিজ কালী ওরে মুস্মন। সব ত্যজি ভাব সেই সাধনের ধন।

> প্রদেশ তাধায়। গলালানবিধি ও তলাহাত্য। সনংক্ষার উশাচ।

मिलनः नमनः इषा गटण्डटेच गाल्याजिकः। जवा गतः नमुख्यार्थः गलायाजाः नंगान्दतः र

प्रियो क्षिणान रापस्क पार्ट कियान करते एक क्राउप्यास विकास प्राथम क्रिक्ट क्रिक्ट क्राउपात करते क्रिक्ट निष्टि यांचा कर क्राउपस्थ विकार क्राउपात करते क्राउपात क्राउपात क्राउपात क्राउपात क्राउपात क्राउपात क्राउपात क्राउपात क्राउपात क्राउपात

ৰলিলে গলাঁর কথা ওছে মহোদয়। শুনিকু তোমার মুখে মোরা মুনিচয়। গ্রহাত্মানু বিধি এবে করহ কীর্ত্তন। শুনিতে বাদনা বড় করিতেছে মন॥ এতেক বতন ভান সনত-কুমার। কৃহিতে পালি কা প্রার মাঝার॥ एन শুন খ্রিগণ করি নিবেদন। জিজ্ঞাসা করিলে যাহ। করিব বর্নি। স্থান হেতু স্কুচঞ্চল হবে যবে মন। গঙ্গাস্থানে দেই কালে করিবে গমন॥ স্থানান্তে বিধানে পূজা দিবে দেবগণে। ঋষিগণে পিতৃগণে পূজিবে যতনে॥ শুভ বস্তুদ্ধর পরে পরিয়া সাদরে। করিবেক প্রাণায়াম একান্ত অন্তবে॥ **প্রকামানে যেই কালে করিবে গ্**যন। মৈথুন কণ্ঠ হিংসা করিবে বর্জ্ঞন। **দলিন বসন পরি আপন শরীরে।** করিবেক গঞ্চায়ান বলিত হল লে॥ **ঘেইকালে গঙ্গাম্বানে করিবে গমন।** গুরু বিফু গে ত গুণপতি শিব তুর্গা আর সরস্বতী। এই স্বেপ্রা পিতা দেব আর দিক পালগা। গদর্ম কিরর খাটের দেব-দেবী সবে করি নমস্বার।" পড়িবের এই মন্ত্র ২ কেব বিবর্গ ই **দন্ত্র পড়ি যাত্রা করিবেক স্নানে।** রর্ব্ধ নিক্ষিত্র হল্প ক্ষেত্র বা শত **শ্বিকে দেবি লোক্ষাত বিশ্ববিনাশিনি। ন্যস্থার তারি তেওঁ জণ্ড এবি ।** করিতেছি শুভ যাত্র তোমা দরশনে। শাসুষ্টি বর মান ন্যামি ১৯৫৭ h" **এইরপ মন্ত্রপাঠ করি তার পর।** করিবেক গঙ্গালাতা দেই নাধুনর॥ বিল্বেকে প্রণমিয়া নমি তুলদীরে। বিল্পেত ছাণ করি আঁত ভবিতরে॥ ভার পর গঞ্চাঘাত্রা কারবে স্কুজন।এই ত আছমে লিাধ ওছে খামিগ্র।। কিব। পথে কিবা গৃহে কিবা রাত্রি দিনে। শয়নে ভোগনে কিন্তা দ্রব্য আদি দানে ॥ গঞ্চা গঙ্গা নিরন্তর করিবে মাব। ক তলে দিনাদ্ধ ভার ওচে ঋহিগ ॥ গঙ্গাযাত্র। করি নর যদি পথে মরে। গঙ্গামৃত্যু-ফল পায় জানিবে অন্তরে॥ গক। দরশন হেতু যত দেবগণ । পরস্পর করে নবে কলহ ঘটন ॥ ' আমি অত্যে আমি অত্যে যাইব গঙ্গায়।" এইরূপ কছে মবে স্পর্দ্ধায়॥ গ্রকামান হেতু যাত্রা করয়ে যখন। যত পাপ বিদ্যমান দেহেতে তখন॥ বিকল হইরা সব হয়ে যায় কয়। বিশ্বরাশি তার পাশে কভু নাহি রয়॥ शकांत्र मनिनवाशु नांशिटन भंती तत । यहां शांटिश युक्त हश कांनिटव अखटत ॥ গলাবায়ু দেছে লগ্ন ছইবে যখন। এই শুরু দেই কালে করিবে পঠন॥ ''গঞ্চাজলে যেই দেব মহাতৃষ্টি পান । সর্বাধৈবেশ্বর তিনি কেশব আখ্যান॥ আপনার মহিমাতে যাঁর অবস্থিতি। অপ্রমেয় অজ ফিনি দ্বাকার গতি,। শোক गांद कचू नाहि बादन यह बन। मनाउन मिरे विशे अदर श्रविश्र ॥

রেণ করিবে তাঁরে সতত অন্তরে। তিনি ভিন্ন নাহি কিছু সংসার-ভিতরে॥ দ্দানক্ষয় ্যিনি সংসার মাঝার। ধর্মাধর্মসমন্থিত দ্যার আধার॥ বাোমদেছরূপী । যেই বিষ্ণু স্নাত্ন। তাঁহারে হৃদ্যুশাঝে করিবে শ্রণ ॥ জন মূ হ্যু যেই জন কভূ নাহি জানে। ভাঁহারে করিবে ধ্যান একাস্তিক মনে॥ ' ক্রাকরবিনিমুক্ত যিনি দ্নাতন। একান্ত অথরে তাঁরে করিবে মরণ। 199 নিয়ত করেন যিনি ভাভয় প্রদান। সত্যরূপী সেই জন যিনি সর্বস্থান ॥ সনাতন সেই দেব বিফু নারায়ণ। সতত তাঁহারে হুদে করিবে ধারণ ॥ু অমৃতস্থরূপ ঘিনি সাধনের ধন। মনীয়া সমূহ ফাঁরে করেন । দর্শন।। স্ক্রোখ্য পরম-আত্মা যিনি দনাতন। ভাঁহারে অন্তরমাঝে করিবে ব্রব্য ॥ ব্যাস আদি মহাতপা তাপন নিকর। যাঁহার উপরে সদা রাখেন অন্তর । ভাৰপুলে পূজা যাঁর করেন নাধন। সেই বিষ্ণুদেবে সদা করিবে অরণ॥ গুজুলের কেছে শুন্ন হইবে যখন। এই স্তব দেই কালে করিবে পঠন। ন্যালুনালন এন কলে প্রিসান। ইহার প্রসা**দে হর্ষ পায় যোগীজন।**। श का का कि उद्धार प्रश्नित पटका पटका विक्षा हुन हुन हुन का निरंत अस्टा ॥ েলারে: শ্রুপিল। ১৯৯ বারিল স্থানরে। ল**ক্তিভারে প্রণমিবে দণ্ডবং হয়ে॥** প্রাস্ত্র প্রার্থ বিজ্ঞার জননী। ভূমি মহাপুণ্যা শিবশীর্ষনিবাসিনী ॥ ত্র বা বিভাগ করে। তোমার চরণে মাতঃ প্রণিপাত করি॥" 🐡 📲 ে ঠ কার এলাও অভরে। অফাঙ্গে প্রণাম পরে করিবে সাদরে॥ ভার বার গ্রাজন কবিবে স্পর্ণন। স্পর্শকালে এই মন্ত্র পড়িবে তখন॥ তোষারে অরণ গাঙ্গে করিগো অন্যরে। তুমি দেবী মহেশ্বরী প<sup>া</sup>শি তোমারে॥ বিঞ্দেহ एको কারা তুমি কো জননা। প্রদীদ প্রদীদ দেবী পতিত পাবনী॥" এই মন্ত্র ভাকিভারে করি উজারণ। সনাতনী জাহ্নবীরে করিবে স্পর্শন। দ্বিবাসা হইয়া পরে করিবেক স্থান। প্রিয়নিদ্ধি হবে তাহে শান্তের প্রমাণ । मानव् भंतीत थित व्यवनोमावारत। रार्ट जन आन करत जारूवोत नीरत। পুন নাচি আদে দেই ভবকারাগার। বলিকু স্বার পাশে শান্ত্রের বিচার॥ গঙ্গাজলে না করিবে তীর্থ আবাহন। সর্ব্বতীর্থ যাঁর দেহে হয়েছে স্থাপন । সংকৃপে ব্যতীত স্নান যদি কেছ করে। তথাপি সে জন যায় বৈকুণ্ঠ নগরে॥ ভার দেহে কিছমাত্র পাপ নাছি রয়। দেবগণ পিতৃ**র্গণ সদা তুই হয়**॥ যথাবিধি স্থান করি জাহুবীর নুধরে। তর্পণ করিবে পরে বিধি অনুসারে॥ অন্য ভিত্তা ছবি ছতে বিয়া বিসর্জ্জন। ইটাদেবে নিরস্তর করিবে অরণ॥ গ্ৰাতারে তিন রাত্রি যেই জন রয়। তাহার মুক্তি জান হাতে হাতে হয়।

মুহর্ত ঘদাপি রহে জাফ্বীর নীরে। সার্থক মুহূর্ত সেই জানিবে অন্তরে 🛭 স্থান করি গৃহে পুনঃ যাইবে যখন। প্রার্থনা করিবে পুনঃ করিতে দর্শন॥ যদি পরিত্যাগ করে জুনক জননী। স্থান্য পুলেগন তার অথবা ভগিনী॥ ज्यानि (ज्यम कु:५ ० इ. नाहि नय। १८८ । १८ ११, ए३४ (६८ अर्भ इय। বেই দেশে জাহুবীর নাহি পশ্চিবান। তেই দেশে কলু নাছি যাবে মতিমানা। **धक्र परि** पर्यान करि ८२ वर्ग। ५२७ ८५ त. ७४ वरत अकित्र । যেই পুণা হয তার েই ত্রফলে। বলি রুপে ৮৪ মান স বুকার ভীরে॥ মেই পুণ্ট হয় তার নাছিক নংশ্য। শ বের বছন হছা মিন্যা কন্তু নয়॥ ষাবত গৰার তারে করে সর্বভাল। ৬০০৭ পিতৃগণ মহাতৃতি পান॥ তাবৃত দেবতাগ। দেই জনোপানা । ১০১৫৮ । নিবে এটরে॥ यङका शक्षाकोरत सरा राजार । ७००० ८००१ हार्ज साधना। গঙ্গাজীরে প্রনিদা করে শেহ দে। এ ন ১ মণ কণ্টন নারায্য। হান ভেত্রকীজন বল কাল + \* \* \* \* \* \* \* \* \* \* \* \* \* \* (धोई रान प्रत्यु नाणि करिएट । ना ना त हानि भारण ज्ञाना । যেই জন গঙ্গাত রৈ করে নিক্রত। প্রার্থন বিক্রতে করতে ৮০তি। खनवज्ञाभार्य रहेरा - यस भारत र रा रा राति। যার। নিক ভি করে লাচলার টার । । । । । প্রভাত মণ্যাক্তে সার সর, র, ফোলা। কেতিবে তিলের জন্ম সদশ্যে। গি**জাতীরে নি**বসতি করে সেই জন। আন না তার্লাতরে চর্লে স্নন্দ **उक्ट अशिश वाि. ८**.३ अ८२ ८ ८'। ० दि. ८ कर वाद वेश के भावादिया গঙ্গাতীরে যেই ছন কলে জবংলন। লক্তি করি প্রিদিন করে গণেশ্বান। তাহার অর্চনা করে যেই মাণুডন। ক্রমেন্ফর পর ক্র উপার্চন। **গঙ্গাহীন দেশে বা**ন ফেই জন করে। গঞ্চার আ<sup>ব</sup>ত্র নোলি থাকে ভিল্ভিন্নে। বিধাতা কর্ত্ত হল ববিতে সে জন। মগাপাপী কয় নেই শান্তের বচন। প্রাম জনপদ শৈল অগণ আশ্ম। যে হলেতে গ্রাদেকী ছতেছে বছন।। পরম পবিত্র ক্ষেত্র সেই খান হয়। শাস্তের বচন ইহা কছু মিখ্যা নয়॥ তুর্ব ভ মানুর জন্ম ধরিয়া নংলারে। গঙ্গা-্থারাগন নাহি যেই জন করে॥ বিকাশ জন্য তার বিকাশ গীন। অভিযেতিলে জন করে নরকে গ্রন।। মহা মহা পুণা যারা করে উপার্ক্তন। দেবলোকে দলা আতা দেই দব জন॥ তাহারা একান্ত মনে অতি ভঞ্জিভরে। গন্ধার প্রকৃত মূর্ত্তি দরশন করে॥

অন্য জল দম জ্ঞান জাক্বীর নীরে। বিবেচনা করে যেই আপুন অন্তরে॥ মহাপাপে মগ্ন হয় সেই সব জন। অন্তিমে তাহারা করে নরকে গমন্॥ গুলাগীন দেশ ত্যাগ করি যেই নর। মগলা দেশেতে বান করে নিরন্তর॥ মহাবৃদ্ধিমান সেই নাহিক সংশয়। দেবগণপূত্য দেই ওহে ঋষিচয়॥ গ্রহাতীরে আছে যার পৈতৃকী বস্তি। শিবতুলা নেই স্বাধু নেই মহামতি॥° মনুদোর চর্দাত্র তাহার শরীরে। মহেখর ন্ম ওতে জানিবে অভরে॥ , গ্লাতী ে অবহিতি করে যেই জন। তাহার করেতে করা করিলে অর্পণ।। গ্রালাদ্ধকর পায় সেই সাধুনর। পিতৃগণ মদা তুই তাহার উপর॥ গদাতীরে নিবদতি যেই জন করে। ভূমিদান করে যেই দেজনের করে॥ চতুদিশ ইন্দ্র রহে যাবত ধরায়। তত'দন স্বর্গরাজ্য সেই জন পায়॥ গুজাতীরে অবস্থান করে যেই জন। অপরাধ করে নেই যজুপি কখন॥ গ্রারে প্রদার কিসা তাড়না করিলে। দেবগণ রক্ট হন তাহার উপরে॥ বিদুখ ভাষাৰ পরে পিতৃগা হন। জন্ম জন্ম মহাপাপী েই ছুরংন॥ ং নালেব) নেই জনে পরিত্যাগ করে। অভিমেনে জন যায় মরক ভিতরে॥ গদাত রে বান করে যেই সাধু নর। সূর্য্যক্ল্য তারে ভাবে যেই নরবর॥ বিনা অওর তার নাসিক সংশ্য। তাহারে দেখিতে বাজে দেবতানিচয়॥ া । নি প্রিক্র জাহ্বরৈ তারে। গ্রানোক্রনি নবে ভারিল সাদ্রে॥ ্ৰ ক্ৰে । ম প্ৰতি পরিভূষ্ট হন । শাতের বচন ইহা ৩ হে ঋষিগণ॥ ্র্মি মুর্গতি নারা এ তবসংসারে। মুস্য বলিয়া ভাবে গঙ্গাবাদী নরে॥ ্রির ভাষার। যায় নরক্ষাঝার । মহাক্ষ্ট পেয়ে তারা করে হাহাকার॥ ম্যানরপ্রে ন্ব যত দেবগ্ণ। গঙ্গাতীরে নিবন্তি করে মতএব লাজাপিসে একান্ত অন্তরে। সন্মান কবিবে সদা ভবি ভবি ভরে॥ তালাদের অপ্যান করে যেই জন। মুলুল তালার নাহি হয় বদাচন॥ গদার উভ্য ोবের শিবের আদেশে। অসংখ্য পিশাচ নদাসাননে নিবসে॥ বারুরাপে রহে তারা সদা সক্ষেণ। যে যে কাজ করে তারা করহ এবণ॥ যার যারা গদাতীরে পাপকর্ম করে। বিষ্ঠা মূত্র ত্যাগ করে অভক্ত-অন্তরে। শ্লেব নখ কেশ আদি করে নিক্ষেপ্ণ। তাহাদের শাস্তি দেয় পিশাচের গ্ণা নিগ্যাবাদী ভবধানে যেই দক নুর। গুরুদেবা-পরাগ্র্মী যাহার অন্তর॥ ছ্উরুদ্ধি ছুরুমতি মেই জন হয়। রিখা হিংসা করে যারা কপট-হৃদয়॥ বিশাস খাতক হয় বেই যেই জন। তাহাদের শান্তি দেয় পিশাচের গণ॥ এই সব পাপীগণ অন্তিম-সময়ে। গঙ্গাতীরে আসে যবে অজ্ঞান হইয়ে॥

উহাদিগে ধরি সেই পিশাচের গণ। শ্ন্যমার্গে, মহাবেগে করে নিকেপণ॥ গুগন্দ ওবে তারা ত্যজি কলেবর। তুরগতি লাভ করে নরক-তিতর॥ দেখিত না পায় কিল যত পাণীগৃণ। দিবাচকু যারা তারা করে দরশন।। ্ৰিণ'ডের। যাহাদিগে ধরিয়া নবলে। মহারোধে কেলি দেয় গগনমগুলে॥ যেরপে ত হারা ত্যুক্তে আপন জীবন। বলিতেছি সেই-কথা করত শ্রবণ॥ মামর ত্যাগ করি ভূরি পরিমাণে। বহুদিন ঘুরি ক্রমে গগনে গগনে॥ ছতজ্ঞান হয়ে হয় বৃণিত লোচন। উল্লখ্য ঘন ঘন করে বিদ্রুল।। ইন্দিয় বিলোপ পায় জানিবে সবার। ক্লফবর্ণ কলেবর ভীষণ আকার॥ এইরপে কট পেনে ছুদ্দিন-নিক্ব। তার পর ত্যাগ করে নিজ কলেবর॥ শিবের কিন্তর বন্ত রহে গঙ্গাতীরে। এগঙ্গাতৈরব নাম সেই দলে পরে॥ গঙ্গারকা করে তার। কি যা যতন। নানারপ ধরি তারা করে বিচর।॥ যে কাজ করয়ে তারা ওনহ দকলে। নিরস্তর রহে তারা জাহ্নীর তীরে॥ অবত কুত্ম আদি যাহা যাহা পায়। গঞ্জাজন স্পৃত করি লইন। তাহায॥ তাহা বারা জাহ্নবীরে করয়ে পূজন। শিব বিকু দকলেরে করসে ফর্জন॥ আর যাহা করে তাহাশুন ভক্তি করি।স্নানাত্তে বসন হতে পড়ে যেই বারি॥ মস্তক উপরি তাহা করয়ে ধারণ। পাছে গঙ্গাদলে উহা হয় নিগতন॥ মাৎস্থ্য সভত আছে যাহার অন্তরে। ছুটবুদ্ধি যেই জন অসনীমাকারে॥ পরের অনিট দদ। করে যেই জন। কপট অওর যার ওতে খানিগা॥ শীগ'দ। ৈরবগা দেই দব জনে। রহিতে না দেয় কভু জ।হ্নী-১৮নে॥ এ হেতু মাংস্থ্য সদা করিবে বর্জ্জন। হিংসা দ্বেষ না করিবে কাহারে কখন॥ <sup>দ</sup>পরের অনিত টিন্তা যেই নাহি করে। কপটতা নাহি যার হৃদয়্যাঝারে॥ 'দেবভক্তি দলা করে যেই দাধুজন। পিতৃগণ উদ্দেশেতে করয়ে তর্পণ।। উঅতিথি দেবায় যাব হরিণ অন্তর। গঙ্গাতীরে বাস করে যেই সব নর॥ ভাহারাই দেহত্যাগ করে গঙ্গাতীরে। অতিমে তাহারা যায় বৈকুপ নগরে॥ নতুবা কপটবুদ্ধি তুট তুরজন। তাহার ভাগ্যেতে নাহি গঙ্গায় মরণ॥ বহুভাগ্যে মরে জাব জাহ্বীর নীরে।বহুভায়গ্য অন্তকালে গঙ্গারে নেহারে॥ ভাগ্যফলে গঙ্গামৃত্যু লভে দাধুজন। শিবের আদেশ ইহা ওছে ঋষিগণ॥ এতেক বচন উনি যত ঋবিগণ। সন্ত-কুমারে কহে করি সংখাধন॥

এতেক বচন শ্রীন যত ঋষিগণ। সনত-কুমারে কহে করি সম্বোধন॥
কছ কছ বিধিস্ত করিয়া করুণা। বর্ণন করিয়া সব প্রাও কামনা॥ গঙ্গায়
মরিলে বল কিবা ফল হয়। কিরুপেতে গঙ্গায়ত্য পায় নরচয়॥ তাহার এমাণ
কোথা করেছ দর্শন। এই সব বিবরিয়া কছ্ মহাত্মশু॥ এতেক বচন শুনি

বিধিন্ত কয়। ওন শুন বলিতেছি ওহে ঋষিচয়॥ কোটি কোটি জন্মে পাপ যাই নাহি করে। গঙ্গায়ত্যু হয় তার জানিবে অন্তরে॥ প্রবাহ অব্ধি করি হন্ত চতুটয়। ইহার মধ্যেতে মৃত্যু যদি কভূ হয়॥ পুন নাহি আসে এই ভব কারাগারে। নির্বাণ মুকতি পায় হরিষ অন্তরে॥ যেই জন্ম গঙ্গাই তুর্ লভে দেহীজন। সেইজন্মকৃত পাপ হয় বিনাশন॥ কোটি জন্মাৰ্জ্জিত পুণ্ট সেই জন পায়। নাহিক সন্দেহ ইথে কহিনু স্বায়॥ জন্মের স্হিতে জন্ম দেহীর মরা। জননি গঙ্গায় মরে সেই সাধুজন॥ জীবন সহিতে নাশ জনমের হয়। ভবের বন্ধন তার হয়ে যায় ক্ষয়॥ শত শত মন্দকার্য্য করি যেই জন। অন্তিনে জাহুবী-জলে ত্যুজয়ে জীবন॥ পাপরা শ সেইক্ষণে বিনাশে তাহার। কোটি জন্ম পুণারাশি হয় যে সঞ্চার॥ সেই পুণা সেই নর করিয়া আশ্রয়। দিব্য রথে চড়ি ক্রমে উর্ব্বগামী হয়॥ যত্তাপি গঙ্গায় মরে জ্ঞানে বা অভানে। গঙ্গামুত্যু-ফল পায় শিবের বচনে ॥ কিবা নর কিবা পশু কিবা পশীগণ। কীট পতঙ্গাদি করি ওছে ঋষিগণ। যেই কেহ দেহ ত্যজে জাহ্নবীর নীরে। মুক্তি লভিয়া যার সন্মনগরে॥ মিপ্যাবাদী তুট হয় যেই তুরজন। শুরু-দেবা-পরাখ্য যাহাদের মন॥ র্থা হিংসা করে যারা জীবের উপরে। বিখাস থাতক যার। এ ভব-সংসারে॥ কপট-হৃদয় যারা ওছে ঋষিগণ। মরণকালেতে তার। হয় অচেতন ॥ জাহ্নবী দর্শন নাহি তাদের ভাগ্যেতে । পাণহেতু য'য় ভার। নিরয় মাঝেতে॥ পিশাচেরা তাহাদিগে করিরা ধারণ। শৃত্যার্গে ফেলি দেয় ৫ হে শ্বিগণ।। গগনেতে ত্যজে তারা নিজ বলেবর। তুর্গতি লভথে গিটা নকে ভিতর॥ বহুকাল কট পায় থাকিয়া তথায়। তার পর জম্মে গিনা পুনত গ্রায়॥ সেই জন্মে যদি লভে গঙ্গায় মরণ। তবেত ভাদের भाभ इस विरंगान्त ॥ भाषा भाषा की है आफि शक्षाय मतिरल। कर्मभारम शास চলি সেই পুন্যফলে॥ তাদের উপরে নাহি যম-অিকার। দেবতা সহিতে তারা করত্যে বিহার।। দিব্য রথে চড়ি তারা কর্যে গমন। অমর-রম্পী স্ব করয়ে বীজন॥ দেবগণ তার গুণ নি ! স্তর গায়। পাপরাশি তার নামে দূরেতে পশায়॥ পুন নাহি জন্মে তারা মানব-আগারে। নিরস্তর রহে স্বখে অমর-নগরে॥ নিরস্তর হৃদি যার সন্তোষেতে রয়।পর উপকার হেতু ব্যাকুল হৃদয়।। একান্ত অন্তরে ভঙ্গে দেব-পিতৃগুণে। অতিথি-সংকার কর্ণের অতীব যতনে॥ ওফ সহ দেবে নাহি করে ভেদজুনি। মন্ত্র সহ এক্ষে যার বিচার সমান॥ সে জন অন্তিমেঁ লড়ে গঙ্গার মরণ । ঘুচি যায় ঋষিগণ ভবের বন্ধন ॥ সভ্য विना निथा नाहि त्यहे अन आत्। गंजा निज गंजा गंज आदि त्यहे मतन ॥

প্রবঞ্চনা না হি যার অন্তর মাঝার। গঙ্গায় মরণ হয় জানিবে তাহার॥ ইতি-হাস বলি এক শুন ঋষিগণ। বুঝিবে কি ফল দেয় গঙ্গায় মরণ॥

প্ররাগ নামেতে তীর্থ করে জনে জানে। মোক হেতু নরগণ যায় খেই খানে। ত্রিবেণী পর্ম তীপ বিরাজে তথায়। কত সিদ্ধ সাধ্য রহে বিশ্বা যথাস।। দেবগা বায়ুরূপে অবস্থান করে। দেব্যিগণেরা সব রহে শৃশুভ্রে।। জাহবা যানা আর দেবী নরমভী। তিন নদী একত্রেতে করে অবহিছি॥ ত্রিবেনী সমান তীর্থ নাহিক পরায়। যথায় মরিলে ভববন্ধন খণ্ডায়॥ যমুন।-मिन , यिडम का इवी भनिइन । किवा (भाष्ट) यन (भारह नव्रतन दिविदन ॥ স-স্বতী গুপুভাবে করে অবস্থান। নাহিক ইহার সম তীর্ণ কোন স্থান।। এই স্থানে করে সবে মন্তক মুওন। আছক্রিয়া যথাবিধি করয়ে সাধন॥ দক্ষিণা প্রদান করে ব্রাদ্রণের করে। ভোজন করায় বিপ্রে অতীব সাদরে॥ হেন তীর্ণে নাহি যায় যেই সভাজন। বিফল জনম তার বিফল জীবন ॥ কল কল রবে বহে গঙ্গা প্ররধনী। যমনা মিলিছে সঙ্গে শমন-ভগিনী।। মহনার কাল জল জাহ্বীর নারে। তাজে তরকে পড়ে জলবিদ্বপরে। শেত্তক কৃষ্ণজল হইয়া পতন। কিবা শোভা ধরে হায় মোহে জনগণ॥ জাহ্নগাঁর শ্বেড জল যমুনার নীরে। পড়ি কিবা শোভা ধরে জনমন হরে ॥ হেন তীর্থ ঘেই জন না করে দর্শন। বিফল জনম তার বিফল জীবন । সেই স্থানে দ্যু এক করিত বদতি। বিরাণ তাহার নাম অতি তুর্মতি॥ নির্ভর প্রদ্বা করিত লুঠন। পরগৃহে পশি রাত্রে কৃরিত ধরণ।।ভ্রমিত নতত ছুট প্রাওরে প্রান্তরে। কখন থাকিত গিয়া বনের মাঝারে॥ একাকী পথিক যদি হতো দরশন। তখনি তাহারে দুট করিত নিখন। একহত্যা নারীহতা জাণহত্যা আর। কিছুতে না হতে। তার বিকার সঞ্চার॥ কুকর্মে কখন নাহি জন্মিত ভয়। পরকাল না,ভাবিত তাহার হাদয়॥ না জানিত ধর্ম কর্ম জগত মাঝারে। কেবল ভ্রমিত দদা উদরের তরে॥ দ্যারতি করি যাহা হতো উপার্জ্জন। কুলটা-পদেতে তাহা করিত অর্পণ।। কুনটা লইমা সদা করিত বিহার। কুলটা তাহার জ্ঞান জগতের শার॥ কুলটার প্রেমে মুগ্ধ হইয়া 'প্রুর্যতি। কদাচার করে কত না িক অবধি॥ সুরাপানে মত হয়ে করিত ভ্রমণ। রুঞ্বর্ণ দেহ তার লোহিত নয়ন॥ দম্যু কর্মে অর্থ নাহি যে দিন হইত। কেই দিন বনমাঝে গ্রন করিত। প্র পক্ষী আদি ধরি করিও নিধন। বাজারে মাংসাদি লয়ে করিত গমন।। মাংস চর্ম আদি বিক্রী করিয়া তথায়। অর্থ লয়ে বেশ্চাগৃছে मारेज ज्ञात ॥ रनरे व्यर्थ व्यारकाषत कतिक शृत्र। धरेत्राश काल कार्षे

্ই তুরক্ষন। শুন শুন ঋষিয়াণ আশ্চর্য্য ঘটন। একদিন গঙ্গাতীরে কুরিল ित ॥ भना छोटा हिन अक नमत छैजान। ११ वे खाँदन प्रतिक सित्तिन शक्षांना অভিবাৰ মনে মনে প্ৰিয়া কৰিলে। ফৰতৰ ল'তি চুবি সাক্ষে ষ্তৰে॥ মনে মনে এই ছির করি ছুর্নন। রাণিযোগে দেই স্থানে করিত গ্রন। গ'রে সারে বাগানেতে কণিবা থাকেশ। উত্তর উদদ ফল কর্যে উদ্দেশ॥ ভ্রমিতে ভ্রমতে যাব সাহ্বীর তুলে। বেখে এক আমুরুল শোভে বতকলে n ফবভরে অবনত হযে তক্বর। প্রশিছে যেন গিয়া জা২বীর জল॥ তা**হা** বেধি ছুৰ্ঘটির প্রফুব ন্যন। ব্যক্ত হযে একোপরি করে আরোহণ।। অসংখ্য অসংখ্য ফল প। ভিয়া যতনে। সাবপানে রাখে ছুই সাপন বসনে॥ মনে মনে কত আশা করে স্বর্তি। বাস। র বহম আত্র যাবে জ্তগতি॥ বহু অর্থ হবে তাতে নালি সং। . - :-। বংবে দিন কভিপ্য॥ এত চিক্তি বাছি বাহি বাহি নাহিন। এদিকে রক্তর যেই জাগরিত হৈল॥ রুদের মন্ত্র শব্দ করিয় প্রবণ। নতেদহ করিণ কেছ করিছে ছরণ॥ আলোক লছয়। ে,ই কংগতি ধাব। মুর্হি ঠেকিব এবে গোবতর দাব॥ কি করে উপায় নাফি কার দরশন। ইং ছতে ন নিবারে উচ্চত তখন॥ হাড়াতাড়ি নিরে নি । স্বেপ্রে। । মার্থা বিলি বিশ্ব অপুর্ব ্মৰা কর পরশন। রুফ ২০৩ ত্বত দত্মা নামিতে যেমন।। শুক্ষ ভালে পদ দিল নিশা অক্কারে। মুম্নি পড়িব গিছা জাহত র নীরে॥ যেমন গঙ্গার জলো হৈল নিপতন। অমনি জীবন দত্তা করে বিন্দুজন।। ক্রতগতি যমদৃত আহিল তথান। দল্যরে লইনা যাবে এই বাননান।। হস্ত পদ ক্রমে তার করিল বিষ্কা। উপ্ৰোগ কর্যে কুমে ক্রিটে গ্রন্থ। বিক্রাই এক জন আফিল তগায়। জটাজুট শোতে শিরে ভীমতর কাব।। রক্তবর্ণ সাঁখি ভার ঘন ঘন ঘুরে। বিশ্ব শোভিছে এক প্রত্তিত করে॥ ক্রণতি সানি নৈই করে নিবাব।। বেদোনা বেলেন। ক ভূনা কর বন্ধন।। কে ভোষরা কেন বল राक्षित्र देशाय। कि त्ताव देशांत्र भीष वल्य आयाय॥

এতেক বচন শুনি যাংদৃত্র্ব। কহিল শুনহ বলি ওহে মহোদ্য। যামের কিক্ষা হই মোর। তুই জন। মৃত জনে লযে যাই শমন ভবন। এ কাজে নিযুক্ত আছি যামের আদেশে। এই কুটে লযে যাব প্রভুর সকাশে। তি দিন বেঁতে, ছিল এই ত্রজন। নিরন্তর মলক্রিয়া করেছে সাধন।। তিরিয়াতে দৃদ্যুর্ত্তি প্রকুল সভেরে। বারেক নাহিক তুট চাহে ধর্মোপরে।। তাহার উচিত ফল লভিবে নিশ্চয়। এই হেতু লয়ে মাব শমন-স্কাল্য়।

ইহার সমান পাপী না দেখি ভুবনে। কত যে পাইবে শাস্তি সমন-সদনে॥ তুমি কেবা মহাশয় দেহ পরিচয়। নিবারণ কর কেন ওচে মহোদয়॥ এত শুনি সেই বীর কছে ধীরে ধীরে। সাবধান সাবধান বিব দোহাকারে॥ পুনশ্চ বতাপি কর ইহারে বৰন। সমুটিত ফল পাবে কন্দিনু বচন॥ 🛍 গঙ্গাভৈরব হয় আমার আখ্যান। শিলের কিন্ধর আমি মহাবল্বান॥ **मिरित्र जारिएटम** जामि लहेन हेहारित । हेहार्त लहेगा यात्र मिरद्र रहाहरत ॥ **ইহার শরীরে পাপ কিছুমাত্র নাই। ভাহার কারণ তন বলি লোহা চাঁই।** जाइवी-পविब-जल श्राट भत्। निर्माटन हिए। यहत दिना एक मा ইথে যদি বাধা দেঁণহে ক্রহ প্রদান। এখনি নাশিব জান দোহাকার প্রাণ॥ এই ষে রুমেছে শূল ভয়ন্ধর করে। ইহাতে বণিব প্রাণ জানিবে অন্তবে॥ জীবনে বাসন। যদি কর ছুইজন। অবিলয়ে প্রভূপাশে করছ গ্রমন॥ আমার বচন গিয়া বলহ তাঁহারে। বিলমে নাহিল কাস যাহ শীঘু বরে॥ অই দেখ শ্ন্তভবে আসিছে বিষান। দেবক্তা আক্তিতেতে বেখছ প্ৰাণ। ष्परे রথে চড়ি যাবে এই সাধুমতি। প্রাধন কর ধোকে অতি ক্তগতি॥ এত বলি শিবদাস ছাড্যে হুক্ষার। হুক্ষারেতে কাঁপে ক্ষ্যি দুত দেঁছাকার॥ দ্বারে ছাতিব। দোহে ত্রানিত গ্রুবে। ফ্রুবিচ চারেগ্র শ্যন- প্রাচ্যে। এদিকে বিমান আসি উপনীত হয়। দিশে নারীপণ লাকে ওতে প্ষিচ্য॥ সেই রথে ছুট দন্ত্য করি আরোহণ। মনস্রথে কৈন্দেদের করিল শমন।। ব্যজন করিতে থাকে দিব্য নারী তারে। উপনীত কমে গিঘা কৈলাস নগরে। তথা গিয়া হৈল দুয়া শিবের কিক্র। শিবরূপী হযে রুছে বিশাস নগ্র। প্রকার মাহাত্ম এই করিলে এবণ। অপিক বলিব কিন। ভবে ঋষিগণ॥ চিরদিন মহাপাপ করি ভার পরে । গঙ্গাব ম র্যা গেল কিল'ল নগার ॥ পরম আশ্চর্য্য বল কিবা আছে আর। ধরণীমাঝারে গঞ্জ। সার সতে নার॥ অতএব খাষিগণ শুনহ বচন। গঙ্গারে হৃদ্য মাঝে কর্ছ সর্গ।। পুরিবে মনের বাঞ্চা নাহিক সংশয়। ঘুচিবেক ভববন্ধ ওতে ধ্যষিত্য।

# রহৎ শিষ-পুরাণ। ব্যা ডশ অধ্যায়।

জ্যোগ্যা, মৃত্যা, মৃত্যা, কাঞ্চী, কাশী, ও মুথুরার মাহাত্যা এবং জাহ্নীতীরে কর্ত্তবাকর্ত্ব্য নির্ণয়।

পরানিষ্টকরং কার্য্য গঙ্গাঘাং নৈব চাচরেং।
নার্দ্ধন এইস্ত যাদং গঙ্গাতীরমিদং স্মৃতং।
শতহস্তং প্রাহাদ্ধি গর্ভক্রেমিহোচ্যতে।
তব যহর্জনীয় ন্যান্তর দ্যাধি স্থাসতঃ॥

ঋষিগণ সমোধিনা ননত কুমারে। জিজ্ঞাস। করেন পুন স্তমগ্রুর স্বরে.॥ কি কথা বহিলে ওছে বিশির সুমার। গুনিয়া পাইনু হলে আনন্দ অপার॥ এখন শিক্তাসি গাহা তহে মহোদ্য। রপা করি সেই সব দেছ পরিচয়॥ কি কাজ কণ্ঠৰ বাল বিদিত গ্ৰাষ। কি কাজ নিষিদ্ধ তথা কহ স্বাকায়॥ কি কাছ করিনে ভবা সংক্ষেত্র হয়। কি কাজ করিলে হয় পাপের উদর॥ ছই সৰ বিশ্রিশা কছ মহ। । । গুনিতে কৌতুকী বড় ছইতেছে মন। এত বা । মট সাল । বি সলা মগুৰ বচনে কৰে শুন ঋষিচয়॥ কর্বি। ক্রো মালা গ্রান বিহিত। সেই সব যথাম্থ ছইলে বিদিত।। গলামান্দন ম্য একে খবিগ্রা শাতের প্রমান ইহা বেদের বচন।। বাহির হংসা গঙ্গা বিজ্ঞা ১৫০। নানা দেশ দিখা ক্রমে প্রেস্ সাগরেতে॥ মেহ যেই দেশ বিশা করেন গ্রা। মহাপ্রিণাত্ম উহা ওতে ঋষিগ্রা। बर्गाशा मश्रा माना भवता नातो। कामी काकी प्रम आंत चारावे श्री ॥ এই মত পুরী সাল। २१- ११ १ १ १.८। ৫ ১- বিদায়িনী নব জানিবে অন্তরে॥ ই রি ন্যান পুরা নাজি ো ভার। প্রম ১০ল দাতী নাসংর্থারা। জ্বে। প্রাক্র বুব, হানে সংক্রন। স্থ্র। রুক্সের হান বিদিত ভুবন। মাধাপুরী মনোহর জনন মাঝারে। কামাখ্যা ফাহার নাম জানে নব্দিরে। বারাণদা শিবপুরা মুক্তিপ্রনা না। শিবকাণী বিক্লকাঞ্চী ছুই কাঞ্চী-জানি॥ অবস্থা নগরা হব অভি মনোরম। সমুদ্র ভারেতে শোভে পুক্ষ-উত্তম। শাগর-মাঝেতে কিবা শোভে ছারাবৃতী। ক্রফলতা পুরী সেই কর অবগতি॥ পৃথী ব্যার এই মব কভু গণা নয়। স্বর্গধাম এই মব নাহিক সংশ্যা। রামের ধনুর আগে অয়োধ্যা নগরী। অধিষ্ঠিত আছে দদা জানিবে বিচারি॥ । পুরা ধরেন কৃষ্ণ নিজ স্থদর্শনে। শিবলিকোপরি মায়া বিদিত ভুবনে॥

একা বিষ্ণু আদি করি যত দেবগণ। নিরত্তর, নায়াপুরী করেন পূজন। কু মাধ্যা ইহারে কয় ওহে ঋণিচয়। ইহার সমান খান বিশে নাছি হয়॥ বারাণদী মহেশের রিশূল-উপরে। নদ। শোভা পায় কিবা জনমন হরে॥ হরিহরাত্মক হয় পুরী কাঞ্চীভয়। নোকদাত্রী এই গ্রই নাছিক দংশয়॥ বিষ্ণুকাঞী ধরে হ্রি নিজ বামারে। শিবকারী মতেশ্র দক্করে ধরে॥ অবন্তা নগরী দিব। কেশবের খান। হরির কমলোপরি করে অভিঠান॥ ছারাবতী রহে নদা পাঞ্জন্যোপরি। মুক্তিদাতী এই সব জানিবে <িচারি॥ একতা গণিত হলে এই নব খান। তবে মুক্তি জনগণে করয়ে প্রদান॥ কিন্তু স্থান্দ্রী শোচে স্থাবিশিরোণেরে তেকা দেবী মূক্তি দারী জগত-সংসারে॥ উক্ত সপ্ত পুরা ছতে গল। ১৯ঠ হয়। বেদের বচন ইছা কভু নিখ্যা নয়॥ এই হেতু মহাদেব এফুল অন্তরে। গলারে ধরেন নিজ মস্তক উপরে॥ (यरे (यरे (पन तरह ग्रमात याक्ता) श्रीयाम नरह ग्रा कानित क्रणाया। গলার আশ্রান্তে যেই যেই স্থান। মেই মব মচেশের মন্তক্রমান। গঙ্গা দেবী কোথা বহে দক্ষিণবাহিনী। পশ্চিমবাহিনী কোথা দেবী সুরুষ্নী॥ উত্তরবাহিনী হয়ে বহে কোন হান। দক্ষি। দিকেতে কোণা লয় বছমান॥ দক্ষিণবাহিনী হতে দেবী সুর্গুনী। শাব্রণে পুণ্ডনা পুর্ববাহিনী॥ পুর্বে হতে শভগুণে প্রিম্ম ा देश ८२८५६ विश्वम ॥ পশ্চিমবাহিনী হতে স্হত্যেক ওলে: ইতঃবাহন জেত সানিবেক মনে॥ গঙ্গা সম তীর্থ নাহি ওছে ঋনিগণ। প্রম কেবত। গঙ্গা বিদিত ভ্ৰন।। গঙ্গা দেবী বিশ্বনাবো বন্তির হান। গঙ্গাই প্রমা গতি ন্বার প্রগান॥ ष्याकामवाधिनी इन (नवी एत्रपूर्नी । शरिका जारवी (नवी रेमटलमवाधिनी ॥ পুথিবী-বাসিনী গল। পাতালে নিকান। মথা গসা তথা ভভ জানিকে নিৰ্যাম।। বিরাজ করেন গল। যশার যশার। নিরভর মসাওভ তথার তথার॥ স্থান করে যেই জন জাহ্নবীর নীরে। পবিত্র তাহার দেহ জানিবে অতরে॥ কিবা কীট পতঙ্গাদি পশুপদীগণ। যদি গঙ্গাজলে ত্যুক্তে আপন জীবন॥ নেই দেহ ত্যজি নেই দিব্য দেহ পায়। বিদানে চড়িয়া ভারা কর্গপুরে যায়॥ তাহার প্রমাণ দেখ সগর-সন্তান। জাহুবীর নীর স্পার্শ পার পারভাগ। তমোভাবে ছিল তারা পাতা নগরে। একশাপে তুরগঙ্গিনে মর্কনরে। গঙ্গাজল স্পর্শি পরে পাইল উদ্ধার। গঙ্গার মাহাত্য বর্ণে হেন । গ্রার । যোজন শতেক হতে গলা গলা হরে। যেই জন ভাকে নদা আনন্য ১৬ রে। नर्रभारभ मुक्त इस मिर् माधु कन। अखिरम म कन करत दिक्रक भगन।

আজন্ম পাতক করে যেই মূচ্মতি। মরিলে জাক্বীজলে লওঁয়ে মুকতি॥
গঙ্গারে করিবে ধকা অতীব যতনে। তাহার কারণ বলি শুন স্কভিনে॥
গঙ্গারে বক্ষানাহি কণে যেই জন। পরিত্রাণ নাহি দেই পার কদাতন॥
অভএব গঙ্গা রক্ষা করিবে যতনে। তাহা হলে মুফি লাভ শাবের বচনে॥
গঙ্গা হতে মুক্তি লাভ বিশিত ভুবন। গঙ্গাই পর্যা গতি জানে স্ক্জন॥
ব্যাহক বচন শুনি শ্বিগণ ক্যা উন্ধান বিহ কথা বিধিব তন্ত্র ॥

এতেক বচন শুনি ঋষিগণ কয়। খন শুন এক কথ। বিধির তন্ত্র # বলিলে গঙ্গারে রক্ষ। করে যেই জন। মৃক্তি লাভ করে দেই শাস্থের বচন॥ গঙ্গা গঙ্গা নাছি করে যেই মূ গেতি। অন্তিমে সে জন লভে পরমঃ ছুর্গত॥ কলাত নাহিক দেই পায় পরিত্রাণ। এ হেতু রক্ষিবে গলা ওছে মতিমান॥ তোমার মুখেতে ইকা করিবু প্রবা। সন্দেহ হইল কিন্ত ওতে মহাজ্ন্॥ গুজাতর রক্তির বল কেমন প্রকারে। **গুজা রক্ষা বলে** কারে ক**হ স্বাকারে॥** ৫০. তেক বচন শুনি বিশির ন'দন। মিফ ভাষে ক**হে শুন ৬৫ হ** ঋষিগণ। গঞ্চাতে কর্ত্রন যাহ। করিশে নাধন। গঙ্গা রক্ষা তারে কহে শাস্ত্রের বচন। নিসি গ্রাস্থতে যাহ। শাস্থের বিচারে। মূচমতি যদি কেহ সেই কাজ করে॥ তাহ। বর্ণ গ্রার্থা কভুনাহি হয়। গঙ্গার রক্ষণ ইহা জানিবে নিশ্চয়। এখন বলিব যালা ওচে ঋষিগণ ! গঙ্গাতে কর্তব্য যাহা করিবে সাধন !! চারি হাত যত দুর প্রাহ হইতে। নারায়ণ স্বামী তার জানিবেক চিতে॥ াত কেন্দ্ৰ নহে স্বলো জান কদাচন। এই হানে দান নাহি লইবে কখন॥ ্জাগ্র যদ প্রাণ হয় কোন কালে। তথাপি না লবে দান শাস্ত্রের বিচারে। উ।। ক পাৰ যদি থ'কে বিজ্ঞান। নারায়ণ ক্রেকভূ নাহি দিবে দান॥ পতিএছ যদি কভু কেছ নাছি করে। দানাভাব হবে তবে রুঝ দর্বে নরে॥ যেই কার্য্যে হয় পার- থনিষ্ট সাধন। গঙ্গাতারে না করিবে তাহা কলাচন॥ গ্রুপত কৈ দান কছু গ্রুপ করিলে। জাহ্নবী বিক্রীতা হয় শাস্ত্রে হেন বলে॥ জাহ্বী বিক্রী । যদি হয় ঋৰিগণ। বিক্র ত হইবে তাহে দেব জনাদ্দন॥ যগ্ৰুপি বিক্ৰাত হয় দেব অনাশন। তাহাতে বিক্ৰাত হয় এ ভিন ভ্ৰন॥ গদাত রে নিধ্যালাক্য কভু না বলিবে। ভ্রমান্ন হইয়া নাছি পরদান লবে॥ ক ভুনাহি গঙ্গা ঠারে করিবেক দান। শান্তের বচন ইহা বেদের প্রমাণ॥ অশার্মার্নি থাকা করিবে বর্জ্ন। ক্রয়বিক্রাদি নাছি করিবে কখন॥ বননকালন নাছি করিবে তথায়। মার্জ্জন কখন নাছি করিবেক কায়॥ কটুবাক্য না ক'হিবে, কাঁহার উপরে। অস্ত্রাঘাত না করিবে কোন জীবোপরে॥ পরের হৃদ্রে ক্লেশ ঘাহে যাহে হয়। না করিবে সেই কাজ ওহে ঋষিচয়॥ পরদ্রব্য গর্সাতীরে করিয়া গ্রহণ। না করিবে কভু কোন দেবতা পুজন॥ না করিবে কারো সহ শান্তের বিচার।গঙ্গাতীরে কভু নাহি করিবে আহার॥ শাস্ত্রের বিরুদ্ধ হয় যে দব বচন। গঙ্গাতীরে দেই বাচ্য করিবে বর্জন।। কোন তত্ত্ব না জানিয়া বিশেষ প্রকারে। কভু না বলিবে ভাছা জাহ্নবীর তীরে॥ ভিল বিনা কভু নাহি করিবে তর্পণ। কভু না করিবে ভ্রমে চরণ কালন।। শলমূত্র পরিত্যাগ কভুনা করিবে । বায়ত্যাগ গভাতীরে সর্কথা ত্যজিবে॥ না ফেলিবে গঙ্গাতীরে কভু নিষ্ঠীবন। কভু না করিবে তথা উচ্ছিট ক্ষেপণ। ষ্কুপর তীর্থের তথা পশ যা করিলে। নিরয়ে দুর্গতি লভে সেই পাপফলে॥ কভুনা করিবে অন্য জলের প্রশংসা। ধন লাভে নারী লাভে না করিবে আশা।। দণ্ডাঘাত না করিবে কভু কোন জনে। কিলা না করিবে কভু ছাহ্বী জীবনে। তৈল আদি দৰ্ফ্ব অঙ্গে করিয়া মৰ্কন। গঙ্গাধান না করিবে ছুবিজ্ঞ কখন ।।যাতাপি জীবন যায় ভাহা শ্রেয়কর। তনু না শপথ কভু করিবেক নর।। স্বর্ণ রৌপ্য অলঙ্কার ধারণ করিয়ে। স্থান না করিয়ে কভু জাস্বীতে গিয়ে। একমার বস্ত্র অঙ্গে বরিয়া থাবণ। কড় নাছি গলাফানে বরিতে **ধ্যন। শোক যোহ গঙ্গাভীরে কভু না** করিলে। নাস্তিক গ হালি লতে সর্ক্রথা ভ্যক্তিবে॥ কেনরপ পাপ নাহি রাখিবে এওরে। বিলা কর্মের কথা ত্যজিবে সাদরে॥ ভাদ্রমানে রঞ্পানে চত্ শা দিনে। যভার ক্লা উঠে উন সর্বজনে ॥ তদবণি গর্ভ বলি পরিগণ হয়। তার উর্দ্ধে তীর কংঘ ওচে ঋষি>য়॥ তথা হতে সার্দ্ধ হও শত দূর স্থান। গঙ্গাতীর বলি গালত শা সুর প্রমাণ॥ গরাতি প্রমাণ স্থান গঙ্গাতীর হতে। চীলকেন বলি খ্যাত ভানিবেক চিতে॥ এ ক্ষেত্রপ্রভাবে হয় সাল পাপ ক্ষা। মতা মতা মতা ইসা জানিবে নি দয়॥ প্রবাহ হইতে শত হস্ত পরিমাণ। গর্ভতে ত্র বলি খ্যাত ওহে **ছতিখান্।। গ্রুক্তে**তে যেই কার্য্য বর্জনীয় হর। মাবগান হযে তাহা শুন ৠিবিচয়।। হিংসা ছেম কভু নাহি কি। বেও বান। বেই সারু বেই বিজ্ঞানিজ হৈত চায়॥ কলহ তথায় দদ। করিবে বর্জ্জ্য। মিণ্যাব।ক্য তথা নাহি কবে হলাচন ॥ প্রতিএই কভু নাহি লবে সেই হানে। অশাস্ত্রত্থ, নাহি আনিবে শেনে। স্থানাস্থান মনে মনে করিয়া বিগর। করিবে চরণক্ষেপ কর্মকাও আর॥ পরান্ন ভোজন নাহি করিবে কখন।পর্দর্য ভোগ তথা केরিবে বর্জন॥ শোক মোক পরিত্যাগ করিবে তথায়। তেরাগিবে নাস্তিকতা কহিল স্বায়॥ কোন পাপ না রাখিবে আপন অন্তরে। জণ ইচ্ছা না রাখিবে অন্তর মাঝারে॥ কভু না করিবে তথা ভিকার বাসনা। পরিহাস কার সহ না করিবৈ কামনা।

চাপল্য হাদয় হতে করিবে বর্জন। শাস্ত্রের বচন ইহা ওছে ঋর্ষিগণ॥ মিথ্যা-বাক্য কভু নাহি আনিবে, বদনে। শোক মোহ না কনিবে আপনার । মনে॥ কটুবাক্য না কহিবে কাহার উপর। কভু না করিবে কাজ পরপীড়াকর। কভুনা কহিবে তথা অশাস্ত্র বচন। না জানিয়া কিছু নাহি বলিবে কখন॥ অন্ত অন্ত তীর্থ যাহা আছ্যে ভুবনে। তাহার প্রশংসা নাহি আনিবে বদনে॥ অক্ট জল-প্রশ'সা ন। করিবে কখন। সভ্য সভ্য এই বাক্য ওঠে ঋযিগ্র ॥ স্থানাস্থান বিবেচন। করিবে বর্জ্জন। গঞাতীরে বর্জ্জনীয় করিন্দু বর্ণন॥ গঙ্গাতীরে গেই জন করে নিবসতি। তাহার উচিত যাহা কর অবগতি॥ গঙ্গাগঠ হতে এশ তুলিয়া যতনে। করিবে সকল কাজ শাস্ত্রেণ বিগনে॥ গঙ্গাতীরে অবহান করে যেই জন। অন্যজল স্পর্ণ নাহি করিবে কখন॥ যেই জন গঙ্গাতীবে করে অবহিতি। অগ্য জন যদি তপর্ণে সেই মূচমতি॥ এমহত্যা পাপে মগ্য হয় সেই लन। अखिरम (म জन करत नहरक गमन ॥ महाठीर्थ ग्रङ्गा औरत कहिया गमन। দেবপুজা পি ইপুজা করিবে সাধন॥ মলমূত্র না ভ্যক্তিবে জাহুবীর ভীরে! ভেষাগিলে যাবে থেই নরক মাঝারে ॥থেই দিকে গঙ্গাদেবী করে অধিষ্ঠান। মেই মুখে গেই জন করি অবহান !! মলমূত্র আদি সব করে বিসর্জ্<mark>জন। তাহার</mark> বদুটে উদ্ধ নতকে গ্ৰন। গঙ্গার তীরের কাছে যেই দেশ রয়। মহাপুণ্যভূমি দেই নাহিত ম°শন॥ দীকা জপ দেবপূজা যতেক করম। গঙ্গাতীরে যথাবিধি করিবে সাধন।। নারাফা খেতা মাঝে করি অবস্থান। করিলে এ মব কাজ যেই মতিমান্ ॥গঙ্গাতীরে যেই জন করিষা গমন। যতনে সাবিত্রী জপে করংয় মনন ॥ শুক্ল কন্ত্র সেই জন পারণ করিবে। নতুবা ভাহার কাছ বিফলে যাইবে॥ গঙ্গা তীরে প্রান্ধ ক্রিবে সাপন। যথাবিধি পিতৃগণে করিবে তর্পণ ॥ গর-উপকার হয় যে নেই করমে। একমনে সেই কাজ করিবে যতনে **। ইউ-**পের মহাতুউ যাতে বাতে কনাগলাতীরে দেই কাজ করিবে শাধ্ন॥ দ্রেনাং-দর্গক্রিবারে যদি ইচ্ছো হয়। করিবেক গঙ্গাতীরে শাগ্রের নির্ণয়॥ না করিবেই শান হেতু পাত্র অন্বেষণ। ত্যক্ত দেব্য ইচ্ছা নাহি করিবে কখন॥ করিবেক ন্তবপাঠ অতীব সাদরে। মৌনভাবে রবে সাধু একান্ত অন্তরে। জীবের সহিত শৃহি আলাপ ক্রিবে। নারীজনোপরে নাহি নয়ন ফেলিবে॥ পরের কুকার্য্য যদি করে দরশন। সেই দিকে পুনঃ নাহি ফেলিবে নয়ন॥ নয়ন মুদিয়া নিজ করম করিবে। অপর দিকেতে কিন্তা চাহিয়া থাকিবে॥ তৃষ্ণা হলে গঞ্চাল করিবেক পান। ত্রনারপ সেই জলে করিবেক জ্ঞান।। নারারণ ক্ষেত্র যাহা গতি পুণ্যত্ম। এ সব করম ত্লা করিবে সাধন। প্লাতীরে আদ্ আদি বেই

জন করে। 'শোক মোহ নাহি থাকে ভাহার অন্তরে। রোগ আনি তারে নাহি করে আক্রমণ। অধিক বলিব কিবা ওছে ঋষিগণ।

এতেক বচন শুনি ঋষিকৃল কয়। নিবেদন আছে এক এটে মহোলয়॥ গঞ্চাতীরে পিতৃশ্রাত্র করিবে কেমনে। তাছার বিধান বল আম। গ্রা আনে॥ এই সব জানিবারে নিয়ত বাসনা। বর্ণন করিয়া এবে পূরাও কামন।॥ এত **শুনি কহে পুন** বিধির কুমার। প্রশ্ন করিয়াছ যাহা সার হতে সার। করিবেক আদান্মতান যে । পে গঙ্গায়। বর্ণন করিব তাহা শুনহ স্যায়॥ গদ্ধতে ক্ররিবে শ্রাদ্ধ পার্বে। বিধানে।তার্শগ্রাদ্ধ কহে তারে শাস্ত্রের বচনে॥ পিতৃগণ মহাতৃ উইহাতেই হন। শান্তের বচন ইহ। ওছে ঋণিগণ॥ গমন করিয়া যেই জান্ত্বীর তীরে। বংসর যাবত শ্রাদ্ধ বিধানেতে করে॥ গয়াশ্রাদ্ধকল পায় মেই সাধুজন। পিতৃগণ হতে মুক্ত সেই সাধ হন॥ গ্যাধামে পিওদান যদি কেহ করে। তাহে যেই কল হয় শাম্বের বিচারে॥ গঞ্জাতীরে প্রাদ্ধ যদি করে অনুষ্ঠান। স্বশ্য তাহাতে ফল গ্রার ন্যান। বিশেষত কলিকালে জাহ্নবীর তীরে। পিওদান নর্বতেষ্ঠ জানিবে ১৫রে॥ অপমৃত্যু-মৃত যদি হয় কোন জন। গজাতীরে শ্রাদ্ধ তার করিলে কাংন॥ তুর্গতি মোচন হয় জানিবে তাহার। সুগতি সভবে নেই শাদের বিচুর॥ অমাবতা যেই দিন ওচে ঋষিগণ। মে দিনে করিবে নবে গঙ্গা, ১পণ। বিশেষতঃ করিবেক শ্রাদ্ধ অনুষ্ঠান। তুলদী কৃত্ম তিল করিবে এলান। রবি শুক্র ছুই বারে ভিল ত্যাগ্য করি। তর্পণ করিনে দবে শান্তের বিচারি॥ যেই দিন আদ্ধরিয়া করিতে হইবে। তার পূর্ব্বদিনে যাহা বর্জন কারিব।। বিশিতেছি সেই সব ওচে ঋষিগণ। একান্ত অন্তরে সবে করছ প্রবণ।। আমির মস্থর তৈল আর দ্বিভোজন। তিজন্ত্র মাংস রোষ রমণীনঙ্গম॥ পৈশুন শোকাদি হিংসা তাজিবে যতনে কলহ বামনা নাহি করিবেক মনে॥ কোশের অধিক পথ না যাবে কখন। অন্ত শস্ত্র কভূ নাছি করিবে ধারণ॥ मा कतित्व शर्वितिन श्रतादः यादाद । नायात्व कता खत्न नणाति श्रांत ॥ না করিবে পুর্কদিনে শোণিত পাতন। ক্রয়বিক্রয়াদি নাহি-করিবে কখন ॥ পুর্বাদিনে এই নব ত্যাজিবে যতনে। ব্যায়াম করিবে নাহি শাস্ত্রের রুচনে॥ धाम्मिल्त राहे मव कतिरव वर्जन। यन लिया छन छाहा कितिव वर्गन। व्यश्यम व्यशालन कतिरव वर्द्धन। नायरमक्षा ना कतिरव स्मेरे भाष्ट्रकन॥ ধান্য মুগ্ মহুর।দি আঘাত ত্যজিবে। তম্তু নির্দাণের কার্য্য দর্বধ। বর্জিবে॥ याएको कतिरव नाहि भरतत मनन। भारतत विधान अहे खर्ड श्रविश्रा।।

श्रान पान जापि नाहि कतिशा माधन। जारुवी नज्ञान कटत (यह छूतजन॥ ধাবত করম হয় বিফল তাহার। পূর্বকর্ম নাশ পায় শান্তের বিচারু॥ অত এব স্নান . আদি করিয়া দাধন। গঙ্গাপারে যাইব তবে ওহে ঋষিগণ॥ বিনা কাজে নাহি যাবে জাহ্নবীর পারে।শাশুর বিধান ইহা জানিবে অন্তরে॥ গঙ্গাতীরে যদি হয় আহ্মণ দর্শন। ভক্তিভরে প্রণমিবে তাঁহারে তখন।। ব্রনার সমান ভাঁরে করিবেক জ্ঞান। মহাফল হবে তাহে বেদের বিধান। ধেনু দরশন যদি হয় গঙ্গাতীরে। মহাপুণ্য হয় তাহে জানিবে অন্তরে।। শুক্ল-বস্ত্র বতা পুপ্প করিলে দর্শন। অথবা ভুলসী তরু হয় নিরীক্ষণ।। অধবা সুন্দরী নারী ন্যনেতে পড়ে। প্রণাম করিবে তারে একান্ত অন্তরে॥ পদ্মপুষ্প গঙ্গাতীরে ধরিনে দর্শন। নুপতি সারস শুক অথবা খঞ্জন।। হংস কার্ত্তব কৌক পড়িলে নরনে। প্রাম করিবে তারে ভ**ক্তিযুক্ত মনে।। বিশ্বরক্ষ কিছা** শৠ করিলে দর্শন। প্রণাম করিবে ভারে হয়ে পুতমন॥ ব্রাহ্মণ স্থাপন যেই করে গঞ্চাতীরে। শিবলিঞ্গ হাপে কিম্বা অতি <del>ভক্তিভরে। বিফুর মন্দির</del> কিলা করত্রে খাণন। তুর্গালেবী প্রতিষ্ঠিত করে যেই জন॥ পুন নাহি আসে দেই ভবকারাগারে। শাদের বিচার ইহা জানিবে অন্তরে॥ গঙ্গাতীরে ঘাট ম্বির সের বেলার সালার বিষয়ে একীর মতবে। পুনরাম জন্ম দেই না করে সালা মুক্তি সহিয়ে যায় বৈকৃত্ত ভূবন ॥ প্রভাতে মধ্যাকে আর সন্ধার সময়ে। গঞাতীর মাজে যেই একান্ত হৃদয়ে॥ কোটিজন্ম-ক্লুত পাপ বিনাশে তাহার। শাত্ত্বের বচন ইহা বেদের বিচার॥ গঙ্গাতীর দরশন করি থেই জন। প্রফুল গন্তর নাহি হয় কলাচন॥ ম**হাক্রেবলি সেই বিখ্যাত** ভ্রনে। দেবগণ নিগুছীত করে দেই জনে। গঙ্গাতীরে গিয়া যদি করয়ে োদন। অকালে নিরয়ে দেহ হয় নিপতন॥ সহস্র ত্রনার পাত যত দিনে হয়। তাবত নরক মাঝে সেইজন রয়। গঙ্গার তরঙ্গরাশি দেখি যেইজন। সানন্দে উৎফুল্ল হয় ওছে ঋষিগণ ॥ পিতৃগণ মহাতুষ্ট তাহার উপরে। দেবগণ স্থান জানিবে অনুরে॥ গঙ্গাবাদ পরিত্যাগ করি যেই জন । অভ স্থানে গিয়া করে বদতি ভাপন।। গদাদেবী পরিত্যাগ করেন তাহারে। নরাধ্য সেই জন বিদিত সংসারে॥ মেচেছের দেশেতে জন্মলতে সেই জন। অপখাতে পুন তার হইবে মরণ। তার পর পৃক্ষী জন্ম করিয়া ধারণ। গগন মণ্ডলে সদা করে বিচরণ।। কোটি জন্ম থাকি সেই এছেন প্রকারে। শ্কর রূপেতে জন্মে কানন ভিতরে। পুনঃ পুনঃ এইরপ লভয়ে জনম। তবেত মুক্তি পায় সেই ছরজন ॥ অন্ত স্থান তেয়াগিয়া ফেই সাধুমতি। জাস্থী-তীরেতে গিয়া করয়ে

বসতি॥ হীবন্মুক্ত সেই জন শান্ত্রের বচন। বলিনু শান্ত্রের কথা ওচে ঋষিগণ ॥গঞ্জার মাহাত্ম্য বল কে বলিতে পানে। অন্ত অন্ত মুখে বর্ণিবারে নারে॥ বিফু দেব নাহি পারে জানিতে কখন। শিবের নাহিক শক্তি ওচে ঋষিগণ॥ দেবগণ গঙ্গাতত্ব কভূ নাহি জানে। গ্রামরা অধ্য জন জানিব কেমনে॥ সার হতে সার গঙ্গা ওথে ব্যিগ্র। তেনের প্রমাণ ইছা শাত্যে বচন।। ষোজনাভান্তর স্থান গঙ্গাতীর ২তে। গছাতে করিবে কাম্য ঘথাবিধি মতে॥ নিত্য নৈমিত্তিক কাম্য করিবে সাপন্। 'নাইবে এফয় কল তাছে সাধু जन।। ना कतिरव कोलोकाल शकांश विधात। मार्यत वधन देश कानिरवन **শার। আবাহন না** করিবে গঞ্চায় কখন। ছানিবে বিশান এই ওছে প্রিগ্ন। শাধুজন গঙ্গাভীরে করিয়া গমন। বিক্ত ক্লি গ্লাভি ক্রিবে পূক্ন॥ ছুব। লক্ষ্মী ষঠী আর মনসা দেবারে। সরস্বতী সানি করি ওজিবে সাদিরে॥ দিক। পালগণের পূজা করিবে সাধন। পু'জবেক মহগণে ৬বে খবিগণ।। ভূতেগর মহেশ্বরের পূজিবে সাদরে। ভূত প্রেত পিশাসাদি প্রত্থ অপ্সরে॥ পিতৃগণে যথাবিধি করিবে পুজন। শাস্ত্রের বিগান এই ৮চে গ্রিগ্ন। শুক্ বধ পরিধান করিয়া যতনে। যথাবিধি উপবিফ হইছা সাম রে॥ শখিল দেবতা গণে করিবে পূজন। পূর্বমুখ হযে সাগু বদিবে ১খন॥ ১৭८, বি. তে হরে উত্তর বদনে। আছেয়ে বিধান এই শাস্ত্রে ক্রে। স্ক্রিক্ত সাহি মত উপচার। পূজিবে ভাহাতে সাধু শাবের বিচার॥ ধর্ন হিন্দা রৌশাস্ম্য অপিতিৰ আসন। কুশকাশ্যয় কিন্তা করিবে অর্প্য। প্রশ্নবাক্তো কিন্তা্মিত্র ষাগত পরেতে। পাদার্থক জল পাতা দিবে আদারেতে॥যেরপে দিবেন সং। শুন সর্বজন। ত্রিকোণ মণ্ডল বামে করিয়া ক্ষেন॥ গালার উপার পার আগন করিরে। বিভাগ পূরিবে তলে একান্ত ২৮যে॥ শখ্পার হবে বিদ্যু ওহে ্ হিপ্প।। তৃঙুল দূর্ব্বাদি তাহে করিবে এপন।। ধেকুন্দ্র যোনিমুদ্র। দশন করায়ে। করিবেক আবাহন একাও হদযে। গমাজনো কিম নাহি হবে আবাহন। অন্তজ্জে সাবাহন করিবে সাধন।। অগ্নি ফুর্গ্য ইন্দু নাম উচ্চারণ ক্রি। কুসুম অর্পিবে পরে তাহার উপরি॥ অঐবার মূন্মন্ত্র করিবে পঠন। এইরূপে দিবে অর্য্য ওহে ঋষিগণ।। আচমনীয় জল দিবে যেমত বিগান। গন্ধ আদি তার পর করিবে প্রদান। চৃদ্দন অগুরু আদি করিবে অর্পণ। ধুংদেবে অর্পিতে হবে স্থগুত্র বসন॥ কিম্বা গৌর বস্ত্র তারে করিবে প্রদান। রক্তবন্ত্র দেবীগণে দিবে মতিমান । রক্তবন্ত্র দিবে কিন্তু খেব দিবাকরে। भनमादत नौल वञ्च पिरवक मापरत् ॥ नीलवञ्ज, क्रक्षरपर्व कतिरव अर्थन । नारञ्ज

বিধান এই ওছে ঋষসণ।। ষেই দেব যেই বর্ণ করেন ধারণ। তাঁরে দিবে দেইরূপ বর্ণের আসন ॥ তাহাতে পর্ম তুট দেবগণ হন। দেরূপ বর্ণের দিবে যত বিভূষণ॥ অলঙ্কার দিবে স্বর্ণ কিন্তা রৌপ্যময়। শাস্ত্রের বিধান ইছা ওঁছে গাসিচয়। কাং অপাত্রে মধুপর্ক করিবে অর্পণ। মধু দ্বি মত তাহে করিবে মিশ্রণ ॥ এইরূপ মধুপর্ক করিলে প্রদান। দেবগণ তাতে তুফি অতিশর পাদ। মোড়শাক্ষ ধূপ নাধ্করিবে অর্থন। দশাক্ষ অথবা দিবে সেই সাধুজন॥ মৃতদীপ পূজা হেতৃ মর্পিতে ছইবে। মুগবা অভাবে তৈলপ্রদীপ মর্পিবে ॥ পুষ্পমাল্য পূজাকালে করিবে অর্পণ। সুগন কুসুম হবে ওছে ঋষিগণ। ফল-দুঃ-সম্ভিত করিল। নালরে। নৈলেল স্পিতির সাপ একাত স্পত্রে॥ নৈবেল ময়ত কিন্তু করিবে গুজন। শাত্রের প্রমাণ ইছা তছে ঋষিগণ॥ পুনরাচ্মনী দিবে েমত বিপানে। তালুল দিবেক পারে শুন সর্ক্জনে॥ গুরাক লব**ল** চুণ করিয়া মিশ্র। ভালুল দেব ভাগনে করিবে স্পর্যি। এইরূপ উপ**হারে অভীব**, সাদরে। সাগুগণ পূজিবেক জাহ্নবার তীরে॥ পরভাষা গঙ্গাতীরে না কবে ক্ষন। নীচকথা দেই কালে করিবে বর্জন। অশুচি প্রশ্ন কভু ভ্রমে না করিবে। ক্রেণ্ড ফি'ফা জলি হতে সর্ক্থা ত্যাজিবে॥ <mark>ধাবত অর্চনা নাহি হয়</mark> স্থাপন । তার সন্তেখাগিবে আসন কখন ॥ পৈশুলা কখন নাহি রাখিবে ১৬৫ে। ১,গুলা ৯ন্য ১৫৬ ল্ডিবে সাদরে॥ অহস্কার মণতাদি করিবে বটেন। শোক স্থাল্যে লালি করিবে কখন। অর্থচিন্তা না করিবে আপন ংকারে। কৃষ্ণিকারে বিপি মবার গোচরে॥ পূজাকালে **গুরু যদি করে** শ্রেষ্ট্রামন । প্রাণানার বেটে কালে ই রিটের সজন। গুরুপুল কিছা পৌল আসিলে তথ্য । করিকে পুজালার করিক স্বায়॥ করিকে **তাহাদের অর্চনা** নাগন। ইউক্স হবে পূৰ্ণ শেতের বচন ॥ ইউদেবে এই**রূপে পূজিতে হইবে।** শুন শুন শিবলিংগ্রেক্সেপ প্রি.ল। কিল্যুবেদি বিরভিবে ওংহ ঋষিগণ। করিরে নিমেতে তাব আচন হাপন। দণ্ডাকার হবে লি**ন্দ শান্তের বিধান।** পল্পছের ম্বান নাহি হবে পরিষাণ'॥ াহার অধিক যত করিবারে পারে। .তত্ই অধিক ক**শ** জানিবে খতুৱে॥ নানাবিধ উপচাৱে করিবে পূ**জন।** শিবাথে মৃত্তিকা পারে করিতে খনন॥ গঙ্গাগর্ভ বিদারণ করি শাধুজন। মৃত্তিকা লইতে পারে শিবের কারণ॥ বিল্পপত্তে শিবপূজা করিবে সাদরে। তাহে মহাতুষ্ট নিব আপন অন্তরে ॥গঙ্গাজলে মহাতুষ্ট দেব পঞ্চানন । গঙ্গা-নামে মহাগ্রীও মহাদেব হন।। যেই জন গঙ্গাতীরে শিবপূজা করে। ভাহার পুণ্যের কথা নারি বর্ণিবারে ॥বিল্পতা পুস্প আদি যদি নাহি পারু। পৃতিবেক

গঞ্চাজলে কহিনু স্বায়।। একমাত্র গঞ্চাজলে ভুট মহেশ্র। শাজের বচন ইহা তাপস-নিকর॥ গঙ্গার সমান নাহি এ তিন ভুবনে। গঙ্গা নামে তরে লোক কহি সবাস্থানে।। নিরস্তর গঙ্গা নাম করিলে মরণ। অখিল পাতক পাতক তার হয় বিনাশন॥ গঙ্গারে ভকতিভাবে পূজে যেই জন। অন্তিমে সে জন যায় বৈকুঠভুবন।। পাপিষ্ঠ খদ্যপি করে গঙ্গা দর্শন। কোটি-কোটি-জন্ম পাপ হয় বিনাশন ॥যেই জন স্নান করে ভাগীরথী-নারে। নির্বাণ মুক্তি পায় জানিবে অন্তরে॥ যত পুণ্য হয তার বলিব কেমনে। নরধামে গঙ্গা-দেবী মুক্তির কারণে ॥ কিছুমাত্র গঙ্গাজন যেই কবে পান। অন্তিমে সে জন পায় অবশ্য নির্কাণ।। গরু হত্যা নরহত্যা পাপ আছে যত। সেই সব পাপে মত্ত জীব অবিরত॥ গঙ্গাজলে যদি স্নান করে ভক্তি ভরে। নিপ্পাপী হইযা যায় অমর-নগরে॥ ধরাধামে যত নদী হয দরশন। স্বার প্রধানা গঙ্গা ওহে ঋষিগণ॥ জাহ্নবী-অনিল যদি লাগে কার গায়। অবহেলে সেই জন মোক্ষপদ পায়॥ জাহ্বীতীরেতে যদি কেহ পাক করে। সুধার সমান তাহা জানিবে অন্তরে॥ সেই দ্রব্য সুরগণ বাঞ্চযে ভিন্তি । তবালারে মহাপাণী জাহ্নবী ধরাতে॥ ভগীরথে দয়া করি ধরাস মাদিল। মেই হেতু লাগারখী আখ্যান হইল।। বিষ্ণুর চরণে হয় জন্ম উইলে। ভগীরংকুল দেবী করেন উদ্ধার ॥ আগমন কালে যথা জহ্নু মহাঋলি। গণ্ড দে গঞ্জারে তিনি ফেনেন গরাসি॥ পুনরায় জামু হতে বাহির করিল। মে হেডু গুপার নাম জাহ্নী হইল। জননী জাহ্নবী দেবী মহিমা অপার। ভীবের জননা তিনি নার হ সার॥ ত্রিপথ-বাহিনী দেবী আপনি ইইল। হর্গ মন্ত্র্য পাচালেতে প্রেশ कतिल ॥ यर्ग मन्मिकिनो नाम ग्रकारमनो धरत । श्री जारलटक रक्तांत्रद को जारन সর্ব নরে ॥মর্ত্ত্যে ভাগীরথী নাম ওহে ঋদিগণ। ভ'য়ের জননা দেবী-নিস্তার কারণ।। ভগীরথে রুপা করি আদেন বক্দা। এদ্দকমণ্ডলে রহে জগত জননী॥ কৈলাসে শিবের শিরে আদিয়া পড়িল। ৩থা ২০১ হিমালয ভেদিয়া পড়িল।। ভীষণ বেগেতে দেবী হঘে গোতস্বতা ৷ কলকল রবে 'করে সাগরেতে গতি ॥ সাগরে প্রবেশি করে পাতালে গ্রম। মুগর রাজার বংশ উদ্ধার-কারণ।। দেবগণ গঙ্গাজল করেন ভক্ষণ। মুক্তিগদ হয় যাহে অখিল-তারণ॥ মোক্ষের কারণ গঞ্চা বৈকুণ্ঠ আগারে। সোপান নদৃশ তারে জানিবে व्यस्टरत ॥ रयहे कम मृज्यकोटन शकाकन थार्य। व्यवस्टरन रमहें कम स्थाकनपर পায়॥ বিমানে আরোহি যায় মহাপাপী হলে। জীবের উদ্ধান্ন হয় স্পর্শন করিলে ॥ বৈকুঠে আনন্দে সেই কর্মে গ্রমন । বিষ্ণুর কিছর হয়ে থাকে সেই

জন॥ জরা মৃত্যু শোক ছঃখ কিছু নাহি রয়। মোক্ষপদ পায় সেই নাহিক দংশয়॥ আরো শুন ঋষিগণ আমার বচন। দূরদেশে যদি কেছ ভাজারে জীবন ॥ মৃত ছেহ লয়ে যদি জাহ্নবীর তীরে। ভন্মভূত করে গিয়া পবিত্র অন্তরে ॥মহাপাপী যদি হয় সেই মৃতজন। তথাপি মুকতি পায় শাস্ত্রের বচনা বৈফুপ্ত নগবে যায় হয়ে পুলকিত। অনুচর হয়ে তথা রহে অবস্থিত॥ জীবের জীবন অত্তে যদি মৃত কায়। বায়দে শুগালে কিলা সেই মাংস খায়।। যদি গঙ্গাজন ভক্ষে তারা সব আসি। অথবা শরীর তার জলে যায় ভাসি॥ অবশ্য মুক্তি পায় সেই মৃত জন। বিমানে চড়িয়া যায় অমরভবন॥ যদি কেহ দেহ ত্যাগ করে অক্সভানে। তার অস্থি যদি দেয় জাহ্নবী-জীবনে॥ তাহার মুকতি হয় নাহিক সংশয়। বৈকুঠে দে জন যায় ওছে ঋষিচয়॥ আরো শুন এক কথা ওহে ঋবিগণ। ত্রাহ্মণ যদ্যপি কেহ ত্যুজয়ে জীবন॥ মৃত দেহ শূদ্রে আনি যদি গঙ্গানীরে। ফেলি দেয় ঋষিগণ সলিল উপরে॥ নরকেতে নাহি যায় সেই মৃতজন। বিমানে চড়িয়া যার অমর ভুবন॥ ভববস্ত্র ঘুচে কাব নাহিক সংশয়। ভবডোরে সেই কভু বন্দীভূত নয়॥ ম্বান হেতু যেই জন জাহ্নবার নীরে। ভকতি করিয়া চলি যায় গঙ্গাতীরে॥ যত পদ চলি যায় ওহে ঋবিগণ। তত কোটি বর্ষ রহে বৈকুণ্ঠ-ভুবন॥ গঙ্গার মহিমা বল কি বলিব আর়। মস্তকে ধরেন শিব দয়ার আধার॥ ংহিখা জানেন যাত্র সেই শূলপাণি। সে হেতু ধরেন শিরে শুন যত মুনি॥ া বলি অধিক আর তাপদনিকর। গঙ্গা গঙ্গা বলি ডাকে যেই কোন নর॥ মঙ্গ যোজন দূরে যদি সেই রয়। মুক্তি পাইবে তবু নাহিক সংশয়॥ থেই জন গঞা নাম মতের অনুক্ষণ। হরিপদ পায় সেই শাস্ত্রের বচন॥ পতএব ঋষিগণ শুনহ সকলে। একান্ত অন্তরে ভজ জাহ্নী-দেবীরে॥ গঙ্গার স্থান নাহি এ তিন ভূবন। তাহারে অন্তরে ভঙ্গ ওহে ঋষিগণ॥ নদা ডাক সদা ভাব একান্ত অন্তরে। তরিতে বাসনা যদি ভব পারাবারে॥ ज्वार्पव शास्त्र (यरज यनि थारक मन। मव झां क्रिकारूवीरत कत्रह सत्र।॥ এমন তরণী আর শাহি কোন স্থানে। ছেদন করয়ে যাহা ভবের বন্ধনে। ৬ববন্ধ কাটিবারে যদি হয় মন। গঙ্গা গঙ্গা বলি ভাক ওহে ঋষিগণ॥ ৰত কিছু তীৰ্থ আছে বিশ্বের মাঝারে। গঙ্গা সম নহে কেহ জানিবে অন্তরে॥ সর্বতীর্থে গঙ্গা-দেবী করে অধিষ্ঠান। সর্বতীর্থ হতে গঙ্গা জানিবে প্রধান॥ গঙ্গাশূল তীর্থ নাছি বিশ্বের যাঝারে। কছিত্ব নিগুঢ় তত্ত্ব তোমা সবাকারে॥ এখন বিচার করি ওহে ঋষিগ্রণ। যেমত বাসনা হয় করহ , তেঘন॥

জিজ্ঞানা করিয়াছিলে এই নে কারণে। বলিতু গৃন্ধার কথা সবা বিদ্যানে॥
মৃক্তরে কারণ গঙ্গা ধর্মের কারণ। পুণ্যের কাবণ গঙ্গা তীর্থের কারণ॥
ভিক্তিভরে তাঁর পূজা করিলে সাদরে। অবহেলে পাপ হতে পাপীজন তরে॥
দগর সন্তানগণ অতি প্রচাচার। গঙ্গার রুপায় তারা লভিল উদ্ধার॥ গঙ্গা
হতে বেল্লাপ হইল, মোচন। ইছার অধিক কিবা ওছে ঋষিগণ॥ কামরূপ
নামে তীথ বিদিত সংসারে। বিরাজে কামাখ্যা দেবী জানে সর্বনরে॥
গঙ্গা-দেবী গুপুভাবে আছে দেই জান। মেই ছোনে আন আদি করেন সাধন॥
ভাছে পাপে মৃক্ত ছয় সেই ঋষিবর। গঙ্গার মহিমা মান তাপসনিকর॥
আত্র ধরি ভ্রেরাম অতি রোল দরে। বার্থির অজ্বনেরে বিনিপাত করে॥
পিতার আদেশে করে জননা নিধন। তার পর কামকণে করেন গমন॥
ভথায় জাহ্লবী দেবী করে অধিধান। মেই ছানে আন করে ভার্গর ধানান্।
দেই তীর্থে আছে গঙ্গা মতীব গোপনে। এই ছেতু মহাতীর্থ জান সর্বজনে॥
গঙ্গার সমান নাহি এ তিন ভুবনে। শত্রণ ভাব ভাবে এনে ডিক মনে॥
গঙ্গার সমান নাহি এ তিন ভুবনে।

#### স্তাদশ ভাষার।

ভ্রতামের ব্রাওশনপ্দক্ষে ক্মন্ত্রি শার্থ কার্ত্তবীর্য্যের আতিথ্য গ্রহণ।
নিংকুমার উবাচ।
কেন বা মিবতে চৈব রাজ। বাত নহস্ত্র।
কথ্য বা ভার্গনে বীরঃ শাস্থ্যন্ বেল্লণঃ কুলো।
তথ্যক্ষ বং দং প্রস্থামি শুরুরং সাদরং বিজ্ঞাণ।

এতেক বচন শুনি কছে শ্লিগণ। শুনিলু তোমার মুখে অপুরুর কথন।।
যত শুনি তত আরে। স্পৃহা বলবতি,। এখন জিজ্ঞানি বাহা কছ মহামতি॥
ভৃগুরাম মহাপাপ করিয়া সাধন। তাপে তাপে সেই দেব করেন ভ্রমণ॥ করিষ
করিল বধ ব্রাহ্মণ হইযা। যুদ্ধ করে বহুমতে কুঠার লইয়া॥ ব্রাহ্মণ ছইয়া
ভিনি করিলেন রণ। ইহার কারণ কিবা,কছ মহাত্মন্॥ এই কথা শুনিবারে
বাসনা সবার। প্রকাশ করিয়া কছ ওছে শুণাধার॥ এতেক বচন শুনি বিধির
তনয়। কছিলেন শুন শুন গুন ওছে ঋষিচয়॥ অপুর্বে হুরম্য কথা করছ প্রবণ।
কার্ত্বীর্য্য, যেইরূপে হইল নিধন॥ কি কারণে অস্তা ধরে ভার্গবি ধীমান্। বর্ণন

করিব থাহা হবা বিজ্ঞমান॥ কার্ত্বীর্য্য নামে রাজা ছিল প্রক্রাপেল। সহজ্রেক বাত তার বািদত সংসারে ॥ মহাবল নরপতি বিদিত ভূবন ! একদা কাননে. ধান মুগয়া কারণ॥ চতুরণী দেনা যায় সহিতে তাঁহার। ক্রমে ক্রমে পশে গিয়া কানন মাঝার॥ নানাবিধ মুগ বধ ক রয়। রাজন। কাননে কাননে িনি করেন অমণ। প্রক্ষাই ঝড় রুফি হব উপনীত। ঘন ঘন বজ্রাঘাত হতেছে পতিত।। অন্ধকার চারিদিক ঘনঘটামা। নগনে বিভুই নাহি নিরী-ষিত হয।। কুমে নিশা উপনীত সতি বিভাষণ। রুষোপরি নকলেতে করে শারোহণ॥ মনাহারে নিশাপাত করে রখোপরে। প্রতাতে নামিল সবৈ অবনী উপরে॥ অনাহারে সকলের আতর জীবন। পিপাসায সকাতর যত সৈন্যাণ।। জমদ্বি ঋষিবর বসি আএমেতে। সৈন্য সহ নরপতি চলে সেই গথে॥ হেরে খনি নরণতি ৩থায় আসিল। ক্ষরিবাদে মহানদে অভিথি হুইল।। হেবে খণি নরপতি সন্নিধানে যায়। আদুক্তে বসিবারে আসন গোগায়॥ শ্বিবরে প্রক্তে পরে সে রাজন। ভব্তি ভরে চরণেতে করেন বন্দন।। স্থানির ব্রিলা ক্ষি জিজ্ঞানে কুশল। প্রফুল বদনে রাজা কৃষ্টিল মকল। রভাও গুনিমা খা। জ'খিত শতুরে। মিউভামে কহিলেন তখন রাজ্যবে। শুন শুন নাপতি আমার বচন। মতা এই স্থানে থাক আমার গাপ্রম । পামার গাল্যে সবে করহ আহার। কল্য পুনঃ নৈতা সহ যাইবে থাগার॥ খনির এতে চ বাক্য করিষ। এবণ। আনন্দে উৎকুল হন নুপতি ৩খন ॥ বহুলোক নির্ফিব। সেই খানিবর । স্কর্ণ ভর সন্মিধানে গেলেন স্ত্র ॥ বিনয় ৭৮নে ক্রে স্কুর্লি সদনে। ক্লপা দৃষ্টি কর সাত এ স্বধীন জনে॥সবার তননী তুমি আমার জননা। এঘোর বিশবদে মাগো ভোমারেই জানি॥ পড়েছি বিষম দায়ে কি হবে উপায়। চরণে পরি গো মাতঃ রশ্বহ আমায়॥ পতিপি হ্যেছে রাজা লবে নৈলগণ। ম্বারে বলাতে মাতঃ হইবে ভোজন। কামধেকু ধারে ধারে কছে খাসিবরে। কেন খানি কর ভয় আপন অন্তরে॥ আমি'বিজ্ঞমানে তব কিবা আছে ভ্ৰয়।যা মাগিবে দিব তাহ। নাহিক নংশ্য রাজযোগ্য দ্রব্যানর অবশ্য যোগাব। যার যাহা অভিলাষ ভাহাই অর্পিব॥ এতেক বচন শুনি ঋষির নন্দন। কহিলেন শুন মাতঃ আমার বচন॥ রাজ-ভোগ্য দ্রব্য সব কর আযোজন। সুন্দর স্থ্রখাত্য যত যত মনোরম॥ এত বলি খ।বিবর করিল প্রস্থান। অবিলম্বে উপস্থিত রাজ-সন্নিধান॥ এদিকে সুরভি দ্ব করে আয়েজজন। নানা ফল নানা খাত্ত অতি মনোরম।। স্বর্ণখাট স্বর্ণাসন বর্ণিবারে নারি। বসন ভূষণ কত্ যাই বলি হারি॥ তার পর ঋষিবর করিয়া

ছেতন। ভৌজন করান স্পে সহ সৈত্যগণ। তাহা দেখি স্পতির লাগিন কিয়া । ভাবে মনে কিবা রূপে এই সব হয়। তপশী হইয়া মণি কোথায় পাইল। এ সব সূলর দ্রো কিরুপে আসিল। কিরুপে তাপুস হয়ে দিনে স্বর্ণাসন। রত্ন মণি আদি করি যত বিভূষণ।।এত ভাবি নরপতি হইয়া বিশ্বস্থা অমাত্য-প্রবরে ডাকি ধারে ধারে কয়।। সন্দেহ হ্যেছে বড় ওছে মন্ত্রীবর। আমার বচন শুন কহি অতঃপর।। আশ্রম ভিতরে গিয়া কর অন্বেষণ। কিরুপে তাপস সব কৈল আযোজন। মুহূর্ত্ত মাঝেতে সব কিরুপে পাইল। বহুমূল্য দ্ব্যক্ষাত কিরুপে আসিল।। বনবাসী হয়ে করে এত আয়োজন। ইহার কারণ কিবা কর অন্বেষণ।। যেই সব দ্র্ব্য ঋষি আয়োজন করে। জগতে ছ্লা ভ ইহা কহিনু তোমারে।।ইহার কারণ শীঘ্র জান মন্ত্রীবর। দেখিখা বিশ্বিত বড় হর্মেছে অন্তর।।

রাজার এতেক বাক্য করিয়া শ্ববণ। মন্ত্রীবর ক্রতগতি করিল গমন। আশ্রম ভিতরে মন্ত্রী যায় ধীরে ধীরে। চারিদিকে ঘন ঘন নেত্রপাত করে ॥ কত দ্রব্য দেখে তথা সেই মন্ত্রীবর। দেখিয়া বিশ্বিত হয তাহার সত্তর। স্থরভিরে হেরি তথা হইয়া বিষিত। ক্রতগতি নুপণাশে আদিল তুরিত !! বিনয় বচনে কহে অতি ধীরে ধীরে। শুন শুন নূপবর নিবেদি তোমারে॥ আত্রম ভিতরে যাহ। করি দরশন। নিবেদন করিতেছি করহ প্রবণ॥ দেখি লাম যজ্জবেদী কাষ্ঠ আদি আর । সগ্লিকুণ্ডে জ্বলে অগ্নি ওবে গুণাধার॥ ক গ পুষ্প কত ফল আছে বিরাক্তি। বিল্পেল চারি পাশে আছে অপ্রমিত॥ কুশাসন আছে কত কে করে গণন। কম্বল আসন কত শুনহ রাজন॥ মুগছাল আছে কত অতি মনোহর। কত শিষ্য উপশিষ্য ওছে নূপ্রর।। চারিদিকে বেৰপাঠ ঘন ঘন হয়। স্বাপাত্র রাশি রশি ওহে মহোদয়॥ চারিদিকে শোভিতেছে অমূল্য বসন। রক্ষহাল পরি আছে যত শিষ্যাগণ ॥ সবার শিরেতে শোভে দীর্ঘ জটাভার। হেরিলাম এই সব ওহে গুণাধার ॥আরো দেখিলাম যাহা শুনহ প্লাজন্। কুটােরে বাহিরেতে করি নিরীক্ষণ॥ স্থরভি নামেতে গাভী কিবা শোভ। পায়। শুভ্রবর্ণ মনোহর সুললিত কায়।। সুর্য্য সম আভা তার ওহে নৃপবর। পরপর সম তাঁর নয়ন যুগল। মনোহর বর্ণ কিবা অতি স্থচিকন। তাহার গুণের কথা কি কহি রাজন্॥ কামধেকু তার নাম গুণের **जान** । नश्मी रपदी मग रश्नू ७ रह गरहां प्रं॥ की वत्र छी, रमहे रश्नू कित নিরীকণ। কামনা করেন তিনি সদত পুরণ।। ঋষিবর ঘাহা চাহে ভাঁহার সংনে। তাহাই যোগান তিনি কহি তব হানে॥ এতেক বচন নাজা করিয়া

।।। মনে মনে বর্তকণ করেন চিন্তন। সূর্ব্জি হইল ভার হালয়-মাঝারে। ্হিলেন ধীরে ধীরে অমাত্য-প্রবরে ॥ ঋষির নিকটে ধেনু চাহিব এখন। ্বশা দিবেন মোরে বিপ্রের নন্দন ॥ যেরপে পারিব সামি দে ধেনু লইব 🟲 বর নাছি লগে আমি গৃহে না কিরিব॥ তাহার স্মান ধেন্ত নাছিক ভুবনে। ,রূপে পারিব,ল্যে ্যাইব ভবনে॥ এইরপা মনে রাজ। করেন চিত্তন।• সং ্রি ঘটিল ভার কিদের কারণ॥ কে বুঝিবে কেন হেন মনন ভাঁছার। া শ্বশে হল কিবা কলা অতি ভার॥ কালের কশগ হর যবে জীবগণ। হিতা-ঠত জ্ঞান নাহি থাকেয়ে তখন॥ ধর্মশোধ গাপ পুণ্য জ্ঞান নাহি রয়। একে-ারে ধব তার হয়ে যায় লয়।। কালের বশগ হলে হয় কৃদ্ধি নাশ। কালের শ্ব হলে ২টে স্ক্রাশ।। পাণ কার্য্যে পাপ বাড়ে এধর্ম উদয়। পুণ্যকর্ষ্যে अ. इ.स. सि. विश्वपारिय त्या। भेषाकर्ष (यह जन रुट्या काश्म । **श्वर्तारक** ংবাস্থ পাম তে ই তৰা। বিজনে আবস। লভ্যে জনম কৰ্মফলে নানাখোনি হরতে ভ্রম্থ।। রাজনতে তেনে তেই নিজ ক্র্যতে। ক্রিফ্রে যায় জীব নরক ্বেরে ॥ পাপে তে মুগুল হয় যবে জীবগুণ বৃদ্ধি বিদ্যা সব তার হয় ্রিলখন। সম্প্র বিল্পু হ। জানিবে তাহার। কর্মিলে কৃত্তম অবনীমাঝার॥ ংব্যান পাত। ভোগ করে তীবগন। কর্মকলে ব্যাধিগ্রস্ত হয জনগণ।। ্বাবর্ণে ২ ১৬ বন হল নরপ্রি। কালবংশ হাদে তার ঘটিল তুর্ঘতি। অনন্তর িব্রেক্রি সংশোল। বিউভাবে নরপতি কছেন তখন॥

শন শুন শ্বিবর ধানব বচন। তোমার চরণে করি সাদরে বন্দন॥
কল্প চি সম ত্মি ওহে মভিমান। জগতে নাহিক কেছ তোমার সমান॥
তব হাদে বাহা হয় যখন উদয়। তখনি করুল সিদ্ধা ওহে মহোদয়॥ স্থারভি
নামেরে গাভী গাছ্যে তোমার। ভিন্দা চাহি তব পাশে ওহে শুণাধার॥
তরণা করছ ঋবে আমার উপরে। শীঘ্র করি দেহ ভিন্দা স্থারভি থেকুরে॥
যোগার প্রধান তুমি ওহে ক্লিবর। যোগেতে মগন সদা তোমার অন্তর॥
যোগারলে কত ধেকু ছইবে তোমার। প্রত্থে ধরি মুনে চরণে তোমার॥
ভিক্ষুক তোমার পাশে ছইলাম আমি। ভিক্ষুকে বিম্থ নাহি কর মহামুনি॥
সরভিরে মোরে দেহ ওছে ঋলিবর। ভিন্দুকেরে দান দিতে না ছও কাতর॥
বেতেক বচন শুনি ঋবির নন্দন। রোববশে ঘন ঘন কাপেন তখন॥
লোহিত-বরণ হৈল নয়ন তাহার। কহিলেন শুন নূপ হর্ম্বুদ্ধি তোমার॥
কেন হেন কথাক্ষহ ওছে নূপবর। বাক্যবাণে জর্জ্জরিত হতেছে অন্তর॥
নরাধ্য ভূমিবাজা এ ভব সংসারে। মহাশ্য গুরজন হেরিকু তোমারে॥

দান উপযুক্ত পাত্র নহ ত কখন। দরিদ্র নহেক তুমি রোজার নক্ষন। ভোষারে করিব দান কিসের কারণ। উপযুক্ত পাত্রে দান শাস্থের বচন॥ পত্রজাতি হও তুমি ওহে নরপতি। তোমারে করিব দান এই কোন রীতি॥ অতি ছুরমতি তুমি শুনহ রাজন্। হেন বাক্য পুন নাছি কর উচ্চারণ॥ কামধের জন্মিয়াছে অমর-নগরে। তুর্গার সদৃশ ধেরু জানিবে অন্তরে॥ ভূওমুনি বেক্ষাপাশে লভেন ইহাঁয়। আগারে দিয়াছেন শেষে ওন নররায।। যতনে পালন আনি করেচি ইহারে। তুনি এবে যাচিতেছ বল কিবা করে॥ অতিথি হয়েছ ভূমি আমার ভবন। নৈলে ভিশাভুত ভূমি হতে এতঞ্জ।। মম রোকানলে ভুমি ভবীভূত হলে। এতখণ যেতে নৃপ শদন-আলহে।। শুন ওন নূপবর ছাড় এই আশ। নিজে মহাকালে তোমা করিবে গ্রাম। যদি রোম হয় নুপ আমার অন্তরে। নিশ্চর হাইবে তুমি শমন আগারে॥ আবার বচন এবে শুন্থ রাজন্। অবিলয়ে নিজগুফে করহ গ্রন্॥ এ হেন বচন আর না কহ বদনে। অবিলয়ে যাহ ফিরি অংগন ভবনে।। বংগবিদি রাজকার্য্য করহ নাধন। প্রজাগণে বিধানেতে করহ প্রালন।। গাভার কারণে অ। দি কানন মাঝারে। কত কট বভিষাছ খাশন অওরে॥ গুড়ে গিয়া দারা পুত্র কর দরশন। আমার বচন সদে কর্ফ ধারণ।।

এতেক বচন শুনি নৃপতিপ্রবর। মহারোগে গ্রানি উঠে শ্লানি উপর। রোধনেত্রে অনুচরে করি সন্বোধনা কহিলেন ওন ভন আম্রের বচন। সবলে প্রবেশ গিয়া শ্লাসির জাগারে। স্বর্গভিরে আন শীদ্র আমার বচন। প্রতিবাদী হয় যদি তাহে কোন জন। বাদিবে তাহারে তুমি আমার বচন। কাহারো বচন নাহি ধরিও অন্তরে। শীদ্রগতি প্রবেশহ খানির আগোবে। কামধের ত্রা করি কর আনরন। তেন্ত পরে শাস্ত্র করহ গমন। রাজার আদেশ পেরে যত সৈল্লগণ। ক্রতগতি আশ্রনেতে প্রবেশে তখন। কল কল রবে সৈল্ল প্রবেশে ভিতরে। তাহা দেখি মুনিবর ব্যাকৃল অন্তরে। স্বরভি নিকটে তুরা করিরা গমন। কাদ্দিতে কাদিতে কহে বিনয় বচন। স্বরভি নিকটে তুরা করিরা গমন। কাদ্দিতে কাদিতে কহে বিনয় বচন। স্বরভি খানির বাক্য করিরা গমন। কাদ্দিতে কাদিতে কাদিছে ভিতরে। সবলে তোমারে লয়ে করিবে গমন। এত বলি খ্রবির করেন রোদন। শুরভি শ্বনির বাক্য করিয়া প্রবণ। ক্রিসকাতরে খ্রবিরের ক্রেন তখন। কেন পিতঃ স্ব কর আপন অন্তরে। কার হেন সাধ্য আছে ছরিবে আমারে। মৃতনে আমারে তুমি করেছ পালন। ছাড়িয়া তোমারে আমিনা যাব কখন। স্বেলে লইবে মোরে হেন সাধ্য কার ! তুমি যারে দিবে আমি হইব তাহার।

■ তোমার আদেশ বিনা কেবা লতে পারে। কেন বা কান্দিছ পিত বলহ আমারে॥ চিরদিন গুঃখ ভোগ কভু নাহি হয়। সকলি জানিও পিত ালের আশ্রম কভু দুখ উপনীত দুখ বা কখন। হুদি হতে শোক ছু খ<sup>®</sup> ক্র বিস্প্রন। নরপতি লবে মোরে কি শক্তি তাহার। জানে না সে জুরুমতি শক্তি আমার॥ ধর্ণী সহিত যদি একদিকে হয়। তথাপি " কাছার সাধ্য মোরে হরি লয়॥ তুনি নিজে যারে মোরে করিবে তার্পণ। ভাহার গহিতে আমি করিব গমন॥ এত বলি কামধের নিশ্বাস ছাতিল। এসংখ্য অসংখ্য সৈত্য অথনি জন্মিল। অসু শত্র কত হৈল কে গণিতে প্রারে। কত দৈশ্য জন্ম নিল বদন-বিবরে।। নয়ন হইতে জন্মে কত যোদ্ধা জন। পুচ্ছ হতে কত হয় কে করে গণন।। তাহা দেখি খ্যিবর সানকে মগন। সুর্ভি ম্নিরে পরে কহিল তখন।। শুন শুন খাঘিরর বচন আমার। এই সেন। সহ জুনি হও আন্তর্মার ।। নিজে কিন্তু রণস্থলে ন। কর স্থান । এই সৈতা লয়ে শাস্ত্র করক সমন। ধেনুর আদেশ ঋষি ধরি শিরোপরে। সৈত্রণ লয়ে চলে ্রতি জ্রুত করে।। দূর হতে রাজ্বৈত্য করি দরশন। আশ্রুষ্যা ভাবিয়া তারা িরে ঘন ঘন।। গ্রন্থিত মহাবল দরশন করে। প্রায়ন করে সবে ব্যাকুল-ারে। এজার নিক্টে হল কলিয়া গমন। নিবেদন করে সবে মত বিবর্ণা। । হা ভাল মরপতি বিষিত-হালয়। ভাবে মনে এই কিব। আংকর্যা বিষয়॥ মানাগু ভণ্ডা মাত্র নমতি কানলো। কিরুপে এতেক দৈশু তাহার সদনে।। নকলি সুর্ভি হতে লভেছে জন্ম। নাহিক সন্দেহ ইপে ভরভি কার্য।। মনা কোক যেইরপো সুরভি হরিব। আশ্রম হইতে তারে রাজ্যেতে লইব।। থানার বচন মিব্যা নছে কর্চিন। কৃত শক্তি ধরে ঋষি করিব দর্শন।। প্রাণে সুধার কথা আতি মনোরম। শুনিলে মোচন ইয় ভবের বন্ধন।।

## चरकोतन जनगर

ু জমদগ্নি সহ কার্ত্তবীর্য্যের সংগ্রাম। সনংক্রমার উবাচ। সৈন্যতশ্চ সমাকণ্য রাজা বাতসহস্রভং। বল্ল্যা চিন্তুরামাস মৌনং ব্যাক্লিতেন্দ্রিঃ॥

তার পর ঋষিগণে করি নম্বোধন। পুনন্চ কহিতে থাকে বিধির নন্দন॥
শুন শুন ঋষিগণ বচন আমার। তার পর ঘটে যেই অদ্ভূত ব্যাপার॥

নরপতি, সেনামুখে করিয়া ভাবণ। মনে মনে বহুক্ণ করেন ভিন্তন।। १० ্রকে সম্বোধন করি তার পর। পাঠালেন অবিলম্বে ঋষির গোচর।। রাজার আদেশে দূত করিল বৈসমন। অবিলয়ে উপনীত, ঋষির সদন।। খাবিপাশে উপনীত হইয়। তখন। তাঁহারে সধোধি কহে কর্কণ বচন। িশুন শুন খাষিবর বচন আমার। রাজার আদেশে আসি নিকটে তোমার॥ রাজার আদেশ যাহ। করহ প্রবণ। একে একে তোমা পাশে করি নিবেদন॥ স্থরভি নামেতে ধেনু আছয়ে তোমার। রাজার করেতে তাহা দেহ উপহার॥ যদি নাহি নৃপ্ৰৱে করহ অর্থা। অবশ্য হইবে তৰ বিপদ ঘটন॥ তোমার সহিতে তবে হইবে সমর।'' ুবুঝিয়া। করহ কাজ ওহে ঋষিবর।। এতেক বচন শুনি ঋষির নন্দন। ধীরে ধীরে ফিটভাবে কংহন তখন।। শুন শুন ওহে দূত বচন আমার। ধূর্ব্দি ঘটেছে হব জানিবে রাজার॥ অনা হারেছিল রাজা গাছের উপরে। দৈও সহ কম কটে নিশাপাত করে। যতনে অতিথি আমি করিতু স্বায়। তাহার উচিত ফল দিতেকে আমার॥ সাধাৰতে সকলেরে করান্ত্র ভোজন। তার প্রিফন রাজা দিতেছে এখন। আমার বচন শুন ওছে দূতবর। শীঘুগতি ২।ছ ত্মি রাশের গেচের॥ আমার বচন শীশ্র জানাও ভাঁহারে। শাস্ত্র লার লিরি মান আপন সাগারে॥ সুরভিরে আমি নাহি করিব অর্থা। ৬য়ে আচুমতি গালি খাঁতে একন । ় তোমার রাজারে পাথি ভয় নাহি করি। ক্লু নাহি। তব হেলু ৬২ জরা করি রাজার নিকটে ত্রা করিয়া গমন। সামার যতেক বাব্য করে নিবেশন। দূত কছে শুন শুন ওছে ঋষিবর। রাজার সহিত নাতি কলিও সন্ম। বিবাদে নাহিক কাজ করহ এবণ। রাজার সংহতে নাহি পারিবে কখন। অপদস্থ হবে কেন ওহে ঋষিবর। রাজার জ্বংখ্য সেনা ১ছাবল র॥ সতা বটে দৈয়ে তব করি দরশন। স্থরভি-প্রত উহা ঋষির নদন॥ কিন্তু এক কথা বলি শুনহ শ্রবণে। রাজার সহিতে যুদ করিবে কেমনে।। অলপনার দৈন্য তব ওছে ঋবিবর। রাজার অসংখ্য দেনা মহাবলধর।। অলপবল তব দৈন্য কর দরশন। অতএব বিবাদেতে নাহি প্রয়োজন॥ বিবেচনা করি দেখ আপন অন্তরে। পরাভুত দদি হও তুমি হে সমরে॥ ভবিষ্যতে কিবা দশা ঘটিবে তোমার। মনে মনে ওছে ক্ষমে করছ বিচার॥ তাপন ব্রাহ্মণ তুমি কাননে বসতি। যুদ্ধে বল কিবা কাজ ওহে মহামতি॥ রাজার দহিতে যুদ্ধে নাহি প্রয়োজন। অবিলধে স্থরভিরে করহ অর্পণ।। त्राकात महिए यनि कत्रह मगत। निर्मेश ठाकिए हरन अहे करननता।

পকালে যাইবে তুমি শমন ভবন। অতএব যুদ্ধে বল কিবা প্রয়োজন॥ তোমার মঙ্গল হেতু নিবেদি তোমারে। অবিলম্বে সুরভিরে দেহ রাজকুরে॥ তাহাতে মঙ্গল হুবে লভিবে কল্যাণ। পরম সন্তুষ্ট হবে নৃপতি ধীমান্।

দূতের এতেক বাক্য করিয়া ভাবণ। ধীরে ধীরে ঋষিবর কছেন তখন। ওন শুন ওহে দূত বচন আমার। কি নাগ্য বলহ দেখি তোমার রাজার॥ যে কথা বলিলে ভূমি আমার সদনে। পুনরার ছেন কথা না কহ বদনে। দৃতরূপে মম পাশে তব আগমন। কমিলাম এই হেতু শুনহ সুজন।। নিবেদন কর গিরা ভোমার রাজারে। করুক্ সমর সেই যত শক্তি ধরে।। রাজার বচনে মম নাহি কোন ভয়। সংগ্রাম করিব আমি নাহিক সংশয়। শীস্থ্যতি ওহে দূত করহ গ্রন। অবিলম্বে রণে আমি হব নিম্প্রন। ম্ম দৃতরূপে তুমি যাহ শীত্রতি। নিবেদন কর গিয়া ওচে মহামতি। ৴সিব এেতেক বাক্য করিমা প্রবণ। ক্রতগতি দূত যায় রাজার সদন॥ রাজার নিকটে আমি নিবেদন করে। শুনি রাজ। মহারুট আপন অন্তরে॥ মহারোদে কেনাগণে করি সংঘাধন। কহিলেন শুন সবে আমার বচন॥ মন্ত্রে স্পাত্ত সূবে বছন আমার। ঋণি সূত্র যুদ্ধে সূবে ছও আগুসার॥ ে, না: নাদেশ প্রেম্ম এ মৈক্তর্যন । অবিলয়ে সময়েতে সাজিল তখন॥ এন্দেপ্রি কে সাজে কে করে গণনা। গজোপরি নাজে কত অগণিত সেনা॥ পদাতি নাদিন কত কে গণিতে পারে। খসি ঢাল হাতে কত সাজিল সমরে॥ এইরেপে মাজে মত চতুরঙ্গ বল। ভঙ্গার নিনাদে পৃথী যায় রসাতল॥ ানভার পরাদেবী টলমন করে। লক্ষ্য কেয় দৈয় উল্লাদের ভরে॥ বংমদে মত হলে বত সৈতাগণ। জয় জয় শব্দে কেমে করিল গমন॥ স্থাবেগে গ্রীট হাড়ে কোন কোন জন। অশ্বোপরি চড়ি করে বেগেতে গমন মার মার শব্দে কেহ জতগতি ধাব। ধনুওণ টানে কেহ মুহাবলকায়॥ ্রণধাণ্য বাজে কত অতি মনোরম। সঙ্গে সঞ্চে করতালি দেয় কোন জন॥ ঢকা বাজে ঢোল বাজে বাজ্যে ঝাঝরি। ডফ্ল বাজে শঙ্খ বাজে বাজ্যে মুরলি কত যে সানাই কাজে কে গণিতে পারে। জগঝফ বাজে কতনারি বর্ণিবারে ংহানন্দে দৈতানণ নাতে সক্ষেণ। ধূলি উঠি আচ্ছাদিল গগন তখন॥ প্রভাকর কীণকর হইয়। পড়িল। অন্ধকার চারিদিকে দরশন দিল॥ বন্যপশু যঙ ছিল কামন মাঝারে। ভয় পেয়ে চারিদিকে পলায়ন করে॥ এইরপে নৃপ্তৈসন্ত করয়ে গমন। এদিকে মহর্ষি ভাকে যত সৈলগণ॥ কামধেন্ত-পুত্ত সৈতা মহাবলবান্। ভ্ছেদার রবে সব করয়ে প্রহান॥

খন ঘন লক্ষ্য দেয় করয়ে চিৎকার। মার মার শব্দে সবে হয় আগুসার॥ ক্রমে ক্রেমে তুই সেন। হয এক ত্রিত। বিষম বাধিল ক্রমে রণ সাচপিত॥ কভ কীটামুও পড়ে সমর ভূমিতে। শোণিতের কত নদী বহে চারিভিতে॥ কত যে মরিল সৈতা কে করে গণন। নূপদেন। ভ্যে পরে করে পলাযন॥ রাজার খিতেক সেনা পড়িল সমরে। ২০১ গন হযে রাজা ভূমিকলে পড়ে॥ স্করতি. প্রদত্ত সেনা নাচে ঘন ঘন। মহোলাসে খনিবর প্রযুল্ল বদন॥ রাজারে অজ্ঞান হেরি সেই ঋষিবর। সহংক্রিদ্ধ দ্যাগুণে সদ্য অওর ॥ অচিথি বলিষা খাবি করিবেন জ্ঞান। রিকিলেন নূপব্বে মছবি ধীৰান॥ আশীৰ করিয়া শেষে রাজার উপরে। ধরিষা বসান খনি আসন উপরে॥ গালোখান করি রাজা চারিদিকে চায়। প্রোভাণে ং ফিনের ছেলিবার পায়। খণিব। তুপবর করেন প্রণাম । মনে মনে হাস্তা করে ২ছবি হীনান।। পুন্ত রাজাতে ত্যে করেন গমন। নানামতে নুপবরে করান ভোজন। প্রোপ্রজন কত বনিশ্ রাজারে। কহিলেন জন ভন বলি হে গোমালে॥ বৃছে দিরি ধাস রাজ। আমার বচন। কতু কট লভিয়াছে হত ত্রুর্ম। তেত্ত্র শূনি এরপতি কর। শুন শুন ধ বিবর ওছে মহোদা।।। কালার কালে জীলা দেও এর ভিরে। নৈলে পুনঃ রত হও অতিরে সমরে॥অবণিতে যদি মাহি করছ অবি। প্রক্ সংগ্রাম আমি করিব এখন।। ধেনু নাহি ঘাদ পার ১,৮ গছোদ্য। ন, বা প গৃহেতে ফিরি কহিনু নিশ্চয় । অতএব হন বাকা বসং ধ্যা। অবিবংশে পুন রণে ছও নিম্যান।। এত বলি দেনাগণে করি সংখ্যান। শুরুর্গি দেন পুন্ করিবারে রণ॥

উনবিংশ অধ্যার।

ঋষি সহ নৃপতির পুন্যুদ্ধ ও প্রজাপতির আগমন। সনংকুমার ইবাচ।

নৃপতেবচনং জৈতা খনিঃ পরমতাপদঃ। সম্বোধ্য মিউভাদেণ উচে মধ্রয়া পিয়।॥

রাজার এতেক বাক্য করিয়া শ্রবণ। মিউভাষে ঋষিবর কছেন তখন॥ শুন শুন নরপতি বচন আমার। রাজ্য অধিপতি তুমি শুণের আধার॥ অহ-স্থারে মন্ত কেন হতেছ এখন। করিবেন দর্শহাবী দর্প-বিভঞ্জন;॥ আমার বচন ধর আপন অন্তরে। অবিলম্বে যাহ ফিরি,আপন আগালে॥ রাজকার্যা কর গিয়া পুর্বের মতন। বিধিমতে কর গিয়া প্রজার পালন। ক্ষত্রধর্ম রকা হবে ওহে মহামতি। রটিবে তোমার যশ এই বস্ত্রমতী।। হয়েছিলে হতজ্ঞান তুমি হে সমরে। রক্ষা করিয়াছি আমি সদয অন্তরে॥ তোমার যতেক শক্তি ব্ৰিয়াছি আমি। পুন কেন বাঞ্জ রণ ওহে নৃপমণি॥ ধর্মাধর্ম বোধ নাছি ভোমার অন্তরে। সামাত্র মানুষ জ্ঞান করহ আমাবে॥ আমার সহিত যুদ্ধ, কিদের কারণ। আমার বচন এবে ধরহ রাজন॥ অবিলয়ে গৃহে যাহ ওছে মহামতি। হইবে পারম ধর্ম শুনহ সুমতি॥ খদার এতেক বাক্য করিয়া প্রবণ। কিছুকাল মৌনভাবে রহিল রাজন ॥ তার পর প্রণমিয়া ঋষির চরণে। রথো-পরে উঠে গিয়া লোহিত লোচনে ॥ দৈববশে নরপতি জ্ঞানহীন হয়। কর্মফল কদাচই খণ্ডিবার ন্য।।রোণ্ডরে খ্রিবরে করি দক্ষোধন। নরপতি রক্তনেত্রে ক্ৰেন তখন।। শুন শুন খাবিবর আমার বচন। অবিলয়ে কামধের ক্রহ অৰ্পণ।। যদি নাহি দেহ ১বে ক্রহ সমর।নৈলে পরিত্রাণ নাহি ওহে ঋষিবর॥ গাঁজার এতেক বান্। করিনা শ্বন। রোম্ভরে কাপে অঙ্গ ঋষির নন্দন॥ লে।হিত লোচন হম সতি লোমতরে। দেনাগণে অনুমতি দেন তাব পরে॥ সক্তি গেবে েন। করে ভ্রমার। পুনশ্চ সমর বাধে তদ্ধত ব্যাপার॥ ছুই নলে বাবে রণ অভি ভ্রন্নর। দেবগ। ছেরে থাকি গগন উপর॥ প্রভি-প্রদন্ত ্দনা প্তিব বিনান। রাল্যের নামে কর ভাষার স্থান ॥ রাজার **অনেক** কেন্স করিল নিংন। শ্রাছাতে নিজে রাজাহন মচেতন॥ সংগ্রুক সভাবেন র।জ। রহে রখোপতে। পুনশ্চ তেত্ন। পেযে উঠেন নমরে॥ এইরপে ছুই ্য়েন্স করে সোরে রণ। শরে শরে মহাসদ এ ছুত দর্শন।। নিজে রোজা অগ্নিবাণ যুত্তে শরাসনে। মহাতেজে চলে শর ঋষিবর পানে॥ বরুণ অস্ত্রেতে ঋষি করে নিবারণ। তাহা দেখি মহাকৃষ্ট নূপতি তখন॥ পুনশ্চ বায়ব্য বাণ করেন নন্ধান।গন্ধৰ্ক বাণেতে নাশে মহসি ধীখান॥তাহা দেখি অতি রুফ নৃপতি অ-ন্তরে।শৈব অস্ত্র ছাড়ে রাজা অতি ক্রোণভরে॥ শৈব অস্ত্র হেরি ভীত ঋষির নন্দন। বৈফব শবেতে তাহা করে নিবারণ। এইরপে যুদ্ধ হয় অতি ঘোর-তর । তুন্ল সং গ্রায় হেরে অনর-নিকর ॥ কত অশ্ব রণমাঝে ভূনিতলে পড়ে। অসংখ্য অসংখ্য হন্তী পড়িল সমরে॥ অসংখ্য পদাতি মরে কে করে গণন। আশোয়ার মরে কত ওহে ঋষিগণ॥ ঋষির যতেক দৈন্ত ক্রপিত অন্তরে! শতবাণ একত্রেতে ধনুকেতে যুঁকুে॥ নৃপতি উপরে করে শর বরিষণ। সার্থির মাথা কাটে ঋষিদৈন্যগণ ॥ নৃপতির অশ্ব রথ সকলি কাটিল। গতিশ্ন্য হয়ে রথ অমনি,রহিল॥ তাহা দেখি ঋষিবর অতি রোষভরে।জ্ঞা নামেতে অস্ত্র

শরাসনে যুড়ে॥ সে বাণ মারিল ঋষি রাজার উপর। অজ্ঞান হইল রাজ। রথের উপর। স্পন্দহীন হয়ে রহে রাজার নন্দ্র। মূত সম রথোপরি আশ্চর্ মুটন ॥ তার পর ঋষিবর হুই বাণ মারে। কুগুল কাটিয়া সূপে বনী ভুত করে॥ মাগপাশে নৃপতিরে করিল বন্ধন । কিন্তু নাহি প্রাণধন করিব নিধন॥ 🕫। ্রতিরে বন্দি করি ঋষি মহোদয়। পুলক ভবেতে চলে আপুন পানয়॥ এব মাৎ প্রজাপতি তথার অদিল। শ্বিবর তাঁরে ছেরি বন্দ্র্না করিল। প্রজাপতি ঋষিবরে করি নদোধন। কহিলেন শুন শুন আমার বচন॥ নৃপতিরে বনা কর, কিসের কারণে। বল বল জ্রা করি আমার সদনে॥ এতেক বচন শুনি ঋষিবর কয়। শুন শুন নিবেদন হতে মহোদ্য।। ছুর্মতি ছুর্জনে এই সংগ্র ্**নৃপতি ৷** ইহার সমান পাপী নাহিক মংগ্রতি॥ স্বল ২েবে এক্সেতে লোচি প্রায়ণ। সবলে সুর্ভি ধেনু করিবে এছণ।। ইহার মান্ত গাণা কি বনিক আর। নরক মাঝারে গতি জানিবে ইহার॥ এত বলি প্রথিপর করে নিবেদন তাহা শুনি প্রজাপতি কহেন তখন॥ জ্ঞানহান মুক্ত পি এই নরপতি। তি বুঝিবে তব তত্ত্ব এহে মহামতি॥ অজ্ঞানে ২০৫৫ হোলা তব সং এ। শ্ৰং कत नुश्रातित आभात नाम ॥ आभात राज्य । इन कर १ वि. १ । गार्थशास मुक्त কর আমার গোচর॥ কেন আর কফ দেও চুপতি-নলনে। প্রিশ্রে মক্ত কর আমার বচনে। যেখন করম কৈল রাজার নলন। 🔭 👉 হলে ১৯ শান্তি জানিবে তেমন। আমার বচন এবে ধর ধ্বিক্র। যে ন্র্ভির্পে আন্তর গোচর। জন্মার এতেক বাক্য করিয়া শ্রণ। নুপতির নাগপাণ করেল নোচন তার পর নরপতি পুলকিত মনে। আপন ভবনে যান মহ দৈন।গণে॥ পুরাণে মপুর কথ। অতি মনোরম। পাতকী পবিত্র হয় করিনে এবং॥

### विश्न कक्षासः।

ন্মরে জমদগ্রির দৃহত্যাগ।
সন্ধকুমার উবাচ।
গত্ত্বা বভবনং রাজা দদা চিন্তাপরায়ণঃ।
সমরে বিপ্রপুত্রেণ পরাভূত্তো মহাবলঃ॥

পুনশ্চ সম্বোধি কহে বিধির নন্দন। শুন শুন তার পর ওছে ঋবিগণ॥ পরাভূত হয়ে গৃহে গেল নরপতি। মনে মনে তাহে কিন্তু মহাছিঃখী জতি॥ বিপ্রপাশে পরাভূত হলেন সমরে। এই হেঁতু মূদা চিন্তা করেন অধ্যয়ে॥ মনে

মনে নরপতি করেন চিন্তন। জীবন ধরিয়া আর কিবা প্রয়োজন।। পুনরায় যুদ্ধ হেডু যাইব আশ্রমে। বৃদ্ধক ত্যজিব প্রাণ দিছ সহ রণে॥ বারেরর,উটিভ হর রণেতে পতন। যুদ্ধেতে মরিলে যায় অমর ভবন।। সমরে বিমুখ হলৈ কাপুরুষ হয়। নরাধন সেই জন নাহিক সংশ্ব॥ যেই জন দেহত্যাগ করয়ে ন্মরে। মোক্ষপদ পায় সেই শাস্ত্রের বিচারে॥ অন্তকালে বিকুলোকে সেই জন যায়। শাস্তের বচন ইছা কে কোণা খণ্ডায়॥ সত্র পুনঃ আনি করিব গমন। ললাটে আছয়ে যাহা হইবে ঘটন ॥যেননে পাইব লব সুরভি ধেনুরে। অথবা ত্যজিব প্রাণ পশিয়া সমরে॥ মনে মনে এইরূপ চিন্তিয়া রাজন। ঢতুরঙ্গ দৈশুসজ্জা করেন তখন॥ কত অর্থ কত গজ পদাতি সাজিল। মহাবল মেনাগণ নাচিতে লাগিল। রথোপরি রখী চলে অতি ঘোরতর। ঢালহস্তে ঢালী যার মহাভ্রকর॥ শর সহ শরাসন লয়ে নিজ করে। পদাতিক চলৈ কত কে গণিতে পারে॥ চতুর**জ** মেনা চলে কে করে গণন। পদভরে বসুমতী কাংশে ঘন ঘন ॥ রণবাদা বাজে কত অতি মনোরম। ভুরী ভেরী কত বাজে ংচকরে গ্রেম রেজস মাদল বালে বাজিছে আবারী। মপুতাল রণশি**জ।** বাজিছে ভেট ।। যোৱারৰ ওনি নতা মহাভয় পায়। তাৰ হারে পশুগ্র চারিদিনে চার॥ শস্ত্রী কৃত্রাতে স্তিভ্রফর। তাতে করতাল আদি হতি কেনাছর ॥ রাজার আকেশ পেয়ে যত দৈলগণ। মহাছোর রব করি চনিল ১খন ॥ পালাকা জাতিজে কালগান উপারে 1 নাল পীত শ্বেত রক্ত জনমন হরে॥ মহাবেগে নৈত্যণ ক্রতগাতি ধার। জগতের লোক হেরি রহে স্তর্জ-ায়॥ রণোলানে কেন্সেণ কর্ষে গ্রন। মার মার কাট কাট শব্দ সর্ব্বিক্ষণ॥ মনের সানন্দে চলে অর্ফুন দুপ্তি। চতুরস দৈশু সহ খ্যির বন্তি॥ দূর হতে সেনাশদ করিব। এবং । ভীত হয়ে নুনিবর দেখেন তখন।। ক্রমে ক্রমে নুপ্রেনা আন্দে ভয়ন্ধর। তাহ। দেখি হতজ্ঞান হয় ঋষিবর॥ মহাবলে নরবর পশির। আশ্রমে। সবলে তুরিতে যান সুহতি সদনে॥ কামধেনু সঙ্গে করি করেন গমন। বিহ্নেল ছইয়া ঋণি করে দরশন॥ গৃহমুখে যায় রাজা সুরভি লইতে । এদিকে তিন্তরে খানি সাপন হৃদয়ে॥ মনে মনে খবিবর করেন চিত্রন। এ হেন পাপাত্ম। নাহি করি দরশন। ছুরাচার অতি পাপী এই নরপতি। ক্তিয় হইয়া পীড়ে বান্ধণের প্রতি॥ ইহার উচিত ফ্ল করিব অর্পণ। এত বলি মহাক্রদ্ধ হলেন তখন॥ ছই নেত্র রক্তবর্ণ হইল তাঁহার। ঘন হুন অল কাঁপে ভীষণ আকার॥ নৃপতি সহিত যুদ্ধ করিয়া মনন। নিজকরে ধকুর্বাণ করেন এছণ। যত সেনা ক্রত গিয়া নূপ অভি

মুখে। রোষভরে মারে বাণ নৃপতির বুকে।। অত্যে অত্য নিজে ঋষি করেন ' গ্ৰমন ৷ পশ্চাৎ পশ্চাৎ যায় যত সৈন্যগণ ॥ জ্ঞানশূন্য হয়ে ঋষি চলিতে লাগিল। ঘন খন শর কত ছাড়িতে থাকিল॥ ঋবিরে পশ্চাদগামী করি দরশন। হতে নরপতি নামেন তখন। ভক্তিকরি ঋষিপদে করিয়া প্রণাম। রথেতে উঠিল পুন নৃপতি ধীমান। তার পর ছুই জনে বাধিল সমর। ছুই জনে মহাক।য় মহাবলধর ॥ ঘন ঘন বাণ মারে ঋষি রোষভরে। অনায়াসে নরপতি নিবারে তাহারে॥শেল শূল আদি মারে ঋষির নন্দর্। অবহেলে নরপতি করে নিবারণ ।। যত শর মারে ঋষে সকলি নিক্ষল । তাহা দেখি মুনি হয় অতীব বিকল। অমোঘনামক বাণ করিয়া এছণ। রাজার উপরে মারে ঋণির নন্দন। গণার আঘাতে রাজা নিবারে তাহায়। তাহা দেখি ঋষিবর বিকলিত কায়॥ ঋষিপরে শূন অস্ত্র মারেন নূপতি। গদাতে নিবারে তাহা ঋষি মহামতি॥ দেনাগণ ঋষিপরে কত শর মারে। মহাযুদ্ধ ঘটে ক্রমে যত শরে শরে ॥ কত দৈশ্য ক্রমে যায় শমন ভবন। কেবা গণে কেবা হেরে ওছে ঋষিগণ॥ কত অশ্ব কত গজ পড়িল ধরায়। কত রথী ধরাশায়ী গণা নাহি যায়॥ তার পর ঋষিবর রোষিত অন্তরে। জ্ঞা নামেতে বাণ শরাসনে যুড়ে॥ তাহা দেখি নরনাথ করেন চিত্তন। সক্ষাৎ মোহগস্ত যত সৈতাগণ। মাযাতে বিমুগ্ধ করি রাজ-দেনাগণে। স্তর্ভিরে লয়ে ঋষি চলেন ভবনে॥ এদিকে নুপতি পরে পাইয়া চেতন। দেখিলেন কামধেপু হণেছে হরণ॥ বাণ মারে নরপতি অতি রোবভরে। সাধামতে নিবারণ শ্যিবর করে। ব্রহ্ম অন্তর পারে রাজার নন্দন। ঋষিবর ্রাজ অত্তর করে নিবারণ॥ পুনরায় ব্রহ্ম অস্ত্র ২নুকে মুভিয়ে। নৃপোপরি মারে ঋষি কুপিত হইয়ে॥ সার্থির মুও তাহে করেন ছেদন। সার্থি পড়িল রণে দেখেন রাজন॥ মহারোষে শেল লয়ে অর্জুন নৃপতি। ঋষির উপরে মারে হয়ে ক্রেমতি॥ ভয়ম্বর অস্ত্র সেই প্রদীপ্ত অনল। ঋনিরে বধিতে চলে অতি যোরতর ॥ দিব্য অস্ত্র ঋষিবর করিয়া ক্ষেপণ। মুহূর্ত্মধ্যেতে তাহা করে নিবারণ।। তাহা দেখি নরপতি কুপিত অন্তরে। মহাশক্তি শরাসনে অবিসম্বে যুড়ে॥ দেবদত্ত শক্তি সেই অতি ভয়ন্ধর। সবলে মারিল তাহা ঋষির উপর॥ সকল দেবের শক্তি আছয়ে তাহায়। মন্ত্রপুত করি নূপ ফেলেন তাহায়॥ কোটি কোটি সূর্য্য সম শক্তি তেজ ধরে। দেবগণ হেরি তাহা শিহরে অন্তরে॥ সেই শক্তি ধকুকেতে করিয়া সন্ধান ৷ ঋষির উপরে মারে, নৃপক্তি ধীমংন॥ মহাতেজ উঠে ক্রমে গগন উপরে। বাড়বা অনল যেন প্রকাশে সাগরে॥ তাহার অপুর্ব তেজ করি দরশন। বোধ হয় যেন স্থ্য হতেছ পতন॥ অব্যর্থ সে মহাশক্তি উঠিল গগনে। স্থরগণ মহাভীত তাহা দরশনে ॥ হাহাকার' করে যত দেবতানিকর। শর হেরি ব্যাকুলিত মহর্ষি-প্রবর॥ সে শক্তি ধরিতে শক্তি কেছ নাহি ধরে। দেই শক্তি চলে বেগে মুনির উপরে॥ বিধির লিখন বল কে করে খণ্ডন। ঋষির উপরে শক্তি চলিল তখন।। দেখিতে দেখিতে পড়ে বক্ষের উপরে। ঋষিবক অক্মাত বিদার্ণ করে॥ ঋষির ছদয় শেল করি বিদারণ। পুনশ্চ উঠিল তাহা গগনে তখন॥ রাজার ধনুকে আসি পুনশ্চ মিলিল। ঋষিবর ধরাতলে পড়িরা রহিল॥ •কালের কুটিল গতি নহে নিবারণ। মহাঋষি নিজ প্রাণ দিল বি**সর্জ্জন।। কালেতে** সকলি ঘটে কালে সব হয়। নিজে কাল আসি সব জীবন]নাশয়॥ আত্মা ব্রহ্মধামে করিল গমন। সুরভি আপন চক্ষে করে দরশন॥ সুরভি কান্দিল বহু বিদাগ অন্তরে। বিলাপ করিল কত কে বর্ণিতে পারে॥ বলে আমি ভাগ্যহান নাহিক সংশয়। পালন করিল মোরে যেই মহোদয়॥ থামার অদৃষ্ট দোষে মরিল মে জন। এত ক্লেশ দুঃখ ওদ্ধ আমার কারণ॥ কোথ। পি হঃ মোরে তাজি গ্রম করিলে। ছঃখের সাগ্রে মোরে কেন গো ভাষালে॥ কতবার যুদ্ধে জয়ী হইলে হে তুমি। তোমার ছঃখের হেতু 😎 মাএ শামি॥ এরপে পুরভি বহু করিয়। রোদন। গোলোকধামেতে আশু করিল গমন॥ পুরাণে পুণোর কথা অতি মনোরম। এবণে পাপের নাশ শাত্রের বচন॥

# একবিংশ অধ্যায়।

পতিশোকে ঋণিপত্নীর খেদ ও সহগামিনী হওন। সনৎকুমার উবাচ।

বিজয়ী সমরে ভূতৃ। স্বগৃহং নূপতির্যযৌ। রে কুকা ঋষিপত্নী চ বিললাপ মৃত্র্যাভঃ॥

সনতকুমার কহে শুন ঋষিগণ। তার পর ঘটে যাহা অপূর্ব্ব ঘটন। যুদ্ধে জয়ী হয়ে পরে অর্জুন নৃপতি। সেনা সহ নিজ গৃহে করিলেন গতি॥ এদিকে ঋষির নারী রেণুকা ফুল্রী।পতি শোকে খেদ করে হাহাকার করি॥ ফুদ্ধেতে মরেছে পতি করিয়া শ্রবণ। হাহাকার করি সতী করেন রোদন॥ ফুতগতি রাক্ষিতে করিয়া গ্রমন। দেখিলেন পতিধন ভূমে, অচেতন॥

পতিত হইয়া সতী পতিবক্ষোপরে। নানামতে খৈদ করে বিষয় অন্তরে॥ কৃণকাল রহে সতী হয়ে অচেতন। চেতনা পাইয়া পুনঃ করয়ে রোদন॥ কহে প্রভূ একি দশা হইল আমার। উঠ নাথ দাসী প্রতি ভাছ একবার॥ অনাথা করিয়া মোরে করিলে গমন। দাসী কোথা রবে প্রভূ বলহ এখন। আমার বচন নাথ শুনহ এখন। কেন নাথ ধরাতলে হয়ে অচেতন॥ উঠ নাথ কথা কহ দানীর মহিত। কেন গ্রন্থ পরাতলে আছহ পতিত॥ একবার কথা কহ ওহে প্রাণেশর। তব পাশে দাসী বিদি কান্দিছে বিশুর॥ বল প্রাণনাথ কি দশা করিনে। এ দাসীরে একেনারে ভুলিয়া চলিলে॥ শতীরে কাঁদান নহে পতির উচিত। টিঠ নাথ কেন বল ধরায় পতিত। কোন দোবে দোষী নহে তোমার ৮লনে। আধারে ভাতিরা নাথ যাইবে কেমনে॥ কেন নাথ ছেন বুদি ২টিল ভোষার। কেন রাজা নহ যুদ্ধে হলে **আগুনার।। প**ংম তাপদ তুমি বসতি কালনে। কুমরে কি ফল কিল দুগাতির সনে॥ হারে বিধি নিদারণ কি কাশ করিলো। কি দোদে আমার ভাগে। এ দশা ঘটালে।। নির্দয় তোমার হম নাহি কোন চন। তোমারি বা কিবা **দোষ অদুষ্ট লিখন।।** নং গ্রামে মরিণ মম পতি প্রাণ্থন। স্থান্যর জীতনে আর কিব। প্রয়োজন । পতিহান। হয়ে বন কি ফন জাবনে। নিরুপে দেখাৰ মুখ অন্তের সদনে॥ পতিহানা হয়ে গেই ধরতো বিষয়। জীবনে বল কিবা প্রয়োজন ॥ হারে প্রাণ নিদারুণ নাঁচি কিবা ফল। মহণ তোমার পক্ষে অতীব মঙ্গল।। যেই স্থানে প্রাণনাথ করেছেন গতি। ৬খাঃ চলহ তুমি অতি ক্রতগতি॥ এরপে বিলাপ করি রেণুকা স্থনরী। মূচছণিত হয়ে পড়ে ধরার উপরি॥ কণপরে সংজ্ঞা পেয়ে বসিল উঠিয়ে। করয়ে সতী বিলাপ করিয়ে॥ পতিপাশে বৈদি সতী করয়ে রোদন। অক্ষাৎ স্থরাম উপনীত হন।। জমদ্মি-পুল মেই মহাবলবান্। হরিভক্ত ধ্র্নিঠ অতীব ধীমান॥ পুক্ষর তীর্ণেতে তিনি করি অব্ধৃতি। ঐছিরির পূজা করে সেই মহামতি।। পিতার নিধন বার্তা করিয়া প্রবণ । শোকেতে কাতর হয়ে করে আগমন॥ রণক্ষেত্রে আদি রাম হেরেন তথার। জনকের মৃত দেহ গড়াগড়ি যায়॥ পিতার বক্ষেতে পড়ি জননী ফুলরী। বিশাপ করেন কত হাহাকার করি॥ জননা কাতর হয়ে করেন রোদন। হেমকালে ভ্তরাম করে আগমন। প্রণাম করেন আদি জননীচরণে। কান্দিলেন কত মত পিতার কারণে। পিতার কারণে তার ্ব্যাকুল অন্তর i, মাতারে সম্বোধি রাম কহে অতঃপর॥

ভোমার চরণে মাতঃ করি গো বন্দন। কিরূপে মরিল পিতা কছ বিবরণ॥ পুনের বচন শুনি রেণুকা সুন্দরী। বিলাপ করেন কত হাহাকার করি 🛚 তার পর যদ্ধ-বার্তা কহেন সকল। এবণ করিয়া রাম ব্যাকুল অন্তর।। মহারোদ তথ্যে তার রাজার উপরে। কণকাল চিস্তা করি আপন অন্তরে। পিতার অন্ত্যেষ্টি ক্রিয়া করিতে সাধন। কাষ্ঠ আহরণে পরে করেন গমন॥ ৮ননাদি কাষ্ঠ ভার আনিয়া সত্তর। পিতার অন্ত্যেকিক্রিয়া করে ভৃত্তবর। যথাবিধি চিতা নজ্জা করি আযোজন। জননীপাশেতে দ্ব করে নিবেদন॥ কহিলেন অনুসতি কর গে। জননা। অগ্নি প্রজ্ঞালন সামি করিব এখনি॥ রেগুকা এতেক বাক্য করিয়। শ্রব্ধ। ভ্রুরামে অক্ষোপরি নিলেন তখন।। ঘন ঘন পুত্রমুখ করেন চুদ্ধন। বলে বংস কি বলিব হৃদয়ের ধন॥ বিবেচন। কর যাহ। উচিত এণরে। করিবে যেরূপ কাজ ক**হিনু তোমারে॥ কিন্তু** এক কথা যদি করক কবণ। পদির সহিতে আমি করিব গমন॥ সহয়তা হব আনি ওন বাছালন। পতি বিনা রথা হয় সতীর জীবন।। পতির মরণে ২য় সভীর মরণ। স্থাতি বিন্য কিবা ফল ধরিষা জীবন।। পরলোকে গিয়া আনি নান্দ অক্রে। মিশিব পতির সহ কহিনু তোমারে॥ চর্মে প্রম গাত লভিব নিশ্চয়। এখন কর্ছ যাহ। স্মৃতিত হয়॥ একমাত্র পতি হয় গতার গর। গা পতি বিনা রমণার নাহি পরিত্রাণ।। আবেগ এক কথা বলি ওন বাছাধন। রাজার সহিত সৃদ্ধ না কর কখন॥ নিরন্তর বনি বৎস আপন আগ্রমে। হরি আরাধনা কর একান্ত যতনে॥ আমার বলন বৎস করিও পালন। ভৃগুরাম কহে মাতঃ না কর বারণ।। যেই চুষ্ট মারিয়াছে আমার পিতারে। অবশ্য মারিব তারে কহিন্য তোমারে॥ আমার প্রতিজ্ঞা এই জানিবে জননা। ক। দিব। আকুল সতা এই বাক্য শুনি॥ বলে বংস মম বাক্য করহ প্রবণ। চঞ্চল এতেক বল কিদের কারণ।। স্বত্রিয় সহিতে যুদ্ধ না করে। কখন। বিপ্রহয়ে যুদ্ধ বল কিদের কারণ॥ এত কহি ঋষিপত্নী ফর্য়ে রোদন। ভার্গব প্রবোধ দেন মাতারে তখন ॥ স্থতের বচনে পরে ছঃখ পরিহরি। পতির দাহন ক্রিয়া করে ত্রা করি॥ হেনকালে দেবঋষি করে আগমন। তাহারে সম্বোধি সতী কহেন তখন। বিধি দেহ ওছে খবি বচনে আমার। ঋতুমতী আছি আমি করছ বিচার॥ চতুর্থ দিবদ আজি ওহে তপোধন। সহগামী হব আমি আছয়ে মনন॥ ইথে ফদি দোষ থাকে কহ মহোদয়। শান্ত্রের বিধান যাহা সমুচিত হয়॥ এতেক বচন গুনি দ্বীনী তপোধন। কহিলেন গুন প্রন আমার বচন॥, সংগামী

হবে তুনি শুন গো সুন্দরী। ইথে কোন দোন নাহি জানিবে বিচারি॥
পৃতি সহ সহয়তা যেই নারী হয়। স্থগতি লভ্যে কেই নাহিক সংশ্য॥
বিশেষতঃ মহাপাপী হয় যদি পতি। তাহারে উদ্ধার করে সেই সে যুবতী॥
সহয়তা যেই নারী করহ এবণ। বৈকুঠে তাহার বাস শাস্ত্রের বচন॥ পতিরে
লইযা যায় বৈকুঠ আগারে। শাস্ত্রের বচন ইহ। জানিবে অন্তরে॥ পতি সহ
সেই ধামে করি অবস্থান। কত যে মানক লভে কে করে বাখান।। নিংস্তর
পতি সেবা যেই নারী করে। পতিব্রতা সেই নারী জানিবে সংসারে॥ ঋষ্বির
এতেকংবাক্য করিয়া প্রবণ। রেণুকা সুন্দরী মতা কহেন তখন॥ কহ প্রভ্
ক্রপা করি এই অধানীবে। জানিতে বাসনা বড় হতেছে সন্তরে॥ সহয়তা
নাহি হয় কোন্ কোন্ নারী। বর্ণন করহ তাহা নিবেদন করি॥

এতেক বচন শুনি দানী তপোধন। কহিলেন শুন মতি আমার বচন। পতির মরণকালে রহে গর্ভবতী। সহমূত। নাহি হবে দেই দে যুবতী।। অতি শিশু পুত্র-কন্সা আছ্যে যাহার। সহমূতা নাহি হবে শান্তের বিচার॥ দিবসত্রয়ের মধ্যে থাকে ঋতুমতী। সহগামী নাহি হবে সেই সে যুবতী। কুলটা রমণী যারা এ ভবসংসারে। কুষ্ঠরোগে অভিভূতা কহিনু তোমারে। পতি সেবা নাহি করে যেই নারীজন। স্বামী প্রতি বট বাকা করে উচ্চারণ ॥ সহগামী নাহি হবে সেই সব নারী। শাতের বিধান ইয়া তানিবে গুলরী॥ **८२न नातो महसूजा यिन कलू हय।** পতि नाहि পार्व मध् जानित निक्ध । পতি সহ যেই নারী ত্যজ্ঞেজীবন। পতি সহ স্বর্গভোগ করে সেই জন॥ যার পতি সদ। হয় হরিপরায়।। জীহরি ক্ষরণ করি এজেয়ে জীবন।। নারী যদি কভূ সহমূতা হয়। পতিফল পায় সেই নাহিক সংশয়॥ আমার ্বচন তুমি শুন শুণবতা। পতি নুমহ অনুমূতা হও গো নংপ্রতি॥ ইহাতে তোমার পাপ কভু নাহি হবে। বরঞ্চ প্রম পুণ্য অবশ্য লভিবে॥ এত বলি ভ্তরামে করি সম্বোধন। কহিলেন ওন শুন আমার বচন।। কেন র্থা শোক কর আপন অন্তরে। তিতা সজ্জা কর এবৈ অতীব দাদরে॥ চন্দন কাষ্ঠেতে চিতা করছ নির্মাণ । মৃত পিতৃধনে শীঘ্র আন এই স্থান ॥ পিতার শরীরে ছত করায়ে মর্কন। দক্ষিণশিয়র করি করাও শয়ন॥ যথাবিধি মন্ত্র নুখে করি উচ্চারণ। পিতার মুখেতে অগ্নি করহ অর্পণ।। এত বলি মহামুনি করেন প্রস্থান। মুনিপুত্রে কহে মাতা শুনহ ধীমান॥ আমার বচন শুন ওরে বাছা-ধন। হিত বাক্য বলি যাহা করহ প্রবণ ॥ ইহাতে হইবে তব কল্যাণ-বিধান। অতএব মুম্ বাক্য শুন মতিমান।। সংসাব হেরিছ বাপু আপন নয়নে। বিবাদে নাহিক ফল বুঝি দেখ মনে।। মনে মনে এই কথা করিও। মারণ ইহাতে মঙ্গল হবে ওহে বাছাধন॥ যদি কভু কোন কাজে অভিলাষ হয়। প্রকার নিকটে যাবে না কর সংশয়॥ তাঁর পরামর্শ তুমি করিয়া এইণ। তবে মনোমত কর্দ্যে হঠবে মগন॥এত বলি পতিধনে বক্ষেতে লইয়ে। অনলে প্রবেশে সতা পুলকহাদয়ে॥ নয়ন মুদিয়া করে ঞীংরি প্রণ। দেখিতে দেখিতে সতা হইল দাহন॥ প্রাদ্ধ-আদি যথাবিধি করি সমাপন। ভ্তরাম বত বিপ্রেকরান ভোজন॥ তাব পর সদা তিতা করেন অন্তরে। কিরূপে নাশিবে সেই পিতার অরিরে॥ মনে মনে এইরপ করেন চিন্তন। দ্বিজ বলে শুনে যেই সাধনের ধন॥

#### দ্বাবিংশ অধ্যায়।

ক্ষত্রিয় নিধনে ভৃগুরামের শপথ ও প্রচাপতি-নিকট গমন।

সনৎকুমার উবাচ। পিতৃর্দ তুঃং সমাকণা রামো ভৃগুকুলোন্ডবঃ। মাজগাম ক্রতং সোপি যকমাশ্রমমুত্তমম্॥

শবিগণ জিজ্ঞানিন বিনির নন্দনে। মিফভাষে সম্বোধিয়া মধুর বচনে ।

কহ কহ বিধিত্ত প্রপূর্ব কগন। কি কার্য্য করিল রাম ভৃত্তর নন্দন॥ অপূর্বব

শ্বাণ কথা প্রবণ করিতে। বাসনা হয়েছে বড় আমাদের চিতে॥ অতীব

মানন্দ প্রভূ পাই সর্বব্রণ। কপা করি কহ সব বিধির নন্দন॥ এতেক বচন
শুনি সনত-কুমার। কহিলেন শুন শুলু অটুত ব্যাপার॥ পিতার মরণ রাম
করিয়া প্রবণ। উপন ত দ্বরা করি আপন আশ্রম॥ দেখিলেন পিতা তার
পতিত ধরায়। মৃতদেহ গূলিতলে গড়াগড়ি যায়॥ যেরপে হইল মৃত্যু কিয়া

শ্বণ। পিতৃশক্র বিনাশিতে করেন মনন॥ তখন রামের মাতা রেগুকা

মন্দরী। কহিলেন শুন বাছ। বচন আমারি॥ পিতৃশক্র বিনাশিতে নাহি

করো মন। ক্ষত্রিয় সহিতে বাছা নাহি কর রণ॥ লাক্রণ বলিষ্ঠ হয় ক্ষত্র

নরপতি। তার সহ যুদ্ধ নাহি করো মহামতি॥ এতেক বচন রাম করিয়া

শ্বণ। কহিলেন শুন মাতঃ আমার বচন॥ যেই জন পিতৃশক্র নাহি বধ

করে। জনম বিফল তার সংসার-মাঝারে॥ কাপুরুষ বলি সেই গণনীয়

হয়। তাহার জীবনে মাত কিবা কলোদয়॥ প্রতিজ্ঞা করিয় আমি তোমার

়গোচরে। করেনা রাখিব আমি পৃথিবীভিতরে॥ একবিংশনার করে করিব নিধন। করেনাম বুচাইব আমার বচন॥ আমার প্রতিজ্ঞা এই জানিবে ক্রননি। বদনে অনৃত বাক্কা কভু নাহি আনি ॥ কার্ত্তবীর্য্যে সর্ব্ব অথ্যে করিব নিধন। করিব তাহার রক্তে পিতার তর্পণ॥ তাহা হলে শান্ত হবে রোদ থে আমার। জানিবে প্রতিজ্ঞা এই করিলাম সার॥ করেবংশ আমা হতে ইইবে নিধন। সত্য সত্য নহে কভু অসত্য বচন॥ এরপে প্রতিজ্ঞা করে রাম ভ্রত্থের। পিতার মত্যেটি ক্রিবা করে তার পর॥ সেকপে পিতারে পরে করয়ে দাহন। অনুমৃতা মাতা তার যেইরপে হন॥ শ্রাদ্ধ কিরা যেইরপে সমাপন করে। বলিরাছি সেই সব স্বার গোচরে॥ যথাবিধি স্বর্ব্বার্য করিয়া সাধন। শত্রু বধিবারে রাম করেন চিন্তুন॥ ক্রিপে নাশিবে রাম পিতার অরিরে। স্থোমুখে বসি তাহা আন্দোলন করে॥

হেনকালে ভ্রুদ্রনি তাপম্প্রর। উপনীত হন সাসি রামের গোচর॥ ভূতুরে দেখিরা রাম করেন রোদন। প্রবোধ প্রদান করে। ভূতু তপোধন।। ়কহিলেন **ওন রাম তুমি মহামতি।** কি হেতু বাতর হও **ভানত ন**ুগতি॥ বিচক্ষণ মহাজ্ঞানী তুমি মহোদয়! শোবেতে রোদন কর। সমুচিত নগ।। চিরজীবী নহে কেহ সংসার-মাঝারে। জিমলে মরণ গাছে পানে সার্লনের। জমের সহিতে জমে অবশা মরণ। কেহ আজি কেছ কালি এশত নিন্ম॥ **এইরপে যাতায়াত জাবগণ করে। সেহেতু কাতর কেন হ**েত করে। **এই যে হেরিছ বিশ্ব 'ওছে মহোদ**র। কিছুই কিছুই এম সৰ মানাস্ম। কর্মফলে আনে জীব সংসার-মাঝারে। কর্মফলে পুন যায় শ্মন-মাগারে॥ কর্মফল ভোগ বত করিয়া তথায়। পুনরায় আনে জাব জানিবে হরনা। পুনঃপুন• গভায়াত কর্মফলে করে। কর্মফলে জীবগণ ফল্পদিনে ১রে॥ কর্মফলে দীর্ঘআয়ু পায় জীবগণ। কর্মবশে হুর্গে যায় ওছে বিচক্ষণ ॥ শমন ২ন্তরণ। মুচে নিজকর্মফলে। অনিত্য জীবন এই ভানিবে অন্তরে॥ এই যে হেরিছ বিশ্ব ওচে মহাজ্মন। পদ্মপত্র হিত বারিবিদের মতন॥ ক্ষণকাল পরে সব হয়ে যাবে লয়। না রহিবে কি চুমাত্র ওহে মহোদর ॥ এই যে হেরিছ ্চকে শোভে বস্ত্ৰতী। মিথ্যা নৰ মায়াময় ওহে মহামতি॥ একমাত্র হরি যিনি দেব নিরঞ্জন। সত্য সত্য তিনি সত্য ওহে মহাজ্যন ॥ তাহার চরণ চিন্ত একান্ত অন্তরে। বুরে যাবে শোক ওাঁপ কহিনু তৌমারে। আরো এক কথা বলি শুন বিচক্ষণ। মহাজ্ঞানী বলি ভূমি 'বিখ্যাত ভূবন॥ শোক করা কভু তব সমুচিত নয়। মনে মনে ভাব সেই হরি দরাময়॥

শ্বছেলে শোক ভাপ गँব ঘাবে দুরে। নিরঞ্জন ভাব নলা একান্ত- অন্তরে॥. লাহা কিছু ঘটতেছে কর দরশন। সকলি তাহার ইজ্ঞা ও**হে মহাত্মন্॥** টানার ২ফার ছয় নকলি ধরান। জন্ম মৃত্যু ১টে মব ভাঁহার ইচ্ছার॥ ে বামাঝে হেন শক্তি,কোন্জন ধরে। ভাষার ইচ্ছাকে ক্র করিবারে পারো কিভতে এই দেই ইলেডে গঠন। মনে দনে দেই কথা করহ চিন্তন॥ যখন হয়েছে পঞ্জুত একতিত। তখন বিচেতে হবে জানিবে নিশিতে॥ নবে কেন শোক কর ওছে মহাজ্ব। আমার বচন ক্রেছ ধারণ॥ এই যে তেরিঃ পুরী ওতে মহোদন। পর সমস্ব নিঘা। কিছু স্তা নয়॥ কেলা পিডা কে। ঘাতা এ ভব মংসারে। কেবা পুত্র কেবা **দারা বলত** আগারে॥ পণ্নান জ্যে নান ক্রেলে নিন্ন। তাদের জ্যেতে শোক ি ে,র ক্রেণ । তেব লেখ ন্নাকালে চিহ্ন-িবের ! চারিদিক **হতে আসি** . ছে পোরা। গ্লাভ ছবং । প্র করে গ্রন। তাইর জৌবগণ ও**ছে** ম্যাম্বর পালে জাবিদ্রা করে বিচ্ছন্। কর্মনা ভৌগে করে **যভ** ে।।। মন্দ্রানী মেত জন প্রনী আবা শোক নাহি তারে কভু '। এখা বরে॥ যদি নে তেল পচ্ছে ভিষিত্ত প্র । মৃত্রাক্তি যায তা**হে** ১ ৯ ি এই il বিশোধিত ই টোলবেলে কি । কি । এই ।। গাম । পাতৰৰ যদি চ**ংক** । उपयोग १ मार्गि मुख्यन आरित हितिरा। छात्र एक्सि अहे कथा ানি বংয়ে॥ দেই ২৫৬ পাণকার করিনে গমন। পাচে পঞ্জ মিশি যায় रण भरा राजा। अविवास धकरात याचि तारिकांपा। राह करणवरत किरा ে প্ৰবাম। মনিতে ক্ষেতে ভার নত পাম লয়। কী ভিরাশি শুদ্ধাত ं भगदन त्रम्॥

ত্তা এতেব বাবা নরিয়া এবং। গুলার বালেন হাদে ভাগব তখন। 
১ওপদে নমকার করি ভিজিদরে । কহিলেন তল শন নিমেদি তোমারে। 
এতিক্তা করেছি আমি ওবে মহাল্লা। ক্ষরতা নিম্দুলা করিব নিশন। 
নদীকার করিনাহি জনন নাচেরেং। না পাধিব মাহতাল সংসার মান্যারে। 
একবিংশবার শালাং করিব নিধন। এতিক্তা আনার এই ওকে মহাত্তা। 
ইহাতে আমার পাপ কভু নাহি হবে। অবশ্য ইহাতে ভূফি পিতৃগণ পাবে।। 
আমি দ্বারা যেইজন বিনাশে জীরন্। বিষ দ্বারা প্রাণ বধে যেই ত্রজন্।। 
প্রারণা করি যেই জীবন সংহারে। অন্থ ধরি যেই জন ধন আদি হরে। 
পরনারী যেই জন করিয়ে হরণ। বল করি ভূমি হরি লয় যেই জন।। 
পিত্থাতা প্রতিলে যেই ত্রাচার। তাদের বাধিলে নাহি পাপের সঞ্চার।।

শ্রেতেক বচন শুনি ভৃগুরাম কর। শুন শুন মন বাক্যু ওঁহে মহোদয়।। মাতার আদেশ তুমি করহ পালন। প্রজাপতি সকাশেতে করহ গমন॥ আ'দেশ করে দেব প্রজাপতি। করিবে সেরপ কার্য্য ওছে মহামতি॥ ৰিলি ভ্তা ঋষি করেন গমন। ভাঁহার চরণে রাম করেন বন্দন ॥ তার পর **ভূগুরাম হরিষ অন্তরে।** উপনীত হন গিযা ত্রন্ধার গোচরে। ত্রন্ধার চরণে পরে করিয়া প্রণতি। কহিলেন শুন শুন ওবে প্রজাপতি॥ তোমার বংশেতে হয় আমার জনম। জমদগ্নি-পুত্র আমি ওহে মহাগ্রন। তোমার প্রপৌত্র আমি ওচে মহামতি। রুপা কর ওচে দেব অধীনের প্রতি॥ তব পাশে যাহা আমি করি নিবেদন। তাহার উপায় কর ওতে পদাসন॥ উচিত আদেশ কর এ অধীন জনে। সেই রূপ কার্য্য আমি করিব ঘতনে॥ শুন ওন পদাসন করি নিবেদন। কার্ত্তবার্য্য নরপতি জানে সর্ব্যজন।। মুগ্র। কারণে গিয়াছিলেন কাননে। চতুরক্ষ সেনা ছিল নৃপতির সনে॥ অক্ষাত বনশাঝে ঝড়র্ফি হয়। তাহে মহাক্ষ পায় যত কৈঞ্চয়। অনাহারে রুশো-শ্রিকরি আরোহণ। সসৈতে নৃপতি করে যামিনী যাপন॥ পর দিনে **প্রভাতেতে পিতা মহোদয়। নৃপতি**রে দেখি বড় হলেন সদয়॥ কহিলেন 🥶ন শুন ওহে মহীপতি। অত্য মম পাশে তুমি কর অবস্থিতি।। সদৈতে এখানে তুমি কর অবহান। কল্য পুন নিজধামে করিবে পরাণ ॥ কল্য হতে উপবাসী রহিয়াছ তুমি। অতিথি আমার বানে হও দুপুমণি॥ পিতার এতেক বাক্য করিয়া এবণ। পুলকে পূরিত হয় অর্জন রাজন।। পিতার আশ্রমে রাজা করে অবস্থান। সুখেতে রহিল সৈন্য ওহে মতিমান॥ সুঞ্জি প্রদন্ত দ্রব্য করিল ভোজন। তাহে নরপতি ভূফ সহ দৈয়গণ॥ সম্বোধি পরে কহে নরপতি। এক ভিক্ষা তব পাশে ওহে মহামতি॥ করে সুরভিরে করহ অর্পণ। ভিক্ষা মাগি তব পাশে ওহে তপোধন ॥ ঘদ্যপি আমারে নাহি করিবে প্রদান। বলেতে লইব গাভী ওহে মতিমান॥ নৈলে মৃম সহ তুমি করহ সমর। এত শুনি মম পিত। করেন উত্তর॥ হেন বাকা পুন নাহি বলিও রাজন। স্থরভিরে আমি নাহি করিব অর্পণ।। পিতার বচন শুনি সেই নরপতি। পিতারে কহিল পুন ওহে মহামতি॥ ঘদ্যগি স্থরতি নাহি করিবে অর্পণ। যুদ্ধ হেতু শী্য তুমি কর আংয়োজন। কাজে কাজে যুদ্ধ বাধে অতি ঘোরতর। দে যুদ্ধে মরিল পিতা তিহে পলাকর॥ হয়েছেন অনুমৃতা আমার জননী। আর মম নাহি কেহ ওঁহে প্রযোনি॥ হারায়েছি ুমাতা পিতা ওহে পদাকর। তুমি মাতা তুমি পিতা দ্বগত-ভিতর।

এখন শরণ লই তোমার চরণে। বিপদে উদ্ধার কর এ অধীন জনে॥ শোবেতে কাতর মম নদত অন্তর। দয়া কর মম প্রতি ওহে, দয়াকর।। আদেশ দিয়েছে মাতা ওহে পদ্নযোনি। আসিয়াছি,সেই ছেতু শুন মম বাৰী। 💯 কি উপায়ে বিনাশিব পিভার অরিরে। সেই কথা কহ দেব অধীন জনেরে। পিতৃশক্ত যদি দেব না করি নিধন। জীবন ধরিয়া তবে কিবা প্রিয়োজন 🖁 কোন গুণে গুণবান সেই নরপতি। মহাপাপী সেই জান ওছে মহামতি। ঘার যশ সদা গায় জগতের জন। যাহার অন্তরে দ্য়া আছে স্কাশ্য থর্ঘবোর আছে মার অন্তব-মাঝারে। মহাজ্ঞানী যেই জনইুভুবন-ভিতরে॥ সত্ত্রজ তমোগুণ জানে যেই জন। অবলা কমলা যার গৃহেই সককণ।। বিচার নাহিক যার অন্তর-মাঝারে। পৌরুষ আছায়ে ঘার সংশার ভিতরে॥ প্রজাগণে পুলু সম যেই করে জ্ঞান। প্রজার পালন করে যেমত বিধা**ন।** উস নীচে নম জ্ঞান যেই জন করে। রাজযোগ্য দেই জন কহিনু তোমারে॥ কিন্তু এক কণা বলি ওন পদাসন। কোন্ গুণ ধরে সেই অর্জ্জন রাজন।। গছার জীবনে বন কিবা ফলোদ্য। জগতের ভার মাত্র সেই নিরদ্য়। দামার প্রতিজ্ঞ। প্রতু করছ প্রবণ। পৃথিবীতে ক্ষত্র নাহি রাখিব কখন॥ বিনাশিব ক্ষত্রক ব একবি'শ বার। তবে মন ক্রোধ যারে ওচে গুণাধার।। বামের এতেক বাবন কৰিয়। এবণ। কহিলেন মিটভাষে দেব প্রাসন।। রামেরে কোলেতে লয়ে দেব পর্যোনি। কহিলেন শুন শুন মুম হিতবাণী। প্রিজ্ঞ। করেছ মতা ওচে মহাত্মন। কিন্তু তব এ প্রতিজ্ঞা ভয়ের কারণ॥ ইথে বহু প্রাণীপ্রাণ হবে বিনাশন। কত কটে হয় দেখ বিশ্বের সুজন। ছেন সৃষ্টি লোপে কেন করিছ বাদনা। বদনে এ হেন বাক্য কখন,এনো না॥ এক জন মত্য বটে করিয়।হে দোষ। তাই বলি সব। প্রতি কেন তব রোষ॥ ক্রোধ প্রকাশিয়া ভূমি একের উপরে। মহাসৃষ্টি নাশে বাঞ্জা করিছ অন্তরে॥ এ হেন বচন নাহি বল কদাচন। আমা হতে এই কাৰ্য্য না হবে সাধন॥ বিগদর-পাশে যাও কৈলাস শিখরে। নিকেদন কর গিয়া ভাঁহার গোচরে॥ ভাহার আদেশে হ্বে করম সফল। অবিলয়ে যাহ ভূমি কৈলাদ-শিখর॥ শতবংশ বিনাশিতে যদি বাঞ্ছ। হয়। শিবের নিকটে যাও ওহে মহোদয়।। পাশুপত অন্ত্র শিব করিলে প্রদান। বিনাশিবে ক্ষত্রকুল ওত্তে মতিমান। একবিংশ বার ক্ষত্র করিবে নিধন। দিব্যবাণ শিবপাশে পাবে মহাজ্ন ॥ পুরাণের স্থ্যক্ষ। পুগ্যবিব্র্দ্ধন। শুনিলে পাতকী তরে শাস্ত্রের বচন।

# जरः विश्व अधाय।

কৈলানে ভ্রতামের গমন ও পাশুপত তম্লার। সনংক্ষার উবাচ।

শ্রেকা প্রজাপতেক।ক্যাং রামো ভ্রুকলেও ।।
পুলকাঞ্চিত্রদেছেন কৈলান-শিখনং ঘটে।।

সম্বোধি বিধির সত হত ঋষিগণে। ক্ষিকেন এন এন ক্ম ক্ষি স্ক্রিন। ্বিধির এতেক বাক্য করিয়া শ্রবণ। ভৃত্তরাম ভার পদে করিয়া বন্দন। তাঁহার আদেশে যান কৈলান-শিশতর। মনে মনে মহাত্রা প্রক্ত একরে। স্থারম্য কৈলাসপুরী করেন দর্শন। তাহার অপুর্ব শে।। তাত মনোরা। **জন্মেক হতে লক্ষ মোজন উ**র্ভেওে।বিরাজে কৈল, মধুরী জালিবেক চিতে। তাহার উপরে শোহে বৈজ্ঞ নগর। বৈশ্বতের উচ্চ বংলাক মনোবর। **ত্রীগোলোক ধাম শোভে** কৈলাম-উপরে।ক ৩টি র ফাস্পেট্রে ডেন্ট্রেল পোলর ক্ষত যোগী নেত্র মূদি প্রানেতে মগ্র। দিবানিশি । বি ১৮১ এই বির্ণ্ডা। বোম বোম স্থশক সতত বদলে। কলবাল্য করে তেখ সংক্ষিত স্থোগ গালবাদ্য করে মবে অতি ঘন ঘন। স্থের সাগ্রে নল । তে নিগগ্রা পারিজাত তর শোভে কত সারি সারি।গলে পারেছিল হর হার বলি হারিছ ক'পতিক কত শোভে কে করে গণন। মধ লোভে অভিনেল বিচরণ । ভন্ ভন্রবৈ নব করিছে ঝফার। পুষ্প হতে পুশান্তবে করিছে বিলার॥ কুত্ত্বেরেরব করে যত পিকগণ। শাখাপরে গান করে যত পদ্দীগণ। সরং ী শোভিছে কিবা অতি মনে। হর। নীলজলে শোভিচেছে কিন। শহদল।। **নানাজাতি পুজার্ক্ন শোভে চারিভিতে। ছে**রিলে জাল্ল, ভাষা দেবিক র চিতে॥ মল্লিকা মানতী জাতি গোলাপ টগর।েল গৃষ্ধ্য বুক কাঞ্চন স্থুনর॥ শালবী ধাতুকী আদি কুশুম নিকর।শোভিতেছে চারিদিকে অতি মনোহর॥ কত তরু চারিদিকে কিবা শোভা পার। বাড়িছে পুরীর শোভা রক্ষের শোঙায়। শাল তাল তমালাদি নানা তরুবর। শোভিতেছে চারিদিকে অতি মনোহর।। পুরার অপূর্বে শোভা করি দরশন। পুলকে,পূরিত, হয় ভাগবের মন। অন্তুত নির্মাণ আহা কৈলাস নগরী। হীরক-খটিত কিবা অতি মনো-

হারী॥ স্থাশন্ত পথ দব অতি মনোহর। হেরিলে জুড়ায় মন নয়ন য়ুগল॥
বিভ গৃহ কত বাঁটা পুরীর ভিউরে। রতনে নির্দিত কন্তে অতি শোভা য়য়ে॥
হর্ণের কণাট দব অতি মনোহর।হেরিলে জুড়ায়চক্ষু জুড়ায় অন্তর॥ এ হেন
েনাদ পুরী করি দরশন। ধীরে হীরে যায় ক্রমে ভার্গব নদন॥ ক্রমে ক্রমে
টপনীত আলি সিংহ্দারে। দেখিলেন দারী এক তথায় বিহরে॥ ভয়য়য়
বিশ তার অতি বিভীষণ। শিবের সমান দেই অপুর্বব দর্শনা হারেতে আছয়ে
দারী মহাবলবান্। লোহিত লোচন ব্যাস্থার্চর্ম পরিধান॥ পিঙ্গল বরণ জট।
শোভে শিরোপরে। শিশ্ল ধরিযে আছে টাড়ায়ে ছ্যারে॥ বিহ্নত আকার
লার মহাবলগান্। অনি দম মহাতেরে যেন দীন্দিমান্॥ দেখিলে তাহার রূপ
তি বিভীষণ। ত্যে ব্যাকুলত হয় দর্শকের মন॥ ভযে ভযে রাম তথা হয়ে
টানীত। দারপালে পরিচয় দিলেন তরিত॥ রাম কছে দার ছাড় ওছৈ
হালার। শিক দরশনে শাসি ভানিবে নিশ্চয়॥ দার ছাড় যাব আমি শক্ষর
গো,চরে। প্রাম করিব তার চরণ যুগলে॥

এতেক বচন দারা করিয়া এবণ। কহিলেন শুন শুন ওছে মহাত্ম।। ১০ হার ছারে লে বর অবস্থিতি। বাস্ত হও কেন এত প্রে মহামতি॥ অগ্রে ু । িবপাশে ক্রি গ্রম্ম বিল্য তোমার কথা শিবের মূলন ॥ আদেশ ো বুনং আনিলা হেথায়। সঙ্গে করি যাব পুন লইয়া তোমায়॥ শিবের ্ । ২০। বিবে গ্রন। স্থেক প্রতিশা কর ত্রেম্ছার্ন॥ এতেক ্তুনি ৬৩ মহ। তি। হইলেন মনে মনে প্রকুপিত অতি॥ অপেকা না ি ৩৭। করেন গমন। মপর দারেতে গিয়া উপনীত হন॥ যে জন আছিল , ২ইসা জ্যারী। তাহার রূপের কথা বলিবারে নারি॥ মহাকাম বলবান ্তি বিভীষণ। গোলাকার ৮কু তার অদ্ভুত দর্শন। তাহার নিকটে রাম রিশা গমন। কহিনেন আমি হই ঋণির নন্দন॥ গমন করিব আমি শিবের ্রে ৮রে। দ্ব। করি ছাড় দার কহিনু তোমারে॥ এতেক বচন উনি ক্রেন ে।রो। ছুলার ছাড়িতে এবে কভ্নাহি পারি॥ শিবের নিকটে আগে করিব গমন। আদেশ হইলে যাবে ওহে মহাত্মন্॥ ক্ষণকাল এই ভানে কর অবস্থিতি। শিবের নিকটে আমি চলিনু সম্প্রতি॥ এতেক বচন রাম করিয়া শ্রবণ। মহারোমভরে তিনি হলেন মগন॥তথায় অপেকা নাহি করিয়া ত**খন।** ফতগতি অন্য দ্বারে করেন গমন।। সে দ্বারে ছুযারী যেই করে অবস্থিতি। তাহার নিকটে য়ান রাম মহামতি॥ ধীরে ধীরে তার পাশে করিয়া গমন। कि रिलिन अरङ् स्रोती अनश् वहन ॥ मव स्रोत क्राय क्राय कित्रू अपन । स्रोत

না ছাড়িল কেই ওহে মহাজ্মন ॥ ব্রিয়া বুরিয়া গ্রান্ত হইয়াছি অতি। তুনি যদি রূপা কর ওহে মহামতি॥ রূপা করি যদি দারী ছাড়ি দেহ দার। তাহা ইলে হয় মম বিপদ উদ্ধার॥ রামের কাতর বাক্য করিয়া প্রবৃণ। দয়া উপঞ্জিল श्राप दात्रीत उथन ॥ दात हा जि भिल दाती श्रायित वहता। शिरत शिरत यान রাম শক্ষর সদনে॥ দেখিলেন বিসি আছে দেব মহেশ্র। মহাতেজে শোভ যেন শত দিবাকর॥ ত্রিশূল শোভিছে কিবা দেবদেব-করে। খেতবর্ণ মৃত্যুঞ্জয় সিংহাসনোপরে॥ নাগযজ্ঞ উপবীত শোভিছে গলায়। পরিধান বাঘছাল কিবা শোভা পায়।। অহিখালা গলদেশে অতি মনোহর। ভযেতে শোভিত কিবা দিব্য কলেবর।। শুভ্রবর্ণ জটাভার শোভে শিরোপরে। বিরাজেন ত্রধুনী কলকল করে॥ মহেশ্বর মনানন্দে মুদিয়া নগ্ন। নিজ আত্মা চিন্তা করে অখিল-কারণ॥ ভাঁহাতে হরিতে ভেদ কিছুমাত্র নয়। এক 'মাত্রা ৰ্মুর্ব্তিভেদ এইমাত্র হয়।। নয়ন মুদিয়া দেবদেব প্রণানন। ভক্তগধীন ভগবানে করেন চিন্তন। সবার আগ্রয় যিনি স্থিলের গতি। যাঁহা হতে জীবগণ লভয়ে মুক্তি॥ সেই নিরঞ্জনে সদা করেন চিন্তন। পঞ্চমুখে ছরিন্তণ গান পঞ্চানন॥ শোভিতেছে বামপাশে ভবানী ফুলরী 1 ব্যঙ্গন করিছে তাঁরে চারি সহচরী॥ **শিবের কিঙ্কর কত আছে** ভয়**ন্ধয়। হে**রিলে তাদের রূপ কাঁপে কলেবর॥ কত ভূত কত প্ৰেত যক দৈত্য আদি !বিহারিছে চারিদিকে নাহিক অবধি॥ ভৈরব বেতাল তাল করিছে বিহার। ডাকিনা গোগিনী ফাত কেবা গুণে আর । শিবের স্থানর সভা করি দর্শন। আনদে মগন হয় ভার্গবের মন।। शींदत शीदत निवशार्भ कतिया भगन। अकीटक एतर्व छात्र करत्न वलन॥ নেত্র মেলি দরশন করি মহেশবে। আন্দ কারণে ভাবে নয়নের নীরে॥ একাত অন্তরে রাম করি যোড়কর। ত্তব করে ধীরে ধীরে হইয়া কাতর॥

কিরপে করিব শুব ওছে পঞ্চানন। তোমার চরণে করি নিয়ত বন্দন॥
তবগুণ বর্ণিবারে কোন্জন পারে অনন্ত অনন্ত মুখে বর্ণিবারে নারে॥জল্জনে অনুরক্ত তুমি দিগদ্বর। আশুতোস তব নাম জানে সর্বনর॥ বেদেতে
তোমার তত্ত্ব আছে নিরপণ।তব তত্ত্ব কি বুঝি মোরা মূল্ডন॥ সরস্বতী তব
শুণ বর্ণিবারে নারে। শুণাতীত তুমি দেব জানি হে অন্তরে।তোমা হতে স্ত্র
রজ জন্মে তিন শুণ। কখন নিশুণ তুমি কখন স্প্রণ। কৃথন সাকার তুমি
কভু নিরাকার। অনাদি অনন্ত তুমি জগতের সার॥ যজের ঈশ্বর তুমি
যজকলদাতা। কাল্রপী তুমি দেব অখিলের পাতা॥ বেকারণে কর তুমি
জগত সূজন।বিজুরপে করিতেছ অখিল পালন॥ অন্তর্ণালে শ্বিরপে করহ

নংহার। কে বৃঝিবে তব লীলা ওছে গুণাধার॥ পরম পুরুষ তুমি কারণকারণ। তুমি জল তুমি হল প্রান্তর কানন॥ তোমার তুলনা নাহি এ ভব কি 
সংসায়ে। রুপানি ধি রুপা কর অধীন উপরে ॥ ওহে প্রভু তবপদ করি দরশন। 
সক্রণ জনম মম সার্থক জীবন॥ তোমার করুণা হয় যাহার উপরে। কি ভয় 
তাহার বল এ ভবসংসারে॥ ভবভয় দুচে তার নাহিক সংশয়। দয়া কর 
দয়ানিধি হও গো সদয়॥ যোগীগণ নিরন্তর মুদিয়া নয়ন। তব রূপ অন্তরেতে 
করেন চিন্তন ॥ তোমার আদেশে শিরে করিয়া ধারণ। নিরন্তর স্র্যাদেব 
দিতেছে কিরণ । তোমার আদেশে চন্দ্র গগন উপরে। মধুয়য়ী জ্যোৎস্বারাশি 
বিতরণ করে॥ তুমি গিরি তুমি নি গা তুমিই কানন। জ্যোতিক মণ্ডল তুমি 
ওহে পঞ্চানন॥ জগতের বন্ধ তুমি ওহে দিগদর। আন্তরোধ তব নাম খ্যাত 
চরাচর॥ তোমার চরণে নাথ করি নমস্কার। অধীন উপরে কর করুণা 
বিস্তার॥

স্তবে তুট হয়ে পরে দেব পঞ্চানন। কহিলেন মিউভাবে করি সম্বোধন। কে তুমি কোপ্স বাস বনহ আমায়। কি হেতু এসেছ বল আমার হেথার॥ কাহার নন্দন তুমি কহ মহ। জুন। কি কারণে আসিয়াছ আমার সদন॥ সত্য কণা কহ দৰ আমার গোচরে। এত শুনি মহাদেবী কহেন শক্ষরে॥ কি হেতু এদেছে এই বিপ্রের নন্দন। জিজ্ঞাসা করহ নাথ ওহে পঞ্চানন॥ এত বলি ভাগবেরে সধোধন করি। কহিলেন শুন শুন ওহে ব্রহ্মচারী॥ কি হেতু এনেছ এই কৈলাস নগর। বৈশেষ করিয়া বল ওছে মুনিবর।। নবীন বয়স ত্ব করি দর্শন্। 'কেন তবে, হেরিতেছি বিষয় বদন।। কি কারণে শোক বল হয়েছে অন্তরে। কি হেতু দুঃখিত তুমি বল মত্য করে॥ ভবানীর এই বাক্য করিয়া প্রবণ। করঘোড়ে কহে তাঁরে ভার্গব-নন্দন॥ নমস্কার তব পদে শুন গো শক্ষরি। ভক্তিভরে দোঁহাপদে নমস্কার করি॥ জমদ্গ্রি মম পিতা জানে সর্বজন। ভৃতবংশে জন্ম মম বিপ্রের নন্দন॥ রেণুকা জননী মন শুন গো ভবানী। ভৃগুরাম মম নাম ওছে শূলপাণি॥ দে কারণে শোক আসি খিরেছে আদারে। বলিতেছি সেই,কথা দোঁছার গোচরে॥ কার্তবীর্য্য নামে আছে প্রবল নৃপতি। সহস্রেক বাহু তার খ্যাত বস্ত্রমতী। একদিন চতুরক দৈত দক্ষে করে। মৃগয়া কারণে যায় কানন ভিতরে॥ বনমাঝে ঝড় র্**টি অকমাত হ**য়। রুক্ষে উঠি নরপতি সেই রাত্তে রয়॥ সৈত্যগণ রক্ষোপরি করি আ রোহণ। অনায়াদে সেই নিশা করিল যাপন। প্রভাতে নামিয়া সবে, বিকল-অন্তরে। রাজধানী উদ্দেশেতে ক্রমে যাতা করে॥

পৃথিমাঝে পিতা সহ হয দরশন। রাত্রির রতান্ত পিতা করেন এন।। রাজানের কাতর দেখি পিতার অন্তরে । দ্যা উপজিল তাহা নিবেদি গোহান<sub>ে।</sub> নৈন্ত সই নৃপ্তিরে করি নিমন্ত্রণ। আপন আগ্রমে পিতা, নিলেন তখন। **থুর্ডি-প্রদত্ত দ্রের করি আযোজন। সৈত্য সহ নৃপতিরে করান ভোলন**্ সুরভি দেখিয়া লোভ হইল রাজার। ফুর্ন্ব দ্ধি ঘটিল হায় কি বলিব অংব। পিতারে নৃপতি পরে করি সম্বোধন। কহিলেন শুন বাক্য ওছে তপোণন। সুরুভি প্রদান মুনে কর্ছ আমারে। ন্তুবা স্বলে আমি লইব তাখালে। অথবা সোমার সহ করহ সমর। এত বলি মহাক্র হব নরবর॥ তার পা যুদ্ধ করি অতি বিভীনে। আমার পি গারে রাজাঁ কারন নিধন।। সংস্থা হল মাতা পিতার সহিতে। আর কেই নাহি মম তোমার জগতে॥ পিত। বিষোগে আমি হইষা কাতর। প্রতিজ্ঞা করেছি গুলি ক্তি প্রাণা ক্ষত্রবংশ ন। রাখিব জগত-মানারে। নিম্মন হারের হা, তিলা । বা রেংষেতে প্রতিজ্ঞা আমি করেছি তখন।কি ছবে উপান এবে করিছি চিত্র। জুমি মাতা জুমি পিত। ওগো আগু গোৰ । এবনে উপরে ১ ৮ - ৩ বিলিতে। ।। পুদের উপায় কর ওছে পঞ্চানন। যাহাতে সাগার হল তেলা মালে। রামের এতেক বাক্য করিয়। শ্বণ। চলেতে শক্রী দেবা কালে। বহুকণ চিন্তা,করি শিবান। ভবানী। কহিলের শুন ত্য এছে ম্বার্নি।। অপ্পর্মতি অপ্পজ্ঞান নেহারি ভোষার। প্রতিজ্ঞ। ব্রে ও তুনি বিভাগ ব্যাং একবিংশবার পত্র করিবে নিধন। প্রতিজ্ঞা করের গুনি পাল ভাগোল **অতি মেহ করি আমি রাজার উপরে। পর** বৈষ্ণব তারে তানিকে ১ র . নিরন্তর হরিগুণ বদনে তাখার। হতিন্তব করে মদা মেই ওপাধার॥ কাখার শক্তি আছে ব্ধিতে তাহারে। হেন্বার নাহি হেরি ন°নার-ভিত্তে॥ তাহারে নাশিতে পাবে নাহি হেন জন। যাবত সহিবে মদ শরীরে জীবন॥ শিবের শক্তি কিবা ওহে তপোধন। আমি বিদ্যানে নাণে অর্জন রাজন॥ ' শুন শুন দ্বিজ্পিশু আমার বচন। আপন আল্যে শীঘ্র করহ গ্রন॥ দৈবের লিখন বল কে করে খণ্ডন। ছঃখ নাহি কর কিন্তু করহ গণন॥ প্রতিজ্ঞা করেছ তুমি ক্তিয় নিগনে। দে বাসনা ওছে দিজ না রাখিও মনে॥ এরপ দারুণ আশা কর পরিহার। হেরিতেছি অতি মন্দ তব ব্যবহার॥ ধামন হইয়া আশা চক্রমা ধরিতে। পলু হযে আশা কর গিরি আরোহিতে। আৰ্ন নৃপতি হয় অতি বলবান্। ধরাধানে কেবা আছে ভাহার সমান॥ পুণ্যকর্ম সদা করে সেই নরপতি। দানের সাগর সেই ওছে, মহামতি।

बरन गरन वाक्षा जव अरहं जरमायन । मिरवत महारत वध कतिरव ताजन ॥ এরপ পুরাশা নাইি করিও অন্তরে। অবিলম্পে ফিরি যাহ আপন আগারে। হেন বাক্য মুখে আর না আন কখন। অবিলয়ে যাহ ফিরি আপন ভবন। দেরীর এতেক বাক্য করিষা শ্রবণ। করযোড় করি রাম করেন রোদন। দ্বিকের নজন হয কানিয়া জাকুল। যেই দিকে দৃষ্টি করে নাহি দেখে কল 🖁 ্যাজিতে সাপন পাণ করিলা হনন। ধুলায় পঢ়িয়া মুনি করেন রোদন॥ হুনিরে কাতর দেখি দেব শহেশ্ব । পাক হীর দিলে চাহি করেন উত্তর। গুন ওন জগবতী আমার বুচন। আশিঘাতে এই হানে মুনির নুদ্দন॥ हर असूध्र भारत (क्रें ए) कारण। आधिमार मनिवत देवलाम ख्याना। শ্তরক ক্রপা কর উহার উপর। দেখ দেখ দিজনিত প্তাক কাতর॥ निन्त ना इट प्रिनो विट्र উপনি। ক.৮१। কটা ম কর ভাষ গো শকরो। रित नाष्टि क्षम। कत विरायत चेरोत । अध्य तर्वित खब जगड चिखत ॥ শ্রহারে এত লনি দেব প্রান্ন। সামেরে দ্রোধি কছে মধুর বচন। उ चेर्र वि' विरुवा का जावता चाल २८० वान चूमि श्रूरवा मनन ॥ মনোর্ক নিল ১৫ হবে কি হয়। বিজ্বাস্থিত আমি কলে ম**হোদ্য।** (र भण्ड १ छोटन को २८व विस्वतन। नामिए अधितरव टारे अर्धन तालटना एक्टन मन्द्रा करता तन्तायमा अवित्र त्थामा को वि आर्टन प्लयन ॥ । ১০৮ ব)ন ব, ব বের মহেশর। িবিপ্র বেন হামে ক্রি। ভাদর ষ কংসাদি মশ্বনু কানে পদান। পাওপত অস্তু দেন মহেশ ধীমার।। নিগণাশ তাপ করি কিত অজ দিল। তাস গেবে ৬৪লাম পরিভুক হৈল। পুর্কিত মনে লে-লের প্রালন। মন্ত্র বহু শর রাবে করেন অপ্র।। বাণের মতেক গুণ কি বনিব আরে ৷ বান পোন পান রাম থানন অপার ॥ থাশীর্কাদ করি পরে হতুর ন্দ্রে। বিদাব দিবেলন কিংব হর্ষিত মনে॥ विषांत सरेया तांन करतन ६ सान। शुनारा विव वन्या सुधात नमान॥ (यहे जन ७ करन कतरा भेता। भनानार्य मुक इर रमहे माधुजन॥ যভেক পাতক থাকে তৈ হোর শ করে। এব- মানে তে সৰ চলি যায় দুরো। णारे वर्ण रिक कालो अरत मृत्र मन। धक्मरन वर्षक्थ वरह अन्।॥

# **ठ**ञ्बिर्भ ञक्षाञ्च

#### পরভ্রামের যুদ্ধাতা।

সনৎকুমার উবাচ।

আদিকৌ দেবদেবেন গড়াপ্রমং মহামূনিঃ।
মনসি চিন্তয়ামাস কথং প্রণমনোরথঃ॥

ঋষিগণ সম্বোধিয়া বিধির কুনারে। পুনশ্চ জিজ্ঞাসা করে মুমধুর স্বরে॥ বাঁলিলে অপূর্যব কথা ওহে মহাজ্বন। যত গুনি তত রদ্ধি হয় আকিঞ্চন॥ অতএব পূর্ণ কর বাসনা সবার। তুমি দেব মহাজ্ঞানী মহিমা অপার॥ ভুগুরাম শিবপাশে হইয়া বিদায়। কি করিল কোথা গেল বল ম্রাকায। এতেক বচন শুনি বিধির নন্দন। কহিলেন শুন শুন ০হে ঋষিগণ। **শিবের নিকটে রাম হ**ইয়া বিদাব। মনের হরিষে পরে নিজগুহে যায়॥ আপন আশ্রমে রাম করি আগমন। মনে মনে ফৌন খাবে করেন চিন্তন॥ এতদিনে বাঞ্চাপুর্ণ হইল আমার। গাইল ক্তিবের বল যিনি দয়।গার॥ প্রতিজ্ঞা করেছি আমি শ্বতিষ নিধনে। না রাখিব শ্বতকুন করিয়াহি মনে॥ মহাপাপা সেই হুট অর্জন নূপতি। আমার পিতার গৃহে হইয়া অতিথি॥ মানাবিধরপ দ্রবা করিল ভোঁজন। তার প্রতিফল দিল খধম রাজন॥ **এখন আ**র কিবা ভয় দেই জুরজনে। অচিবের পাঠাব তারে শ্যনস্দনে॥ পিতার শোকেতে মম কাত্র অন্তর। নাশিলে রাজারে তবে হব হিরতর॥ কোপা ওরে ছুরাচাব অর্জুন রাজন। বিপ্রেরে সমরে তুই করিলি নিধন॥ স্প্রহঙ্কারে মত্ত তুই ওরে হুরমতি। তোর বং শে না রহিবে দিতে কেহ বাতী॥ জন্মহত্যা অনায়াসে করিলি সাধন। বন দেখি কেন হেন তব আচরণ॥ সবংশে মারিলে তোরে যাবে তুঃখভার। জন্মেছিদ শত্রুকুলে তুই কুলাঙ্গার॥ भवः दर्भ इहेरि पुरे अवशा निधन। आभात वहन भिथा। नटह कलाहन।। বিপ্রবধ করি তুই ওরে তুরাচার। বান্ধিলি অধর্ম-দেতু **নাহি**ক নিস্তার॥ মনে মনে এইরূপ করিয়া চিন্তন। মহারোধে জ্বলি উর্টে ঋষির নন্দন॥ ক্রোধভরে ধনু ভুণ লইলেন করে। রাজার উদ্দেশে ধার্ম অতি বেগভরে॥ পথিমাঝে **স্থমগ**ণ হয় দরশন। তাহা ,দেখি ভার্গবের প্রাফুল বদন।। জ্ঞাতল গেল ক্রমে রাজার উদ্দেশে।পথিমাঝে ক্রমে ক্রমে সন্ধানেরী আন্দেশ অন্তাচলে গেল ক্রমে দেব দিবাকর। অন্ধনার আনি পর্শে গেদ-বিত্ব ॥ সন্ধান সমতীত ক্রমে আনিল রজনী। শন্ শন্ বহে বায়ু কর্ণে নালি পূর্ণি॥ চারিদিকে বাছিলি নিশাচরগণ। পেচক বাশির হস ভিলাদর্শনা লি প্রজ্ঞ কত ক্রমে কেবা তাহা গণে। উপনীত ভ্রুরাম নর্মদাপুলে না মহান্যাের নিশা ক্রমে করি দরশন। মনে মনে ভ্রুরাম করেন চিন্তন॥ অক্য়ে বটের মূলে বিস্তার পর। চারিদিকে নেত্রপাত করে হাযিবর॥ তার পর প্রশাসা করিয়া চয়ন। শযন করিল তাহে মুনির নক্ষন॥ নানাবিধ স্থা লেখে নিদ্রার বিঘোরে। ক্রমে নিশা অবসান কহি স্বাকারে॥ পুরাণে মুখার কথা অতি মনোরম। শবণে পাতক নাশ শান্তের বচন॥

প ক্ৰিৎ শ তথ্যার।
কাওবিংহার বি এ দিকাদর্শন।
কাওবিংহার বি এ দিকাদর্শন।
কাৎকুদার দ্বাচ।
পোতক্রেত্য সমাধার দ্বিত শুকুলোভবঃ।
প্রৈর্ফত ত্যের প্র স্বোহণ রাজস্মিরিধং॥

পুন্ত বনেন দেব বিধির নক্ষন। শুন শুন তার পর ওছে ঋষিগণ।।

নিদা হতে উঠি ভূঞ্রান মহামতি। প্রাতঃরুত্য স্থাধান করি স্থাবিধি।।

নিদা নিদালৈ স্থান করিবা বিধানে। পাঠালেন দৃত এক নৃপাত সদনে॥

রাদার নিদ্ধে দুত উপনাত হয়। ঋারি আদেশ যাহা সকলই কয়॥

শুন শুন মহারাজ করি নিলেদন। রামদূত হযে আমি করি আগমন॥

পিতৃশক্র তুমি তাঁর জানিও অন্তা। তাই আমে ভ্গুরাম সমরের তরে॥

শরাধানে ক্ষ্রজাতি না রাখিবে আরে। নিঃক্ষর করিবে পুরা একবিংশবার॥

লভিয়াছে বর রাম শিবের গোচরে। আসিরাছে সেই হেতু স্মরের তরে॥

নর্দা-পুলিনে রাম করে অবস্থিতি। বিদ্লে আছে তিনি ওছে মহামতি॥

যুদ্ধ দক্ষা কর রাজা অতীব ত্রায়। সকল রক্তান্ত নূপ কহিন্ম তোমায়॥

উচিত বিধান তবে কর মহামতি। এত বলি চলি যায় দূত ক্রওগতি॥

দুতের যতেক বাক্য করিয়া শ্রবণ। চিন্তাকুল হরে রাজা অধােমুখে রন॥

ভয়েতে রাজার হাদি অতীব কাত্র। যে দিকে করেন দৃষ্টি বিপাদ সাগর॥

ভীষণ ম্বতি ধেন সন্মুখ্তে আলে। তীক্ষ অসি হাতেকরি চাহিছে সরােদে।

বিকট বদন তার বিকট আকার। ভয়েতে আফুল হন রাজা ওণাং। তার পর শৈষ্য ধরি অর্জুন রাজন। সাদেশ করেন দৈতো নাভিতে তখন। ুরাজার **আদেশ পে**যে চতুরক বল। জতগতি রণ্যক্তা করিল ন্বল। রাম সহ যুদ্ধ হবে এই সে কারণে। নীম করি সালে তেনা যেনত বিথানে। ত্তৃস্থার করি চেহ বরে আক্ষালন। বাহনাক্ষে ট করে বেহ ভাতি ঘন দর। রণনজ্জা এই কপে করিয়া হাজন। অভঃপরে গেল কালা পাণীর নদন। खाराना मिक्री छात्र नाम र तारिया। एतर नाहिक (कारा क दिन करना ॥ ज्ञाणीत निकटने ताल। कटक विरत्ता जासिराटक पृथ्याम सम्बन्धातन ॥ मर्चार्श्वित जारह कि श्रेश्वित विकास र दिस्य स्थे दूरि ॥ শরাধানে পত্র নাম না বাধিবে জার ৷ কিনে না ব বিবে প্রী ভিন্ন বার দ व्यक्तिश्रांत्क दत्त तांश मिरदत रा हरता वर्ष १८१२ १ । १९११ र । रन वर्ष वरता ·मयात (६ म कार्य क्टिन प्रकार्त करा कार्य करा कर से पिए एक करा ভান ভান প্রাথেষ্ট্র বিচন পাদ র। বিশাস বাবে এবে মাবা বিভাগি। অষ্ঠল চারিদিকে করি ভিরিশ্য বং একা হার্থ ১০বছ বলক বামচকা হন হন দেখা ভূতাৰ রে । চলিছে । গার্পি নার মারি পাল্য। হস্ত হতে জানি খানি হতে তে প্রনা ১৭৭ নে । নিংধ বা ১:4 । (क राम भन्ति । क्रिक क्रि ষ্ত্রেক শে আর কভ নাহি পারতাগ। খানে নাতে ৬০:।ম ন্নতেবালা **धाइतभ वि**छेतियका बटलटक पर्यम । सद्दीन ६८८५ । ४ ८ ६ हो ३५। অক্ষাত বক্তাঘাত বিনা মেথে হয়। সংগ্ৰহ চাহিচিতে সতেতে বৈদ্যা খন খন গর্দ্ধতের। তাকিছে মখনে। রোধন করিছে এব বুরুরের। দিনে। ক্রম নাচিছে কৃত করি দুখন। ভারেতে আক্র ম্য ২ংতেতে সন্ম বিক্লত স্বরেতে যত তুরসমগ্র। ঘন দন মাবরল নারছে গর্জনে॥ বাজার এতেক বাক্য শুনিয়া গৃহিণী। ভীতা হযে স্কাত্র। হন বিষাদিনী॥ মৌনভাবে অধ্যেয়থে করেন রোদন। পুরাণ শুনিলে হয় পাপ বিনাশম॥

#### रष्ठेवि९म क्रशाया

-- \*\* \* --

## द्रांगी कर्ड्क नृपंजितक माखना।

गन १ इस्ति । उवाह ।

শ্রুতা তল্বচনং দেবী রাজীতক্স মনোরম। । রুরোদ বত্রপাসা চ বিকলেন্দ্রিয়ামনসা॥

বিধিয়ত কহে পুন শুন শ্বিপে। তার পর হয় যাহা অপুর্ব ছটন।। রালার বচন ওনি কলে।র গৃহিণী। অবিংশ কালে দেবী হয়ে বিবাদিনী॥ বিল্ল-বচনে এছে নাথেরে ভখন। শুন শুন প্রাণনাথ আমার বচন॥ কেন যান্দ্ৰত কোন বিপদ ঘটল। কোন বিধি এতদিনে এ বাদ নাগিল॥ শুন নরপতি আমার বচন। আনিযাছে ভ্রুরাম করিবারে রণ॥ জানি ত। নি নে বিংকার পাতি মহামতি। বিজ্ঞা অংশেতে জন্ম ওছে নরপতি॥ মনোমর এব ভার শুনহ রামন। এপ-অনুরূপ গুণ জানে মর্ক্জন। শিবের প্রম লিটা মেই মহামতি। বিটেছেন বহু অস্ত্র দেব প্রপ্রতি॥ মন্ত্র মহ জন্ত্র মান্ত্রেন বিশ্ব: এত লভি হন রাম মহাবলবাল। বিধির আদেশে রাম क्यानिक भरत । शिवाहि। देवनारमण्ड गिरदे मन्द्रत ॥ **व्याहर्टाय इके** ংয়ে রামের উপরে। মন্ত্র মহ অন্ত্র দেন কহিনু তোমারে॥ অঙ্গীকার ক্রিয়াছে নেই বুনিবর। ক্ষত্রকুল না রাখিবে অবনী-ভিতর॥ ্রিজ্যে রভু না হবে খণ্ডন। সভ্য সভ্য এই বাফা জানিও রাজন ॥ মহাদেব বর দিন নেই মুনিবরে। হাজবংশ ধুনা হবে এই বাক্য বলে॥ ভাতএব ত্র নাথ আবার বচন। সমরে পুরশ্চ আর না করো গ্রন। মুনি সনে যদি এছু করহ ন্মর। নিশ্চধ ঘাইতে হবে শ্বন গোচর॥ অতএব সমরেছে ন। কর্ম গমন। আমার বচন দুপা করহ এবণ।। কাল যবে পূর্ণ হয় ওহে নরপতি। রাথিতে তথন বল কাহার শকতি॥ মহাধীর চিরদিন কভু নাহি রয়। কালবশে হবে তার জানিবেক লয়॥ যেই জন ধর্মরকা করে নিরন্তর । তাছারে রক্ষেন ধর্ম ওহে নূপবর ॥ অধর্ম করেছ তুমি নিজ-বৃদ্ধিদোবে। দেহেতু পড়িলে নাথ ত্রান্ধণের রোখে॥ শুন শুন নরপতি বেদের বচন । সংসার নহেক নিত্য জানিবে কখন॥ জগতে অনিত্য সব কিছু নিত্য নয়। বারিবিদ্ধ সম বিশ্ব জানিবে নিশ্চয়॥ সণকাল হেতু মাত্র

🐃 নিবে সংসার। মায়াতে না বুঝৈ কেছ ওছে গুণাধার॥ সভাষাত্র শুদ্ধ সেই দেব নিরঞ্জন। আদি-অন্ত-ছীন যিনি অখিলকারণ ॥ যিনি তৃক্ষ যিনি স্থুল দেব-দেব ছরি। ভবার্ণবে যিনি হন বিপ্তি-কাণ্ডারী॥ . অধর্মে মগন ,হয়ে না ভাবিলে তাঁরে। এখন উচিত ফল ছাতে ছাতে ফলে॥ হিংসাতে নিমগ্ন হৈল তোমার অন্তর। দে হেতু ছুর্দ্দশা এত ওচে নৃপবর ॥ হের দেখি নৃপবর কি কাজ করিলে। অধর্ম হেতুতে তুমি দাগরে ভবিলে॥ কাননে গেলে হে ভূমি মুগ্যা-কারণ। অনশনে রক্ষোপরে ধামিনা যাপন॥ অভিথি করিল তোঁমা তাপ্দপ্রর। উপহার নানাবিধ অপ্লি বিওর॥ কিন্তু তুমি মদমত্ত হইয়া নৃপতি। অভায করিলে কত ওচে মহামতি॥ ধেনুর লোভেতে বধ করিলে ত্রাহ্মণ। পাপের সাগরে তুমি হলে নি-গ্রন। ১'ব দেখি প্রাণ-নাথ আপনার মনে। অংশ করেছ কত না যাল বর্ণনে।। ওত্রব হল বাক্য করহ এবণ। কুঠার বারিলা গনে করহ গমন।। বাচিবার লাব যদি থাক্যে অতরে। যদি বাঞ্চা কর ক্তর্কুল র্ফিবারে॥ ক্রতগতি রামপাশে করহ গমন। ভাঁহার চরণে গিদ। মাগহ শরণ॥ অযশ তাহাতে ৩৭ কভু না বাড়িবে ৷ বরঞ্জুঘশ তব জগতে দূষিবে ॥ অক্শ্য মদ্য হবে দেই তপোধন। বিপ্রজাতি অশেপ তুট বিদি ৷ ভুবন ॥ স্থামার বচন ২র ওছে প্রাণেশ্র। **জ্ঞতগতি যাহ চলি রামে**র গোচর॥ স্বরুল হ্থে নাতি স্থাবে নিধন। তোমার মঙ্গল হবে ওহে প্রাণধন॥ বিপ্রজাতি মঞ্ডঞ বিদিতভুবনে। **বৈশ্য হ**য় স্বা**লাস জানে সর্**বজনে॥ বৈশ্যদাস শূর্গণ ওহে নৃপবর। বেদের বিধান এই জানে সর্কানর।। বিপ্রগণ সর্কগুল বিদিত ভুবন। বিত্রের পৃজিলে নাহি অয়শ কখন॥ বিপ্রগণ তুঐ হন যাহার উপরে। মদল করেন তার অমর-নিকরে॥ শুন শুন মম বাক্য ৬হে নরপতি। হিত্রাকা যাহা কহি ধরহ সংপ্রতি॥ ক্ষর হযে ক্ষরদেব। যেই জন করে। কাপুরুষ সেই জন সংসার-মাঝারে॥ বিপ্রের শরণ কিন্তু লব যেহ জন। সুখ্যাতি ুরটহে তার এ তিন ভুবন।। সেই জন মোক্ষ্পিদ অবহেলে পায়। এতএব ওন যাহা বলি গো তোমায। অবিলম্বে ঋষিপাশে করহ গর্মন। ভাঁহার চরণে গিয়া লভহ শরণ।। বিপদ তোমার নাহি কদাচ ঘটিবে। অবশ্য কল্যাণ তুমি সর্ববা লভিবে॥ বিপ্রদেবা হতে শ্রেষ্ঠ কিছু নাহি আরু । মম বাক্য শুন এবে ওহে গুণাধার॥ আমার বচন যদি করহ এবণ। অরশ্য হইবে ভূমি कन्तान डाक्न। नज्या त्नरयट इटन अवि अभन्न। , आभात वहन ताथ ওহে নৃপকর।। এত কহি নৃপরাণা করয়ে লোদন। গন খন নৃপা প্রতি করে

নিরীকণ ॥ পুনরায় নৃপরাণী কান্দিতে কান্দিতে। বিনয়-বচন কহে রাজার লাকাতে॥ শুন শুন নৃপবর আমার বচন। পতিসেবা নারীধর্ম বিদিশু ভুবন॥ সেবিক তোমার পদ জনমের তরে। এখন আহার কর কহিন্ম তোমারে॥ বল দেখি মহারাজ স্বরূপ বচন। কিবা ফল পতি বিনা সতীর জীবন॥ তীর্ণ ত্রত ভপ জপ যাহা কিছু হয়। পতিসেবা কাছে কিছু কিছু- মাত্র নয়॥ সেই পতিহীনা হয় যেই নারীজন। তাহার জীবনে বল কিবা প্রয়েজন।। অতএব মম বাক্য শুন নরপতি। যুদ্ধ-আশা হৃদি হতে, তাজহ সংপ্রতি॥

রাণীর এতেক বাক্য করিয়া প্রবণ। বিষ্টভাষে নরপতি কহেন তখন ॥ শুন শুন প্রিরতমে বচন আমার। শুনিলাম ওহে প্রিয়ে বচন তোমার।। কর্মবশে সব হয সব আমি জানি। সকলি কর্মের ফন জানি সুবদনি॥ কালবশে সব হয় কালে লা হয়। কালবশে ঘটে সব নাহিক সংশ্য॥ কালবশে ধনী ২ , কালে নরপতি। কালবশে জন্মে লোক দরিদ্রের বসতি॥ কালবশে রৃদ্ধি পায় জগতের জন। কালবশে কর হয় শান্তের বচন॥ কালেতে প্রজার সৃষ্টি প্রজাপতি করে। কালবশে স্থিতি হয় জানে সক্ষনরে॥ কালবশে নারায়ণ করেন পালন। কালেতে বিনাশ পায় শাস্ত্রের বচন॥ যত কিছু দৃষ্ট হয় ভ্ৰনমাঝারে। কালের বশগ সব জানিবে অন্তরে॥ কা-রূপা সেই হরি বিনি নিরঞ্জন। একমাত্র তিনি স্তা বেদের বচন 1 কালবশৈ সৃষ্টি করে ভ্রন্ধা প্রজাপতি। কালবশে বিফু পালে এই দুস্মতী॥ দশরের ইচ্ছা কভুন। হয় খণ্ডন। খণ্ডিবারে পারে তাহা নাহি হেন জন॥ তাহার ইচ্ছার সৃষ্টি হয় নিরণর। তাহার ইচ্ছার মৃত্যু জানে সর্ধনর॥ অগতির গতি তিনি অখিলের পতি। সৃষ্টিকর্তা রক্ষাকর্ত্তা সেই মহামতি॥ কারণ-কারণ তিনি প্রধান স্বার। তিনি না রাখিলে রাখে হৈন শক্তি কার॥**,ভাঁহার আদেশে** কার্য্যকরে সুরগণ। ভাঁহার ইচ্ছায় বায়ু **হতেছে** বহন॥ তাঁহার আদেশে যন একাওঁ অন্তরে। জীবের সংহার করে জানিবে অম্বরে॥ ভাঁহার আদেশে এদা করেন সৃজন। ভাঁহার আদেশে হয় বারি বরিষণ।। তাঁহার আদেশে স্থ্য গগন-উপরে। নিরন্তর তীক্ষ্ণ কর বিতরণ করে॥ তাঁহার আদেশে চন্দ্র দিতৈছে কিরণ। তাঁহার আদেশে ফল দেয় তরুগা।। ভাঁহার আদেশে শন্য শন্য গাছে ধরে। ভাঁহার আদেশে কাল অমিছে সংসারে॥ বিশ্বের যতেক কার্য্য কর দরশন। তাঁহার আদেশে মৰ হতেছে ঘটন।। কালবুশে জয় হয় কালেতে সংহার। কালবুশে বাঞ্চা

मिक्षि कृतिराज बद्यान ॥ अनिज्य भीवन यति मध्मात्र-यांबादत । वर्ष्य करत ষেই জন অহন্ধার ভরে । ছুরাশয় সেই জন নাহিক সংশয়। তাহার পতন ৃহয় অভিরে নিশ্চয়॥ অদুউলিখন বল কে করে খণ্ডন। খণ্ডিবারে পারে ্ভাষা নাহি হেন জন॥ তবে কেন শোক কর প্রো। ওপ্রতী। রোদন স্বর দেবি আমার ভারতী।। মনুদোর নাধ্য কিছু নাহিক সংনারে। শোক তাপ নাহি,কর আপন অভরে॥ বিজ্র অংশেতে জলে রাম তপোধন্। শক্রিয় বধের হেতু তাঁহাব জনম॥ বিফল নাহিক হবে ভার অদীকার। ফত্তকুল নির্মূলে ছইবে সংহার॥ শিবপাশে মহাবর লচেত্তে মে জন। তাহার অত্যথা করে নাহি হেন জন। ভাঁছার শরণ নিনে কন নাচি হবে। স্তুতি নতি তাঁৰ পাশে বিদলে যাইবে॥ খোরে মদা না করিবে দেই ভপোলন। কেন বল তবে লব ভাঁহার শ্রণ॥ আমানে বিদ্বে কেই খনি মচক হি। ইছার অত্যথা নাছি হবে ওয়ো নতি॥ इन করি যদি দরি সাছবে পৌলো। हैं हैं लिएक श्रेतलाएक इंडिएवक येगा। निर्धिश्व मा उत् (ति कुमें के स्पा) অবশা করিব গামি খানি সহ রগা। এত বলি নুপ্রর মে নভারে রন। সমুচ্টে ভাকি পরে নাজিবারে ক্য॥ মেনাগণে মিউলালে ।রি २: १६ । कहित्नम ७म ७म आयात रहम।। भीष कृति त्राम जा र १ व र १०८७। অবিলধ্যে যেতে হবে নর্ম্মার তীরে॥ আসিমাছে সেই ইননে : নি মহানতি ভাষার সহিতে যুদ্ধ ঘটিবে সংপ্রতি॥ রাজার আদেশ পেয়ে ৭০ গেলাগে। আনন্দ ভরেতে সবে সাজিল তখন॥ কত অধ গ্রাস নাজে রথ বহাত । পালতি সাজিল কত অতি ভয়স্কর। রণবাদা শাস্তে গাছে অতি ঘন ঘন। मृপতि উन्याग करत कतिराज्ञ गमन ॥ स्मिकाल ताकाली जुलि दित दर। শুন শুন প্রাণনাথ ওছে মহোদয়। শুন শুন প্রাণকাত্ত মম নিবেদন। রাম সহ যুদ্ধে নাহি করিও গমন॥ যদি তুমি যুদ্ধে যাও ওচে নরপতি। নিশ্য মরিবে তব অধীনী যুবতী॥ এই মত কত বাক্য নরপতি কর। ক্রিফুতে বিরত নাহি নৃপ মহোদয়॥ কালবশে নরপতি কিছু নাহি ভনে। কালে আক্রিছে তাঁরে যাইবারে রণে । তাহা হেরি মনোর্মা না কহে বচন। কেলিগৃহে রাজসনে করিল গমন॥ প্রাণনাথে বক্ষোপরি ধারণ করিলে। বলে কোঞা যাবে নাথ আমারে ছাড়িরে॥ যদি রণে হয় নাথ তোমাব মরণ। কোথায় রহিব আমি বলহ বচন ॥ সর্বে অমে আমি মরি দেখ নরপতি। পশ্চাতে যাইও যুদ্ধে ওছে মহামতি॥ তোমার মরণ নাহি করিব দর্শন। পতिशीना वमगीत विकल कीवन ॥ विश्वा धरेशा वल कि काक धरात।

> मिखि भागित्र हो।
>
> होत्रहीतः १०१० व सम् वा साम्या स्टर्गाटा १४२ । राजीदार १९०० राजीदार १००० व १९०० व्याहका । १९०० व १०० विकास विद्याह को ॥

্করিত ঘেই কোমল শয়ায়। আজি দেই গুণবতী ধূলায় লুটায়॥ তাহা (मिक्स मत्र पिक्क करत्रम (त्रापन। कान्स्या आकृत इन त्राकात नमन॥ विनाश "করেন কত বর্ণিবারে নারি। উঠিছ-স্বরে কান্দে মনোরম্য বক্ষে করি॥ রাজা কছে কোথা প্রিয়ে করিলে গমন। কি হবে আমার গতি কহ এইক্ষণা ইতামা বিনা ওগো সতি এ ভবসংসার। যে দিকে নেছারি সব খোর অন্ধ-্কার।। শুঅমর সব এবে করি দর্শন। উঠ প্রিয়ে উঠ সতি শুনহ বচন। পততের বেদনা মম দিও না স্থদরি। ধূলায পড়িয়া কেন উঠ ত্রা করি॥ ঁকোমস কমলমুখ আছিন তোমার। বিবর্ণ হেরিয়া বক ফাটিছে আমার॥ 'অভিন হতেছে প্রাণ শুন গো বচন। ধরাদনে আহ প্রিয়ে কিটের কাশি॥ 🔭 ভিমানে আছ বুঝি পড়িযে ধরাষ। স্বরূপ বচন বল স্থীন আমায॥ 📑 ত্ব হৈতু শৃত্ত আছে হের রহাসন। ত্রা করি রহাসন করহ এছণ॥ শুন প্রিয়ে আর নাহি ঘাইব সমরে। উঠ বরাননে সতি নেহাবি তোমারে॥ তোমার •বদন হেরি কালিমাবরণ। হৃদয নরন মম হতেছে দহন॥ কেন ধনি পরা শনে আছ অচেতনে। চঞ্চল পরাণ মম হেরিখে নগনে॥ আর নাহি যুদ্দে **ংজামি করিব গমন। এক সঙ্গে** বৰ সদা স্বৰুণ বচন। ত্বরা করি উঠি বৈদ ওগো গুণবতী। তব লাগি কান্দিতেছে তব পোণপতি॥ বারেক উঠিয়া বৈদ আমার বচন। সুধামাখা কথা কছ ওছে প্রাণ্যন॥ বারেক কহিন। ্**কথা জুড়াও হৃদয়। অখ্যির হতেছে** গ্রাণ আর নাহি রয়॥ বি সের কারণে **শতি ভূতদ-শয়নে। মুখশ**শী মান বেন হেরি গে। নহনে॥ **করিসু আমি ভোমার গোচর।** রামের সাহতে নাহি করিব সমর॥ যদি ভুনি কথা কহ আমার সহিতে। আর নাহি যাব আমি সমর-ভূমিতে। যদি উঠ গুণ-বতী ত্যজি ধরসিন। আর নাহি যাব আমি করিবারে রণ॥ অনুক্ষণ গৃহে রব তোমারে লইয়ে। রহস্য করিব কত শানন্দ হৃদ্যে। মন্ত্রুপে আমোদাদি কবিব তুমনে। নতত করিব কেলি পুলকিত মনে॥ উঠ প্রিয়ে একবাব শুনহ बहुम । জলকেলি করিবারে চলহ এখন ॥ চল যাই ছুই জনে গোদাবরী-তীরে। জলকেলি করি গিয়া সানন অন্তরে॥ উভয়ে মিটাই গিয়া মনের বাসনা। চল চল প্রাণপ্রিয়ে ওগো মনোরমা॥ অথবা চলহ যাই পুঞ্জভট্রা-ভীরে। জীড়া করি ছই জনে সেই নদীনীরে। নির্জ্ঞান বসিয়া দোঁহে রকরস করি। উঠ উঠ ব্রা করি প্রাণের স্থুনরী।। যথা 🕏ব ইচছা হয় ওগো ত্তণৰতী। চল যাই দুই জনে তথায় সংপ্ৰতি॥ মলয়-কাননে যদি তব रेष्ट्रा रहा। उथात्र घारेव (माटर मानल-श्रमहा॥ बलव वस्तरेट आरह जलन-

কানন। গান্ধবহ মৃত্ মৃত্ বহে সর্বাহণ । দৌহে মিলি ক্রত চল সেই ছানে ঘাই। মনের বাসনা দৌহে হুঁথেতে মিটাই॥ নানাবিধ ফুল তথা রয়েছে ফুটিয়ে। জলিকুল বিহরিছে পুলক-হৃদয়ে॥ ডাকিতেছে পিকগণ লদা সর্বাহণ তথায় বিরাজ করে নদত মদন॥ পথ শর হাতে লয়ে কাম মহামতি। সেই ছানে নিরন্তর করে জবছিতি॥ উঠ প্রিয়ে তথা ঘাই বিলম্বে কি কল। কেন এত ঘোর নিদ্রা উঠ ক্রততর॥ আমার সহিতে কথা কহ একবার। এত নিদ্রা কেন আজি ঘটিল তোমার॥

হতজ্ঞান হয়ে রাজা এ হেন একারে। কত্যতে খেদ করে মনোরমা-ভরে॥ ক্ষণ পরে জ্ঞান পায় রাজার নদন। ছুই চকে বারিধারা হয় নিপতন। তখন বিলপে পুনঃ হায় হায় হায়। কি দোষে নাগরে বিধি ফেলিলে **আমায়!**। কি ছেতু প্রিয়ারে মম কটিলে হরণ। ছুরাটার তুই বিধি অতি **ছুরাজ্মন**॥ দ্বার ক্রিফা নাহি তোমার শরীরে। পাষাণে গঠিত তুমি জানিতু **সন্তরে।**। • ' নতার পরাণধন করিনি হন। কি দে।স করিনাছিল **ওরে দুরাত্মন** কিরপে আলিটা ভুই মন অনাদিতে। হারিলি প্রাণের প্রিয়া আমি কোন পথে ॥ কিরুপে পরা পাধী করিলি হরণ। এই কি বিধির রীতি ওরে ছুরাছুন্।। কিছু নাহি হল ভয তোমার অন্তরে। জনায়াদে মম হৃদে ছুরিকা, মারিলে॥ এইরপে খেন করি অর্জুন রাজন। ভূমিতে পড়িয়া হয় ধূলায়ং লুগন। গঢ়াগড়ি দেশ কত প্রিম। ধুলাধ। বকে করাঘাত করে ঘন ঘন তাব।। মহাত্রুবেধ অপ্রকারি করে বিসর্জ্বন। হেনকালে দৈববাণী হইল তখন।। গঞ্জীর রবেতে প্রনি ইঠিন গগনে। "শুন শুন নুপবর শুনহ প্রবণে॥ শোকেতে আফুন কেন ওছে নরপতি। মরিয়াছে তব প্রিয়া গুণবতী সভী॥ মরিলে কি পুন আর লভয়ে জীবন। মহাশোকে কেন তবে হও নিমগন॥ ভূমি রাজা মহাজ্ঞানী মহাবৃদ্ধিদ। নৃ। তবে কেন কর শোক প্রাকৃত সমান॥ মণার প্রধান ভূমি ওচে নরপা । ভোমারে বলহ কিবা বুঝাব সংপ্রতি॥ জগত-মার্শারে হের যত জীবগণ। • ক্লণকাল হেতু সবে লভেছে জনম। অনিত্য সকলি জান কেছ নিত্য নয়। তবে কেন কান্দিতেছ ওচে মহোদয়॥ ' তব नाडी मटनात्रमा अपना नलना। ७८० ७०व जी ग्रे क्यरनत नमा॥ আপন জীবন ধনী করি বিলক্ষ্ম। গিয়াছেন মনমুখে কমলাভবন॥ ত্ন ত্ন এবে ভূমি ওছে নরবর ! শীঘ্র করি যাহ ভূমি করিতে নমর।। নত্তরে আপন দেই করি বিসজ্জন। বৈকৃত নগরে যাবে ওছে মহাত্ন॥ তথা गटनात्रमा मङ् मिलीम इहेर्द्र। छ्हे जटन मनसूर्य विद्यात क मिछन ॥

্রিশেন ত্যজহ শোক ওছে নরবর। ক্রতগতি যাহ তুমি করিতে সময়। প্রাক্তর দিমান কেন করিছ রোদন। বিজ্ঞানে শোক নাঁহি কংয়ে কখন॥"

এইরূপ দৈববাণী করিলা এবল। কিলিৎ সুহির হল নুপতি-নুক্ষন। শোক ভাজি থৈহাঁ গরি আপান অ তর। সভোটি কিয়ার তেত গোমোজন কলে। ং পুগরি চন্দন কঠ্ করি আরেশ। বরিনে চিডঃ জন। নুপতি তথন। भटनाज्ञन-तम् नरह जियाह चेतरह । भागव स्टारन रोष। भाग्ने अगरताह ॥ ্<mark>ডার শ্র বনু</mark> আণি লিম গুলু হল। জাদ শাগদি যগাদি কি কেইনে নাগেন। **१डाजन कहान यर विकास १९८० । इस अपनि १७ वर्ष का याय वर्गता।** ू<mark>ं अहेर १९११ महरू</mark> कर्या कर समाम किया है के अपने कार किया कर्या है। পুত্র শোক তেম গিয়া ও এর হয় ১ । হর ১, স রে ১ (মতে ১৯০ ল কিলে ) भूषक ख्रा कितिरादि कार्यि दाक्षिण । प्रारम्भ विद्यान होता होन्छ निरम्भ। रामाभा करह अर्ग। जीवनाय रक्षा करूर दश्या <sup>প্র</sup>ত এক চলি যাক মুনির গোচর । বিল্যে ন'ছিক ফল ন'লে জভতর। होडांत जारामा (भरत एक दान, मा । करना कि इप । एक वारक वारक वा '**লংকাদ অব্যতে গা**লে গ্ৰিয়ে গোটোৱা শ্লি তুগুলাম প্ৰচি প্ৰাল স্ভাৱ ৷ **छड़ारक एन गाउ**क विशिष्ट विशासना स्टर्गा हार ३८ - १००० वर्गा मारक गरक मुश्रात रहिएए अम्या मार्च रिया माला माला पार राजा है। ুঁষুনিপাশে করিব গংন। সুই দল একে ২৮৮ । ৮৮৫ ৬ ৮৮ রেখ ২০৬ ৮র **নামিয়া তখন ৷** খনির চরণ্যতো অরিল ২০০। ১৯ ক ল অরি রাম ২০০। ভাঁহার। শুন শুন লুবিল বলি (ই ভোগার।চন্ত্রণ শ হল তব ৬ হে মহার্যা ু **তবে কেন অংক্তি মতে তব হতি**॥ আনার পিতারের **তথ** করিব। নিংন। অংশ্রেছ জিলে বল কিলোক কারণ। বেদলিদি জ্ঞান আছে টোনার অছরে। ,ভবে কেন হুরবুদি দেরিল হোমারে। দৈবের বিখন বভূমা মর্খতন। ্ত্রিক্সহত্যাপাপে তুমি হলে টিমগন॥ সাধীনা গাভীর তল্পে রুপিত অভৱে। অবহেলে বিনাশিনে বিপ্র খবিনরে॥ পিতার শোর্ষেতে শেষেজনী ্ আমার। আপন জাবনগন করে পরিহার॥ সভএব ভাই দেখি ৩তে নর-' পতি। অভিনে তোমার হবে কি প্রকাণ পতি॥ বল দেঞি হবে ভব কিলে <mark>ী পরিত্রাণ । দক্ষু মুদি ভাব দেখি ভহে মতিমান । বিচিত্র সুঁংনার এই জানিও</mark> अस्ता अनि जा नकन जोन क्षित्र (डामाद्रा ॥ अर्रे स्थि हि विश्व छट्ट ্রীতিমান । পদপ্রতিত বারিবিছের স্মান। যত এই জীবকুল কর দরশন। হুই দিন পরে শর শভিবে শ্রণ ॥ নাম্মার না থাকিবে এ ভব সংশ্রের।

যশ কীতি রবে মার জানিবে অন্তরে ॥ জানহ এ সব তুমি ৬ হৈ মহাজ্বা
তবে কেন অধর্মেতে হলে নিমগন ॥ অধর্মের ফলে তব হইবে পত্তন ।

নাহিক নন্দেহ ইবে জানিবে রাজন ॥ হুজীতি রহিল তব সংশার-ভিত্রের ।

কি কাজ করিবে রায় ভাবহ অন্তরে ॥ বল দেখি যার জন্য বিশের নিম্না
ত্রিরদিন তরে ভবে রহিল প্রচার ॥ রাজা হয়ে হেন বর্ম কিলের কারণ ॥

বল দেখি মম পংশে হয়প বতন ॥ অনাহারে ছিলে তুমি রুমের উপরে । যর্ম
করি কৈল পিতা ভতিবি তোমারে ॥ তাই মুঝি সমুচিত দিলে প্রতিকল ।

রাজার উ চত বটে, ওছে নরবর ॥ দাতা বলি খ্যাত তুমি সংশারমাবারে ।

ত্রমশ রাহিলে ভাল বধিয়া পিতারে ॥ থর্মের দিকেতে নাছি রাখিলে ন্য
লোভেতে উম্বত্ত হলে তুমি হে রাজন ॥ কেন হেন ত্ররুদ্ধি ঘটিল তোম

রাজা হয়ে কেন কৈলে ছেন ব্যবহার ॥

রামের এটেক বাক্য করিয়া শ্রবণ। অর্জুন নৃপতি দেন উত্তর তখন 🎺 ওল ভন মহোদল বচন আযোল। বিজুপরায়ণ তুমি বিজু অবতার॥ ব্যাজ্ঞান ভাষান তুমি মহাশান। তুপবলে করিয়াছ ইন্তিয় বিজয়॥ তব ওপৰবিধিকে পারে কোন্জন। ছিজ**ক্লে তুমি তেওঁ লভেছ জনম্**। কৈতৃ এছ হল হলি ওম সহিষ্কৃ। বিশ্র হ**য়ে কেন বর অন্যায় বিধান**। ধর্মবারা। ভূমি অভি মহামতি।তবে কেন অংশেতে করিতেই মতি 🗗 বিপ্র হয়ে জন্য ংগ্রার জাচরণ। এ কি ব্যবহার তব ওছে বিচক্ষণ 🞼 ইতে নিজা হয় কি না কাহ মহামতি। অথবা রটিবে যশা বলহ সংহ্ৰতি 🞼 এই কি প্রকৃত হর বিপ্রের লক্ষণ। বল দেখি মহামতি আমার নদ্ম যাসার জন্ম হয় বিজের আগারে। তাদ চিতা নেই জন করিবে অভরে 🎼 ংশিপার্থে নির্ভর রাশ্লিবেক মন। ধর্মেতে নির্ভ রবে হালা হঠ্মেণ্॥ এই ত বিত্রের রীতি জানে নর্বজনে ৷ অন্তথারী আছ তবে কিনের কারণো থোগোত নতত্ত্বত রবে যোগী গন। ভালমন্দে তার বল কিবা প্রয়োজন্। নবার উপরে নেই ভাবিবে নমান। ত্রেদ্ন চিতা ত্রন হলে নদা ত্রদা জ্ঞান 🎉 প্রকৃত বৈষ্ণব ছো যেই জন হয়। হরিপদ ভাবে নদ। তাহার হাদয়। হরির অর্চনা দলা যেই জনু করে। সর্বহলে সমভাব তাহার অন্তরে। यक्कथा मार्टि वर्टन द्वाराटक कथन। रुक्तिशत गर्ना जात यन निम्नुन 🕸 বিপ্র করে বিশ্ব এই চারি জাতি। জনমিয়া বিশ্বমাঝে করে অবস্থিতি॥

# PARTICIPATION IN

্রিজের করম যাহা করহ প্রবণ। করিবেক জপ তপ হরি আরাধন। িক্স ত্রিয়া, বলেতে করি হরিবে বিষয়। এই ত আছিয়ে বিধি ওহে মহোদয়। ধাণিজ্য করিবে বৈশ্য সদা সর্বকণ। ক্রির-আপ্রিত হবে যত বৈশ্যগণ॥ শুদ্রগণ ছিল-দেব। সদত ক রবে। স্থিতার আজা তার। যতনে পালিবে॥ याकात यमम कर्य आइटा विधान। एयन कतित दाउँ उटर मिल्यान॥ ভাহার অন্যথা যদি বরে কোন ভন। ৩০,বশ রটে তার ৩৮ে তপোংন। ্শিতাজাতি হবে যাক তপ্ধগ্য। কংলা অপ্যশারটে ভার এ ভব-সংসারে॥ 😘ন শুনু তপোধন আমার বচন। বিজ্ঞাতি হন যদি লোভপরারণ॥ **পারধনে লোভ যদি ভিজ হ**য়ে করে। কাছ যদ্যপি করে কপিত অন্তরে॥ 🖏 পাজপা যদি দ্বিজ করে বিনর্জন। ে।গ্রথে রতহা যদি বিজ্জন॥ ্যুহারে কিরূপ কহে শান্তের বিচালে। প্রকাশ করিন। এ , বলহ আমাবে॥ জ্বার পিতার ছিল অধর্মেতে মতি। ভোগমুশের লা নেই নরে অংক্তি॥ ু**সা,্য উন্মন্ত হ**য়ে ছিল সেই জন। সদত আহিল দেই লোভেতে মগন # ধুর্ক্লীকা আচরণ ভ্যক্তি একান্ত অন্তরে। ক্ষণ্ডেরি রত ছিন কবিন্য তোমারে॥ ভোষার জনক ধর করিয়া ধারা। খতাগর্ম স্ক্রারে করিলেন রণ॥ ষ্ঠাবলেন কত লেনা কে গণিতে পারে। বিজ গবে প্রাণী হিংলা জোনতন করে॥ विश राय की व रारे कताय निश्न। लात राग मरा गाणी नाहि उलान कन।। জ্ঞাহারে বধিলে পাপ কভু নাহি হা। এই লেড় মারাছি একে মহোদর॥ **শেই বিপ্র দোবহীন ওচে মহা**ত্র। তাহাত্রে হণিয়ে হণ পাতকে মগন ॥ **জোৰহান বিজেবধ যদি কেহ** করে। এপরত্যা পাশ আলি দেই তনে ছেয়ে॥ **তাহার নরক হয় শাত্তের বচ**ন। কৃহিনু তোহার পার্শে *ভ*েই মহাত্মন॥ **শুন শুন মম বাক্য ওচে ম**তিখান। প্রাপামে তুমি হও অতি বলবান॥ পিতৃশোকে হুয়ে তুমি অতীব কাতা। । জাকার বা ি বাছ তহে বিজ্ঞবয়ে॥ **ध्वकविः गवात क्व कतिरव** निधन। १३ जिल्ल क्व ,नाचि ताथिरव कथन॥ নিঃকত করিবে তুমি বিধির সংসার। পিড়শোকে বরিনাছ এই অঞ্চীকারা আজীকার্মত কার্য্য কংহ এখন। ভাহে নাহি ত্য পায় ক্ষুত্রিয-রাজন। মত দেখ ক্তজাতি অবনীমাঝারে। মূদ্ধে প্রাণ্ডিতে ভয় টুকান্জন করে॥ ক্লেক্লে জন্ম লভি ওহে মহাত্মন। মদন সংখ্যাম তুমি করিছ সাধন। ইছাতে স্থাশ তব- কিছুমাএ নাই। রটিবে অথশমাত ভূমে সর্বঠাই॥ শিতৃশক্ত বিনাশিতে করিয়া মনন। নর্মণা ভাততে তুর্দি আছ মহাত্মন। ষ্ট্রেবেল বলী ভূমি বিদিত সংসারে। লভিয়াছ শিববর জানে সর্বনরে॥

তাহাতেই নহাবলী ছইরাছ তুমি। তন তন তপোধন মম হিত বাণী। ঘত ৰল ধর তুমি আপন শরীরে। প্রকাশ করহ তাহা অতি শীঘ্র করে। শতক্লে ওছে শ্লাযি আগার জনন। শহরেতে ভয় নাহি পায় কোনজন । বরঞ্জানন্দ হয় সনরের নামে। কাপুন্ধ নহে ক্তা জানিবেক মনে। তোমার উচিত যাহা, বরহ নানে। প্রাণহ কত বল করহ ধারণ। পুরাণে প্রিত্ত কথা হুধার নান। শুনিলে নে নান লভে দিব্য তত্ত্বান।

# অতী।বংশ ভাষ্যার। ভুওরাম শহ কার্ডবীর্য্যের নমর।

সন্থক্তমাৰ উৰাচ। পিতশোকং পুনঃ সূতা রোষব্যাকুলমানসঃ। পুনশ্চ শহৰুদানং ৮কার ভাগবো মহান্॥

খাষিগণ সংখাণির। মধূর বচনে। জিজ্ঞাসা করেন পূনঃ বিধির নন্দনে॥ তার পর কি ঘটিল বল্ল বর্ণন। ভ্রিয়া পূরাণ কথা জুড়াই অব্যা। মনতকুমার কহে শুন খাতিম। মহারোবে জ্বলি উঠে রামের হৃদয়। বিত্রশাক পুলায় উদির অভরে। অনিকণা বাহিরায় ন্যন্থুগলে # খন ঘন দীর্ঘশান হাড়ে তহজার। ধনুকেতে ঘন ঘন দিলেন টক্ষার॥ মেই শব্দে বস্তুহতী কাপে হন ঘন। যুড়িল ধনুকে শার ঋষির নন্দন। ' অবিলয়ে বাণ মারে নরপতি পরে। শত শত বাণ মুনি মারে একেবারে॥ রামের সহিতে চলে আত্মীয়শ্জন। নুশার হাতেতে শার আর শারাসন !! कार्खनीया मरावन विविच १३१२। मगदत अप्रेल त्मेर्ड कष्ट्रामा प्रमाश ॥ १ মংস্যাজ সংস্কৃত্র তার সংচর। মুদ্দ হেতু ছুই জন প্রফুল্ল অন্তর॥ ' শত শত বাণ রাম ফেলে রাজোপরে। তাহে মহারুষ্ট রাজা হলেন অন্তরে॥ লোহিত বরণ হয •যুগল নরন। অবিলম্বে হাতে ধনু করেন গ্রহণ॥ যত বাণ মারে রাম রাজার উপরে। বাণে নরপতি তাহা কাটেন সত্রে॥ যত শর মারে সেই মহাতপোধন ১ দিবা অস্ত্রে রাজা তাহা করে নিবারণ॥ তার পর অতি ক্রে হয়ে নরপতি। দিব্য অস্ত্র ধনুকেতে জুড়ে মহামতি॥ ় गत्न गत्न गूनिवदेत कतित्व निधन। অদ্ধপথে সেই বাণ কাটে তপোধন॥ তার পর ভতরাম লয়ে শরাস্ন। মন্ত্রপুত কয়ি জন্ত জুড়েন ভখন।।

প্রিয়ার থির মুও কাচ্চ কেলেন ধরার। অধ মুও কাটে তাহা ভূটেটত লুটার॥ किकोछित तर्यक्र पूर्व गरे। उर्यायन । भाविय विरुद्ध तथुन। हरन उर्यत्॥ **"রাজার হাতের ধনু কাটে' তপোধন। অস্তর্ছান** হয়ে নুণ, ভাবেন ভাল। **ঁভার পাবাণ জু**ড়িরাম মহামতি। ঘন ঘন মারে তাহা মংগ্রেলজ জেছি। . व्यक्त प्रथ् रेम ग्वांनी करतन खंदगा किन वान मात्र ७८२ महाउट भागा **না পারিবে মংলারাতে করিতে নিখন। করেতে কব্যর**্থা করেল ধারত। ষ্বিত কবত রবে রাজার শরীরে। কার শক্তি মংঅস্ট। বহিবারে পারে॥ ্বিত্রের প্রবন্ত দেই কবত ছুর্বার। না পারিবে বিনাশির চ ওবে গুণাপার। 🛍 देत्र প দৈববাণী করিয়া শ্রবণ। বিষিত হইব। রতে 🚉 তপোধন।। ্বিনে মনে ভাবে ঋষি কি হবে উপায়। তাবিষা চি্য়াণেরে বুদাণাশে মানুঃ देशितिरवर्ग महामूनि कतिया शातना मः खताक- गोरलर करतन अपन।। ্**ৰুব্চ মাগি**দ ঋৰি রাজার গোচরে। দক্তানী হেরিয়। প্রতা আবেন অন্তরে।। ্বিধি যাম রুঝি এবে আমার উপর। দৈবের নিখন বন খতে বোন্নর॥ ্শৈপা করিব রাজা কবচ মুনিরে। কবচ পাইন। রাম এনুব অস্তরে।। ি**পুন**ায় যুদ্ধ হয় অতী দিভীৱণ। নংগান হেৰিয়া কালে মত দেৱগা। ্**ভরম্ব শূপ লয়ে রাম তপোধন।** রাজার উপরে ক্রন্ত নালে শেপণ্ড মংস্থাজ শূলাঘাত পাইয়া অন্তরে। ব্যাধ্ত হইলাপ্ডে রেটা টারে । , **চন্দ্রংশ চূড়ামণি মংস্থনরবর। নংগ্রামে প**ড়িব রাল। ত মর 🗟 র 1 ্রিনাগণ অবিরল করে ছাহাকার। পড়িবেন মংস্থান্থে এতি গুণাধার। **ইহা দেখি দেবগণ মহাভীত হন।** তার পর শুন ওন আচেই্য ঘটন।। সোমদত্ত মহাবল নিষ্পের রায়। মহায়োবে রাণ্যাবো বৃঝিবারে যায়। মহাক্রোধে দোমদত্ত করেন গমন। রামের উপরে করে বাণ বরিষণ। শিথিনার রাজা যায় ভূগুরামপরে। মহারোধে নূপবর হত্সার ছাত্যে। ত্বুজাম তাহা দেখি ক্রোধপরারণ॥ ধনুকেতে দিবা বাণ বরেন যোজন।। শ্লাধির সহিতে যুদ্ধ করে সর্বজন। স্বার কাটেন বাণ রাম তংপাধন।। 'অসংখ্য অসংখ্য হৈ ভ রণ্মাঝে পত্ত। রথ রথী কত পড়ে কৈ গলিতে পারে রামণরে নৈতা কত পড়ে অগণন। তাহা দেখি কার্তবীর্য্য অতি রুক্ট হন। ্ষেমু হাতে করি রাজা রথের উপর। রাম.নহ যুদ্ধ করে 🚧 তি খোরতর।। বিধাগণ কত বাণ করে বরিষণ। নৃপ নৃছ যুদ্ধ হয় ফুতি বিভীষণ।। কত বাণ মারে রাজা রামের উপরে। ভ্তরাম-সেই বাণ স্কুণেতে নিবারে॥ क्य ताका जामि इत नृष-नर्हत्। ब्राह्मत् नरक्र कर्तते शिका नम्ता!

রাশি রাশি সেনাগণ কে করে. গণন। মগণ দৌরাই কান্তকুল-দেশীগণঃ त्नभान अभाग आत विदातां पि कति । नानारम्भी रेन्छ नव श्वितारत नाँति ॥ ্রবিদেশী রাজাগণ বিলি এককালে। রামের উপরে শর ঘন ঘন মারে ॥ তাহা দেখি মহায়োলে রাম তপোগন ! রোলেতে জ্বিয়া উঠে পঢ়পু তপন ! রক্তবর্গ হৈল ভার ।লোচন-সগল। রামাগণ নামে করে ভাষণ সমর॥ অসংখ্য অসংখ্য নেনা রণকানে পঢ়ে। অশ্ব হন্ত্র কত পড়ে কে গণিতে পারে পদাতি পড়িল কত সংখ্যা নাহি ভ.র। তিন দিন এই: প নৃদ্ধ আনিবার॥ কত রাজা- রামশরে হইবা ব্যথিত। সমর-ভূনিতে সব হব নিপ্তিত॥ তু০ক নামক রাজ। করি ধরশন। রাম নহ চুবিবারে অএনর হন॥ মহাবলবান নেই স্থচন্দ্র পৃতি। রামের উপরে শর মারে মহামতি॥ দিব্য বাণে রাক্ষ গ্রহা করেন খণ্ডব। ভাষা দেখি সংবিশি ভুট্ন রাজন। সর্প্রাণ নেহা-বিলা রাম ঋষিবর। গশবে জম্ভেতে তাহ। নিবারে সম্রা। তার পার ভ্ঞ-বাম রোলান্ধ হইয়ে। জুড়িলেন বৈফবাস্থ একান্ত কলে। মন্ত্রপুত করি াহা করেন কেশণ। সূচ্যশ্র সং ব্যাহ্ল ছেল। অশ্বথ কাটা দেখি পুচন্দ্র নুগাত। অম রথে আলোহণ করে ক্তগতি। শত শত বাণ মারে রবের উপর । বিষ্ণু কি আশ্চব্য দেখ তাপন্নিকর ॥ এথমত বাণ আসি ্মপ্রেপড়ে। তাহা দেখি নরণতি বিধিত স্তরে॥ তাহা দে<del>খি নর-</del> পতি ছাড়ি ধলুর্ববাণ। বিশিত হইব। রথে করে অবস্থান॥ ভৃ**ওরাম শর** মারে নৃপতি উপর। বিবা অন্ন নেই নব খ্যাত চরাচর।। শূল শেল কত মারে মহাতপোধন। পরিশ তেমির গদা কে করে গণন।। তীক্ষ্ণ তীক্ষ্ণ বাণ মারে নরপতি প্রতি। ধরণৰ ব্যাধিত তাহে সুত্র নুপতি॥ এই রূপে কত বাণ মারে তপোশন দিব্য কাণ নেই ন্ব ওতে গ্রিগ্ণ॥ খন খন করে শর ধনুকে স্রান। ঘন ঘন মারে বাণ লাম বৰ্বান। এইর পৈ মহাযুদ্ধ रेप पात्रका भगता थाकिय। एए प्रमानिक । वयस्त्री हेनमन कर्त ঘন ঘন। যেন ধরা রানাতলে করিছে গমন॥ তাবিরান বর্ণে পশে ধনুক-টিকার। সৈতাগণ মুজুমুঁত করে ভত্কাব॥ এইরপে ম্ক হব অভি বিভীষণ। अनिरल श्राप्त काँटिश ये जीवना। ७ इस २ मत नाहि एटिए काथान। জীবগণ চারিদিকে দৌড়িয়া পলায়। १ বুরাণে পবিত্র কথ। অতি মনোহর। धानत्न जिल्हा सान दिक्के नगत ॥

## উনত্রিংশ অধ্যায়।

# রণে ভ্রুকালী দর্শন ও রামকর্তৃক স্তুতিধাদ।

ভার্গব উবাচ।

প্রণবরূপিণী ত্বং হি ত্বমেব শিবমোহিনী! বিকটদশনা দেবি কালরূপা স্নাতনী॥

তার পর ঋষিগণ সনত-কুনারে। পুনশ্চ জিজ্ঞাসা করে সুমধুর স্বরে॥ ফ্ছ কছ বিধিস্থত মহাতপোধন। তার পর কি ঘটিল অপূর্বে ঘটন॥ ্রিতেক বচন শুনি সনত-কুমার। কহিলেন শুন বলি করিয়া বিস্তার॥ 🗽 সংল মহাযুদ্ধ ক্রমেতে বাধিল। রণ-ভূমে ভদ্রকালী সহসা আসিল 🛭 ্করাল-বদনা ঘোরা অতি ভয়ক্ষরী। লোল জিহ্বা মুক্ত কেশী দেবী দিগম্বরা॥ জ্রুতী করিয়া নৃত্য শবোপরি করে। ত্রিলোচনা ভীমবেশা হেরিলে শিহরে গুলদেশে অস্থিমালা কিব। শোভা পায়। ভুজঙ্গ ভূষণ শিরে শোভিতেতে তার। অট্ট অট্ট হাস্য সদা দেবীর বদনে। হাতে অসি বর্ণ মসী ভ্রমিতেছে রণে॥ তৃত্তকার ছাড়ি দেবী করেন ভ্রমণ। বিকট-দশনা দেবী ঘোর দরশন॥ <sup>া</sup> যত বাণ মারে রাম রাজগণোপরে। লম্ফ দিয়া ভদ্রকালী সেই সব ধরে॥ বাম করে দেবী তাহা করেন ধারণ। রামের উপরে করে ভাকুটা দর্শন। নাচি নাচি রণভূমে ভ্রমে নৃত্যকালী। ভয়ক্ষররূপা দেবী রণে ভদ্রকালী॥ এইরূপে ভদ্রকালী করে বিচরণ। তাহা দেখি মহারুষ্ট রাম তপোধন॥ - **ভয়ক্ষর শূল ল**য়ে আপনার করে। বেগেতে মারেন তাহা দেবীর উপরে॥ তাহা দেখি মহাদেবী কুপিত অন্তরে। লফ দিয়া সেই শূল নিজকরে ধরে॥ ্রমহাবেগে সেই শূল করিয়া ধারণ। মুক্তকেশী নিজগলে পরেন তখন॥ তাহা দেখি মুনিবর চিন্ধিত-অন্তর। মনে ভাবে একি দুখি অতি ভয়ঙ্কর॥ যে শুল মারিল রাম দেবীর উপরে। পুষ্পমালা হৈল তা্হা দিগদ্ধরীগলে॥ ভাহা দেখি মুনিবর বিক্ষয়ে মগন। বিভায় আকুল হান মহাতপোধন। বনে ভাবে ঋবিবর কি করি উপায়। ধনুর্বাণ ছাড়ি রাম দূরেতে দাঁড়ায়॥ দেবীর চরণে পড়ে করি যোড়কর। নরন যুগলে পড়ে অঞ নিরন্তর॥ व्यक्तिक महेशा करत प्रवीदत वनन्। छिज्ञिन करत असि हरश र्धकमन॥

ওক্ষাররূপিনী তুমি শিবের গেহিণী। তুমি ফুকা তুমি স্থুল জগত-জননী॥ कालक्रभा पूर्वि (परी विकर्षणमा। मुक्क रक्षी जीमक्रभा कतालयमा। ভৈববী কুমারী তুমি তুমি কেমজরা। তোমার চরণে মাতঃ নমস্কার করি। বিশ্বরূপ। তুমি দেবী তুমি জগম্যা। স্বেম্বজননী তুমি তুমি রুপাময়ী॥ চতেশ্রী ক।লরপা তুমি মনোরম।। জগতকারণ তুমি শিবের ললনা।। মহামায়া তুমি মাতঃ তোমারে প্রণাম। ওগো মাতঃ আমি তব পুদ্রের সমানা। ৃ বিশালাকী ভূমি দেবী ভূমি মায়াময়া। তাহার ভাবনা কিবা যারে কুপাময়ী। পর্বত নন্দিনী তুমি কার্ত্তিকজননী। তোমার চরণে মাতঃ অফাঙ্গে প্রণমি।। তোমা হতে হয় দেবি বিশ্বের সূজন। তোমা হতে স্ক্রবিশ্ব হতেছে পালন॥ অন্তিমে নকল তুমি করহ সংহার। তোমার চরণে করি শত নর্মস্কার।। তত্ত্বময়ী তুমি দেবি সন্তাপহারিণী। তোগাতে উৎপত্তি মাগো এক্বাওধারিণী। ত্রিতাপহারিণী ভূমি জানে সর্বজন। তোমার চরণে মাতঃ করি গো ব**ন্দনী॥** জগতের মাতা তুমি দার হতে দারা। পরমা প্রকৃতি মাতঃ পর হতে পরা॥ िরিশন দিনী ভূমি দানব-যাতিনী। বেদমাতা বেদবেদ্যা বেদ-প্রস্বিনী॥ তুমি লক্ষী সর্পতী তুমি গো যম্না। তোমার স্মান ভূমে নাহিক ললনা॥ দ্যা কর দ্য়াম্যা দানের উপরে। ইচ্ছাম্যা তুমি দেবা খ্যাত চরাচরে॥ তুমি গঙ্গা তুমি জয়া তুমি গো বিজ্ঞা। অধীন উপরে মাতঃ হও গো নদ্ধা। কিবা জন কিবা হল কিবা শুলোপরি। সর্বত্ত বিহর তুমি ওগো কেম্বরী।। আমি অতি মূচ্মতি শুন গো পার্বতী। তোমার চরণে করি সদত প্রণতি॥ নাহি জানি আরাধনা না জানি ভজন। অধম উপরে কর রূপা বিতরণ॥ যদি দয়া নাহি কর আমার উপরে। কাহাব শর্ণ লব ন্যামি তোমারে॥ অক্তি জনের প্রতি হও গে। সদ্য। আমি অতি মূঢ়মতি অধম নিশ্চয়॥ पूमि पत्रा ना कतित्न ७८गा (चनक्षती। काहात निकट याव कि छेशांश कति॥ কিলে রক্ষা পাব আমি বলছ বচন। আমার উপরে কর রূপা বিতরণ ॥ দয়া যদি নাহি কর আমার উপরে। নিশ্যু তাজিব প্রাণ কহিনু তোমারে॥ দয়ামরী নাম তব না রহিবে আর। অঘশ রটিবে তব জগতসংসার। পড়িয়াছি ঘোর দায়ে শুন কাত্যায়নী। উপায় করছ যাও জগত-জননী॥ তোমার চরণে আমি লইমু শরণ.। • কিসে হবে ওগো দেবি প্রতিজ্ঞা পুরণ ।। তাহার উপায় কর ওগো ভগবতী। তোমার চরণে করি দদত প্রণতি॥ তব ভক্ত আমি মাত ধরি গো চরণে। কুপা কর কুপাময়ী এ অধীন জনে॥ বিষেশ্রী ওগো মাত জগত ঈশ্বরী। তোমার চরণে আমি প্রশিশাত করি॥

भ्ययम श्रीतम जीमि किलामनगरत। म्लाभागि भिंग नत्र , जमस अखरत॥ তুমিত দিয়াছ বর ওবো অরেখরী। এবে কেন নিরদয়া বল রূপা করি॥ ৈতোমার নামেতে হয় বিল্ল বিনাশন। স্থামে সুর্গতি নাশ বেদের বচন। ়ক্লপা কর ক্রপানয়ী বিশ্রের উপরে। শরণ লইন্থু মাতঃ ভব পদতলে॥ कानो তারা মহাবিদ্যা তুমি গো ফোড়শী। ভুবন ইপ্র দেবী তুমি গো রপ্রী ভৈরবী ভূমি গো মাতঃ ছিন্নমস্ত। আর। তোমার চরণে করি শত নমস্কার॥ ধুমাবতী তুমি দেবী বগলা সুদ্দরা। মাতথা তোমারে মাতঃ নমস্কার করি॥ ক্ষনারপিণী তুমি কল্যাণ-দায়িনী। ফ্লপা কর অধীনেরে জগতজননী॥ ংতোশা হতে হঃখ যায় তুমি ছঃখহরা। করুণা কর গো মাত তুমি ওগো তারাঃ। 😘 **এইরপে ত**ব করে রাম তপোগন। স্ব শুনি পরিত্যা শহরৌ তখন॥ শ্রশার। অদি হতে করি পরিহার। তিরোহিত হন দেশী অতি চ্মংকার॥ विकेशा (एवर विका शिवामन। द्रशास्य ताम्पारम डेपनीड २०। অক্যুক্বচ ছিল সুচন্দ্র-শরীরে। ছন করি ব্রন্ধা তাছ। আনিলেন হরে **ভাহা আনি স্তরানে** কবেন প্রদান । তাহা পেনে পরি হৃষ্ট ভার্গব ধীমান। **ক্রত পরিয়া অঙ্গে মহাতপো**গন। মমর কারণে চলে পুরুল বদন॥ মহারোদে ভৃত্তরাম চলেন নমরে। ফুট্র কেখিন। তারে হলেনে শিকরে॥ **অবিলয়ে যুদ্ধ বাবে** অতি বিভাষণ। তুই দলে মহারণ না যায় বর্ণনা। ভূঞ্রাম বাণ মারে রাজার উপরে। বানে তাহা নরণতি নিবারণ করে॥ স্বানে বানে কাট।কাটি হয় ঘোরতর। তাহ। দেখি নাগে মত গমর নিকর॥ মাগপাশ বাণ মারে মহাতপোধন। গল্প বাণেতে তাহ। নিবারে রাচন। অগ্নিবাণ মারে পরে ক্ষি মহামতি। বরুণ কাণেতে কাটে স্কুচন্দ্র দুপতি। **पिया बान मा**रत পরে মহাতপোপন। বৈক্র বানেতে তাহ। করে নিবারণ॥ ষ্ঠ কাণ মারে খানি লব ব্যর্গ হয়। তাহা দেখি ভুওরাম বি ত্রত-ছদয়॥ বাণে বাণে কাটাকাটি হয় মারামারি। কত যে মরিল সেনা বর্ণিবারে নারি॥ छूरे জনে নম যোদ্ধা কেহ নাহি টলে। তিন দিন এই যুদ্ধ ভয়মর চলে॥ তার পর শূস অস্ত্র করিয়া এহণ। মন্ত্রপূত করে তাঞ্চা মহাতপোধন॥ ভাহা দেখি ভয়ে ভীত স্বচক্র নৃপতি। উপ্পায় নাহিক আরু হেরেন সংপ্রতি। দেখিতে দেখিতে শূল আনে বিভীষণ। মন্ত্ৰন্মনে রাজা কঠুর জ্রীহুরি মরণ॥ দেখিতে দেখিতে শূল আসিয়া পড়িল। নূপতির বক্ষঃস্থা বিদীর্ণ করিল॥ অমনি পাড়িল রাজা ভূমির উপর । চারিদিকে হাছাকার উঠে তার পর॥ एइस जीवन छ। जि व्याद्वादि विमाना प्रमार्थ मांत्र हेनि ज्ञात-जवरम ॥

পুচতে মারিয়া পরি মহা-তপোধন। জানক-জলধিনীরে হন নিশ্পন॥ পুরাণে পবিত্র কথা স্থার লহরী। অন্তকালে ভবার্ণবে একমাত্র তরী ॥

#### ত্রিংশ অধ্যায়!

কার্ন্থবীর্য্যের পতন। সনংকুমার উবাচ।

স্কুত্রং পতিতং দৃষ্ট্বা শোকবিহ্বল্মানসঃ। রুয়োদ বহুধা ত্রন্দ্রাজা বাহুসহস্রভূৎ॥

তার পর ঋবিপণ মধুর-বচনে। জিজ্ঞাস। করেন পুন বিধির নিন্দরে॥ কি বলিলে পুণ্যকথা ভবে মহোদর। শুনিষা পবিত্র হৈল মোদের হৃদ্যী। ভোনার বদনে শুনি পুরাণ আখ্যান। স্বদরে লভিব মোরা দিব্য ত**ল্বজ্ঞান**্য এখন ব হ প্রভু করিয়া বিস্তার। তার পর কিবা ঘটে ওচে গুণাধার। ৰ। উৰীৰ্য্য ড বাবে কিব। কাৰ্য্য করে। কি করিল ভৃগুরাম বল স্বাকারে॥ এতেক বচন ভুনি বিধির নন্দন। কহিলেন ভুন ভুন ওছে ঋষিগণ॥ গুত্ত ন্মলে যদি ভাজিল জীবন। কার্ত্তবীর্য্য সেই শোকে করেন রোদন। ানামতে খেদ করে বলি ধরাসনে। বহু সেনা লয়ে শেষে প্রবেশেন রণে ॥ ্তুকে স্ত্রীঞ্চ বাণ করেন সন্ধান। রামেরে মারিতে আশা করেন ধীমান॥ তাহা দেখি ভূওরাম মহাতপোধন। রোষেতে করেন আঁখি শোণিত বরণ। শ্রাণনে বাণ সুভি অভি রোষভরে। নিক্ষেপ করেন তাহা রাজার উপরে॥ লামের সঙ্গেতে ছিল যত অনুচর। ঘন ঘন বাণ মারে রাজার উপর॥ ঘন ঘন বাণ মালে নাহি নিবারণ। চারিদিক অন্ধকার হইল তখন।। কেছ শেল কেহ শূল ঘন ঘন মারে। গদা মারে কোন জন নারপি-উপুরে॥ রাজার রথের অর্থ কাটিয়। ফেলিল। সার্থির মুণ্ড কাটি ভূতলে পাড়িল।। দেখি নরপতি রোষেতে মগন। রামের উপরে করে বাণ বরিষণ॥ একবাণ পড়ে গিয়া রাম বক্ষঃ হলে। অজ্ঞান হইয়া মুনি পড়িল ভূতলে॥ ৰক্ষ হতে রক্তধারা ঘন বাহিরার। তাহা দুেখি সকলেতে কান্দে উভবার॥ কণ**পরে** ভ্ওরাম পাইয়া চেতন। উঠিয়া পুনশ্চ করে ধনুক এহণ॥ বিজয় ধনুক লয়ে আপনার করে। তীক্ষ্ণ তীক্ষ্ণ বাণ মারে রাজার উপরে॥ বাণে নরপতি তাহা করে নিধারণী ছুই জনে বাধে রণ অতাব ভীষণ।। চারিদিকে वार्ष वार्ष इत्र अंसंकात। रंकान पिरक नाहि इत्र मुक्ति मुक्तात।

্রিরেদল বিশি করে মহাত্যোর রণ। বিপ্রের উপরে করে শর বরিষণ।। বাৈষভরে নরপতি ছাড়িলেন বাণ। বাণ খেয়ে অচেতন ভার্গব ধীমান॥ কতকণ পরে তিনি লভেন চেতন। পুনঃ নরপতি প্রতি করে. বরিষণ॥ **একবাণ মারে রাম নৃপতির শি**রে। কিরীট কাটিয়া কেলে ভূমির উপরে॥ পুনরায় শূল হাতে করিয়া এহণ। মন্ত্র পৃত করে তাহা মহাতপোধন। শঙ্কর প্রদত্ত শূল অতি ভয়ঙ্কর। মন্ত্রপূত করে তাহা মহা-ঋষিবর॥ ধশুকে জুড়িয়া তাহা ভার্গব ধীমান। রাজারে নাশিতে লক্ষ্য করেন সন্ধান শৃদ্ধান ক্রিয়। তাহা করেন কেপণ। গগনে উঠিল তাহা অতি বিভাষণ॥ ্ব্র্যা সম তেজ তার অতি ভয়ন্ধর। দেখিতে দেখিতে পড়ে রাজার উপর॥ ্বি**রাজার ক্ওল কাটি ভূতলে ফেলিল। পুন**রায় মুনিপাশে দে বাণ আদিল॥ ভাহা দেখি নরপতি ক্রোধেতে মগন। রামোপরি মহাবাণ করে বরিষণ॥ বাণে নিবারণ তাহা করি তপোধন। পুন শরাসনে বাণ করেন যোজন॥ মন্ত্র পৃত করি রাম কেলেন তাহায়। মনে বাঞ্চা নাশিবেন অর্জ্ঞন রাজায়॥ শ্**বাণে তাহা** নিবারণ করে নরপতি। যুড়িলেন শর পরে অতি শীঘুগতি॥ **তীক্ষু তীক্ষ বাণ ম**ারে দ্বিজের উপরে। বাণাঘাতে দ্বিজবর কাঁপেনে অন্তরে॥ এইরেপে যুদ্ধ বাধে অতি ঘোরতর। সাতদিন অহনিশি চলিল সমর॥ বিষম স্মর করে অর্জন রাজন। কত দৈতা মরে যুদ্ধে কে কবে গণন॥ রণেতে মরেছে পুল এই দে কারণ। নরপতি মহাশোকে অতি নিমগন॥ ুবিলাপ করেন কত বিষয় অন্তরে। পুত্রোক জ্বলি উঠে সমর-মাঝারে॥ ্রী**য়ঠ পেয়ে অগ্নি জ্বলে প্রখ**র যেমন। সেইকপ নরপতি অতি জুদ্ধ হন॥ মন্ত্র পৃত করি বাণ যুড়ি শরাসনে। নিকেপ করেন তাহা মহাতপোধনে॥ ্বাণে তাহা নিবারণ করি ঋষিবর। রাজার উপরে নারে চোখ চোখ শর॥ , **তুই জনে** যুদ্ধ হয় অতি বিভাষণ। মহা শূল নরপতি করেন এছণ॥ <mark>ंমন্ত্রপৃত</mark> করি তাহা মারেন ঋবিরে। ভৃগুরাম জর জর হন সেই শবে॥ - অতেতন হযে পড়ে ডুমির উপর। ক্ষণপরে সংজ্ঞা পায় বিপ্রের কোঁঙর॥ ্রাজার উপরে বাণ করেন বর্ষণ। অগ্নিবাণ শরাদনে কুকেন যোজন॥ ্রিষ্পত্তি উপরে মারে অতি বেগভরে। বরুণ অস্ত্রেতে রাজা। নিবারণ করে॥ ্বনাগ অস্ত্র শরাসনে যুড়ি তপোধন। রাজার উপরে তাহা ফেলেন তখন॥ ্ৰিপক্লড় অস্ত্ৰেতে তাহা নিবারে ভূপতি। তাহা দেখি মহাক্র্বি ঋষি মহামতি॥ ष्ट्रिया शक्तर्य अक निक्र भद्रामतन । नित्कर्भ करतन छाश निभित्न ॥ , बाजरा बाटनट जार। निवादत जाजन। जाटश व्यक्ति क्ष र्यन व्यक्त नमन॥

লৈব অস্ত্র যুড়ি পরে অবি মহামতি। নিকেপ করেন তাহা নৃপতির প্রাষ্ট্রি মহাশব্দে দেই বাণ উঠিল গগনে। প্রলয়ের ঝড় যেন পশিছে প্রবৃণে আকাশে থাকিয়া যত অমর-নিকর। দরশন করে সেই বাণ ভয়ধার ॥ মহাভীম সেই বাণ করি দরশন। ভযে কাঁপে অন্তরীকে যত দেবগণ 🎼 তাহা দেখি নরপতি নির্ভণ অভরে। শরাসনে বৈষ্ণবাস্ত্র যুড়িলেন পরে। বিষ্ণু অস্ত্রে শৈৰবাণ করে নিবারণ। তাহা হেরি ভ্ওরাম মহাক্রুদ্ধ হন॥ নূপবরে মারিবারে করিয়। মনন। দিব্য অস্ত্র ধনুকেতে করেন যোজন॥ 🐇 সেই শর মারে রাম রাজার উপর। নিবারণ করে তাহা নূপতি,প্রবর॥ তার পর নরপতি মহাশূল ধরি। নিক্ষেপ করেন তাহা ঋষির উপরি॥ নিবারণে শক্তি নাহি হন ঋষিবর। পড়িল সে বাণ তার ছালয় উপর॥ তাহে মূর্জাগত হয় মহাতপোধন। তাছা দেখি ভয়াকুল যত দেবপণী। তাহা দেখি মনে মনে চিন্তে মহেশ্ব। শিব্যেরে রক্ষিতে যত্ন করেন দত্তর॥ ক্রতগতি রণমাঝে করি আগমন। রমের নিকটে ত্বরা উপনীত হন॥ ' পারহস্ত রুলালেন রামের শারে। চেতন পাইয়া রাম উঠেন সত্তর॥ পুরোভাগে সদাশিবে করি দরশন। অফাঙ্গে তাঁহার পদে করেন বন্দন॥ পুর্বরূপ বল হৈল রানের শরীরে। পুন শরাসন ধরে আপনার করে॥ পাশুপত অস্ত্র পরে করিবা এছণ। ধনুকে অশৈটিয়ে তাহা করেন যোজন। মন্ত্রপুত করি রাম এডিলেন তায়। তাহা দেখি নরপতি মহাভয় পায়॥ জ্ঞানশূতা প্রায় হয় অর্জন রাজন। মনে মনে চিন্তে কিবা উপায় এখন॥ দেখিতে দেখিতে অস্ত্র আসিয়া সবলে। সহনে পড়িল নরপতি-বক্ষঃস্থলে॥ কিন্তু তাহে মৃত্যু নাহি হইন রাজার । শুক্ষপ্রায় হয়ে রহে শরীর তাঁহার॥ ' বিষ্ণুর কবচ ছিল তাঁহার শরীরে। সেই হেতু পাশুপত মারিবারে নারে॥ শুক্ষ কিন্তু হয়ে গেল তার কলেবর। অরো এক কথা বলি শুন সর্বনর॥ গোলোক-বিহারী যিনি দেবচুড়ামণি। দেখিলেন পাশুপতে মারে নৃপমণি॥ তাহা দৈখি সুদর্শনে কহেন বচন। রক্ষা কর নৃপে গিয়া ওছে সুদর্শন॥ হরির আদেশে পতর দেই সুদর্শন। অভরীকে থাকি করে রাজার রকণ॥ ব তাহা দেখি মহেশ্বর ভাবিয়া অন্তরে। যোগীবেশে চলি যান অর্জুনগোচরে। जिका गाति करत छात कवह वार्ग। कवह लहेता जारम तारमत मनम ॥ বলিলেন রামপাশে মধুব বচ্নে। কবচ গ্রহণ কর অতীব যতনে॥ আছিল ক্বচ এই রাজার শরীরে। সেই হেতু নরপতি এত বল ধরে। অতএব মম বাক্য ক্রমহ অবণ। এখন রাজারে শীঘ্র করহ নিধন॥

্ঞত বলি তিরোহিত হন মহেশর। কবচ পাইয়া রট মহর্ষি-প্রবর॥ ্পুন ঋষি দিব্য অস্ত্র করিয়া এহণ। ধনুকে যুঁড়িল তাঁহা নত্তরে তখন॥ ল্রালারে ভাকিয়া কহে মহর্ষিপ্রবর। আমার বচন শুন, ওহে নরেব। ্রোমার জীবন আমি করিব নিধন। পাশুপত নহ। অত্র কর নিরীশণ॥ **ক্তিয় সন্তান ত্মি ওহে নরপতি। ভ্রু না** ক্রিও ক্তৃ আমার ভারতী॥ কৃত বল আজি তব করিব দর্শন। ভয়ে ভাত নাহি হও ক্তিয়-নদন॥ , - কিরাহি তুমি রাজ। ক্তিয়-সন্ততি। করেছিলে মহাযুদ্ধ রাধণ সংহতি॥ .পরাভূতৃ হয়েছিল সেই দশানন। অত্য কিন্তু তব বল করিব দর্শন॥ ু **স্থামার** হাতেতে তুমি নিহত হইয়ে। অত্যই ঘাইবে নৃপ শমন-আলংগ ॥ ,**মহেশ-এদত্ত বাণ কর দরশন। ইহা দিয়া আজি তব বধিব চৌবন॥ পিতৃ**-ি**শোক স্থলিতেছে সম্ভরে** আমার। তোমারে দেখিয়া তাহা বাড়িছে ছর্কার॥ তোমারে রণেতে আজি করিয়া নিধন। শোকানল হৃদি হতে করিব বর্জন। রামের এতেক বাক্য করিয়া প্রবণ। নরপতি পীরে ধীরে কছেন তখন॥ ্বা শুন খন মম বাক্য ওতে মহামতি। দৈব প্রতিচুল হেরি আজি মম পতি॥ হৈনলৈ আজি তববল দেখা যে যাইত।দেখিতে তোমার দশা কি আজি মাটিত অধিক বলিব কিবা ওহে তপোধন। আমার হলর সলা শোকেতে মধন। শোকেতে নদত আছি মূতের সমান। নহিলে দেখিতে আজি ওচে মতিদান भ:নারমা প্রিয়তমা ত্যক্তে জীবন। সেই শোকে আছি নাবি ন্দত মহান। **্রির পুত্র রণে মৃত তাহার** উপর। *মেই হে*তু সল। মম ব্যবিত অওর॥ পার কি আছু যে শক্তি আমার শরীরে। দিবানিশি অন্তরাগ্নি দহিছে আমারে বিধাতা মেরেছে মোরে ওহে তপোধন। অধিক মারিলে আর তুমি কি এখন रेमर्यत निर्थन कञ्च ना यात्र थ७न। रेपय कन थिखवारत शारत रकान् जन॥ দৈব হতে নাহি বল সংসার-মাঝারে। দৈব বল শ্রেষ্ঠ বল জানিবে অক্তরে॥ কি বীরত্ব দেখাতেছ ওচে তপোধন। কি বল ধরহ তুমি দিজের নন্দন॥ বীর নাহি ছিল কেহ আমার স্থান। আমার সহিতে যুবো কোন বলবান।। ক্ষেকুল-অধিপতি রাজা দশানন। তাহারে করেছি জয়ংজানে নর্বজন॥ হালের গতিতে আমি করিয়াছি জয়। এবে শক্তিহীন আৰ্থি ওচে মহোদয়॥ কালবলে দব হয় ওছে তপোধন। কালের গতিই এই शांত ক্রিভুবন॥ **চালবলে** উচ্চ হয় জানিবে সংসারে। উচ্চ জন নীচ হয় জানিবে অন্তরে॥ লালবলে পূর্বতেজ নাছিক আমার। আমার যতেক বল' হরুরছে সংহার॥ धकमाख मंद्रिक मन हिल मत्नातमा। आमारत छार्किया तार्वे शिक्रिक ललना में

उत भारम कि वेलिव अरह जरमाधन। পতिख्ञा गर्जी यम जार्र कि की वन ॥ মরিলে এখন মম তাহাই মঞ্জ । অধিক বলিব কিবা ওছে মহাবুল lb অকালে স্কীরে মুম বিনি যে স্থিল ৷ কাহার শোনেতে আমি ইয়েছি বিকলানি কালের আশ্চর্যা গতি কর দর্শন। কালবশে না হন ওছে তপোধন। । কানেতে উর্ভি হর কালে এয় পাদ। কালে উত্নীচ হর কহিনু তোমার গা कालवरण भिनाक्त कति परावत । स्थाराह्य वय करत ७८६ म्निवत 🎼 মূষিকে বিনাশ করে মত্ত করিবরে। কালবণে তেহজাতি সর্পগণে মারে॥ শশক হইয়া করে শাদি, ব হনন। কালের গতিই এই ওতে তথোধন। মহিষ হইল মরে মজিক। দংশনে। বাবসে প্রত মারে কালের কারণে॥, कानवर्ग ताज। इत विभिन्न जुवन। कान<ा। एक। उन विधित प्रमे॥ কালবশে সৃতি হল কানিবে গভারে। ভেট সন ন্যুল্য ১ ছিতু ভো**মারে ॥** ই কালেতে শিশের সার হলে যাব লয়। কালেতে শেলের স্থা ও**ছে মালালর**।। ইশ্র আদি যত দেশ ফ্রিনিগ্রা কাবেশে নব খানি হইবে নিধন॥ সুহুন করেল। বান বেল এজাপতি। কালেতে সাল্য তার হবে অংশগতি॥ आरा जूनि रशायन करिस शारा। कालगान एव रन धाव विसामन॥ এখন বৈষ্ঠ ছলে করিছ নমর। কালবণো মাব গংগ ও**হে মুনিবর**॥ এত গ্রু ক্রিভেছ বিদের প্রবেশ অনিতা ত্রু এট জানিবেক মনে গ্র বিশ্বনারে বাহা কিরু কর দর্শন। স্কলি অনিভা তান ও**হে তপোধন।** একমাত্র মতা হব দে দেব হরি। নিতা নির্পেন যিনি তগত-বিহারী॥ দ্যাম্য সর্বম্য তিনি মর্কা"র। একমাত্র মত্য জগত-আধার।। ভাছার মায়াৰ মুগ্ন এ তিন ভুবন। মাযাবশে মোরা নব করি বিচরণ।। দেখিতেছ দুর্গানের গগন-উপরে। অহরত্ সম্প্রাবে ভাপদান করে॥ নকলি ভাঁছার ইছে। জানিও সুমতি। এই যে হেরিছ চাল মনোহ্র জ্যোতি॥ ভাঁচার ইচ্চায় করে কিরণ-এদান। তারাদন মালা দেশ করে অবস্থান॥ ভাঁচার ইক্সায় সব জানিবে সুলন। তাঁহার হত্যা সৃতি করে প্রামন॥ . বিষ্ণুর্ক্র বিশ্ব তিনি করেন পালন। শিবরতো অওকালে করেন নিধন ॥ তবে কেন মুনিবর কর অহঙ্কার। ছুদিন পরেতে গর্ব ভাঞিবে ভো**মার ॥** কার লাধ্য কোন জনে বধিবারে পারে। নিগনের কর্তা জান জগত-ঈশবরে॥ মেই এন মারিবারে ছয়েন সক্ষা। তবে কেন গর্জ কর ওছে তপোধন॥ নিত্য নিরঞ্জন যিনি অধিলের পতি। তিনি বিনা যোরে মারে কাছার শক্তি 'এত বলি নরপতি, করি জোঁধতর। নামিলেন রথ হতে হয়ে ক্ষান্তর।

## 

ভক্ষপট ভক্তি করি আপন অন্তরে। অফালে খাধর পদে নম্ভার করে। **পুনর্কার রথোপরি করি আরোহণ। শরাসন নিজকরে করেন ধারণ॥** · যোজনা করিয়া শর নিজ শরাসনে। নিকেপ কেবেন তাহা পুলকিত মনে॥ রামের উপরে কবে শর বরিষণ। আবরিল চারিদিক শরেতে তখন। **पारुं नमत** वार्ष क्रिंग पृष्टे करन। तायवरन महाश्रीय मारत रेन्ग्रिशर्ग। অসংখ্য অসংখ্য দেন। হইল নিধন। ত্রদ্ধ অস্ত্র শর!মনে করেন খোজন। ্নিকেপ করিল অস্ত্র মহাতপোধন। অসংখ্য সামন্ত তাহে হইল পতন॥ তার প্র পাশুপত লয়ে মহামতি। শ্রাসনে যুক্তোহা অতি ক্রতগতি॥ খু**মন্ত্রপূত** করি তাহা করেন ক্ষেপণ। উঠিল গগনে বাগ ধোর দরশন॥ ্জায়িনম জ্বলে অস্ত্র গগন-উপরে। কোটি সূর্য্য নম তেজ পাশুপত ধরে॥ শর দেখি ভয়ে কাঁপে যত দেবগণ। উলমল করে প্রী কাঁপে ঘন ঘন॥ মহাযোর শব্দ করি সেই শরবর। রাজারে বধিতে চলে গগন উপর॥ ুদেই বাণ নরপতি করিয়া দর্শন। কাতর অন্তরে কাণে অতি ঘন ঘন॥ <sup>গু</sup>**ষাণ হেরি হ**য় তাঁনে আকুল অন্তর। গ্রীহরি মরণ করে নুপতিপ্রবর॥ '**দেখিতে দেখিতে বাণ আ**দিয়া পঞ্জি। রাজার হৃদ্যমূল বিশ্বিবা ফেলিল॥ .মূর্জিছত হইয়া রাজা পড়িল ধরায়। নৃপতির মূত দেহ গড়াগড়ি যায॥ " 🔊 হরি মরণ করি অর্জন রাজন। আপন জীবন গন দিল বিসর্জ্জন॥ ষ্মারোবে ভগুরাম সমর করিল। ক্রকুল নির্মূলে সক্তি নাশিল॥ যথায় ক্ষরিয় রাম করে দরশন। ধরিয়া তাহারে করে তখনি হনন।। যারে পায তারে মারে কারে নাহি রাখে। কুঠাব প্রহারে দবে হেরিলে দল্মুখে॥ কিবা হদ্ধ কিবা যুবা কিবা শি শুগণ। সন্মুখে ছেরিলে তাবে করয়ে নিংন॥ গর্ভবতী ক্তরনারী যদ্যপি নেহারে। তখনি নিধন করে কুঠার-প্রহারে॥ এইকেপে মহামুনি রোধিত অন্তরে। একবিংশ বার ক্ষা বিনাশিত করে। ক্ষত্র জাতি না রহিল সংসার মাঝার । নিক্ষত্র করিল পুথী তিন সপ্ত বার॥ ·ক্রুরনার গণ দবে দভর-অন্তরে। লুকায়িত হৈল গিয়া ভান্ধণের ঘরে॥ বিধের ঔর্নে পুনঃ তাদের জঠরে। ফ্রান্ডাতি জন্ম লম্ব এ ভবসংসারে॥ এদিকে অর্জন রাজা ত্যজিয়া জীবন । বিমানে চড়িয়া গেল গোলোক ভবন॥ ্রিলে হে ঋষিগণ আশ্চর্য্য ঘটন। । আরু কিবা শুনিবারে বাসনা বল না॥ ক্ষাপ্রশে সব হয় জানিবে সকলে। ধরামাঝে ঘটে যাহা সুব করে কালে॥ কালেতে উৎপত্তি হয় কালেতে নিধন। কালের করাল হাঠত সবার পতন। কালের প্রভাব কৃত খণ্ডিবার নয়। দেখ দেখ কাইবীর্য অভি মাহাদয়॥ যাহার সমান নাছি আছিল ভূবনে। যার সম বীর নাছি কভূ কোন শানে ধা দশাননে যেই জন করেছিল জয়ঁ। কারো কাছে যেই নাহি হয় পরাজয় ॥ কালের লিখন দেখ আশ্চর্য্য ঘটন। ঋষির হাতেতে তার হইল পতন॥ জতএব সংসারেতে কিছু সত্য নয়। অনিত্য সকল বিশ্ব ওচে ঋলিচে, ৸য় জনম লভিয়া এই ভবকারাগারে। যেই জন মদভরে সহদার করে॥। ভূতি সে জন লভে নাহিক নংশ্য। নরাধ্য সেই জন জানিকে নিশ্য॥। অতএব মায়া স্বেহ করি বিস্জুন। একান্ত অন্তরে ভাব নিত্যনিরঞ্জন॥ ভববদ্ধ কাটিবারে যদি থাকে মন। একান্ত অন্তরে কর তাঁহারে সরণ॥

#### তক্তিংশ স্থার। প্রভাপতি সদনে ভার্গবের প্রস্থান।

সনংকুমার উবাচ।

নিছত্য নৃগ্তিং ধীমান্ ক্ষত্রাশ্চ ধর্ণীক্তিন্। তিওয়ান্যন সততং ঞীহারিং হৃদ্ধে ততঃ॥

খাষিগণ মনোবিব। সন একমারে। পুনশ্চ জিজ্ঞাসা করে স্কমপ্পর স্বরে॥ শ্বিন্তু তোষার মধে স্পর্ব ভারতী। লভিবাদ ওলুজ্ঞান ও**হে মহামতি॥** ন্দেহ আছ্যে এক ক্রম এবণ। বিস্তার করিয়া তাহা করহ বর্ণন। নিক্ত করিল গল। ভার্বি পিমান্। ফুচুল কুডু শিশু মারে মৃতিমান।। গর্ভবত। নারী কত করিন হনন। অবশ্য ইহাতে পাপ হয় আচরণ॥ কিরপে পাতক উ।র হ্য বিদূরিত। দেই কণা বল প্রভু হইণা ত্বরিত॥ এত পাপ করি দেই মহা তপোধন। কিরূপে প তক হতে হয বিমোচন। এতেক বচন শুনি বিধির তন্য। ক্ষিলেন শুন শুন ওছে ঋষিচয়।। আৰ্চ্চ্য্য ঘটন। পরে করহ প্রবণ। একে একে নব কথা করিব বর্ণন। জিজ্ঞাসা করিলে বাহা অপূর্ব্ব ভারতী। বর্ণন করিব ওছে ভাপসসংহতি।। অর্জন রাজারে রাম করিয়া নিগন। পরার যতেক ক্ষত্র করিল হনন।। একবিংশবার ধরা নিক্ত করিল। প্রতিজ্ঞ। পূরণ করি পুল্কিত হৈল। বন্ধুগণ সূহ রাম আনন্দে মগন। , দিবোনিশি হরিপদ করেন মরণ।। রটিল তাঁহার যশ জগত-মাঝারে। হুরগণ পুপের্ফি শিরোপরি করে॥ রামের প্রশংসা করে জগতের জন। কতিয় নিধন হেতু রামের জনম॥ প্রতিজ্ঞা পূরণ করি ভার্গব ধীমান। ত্রগার নিকটে ত্রা করেন প্রসান।।

, घरत करम खनात नमरमं। अकिलंदन कतन्ति धानस इतरा । तारपरत হেরিয়া তুঊ দেব পরাসন। আশীষ করিয়া কছে মন্বর বচন। আকেতে করিয়া তারে করেন আদর। কত কথা কছে বিধি রামের গো৹র ॥ বিধি কহে শুন রাম আমার বচন। জগতের নার মেই নিতা নির্দ্ধন প্রবার প্রধান সেই হরি রুপাময়। সকলের আদি তি।ন তিনি ইচ্ছাম্য। ভাঁহার অর্চনা ভিন্ন কিছু নাহি আর। বিদের কারণ তিনি স্বার আণার। ভক্তিভাবে তাঁর পূজা করিলে সাধন। অবশ্য তাহার হয় পাতক নাশন॥ **অতএব তাঁরে** ভাব এ নান্ত অভরে। পূজা কব ভক্তি ভাবে দেবতা-নিক্রে॥ · ইউদেবে আরাখনা কর সর্ধকণ। পিতার চরণ সদ। কর্ছ হরণ ॥ মাতার । চরণ ভাব একায়ে অন্তরে। দদা লাখ ভক্তি মতি তাদের উপরে॥ পুরুপদ শ্বদাকর অভবে মরণ। গুরুপা ভিন্ন জার নাহি কিচুধন। গুরুদের রুষ্ট হন যাজার উপরে। বিশ্ব বিপদে ভাবে পদে গদে ছেরে॥ ৩:३ ভূষে জগত ত জানিবে স্থান। তাহার উপরে পাঁচ্যত্ররগণ । ওলাদে पुषे नमा यांचा उपे.त। आंगल जोचारत (मांथ पानाय पारता। ७,०८०र खना दिए भिट्दत रयंका उन्दर्भ खरूराय कानित श्वान ए खरू इर > **দিব্য জ্ঞান ল**তে নাশ্তন। এক দেশ ইরিছাঁক্ত ২০: ন শূর্ণণ। বাবে ক্রানের মূল ওর মহোর। ওক হতে ভব্জান নার সংখ্যা। ওক সম কভু নাহি জগত-মাঝারে। মঞ্চানর। তান কহিন্ত গোনারে। ष्यद्रशास्त्र पछ हरा (६३ नताथ। তকর অর্চন। নাহি বরুসে সাধন।। ভাষার পাপের ভার বলা নাহি যায়। ত্রমহত্যা পাপ সানি আত্রমে তাহায় অতএব শুন শুন ওহে তপোগন। ভক্তি করি ন্দাকর গুরুর এছন। , ধরার ক্তিয় সব করিনে সংহার। এতিছা পূরণ হৈল জানিবে তোমার। একবিংশবার পর করিনে নিধন। কিনু এক কথা বনি ভন তপোধন।। ,প্রাভিদ্ধা পূরণ বটে ছইন হোমার। কিন্তু শিরোপার ছৈন পাতকের ভার॥ 'কত শিও কত মুবা করিলে নিধন। গর্ভবতা নারী কত করিলে 'হনন॥ এই সব পাপ হতে যাহে মুক্তি হয়। তাহার উপায় এবে কর মহোদয়॥ ্তোমার পরম গুরু দেব পঞ্চানন। তাহার নিকটে আইরা ক হ প্রন॥ মেরপ আদেশ শেন দেব মহেশ্ব । দেইরপ কার্য্য কর ওর্ষে মুনিবর ॥ শিবের স্মাদ্রেশ ধর নিজ শিরোপরে। পাতক মোচন হবে কৃহিন্ম তেমারে। তোষার পরম গুরু দেব পঞ্চানন। জগতের গুরু তিনি ছানে সর্বজন। পরাপর শুরু তিনি এ তব সংসারে। অবিলম্বে যাহ পুরি কৈলাস নগরে॥ আমার বচন ধর ওঠে তপোধন। বিলম্ব করিয়া আর নাছি প্রয়োজন॥। পুরাণে পবিত্র কথা সুধার লহরী। অন্তকালে ভবার্ণবে একমাত্র তরী ॥

#### দ্বাত্রিংশ অধ্যায়।

ভার্গবের কৈলাসপুরে গমন, গণপতি সহ বিবাদ এবং শিবের আজ্ঞায় কাম্রূপে গমন।

সনংকুমার উবাচ।

বিধেব চনমাকর্ণ্য রামে। ভৃগুকুলোন্ডবঃ। মনোজবেন জ্রুতেন কৈলাসনগরং যয়ে।॥

দিজ্ঞাস। করেন পুনঃ যত ঋষিগণ। কত কছ তার পার বিধির নন্দন।। অকার আদেশে রাম কি কাজ করিন। কৈলানে যাইয়া তথা কিরূপ ঘটিল। िक । আ। েশ দেন দেব প্রান্ন। কিবাপে রামের পাপ হয় বিমোচন ॥ ' এই দ্বাদা কৈ কি বি। বিস্তার। শুনিতে বাসনা অতি হতেছে স্বার্॥ এতেক বচন শুনি বিধির নন্দন। কহিলেন শুন শুন ওছে ঋষিগ্ৰ । বিশির বচনে নম এ । ভ ভভরে। জ্রুভগদে চলি যান কৈলাস-নগরে॥ পরশু হাতেতে ভার আনন্দে মগন। গুরুপদ পুজিবারে করেন গমন॥ পুটি বেন গুলপদ মনেতে বাসনা। ছেরিবেন গুরুপত্নী হৃদয়ে কামনা।। থারে থীরে কৈলানেতে উপনিত হন। কৈলানের শোভা রাম করেন দর্শন॥ ছারদেশে উপনীত রাম মহোদয়। দেখিলেন তথা বসি আছে দ্বারীদ্বয়॥ নন্দী ভূঞা দারদেশে আছে তুই জন। ডিশূল হাতেতে শোভে অতি বিভীষা ভয়ক্ষর বেশ পরা জালছ দোঁছাকার। রাম গিয়া ক**হে** দ্বারী ছাড়্**ছ তুয়ার ॥**‡ এত বলি ছুই ি কে করে নিরীমণ। ছুই দিকে গণপতি আর ষড়ানন ॥ পোসাকারে খ্যিবর করিয়া প্রণতি । কহিলেন স্বিনয়ে মধুর ভারতী॥ শিবের পর্য শিষ্য আনি মহাজ্ব। ভৃগুরাম নাম মম ঋষির নন্দন। জমদ্বি পিতামম শুন ছুই জনে। দ্বার ছাড়ি দেহ যাব শিবের সদনে॥ শুরুপদ্ দরশন করিব এখন। তাহার চরণে গিয়া করিব বন্দন॥ পদে করি নমস্কার। এখনি ফিরিব আমি শুন গুণাধার॥ এতেক রচন খনি দেব গণপতি। কহিলেন শুন শুন ওহে মহামতি॥ এবে নাছি পাৰে: যেতে পুরীর শভিতরে। ছাহার কারণ শুন কহি গো ভোমারে॥ পিজা মাতা ছুই জনে আছেন নিক্সিত। এখন তথায় যা(ও)য়া নহেক উচিত॥

विनिकान এই शेटन कर अवदान। वियुवि ( इंटर्न यादव ( क्टर पित्रान। সিনেশের এই বাক্য করিয়া ভাষণ। মিউভাষে কহে তাঁরে রাম তপোধন। ৰ্কি কারণে নিবারিছ কছ মহামতি। শিবপাশে যাব আমি করিতে প্রণতি॥ িদোঁহার চরণে আমি করিয়া বন্দন। এখনি ফিরিব শুন ওতে গজানন। ইথে নিবারণ করা নহে সমুচিত। অতএব মোরে ছার ছাড়হ ছারত॥ আমার পর্ম গুরু দেব পঞ্চানন। ভাঁছার চরণে আমি করিব বন্দন॥ ভীহার ক্লায় আমি জয়ী ত্রিভুবনে। নিধন করেছি আমি অর্জন রাজনে॥ ক্ষার্ক্রল মম হত্তে হয়েছে সংহার। ধরাতলে ক্ষত্রবংশ নাহি কোথা আর॥ 🛍 क বিংশবার ক্ষত্র করেছি নিধন। দ্যাকরি মোরে বর দিল পঞানন॥ ্রিতিজ্ঞা পূরণ করি শিবের ক্লপায়। পাওপত অন্ত্র শিব দিহাছে আমায়॥ দিয়া করেছেন মোরে দেবী ক্ষেক্ষরী। অতএব ছাড় দ্বার যাব জ্বা করি। বিভাষাত। দোহাপর করি দরশন। ভাঁহারের দোহাপদে করিয়াবনন॥ শীয়গতি ফিরি আমি আসিব হেথায়। অতএব ছাতু দার মিন্তি তোমায়॥ ্র ক্রার্ড। শিবপাশে করি নিবেদন। শীঘগতি গুন হেথা আনিব এখন।। ্রিকাত এব মোর বাক্য শুন গণপতি। দ্বার ছাণ্টি দেহ মোরে অতি ভাতগতি॥ ্**এতবলি ভৃগুরাম পুলক অন্তরে। গমনে** উদ্লোগ করে প্রীয় হিতরে॥ তাহা দেখি গণপতি কহে পুনরায়। শুন শুন মহামতি এহি যে তোখায়॥ **ঁকাণেক দাঁডোও হেথা আমার বচন। যাহা** য, হা বলি হাটা করত প্রবণ।। ্রেমনে ঘাইবে তুনি পুরীর ভিতবে। জনক জননী দোহে সাজে শ্যাগরে॥ **নিদ্রিত আছেন দোঁহে শুনহ বচন। একাসনে ছুট্ছন করিব। শ্রন। কিরূপে যাইবে বল ভুমি গো তথায়। এ**ই হেতু নিবারণ করেছি ভোষার॥ ্**আমার বচন নাহি** করিছ প্রবণ। এ কেমন রীতি তব করি দরশন॥ **হেন ব্যবহা**র বল কি হেতু তোমার। জ্ঞানী জন হয়ে কেন হেন ব্যবহার॥ ্ৰিবুরীর ভিতরে যেতে না পাবে কখন। জাগরিত হলে পরে করিবে গমন॥ গ্রহতক বচন রাম করিয়া অবণ। মনে মনে হাস্ত করে মহাতপোধন।। ্বিনীতবচনে পরে কহে মহামতি। ওন শুন মম বাক্য- ভহে গণপতি॥ ু**ঞ্জপ বচন নাহি বল পুনর্কার। পুত্র প্রতি হেন বাক্য ক্লৈহে যুক্তিসার॥ িজামা প্রতি কেন কছ এর**প বচন। অন্দরে, অবশ্য আমি করিব গমন॥ ্তিন তান গণপতি বচন আমার। কর্তব্য করিব আমি 🖢 হে গুণাধার॥ र्दिकरणव भरद्यत वित्यत कात्र। वित्यत जनमी जानि किमक्ती इन। क्षिमक खमनी स्मार्ट महत भहती। मारतत निकरि रघरठ किया छत्र कति॥

জননা পাশেতে লক্ষা শিও কোথা করে। অতএব তব বাক্য মনে নাহি স্বরো তোষার বন্তন নাছি করিব এবণ। প্রবেশিব অন্তঃপুরে জানিবে এখন এতেক বচন শুনি, দেব গণপতি। ইইলেন অন্তরেতে অতি ক্রোধমতি 🎉 নরোবে কহেন শুন ওহে তপোধন। বৃদ্ধিহীন তুমি অতি করি দরশন। জ্ঞান নাহি যেই জন অস্তরেতে ধরে। মূঢ়মতি কহে তারে সংসার ভিতরে॥ পুনঃপুনঃ কথা কহ নির্কোধ স্মান। ক্ষণকাল এই স্থানে কর অবস্থান 🗓 আমার বচন রাখ ওছে তপোধন। পিত। মাতা জাগরিত হন যতকণ 💵 তাবত এখানে রহ মুনির তনর। তার পর অন্তঃপুরে যাবে মহাশয়॥ এতেক বচন শুনি হিছের নন্দন। গণেশ উপরে রোব করিয়া তখন। নির্ভন্ন অন্তরে রাম পুরীনবের ধার। হত্তেতে পরও ধরি ক্রতগতি যায়। তাহা দেখি গণপতি সরোয অওরে। লোহিত লোচন করি দাঁড়ালেন ছারো। পুনঃপুনঃ তপোধনে করেন বারণ। কিছতে না শুনে রাম মহাতপোধন॥ যত নিবারণ বরে দে। সম্বোদর। তত নাছি বাক্য মানে মহর্ষিপ্রবর। রোবভরে ৮েল রাম পুরীর ভিতরে। গণেশ ভর্মনা করে অতি রোষভরে। সমোধিয়া গণপতি করে নিবারণ। কেন তব ওতে খবে হেন আচরণ॥ নিবারণ নাহি শুন ওহে ঋষিবর । ইহার উচিত ফল লভিবে সত্তর॥ আমার হাতেতে তব নাহি পরিত্রাণ। কণেক অপেকা ঋষে কর এই স্থান। 'গণেশের বাক্য নাহি করিয়। প্রবণ। ক্রতগতি পুরীমধ্যে চলে তপোধন॥ নির্ভিয় হাদয়ে রাম চলিতে নাগিল। গণপতি পিছু হতে তাহাকে ধরিল। ছুই জনে ঠেলাঠেলি করে বহুতর। পরশু তুলিয়া ধরে মহর্ষিপ্রবর॥ উর্দ্ধহন্তে গণেশেরে মারিবারে যায়। বড়ানন তাহা দেখি ক্তগতি ধায়॥ রামেরে সংঘাধি কহে দেব বড়ানন। হেন আচবণ তব কেন তপোধন। উল্লত হয়েছ তুমি গণেশে মারিতে। পরশু তুলিলে তুতি আপন হাতেতে॥ শুরুপুত্রে বিনাশিতে ভুমি তপোধন। নিজ কবে অস্ত তুলি করিলে ধারণ॥ তোমার ভকতি যাহা গুরুর উপরে। প্রত্যক্ষ হইল তাহা বুঝিমু অন্তরে॥ দেখিবেক গুরুপুর্ভে' গুরুর সমান। এইত সকলে জানে বেদের প্রমাণ॥ অস্ত্রক্ষেপ কর তুমি তাহার উপরে। কেন তব হেন বুদ্ধি বহত আমারে 🏾 আমার বচন এবে করহ এবেও। হেন অনুচিত কর্ম না কর কখন। यि হেন কর্ম ভূমি কর পুনরায়। অনর্থ ঘটিবে তবে কহিন্ম তোমায়॥ তার দেবে তব ভীক্তে কিছুমাত্র নাই। জানিলাম নিঃসংশয় কহি তব ঠাই॥ কার্ভিকের হেন বাক্য করিয়া প্রবণ। পর ও রাখিল তবে মহাতপোধন।।

'গণেশেরে ঠেলি কেলে মহারোষভরে। গণেশ পড়িয়া গেল ভূমির উপরে পুনশ্চ দাঁড়ার উঠি দেব গজানন। রোষবশে হয় তাঁর লোহিও লোচন পিতৃশিষ্য তপোধন ভাবিয়া অন্তরে। গণপতি নিজ ক্রোধ জাপনি সমূরে ভার পর তপোধনে করি সম্বোধন। বিন্য বচনে ক্রে দেব গ্রজানন শুন শুন যাহা বলি আমার ভারতী। পিতার পাম শিষ্য তুমি মহামতি। ষ্মতএব ভাতৃসম তুমি যে আমার। এই ছেতু ক্মিলান দিজের হুমার দৈলে পরিত্রাণ নাহি লভিতে কখন। আমার বচন মত্য ওছে ওপোংন প্রভামারে বলিলে ফিছু জনক জননী। ক্রেদ্ধ হন পাছে ভয় মনে মনে গণি। **দৈ হেতু ক্ষমিত্ব তোমা ওহে তপোধন। এখন আ**মার বাক্য কর**হ প্র**বণ হিজের নন্দন হয়ে এত অহকার। ক্যুদ্রজীব ভুল্য জ্ঞান আমারে তোমার অতিথি ভাবিয়া তোমা কমি এইবার। নতুবা কখন বেতে শ্যন-আগার মহাশিষ্য তুমি ঋষে এই মে কারণ। ক্ষিলান আজি ভোষা ও্ছে তপোগন **মেমন অন্তায় ত**ব হেরি ব্যবহার। ইহাতে নিশ্বর তুমি হেতে যমাগার <mark>শীরুষ্য জ্ঞানে কমিলাম জানিবে তোমারে।আর্নাহি রোয মম তোমার উপ</mark>ে ্**ক্ষণকাল এই স্থানে কর অবস্থান। শি**বশিবাপাশে গরে করিবে পয়াণ এতেক বচন শুনি ভৃগুরাম কয়। এখানে ন। রব তামি শুন মহাশগ যাহা ইচ্ছা কর তুমি আমার গোচরে। এত বলি চলে লাম সন্দর ভিচেরে। **ভাহা হেরি গণপতি অতি ক্রেমন।** বাত পশারিব। রামে ধরিল তখন। রোষভরে কহে রাম গণেশ দেবেরে। দেখিব ভোমার দেহ কভ বল গে। **এত বলি ভূতুরাম পরশু লইয়ে। গণেশ** উপরে ফেলে কপিত ছইযে। শিবের অব্যর্থ অস্ত্র অতি বিভীষণ। লম্বোদর উপরেতে ফেলে তপোগন। ষহাবেগে চলে অস্ত্র ধেন হুতাশন। নিবারিতে নাফি পাবে দেব গঙ্গানন। পুর্ব্য সম মহাতেজ সেই অস্ত্র ধরে। সে অস্ত্র পড়িল গিরা গণেশ উ রে। মহাবেগে সেই বাণ পডিল যখন। মূর্চ্চিত হইয়া পড়ে দেব গজানন। কার্ত্তিক ইত্যাদি সবে করে হাহাকার। প্ররগণ ঘোররবে কান্দে অনিবার। ধ্বন মূৰ্চ্চিত হয় দেব গজানন। জগং তখন কাঁপে অতি ঘন ঘন। সেই শব্দে কাঁপি উঠে এ তিন ভুবন। ভীত হয়ে উঠে যত জগতের জন অকালে প্রলয় যেন ঘটিয়া উঠিল। কৈলান নগরে সাঁব অজ্ঞান হইল। শিবশিবা নিদ্রাত্যাগ করিয়া তখন। তার হয়ে মৌনভাবে রহে ছুই তন বাহির হইয়া দোঁহে আনে ক্রতগৃতি। দারেতে আসিয়া দৈবে দেব গণপতি। मूर्क्छ दृरेवा पूरम आदह अटल्डन। अविवन वाक्शावा इट्डटह वरन।

ধনন ভাদিরা রক্ত পড়িছে ধরার। শোণিতের নদী বহে একি যোর দার। দার্ভারে রয়েছে তথা রাম তপোঁধন। কঠার হাতেতে করি অতি বিভীরণ্ ছু ভাহা দেখি মহেশ্বর বিশিত-হলর। জতগতি গণেশেরে কোলে করি লয়। বিবের স্পর্লেতে পুত্র লভিলেন জ্ঞান। একদৃষ্টে পিতৃপানে চাহে মতিমান্ছ রামেরে হৈরিরা দেবদেব গণপতি। অপেমুখে হেটমাথে করে অবস্থিতি॥ মহেশ্বর যড়াননে জিজ্ঞানে তখন। কার্ত্তিক সমস্ত কহে পিতার সদন। তাহা শুনি মহেশ্বর করেন চিন্তন। মনে মনে ভাবে দেব একিবা ঘটন। পুত্র হেরি অতি জুল্ধ দেবী মহেশ্বরী। লোহিত লোচনে চাহে রামের উপরি গণেশের দত্ত ভ্রম করি দরশন। ধ্যাতলে পত্তি সভী করেন রোদন। মহেশ্বর গণেশেরে অক্তেতে নইযে। এনোধ দিলেন কত সান্থনা করিয়ে॥ ঘন ঘন পুত্রমুখ করেন চুদন। ঘন ঘন সান্থনাক্য করেন অর্পণ। নানামতে শান্তক্ষা কহেন তাহারে। মাতার প্রবোধে পুত্র শান্তভাব ধরে। পুরাণে পুষার কথা অতি মনোরম। শ্রণ করিলে হয় পাপ বিনাশন।। যেই জন ওনে ইহা আত এতিত্তরে। ভ্রাণ্যে অন্তরে কর শ্রহিরি হরণ।।

### ত্রাত্রিংশ অধ্যায়।

ভূওরামের প্রতি তগবতীর রোদ।

সনংকুমার উবাচ।
গণেশং পতিতং দুঞ্চা ভগ্নন্তমতেতনং।
রোধাসমাকুনা দেবা উবাচ প্রমেগরং॥

ননত-কুমার কহে ওন ঋদিগণ। তার পর হয বাহা আশ্চর্য্য ঘটন॥
গাপতি অধােমুখে হেটমাথে রয়। শােনিতের ধারা অঙ্গে অবিরত বয়॥
পার্কতা হেরিয়া তাহা করেন রােদন। শিকেরে ন্সােধি কহে নধুর বচন॥
শুন শুন নিবেদন ওছে পঞ্চানন। কপাম্য রুপা করি করহ অবণ॥
অধানী কিন্ধরা তব বিদিত ভূবনে। ন্রােজন কিবা নাের জীবন ধারণে॥
জগতের পিতা তুমি সর্ক বিশ্বময়ণ তােমার নিকটে সব সম্জান হয়॥
তব পাশে ছােট বড় ভেদাভেদ নাই। সমভাব ভাব সবে শুন্সো গােঁসাই॥
এই হেতু শুন দেব মুম্ন নিবেদন। গণেশেরে মারে বল কিসের কারণ॥
সমুতিত বিবেচনা করি দ্রাধার। স্বার সাক্ষাতে কর্ উচিত বিচার॥

एडायोड भेत्रम भिया अदे उर्शायम । ग्रेशिंड गह किल कलह अस्त। ইহাতে যাহার দোষ করহ বিচার। নিবেদন তব পাশে ওতে গুণাধার॥ যার দৌষ যেই রূপ হবে দরশন। তাহারে সেরূপ দণ্ড দিবে পঞ্চানন। কার্ভিকের উপস্থিত আছিল এখানে। জিজ্ঞাসা করহ প্রভূ তাহার সদনে। কি দোৰ করিল কেবা জান পঞ্চানন। সমুঠিত শান্তি দেও এই নিবেদন॥ कां किंदिक स मिथा। कथा कच्च ना कहिता। कहित नत्रकमात्य जवना मित्।। **শিখ্যা সাক্ষা যেই জন করয়ে অর্পণ।** লোভে বশীভূত হয় যেই তুরজন। ন্মুটিত ফল পায় সেই ছুরমতি। অন্তিমে নরকে তার জানিবে বসতি॥ মাবত ধরায় রহে শশাক্ষ ভাকর। তাবত রহিবে দেই নরক-ভিতর। আারো শুন আশুতোষ মম নিবেদন। ছুই পক্ষে স্থবিচার করে যেই জন।। 'अर वटन यनि त्मरे अविजात कटत । तम जन अखित्य यात्व नतक-माबात्त ॥ **উন তন পঞ্চানন মন নিবেদন। শোকেতে কাতর আমি হয়েছি এখন॥** শুত্রের অবস্থা হেরি হাদর আমার। শোকেতে কাতর অতি ওহে গুণাধার॥ কাওতোবে এত বলি ভবানী শসরী। সহসা চাহিয়া দেখে রামের উপরি॥ হামেরে ছেিয়া দেবী ফুপিত অন্তর। ততাশন সম জুলে তাঁহ।র অন্তর ॥ ্রবিত নয়নে দেবা কহে ভ্ওরামে। শুন শুন বলিতে ছি তোমার সদনে॥ **কি কারণে গণেশেরে করিলে প্রহার। বল বল সত্য করি নিকটে আমার॥** বিশ্রের বংশেতে হয় তোমার জনম। পরম ধার্ষিক তুনি বিফু পরায়ণ॥ **ুতোমার জনক ছিল অতি গু**ণবান্। সদত হরিতে মতি রাখিত ধীমান্॥ সম্ভ রাখিত মতি হরির চরণে। ভাহার যতেক গুণ বিদিত ভূবনে॥ 🗸 রেণুকা ভোমার মাতা পতি পরায়ণা। ভার সম মতী সাধী না হেরি ললনা॥ প্তিসহ অনুমৃতা সেই নারী হয়। বিফুভক সেই নারী নাহিক সংশয়॥ ভাঁছার তনয় হয়ে তুমি মহামতি। কেন ছেন কার্য্য কর শুনহ সংপ্রতি॥ শিকের পর্ম শিষ্য তুমি মহাজান্। শিববরে বলবান্ হয়েছ এখন। মিশত্র করিলে ধরা মহেশের বরে। শিবররে নিক্ষত্রিয় করিলে ধরারে॥ জাহার উচিত ফল করিলে সাধন। গুরুর দক্ষিণা দিলে, উচিত এখন॥ ওরপুদ্র প্রতি কৈলে অপ্রের প্রহার। তারুরে দক্ষিণা দিলে করিয়া বিচার॥ অধিক বুশিব কিবা ওছে তপোধন। মহেশের শিষ্য বুলি রহিল জীবন॥ লৈলে এভক্ষণ তব জীবন যাইত। তোমারে শমন-গৃত্ত ষাইতে হইত॥ তোমাপেকা বলবান এই গণপতি। তোমারে নাশিতে পার্ক্লে এই মহামতি॥ তোমার অধিক শক্তি ধরে গ্রানন। অধিক বশিব কিবা এতে তপোধন।।

এইরূপ নানা কথা কহে স্কথেশরী। অকমাত ক্রুদ্ধ হযে উঠে দিগম্বরী। রোবে অন্ধ হয় দেবা আপন অন্তরে। দেখিতে দেখিতে ভয়ন্ধর বেশ ধরে॥ মুক্তকেশী ভীমবেশা করে অনি ধারী। নাচিতে লাগিন দেবী এলো কেশ করি॥ ভৃত্রামে বিনাশিতে করিয়া মনন। ঘন ঘন তার দিকে করে। নিরাক্ষণ॥ ভ্রতামে সম্বোধিনা কছেন ভবানী। শুন শুন মম বাক্য ভতে মহামুনি॥ নূট্ৰতি তুমি অতি বিপ্ৰের নন্দন। গণেশ উপরে কর অস্ত্র নিক্ষেং । পণ।। রক্তপাত গণেশের করিলে সাধন। ছুরাচার হেরি তব হেন আচরণ।। শিবের পর্ম শিন্য জানিয়া তোমারে। ফ্মিয়াছে গঙ্গানন জানিবে অন্তরে । এখন আমার বাক্য কর়রে এবণ। নিশ্চয় ঘাইবি তুই শমন ভবন॥ বিপ্রবংশে <sup>ছ</sup>মেছিস ভুই পাপমতি। অহঙ্কার এত কেন হেরি যে ন° প্রতি॥ **শপর্থ** ক্রিয়াছিলি ক্ষত্রিয় নাশিতে। কার বলে বল দেখি আমার সাক্ষাতে॥ মনে মনে ভাব দেখি ওরে চুরাত্মন্। সুচত্র সহিতে যুক্ক করিলি যখন॥ কি দশা হইত তোর ভাব ত্রমতি। অন্তরে স্বরণ এবে করহ সংপ্রতি॥ রণভূমে াবে আমি করিনু গমন। কি দশা হইত তোর ভাব ছুরা অন্। মহাকালী-রূপ আমি করিয়া ধারণ। তব কিপ্ত শর সবে করিছে এহণ॥ গরাস করিয়াছিত্র ভাবহ অন্তরে। কার বলে জ্বী হলে তখন সমরে। সমুচিত চন আঁজি করিব প্রদান। জাননা, কি ছুরমতি উচিত বিধান। সমুচিত শিকা আজি দিব যে ভোমারে। ভয় নাহি করি কারে জগত-মাঝারে॥ প্রতীক্ষা করেক কর ওরে তুরাঅুন্। দে ফিব তোগারে অতা রকে কোন্ জন॥ যবে প্রহারিলে তুমি আপন সম্ভানে। তাহার উচিত শাস্তি দিব হে এখনে। তাহার উচিত ফল দিব প্রাস্থা আমার হাতেতে যাবি শ্মন-সদন॥ তামার পরম গুরু দৈব মহেশ্ব। দেখি কত বল ধরে সেই দিগ্রর। कोगाँदत ब्रकुन आंकि (पथिव न्यरन। आगात शाटक यावि गमनक्रस्म।

a de la

িশ্ব পুত্রে প্রহারিলি ভরে ছুরাচার। এখনি পাইবি ফল উচিত ডাহার। े এত বলি শূল দেবী করেন এহণ। তাহা দেখি ভ্তরাম কাঁপে ঘন ঘন॥ , হরিরে করণ করে রাম মহা।তি। বলে এতু রকা কর অখিলের গতি॥ অগতির গতি ভূমি নিত্য নিরঞ্জন। পড়েছি যিবম দায়ে রক্ষ্ত এখন। यि नाहि तक नाथ विशास आभारत। (क आत वनश तका विशास करता হরেছেন ক্রেমতি ভবানী স্করী। পরিত্রাণ নাহি আব ওন গো এইবি॥ বিধের কারণ তুমি সংসারের সার। বিষম বিপদে হার রক্ষ এই বার॥ কি হবে আমার গতি ওহে সনাতন। রম্ম কর লক্ষীনাথ অখিলতারণ। এইরপে ভ্রথম আপন অন্তরে। একমনে চিম্বা করে জগত-পিতাবে। অন্তর্ধামী চিন্তামণি নিত্য নিরঞ্জন। জানিকেন মনে মনে যতুকুলধন। দ্যার ্**শাগর দেব দ**য়ার আধার। মান্স করেন রাখে ক্রিতে উদ্ধার॥ আছা মরি ক্লপামর জগত-বিহারী। হল সন্মত নদ। দেবদেব হরি ॥ তাঁহার উপবে **ছক্তি রাখে যেই জন। তু**র্যতি তাছার হয় সমূবে নিগন।। বিশ্ব তাছাতে ক্ষত্ব ঘেরিবারে নারে। অনাযানে সেই জন ভবাণবে তরে॥ বিপদে **পিড়েছে** রাম মহাতপোধন । ভিন্তাকুল হন হেথা দেব নিরঞ্জন॥ ভাবিফ আকৃশ হন জগত-বিহারী। দেবদেব হরি গিনি ভবের ক্রাণ্ডারী॥

# চতু खिर्म ज्या ।

ছিছবেশে কৈলাসে ছরির আগমন ও ভৃগুরামের উদ্ধারকবন। ন্নংকুমার টিশাচ। অধ্যজগাম কৈলাসং ত্রাভৃং ভার্যবিদীশরঃ । নিত্যেনিরাঞ্জনো দেবো জগতাং হিতকারকঃ।

খাদিগণ সংখাধিযা সনত-কুমারে। পুনশ্চ জিজ্ঞাসা করের সুমধুর শ্বরে।
বল বল ওছে দেব বিথির নদন। কি কাজ করেন পার্র দেব নিরঞ্জন॥
কামেরে আকুল ছেরি গোলোকবিহারী। কি কাজ করেন তাছাবল জুরা করি॥
দিয়ার সাগর তিনি দয়ার আধার। কিরপে করেন বল রামেরে উদ্ধার॥
কিরপে ছলেন শান্ত দেবী দিগপরী। কি কাজ করিল দল দেব ত্রিপুরারি॥
১৯ই দাব শুনিবারে করি আফিঞ্ন। জুরা করি বল ওতে বিধির নশ্দন॥

এত শুনি বিধিশুত কহে ধীরে ধীরে। বলিব বিস্তার করি শুনহ সাদিরে !! অন্তর্বামী নারায়ণ দেব নিরঞ্জন। মনে মনে বত্তকণ করেন পিচন্তর্কী তার পর ভ্তরামে করিতে উদ্ধার। দিজশিত রূপ ধরে দ্যার আধার 📆 অপূর্ব্ব দিজের বেশ করিয়া ধারণ। কৈলানেতে ধীরে ধীরে উপনীত হন 🞉 আশা কি শুন্দর রূপ যেন দিবাকর। উর্থালছে দেহ প্রভা যেনন অনল। অতিথি হইয়া দেব করি আগমন। থীরে ধীরে শিবপাশে উপনীত হন 👪 খেত বাস পরিধান অতি মনোহর। তুলসীর মালা কতে অতীব স্থন্দর 🛍 শোভিতেছে একদন্ত উহার বদনে। নানাতে তিলক শোভে না যায় বর্ণনে॥, কেয়ুর বল্যে শোভে বাতর যুগল। ললাটে ত্রিপুণ্ডু কিবা অতি মনোহর॥ বক্ষে যজ্ঞ উপবাত কিবা শোভা পায়। অতিথি হেরিয়া শিব পুলকিতকায় ॥ থ্রণাম করেন শিব অভিথি চরণে অক্যান্ত সকলে বন্দে বিহিত বিধানে। দ্বিজপদে নমস্পার করেন পার্বতী। আশীস করেন বিপ্র অখিলের পতি। অতিথির পূলা করে দেব পঞ্চানন। ফুশল জিজ্ঞানা শিবে করিলভাদ্ধা॥ গতিথি পূ। 'বল শিব নানা উপচারে। মহাদেব করে স্তব ভকতির ভরে॥ অতিথিরে মিষ্টভ।বে করি সম্বোধন। বিনয় বচনে কহে দেব প্রধানন। কুশন স্কৃষ্টি হ্ন ত্ৰ ভাগ্ননে। সাৰ্থক হৈন্ত আজি ত্ৰ দ্ৰুশনে॥ ভোষারে হেরিফা দেহ গারিত্র হইল। তব দরশনে মম জীবন সফল॥ তোমার চরণ আতি কি:েও সেবন। নফল জনম মম সার্থক জীবন॥ বান্ধণ যস্পি আনে ২২ন। প্তিপি। তাহারে পুজিবে সাধু করিয়া ভকতি॥ বিপ্র সহ ভিন্ন নহে দেব নারায়ণ। সেই বিকু সেই বিপ্র বেদের বচন। বিপ্ররূপে হরি ব্যাপ্ত জগত-সংনারে। দ্বিজ্যেবা যেই জন ভক্তিভরে করে॥ বিষ্ণুপুজাফল গাম দেই সাগুজন। ইহার অগ্রথা নাহি জানিবে ক**খন।**। বিক্তুর অংশেতে জন্ম যত বিপ্রজাতি। বিপ্রেরে পূজিলে হয় অন্তিমে সুগতি॥ অতিথি সন্তুট হন যাহার উপর। নারাযণ তার প্রতি প্রফুল অতর॥ বিপদ তাহারে নাহি করে আক্রমণ। দেই জনে রক্ষা করে দেব নারায়ণ॥ অতিথি দেবার কল বলা নাহি যায়। ভাগ্যবশে স্থ-অতিথি দাদুজন শায়॥ অতিথি দেবিলে হয় মহাপুণ্যোদয়। তার সম নাহি পুণ্য ওছে ঋষিচয়॥ তীর্ণস্পানে যেই পুণ্য হয উপার্জ্জন । অতিথি দেবিলে তাহা শান্তের বচন ॥ ত্রত আদি উপবাস কৈলে যেই ফল। অতিথি সেবিলে ভাষা অবশ্য সফল॥ অতিথির পূজা নাহি যেই জন করে। তুরাচার সেই জন এ ভবদংসারে॥ তাহার পাপের কথা বলা নাহি যায়। নরকে তাহার বাদ কহিছু দ্বার॥

আহার বিভারে বিদ্যা বিদ্যার আগারে। সর্বপুণা নাই তার শান্তের বিভারে। তাহার বিভারে পুণা করিয়া এহণ। অতিথি চলিয়া যায় শান্তের বচন॥ অতিথি ফিরিয়া যায় গৃহ হতে যার। তাহারে পাতক দব দের আপনার॥ দেই পাপভার লয়ে নিজশিরোপরে। মহাপাপীরপে ঘোরে জগত-দং দারে॥ অতিথি বিমুখ করে যেই ত্রজন। তার প্রতি রুফ্ট হন যত দেবগণ॥ ভাহার ঘতেক পাপ বলা নাহি যায়। বর্ণন করিব কিছু শুনহ দ্বায়॥ থেই জন নরদেহ কিরা ধারণ। গোহতা পাতক করে হয়ে ক্রেন্দ্রমন॥ বিদ্বিজন অন্তকালে যেই ফল পায়। অতিথি-বিদ্বী হয়ণ্যে জন ধরায়॥

জন সেই পাপে হয় নিমগন। শাস্ত্রের প্রমাণ ইহা ওহে ঋষিগণ॥
হত্যা যে জন করে অবনীমাঝারে। তাহার যতের পাপ শাস্ত্রের বিচারে॥
। আতিথি বিদ্বেষ হয় সে পাপে মগন। শাস্ত্রের বচন নিথ্যা নহে কদাচন॥
ক্রত্ত্বপাপের ফল যেই জন পায়। ত্রন্ধহত। পাপে মগ্ন জানিবে তাহায়॥
। মিনুকের পাপ আসি সেই জনে ঘেরে। শাস্তের বচন ইহা কহিনু সবারে॥
। শিতা মাতা প্রতি কটু কহে যেই জন। তাহার যতেক পাপ আছরে লিখন॥
। শিতা মাতা প্রতি কটু কহে যেই জন। তাহার যতেক পাপ ওহে ঋষিগণ॥
। শিত্বি-বিদ্বেষী ভোবে সেপাপ-পঙ্কিলে। মন্তক তাহার গতি জানিবে নিশ্ব॥
। শিত্বি বিমুখ হলে সেই গুরজন। তাহার যতেক পাপ ওহে ঋষিগণ॥
। শিত্ব হয়ে সেই জন সন্ধ্যা নাহি করে। স্থাপ্য ধন প্রবঞ্চনা করি যেই হরে॥
। শ্রেই জন সমাসক্ত বেশ্যার উপরে। এই সব জনে আসি ষেই পাপ ঘেরে॥
। শ্রেই জন সমাসক্ত বেশ্যার উপরে। এই সব জনে আসি ষেই পাপ ঘেরে॥
। আন্তবি বিমুখ করে যেই গুরজন। তারে আসি সেই পাপ করে আক্রমণ॥
। আন্তবি বিমুখ করে যেই গুরজন। তারে আসি সেই পাপ করে আক্রমণ॥
। আন্তবালে যেই জন ত্যজিরা জীবন। ক্রন্ত্রীপাক নরকেতে কররে গমন॥

শিবের এতেক বাক্য শুনিয়া প্রবণে। অতিথি ব্রাহ্মণ কছে মধুর বচনে॥
গন্তীর স্বরেতে শিবে করি সম্বোধন। কহিলেন শুন শুন ওহে পঞ্চানন॥
শুন শুন ব্যবতী বলি গো তোমারে। আসিয়াছি যেই হেডু কৈলাসনগরে॥
শুন শুন মম আগমনেন কারণ। আসিয়াছি সেই হেডু কৈলাস-ভবন॥
হেমবতী ক্রন্ধতি জানিয়া অন্তরে। আসিয়াছি সেই হেডু কৈলাস নগরে॥
কল্হের কথা কর্ণে করিয়া প্রবণ। আসিয়াছি সেই হেডু কৈলাস ভবন॥
শুন শুন মম বাক্য ওহে পশুপতি। পরম বৈষ্ণব এই রাম মহামতি॥
হরিত্ত হরিগত জীবন ইহার।, দলা চিত্তে হরিপার ক্রম্থ-মাঝার॥
উহার উপরে ক্রে দেবী হেমবতী । সেই হেডু আসিয়াছি কেলাকু-বন্তি।

উহারে রক্ষার হে তুমন আগমন। শুন শুন হৈমবতী শুন পঞ্চানন ॥ । যে জন বৈক্ষাৰ হয় বিশের মানারে। মৃত্যু নাহি কভু তার জানিবে অন্তরে । ভক্ত-অনুগত দেই দেব নারায়ণ। ভক্তেরে রক্ষেণ তিনি করিয়া ঘতন 🌡 ভক্তের রক্ষার হেতু একাপ্ত অন্তরে। এইরি ভ্রমেন দ্রদা জগত-সংস্থারে ভক হেছু সদা তিনি অতীব চপল। ভক্তেরে রক্ষিতে সদা ব্যাক্ল অন্তর 🕏 ভক্তের জনক তিনি ভত্তের জননী। ভত্তের বশগ সদা ওহে শ্লপ। পি॥ ভক্তের রক্ষিতে সদা চক্র লয়ে করে। ভ্রমিছেন নিরন্তর এই চরাচরে॥ বিশের জীবন তিনি ভগত ভীবন। তাঁহার অসাধ্য নাহি এ তিন ভূবন # আর শুন পঞ্চানন বচন আমার। গুরু সেবা সদা করে যেই গুণাধার।। কমলার পতি তারে করেন র<del>ক্ষণ। এ তিন ভুবনে সেই অতি সাধুজন 💃</del> যেই জন গুরু দেব। কভু নাহি করে। তার সম পাপী নাহি ভূবনভিতরে ॥ অন্তকালে সেই জন ত্যজিয়া জীবন। মহাখোর নরকেতে হয় নিষ্ঠান 🕏 গুরু প্রতি যে তুর্মতি ভক্তি নাহি করে। তাহার পাপের ভার কে সহিতে পারে॥ তাহার পাশের শান্তি কভু নাহি হয়। বলিনাম তথ্যকথা জানিবে নিশ্চয়॥ যেই জন উক্তি করে গুরুর উপরে। গুরুর অর্চনা করে একান্ত-অন্তরে॥ তাহাব যতেক ভাগা বলিবার নয়। সে জন সুজন অতি না**হিক সংশয়**। দেই জন পুণ্যবান্ এ ভবসংসারে। ধ্যাবাদ-যোগ্য দেই জানিবে অন্তরে॥ অতি সুখী দেই জন ওহে পশুপতি। তার দম নাহি সুখী ওগো হৈমবতী॥ তাহার উপরে তুট যত দেবগণ। তাহার পুণ্যের ফল কে করে কীর্ত্তন। তীর্ণস্নানে যেই পুণ্য হয় উপার্জ্জন। দ্রত উপবাসে যাহা পাব সাধুজন॥ তাহার অধিক ফল যেই জন পায়। নাহিক সন্দেহ ইথে কহিনু তোমায়॥, जम मम ७ कराव नाहिक मः भग्न। विकु जूना इन ७ क जानित नि क्या। যোগেশ্বর গুরুদেব জানিবে অন্তরে। সকলের মূল গুরু শাস্ত্রের বিচারে॥ দেবরূপী গুরুদেব শাস্থের বচন। গুরু বিনা ক্রিয়াকাণ্ড না হয় সাধন॥ স্বার প্রধান গুরু জানিবে অস্তরে। অতএব শুন শিব কহি যে তোমারে॥ পরশুরামের গুরু ভূমি পশুপতি। তোমার পরম ভক্ত রাম মহামতি॥ হৈনবতী জুদ্ধ অতি আছেন অন্তরে। ন। শিবেন ভার্গবেরে এই বঞ্চা করে॥ শুন ইছমবতী আমার বচন। কিন্তু এক কথা বলি শুন পঞ্চানন॥ গুরুভক্তে বধ করে হেন সাধ্য কার। শিবশিষ্য হয় এই ঋষির কুমার॥ ওরুর জন্নী তুমি ওগৈ। হৈম্বতী। জননী হইতে শ্রেষ্ঠ তুমি গুণবতী ॥ তোমার তনর তুলা, এই ভগুরান। তবে কেন কর রোম প্রাকৃত স্থান।।

ভিতরামে গজাননে কিছু ভেদ নাই। ছুই জনু তব পুত্র কহি তব ঠাই॥ ্রিনাধ 'কর' সন্চিত পুরের উপরে। অরো এক কথা বলি ধর্**হ স**ন্তরে॥ কল্হ শিষ্যের নহ করিলে ঘটন। অয়শ তাহাতে মাত্র বেদের বচন॥ 'অভএষ মম বাকা শুন হৈমবত্নী। পুত্র তুল্য হয় তব রাম মহামতি॥ গাণপতি কার্ভিকের এই ছুই জন। তোমার তন্য আহে বিখ্যাত ভুবন।। এবে এক পুল হৈল রাম মহামতি। তিন পুল ছেন তব শুন হৈমৰতী॥ জৈবের লিখন কতু না মাগাঁ খণ্ডন। আপন কর্মের ফল ভুঞ্জে দক্ষিন। স্পাঘাত পেয়েছে তব পুত্র গণপতি। বিধির লিখন ইহা ওগো হৈমবতী॥ ্রিমার বচন দেবি করহ শ্রবণ। হাদয় হইতে ফোর কর স্থয়ণ। ক্ষনা কর ভ্তরামে ওগো গুণবতি। সর্কপূজা তব পুল এই গণপতি॥ अमा २८७ पूर्विकटल इहेन विश्वान। य अन लहेरव नामा १८९८ महा नाम। গণেশের অউনাম করিলে কীর্তন। জীবের যতেক ণাপ হবে বিনাশন॥ হৈরম্ব গণেশ একদত্ত গজাৰন। তুর্পকর্ণ গুহা এদ বিম্নবিনাশন॥ শথোদর এই অট নাম যেই লয়। ভববন্ধ সুচে তার নাহিক সংশয়॥ **বিম্ববিনাশন নাম করিলে ক্মরণ। যাব**ীয় বিম্ন তার হয় বিনাশন॥ ্ষেই জন ভক্তিভাবে গণেশে পূজিবে। অন্তকালে সেই অন বৈকুলে ঘাইবে॥ **শৈক উপচারে কিম্বা বোড়শোপচারে। যেই জন পূজা** করে গণেশদেবেরে॥ নানাবিধ উপহার করণে প্রদান। অফনাম সংকার্তন মুখে জবিরাম॥ তাঁহার যতেক পুণ্য কি বলিতে পারি। তাহারে রক্ষেন সদা ভবের কাঞারী॥ সাঁবেশের পূজা আগে করিয়া সাধন। পূদিবেক তার পর অন্ত দেবগণ।। থেই জন গণেশেরে আগে না প্রজিয়ে। অন্ত দেবে পুদা করে একান্ত হৃদয়ে॥ তাহার যতেক পুজা সকলি বিফন। তাহার উপরে রুট অমর-নিকর॥ ক্ষধিক বলিল কিবা শিবসীমন্তিনা। গণেশ সমান এই রাম মহামুনি॥ থেমন তোমার পুল দেব গজানন। তেমতি জানিও দেবি এই তপোধন॥ ক্রোধ সমুচিত নহে ইহার উপরে। আমার বচন ধর আপন অভরে॥ ঋষির উপরে রোষ করদম্বরণ। পুত্রভাবে দলা ভার্ব আর্যার বচন॥ এত বলি বিপ্ররুগী দেব নারায়া। মৌনভাবে অবস্থান করেন তখন॥ বিথের বচন দেবা শুনিয়া প্রবর্ণে। রোব সম্বর্ণ করে প্রাপনার যনে॥ শান্তভাব মহেরণী করিয়া ধারণ। স্থাচিত্তে আসনেকে বসেন তখন। প্রুবাণে স্থার কথা অতি মনোহর। এবণ করিলে হয় পবিত্র অন্তর॥

# हरू भिर्य-पूर्तान

## পঞ্জিৎশ অধ্যায়।

রাম কর্ত্ক হৈমবতীর ন্তব, হৈমবতীর রোষণান্তি
ত রামের কামরূপে যাত্র।

সনংকুগার উবাত।

নমামি জগতাং বাতলন্মক্তেংস্ত সুরেশ্বরি।
তথ্যায় নমোহস্ততে॥

তার পর ঋষিগ। মগুর বচনে । জিজ্ঞানানে পুনরায় বিধির নন্দনে॥ গুনিভেছি দিব্য কথা বদনে তোমার। পবিত্র হইল দেহ জানিবে দ্বার॥ তে শুনি তদ হয় স্থাবলৰতা। মত্থৰ শুন গুন পতে হছামতি॥ তার পর কি করিল রাণ তপোধন। বিজ্ঞার বরিষা তাতা করহ বর্ণন।। কি করিল তার পর দেবী দৈশবতী। শুনিতে কুছুকী মের। ইইতেহি অতিয় গর পর বিএরপা দেব নার।যাব। কি করিলেন কল তাহা তহে মহাত্রন ॥ 95 छनि नि १८ कदर शोरा शिरत। छन छन स्व कथ। वि<mark>त्व सरारत ॥</mark> ুবারে পুরোর কথা করহ এবা। মতদুর জানি তাহা করিব বর্ণনা। मन मर्ड धरवाथित। ज्वानी २ डीस्ट । नाताया वस्ट उस्व डीर्यव द्विति ॥ эন ওন ভূষরাম আমার বচন। কেন তব ফেরি আজি হেন সাচরণ॥ কন ভূমি গণেশেরে করিলে প্রার। রক্তপাত দেশ শার বে উলার॥ টদার উপরে রোস কিনের কারনে। বিশেষ করিয়া কছ অংমার মন্তন।। । বিনাঝে রোম রাখা সমুতিত ন্য। কোষিত হইনে জ্ঞানী বুঝিশা - ময়॥ ক্রাবের সমান পাপ না আছে সংগারে। ক্রোধ কভুন। রাখিবে অন্তর্ঃ। াঝারে॥ রোন হেতু হয় সদ। বিপাদ ঘটন। অভুত করম ঘটে রোথের কারণা। রায় বশে কত লোক প্রাণনাশ করে। অতএব রোয় নাহির,খিবে অন্তরে॥ ।ই যে হেরিত রাম দেবা হৈনবতী। স নাল। নহেন ইনি জানিবে প্রকৃতি॥ শ্বপ্রিয়া শ্বিজায়া জগত-ঈশ্রী। জীবের পালনকতী যোগের ইশ্রী॥ है। ছতে হয় জান বিধের সৃজন। ইনিই করেন জান জীবের পালন॥ । क्लिक्स भा अहे (पर्वा निका मनाक्ती । भा तौ विषयंत्र माक। भिरवंत शीष्टिनी শুল ভুল ভুল্লাম আমার বচন্। পুর্কের রুত্তান্ত যত করিব বর্ণন।। न्दर्गरन दक्तिवादत कतिय। मनन। एकगृष्ट आविर्द्ध् । अहे (निनी हन॥ াত্তী-জঠেরে জম লভেন সুন্দরী। বিখ্যাত হলেন ভূমে নতী নাম ধরি॥ মাপন ইচ্ছাতে দেলী বরিল শৃক্ষরে। পনিনা পশে শেষে শ্বণ-বিবরে॥

পতিনিন্দা নিজকর্ণে করিয়া প্রবণ। ত্যক্ষিলেন দেব সতী ওছে তপোধন॥
তার,পর হিমালয়ে মেনকা উদরে। পুনশ্চ জনমে দেবী জানিবে অন্তরে॥
কত তপ জপ আদি করিয়া সাধন। শিবেরে পতিত্বে শেষে করিল বরণ॥
সেই মহেশরী ইনি জানিও অন্তরে। গণপতি জন্ম ধরে ইহার জঠরে॥
বিষ্ণুর অংশতে জন্ম এই গজানন। বিষ্ণুভক্ত বিষ্ণুগত হইয়া জীবন॥
ইহারে বালক নাহি ভাবিও অন্তরে। গণপতিরূপী হরি জানিবে ইহারে॥
আমার বচন শুন ওহে তপোধন। এখন উচিত যহা, করহ সাধন॥
এত বলি নারায়ণ তিরোহিত হয়। শিবশিবা তুই জনে আনন্দে বিষয়॥
বিজের বচনে জমদ্মির নন্দন। করপুটে দেবীপদে করেন বন্দন॥
নানামতে শুব করে ভ্বানী সতীরে। কর্যোড় করি ঋবি একান্ত অন্তবে॥

**নমস্কার তব পদে** বিশ্বের জননী। রুপাময়ী তুমি মাতঃ তোমারে নমামি॥ তব তব্ব নাহি বুঝি অন্তর-মাঝারে। উন্মত হয়েছি রোবে ক্ষম্ছ আমারে॥ ছুবিয়াছি মহাপাপে নাহিক সংশয়। এখন করহ রুপা হইরা সদয়॥ ছইতেছে তোমা হতে বিশ্বের সূজন। তোমা হতে এই বিশ্ব হতেছে পালন। ভোষা হতে অন্তকালে হইবে সংহার। চরাচর জগতের ভুমি মূলাধার। **ভব মারা বুঝে হেন আছে কোন্ জন।** তোমার চরণদ্বে করিগো বন্দন। কখন সাকার তুমি কভু নিরাকার। হোমার চরণে করি শত নমসার॥ দে মূলপ্রকৃতি তুমি মহেশ-মোহিনী। তোমার চরণে মাত নিয়ত প্রণমি॥ বিশ্বস্বিনী তুমি মহিমা অপার। তোমার মহিমা বুঝে হেন সাধ্য কার॥ विष्यंत জननी তুমি বিশ্ব-বিধায়িনা। নবান-যৌবনা তুমি শিবসীম তিনী॥ তুর্গতি-নাশিনী তুমি রাজ্যের ঈশ্রী। মহালক্ষ্মী তুমি, ওগো নমস্কার করি॥ **শোভিছে ত্রন্ধাণ্ড** তব উদর মাঝারে।জগত মোহিলে তুমি,মোহিনী আকারে তোমা হতে মহাবিষ্ণু হয়েছে সূজন। তোমার যতেক মায়া কে করে বর্ণন। দবার আধার ভূমি বিশ্ববিদোহিনী। বিশের পালিকা ভূমি বিশ্ববিধায়িনী॥ ভোমার অংশেতে জন্মে অমর-নিকর। তৃব অংশে জন্মে নারী সংসার ভিতর॥ **দকলের** মূল তুমি দবার আধার। তোমার চরণযুগে করিঃ নমস্কার॥ রাজনক্ষী রূপে থাক রাজার আগারে। লক্ষীরূপে থাক ছুমি বৈক্ঠ-মগরে॥ গঙ্গারপে আছ ভূমি শিবশিরোপর। সঃবিত্তীরপেতে স্থাছ ব্রহ্মার নগর॥ গুরুর পতিনী ভূমি স্বার প্রধান। আমাকে ভাবিও মার্ডঃ পুত্তের স্মান॥ কেন দেবী ক্রোধ কর পুত্রের উপরে। মূর্ট্মতি তব পু্লু ফানিবে অন্তরে॥ শিব্য প্রতি রোব করা সমুচিত নয়। কুপুল মতাপিং হয় ক্রমাতা না হয়॥

অধিক বলিব কিবা ওগো স্থরেশ্রী। তোমার চরণে নাতঃ প্রশিপাত করি। এই ভিকা তয় পাশে করহ শ্রবণ। তোমার চরণে যেন সদা থাকে মুন। একমাত্র বাঞ্ছি স্থামি তোমার করণা। তব পদে নতি তুমিশিবের ললনা।

এইরূপ স্তববাক্য করিয়া প্রবণ । তুট হযে জগন্মতা কহেন তখন॥ শুন শুন মন বাক্য ওহে মহামতি। হইলান অতি তুট এবে তোমা প্রতি 🛊 তোগারে এখন বর করিতু অর্প। অমর ছইবে তুমি আমার বচন॥ মৃত্যু ভয় ন। রক্ট্রিবে কখন তোমার। মনোরথ সিদ্ধ হবে কহিলাম সার ॥ পরাজয় কারে। কাছে না হহে কখন। সমরে অটল হবে আমার বচন। নিরত রহিবে মন ঈশর-চরণে। আশীর্মাদ করি আমি ঐকান্তিক-মনে॥ অটন রছিবে ভক্তি গুরুর উপর। পুত্রের নদান ভুনি ওহে ঋবিবর॥ দেবীর বরেতে কৃট ভার্গব ধীশান্। মনে মনে মহানন্দ অভিশার পান।। তার পর গণেশেরে করেন পূজন। নানাবিধ উপতার করেন অর্পণ।। গ্রেশ সহিতে ভার্মিত্রতা ছইল ৷ কার্ত্তিক পাশেতে রাম বিনয় করিল । ইনা দেখি শহাপুট দেব পঞ্চানন। সম্বোধিয়া ভার্গবেরে কছেন তখন॥ পন শুন ভূওরাম ওছে মহামতি। তোমার উপরে তুট হইলাম অতি॥ এখন জিজ্ঞানি ঘাহা করহ বর্ণন। কি কারণে মম হেথা তব আগমন॥ এতেক বচন শুনি ভৃগু তপোধন। কহিলেন ওহে প্রভু করি নিবেদন ॥ তোমার বরেতে আনি হবে মহাবল। নিক্ত করেছি প্রভু এই ধরাতল। একবিংশবার হত করেছি নিপন। মনোরথ নিদ্ধ মদ হয়েছে এখন। কিন্তু এক কথা বলি শুন পশুপতি। মারিণাছি কত রন্ধ অসংখ্য যুবতী॥ কত শিও মারিশাছিন। যায় গান। কত যুব। কুঠারেতে করেছি নিধন॥ অবশ্য পাতক তাহে হযেছে সঞ্চা। কিনে পাপ হবে ক্ষ কহ মহোদয়॥ তুমি শিব মন গুক জানে সর্বাদন। জগতের গুড় তুমি ওছে. ত্রিনয়ন॥ ভোমার চরণে করি শত নমকার। আমার উপায় কব ওহে দয়াধার॥ পাপের মহত ভার করিয়া মরণ। । নিরন্তর মনাগুণে হতেছি দহন॥ এই হেতু আদিয়াছি ভৌমার গোচরে। তোমারে প্রণাম করি একান্ত অন্তরে। এতেক বান খনি দেব পঞানন। কহিলেন শুন শুন ওছে তপোলন। জিজাস। করিলে যাহ। অবশ্য উচিত। এখন বলি, যালা শুন্দ বিভিন্দ পত্য বটে পাপ তব হয়েছে শরীরে। এখন উচিত হয় নাশিতে তাং ে। আমার বচন এবৈ করহ প্রবণ। জ্রুতগতি কামরূপে করহ গমন ॥ किश्त नेमान जीर्ग नीहि दकान शादन । अञ्चन वनि याश सनह सवदन ॥

বিরাজ করেন তথা কামাখ্যা স্থন্দরী। ভাঁহার চরণ পূজ কলে ভক্তি ধরি। বেদাপুত্র নদ তথা অতি পুণ্যতম। তাহার সলিলে স্থান কর তাপাংন॥ কামরূপে ভার্থকুও অভি মনোরম। সর্বভীর্থ আছে তাহে ওহে তপোংন। জাহ্নবী গোপন ভাবে আছেন তথায়। স্নান ব্রর তথা গিয়া কহিন্দ তোলাই॥ তাশ্য হলে তব পাপ হবে বিলোচন। নাছিক সন্দেহ ইথে ওহে তপোংন। কাম্যাণ ভুষা তীথ নাহি ধরাধামে। পাতক বিনাশ হয় ভানলে এংগ্রে কামাধ্যারপেতে নতী বিরাজে তথায়। যোনিরূপা মহাদেবী জানেবে ম্থায়। মমোপরি দেই পাঁঠ হতেছে শোভন। ক্রতগতি তথা তুমি করহ গ্রন। আযার বচন এর আপন অন্তরে। আর না বিলগ কর কহিতু তোমারে॥ আশীর্ষাদ করি তোমা ওছে তপোধন। মনোর্থ দিদ্ধ হোক করহ গ্রম্ম এতেও বতন ওনি রাম তপোধন। শিব শবা দোঁহাপদে করেন বন্দন॥ প্রণেশেরে ভার পর কবিয়া প্রণাম। ক।ভিকে : ভাগি পরে করেন প্রভান। धक्तीर कालिमार्य कृति। यत्। कामक्त छेत्स्त्भाट क.त्रम श्रम । অনশনে দিবাভাগ করি অবহান। স্ক্রাকালে ফল্মাত্র ধান মতিদার॥ এইয়পে নানা দেশ করি অভিক্রম। কামরূপে ক্রমে আসি উপনীত হন॥ শিবের আচেশ্যত আদির। তথায়। নানামতে করে কাজ কহিনু নবাল। यथादिशि (नवीश्रक) कतिया नाथन । छो जिटल स्नान आणि कः त नमाशन॥ এইরপে-পাণ দূর করি মহামতি। দেবীরে ভক্তি করি করিয়া প্রণতি॥ আপ্র আশ্রেমানেশ করেন গ্রম। পুরাণে পবিত্র কথা অতি মনোর্ম। বেই জন ভব্তিভরে পরে কিবা ওনে। অভিনে নে জন জার বৈকুপ ভবনে॥

## यह जिर्व ग्रात।

গণপতিস্তব।। সনৎকুমার উবাচ।

সর্বেষাং পুজনীয়োদৌ গণেশঃ শিবদাৰুঃ। । পুঞ্রিয়ত্বা চ তং দেবং ততোত্থান্ প্জয়েই ছুধীঃ।

এইরপে দিব্য কথা করি। প্রবং। পরম পুলকে পূর্ণ যত ঋষিগণ। আতি কৌত্হলী হয়ে একান্ত অন্তরে। জিজ্ঞানা করেন পুন সনত-কুনারে॥ শুন শুন বিধিয়ত করি নিশেদন। শুনিতেছি তব মুখে অপূর্ব কথন। পরম প্রিত্ত কথা শুনিয়া শুরণ। প্রম সম্ভূষ্ট হৈ মোরা সর্বজনে।

এখন জিজ্ঞাসি যাহা কহ্মহামতি। কিরূপ স্বেতে তুই হন গ্ণপতি॥ নেই কথা বিশেষিয়। কহ মহাতান। গণদেবে ভক্তি করি করিক পূজন। তাঁর স্তব ভব্তি করি পড়িব সাদরে। বল বল ওহে দেব মিনতি ভোমারে 🖁 'এতেক বচন শুনি বিধির নন্দন। কহিলেন শুন শুন ওছে ঋষিগুণ্। দর্শ্বদেবপূজ্য হন দেব গণপতি। অত্যেতে তাঁহার পূজা আছে হেন বিধি॥ अर्थे नाम ग्रवाशार्ग करति कि किन। তাহে महाकृषे इन राम शकानेन ॥ আরো এক, কথা বলি শুন ঋষিচর। শুবে তুট গণপতি নাহিক শংশয়॥ যেরূপে করিবে স্তব করহ প্রব। শুনিলে পাতকবাশি হয় বিমোচন 🛭 নমো নমঃ গাপতি দেব লফোদর। যাঁহার মরণে নাশে পাতক ছুন্তর ॥ যেই হালে বৈত্যাপতে দেব যড়াননে। বরণ করেন নব মিলি দেবগণে।। নেই কালে হারে স্থব করে নড়ানন। ভাঁরে নমস্কার করি হয়ে একমন॥ পুজিত হইস। যিনি একান্ত অতরে। ৬ক্তের সকল কার্য্যে বিশ্ব দূর করে॥ দেই গণপতি দেবে করি নম্মার ৷ আমার উপরে **রুপা কর গুণাধার ॥**\* তুমি গা।তি দেব জন্নবিধৰ্দ্ধন। একদন্ত চতুৰ্দন্ত তুমি ত্ৰিনয়ন॥ আদিত নিরত তা প্রতে আখ্যান। পুনঃ পুনঃ তব পদে করিগো প্রণাম। শ্বার রজ. মে ভ্নি বর্বাছা। চহুর্জ আধিকের সকলের পাছা॥ " বহিব জু তৃত প্রিয় তুমি গ্রানন। তৌমার চরণে করি সদত বদন॥ ' মর্মত বিরূপাক তুমি মহামতি। কোটিহুর্যপ্রতীকাশ করিগো প্রণতি। মুনির্মণ তব কান্তি প্রশান্ত আকার। তোমার চরণে করি শত নমস্কার॥ গঙ্গরা তুমি ওহে গজানন। তোমার চল্পে করি নিয়ত বন্দন॥ । কৈলাদে বসতি তব ওহে গ্ৰপতি। তোমার জননী হন সে মূল এক্তি॥ তোমার জনক দেবদেব পঞ্চানন। তোমার চরণে করি সদত বন্দন॥ ३ যে জন নিয়ত চিত্তহরে নিরন্তর। একমনে ভজে নেই দেব লম্বোদর॥ নিয়ত আহারকরি যেই সাগুজন। রক্তবস্ত্র কটিতটে করিয়া ধারণ॥ কার্য্য দিদ্ধি অভিলান করিয়া অন্তঃর। রক্তপুপো পূজা করে দেব লম্বোদরে॥ ভক্তি করি গঙ্গাজন করয়ে অর্পণ। একান্ত অন্তরে দেয় রকত চন্দন ॥ গণেশের মহামন্ত্র হাদে জপ করে। কলাগে লভরে যেই জগত-নংসারে॥ বিম্নরাপি তারে নাহি করে । আক্রমণ। তপংফল গজানন করেন অর্পণ । বিপৰ আপ্ৰ তার কভু নাহি হয়। বিজয়ী সে জন হয় মৰ্বত নিশ্চয়॥ তीर्थक ल सान कि देन हम त्यहे कन। तहे कन नृष्ड तहे जानित नकन । যেই জন ভক্তি করি গণেশ উগরে। বিশ্বরাশি তারে হেরি চলি যায় দূরে ॥

জায়াতবে জাতিবর সেই জন হয়। শাত্রের বৃচন ইহা কভু মিব্যা নয়॥
প্রতিদিদ ভক্তি করি একান্ত অন্তরে। গণেশের স্তব পাঠ যেই জন করে॥
সিদ্ধিলাভ হয় তার শাত্রের বচন। কহিলাম স্বাপাশে প্রহে ঋষিগণ॥
প্রতিদিন যথাবিধি করিয়া অর্চনা। এ স্তব পড়িলে পূরে তাহার কামনা॥
কিবা মংস্থা কিব। কূর্ম বরাহাদি করি। সকলে সম্ভূট হন তাহার উপরি॥
নারসিংহ দেব তুট তাহার উপরে। ক্লপা করি যেই দেব প্রস্থাদে উদ্ধারে॥
ভাহার উপরে। তুট হয়েন বামন। শাত্রের বচন মিথ্যা নহে কলাচন॥
স্বােশে অমৃতকথা অতি মনোহর। শুনিলে পবিত্র হয় সাধুর অন্তর॥

#### সপ্ততিংশ অখ্যায়

নৃদিংহ অবতার ও প্রহলাদবিবরণ।
সনংক্ষার উবাচ।
হিরণ্যকশিপুর্নাম দৈত্যানামধিপে। বলী।
দিত্যাং চ জনয়ামান কশ্যপো মুনিগুল্পবঃ॥

এতেক বচন শুনি যত ঋষিগণ। জিজ্ঞাসা করেন পুনঃ ওফে মহাঅন্॥ ভৰ মুখে সুধাকধা শুনিয়া সাদরে। পবিত্র হইনু সবে কহিনু তোমারে॥ এখন জিজাসি যাহ। কছ মহাত্মন্। তুমি শেব পুরাণেতে অতি বিচকণ॥ দুসিংহাবতার কথা শুনিতে বাসনা। কুপা করি ওহে প্রভু গুরাও কামনা॥ প্রহলাদের বিবরণ অতি মনোরম। কুপা করি বল তাহা ওছে মহাত্মন॥ এতেক বচন শুনি বিধির কোওর। কহিলেন শুন শুন ওহে ঋষিবর॥ জিজ্ঞানা করিলে যাহা করিব বর্ণন। সংক্ষেপে বলিব সব ওছে ঋষিগণ॥ পূর্বকালে দিতিগর্ভে জনমে নন্দন। হিরণ্য কশিপু নাম প্রবলবিক্রম॥ নিরাহারে থাকি দেই দিতির তুনর। বৃত্কাল তপ করে ওছে ঋষিচয়॥ তপে তুট হয়ে ত্রন্ধা দিলেন দর্শন। দৈত্যরাজে সভ্যোধিয়া কছেন তখন॥ শুন শুন দৈত্যর।জ বংন আমার। সম্ভূত হয়েছি আমি ভংপতে তোমা<sup>র॥</sup> মনোমত বর এবে বরহ এহণ। বরদান হেতু এবে মম আগ্রন।। এতেক বচন শুনি দৈত্যের ,ঈশর। বিনয়বচনে কছে করি যোড়কর॥ নিবেদন করি পদে ওছে ভগবন। বরদান হেতু যদি তব আগমন॥ তবে যাহা চাহি দেব চর্ণে তোমার। ক্লপা করি দেহ তাহা ওছে গুণাধার॥ नीउत्रोक कर्छ गृक जनिन जनन। कीवन भागानं अर्थ रेकन जूमिकन॥

टाव देल डा यर्क ब्रक्त कड़ी भूग नत । गन्नर्व जुजन जानि जात विशाधन ॥ এ দব হইতে যেন না হয় মরণ। তব পদে বর মাগি ওচে পদাসন # দিবাভাগে যেন, নাহি মরি প্রজাপতি। রাত্রিতে না হয় মূত্য আমার মিন্তি t অভ্যন্তরে বাছে মৃত্যু যেন নাহি হয়। এই বর মাগি আমি ওছে মহোদয়। कुপা করি যদি প্রভূ দিলেন দর্শন। এই বর মাগি আমি ভহে পদ্মাস্ম p अना वरत वाक्षा अप किङ्गां नाहे। भरनत वामना धारे कहिनू शौनाहे॥ यि किथा इरशुथारक अक्षेत छेथरत। मरनत वानना भूर्ग कर जुता करत ॥ এতেক বচন শুনি দেব প্রজাপতি। কছিলেন শুন শুন ওতে দৈত্যপতি॥ যে বর মাগিলে তুমি নিকটে আমার। অতীব হুল্ভ ইছা ধরণী মাঝার॥ তথাপি তোমারে আমি করিনু প্রদান। তাহার কারণ বলি শুন মতিমান॥ তোমার দারুণ তপ করি দর্শন। প্রম সমুষ্ট আমি হয়েছি এখন॥ একপ তপন্যা কেহ করিবারে নারে। করিয়াছ তুমি তাহা অতি ভক্তিভরে॥ অত এব যাহ। যাহা করিলে যাচন। দিলাম তোমারে তাহা ওহে মহাজ্মনু॥ এখন আগ্রন হানে যাহ দৈত্যপতি। তপন্তার ফল ভোগ কর্ছ সংপ্রতি॥ এত বলি প্রজাপতি দৈত্যের উপবে। অন্তহিত হয়ে যান আপনার পুরে॥ এদিকে আপন রাজ্যে গিয়। দৈত্যবর। মহাবলে রাজ্য করে বয়ুধা উপব।। মর্গণামে তার পর করিষা গমন। দেবতাগণের সহ আরিজিল রণ।। इन् जानि (प्रवर्गाण कति शेरा जया। भरानत्म शुर्ग करत जाशन झुम्य।। দেবগণে ভূমিতলে বিতাড়িত করি। দেবরাজ্যে রাজা হয় সেই পাপাচারী॥ ইন্দ্র আদি দেবগণ ব্যাকুল অন্তরে। বিচরণ করে দদা ধরণী উপরে॥ দীনবেশে হীনবেশে করেন ভ্রমণ । উপায় কি হবে ভাবি ব্যাকুলিত মন। ক্রমে ক্রমে দৈত্যরাজ মহাবল করি। শাসন করিতে থাকে ত্রিলোক উপরি॥ ত্রিলোক নিবাসীগণে কিয়া অহ্বান। সম্বোধন করি কহে দৈত্য বলবানু॥ শুন শুন মম বাক্য তোমরা সকলে। যজ্ঞ দান কভু যেন কেছ নাহি করে। পূজা হোম আদি নাহি হবে অনুষ্ঠান। আমার আদেশ ইহা জান সর্বস্থান॥ ত্রিলোক ঈশ্ব আমি জানিবে দবাই। ত্রিলোক আমার প্রজা কহি দবাঠাই॥ দদত করিবে দবে আমার পূজন। আমার উদ্দেশে যজ্জ করিবে সাধন॥ আমার উদ্দেশে দান করিবে সকলে। আদেশ আমার ইহা ত্রিলোক উপরে॥ এতেক বচন শুনি যত প্রজাগণ। ব্যাকুল অন্তরে দবে করে বিচরণ॥ াজ দান কেহ নাঁহি কাঁরিবারে পারে। দেবপূজা নষ্ট হয় ত্রিলোক ভিতরে॥

कृत्य विश्वमात्वा इस् व्यक्ष्य मक्ष्येत्र। क्षिम किन इत कुछ नाना कृषाहात ॥

্বাধর্মে ভূবিল বিশ্ব ওহে ধ্বিগণ। দৈত্যের ভয়েতে নাহি নিঃদরে বচন॥ এইরপে বহুকাল অতীত হইলে। বৃহস্পতি পাশে যায় দেবগণ মিলে। विनय्रवर्हरेन करेट ওতে ভগবৃন্। সর্কশাত্রে পারদর্ী ভুমি বিচকণ। নীতি জ্ঞানু বিরাজিত তোমার অন্তরে। করুণা করেছ পুর্ভু স্কার উপরে॥ হির্ণ্ডকশিপু নিশ রাজত দবার। মুবে কি উপায় হুবে ওছে ওণাধার॥ কিরুপ্রেত সেই ছেউ হইবে নিধন । তাহার উপ্প ক্রুওছে ভগবন্॥ ন্তুর মোদের জীব নাহিক নিস্তার। সন্মুর্গে নেহারি মোরা বোর পারাবার। স্থামরা তোমার দান ওহে মহোদয়। কি হবে মোদের গতি কহ দরাময়॥ मिनि नरत क्रमा नाहि कंदर्न जार्शन। विनणे इहेर मत्त जानित अर्थन। 'এত বুলি গুরুপদে করিয়া প্রাম। করযোড়ে পুরোভাগে দকলে দাঁড়ান॥ এতেক বচন শুনি গুরু রহস্পতি। কহিলেন দেবগণে শুক্র সম্প্রতি। নিজ নিজ প্ৰশাভ যেইরূপে হয়। বলিতেছি দেই কথা- শুন দ্বেচ্য। 🦆 েলতে সকলি ঘটে ওহে দেবগা। কালবণে সাহদি শাতের বচন। 🕊 পুট করেঁহিব দানব-ভূপতি। ভোগণো তাব এবে হবেছে নস্পতি॥ নিমিত থাকিয়া কাল জগত-মাঝারে। করিছে নবার মন কানিবে অন্তরে। আবিলিঁতে কোই তুট দানব দেখা। বিন্ত হইবে তেনে। অহল সক্ৰা। নিজ নি স্পাদ সবে লভিবে অচিরে। আমার বচন ংবে গরহ এড়বে। व्यतिनृद्ध त्निहे रेल्ठा इहेरव निधन। व्याभात वहन विका, नरह दलाइन। এখন • আমার বাক্য ওন. দেবগণ। ক্ষীরোদ সাগরে সবে করহ গদন॥ গ্রামন করিয়া সবে সাগরের তীরে। কেশবের কর স্তব একান্ত অন্তরে॥ **যক্ত্রিক তবেতে ভুট হন ভগবান্। নিছত হইবে তবে দৈত্য বলবান্॥** ত্তিনি তুট হলে আর,ভয বল কারে। অবিলদ্ধে যাহ সবে সাগরের তীরে॥ উত্তর তীরেতে দবে করিয়া গমন। একান্ত অন্তরে স্তব করছ কীর্ত্তন॥ উঁহার অনাধ্য নাহি ত্রকাও মাঝারে। তিনি তুট্য জগত ্ট জানিবে অন্তরে॥ স্থামার বুচন নাহি করিও হেলন। ক্ষীরোদ সাগবে তর। করহ গ্রান॥ সিদ্ধি লাভ হবে তাহে বচন আমার। আমার বচন শ্র হাবয় মাঝার॥ ছরি বিনানাছি গুতি সংসার মাঝারে। তিনি গতিতিনি মুক্তি ভবপারাকরে।

শুরুর বচন শুনি যত দেবগণ। সাধু, সাধু ধল্যবাদী দিলেন তখন।।
শুরুলথে সবে পরে একতা হইয়া। উদেয়াগ করেন যেকে একান্ত হুলয়ে।
কিরপে নৈত্যের পতি হইবে নিধন। নিজ নিজ পদ কিন্দে পাবে দেবগণ।।
তাই ভাবি শুরুলথে নিশিয়া ধালকে। উপুনীত হন শাংকি নাগরের কুলে॥

উত্তর তারেতে সবে করিয়া গমন। একান্ত অন্তরে ডাকে কোপা অমার্কন।।

তুরি বিষ্ণু দর্মাদ্য হজের ঈথর। যজের পালক তুমি ওহে পোকেরর।

বাস্থানে আনির্কা আমগ্রেদন। কাব্যক্ষা কলাপেশ করিশ-কামণার গোবিন্দ গোপতি গোপ্তা তুমি ছাতিমারাদারে করীকেল উমি দ্যোতিমারাদার করীকেল উমি দ্যোতিমারাদার করীকেল উমি দ্যোতিমারাদার করিকেল উমি দ্যোতিমারাদার করিকেল উমি দ্যোতিমারাদার লিকিন মান্দ্র ভাষা তুমি করি কিরালি হওলী। বাহ্না ছেতা মহাবীধ্য কর্ত্তী লেখনী মান্দ্র করিছিল ক্ষা ভূমি ক্ষা ভূমি করিছিল হওলী। বাহ্না ছেতা মহাবীধ্য কর্ত্তী লেখনী মান্দ্র করিছিল ক্ষা ভূমি ক্ষা ভূমি ছতাশন। ভূমি বছা করিছিল ক্ষা ভূমি ক্ষা ভূমি ক্ষা ভূমি ছতাশন। ভ্রমার করিছিল ক্ষা ভূমি কর্ত্তা আহ্বা ভূমি ক্ষা ভূমি ক্ষা ভূমি ভূমি ছতাশন। ভ্রমার গ্রমানে হব্য ভ্রম্বলমা।

গারুত্ব বাহন তুমি ওহে দ্যাময়। তোমার বিটালে হয় সূজন পালন।

গোমার ইচ্ছাতে হয় জগত সংসার। স্বার উপরে কর কর স্বার উপরে।

গোনবেলে ভ্রমি-মোর। অবনী মাঝারে। করণা কট,ফ কর স্বার উপরে।

গ্রার উপরে দ্যা কর গুণাধার। ভ্রপাদপ্রেল করি গত ন্যকার।

গ্রার উপরে দ্যা কর গুণাধার। ভ্রপাদপ্রেল করি গত ন্যকার।

এইরেলে স্ব করে যত দেৰগণ। স্তবে তুট হন হেপা লব নিরঞ্জন। আর না থাঞ্তি পারি দলিনভিতরে । আবির্ভূত হন আসি নবার গোচরে॥ দেখেন তথায় আদি যত দেবগ্য। কর্যোড়ে আছে দবে বিরদ-বুদন॥ गाम (पिथ प्याम्य मनुत विध्या मर्पाधि कर्रत भारत युक्ट (प्रविगर्गं। গুন শুন দেবগণ আমার বচন। হেখা আগান বন কিনের কারণ॥ লোমাদের শুবে তুট ছইয়াছি আনি। কি কার্য্য কৰিব ভাহা বলহ এখনি।। এতেক বচন শুনি যত দেবগণ। বিনয় এচনে কহে ওহে ভগবন।। অন্তর্গামী তুমি দেব দ্যার আধার। তোনার অজ্ঞা কিব। ত্রন্ধাণ্ড মাঝার ॥ 🚎 অসংখ্যত্তকাত শোতে তোগার শ্রীয়োকেন আর ফিল্লোনিছ বামাসবাকারে ''' आयता धाराहि गरव याहात कात्। यस गरन जानिएड छरह छगवन्॥ এখন উপার কর ওতে দগামব। সভত রফেছি সবে ব্যাতুল-সাময়। এত তানি ভগবান কছেন তখন। ভন শুন দেবগণ আমার বর্তন। ছিরণ্যকশিপু দৈতে। নিধন মানদে। আদিয়াছ তোমা দবে আধারশকাশে # জানিতে পেরেছি তাহা ওহে দেবগণ। তোমাদের স্তব্যে ভূট হয়েছি এখন। এই স্তব যেই জন পড়িবে সাদরে। মুক্তি তার করগত কোনিবে অভিরো। তোশাদের ভবে তুই হৈন্ অতিশয়। হিরণাকশিপু বধ হুইবে নিশ্চয়॥ ष्यां न प्रात्मरे गरिव कर्ड ग्रम्म । ७ म नाई ज्य नाई जिल्ह (प्रवर्ग) है শচিরে দানকণ্টি মেইরপে মূরে। নিজু নিজ পদ পাও ভোমরা সরুলে॥ ('2¢)

ভাহার উপায় আমি করিব এখন। নিং সে বাও আপন ভবন। প্রভুর এতেক বাক্য শুনিয়া সকলে। নির্ভ বান নিজ নিজ খলে॥ একিকেতে দেবদেব দেব নারায়ণ। নারসিংহ ভাষমূর্দ্ধি করেন ধারণ। বিশাল শরীর তাঁর নগন বিশাল। মহানখ মহাপদ দশন করাল॥ কালারি সুমান তার প্রদীপ্ত আনন। শরীর আয়ত তার অনেক যে।জন। এইক্রণে মহামৃতি ধরিয়া মুরারি। ধরণী কলিত করে ভীমনাদ করি॥ धन चैन दृष्काव हां ि नित्रक्षन। " दित्रगुक्रिनिश्रृप्त पिटलन पर्णन॥ জাহা-দেখি দৈভাগণ ফ্লুনিত অন্তরে। বেইন করিল আঁসি স্থনে ভাহারে॥ ্তাহা দেখি দেবদের অখিলরঞ্জন। একে একে থক কলেরে করেন নিগন॥ ্বৈতে র হরম্য সভা ভঞ্জন করিয়ে। আক্ষাসন কবে এভূ সানন্দ হৃদরে॥ ৰারা যারা সেই স্থানে করি আগমন। নারসিংহ দেবে করেছিল নিবান।॥ মুছ্র মাকারে তার। গেল যমালয। কত দৈত্য মরে তাহা গণিবার নষ। জ্ঞুত করম হেরি অন্তান্ত সকলে। প্রধায়ন করে সবে নভীত অন্তরে। কার সাধ্য अपूर्तार করে দংশন। চারিদিকে হাছাকার উঠিল তখন॥ ষামো যাঝে নারনিংহ ছাড়েন ত্কার। ত্কারেতে হর কত জাবের সংহার॥ তাহা, দেখি দানবের যত অসুচর। নিবেদন করে গিয়া এভুর গোচর॥ সংবাদ পাইয়া পরে দানব ভূপতি। নৃসিংহ উপরে হন অতি ক্রোধনতি। দৈত্যক্ষেত্রগণে পরে করি সম্বোধন। কহিলেন শীঘ্র রণে করহ গ্রুন। ভিলার্ম বিশম্ব আর না কর সকলে। অবিলম্বে সবে যাহ চতুরত্ব দলে॥ অন্ত্র শক্ত যথারীতি করিয়া বর্ষণ 1 অবিলম্বে সেই ছুটে করহ নিংন॥ আংদেশ পাইয়। যত দৈত্য অনুচর। চতুরক দলে নাজে অতি শীঘ্রওর॥ রণবাদ্য রুণু ঝণু বাজে তালে তালে। অবিশ্বে যায় নবে সমরের স্থলে॥ मृतिश्ह (कर्तरत मर्व कतिया कर्मन। यन घन अञ्च मञ्च करत वित्रिया। কত অন্ত্র মার্রে তাহা কে গণিতে পারে। দব অন্ত্র পড়ে গিয়া নৃসিংহ উপরে॥ শরীরে পড়িয়া অন্ত চুর্নীকত হয়। অট, অট হাস্ত করে দেব দর্মময়॥ चन प्रम ष्टेरुक्षांत ছाएं निरञ्जन। একে একে যত रिएका रहेन निधन॥ যত দৈত্য এনেছিল সমর মাঝারে। একে একে পড়ি সর্ক্তে যায় যমঘরে॥ সংবাৰ পাইয়া পারে দৈতা-অধিপতি। রোমেতে দ্বিগুণ ত্বাৰী হয় ক্রোধমতি॥ ষ্পটাশী সহস্ত দৈত্যে করি সম্বোধন। অবিলয়ে সমরেতে ফুরিল প্রেরণ॥ हात्रिपिटक यङ रेपङा चामिशा नकरल । नृमिश्ह श्रेष्ट्रत कृत्म व्यवसाध करत। তাহা দেখি মুদ্র হাস্ত করি নির্ম্পন। যম খন ছত্তার ছাড়েন তখন।

চন্ধারেতে কত দৈয়া পড়ে ধরাতলে। অচেতন হয়ে কেহ পড়িল ভুতলে। অবশিষ্ট দৈত্যগণ আরত্তে শমর। চারিদিকে রিণবাদ্য বাজে নিরস্তর॥ অস্ত্র শস্ত্র সবে পূরে করিয়া গ্রহণ নৃদিংহ উপরে করে ঘন বর্রিষণ্।। किइट इ मृक्षां अञ्चल माणि करता। अने सारा गार्य गार्य तमनविवस्त ॥ मार्थ भारत इहकात हार पन घन। नथाचार कड रेग्डिंग करतन निधन॥ ক্রমে ক্রমে সব দৈত্য পড়িল সমরে। সংবাদ পশিল দৈত্যপতির গোচরে॥ মহাক্রন্ত দৈত্যরাজ হইয়া তখন। লোহিত লোচনে করে সঘনে দর্শন। অন্ত অন্ত দৈত্যগণে করি সম্বোধন। রোধের ভরেতে কহে করহ প্রবণ 🛚 কেন এত ভয় সবে করিছ অন্তরে। কাপুরুষ এত কেন বলছ আমারে॥ আমার বচন দবে করহা ধারণ। রণমাঝে ক্রতগতি যন্ত্রি ন্মরে নাহি হও অগ্রহর। আর নাহি থেকো দ্বে আমার গোচর। জাবন লইরা সবে কর পলায়ন। কলঞ্চ রাশিলি তোরা ওরে তুরাতানু॥ এতেক বচন ভানি যত দৈতাগণ। মার্মার্কর সংগ্লাভিল তখন॥ অন্ত্র শত্র ২রি দবে নিজ করে। আবলতা উপনীত সুমরের তরে॥ नमत्रकृषित्व नत्व कतिका भगन। हुएकात निश्वनाप हार्ए घन यन॥ বাহ্বাক্ষেটি করে কেহ উন্মন্ত হইয়ে। লক্ষ্ ৰূপা দেয় কত নির্ভয় হারে।। নানা অস্ত্র তার পর জুড়ি শাসনে। ঘন ঘন মারে তাহা নার সংহ পানে॥ তাহা হেরি নারসিংহ অতি ক্রেদ্বমন। অবিলয়ে স্বাকারে করেন নিংন॥ জনকর মান দৈত্য অবশিষ্ট রয়। পশায়ন করে তারা ওহে ঋষিচয়॥ হেনকালে অন্ত যান দেব দিবাকর। অন্ধকার ঘেরে আসি দিগ্দিগদর ॥ হিরণ্যকশিপু দৈত্য অতি রোষভরে 1 অস্ত্র শস্ত্র মাবে **কতনারসিংহোপরে**॥ তাহা দেখি নারনিংহ হয়ে ক্রেদ্ধন। সভাদারে দৈত্যকরে করেন ধারণ॥ স্বলে তাহারে ধরি নখর প্রহারে। বক্ষঃস্থল ছিন্ন ভিন্ন অবিংঘে করে॥ প্রভুর ভীষণ তীক্ষ্ণ নথর-নিচয়। দৈত্যবংশ বিদ্ধ হয়ে নিম্ভিত্ত রয়॥ তাহা দৈখি ভগবান চিন্তিয়া অন্তরে। বাছদ্বয় উর্দ্ধ তাগে উত্তোলিত করে। ঘন ঘন বিকম্পিত করেন নখর। খণ্ড খণ্ড হয় তাহে দৈত্যকলেবর॥ অট্ট অটু হাস্ত দেব করেন তথন। তাহা দেখি মহাভূষ্ট যত দেবগণ॥ ত্তক্ষি তাপস যত আসিয়া তথায়। পুপার্ফি করে সবে প্রভুর মাধায়॥ যথাবিথি নরসিংহে করেন পূজন। আনদে মগন হন যত দেবগণ॥ ভার পর প্রজাপতি) দেব প্রাকর। আনালেন এক্লাদেরে স্বার গোচর **॥** হিরণ্যকশিপুর 👫 মহাজন। বাল্যকাল হতে তিনি ক্ষণরায়ণ॥

#### \$80.194-7.041)

উদার চরিত তিনি অতি বহোদয়। রুঞ্নাবে পুলকিত বদি তাঁর হয়। ক্রফনাম যদি তিনি করেন প্রবেণ। নেত্রপদেন প্রেম অঞ্চ হয় নিপতন। ছরিনাম যদি পশে অবণবিবরে। উন্মত হয়েন তিনি গ্রেমবেগভরে। হরি নামে এইরপ বিখাস তাঁহার। অগ্নিভয় নাহি ছিল হাদয় শাঝার॥ জলভয় মাছি ছিল অন্তর ভিতরে। দপতিয় হৃদি হতে গিয়েছিল দুরে। বাল্যকালে তিনি যত শিশুদের সনে। প্রমন্ত হতেন সদা হরিনাম গানে। রোর হিংসা দ্বেয় নাহি আছিল ভাহার। দর্কগুণে গুণবানু দেই গুণাগার॥ এখ্যা সুখেতে ভার না ছিল বাসনা। হরিভক্তি হাদি মাঝে এইত কামনা।। ু অলম্বারে বাঞ্চা নাহি আছিল ভাঁহার। একনাত্র ধর্ম ভাঁর ছিল অলক্ষার॥ এ হেন ধার্মিক সেই দৈত্যের কুমারে। বসালেন প্রজাপতি সিংস্থাসনোপরে। দেবরাজ স্বর্গরাজ্য গভি পুনর্ফার। নৃসিংহ দেবেরে পূজা করে গুণাপার। প্রহলাদ রাজত্ব পেয়ে ধর্মত শাসনে। পুত্র নির্কিশেনে পালে যত প্রজাগণে॥ তাঁছার শাসনগুণে ঘত প্রজাগণ। প্রম স্থাখেতে কাল করয়ে যাপন। একিকে নৃসিংহ দেব ঞীশৈল শিখরে। অহিঠিত হন গিয়া সানন্দ অস্তরে॥ সেই স্থানে মিলি ইনবে যত দেবগণ। যথাবিধি নারসিংহে করেন পুজন॥ ছেদবধি সেই স্থান খ্যাত ধরাতলে। পর্য পবিত্র তীর্ণ জানিবে অন্তরে॥ নুসিংহ-মাহাত্ম কথা শুনে যেই জন। অথবা ভক্তি করি কবে অধ্যয়ন 🏾 সর্বপাপে মুক্ত হয় সেই সাধুনর। সি িমে সেজন ঘ'য় অমর নগর॥ পুত্রার্থা লভয়ে পুত্র নাহিক সংশয়। বিন্যার্থার হয় বিন্যা শাস্ত্রে হেন কয়। देशांत लागारन इश कामाथीं तं काम। धनाथी नङ्खुधन कानाथीं त कान॥ পুরাণ শুনিলে হয় ভববদ্ধ কয়। শুনিলে পবিত্র হয় প্রোতার হৃদয়।।

## অফব্রিংশ ভাষ্যায়।

মৎস্থাবতার বর্ণন। সনৎকুমার উর্বাচ।

শৃণুধং মুনগঃ সর্বে মীনাবতারমুত্তমং।

যচ্ছু হো মুচ্যতে পাপাত্বপাপতকবিস্তরাৎ॥ঃ

বিধিয়তমুখে সুব করিয়া শ্রবণ। পুনশ্চ জিজ্ঞানা করে ঘত ঋষিগণ ।
গুনির তোমার মুখে অপূর্বকাহিনী। হেনকথা কারো মুখে কছু নাহি শুনি ।
। এখন বাদনা যাহা করিতে শ্রবণ। বিস্তার করিয়া তাহা করহ বর্ণন

মৎদ্যাবতার কথা শুনিতে বাদনা। রূপ। করি কহি দেব পুরাও কামনা। কেন বা মেদিনী নাম বস্থমতী ধরে। কিরুপে বিনাশে হরি মধুকৈটভেরে 🐩 দেই কথা কহু এবে করিয়া বিস্তার। শুনিয়া পবিত্র কথা পাইব উদ্ধার এত শুনি মিউভিবি বিধির নলন। কহিলেন শুন শুন ওহে ঋষিগ। পূর্বকালে জগৎপতি পুক্ব উত্তম। যোগনিদ্রাগত ছিল করিয়া শর্ম আনন্দ শয্যায শুয়ে ছিলেন ঈশ্বর। একপে প্রস্তুপ্ত রহে সেই শার্ক ধর 🛍 সহসা প্রবণদ্বর হইতে তাঁহার। চুই দৈত্য জন্ম লয় অতি চমৎকা**র।**ি বেদবিন্দুদ্বয় পড়ে কর্ণছয় হতে। তাহে তুই দৈত্য জন্মে ধরণীতলেতে 🗗 এমগুরৈকটভ নাম ধরে ছই জন। এইকপে ছই দৈত্য লভিল জনম 🎼 বিপুল শরীব দোঁহে মহাবীগ্যবান। মহাবল নাহি কেহ তাদের সমান॥ এদিকে শয়নে ছিল পুরুষ উত্তম। তার নাভি হতে হৈল পদ্মের জনম। রহৎ কমল সেই অতি মনোহর। সেই পারে জন্ম নিল কমল-আকর॥ ব্রহ্মারে সম্বোধি বিষ্ণু কহেন তখন। শুন শুন প্রযোনি আমার বচন॥. আমার হালেশ তুমি ধরি শিরোপরে। গ্রজাসৃষ্টি কর এবে ক্ছিনু ভোমারে॥ প্রভূব আদেশ ত্রন্ধা করিয়া প্রবণ ৷ তথাস্ত বলিয়া আজ্ঞা করেন গ্রহণ ॥ প্রজাসুটি আরম্ভিল দেব পরযোনি। হেনকালে শুন সবে অপূর্ব্ব কাহিনী॥ হেনকালে জুই দৈত্য লভিল জন্ম। ধাহাদের কথা পূর্বের করিনু বর্ণন॥ ব্রদার সকাশে আসি সে অপ্রব্য়। বল করি বেদশান্ত অপহরি লয়॥ শাস্ত্রজান দুই জনে করিল হরণ। জ্ঞানহীন কাজে কাজে হন পদাসন॥ মনে মনে চিন্তা করে দেব পদ্মযোনি। ছেন চমৎকার কভু নাহি দেখি শুনি॥ আজ্ঞা দিল প্রভু মোরে করিতে সূজন। জ্ঞানহীন হৈনু আমি অধম চুর্জ্ঞন॥ কিরূপে সুজন আমি করিব প্রজার। চারিদিকে দেখিতেছি ঘোর পারাবার॥ এইরূপ চিন্তা করি দেব পদাসন। মনে মনে নারায়ণে করেন করেণ॥, বেদশাস্ত্র মনে মনে স্বরিতে লাগিল। তথাপি মনেতে তাঁর কিছু না আসিলা। একাগ্র মনেতে শেষে পুরুষ উত্তে। তথ করে পদ্যোনি বিনয় বচনে॥, বেদের নিধান তুমি শান্তের নিধান। তোমার চরণে প্রভু করি গো এণাম॥ यक्किनिधि क्यिनिधि कृपि नाजाया। : जायारत थानाय कति ७ एक जनार्पन। যোগের স্বরূপ তুমি যোগীর, ঈশ্বর। নমস্কার করি প্রভূ চরণ উপর। সচিদাত্মা নিত্যধন সর্বজ্ঞানময়। পরম পুরুষ তুমি ওছে মছোদ্য 🖟 তুমি সাম তুমি ঋক্ তুমি যুজুবৈদ। তোমার মহিমা নাহি জানে কোন বেদ 🛭 ব জমুর্তি তুমি পুরে তুমিই অক্ষয়। দর্করপধারী তুমি ওছে বোগময়॥ । ৰিতিহ সৰ্বজ্ঞান পাই পহে জনাৰ্দন। তাহার উপায় কর এই আফিঞ্চন। ্ভোমার চরণে করি শত নমস্কার। অধীনে করুণা কর দ্রার আধার॥ এইরপে শুব করে দেব পদ্মযোনি। তাহা শুনি মহাতৃষ্ট প্রভূ নীলমণি॥ জনার স্তবেতে তুট হয়ে গদাধর। কলিলেন তুন শন ওহে প্যাকর॥ অবৃত্তৰ জ্ঞান ভোষা করিব অর্পণ। নিশিন্ত হইবা তৃমি থাক প্রধানন। এতেক জেলারে বলি দেব গদাধর। মনে মনে চিতা প্রভু কবে অতঃপর॥ জন্মার বিজ্ঞান কেবা করিল হরণ। এত বলি ধ্যানযোগে করেন দর্শন॥ ছরিয়াছে তুই দৈত্য একার বিজ্ঞান। তাহা দেখি মনে ভাবে প্রভু ভগবানু॥ বিছকেণ মনে মনে করিয়া চিন্তন। মংস্যরূপ জনার্দন করিল ধারণ॥ আন্ময় মংসামূর্তি অতি ভয়কর। প্রবেশ করিল গিয়া দাগর-ভিতর।। দার্গর সংকোভ করি দেব জনার্দ্ধন। প্রবেশ করিল গিবা পাতালে তথন। দেখিলেন ছুই দৈত্য নিদ্রিত তথায়। বিমোহিত করে দেব দেঁ। হারে মায়ায়॥ श्रूरे जत्न विरमारिक कर्त जनामिन। (वनभाय रिक्कानोनि करत्न वादन ॥ পাতালে আছিল যত তাপদনিকর। জন<sup>া</sup>নে শুব কবে হযে একাকর। देवप उद्यान तिरा भरत एव अनार्कन। दकार निकट विकास करतन पर्मन।। ্<mark>ভার পর মৎন্যরূপ করি পরিহার।</mark> যে'গনিদ্রোগত হন দেব দ্যুধার॥ धिकित विमुक्ष दिल तिरे रिकाइस। क्षिश्त छूरे कता क्षित्रिक द्या। স্থাগরিত হয়ে দোঁতে করিল দর্শন। বেদশাস্ত্র জান অ।দি হংগছে হরণ।। ভাই। দেখি মহাজ্ব হইয়া অন্তরে। ছই জনে ক্রতগতি চলিল নাগরে। ছুই জনে তথা গিয়া করিল দর্শন। যোগনিদাগত আছে পুরুষ উত্তম। তথন কহিল দৌতে কর দরশন। এই ধূর্ত করিবাভে অন্তাদি হরণ॥ এখন এখানে আসি সাধুর আকারে। শ্যন করিন। আছে নাগর-উপরে॥ এত বলি ছুই জনে হয়ে ক্রদ্ধনন। ভগবানে জাগরিত করিল তখন॥ ভার পর কহে দৌহে করছ এব। হদ্ধ আশে জাসিহাছি ভোমার নান।। নিছা হতে গাত্রোত্থান কর মহাশর। দেখি যুদ্ধে কার হয় জয় পরাজয় ॥ এতেক বচন শুনি পুরুষ উত্তম। সহবস্যবদনে পরে • ক্তেন তখন। তোমা দৌহাসনে আমি করিব সমর। তাহে ভীত নহে কভু শ্বামার অন্তর॥ এক বলি শরাসন করিষা এহণ। যথারী চি. গুণ তাতে ক্ষ্নি আরোপণ।। थन पन (पन তাহে ভीষণ টकाর। শश्चद्दनि घन घन कर्ट्स महाधात। **লৈত্যবর ধনু** ধরি অতি ভয়হর। ঘন ঘন শব্দ করে ধরণী-উপর। कर्य जात्रिण युक्त जिस्तित निर्म। ज्ञातीम कदत्र मृत् मंशाना वलत्न ॥

যত অন্ত্র মারে দৈত্য কৈ করে গণন। অবাধে নাশেন তাহা আমিগুর্দন।।

যত অন্ত্র মারে দৈত্য হরির উপরে। তিল তিল করে হরি শ্নোর উপরে।

এইরপে দীর্দকাল চলিল সন্র। কিছতে না পারে চেই দানবহুগল।

তার পর নারায়ণ শার্দ ধরি করে। মহাজ্মিশর মারে দেঁছার উপরে।

বাণ দেখি ছই পৈত্য ব্যথিত অতর। ফুর্নিত হইরা পড়ে ভুমির উপর।।

ছল্ভির ধনি হয় স্বরণ উপরে। পুলার্থি হয় কত আহিরির শিরে।।

আনদে মিলে যত অমর্রান্দর। হরিন্তব করে স্বে প্রফুল-অতর।

এইরপে দৈত্যহুবে করিয়া নংহার। আহিরি চলিয়া মান আপন আগার।।

তার পর প্রযোনি প্রকুল অতরে। দানবহুরের মেদ লইয়া সাদরে।।

ভাহা দ্বারা বহুমতা করেন সূত্র। মেদিনা আখ্যান হয় এই সে কারণ।।

জিজ্ঞানা করিয়াছিল যাহ। খবিগণ। বর্ণন করিমু তাহা স্বার সদ্ন।।

নিত্য নিত্য ইহা যদি মধ্যেরন করে। অন্তিমে গে জন যায় আহিরির পুরে।।

পুরাণের সার হয় আশিবপুরাণ। শুনিলে পাপের মুক্তি অন্তিমে নির্বাণ।।

# উনচত্ত্রিংশ অধ্যার।

যন ও তদীয় ভ্রমীর উপাধ্যান।

সনংকুমার উবাচ। ধর্মএব পরে। বন্ধু ধর্ম এব পরাৎপরঃ। ধর্মে চ সংক্রিতা পৃথী নিশ্চিতং ঋষিপুঞ্চবাঃ।

পুনশ্চ জিজাদা করে যত ঋষিগণ। নিবেদন ওহে প্রভু ব্রদার নদ্দন । শুনিতেছি তব মুখে ধর্দের কাহিনী। যত শুনি তত ইচ্ছা পুনং পূনঃ শুনি।। ধর্মকণা শুনিবারে বাদন। দ্বার। অন্তরে বিশাস আছে ধর্মমাত্র দার॥ ধর্ম থে প্রধান তাহা জানিব কেমনে। দ্টান্ত দেখাও তার স্বার সদনে॥ এতেক বচন শুনি বিধির নন্দ্র। কহিলেন শুন শুন ওহে ঋষিগণ ॥ ধর্ম হতে কিছু নাহি জগত ভিতরে। ধর্মমাত্র শ্রেষ্ঠ জান আপন অন্তরে॥ ধর্মে প্রতিন্তিত আছে এই বন্নমতী। ২র্ম হেতু লভে লোক অতুল সুখ্যাতি॥ অধর্ম বশোতে যায় নরক-ভিতর। ধর্মকণা শুন এবে তাপসনিকর । কর্মণ প্রবেদ আর আদিতি কর্মাণ। যে আর যমী হয় অপরের নাম॥ দেশহে জন্ম ধরি সুশো পিঙার জাগারে।শণিকলা সম ক্রমে দিনে দিনে বাড়ে॥ দেশহে জন্ম ধরি সুশো পিঙার জাগারে।শণিকলা সম ক্রমে দিনে দিনে বাড়ে॥

্রাঞ্জ সংক ক্রীড়া আছি করে চুই জ্ন। একত্র গ্রম আর এক্তর শয়ন। विहेतर्थ वालाकाल ममजीज इस । स्थाबात इहेल क्रांस्य पोराम छिपस ॥ "একদিন যথী মনে করি সম্বোধন। ধীরে ধীরে কহিতে**ছে** স্থিট বচন॥ শুন শুন মহোদয় বচন আমার। সর্বভংগ গুণবান তুর্মি গুণাধার॥ রুদ্ধে-বিচক্ষণ তুমি পরম অন্দর। নয়ন মোহন ত্র চারু কলেবর॥ ্ৰাৰ এক কথা কহি শুন মহামতি। ভগিনী হয়েছে যোগ্যা দেখছ সংপ্ৰতি। প্রশার যুবতী আমি কর দরশন। হেরিছ রূপের ছটা ওছে বিচক্ষণ। জ্ঞাদার এ হেন রূপ করি দরশন। কেন না কামনা কর বলহ এখন। ক্রিকুতাবে বাল্য হতে অতীব যতনে। একত্র রুখেছি সদা গমনে শয়নে। ক্রিনে কেন মোর পতি নাহি হও ভূমি। তব তরে সূচঞ্লা রহিয়।ছি আমি॥ ক্ষিত্র জনিয়াছে হদয়ে আনার। এই হেতু নিবেদন ওহে গুণাধার॥ আৰু কৈনে মোরে করহ গ্রহণ। ইথে পাপ নাহি তব হবে কদাচন॥ মুট্রেক্টে দহোদরা নিজ ইচ্ছামতে। ইথে কতু নাহি পাপ জানিবেক চিতে॥ প্রি বুলি নাহি মোরে করহ এহণ। জনলে পশিয়া আমি ত্যাদিব জীবন॥ ক্ষান্ত্র নাশিবারে কোন্জন পারে। বল দেখি ওছে ভাতঃ দে কথা আমারে ক্রামের উদ্রেক যদি হাদি মাঝে হয়। পঞ্চশর পঞ্চশর হাতে তুলি লয়॥ 🕍 খুন মারে তাহা বিরহী উপরে। বিরহী জনের হৃদি খণ্ড খণ্ড করে॥ ক্রিনিলৈ জর্জ্জরিত আমার অন্তর। রতিদানে অবিনতে কর্ফ শীতল।। ক্রীমার্ভা হইয়া যদি যাচয়ে রমণী। পুরাবে তাহার বাঞ্চা শাক্সে ছেন গণি॥ ক্রাহা মরি কিবা তব চারু কলেবর। মম অঙ্গে যুক্ত কর ওহে প্রাণেশ্র॥ 🔭 এতেক বচন শুনি সুর্য্যের নন্দন। ধীরে ধীরে ভাগিনীরে কহেন তখন॥ किँ विनित्त সহোৰরে শুনি লক্ষা পায়। এ হেন য়ণিত কাজ শিখিলে কোথায়॥ হেন কাজে উপরোধ কর কি কারণ। মহাপাপ হয় কৈলে সোদর গমন॥ ক্ষিতানেতে কোন জন হেন কাজ পারে। আর নাহিবল ইহা আমার গোড়রে॥ ুন্হোদর কেছোদরা করিলে গমন। পঞ্র ধরম ইছা শাত্তের লিখন।। প্রদেশ বিশ্বার নাহিক বিচার। হেন কাজ য্য সদা • ক্রে পরিহার॥ ত্ৰ মুখে হেন কথা না শোভে কখন। হেন কথা নাহি আৰু কহ কদাচন॥ ্রেতেক উচন শুনি যুদী পুন কয়। শুন শুন গুন গুলে শুলাতঃ ছুমি মহোদয়। আমা দৌতে দিলনেতে।কিছু দোষ নাই। তাহার প্রমাণু তন বলি তব ঠাই॥ छ गरा अकरत विम् जर्मनी-कर्रुता - जारर यथा नाहि मार्ग पूरार अखरत ॥ मिर्काण स्वीवरमण्ड स्थाति। पूरे करे। यनामि मार्चक करे चर महासन्।

## ইইৎ নিব-পুরাণ্য

इर्थ ककु लार नाहि हत बरहान्य। विनाति कतह याहा ममूण्डि हम ॥ আরো এক কথা বলি শুন বিচমণ। রাফদেরা দদা করে,ভারিনীগমন। অতএব মন বাকা রাখহ নতুর। পত্রীতে বীকার মোরে কর অতঃপ্রা ঘমীর এতেক বাক্য করিয়া প্রবণ। পুনরায় কছে যম প্রবোধ বচন।। ত্তন তন ওহে ভগ্নী বৃচন আমার। অধর্ম করিলে হয় পাপের সঞ্চার॥ যেরূপ বিধার আছে শাম্বের ভিতরে। তাহার অক্তথা যদি কোন জন করে॥ মহাপাপে লিপ্ত হয় সেই তুরজন। অভএব তাহা ত্যাগ করিবে হজন॥ অনিন্দিত ধর্ম যাহা শাস্থের বিধান। তার আচরণ সদা করিবে ধীমান।। নিন্দিত কর্ম ত্যাগ করিবে যতনে। ধর্মের লমণ ইছা কছি তব **হামে॥** সংসারে জনমি যত সারু মহাজন। যতনে করেন সদা যাহা আচরণ। ইতর জনেরা ভাহ। দরশন করি। অনুগামী হয় ভার অন্তরে বিচারি॥ এইকপ জগতের যত সব জন। সককার্য্য করে সদা **শুনহ বচন।** শুনহ ভগিনী এবে বছন মামার। হেন কাজে মতি কভু দিও নাহি আর ॥ আনার স্কৃতি। যাহা কাহলে বচন। তেন কথা মুখে নাহি আন কদাচন ॥ অতি পাপকর ইহা জানিবে শত্তরে। যতনে ত্যজিবে ইহাকহিন্দু তোমাঁরে॥ ইহার সমান গাপ নাহি কোগা এর। ধরম-বিরুদ্ধ হহা শান্তের বিচার । খামার বচন ক্ষে ক্রহ বাবি। মামা হতে কপ্রাণ্ আছে যেই জন্ম আমা হতে গুণালা ফেইজন হয়। তাহারে এপনি কর আপন করে।। তাহারে পরিত্রে ভূমি করিণা বাণ। প্রণান প্রসাস কাল করহ যাপেন। পতিযোগ্য নতে আমি জানিবে ভোমান। তব তনু ত শ কৈলে পাপের**নঞ্চর।। एम** कोक आकि नाहि शावि कथन। अतुर्गिकक हेश भारखुत निथन॥ ভগিনী গমন করে যেই দুখেদর। তির নল রুছে সেই নবকভিত্তর 🕻 অতএব মম বাক। করহ গ্রহণ। ক্রম মতর হতে করহ বর্জন। এতেক বচন শুনি যমা পুন কন। ওন শুন মম বাক্য ওহৈ মহোদম।। তোমার মোহন রূপ করি দরশন। ভুলিবাছে মন ছদি ভুলেছে নয়ন॥ আব কোথা আছে তব রূপের স্মান। জগতে এ হেন রূপ নাছি•বিদ্যামান। রূপের তুলনা তব কোথা নাহি পাই। মরি মরি লর্ট্যে তব রূপের কালাই॥ নাছি দেখি কোঁথা হেন চারুকলেবর। কেন নাছি রাধ ৰুথা ওছে সুম্ভোদয়। রক্ষেরে আশ্রয় করে লভিকা যেমন। তোমারে ধরেছি আমি জানিরে তেমন॥ আমারে বিদার করা উচিত না হয়। তুমি ্অতি বিচক্ষণ ওতে মহৈ। দয়॥ বতনে লইনু আৰু তোমার শুরণ। বাহুদ্রে পশ্চি মোরে কর আলিক্ষ।। ( 24).

রমণ করহ তুমি আমার স্হিতে। বাহুপাশে ধর মোরে আনন্দিত্চিতে॥ আমার বচন নাহি করহ হেলন। একান্ত অধীনী আমি লইমু শর্গ। এতেক বচন শুনি রবির তনয়। গড়ীরবচনে পুন ভূগিনীরে কয়॥ পুনঃ কেন কছ এ ছেন বচন। অপর পুরুষে শীঘ্র করহ বরণ॥ রমণ করহ তুমি তাহার সহিতে। আনন্দ লভিবে তাহে আপনার চিতে। তব রূপ যেই জন করি দরশন। কামার্ত হইয়া হবে বিমোহিত মন॥ পতিত্বে বরণ তুমি করহ তাহারে। লভিবে অতুল স্থখ আপন অন্তরে॥ পরম রূপসী তুনি পরম সুন্দরী। চাক্তলেবর তব রবির কুমারী॥ ভৌমারে লভিতে বাঞ্ছা করে সব জন। তোমার ভাবনা কিবা বলহ এখন। **পরিম স্থন্দর হ**য় যেই মহামতি। তাহারে বরণ কর ওচে **গুণ**বতি॥ মার পাশে আর নাহি কহ কুবচন। বিফুগত প্রাণ মম বিফুগত মন। বিগহিত পত্ম আমি ভাল নাহি বাসি। অশক্ত ইহাতে আমি গুনহ রূপিন্॥ প্রনশ্চ ভোষারে আমি করি নিবারণ। আমার নিকট হতে করহ গমন। **ধতত্রত হয়ে** আমি রহি নিরন্তর। বিষ্ণুতে আমার চিত্ত আছে ততপর॥ পুনশ্চ বিরক্ত যদি করহ আমারে। অভিশাপ দিব আমি কহিন্ত তোমারে॥ বিপরী উফল তাহে ঘটিবে ভোমার। চিত্ত হতে পাপ এবে কর পরিহার॥ যথের এতেক বাক্য করিয়া প্রবণ। মলিনবদনে যমী করিল গম্ম। **স্থার নাহি কোন কথা কহিল যমে**রে। মলিনবদনে চলে ততি ধারে ধী.ে।।। অভিশাপ ভযে তার ভীত হৈল মন। আপন গৃহেতে পরে করিল গদন॥ যমের ধরম দুবে করে দরশন। দুচত্তত ছেন আর নাছি কোন জন॥ পোপকাতে কভু যম নাহি দিল মতি। এ ২েতু দেবত্র পাঘ সেই মহামতি। পরম ধার্মিক যম বিঞ্গত মন। তাহার স্থান নাহি এ তিন ভূবন॥ নারায়ণৈ চিত্ত দেয় যেই মহামতি। অন্তিমে তাহার হয স্থরপুরে গতি॥ যেই জন নিত্য পড়ে এই উপাখ্যান। অথবা এবণ করে যেই মতিমান্॥ সর্বপাপে মুক্ত হয় যেই সাধুজন। অন্ত স্বরগ লাভ শাস্ত্রের বচন॥ বিপ্রকুলে জন্ম ধরি যেই মহামতি। এই উপাখ্যান পছড় হয়ে শুদ্ধমতি॥ পিতৃক্ল সমুজ্জ্ল সে জনৈর হয়। দিব্য জ্যোতিঃ লভে সেই নাহিক সংশ্য॥ প্রতিদিন ইহা যদি অধ্যয়ন করে। ঋণদায়ে মুক্ত হর্ম জীহরির বরে॥ শ্বনের ভয় তার কভু নাহি রয়। শাত্রের বচন ইহা নাহিক সংশয়॥ ধর্মকথা ঋষিগণ করিতু কীর্ত্তন। ধর্মই সবার শ্রেষ্ঠ মারপ বচন॥ ধর্মহতে নাহি কিছ জগত ভিতরে। এইরি রকেন সদ্ধার্মিক জনেরে॥ ধর্মকথা যেই জন করে অধ্যয়ন। অথবা ভকতি করি করয়ে শ্রবণ।
তাহার যতেক পাপ বিনাশিত হয়। অন্তর বিশুদ্ধ হয় নাহিক সংশয়।
যেই জন ধর্মকথা.শুনে ভক্তিভরে। পরম আনন্দ পায় আপন অন্তরে ॥
মনোবাঞ্চা পূর্ণ হয় শান্তের বচন। মহামুখে করে সেই সময় যাপন ॥
শমনের ভয় তার কভু নাহি রয়। অন্তিমে য়য়পপুর লভয়ে নিশ্রমা
জিজ্ঞাসা করিয়াছিলে যাহা ৠিয়গণ। বর্ণন করিয় তাহা সবার সদন ॥
ধর্মকথা কত কব কে বলিতে পারে। ধর্মের বিচিত্র গতি জানিবে সংসারে॥
ধর্মরক্ষা করে যেই সেই সাধুজন। ধর্মরক্ষা করে যেই তোর ভৃত্য গণি॥
পুত্র হয়ে পিতৃ সাজ্ঞা করিলে পালন। প্রকৃত তনয় সেই গাম্তের বচন ॥
ভৃত্য হয়ে পাতিব্রত্য করিলে পালন। প্রকৃত তনয় সেই গাম্বের বচন ॥
ভৃত্য হয়ে পাতিব্রত্য করিলে পালন। সে নারী করিতে পারে অসাধ্য সাধন॥
পাত্রী হয়ে পাতিব্রত্য করিলে পালন। সে নারী করিতে পারে অসাধ্য সাধন॥
অত্রেব ধর্মকথা কি বলিব আর। শুনিলে ধরম কথা পুণ্যের সঞ্চার॥
এবে যাহা শুনিবারে হয় আকিঞ্চন। বল তাহা কহিতেছি ওহে ঋবিগণ॥

# চন্নারিংশ অধ্যায়।

্শতিত্র গ্রাসংবাদ।

সনংকুমার উবাচ।

আগীৎ কশ্চিদ্ধিজা এক্ষন্ মধাদেশে ৮ ভারতে। নন্দী গ্রামে মহাতেজাঃ সদা ধর্মপরারণঃ॥

সৌনকাদি ঋণিগণ সনতকুমারে। জিজ্ঞাসেন পুনরায় স্থাধ্ব-স্বরে।
আহা মরি কিবা শুনি ধরমকাহিনী। কহকহ পুনরায় ওছে মহামুনি॥
পাতিরতাধর্মকথা শুনিতে বাসনা। বর্ণন করিরা তাহা পূরাও কামনা॥
হেন পতিরতা বল ছিল কোন নারী। কহ কহ সেই কথা কহ কপা করি॥
এতেক বচন শুনি বিধির নন্দন। হিলেন শুন শুন শুনে করে।
মধ্যদেশে নন্দী নামে ছিল এক গ্রাম। দিজ এক সেই স্থানে করে। ক্রেম্বারী।
পারম পঞ্জিত সেই ধর্মপারায়ণ। অধর্যেতে কভু তার নাহি যায় মন।
প্রত্যাহ প্রভাতে আরে সন্ধ্যার. সময়ে। অগ্নিহোম করে ছিজ একান্ত-স্বদয়ে॥
প্রাপি গৃহেতে আরু স্বভিধি জান্দ্রণ। বিধানে আতিথা তাঁর করনে সাধন॥

#### व्रक्र मिय-भूतान ।

প্রতিদিন নারায়ণে করেন প্রন। এইরপে দিজ কাল করয়ে যাপন। তাঁহার রমণী ছিল সাবিত্রী আখ্যান। পতিত্রতা নাহি ছিল তাঁহার স্মান। প্রতিসেবা সদা করে আনন্দিত্মনে। প্রতিপ্রিয় সাধে স্দা অতীব যতনে। হেনকালে শুন শুন ওহে ঋষিগণ। এদিকে ঘটিল এক আশ্চর্য্য ঘটন। কোশলদেশেতে এক বিপ্রের বস্তি। যজ্ঞার্মা নাম তার অতি মহামতি॥ তাহার রমণী ছিল রোহিণী আখ্যান। পতিত্রতা দেই নারী খ্যাত দর্মনান। কালবশে সেই নারা গর্ভবতী হয়। তাহার ভঠরে এক জ্মিল তুন্য॥ ষথাবিধি কার্য্য যত করিয়। সাধন। যজ্ঞশর্মা নাম তার করেন রক্ষণ।। দৈবশ্বা নাম তার করেন রহণ। দিন দিন বাড়েশিও পতি মনোরম। ক্রমে ক্রমে যথাকাল উপনীত হয়। যক্ত-উপনীত দেয় বিপ্র মহোদগ॥ यथाविधि छेपनी इहेशा नमन। कतितन (वपनिका जनक-मपन॥ তার পর কালবণে জনক ভাহার। পীতিত হংগা দেহ করে পরিহার। পিতার মরণে পুত্র হইয়। কাতর। যথাবিধি প্রেত্রত্য করে তার প্র। তার পর গৃহত্যাগ করিয়া নকন। তীর্ণলানে আন হেতু করেন গ্রম। নদীথামে উপনীত ভ্ৰমিতে ভ্ৰমিতে। পতিব্ৰতা পতি সহ আছে যেহানে। দেই স্থানে দেবশর্ম। করিয়া গ্রন। একমনে ভিন্নারতি করে আচরণ॥ একচিত্তে বেদজপ করেন সাদরে। এইরূপে রহে তথা প্রফল অন্তরে। এদিকে জননী তার হইয়। কাতর। প্রথপানে চেয়ে থাকে বিষয় অন্তর॥ পতির বিয়োগশোকে কাত্রা রমণী। তাহে দেশত্যাগী হৈল পুল্ল গুণুমণি।। এ হেতু ছঃখিতা হযে রোহিণী স্থলরী। দিন দিন ক্রশা হন বিবর্ণতা ধরি॥ এদিকেতে দেবশর্মা থাকি নন্দীগাঁষ। ভিক্ষারত্তি করি সদা ভ্রমিয়া বেড়ায।। একদিন নদীজলে করিয়া সিনান। জপ হেতু উপবিষ্ট হলেন ধীমান॥ শিক্তবন্ত্র শুক্ষ হেতু ভূমির উপরে। প্রসারিত করি দেন অতি ধীরে ধীরে॥ হেনকালে কাক আর বক বিহল্পম। তুই পক্ষী উড়ি আসি বসিল তখন। বস্ত্রোপরি পঞ্চীদ্বয়ে বনিতে দেখিয়ে। ক্রোধান্ধ হলেন বিপ্র আপন শ্বদযে। ভর্সনা করেন কত বিহঙ্গমগণে। তিরস্কার পশে বিয়া তাদের এবণে॥ তিরস্কার শুনি নেই বিহম্পুগল। বস্ত্রোপরি বিষ্ঠাতাঁগ করিল সত্র॥ পুরীষ ত্যজিয়া দোঁতে উড়িন গগণে। তাহা,দেখি বিপ্রচার্চ্ছ লোহিতলোচনে॥ লোহিত লোচনে বিপ্র করে নেত্রপাত। অমনি হইল পক্ষীদ্বয় ভদ্সাৎ॥ খগদ্বয় ভদা হয়ে পড়িল যেমন। বিশ্রের জানন্দ আরি কা ধরে তখন। চিন্তা করে বিপ্রবর নিজ মনে মনে। মম সম যতি নাছি এ তিন ভবনে W

তপদ্মা নাহিক কেছ আমার সমান। এত ভাবি ভিক্ষা হেতু করিল প্রস্থান।। ভাষিতে ভাষিতে যান সাবিত্রীর ঘরে। পতিত্রতা আছে বসি নয়নে নেহারে॥ পতিব্রতাকাছে ভিক্ষা করেন যাচন। হেনকালে শুন শুন আশ্চর্য্য ঘটন ॥ গৃহস্বামী ভ্রমণান্তে আপন আগারে। উপনীত হন আদি অতি ই ে ীরে॥ তাহা দেখি পতিত্রত। লইনা আসন। স্বানীরে বনিতে তাহা করের অর্পণ।। তার পর উষ্ণ বারি নইয়। মাদেরে। স্থানীর চানে পৌত করে গারে शेरत ॥ এইকপে স্বাহানেবা করি ভান পার ৷ ি ৷৷ সলবিতে -বিনাধ দেখিরা দেখা দেই তালারা। হালেন সহাত। খন ঘন দৃষ্টি করে নালিনা টাবনে । গাল বেরিপ্রিভারত। ক০ শাস্ত করে। সাসিতে হাসিতে পালে কলেন বচন। ১ন ওন এন এনচারী করহ প্রবণ্॥ আনিবে বাহস নাতি করিবেন জ্ঞান। বলাকা নহিক আমি ওহে মতিমানু॥ রোম ভরে মারিছে বিহন্ধারে। পঞ্চত পেটেছে তারা তটিনীর তীরে॥ সেরপু, আমারে নাহি করিবেন জ্ঞান। ধর ধর ভিন্দা এবে করিছি প্রদান॥ রোষ পারহার কর বিপ্রের ন দন। ভিমা লগে নিজ স্থানে করহ গমন॥ এতেক বচন শুনি বিশ্বের তন্য। চলিলেন ভিকালের হইয়া বিশ্বয়॥ ভিক্ষা লয়ে আখ্রনেতে করিবা গ্রমন। যতনে ভিক্ষার পাত্র করে**ন স্থাপন**॥ পুনত আসেন কিরি নাবিত্রীর ঘরে। যখন তাহার স্বামী নাহিক আগারে॥ হেন কালে তথা বিপ্র করি আগমন। সাবিদীরে সম্বোধিয়া কছেন বচন। তন শুন মহাভাগে বচন আমার। আমার হৃদয়ে হৈল বিশায় সঞ্চার॥ বিহঙ্গ মেরেছি আমি দূবদূরান্তরে। কেমনে জানিলে তুমি আপন অন্তরে॥ প্রকাশ করিয়া কহ স্বরূপ বচন। এই হেতু আসিযাছি তোমার সদন॥ এতেক বচন শুনি সাবিত্রী রমণী। কহিলেন শুন শুন ওছে মহামুনি॥ জিজ্ঞাস। করিনে যাহ। ক্রহ প্রবণ। এবে একে সব কথা করিব বর্ণন। নারীথর্ম সদা আমি করিছি পালন। পতিসেলা একমাত্র নারীর ধরম। একমাত্র জানি আমি পতি-আরাধনা। ইহা ভিন্ন অন্য কর্ম কিছুই জানি না॥ দিবানিশি করি জামি পতির দেবন। এই হেতু জানি আমি দকল ঘটন॥ জানিতে সকলি পারি পতিসেবাফেনে। ত্রিকাল ঘটন হেরি আপন সম্ভরে॥ দুরেতে মরেছে বটে বিহল্পগ্র। জানিতে পেরেছি কিন্তু প্রে মহামুম্ পতিসেবা করে যেই অতি ভক্তিভরে। অজ্ঞাত বিষয় সেই জানিবারে পাঝে॥ আরে। এক কথা বলি শুন-মহাত্মন্। আমার বচন নাহি করিও হেলন। \ জননী ত্যজিয়া অমি আসিয়া এখানে। নিয়ন্তর রহিয়াছ তপস্থা সাধনে॥

যেখানে যেখানে তুমি কর অবস্থান। পৃতিগক্তিপূর্ণ জান সেই সেই স্থান। মাতৃত্বংখে পৃতিগদ্ধ হয়েছে তথায়। কিছু না বুনিতে পার বিমুদ্ধ মায়ায়। মাতারে তুখিনী করি কৈলে আগমন। বিফল তোমার সব ওহে মহাত্মন। তীর্থসান জপ হোম সকলি বিফল। সকলি তোমার পক্ষে শুদ্ধ অমসল। জননী পালন থেই করে ভক্তিভরে। সর্বকার্য্য সিদ্ধ তার জানিবে অন্তরে ॥ আমার বচন তুমি না কর হেলন। অবিলফে নিজ দেশে করহ গমন॥ জননীর তুঃখ দূর কর শীঘ্রতর। স্মঙ্গল হবে তাহে বিপ্রের কোওর॥ আরো এক কথা বলি শুনহ এখন। হাদি হতে ক্রোধ রিপু করিবে বর্জ্জন॥ ভেনীভূত করিয়াছ থেই পক্ষীগণে। তাহাদের শুদ্ধি কর বিহিত বিধানে॥ তবে তব আলুগুদ্ধি হইবে নিশ্চয়। আমার বচন বিপ্র মিথ্যা কভু নয়॥ ভেতাতি যদি চাহ বিপ্রের নন্দন। অবিলফে এই সব বরহ সাধন॥

এতেক বচন বিপ্র করিয়া শ্রবণ। চাহিলেন দমা ভিক্ষা সাবিত্রী-সদন॥ কহিলেন শুন শুন ওগো পতিরতে। চেয়েছিন্ম তব পানে অতি ক্রেদ্ধচিতে॥ অজ্ঞানে করেছি দোব করহ মার্জ্জন। যাহে মম শুভ হয় বলহ এখন॥ এত শুনি পতিত্রতা কহে পুনরায়। শুন শুন মম বাক্য বলিছে তোমায়॥ অবিলম্বে নিজদােশ করহ গ্রম। সদত করিবে তুমি জননী পালন।। ভিকারত্তি করি তুমি অতি ভক্তিভরে। করিবেক দদ। দেব। জননী দেবীরে॥ আর এক কথা বলি শুন মহাজান্। করিয়াছ তুমি সেই বিহঙ্গ নিধন॥ এই হেতু প্রায়ণ্ডিত করিয়ে ঘ্রনে। তবে ত হইবে শুক্ক কহি তব স্থানে॥ মজ্জশর্মা নামে বিপ্র আছে এক জন। স্মৃতা নামে তার কলা থিদিত ভুবন॥ তোমার রমণী হবে সেই সুরূপিণী। তাহারে করিবে তুমি আপন পতিনী॥ তার গর্ভে জনমিবে তোমার নলন। বর্দ্ধন ছইবে নাম ওছে বিচক্ষণ॥ ষ্যাবরনৃতিধারী হইবে তনয়। আরো এক পুত্র হবে ওহে মহোদয়॥ পরম বৈষ্ণব হবে সেই দে নন্দন। বলিন্দু তোমার পাশে ভবিষ্য বচন।। অধিক বলিব কিবা ওছে মতিমান্। জননী সকাশে এবে করহ প্রস্থান।। এতেক বচন শুনি বিশের নদন। সম্বোধিয়া সাবিত্রী রে করেন তখন॥ পতিত্রতে তব পদে করি নমস্কার। তোমার ক্লপায় ছৈল জ্জানের সঞ্চার॥ এখনি যাইব আমি আপন আগারে। সেবিধ মাতার পদ আতি ভক্তিভরে॥ ভিকা করি জননীরে করিব পালন। অত্য কর্মে নাছি মম কোন প্রয়োজন॥ খাহা যাহা উপদেশ দিলেন আপনি। পার্লিব সে সব আমি গুনহ জননি॥ এত বলি দেবশর্মা করিল গমন। অবিলাগে নিছুগুরু উপনীত হন।

মাতার চরণে গিয়া বন্দন করিল। পুত্রে হেরি মাতা তার আনন্দে ভাসিল। ভিক্ষার্ত্তি করি বিপ্র অতি ভক্তিভরে। দিবানিশি জননীবে সংরক্ষণ করে॥ একান্ত অন্তরে করে মাতৃ আরাধনা। তাহা বিনা হৃদিমাঝে না রাখে কামনা। ছদিমাঝে রোষরিপুনা রাখে কখন। সম্তর হইতে ক্রোধ করিল বর্জ্জন। ভদীভূত করেছিল বিহঙ্গমগণে। সেই হেতু প্রাযশ্চিত্ত করিল বিধানে॥ এই রূপে মহাসুখে আছ্যে ত্রাহ্মণ। হেনকালে মুক্তশর্মা উপনীত হন॥ তাহার নন্দিনী ছিল স্মৃত। অভিধান। দেবশর্মা-করে তারে করিল প্রদান॥ বিধানেতে দেবশর্ম। করিল গ্রহণ। ক্রমে ক্রমে ছুই পুত্র লভিল জনম।। তার পর রন্ধকালে তনয়ের করে। দেবশর্মা সমর্পিল আপন ভার্য্যারে॥ লোক্তে মর্গে সমজ্ঞান হইল ভাঁহার। গমন করিল বিপ্র কানন-মাঝার॥ স্থুখভোগ তেয়াগিয়া কানন ভিতরে। দিবানিশি নিরঞ্জনে ভাবে ভক্তিভরে॥ অন্তকালে মহাসিদ্ধি পায় মহাত্মন। বিমানে চডিয়া যান হরির সদন॥ এত বলি ঋষিগণে করি সংখাপন। কহিলেন মিউভাষে বিধির নন্দন॥ পতিত্রতাবিদরণ বলিনু দকল। শ্রবণ করিলে হয় পর্ম মঙ্গল। যেই জন শুনে ইছ। এতি ভক্তিভরে। বিপদ আফুমে নাফি কখন তাছারে॥ কুগ্রহ তাহারে নাহি করে খাক্রম। পদে পদে সুমন্ধল হয় সংঘটন॥ ত্রিকাল জানিতে পারে সেই মহামতি। তাহার উপরে তৃষ্ট অখিলের পতি॥ পিতৃকুল মহাতৃষ্ট তাহার উপরে। বংশর্দ্ধি হয তার এইরির বরে। অধিক বলিব কিবা ওহে ঋষিগ্। যেই জন উক্তিভারে করে অধ্যয়ন॥ ভূগোলমধ্যেতে আছে যত তীৰ্থচয়। সৰ্বতীৰ্থকল হয় নাহিক নংশ্য॥ জমু প্লক্ষ কুশ ক্রেঞ্চ ইতি আদি করি। যত দ্বাপ নাগরাদি ভুবন ভিতরি॥ সহত্ত ভ্রমণ কৈলে যেই ফন হয। সেই জন পায় তাহা নাহিক সংশয। বলিকু সকল কথা ওছে ঋষিগণ। আৰু কি শুনিতে বাঞ্জা বলহ এখন।। দকলে রাখহ মতি ধর্মের উপরে। ধর্ম গতি ধর্ম মুক্তি সংসার ভিতরে॥ ধর্মের সমান বন্ধুনাহি কোন জন। ধর্মে প্রতিষ্ঠিত আছে এ তিন ভুবন। পুরাণে ধর্মের কথা অতি মনোহর। শুনিলে পবিত্র দেহ পবিত্র অন্তর॥

## একচত্বাদিংশ অধ্যায়

#### ভূগোলবিবরণ।

#### সনৎকুমার উবাচ।

### नपनभी मगाकौर्ग। धत्रभी शित्रिमञ्जूला ।

#### সপ্তদ্বীপা পশুপক্ষীকীটাদিপরিবেটিতা।

্ তাপ্স-আগ্রমবাসী তাপ্সনিচয়। সন্তকুমারে পুনঃ মিট্টভাবে কয়॥ ্ভুগোলরভাত্ত শুনি হাদয়ে বাসনা। বর্ণন করিয়া গ্রভু পূরাত কামনা॥ ্রত শুনি কহে পুনঃ বিধির নন্দন। শুন শুন বলিতেছি বিশ্ব-বিবরণ॥ প্রব্যতে নদীতে বিশ্ব স্মাকীর্ণ আছে। সপ্তদ্বীপ শোভিতেছে সেই বিশ্বমাৰো॥ <mark>জিমুপ্লক কুশ ক্রো</mark>ঞ্চ শাক্দ্রীপ আরে। শাল্মলি পুকর দপ্ত ভুবনমাঝার॥ यथाकरम मश्रेबील अरे नाम धरत। रेहारमत लितियां छन विन लित्।॥ পুরুরের পরিমাণ যত খানি হয়। শালালি দ্বিওণ তার ওহে মুনিচয়॥ শাকদীপ তাহা হতে ছুই গুণ ধরে। এরপে দ্বিগুণ করি ক্রমে ক্রমে বাড়ে॥ জম্বর প্রমাণ হয় লকৈক যোজন। নপুরীপ পরিমাণ এই নিরূপণ। ্র **চারিভাগে সুবিভক্ত জমুরীপ হ**য়। বলিকু ছীপের কথা ও**ছে মুনি**চয়॥ **ি দপত সাগর শোভে ধ**রার ভিতরে। তাহাদের নাম বলি শুন অতঃপরে॥ লবণ লাগর আর ইফুর নাগর। স্থরা নর্পি দ্বি দুগ্ধ ভূবন ভিতর॥ এই ছয় ভিন্ন আর স্বচ্ছোদক নাম। ক্রমে সপ্ত জলনিধি ধরয়ে আখ্যান॥ সপত সাগর এই আছে নিরূপণ। বলিকু নবার পাশে ওছে মুনিগণ॥ স্বচ্ছোদক বঁতথানি পরিমাণ ধরে। তাহা হতে চুই গুণ চুগ্ধের সাগরে॥ ্তিষ্কাহতে তুই শুণ দ্ধির সাগর। দ্ধি হতে তুই শুণ গুতের আকর॥ े এরেপে দ্বিগুণ করি ক্রমে ক্রমে ধরে। বঁলিনু স্বার পাশে শুন অতঃপরে॥ বলয় আকারে এই দপত দাগর। সপ্ত দ্বীপে বেড়ি আছিছ তাপদ-নিকর॥ ं ময়র তনয় হয় প্রিয়ত্রত নাম। ভুবনে বিখ্যাত তিনি অতি গুণ্ধাম। সপ্তদ্বীপ-অধিপতি সেই জন হয়। দশ পুত্র লভে दुई ওছে মুনিচয়॥ তার মাঝে তিন জন বিরাগী হইয়ে। সন্থাস আত্রম লন রাজত্ব ত্যজিয়ে॥ অবশিষ্ট পুত্রগণ রাজ্য লাভ করে। নবুবর্ষ পায় **ভারা অমুর** ভিতরে ॥ কেত্মাল আদি করি নবব্ধ নাম। এই সবে রাক্স কলে খ্যাত সর্বস্থান ॥

এইরপে পুত্রগণে রাজ্যদান করি। পশিলেন পিত। গিরা বনের ভিতরি॥ हिमास्त्र अधिপे छि इत (यहे जैन। अयछ नात्म ७ इत हाहात नक्तन ॥ খাবত হইতে জয়ে ভরত ধীমান। পরন ধার্দিক তিনি অতি মতিমান। ভারতবরের রাজা হইলেন তিনি। বহু কাল রাজ্য করে শুন যত মুনি॥" ইলারত বর্ষানো মহামের গিরি। তার উক্ততার কথা বলিবারে নারি॥ যোজন প্রবাশে হয় চুরাশী হাজার। বোড়শ সম্ভ হয় অধোভাগে তার॥ বিস্তার বিশুণ তার ওহে মুনিগণ। তার মণাভাগে হয় জন্মার ভবন ॥ পূর্ব্বেতে অমরাবতী কিবা শোভা পায়া ম্যাকিলেণে স্থানিপুরী কিবা শোভেতারা বহাতেজোমর সেই অগ্নির ভবন। দলিণে যথের পুরী অতি বিমোহন॥ ন'খননী নাম তার অতি মনোহর। কি বলিব পুরিশোভ। তাপন নিকর॥ পশ্চিমেতে শোভা পায় বরুণ-ভবন। রসাবতা নাম তার ওছে মুনিগণ।। গন্ধতা নামে পুরা শোভে বায়কোণে। বারর ভবন উহা জানিবেক মনে ॥ উত্তরেতে বিভাবতী অতি "মনোহর। সোমের নগরী ইছা খ্যাত চরাচর॥ নবের্দর ক জারু এতি মনোরন। পরতে বেঞ্চিত উছা অতি বিমোহন॥ নত শতনদী শোভে উহার ভিতরে। পুণাময়ী সন নদী পুণাজল ধ**রে।**। কি প্রুষা ি ব্যুষা হাহা হাহে বিভাষ। না পুণাবানগণ তথা করে অব্**সান ॥** ∙ার ভবর্ষ হয় কামের ভাষি। কর্ম হেতু এই হান শুন ঘত মুনি॥ শবত বরবে নর ধরিম। জনম। করিবে স্বত কর্ম ওছে মুনির্ণয় পাদান নরব। অর্থানে ধার। এই তেতু কর্মাভূমি কহিছি ইহায়॥ লারত মাঝারে জন্মি গত নরগা। নিকাম হইয়। কর্ম কৈলে আচরণ। ্রিলাভ করে তারা লেই কর্মফলে। ভারত স্মান বর্নাহি ভূম**ওলে।।** ভারত মাঝারে যার। লভিবা জনম। অবিরক পাপকর্ম করে আচরণ। মণোগতি লভে তারা শাম্বের বিচারে। মহাক্ট পার তারা নরক ভিতরে॥ নরক কত যে আছে বর্ণিবার নয়। তাহে পড়ি কট পাঘ যত পাপিচয়॥ অতঃপার শুন শুন ওচে মুনিগণ। কুলপর্বতের কথা অতি মনোরম।। শাভটী পর্বত আছে শাবার প্রধান। তাদের সবার কুলপর্বত আখ্যান॥ णहरू মলয় সহা আর শক্তিমান। পারিপাত বিদ্যা আর মধ্য ঋক্বান॥ প্রিগিরি ঘণাক্রমে সপ্ত নাম ধরে। কুলগিরি বলি সবখাতি চরাচরে। <sup>1</sup> পুননা শোভ। পায় অতি মনোহর.। তাহাদের নাম বলি শুন অতঃ পর॥ শ্বিণ সুরা খবিকুলা। ভীমরধী। কৃষ্ণবেদ্বা চক্রভাগা অতি পুণাবতী 🏗 विषयां को मध निष्त , यान्यान । को मत्व स्नान करत यह भूगावीन ॥

हेश जित्र महानेनी याता थाता इस । जाहारमत नाम विन जैन सूनिहत्र॥ জাহুবী যুমুনা ভুক্তদ্রো গোদাবরী। এই চারি ভিন্ন আর জাছমে কাবেরী। এই সব মহানদী পাপ নাশ করে। পরম পবিত্র জল সংসার ভিতরে॥ জমুদ্বীপ হাবিন্তীর্ণ লকৈক যোজন। অতি পুণ্যপ্রদ ইহা অতি হুশোভন॥ ভারত পর্ম শ্রেষ্ঠ ইহার মাঝারে। মহাপুণ্প্রদ দেশ জানিবে অন্তরে॥ প্লক আদি যত দ্বীপ আছে বিদ্যমান। তাহে যত জনপদ করে অবস্থান। ্প্রম পবিত্র তাহা কানিবে অন্তরে। তাহে যত জনগণ অবস্থিতি করে॥ "নিকাম ছইয়া তারা করে অবস্থান। যাগযক্ত আদি কার্য্য করে অসুষ্ঠান॥ · অধিকরাক্ষরে তারা মুক্তিলাভ করে। নবসংখ্য নদী আছে উহার¦ভিতরে॥ সেই দ্বীপে বেড়ি আছে দপত দাগর। স্বচ্ছোদক আদি করি তাপদনিকর॥ অতঃপর শুন ভূম-ভৈহে মুনিগণ। তার পর বলিতেছি যত বিবরণ॥ তার পর মর্ণময়ী ভূমি শোভা পায়।লোকালোক গিরি পরে কিবা শোভে তায়। তার পর তমলোক অতি মনোহর। ভুলোক শোভিছে পরে খ্যাত চরাচর। ষ্বর্গাবধি হয় জান ভূলোক-বিস্তার । অন্তরীক্ষ লোক শোভে তদুর্দ্ধে তাহার॥ খেচরগণের ভুমি এই লোক হয়। তার উদ্ধে স্বর্গলোক ওতে মুনিচয়॥ মহাপুণ্যন্থান স্বৰ্গ জানে সৰ্বজন। বিশেষরপেতে তাহা করিব বর্ণন॥ অবধানে শুন তাহা তাপসনিকর। শুনিলে পাতক নাশ খ্যাত চরাচর॥ ভাতবরবে যারা লভিয়া জনম। দিবানিশি পুণ্যকর্ম করে, আচরণ॥ ভাছারাই স্বর্গধানে করে অবস্থান। পুণ্যভোগ করে তারা থাকি এই স্থান॥ দেবগণ বাস করে মরগ ভবনে। নিত্যস্থের সুখী তারা বিখ্যাত ভুবনে॥ স্থুমের পর্বত শোভে পৃথিবী ভিতর। হিরথায় গিরি উহা অতি মনোহর। 'মহাদীপ্রিমান্ উহা অতি শোভা পায়। বলিতেছি শুত শুন উহার উচ্ছায়॥ যোজন প্রমাণে উচ্চ চুরাশী হাজার। ষোড়শ সহত্র হয় অধোভাগে তার॥ চারিদিকে পৃথিবীর ঘত পরিমাণ। পর্বত-বিস্তার হয় তাবত প্রমাণ। স্থামের তিন শৃঙ্ক অতি শোভাকর। তাহার মন্তকে শ্বর্গ অভি'মনোহর॥ নানাবিধ তরু লতা কে গণিতে পারে।শৃ**জ**ত্ররে শোভা পায় খ্যাত চরাচরে॥ শৃক্তরে শোভা পায় বিবিধ রতন। কি বলিব শোভা ঠার অতি মনোরম ॥ भधाम शिक्तम शूर्व आहे मृक्षकता। अभूज्ञक इतता माईक अटह मुनिहता। মধ্যশুক্ত শোভা পায় কনক-ভূষণে বিষদুর্ঘ্য ক্ষটিক তার বুঁশাভে স্থানে স্থানে॥ পুর্বিশৃক শোভা পায় ইক্রনীলময়। পশ্চিম শৃক্তেতে শোর্ভ মাণিক্য-নিচ্যুগা 

**शृक्षम् क क्रिश का**निरंद क्रस्त । नियुष्ठ योजन मश्रम्क य शहत ॥ ত্রিপিউপ স্বর্গ যাহা অতি মনোহর। শোভিতেছে এ হর্গ মধাশ্লোপ্র॥ ছত্রাকার অই ইর্গ জড়ি বিমোহন। কিবা শোভা ধরে উহা অতি মনোর্ম॥ পুর্ব্ব ও পশ্চিম শৃক্ষ আছে এই স্থানে। তাহা হতে বছদুর ধরিয়া প্রমাণে॥ অই বর্গ শোভা পায় অতি যনোহর। হেন শোভা নাহি আর ভূবনভিতর॥ মধ্য**শকে সপ্ত অ**র্গ কিবা শোভা পায়। তাহাদের নাম বলি শুনহ সবায়॥ **बिलिकेल नाक्ल्र्फ जन्मत ७ गारि । जानम अयाप जात जानित्व निर्क्** जि॥ এই সপ্ত স্বৰ্গ শোভে মধাম শৃলেতে। পশ্চিম শৃলের কথা শুনহ পরেতে॥ পৌষ্টিক শোভন জপ স্বর্গরাজ্য শ্বেত। আজ্ঞাদ এ ছয় আর জানিবে মশ্মধ। পশ্চিম শৃঙ্গেতে এইসপ্ত শোভা পায়৷ হেন শোভা বিশ্বমাঝে নাহিক কোথারা৷ পূর্বেশৃতে সপ্ত স্বর্গ কিবা শোভা ধরে। তাহাদের নাম বলি শুন অতঃপরে ॥ নির্মা সৌভাগ্য সে)খ্য অতাব-নির্মল। পুণ্যাহ নিরহক্ষার আর যে মঞ্চল ॥ এই मश्च স্বর্গ শোতে পূর্ব্ব পুরেশিবর। হেরিলে ইহার শোভা জনম হার॥ একবিংশ স্বগ এই করিন্দু কীর্তন। মেরুশিরে শোভে ইছা অতি মনোরম॥ হিংসা আদি নাহি কভু যাহার অন্তরে।অহিংসা পরম ধর্ম যেই জ্ঞান করে॥ দান যক্ত আদি সদা করে আচরণ। তপ অনুষ্ঠানে সদা আছে যার মন ।। এই সব পুণ্যকর্ম যেই জন করে। স্বর্গধামে বাস তার জানিবে অন্তরে ॥ অই সব স্বর্গধামে থাকে যেই জন। ক্রোধ দ্বেষ হাদে তার না রহে কখন॥ জলগর্ভে পশি তারা মহানন্দ পায়। নিত্যানন্দ লাভ করে থাকিয়া তপায়॥ সন্নাসংর্শেতে রত থাকে যেই জন। ত্রিপিউপ স্বর্গে সেই করয়ে গমন ॥ व्छ অবুষ্ঠান যারা করয়ে বিধানে। নাকপৃষ্ঠে যায় তারা জানিবেক মনে॥ অ্যাহোত্র অনুষ্ঠান করে যেই জন। নির্কৃতি নামক স্বর্গে করয়ে গমন॥ তড়াগ অথবা কৃপ যেই জন করে। পোর্ফিক স্বরগে দেই যায় পুণ্যফলে॥ হবর্ণ অর্পণ করে যেই সাধুজন। সোভাগ্য হর্গেতে যায় সেই মহাত্মন্। মহাতপা যারা যারা অবনাভিতরে ।. স্বর্গলাভ করে তারা প্রফুল অন্তরে॥ গীবের হিতের ভরে যেই সাধুজন। শীতকালে অগ্নিরাশি করয়ে অর্পণ॥ ষপ্সর মর্গেতে বাস সেই জন করে। তাহার পুণ্যের কথা কে বলিতে পারে॥ শহন্ধার নাহি কভু অন্তরে যাহার। হিরণ্য-অর্পণ করে যেই গুণাধার॥ र्शियोन त्यहे जन कृत्त विक्षिशत्। त्यायान व्यथवा त्यत्र विहिष्ठ विशास ॥ गेगटत विशूथ नाहि इतं (यह छन। जाशन जीवन धन कटत विमर्कन ॥ **ঐতিবর্গে যার তার। মেই পুণ্যকলে। মহানন্দ লভে তৃথা জাপন অন্ত**রে॥

(त) पारां यथा विधि कतिरम अर्थ। निर्मुल अर्थ एक घात्र (महे माधूकन व्यथमान यथाविधि ध्यरे कन करता। शून्तारं वर्राटक मिरे विश्वाम करता। ক্যাদান যেই জন করয়ে অর্পণ। মঙ্গল নামক স্বর্গে সে করে গখন। ় ওরুজনে নেত্রপথে করিলে দর্শন। নম্মার করে যেই হরে পুত্মন। বস্তুদান দেয় যেই যত দ্বিজগণে। বিপ্রের সন্তোব, করে বিহিত বিধানে ' শেত্রুর্গে ধার সেই নাহিক সংশর। শোক নাহি স্পর্শে কভু ভাহার হৃদ্য , ভারত ভূমিতে যারা লভিয়া জনম। কপিলা অর্ণ বরে হয়ে শুদ্ধমন। ্ত্রথবা র্যভ দের বিজাতির করে। ম্যাথ সর্গেতে সেই যায় পুণ্যকলে। র্প্রতিদিন নদীজলৈ যেই করে মান। তিল্পের দান করে যেই মতিখান। উপানহ দান করে দিলাতির করে। ছত্রদান করে যেই আত ভক্তিউরে॥ শোভন নামক বর্গেনে করে গ্রন। শান্তের বিধান ইহা তহে শা্যগ্। **দেবগৃহ** যেই জন করত্রে নির্মাণ। দেবসেবারত থাকে যেই মতিমান॥ জীর্থধাতা সদা করে একান্ত অন্তরে। বর্গরাজা পান তারা শাস্তের বিসংখে। প্রতিদিন একাহারী রহে যেই জন। অপবা নিশিতে মাত্র করয়ে ভোজন॥ উপবাসত্তত যেই করে অনুষ্ঠান। শিবরাত্র ত্রত করে যেই মতিমান॥ **ষর্গরাজ্য পার তার। সেই পুণ্যকলে।** বলিন্দ শাত্রের কথা জানিবে সকলে। যে জন নদাতে নিত্য কর্ষে সিনান। বাহাৰ সম্ভবে নাহি ক্রোধ বিদ্যান।। অক্ষারী সদারতে যেই সাগুজন। দুড়তে হয়ে রতে যেহ হৈছাত্ম।। সকলের হিত করে যেই সাধজন। নির্মল স্বর্গেডে তার। করয়ে গ্রামন ॥ বিদ্যাদান করে যেই পরহিত তরে। নিরহন্ধার মর্গে দে শুম্পতি বরে॥ মেই মেই স্বৰ্গবাঞ্জা কৰি মেই জন। মেই যেই ভাবে দান করয়ে অর্পণ। দেই দেই বর্গ পার দেই মহামতি। প্রফুল অন্তরে তথা করনে বর্মাত। সক্ষিধি দোনদ্রব্য বিহিত বিধানে। যেই জন দান করে যত বিপ্রগণে॥ অর্গলোক পায় তারা শতেম্রের বচন। আর না ভুগিতে হয় ভবের বন্ধন॥ শুন শুন তার পর ওতে মুনিগণ। মেরুর প্রিচম প্রস্থাত মনোরম। প্রজাপতি সেই পূব্দে করে অবস্থিতি। নদা বাঞ্ছা করে ব্রহ্মা তথায় বসতি॥ পুর্বেশ্জে সদা রছে দেব নারারণ। মধ্যশ্জে থাকে দিদা বিভূ পঞ্চানন॥ তার পর শুন শুন তাপদনিকর। আর্কোবত শুক্ষ আর্ট্ছ মেরু শিরোপর॥ কুমারগণেরা থাকে প্রথম শৃঙ্গেতে। মাতৃগণ বাস করে দ্বিতীয় শৃংকতে 👢 ভূতীয়ে বসতি করে গন্ধনিকব। আর'য়ত দিছ রাই প্রফুল অন্তর্॥

**Б**ष्ट्रार्थटङ वाम करत विषाधतर्गा १ श्रीरपटङ तात्रहास छट मूनिश्रा।

ষষ্ঠেতে বিনভাপুত্র সদা বাস করে। সপ্তমেতে পিতৃগণ জানিবে আছেরে 🛍 अकेटमट७ धर्महाक करत निवनित्र। নবমেতে বাস করে দক্ষ প্রজাপাক্তি দশন শক্তেত বাস আদিত্যদেব করে। বলিমু সবার পাশে জানিবে অন্তব্নে ভূলোক হইতে শতদহস্ৰ যোজন। উর্ব্বেত ভাকর দেব করে বিচরণ ভুলোক হতে সহস্ল গোজন অন্তরে ৷ সৌর বিশ্ব শোত। পার জানিবে অন্তরে 📳 ভূদেশিকের তিন শুণ তার পরিমাণ। নিকপিত আছে ইহা শান্ত্রের প্রমাণ্ মধ্যাক্ষ যখন হয় বিভাবতী-পুরে। অমরাবতীতে হুর্যা উদেন দেকাশে 🖞 তথায় মধ্যাহ্নলৈ যেই কালে হয়। यमशुरत रगरे कारल इस ऋरर्यापस 🛣 সূর্যাদের রথোপরি করি আরোহণ। মেরুগিরি প্রদক্ষিণ করে সর্বক্ষণ। তৎপর সোমমণ্ডল অতি মনোহর। তার পরিমাণ বলি শুন অতঃপ্র॥ ভাবর মতন হয় যত পরিমাণ। তাহার বিশুণ ইহা শান্তের প্রমাণ 😥 তথা হতে দূরে শত সহস্র যোজনে। নক্ত্রমন্তল শোভে জানিবেক মনে যেই স্থানে অব্দিত নক্ষত্ৰ মণ্ডল। তাহা হতে দুরে লক্ষ যোজন অন্তর॥ বুধের ব্যতিহান অতি মনোরম। কি বলিব শোভা তার কে করে বর্ণন ॥ বুধ হতে তিনগম্ব যোজন অন্তরে। শুক্রাচার্য্য দৈত্যগুরু অবস্থিতি করে॥ তশা হতে তিন ক যোজন অন্তর। কুজ এহ অবস্থিত জানে স্ক্রির॥ তথা হতে তুই লক্ষ যোজন অন্তরে ৷ সুরগুরু বহস্পতি অবস্থিতি করে॥ তথা হতে তুই লক যোজন অন্তর। অবস্থিতি করে তথা এছ শনৈশ্যর॥ সপ্রবিষ্ণুল রহে জানিবে অন্তরে॥ তথা ২তে দূরে লগ যোজন উপরে। লপ্তৰ্থিমণ্ডল সতে প্ৰচৰ্ক যোজন। উপরেতে রাত্তাহ অবস্থিত রন 🛮 তার পর শুন শুন ওছে মুনিগণ। ত্রনার আদেশে লোকপ্রকাশ তপ্র॥ যাবভীয় গোলে । দিতেছে কিরণ। আজ্ঞাবহ হয়ে রহে সেবক যেমন। মর্ভ্রু ছতে অধ্যেভাগে পাতাল নগর। ইথে তাপ নাহি দেন দেব বিভাকর॥ রাতি নাই চন্দ্র নাই জানিবে তথায়।জলরাশি দিব্যরূপে কিবা শোভা পায়। निकंट क कलतामि পा जान नगरत । ही श्रिमान तरह महा कानित कखरत ॥ স্থলোক-উপরে কোটি যোজন অন্তরে। মহলোক শোভা পায় কহি সবাকারে॥ তার উদ্বেজনলোক কিবা শোভা পায়। তার উদ্বেতপোলোক মরি কিবা তায়॥ তাব উদ্বে মত্যলোক শতি মনোহর। এদের আরু।ত বলি শুন অতঃ পর ॥ এই সব োক যাহা করিত্ব কীর্তন। ছত্তের সমান করে আকার ধারণ॥ নিলেপ পুরুষ রহে সবার উপর। যার উপাসনা করে মুমুকু-নিকর॥ অধিক বলিব কিবা, ওচে মুনিগণ। ভূগোল-রভান্ত কথা করিমু কীর্তন॥

ক্ষ্মীৰ জন এই কথা অধ্যয়ন করে। তাহার স্থাত হয় জানেবে অন্তরে। অধিক বলিব কিবা ওছে ঋষিগণ। হরভক্ত হরিভক্ত হয় যেই জন। বেই দে পর্ম সাধু অত্তে মোক্ষ পায়। আৰু নাহি পড়ে সেই ভ্ৰথন্ধ দায়।

## চতুশ্চত্বারিংশ অধ্যায়।

হরভজিনির্ণয় ও জীবের মোকোপায়।
অহমমরগণার্চিতেন ধাত্রা
যম ইতি লোকহিতাহিতে নিযুক্তঃ।
হরিগুরুবশগোমি ন স্বতন্ত্রঃ
প্রভবতি সংয্যনে ম্যাপি বিষ্ণুঃ॥

এতেক বচন শুনি যত ঋষিগণ। পুনরায় মিউভাবে করি সম্বোধন। ্বীৰজ্ঞাসা করেন যোগী বিধির নন্দনে।শুন শুন ওহে প্রভু কহি তব স্থানে॥ 🔖 মিতেছি তব মুখে অপূর্ব্ব কাহিনী। পুনঃপুনঃ স্পূহ। বাড়ে ওহে মহামুনি॥ **এখন জিজ্জা**সি যাহা করহ বর্ণন। শুনিয়া ছেদন করি ভবের বন্ধন।। কিলে জীব মোক্ষ পায় বল মহামুনে। শিবভক্ত হরিভক্ত বলে কোন্ জনে॥ 🕊 😘 😎 নি বিধিমুভ জতি ধীরে ধীরে। কহিলেন 👺ন শুন বলি স্বাকারে॥ শিবভক্ত হরিভক্ত ভিন্ন কেছ নয়। যেই হরি সেই হর জানিবে নিশ্চয়॥ ভিন্ন ভেদ জ্ঞান করে যেই অভাজন। তাহার ছুর্গতি হয় সদত ঘটন॥ স্থ্রীপ সপ্তলোক পাতালাদি আর। বীথি আদি যাহা আছে ত্রন্ধাও ্থিঝার॥ আরত করিয়া আছে যত জীবগণ। কেহ সূক্ষা কেহ স্থূল কে করে গ্রাপন ॥ এরপ নাহিক স্থান সংসার মাঝারে। কর্মবশে জীবগণ যথা নাহি ্রিকরে॥ অঙ্গুলী-অন্তাংশ স্থান বিশ্বে কোথা নাই। যথা জীবগণে নাহি দেখি-ুৰাক্তর পাই॥ দেহ অত্তেজগতীক হত জীবগণ। দারুণ যাতনা পায় শমনসদন॥ পার্টপর যতেক ফল হলে অবদান। জীবকুল করে পুনঃ ধরায় পরাণ॥ ুকেছ নর কেছ পশু কেছ রক হয়। কেছ গুলা কেছ লতা শান্তের নির্ণয়॥ যে কর্ম করিলে জীব লভয়ে উদ্ধার। প্রকাশিয়া কহি তাহা কল্পিয়া বিস্তার॥ ষমের অধীন জ্ঞীব খাহে নাহি হয়। বলিত্তেছি শুন তাহা ষ্টাপ্স নিচয়॥ শক্তর শক্তরী দৌহে কৈলাসভবনে। একদা আছেন বসি গুলক্তিমনে। जारक इत पूर्व इस्त मध्र वहरन। कहिएनन सम् रम्नि मुन्दिरुपरन॥ यम बाज किंक रतरत करित नास्त्राथन। यह कथा बरल हिल कत्र अत्र । बावज প্রেতের প্রভূ আমি বটে হই। বৈষ্ণব জনের প্রভূ কভু কিন্তু महे ॥ বিষ্ণুভক্ত শিবভক্ত হয় যেই জন। প্রকৃত বৈষ্ণব সেই শাস্ত্রের বচন অতএব সাবধান করিমু তোমারে। যেওনা কখন যেন বৈফবগোচলে হরির শরণাগত যেই মহাজন। তাহার সদনে নাহি যাবে কদার্ প্রেত-অধিপতি কিন্তু নহিত স্বাধীন। আমারে জানিবে সবে হরির অধীন দেবতা-পূজিত বিধি দয়ার আধার। দিয়াছেন মোর প্রতি বিচারের ভার মম প্রতি ক্লপাময় গুণের নিধান। করিতে পারেন তিনি দণ্ডের বিধান 🎉 কাঞ্চনে নির্শিত হয় নানা অলঙ্কার। অলঙ্কার-ভেদে ভিন্ন ভিন্ন নান তার 🛊 সেরপ দেবের দেব হরি রূপাময়। দেব পশু আদিভেদে নানারপ হয়। ধংসকালে যথা জল জলেতে মিশায়। পৃথিবীতে পৃথীরেণু যথা লয় পার 🛊 তত্রপ দেবতা পশু মানবাদি চয়। সকলি বিফুতে জেনো লীন হয়ে রয় 🛊 যাঁহার চরণপদ্ম সেবে দেবগণ। সেই হরিপদে ভক্তি করে যেই জন 🖆 পাতক নাহিক থাকে তাহার শরীরে। না আনিবে কভু তারে আমার গোন চরে॥ যেমন আগুণে মত দেয় সাধু জন। তাহারে তেমন তুমি করিবে বর্জন এতেক যমের বাক্য করিয়া শ্রবণ। যম অনুচর পুন: জিজ্ঞাদে তখন। কেমনে চিনিব আমি হরিভক্তজন। রূপা করি কহ তাহা এই নিবেদন॥ ভূত্যের বচন ভানি শমন ধীমান্। কহিলেন ভান বলি তব বিজ্ঞান । নিজধর্ম ত্যাগ নাহি করে যেই জন। সুহৃদজনেরে হেরে নিজের মতন ॥ চৌর্য্যনৃত্তি জীবহিংদা যেই নাহি করে। রাগ দ্বেষ নাহি কভু বাহার অন্তরে। ওনহ কিন্ধর তন, আমার বচন। স্থজন সে জন সেই বিষ্ণুপরারণ্॥ কাঞ্চনে নেহারে যেই তৃণের সমান। স্বলিমাঝে নিরন্তর ভাবে ভগবান্ 🛊 स्तर किश्वत स्त्र पामात वहन। সুজন সে জন সেই হরিপরারণ। সেই দেবদেব বিষ্ণু তাঁর কলেবর। ক্ষটিক ভূধর সম অতীৰ নিৰ্মাণ মাৎসর্য্যাদি দোষ ধরে মানব-নিকর।দে দোষে বিষ্ণুতে জেনো অনেক অস্তর্ম অগ্নিতাপ যথা নাহি থাকে শশধরে। কোন দোষ নাহি তথা হরিকলেবরে # প্রশান্ত বিশুদ্ধচিত হয় যেই জন ৷ মাৎসর্য্য যাহার হৃদে নাহি কলাচন ॥ মিত্রতা করেন যিনি সকলের মনে। ভ্রমে কভু মিখ্যা কথা না আনে বদনে॥ যাহার ছদেরে কভু নাহি অভিমান। যাহার অতরে মায়া নাহি বিজ্ঞান । তার ছিদোরো হরি রহে নিরম্ভর। বৈষ্ণব প্রধান সেই জানিবে কিঞ্চর॥ হরির বসতি থার অনুয়-শাবাদের। শাত সৌম্মূর্ডি তুমি দেখিবে তাহারে॥

वित्र ८एकि मध्नारत भारतत छाताता (क ना जाटन गृथीतम जाहरत छोहाता किन अन अटह मूछ आभाज वहन। यमशांभ ध्येह अन करत्रदृष्ट दृष्णन ॥ ক্রিনানিশি হরিধনে ভাবে যেই নর। অহন্ধার পরিশ্য যাহার অন্তর॥ জ্ঞভিদান মাৎস্থ্যাদি নাহিক যাহার।ভ্রমে নাহি যাবে কভু নিকটে তাহার॥ শুশ্বচক্র গদাধারী গোলোক বিহারী। অনাদি অব্যয় দেব ভগবানু হরি।। নেই হরি হৃদিমাঝে বিরাজে যাহার। পাপের কণিকা দেহে না রুহে তাহার॥ অশ্বকার নাহি থাকে ভাস্করে যেমন। হজন সে জন সেই নিপ্পাণী তেমন॥ প্রথন হরি লয় যেই মূঢ়মতি। জীবহিংসা অবহেলে করে নিরবধি॥ স্থাকারে কটু কহে মিথ্যা কথা কয়। অশুভ কাজেতে রত সর্বক্ষণ রয়॥ দিলিন অন্তর কার্য্য শলিন যাহার। নাহি থাকে হরি কভু হৃদয়ে তাহার॥ পারত্ত হেরি দেষ করে যেই জন। সাধুনিন্দা করি সদা কাটায় জীবন॥ सान नाहि करत कच्च माधूनील करन। भिष्ठेवाका कच्च राई ना जारन वलरन॥ ষ্ট্রান সুষ্টবুদ্ধি যেই অভাজন। তাহার হৃদয়ে নাহি রহে নারারণ॥ শিতা মাতা দারা পুত্র তনয়া রক্ষিতে। অথবা বান্ধব ভূত্য সবারে পালিতে॥ বঞ্চন। করিয়া করে অর্থ উপার্চ্জন। পাপাচারী ছুরাশয় জানিবে দে জন॥ শুন শুন ওবে দূত আমার বচন। হরিভক্ত সেই জন নহে কলাচন॥ কুকর্মে নিরত সদা যহার অন্তর। সতত জবন্য কর্ম করে সেই নর॥ নীচের সংসর্গ করে যেই মূঢ়মতি। অপকর্মে পরিলিপ্ত বহে নিরবিধি॥ প্রিসম সেই নর জানিবে সকলে। হরিভক্ত যেই ছুফীনহে কোন কালে॥ পরিম পুরুষ সেই দেব নারায়ণ। অবিতীয় সর্কেশ্বর নিত্য নিরঞ্জন॥ দুশ্যমান বিশ্ব আমি আর নারায়ণ। এ তিনে নাহিক ভেদ করি দরশন॥ 🛺 বুপ বিমল জ্ঞান হয়েছে যাহার। কভুনাহি যেও দূত নিকটে তাহার॥ কোথা দেববাস্থদেব কোথা পুথীখর। কোথা চক্রপাণে বিফো রূপার সাগর॥ কৈ ধায় অচ্যুত দেব দেহ দরশন। অধীনে উদ্ধার কর ওহে নারায়ণ॥ এইরপে সর্বকণ করে যেই জন। তাহার দেহেতে পাপ না রহে কখন। কুঁজু নাহি যাবে দুত নিকটে তাহার। হরিভক্তে নাহি মম কোন অধিকার॥ অনুত্ত অব্যয় হরি যাহার অন্তরে। ভক্তত্বেহ্বশে তথা সদত বিহরে॥ সেই ভক্ত যত দুর করে দরশন। তত দুর বিফুচক্র ক্রিরে নর্বক্ষণ॥ বিষ্ণুচক্রপ্রভাবেতে তোমার আমার। বল বীহী তেজ আদি ছবে ছারখার॥ তাহার নিকটে যেতে নাহিক শক্তি। বৈক্ঠবাসের যোগাঁ দেই মহামতি। गरमात मागरत मिहे विस्पाद मात । जोहात विहत्न जात माहिक छेदात ।

কেশবে আসক্ত যার চিত্ত নিরন্তর। কি করিব আমি তার শুনহ কিকর॥ ঘমপাশে যমনতে কি ভয় তাহার। অনাগাদে তরে দেই ভবপারারার ॥ এরপ কিন্ধরে কৃহি শমন রাজন। নীরব হইয়া পুনঃ মৌনভাবে রন॥ অতএব ঋষিগণ কি বলিব আর। একমাত্র নিরঞ্জন জগতের সার II মুক্তির ন্যান আর নাহি কিতু ধন! ভাগ্যকল কনে যার পায় সেই জন॥ ঘাঁহার আদেশে বিধি করেন সূজন। ঘাঁহার আদেশে বিফু করেন রক্ষণ॥ যাঁহার আদেশে রুদ্র করিছে ন'হার। সেই নিত্য স্নাতন জগতের সার॥ ঘুর্তিশান মোক্ষ তিনি দেব নিরঞ্জন। তিনিই পরন ধন ওছে ঋষিগণ॥ তাবের যাতনা আর কে খণ্ডিতে পারে। একমাত্র সেই জন বিশের মাঝারে নকলের মূল তিনি তিনি তত্ত্বনে। সর্বজীবে সমভাবে তিনি বিদ্যান।। সকলের স্তুতা তিনি স্তুত্য নাহি তার। অন্ত স্নাদি তিনি একাও-আধারা। নিরম্বর ভার ধ্যান করে ৫ জন। নুক্তিপদ লভে সেই বেদের বচন॥ ব রা আদি দেবগা নলা পুজে যাঁব। একমনে নিরন্তর চিভিবে ঠাহায়॥ कत्व-क्यरच । न। कतिरव डिखन। श्वाशंभार्श आक्रमन कति निर्शाकन॥ भेन्यिय एमन कति निकल्थ इस्पा। वाश्च छान दोन दाय नमर्शित हिशा॥ ক্রামা মুর্ত্তি হলে ক্রিবে দর্শন। মুক্তিদাতা সেই নিতা ত্রন্থ নির্জ্ঞন॥ ্রানজ্যোতি স্থানিবে হইবে প্রকাগ। ভবের যাজন। তাহে হহবে বিনাশ॥ মাযা মোহ আদি করি কিছু নাহি রবে।আর না আসিতে তারে হবে এই ভবে॥ নিত্র হবে মনোবাঞ্জা দিদ্ধ মনস্থাম। জ্যোতিরূপে যাবে চলি সেই নিত্যধাম॥ शतिश्व क्रिकार्य क्रिया स्त्रेग। यहार्ग। यहाराम न्य क्था **७८० अ**विश्रेण। যেই জন শুনে ইছ। একান্ত অন্তরে। দে জন পরম গতি লভ্যে অচিরে॥ ভক্তিভাবে যদি কেহ কবেন প্রবেণ। পাপতাপ শাপভ্য না রহে কখন॥ বেরুদের শক্ষর কন শক্ষরী স্তুন। কহিলাম মেই স্ব ওছে, ঋষিগণ।। যেই ব্রদা তিনি হরি তিনি ত্রিলোচন।তিনি ক্রদু তিনি কালী তিনি নিতাধন॥ তিনি সুধাঁ তিনি এহ তিনি শশগর। তিনি দিব। তিনি নিশ। বিশের ঈশর॥ গুণভেদে মুর্ভিভেদে নানারপ ধরি। করিছেন ভবলীলা ভবের কাণ্ডারী॥ তাই বলি শুন শুন ওহে ঋষিগণ। জীবের অবস্থা হুদে করহ মরণ। নিংতি ভাবিয়া দেখ আপন অন্তরে। তবে ত লভিবে জ্ঞান হৃদযে অচিরে॥ গ্রাহা হলে আর নাহি থাকিবে বাননা।অন্তরে অন্তরে সদ। পৃথিবে কামনা॥ ধর্মকথা পুণাবতী পুণাের আকর। যেই জন শুনে দেই অতি সাধুনর॥

## পঞ্চত্বারিৎশ অ্ধার।

নিয়তি ও অবস্থা। সনংকুমার উবাচ।

শৃণুধ্বং মুনয়ঃ সর্ব্ধে নিয়তিং পরমাং শুভাং।
গোপ্যাং গোপ্যতরাং চৈব কীর্দ্ধিতাং বিবুধৈরিতি॥

এতেক বচন শুনি যত ঋষিগণ। মিষ্টভাবে বিধিসতে ক্ৰেন তখন। কি কহিলে মহামতি নিয়তি-বারতা। বর্ণন করহ আর অবস্থার কথা॥ কিরুপে মানবগণ লভয়ে জনম। বাল্যাদি অবস্থা তার করহ কীর্ত্তন॥ ঋষিদের বাকা শুনি বিধির তন্য়। কহিলেন শুন শুন ওছে ঋবিচয়॥ , জিজ্ঞানিলে যেই কথা করিব প্রচার। অতীব মোহন কথা অতি চমৎকার॥ ু এমন মোহন কথা কি আছে জগতে। পরম গোপন ইহা কছে দর্কমতে॥ ' নির্ঞ্জন ত্রন্ধ যিনি নিতা স্নাতন। অনন্ত অনাদি যিনি তিনি নারায়ণ॥ তেজোময় শুদ্ধ তিনি তিনি জ্যোতির্মায়।চরাচরে ব্যাপ্ত তিনি তিনি সর্বাময়॥ ় মায়া নাই মোহ নাই নাহি তাঁর আদি । সমভাবে সর্ক্তানে আছে নিরবিধ॥ নিগুণ সন্তণ তিনি গুণের আধার। কখন সাকার তিনি কভু নিরাকার॥ ৃ তিনি জেলা তিনি বিঞু তিনি মহেশ্র । তিন গুণে ভিন্ন ভিন্ন তিন কলেবর॥ ্ বিষ্ণুরূপে বিশ্বধামে করেন পালন। ত্রন্ধরূপে সকলেরে করিছে সূজন। রুদ্ররূপে সেই ব্রহ্ম করেন সংহার। মূর্ত্তিভেদে গুণভেদে তিন অবতার॥ প্রলয় সময়ে সব হয়ে যায় করে। জলে মগ্ন বিশ্বসৃষ্টি হয় সমুদয়॥ প্রান্তে পুনরায় ত্রদারপ ধরে। সৃজন করেন এই বিশ্ব চরাচরে॥ পুনরায় সৃষ্টি হয় স্থাবর জন্ম। নদ নদী রক্ষ আর পর্বত কানন॥ যক্ষ রক্ষ গন্ধর্বাদি মানব কিন্নর। এনে ক্রেমে পূর্বব্যত হয় চরাচর॥ এইমতে কর্মফল ভুঞে জীবগণ। (যেমন করম ফল পাইবে 'তেমন। পুনঃপুন যাতায়াত করিছে দংসারে। বিধির লিখন বল কে খণ্ডিতে পারে॥ যিনি ব্রন্ধ নিত্য শুদ পূর্ণ সনাতন। ভুঞ্জিছেন কর্মফ্ল তিনি অনুক্ণ॥ ় এই যে হেরিছ বিশ স্থাপুঃখনয়। জীবের লীলার । ত্রুল ওহে মুনিচয়।। ক্ৰপাশে বদ্ধ হয়ে যত জীবগণ। নিজক্ত কৰ্মকৰ্ম ভুঞ্জে অমুক্ষণ।। যে জীব বেষন কর্ম আচরণ করে। হইবে সে রূপ তাইর ফল ভূগিবারে ॥ নিয়তি ইহারে কহে ভতে মুনিগণ! শাজের লিখন ইহা বেদের বচন !

নিয়তির হস্ত হতে নাহি পরিত্রাণ। এড়াতে না পারে তারে কোন ঘতিযান। নিজক্বত কর্মকল ভুগি জীবগণ। ধরাধামে পুনরায় করে আগুমন॥ কেং ওলাকেই লভাকেই রক হয়। কেই রক কেই গজ কেই হয় হয় ॥ স্থাবরত্ব পেয়ে কেহ নিজ কর্মললে। দারুণ যাতনা পায় সংসার-মাঝাবে॥, অশনি নিপাত ঝড় রু টি আদি করি। কত তুর্গটনা ঘটে তাদের উপরি॥ কেহ কেহ মূল ভাঙ্গি ধরায় পড়িয়া। স্থাবর জীবন ত্যজে যাতনা পাইয়া। এই দেখ কত তরু ওহে মুনিগণ। শোভিতেছে অগ্রভাগে কে করে গণন॥ ষ্ফ্রাপি প্রবল ঝড় উঠে একবার। সমূলে পড়িয়ে তবে হবে ছারখার॥ বজুপাত হয় যদি উপরে উহার। পুড়িয়। তখনি রক্ষ হবে ছার খার॥ দাবানল ঘটে যদি বনের ভিতর। দগ্ধীভূত হয়ে যাবে যত রুক্ষবর 🛭 এই ছেতু ওন যত মুনি মতিমান। নিয়তির হতে কভু নাহি পরিত্রাণ। মহ। উচ্চ রক্ষণা আকাশে উঠিয়া। স্পর্শিতেছে চন্দ্র সূর্যা জলদ লজিয়া॥ ঝড়বজ্র দাবানল হইলে ঘটন। হেরিতে হেরিতে সব হবে বিনাশন॥ কিন্তু এক : খাবলি শুন মুনিচয়। জীবিকা শকতি সবে অবস্থিত হয়॥ তাহার বিনাশ নাহি জানিবে কখন। এ দেহ ত্যজিয়া করে অন্মেতে গ্রমন॥ হয় ত পাদপদেহ ত্যজিয়া শকতি। পশুযোনিরূপে পুনঃ করে অবস্থিতি॥ পশুরূপে শরে *দেছ* এই চধরায়। বনে বনে নিরন্তর ঘুরিয়া বেড়ায়॥ ফল মূল ফাংস আরি করিয়া ভক্ষণ I কোনরূপে রাথে তারা আপন জীবন॥ তুর্মণ জাবের প্রভি করে সত্যাচার। ক্ষুধাতৃষ্ণাবশে সদা করে হাহাকার॥ ক্ষুধার দারুণ বেগনা সহে যখন॥ ছুর্বল জীবের প্রাণ বিনাশে তখন॥ দের পাপ তার দেহে হইয়ে সঞ্চার। পুনরায় কত কট দেয় আনিবার॥ অবশেষে তেয়াগিয়া সেই কলেবর । অপার যোনিতে গিয়া জ্যো ধরাতল। ক্ষুদ্র-যোনি হয়ে তারা সংসারেতে যায়।গলিল মৃত্তিকা খেযে জঠর পোরায়॥ এইরাপে কত কট্ট পেয়ে খনিবার। কর্মকলে সেই দেহ ত্যজে আপনার॥ আম্যপ্র হয়ে পরে ভূমিতলে আসি। মনের তুঃখেতে সদ। কাটে দিবানি শ।। স্থার কণিকামাত্র তারা নাহি পায়। নির্দার মানবগণ কত কষ্ট দেয়॥ দড়ীতে বান্ধিয়া তারা করে আকর্ষণ। কি কব কফের কথা ওছে মুনিগণ॥ দারুণ প্রছারে তারা জীবন হারুগায়। নতুবা মৃতের প্রায় পতিত ধরায়॥ কি করিবে নাহি শক্তি ক্ষুদ্র কলেবর। সবল প্রভুর ভায় মানব সকল॥ হীনবল পশু হয়ে কি করিতে পারে। মনের বিযাদ রাখে অন্তর ভিতরে॥ ভাকে কোথা ওছে হরি ওছে ক্লাম্য়। রক্ত রক্ষ বিষেশ আর নাহি সয়।।

তাহাদের ত্রখ চক্ষে করিলে দর্শন। সাধুর হৃদয় ফাটে পহে ঋষিগণ॥ এইরুপে নানা যোনি করি বিচরণ। তার পর নরজন্ম লভে সেই জন।। কিন্তু নাহি ঘটে তাহা অদুটে নবার। সেই জন লভে ফলে ভাগ্যফল যার॥ পতযোনি ধরি যদি কভু কোন জন।কোন রূপে কিছু করে পুণ্য উপার্জ্জন॥ তাহলে মানবজন্ম হইবে ভাহার। নতুবা যেমন কট সেই কট সার॥ তুর্ল সমুষ্য-জন্ম নাহিফ সংশ্য। তেমন উত্তম জন্ম সহজে কি হয়। পশুযোনি যারা যারা করি পরিহার। মনুষ্য-আকাবে আদে ধরণী-মাঝার॥ বিন্দুমাত্র মনস্ত্রখ তার। নাছি পায়। কত ছুঃখ সহে তার। কি কব কথায়॥ মীচকুলে জ্যে তারা দরিদ্র হইয়ে। সর্বক্ষণ পায় কট অর্থের লাগিয়ে॥ নিজকর্মকলে ক্রথে উচ্চপদ পায়। কত জন্ম পরে তারা উচ্চকুলে যায়। প্রথমতঃ ব্যাধরপে জন্মে তুরাচার। সে দেহ তাজিয়া পরে হয় চর্মকার॥ जनरेख हें छोन भरत कुछकात है । अर्थकात क्रिक्र (भर्ष क्रम नहरा। তন্ত্রবায় আদি করি কত কুলে জমে। কত কঞ্চ পায তারা না যায় কছন।। বোকো শোকে সদাকাল জীবন কাটার। দরিদ্র হইয়া কট এর্থের জ্বালায়।। কেহ কাণা কেহ খোঁড়া কেহ কাল হয়। একহন্ত পদহীন হয়ে কেহ রয়।। নিজক্ত কর্মফল ভুঞ্জিবার তরে। মানবর্মপেতে জীব জনমে সংসারে।। এইরাপে কত কফ পেয়ে নিরতর। থর্মের উণরে দৃকি যদি করে নর 11 তবে ত উন্নত ব'শে জনম ধরিবে। ন হবা কালের হাতে পুনশ্চ পড়িবে।

ঋষিগণ মন দিয়া ক্রছ প্রবণ। দেরপো মানবগণ থররে জনম।।
সহবাস ঘটে যবে রমণী-পুরুষে। জরারুতে নাশুক্র অমনি প্রবেশে॥
দেই শুক্রে জীবগণ হয় উৎপাদন। বিধির লিখন ইহা কে কবা খণ্ডন।।
জরায়ু-ভিতরে জাব করি অবস্থান। বিধির রুপায় ক্রমে হয় বর্দ্ধমান॥
শুক্র রক্ত্রু ছই ক্রমে হইয়া মিশ্রিত। ক্রমে ক্রমে জীবারুতি হয় সংগঠিত॥
পাঁচ দিন মধ্যে হয় কলল সঞ্চয়। পলল উৎপন্ন তায় অর্দ্ধমানে হয়॥
প্রাদেশ প্রমিত হয় পূর্ণমাস হলে। চৈত্রু সঞ্চার ক্রমে কিয়দিন হলে।।
জননী-উদরে জীব করি অবস্থিতি। দারণ যাতনা লভে নাহিক অবধি॥
সহিবারে নারি জীব জঠরমাতনা। ঘুরে ফিরে নড়ে চর্চুড় কে করে বর্ণনা॥
পুরুষ আক্রতি হয় ছই মাস পরে। হল্ডেচিক্ল দেখা দেয় তিনমাস গেলে॥
পদাদি যতেক অঙ্গ ক্রমে সব হয়। শাস্তের প্রমাণ ইহা নাহিক সংশয়॥
ক্রমে ক্রমে যবে হবে গত চারিমাস। অঙ্গ প্রতাঙ্গাদি শ্রান্ট হইবে প্রকাশ॥
পঞ্চ মাস গতে পরে হইবে বখন। ন্ধাদিয় চিয়্ল মৃত হইবে প্রকাশ॥

ষ্ঠমানে নখরেখা স্পতীভূত হয়। শাত্রের প্রমাণ ইছা বিধির নির্ণয়॥ সপ্তমাস যবে গত হয় মুনিগণ। রোমের যাবত চিহ্ন হয় রিরীকণ 🞉 তার পর অন্ট্রনাস সমাগত হলে। সম্পূর্ণ চৈত্ত পায় আসিয়া উদরে। নাভিমূত্রভোরে শিশু পোষ্যমান হয়। মূ এসিক্ত হয়ে সদা উদরেতে রয়। কটু অম আদি করি পদার্থনিকর। রদরপে যায় যাহা জননীজ**ঠর**॥ তাহাতে যাতনা পায় শিশু মহামতি। সক্ষণ চিত্তে গর্ভে করি অবস্থিতি॥ মনে মনে কত চিন্তা সমুদিত হয়। চিন্তি চিন্তি ক্রমে হয় কাতর-হাদয়॥ ভাবিয়া চিন্তিয়া শেবে এই খেদ করে।কি করিলে ওহে বিধি অধম উপরে॥ <sup>†</sup> নারকী অধম আমি অতি छুরাচার ।বিনা লোমে কত জীবে করেছি সংহার।। অভিযানে মত্ত হয়ে পূকাবারে আশ। করেছি ভীবের আমি কত নর্ধনাশু॥ বিনা পোষে কত জীবে করেছি সংহার।হরিয়া লয়েছি কত মণি মু**ক্তা হার॥** সবলেতে ধন ধান্ত করেছি হরণ। কত যে করেছি পাপ কে করে গণন। পরস্থা হরেছি কত কেবা সংখ্যা করে।বেদনা দিয়েছি কত জীবের অন্তবে॥ অনুতাপে দক্ এবে হতেছে অন্তর। জঠরযাতনা সয়ে আছি নিরন্তর॥ নিজ কর্মফলভোগ হতেছে এখন। দহিতেছি মনাগুণে এবে অনুক্রণ॥ কত শত যোনি আমি করি বিচরণ। মানব হইয়া দেহ ধরিত্ব এখন। তথাপি করমফল হতেছে ভূঞ্জিতে। জঠর্যাতনা আর না পারি সহিতে॥ জরায়ু-বেষ্টিত হয়ে জননীজঠরে। কত ক্ষ লভিতে ছ কে বুধিতে পারে॥ ব্যথার ব্যথিত আর নাহি কোন জন ৷ যেমন করম ফল পেতেছি তেমন ॥ দারুণ যাতনা প্রাণে নাহি সহে আর। রক্ষ রক্ষ প্রমেশ রক্ষ এইবার ॥... পুষেছিমু দারাপুত্র কত কট করি। এখন কোথায় তারা মোরে পরিহরি॥ নিজ নিজ কর্মকলে তাহারা এখন। যথায় যাহার স্থান করিল গমন॥ দারুণ পাতকা আমি থাকিয়া জঠরে। সহিতেছি কত কট্ট অন্তরে অতরে॥ দেহ ধরি নাহি স্থ জানিবু এবার। দেহী হয়ে ছুখমাত্র ভোগ অনিবার। পাপ হতে জন্মে দেহ জানিনু নি কুয়। দেহী হয়ে সদা হুঃখ সেই জন্ম হয়॥ দেহ ধরি কেহ যেন ধরণীমাঝারে। ভ্রমেতে পাতক নাছি কোনরূপে করে॥ পূর্বজন্মে দারাপুত্র করিতে পালন। কত যে করেছি পাপ কে করে গণন।। এখন জানিত্ব সেই পাতকের ফলে। দারুণ যাতনা পাই জননী-জঠরে।। জরায়তে বন্দা হয়ে আছি সর্বকণ। অবিরল অশ্রুণার। ইতেছে পতন।। মনানলে দহিক্তেছি কি কহিৰ আর। কারে বলি কে দেখিবে যাতনা আনার॥` দারুণ পাষও আমি অতি নরাধ্য। হতভাগ্য আর কেবা আছে মম সং।

জনাতরে পরতভ করি ছরশন। বিংলায় নিয়ত হতো সদয় দহন। এখন ছাহার ফল ভুগি অনিবার। জরায়ুতে বদ্ধ হরে করি হাহাকার।। পূর্বজন্মে একমনে অহন্ধার ভরে। দৌরাত্ম্য করেছি কত পরে উপরে। পেই পাপফলে আজি হইয়া একা চী। ভুঞ্জিতেছি কত কট জঠরেতে থাকি। এইরাপে গর্ভনধ্যে অবস্থান করি। নিজরুত কর্মকল মনে মনে মারি।। **জঠর যাতনা নাশ** করিবার তরে। একমনে ডাকে সেই জগত-ঈশ্বরে।। কোথা হরি মুর-অরি এনো একবার। বিষম সক্ষট হতে রক্ষ এইবার।। বিপদ উদ্ধারকারী তব নাম হরি। জীবের জীবন তুমি ভবের কাণ্ডারী।। কিবা রক্ষ কিবা যক্ষ কিবা সুরগণ। সর্বক্ষণ চিত্তে হলে তোমার চরণ।। এইরূপে থাকি শিশু জননীজঠরে। কার্যনে তাকে সেই বিশের ঈশ্বরে।। প্রদাব সময় যাবে উপনীত হয়। বিধির অপূর্বব লীলা ওন মুনিচয়।। জন্মবায়ুবশে শিশু মহাকফ পায়। কাতর হৃদয় দদা যাহতে ধরায়।। পুনরার কর্মপাশে বন্দীভূত হবে। বিধির লিখন বল কে আর খণ্ডাবে ॥ জননীরে বহু ক্রেশ করিয়া অর্পণ। যোনিমার্গ দিয়া শিশু হয় নিঃসর্প।। অতি কটে যোনিমার্গে বাহির হইলে। বহিব্রায় স্পর্শ হয় তাহার শরীরে।। তাহাতে গজীব রহে জীবের জীবন। পূর্বকথা বায় ভুলে অমনি তখন।। কোখা শোক কোথা হুঃখ কিছু নাহি রয়।মায়।ব শ বিমোহিত সেই শিশু হয়। বিষম বিপদে জীব পড়ে পুনর্কার। ভবের গতিই এই কিবা বলি আর।। জুমিষ্ঠ মইয়া শিশু জঠর হইতে। দিন দিন থাকে শশী সমান বাড়িতে।। তথন তাহার কিছু নাহি থাকে জ্ঞান। কিবা ধর্ম কিবা কর্ম পাপ অনুষ্ঠান।। সম্মুখেতে পায় যাহ। তাহাই ধরিয়া। নির্ভয় হৃদয়ে দেয় বদনে পূরিয়া।। কিবা মল কিব। মূত্র কিবা ভুজক্ষ। কিবা ভেক যাহা কিছু করে দরশন।। নির্ভন্নে দে দব ধরি মুখে পূরি দেয় ।যাহা কিছু দেখে তাহা ধরিবারে যার॥ মল মূত্র কিছু বোধ নাহি থাকে তার। নিজ মূত্র নিজ মল কর্যে আহার।। কভ রোগ কত পীড়া তাহার জনমে। তথাপি করয়ে ক্রীড়া আনন্দিওমনে।। আধ্যান্থিক রোগে কভু বহু কট পার। আধিভে)তিকেতে কত বলা নাহি খায়॥ আধিদৈবিকেতে কট্ট লভয়ে কখন। কত কট্ট केंद्र মতে কে করে গণন । কিন্তু শিশু মূঢ়মতি বাক্য নাহি সরে । রোগের যাতর্ম। কভু প্রকাশিতে নারে।। যথন পিপাসা পায় কিম্বা কুধা হয়।রোদন করিয়া হয় কাতর-ছদয়॥ জননী তাহার ভাব করি দর্শন। অনুমানে সন্তার্নেরে করেন সান্ত্ন।। तालन (पृष्या माठा कति अनुमान: तारंगत क्षेत्र यथा करतन श्रमान।।

क्कुशाञ्कावरन घटव कत्रदश दंतापन। इक्ष कीत जापि पिया करत निवातन।। क्रिय क्रिय रम वन निख्त नतीता। अक भा छूरे भा कति हतन थीत भीता। তাহা দেখি মাহে মুগ্ধ যত জীবগণ। বলি হারি যাই বিধি তোমার লিখন ।। ব তখনো নাহিক হয় জ্ঞানের উদয়। নির্ভয়ে চলিয়া যার ষথা ইচছা হয়।। যাহা ইচ্ছা তাহা ধরি করয়ে ভোজন। ধূলা কাদা জল অঙ্গে দেয় অনুকৰ ।। ' মলমূত্র দেখি মুণা নাহি থাকে তার। আপন ইচ্ছায় তথা করয়ে বিহার।। ধুলায কাদায় দদা বিচরণ করি। শিশু সহ করে খেলা দিবা বিভাবরী॥ 🕏 শিশুগ্ণ সহ সদা মারামারি কবে। পরের অনিষ্ট করে নির্ভয় অন্তরে॥ জনক জননী শুনি এতেক বচন। প্রবোধ বচনে তারে রুঝান তখন॥ নিষেধ করিয়া কন মধুর বচনে। নাহি যেও বংস আর অন্তের ভবনে॥ শিক্ষার কারণ দেন গুরুর আগারে। ইচ্ছা নাহি করে শিশু বিদ্যা শিখিবারে। জনক জননী তাহে শিক্ষক যে আর । শিক্ষার কারণে তারে করেন প্র**হার** ॥ কাজে কাজে দেই শিশু সুখ নাহি পায় ।মনের বিষাদে শিশু জীবন কাটায়॥ এইরূপে ক্রমে ক্রমে শৈশব সময়। অতীত হইয়া হয় যেবৈন উদয়॥ যৌবনের ক্ষুর্ত্তি হয় তাহার শরীরে। শৈশবের ভাব লুপ্ত হয় একেবারে ॥ তথন অজ্ঞান আর শিশু নাহি রয়। যৌবন সহায়ে হয় জ্ঞানের উদয়॥ ভাগ্যবশে কেহ হয় অতি বিচক্ষণ। মূর্থ হয়ে ভবে কেহ করে বিচরণ॥ ক্রমে তার ক্ষন্ধে পড়ে নংসারের ভার। কাজে কাজে অর্থচিন্তা লাগে চমৎ-কার॥ অর্ণের কারণ ভ্রমে যথায় তথায়। অর্থ উপার্জ্জন হেতৃ কত কন্ট পায়॥ তদবধি তিম্তাকীট তাহার শরীরে। প্রবেশিয়া দেহ তার জ্বর জ্বর করে॥ বতুকটে যত ধন করে উপার্জ্জন। লালসা দিশুণ বাডে তাছার তখন॥ সুখের নাহিক লেশ চুখ নিরন্তর। ক্রমে ক্রমে হয় জীব ধনের ঈশ্বর॥ তস্করেতে পাছে তাহা করয়ে হরণ। ভাবিয়া নিয়ত তার ছির নহে মন॥ য়ত ধন বাড়ে তত ইচ্ছা বলবতী। তাহার হৃদরে চিন্তা বাড়ে নিরবধি॥ ধনের উপরি ধন করি উপার্জ্জন। অতুল ধনের পতি হইল তখন॥ তথাপি মনের সাধ নাহি মিটে তার। দিবানিশি ধন চিন্তা করে বার বার॥ ক্রমে গর্ব্ব হিংসা আসি সেই জনে ঘেরে। অহন্ধার আসি মত করে একে-বারে॥ জ্ঞানান্ধ হইয়া পড়ে দেই, মূঢ়জন । পরধনে লোভ তার জন্মে অনুক্রণ॥ পরনারী যদি কভু নয়নেতে পড়ে। কামমদে মত হয়ে অমনি শিহরে॥ ত্বণিত কুকর্ম কত করে নেই জন। বিষয় মানব দেহ বিষয় যৌবন॥ पिथिए पिथिए यात्र योजन मुमन्न। **वित्र फिन ममजादन किছू नाहि** त्रत्र॥

শ্র্মিত্র পৌত্র ক্রমে আর জাখে বহু জন। ক্রমে ক্রমে ক্র পোষ্য বার্চ্ছে অগণন ।
প্রবাণ সময় ক্রমে করে আগমন। তথাপি তিলেক স্থী নহে সেই জন। মনে ছিল পুত্রমুখ করি দরশন। সংসারের যত জালা হবে বিনাশন॥ छु वनुके वर्ग जाहा ना घाँटेन आता हरेन या जनायां नित्रस्त मात॥ হয় ত তাহার পুল্র পৌল আদি করি। কর্মবশে অকালেতে গেল যমপুরী॥ ছুর্ত্ত ফুতান্ত সবে করিল সংহার। ছুঃখের অবধি আর না রহিল তার॥ মনৈর সন্তাপে শেষে কাতর হইসা। করিতে লাগিল খেদ ঘড় বিলপিয়া॥ গৃহধর্ম আগে যদি হতো বিবেচনা। অন্তিমে না পেতে হতো ঈদুশ যাতনা॥ নিজের করম দোনে একনা ঘটিল। পাপের উচিত ফল বিধাতা অর্পিল। ष्यश्कर्य বহুধন করিরু নি শেষ। এখন যাতনা কত পেতেহি অশেষ॥ ব্ছদুরে আছে মম বন্ধু আদিগণ। কি বলে তাদের কাছে করিব গমন॥ ধন ধাতা শম গৃহে কিছুমাত্র নাই। উপীয় ভাবিষা কিছু স্থিব নাহি পাই॥ কত অথ কত ধেনুমম গৃহে ছিল। কালবশে পাপবশে নব কোথা গেল॥ . দারুণ দুর্গতি মম হবে এইবার। উপায় ভাবিয়া কিছু নাছি হেরি আর॥ ৰাৰ্দ্ধক্য অবস্থা মোর রুগ্ন কলেবর। উপযুক্ত পুত্রকটী গেল যম্বর॥ পুল শোকে মম পত্না অতি দুখনতি। তাহাতে তাহার ক্রোড়ে শিশুগুর অতি॥ অর্থ নাই কড়ি নাই চিন্তা নধ্যক্ষণ। কোথা যাব কি করিব ব্যাকুলিত মন।। কুবিকার্য্য হতকিছু ছিল সমুদয়। ম্য অত্যাচারে সল হলে গেণ ফর।। পুত্রগণ যে কয়টা আছ্যে জাবিত। অনাহারে কট পেয়ে মরিবে নিশ্চিত। বান্ধব কেহই নাহি নিকটে আমার। মম প্রতি নাহি বারে। রূপার সঞ্চার॥ দেশের নৃপতি যিনি ধর্মপরায়ণ। প্রতিকৃত্তিনি নোরে অভাব-কারণ॥ বিফল জীবন মম না হেরি উপায়। কি করিব নাহি স্থির যাইব কোথায়॥ আমার জীবনে ধিক্ধিক্শতবার। বিফল জীবন ধরি কিবা ফল আর॥ এইরপে বহু চিন্তা এবীণ বর্দে। বার্দ্ধক্য আদিরা ক্রমে শরীরে প্রবেশে॥ জরা আদি অঙ্গ ঘেরে শুক্লবর্ণ কেশ। পলিত গাযের মাংস কি বলি বিশৈষ॥ দস্তহীন, অন্ধপ্রায় প্রবণ-বিহীন। শব্যাগত ক্রমে তনু ক্রেমে হয় ক্ষীণ॥ অকের যতেক শোভা দব দূর হয়। এীবিহীন জড়পি🛊 দম হয়ে রয়॥ ইন্দ্রিয় দুর্বল হয় হেরিতে হেরিতে। বড়ংবড় শির উঠে 👘 । শরীরেতে॥ খাস কাস দেহে আসি প্রবেশে তখন। ইাটিতে শকতি আব্লী না রহে কখন॥ यित उपात योज कतिया निर्दत । वहक एक यात श्रूरे विवास अखन ॥ তাংহ এম বোধ করি ধরাতলে পড়ে। অরক্তর খালে যেন ছট কট করে॥

যখন সবল ছিল সৈই অভাজন। কভ কফে পুলুগণে করেছে পাল্ন॥ আজি সেই পুদ্রগণ অতি ছবাচার। ছব্বল পিতার, প্রতি করে অত্যাচার 🗷 বিরক্ত ছইয়া কত কটু কথা কয়। অবহেলা করে তার বাক্যসমুদর॥ मन। বলে রুড়ো পাপ কেন নাহি মরে। পাঠায়েছে বিধি এরে কি হেতু সংসারে॥ পুত্রের বচন শুনি হয়ে জ্বালাতন। মনের ছঃখেতে র্দ্ধ করয়ে রোদন ॥কোথ। যম নিরদয় এসো একবার।অধমেরে অবিলম্বে কর্ছ সংহার॥' णाङ्ग वहनवांग ना गटर পরাবে। युड़ाहेन करव शिया गमन खताना. এইরপে মুখে ছঃখ করে দর্বকণ। কিন্তু বাঞ্চা কিছু দিন ধরয়ে জীবন॥ মনে ভাবে যদি আমি ত্যজি কলেবর। পুত্রগণ অনাহারে মরিবে সকল। কিরুপে করিবে সবে অর্থ উপার্জ্জন। কাহার সমীপে গিয়া 'মাগিবেক ধন॥ প্রাণসমা প্রিয়তমা দাঁডাবে কোথায়া কি করিবে কোথা যাবে না পাবে উপায়া এইরপে কত চিন্তা করে রুদ্ধন। দেখিতে দেখিতে আদে স্মীপে শ্রমন 💵 ঘন ঘন শ্বাস বহে কথা নাহি সরে। মনের বাসনা যত মিশায় স্বস্তুরে॥ ভীষণ যমের দুহ নিকটেতে আনি ৷ য্য-সাজ্ঞা প্রতীক্ষিরা রহে দিবা**নিশি ॥** দেহের জ্বালায হির না রহি তথন। কণে বদে ফণে উঠে কখন রোদন॥ ছইফই করি বুড়। চারিদিকে চায়। দারুণ যাতনা পেয়ে বদন শুকায়॥ পিপাসায় ফাটে বুক চক্ষে বহে নীর। পান হেতু জল চাহে হইষা অস্থির॥ ঘন ঘন চাহে জল অতি ক্ষীণ স্বরে।কেবা জল দেয় তারে কেবা চাহে ফিরে॥ অবশ হইয়া পড়ে ক্রমে বাক্য হীন। জ্যোতিহীন হয় চকু ক্রমৈ তকু কীণ॥ হেরিতে না পারে কিছু দেই ব্লদ্জন। বিকট ক্লভান্তে শুপু হেরিবে তখন॥ মনেতে বাসনা কথা কছিবে স্বজনে। কিরুপে কহিবে কহ না সরে বদনে॥ জড়তা আসিয়া তার রসনা রোধিবে। মনের বাসনা তার মনেতে মিশাবে॥ নরন বহিরা জল পড়িবে তখন। তথাপি ধনের মায়া হইবে সর্বা। গৃহ পুত্র কোথা রৈল চিঙিয়া কাতর। তৈত্যবিহীন ক্রমে হবে। সই নর॥ ঘড় ঘড় গলাম্বর হইবে তখন। প্রাণপক্ষী দেহ ছাড়ি করিবে গমন॥ অনিত্য মুণিত দেহ বোঝামাত্র সার 1 সে দেহ পাইয়া দেহী করে অহঙ্কার ॥ শুনিলে সকল কথা ভহে ঋষিগণ। আর কি শুনিতে ৰাঞ্ছা বলহ এখন॥

## स्ट्रे हज् दिश्म अक्षांत्र।

(पराटि পরিণাম।

সনংক্রমার উবাচ।

করালবদনা খোরা বিকটা খোরচক্ষুনঃ। যমদৃতা সমায়ান্তি গতাসো চ শরীরিণি।।

এত ত্রনি ঋষিগণ প্রফুল্ল অন্তরে। জিজ্ঞাসা করেন পুনঃ সনত-কুমারে। তব মুখে শুনি সব লভিলাম জ্ঞান। এখন জিজ্ঞাসি যাহা বলহ ধীমান। দেহ অত্যে কিবা ঘটে করহ বর্ণন। দেই কথা শুনিবাবে অতি আকিঞ্চন। এত শুনি ধীরে ধীরে বিধির তনয়। কহিলেন শুন বলি ওহে মুনিচয়। পূর্বক্রপে দেহী দেহ দিলে বিসর্জ্জন। যমদূত আসে তথা অতি বিভীষণ। **ঘোর দৃশ্য সবে অতি বিকট আকার। নাহি দর। নাহি মারা কঠিন ব্যভার।** পাশেত্রে বান্ধিয়া জীবে করি আকর্ষণ। আনন্দে লইয়া যায় শমন-ভবন। কটু বাক্য কহে কত কে করে গণনা। দারুণ প্রহারে দেয় কঠিন যাতনা। যমপুরে প্রবেশিয়া নরকের কুপে। ফেলিয়া দারুণ কন্ট দের নানারূপে। যাতনা পাইয়া যদি উঠে দেই নর। বিশাল মুগুর মারে মস্তক উপর। তখন সহায়] বল কেবা হবে আর। যন্ত্রণা হেরিয়া ক্রপা জন্মিবে কাহার। একাকী আসিতে হয় এই ভ্ৰথামে। তেমতি একাকী যাবে শ্যনভ্ৰনে। সঙ্গে কেই নাহি যাবে ত্যজিলে জীবন। তার সহ ফলভোগী না হবে কখন। **এইরূপে অহরহ সংসার মাঝার। জন্মিতেছে মরিতেছে জীব অনিবার**। প্রত্যক্ষ দেখিয়া ফল যত জীবগণ। তিলার্দ্ধ তরেতে নহে সচেতন মন। তিমিরে আরত সদা হয়ে জীবচয়। ভবের বিচিত্র গতি না করে নির্ণয় দারুণ মায়ার জালে বন্দীভূত হয়ে। নিয়ত বিপথে ধায় ধরম ছাড়িয়ে মায়াবশে পড়ে জীব সংসারমাঝার। নরকভোগের ভোগী হয় মাত্র সার কি বলি অধিক আর তাপসনিকর। মায়াজাল না কাটিলৈ সকলি বিফল भाराज्यांन दिन्न कता नइक ना इया। भाराहि छु ३त प्यां विषदित इत्या। দে মায়াকাটিতে হলে চ।হি তত্ত্বজ্ঞান। ত্ননায়াদে পাবে চুত্তবে ভবের সন্ধান। যখন শরীরে হবে জ্ঞানের উদয়। আপনা আপনি মারী হয়ে যাবে লয়। অভঞ্ব শুন শুন ওছে ঋষিগ্ৰ। আপন্মঞ্চল বৃঞ্জির যেই জন সংশার কানন মাঝে দাবানল হতে। উদ্ধার পাইতে ইচ্ছা করে যার চিতে

তত্ত্বান প্রথমেতে করিবে অর্জ্জন। তবে ত পাইবে ত্রাণ্ সেই মহাজন॥ তব্জান যার হৃদে সমুদিত হয়। তাহার হৃদয়ে নাহি থাকে ভবভয়।। জ্ঞানবলে দেই জন পরিত্রাণ পায়। অভিমে পরমপদে দদানন্দে যায়॥ তত্ত্বজানহান যেই সংসারমাঝারে। মায়ামুগ্ধ বলে সবে পশুসম তারে। কত কাল কত যোনি করিয়। ভ্রমণ। অবশেষে ধরে জীব মানবজনম। তুর্শ ভ মান্ব জন্ম পেয়ে মূচ্মতি। ইথরে সদত যদি নাহি রহে ভক্তি॥ তার সম অভাজন কেবা আছে আর। প্রম বিমৃত সেই অজ্ঞান অসার K অধিক বলিব কিব। ওচে ঋষিগণ। মানব জীবন শুদু অশিব কারণ॥ নেত্রশাঝে বিরাজিছে দদত ঈথর। তথাপি তাহারে নাহি ভাবে মূঢ় নর॥ অজ্ঞান তিমিরে অন্ধ হরে অনিবার। মনে মনে ভারে নাহি ভাবে একবার॥ কাজে কাজে মহাকট পায় মূচ নর। ঘাতনা অংশ্য হয় দুর্গতি বিশুর। চিনিতে পারিত যদি জগত ঈশ্বরে। তবে কি ভবিত নর নিরয় মাঝারে॥ প্য-রক্তময় পেই করিয়া ধারণ। নদা অহস্কারে মন্ত রহে নরগণ। মনে মনে তারা নাহি ভাবে একবার। অন্তিমে সকল হবে সমূলে সংহার॥ দেহ অন্তে কিবা হবে যমের আগারোভ্রমে নাহি ভাবে কভু আপন অস্বরা। নরকের কথা নাহি করয়ে চিত্তন। পাপ পুণা সব যেন হয় বিষারণ। কারে পাণ বল। যায় মহাপাপ বলে। কিত্র নাহি বিবেচনা করয়ে অন্তরে॥ किव। धनो किवा मानो किवा छुःशी जन। झेश्रद मगो८ गरव मम पत्रभन॥ করম উচিত ফল ভুঞ্জিতে হইবে। কাহারো শক্তি নাহি তাহারে খণ্ডিবে॥ সত এব কি বলিব ওতে খাষিগা। হরহরিণদে সদা রাখিবেক মন॥

## गগুচত্বারিংশ অধ্যার।

মহাপাপাদি কণন।
সনংকুমার উবাচ।
নিবস্থোঁ) তথা বিষ্ণুঃ শক্তিশৈচব গজাননঃ।
এষাং ভেদো ন চৈবাস্তি ভেদক্লরকং অজেৎ।।

পুনশ্চ জিজ্ঞাদে যত তাপননিকর। শুন শুন বিধিমূত ওহে মুনিবর।।
পাপপুণ্য কথা তুমি বলিলে এখন। মহাপাপকথা এবে কৈলে উত্থাপন॥
ইন্ধিতে নামককথা করিলে বর্ণনা। অই সব শুনিবারে মোদের কামনা॥
ইতি পুর্বে সংক্ষেপ্তে,নর্ক বর্ণন। করিয়াছ স্বাপাশে ওহে মহাত্মন॥

বিস্তারিয়া সেই কথা কছ পুনর্কার। মহাপাপ কারে বলে ওহে গুণাগার॥ এত শুনি বিধিয়ত সুমধুর খরে। কহিতে লোগেন পুনঃ তাপদনিকরে॥ শুন শুন ঋষিগণ করিব বর্ণন। এক মনে শুদ্ধমনে শুন্হ শক্তি শিব সূর্য্য বিষ্ণু আর গজানন। ইহাদের পাঁচে তেদ নাহিক কখন॥ ইহাঁদের ভিন্ন বোধ করে যেই নর। ত্রন্দ্রাতী বলি সেই খ্যাত চরাচর॥ স্বমাতা বিমাতা আর গুরুর নন্দন। এসবে প্রভেদ জ্ঞান করে যেই জন। মেচ্ছগণে বিপ্র সম অনুভব যার! এক্ষঘাতী বলি সেই বিখ্যাত সংসার॥ আত্মা শক্তি ছুর্গা দেবী বিশ্বের জননী। সর্ব্ধদেবময়ী যিনি নিত্যা সনাতনী॥ তাঁরে নিন্দা করে ভবে যেই অভাজন। ত্রন্মহত্যাপাপী সেই শান্তের লিখন। পৃথিবী খনন করে অগুবাচা দিনে। ভক্তিযাত্র নাহি যার পিতৃ মাতৃ জনে॥ পুত্র দারা নাফি পালে করিয়া যতন। ত্রন্মহত্যাপাপী সেই শান্ত্রের বচন॥ বংশরকা হেতু যেই বিবাহ না করি। নিয়ত ভ্রমণ করে তীর্থে তীর্থে ঘুরি॥ শিবলিকে ভক্তিভাবে যেই নাহি পূজে। ব্রহ্মহত্যাপাপী সেই মানবসমাজৈ॥ ব্রন্ধঘাতী সুরাপায়ী হয় যেই জন। চৌর্যারুত্তি করি করে সংসার পালন। মহাপাপী বলি তারা বিদিত ধরায়। তাদের পাপের ফল বলা নাহি যায়। ব্রান্ধণের নিন্দা করে যেই অভাজন। রন্ধন করয়ে যেবা লইয়া বেতন। বেদাদি বিক্রয় করে উদরের তরে। ব্রহ্মঘাতী পাপী বলি খ্যাত চরাচরে॥ প্রলোভন প্রদর্শিয়া যেই তুরাচার। বিপ্রজনে লয়ে যায় সাপন আগার॥ অবশেষে প্রবঞ্চনা করে যেই জন। ত্রন্দ্রঘাতী পাপী সেই শাস্ত্রের বচন॥ জল হেতু গাভী যবে যায় সরোবরে। বাধা দেয় যেই জন পথের ভিতরে॥ অথবা ত্রাহ্মণ যবে স্নানের কারণ। জলাশয়ে ক্রতপদে করিছে গ্যন॥ তখন তাহারে বাধা দেয় যেই জন। ব্রন্ধহত্যাপাপী দেই শাস্ত্রের বচন॥ শাস্ত্র আদি নাহি জানি যেই হুরাচার। নানামতে তর্ক করে করি অহঙ্কার॥ বেদ্ববাতী পাপী তারে সকলেই কয়। শাস্ত্রের বচন ইহা কভু মিুখ্যা নয়। বিপ্রজনে নিন্দা করে যেই অভাজন। অহক্ষারে মত্ত হয়ে রহে অনুক্ষণ॥ শাব্রদ্বেষী হয়ে দদা মিথ্যা কথা কয়। ত্রন্ধবাতী পাপী সেই নাহিক সংশয়॥ আপনি পণ্ডিত বলি করে অভিমান। ধনগর্কে গর্কী হয়ে করে অবস্থান॥ দ্রশ্বাতী বলি সেই বিদিত ভূবনে। 'কহিলাম সত্যু সভ্য সবার সদনে॥ পরের স্থাধতে বাধা দেয় যেই জন। সদত অসত কাঁজ করে আচরণ। প্রত্যহ পরের দান গ্রহণের তরে। নিরত আছ্রেই পথ দরশন করে॥ ত্রসহত্যাপাণী তারা শাজের বচন। বিথির লিখন ইহা না হয় খণ্ডন।

এত বলি বিধিপুত ক্ষে পুনরায়। তন শুন খাষিগ্ৰ বলি স্বাকায়। দণ্ডাঘাতে গোতাড়না করে যেই জন।গরুকে উচ্ছিষ্ট দেয় করিতে ভোজন॥ বিপ্র হয়ে রুষোপরি আরোহিয়া যায়। রুষলীর অনু সুখে যেই জন খার। শত গাভী হত্যা কৈলে যেই পাপ হয়৷ ততোধিক পাপে লিপ হইবে মিশ্মা গরু প্রতি পদাথাত করে যেই জন। অগ্নিদেবে পদাথাতে করয়ে তাড়ন ॥ স্বান অত্তে পদ ধোত যেই নাহি করে। আহার করিতে যায় গৃহের ভিতরে 🛊 দিবাভাগে দুইবার করয়ে আহার। গোহত্যাপতকী তারা শাজের বিচার 🎉 বেই বিপ্র তিন সন্ধ্যা নাহি করে।তর্পণ না করে যেই পিতৃদেবতারে 🛊 গোহত্যাপাতকী তারা শান্তের বচন। পাপফলে নরকেতে করিবে গমন। বিপ্র-আজ্ঞা দেব-আজ্ঞা যেই নাহি পালে। জলে জীবে যায় লজ্ঞি লজ্জ্য অনলে॥ পুষ্প অন্ন নৈবেল্টাদি করয়ে লজ্ঞন। যেই জন মিথ্যা বাক্যে করে প্রতারণ ॥ দেবতা গুরুর নিন্দা শুনিয়া প্রবণে। উপবিষ্ট রছে তথা পুলকিত-মনে।। গোহত্যাপাপেতে লিগু হয় সেই নর। দেহাস্তে সে জন যায় নরক ভিতর । দেবমূর্ত্তি শুরুদেব কিন্তা বিপ্রজন। হেরিলে প্রণাম নাহি করে যেই জন! বিজ্ঞাণীরে বিজ্ঞাদান যেই নাহি করে।গোহত্যাপাতকী সেই খ্যাত চরা-চবে।। শূদ্র হয়ে বিপ্রপত্নী করয়ে হরণ। বিপ্র হয়ে শূদ্রা সহ কররে রমণ !! বিপ্র হযে যেই জন করে সুরাপান। রুষলী সঙ্গমে যার বিমোহিত প্রাণ।। বিমাত। গুরুর পত্নী কিন্তা গর্ভবতী। শাশুড়ী পুত্রের বধূ তনয়া যুবতী।। মাতার জননী কিম্বা আপন ভগিনী। ভ্রাত্বধূ পিতামহী আর মাতুলানী।। শিব্যকন্তা শিষ্যভগ্নী শিষ্যের বনিতা। সগর্ভা রমণী কিম্বা ভাতার ছহিতা।। -ইহাদের সংস্করতি করে যেই জন। এদ্মঘাতী গুরুঘাতী সেই অভাজন॥ 🕺 কুদ্বীপাক নরকেতে পড়ি দুরাচার। কত যে যাতনা পায় কি বলিব আর ॥ 🕏 শত্যুগ নরকেতে করি অবস্থিতি। চণ্ডাল হইয়া পুনঃ আসিবেক কিতি।। নারায়ণ সন্নিধানে গঙ্গার উপরে। কুরুক্তেত্র হরিপদে অথবা পুঞ্জরে।। ুং কাশীধামে ছরিদ্বারে সাগরসঙ্গমে। রন্দাবনে প্রভাসেতে ত্রিবেণী সঙ্গমে।। নৈমিঘকাননে কিয়া গোদাবরী তীরে। পরদত্ত দানগ্রহ যেই বিপ্র করে।। 🖟 গোহত্যা পাতক তার হইবে নিগ্য়। কুন্তীপাক নরকেতে শত যুগ রয়।। 🖑 দশুাঘাতে যদদূতে করয়ে তাওঁনা। হাহাকার করে তারা পাইয়া যাতনা।। ষেই দুষ্ট দুরাচার অবনীমাঝারে। সুরাপান করি বেখা সহিতে বিহরে।। মহাপাপে পাঁপী হয় সেই ছুরাচার। তপ্তক্ত নরকেতে ভ্রমে অনিবার।। বিপ্র হয়ে লোভবংশশুদ্রের জারারে। অন্ন কিয়া কোন দ্রব্য প্রতিগ্রহ করে।।

সুরাপান সম পাপ হইবে তাহার। বেদের নিখন ইহা শাস্তের বিচার।। কত যে থাতন। পায় ভবিয়া নিরয়ে। হাহাকার করে দদা সম্ভপ্ত হৃদয়ে।। वर्गकृति मम शाल याटर याटर रहा। তাহার বিশেষ কথা শুন ঋষিচয়।। চৌর্য্য রুত্তি মহাপাপ বিদিত ধরায়। নরকে পড়িয়া চোর কত কট্ট পায়।। ফল চুরি ফুল চুরি আর যে কন্তুরী। দ্ধি মধু দ্বত কিন্ধা তুগা লয় হরি।। রুদ্রাক অথবা ধান্য করয়ে হর।। স্বর্ণচুরি সম পাপে লিগু সেই জন।। তাম দীসা কাঁসা আদি ধাতু চুরি করে। পরিবাস কপূরাদি অপরের হরে॥ স্বর্ণচুরি সম পাপ হইবে তাহার। শাস্ত্রের বচন ইহা কহিলাম সার॥ থেই জন চুরি করে সুগন্ধি চন্দন। আপন কন্যার সহ করয়ে রমণ॥ খুরাপায়ী নারী লয়ে রতিরঙ্গ করে। সহোদরা পুত্রবণু লইয়া বিহরে॥ রজ্বলা নারী লয়ে করয়ে রমণ। বিশ্বস্ত বন্ধুর নারী করথে হরণ। আতৃভার্য্যা লয়ে সদা আনন্দে বিহরে। অসিকুও নরকেতে সেই জন পড়ে॥ **ষ্র্বটোর সম পাপী সেই** ছুরাটার। শত যুগ ন্বকেতে করে হাছাকার॥ নরকে পড়িয়া সেই এই মহাপাপে। অবিরত পায় কট মনের সন্তাপে॥ তাহার পাপে। শাস্তি কে বলিতে পারে। অনও সহত্র মুখে বলিবারে নারে॥ শত শত প্রায়শ্চিত্ত করে সেই জন। তথাপি তাহার পাপ না হয় মোচন॥ শ্দের সহিতে থাকি যেই বিপ্রবর। শক্ষরের করে পূজা হবিষ-অন্তর॥ কিসা শাল্যামশিলা করেরে পূজন। তুন্তর নরকে তার হইবে পতন॥ দারণ যাতনা পার শমনের পুরে। হাহাকার করে দদা পড়িয়া ফাপরে। চল্র সূর্য্য যত দিন ধরাধামে রয়। তাবত তাহার বাদ নরকেতে হয়॥ এইরপে হর কিম্বা হরিকে পূজিলে। নাকেতে পড়ে দিজ লয়ে নিজকুলে॥ প্রালয় অবধি থাকে নিরয় ভিতর। কহিলাম নত্য সত্য সবার গোচর॥ শ্দেজনে শিণ্শিক করিলে স্পর্শন। অশুচি হইবে তাহা শাদ্রের বচন॥ যক্তপি তাহার পূজা করে দ্বিজবরে। আকম্প অবধি রবে নরক-ভিত্রে॥ যেই বিপ্র পরহিংসা পরছেষ করে। শুক্র নারী লয়ে সদা সুখেতে বিহরে॥ নিরত ভোজন বরে শৃদ্রের ওদন। বিশ্বাস্থাতকী কাজ কৈরে যেই জন॥ মহাপাপী বলি সেই খ্যাত চরাচর। কোনরূপে সে জনেরানাহিক উদ্ধার॥ কোনকালে মুক্তিপদ সেই নাহি পায়। মহাপাণী বলি সেই বিদিত ধরায়॥ বেদনিন্দা বিষ্ণুনিন্দা করে যেই জন। গুরুনিন্দা দেবনিন্দা করে সর্বক্ষণ॥ তাহাদের পরিত্রাণ নাহি কোন কালে। দার্ণ য়াতনা পায়, নরক-মাঝারে॥ মহাপাপা বলি তার। খ্যাত চরাচর । বলিবাম শান্তকথা স্বার গোচর।

সংকার্য্য বিরোধী হয় যেই ছুরাচার। কোনকালে সে জনের নাহিক উদ্ধার॥ व्यक्त भारत अक्षा नाहि करत्र यहेकन। महाभाभी जात्त करह भारत्रत वहना। শমনের কাছে দেই মহাকউ পায়। নরক ভোগের পর ধরাতলে যায়॥ দেবনিনা গুরুনিনা করে যেই জন। তাহার গৃহেতে অন্ন করিলে ভোজ**ন** 🖟 মহাপাপে লিপ্ত হয় সেই মূদ্মতি। তপ্তকুও নরকেতে থাকে নিরবধি॥ প্রায়ন্চিতে শান্তি নাহি হয় মহাপাপ। নরকে পড়িয়া পাণী পায় মনস্তাপ ॥ যেই বিপ্র বৌদ্ধগৃহে করয়ে ভোজন। তাহার দুর্গতি হয় শাস্ত্রের বচন ॥ মহাপাপে লিপ্ত হয় দেই হীনাচার। তিন কুল সহ যায় নরকমাঝার॥ ব্রহ্মত্যা সুরাপান কবে যেই জন। বেদবিক্রী করি করে আত্মার পোষণ॥ মহাপাপে লিপ্ত হয় সেই ছুরাচার। দারুণ নরক ভোগ করে অনিবার॥ ঘন ঘন যমদূত করয়ে প্রহার। বিষম যন্ত্রণা পেয়ে করে হাছাকার। কোটি কম্প করে বাস তাহার ভিভরে। রক্ষ্ণ বলি সদা কান্দে উচ্চৈঃশ্বরে॥ কোটি কম্প কাল দেই নরকেতে রয়। অবশেষে ক্রমি হয়ে থাকে নীচাশয়॥ শত্যুগ ক্ষমিরপে করি অবস্থিতি। ক্ষুধাবশে মল মূত্র ভুঞ্জে নিরব্ধি॥ অবশেষে ধরাতলে বনের ভিতরে। ভুজঙ্গ আকার ধরি বিচরণ করে॥ কল্পকাল দর্পরপী হয়ে দেই জন। কত যে যাতনা পায় কে করে বর্ণন ॥ পরিশেবে পশু হয়ে জন্মে তুরাচার। সহস্র বংগর ধরি ভ্রমে অনিবার॥ নানারপে নানা কটে সহিয়া সহিযা। মানব-জনম লয় ধরাতলে গিয়া॥ মেচ্ছুকুলে জন্ম ধরে দেই ছুরাচার। নিজ কর্মফলে ছুঃখ পায় অনিবার॥ সপু জন্ম এইরপে ফত কন্ট পেয়ে। অবশেষে ধরে জন্ম গোপের আলয়ে॥ তথা যদি সদা শুদ্ধ একান্ত অন্তরে। দ্বিজসেবা দেবসেবা আচরণ করে। তবেত গোপের দেহ করি বিসর্জ্জন। দরিক্র বিপ্রের কুলে লভয়ে জনম।। তুঃখ শোক নানা কট পায় তুরাচার। অন্নলাগি দারে দারে ভ্রমে অনিবার॥ তবেত তাহার পাপ হয় বিমোচন। শাস্ত্রের বচন ইহা বেঁদের লিখন॥ বিপ্র • হয়ে ঘদি পুনঃ পাপাচার করে। ভীষণ নরক মধ্যে পুনর্কার পড়ে॥ পুনর্কার বহু কট পায় অনিবার। সহজে তাহার আর নাহিক উদ্ধার॥ পুনর্বার পূর্বমত নরক ভুগিয়া। গর্দ্ধভ রূপেতে জন্মে ধরাতলে গিরা॥ দশ জন্ম খররূপে দেহপাত করি। কুকুর হইয়া জন্মে সেই পাপাচারী 🖡 বিষ্ঠামূত্র নিরন্তর করিয়া ভোজন। মাঠে ঘাটে থাকি করে জীবন রক্ষণ॥ पण जम्म धहेकरूप शांकि छ्तानीत। म्कती छेपरत जम धरत पून्सीत॥ মহাক্ট পায় পাপী শ্কর হইয়া। মল মুত্র সদা খায় ঘ্রিয়া ঘ্রিয়া॥

देशकेषय (महेक्रटर्ग केतिया योशना यृतिक क्रट्शटेंड स्माटन सहस्य कन्य। শত বর্ষ মহাকট পার নিরন্তর। ভুজদ-উদরে পাপী জয়ে তদন্তর॥ ৰারো জন্ম নর্পদেহ ধরি ছুরাচার। কত কন্ট পায তাহা কি বলিব আর॥ অবশেষে শুদ্রবরে মানব-আলয়ে। জন্মগ্রহ করে পাপী মহাছঃখী হয়ে॥ হীন ঘরে জন্মি কত মহাকট পায়। তাহার তুর্দশা হেরি বুক ফেটে যায়॥ অবশেষে বৈশাকুলে লভিয়া জনম। মহাত খে মহাকটে কাটায় জীবন॥ দুইবার এইরূপে গ্রায়াত করি। অবশেষে জন্মে আদি ক্ষত্রদেহ ধরি॥ মহাবল মহামত হয়ে নিরম্ভর। অস্ত্র শস্ত্র লযে ভ্রমে দেশ দেশান্তর॥ পরের স্বর্খের বাধা করে ছুরাচার। মহাপার্পে পরিলিপ্ত হয় পুনর্ফার॥ , **মরজক সূচে শে**দে পশুমোনি পায়। পশু হবে বনে বনে ঘূরিয়া বেড়ায়॥ পশু দেহ তেয়াগিয়া চণ্ডালের ঘরে। পুনর্বার নররূপে জয়ে ধরাতলে॥ সপ্ত জন্ম এইরূপে নানা কট পায়। পাপের উচিত ফল কে বল খণ্ডায়॥ ষস্তুপি চণ্ডাল হয়ে ধর্মে থাকে মন। ছিজের ঘরেতে পুন লভিবে জনম॥ বিপ্রকুলে জন্ম ধরি সুখ নাহি পায়। ছুঃখে শোকে সেই জন জীবন কাটায়॥ বিষম ব্যাধিতে শেষে হয় জ্বালাতন । অহ নিশি অঞ্বারি করে বিসর্জ্ঞন॥ কাজে কাজে পরদত্ত দানগ্রহ করে। পুনবায় পাপে ভোবে নিজকর্মফলে॥ প্রতিগ্রহজন্য পাপ নহে খণ্ডিবার। নিরয়ে পতন তার হয় পুন কার॥ অধিক কি কহি আগর ওহে মুনিগণ। পরশুভদ্বেধী দদা হয় যেই জন॥ পারের বিভব দেখি ইর্ব্যা করি মরে। নিয়ত অন্থা যার অন্তর মাঝারে॥ রৌরব নরকে পড়ে দেই ছুরজন। মহাপাপী বলে তারে শাস্ত্রের বচন॥ বহুদিন নরকেতে করি অৱস্থান। কত যে তুর্গতি পায় কে করে সন্ধান॥ অবশেষে ধরাধামে চণ্ডালের ক্রে। কুরূপী কুনখী হযে জন্ম এছ করে॥ দেহ ত্যজি যায় যবে শমন-আলয়। বিধিমতে ঘমদও সহিবারে হয়॥ দণ্ডের প্রহার্করে শমন-কিঙ্কর। শূল অসি মারে কেহ কেহ বা মুদার॥ কখন টানিয়া ফেলে স্থলন্ত অঙ্গারে। কখন ফেলিয়া দেয় তপ্ত তৈলোপরে॥ এইরপে কত কট পায় তুরাচার। অসহ্য যাতনা পেয়ে করে হাহাকার॥ खाक्तर् जनरल किया जात (धनुशर् । निका करत (यह जन निज भरत मरन ॥ অথবা আহার নাহি দেয় যেই জন। কুক্র-যোনিতে কুই ধরিবে জনম॥ বছ কট পাবে সেই ভূমি বনে বনে। দেহাতে চলিয়া যাবৈ শমন-সদনে॥ তথার নরকভোগ হবে বহুতর। দারুণ যাত্না দিবে যুমের কিল্পর॥ শতমূগ প্রাক্তে করিয়া বসতি। কম্পকালে বিষ্ঠাক্তে রবে নিরবণি॥

চণ্ডাল হিয়া শেষে ধরিবে জনন। দরিদ্র হইয়া কট পাবে য়য়্রিল্রালি দেহ অতে দেই জন নিজ কর্মদোবে। দারণ নিরয়গানী হবে অবলে দিবি বিচার্থে কলপকাল সেই জন রয়। মল মৃত্র খেযে সদা কত কট নরক ভোগের গর ধবা তলে আনি। ব্যায়রপে বনে বনে ভ্রমে দিবারি ভিন জন্ম এইরপ ব্যায়ের আকারে। বিদম যাতনা লভে বনে বনে ঘূর্টে পুনর্কার নরকেতে পড়ি সেই জন। দারণ হাতনা পেযে হবে জালাতির বলিলাম। দব কথা শাস্তের নির্গ্রাহিত করে মেই জন। হবে রুলি হবে ক্রিল্রাহিত করে ক্রিল্রাহিত করে স্বাহিত করে সেই জন। হবে রুলি করে ক্রিল্রাহিত করে ক্রিল্রাহি

পরনিন্দা পর্য়ানি করে যেই জন। নদা নবে উক্তি করে কঠোর বঁচনা দাতা জনে দান নিতে করে নিবাংগ। তাহাদের পাপফল শুন মুদিস্ণ 🖟 দেহাতে তাহারে বান্ধি যম অভুচর। টানিরা নহবা যায় ধমের গোচর। যমের আদেশে তথা বম্দু তগ্য স্তপ্ত লোকের দতে মারে অনুকর্ম ভীক্ষুম্থ ফচি বিদ্য লোচনেতে করে। জ্বালাতে কাত্র হবে কান্দে উচ্চৈ: স্বরে কোধা ই'ত কাক আনি নমের আজ্ঞান। চক্তে নমনদ্ব উপাড়িয়া খাম 🕍 কুকুর আমেন। কত এতি বিভাগন। ঘন ধন পাপা-অঙ্গে করুরে দংশন। ক্রফাবর্ণ রাভাচন্দ্র যাল্লাযা। বাভ যে বাভনা দেল কেবা বল করে। দানে বাতনা পেৰে হোপদীগণ। বক্ষ রক্ষ বলি সদা কর**েয় রোদন**  🛣 নিতের ক্ষম লোগ ভাবিতা ভতরে। ঘন ঘন দক্ষেপাপী মনাগুণে পুড়ে 🕍 भारापत भूक्ष यनि एय नामन। भारान अनुबं राज एय विनादन में পরদ্ব্য চুরি করে যেই ছুমাচার। তাদের Æর্গতি বল কি ব**লিব আর**া 🖟 যমের কিন্ধর থ । ভাষণ কাকার। খোরাব তালের বাদ্ধি শূন্যে অনিবার । খ্রাতে খ্রাতে ভারে দাকণ বেগেতে। **দরকে** বেলিয়া লাগে চরণে **দলিতে** 💥 থতও লোহের ৮০ কররে প্রহার। যাতনা পান্যা পাপী করে হছাকার॥ এরপে হাজার বর্ম মহাক্ট দিয়া। তার প্রমণ্ড পাণীরে তুলিয়া॥ পুনরার বাজে শিল। গনেতে তাহার। খোণিত-নরক্ষাবে ফেলে পুনর্কার॥ সাত্রনা বিশ্বে তার হাদর মাঝারে। শত্যুগ পান্ন ক্ট নরক ভিতরে ॥ অবশেবে কিছুকাল অপর নরকে। ফেলিয়া যাত্রা দেয় পাতকীদিগকে । প্রধান চুরাশী বৃত্ত আছে নিরূপণ্। তাহাতে পাপের ভোগ করে পাপীগণা। ব অবশেষে কর্মফলে নরদেহ ধরি। নীচকুলে জন্ম গিয়া মান্যের পুরী। আমিষ খাইয়া করে জীবন ধারণ। কত কট্ট পায় তাহা কে করে বর্ণন। अन अमिश्री अने निया मन्। लाकार्गत इकि यपि एवस कान कम।। সেই রক্তি যদি কেই লোভে হরি লয়। তাহে পড়ে দ্বিজচক্ষে অঞ্চৰাবিচয়। Spile The

্রী ক্রমুজল বত কোঁটা পড়ে "ধরাতলে। তত যুগ রহে পাপা নরক-ভিতরে। প্রিজ্বলিত অগ্নিকুতে হয়ে নিপতন। দিবানিশি দক্ষ হয় সেই পাপীজন।। ্রুবেশেষে মলকুত্তে পড়ি ছুর।চার। মল মূত্র খেরে দদা করে হাহাকার।। **ভারুণ যন্ত্রণা** দেয় যমের কিঙ্কর। আর্তনাদ করি কান্দে পাতকী-নিকর। ধে দশা তাহার ১য় কি বলিব আর। হীনকুলে জন্মে আুসি সেই গুরাচার।। চ্ছুতলে মানবদেহ করিয়া ধারা। কত কট পায় তাহা কে করে বর্ণন। श्वभा करत निमा करत यानव-जयारक। यरनत वितार्श घरव कानरनत यारवा त क्षरे पूर्वे श्रीय वृक्ति कत्राय इत्। পरत्र यानत श्रीन करत यरे जन॥ স্মৃদ্ধকার নরকেতে পড়ি ছুরাচার। বহুযুগ তথা থাকি করে হাহাকার॥ भेल মূত্র ক্লমি আদি ভক্ষণ করিবে। কোনগ্রপে থাকে পাপী যমদও সয়ে॥ অবশেষে দর্পরূপে জন্ম দাতবার। পঞ্চ জন্ম কাকরূপী হয তুরাচার॥ ্**ভবে ভ তা**হার পাপ হয় বিমোচন। শাস্তের বচন হহা ওহে মুনিগণ॥ বিপ্রধন হরে যেই করিয়া বঞ্চনা। গুরুধন যেবা লয় করিয়া ছলনা॥ ক্ষতমতা মহাপাপে মজে সেই জন। ভাষণ নরককুতে হয় নিপতন॥ ভাহার পাপের ফল না পারি বর্ণিতে। বহু মুগ রহে দেই নরক মাঝেতে॥ ্**নরক- ভো**গের পর সেই তুরাচার। শূদ্রকলে ধরাতলে জ্যো সাত্রার॥ •**সাগুজন্ম নেত্রহীন হয় দেই** জন। কত যে যাতনা পায় কে কিরে বর্ণন॥ विषि मेथ জন্ম সেই পাপ নাহি করে। তবে মুক্তি পেযে জন্ম সজ্জনের ঘরে॥ **খাড় পিতৃজনে যেবা শ্রদ্ধা ন্যহি করে। পিতৃমাতৃভক্তি নাহি যাহার অন্তরে॥** নীরীর বশতাপর যেই ছুরাচার। কত যে যাতনা পাম কি কহিব আর॥ ধরাতলে চন্দ্র-সূর্য্য থাকে যত দিন। দারুণ অগ্নির তাপে পুড়ে হয় খাণ॥ অবশেষে কচিত্র ধরি ছুরাচার। কান্দিতে কান্দিতে যান ধরণী-মাঝার॥ সপ্ত জন্ম এইরূপে করিয়া ভ্রমণ। তবে ত তাহার পাপ হয় বিমোচন। তুশসী তরুরে যেবা করে অনাদর। অথথ ছেদন করে হরিব অন্তর॥ মিখ্যা সাক্ষ্য দেয় যেই বিচার-আলযে। ধনলোভে মিথ্যা কহে হরিষ-ছাদয়ে॥ **মহাপাপে লিগু হ**য় সেই তুরাচার। পাপের ফলেতে যায় নিরয়-মাঝরে॥ < নারকে পাড়িয়া সদা হয় জ্বালাতন। ভীবণ রশ্চিক তাইর করষে দংশন॥ মলমূত্র পূজ আদি খায় অনিবার। জালায় অন্থির হর্ষে করে হাছাকার॥ ক্কশাস হরে শেষে যায় ধরাতলে। কাননে কাননে ফেফ্লেপাদপের ডালে। সপ্ত জন্ম এইরপে ভুগি ছুরাচার। তবে ত মানবদের ধরে পুনর্মার । कामवृत्न खक्तनात्री इतत त्यहे अन। माञ्गामी शांश कांत्र भारखत वहन में

পাপিষ্ঠ ছুর্জ্জন সেই অকি ছুরাচার। প্রায়ন্চিত নাছি তার শান্তের বিচার॥ অথবা বিশ্রের পত্নী থৈবা হিরি লয়। জননীহরণ পাপ তাহার নিক্ষা ভিগিনী তনয়া পৌত্রী করিলে হরণ। মহাপাপে লিগু হয় দেই ছৢরজন 🞉 মহাপাপে হয় লিগু সেই মূচমতি। সেহাত্তে নরকমাঝে হয় তার গতি 🎼 যমদূত দের তারে বিষম যাতনা। কত কট পাব তাহ। কে করে বর্ণনা 🞉 মুষল আঘাত করে মন্তক উপরে। পৃষ্ঠোপরে লোহদও কেহ কেহ মারে মুখমধ্যে তপ্ত লৌহ করায়ে প্রবেশ। কালদূত দেয তারে যাতনা অশেব 📸 অর্থলোঁভে ক্যাবিক্রী করে যেই জন। তাহার পাপের শাস্তি ওন ঋষিগ্ৰ 🎼 🖔 ধরণী তাহার ভার সন্বারে নারে। ঘন ঘন কাঁপে দেবী অতি ক**ইভরে** যে দেশে বস্তি করে সেই তুরাচার। একেবারে সেই দেশ হয় ছার্থার 🌬 🚎 অন্তকালে কুন্তাপাকে পড়ে দেই জন। দারুণ যাতন। দেয় যমদূতগণ 🛊 🖰 সতত রোদন করে নরকে পড়িয়া। যমদতে দেশ ফেলি অগ্নিতে ঠেলিয়া 🏗 বহ্নিভাপে সভাপিত হয়ে ছুবাচার। অহনিশি মনোছঃথে হাহাকার॥ প্রলয় অবপি বহি নরক ভিতরে। অশেন যাতনা পায কালের প্রহারে। চৌর্যারতি করে যেই দল সর্বক্ষণ। অন্তিমে নরকে হয তাহার পতন॥ উদূখলে তারে চুর্ণ করে মহাকাল। কফকুতে পড়ি পাপী রহে বহু কাল। শত বর্ষ সেই কুত্তি বত ক্ষ দিযে। স্তুত্র পাষাণে কাল কেলেন ঠেলিয়া॥ বহু যুগ তাহে কট পেয়ে পাপীগণ। রক্ষ রক্ষ বলি দুদা কর্ষে রোদন॥ সম্চিত ফল ভোগে করম যেমন। বিধির লিখন বল কে করে খওন। অবশেষে পাপীগণে বান্ধিয়া গলেতে। একে একে দ্ৰুত কৈলে যুমদূতে॥ এরপে শতেক যুগ নরক ভিতর ! পাপীগণ থাকি পায় যাতনা বিশুর॥ ত্বতপ্ত লৌহের দত্তে কর্মে প্রহার । যাতনা পাইযা,তাহে করে হাহাকার ॥ কোন কোন কালদূত সাঁড়াণি লইয়া। পাপীদের দস্তপংক্তি ফেলেউপাড়িয়া॥ এইরূপে কত কট দেয় দূতগণ। হৃদি কাঁপে দেহ কাঁপে করিলে এবণ। যে কফ শমনপুরে পায় পাপীগণ ৷ তেনিলে জীবের ছদি কাঁপে নর্বকণ॥ পরনারী প্রতি যারা লোভী অতিশয়। মজাতে পরের কুল উৎসাহী হৃদয় 🛭 অন্তিমে তাহার। গিয়া শমন গোচর। পাপের উচিত ফল পায় বছতর॥ উত্তপ্ত লৌহের নারী করিয়া নির্মাণ। পাণীরে অর্পেন তাহা শমন ধীমান॥ আদেশ করেন তারে করিতে রন। খন ঘন কালদূত করয়ে তাড়ন # কালের এমনি ল্কালা কে বুঝিতে পারে ৷ যেই নারী পাপী সহ যায বঞ্চিরাত বুল করি পাপীগণে করিয়া ধারণ। অনি চার্লে তাহালিলে ৮০ছ অভুগণ।।

্রাতনা পাইয়া পার্ণী করে হাছাকার। এখন কান্দিলে বল কি ইইবে আর ॥ হৈতেনা কহিতে নারি করে আর্ডনাদ। ছাড়িয়া পলাতে পাপী করে মনসাধ। শিলাবে কোথায় বল পলাতে না পারে। ছুরন্ত কালের দূত অমনি প্রহারে॥ আইরপে পাপীগণ যমপুরে গিয়ে। কত যে যাতনা পায় বিযাদকদয়ে॥ 'প্রধান চৌরাশী রুও অতি বিভীষণ। তাহাতে পড়িয়া কট পায় পাপীগণ। ্রমই নারী নিজ পতিধনে তেলাগিয়া। পর নর সহ থাকে প্রেমেতে মজিয়া।। শৈহাকট পার তার। কুভাতের লোকে। দিবস্যামিনী ভার যায় মনোদুঃথে॥ প্ত লোছের শ্যা আছে যমপুরে। ততুপরি হয় শুতে সেই রমণীরে। তিত্ত লৌছের নর করিয়। নির্দাণ। তাহাদের সোলে দেন শ্বন ধীমান।। ্ষয় সেই নর পতি দ্নিবার । যমের আদেশে ভারা করে **অভ্যাচার**॥ - সারিবা সেই রমণীর করে। যথের আবেদণে রভি কর্রেয় তাছারে॥ चानाय ५८६ घड नादी १९। डाटक गमा द्राया दक जायपु सम्म ॥ ্রিত দিব্য বর্ষ পাকে এ হেন প্রক।রে। কত যে যাতন। গাণ শুসনের পুরে॥ ্রীপি তাদের তাহে নাহি পরিত্রাণ। স্তথে কারের জলে হরায় দিনান। ্ৰী**তার পর মলকুতে** করি অবস্থান। মন খাঘ মন খাঘ মত্ৰতা পান॥ খ্**রতে একে যাবতী**য় কুণ্ডের মাঝারে। ফেলিয়া যাত্রা দেন যথ-সন্মুচরে॥ ্ষ্তিদ্ভারে সেই নারী ধরাতলে গিয়া। নীচকুলে লভে জন্ম কুরুগিণী হয়ে॥ ্রিত্রীহত্যা মহাপাপ করে ঘেইজন। আঘণ বিনাশ কিলা খেলুবিনাশন॥ ্রিকারিয় রমণী বধে যেই ছুরাচার। তাহার পাপের ফন ফি বনিব আর॥ (कुली नाजीत प७ छनिटल (यगन। देशारित (महे भारा पिटन, भगन॥ । বিনারোধে কোণে শুনি যেই মূচ্মতি। বিনারোধে সেই বানে করে অবস্থিতি॥ **অভিম কালেতে** গেলে শমনের পুরে। দারুণ যাত্রা মম দিবেন তাহারে॥ **্রতিত্তপ্ত লোহের শলা প্রব**ণে তাহার। যমের সাজ্ঞায় দূত দিবে অনিবার॥ ্রিপালিত সীসক তার শ্রবণ বিবরে। ঘন ঘন দের ফেলে যমের কিন্ধরে॥ ্রকতক্ষ পায় তাহে পাতকী হুর্জ্জন। হাহাকার করি দদা করয়ে রোদন॥ অবশেষে কুন্তীপাক নরকেতে নিয়ে। যমদূত দেয় ফেলি সানন্দ-ছদয়ে॥ ্ল'বল্লযুগ' তথা পাপী করি অবস্থিতি। ধরাতলে হানকুংশ জন্মে মূচ্মতি॥ पाछिक मानव याता पटछ मूक्षकाय। यर्भभूदत शिव्रा औता महाकरे भाव। শ্বৰ্শ কুণ্ডেতে পড়ি সেই তুরজন। লব্ণ খাইয়া হয় তাপিত জীবন॥ সহস্র বৎসর পরে তাহারে লইয়ে। মলকুতে যমপুর্জ দিবেন ফেলিয়ে॥ 🗸 এক কম্প খাকি তথা ভক্ষয়ে পুরীয় 🖍 মনমুত্র খেয়ে পাশ্রী দহে দিবানিশ 🎚

ংরোরব নরকে 'শেবে হয়ে নিপতন। কল্পকাল কৃষি কীট ক্র্রে-ভক্ষণ ॥ তবেত ভাহার পাপ দুরে চলি যায়। ধরাতলে নীচকুলে জমে পুরু রোমভরে চার্ছে যেবা বিপ্রের উপরে। কত কট পায় সেই শমনের যদ্ত গলদেশ বানিয়া তাহার। স্চিবিদ্ধ চকে তার করে অনিবার যমদূত কথাঘাত করে ঘন ঘন। স্বারজলে হয় সিক্ত সেই ছুরজন বিশাসঘাতকী হয় থেই তুরাচার। মানীর মর্য্যাদা যেবা করয়ে সংহার চির দিন পর-অন্ন করয়ে ভোজন। স্বার উপর কছে পরুষ বচর যাপুরে গিবা তার। দারু। কুধার। নিজের নিজের মাংস উপাড়িয়া খারু হুকুর শৃগাল কত আনি লাখে লাখে। সুক্বিয়া খায়মাংস পড়ি ঝাঁকে ঝাঁকে এরপে পাপাত্ম। হয় অহিমাত্র সার। পরেতে তাহাকে ফেলে নরক মাঝার্ 🕡 চৌরাণী নরক ঘূরি নেই দুরজন। আপন পাপের ফল ভুঞ্ অনুক্র 🗯 কোটি মুগ এইরূপে নরকে থাকিয়া। নীচকুলে জন্মে পরে ধরাতলে গিয়া 🞼 বিপ্র হবে শূদ্রদান করবে গ্রহণ। বিপ্রের কুমার হয়ে দেবল **রোম্ন**া এক ক<sup>ল্পে</sup> করে বাস নরক নাঝারে। তাহার পালের ফল কে বলিতে পারের পুরীষ নরকে থাকি মলমূত্র খাষ। চণ্ডাল হইয়া শেষে ধরাত**লে যায়**॥ দিবিদ্র হইষা প্রংখ পাষ নিরন্তর। ব্যাধিএক হয়ে র**হে নদত কাতর**। মিথ্যা কথা হাটু কথা বলে যেই জন। দারুণ যাতনা তারে দিবেন শ্যন॥ তাহাদের সেই জিহ্বা সম্ভূত্য । স্তুতপ্ত সাঁড়াশি দিয়া টেনে তুলি **লয়**। অবশেষে ফেলে তাবে তপ্ততৈলোপরে। দণ্ডাঘাত কবে পুন তাহার উপরে॥ অংশৰ যাত্ৰ। পায়ে তাহার ভিত্র। জ্বালায় অস্থির হয়ে কাদে নিরন্তর॥ 🛴 অবশেষে ধরা চলে মেতেহর আগাারে। জনম লভয়ে দেই বিবাদ অন্তরে 🎉 পরের স্তথের বাধা করে যেই জন। পরের আনষ্ট চেন্টা করে যেই জন॥ পরেরে তাড়না যেই করে নিরন্তর। পরমুখপথে কাটা দেয় যেই নর। . বৈতরণী নরকেতে পড়ি সেই জন। কত যে যাতনা পায় কি করি বর্ণন।। অনলু সমান ফুটে বৈতবণীজল। সন্তাপে পুড়িয়া মরে পাতকা সকল। (पर आज्ञाथना नाहि करत (यहे जन। अथर्य পरिशट यांता थारक अनुक्रण॥ गহাপাপী বলে তারে জগতের লোকে । অন্তিমে তাহারা পড়ে দারণ নরকে? শভ যুগ মলমূত্র করিয়া ভক্ষণী অবশেষে ধরাধামে লভয়ে প্রের পাছুকা বহে নিজ শিরোপরে। গ্রণিত কুকর্ম করে উদরের তরে॥ বিপ্রের নিকট্টে কর যেই রাজা লয়। শত কুন সহ সেই নরকেডে রক্স। । काणि कन्त्र नहरूकि जवहान। नी हकूल करव लाख धतांश निर्माण॥

প্রিপ্রের শাসনে যারা অমুষ্তি দেয়। যমদূতে ভারে টানি নরকেতে নেয়॥ ক্রিলহত্যা, মহাপাপে পাপী সেই জন। দারুণ যাতনা পায় শমনসদন॥ ্ব্ৰিক্তিথি বিমুখ হয় যাহার আলয়ে। অতিথি তাড়ায় যেই আনন হদয়ে॥ ' নিজ বিষ্ঠা উপভোগ করে সেই জন। তাদের ছুর্দ্দশা আর কি করি বর্ণন॥ ্চারি যুগ থাকে পাপী নরক-মাঝার। শাস্ত্রের বিচার ইহা বেদের বিচার॥ হোনির বিচার নাহি করে যেই জন। পশু আ। দি সহ কামে করয়ে রমণ ॥ ্রিছার স্থান পাপী নাহি কোন স্থানে। মহাপাপী বলি সেইজানে সর্জ্ঞানে ॥ 🛵 ভকুতে নিম্জিয়া সেই হুরাহার। রেত পান করি মূদা করে হাহাকার॥ 🏂 🗷 বংসর তাহে ভুঞে পাপকল। ব্যাকুণ্ডে পড়ে পার যাতনা বিশুর॥ ্রীভার বংসর তথা করিয়া যাপন। পুনর্বার ধর।তলে সে করে গমন॥ ্বীশ্বর্ম হেতু উপবাস করিয়। দিবসে। দও ধৌত করে যারা মনের হরিবে॥ **অঁথোর নরকে** তারা হয় নিমগন। চারি যুগ ভার মথো করিবে যাপন । ্রিট্রের আদেশে ব্যান্ত অতি ভীমাকার ৷ তাহার দেহের মাং স করিবে আহার ভূমি দান করি যেবা পরে হরি লয়। দারুণ যাত্না সেই পাব ঘনালয়॥ ্রি**ভিন কুল নহ দে**ই নরকে পড়িয়া। অশেষ যাতনা পায় আগুণে পুড়িয়া। ্**ড়োরাশী নরক ভোগ করে সেই জন। কোটি** কণ্প এইরূপে করয়ে যাপন॥ ্রী**ংএরতেশ পাত্**পের ফল প্রেটের হোরার। ধরাধামে দেছে ধরি জন্মে পুনর্কার। ্বিজাতি আচার ত্যজি যেই অভাজন। পরধর্মে অনুগত থাকে অনুক্ষণ॥
্বিহাপাপী বলি তারে সর্বংশাস্ত্রে কয়। দারুণ যাতনা সেই পায় যমালয়॥ ্সহত্র পুরুষ সহ সেই ছুরজন। কম্পকাল তবে হয় নরকে পতন॥ ্রিনরক-আওণে পাণী দহে নিবতর। ঘন ঘন দও করে যমের কিক্ষর॥ "বি**প্রকৃলে জন্ম** ধরি যেই অভাজন। শৃত্রের সন্মুখে করে বেদ অধ্যয়ন 🛭 ় কোটি কম্প করে বাস নরক-ভিতরে। সতত রোদন করে দারুণ প্রহারে॥ ্বিষ্ঠা খায় মল খায় করে মূত্র পান। ক্ষিকীটদংশনেতে তাপিত পরাণ॥ 'আপন করমদোষ ভাবিয়া অন্তরে। ভাসায় জাপন দেহ নিজ অঞ্জনীরে॥ এইরপে ভোগকাল হলে অবসান। ধরাতলে পুনরায় করিবে পরাণ॥ ্রিদেবদেব্য শুরুদ্রব্য যে করে হরণ। চাতুরী সবার কাঠ্ছে করে সর্ব্বন্দণ॥ ্রেক্সহত্যা মহাপাপে পাপী দেই নর। নরকে পড়িয়া পার্ক্ন ভুর্গতি বিস্তব।। ় **স্থালাকুও** নরকেতে পড়ি ছুরাচার । আগুণে পুড়িয়া দদা কুঁরে হাহাকার । শত বর্ষ তথা থাকি সেই তুরজন। অসিপত্র নরফেডে করুয়ে গমন॥ শাণিত অসিতে দেহ ছিল ভিল হয়। দেখিতে দেখিতে গত বৰ্ষ হয় কয়।

অবশেষে কীটযোনি শভে সেই জন। দারুণ যাতনা পায় সেই ছুরজন॥ সাতবার এইরপ, কটিরপে ঘুরি। তবেত মানবরূপে যায় মরপুরী ॥ অনাথ জনের ধন করিলে হরণ। অধঃশিরা হযে হয় নরকে পতন উৰ্নপদে কিত কাল থাকি ছুৱাচার। ছুর্গন্ধে পূরিত ধুম করয়ে **আহার ॥** পুজার কুতুম যেবা করয়ে হরণ। বহ্নিয় নবকেতে যায় সেই জন 🎉 কত কট পার দেই নরকভিতর। দারুণ যাতনা পায় অযুত্বৎসর। দেবালযে পথে কিন্দা জলের ভিতরে। মলমূত্র যেই জন পরিত্যাগ করে 🗐 জাণ্ছত্যা মহাপাপে লিপ্ত সেই জন। কর্ম-দোষেতে হয় নরকে পতন ॥ বিৰম যাতনা পায় যমের আলয়ে। দিবানিশি কান্দে তথা বিষয় সদয়ে 🗗 দেবতা-মন্দির কিন্তা দলিলভিতরে। দন্ত নধ কেশ আদি বিনিক্ষেপ করে।। অথবা উচ্ছিফ দ্রব্য করে প্রকেপণ। পেষণ যন্ত্রেতে পিট হয় সেই জন ⊯ুঁ পেনিত হইযা সদা করে থাহাকার। বলে কোণ: কুপাময় রক্ষ এইবার। স্মবশেষে যমদৃত তাহারে ধরিষা। তপ্ত-তৈল কটাহেতে দেয় ফেলাইষা 👫 অবশেষে ু দ্বীপাক নকভিতরে। শত বর্ষ রাথে কেলি যম-অমুচরে॥ তবে ত তাহার পাপ হয় বিমোচন । শাস্তের লিখন ইহা বেলের বচন॥ বেদাস হরণ করে ফেই তুরাচার। তুষানলে প্রাযশ্তিত নাহি হয় তার॥ উহকাস নফ তার যায পরকাল। অতিমে তাহার ভাগ্যে বিষম জঞ্জাল # ইহলোকে অর্থান বন্ধহান হলে। ব্যাধিপ্রস্তু হযে থাকে বিষয়-জদরে॥ অন্তিম কালেতে কটে দেহত্যাগ করি। বতুক্ট পেয়ে পথে যায় যমপুরী॥ पाकृष नत्रक (महे ६य निम्धन। मृह्य वत्रव उथा कत्रद्य यापन॥ মিথ্যাশিক্ষা দেয় বেই কুমন্ত্রণা দেয়। উদ্ধপদ করি তারে যদ্ভ নেয়। যমপুরে গিলা ভারা মছাকট পাল। শত বর্গ ছেতু তারা নরকেতে যায়॥ পরের অনিষ্ট সদ। করে যেই জন। পরেমর্থনাশে যার মতি অনুক্রণ॥ মহাপাপী বলি তারে সর্বলোকে জানে। দারুণ মাতনা পায শমন-ভবনে॥ লালাকুঁতে শৃত্যুগ থাকে মূচমতি। কোনমতে ছুরাআর নাছিক নিচ্ছ তি॥ কামাতুর ধরাধামে যেই ছুরাচার। বিনা দোষে পরনিন্দা কর্যে প্রচার ॥ ; বড় কফ পায় সেই শমনের পুরে। ক্লমি কীট ঢোকে তার বদন-ভিতয়ে॥ রশ্চিক সদত করে তাহারে দংশন। ত্রাহি ত্রাহি করিপাপী কান্দে সর্বক্ষণা। পাপাত্মা কাতর হয়ে অতাব কুধার। আপন দেহের মাংস আপনিই খায়॥ দেখিতে দেখিতে মদমত পজগণ। ওও নাড়ি রক্তনেত্রে করে আগমন। শুতেতে জড়ায়ে তারে গগন উপার। খুর্নিত করিতে খাকে বেগে নিরন্তর॥

এইরপে বহু করু পেরে স্থরাচার। অসহীন হয়ে জয়ে ধরণা-মাঝার। ্রাকপদ কেহ হয় কেহ এককাণ। এক হস্ত নাহি কারো বিরূপ বয়ান। ্ষ্তিরনাসা হয় কেছ একচকু হয়। কেছ বা বধির হয়ে জনমে নিশ্চয়। 👣 কালে নারী সহ করিলে রমণ। একাহত্যাপাপে মগ্ন হয় সেই জন॥ 🎮 ভিমে ভাষার হয় বিষম জ্ঞাল। ইহকাল যায় তার যায় পরকাল। <sup>্র</sup>শাপকাজ যদি কেহ করে আচরণ। দেখিয়া যে জন তারে না করে বারণ। শাশের অর্দ্ধেক ফল ভোগে সেই নর। যমপুরে গিয়া পায় ছুর্গতি বিশুর॥ ্রিক ছিদ্র নাহি দেখে যেই জুরাচার। পরদোষ পরপাপ করয়ে প্রচার॥ বিরুৎসা বরি সদা কাটায় জীবন। মহাপাপী বলি তারে বলে সক্জন॥ শোজের বচন ইহা মিথ্যা কতু নয়। কহিলান নার কথা ওছে ঋষিচয়॥ নিপাপী জনের নিনা করে যেই জন। বিষম যাতনা পায় শমন সদন॥ ্মিত্রকুতে শতযুগ করি অবস্থান। অবশেষে ধরাণামে দে করে প্যাণ॥ 🖁 📆 শারীরে ধরি যেই বলাৎকার করে। দাকণ যাতন। পাম গিয়। যমপুরে॥ ্রিশংখ্য কুকুর আসি অতি বিভীষণ। তাহার দেহের না'ন করয়ে ভক্ষণ॥ পরিষের জালার পাপী হযে জালাতন। হাহাকার করি সদা করয়ে রোদন॥ **অবংশবে যদন্ত তাহাবে ধরিষা। খেট**িশরে লগে যায় সদলে টানিয়া॥ ্রিদকার কুণ্ডনপ্যে করিব। কেশা। কত্যে যাতনা দেয় কে করে বর্ণন।। **ছাহাতে পড়িরা পাপী কত কউ পায়। হেরিলে ভাহার চু খবল কেটে যা**ণ **লিখাস ফেলিতে নারে হাদ্**য় বিদরে। রক্ষ রক্ষ বলি সদা ভাকিতে ঈশ্বরে॥ ্রি**কে আর দেখিবে বল কে** রিশিবে আরে। বিধির লিখন ক্তুনছে খণ্ডিবার॥ ক্লালের বিচিত্র গতি কে বলিতে পারে। কালেতে জীবের সৃক্তি কালেতে বিংহারে। পরম কারণ দেব নিতা সনাতন। কালরূপে হেরিতেছে এ তিন ক্রুবন, জনম মরণ হয় কালের ইচছায়। চত্রদ সূর্য্য ঘূরে সদা কালের আভ্রায়। ্বাহার যেমন কর্ম ভুঞ্জিবে তেমন। খণ্ডন করিবে ভাচা বল কোন্জন॥ িক্ষাংলৈতে জন্মিবে সব কালেতে সংহার। কালের করগল 'হাতে'নাহিক উদ্ধার। নিজধর্ণে পকপাতী হয়ে যেই জন। পরেয়ে,শিখার সদা মনের ্বীষ্টন ॥ দারুণ নরকে পড়ে সেই তুরাচার। বেদের লিখন 👣 শাস্থের বিচার আমাস্টিত নাছি তার বলে সর্বলোকে। শত বর্ঘ কট পার পড়িয়া নরকে॥ ঁসীয় হংশ অভিলামে হেই অভাজন। পিড় মাতৃ গুরুজান করয়ে বর্জন্ন॥ পাৰও তাহার সম নাহিক ধরায়। নরকে পড়িয়া সেই কত কই পায়॥ শাজের বচন ইহা বেদের বচন। ৰলিলাম স্বাপাথে ওছে ঋষ্পণ ॥

ব্দযুত বর্ষ থাকি নরক-ভিতরে। অবশেষে ধরে জন্ম চণ্ডালের ঘরে।। र्गागारम जाहात कति ताथरत कीवन । गिया कड़ नरह हेहा भारजुत बहन के পুরুণী তড়াগ আর কুপ্রম-কানন। ছার খার করি ভাঙ্গে যেই অভাজন 🎼 ইংলোকে লক্ষাভ্রন্থ ইয়ে ছুরাচার। অন্তিমে পতিত হয় নরক-মাঝার 👫 বিষ্ঠার কুণ্ডেতে তার। শতমুগ রয়। বিষ্ঠাজাত ক্লমি খায় দেই পুরাশয় 🏰 মানব শরীর শেষে করিয়া ধারণ। চণ্ডাল গৃত্ততে গিয়া লউয়ে জনম 🎼 অসংখ্য যাতনা পায় জীবন ধরিয়া। ব্যাধরপে ভ্রমে বনে ঘ্রিয়া খৃরিয়া 🏕 🛱 **এইরূপে শত জন্ম** ধরি তুরাচার। তবেত পাতক হতে লভিবে নিস্তার॥ <sup>1</sup> নগরে প্রামেতে কিন্তা দেবতা-মন্দিরে। যেই ছুট ছুটচিত্তে **অগ্নিদান করে**॥ <sup>র্ক্</sup> তাদের শা। স্তর কথা কি বলিব আর। দুস্তর নরক ভোগ করে অনিবার।। মহাপাপী বলি তারে ডাকে সর্বজন। খাবর বচন ইহা শান্তের লিখন। এক ব্রহ্ম পাত নাহি মতদিনে হয়। তামত পুরাসকুণ্ডে সেই পাপী রয়॥ পাপেতে উৎসাহ দেয় যেই অভাজন। অর্দ্ধেক পাপের ফল ভুঞ্জে সেই জন॥ অ্যাজ্য যাজন কৈলে বিপ্রের কুমার। বিপ্র হয়ে নিকুটার করিলে আহার॥ চঙাল সমান তারে শাস্ত্রেতে বাখানে। তাছার সমান পাপী নাছি কোন হানে॥ দেহ অত্তে সেই বিপ্র যমের গোদর। পাপের উচিত ফল পায় বছ-তর।। শত যুগ নরকেতে করি অবভান। মানবরপেতে পুন ধর। ধামে যান।। চণ্ডালরপেতে জন্মে ধরণা উপর। অরাভাবে কত কট পায় নিরন্তর॥ এইরূপ যাতায়াত করি সাত্বার। পাপ হতে তবে মুক্তি পায় তুরাচার॥ পরের উচ্ছিট যদি করয়ে ভোজন। বন্ধুঘাতী ২য় যেই বিপ্রের নন্দন॥ দারণ নরকে তার হয় নিবসতি। অসংখ্য যাতনা পায় দেই মূচ্মতি॥ শশী সূর্য্য ধরাতলে যতকাল রয়। তাবত নরকে থাকে দেই তুরাশয়॥ কত পাপ আছে তাহা কে বলিতে পারে। সংক্রেপে বলিকু কিছু সবার গোচরে॥ মিথ্যাবাদী পাণে রত যেই অভাজন । কর্থবেশ নানাযোনি কর্য়ে ভ্রমণ॥ জগতে প্রথিত সেই বলি তুরাচার। অতিমে তাহার আর নাহিক উদ্ধার ॥ কুকর্ম করিলে জাব নানাছঃখ পায়। ইহলোকে তার নিন্দা মর্বজনে গায়॥ শিব-উব্জি দবাপাশে করিনু কার্ত্তন। অন্তরে ভাবহ দদা নিত্য নির-ঞ্জন ॥ সকলি অনিত্য বৈই অবনা মাঝার। একমাত্র সত্য ত্রন্ন জগতের সার ॥ কারমনে ধর্মপথে থাক নিরস্তর । আসিতে না পাবে কাছে যমের কিক্ষর ॥ মন দিয়া শুৰ এবৈ ওছে শ্বিগণ। নরকের বিবরণ করিব কীর্ত্তন গ্র

শংকেপে কিঞ্মাত্র করেছি প্রচার। শুন এবে বলিতেছি করিয়া বিভার ॥

- কিরপ নরক আছে যমের আগারে। কিরুপেতে শান্তি দের পাপাত্মানি-करत ॥ रमरे गर विखातिया कतिन वर्गन। खिनित्न क्रम्दा रस दिन्त क्रमन ॥ यग्पारम पाणीर्ग फिटन एत्रमन। मटतार्य जाकिरव मटव मपन ताजन॥ ুলোহিত লোচন যম ভীষণ মূরতি। রক্তবস্ত্র পরিধান স্থনীল আরুতি॥ ভাষন দাবিংশ হস্ত হইবে তাঁহার। প্রচণ্ড তপন সম প্রদীপ্ত আকার॥ বিকট সুদীর্ঘ নাসা দেখি ভয় পায়। বিকট আনন যেন রাক্ষসের প্রায়॥ বিকট দশনপংক্তি বিকট আক্তৃতি। কাঁপিবে পাণীর হৃদি দেখিয়া মূরতি। মনপাশে জরা-মৃত্যু আছেন দাঁড়িয়ে। চিত্রগুপ্র পুরোভাগে খাতা পত্র লয়ে॥ 🟞 মের আদেশে শুপ্ত সুগভীর স্ববে। ডাকিবেন পাপীগণে ধর্মের গোচরে॥ প্রশয় মেখের সম স্থগভীর রবে। বলিবেন কটুভাষা পাপীগণ সবে॥ শোন শোন পাপীগণ ওরে ছুরাচার। করেছিল মত হয়ে কত অহঙ্কার॥ নিরস্তর মত হয়ে মানব-আলয়ে। কােছিস কুকর্ম ধর্ম ত্যজিয়ে॥ ্**এখন তাহার** ফল করহ ভুঞ্জন। জাননা রয়েছে হেথা শমন-রাজন।। -কামে মত হয়ে তোরা মানব ভবনে। কুকর্ম করেছ কত না যায় কহনে॥ তাহার উচিত ফল ভুঞ্জ এখন। এখন তোদের রক্ষা করে কোন্জন॥ **একান্ত** পাপাত্মা তোরা অতি ছুর্নিবার। নহিলে করিবি কেন হেন অত্যা-চার॥ যতেক কুকর্ম আছে দ্রায় বিদিত। সকলি করেছ তোরা আনলে ু নিশ্চিত।। তাহার উচিত শান্তি পাবি এইকণ। এখন তোদের রক্ষা কবে কোন জন। মিছা কেন কাক এবে কর হাহাকার। পাপের উচিত ফল পাবে এইবার॥ তোমাদের অত্যাচারে কত জীবগণ। অনলে দ্বিলে পশি ত্যজেছে জীবন॥ এখন ধর্ম্মের কাছে আছ উপনীত। পাপের উচিত ফল পাইবে নিশ্চত কুকর্ম করেছ সবে থাকি সেই ভবে। ভাব নাই মনে হেথা আসিতে হইবে॥ কেন রুথা পরিতাপ কর তুরাচার। পাপের উচিতফল ভোগ এইবার॥ পর-সর্বনাশ কত করেছ আনন্দে। কুকর্ম করেছ কত মজি নানা রক্ষে॥ ্রেষ্ট্রেক্ত দম্মরতি করি প্রবঞ্চন। মনমুখে দারামুক্ত করেছ পালন। কোঁথা দারা কোথা পুল বান্ধব কোথায়। একাকী এখনপ্রেন এসেছ হেথায়॥ ভোদের ছুর্দ্দশা এবে করি দরশন। কে আর আপন বঞ্জী করিবে রোদন॥ এখন রোদনে ফল নাহি কিছু আর। আর্গেতে উচিত ছিল করিতে বিচার॥ ষেমন ত্বন্ধ তোরা করেছিস ভবে। সমুচিত ফল তার গ্রেখানেতে পাবে॥ পাপের উচিত ফল পাবি এইক্ষণ। ধর্মরাজ ইথে 'দৌফী নহে কদাচন॥ পক্শাতী নহে ইনি জানিবি নিশ্চিত। দিৱন পাপের শান্তি যেমন বিহিত॥

ধরাধামে যথা পাপ করিয়াছ সবে। তাহাকে তেমন শাস্তি যমরাজ দিবে॥ विচারে কাহারো নাহি আছে পরিত্রাণ। কিবা ধনী কিবা ছঃখা সকলি সমান ॥ চিত্রগুপ্তবাক্য সব করিয়া শ্রবণ। থর থর কাঁপে ভয়ে যত পাণীগুণ 🛚 কাহারো নয়ন ভাগে অবিরল জলে। কেহ কান্দে শুদ্দ কঠে ত্রাহি ত্রাহি বলে ॥ কি করিবে কোথা যাবে না দেখি উপায়। হাহাকার করে দবে ব্যাস্কু-শিত কায়॥ আপন পাতকরাশি করিয়া মরণ। পরিতাপানলে দহে ্যউ 🗟 পাপীগণ॥ যুদ্তুগণ যুত্ত ভীমবেশ ধরি। যুদের আদেশে তথা আদে সারি 🛒 সারি॥ তর্জ্জন গর্জ্জন করি পাণীগণে লয়ে। রক্ষুতে বান্ধিয়া ফেলে দারুণ নিরয়ে॥ কত যে নরক তথা আছে বিস্তুমান। টোরাশী তাহার মধ্যে দবার 👸 প্রধান॥ বহ্নিকুণ্ড তপ্তকুণ্ড ক্ষারকুণ্ড আর। বিঠাকুণ্ড মূত্রকুণ্ড অতীব চুর্বার॥ অ শুকুও মজ্জাকুও অতি বিভীষণ। মাংসকুও নথকুও ঘোরদর্শন। গাত্রমলকুও লোমকুও নাম ধরে। অসুক্রুও কেন্ডুও ক্মিকুও পরে। অস্থ্রিক্ও তামকুও লোহকুও আর । বিসকুও ঘর্মকুও ঘর্মের আধার।। খরাক্ও তৈ হও পুরকুও আদি। শবকুও শূলকও আছে নিরবধি।। মনীকুও চুর্ণকুও যতেক নিরয়। কুন্তীপাককুও আদি কত শত হয়।। কৃষ্কুও জ্বালাক্ত অতি ভ্য়ানক। দধকুও ভ্ৰুকুণ্ড নামেতে নরক॥ গোলকুও শরকুও তেজকুও নামে। কত শত কুও আছে যমের ভবনে।। ফর্ণকুণ্ড কুপকুণ্ড মুখকুণ্ড আরে। জালয়র কুণ্ড আদি অতীব **হর্বার॥** গঙ্গরাফ্র কুণ্ড আছে অতি তয়হ্বর। যাহাতে যাতনা পায় পাতকী নিকর॥ পৃতিকুও বদাক্ও আর শ্লেমারও। জিহ্বাক্ও নেত্রকুও আর গয়কুও॥ ইত্যাদি নরক বহু বিরাজে তথায়। পাপীরা তাহাতে পড়ি বহু ক**ফ পায়॥** বঞ্চ হিংত্রক ক্রের হয় যেই জন! অগ্নিকুণ্ডে হয় দগ্ধ সেই অভাজন্॥ তাহার দেহেতে আছে যত রোমচয়। তত বর্ষ অগ্রিকুণ্ডে দমীভূত হয়॥ . তিনবার পশুজন্ম হইবে তাহার। রৌদুকুতে যাবে শেষে কহিলাম সার॥ ব্ৰাহ্মণ অতিথি যদি করে আগমন। তৃষ্ণার্ত হইয়া থাকে দেই মহাজন॥ দেই বিপ্রে যেই জন জল নাহি দের। তপ্তকুও নরকেতে পড়িবে নিশ্র।। বিচিত্র পক্ষীর রূপ করিয়া ধারণ। সাত্বার ধরে জন্ম মানব ভবন।। যেই জন আদ্ধ করি বিহিতবিধানে। বসন রঞ্জিত ক্ষারে করে সেই দিনে॥ 🦯 যাবত দেবেক্রের নাহি হইবে পতন। কারকুতে তদবধি থাকে সেই জন॥ অবশেষে ধরে জুন্ম রঙ্গকী-জঠরে। সভিবার আসে সেই মানবের পুরে॥ থয়ং দান করি হরে যেই অপ্রাজন। পরদানে মদা হয় লোভপরায়ণ॥

্ত্রক্ষ হরণ করে দেবধন হয়ে। বিষ্ঠাকুও নরকেতে সেই জন পড়ে। বিষ্ঠা ভোগ করে সেই অযুত বৎসর। ক্রমিরূপে মহাকট পায় নিরন্তর। পরের তড়াগস্থান করিয়া হরণ। তথায় তড়াগ করে ষেই তুরজন॥ পুণারাশি দুরে থাক মহাপাপ হয়। মূত্রকুতে বত্কাল নিপতিত রয়॥ সহঅ বংসর তথা মূত্রাহাব করি। গোধিকা হইয়া জম্মে মানবের পুরী। সাঙ্বার এইরপে ধরিয়া জনম। কত কঞ্চ পাবে সেই ছুরাত্মা ছুর্জ্জন॥ একাকী বসিয়া থেবা নির্জ্জন প্রদেশে। সুমধুর খাদ্য খায মনের হরিষে॥ শেষকও নরকেতে পড়ে সেই জন। সহস্র বংসর তথা করিবে যাপন॥ ্**ভারত-ভূমিতে শে**ষে আদি ছুরাচার। প্রেত্যোনি হযে থাকে <mark>শাস্ত্রের</mark> বিচার॥ নিজক্লত কর্মফল পায় সেই জন। শ্লেয়া মূত্র পুজ আদি খায় অমুক্ষণ॥ অতিথি হেরিয়া যেবা ফিরায লোচন। এলহত্যা মহাপাপে মজে সেই জন।। পিতৃকুল তার যত আছে ষ্র্য-পুরে। তদত দলিল নাহি আকিঞ্চন করে॥ চক্রকুণ্ড নামে আছে নরক দুর্ববার। তাহাতে পড়িয়া কট পার প্ররাচার॥ অযুত বরষ তথা করিয়া থাপন। দরিদ্রের ঘরে আদি লভযে জনম।। সাতবার এইরূপ শরীর ধরিয়া। দারুণ যাতনা পার ধরাতলে গিয়া। বিপ্রকরে ধনদান করি যেই জন। পুনশ্চ লোভেতে করে সে সব হরণ॥ '**মনীকুণ্ড নরকেতে দেই জন** যায়। অযুত বরুষ তথা মহাক**ট পায**়। সপ্ত জন্ম ক্রকলাস হয় সেই জন। পরিশেষে নররণ করিবে ধারণ॥ দরিদ্রে হইয়া সেই বহু কন্ট পায। তাহার যাতনা দেখি বুক কেটে যায়॥ পরনারী প্রতি যেই লোভপরায়ণ। দেই জন মহাপাপী নারকী ছুর্জ্জন।। অথবা যে জন বলে করে বলাৎকার। মহাপাপী বলি সেই ধরায় প্রচার॥ ওঞকুঞ্জ নরকেতে পড়ে দেই জন। শত বর্ষ তথা থাকি কব্যে যাপন।। ইউদেব প্রতি কিম্বা কোন বিপ্র জনে। অস্ত্রের স্বাঘাত করে সরোবিত মনে॥ আঘাত লাগিয়া যদি রক্ত বাহিরায়। অসৃক্রুও নরকেতে দেই জন যায়॥ সপ্তবার ধরাতলে ব্যাধের আগারে। জন্মিবে সে জন জেনে। শাস্ত্রের বিচারে॥ . হারঞ্ গান শুনি যেই মূঢ়মতি। উপহাস করে তাহ্য অভিযানে অতি॥ অঞ্জুত নরকেতে সেই জন যায়। শত বর্ষ থাকি তাহৈ মনস্তাপ পায়॥ অবশেষে ধরাধানে চণ্ডাল আলয়ে। তিনগার ধবে জন্ম মহাত্রংখী হয়ে॥ আত্মীয় জনের হিংদা করে যেই জন। আত্মীয় হেরিয়া ক্বান কিরায় বদন। গাত্রমলকুও নামে নরক ছর্কার। তাহাতে পড়িয়া কট পায় ছুরাচার॥ অযুত বৎসর তথা যাতনা পাইয়া। খরক্পে ধরে জন্ম ধরাধানে গিয়া। অবশেষে দপ্ত জন্ম শৃগালজঠরে। তবেত পাপের ক্ষয় শান্তের বিচারে॥ বধির হেরিয়া হাস্ত করে ধেই জন ৷ কর্ণমলকুতে হয় ভাচার পতন 🖟 নরক যাতনা পেয়ে হাজার বংসর। বধির হইয়া জম্ম লারচের ঘর 🗗 गर्छ जय এইরপে জয়ে ছুরাচার। শাছের লিখন ইহা বেদের বিচার॥ লোভবশে রোষবশে সেই ছরজন। জীবের জীবনধন করে বিনাশন॥ মহাপাপী সেই জন অবনীভিতরে। লক্ষ বর্ষ মজ্জাকুণ্ডে নিবসতি করে॥ শশক হইয়া ভূমে জন্মে সাতবার। মৎস্তরূপী সপ্ত জন্ম হবে পুনর্বার॥ আপন কল্তকাধনে যেই অভাজন। বাল্যাবধি রক্ষা করি করিয়া যতন॥ অবশেষে অর্থলোভী হইয়া অস্তরে। মনোমত ধন লয়ে তারে বিক্রী করে॥ মাংসকুও নরকেতে পড়ি সেই জন। কত যে যাতনা পায় কে করে বর্ণন॥ যত রোম ধরে দেহে সেই ছুরাচার। তত বর্ষ কুগু ভোগ হইবে ভাহার॥ খমদূত সদা তারে করয়ে পীড়ন। বিষ্ঠাক্ষার্মরপে কুতে রহে নর্বকণ॥ ষাইট হাজার বর্ষ নরকে থাকিয়া। ব্যাধের গৃহেতে জন্ম ধরাতলে গিয়া। সপ্ত জন্ম ব্যাৰঞ্জপে যাতায়াত করি। সাতবার হুন্মে পরে ভেকরপ ধরি॥ অবশেষে তিন জন্ম শ্কর হইয়া। ধোবা হয়ে জন্মে পরে ধরাতলে গিয়া॥ সাত জন্ম মূক হয়ে থাকে সেই জন। তবেত পাপের কয় শাস্ত্রের বচন 🛭 শাদ্দিনে ক্ষৌরকর্ম যেই জন করে। নথকুও নরকেতে সেই জন পড়ে॥ হাঙ্গার বৎসরতথা করে অবস্থিতি। অবশেষে ধরাতলে পশুরূপে গতি॥ কেশ সহ শিবলিঙ্গ পূজে যেই জন। কেশকুও নরকেতে তাহার পতন 🛭 শিবশাপে অবশেষে যবন হইয়া। যবনের গৃহে জন্মে ধরাতলে গিয়া॥ পৃথিবীতে গ্রা ক্ষেত্র অতি পুণাস্থান। শতজন্ম-পাণ থায় দিলে পিওদান॥ তাদৃশ পবিত্র ক্ষেত্রে বিষ্ণুর চরণে। পিও নাহি দেব যেই ভক্তিপৃত মনে॥ অস্থিক্ও নরকেতে পড়ি সেই জন। দারুণ যাতনা পায় কে করে বর্ণন॥ অঙ্গহীন হয়ে শেষে ধরাতলে যায়। দরিদ্রের গৃহে জন্মি মহাক্ষ পায়॥ কামবশে মত্ত হয়ে যেই অভাজন। গর্ভবতী নারী সহ করয়ে রমণ॥ তাম্রকুণ্ড নরকেতে এসই তুরাচার। পড়িয়া যাতনা পায় বৎসর হাজার। অনুঢ়া সংস্পৃষ্ট অন্ন করিলে ভোজন। লৌহকুণ্ডে শত বর্ষ রহে সেই জন॥ তাহারে তাড়না করে যমের কিছর। অবশেষে ধরে জন্ম রজকীউদর॥ মহাকট পায় আদি ভারত-আগারে। দেখিয়া তাহার ছঃখ হলয় বিদরে॥ ষেদহত্তে খাদ্য দ্ব্য স্পর্শে । যেই জন। ঘর্ম কুণ্ড নরকেতে তাহার পতন । জাগা হইয়া করে শুদ্রাধ আহার। শত বর্ষ স্করাকুণ্ডে বসতি তাছার।।

অনিবেদ্য দ্রব্য যেবা করয়ে ভোজন। ক্রমিকুণ্ড নরকৈতে যায় সেই জন॥ ছাজার বরষ তথা মহাতঃখ পায়। শ্কর হিইয়া শেষে ধরাধামে যায়॥ বিপ্র হয়ে শুদ্রশব করিলে দাহন। পুঁজকুও নরকেতে করিবে গমন॥ যমদূত প্রহারিবে তারে অনিবার। যাতনা পাইয়া সদা করিবে চীৎকার॥ কুদ্র কৃদ্র জীবগণে করিলে হনন। দংশকুত্র নরকেতে করিবে গখন॥ অনারারে রাখি তথা যমের কিন্ধর। হস্ত পদ বান্ধি দেয় যাতনা বিশুর॥ মধুলোভে মধুচক্র ভাঙ্গে যেই জন। গরলকুওেতে দেই করয়ে গমন॥ তথায় গরলমাত্র করিয়া আহার। কত বে যাতনা পায় কি কহিব॥ ্রান্সণেরে দণ্ডাঘাত করে যেই জন। বজ্রদংক্ত নবকেতে তাহার পড়ন॥ <mark>বজুঘাত সদা করে যমদূ</mark>তচয়। তাহার যাতনা হেরি বিদরে জদয়॥ **অর্থলোভে প্রজাগণে যে**ই নরবর। বিনা অপরাধে দেয় দণ্ড বহুতর॥ রশ্চিক কুণ্ডেতে তার হয় অবস্থিতি। মহা কট তথা পায় সেই নরপতি॥ যেই দিজ ধর্ম কর্ম দিয়া বিসর্জ্জন। খস্ত লয়ে অখোপরি করি আরোহণ॥ ষ বিয়ে ব্যভার করে আনন্দিত মতি। বসাকুণ্ডে সেই জন করে অবস্থিতি॥ তাহার কেশেতে ধরি যমদূতগণ। নানামতে করে শাস্তি কে করে বর্ণন। অস্তায় করিয়া যেবা ফোনজনে ধরি। আবদ করিয়া রাখে কারাগারে পুরি গোলকুত্ত নরকেতে যায় সেই জন। ক্রমিরূপী হয়ে তথা থাকে নর্ক্ষণ॥ **যমের কিন্ধর আসি করি**য়া তাড়না! দণ্ডাঘাতে দেয় কত দারুণ যাতনা॥ পরনারী-বক্ষোপরি স্তন মনোহর। দেখিয়া মদনে মত হয় যেই নর॥ কাককুও নরকেতে পড়ে সেই জন। কাকেতে উপাড়ি লয় তাহার নয়ন॥ নিজ্ঞত কর্মফল লভি ছুরাচার। যাতনা পাইয়া সদা করে হাহাকার॥ থেই জন লোভবশে স্বর্ণচুরি করে। কফকুণ্ড নরকেতে সেই জন পড়ে॥ তাহার দেহেতে থাকে যত রোমচয়। বিষ্ঠাভোগী হয়ে তথা তত বর্ষ রয়॥ পরিদে হইয়া শেষে জন্মে সাতবার। অবশেষে ধরে দেহ হয়ে স্বর্ণকার॥ তাজ লৌহ আদি ধাতু করিলে হরণ। বাজবুও নরকেতে তাহার পতন॥ **রাজের পু**রীষ **দদা করিবে** আহার। বাজেতে উপাড়ি**-শবে ন**য়ন ভাহার॥ দেব কিম্বা দেববন্ত্র করিলে হরণ। কফকুও নরকেক্টে পড়ে দেই জন। কদাচারে সদা তথা করে অবস্থিতি। রোমসংখ্য বর্ষ ড়থা করয়ে বসতি ।। গৈরিক বসন কিন্ধা রজত ভূষণ। লোভবশে চুরি ক্রে যেই ছুরজন॥ পাষাণকুতেতে যায় দেই ছ্রাচার। ব্যাধিএত হয়ে ভূব্দ,জন্ম পুনর্কার॥ যে জন ভকণ করে বেশ্চার ওদন। লালাকুও নর্কেতে যায় দেই জন॥

কাংস্থপাত্র চুরি করে যেই ছরাচার। রোমসংখ্য বর্ষ ভোগ শিলাকুখে তার॥ অবশেষে অস্ক হয়ে জ্বেম ধরতিলে। যাতনা সতত পায় জন্তরে জন্তুরে, 🎉 বিপ্র হয়ে মেচ্ছধর্মী হয় যেই জন। অসিকৃত নরকেতে তাহার পতন ঘদদৃত তারে কট দেয় অনিবার। রোমসংখ্য বর্ষ তথা থাকে ছুরাচার # তিনবার জন্মে পরে পৃশুরূপী হরে। রুফ সর্প হয় শেষে কাননেতে গিয়ে । অবশেষে তালতরু হয় তিনবায়। তবে ত পাপের ক্ষয় শান্তের বিচার॥ ধাতা আদি শস্ত চুরি করে যেই জন। তাদুল সর্ধপ আদি করয়ে হরণ॥ তাহার দেহেতে থাকে যত রোমচয়। চূর্ণকুণ্ড নরকৈতে তত বর্ষ রয়॥ পরদ্রব্য লয় যেই করিয়া বঞ্চনা। চক্রকুণ্ডে পড়ি পায় দারুণ যতনা। সহত্র বরষ তথা করিয়া যাপন। কলুর আগারে শেষে লভয়ে জনম॥ তিনবার হবে কলু সেই পাপীবর। ব্যাধিএন্ত হয়ে পাবে যাতনা বিশুর। বংশহীন হবে শেষে সেই মূঢ়মতি। অন্তিমে করমবশে লভিবে দুর্গতি॥ ' আত্মীয় বান্ধব হেরি যেই অভাজন। অভিমানে দ্বণাবশে ফিরায় বদন ॥ তাহার হুর্গতি হর ঢক্রকুতে পড়ে। এবযুগ পায় কট তাহার ভিতরে ॥ অঙ্গহীন হয়ে শেষে জন্মে সাতবার। সপ্ত জন্মে বংশে কেছ নাছি থাকে তার॥ বিকৃর শয়নকালে যেই তুরাচার। কচ্ছপের মাং**স সুখে ক**র<mark>য়ে আহার॥</mark> কুর্মাকুণ্ড নরকেতে যায় দেই জন। অযুত বরষ তথা করয়ে যাপন॥ কচ্ছপ হইয়া শেষে জন্মে সাত্ৰার। কত যে যাত্ৰা পায় কি কহিব আর॥ রত চুরি মংস্টুরি করে যেই জন। ভদকুও নরকেতে তা**হার পতন॥** সহস্র বর্ষ তথা অবস্থান করি। সাতবার জন্মে শেষে মূষারূপ ধরি॥ তবে ত পাপের কয় হইবে তাহার। কহিলাম সত্য সত্য শাস্ত্রের বিচার । সুগন্ধী হরণ করে যেই অভাজন। দগ্ধকুণ্ড নরকেতে তাহার পতন॥ দারুণ বাতনা পার নরক ভিতরে। যমদূত অগ্নি দিয়া পুড়াইয়া মারে ॥ যেই জন হিংসা করি কিন্তা বল করি। অপরের ভূমি কিন্তা বাটী লয় হরি॥ তাহার পাপের কথা না যায় বর্ণনা। তপ্ততিলকুণ্ডে পড়ি দে পায় যাতনা॥ তৈলেতে তাহার দেহ ভাজা ভাজাহর। অনাহারে রহি তথা মহাক্ষ সয়॥ মন্বস্তুর কাল তথা করয়ে যাপন। যমদূতগণ করে নিয়ত তাড়ন।। অবশেষে অনিপত্র নরকেতে ফেলে। চৌদ্দ ইন্দ্রপাত কাল রহে সেই স্থলে॥ রোববশে ব্রন্ধহত্যা করে যেই জন। অসিপত্র কুওমাঝে তাঁহার পতন। সদত পীড়ন কুরে থমের কিঙ্কর। আর্ত্তনাদ করে কত অতি ঘোরতর II भव्य खत काल ज्थां कतिहा यापन । श्कतर्यानिष्ठ लाख लजर जनम।।

্পরের গৃহেতে যেকা অমি করে দান। ক্রধার কৃত্তে তার হয় অবভান।।
অযুত্বরষ্পরে প্রেজপ ধরি। বিষম যাতনা পায় মূলাহার করি।। সপ্তজন্ম এইরূপে করি অবস্থান। মানবরূপেতে ভূমে করয়ে পরা।।। শ্লরোগে অভিভূত হয় যেই জন। ২প্ত জন্ম এইরপে করিবে যাপন।। অবশেষে সপ্ত জন্ম ক্ষ্ঠরোগী হয়। দারুণ যাতনা পায় বিদরে হৃদয়। ·তবেত পাহপর ক্ষয় হইবে তাহার। কহিলাম সার কথা শাস্ত্রের বিচার॥ বিপ্রজনে তৃচ্ছ করে যেই অভাজন। অথবা পরের নিন্দা করে যেই জন।। স্থচিমুখ নরকেতে হয় তার গতি। তিনগ্গ পায় কট করি অবস্থিতি॥ অবশেষে সপ্ত জন্ম ভুজস্বন হয়। ভদকীট হয়ে পরে সপ্ত জন্ম রয়।। রশ্চিক রূপেতে শেষে ধরিয়া জনম। দারুণ যাতনা রাশি পায় সর্ব্বঞ্চ।। ভিভিয়ানে মৃত্ত হয়ে পরের আগারে। প্রবেশিয়া গৃহভক্ষ যেই জন্ করে॥ ছাগরপে মেবরপে ধররে জনম। কত কট পায় তাহা কে করে বর্ণন।। মৃত্যুকালে ব্দদূতে প্রশীড়িত করে। দারুণ যাতনা পেয়ে কান্দে উক্তৈঃস্বরে॥ তিন যুগ বত কট পেয়ে নিরন্তর। ব্যাধিগ্রন্থ হয়ে জন্মে ধবণী ভিতর।। ্**সপ্ত জন্ম গোপগৃহে জন**ম লভিয়া। দারুণ যাতনা পায় ব্যাধিতে ছুবিয়া।। অবশেষে দার! পুত্র বন্ধু আদি জন। বিহীন হইয়া কট পায় সর্কাশণ।। **জ্ববুদ্বের চুরি করে যেই দুরাচার। বজুমুখ নরকেতে বসতি তাহার।।** একষুগ ছখঃ ভোগ করিয়া তথায়। মানবরূপেতে পুন ঘাইবে ধরার॥ আৰহুরি গজচুরি করে থেই জন। গজদংফ্র নরকেতে যায় দেই জন।। যমদূত গজদত্তে করয়ে প্রহার। শতবর্ষ তথা থাকি করে হাহাকার।। তিন জন্ম হবে শেষে গজরূপ ধরি। মেচছরপে তিনবার ঘাবে নরপুরী। তৃষ্ণার কাতর হয়ে যাদ কোন নর। জলাশয়ে জলহেতু যায় ক্রততর।। ভাহার ব্যাঘাত ক:র যেই ছুরাচার। গোমুখ নরকে হবে গমন তাহার।। মন্বস্তর কাল তথা করিয়া বসতি। দারুণ যাতনা পাবে সেই মূচ্মতি।। 'অবশেষে ধরাতলে করিয়া গমন। দরিদ্র-গৃহেতে পুনঃ লভিবে জনম।। রোগী হয়ে চিরত্বঃখ পাইবে তথায়। হেরিশে তাহার প্রঃশ্ন বক্ষ ফাটি যায়। গ্রুহত্যা ব্রন্নহত্যা করে যেই জন। অগম্য। নারীর সঞ্চ করে সর্বক্ষণ। খেই রিপ্র তিন সন্ধ্যা সন্ধ্যা নাহি করে। পারদান লয় যেই গিয়া তীর্থপুরে ॥ শুটের গুহেতে যেই করয়ে রন্ধন। রুদলীর পতি হঠিয় করয়ে রুমণ।। ভিকৃ কৈরে হিংসা করে যেই অভাজন। জ্রণহত্যা মহাপাপ করে সর্বকণ।। ए। त भार्य निख इव स्मरे इवानित । यस्तृष्ठ नान्। यक्तुष्ठ कत्रस्त्र थरात ॥

কখন কণ্টকে ফেলে কভুফেলে জলে। পাবাণে নিকেপ করে কভু তগুভৈলে। অগ্নিতে পুড়ায়ে মারে তাহারে কখন। তও লোহে পড়ি কট পায দেই জন। लक दर्श अहेत्रारंभ ति इति। हिना भट्ट स हिला करण का मंख दात्र 🎼 धितिरवक मञ्जात गृकत-जनम। मञ्ज वात इरव शरत काल पुककमा অবশেষে বিষ্ঠাকুতে প্রভি ছ্রাচার। ষাইট হাজার বর্ষ করে হাহাকার 📢 অবশেষে কৃষ্ঠরোগী হয়ে ধরাতলে। জনম ধরিবে পুন: দরিদ্রের ঘরে॥ তাহার বংশের যত সন্তান সন্ততি। যক্ষারোগী হয়ে ধ্বংস পাবে শীব্রগতি 🎎 জনেক তাহার বংশে ন। রহিবে সার। অকালে প্রাণের পত্নী হইবে সংহার॥ তবেত তাহার পাপ হবে বিমোচন। কহিলাম সত্যকথা শাস্ত্রের বচন ॥ মহাপাপী যেই জন ধরণী ভিতরে। পরের অহিত চেন্টা নর্ফেণ করে। অন্তিম কালেতে তারা না পায় উদ্ধার। হুস্তর নরকে পড়ি করে, হাহাকার॥ অশেষ যাতনা পান শমনের পুরে! অনন্ত হাজার মুখে বলিবারে নারে ॥ একেবারে সম্দিরা শত দিবাকর। সন্তাপে পুড়ায়ে মারে পাপী-কলেবর॥ খতপ্র বালুকাকুণ্ডে ফেলিয়া ভাষারে। যমদূত দেয় কন্ট দণ্ডের প্রছারে॥ ক্স্ত্রীপাকে পড়ি কেছ করে হাহাকার। যমদুত দণ্ডাঘাত করে **অনিবার**। শাণিত অসির পরে পড়িকোন জন। রক্ষরক বলি করে নিয়ত রোদন। কেহ কেহ অসিধার নরনেতে পড়ি। দারুণ যাতনা পেরে যায় গড়াগড়ি॥ স্থানে স্থানে পাপীগণে সারমেয়গণ। মনের স্থাবত ছিঁড়ি করিছে ভক্ষণ । স্থানে স্থানে পাপীগণ মশকদংশনে। দারুণ যাতনা পেয়ে কান্দে প্রাণ্পণে ॥ . মলমূত্র-ব্রদেকেহ থাকি অনিবার। উদ্ধার কারণে যতে দিতেছে সাভার। কেছ কেই মলমধ্যে হয়ে নিমগন। রাশি রাশি ক্রমিকীট করিছে ভোজন।। কেহ কেহ অতিতপ্ত বালুকায় পড়ি। যাতনা পাইয়া তাহে যায় গড়াগড়ি॥ তাপেতে সুসিদ্ধ তার হয় কলেবর। বদন তুলিয়া কহে কোথা হে ঈশর॥ তথাপি উদ্ধার নাহি পায় পাপীগণ। পাপের উচিত ফল কে করে খণ্ডন।। স্থানে স্থানে কত পাপী শোণিত্তর কূপে। পড়িয়া ডাকিছে ঈশে মনের সন্তাপে॥ পুঁজ রক্ত মজ্জা আদি করিছে আহার। তথাপি যমের হাতে নাহিক উদ্ধার ॥প্রখর তপন তাপে কোন কোন জন। দগ্ধীভূত হয়ে সদা করি-ছে রোদন। বর্ষিতে শিলাগাণি কংহার উপর। পড়িছে কাহারো নিরে পড়গনিকর। কাহার উপর হয় অনল বর্ষণ। কেহ কেহ কণ্টকেতে ছতেছে পতন। কারকুংখু পঢ়িকত পাতকীনিকর। কারজল পান্করি বিষয় অওর। खोरिर वान जानी जाकिए मचट्न। भाशीरमत जार्चनाम कि खनित्व कार्दन॥

ভপ্ত লৌহপিও কারে। মুখমধ্যে যায়। রক্ষ রক্ষ বিলি তারা কান্দে উভরায়॥
ছানে স্থানে লক্ষ লক্ষ পাপাত্মা-নিকর। মলকুওে পড়ি কন্ট পায় বহুতর॥
রোববশে যমদূত আসিয়া স্থানে।বিধিছে লোহার কাঁটা কাহারো লোচনে।
এইরপে কত কন্ট পায় পাপীগণ। কার শক্তি আছে তাহা করিবে বর্ণন॥
তওলোহ রেতকুও বিষ্ঠাকুও আর। ক্রকচ-ছেলন তও-অঙ্গার দুর্ব্বার॥
ইত্যাদি নরক বহু অতি ভয়য়র। তাহাতে ঘাতনা পায় পাপাত্মানিকর॥
মরকে পড়িয়া পায় যেরপ যাতনা। সহস্র বর্বে তাহা কে করে বর্ণনা॥
নিজকুত কর্ম্মকল ভূঞ্জে জীবগণ। কে পারে খণ্ডিতে বল বিধির লিখন॥
বেমন করম তার ফল সমুচিত। অবগ্র ভূগিতে হয় বিধির লিখিন॥
দ্বিষ্ঠ ধরমপথে যাহার অন্তর। তারে নাহি যেতে হয় শমন গোচর॥
শমনের ভয় সেই অবহেলে নাশে। ভবপারে চলি সেই যায় অনায়াসে॥
শাত্রেব ধর্মপথে সবে রাখ মন। অন্তিমে হেরিবে সেই নিত্য নিরঞ্জন॥

## অফটতত্ব রিংশ অধ্যায়।

শমনমার্গনির্ণয়।
সন্থকুমার উবাচ।
শমনস্য মহামার্গো ভয়াবহন্চ তুর্গমঃ।
গচ্ছন্তি সাধবঃ সর্কে সুখং তৃপ্তিসমাকুলাঃ॥

এতেক বচন শুনি তাপস নিকর। জিজ্ঞাসা বিধির সূতে করে তার পর ॥
শুন শুন ওহে প্রভু করি নিবেদন। শুনিলু তোমার মুখে জপুর্ব্ব কথন॥
গ্রেখন শুনিতে যাহা হতেছে বাসনা। রূপা করি কহি তাহা পূরাও কামনা॥
জীবগণ যবে দেহ করে বিসর্জ্জন। যমদুতে লয়ে যায় শমন ভবন॥
কোন্ পথে লয়ে যায় কহ মহামুনি। মনে মনে আকিঞ্চন সেই কথা শুনি॥
কোহ পথ হয় খবে কেমন প্রকার। সেই কথা কহ দেব করিয়া বিস্তার॥
খাবিদের বাক্য শুনি বিধির নন্দন। প্রফুল্লবদনে কন শুন খাবিগা॥
জিজ্জাসা করিলে যাহা অতি মনোহর। শুনিলে সে কথা হয় পবিত্র অন্তর॥
ামন শুনেছি আমি শক্তর সদনে। বলিব বিস্তারি জাহা শুন একমনে॥
ামার্গ প্রশীষণ অতীব তুর্গম। প্রখে কিন্তু যায় গোহে পুণ্যবান্গণ॥
বিন ধরিয়া যারা সংসার-মাঝার। প্রকার্য্য ভকতিভাবে করে অনিবার॥

উ।ছাদের পক্ষে পৃথ নহৈক ছুর্গ্য। মনস্থা যান ভারা শ্মনভবন॥ পাপে পরিপূর্ণ যাবা অতি নীচাশয়। ছঃসহ যাতনা পায় সেই নরচয়।। লকৈক যোজন হয় পথের বিস্তার। ভয়ঙ্কর তুরগম অতি, তুর্নিবার 🖁 জপ তপ দান ধর্ম করে যেই জন। মহাস্থাখে সেই পথে সে করে গমন 🛊 সদা পাপে রত থাকে যেই চুরাচার। তার পক্ষে যমমার্গ অতীব চুর্বার॥ দেহত্যাগ করে যবে পাপাত্মানিকর। প্রেতমূর্তি ধরে তারা অতি ভয়**ন্তর**। অবশেষে যমদুত আরক্ত নয়নে। তাদের লইয়া যায় যমের **সদনে।**। কত কট পায় পথে সেই পাপীগণ। অনত অশক্ত তাহা করিতে বর্ণন। অসংখ্য ঘাতনা পায় ক্লতান্ত নগরে। সে যাতনা কিবা আর বলিব সবারে। পিপাসায় কণ্ঠ শুক্ষ তাহাাদের হয়। ঘন ঘন থব থর কাঁপে পাশীচয়॥ যমদূতগণ ঘারা ভীষণ আকার। পথেতে পাপাত্মাগণে করয়ে প্রার । ব দারুণ যাত্রা আর নারি সহিবারে। হাহাকার করি সবে কান্দে উ**চ্চেঃসরে॥** া তাহাদের আর্ত্তনাদ করিলে প্রবণ। বজু সম বাজে কাণে অতি বিভীষণ॥ কিছতে ন। করে দরা যদ্তগণ। কাটার ভিতর দিয়া করে **আকর্ষণ॥** আরক্ত লোচনে করে মুনলগহার। যাতনা পাইযা চেষ্টা করে প্লাবার॥ পলাতে না পারি সদা করে হাহাকার। দূতেরা আঘাত তাহে করে অনি-বার॥ যমমার্গ ছুরগম কি করি বর্ণন। মন দিয়া শুন ওহে য**ু মুনিগণ ॥** বুর্গম যমের পথ অতি ভযক্ষর। কোথা বালি কোথা ধূলি কোথাও অনল।। কোথা কালা বহ্নিকণা কোথ। অগ্নি জ্বলে। তীক্ষ্ণার পাষাণাদি পড়ে পদতলো। কোথাও জলদগণ মুফলের ধারে। বর্ষিছে ঘন ঘন পাপীর উপরে॥ স্থানে স্থানে তরবারি অতি ধরশাণ। দেখিলে উয়েতে কাঁপে পাণীর পরাণ 🕊 স্থানে স্থানে বর্ষিছ কর্ষ্ম বিষ্ম। জ্বলন্ত অগ্নির শিখা হয় বরিষ্ণ॥ ম্বুল স্থুল লোহসূচি আছে স্থানে স্থানে। বিধিছে ভীষণ বেগে পাপীর চরণে। কণ্টকের গাছ কত ভীষণ আকার। স্থানে স্থানে অতি ঘোর ভীম অন্ধকার। নড় মন্ড শান করি যত তরুগণ। পাপীর উপরে সদা হতেছে বর্ষণ।। ণাঝে মাঝে ঘমদূত, মহাবলাধার। করিতেছে পাপীগণে মুকার প্রহার॥ সারিদিকে চাহে পাণী দিশাহারা হয়ে। হাহাকার করি কান্দে ব্যাকুলুছদয়ে যেরপ ভীষণ পথ বলা নাহি যায়। কি করিবে পাপীগণ ভেবে নাহি পার।। ষানে স্থানে শ্লপোতা কক্ষরের গাদি। বিরল মাটীতে ঢাকা আছে নিরবধি शांत चांत मङ्गाकाम गछ . शंकशंग । नितं छत यमभार्श कति एक ध्यम ॥ তাহাদের পদতলৈ হত পাপী; রয়। দলিত হইয়া কান্দে ব্যাক্লখণ্য।।

ু উঠিচঃখনে আর্ডনাদ করে অনিবার। কোথা পিত রক্ষ বাল করে হাছাকার। শ্রুবিন স্থানে পাপীগণে গলেতে বান্ধিয়া। নিরপ্তর যমদূত নিতেছে টানিয়া। কণ্টক ফুটিছে পৃষ্ঠে আহা মরি মরি। অঙ্কুশ আঘাত করে তাহার উপরি॥ তুই চকে বছে বারি নাহিক বিরাম। থর এর কাঁপে অঙ্গ কাঁপিছে পরাণ॥ ছিদ্র করি রক্ত বান্ধি নাসিকাবিবরে। নিতেছে কাহাকে টানি শ্যন-গোচরে খানে স্থানে বালিরাশি অতি বিভীষণ। প্রনহিলোলে উঠি ছাইছে গগন॥ সেই সব ধূলিজাল পশিয়া বদনে। কত যে দিতেছে কট না যায় কছনে॥ পর্মে কওঁক কত অতি তীক্ষধার। চরণে বিশ্বিষা কন্ট দিতেছে কাছার। , আবিরল রক্তধারা হতেছে বর্ষণ। রাহাকার করি পাপী কান্দে ঘন ॥ ्रेष्ट्रात्म प्राप्त निनाइष्टि পाभीत उभात । यूमन मगान धारत भरफ नित्रस्त ॥ কোষাও তুরস্ত শীত সহা নাহি যায়। লাগিলে শরীরে যেন প্রাণ বাহিরায়॥ ত্বরত্ত নিদাঘ কোথা পুড়াইয়া মারে। অগ্নিসম লাগে মেন পাপীর শরীরে॥ 'শুওপ্ত দীসকরাশি আছে স্থানে স্থান। তাহাতে পড়িয়া জলে পাপার পরাণ ্পিপাসায় শুষ্ক কণ্ঠ বাক্য নাহি সরে। ফণে ফণে মূর্জ্য হযে ধরা তলে পড়ে॥ দুতের প্রহারে কেহ খোড়া হয়ে যায়। শীদ্রগতি একপদে মনপুরে গায়॥ রক্তমাখা কারো অঙ্গ চক্ষে বহে বারি। তাড়িত হইবা চলে শমনের পুরী॥ **শীসা কর্ণ ছিল্ল হা**য়ে যেতেছে কাহার। কান্দিয়া কান্দিয়া চলে যুমের আগার • कि বলিব পথের কথা করিলে স্মরণ। পরাণ কান্দিরা উঠে কাতর জীবন॥ 'মে কটে পথেতে যায় পাপাত্মা নিকর। মরিলে ভযেতে কাঁপে জীবের অন্তর এইরেপে মহাকউ-পেয়ে পাপীগণ। বিষয় বদনে যায় শমন ভবন॥ ভাহাদের কট যদি নযনেতে পড়ে। পাষাণ-হৃদয় হলে অমনি বিদরে॥ অধিক বলিব কিবা ওহে ঋষিগণ। হেন কট নাহি আর এতিন ভূবন। স্থ্যম ভৌষণ পথ অতীব তুর্বার। তাহাতে পাপাত্মাগণ না পায় উদ্ধার॥ • কিন্তু এক কথা বলি শুন ঋষিগণ। য'হারা সতত ধর্মে আছে নিমগন॥ শ্রত্থে বিনাশিতে যারা নিরন্তর। একচিত্তে এক্মনে সন্তোষ অন্তর॥ "ভক্তিভাবে দেবার্চনা করে যেই জন। কুপথে কখন নাহি যায় যার মন॥ কটুভারা মিধ্যা কথা মেই নাহি জানে। কামক্রোধহীন বৈই মানব-ভবনে॥ পরনিদা পর্যানি না করে কখন। সমভাবে সর্বজীর করে দরশন॥ দীম ছঃখী অনাহাত্তে বহুধন দেয়। ছলে বলে কভু নাঁহি পরবিত্ত নেয়॥ কাণা খোঁড়া দেখি নাহি করে উপহাস। যাহার যশের বুঁছা জগতে প্রকাশ।। অভিমান কভু নাহি যাহাব হৃদয়ে। সম্ভাবে করে ধুয়া যত জীব্চয়ে।

জহিংসা পরম ধর্ম জানে যেই জন। পিতৃমাতৃ গুরুজনে ভক্তি অনুক্ষণ॥ जन्ननान विकासन विकासन करत। धत्र कत्रम महा विवासिनि हरत 🏨 এমন মাহাত্মা যেই অবনী-মাঝার। স্তুখেতে সে জন যায় যমের আঁগার 🛊 জ্ঞাত আছি মরণাত্তে যত জীবগণ। প্রথমতঃ যমপুরে করিবে গমন 🖟 বিচার করিয়া পরে যন মতিমান। পাঠাবেন জাবগণে সমুচিত স্থান # অবশেষে তথা গিয়া गানব সকলে। ভূঞ্জিবেক শুভাশুভ নিজকর্ম ফলে 🎼 এত বলি ঋষিগণে বিধির নন্দন। কহিলেন শুন শুন ওছে মুনিগণ # দানশীল যেই জন পর্মপরায়ণ। তাঁহারা পরম সুখী ওছে মুনিগণ॥ আনন্দ সাগরে তাঁব। ভাসিতে ভাসিতে। ঘনমার্গ দিয়া যান শমনপুরেতে॥ কণ্টকে আরত পথ যথায় তুর্গ। স্থকোমল তৃণ সম হেরে সেই জন॥ স্কুতপ্ত দীসক ঢালা আছয়ে যথায়। কম্বলে বিস্তৃত হেন অনুভব<sub>্</sub>তা<mark>য় ্র</mark> পাপীগণ ছেরে যথা অঙ্গার বর্ষণ। ধার্ষিক দেখেন তথা কুমুম পতন। বেই জন ধরাধামে করে অন্নদান। পরম স্থাখতে তিনি ঘমপুরে যান॥ মুদাদ যতে, দ্রন্য জতি অনুপম। প্রিমধ্যে যেতে যেতে ভুঞ্চে সেই জনা। পথিমণ্যে য়া আছে ত্র্বার ককর। কুত্রম সদৃশ হেরে ধার্মিকপ্রবর । বারিদাতা তুর্দাত। ধর্মাত্মনিচয়। ভুঞ্জিতে ভুঞ্জিতে সুধা যান য্মালয়। যেই জন ধরাতলে বফদান করে। ভূষণে ভূষিত হয়ে যায় যমপুরে॥ অন্ধকারে পূর্ণ পথ যথায় তুর্গম। আলোকে পুরিত তারা করেন দর্শন।। অলম্কার দান যিনি করে মহীতলে। উড়াযে ফশের ধুজা যায় যমপুরে॥ গাভাদান বিপ্রগণে করে যেই জন। ব্যালয়ে যায় সুখে সেই সাধুজন॥ ভূমিদান করে যেবা গৃহদান করে। যমদৃত নেব তারে শিরে ছাতা ধরে 🛭 স্বর্গের অপ্সরা যত আসিয়া ত্রায়। দিব্য রথে নিয়ে তারে যমপুরে যায়। পথিমধ্যে কত লীলা করিতে করিতে। আনান্দ লইযা যায় যমের পুরেতে॥ অশ্বদান রথদান করে যেই জন। অশ্বে রথে চড়ি যায় শ্মন-সদন । ফলদান পুজ্পদান যেই তন করে। প্রম তৃপ্তিতে যায় যমের আগারে॥ তাখুল প্রদান করে যেই মহাজন। হৃষ্টপুষ্টকলেবরে দে করে গমন। গুরুজনে যেই জন অতি ভক্তি করে। যমদূত তার কাছে থাকে করযোড়ে। বিদ্যাদান শিক্ষাদান করে যেই জন। ছর্গম পথেরে সেই ছেরয়ে হুগম॥ অধিক বলিব কিবা ওছে মুনিগণ। সাধুগণ স্থাে যায় শমন ভবন॥ যমদুত পিছু পিছু ধীরে ধীরে যায়। সাধ্য কিবা কোন কথা বলিবে তাহায়॥ এইয়পে সাধুগণ যুদপুরে গিয়ে। র্মন-গোচ্রে গিয়া রহেন দাঁড়ায়ে॥

ুমিউভাষে যম তারে করি সম্বোধন। প্রথের পরম স্থান করয়ে অর্পন। জিধিক বলিব কিবা তাপদ-নিকর। বলিলাথ সব কথা স্বার গোচর॥ নতুবা উপায় কিছু নাহি দেখি আর। হৃদয়ে তাহার কহে চির অন্ধকার॥ পুরাণে সুধার কথা অতি মনোহর। শ্রবণ করিলে হয় পবিত্র অন্তন। र्षरे जन धक्रमत्न अधायन करत। अवरहत्न जरत महे ज्वभातावारत॥ একমনে যেই জন করয়ে প্রবণ। তাহার যতেক পাপ হয় বিনাশন॥ ভীর্থকেতে যেই জন করিয়া গ্রমন। একমনে এই সব করে অপ্যয়ন॥ কোটিজয়-পাপ তার বিনাশিত হয়। নিঃসন্দেহ হয় তার ভববস্ক্ষয়। বিদ্যার্থী হইয়া যদি অধ্যয়ন করে। অথবা এবণ করে অতি ভক্তিভরে॥ <sup>ই</sup>বিদাবিশারদ হয় সেই সাধুজন। শাস্ত্রের বচন মিথ্যা নহে কদাচন॥ ধনার্থার ধন হয় প্রদাদে ইহার। পুলার্থা লত্য়ে পুল শাস্ত্রের বিচার॥ কামার্থীর কাম পূরে নাহিক সংশয়। চতুর্বর্গপ্রদ ইহা জানিবে নিশ্চয়॥ অতএব কি বলিব ওহে ঋষিগণ। একখনে ধর্মকথা করিও প্রবণ॥ ধর্মের সমান বন্ধু নাহি কেহ আর। একনাত্র ধর্ম হা জগতের সার॥ ধর্ম হতে সব হয় জানিবে অন্তরে। ধর্ম হতে তত্ত্তান সাধু লাভ করে॥ অতএব ধর্মপথে সবে রাখ মন। ধর্মোর সমান নাহি এ তিন ভুবন॥ জিজ্ঞাসিয়াছিলে যাহ। তাপদনিকর। বলিকু সে সব কথ। দবার গোচর॥

# উনপঞ্চাশত্তম অধ্যার।

আত্মবোধ।

সনংকুমার উবাচ।

কৈশাসশিখরাসীনাং জগন্মাতাং মহেশ্রীং। ঘদ্যত্বাচ দেবেশস্তত্ত বক্ষ্যে সমাসতঃ॥

বিধিস্তমুখে শুনি যাবত কাহিনী। পুলকে প্রিতহয় যত মহামুনি। পৌবিনয়ে ধীরে ধীরে করি সম্বোধন। পুনশ্চ জিজ্ঞাসা করে ওহে মহাত্মন॥ তত্ত্বজান কারে কহে কহ মহামুনি। মনে মনে আকিঞ্চন, সেই কথা শুনি॥ কিরপেতে সেই জ্ঞান লউয়ে অন্তরে। সেই কথা বল এইব সবার গোচরে॥ খবিদের বাক্য শুনি বিধির নন্দন। কহিলেন শুন শুন ওহে ঋষিগণ॥ এই কথা কোনকালে মহাত্ম। শঙ্কর। বলেছিল মনমুখে শঙ্করী-গোচর॥ সেই কথা স্বাপাশে ক্রিব কীর্তন। মন দিয়া শুন তাহা ওহে ঋষিগণ।।

भक्ती अक्ना विन यूर्धत जानता किकानिताहिल हेश भक्तत-नएटन॥ দেবদেব ওহে প্রভু ভূমি পশুপতি। তোমার চরণে এবে আমার মিনতি॥ তথ সব তত্ত্বজ্ঞানী নাহিক সংসাত্তে। অতএব হুন শুন নিবেদি তোমারে। य कथा जिज्जामि তোমা ওছে भिक्षानन। जामात निकटि তाहा कतह की छन्।। দয়াময় তুমি দেব জগৃত-সংসারে। অধিক বলিব কিবা তোমার গোচরে 🗓 যত্তপি করুণা থাকে আমার উপর। রূপা করি বল তবে ওহে দিগদার। এত শুনি দিগম্বর মধুর বচনে। কহিলেন শঙ্করীরে প্রিয় সম্বোধনে॥, তুমি মম প্রিয়তমে শুন গো সুন্দরি।তোমার লাগিয়া দেহ ত্যজিবারে পারি॥ তোমার নিকটে বল কি আছে গোপন।জিজ্ঞাসিলেযাহা তাহা করিব কীর্ত্তন॥ অতি গোপনীয় হলে তোমার গোচরে। বর্ণন করিব তাহা অতীব সাদরে 🏨 এত শুনি মিউভাবে পাশবতী সুন্দরী। কহিলেন ধীরে ধীরে ওছে ত্রিপুরারি জীবের প্রকৃত বন্ধ কিবা কিবা হয়। সেই কথা কহ দেব হইয়া সদয় ! এত শুনি মিউভাবে কহে পঞ্চানন। শুন শুন মহাদেবি করহ প্রবণ। বিষয়ানুরাগ ইয় ইহার উত্তর। অধিক বলিব কিবা তোমার গোচরু॥ জীবের নিগড় বন্ধ এই মাত্র হয়। বলিলাম তব পাশে জানিবে নিশ্চরু॥ এত শুনি পুনঃ কহে পার্বতী দুন্দী। কাহারে মুকতি কহে কহ ত্রিপুরারি॥ শুনিরা উত্তর করে দেব পঞ্চানন। বিষয় বৈরাগ্য হয় মুক্তির কারণ। নেবী কহে কারে কহে নরক ভীষণ। দেহ-অভিমান উহা কহে পঞ্চানন॥ স্বর্গের সোপান কিবা জিজ্ঞাসে পার্কাতা। উত্তর করেন তাছে দেব পশুপতি॥ স্বর্গের দেপান হয় বাসনার ক্ষয়। অন্তরে জানিবে দেবি নাছিক সংশয়। পুনশ্চ পার্বতী কহৈ ওছে পঞ্চানন। সংসার যাতনা কিসে হয় বিনাশন॥ শিব কহে শুন শুন আগার বচন। করিলে গুরুর মুখে বেদান্ত শ্রবণ। তাহে যেই আত্মনোধ জনমে অন্তবে। ভাহা হতে তরা যায় ভ্রপারাবারে । এত শুনি কহে দেবী ওহে পঞানন। মোক্ষের প্রকৃত পথ করহ বর্ণন॥ এত শুনি ধীরে ধীরে কহে পশুপতি। বলিতেছি বিবরিয়া শুনহ পার্কতি॥ আত্মবোধ কথা যাহা করিনু কীর্তন। উহার দৃঢ়তা হয় মুক্তির কারণ॥ পুনশ্চ জিজ্ঞানা কুরে পার্বেতী ফুলরী। নিবেদন তব পদে শুন ত্রিপুরারি॥ নরকের শ্রেষ্ঠ দ্বার কোন্টা বা.ইয়। সেই কথা মম পাশে দেহ পরিচয়॥ এত শুনি शीदत शीदत কহে পঞ্চানন। শুন দেবি তব পাশে করিব কীর্ত্তন॥ কামিনী-প্রসক্তি, হয় • সর্বঞ্জে দ্বার। নরকের পথ উহা শান্তের বিচার॥ এত শুনি দেবী কৈছে ওহে প্ৰশানন। প্ৰকৃত স্বরগ কিবা করছ কীর্ত্তন।

স্বেদৰ কহে কে বালৰ কৈশাসবাসিনি। অহিংসা প্রকৃত স্বর্গ এইয়াত্র জানি। पिनी -क्रांट **एन छन छट शक्षानन। भाकर्श ध**रे छव रहक्र प्रभान। देशांट अर्थेट निमा कान का यात्र। क्रशा कति मिर कथा वन्ह आयात्र॥ এত শুনি শিব কহে করহ প্রবণ। একমাত্র সমাধিত যোগী ঘেই জন॥ নির্বিদ্ধে বিরাজ করে সেই,মহাশয়। শান্তের প্রমাণ ইহা নাছিক সংশয়। ্রিক চ জিজ্ঞানা করে পার্বকী সুন্দরী। নদা জাগরিত কেবা কহ ত্রিপুরারি॥ **८एव कटर** मध वांका कतर धावन। मलमल् विटवकी रख़ (यह मराजन। সঙ্গা জাগরিত সেই নাহিক সংশয়। কহিনু তোমার পাশে শাস্তের নির্ণয়। 🅍 ত শুনি দেবী কহে শুন পঞানন। এই যে সংসারধাম হতেছে দর্শন। 🎘 থে ষেই জীবগণ করিছে বসতি। তাদের প্রকৃত শত্রু কোন্ মূঢ়মতি॥ 悔 নিয়া উত্তরে কহে দেব দিগম্বর। মহাশক্র হয় নিজ ইন্দ্রিয়-নিকর। দেবী কহে আচ্ছা দেব ইন্দ্রিয় সকল। যতাপি হইল শত্রু ওহে গুণাকর॥ ্রকাছাকে বলিব মিত্র করহ বর্ণন। শিব কহে সেই কথা করহ এবণ।। 🏿 সব ইন্দ্রিয়গণ যদি বশে রয়। পরম মিত্রের কাজ করে সমুদয়॥ 💞 শুনি দেবী কহে ওহে পঞানন। প্রকৃত দরিদ্র কেবা করহ বর্ণন॥ দৈৰ কহে ওগো দেবি এ ভব শংসারে।বাসনাতে জর্জ্জরিত যার হৃদি করে বিষয় দরিদ্র সেই নাহিক সংশর। বেদের লিখন ইহা শাস্ত্রের নির্ণয়॥ দেশী কছে পশুপতি কর অবধান। সংসারেতেত্তবে কেবা পুরুষ জীমান্।। 🌠 কহে ৩০গো দেবি করহ এবণ। যাহার অন্তর হয় সভোষে পূরণ॥ 🖟 🛍 ক্লুক্ত 🕮 মান্সেই জানিবে অন্তরে। তাহার সমান স্থা কে বল সংসারে॥ সৈপত সত্তোষ রহে অন্তরে যাহার। অনায়াদে তরে সেই ভবপারাবার॥ দুঃশ শোক তারে কভু ঘেরিবারে নারে। বিপদ নাহিক কভু আক্রমে তাহারে শিক্ত সে জুন রহে প্রসন্ন বদন। প্রকৃত শ্রীমানু সেই শান্তের বচন॥ ্রিত ভানি পুন কহে পার্কতী সুদারী। শুন শুন নিবেদন ওছে ত্রিপুরারি॥ ক্রিক্ত কোন্জন করহ বর্ণন। সেই কথা শুনিবারে মম আকিঞ্ন॥ ্রিছ ভূমি শিব কহে শুন গো সুন্দরি।জিজ্ঞাসিলে যাহা চাহা বিবরিয়া বলি। বিকি পুরুষকার ঘাহার অন্তরে। জীবন্ত সেই জন এ ভবসংসারে॥ 👣 তানি দেবী শিবে কছে পুনর্কার। নিলেদন ওছে প্রভু চরণে ভোষার॥ বিশাৰ বেলাও এই হতেছে দর্শন। অন্ত অসীম ইছা ওছে পঞ্চানন॥ क्षेत्र अग्रुष्ठ हेटथ दकाम् वछ दत्र। श्रकाम कतिया किन् वर्ग बेटरापत्र॥ अर्थ कार्त शास्त्र कार्य अध्यक्ष कर का का कर अर्थ देनि कति वर्गत ।

নিয়ত আনন্দপ্রদা নিরাশা পুনরী। প্রকৃত অমৃত সেই শুন সকুমারি॥ এত শুনি পুনঃ কহে পার্বতী ভবানী। সংসারের পাশ কিবা ওহে শূলপাণি॥ (एवं कट्ट कि विनव कत्रह अवग । ममजारे महाशाम माटकुत बंहन॥ পুনক্ষ জিজ্ঞাসে সতী ওগো শৃলপাণি। নিবেদন করি যাহা বল দেখি শুনি # মোহকরী সুরা কিবা কহ মহোদয়। সেই কথা শুনিবারে কুতৃকী হৃদয়॥ भित कटक कि विनवं छनत्। ७वानी । हेशत छेखत गांव कानित्व व्यमी ॥ হেন মোহকরা স্থরা আর কিছু নাই। ব ললাম তথ্য কথা এবে তব চাঁই। (एवो फरर वल (एथि ७८र ११कानन। अस रटा (भार-अस रहा तकान् अन ॥ দেব কহে কাম-অন্ধ যেই ছুৱাশয়। অন্ধ হতে মোহ-অন্ধ সেই জন হয়॥ কারে মৃত্যু বলৈ ইহা জিজাদে পার্কতী। অপযশ মৃত্যু তুল্য কহে পশুপতি॥ এত শুনি দেবা কহে ওহে পঞ্চানন। শিষ্য-উপযুক্ত কেবা করহ বর্ণন। দেব কহে শুন দেবি করিব বিস্তার। কপটতা নাহি যার অওর মাঝার 🕊 অকপটে গুরুভক্তি যেই জন করে। তাহারে প্রক্তুত শিষ্য জানিবে অন্তরে॥ পুন চ জিজ্ঞানে সভী ওহে পঞানন। এই যে বিশাল বিশ হতেছে দর্শন॥ ইথে চিররোগ কিবা কহ আওতোষ। শুনিযা হৃদয় মম লভুক সন্তোষ ! শিব কছে এই যে ভব হতেছে দর্শন। দীর্ঘরোগ এই ভব শাস্তের বচন ॥ (एवे) कटर তবে ইথে ঔবধ कि रया। भिव कटर शुन एपवि विल পतिहस ॥ সংসারস্থ সর্ববস্তুতত্ত্বের বিচার। প্রকৃত ঔষধ হয় জানিবেক সার॥ দেবী কহে এবে দেব কাহ বর্ণন। কিবা হয় বল ভূষণের বিভূষণা। শিব কহে শুন শুন ভবানী সুন্দরী। জিজ্ঞানিলে যাহা তাহা বিস্তারিয়া বলি। শীলত। সমান আর নাহিক ভূষণ। শীলতা থাকিলে আর কিবা প্রয়োজন॥ এত শুনি দেবী কহে শুনহ শঙ্কর। কি হয় প্রকৃত তীর্থ সংসার-ভিতর ॥ এত শুনি ধীরে ধারে কহে পঞ্চানন। মনের বিশুদ্ধি তীর্থ অতাব উত্তম।। উহার সমান তীর্থ আর কিছু নম। শাস্ত্রের বচন ইহা নাইক সংশয়॥ বিশুদ্ধ অন্তর যার জগত-দংসাবে। অন্য ে পে তার কিব। প্রয়োজন করে। অন্তরে পর্ম তীর্থ-বিরাজিত তার। অন্তিমে দে জন বায অমর-আগার॥ পুনত জিজ্ঞানে বেবী ওচে পঞ্চানন। বিজ্ঞানা করিব যাহা করহ বর্ণন।। এই দে সংসার ধাম দরশন হরী। ইথে পরিছেয় কিবা কহ মছোদয়॥ কোন বস্তু সংসারেতে করিবে বৃদ্ধিন। সেই কথা বিবরিদ্ধা কহ তিলোচন॥ এত শুনি মিট্ভাবে কহেন শক্ষর। শুন যাহা পরিহের সংসার ভিতর **॥** कामिनी कनक औत्र कतित्व वर्ष्यन। अहे पूरे मश्मादत्व अनिष्ठे कात्रा ॥

्रियो करह जान जान अरह जिल्लाहन। शूनक जिज्ञामि यांचा कंत्रह वर्गन ॥ मः नादत क्रमभ धति मानव-निकत। नर्कना 'छनिटव क्रिवा क्र निगयत ॥ एव कंटर अन अन शिक्षिका चुम्पती। जिल्ला शिल यांश जांश विनय विखाति॥ সংসার-ধানেতে জন্ম করিয়া গ্রহণ। গুরুমুখে উপদেশ করিবে প্রবণ॥ নিরস্তর ভক্তি রাখি আপন অন্তরে। গুরুমুখে উপদেশ শুনিবে সাদরে॥ পুনক জিজ্ঞানে দেবী ওহে পঞ্চানন। এক্ষণাভ কিসে হয় কহ মহাত্মনু॥ শিব কছে জিজ্ঞাসিলে সার হতে সার। বলিতেছি সেই কথা করিয়া বিস্তার॥ সর্বাদা সাধুর সঙ্গ করে যেই জন। সতত যে জন করে ইন্দ্রিয়-দমন॥ হা ভিন্ন যেবা জানে তত্ত্বের বিচার। সর্বাণা সভোষ যার স্থানর মাঝার। অক্ষলাভ হয় তার নাহিক সংশয়। শাস্ত্রের বচন ইছা কভূ মিথ্যা নয়॥ 'এও শুনি দেবী কহে ওহে দিগদর। কোন জন সাধু হয় সংসার ভিতর॥ শাধু বলি পরিগণ্য কোন্মহাত্মন্। প্রকাশ করিয়া তাহা বল পঞ্চানন।। এত শুনি মিষ্টভাষে দেব পশুপতি। দেবীরে উত্তর করে ওনহ পার্ব্বতী।। আবিত্যাজনিত মোহ করিয়া বর্জ্জন। বীতম্পূহ বিষয়েতে হয় যেই জন॥ পারম মঙ্গলময় যিনি নিরঞ্জন। তাঁহাতে পরম নিষ্ঠ হয় যেই জন॥ জগতে প্রকৃত সাধু সেই জন হয়। শাস্ত্রের প্রমাণ ইহা নাহিক সংশয়॥ এত শুনি হাসি হাসি পার্ব্বতী স্থলরী। পুনশ্চ জিজ্ঞাসা করে ওহে ত্রিপুরারি॥ মনুষ্যের নিত্যত্ত্বর কিবা ত্রিলোচন। সেই কথা প্রকাশিয়া করহ বর্ণন।। দৈব কছে ওগো দেবি কি বলিব আর। অনিত্য সংসার এই সকলি অসার॥ - **সংসার-ভাবনা মাত্র হয় নিত্যজ্ব । অই জ্বের দীন কীণ মানবনিকর**॥ উহার সমান রোগ আর কিছু নাই। বলিলাম তত্ত্বকথা এবে তব ঠাই॥ **एकी कटर जान जान ७८१ भक्षानन। मरमा**दित पूर्व वन रस कान जन॥ **দেব কহে তত্ত্বজান নাহিক যাহার।** যে জন নাহিক জানে তত্ত্বের বিচার॥ তার সম নাহি মূর্থ জগত-ভিতরে। নরাধম সেই জন জানিবে অন্তরে॥ দেবী কছে শুন শুন ওছে ত্রিলোচন। সংসার যাতনাময় হতেছে দর্শন॥ भरमात शाष्पट नत जनम शतिरा । कि काज कतिरव महा এकां छ सहरत ॥ সেই কথা প্রকাশিয়া কহ পঞ্চানন। শুনিতে বাসনা রুড় করিতেছে মন॥ শিব কহে শুন শুন পার্কতী সুন্দরী। জিজ্ঞাসিলে ঘাহা তাঁহা কহিব বিস্তারি॥ আমাতে বিষ্ণুতে ভেদ নাহিক কখন। যেই আমি সেই বিষ্ণু স্বরূপ বচন। व्यामार्फ विकृष्ठ एक कचू ना कतिरव। कर्षवा इरेरव उर्देव क्रानिरवक छरव॥ चटण्टर विक्र्त तर कतिता विठात । जागार्त शृजित्व गरे। तरनात-मानात #

প্রনিয়া মধুর ভাবে কহেন পার্কভী। শুন শুন নিবেদন ওছে পশুপতি॥ কিরূপ জীবন হয় সুশের জীবন। সেই কথা বিবরিয়া কহ পঞ্চালন। শিব কছে শুন দেবি করিব বি শার। নিষ্পাপ জীবন হয় সুখের আধার **ম** সংসারে জনম লভি দেই সল জনা নিষ্পাপ হইয়া করে জীবন যাপন॥ তাহার সমান পুখা নাহি কেহ আর। সুখের জীবন তার সংসার-মাঝার 🕷 দেবী কহে নিবেদন ওহে দিগদ্বর। কি হয় প্রকৃত বিদ্যা কহ অতঃ পর 🕸 শিব কছে সেই কথা করিব বর্ণন। মনোযোগ করি এবে করছ ভাব। ॥ যে বিল্লাপ্রভাবে নর লভে ত্রন্ধজ্ঞান। প্রকৃত বিল্লাই সেই শান্তের প্রমাণ॥ এত শুনি পুনঃ কহে পার্ব্বতী সুন্দরী।ওছে প্রভো যা জিজ্ঞাসি বলহ বিস্তারি # কার নাম বোধ বল ওহে পঞ্চানন। সেই কথা শুনিবারে অতি आंकिक्षत। শিব কছে জিজাসিলে সার হতে সার।বলিতেছি সেই কথা করিয়া বিস্তারঃ যে উপায়ে ভবমুকি লভে জীবগ্। তাছারে একত বোধ কহে সাধুজন 🛊 দেবী কহে ভাল ভাল ওনিমু কাহিনী। কি হয় প্রকৃত লাভ কহ শূলপাণি 🕨 শিব কহে জিজ্ঞাশিলে অতীব উত্ম। শুন শুন সেই কথা করিব বর্ণন 🕨 আয়তত্ত্ব অবগত যদি কেছ হয়। তাহাই প্রকৃত লাভ নাছিক সংশয়॥ এত শুনি পুনঃ কহে কৈলাসবাসিনী। নিবেদন ওহে প্রভু শুন শূলপাণি॥ জগতে জগত জয়ী হয় কোন্জন। সেই কথা প্রকাশিয়া কহ পঞ্চানন 🛊 শিব কহে ভাল কথা করিলে জিজ্ঞাসা। বর্ণন করিয়া তব পূরাইব **আশা ॥** আপন মনকে জয় করে যেই জন। বিশ্বজয়ী দেই জন শাস্ত্রের বচন ॥ পুন্দ জিজ্ঞাদে দেবী ওহে পঞ্চানন। কাহারে প্রকৃত বীর কহে সাধুগণ ॥ এত শুনি শিব কছে শুনহ সুন্দরী। জিজ্ঞাসিলে যাহা তাহা বলিব বিস্তারি 🖁 কামশরে জ্বর জ্বর নহে যার মন। প্রকৃত স্থবীর দেই শাস্ত্রের বচন॥ তার সম নাহি বীর জগত-মাঝারে। প্রকৃত সুবীর সেই জানিবে অন্তরে॥ ৺শি ভাল বলি দেবী কহেন বচন। ওহে প্রভু দিগম্বর করি নিবেদন । এই যে সংসার-ধানু দরশন হয়। প্রকৃত প্রাক্ত কেবা বল মহোদয় ॥ সমদর্শী খীর প্রাক্ত হয় কোন জন। সেই কথা বিবরিয়া কহ ত্রিলোচন॥ শিব কহে ৰলিতেছি শুনহ সুন্দরি । সার হতে সার কথা কছিৰ বিশুরি ॥ कारीज्ञा अस कतिशा धंद्र। ननना-कोटक मूक ना इय स्थ जन ! नर्यपर्भी धीत थाड़ त्मरे जन रतं। जात मम थाड़ नाहि जानित निक्ता। এত अनि शूनः केवी कदत निद्युत । यहाविव किवा रत अटर जिटलाहन ॥ विष इटल महाविष क्षिम् वर्ष इत । महे कथा श्रामिताटत क्ष्की खलत ॥

ভিনিয়া মধুর ভাষে কতে পঞ্চানন। বিষয়ই মহাবিষ স্বরূপ বচ**নত্ত** বিষয় সমান বিষ নাহি কিছু আর। মহাশক্ত মুম উছা দংসার-মাঝার 🛊 এত শুনি দেবী কহে ওছে পঞ্চানন। দলা স্থা ধরামাঝে হয় কোন জন॥ এত শুনি ধীরে ধীরে কহে পশুপতি। अন শুন শেই কথা কছিব পার্ব্য, । বিষয়-বিরাগী ভবে হয় যেই জন। তার সম সদা সুধী না হয় দর্শন। শবা স্থী সেই জন অবনামাঝারে। মনের সম্ভোষে সেই নিয়ত বিহবে॥ এত শুনি মহানন্দ লভিয়া ভবানী। পুনঃ নিবেদন করে ওছে শূলপাণি॥ কোন জন ধন্ত হয় সংসার মাঝারে। সেই কথা রূপ। করি বলছ আমারে॥ শিব কহে বলিতেছি করহ এবণ। পর উপকারী হয় যেই সাধুজন । তাহার সমান ধন্ত নাহি কেহ আর। ধনুবাদপাত সেই সংসার মাঝার॥ এত তিনি দেবী কৰে ওহে পঞ্চানন। পূজনীয় ভূমগুলে হয় কোন্জন। শীব কহে শুন শুন ওগে! ববাননে। বলিতেছি সেই কথা তোমার সদনে॥ তত্ত্বজ্ঞ পুক্তব যেই সংসার-মাঝার। বিশ্বপুজনীয় সেই শান্ত্রের বিচার॥ ভত্ত্বজ্ঞান লভিয়াছে যেই সাধুজন। তার সব পূজনীয় না ২য় দর্শন । যথায় তথায় সেই বিচরণ করে। সকলে পৃদ্ধযে তারে অতি ভক্তিভরে॥ শুনিয়া জিজ্ঞানে দেবা ওহে পঞ্চানন। জ্ঞানীগণ কিবা কাজ করিবে সাধন। কি কাজ বর্জ্জন তারা করিবে সংসারে। সেই কথা কছ প্রভূ আমার গোচরে। এত শুনি ধীরে ধীরে কহে পঞ্চানন। শুন দেবি তত্ত্বকথা করিব বর্ণন।। জ্ঞানীজন যেবা হয় সংসারভিতরে। করিবেক ধর্মকর্ম অভীব সাদরে।। জ্ঞান উপার্জ্জন আর যাহে যাহে হয়। সে কাজ করিতে হবে স্যত্ত-স্বন্য ॥ পাপকাজ না করিবে তাহারা কখন। অন্তর হইতে স্বেছ করিবে বর্জ্জন।। শুনিয়া সানন্দে কহে পার্ব্বতী স্কুনরী। সংসারের মূল কেবা কহ ত্তিপুরারি॥ মহেশ কহেন শুন ওগো ত্রিনয়নে। অবিতা ভবের মূল জানিবেক মনে।। দেবী কহে ভাল ভাল ওহে পঞ্চানন। চোন্জন সংসারেতে অতি বিজ্ঞতম। শিব কহে সংসারেতে লভিয়া জনম। নারীর কুহকে যার নাহি মজে মন।। প্রতারণা করি যারে পিশাচা কামিনী ৷ প্রতারিত নার্দ্ধি করে শুনহ ভবানী। সেইত পুরুষ বটে অতি বিজ্ঞতম। তাহধর সমান বিচ্ছা নাহি কোন জন।। 'প্রত শুনি দেবী কহে ওবে দিগসর। দিব্য ব্রত কিব। হয় কহ অতঃ পর।। শিব কহে শুন শুন করিব বর্ণন। অহকার ত্যাগু হয় এতের উভয়। উহা হতে দিব্য ত্রত নাহি কিছু আর । দিরা ত্রত অই ত্রত সার হতে সার।. ে খেবী হছে ভাল ভাল ওছে পঞ্চানন। এবৈ জিজ্ঞালিছি যাহা করছ বৰ্ণন।।

গছল যতন করি সংসার-যাব্যরে। জানিতে না পারে কিবা বলহ আয়াস্কেঃ শিব কছে শুন শুন করিব বর্ণন। রুষণীচরিত কিন্তা রুষণীর মন।। প্রাণপণে অতি যত্ন যদি করা যায়। রমণীচরিত্র কেনা বুবেছে কোথায়। এত শুনি দেবা কহে ওহে পঞ্চানন। জীবের হুন্তাজ্য কিবা করছ বর্ণন।। শিব কহে দেই কথা কি বলিব আর। তুরাশা তুস্তাজ্য মাত্র জগত-মাঝার। যত যত্ন করে জীষ অবনীয়াঝারে। ছুরাশা ত্যজিতে কেহ কভূ নাহি পারে॥ এত শুনি দেবা কহে ওহে পঞ্চানন। পশুশ্রেষ্ঠ ধরামাঝে হয় কোন্জন॥ শিব কছে শুন শুন পার্বতী সুন্দরী। জিজ্ঞাদিলে ঘাছা তাছা কছিব বিস্তারি॥ বিজ্ঞাহীন ধরাধামে হয় যেই জন। পশুসম সেই জন শাস্ত্রের বচন।। 'তার সম পশ্নাহি জগত-ভিতরে। জীবন বিফল তার জানিবে অন্তরে। তাহার পক্ষেতে ভাল হইলে মরণ। মরণ মঙ্গল তার বিফল জীবন॥ পার্বতী জিজ্ঞাসে ওহে কৈলাস-ঈশর। কার সঙ্গ তেয়াগিবে যত সাধুনর।। যতনে কাছার সঙ্গ করিবে বর্জ্জন। সেই কথা মোর পাশে করছ বর্ণন॥ এত শুনি ধীরে ধীরে কৈলাসের পতি। কহিলেন নিষ্টভাষে **ওনহ পার্বতি**। বিজ্ঞাহীন এরাধামে হয় যেই জন। অথবা নিতান্ত নীচ যেই নরাধম।। খলতা সতত যার অন্তর মাঝারে। তেয়াগিবে তার সঙ্গ অতীব সাদরে।। শुनिया मञ्जूषे इन रिकलामवामिनी। शूनक किक्कामा करत उरह म्लशाणि ॥ ধরায় মূন্ফু হয় যেই সাধুজন। আশু কি কর্ত্যব্য তার কহ পঞ্চানন। শিব কহে কি বলিব তোমার সদনে। মুক্তিকামী হয় যেই নিজ মনে মনে ॥ মমতা অন্তর হতে দিয়া িসর্জ্জন। করিবেক সাধুসঙ্গ সেই সাধুজন॥ রাখিবে একান্ত ভক্তি পরম-ঈশরে। এইত তাহার কান্ধ কহিনু তোমারে॥ এত শুনি দেবী কহে ওহে পঞ্চানন। শুনিতেছি তব মুখে অপূর্ব কথন।। আরো নিবেদন আছে তোমার গোচরে। ক্লপাকরি বল দেব অধীনী আমারে॥ শিব কৃছে ওগো দেবি শুনহ বচন। তোমার সমান প্রিয়া নাছি কোন জন॥ জীবন তোমারে দিতে অনায়াদে পারি। জগতের মূল তুমি জগত-ঈশ্রী॥ জিজ্ঞাসা করিবে যাহা আমার সদনে। বলিব তখনি তাহা ওগো বরাননে॥ গোপন হলেও তাহা করিব বর্ণন। তোমারে অদেয় নাহি এ তিন ভূবন।। শুনিয়া হরিষে কছে পার্বতী সুন্দরী। শুন শুন ওছে এভূ নিবেদন করি॥ লবুত্বের মূল কিবা করহ বর্ণন। কি কাজ করিলে লঘু হয় জীবগণ।। শিব কছে কি বছলৈব তোমার গোচর। যাচিঞা লঘুত্ব-মূল সংসার-ভিতর॥ খাচ্ঞা, করিলে লয়। হয় নরগণ। অগ্রান্থ করয়ে সবে করিলে দর্শন।

তৃণ হতে লবু সেই নাহিক সংশয়। শান্তের বচন ইহা কভু মিখ্যা নয়। (एवी कटर किंक कथा ७८र पिरायत। छनिया क्रूकी वर्ड र उटर अखत ॥ 'মত শুনি তত ইচ্ছা হয় বলবতী। কহ কহা নিবেদন করি পশুণ্ডি॥ न्शात-माक्षादत अग्र कतिया धात्। मार्थक-क्रम वल इस कान क्रम ! কে আর প্রকৃত মৃত কহ ত্রিপুণারি। এই কথা জানিবারে অভিলাষ করি॥ শিব কহে শুন দেবি করিব বর্ণন। মাংসার-মাঝারে জন্ম কবিয়া ধারণ॥ পুণ্যকর্ম করি যেই একাস্ত অন্তরে। দৈবের যাতনা দুর অনায়াদে কয়ে। শার্থক জনম তার সার্থক জীবন। সত্য সত্য এই কথা শাস্ত্রের বচন।। পুনক্ষ মৃত্যুর মুখে সেই নাহি পড়ে। তাহারে প্রকৃত মৃত জানিবে অন্তরে॥ স্কুক বলি সেই জন বিদিত ভূবন। কহিনু প্রকৃত কখা তোমার সদন।। দেবী কহে শুন শুন ওছে পশুপতি। নিবেদন করি যাহা বলহ সংপ্রতি॥ কোন জন বোব। হয় সংসার-ভিতরে। কাহ্লারে বধির কহে বল রূপা করি॥ **িশিব করে এই কথা কি ব**িবি আর। যে জন আগত হয়ে সভার মাঝার॥ **উপযুক্ত কালে দিতে না পা**রে উত্ত<sup>ব</sup>। তাহারে প্রকৃত বোবা ক**হে সর্ক্ষ**র॥ সংসার-ধানেতে জন্ম করিয়া ধারণ। হিত কথা যেই জন না করে প্রবণ। শুষদ্ বর্গের বাক্য যেই নাহি শুনে। যথার্থ বিধির সেই জানিবেব মনে॥ এত শুনি পুনঃ দেবী কহেন বচন। বিখাস কাহারে নাহি করিবে কখন॥ শিব কৰে কি বলিব অবিশ্বাসী শারী। শাস্ত্রের বচন হ্হা ওগো দিগদ্বরী॥ দেবী কহে ভাল ভাল ওচে পঞ্চানন। এখন জিজ্ঞাসি যাহা করহ বর্ণন॥ **জগতের অদ্বিতীয় তত্ত্ব** কিবা হয়। জগতে উত্তম কিবা কহ মহোদয়॥ কি কর্ম করিলে জীব শোক নাহি পায়। দেই কথা রূপা করি বলহ আমায়॥ শিব কৰে শুন দেবী আমার বচন। জিজ্ঞাসিলে যাহা তাহা করিব বর্ণন।। মন তত্ত্ব অন্ধিতীয় জাসিবে অন্তরে। সুশীলতা সর্কোত্তম জগত-ভিতরে॥ আমাতে বিষ্ণুতে ভেদ না করি যে কন। অভেদে অর্চ্চনা করে হয়ে একমন।। " भारकत अधीन तरे कछू नाहि रहा। भारखत वहन हें कानित निक्त ॥ रियो करर जान जान ७८ शकानन। विश्वभार्य मर्ज किया करूर वर्गन। শিব ক**হে ঘাহা হ**য় জীবহিতকর। তাহাই প্রকৃত সর্ব্যু সংসার ভিতর ॥ শেষী কৰে ওতে প্রস্তু করি নিবেদন। শুনিতে কৌতুকী বড় হইতেছে মন।। मश्मादबंद मर्सारभक्त किया (अर्थ मान। मिरे कथा क्रभी कति कर मिर्मान এতেক শুনিরা শিব করেন উত্তর। অভ্য় প্রদান হয়/ দানের প্রবর ॥ त्रकारिंगमा त्थार्क पान अफ्स क्षणानः। त्कांन पान नत्य कछ देशात नपान ॥

দেবী কছে শুন প্রভূ কৈলাস-নিবাস। বল বল কিবা মন-আত্যন্তিক নাশ ।। শিব কছে ওগো দেবি করছ প্রবণ। ইছার উত্তর "মোক" শাস্ত্রের :বচনা **ও**নিয়া জিজ্ঞাদে পুনঃ পার্কেতী স্থন্দরী। নিবেদন করিপ্রভূ শুন ত্রিপুরারি 🕴 কোন স্থান প্রাপ্ত হলে নাহি রহে ভয়।সেই কথা মোর পাশে কহ মহোদয় ॥ শিব কহে শুন দেবি করিব বর্ণন। জিজ্ঞাসিলে সার কথা অতীব উত্তম 👢 স্বরূপ মুকতি লাভ যেই জন করে। কোন ভয় নাহি রহে তাহার অন্তরে॥ এত শুনি দেবী পুনঃ করে নিবেদন। মহাশল্য কিবা হয় করহ বর্ণন # এত শুনি কুহে দেব শিব মহোদয়। নিজের মূর্থতা মহাশল্য তুল্য হয় ॥ দেবী কহে ওছে প্রভু নিবেদি ভোমারে।কার উপাসনা করা উচ্চত সংসারে শিব কহে ধরাধামে যেই গুরুজন। সেবিবে সতত তাঁরে করিয়া যতন 🛭 অধিকন্ত জ্ঞানিরদ্ধ যেই জন হয়। উপাসনা যোগ্য সেই নাছিক দং শর ॥ । एती करह जान जान कतिन खन्। खन्न जिन्हानि यादा कत्रह वर्गम । যখন ক্লডান্ত আদি উপনীত হয়। কি করিবে সেই কালে কহ মহোদয়। শিবক্রহে পগো দেবি করহ প্রবণ। যে কালে ক্লতান্ত আসি উপনীত হন ॥ সেই কালে কায়মনে একান্ত অন্তরে। মুরারির পাদপদ্ম চিন্তিবে সাদরে 🛚 মমতানাশক যিনি নিত্য নিরঞ্জন। যাঁহা হতে নিত্য সুখ লভে সাধুগণ।। সেই মুরারির পদ চিত্তিবে যতনে। এই ত কর্ত্তব্য কর্ম জানিবেক মনে॥ দেবী বলে শুন শুন ওছে পঞ্চানন। দন্ত্য কারা ভূমগুলে করহ বর্ণন। শিব বলে কুবাসনা দম্যু বলি গণি। শাস্ত্রের বচন ইহা জানিবে ভবানী॥ শিবা বলে ওগো প্রভু করি নিবেদন। মাতৃ সম হিতকারী হয় কোন্জন। শিব কহে তত্ত্ববিদ্যা জানিবেক সার। হেন হিতকারী নাহি জগত-মাঝার॥ পরম আনন্দ হয় তত্ত্বিদ্যাবলে। কহিলাম তত্ত্ব কথা তোমার গোচরে॥ দেবী কহে ভাল ভাল ওহে পঞ্চানন। এখন জিজ্ঞাসি যাহা করহ বর্ণন।। কাহা হতে সদা ভয় করিবে অন্তরে। নেই কথা কহ দেব রূপা করি মোরে॥ শিব ক'ছে শুন দৈবি করিব বর্ণন। ভববন হতে ভীত রবে সর্বকণ। দেবী কহে এক কথা জিজাসি তোমারে। কোন্বস্ত জানি শেষ করিবারে নারে। भिव करह भम তত্ত্ব देश्य नाहि हत्। निजास्थ पूना उँह। जानित निक्त श মম তত্ত্ব জানি শেষ করিবারে নারে। কহিমু নিগুড় কথা তোমার গোচরে । प्ति करह कान् वेश्व हत्न अवग्र । अविष्ठे नाहि तरह जानिए कि कि छ।। শিব কহে যেই ত্রন্তা নিরঞ্জন। আজার স্বরূপ যিনি যিনি সনাতন।। **जाराज विक्रिं इब राहे गांध नजर्न अव्यक्त छाराज आम गःगाज-क्लिंग है** 

श्रामित्य जाहात्र किंवा व्यविषये तथा नर्वक क्षेत्र नम त्नहे व्यन इत ॥ িএড তানি দেবী পুনঃ করে নিবেদন। জগতে ছল্লভ কিবা করহ বর্ণন॥ শিৰ কহে ওন দেবী কহিব তোমারে। হল ভ সদাুর মাত্র জানিবে সংসারে। **बिक् कटर (कवा रंग मः मारत प्रक्रिंग। बिक कटर मर्गान्य क्रानिरव निक्या।** ূপাও, হতে পণ্ড কেবা জিজ্ঞানে পার্বকতী। উত্তর করেন তাহে দেব পশুপতি॥ ় 🕊 পথে যেই নাহি করে বিচরণ। অধিকন্ত বেদ আদি করি অধ্যয়ন॥ - ক্ষুৰ্ বোধ নাহি জন্মে যাহার অন্তরে। পশু হতে পশু সেই জানিবে সংসারে॥ ুদিবা কহে ভাল ভাল ওহে পঞ্চানন। এখন জিজ্ঞাসি যাহা করহ বর্ণন। 🖁 🙀 লদৃষ্টি নিক্ষেপিয়া করিলে দর্শন। মিত্র বলি যারে জ্ঞান করে জনগণ। প্রকৃত পরম শত্রু তাহারাই হয়। হেন জন কেবা কেবা কহ দয়াময়॥ • শিব কছে পুল্ল দারা আদি সর্ব্বজন। পর্য শক্রর সম শাস্ত্রের বচন॥ শিবা ক্ষেত্র এক কথা জিজ্ঞানি ভোমারে। বিছ্যুত সমান কিবা চপ্লতা ধরে॥ \* निर কছে শুন দেবি করিব বর্ন। ধন আসা এই ছুই তৃতীয় জীবন॥ শারম চঞ্চল তিন জানিবে অস্তরে। বিছুতে সমান গতি এই তিন ধরে॥ "দেবী কছে ওগো প্রভু করি নিবেদন। কণ্ঠাগত হয় যবে মানব-জীবন॥ कि क्रिंद्रित (महे कारल कर क्रुशामय । अकर्खना (महे कारल नल किना ह्या। শিব কছে ইথে কিবা করিব বর্ণন। পুণ্যকর্ম সেই কাল করিবে সাধন॥ পাপ গাজ অকর্ত্তব্য কভু না করিবে। তবে ত সেই সাধু তরিবেক ভবে॥ শিবা কহে কহ দেব ক্রি নিবেদন। কাহারে করম কহে করহ বর্ণন।। শিব কছে ওগো দেবি কি বলিব আর । করিবে মুরারি-প্রীতি ভূমে প্রনি-বার॥ যেই কাজে মুরারির সন্তোষ জনমে। করিবেক সেই কাজ একান্ত ্ষ্তনে ॥ তাহারে প্রকৃত কর্ম কছে সাধুগণ। শাস্ত্রের প্রমাণ ইহা কে, দের বচন॥ শিবা কহে ছেগো প্রভূ নিবেদি তোমারে। আহা না করিবে, কছু কোন্ ুঁ ক্রব্যোপরে॥ শিব কহে ওগো দেবি করহ শ্রবণ।অসার সংসার এই শান্তের ,बंচন।। সংসারে ঘতেক বস্তু দরশন হয়। কিছুই নহেক সত্যা, অসভ্য নিশ্চয়।। ষ্ঠ বস্তু সংসারেতে কর দরশন। অসার সকলি জেনে। শান্তের বচন।। শার এর অই সবে আছা না করিবে। আনুষ্ঠ কৈলে সংনারেতে বদ্ধ হতে ছবে।। সংস্থাবে অনাভা করে সেই সাধুজন। বন্দী নাৰি <sub>দু</sub>করে তারে ভবের বন্ধ এত শুনি ভৃট হযে শিষানী ফুন্দরী। পুন্দ । ক্রিক্রাসা করে ওছে
বিপুরারি।। অহোরার চিত্রীয় কোন্বস্ত হয়। রূপা। করি বল তাহা ওছে क्रुशामत्र ॥ विवानिमि चटक किया क त्रद्य किछन । ट्युके, कथा क्रशा कति कद

अर्कानमें। (अर्ड अमि निकेंकार्य त्नर पिशवत ।शित शैति शामि शामि करतम् উত্তর ॥ क्रिक्टामा করেছ দেবি অতি অন্মতন।ইহার বিষয় কিবা করিকুবর্ণনা সংসাঁরের অসারত্ব চিন্তিবে অন্তরে। শুভ্ময় আত্মতত্ত্ব চিন্তিবে সাদরে 🞉 দিবানিশি অইরপ করিবে চিন্তন। ইথে শুভা গতি হবে শান্তের বচন ॥ এত বলি বিধিমুত সনত-কুমার। সহাস্থ-বদনে কছে ঋষির মাঝার 🚛 শুনিলে অপূর্ব্ব কথা ওহে ঋষিগণ। অধিক বলিব কিবা স্বার সদন॥ ষেরপ শুনিষাছিত্ব প্রবণ-বিবরে। বলিলাম সেইরূপ স্বার গোচরে। অতি পুণ্যকথা এই সার হতে সার। ইছার সমান নাহি ভুবন মাঝার 🖠 অধিক বলিব কিবা ওহে ঋষিগণ । ধর্মপথে রবে সদা যত সাধুগণ ॥ কদাপি ধরম নাহি বর্জ্জন করিবে। সদা সর্বক্ষণ ধর্মপথেতে রহিবে॥ ধর্মপথে যেই জন নিরন্তর রয়। তাহার বিপদ নাহি কোন দিন হয়॥ এহ প্রতিকূল-বশে যদ্যপি কখন। বিপদ আদিয়া তারে করে আক্রমণ॥ তথাপি বিপদ ছতে পরিত্রাণ পায। কহিলাম তত্ত্বকথা জানিবে সবায়॥ শুরুদেব রহস্পতি অমর-নগ্রে 'দেবপুজ্য হয়ে সদা নিবস্তি করে॥ গ্রহ্বশে ক**ন্ট পান সেই** মহাজুন। কিন্তু নাহি কট রহে অতি বহুক্রণ॥ ধর্মহেতু গুরুদেব লভে পরিত্রাণ । সুহৃদ নাহিক কেহ ধর্মের সমান ॥ অতএব ধর্মপথে রবে সর্বক্ষণা পুরাণে পুণ্যের কথা অতি মনোরম॥

### পঞ্চাশত্রম অধ্যায়।

সন ২ কুমার উবাচ।

भटिनम्हरता शहताकः कलाहि तदिनम्बनः। लटलो छः थः महारचातः खत्रत खनगानित्न॥

রহস্পতির অপূর্ব্ব উপাখ্যান ও গ্রহবশে তাঁহার বিপদ .

বিধিপ্রত-মুখে শুনি অপূর্ব্ব কাহিনী। আনন্দ নাগরে ভাদে যত সহামুনি।
পারম আনন্দ হয় সবার অন্তরে। পুনন্চ জিজ্ঞাদে নবে সন্ত্র-কুমারে।
কিরপে বিপদে পড়ে দেব রহস্পতি। রূপা করি সেই কথা কছ মহামতি।
কোন্ এই প্রতিকূল তাঁহার উপরে। হয়েছিল সেই কথা কছ সবারু রো
কিরপে বিপদে শুরু লভে পরিত্রাণ। বিস্তারিয়া কছ তাহা ওহে মতিমান্।।
এতের বচন শুনি বিধির মন্দন। কছিলেন শুন ওহে ঋষিগণ ।
শানেশ্র এককালে শুরুর উপর। হয়েছিল প্রতিকৃল তাপসনিক্র।।

ে হেতু বিপদে পড়ে শুরু রহম্পতি। বলিতেছি সেই কথা শুনহ সংপ্রতি। ग्र**्वात्र केत्ररम जात हो**त्रात छेपरत । सिप्तिक्रण मनिखेर निस्न समा शरत ॥ । धक्ता शिजादत्र भनि कति मध्याधन। विनत्न वहदन धीदत्र कदत्र निद्वपन ॥ ্তামার চরণে পিডঃ করি নমস্কার। বিশের কারণ তুমি বিশের আধার॥ দবার অন্তর মাঝে বিরাজ আপনি। বহির্ভাগে থাক তুমি অন্তরেতে জানি॥ াচৰ অবিজ্ঞাত কিছু নাহিক সৎসারে। কুপা দৃষ্টি কর পিতঃ আমার উপরে॥ বিদ্যাশিকা করি আমি মনেতে বাসনা। কাহার নিকটে ঘাই সে কথা বলনা। শারামাঝে কার কাছে করিলে গমন। রীতিমত হয় মম শাস্ত্র অধায়ন॥ ইনির্দেশ করুন, তাহা রুপা করি মোরে। অবিলয়ে যাব আমি বিদ্যাশিক। ্তিরে। পুরের এতেক বাক্য ক্রিয়া প্রবন্। সম্বেহে ভাস্কর তারে ক্রেন শুৰীনা। তান বংস মম বাক্য একান্ত অন্তরে। গন্তীর সুমতি তুমি এ ভব ে, সারে॥ তোমার মঙ্গল যাহে অবিলয়ে হয়। বলিতেছি সেই কথা শুনহ ষ্ঠিনয়॥ অমরকুলের গুরুদেব রহস্পতি। অধুনা মানবধানে করিছে বসতি॥ গ্রেরলোক তেয়াগিয়ে বিশেষ কারণে। বিপ্রবংশে জন্মিয়াছে মানব-ভবনে॥ मॅफिও মানবরূপ করেছে ধারণ। কিন্তু নাহি শাস্ত্র তারে করেছে বর্জ্জন। থৈকু অনুপামী যথা রহে বৎসগণ। রহস্পতি অনুগামী শাস্ত্রাদি তেমন।। শিক লক শিষ্য আছে ভাঁহার আগারে।অন্ন দান দেন তিনি সেই স্বাকারে॥ াবারে করান তিনি শাস্ত্র-অধ্যয়ন। সকলে তাহাঁর কাছে হতেছে পালন॥ ্রীহার নিকটে তুমি যাও ত্রা গতি। অবিলম্বে পাবে তথা সমস্ত বেদাদি॥ <sup>ধা</sup>রম মঙ্গল তাহে হইবে তোমার। অধিক বলিব কিবা ওহে গুণাধার॥ থা**যার পরম ভক্ত সেই রহস্প**তি। তাহার গুণের কিছু নাহিক অবধি॥ 'মত এব শুন বংস আমার বচন। অবিলয়ে মর্ত্তালোকে করছ গমন॥ আরো এক কথা বলি শুনহ শ্রবণে। ত্রন্ধবিদ্যা লভিবারে রহিবে যতনে॥ যেইরূপে িব্রন্ধবিদ্যা লভিবারে পার । স্যতনে এক্মনে সে উপায় কর ॥

পিতার এতেক বাক্য করিয়া শ্রবণ। তাঁহার চরণপদ্মে করিয়া খন্দন॥
কর্মাধানে চলি গেল ছায়ার তনয়। পিতৃবাক্য হাদিয়াঝে জাগরুক হয়।।
পশুকী নদীর তীরে করিয়া গদন। পথিকগণের সহ বুঁর দরশন॥ পাহুগণ
ক্ষার চলি ক্লি প্রয়োজনে। পড়িল সে দব পাহু শনির নয়নে॥ তাহাদিগে
শক্ষোধিয়া ছায়ার নন্দন। মিউভাষে জিল্পাসিল ওছে পাহুগণ॥ বাচপ্পতি
দহোদার বহে কোন্ধানে। প্রকাশ করিয়া কহ আমার সদুনে॥ দয়া, করি
শেই ক্যা দশহ আমায়। ক্রিতাত উৎশ্বক আমি ঘাইতৈ তথায়॥ শনির

धारक वाका कतिया धारण। धार्कमृत्ये छाहि तद यक भारत्य ॥ भारिः ब्हिट्ट कांश्वि व्यक्ति मधुमम । किथिया इहेन नदि विश्विज-स्वय । ब्हिट्ट मधुम রূপ আহা মরি মরি। চাহিয়া রহিল দবে উত্তর না করি॥ ক্রেই কুর্মু শৌরবাদী ছই চারিজন। একত্র হইয়া তথা করে আগমন॥ সকলে চাহিঃ রহে বিহ্বল-নয়নে। শনির মূরতি দেখি ভাবে সবে মনে॥ ছাত্রখোধার এেরে করি দরশন। হেন রূপ নরে কিন্তু নহে কদাচন॥ আহা মরি কিনঃ মূর্ত্তি অতি চম-কার। কোথা হতে আনিয়াছে রূপের আধার॥ সুক্তঞ্ কাঞ্চন জিনি অফের বরণ। বিপ্রের তন্য় বটে হতেছে দর্শন। কিন্তু দেব পুত বলি অনুমান হয়। স্বাই হইন্তু মোরা বিন্যিত-ছদয়॥ এইরূপে নালা জনে নানাকথা বলি। প্রণাম করিল সবে অতি ভক্তি করি॥ বিনয় বচে । সরে কহে তার পর। শুন শুন মহাত্মন্ করি যোড়কর॥ নিবেদন করি 🐠 🕻 তোশার সদনে । বাচম্পতি মহোদ্য রহে এই আমে ॥ বিদ্যার্থী হইয়া হে। কৈলে আগ্ৰন। বিমুখ না হয় কেহ জানিবে বচন॥ যেই কেহ শিষ্য হয়, তাঁহার আশ্যে। শিকা দেন তারে তিনি একান্ত-ছদয়ে॥ আপনার কি। রূপ করি দরশন। হেরিশা হবেন গুরু আনন্দে মগন॥ যতনে রাখিটে তোমা তাঁহার আগারে। করিবেন অধ্যাপনা একান্ত অন্তরে। বাচস্পি 🦫 মহোদ্য় অতি বিজ্ঞতম। তাঁহার গুণের কথা কে করে বর্ণন॥ সর্বত্ত। একাধারে দর্শন করি। তাহার ওণের কথা বর্ণিবারে নারি॥ আপ্রি তাঁহার গৃহে করুন গমন। লনকাম হবে সিদ্ধ ওহে মহাজুন ॥ মিখ্যা না কহিনু মোরা তোমার গোচরে। সত্য সত্য বলিতেছি জানিবে অন্তরে 🛭 আপনি গুরুর গৃহে করিলে গমন। অপার গুণের রাশি হবে দরশ্ন 🕡 মোদের বচন তবে বিশ্বাস হইবে। গুণের পরীক্ষা তথা দেখিতে পাইবে॥ \* হেন গুরু ভূষণ্ডলে আর কোথা নাই। বলিলাম সত্য কথা আপনার ঠাই 🛭 विष्णा लाट वाक्षा यपि थाकत्य जलता । ज्ञाय याजेन (मरे खंकत त्रांहर)

পথিকগণের মুখে শুনিয়া বচন। হৃদয়ে প্রফুল হন ছায়ার নন্দন ।
নবারে সম্ভাব। করি শুর্ষ্যের তন্ম। গুরুগৃহে ঘাইবারে সমুত্তত হঃ ।
ধীরে ধীরে পদত্রজে করিয়। গমন। বাটীর নিকটে ক্রেমে উপনাত হন ।
দূর হতে গুরুদেবে দরশন করি। করযোড়ে পড়ে গিয়া চরণ উপরি।
ভিজিভরে পদতলে করেন বন্দন। তাহারে হেরিয়া গুরু বিশ্বয়ে মগন ॥
মনে ভাবে হেন রূপ কুজু নাহি হেরি।দেবতা হইবে কিবা বুঝিবায়ে নারি ।
ভার পর মিষ্টভাগৈ করি সভাবয়। গুরুদেব জিজাসিল শনিরে তখন ।

্কে তুমি কহত ভদ্র কাহার সন্তান। কোপা হতে আসিয়াছ কিবা তব নাম। কোন্, দ্বিজবংশে তব হয়েছে জনম। বংশ উচ্ছ্বলতা কার করেছ সাধন। यि ह मनुषामूर्डि निराति जोगात । उत् दिन वाथ दश परवित क्यात ॥ এ হেন দেহের শোভ। অতি অনুপম। মনুষ্য মাঝারে কভু না করি দর্শন। আসিয়াছ মম পাশে কিদের কারণ। ব্যক্ত কর অক্পটে আমার সদন॥ ব্রবিতে পেরেছি আমি তুমি মহোদয়। মহথ বংশেতে জন্ম ধরেছ নিশ্চয়॥ ৠরুর এতেক বাক্য করিয়া শ্রবণ। ভক্তিভবে নতশিরে সুর্য্যের নন্দন॥ 🕊 শাম করিয়া পদে একান্ত অন্তরে।কহিতে লাগিল কথা অতি ধীরে ধীরে॥ ্তন তন গুরুদেব করি নিবেদন। ত্রদ্ধি কশ্যপ বংশে আমার জনম।। শারণ লইনু আমি তোমার সদনে। শিষ্য তব হৈনু আমি কহি তব স্থানে। ইছা ভিন্ন অন্ত কিছু নাহি অভিপ্রায়। নিয়ত রহিব তব চরণ সেবায়॥ তোমার নিকটে প্রভু করি অবস্থান। নিয়ত করিব ব্রন্ধচর্য্য অনুষ্ঠান॥ ু **সঙ্কপ্প করেছি আমি আপন** অন্তরে। কিছুকাল রব আমি তোমার আগারে॥ ভক্তিভরে তব পদ করিব দেবন। অনুমতি চাহি ইথে ওছে মহাত্মন॥ শনির এতেক বাক্য শুনিয়া শ্রবণে । বাচস্পতি গুরুদের কহে তার স্থানে॥ তোমার মধুর বাণী করিয়া এবণ। অন্তরে পরম প্রতি লভিল জনম।। পরম সুখেতে থাক আমার আগারে।শিক্ষা দিব নানাশান্ত্র অতি সমাদরে॥ তোমারে নেহারি স্নেহ জন্মেছে আমার। श्रुप्त হয়েছে মম আনন্দ সঞ্চার॥ রাখিব তোমারে আমি অতীব যতনে। বাসনা হইবে পূর্ণ যাহা আছে মনে॥ এত বলি গুরুদেব শনিরে তখন। আপন আশ্রম মাঝে করেন স্থাপন।। সানদ অন্তরে শনি রহেন তথায়। বিজ্ঞাশিকা দেন গুরু নিয়মে তাহায়॥ ং, এইরপে এহরাজ দেব শনৈশ্চর। গুরুর গৃহেতে থাকি দানন্দ অন্তর॥ লা**দ** বেদ উপবেদ যতেক পুরাণ। মহাদি সংহিতা শাস্ত্র পড়িল ধীমান। শান্তের প্রকৃত তত্ত্ব সকলি জানিল। সূক্ষ্ম তত্ত্ব হৃদিমাঝে ধারণ করিল। া হাম গুন খাষিগণ আমার বচন। অপ্পদিনে শনি সব করে জ্থায়ন॥ **অপ্রকালমা**ঝে সব শিখে শনৈশ্চর। ইথে নাহি হয়ো.কেছ বিশ্বিত অন্তর॥ ভাহার কারণ বলি করহ ভাবণ। গ্রহরাজ শনৈকর অতি মহাত্মন্। পারম তত্ত্বজ্ঞ শনি অবনী মাঝারে। পিতৃকোপে পড়ি 🐉 শনি কিছুদিন তরে 🛚 এইত কারণ মাত্র শুন যত মুনি॥ সমস্ত বিশ্বতপ্রায় হয়েছেন তিনি। বে দিন প্রসন্ন হরে দেব দিবাকর। যাইতে আদেশু দেন অবনী-ভিতর ॥ সেই দিন হতে পূর্বস্থাতির উদয় ৷ হয়েছিল মনে প্রহে তাপসনিচয় ! শাপ-অবসানকাল প্রতীক্ষা করিয়ে। গুরুগৃহে আছে শনি পৃথিবীতে গিয়েছ শুরুর গৌরবপদ করিতে রক্ষা। শনিদেব পৃথিবীতে করেন গমন ॥ श्रुद्ध-मिरावरण मिन अिं अल्लेपिति। मिथिल नकल विका खेळे नेपरन् ा তার পর করযোড় করিয়া বন্ধন। নতশিরে গুরুদেবে কহেন বচন। নিবেদন ওছে প্রভূ চরণে তোমার। মনোরথ পূর্ণ এবে হয়েছে আমার॥ তোমার প্রসাদে শাস্ত্র করি অধ্যয়ন। লভিয়াছি সূক্ষতত্ত্ব ওছে মহাত্মন্ 🞼 এখন নিবেদি প্রভূ তোমার চরণে। বাসনা করেছি যেতে জাপন ভবনে॥ কিবা তব অভিলাষ বলহ এখন। দক্ষিণাস্বরূপ তাহা করিব অর্পণ।। জগতে এমন বস্তু কিছুমাত্র নাই। যাহা দিয়া ঋণহীন হইবারে পাই॥ তথাপি শকতি মত করিব অর্পণ। তব পদে এইমাত্র মম আকিঞ্চন।। পরিতৃষ্ট হয় ' কিনে তোমার অন্তরে। রূপা করি কহ তাহা অধীন গোচরে ॥ তুর্ম 😉 🖟 পদার্থ যদি সেই বস্তু হয়। তরু দিব তাহা আমি জানিবে নিশ্চয়॥মহাবিজ্ঞ 🖯 ভুমি লোকভত্ত্বে বিচক্ষণ। সুরাচার্য্য সম ত্রন্ধাবদ্যাপরায়ণ॥ আচার্য্যাত্ত্ব 🖟 আমি কেশ্মা করেছি বরণ। সর্ব্বপূজ্য তুমি দেব গুরুর উত্তম।। অধিক বলিব কিবা ওহে মহোদয়। যা চাহিবে দিব তাহা জানিবে নিশ্চয়॥ এইরপে নানাস্ততি করি শনৈশ্চর। মৌনভাবে অবস্থান করে তার পর॥ মনে মনে ইচ্ছা তার লয়ে অনুমতি। অবিলধ্যে স্থরলোকে করিবেন গতি॥ এত ভাবি গ্রহরাজ ভাস্কর-নন্দন। নানামতে স্তুতিবাদ করিয়া ত**খন।।প্রশাস্ত** বদনে অথ্যে দাঁড়ায়ে রহিল। গুরু-আজ্ঞা প্রতীক্ষা যে করিয়া থাকিল।

শনির এতেক বাক্য করিয়া প্রবণ। গুরুদেব ক্ষণকাল মোনভাবে রন॥
কিছু না নিঃসৃত হয় রসনা হইতে। মূক সম রহে গুরু অধাবদনেতে॥
অবশেষে হাদে ধৈর্য্য করিয়া ধারণ। মধুর বচনে কহে করি সম্বোধন॥
শুন বংস তব বাক্য শুনিয়া প্রবণ। লভিন্ম পরম স্থুখ আপনার মনে॥
উক্তিমাখা তব বাক্য ক্রিয়া প্রবণ। পরম সম্ভুই হৈন্দু ওহে মহাত্মন॥
যথেষ্ট দক্ষিণা হৈল ইহাতে আমার। আশীবাদ করি তোমা ওহে গুণাধার॥
মনোরথ সিদ্ধ তব্ হউক সত্ত্র। আপন অভীইত্থলে যাহ ফেততর ॥
কিন্তু এক কথা বলি শুনহ বচন। কৌতুহল জন্মিয়াছে জানিতে কারণ॥
সত্য করি বল দেখি ওহে গুণাগার। ছন্মবেশী তুমি কি না নিকটে আমার॥
শুরুর গৌরব রক্ষা করিবার তরে। বাসনা ঘদ্যপি থাকে তোমার অন্তরে॥
ভাহা হলে মিগ্যা কথা আম্বার সদ্ধন। কভু না কহিবে বংস তুমি বিজ্ঞজন ॥
ম্বার্থ করিয়া বল কাহার সন্তান। কোথা হতে আসিয়াছ ম্ম বিদ্যুমান॥
স্বিধার্থ করিয়া বল কাহার সন্তান। কোথা হতে আসিয়াছ ম্ম বিদ্যুমান॥
স্বিধার্থ করিয়া বল কাহার সন্তান। কোথা হতে আসিয়াছ ম্ম বিদ্যুমান॥
স্বিধার্থ করিয়া বল কাহার সন্তান। কোথা হতে আসিয়াছ ম্ম বিদ্যুমান॥
স্বিধার্থ করিয়া বল কাহার সন্তান। কোথা হতে আসিয়াছ ম্ম বিদ্যুমান।
স্বিধার্থ করিয়া বল কাহার সন্তান। কোথা হতে আসিয়াছ ম্ম বিদ্যুমান।
স্বিধার্থ করিয়া বল কাহার সন্তান। কোথা হতে আসিয়াছ ম্ম বিদ্যুমান।
স্বিধার

इंग्रेज़िन विक दूबि नाहिक नश्नाता. जागांत्र प्रदेशक अहे बर्कटक खेलाता। कान जान रन दिन्धि खरंद महाजान्। ३७ कि मी इक कृषि रनदहर्म नमन॥ ख्युज अंटज्क याका छनिया ध्वतन । शिद्र शिद्र कट्ट भनि विमी ज्वहत्न ॥ শুন শুন গুরুদের আমার বচন। আচাহ্যপদেতে ভোমা করেছি বরণ॥ তখন অনুত্য নাহি বলিব তোমার। বলিব প্রকৃত কথা মম অভিপ্রায়।। বেদতত্ত্ব বিশারদ যত মুনিগণ। জন্ম বলি যাঁরে সদা করে সম্বোধন॥ ৰিষ্ণু বলি যাঁরে কভু ভাকে সর্বজনে। কভু সম্বোধন করে শিব্-সম্বোধনে॥ ক क्षेत्र याँचारत কছে দেব নারায়ণ। সূর্য্য বলি কভু যাঁরে করে সম্বোধন। **্রিনিই আমার পিতা দেব দিবাকর।** ছায়ার উদরে জন্ম **ওহে গুরুব**র॥ পিতার আদেশে আমি তোমার সদনে। এসেছিনু ভক্তিভরে বিদ্যার কারণে॥ তোমার প্রসাদে বাঞ্ছা হইল সফল। বাসনা এখন যাব আপনার ছল।। বছদিন পিতৃপদ না করি দর্শন। অনুমতি দিলে যাই তাঁথার সদন।। তোমার আদেশে গিয়া পিতার সদনে। ভক্তিভরে প্রণমিব ভাঁহার চরণে।। শনির এতেক বাক্য করিয়া শ্রবণ। ভযে হর্ষে গুরুদেব বিমোহিত হন॥ কোমাঞ্চিত কলেবর হইল তাঁহার। জড়ের সমান দেব রহে কণ্কাল।। প্রাকৃতিত্ব হয়ে পরে কহেন বচন। শুন শুন ওরে বৎস আমার বচন॥ ু লোকাতীত গুণরাশি দেখিয়া তোমার। বিদয় হইয়াছিল হৃদয়ে আমার॥ ্রেখাবিনী বুদ্ধি তব করি দরশন। তোমার যতেক গুণ করি নিরীক্ষণ॥ ্ছেরেছিল মনে মনে আমার নিশ্চয়। মনুষ্য নছেক তুমি দেবতা তনয়। **হৈম লোকাতীত শক্তি মানবশরীরে। কভু না থাকিতে পারে রুঝেছি অন্ত**রে িলন্দেই আছিল যত হৃদয়ে আমার। অপগত হৈল ডাছা ওছে গুণাধার।। **ঁতোমার প্রকৃত তত্ত্ব এখন জানায়। অপগত হৈল তাহা কহিন্দু ভো**গায়॥ তব পরিচয় এবে পাইয়া অন্তরে। ক্লতার্থ হইন্ম আনি কহিন্ম তোমারে॥ এখন শুনহ বংস আমার বচন। দক্ষিণা অর্পিতে যুদি করেছ মনন।। বাসনা ুর্করিছে বাহা আমার অন্তর। অর্পণ করহ তাহা ওছে গ্রহবর।। যাবত জীবন শোষি করিব ধারণ। অশুভ দৃষ্টিতে যেন না হই পতন।। তোমার অশুভ দৃষ্টি আখার উপরে। ভ্রমেও ভূলেও মেন কভূ নাহি পড়ে।। क्रें शांव চাহি আদি ্ৰোমার সঁদ্ধন। আর কিছু দ্রব্যে মন নাহি প্রয়োজন॥

প্রকার এতেক বাক্য শুনিয়া প্রবণে। কিছুকাল রহে শুনি বিনম্ভবদনে।।
কোন কথা নাহি কছে এহের ঈথর। মৌনভাবে হয়ে রহুই চিন্তিত অন্তর।।
ভার পর ধীরে ধীরে বিনীত বচুনে। সহান্যবদনে কর্ছ্বপ্রকার সদনে ॥

आर्थना क्रिंतित्म यात्रा उद्देश विजयत । अजाश आमात छात्रा छम अउन्नत ॥ किक शामने पात धरानि नकन। (करहे याशीन नटर छटर क्रिक्वेंस्। নিয়তির বাধ্য মোরা জানিবে দকলে।কি করিতে পারি মোরা ভাবহ অবস্থে শুরুর গোরব তবু করিতে রক্ষণ। সংক্ষেপে করেছি যাহা করছ এর্ণ্ আমার বিরুদ্ধ দৃষ্টি:তোমার উপরে। যাবত রহিবে প্রভু জানিবে অন্তরে তাবত তোমার কট না হবে কখন। একদিন হবেমাত্র কট উৎপাদ্দ 🛣 সম্পূর্ণ সকোপ দৃষ্টি একদিন হইবে। সেই দিন মহাকট তুমি যে পাইট্রে বিষ্ম সকটে তুমি হবে নিপতন। পরিত্রাণ পাবে কিন্তু আমার বচন । আশার বচন মিথ্যা কভু নাহি হবে। সত্য সত্য সত্য ইহা অন্তরে জানিবে। এতেক বচন বলি রবির নন্দন। নতশিরে গুরুপদে করিয়া বন্দন্। অন্তর্হিত হন তিনি দেখিতে দেখিতে। অবিলম্বে যান চলি অন্বর পথেতে 📭 পিতার চরণপদ্ম করিতে দর্শন। উৎস্থক ছইয়া চলে ভাক্ষর নন্দ্র। এদিকেতে বাচপতি ব্যাকুল অন্তরে। চিন্তিত হইয়া রহে অবনতশিরে॥ শনির যভেক বাক্য করিয়া সারণ। ব্যাকুল অন্তরে হন সকাতর মন। দৈববাক্য অনিবার্য্য ভাবি তার প্র। অগত্যা রহেন হির করিয়া অন্তর 🏗 তদবধি প্রতিদিন একান্ত অন্তরে। প্রত্যহ গণেন দিন অতি যত্ন করে॥ এইরপে দিন গণি লয়ে শিয্যগণ। অস্থির অন্তরে করে সময় যাপন ॥ এইরপে কিছুদিন অতীত হইলে। একদা উঠিয়া দ্বিন্স অতি প্রাতঃকালে॥ मझा आक्रिकति मिक करतन ठिल्डन। वह ठिल्डा कति स्थित दूर्य विशक्षण। মনে মনে চিন্তা করে গুরু দ্বিজবর। অতা মম সর্ক্ষাশ ঘটিবে সত্তর।। যেদিন শনির কোপ হবে মোর পরে। যেরপ বলিয়াছিল শনিদেব মোরে 📭 সেই দিন অত্য এই নাহিক সংশয়। কি করিবে নাহি জানি সূর্য্যের তনয় ॥ হার হার হতবিধে কি দোধে অমারে। বিপদ সম্ভুলে ফেল নমাণি আমারে॥ অধিক বলিব কিবা তোমারে এখন। যাহা ইচ্ছা থাকে মনে করহ সাধন॥ আজি বুঝি নাহি আর আমার নিতার।অদুটেআছয়ে কিবা বিধি জানে সারা। এইরপে বছ চিন্তা করিয়া তখন। যধাবিধি প্রাতঃক্ত্য করেন সাধন॥ ' শর্কবিশ্ববিনাশন নিত্য নিরঞ্জনে। একান্ত অন্তরে ভাবে নিজ মনে মনে॥ অন্তর মধবারে করে ইরিরে সারণ। কোণা হরি দুরাময় নিত্য নিরঞ্জন ॥ " তামা বিনা কে রাখিবে বিপদ নাগরে।রক্ষাকর ওহে প্রভু অধীন কিছরে॥ তোমার চরণপদ্ম ভরব মাক্র সার। তোমার চরণে করি শত নমকার। रमा कत मन्नामस अधीम छेलेटत । एकांमा विना तकिवादत आत कवा लीटत।।

লবার অতরে আছ তুমি নিরঞ্ন। সর্বসামী তুমি প্রের বিত্র সমাতন। আত্মার্ক্তপ পাক তুদি স্থার শরীরে। তৌ্যার্ক্তর্নে মতি করি উভিভরে॥ नन्दि त्रहाति अपू विशव गांशत । तक तक ७८५ अपू वर्शत जांकत ॥ ্রভোষা বিনা নাছি জানি সন্তর যাবারে।তোমার চরণে নতি করি ভক্তিভরে किंद निव्यादिक क्षि एक नगकात। तक तक उटकरतिय प्रांत आधात॥ এইছেনে ছবিশ্ব ক্রিয়া সরণ। তার পর ধীরে ধীরে শুরু বিজ্ঞতন। ব্রির্ভিকা হাতে লইয়া যতনে। শনৈশ্রর এহরাজে ভাবি মনে মনে॥ बैटिब शैटिর ভৈয়াগিয়া আপন আশ্রম। পদত্তকে পথিমাঝে করেন গমন॥ ै बीदा शीदा यान চলি ব্যাকুল অস্তরে। উপনীত হন গিয়া কিছুমাত্র দুরে॥ ষ্ট্রপনীত হয়ে তথা করেন দর্শন। উপত্যকা শোডে তথা অভি মনোরম॥ তথার শোভিছে এক কুমুম কানন। কুত্ কুত্ রব করে পুংস্কোর্কিলগণ॥ মহুলোতে অলিকুল গুন্ গুন্ সরে। বসিতেছে পুপা হতে গিয়া পুস্বাস্তরে॥ **হ্মানে স্থানে কলকণ্ঠ দাত্যুহাদি করি।শোভিতেছে কত পক্ষী শাখার উপরি॥** जीनम ভরেতে সবে করে কোলাহল। সঙ্কুলিত করিতেছে যত বনস্থল॥ ক্রিননমাঝারে শোভে দিব্য জলাশয়। ফুটিয়া রয়েছে তাহে কমলনিচয়॥ হুমুদ কহলার আদি পুষ্প নানা জাতি। ফুটিয়া রবেংছে কত নাহিক অবধি॥ ্বীরে ধীরে বহিতেছে মলয় পবন। অতিথিগণের দেহ করে আলিঙ্গন॥ হোনে হানে কত তরুকিবা শোভা পায়।আম জাম তাল আদি কি কব সবায়॥ ্রিলভুরে অবনত পাদপনিকর। শোভিতেছে কিবা **ওহে তাপ**সনিকর॥ **ে বিভাগর গন্ধর কিন্তর। যক্ষ আদি আছে কত কত বা অপ্যর॥ শীতবাত্ত করেসবে সানন্দ অন্তরে।** তালে তালে দিব্যাঙ্গনা সবে নৃত্য করে॥ উপত্যকা শোভা সব করি দরশন। গুরুদেব বাচম্পতি বিমোহিত হন॥ ভবিতব্য মনে ়মনে ভাবিতে ভাবিতে।প্রব্রত্ত হইলেন ক্রমে পুষ্প চয়নেতে॥ ুৰীরবাছ নামে সেই দেশের ঈশ্বর। হেনকালে উপনীত কানন ভিতর॥ ্**উট্টার সহিতে সৈত্ত** কে করে গণন। যুগ্য়া কারণে আ্বাসে গৃহন কীনন॥ অতি শিশুপুত্র এক দক্ষেতে আছিল। চারিদিকে রক্ষাণকরে রক্ষক দকল॥ জলক্যে সন্তান সেই হইল হরণ। রক্ষকেরা না দেখিল কিম্বা পৌরজন॥ পুলের হরণ শুনি মহিলা সকলে। কান্দির্ম আকুল ছুর ব্যাকুল অন্তরে॥ পুর্বের হরণবার্তা করিয়া এবণ। বীরবাছ রাজা ইয় ব্যাকুলিত মন।। यूर्गेन द्रांक द्राव उत्तिता अखदतं। धकास विमूक क्देत नृशिष्ठ श्रवदत्र।। व्यक्तार्छ एम एन इर्ड्स क्लाम्।। व्यक्षत्व व्यव ब्रांका करात परगन।।

### ब्रह्द निय-भूतान ।

ভ্তাগণে মথীপট্ণ দ্ধনপ্রালুকে। রোষাদ্ধ হইয়া রাজা ঘন ঘন ডাকে॥ আজ্ঞানতি উপনীত অসুচরগণ। স্বারে আদেশ করে নৃপতি ভ্রথন॥ অবিলম্বে চতুর্দিকে খাইয়া সকলে। পুত্র অধ্বেণ কর একান্ত অন্তরে 🎉 রাজার জাদেশ পেরে যত ভ্তাগণ। অবিলয়ে চারিদিকে করিল গ্রাম 🔣 কত স্থান অৱেষণ করিল সকলে। পুত্রের সন্ধান নাহি পায় কোন স্থকে 🎉 শোকের সাগরে সবে হয় নিমগন। কি করিবে কোথা যাবে ব্যাক্সিত্রার ছাড়িয়া প্রাণের আশা অনুচরগণ। চীৎকার করিয়া সবে করিয়ে রেটিন 🔐 কোনমতে কিছুমাত্র না দেখি উপায়। রোদন করিয়া সবে ব্যাকুলিতকার 🔭 পর পর মুখ দবে করে নিরীক্ষণ। জীবনে হতাশ হয়ে করয়ে রোদন। । । কান্দিতে কান্দিতে সবে ফিরিয়া আসিল। বীরবাহু তাহা দেখি মূর্চ্চিত হইল 🚜 রোষেতে অধীর হযে পরেনরপতি।লোহিত লোচনে সবে কহিছে সং**প্রতি।** শোনু শোনু বর্করের। আমার বচন। কি জন্ম তে।দের বল করিছি পালন 🕻 🖔 কোপায় আমার পুত্র বলহ সকলে। তাহারে রাখিয়া বল কি হেতু আসিলে,॥ এখনো সামার বাক্য করহ এক। অবিলম্বে পুত্রে মোর কর অন্থেষণ 👢 🤊 নদীর পুলিনে দবে যাহ ত্রা করে। নিকুঞ্জ কানন কেত্র পর্বতগহরে। শ্বির আশ্রম ঘণ। করিবে দর্শন। সর্বত্ত আমার পুত্রে কর অবেষণ 🛊 স্থিক বলিব কিবা তোদের গোচর। পুত্রের কারণে **দবে যাহ ক্রততর 💥** র পুলেরে, লইয়া নাহি কৈলে আগমন। তাহার মন্তক আমি করিব ছেদন ۴ आमात आर्फ्ण नाहि (य कन शानित्व। अित्त भमनगुरह रमकन याहेरव ॥'

রাজার এতেক বাক্য করিযা শ্রবণ। চিন্তিয়ে কাতর হয অনুচরগণা । কি করিবে কোথা যাবে না দেখি উপায়। ধীরে ধীরে পদপ্রজে দবে বাছি শরায়॥ ভীবণ-মূরতি যত কিঙ্কর-নিকর। পুত্র অরেষণে যায় কানন-ভিতর॥ কেহ কেহ গ্রামে প্রামে অরেষণ করে। নিকুঞ্জে নির্মারে আর পর্বত-কন্দরে॥ চারিদিকে সাবধানে করি নিরামণ। পুত্র অনুপুঞ্জরপে করে অরেষণ। এইরপে নানাম্বান ভ্রমিতে অমিতে। পূর্ব্ব-উপতাকাপাশে আগত ক্রমেতে॥ উপত্যকামাঝে দেই সুরম্য কানন। উপনীত তথা আসি অনুক্ররণা ॥ এদিকে উদারমতি গুরু, মহোদ্য়। ভাবিতেছে তথা বসি ভাগ্যের, বিষয়। নিজ ভাগ্যবিপর্যার করেন চিন্তন। শোভিতেছে নিজ হাতে কুসুম-ভাজন। বিষয়ে। বিরে ধীরে মুন্ত্ব-মন্দ চরণ-সঞ্চারে। উল্লান হইতে গুরু আসেন বাহিরে। বিরি ধীরে শুরুবের করেন গ্রুন। ভাবিলে সকলি মিথ্যা অসার সংসার॥ বির ধীরে শুরুবের করেন গ্রুন। তাহার হাতেতে ছিল কুসুম-ভাজন। বির ধীরে শুরুবের করেন গ্রুন। তাহার হাতেতে ছিল কুসুম-ভাজন।

স্ত্রহস্পতি সম ইনি বিখ্যাত সংসারে। সর্বদা সর্বজ্ঞ মান্ত জানে সর্বনেরে । সামান্ত লোভের বশ হয়ে এই জন। বিনয় করিবে রাজসুতের জীবন ॥ অলকার লোভ হবে ইহাঁর অন্তরে। সম্ভব নহে ত ইহা নিবেদি ভোমারে॥ আরো এক কথা নৃপ করছ বিচার। আছিলেন এই বিপ্র পর্বত মাঝার॥ ঈশবের আরাধনা করিবার তরে। চয়ন করিতেছিল কুস্কুমনিকরে॥ বহুদুরে আপনার অন্তঃপুর মাঝে। রাজস্ততে যেরি ছিল রক্ষক সমাজে॥ ্ষান্তঃপুরে ক্রীড়া করে রাজার নন্দন। বত্দুরে করে বিপ্র কুস্থম চয়ন। কিরূপে হরিবে শিশু এই বিপ্রবর। সম্ভব নহে ত ইহা ওহে নরবর॥ স্থাপত বিপ্রের পুষ্পসাজির ভিতরে। ছিন্নশিরা রাজশিশু সর্বজনে হেরে॥ দাজিমধ্যে আছে যত অঙ্গ আভরণ। ইহার নিগুত তত্ত্ব বিক্তিত অক্ষ॥ নিগুঢ় কারণ আছে ইহার ভিতর। মানুষের নহে বোধ্য ওহে নরবর॥ এইরপে রাজমন্ত্রী সভাস্থ সকলে। অদ্ভুত ব্যাপার লয়ে নানাতর্ক করে॥ ংহন কালে বাচম্পতি বিপ্র মহোদয়। চেতনা লভিয়া ক্রমে প্রকৃতিত্ব হয়। ्र<mark>मानाटि ভাক্টী করি বিপ্রের নদন। উ</mark>দ্ধদিকে দৃষ্টি করি করেন চিন্তন॥ ্বশনির পূর্বের কথা ভাবি মনে মনে। চিন্তিত অন্তরে রহে উদ্গাত নয়নে॥ তাহা দেখি নরপতি অমাত্যপ্রবর। আর যত কেহ ছিল সভার ভিতর॥ नीत्रव হইয়া সবে মৌনভাবে রয়। কথা নাহি সরে মুখে বিকল হৃদয়॥ পনিস্তব্ধ হইলে যত সভাসদগ্ৰ। বাচস্পতি একচিত্ত হইয়া তখন।। 'শনিদেবে স্তব করে একান্ত অন্তরে।কোথা শনি গহরাজ নমামি তোমারে॥ **স্থর্যের নন্দন তুমি** গ্রহের ঈশ্বর। নমস্কার তব পদে ওহে গ্রহবর॥ পুনঃ পুনঃ নতি করি তোমার চরণে। রুপা করি রুপাদৃষ্টি করহ অধীনে॥ বিপদে করহ রক্ষা ভূমি শনৈশ্চর। তোমার অধীন আমি ওহে গ্রহবর॥ জ্যোতির্বস্ত যত আছে জগত মাঝারে তোহার আধার যিনি খ্যাত চরাচরে॥ কালরপে যেই দেব বিরাজিত হয়। কালশক্তিরূপী যিনি যিনি মহোদয়॥ ব্রহ্ম বিষ্ণু শিবরূপী যেই মহাজ্মন্। জগত সংসার যিনি করেন পালন॥ সমস্ত জীবের অন্তরাত্মা বলি যারে। জগতের অন্ধকা্র যেই দেব হরে॥ ভাষোত্ম বলি যাঁর বিখ্যাত আখ্যান। নারায়ণ বলি যিনি খ্যাত সর্ব স্থান॥ ঘেই দেব দিবাকর বিদিত সৎসারে। তাঁর পুত্র শনৈশার জানে সর্কনরে॥ ভাক্ষরৈর রূপান্তর শনিদেব হন। ভক্তিভাবে সেই ঐ্রেই করিছি সর্ব।। শুন শুন ওছে সৌরে আমার বচন। অখও বিক্রম বৈধ্যাত ভুবন॥ তোষার তুলনা নাহি জগত সংসারে। জন্ম লুয়েছ তুমি ছায়ার উদরে॥

তথাপি নিশ্চর জানি স্থর্বোর নন্দন। গ্রহরপী জনার্দ্দন তুমি মহাতান। করণা কটাক্ষ কর আমার উপরে। রক্ষা কর ওকে দেব বিপদ সাগরে 🛚 নিজ সত্য রক্ষা কর ওতে মহোদয়। বিপদ ছেরিয়া মম বিকল ছালয়। দকোপ দৃষ্টিতে তব হয়ে নিপতন। অভিভূত হয়ে আছি ওহে মহাজ্মন 🛊 कृषा केंत्र कृषामय अधीन छेषदा। तका कत जीन कत विशेष मानदा ॥ শাস্ত্রজানে জানিয়াছি তুমি মহাজ্মন। সূর্ব্যের দ্বিতীয় মূর্ত্তি তুমি সাধুজন ॥ সুপ্রসর হও তুমি যাহার উপরে। ভাগ্যবান্ দেই জন এ ভবসংসারে 🛭 माभाग মানব যদি হয় সেই জন। তরু ভাগাশালী হয় ওহে মহাজ্ম।। মুপ্রসন্ন হও তুমি যাহার উপরে। রাজ রাজেশ্বর দেই এ ভব সংসারে॥ সর্বত্ত সন্মান পায় সেই সাধুজন। তাহার সদৃশ নাহি এতিন ভূবনা মর্ত্ত্যলোকে সেই জন করি অবস্থান। পর্ম সুখেতে রহে ইন্দ্রের সমান। হস্তী অধ রথ আর পদাতি নিচয়। চতুরক সেনা তার অমুগত রয়। অতুন ঐশ্বর্য্য হয তাহার আগারে। সর্বজনে মান্ত কবে সর্বত্ত তাহারে।। অতি দীনখান মূচ যেই সভাজন। তাহারে করুণা যদি কর**হ অর্পণ**!! তোমার প্রদাদে দেই লইনে সন্মান। মহাবীর হয় দেই শাস্ত্রের প্রমাণ 🗈 তাহার সমান যোগী না রহে ভুবনে। বুদ্ধিমান হয় সেই খ্যাত সর্বস্থানে॥ ঙন ভন শনৈশ্চর আমার বচন। ক্লভাঞ্জলি করি আমি করি নিবেদন॥ স্থপন হও দেব আমার উপরে। চরণ বন্দনা তব করি ভ**ক্তিভরে**॥ তোমার কোপেতে পড়ে যেই নরাধম। ছুর্ভাগ্যের শেষ তার না রহে তখন॥ ঐশর্ষোতে পরিভ্রন্ট হয় একেবারে। নিমগ্ন হইয়া পড়ে শোকের দাগরে॥ মানুষের কথা থাক্ দেব দৈত্যগণ।তোমার কোপেতে লক্ষ্মী না পায় কখন ॥ যক্ষ রক্ষ সিদ্ধ আদি অথবা কিন্নর। উরগ অপ্সর কিন্তা আর বিদ্যাধর। কেহ নাহি রক্ষা পায় তব ্লোপানলে। নিমজ্জিত হয় সেই বিপাদ সাগবে॥ অধিক বলিব কিবা ওছে মহাত্মন্। মহাযোগী তুমি দেব সূর্য্যের নন্দন।। বক্র ভাবে তুমি কর কটাক্ষ বাহারে। হতবুদ্ধি হয়ে সেই রহে একেবারে॥ জীবন্মৃত সম হয় সেই অভাজন। অধিক বলিব কিবা ওছে মহাত্মন্।। এহরশী জনার্দন তুমি যোগেশর। পুনঃ পুনঃ নতি করি ওছে এহবর।। যুপ্রসন্ন হও দেব আমার উপরে'। কুপা করি কুপা কর দীন হীন নরে॥ তোমার অসাধ্য নহে জগত মাঝার। পুনঃ পুনঃ নতি করি চরণে তোমার॥ অঘট ঘটাতে পারু পুমি মহাত্মন। বলেতে তোমার সম নাহি কোন জন॥ অতুণ ঐর্য্য হয় ভোমার রূপায়। কটাক্ষে নাশিতে পার অধিল ধরায়॥

শ্প্রসর হও তুমি যাহার উপরে। তাহার ভাবনা কিবা এ তিন সংসারে। বিদার্থী লভরে বিদ্যা তোমার কপায়। যশকামী পায় যশ আসিয়া ধরায়। কামার্থীর কাম পূর্ণ তোমা হতে হয়। ধনার্থীর ধন হয় নাহিক সংশয়। অধিক বলিব কিবা ওহে মতিমান্। বিপদ সাগরে মোরে কর পরিত্রাণ।

এইরপে স্তব করে গুরু বাচস্পতি। এদিকে সম্বট হন সূর্য্যের সন্ততি॥ ওরুর এতেক স্তব করিয়া এবণ। প্রম সন্তুষ্ট হন ভাক্তর নন্দন॥ শুক্তমার্গে অবস্থিতি করি শনৈশ্চর। ধীরে ধীরে গুরুদেবে করেন উত্তর। গুনিতে পাইল সেই দেশের রাজন। সভাস্থ সকলে তাহা করিল এবণ। জলদগম্ভীর রবে শনিদেব কয়। শুন শুন মম বাক্য শুরু মহোদয়॥ রাজা হতে ভয়ে আর নাহি প্রয়োজন। তাহার কারণ বলি করহ শ্রবণ।। তত্ত্বজ্ঞ পুরুষ তুমি বিদিত সংসারে। গুরুত্বে বরণ তাছে করেছি তোমারে॥ তোমার নিকটে মিথ্যা না বলি কখন।তোমারে বঞ্চিতে মম নাহি প্রযোজন **আমার নিকটে যথা চে**য়েছিলে বর। স্বরণ করহ তাহা ওহে দ্বিজবর॥ মম বক্রদৃষ্টি হেতু যত কট হবে। একদিনে তাহার ফল সমস্ত পাইবে॥ বলেছিকু এই কথা করহ মরণ। আজি সেই দিন তব দিজের নন্দন॥ অতএব কোভ নাহি রাখিও অন্তরে। ভবিতব্য কেবা বল খণ্ডিবারে পারে।। এখন নিশ্চিম্ভ হও ওহে মহাতান। চিরস্থী হলে তুমি আনাব বচন॥ আজীবনে আর কট কভু নাহি হবে। এ শরীরে তুঃখভোগ কভু নাহি পাবে॥ আচার্য্যের এত বলি ছায়ার নন্দন। নৃপতিরে তার পর করি সম্বোধন॥ কহিলেন শুন শুন ওহে নরপতি। অতি বৃদ্ধিশান্ ভূমি খ্যাত বস্থমতী ॥ তোমারে অধিক বলা নছে প্রয়োজন। এখন আমার বাক্য করহ শ্বণ ॥মন্ত্রীবর্গ যত আছে সভার ভিতরে। আমার বচন দবে শুনুক্সাদরে॥ মন্ত্রী সহ বিবেচনা করি নরপতি। উচিত করহ যাহা বুঝিবে সংপ্রতি। ভন ভন নরপতি আমার বচন। এই যে হেরিছ রদ্ধ বিপ্রের নন্দন॥ মহাপ্রাজ্ঞ দ্বিজবর বিদিত সৎসারে। আচার্য্যত্ত্বে বরিয়াছি জানিবে ইহাঁরে॥ করেছি ইহার পাশে বেদ অধ্যয়ন। তাহার পরেতে শুন যে হয় ঘটন॥ অধ্যয়ন সমাপিয়া তার অবসানে। যখন চলিনু আমি আপন ভবনে॥ मिकिंग চাহিলা গুরুমম সরিধান। এইর প বলি कुन নৃপতি ধীমান্॥ "শুন তান সূর্য্যপুত্র আমার বচন। যদ্যপি দক্ষিণা দ্বিতে করেছ মনন॥ অওভ দৃষ্টিতে যেন না পড়ি তোমার। এই মাত্র মাগি আমি ওবে গুণাধার॥" শুকর এতেক বাক্য করিয়া শ্রবণ। বলেছিত্ব এইরূপ গুনহ রাজন।।"একদিন শাত কট লভিতে ইইবে। কিন্তু সেই বিপদেতে পরে রক্ষা পাবে॥" এইরপ বলেছিনু জানিবে রাজন্। আজি সেই দিন এই হয়েছে ফুটনাঃ
বলিলাম যাহা থাহা ওছে নরপতি। সত্য সত্য এই বাক্য কহিনু সংপ্রতি॥
এখন বলিব যাহা করহ প্রবণ। করিতে আছিল ক্রীড়া তোমার নন্দন॥
খেলিতে খেলিতে শিশু হইয়া কাতর। ধীরে ধীরে যায় অন্তঃপুরের ভিতর॥
অন্তঃপুরমাঝে পশি রত্ন কোষাগারে। মুখে নিদ্রা যায় শিশু প্রান্তকলেবরো
যদ্যপি বিশ্বাস নাহি হয় হে রাজন। রত্নগৃহে গিয়া শীঘ্র কর দরশন॥
আমার মায়ায় মুঝ্ন হইয়া সকলে। ছিন্ন শির হেরিয়াছ পুজসাজি পরে।।
মম মায়া ভিন্ন নহে কিছুই অপর। শুন শুন মম বাক্য ওছে নূপবর॥ কল্যাণ
কামনা যদি করহ অন্তরে। পূজা কর অবিলম্বে রদ্ধ বিপ্রবরে॥ বিবিশ্ব,
বসন আর বিবিধ ভূষণ। অবিলম্বে রদ্ধবিপ্রে কর সমর্পণ॥ বিশেষ সন্মান
কর বিহিত বিধানে। মঙ্গল হইবে ইথে কহি তব হানে॥ যদ্যপি ইছাতে
কর অন্তথাচরণ। অমঙ্গল হবে তব জানিবে রাজন॥

শনির এতেক বাক্য শুনিয়া অবণে। বীরবাত্ পুলকিত নিজ মনে মনে॥ করযোড় করি পরে মানুষ-ঈশর। বিনত মস্তকে কহে ওচে বিজ্ঞবর॥ কোন্দেবপুত্র তুমি বলহ বচন। তুমি কেবা জানিবারে করি আকিঞ্চন। দেব দৈত্য কিবা যক্ষ অথবা কির্র। সিদ্ধজন হও কিন্তা হও বিদ্যাধর॥ গদ্ধর্ব উরগ কিম্বা রাক্ষ্য-প্রধান। কেবা হও সভ্য করি কহ মতিমানু॥ তোমার জ্বলন্ত মূর্ত্তি করি দরশন। অনুমানে বুঝিতেছি দেবের উত্তম। কিম্বা নিজে অগ্নিদেব জ্বলন্ত আকারে। উদিত হলেন আসি গগন-উপরে॥ বিমূঢ়-অজ্ঞান শোরা ওহে মহাতান্। আপনারে চিনিবারে না হই সক্ষ। ক্লপা করি অধীনেরে দেহ পরিচয়॥ চরিতার্গ হব তাহে ওহে মহোদয়॥ মহাগ্রছ সূর্যপুত্র শনি মহাত্মন্। রাজার এতেক বাক্য করিয়া শ্রবণ॥ প্রসন্ন হইয়া কহে শুন নরপতি। বুঝিলাম তুমি বটে অতি মহামতি॥ তোমার কল্যাণ হবে নাহিক সংশয়। আমার বচন মিথ্যা কভু নাহি হয়॥ षाभात जारमभ यह केतरय भामन। विभाग जाहारत नाहि करत जाक्रमण॥ এখন শুনহ তুমি মম পরিচয়। অন্ধকার নাশে যাঁর ছইলে উদয়॥ সেই দেব দিবাকর জনক আমার। শনিদেব মম নাম সূর্য্যের কুমার॥ ছায়ার উদরে মম হয়েছে জনম। এহরাজ বলি যোরে ডাকে সর্বজন॥ এত বলি মৌন-ভাবে রছে এছবর ়া প্রবণ করিয়া তুই হন নরেশ্বর ॥ শনির এতেক বাক্য করিয়া প্রবণ। কদি হতে ভয় সংক করে বিসর্জন॥ রোমাঞ্চিত তমু হন

িসেই নরপতি। তাঁহার অস্বরে জন্মে অসীম ভ্কতি।। ঊর্দ্ধ্যুখে চাহি রাজ। গগনের পানে। স্ততিবাদে শুব করে বিহিত বিধানে॥ শনিদেবে নানা-মতে করিরা শুবন। বাচস্পতি-পদতলে পড়েন তখন।। পাছে অভিশাপ দেন গুরু মহামতি। এই ভয়ে ভীত হন সেই নরপতি॥ রুদ্ধের চরণে পড়ি ক্তবিয় রাজন। করযোড় করি কহে বিনয়-বচন॥ ওন শুন ভগবন নিবেদি তোমারে। কোপ নাহি কোরো প্রভূ অধীন উপরে॥ স্থাসর হও দেব হইয়া সদয়। তব সম ধরাধামে নাহি মহোদয়॥ অজ্ঞানের অপ্-'রাধ করহ মার্জ্জন। তুমি দেব মহাগুরু তপঃপরায়ণ॥ আমাদের 'পুজনীয় তুমি মহামতি। তোমার গুণের প্রভু নাহিক অবধি॥ কোপ নাহি রহে প্রভু তোমার অন্তবে। তব কোপে নাহি ত্রাণ এ ভবসংসারে॥ যদি ক্রোধ হয়ে থাকে অধীন উপর। ক্রমা কর ক্রমাণ্ডণে ওহে বিপ্রবর॥ অজ্ঞানে করেছি দোষ করহ মার্জ্জন। চিরাধীন তব আগি ওছে মহাত্মন। **উদারতাণ্ডণে ক্ষম করহ আমারে। পুনঃ পুনঃ নতি** করি চরণ-উপরে। আমরা অজ্ঞান মূঢ় অতি নরাধম। সংসার-মায়ায় মুগ্ধ আছি সর্কাশণ॥ পরম তত্ত্তে কিন্তু তুমি মহোদয়। ত্রন্ধনিষ্ঠ হয়ে সদা রয়েছ নিশ্চয় । ক্ষা যদি নাহি কর এ অধীন জনে। তাহা হলে কোথা যাব কাহার মদনে।। ক্ষাপুণ রবে তবে শরীরে কাহার। বল দেখি ওহে প্রভু করিয়া বিচার।। কাহার শরণ মোরা করিব গ্রহণ। দরাদান কেবা বল করিবে অর্পণ।। এইরপে বীরবাহু অবনীর পতি। নানামতে গুরু দেবে করি স্তুতি নতি॥ তাহাঁর অন্তরে ভূষ্টি করিয়া বিধান। অসংখ্য অসংখ্য দ্রব্য করেন প্রদান।। বিধানে তাঁহারপূজা করেন সাদরে।কতদ্রব্য দেন তাহা কে গণিতে পারে। সবৎসা সহস্র ধেনু করেন অর্পন। অসংখ্য অসংখ্য দেন রোমজ বসন। ছিরথায় আভরণ কত দেন পরে। অশ্ব গজ দেন কত্টকে গণিতে পারে। এইরপে নরপতি অতি বিচক্ষণ। স্থাদরে ওক্তদেবে করেন অর্পণ। পূজা পেয়ে বাচস্পতি আনন্দিতমতি। আশীকাদি করে কত নৃপতির প্রতি॥ তার পর অনুমতি করিয়া এছণ। আপন আশ্রমে পুনঃ করেন গমন।। পরম সুখেতে পরে জীবন কাটায়। শনি এছ আর নাহি আক্রমে ভাঁছায়॥ ध फिरक क वीतवाङ जानतम मगन। तंत्रगृरह निक्शिष्ण करतन पर्भन। স্থাবেত নিদ্রিত শিশু রয়েছে তথায়। হেরিয়া সকলে হয় পুলকিত কায়। मक्त आठांत्र कङ करतन ताजन। जनरशु जनरशु भन करत विভतन। জাকণ ভোজন কত করান সাদরে। দীন ছখী ধন পায় রাজার গোচরে ।

জেইরপে মনসুখী হইয়া রাজন। আপন নগরে পুনঃ করেন গদন। চতুরক্ষ দেনা চলে দছিতে ভাহার। পদভরে বস্থমতী কাঁপে অনিবার ॥ নগরে যাইয়া রাজা আনন্দে মগন। উৎসব করেন কত কে করে বর্ণন । তদ্বধি নরপতি একান্ত অন্তরে। শনি-খারাধনা করে অতি ভক্তিভরে॥ শনিবারে শনিদেবে করেন পূজন। বিহিত বিধানে পূজা করেন সাধন॥ ভক্তিভবে শনিস্তব অধায়ন করে। আর নাহি রাখে মতি কাহার উপরে॥ এত বলি মিউভাবে বিধির নন্দন। ঋষিগণে সম্বোধিযা কহেন তখন॥ অধিক বলিব কিবা তাপস নিকর। শনির অসাধ্য নাহি জগত-ভিতর ॥ শনির মাহাত্ম্য বল কে বলিতে পারে। কত কাও ঘটিয়াছে কত সাধুপরে॥ ভবিতব্য যাহা তাহা না হয খণ্ডন। ললাটের লিপি যাহ। হইবে ঘটন। জিজ্ঞানিযাভিলে যাহ। ১ শ্ব নিক্র। বর্ণন করিনু তাহা নবার গোচর ॥ গ্রহ প্রতিকল হয় যাহার উপরে। তাহার তুর্গতি বল কে বলিতে পারে॥ ভ জিভরে ইহা যেই করে অধ্যান। তাহার যতেক ছঃখ হয় বিমোচন॥ দুর্গাত বিনাশ পায় জানিবে তাহার। কুগ্রহ স্থগ্রহয় শাস্ত্রের বিচার॥ ভিক্তি করি অণ্যান করে যেই জন। শনিদেব তার প্রতি পরিতৃ**ট হন।।** শনিকোপ নাহি হব গহার উপরে। স্থেতে সে জন সদা ধরায় বিচরে॥ রোগ শোক তাবে নাহি করে আকুমণ। শাস্তের লিখন ইহা না হয় খণ্ডন।। পুরাণে মধুর কথা সার হতে সার। পড়িলে তাহার হথ পুণ্যের সঞার॥ তাই বলে দ্বিজ কালী ওরে মত মন। সব তাদি ভাব সেই সাধনের ধন ॥

#### একপঞ্চাশত্তম অধ্যায়।

সূর্য্যনন্দনের মাহাত্ম্য ও তৎপ্রসংক্ষ বীরসেশেশাখ্যান। সন্ত্রুমার উবাচ।

শৃণুধ্বং ঋষয়ঃ সর্বের্ব কোপমূর্ত্তের্মহাত্মনঃ। বিভাকরস্থনোশ্চেদ মাছাত্ম্যমদলোত্মম্॥

সনকাদি ঋষিগণ সানক অন্তরে। পুনশ্চ জিজ্ঞাসা করে সনত-কুমারে॥
তন ভন নিবেদন বিধির নন্দ। তোমারে বলিব কিবা তুমি মহাজ্বনু॥

তোষার প্রশংসা কত করিব বদনে। কি পুণাকাছিনী কৈলে সাবার সদনে। ু মোদের শালসা পুনঃ হয় বলবতী। পুনশ্চ বর্ণন কর ওচে মহামতি॥ শনির মাহাত্ম্য কথা করিতে শ্রবণ। পুনশ্চ হতেছি মোরা উৎকণ্ঠিত-মন॥ আর কারে কট দিল ভান্ধর-তনয়। প্রকাশ করিয়া কহ ওহে মছোদয়॥ কার প্রতি ক্রপাবারি করিল বর্ষন। প্রকাশ করিয়া কহ ওহে মহাজ্ন।। ইহলোকে যাঁরা যাঁরা যাতেন কল্যাণ। শনিবে কিরুপে তারা করিবে সন্মান। কিরূপ করিলে কাজ শনি তুঊ হন। প্রকাশ করিয়া তাহা কহ মহাত্মন্।। হেন কিছু নাহি আর জগত মাঝারে। তুমি থাহা নাহি জান আপন অন্তরে॥ ৰল বল সেই কপা বিধির নন্দন। কার প্রতি তুই হয়ে সূর্য্যেয় নন্দন॥ ভাঁহারে প্রদান কৈল অভিমত বর। প্রকাশ কবিয়া কহ বিধির কোওর॥ **এতেক বচন শুনি বিধির নন্দন।** মিউভাবে ঋষিগণে করি সম্বোধন॥ কহিলেন শুন শুন অপুর্ব কাহিনী। শনির মাহাত্ম কহি ভন যত মুনি॥ बীরদেন নামে ছিল ক্তিয় রাজন। কত ক্ষ্ট দিল তারে সূর্য্যের নন্দন॥ নিজ অধিকারে পেয়ে এহ শনৈশ্র। কত কট দিল ভন তাপদনিকর॥ **তার পর তুট হ**রে রাজার উপরে। করেছিল মহাসুখী জানিবে অন্তরে॥ সেই কথা প্রকাশিয়া করিব বর্ণন। মন দিয়া শুন তাতা দহে ঋষিপ্র।। **বীরদেন নরপতি অতি বৃদ্ধিমান্।** ভাহার স্থান নাহি ছিল বীর্যাবান ॥ ষত রাজা ছিল এই স্বামাণ্ডলে। রেখেছিল স্বাকারে নিজ করতলে॥ **ঐশর্য্যেতে নাহি ছিল তাঁহার স**্থান। অ্যিত্বিক্রম তিনি খ্যাত স্ক্র্যান॥ ওক সেবা নিরন্তর করিত রাজন। বিপ্রগণে নিরন্তর করিত অর্চ্চন॥ হুলর্দ্ধণে পূজা করিত সাদরে। সংকার করিত সদ। তত্ত্বজ্ঞ সাধুরে॥ এই হেতু কুলধুযু্ত্য কহিত ভাঁহায়। ভাঁহার গুণের কথা কি বলি সবায়॥ তাঁহার মহিমা বল কে করে বর্ণন। যখন নৃপতি কোথা করিত গমন। ণত শত কর তাঁর অনুগামী হৈত। চতুরজ বল সদা সজেতে ঘাইত॥ ধ্বন যেতেন রাজা সমর-অঙ্গনে। কত-নৈতা যেতে। সঙ্গে না যায় কছনে॥ হন্তী অশ্ব রথ আর কত বা পদাতি। নাচিতে নাচিতে যেতো নাহিক অবধি॥ মত্যে অত্যে কত দেন। করিত গমন। এক্সুখে দেই কথা কৈ করে বর্ণন।। **।মুর্কেদে বিশারদ অন্য রাজগণ। সতত** তাঁহার আজ্ঞা করিত বহন॥ কি**ছর সমান সদা** বিনত-বদনে। দাঁড়ায়ে থাকিত সবে<sup>†</sup>রাজার সদনে॥ শৌর্য শক্তি প্রভাবেতে সেই নরপতি। একচ্ছত্র করেছিল এই বসুমতী॥ একলা ছর্জাগ্যবশে বীরদেন রায়। শণির্ক্ন কোপেতে পর্ডি কত কন্ট পার॥

पीतरमन नेतरोडि भनि-रकाशानरन। आक्रांख इहेता शर्ड विश्वमागदत ॥ ক্রমতে এবর্যা নট হইল তাঁহার। অল-প্রতাঙ্গাদি হৈল অভিযাত্ত সার্দ্ধ 🖟 ক্রমে ক্রমে শক্রগণ করি আক্রমণ। কাড়িরা লইল রাজ্য ওহে মুনিগণ 🖡 প্রায়ন করে রাজ। বন্ধুর আগারে। পাঞ্চালের নরপতি বিখ্যাত সংসারে 🖈 অবুল ঐথর্যাশালী সেই নরপতি। বীরসেন তথা গিয়া করিল বসজি। কালের কুটিল গতি কর দরশন। কানেতে কত বা হয় আশ্চর্য্য ঘটন। বীরসেন নরপতি অবুল বিক্রম। কাঁপিত যাঁহার ভয়ে এ তিন ভুবন ।: রাজলক্ষী ভাট হয়ে দেই নরপতি। দীনছঃখী নম আজি করিছে বসতি। নিজের জীবনরকা করিবার তরে। আগ্রয় লইন গিয়া পাঞ্চাল নগরে। পাঞ্চালরাজের কাছে লইল শরণ। পাঞ্চালের নরপতি বন্ধু তাঁর **হন দ**্ বছদিন পরে দেখা বন্ধর মহিতে। পাঞ্চালের নরপতি সবিষয় চিতে 📭 বীরদেনে প্রথম 🕏 চিনিতে না পারি। কত মতে তর্ক বরে মনেতে বিচায়ি 📭 পঞ্চালের নাথ মনে করেন চিন্তন। এ কি হেরিতেভি হার আশ্চর্য ঘটন 📭 🔉 বীরসেন মম বন্ধ অমিত বিক্রম। ইন্দ্রুলা ছিল সিম্ধু দেশের রাজন । भे এই ভাবে আজি কেন আমান আগানে। বুঝিতে না পারি কিছু আ**পন অন্তরে** পর্ম ধার্মিক তিনি অতি মহোদ্য়। কত্ত তাঁহার ম্ম নাহি কেই হয় 🕸 করিতেন পুত্র সম প্রজার পালন। এরপ ছুর্গ:ত হৈল কিসের কারণ 🗗 এইরপে বলুকণ চিতিয়া অন্তরে। বিলক্ষণরপে রাজা বুঝিলেন পরে। বুঝিলেন এই সেই সিম্ন অধিপতি। হইয়াছে কালবশে এরপ তুর্গতি 🕨 বত্দিন প্রের বন্ধ করি দবশন। আনন্দে উন্মত্ত হন পাঞ্চালরাজন। আণিজন নম্ভাবণা করিয়া সাদরে। জিজ্ঞাসা করেন গরে সৈম্ব ঈশবে। বহুদিন পরে সঙ্গে হৈল দরশন। কিন্তু আজি কেন হেরি ম**লিন বদন।** দীনছঃখী সম কেন নেহারি তোমারে। পূর্বঞী নাহিক আর বদনবিবরে। ধনুর্বেবদে বিশারদ তুমি একজন। ইন্দ্র সম তুমি ভূমে অমিত বিক্রম। বীর্যান নাহি ছিল জোমার সমান। হেন তুরবত্থা কেন কহ মতিমান্।। \* হায় হায় ওরে বিধি কিসের কারণ। বন্ধুর এরপ দশা করিলে সাধন॥ . নিশ্বদেশ-অধিপতি বলের আধার। করিত শক্তর মাথে চরণ-প্রহার 🔭 ... তাঁহার তুর্দশা আজি কিনের কারণ। খদয় বিদীর্ণ হয় করিলে দর্শন ॥ ः কি বলিব ওছে সুখে একণ তোমারে। তোমার ছুদ্দশা দেখি ছুদুর বিদরে॥ ভূবনে বিখাণত ছিল্ম তোমার বিক্রম। আজি কেন হেন দশা করি দরশন ॥ শক্রর আনন্দ হৃদ্ধি করিলে ভূপতি। আমাদের চক্ষে জল বহে নিরবধি॥

🕍 হেন তুদ্দশা বল কিলের কারণ। বলিয়া শীতল কর বন্ধুর জীবন। এরপে জিজ্ঞাসা করে পঞ্চালস্থপতি। কিছুতে উত্তর নাহি কলের নরপতি॥ পৌনভাবে অধােমুখে করি অবস্থান। রোদন করিতে পাকে রাজা মতিযান। व्यवना त्रभी मम करतन त्रापन। कन পरत रिथ्रा धति मिन्नुत त्राजन्॥ শোকাল্র মার্জন করি ছঃখিত-অন্তরে ছেঃখের কাহিনা কহে পাঞ্চাল ঈশবে॥ ওন শুন ওতে সথে পাঞ্চাল-ঈশ্র। আমার ছঃখের কথা কি বলি বিশুর॥ शांक्ष छूटे र्षेव घटव करत आग्रमन। आर्क्या ध्रमेन घटि जानिटव उथन॥ ছুদ্বৈ-হস্তেতে কারো নাহি পরিত্রাণ। ছুদ্বৈ সমান কেছ নাহি বলবান্॥ শহাত্ম সুজন যেই অবনীমগুলে। ছুদ্বৈ-ছাতেতে রক্ষা নাহি কোন কালে॥ ধরাতলে যেই জন রাজ্যের ঈশর। যে জন বিখ্যাত বলি মহাত্ম প্রবর্ম হুদৈব বশতঃ সেই রাজাহীন হয়। ছুঃখের সাগবে তুবি মহাক্ষ সয়॥ হুর্ভাগ্য আমারে এবে করি আক্রমণ। করিয়াছে এই দশা করহ গ্রণ। রাজ্যত্রক লক্ষীত্রক হইয়া সংসারে। আসিয়াছি দীনবেশে তোমার আগারে॥ মিত্রগণ আজি মোরে করিয়া দর্শন। শোকেতে কাত্র হলে করিছে রোদন॥ একদিন গুপ্তভাবে যত শত্রুগণ। আমার নিকটে সবে করে আগমন॥ **জাবিকাথী´ হয়ে আদে আমা**র আগারে।কতমতে ছুঃখ করে আমা**র** গোচরে তাহাদের গুণরাশ্রি করিয়া দর্শন। মন্ত্রী রূপদেতে আমি রাখিনু তখন।। ভাহাদের শৌর্য বীর্য্য গান্তার্য্যাদি হেরি। দিলাম মন্ত্রাতপদ মনেতে বিচারি॥ ভার পর ছন্নবেশী ছুবাত্মানিকর। কুমন্ত্রণা দিতে থাকে ওছে নরবর॥ শিত্রতার ভান করি কত কথা কয়। সহজে ছুটের বৃদ্ধি বুঝিবার ন্য॥ क्षञ्चा जात्न ज्वार छाड़िज इहेरत। इतन जात्नत वन विकन स्नारत। इउतु कि इरा यारे जानित उथन। तम कथा विलाख लब्बा इरख ए ध्यन॥ শর্ণ করিলে তাহা এখন অন্তরে। ভয়েতে রোমাঞ্চ হয় জানিবে শরীরে॥ ধনহীন যবে হয় ভূমে কোন জন। তারে পরিত্যাগ করে আত্মীয় যেমন॥ শেইরূপ দয়া আদি বিচার-শকতি। আমারে করিল ত্যাগ ওছে নরগতি॥ আমার অন্তরে দয়া না ছিল তখন। দামিণ্যাদি গুণ মোরে করিল বর্জ্জন॥ ৰিচার শক্তি নাহি রহিল আমার। ক্রনে ক্রমে সব মম হৈল ছারখার॥ আধিক বলিব কিবা ওহে নরপতি। কুহ্গার হাতে পঞ্জি মম স্বুরগতি॥ জীড়ামুগ রাখে যথা বান্ধিয়া শিকলে। সেরূপ রাখিল মোর্ফে কুইকী দলে॥ হুমন্ত্রণা দিত যোরে পাপাত্মানিকর । তাহাদের বশ ছিল আমার অন্তর।। হিতাহিত জ্ঞান নাহি ছিল যোর মনে। করিকাম যা বলিত ফুহি তব স্থানে॥

বিবেচনা নাহি ছিল অভরে আমার। অধিক বলিব কিবা ওচে খুণাধার॥ পূ নমন্ত্রী বন্ধু আদি যে কেহ আছিল। আমার ব্যভার দেখি ছঃখেতে ভাসিল 🎥 অবিরল তারা সবে করয়ে রোদন। দৃষ্টিপাত তাহে আমি না করি কখন। অধীর হইয়া তারা কান্দে নিরন্তর। শোকাত্রু বর্ষণ করে ওহে নরেশ্বর।। ক্রমে ক্রমে জীর্ণ শীর্ণ হইয়া সকলে। আমারে ছাড়িয়া সবে গেল নানা হলে॥ বিলক্ষণ অবসর পাইয়া তখন। কুমন্ত্রণা দিতে থাকে কুহকীর গণ।। কুটজাল ক্রমে ক্রমে করিয়া বিস্তার। রাজ্যধন সব মম করে ছারখার ॥ সিংহাসন হতে মোরে বিচ্যুত করিল। তাহাদের আশা পূর্ণ দ্বর্থা হইল। ত্থন অগত্যা আমি হয়ে অসহায়। চারিদিকে আর কোন না হেরি উপায়॥ বিবেডিয়া দেহ মান লইয়া সম্বল। নিশাভাগে পলায়ন করি ক্রততর ॥ প্রায়ন করি আমি আদিবার কালে।কত কট লভিয়াছি কি কহি তেঃমারে সে সব বণিতে এবে রসনা অক্ষম। পথিমাঝে ছোর বন হয় দরশন॥ হি অ জন্তু ঘন ঘন অসংখা বিচরে। মাঝে মাঝে চীৎকার ঘোর রবে করে 🛭 কত দ্ব্যু ছেবিয়াছি ।িকট আকার। তীক্ষ্ণ তীক্ষ্ণ অসি শোভে হাতে স্বাকার এ সব বিপদ পথে করি দরশন। জন্মেছিল মহা ঘুণা জীবনে তখন। আজু-হত্যা মহাপাপ জানিয়া অন্তরে। অতি কন্টে রেখেছিত্ব আপন শরারে॥ তার পর মহাকটে করি আগমন। আপনার কাছে আদি লভিমু শরণ॥ কি বলিব সখে আর অধিক তোমারে। ভাগ্যদেব প্রতিকূল হয় ষেই কা**লে**॥ বিদ্যাবুদ্ধি কিছু নাহি থাকিবে তখন। শৌষ্য বীষ্য হয়ে যায় সমূলে নিধন।

মিত্রমূপে তুঃখকথা করিয়। শ্রবণ। তুঃখের সাগতে ভাসে পাঞালরাজন॥
অতীব কাতর হয় তাঁহার অন্তর। মূহ্র্ছ্র দীর্ঘ্রাস ফেলে নিরস্তর॥
বালক স্থান রাজা করেন রোদন। বহুক্তে থৈর্য্য পরে করিয়া ধারণ॥
আশাস প্রদান করি সৈদ্ধব-ঈশ্বরে। বলিলেন শুন স্থে যা বলি তোমারে॥
কালের বিভিত্র গতি জানে সর্বজন। স্যভাবে একরপ না রহে কখন॥
এখন পড়েছ তুমি বিপদ-সাগরে,। শুভদিন হবে পুনঃ অবশ্যই পরে॥
রাজ্য আর এশ্র্য্যাদি হবে পুনরায়। কালের এরপ গতি কহিন্তু তোমায়॥
য়ত্তিদন অনুকূল না হবে সময়। তাবত শেখানে রহ ওহে মহোদয়॥ তব
গ্রেম স্থে কিছু ভিন্ন নাই। ত্মি আমি এক দেহ কহি তব ঠাই॥
অবাধে এখানে তুমি কর নিবস্তি। কালের প্রতীক্ষা কর ওহে মহামতি॥
এরপ আখাস বাক্য করিয়া শ্রবণ। বীরসেন করে ছানে ধেরম্ধারণ॥
সম্মত হইয়া পরে বৃদ্ধর কথায়া। প্রথে নিক্সতি করে জানিবে তথায়॥

্বিশ্বুর নিকটে সেই পাঞ্চালনগরে। বীরসেন নরপতি নিবস্তি করে॥ সনত-কুষার মুখে শুনিয়া সকল। অতি পুলকিও হয় তাপসনিকর ॥ বারং বার মিউভাষে করি সম্বোধন। সনতকৃমারে কছে যত ঋষিগণ।। পুণ্যকর উপাধ্যান শুনিবু সকলে। মোহিত হইলু নোরা জানিবে অন্তরে॥ ওনি তত ইচ্ছা হয় বলবতী। বল বল তার পার ওকে মহামতি॥ পাঞ্চালেতে কৈল অবস্থান। তার পর কি ঘটিল ওহে মতিমান॥ বল বল পুণ্য কথা করিব অবণ। পাপধংস হবে ইণে ওছে মহাত্মন্॥ ভানলে এ দব কথা অতি ভক্তিভরে। পাপ নাশ হয় তার শাস্থের বিচারে॥ পুনঃ পুনঃ **ক্থায়ৃত যত করি পান। তত** ইচ্ছা বাড়ে আরো ওহে মতিমান্॥ ঋষিদের এই বাক্য করিয়া অবণ। মধুরবচনে ক্রমে বিধির নন্দন॥ শুন শুন ঋষিগ্র ৰিলি তার পরে। যেরপ ঘটনা হল গাঞ্চালনগবে॥ অতি পুণ্যকথা এই **ষ্পতি মনোরম। শুনিলে তাহার** পাণ হয় বিনাশন॥ ভক্তিভরে যেই জন করয়ে এবণ। পাতক তাহার দেহে না রহে কখন। বিপ্রযুখে যেই জন ভনে ভক্তিভরে। রোগ শোক নাহি থাকে তাহার শরীরে ॥ বিপদ তাহারে মাহি করে আক্রমণ। পরম পবিত্র কথা অতি মনোরম।। এ হেন পবিত্র কথা নাহি কোথা আর। শুনিলে তাহার হয় পুণোর সঞ্চার॥ অধিক বলিব ফিবা ওচে ঋষিগণ। একমনে পুন্যকথা কর্ত্পবণ ॥

প্রক্রপে বীরদেন পাঞ্চালনগরে। স্থাধ গুঃখে সখিগুহে নিবসতি করে॥
ছর্ত্তাগ্য যখন হয় ওছে মুনিগণ। কোন হানে নাহি হয় সুখের ঘটন॥
ভাগ্যলোষে অকমাই পাঞ্চালনগরে। গুর্গুনা ঘটে এক শুন তার পরে॥
ঘণকার একজন অন্য দেশ হতে। উপনীত একদিন রাজার সভাতে॥
ঘণহার এক ছড়া অতি মনোরম। তাহার হাতেতে শোভে ওছে মুনিগণ॥
তেমন মোহন হার না হেরি কোথার। করুকাজ কত তাহে কি কব সবায়॥
হর্ণহার হাতে করি অতীব যতনে। উপনীত স্থাকার রাজার ভবনে॥
মাজার আদেশে উহা করে আনয়ন। মুর্ণকার বহু যত্নে করেছে গঠন॥
মহিনীর মনস্তুক্তি করিবার তরে। বিয়াছিল মহারাজ সেই স্থাকারে॥
মাজার আদেশে উহা করিয়া নির্মাণ। আনুসরাছে হর্ণকার সভা বিজ্ঞান॥
মানোহর কঠহার করিয়া দর্শন। ভুলি রাজার মুন রাজার নয়নঃ
মন্ত্রী আদি যেবা কেহ সভামাঝে ছিল। অনুপম হার হেন্ধি সকলে ভুণিল॥
একদৃষ্টে হার প্রতি করে নির্মাকণ। পুনঃ পুনঃ ধন্যভাদ দেয় স্বর্গুজন।
বীরদেন বসি ছিল সেই সভাগারে। অনুপ্রম কঠহার নয়দে নেহারে॥

আপনার পূর্বাবছা হইল মরণ। মনোছঃখে বক্ষ তাঁর হয় বিদারণ॥ পুনঃ পুনঃ দার্ঘাস ফেলে নরপতি। আত্মাকে ধিক্কার দিয়া ভাবেন হুর্গ 🚚 অনিমের্টে সেই হার করেন দর্শন। স্বর্ণকারে ধন্তবাদ দেন অনুকর্ণ 📳 হায় হায় দৈবগতি কি বলিব আর। সিদ্ধু-অধিপতি যিনি গুণের আধার॥. খাঁহার আজ্ঞায় বশ ছিল রাজগণ। শোভিত করিত যেই রাজ সিংহাসন। চতুরক সেনা যার গমন-সময়ে। অনুগামা হয়ে যেতো সানল হৃদরে। যাঁহার অব্যর্থ শর বিদিত ভূবন। বার্য্যান্ শোর্যশালী অমিতবিক্রম। সেই,নরপতি আজি পাঞাল আগারে। নিভূতে আছেনবসি বিষয় অন্তরে॥ দীনহীন দুঃখী সম সেই নরপতি। পাঞালের সভাগৃহে করে অবস্থিতি॥ আবরিল শোক-অশ্রু করে বিসর্জ্জন। কালেব মহিমা হায় কি করি বর্ণন ॥ জগতে এমন ব্যক্তি না হেরি কোথায়। কালবশ নহে যেই শুনহ দ্বায়॥ কালের বিচিত্রগতি কে কিরাতে পারে। ছেন জন নাহিএই জগত সংসারে॥ ইন্দ্রের সমার ছিল যেই নরেধর। দীন থীন সম আজি সভার ভিতর॥ প্রাক্ত সমান বাস সভার ভিতরে। বিষয় বদনে আছে বিষয় অন্তরে॥ ভাঁহার এতেক ভাব করি দরশন। বুঝিলেন মনোভাব পাঞ্চাল রাজন 🛭 জ্ঞাত গাত্রোত্থান করিয়। সত্রে। ক্রওপদে যান সিম্ধুরাজের গোচরে॥ মধুর বচনে ভারে করি সংখাধন। ধারে পীরে তার হত করিয়া ধারণ। দিব্যহার কণ্ঠদেশে দিলেন প্রায়ে। তাং। দেখি সভাগণ বিন্মিত হাদয়ে॥ মন্ত্রী আদি পৌরবগ যত কেহ ছিল। ভাষা দেখি সশক্ষিত সকলে হইল। ধন্যবাদ দেয় সবে পঞ্চাল রাজনে। মতা মতা নরপতি মানব ভবনে। ধন্য ধন্য এ বন্ধুজ করি দরশন। এ হেন বন্ধুজ নাহি এ তিন ভুবন।। প্রকৃত মিত্রতা এই নাহিক সংশয়। এ হেন মিত্রতা অতি চুল্ল ভ নিশ্চয়॥ 1 এই রূপ ধন্যবাদ দেয় কত জন। কত জনে হিংসাবশে হয় ক্রুদ্ধমন। ধুর্ত আর লোভী যার। সভার ভিতরে। হিংসা বশে তারা কছে অতি উচ্চস্বরে॥ হার হার কি ঘটনা করি দরশন। উপযুক্ত নহে ইহা শুন সর্বজন॥ রাজকণ্ঠযোগ্য দেখি যেই কণ্ঠহার। াণীর কণ্ঠের যোগ্য যেই স্বর্ণহার ॥ সে হার অপিলি রাজা হতভাক্ষ্যালে। উপযুক্ত নহে ইহা বুঝিতু অন্তরে॥ দরিদ্র গলেতে ইহা শোভা নাহি পায়।শোভা পায় এই হার রাজার গলায়।। ছুঃখের বিষয় আজি করি দ্রশন। লক্ষীছাড়া গলে হার নেহারি এখন॥ ধূর্ত্তগণ এইরূপ করয়ে চীৎকার। কিন্তু ঘারা সাধু ছিল সভার মাঝার।। তাঁহার প্রসংসা করে সানন্দ অন্তরে। বলে হেন প্রেম নাহি জগত ভিতরে।।

প্রাক্ত প্রণয় আজি করিমু দর্শন। ধন্যবাদ পাত্র এই পাঞ্চালরাজন। ক্রম্বভাব যারা সভার ভিতরে। হিংসাবশে কটু কথা কহে বারদারে। ভাষাদের হিংসাবাক্য করিয়া এবণ। পাঞ্চালের নরপতি অতি জুদ্ধান। **দশনে দশন রাজা** ঘরষণ করে। ঘন ঘন দৃষ্টি করে অতি ব্লোষ ভরে। ঘন ঘন রক্ত নেত্রে করেন দর্শন। তাহা দেখি ধূর্ত্তগণ অতি ভীত্যন। বৈরপে চাহেন রাজা অতি রোষভরে॥ অনু মানে বোধ হয় যেন দগ্ধ করে॥ **'শ্বর**্দ্রীকাতর দেই অনুচরগণ। রাজার এতেক ভাব করি দ্রশন।। , इन्द्राट उ विद्वन হয়ে অধোমুখ হয়। কাঁপিল শরীর আর কাঁশিল হনেয়।। অবশেষে ভীত হয়ে দেই দব জন। ধীরে ধীরে দভ হতে করে পলীয়ন।। পাঞ্চালরাজের হেন আশ্চর্য্য ব্যভার। নেহারিয়া বীর্দেন অতি চমংকার।। পুরত হয় তাঁহাব হাদর। ঘন ঘন কলেবর রোমাঞ্চিত হয়। কণ্ঠহার দিল তারে পঞ্চালরাজন। এ হেতু লজ্জায় তাঁর আনত বদন।। ত্তার পর দীনম্বরে সিম্বু-অধিপতি। বন্ধুরে সমোধি কচে ওচে মহামতি॥ **অপরাধ ক্ষমা কর ওহে মহোদ্য। অপরাধী আমি বটে নাহিক সংশ্র।। নেরপ পবিত্র** প্রীতি করালে দর্শন। এ হেন বন্ধুত্ব নাহি এতিন ভ্<sup>ব</sup>ন।। তুরলোকে সূত্রভ নাহিক সংশয়। এবে মম বাক্য শুন ওহে মহোলয।। এক ভিকা করি আমি তোমার গোচরে। কুপাকরি মোর কথা রাখহ সাদরে॥ কণ্ঠহার পুনঃ তুমি করিয়া এহণ। রাণীর গলেতে উহা করহ অর্পণ॥ ছাহা হলে মম হাদি পুলকিত হয়। প্রাথনা রাধহ মম ওছে মহোদয়॥ এতেক বচন শুনি পাঞালরাজন। ধীরে ধীরে দখিহস্ত করিয়া ধারণ॥ হাসিতে হাসিতে কহে শুন নরপতি।যে কথা কহিলে তাহা শুনিকু সং প্রতি॥ কিন্তু এক কথা বলি শুনহ রাজন। সুহদ বঞ্চক নহে পাঞ্চাল রাজন। দত্ত-অপহারী নহে এই তুরাশয়। হেন বোধ নাহি কর ওহে মহোদয়॥ অনুমানে বুঝি তুমি ভাবিয়াছ তাই। নৈলে হেন কথা কেন কহ মম, ঠাই॥ কিবা ছার কণ্ঠহার ওহে মহীপতি। তব লাগি তেয়াগিতে পারি বস্থমতী॥ আই যে সমৃদ্ধ রাজ্য করিছ দর্শন। সকলি তোমার 'কান্য শুনহ রাজন ॥ তোমার অধীন সব জানিও অন্তরে। এই দৃত্তে সব দিক্তে পারি তব করে। এখনি যাইতে পারি গহন কানন। এখনি করিতে পারি তপ আচরণ॥ শপথ করিয়া কহি তোমার গোচরে। কণ্টতা নাছি মর্ম জানিবে সম্ভরে॥ মুদি ভুমি অনুমতি করহ অর্পণ। এখনি, পশিতে পারি গহন কানন। জীবন ত্যবিতে পারি সলিলমাঝারে।অধিক কহিব কিবা তোমার গোচরে॥

ध्वत्रण रह्मा रहित शाकान-द्राजन। कनकाल त्रोनजात म्रशाजिल हा कारात नगरन वाति सन यन शटफ । जिस्ताक धरे गर नगरन त्नकारत শুন খ্রিগণ আশ্র্যা ঘটন। তার পর ঘটে যাহা করিব বর্ণনা যেই কালে ব্লাজ্যচ্যুত হয়ে সিমুপতি। ছদ্মবেশে বন্যাঝে করিলেন গড়ি। শেই কালে ছতা এক সঙ্গেতে আছিল। পাঞ্চালনগরে সেই সহিতে আসিলা সঞ্জয় তাহার নাম প্রভূপরায়ণ। ধার্ষিক তাহার সম না দেখি কখন প্রিয়ন্ত্র তার সম না দেখি কেথার। ক্রতক্ত তাহার সম নাহিক ধরায় তাহার ভবের কথা কি করি বর্ণন। প্রভুর ছঃখেতে সদা সকাতর মন পাঞ্লিরাজের সহ সিমুর রাজন। যেই কালে করে সব কথোপকখন। কণ্ঠ র কথা যবে হই জনে বলে। উপনীত হয় আসি সঞ্জয় সেকালে ক্রতপদে সেই স্থানে করি আগমন। কিঞ্চিৎ দূরেতে থাকি সঞ্জয় তঁখন। প্রভূতর মধুর বাক্যে সম্বোধন করি। নিস্তর হইয়া রহে " দেব" মাত্র বলি 🞼 এই ঝকা বদনতে করি উচ্চারণ। রুদ্ধকঠে জড় সম রহিল তখন 🐠 অশোমুখে অবস্থান করিল সঞ্জয়। নয়নেতে দর দর বারিধার। নয়ন ভাসিল তার হৃদয় ভাসিল। অধােমুখে মৌনভাবে দাঁড়ায়ে রহিল 🞉 তাহার এতেক ভাব করি দরশন। নরপতি দোঁহে হন ব্যাকুলিত মুন্ ভয়েতে বিহ্বল হয়ে জিজ্ঞানেন পরে। এরপ করিছ কেন কহ ত্রা করে 🖡 অনিষ্ট ঘটেছে কিবা করহ বর্ণন। পুরুষধ্যে কি হয়েছে বলহ এখন ॥ কিছু কি দেখেছ তুমি বল ক্রতগতি। হয়েছ কি অব্যানী ওহে মহামতি 🛣 শক্রহক্তে অপমান যদি হয়ে থাকে। ত্রা করি সেই কথা বলহ সন্মুখে। অথবা রোগেতে ভূমি হয়েছে কাতর। ত্বরা করি বল তাহা দোঁহার গোচর। মানসিক পীড়া যদি ঘটেছে তে।মার। অবিলম্বে বল তাহা ওছে গুণাধার॥ তাহার উপায় মোরা করিব এখন। ভয়েতে কাতর বল কিসের কারণ ॥ 🗀

এতিক বটন শুনি সঞ্জয় ধীমান। করযোড়ে কহে কথা দোঁহা বিজ্ঞান। আপন প্রভুরে সেই করি সম্বোধন। বিনয় বচনে কহে শুনহ রাজন। চিরাধীন আমি তব ওহে নরপতি। সতে কাতর হেরি তোনার তুর্গতি। তোমার তুর্গতি সদা করি দরশন। দিনের তরেতে নহে হির মন মন। নিবেদন ওছে প্রভু চরণে তোমার। দিয়াছিলে যাহা তুমিহাতেতে আমার। শীতরশি সম যাহা অতি ফুশীতল। মহামূল্য হার সেই অতি সন্তুল্ধ। এইমাত্ত বাহা তুমি দিয়াছিলে মোরে। অদৃত্তদোষেতে বিধি লইয়াছে হরে। বেই হার তব পাশে ক্রিয়া প্রহণ। ভিভিত্তিত প্রজন্তে ক্রিম্ সাধিন।

🏨 ইরপে শব্দ শুনি ঘত প্রজাগণ। ভয়ে ভীত হয়ে লবে করয়ে রোদন 🕆 এইরপে সৈন্যগণ সানন্দ অভরে। পথি মাঝে মনস্থা চলে চেত করে। यथाकार्ल প্রতিদিন করিয়া গমন। উচিত সময়ে করে শিবির ছাপন॥ এইরূপে আটদিন অতীত হইলে। নব্য দিবসে উপনীত বিশ্বাচলে॥ দেখিলেন দুর হতে পাঞাল-ঈশর।শোভিতেছে কিবা আহা বিদ্ধা গিরিবর॥
ভীষণ শাপদ কত করে বিচরণ। কত রক্ষ বড় রড় ভীষণ দর্শন॥ গগনে উঠিছে দব উন্নত শরীরে। হেন বুঝি যাবে দব অমর-নগরে॥ দুর হতে গিরিশোভা দেখিতে দেখিতে। উপনীত হন গিয়া ক্রমে নিকটেতে॥ ্দুদ্মিধানে গিয়া গবে করেন দর্শন। স্বচ্ছতলা নদী এক হতেছে বহন ॥গিরি . মাঝে নিঝারিণী কিবা শোভা পায়। তাহা হতে অই নদী ক্রমে বাহিরায়॥ নদীর পরম শোভা কি করি বর্ণন। হেন শোভা আর কোথা না হয় দর্শন॥ নদীর পুলিন দেশে ধবল বিমল। শেভিছে সৈকতরাশি অতি মনোহর॥ বালিরাশি সমুজ্জল হইয়া বিকাশ। অপূর্বে স্থবনা তথা করিছে প্রকাশ॥ মনোহর সেই শোভা করিলে দর্শন। সহসা অন্তরে জয়ে বিভ্রম তখন।। মনে হয় সমুজ্জ্বল সূর্য্যকান্ত আদি। নানা মণি পুলিনেতে আছে নিরবধি॥ ইতন্তত স্থবিভ্ত আছে মণিগণ। তাহার পর্ম শোভা না যায় বর্ণন॥ কলহংস আদি সব সানন্দ অন্তরে। জলক্রীড়া করি ভ্রমে নদীর উপরে॥ कन्नाम करत जनहत। कोनाइल भक्ष्मय इय वनक्रम। ্**ভটিনী বক্তে কত শোভিছে নলিনী**। বসিতেছে তাহে কত মধুকর শ্রেণী॥ মধুলোতে লুর হয়ে মধুকরগণ। গুন্ গুনু রবে সদা করে বিচরণ॥ জাহাদের গুন্ গুন্ পশিলে ভাষণে। পশুগণ ক্ট হয় বিমোহিত-মনে॥ বহিতেছে মন্দ মন্দ্র পবন। তরক উঠিছে তাহে কে করে গণন॥ এক্লপ মোহন স্থান দরশন করি। পাঞ্চালের অধিপতি মনেতে বিচারি॥ भिज गर भाराम कितिया, ज्या । कितिलन त्मरे दात्म निवित दार्भन॥ **আদেশ পাইয়া যত সামন্ত-নিকর।** অব্হিতি করে তথা কানন ভিতর ॥ তীরভূমে কন্ধাবার করিরা হাপন। পথশ্রান্তি ক্রমে সর্ট্র করে বিদূরণ। ক্ষণেক বিশ্রাম করি যত সৈন্যগণ। অমনি পুনশ্চ স্বে উঠিল তখন॥ চতুরত দেনা সাজি ষত প্রহরণে। আহলাদে পশিল গিয়া গহন কাননে॥ সিংহ্নাদ করে কেছ করে আন্ফালন। কোলাহল করি ক্রেহ করিছে গমন॥ ভাহা **দেখি মহাবীর পাঞ্চাল-ঈশ্বর।** অনুগামী হয়ে চলে কানন ভিতর॥ क्रिएननं नरक नरक निष्कृत नुषम । स्मिश्र वरकरण स्मिर्ट वाङ्ड ॥

এইরপে ছই রাটা সানন্দ অন্তরে। মৃগয়া কারণে পশে কানন ভিতরে॥ চতুরঞ্গ দেনাদল্ গর্কভরে যাঁয়। ঘন ঘন বিকম্পিত কানন তাহায় 🕸 ছেবারব খন ঘদ করে অধ্বগণ। হস্তীর রংহণ শব্দ হতেছে প্রবণ 🞼 ভীষবল হোধগণ ঘোররর করে। কোলাহল উঠে কত কানন ভিতরে 🛭 ভারেতে চকিত হযে যত মুগগণ। চকিত নয়নে সব করে দরশন ॥ কোথা যাবে কি করিবে না দেখি উপায়। পলায়ন করে সবে যথা চক্ষায় ॥ পলাবে কোথার আর পলাতে না পারে ।মরিতে লাগিল সব ক্ষত্রিয়ের করে ॥ খড়্গাঘাত কারে। পরে করে সৈন্যগণ । কারপরে তীক্স স্বর করে বরিষ্ণ ॥ এইরূপে বধ করে যত মুগদলে! ছুটাছুটি করে সবে কানন ভিতরে 🛭 নিদারুণ শস্ত্রাঘাতে বল মুগগণ। অচেতন ভাবে হয় ধরার পতন # প্রচণ্ড অসির ঘায় দিখণ্ড হইয়ে। অচিরে চলিয়া গেল শমন-আলরে 🛊 বরাহ মহিব রুরু আর মুগুসার। ইত্যাদি যতেক জন্তু কানন মাঝার ॥ দ্বেষভাব পরস্পর করি বিদর্জ্জন। একতা হইয়া দবে করে পলায়ন॥ হরিণীরা নবঘান করিছে! আহার। হেনকালে তথা হয় শরের প্রহার॥ অর্দ্ধ-কবনিত ঘাস করি উল্গারণ। সংকীর্ণ পথেতে ত্রুত করে পলায়ন॥ উর্ন্বপুচেছ ক্রতগাত পলায়ন করে। কোথা যাবে কি করিবে বুঝিবারে নারে। 🎌 হানে হানে ভল্লগণ ;ভীষণ দর্শন। বিদীর্ণ হৃদয়ে করে রুধির ব্যন। কত জন্ত দার্ঘপরে করিছে চাৎকার। লক্ষ ঝক্ষ দেয় সবে কত অনিবার॥ দীর্ঘাস ফেলে কেই ব্যাদিত বদনে। অক্যাৎ শর আসি পশিল আননে॥ অমনি আপন প্রাণ দিয়া বিসর্জ্জন। অবিলম্বে ৮ নি গেল শমন ভবন॥ এইরূপে ক্ষত্রগণ উন্মত্ত অন্তরে। মুগরা লীলায় রত বনের ভিতরে॥ পশুবংশ ধ্রংস করে কে করে গণন। দেখিতে দেখিতে বেলা দ্বিপর তখন। তীত্রতাপে সন্তাপিত করিয়া সংসার। মধ্যস্থলে উপনীত সূর্য্য দয়াধার॥ ' একে ত নিদাঘবশে অতি বিভীষণ। তাহাতে প্রশ্ন রশ্মি বিতরে তপন। বনস্থলী দশ্ধ যেন হয় নিরন্তর। দ্বাদশ মূর্তিতে যেন উদিত ভাকর॥ অগ্নিরাশি সদা যেঁন হতেছে বর্ষণ। তাহাতে প্রচণ্ড যেন পবন তথন । খরস্পর্ণ সেই বায়ু অতি ভয়ঙ্কর। শেল সম বিদ্ধ হয় বেন কলেবর।। প্রচণ্ড মার্ভিড মৃতি বিভীষণ। কার সাধ্য তার দিকে করে দরশন ॥ প্রবল বেগেতে বায়ু হতেছে বহন। ধূলিরাশি তার সহ উড়ে খন খন 👪 কর্বর উড়িছে কত কৈ গণিতে পারে। বিনাদে উন্যত যেন জগত-সংসারে। পাঞ্চাল-নূপতি জার নিমুর রাজন। তীত্রতাপে তপ্ত হয়ে অতি বিষয়ন।

শ্বন ঘন ঘর্ম হয় দোঁহা কলেবরে। তাহে বায়ু প্রবাহিত অতি ধরধারে ॥ সর্ভত কর্কর রাশি হতেছে বর্ষণ। অন্ধীভূও প্রায় হয় তাইাতে নয়ন॥ ভাহা বেধি কণকাল বিচারি অন্তরে। ডাকেন পাঞ্চালরাজ যত সৈম্রদলে॥ मिछे आदि मवाकारत कति मत्याधन। आरम्भ करतन मत्व नित्रि कि.कात्रण॥ রাজার আদেশ পেয়ে যত সৈতাদল। ধীরভাবে সবে হয় স্থাইর অন্তর॥ মুগয়াতে কান্ত হয় যত সৈলগণ। শিপ্রানদীতটে পরে করিল গ্যন॥ ভধায় আসিয়া সবে তরঙ্গিনীরে। শীতল সলিল পান প্রাণ্ ভরি করে॥ কেছ কেছ স্থান আদি করে স্থাপন। প্রান্তি দূর করি সবে আনন্দিত মন। बेडेक्क ज्ला मत्त वरम তার পরে। অবিলয়ে এমক্রম চলি যায় দূরে॥ **७ थन मग**र दूजि मलर श्राप्त शास्त्र शीरत मन्द्र मन्द्र रहत । **দৈখিতে দেখিতে নিদ্রা আসি উপনীত। অচেতন হ**যে সবে হইল নিদ্রিত॥ এদিকে পাঞ্চালরাজ বন্ধবর সনে। বসিয়া আছেন দোঁতে কুশের সাসনে॥ সেনাগণ যেই স্থানে করে অবস্থান। তাহা হতে কিছ দুরে দেঁছে বিজ্ঞান॥ বিশ্রাম করেন দোঁতে বসি কুশাসনে। ব্যাপিত আছেন দোঁতে কথোপকথনে॥ ভাবী শুভ বিষ্যাদি তুলি ছুই জন। নানামতে নানাকথা কহেন তখন॥ **प्यक्या पूरे कन नवरन रनहारत। भहार** ज्ञा ७ क् वीव तरह कि इ हरत ॥ **জনকর অনুচর দঙ্গেতে তাঁহার। স্বার হাতেতে আছে নানা উপহার॥** ভাঁছাদেরি অভিমুখে আসিছে সকলে। হেরিছেন ছুইজন অতি কুত্হলে॥ **দেখিতে দেখিতে সেই পু**রুষপ্রবর। উপনীত ক্রমে আসি রাজার গোচর॥ ্ব্বনভশিরে নৃপে করিয়া প্রণাম। পুরোভাগে নম্রভাবে করে অবস্থান।॥ তাহা দেখি মহারাজ পাঞ্চাল-ঈশ্বর। অবাক্ হইয়া রহে না আছে উওঁর॥ সিদ্ধরাজ বাক্যহীন চিন্তিত হৃদয়। আগন্তুক বীর প্রতি একদৃটে রয়॥ जितिस्परिय (हार तरह शाकाल-ताक्रन । मरन जारत अहे वीत हम रकन जन ॥ মত লোক এেসেছিল আগস্তুক সনে। ক্রমে সবে উপনীত রাজাব সদনে॥ রাঞ্চার অবাক্-ভাব করি দবশন। অনুচর একজন কহিছে তখন। শুন শুন মম বাক্য পঞ্চাল নৃপতি। এই যে হেরিছ বিশ্বা খ্যাত বসুমতী।। ইহার দক্ষিণ ভাগে অতি মনোহর। নগরী আছয়ে এক ওহে নৃপবর!। किताত-नगतो छेश कारन नर्सकरम। नमृक्षिगीनिनौ भूतीः थाउ जिल्लान ॥ এই যে হেরিছ বীর নিকটে তোমার। কিরাতের অধিপঞ্চি ওবে গুণাধার।। देरात एडरमत कथा वर्गिवात नम्न। वीद्यत अधान होने ७८३ मटशंकत ।। हैरी इसाम वीज माहिक क्वरम । आकारत व्यूचिए भाष कि कव अवरन ॥ সামান্ত কিকর যোরা শুনহ রাজন্। মোদের মুখেতে কিবা করিবে অবশ্য মহিমার পরিচয় কিবা দিতে পারি। শুন শুন এইমাত্র যাহা জানি বৃদি:॥ চীন হুণ শিবি আর কিরাত শবর। বর্বরাদি যত রাজ্য ওহে নরবর ॥ স্বার প্রধান এই কিরাত-রাজন। এ স্বাকার হন ইনি মন্তক-ভূষণ:॥ मकरल প্রণাম করে ইহাঁর চরণে। স্বারে রেখেছে বীর আপন শাসনে॥ এমন কুত্রাপি নাহি হেরি কোন জন। মোদের নৃপের বাক্য করয়ে লঙ্গন ॥ ইং ার শাসনদও স্ফুচিত. করে। হেন জন কভু নাহি নয়নেতে পড়ে ॥ অধিক বলিব কিবা ওহে মহাত্মন । আমরা কিক্রমাত্র অতি নরাধম। এতেক বচন শুনি কিম্বর-সদনে। পাঞালের অধিপতি বীর্সেন সনে। ছুই জনে অবিলয়ে ত্যজিয়া আসন। কিরাত রাজের পালে করেন গমন। বহ্নি সম জ্বলে বীর কিরাত-ঈশ্বর। শালতর সম তার দীর্ঘ কলেকর 🛊 লোকাতীত রূপ তার করি দরশন। মোহিত হইয়া রহে পাঞ্চালরাজন। বীরসেন নিজ্তুর ছেরিয়া তাহারে। একদুটে ঘন ঘন নিরীক্ষণ করে॥ স্তান্তিত হইয়া দোঁহে রহে কিছুক্ষণ। জিজ্ঞাসিতে নারে কিছু নীরব-বদন॥ তার পর ছুই জন অতি ম্লেহ ভরে। ধরিলেন স্মাদরে কিরাতের করে॥ হাসিতে হাসিতে কর করিয়া ধারণ। কুশল জিজ্ঞাসা করে যুগলরাজন 🛚 দৌহাকার মিটবাক্য শ্রবণ করিয়ে। কিরাতের অধিপতি প্রফু**ল হদ**রে॥ মধুর বচনে পরে করেন উত্যা শুন শুন মহারাজ নৃপতি প্রবর॥ আপনারা গুই জন অতি বিচক্ষণ। ক্তিয় মাঝারে শ্রেষ্ঠ বিদিত ভুবন। দেখিলেন প্রতিভাবে আপনারা মোরে। ধরিলেন প্রেছবশে নিজে মোর করে ॥ তখন আমার আর কোথা অমঙ্গল। সর্বত্ত মঙ্গল মম ওছে নরেশ্বর ॥ কিবা রাক্ত কিবা কোষ কিবা তুর্গ আদি। কিবা বল কি প্রাসাদ আর বাছ-নাদি॥ সমন্ত বিষয়ে মম জানিবে কুশল। তোমা দোঁতে দেখি মম প্রফুল অন্তর॥ এইরূপে পরস্পরে কত কথা হয়। অক্সাৎ শুন দবে আশ্রুষ্ট্য বিষয়। প্রচণ্ড বাঁতাস উঠে গ্গন উপরে। বৃনস্পতি পড়ে কত কে গণিতে পারে॥ সমূলে পাদপরাজি হয়ে উন্মূলিত। একেবারে ধরাতলে হয় নিপতিত॥ কিরাত-রাজের যত অনুচরগণ। নক্ষে দঙ্গে অনুগামী আছিল তখন। তার মধ্যে জন কয় সিম্বুরাজপানে। চেয়েছিল একদৃটে স্থাইর নয়নে॥ সহসা পড়িয়া গেল চরণে ভাঁহার। হা নাথ বলিয়া সবে করয়ে চীৎকার॥ কিছুক্ষণ এইরূপ করিয়া রোদন। ছঃখিত হাদয়ে শেষে কহিল বচন॥ তন তন মহারাজ নিবেদি তোমারে। পুত্র সম পেলেছিলে আমা সবাকারে॥

आन्गावाथ भूक मब करिया शासन। निषय स्टेट्स किथा त्रद्यस् ध्यमन ॥ চিন্ন-অনুষত মোরা দীনছঃখী অতি। কি হেতু'ত্যজিলে সবে ওবে নরপতি। আদল্লা নেছারি তোমা পিতার সমান। পিতৃজ্ঞানে পদ বন্দি ওছে মতিয়ান॥ এত কাল পরে প্রভু করিনু দর্শন। সেবক-গণেরে আর না কর বর্জন॥ , চির-<del>উক্ত দাস</del> মোরা ওহে নরপতি। তোমা বিনা লভিতেছি কত বা দুগতি॥ জ্জাপাবশে তব পদ করিনু দর্শন। দয়া কর আমা সবা উপরে রাজন্॥ তোমার গুণের কথা কি বলিব আর। হেন নৃপ নাহি দেখি ভূবন মাঝার॥ শৌর্ষ্যে ভূমি বজ্রধারী ইত্তের সমান ৷ বদাত্তভাওণে যেন রাম কীর্জিমান্॥ সক্রত সদৃশ তুমি যজ্ঞ অনুষ্ঠানে। অধিক বলিব কিবা তব বিদ্যান। প্রফাপতি সম তুমি অবনীমাঝারে। লালন পালন কর প্রজা সবাকারে॥ অধিক বলিব কিবা ওহে নরপতি। পৃথিবীতে হেন মূর্য না হেরি সংপ্রতি॥ ষে জন তোমার মত প্রভূরে পাইয়ে। পুনরায় ত্যাগ করে বিকল-হৃদয়ে॥ আমরা না পারিব আর করিতে বর্জ্জন। দ্য়া কর দ্য়াময় স্বারে এখন॥ এইরূপে বছতর করিয়া রোদন। সকলে বন্দিল পুন রাজার চরণ॥ পূর্ব্ব অনুরাগবশে একান্ত অন্তরে। পুনঃ পুনঃ নতি করে চরণ উপরে॥ পুনঃ পুনঃ ভিকা করে লভিতে আশ্রয়। করযোড়ে পুরো ভাগে দাঁডাইয়া রয়॥ তখন চিনিতে পারি সিন্ধুর রাজন। অবিরল অপ্রত্বারি করে বিসর্জ্জন। সামস্ত নৃপতিগণে চিনিতে পারিয়ে। রোদন করেন নৃপ বিহ্বলহ্বদয়ে॥ किছूकन जल्म वाति कति विमर्ज्जन। देशर्गवरम युष्ट राप्त करस्त उथन॥ কি আশ্চর্য্য দৈবগতি বুঝিবার নয়। আরো বা ২ইবে কত ভাগ্যেতে উদয়॥ माহি জানি হতবিধি কি ঘটাবে পরে। ভাবিয়া বিকল হই আপন অন্তরে॥ ওন শুন যত আছ সামন্ত নৃপতি। মহাবীর বলি সবে খ্যাত বস্থুমতী॥ তথাপি এমন কট লভিছ সকলে। হায় হায় ধিক ্মোরে কি আছে কপালে॥ কিন্তু এক কথা বলি করহ এব। তোমাদের সঙ্গত্যাগ হইল যখন।। ভার পর এতদিন কোথায় আছিলে। বুল বল সেই কথা আমার গোঁচরে॥ সেই সব রণদক সেনা-অধিপতি। সম্প্রতি কোথায় জারা করিছে বসতি॥ প্রভুত্তক মহাবীর যত সৈত্রগণ। কোপায় রয়েছে সবে বলছ এখন। স্থুরাত্মা অরাতি দারা বিতাড়িত হয়ে। জীবিকা নির্বাহ্ সবে কর কি উপায়ে॥ কিবা হত্তি দৰে এবে করেছ আশ্রয়। প্রকাশ করিয়া কছ দে দৰ বিষয়॥ ७ मर नामखन् जामात नम्न । इः स्थत विषय अक्त कि विल अधन॥ ু ছুদৈব আমার যথা করিল হুর্গতি। তোমাদেরো নেইরূপ নেহারি সংপ্রতি।

ছ্বাইল অন্ত্ৰে হতবিধি যোৱে। কূল না দেখিতে পাই বিপশ্সাগঙ্গে । थ्वे विन नद्रशिक केत्रदेश दिशक्त। अविद्रम अव्यविदिश केद्र विमर्क्स ॥ णां शांचि मायटख्रता विवध-वषटन । विकेस कतिया तटह मिसूत शांकान के. ব্যথিত-ছদরে তাঁরে করিয়া বেটন। দাঁড়াইল চারিদিকে সামস্ত-রাজন 🕽 দেবরাজে দেবগণ বেষ্টন করিলে। যেরূপ অপূর্ব্ব শোভা হয় সেই কালে। তেমতি শোভিল সেই সিদ্ধুর রাজন। মরি কিবা অপরূপ অপূর্বে पर्শন 🛭 তার পর দীনভাবে করি যোড়কর। সামন্ত্রগণেরা কহে শুন নৃপ্রর 📭 এই যে হেরিছ অত্যে কিরাত-মূপতি। সামান্ত নহেন ইনি অতি মহামতি॥ শৌর্য্যে-বীর্ষ্যে ইনি বটে দবার প্রধান।সেই হেতু প্রিয় পাত্র দবা বিভাষান॥ কিন্তু আরো গুণ আছে ইহাঁর শরীরে। সেই হেতু সবে বশ জানিবে অন্তরে। সত্যসন্ধ নাহি হেরি ইহাঁর স্থান। প্রহিতে রত স্থা এই মতিমান। যেরপ দয়ালু ইনি কি বলিব আর। মূর্তিমান যেন ভূমে ধর্ম-অবতার 🛊 বদাশতাগুণে ইনি বিখ্যাত ভুবনে । ইহাঁর গুণের কথা কি বলি বদনে ॥ বিশুদ্ধ চরিত্র এই মহাবীরবর। বিষয় বুঝিতে নাহি ইহাঁর দোসর। নীতিদর্শী নাহি দেখি ইহাঁর সমান। কার্য্যদক্ষ বেদবিজ্ঞ ওহে মতিমান্।। বিবেকী পুরুষ ইনি বিখ্যাত সংসারে। মহতের মান্ত জানে আপন অন্তরে 🕸 निज्ञ नाधुगर्ग करत्न शुक्त। मर्यामात रानि नारि करत्न कथन॥ যেমন মধ্যাদা যার তাহারে তেমতি। অভার্থনা সম্বর্দ্ধনা করেন স্থমতি 🕻 বিপন্ন হইয়া কেহ লইলে আশ্রয়। রক্ষিবেন সেই জনে এই দয়াময়। তাহে যদি প্রাণ যায় তাহাও স্বীকার। তবু না প্রতি ছা টলে ওহে গুণাধার বিপদ-সাগরে যদি পড়ি কোন জন। ইহাঁর শরণ আসি করয়ে এহণ 🗈 তাহা হলে সেই জনে প্রাণপণ করে। উদ্ধার করেন ইনি বিপদ-সাগরে॥ ভবের কাণ্ডারী ঘথা এমগুড়দন। কিরাতের নরপতি বিপদে ভেমন। যেরপে ইহার সহ মিলিকু সকলে। কহিতেছি সেই কথা ভোমার গোচরে। तिशुक्टक मगाका ख श्रान वथन। अनिया मि मय भारा धरा व्यन ॥ সৈল্যের সংগ্রহ মোরা সাধ্য অনুসারে। করিলাম স্যত্নে শুন তার পরে॥ সকলে সজ্জিত হৈনু সমর-কারণ। প্রাণ দিব এই মোর। করিলাম প্রা 🕻 🖰 ভিমি ভিমিঞ্চিল আহ আর যে মকর। ইত্যাদি জীবেতে হয়ে সন্তুল সাগর।। উদ্বেল হইরা উঠে প্রলয়ে যেমন। নৈরপ মোদের দৈতা হইল তখন। 🗱 আপনার শত্রুগণে প্রাসিবার তরে। চতুরঙ্গ সেনা চলে আনন্দের ভরে। षाविः गिष्ठ व्यक्ति शिना वर्तना । जाकालन कति हरन ७८१ मिष्यान्

কত অৰ গজ চলে কে গণিতে পারে।পদাতি চলিল কত বাহ্বাস্ফোট করে। कि विल पूर्टिक्व कथा खनइ ताजन। অকল্মা<sup>৬</sup> কর্ণে মোরা করিন্ম শ্রবণ ম इरेब्रोइ निक्षिके जुभि मत्दापत्र। নিরুদ্যম হৈল তাহে যত সৈক্তচয়। অক্সাৎ শুনি দবে তব প্রায়ন। ভয়োৎসাহ হয়ে পড়ি আমরা তখন। ভয়পদ সিংহ যথা নিরুদ্যন হয়। তেমতি হইনু মোরা ওহে মহোদর॥ সবার ভরসা আশা বিলুপ্ত হইল। অন্তরের সাধ যত অন্তরে মিশিল॥ উৎসাহ-বিহীন হৈল সবার অন্তর। হতজ্ঞান হই সবে ওহে নৃপবর॥ ক্লি করিলে শ্রেয় হবে তাদৃশ সময়ে। না রহিল সেই জ্ঞান কাহারো হৃদয়ে॥ 🖛 ড্-সম সেই কালে হইয়া সকলে। রণে ভঙ্গ দিয়া যাই সকলেরে কেলে। চারিদিকে সবে মোরা করি পলায়ন। কেহ কারো দিকে নাহি ফেলিল নয়না। অধিক বলিব কিবা শুনহ রাজন। করেছিলু যেইরূপ সমরে উদ্যাম। শত শত শক্র আসি একত হইলে। ভ্রমণ হয়ে যেতো রণে সেই কালে॥ অতুল বিক্রম সেই সেনা অগণন। তার কাছে কার সাধ্য করে আগমন॥ কিন্তু দেখ কি আশ্চর্য্য ভাগ্য বিপর্য্যয়। প্রতিকূল বিধিবশে সব হয কয়। ঘতনে করিনু মোরা যেই আয়োজন। বিধির কোপেতে তাহা হইল দহন॥ **ক্ষুতঃ শান্তের কথা মিথ্যা নাহি হয়। শুন শুন বলিতেছি তার পরিচয়**॥ অক-প্রত্যকাদি আর ষত বিভূষণ। সমস্ত যদ্যপি থাকে ওহে মহাজ্ন।। মন্তক অভাবে তাহা শোভা নাহি পায়। প্রভৃহীন ভৃত্য তথা কহিনু তোমায় মহাবল ভূত্য যদি থাকে অগণন। প্রভূ যদি নাহি থাকে ওহে মহাজ্ম।। **त्म थटल नाहिक कल ७८८ मटहाएय।** मकलि विकल इस जानित्व निन्छ।।। মধ্যপি নায়ক হয়ে থাকিতে আপনি। তবে কি আমরা সবে শত্রুগণে গণি।। **জগত-মাঝারে হেন সাধ্য ছিল কার। সিদ্ধুদেশে আসি করে প্রভৃত্ব বিস্তার** হার হার হতবিধে এই ছিল মনে। অনর্থ ঘটালে বল কিসের কারণে॥ র্থা আক্রেপেতে আর কিবা প্রয়োজন। অদুষ্টের লিপি কভু না হয় খণ্ডন্।। ভার পর ঘা করিবু আমরা সকলে। বলিতেছি সেই কথা ভোমার গোচরে॥ অর্দ্ধরাত্তি কালে মোরা করি পলায়ন। সিম্বুদেশ তেয়ার্দ্বীয়া করিনু গমন॥ একত হইয়া সবে নিভ্ত কাননে। ভাবিতে লাগিনু সব নিজ মনে মনে। সামান্য পুরুষ নহে বারসেন রায়। অবশ্য আছেন তিনি যথায় তথায়॥ कार्युक्ष मम मেই বীর মহাজ্ব। কভু না আপন প্রাণ দিবে বিসর্জন।। বৈরনির্যাতন নাহি করি নৃপমণি। নাহি হবে শান্ত কর্জু মনে মনে জানি॥ ছববেশে দেই প্রভূ হইয়া গোপন। সেনার লাগিরা আহে সচেটিতমন॥

অতএব চল যোৱা নানাদিকে যাই। অনুসন্ধান করি যোরা সকলে বেড়াই॥ পুথিবীর নর্বহান করি অথৈষণ। অবশ্য পাইব মোরা তাঁহার দর্শন এইরূপে পরামর্শ করিয়া সকলে। অস্বেষণ হেতু সবে যাই নানাস্থলে॥ কত রাজ্য নদীতীর করি অবেষণ। গিরিগুহা কান্তারাদি কে করে বর্ণন।। কিন্তু কি হুর্ভাগ্য হায় শুন মহীপতি। নাহি জানি কোথা তুমি করিছ বসতি কুত্রাপি তোমার নাহি পাইমু দর্শন। মনছুখে সবে মোরা করি গো রোদন। কোন স্থানে কারো মুখে সংবাদ তোমার। কিছু মাত্র নাহি পাই ওছে গুণা-. ধার, । নিরাশ হইয়া দবে পড়িমু তখন। দে কথা বলিতে নাহি সময় এখন ॥ বৃদ্ধি লোপ সেই কালে হৈল দ্বাকার।নাহি ছিল হিতাহিত জ্ঞান যে কাহার পরস্পর দবা প্রতি করি নিরীকণ। অবাক্ হইয়া রহি জানিবে তখন।। জড় সম রহি মোরা নিশ্চল আকারে। কাষ্ঠের পুতুল সম রহি সেই কালে॥ मार्य मार्य धक्यांत कति य िखन। जात नाहि ताख्यम इरेट्य पर्मन॥ এ দেহে রাজার পদ না হেরিব সার। জন্মের মতন সাধ ফুরাল সবার॥ এইরপ বহুক্ষণ করিয়া চিন্তন। সপ্তচ্ছদ তরুতলে বসিন্দু তখন॥ কণেক বিশ্রাম করি তরুর ছায়ায়। উৎসাহী হইয়া সবে উঠি পুনরায়॥ পুনর্বার পুণ্যক্ষেত্র করি অন্বেষণ। ভ্রমণ করিতে থাকি তাপস-আশ্রম। তার পর শূরুদেহে ভ্রমিতে ভ্রমিতে। উপনীত হই আদি কিরাত-পুরেতে॥ আর এক কথা বলি শুনহ-রাজন। যুদ্ধে ভঙ্গ দিয়া যবে করি পলায়ন॥ সমর-পণ্ডিত সেই সৈনিক-প্রবর। তব লাগি লমিতেছে কানন-ভিতর॥ সঙ্গেতে আছয়ে তার কতিপয় জন। মনে বাঞ্চা তব পদ করিবে দর্শন। মোদের সঙ্গেতে তারা আসিয়া মিশিল। মিলিয়া কিরাত রাজ্যে আসিয়া পৌছিল॥ উপনগরীতে আসি আমরা সকলে। বিশ্রাম করিতে থাকি বসি তরুতলে ॥পথিমাঝে দেখিলাম কিরাত ঈশ্বর। সঙ্গে সঙ্গে অনুগামী বছ অনু-চর ॥ প্রজাগণ কিবা ভাবে করে অবস্থান। দেখিবারে গিয়াছিল রাজা মতি-মানু। সেই সব যথারীতি করিয়া দুর্শন। পুনশ্চ ফিরিয়া যান আপন ভবন।। আমরা দকলে আছি বিষয়-বদনে ৷ কুশকায় উপবাদে আর পর্য্যটনে ॥ -আমাদের এই ভাব করি দরশ্ন। দয়ার্জ হইয়া নূপ দাঁড়ান তখন।। তার পর আমাদের পেয়ে পরিচয়। যতনে পুরীতে লয়ে যান মহোদয় 👢 তদৰ্বধি আমা সৰে করেন পালন। অনুত্রম অন্ন-বস্ত্র করেন অর্পণ।। পুত্র সম রক্ষা করে আমা সবাকারে। স্থথেতে রয়েছি মোরা ইহার আগারে আ্বাদের একমাত্র ইনিই আশ্রঃ। পিতার স্থান ইনি ওছে মহোদয়॥

কিন্তু এক কথা বলি করছ প্রবণ। এত স্থাধ আছি মোরা কিরাত উবন। া সমাদর করে নৃপ স্বার উপরে। আতা সম হৈরে সবে জানিবে অন্তরে॥ কিন্তু তরু মনস্থ নাছিক কাহার। তাহার কারণ বলি শুন শুণাধার॥ रेटम्बर विरुद्ध यथा अगत्रनिकत। वर्गधादम थाकि सूथी नटर नित्रस्त ॥ নেরপ তোমারে ছাড়ি আমরা সকলে।মনস্থখে নাহি সুখা থাকি কোন স্থলে মল্পপি কিরাতপতি পরম যতনে। চেষ্টিত মোদের যত প্রখের কারণে॥ ় তথাপি প্রভূরে ছাড়ি যত দাসগ্য। কোন স্থাপ নহে স্থা ওছে মহাত্মন্॥ সারো এক কথা বলি শুভ সমাচার। মন দিয়া শুন প্রভু তুমি গুণাধার॥ হাখন সকলে আসি করি পলায়ন। নযনে তখন মোরা করিনু দর্শন॥ · भृहिंबी त्रांजन कति महिंकती मदन। शनायन कति यांग्र कानतन कानतन॥ দ্বইজন সহচরী সহিতে তাঁহার। কান্দিতে কান্দিতে যান কানন মাঝার॥ । অগত্যা তাঁহারে মোরা সঙ্গেতে করিয়ে। আনিলাম স্যত্তনে কিরাত আলয়ে জনবধি মহাদেবী আছেন হেথায়। নিবেদন মহারাজ করিত্ব তোমায়॥ ্ব ভোষার বিরহে দেবা কাতর অন্তরে। দিবানিশি অঞ্চ বারি বিসর্জ্জন করে॥ ষ্টীনভাবে সেই দেবী করে নিবস্তি। ক্ছিলাম তব পাশে ওছে মহামতি॥ ু আমরা তোমার হই পুত্রের সমান। দিবানিশি থাকি সেই রাণী বিদ্যমান।। **ভাঁহারে সান্তনা করি** অশেষপ্রকারে।সেবা করি সদা তাঁরে সতি ভক্তিভরে ় কিরাতের পতি এই অতি মহোদয়। দেবীরে করেন যত্ন ওহে মহাশয়॥ মতনে রেখেছে তাঁরে নিজ অন্তঃপুরে। জননী স্থান জ্ঞান করেন তাঁহারে॥ <sup>'</sup> জননী সমান তাঁরে করেন পালন। অধিক কহিব কিবা ওহে মহাঅন্॥ ্ব এত যত্ত্বে আছে দেবী ওছে গুণাধার। তবু চক্ষে বারিধারা বহে অনিবার॥ । অঞ্চবারি অবিরল করে বিসর্জ্জন। তোমার লাগিয়া সদা করেন রোদন।। , জীবন ধরিয়া আছে তোমার আশায়। জীচরণ পাবে পুনঃ কহিনু তোমায়॥ সনতকুমার করে ওছে ঋষিগণ। হইতেছে এইরূপে কথোপকথন॥ <sup>\*</sup> হৈনকালে মহাভাগ কিরাতের পতি। বিনতবদনে **হ**দে করিয়া ভকতি॥ ্রিলম্বোধি পাঞ্চালনাথে দৈশ্বব-ঈশ্বরে। কহিলেন মিউভার্যে স্তুতি নতি করে॥ **ভন ভন মহোদ**য় তোমা ছুইজন। ক্ত্রিয়ের শ্রেষ্ঠ <del>হু</del>ও অতি বিচকণ। একান্ত শরণাগত আমি দোঁহাকার। দয়া কর দীন প্রতি ওহে গুণাধার। क्रिंगो कति मम भूति हलक ध्यन। अपधृति भूती महत्य कत्रक अर्थन। পবিত্র হউক মন কিরাত নগরী। পবিত্র ইউক্ দেই এই বাঞ্চা করি। कित्रां जनात्कत्र वाकः कतिशा अव्य। मिक्क्रेनाथ वीतरमंन ज्यानत्म मगन॥

প্রিয়ার কমলমুখ দর্শনের তরে। মনে মনে আকিঞ্চন নরপতি করে॥ অবিলব্ধে যাত্রা করে কিরতি নগরী। সঙ্গেতে সামন্তগণ বর্ণিধারে নারি। পাঞ্চাল-ঈশ্বরে দঙ্গে লইয়া তখন। কিরাতপুরেতে যাত্রা করেন রাজন 🖟 বায়ুগামী অখে দবে আরোহণ করি। ক্ষণমধ্যে উপনীত কিরাত নগরী । স্থরপতি অনুগামী হয়ে দেবগণ। বৈজয়ন্তী নগরীতে প্রবেশে যেমন॥ কিরাত রাজের দনে দকলে তেমন। অবিলম্বে পুরীমধ্যে প্রবেশে তখন 🛊 উপনীত সবে গিয়া সভার-আগারে। বসিলেন ঘথাঘথ আসন উপরে 🍂 পৌরবর্গে সম্বোধিয়া কিরাত রাজন। মধুর-বচনে কছে শুন সর্বজন 🛊 শুন শুন প্রজাগণ বচন আমার। ছুরজয় তোমা দবে অতি গুণাধার॥ শক্রদেহ বিদারণে তোমর। সক্ষম। অত্তাব বলি যাহাকরহ ভাবণ 🖁 আমার বচন শুন অবহিত মনে। আমার আদেশ পাল একান্ত যুঠনে॥ এই যে হেরিছ তুই পুরুষ-প্রবর। ক্ষত্রিয় বংশের দেঁছে হন ধুরদ্ধর ॥ এই যে হেরিছ বীর সিন্ধুর রাজন। পাঞ্চালের পতি এই অতি মহাত্মন॥ ইহাঁদের কার্য্যসিদ্ধি যেই রূপে হয়। তাহাতে উদ্যোগসুবে করিবে নিশ্চয়॥ অতএব সজ্জীভূত হও সব জন। আমার বচন সবে কর**হ এবণ ॥** অকপটে যদি আজ্ঞা পালহ আমার। রুণা কাল ক্ষেপ তবে নাহি কর আর 🥐 তুরাত্মা অরাতি কত মিলিয়া সকলে। আচ্ছন্ন করিয়া সবে নিজ মায়াজালে॥ সিন্ধ রাজ্য বল করি করেছে হরণ। রাজারে করেছে চ্যুত শুন সর্বজন॥ অতএব শুন সবে বচন আমার। অবিলম্বে শত্রুকুল করিবে সংহার॥ শুকুপক আসিতেছে শুন সর্বজন। উহার প্রথমে সবে করিবে গমন॥ বেমনে পারিবে শত্রু করিবে নিধন। আমার আদেশ এই শুন সর্বজন॥ বিশেষ বিদিত আমি শুনহে প্রবণে। রণবীর বলি সবে বিখ্যাত ভুবনে। তোমরা সকলে হও অতি ভীমকায়। অতএব যাহা বলি শুনহ সবায়॥ সংগ্রামে নহেক কেহ কিরাত সমান। কূটযোধী বলি সবে খ্যাত সর্বস্থান॥ রণাঙ্গনে মায়াধারী তোমরা সকলে। অতএব সজ্জীভূত হও ত্বরা করে॥ শক্রগণ পুরোভাগে কৈলে আগ্যন। তিষ্ঠিতে সক্ষম তারা না ছবে কখন। দিবাচকে দেখিতেছি কহিন্দু নিশ্চয়। মহাযোগী তোমা সবে নাহিক সংশয়॥ অতএব মন বাক্য করহ প্রবণ i চতুরঙ্গ সেনা সঙ্গে করিয়া এছণ 💵 শক্র অভিমুখে সবে করহ গমন। অসংখ্য অসংখ্য শর করিবে বর্ষণ 🕏 कतिरवक किस ভिन्न घठ भंकि गृत्। भातिरव ভीषण भूम कहि नवाकात ॥ শক্তর রুহ্ মুও করিয়া ছেদন। সিদুরাজে উপহার করিবে অর্পণ।

श्रीयात जारमण् बेका कदर मकरन। इथा कान (करण जात किन करत।। প্রসজ্জিত হও সবে কহিন্ম ত্রায়। শত্র-অভিমুখে যাও কহি সবাকায়॥ ওন ওন সভাপাল আমার বচন। আমার আদেশ শীদ্র করহ পালন। এই যে হেরিছ ভেরী রয়েছে আমার। ইথে চারিদিকে কর ঘোষণা প্রচার॥ हीन कृष आपि कति मामछ-ताकन। शक्यंटरश त्यन मटव करत , आर्थम ॥ দুর্দৈন্তে আসিবে সবে আনার নগরে। রণস্থলে যেতে হবে বলে। সবাকারে॥ এইরেপে আজ্ঞা দিয়া কিরাত-রাজন। বীরদেব-হস্ত পরে করিয়া ধারণ। 🅦 বিদ্যাস্থে প্রবেশিল নিজ অন্তঃপুরে। বীরদেন নরপতি প্রফুল অন্তরে॥ আর্ব্রপুরে ছুই জনে করিয়া গমন। রতন আসন দোঁতে করেন এছণ॥ রমুণীগণেরে পরে ডাকিয়া দাদরে। কিরাতের রাজা কহে সুমধুর স্বরে। হৈর হের রহক্ষ যুবা মনোহর। বীরদেন এই বীর সিদ্ধুর ঈশ্র 🏗 আজাসু লম্বিত বাছ কর দরশন। শালতর সম উচ্চ অতি মনোরম॥ এরপ বলিলে যত মহিলানিকর। আনন্দে বিস্তার করি নয়ন মুগল।। प्रम चम वीतरमतन करतन पर्यन। घन घन एएएथ जांत कमल वलन॥ ভাঁছার মোহন রূপ দর্শন করি। আসক্ত হইল যত পুরবাদী নারী॥ 🎮 কেবারে লজ্জা ত্যাগ করি সব জন। কামেতে কটাক্ষপাত করে খন ঘন॥ **দোঁকাতীত রাজরূপ দেখি**য়া সকলে। মোহিত হইয়া পড়ে আপন অন্তরে॥ কাষেতে সবার হৃদি হয় জ্বর জ্ব। নিজবশে নাহি রহে কারো কলেবর।। পরস্পর বলাবলি করিছে তথন। রূপের মাধুচী কিবা করি দরশন। হৈন রূপ যেই জন নয়নে নেহারে। জনম দার্শক তার ভূবন ভিতরে॥ ইহারে হেরিলে হয় আনন্দ উদয়। কুধা তৃষ্ণা নাহি থাকে কহিনু নিশ্চয়। পুরুবৈ হেরিলৈ হয় আনন্দে মগন। নারীতে যত্তপি করে এ রূপ দর্শন।। কামেতে মোহিত হয় নাহিক সংশয়। থৈৰ্য্য ধরে হেন নারী নাহিক ধরায়।। এইরূপে নারীগণ কহিছে বচন। নিজ নিজ পতিনিন্দা. করে সর্বজন॥ তিশার আছিল বসি রাজার ক্ষারী। তাহার রূপের কথা বর্ণিবারে নারি॥ मंपरनत्र রতি যেন রয়েছে বসিয়ে। অথবা উর্বাশী আছছে সানন-ছাদয়ে॥ দর্বে তুলকণা কন্যা কিরাত নন্দিনী। হেরিলে রূপের ছটা মোহে যত মুনি॥ ্রশৃশুঃপুর আলো করি রয়েছে বসিয়ে। বরার্রোহা সেই ক্র্রাটানন্দ-ছাদয়ে॥ অপরপু রূপ তার করি দরশন। সিদ্ধুনাথ কামশরে জর্জ্জরিত হন॥ किंद्ध किंदा अलाम्बर्ग कत एतमन। मध्त-शामिनी अर् निमनी ज्यन।। 'स्यागुर्वाल कामरवर्ग शतिया अखदा । मान महन श्रीत जारने-विद्यवना करत ।।

शक्ति अवैदिन कीक कोत किहूकन । कामनदत कर्व्हितिक इटन शांदन पन ॥ অধীর হইতে পারি এখানে থাকিলে। অতএব নাহি থাকা যুক্তি কোন কালে। মনে মনে এইরপ করিয়া চিন্তন। অবিলয়ে গাত্রোখান করিয়া তখন ॥ অক্তত্র গমন করে অতি ধীরে ধীরে। মনোভাব গুপ্ত করে আপেন্ট অন্তরে॥ যন্ত্রপি অন্তর কন্তা করিল গমন। তবু কিন্তু মন নহে সুস্থির ক্রখন 🛊 🕏 **নিমুনাথরূপ দলা ভাবয়ে অন্তরে। পুনঃ পুনঃ তাঁর কথা অন্তরেতে পড়ে ॥** रिश्तर धतिरु नाहि পারেন স্থলরী। ভাসিয়া চলিল যেন যৌবনের তরী ॥ ধৈষ্য হেতু যত চেটা করেন অন্তরে। কিছুতে ধৈর্য দাহি ধরিবারে পারে॥ কিছুমাত্র শান্তি নাহি ছদিমধ্যে পায়। পুনঃ পুনঃ যথা তথা ভ্রমিয়া বেড়ায়॥ ু এদিকে ঘণায় ছিল সিম্বুরাজরাণী। সঙ্গে সহচরী কত কিরাত-রমণী॥ পতি-সমাগমবার্তা করিয়া প্রবণ। পুলকে পুরিল ছদি আনন্দে মগন # অন্তঃ পুরে যথা আছে সৈন্ধব-ঈশ্বর। উপনীত সেই স্থানে অতি ক্রতভার ॥ বিশ্বহবিশ্বরা সেই রাজার রমণী। হইয়া আছেন যেন প্রভাতা যামিনী॥ বিরহ শোকেতে তাঁর অতি ক্ষীণ কায়। উদাসিনী সম যেন চারিদিকে চায় 🕻 🛊 আলুনিত রহিয়াছে কবরী-বন্ধন। মলিন অন্তর তাঁর মলিন বদন । যে অবধি রাজ্যছ্যুত পতি গুণমণি। তদবধি কেশপাশ না বান্ধে রমণী 🕻 জটারপ কেশপাশ করেছে ধারণ। ছুলিতেছে পৃষ্ঠদেশে নাগিনীমতন॥ পতির আশায় সতী ধরিছে জীবন। মনে ভাবে পুনঃ পাবে পতির চরণ। वहानिन পরে পত্নী করিয়া দর্শন। देशतय ধরিতে রাজা না হৈল नक्स। হতোস্মি বলিয়া পড়ে ধরার উপরে। চৈতন্ত বিলুপ হৈল তাঁহার **অন্তরে।** এইরপে সমতীত হলে কিছুক্ষণ। পুনশ্চ চৈত্ত লভে সিন্ধুর রাজন ॥ -গাত্রোখান করি পরে অতি ধীরে ধীরে। মৌনভাবে কিছুক্ষণ রহিলেন পরে ॥ তার পর রাণী প্রতি করে নিরীক্ষণ। ঘন ঘন অঞ্চ বারি হয় বিসর্জ্জন॥ উথলি উঠিল তাঁর শোকের দাগর। নয়ন ভেদিয়া জল পড়ে নিরন্তর। কিছুক্ণ এইরপে ক্রিয়া রোদন। তার পর হুদে ধৈর্য্য করিয়া ধারণ।। জিজ্ঞাসিতে সমুপ্তত নিক মহিধীরে। বদন উন্নত করে অতি ধীরে ধীরে ॥: যেমন রাণীর চকে পড়িল ন্য়ন। অমনি মূর্চিছতা হন মহিধী তথন। কণপরে সংজ্ঞালাভ করিয়া খুন্দরী। প্রণাম করেন পতি-চরণ উপরি। পুনঃ পুনঃ পদ্তলে করেন বন্দন। কহিবেন নানা কথা মনে আকিঞ্চন 🕷 किन्न ग्रूट्य किन्न्यां वांका माहि मदत । चन चन शिव्यूथ पत्रमन करतां। মহামতি সিদ্ধুপত্তি আনন্দে ম্গ্র। নারীর তাদৃশ প্রেম করি দর্শন। 🖫

ुसक्क जिम পাতि जा रहित्रा डांहार । जानत्म समय पूर्व हरेन तालात ॥ অংভরে ভূমি হতে করি উত্থাপন। প্রেমভরে গাঢ়তর করি আলিকন। বদন চুম্বেন রাজা হরিষ অন্তরে। বসালেন প্রেয়সীরে অক্টের উপরে॥ মিউভাবে নানারপ করি সভাষণ। প্রিয়ার হৃদয় তুট করেন রাজন॥ ইভিষধ্যে সেই স্থানে কিরাত-নন্দিনী। কিশোর-বয়সী যিনি সুচারুহাসিনী॥ আসিয়াছিলেন তিনি পুলক-অন্তরে। দম্পতীর সেই ভাব নয়নে নেহারে॥ দাম্পত্য-প্রণয় তথা করি দরশন। সাত্ত্বিক ভাবেতে তাঁর মজি গেল মন।। ভজিলেন মতে মনে সিম্বুর রাজনে। পতিত্বে বরণ কৈল বিকসিত মনে॥ अपिटक मिन्नूत तांगी जानत्म मनम। পि जित निकटि शटत करत निरंदान।। প্ৰকান্ত অন্তরে পূজ এহ শনৈশ্চরে। মঙ্গল হইবে তাহে জানিৰে অন্তরে।। मार्क दिश-मूर्य जामि करति इ अवन । यितर्भ शृक्ति इत ७ दर महाजुन्।। এত বলি ধীরে ধীরে পতির গোচরে। শনিপূজাবিধি কহে হরিষ অন্তরে।। ্শনির মাহাত্ম্যকথা করেন বর্ণন। শুনিয়া সিমুর পতি আনন্দে মগন।। শনির মাহাত্ম্য কথা রাণীমুখে শুনি । পুলকে পূরিত হন সিম্ধু নৃপমণি॥ ভক্তি অন্মিল তাঁর অন্তর মাঝারে। সংঘত হইয়া রহে একান্ত অন্তরে।। <mark>শিমিবারে যথা</mark>বিধি করিয়া যতন। পবিত্র হৃদয়ে করে শনির পূজন। সন্ত্রীক হইয়া নৃপ সংঘত-অন্তরে। যথাবিধি পূজা করে গ্রহ শনৈকরে।। এইরূপে পুজা আদি করি সমাপন। যথেষ্ট দক্ষিণা দেন আচার্য্যে তখন।। , নানাবিধ অন্ন আদি করি আয়োজন। ত্রান্সণগণেরে রাজা করান ভৌজন।। প্রসাদ বর্টন করি একান্ত অন্তরে। অর্পণ করেন রাজা কিরাত-গণেবে।। **এই नव क्रिय़ कि**रम करित नमार्थन। महिरी निरिट्ठ ताका रुरा अन्नमन।। , গ্রাহৰর স্থ্যাত্মজে অতি ভতি ভক্তিভরে। পুনঃ পুনঃ স্তব করে একান্ত অন্তরে ভার পর ভূয়োভূয়ঃ করেন প্রণাম। প্রার্থনা করেন কত শনি বিজ্ঞমান।। অঞ্বারি প্রেমভরে হয় নিপতন। পুনঃ পুনঃ শনিপাশে করেন বাচন।। 🌉ত রাজ্য ভিক্না রাজা করেন যতনে। পুনঃ পুনঃ নতি ক্রে শনির চরণে।। উভয়ের অতি ভবি করি দরশন। এহরাজ শনিদেব মহাতুষ্ট ,হন।। আবির্ভ্ হন পরে গগন উপরে। অফ্তেজ শ্রুপথ সমুজ্জল করে।। প্রশান্তমূর্ত্তিতে দেখা দিশ এহবর। কি বলিধ জ্যোতিঃ তাঁর বিষয়-আকর।। क्षीक्षी भनित ज्ञाश कति पत्रभन। विकारत आकृत इस निक्रुत ताकन।। ুখন খন রোমাঞ্চিত হর কলেবর। ভক্তিভরে নতি করে ভূমির উপর।। ্মিণ্ডকাষ্ঠ সম হন ভূতলে পতিত। তার পর ধরা হতে হইয়া উত্থিত।।

कंत्रदर्शकृ कति भटत अकांख अखदत । - पिटवरन करत्र नृश अंद गरैन्करत ।! धरताक তव পरि कति नमकात। कृषा कत तीन करन ७८ ह्यांशात ।। সুপ্রসর হও প্রভূ দীনের উপরে। ছঃখজালে বিজড়িত দেখহ কিন্ধরে 🔃 বিষম সক্ষট ছতে কর পরিত্রাণ। নিবেদন তব পদে ওচে কীর্ত্তিমান 🎉 রাজার এতেক ভক্তি করি দরশন। পরম সম্ভূট হন সূর্য্যের নক্ষর 🎼 वद्रतान रहेजू भनि इतिय अखरत। कहिर्लन मिर्छे जारा निकृत्भवरत 👫 শুন শুন নৃপবর আমার বচন। প্রদন্ন হইন্মু আমি তোমারে এখন 🎉 শোক মোহ হৃদি হতে ত্যুক্তর অন্তরে। হৃখী হও নূপবর কহিন্ত তোমারে 🕍 মনোমত বর তুমি করহ এহণ। যা চাহিবে দিব তাহা জানিবে রাজন্ এইরপে গ্রহবর প্রদন্ন অন্তরে। অমৃত-পুরিত বাক্য কছেন রাজারে শনির এতেক বাক্য করিয়া শ্রবণ। হরিষে পূরিত হন নিমুর রাজন। 👯 তার পর ধীরে বীরে বিনয় বচনে। কহিলেন কবঘোড়ে শনি বিজ্ঞানে । প্রসন্ন যত্ত্বপি প্রভু ভক্তের উপর। তাহা হলে অবিলম্বে দেহ এই বর 🗷 🖟 নিজ বাস্ত্রলে আমি যত শক্রকুল। যেন পারি অবিশক্ষে করিতে নির্মৃশ । । অপহত রাজ্য যেন লভি পুনরায়। এই বর মাগি আমি কহিনু তোমায় । রাজার এতেক বাক্য করিয়া শ্রবণ। পরম সস্তুষ্ট হন সূর্য্যের নন্দন 👪 তথাস্তু বলিয়া বর দিলেন তাহারে। অবিলয়ে তিরোহিত আকাশ-উপরে 🕏 আহরাজ শনি দেব হলে তিরোধান। উর্দ্ধার্থ সিমুনাথ করি অবস্থান !! নয়নে চাহিয়া উর্দ্ধে আকাশ উপরে। স্তব পাঠ আরম্ভিল অতি ভক্তিভরে॥ यथाविधि खवलार्घ করিয়া রাজন। ভূমিষ্ঠ ঽইয়া করে উদ্দেশে বন্দন ॥

এইরপে শনিপাশে লভিয়া সুবর। আনন্দে পূরিত হন সিরু-নৃপবর ।
তার পর সম্বোধিয়া কিরাত রাজনে। কহিলেন মৃত্ভাষে বিনয়-বছনে।
অধিক বলিব কিবা ওছে মহাত্মন। আপনার অনুগ্রহে মঙ্গল এখন।
মনোবাঞ্ছা সিদ্ধ এবে হইল আমার। মম প্রতি তুই হৈল ছায়ার কুমার।
গ্রহরাজ স্থাসর জামার উপরে। দেখিয়াছি দিব্য মূর্ত্তি কহিন্ম তোমারে ।
মূর্তি মঙ্গলম্য়ী করি প্রদর্শন। অভিমত বর মোরে করিয়া অর্পণ।
স্বলোকে পুনশ্চ যাত্রা করেছেন তিনি। বলিলাম তব পাশে ওছে নৃপমণি।
বিশ্ব আমার বাকা করছ প্রবণ। অরাতি-নিকর যাহে হয় নিপতন ।
তাহার উদ্বোগ কর ওছে মরপ্তি। শুভদিন খির কর ওছে মহামতি।
সৈন্তাণ কবে হাবে সমর-কারণে। সেই দিন কর খির কহি তব খানে।
সিন্তাণ কবে হাবে সমর-কারণে। সেই দিন কর খির কহি তব খানে।

, इत मूर्थ मन नाकी केत्रिका ध्वन । बाखि त्यारम रमना मन करत बारबाजमी প্রক ভাহার সেনা অতি বলবান্। সবারে সজ্জিত করে যবন বীমান। বিমল প্রভাতে পরে উঠিয়া সকলে। মুদ্ধের কারণে ত্রা মুদ্ধকেতে চলে। নির্দ্ধিউ স্থানেতে সবে করিল গমন। সৈত্ত্বব সামস্ত সব করে সরশন। বীরদেন নরপতি প্রফুল অন্তরে। দৈন্য সহ অবস্থিত সমরের তরে। তাহ। দেখি মহাক্রেন্ধ যবন-রাজন। যথাক্রমে নিজ সৈত্য করয়ে স্থাপন। पूरे दल कर्प रेमग्र मिक्डिंग श्रेम । छूरे दल त्रामश्च वाकिर् नामिन॥ পুর্ব্যধ্বনি ক্রেমে উঠে গগন উপরে। পটহ বাদিত হয় জলদ পঞ্জীরে। চারি দিকে হয় কত গোমুখ বাদন। ক্রমেতে উঠিয়া শব্দ ঠেকিল গাৰ্ম I ভীষণ আকার সব যবনের সেনা। কত অন্ত শোভে হাতে না যায় গণনা। কেছ রখী কেছ চক্রী কেহ খড়গী হয়। গদা পাশ কারো কারো করতলে রয়। শুল প্রাস নানা অন্ত্র শোভে সৈক্তকরে। বিশারদ বিচকণ সকলে সমরে। শবার প্রতিজ্ঞা হোক শরীর পতন। নতুবা অচিরে হোক্ কার্ষ্যের সাধন॥ ু এই রূপে দৈন্তগণ সাজিয়া সকলে। চারিদিক্-হতে অস্ত্র বিনিক্ষেপ করে॥ কেহ কেহ মারে শূল ভীষণ আকার। বেগভরে করে কেহ অসির প্রহার॥ শক্তি মারে প্রাস মারে কোন কোন জন। ঘন ঘন করে কেছ শর বরিষণ॥ কেই কেই ভন্নাঘাত করি বেগভরে। শক্রশির কাটি ফেলে ভূতল উপরে ॥ ্থেইরপেরণ করে যবনরাজন। ভাহা দেখি সিমুপতি অতি জুদ্ধ মন॥ অবিলয়ে নৈত্রগণে সাজায়ে যতনে। রোষভরে মত হন সমর-কারণে॥ **রণেডে** মাতিল ক্রেমে কিরাত রাজন। পাঞাল-ঈশ্ব রণে হন নিমগন॥ কিলাকিল শব্দ উঠে সমর ভূমিতে। কত বীর পড়ে রণে খণ্ডিতশিরেতে॥ এইরপে যুদ্ধ করে ক্ষত্রিয় যবন। কত শির রণভূমে হয় নিপতন। ধরাতলে ছিল্ল মুও গড়াগড়ি যায়। শোণিতের নদী ক্রমে প্রবাহিত তায়॥ রণভূষে পশে গিয়া কিরাত রাজন। দঙ্গে দঙ্গে কত দৈশ্য করয়ে গমন॥ 🗠 তাহা দেখি ক্রেরচিত্ত যবন-ঈশর। লোহিত লোচন্ হয় সরোধ-অন্তর॥ धन धन वाग गाँदत कितां छे छे थरत । यदन वाक्षा तिरे नृद्ध कृ विकटन कितन ॥ শরেতে ছদয় বিদ্ধ যবন ঈশর। তরু কিন্তু নছে নৃপ কাতর-অন্তর॥ তার পর অগ্নিমুখ ভল লয়ে করে। ঘুরান যবনরাঞ্চ নিজ শিরোপরে॥
ঘুরারে নিকেপ করে যবন উপর। তাহা দেখি মহারুষ্ট ঘবন দখর॥
গাধাতে চুর্শিত করে সেই ভলগণে। জয় জয় শব্দ হয় মেচছ সৈয়গণে। मण्डदा प्रदेशका कत्रदा श्रक्ति। क्षर्रभे वाथिक छाट्य किताव तालम ॥

প্পৰ হতে মহাবেশে নামিয়া পড়িন। ভয়কর গদা এক করেতে ধরিস্থা क्रक्टिं करत्रम रचन इंग्लंख नमान। पूत्रान महती शरा नवा विद्यमान বেগেতে কেলেন তাহা যবন-উপরে।তাহা দেখি মেচ্ছপতি অতি রোষভারে। यहामिक निकरूत कतरस थात्र। अधिमिथा मम ज्वान अि विक्रोस्न्। সেই শক্তি কেপ করে যবন রাজন। তাহে গদা চূর্ণ হয় খোর দরশন # হেনকালে সিশ্বু আর পাঞ্চাল ঈশ্বর। উপনীত আসি তথা সমর ভিতর॥ একাকী সমর করে কিরাত রাজন। ছই জনে সেই স্থানে উপনীত হন 🗱 ডাহা দেখি মহাবল যত শ্লেচ্ছপতি। উপনীত দেই স্থানে অতি ক্ৰতগতি॥ ई ক্তিয়ে প্রধান যত একত হইল। রণ ভূমে ছুই দলে সমর বাধিল। মুদ্দার পার্ট্টশধারী যত মেচ্ছগণ। কবিয় উপরে করে শর বরিষণ 🛊 মহাতেজা শ্লেচছগণ দারুণ মূরতি। রণ-ক্ষেত্রে ছরাধর্ষ মহাবল অতি॥ কত্রগণ মহাশ্র বিদিত ভূবনে। ছই দলে হয় যুদ্ধ সমর অঞ্নে,॥ মহাবল ছই দল অতি -ভয়ক্ষর। সমরে অটল দোঁহে ক্তান্ত-দোসর।। কেহ নাহি টলে রণে মহা বলবান্। রণ হেরি ভয়ে সবে হয় কম্পবান্ 🕷 শ্**ভোপরি অবস্থান করি দেবগণ। দারুণ সমর সেই** করে দরশন॥ যবনের মহাবল হেরিয়া নয়নে। ক্তরগণ মহাতুদ্ধ নিজ মনে মনে॥ ভিন্দিপাল ভল আর মুষল লইয়ে। আঘাত করয়ে সবে সরোষ-ছদয়ে॥ শতত্মী করেতে কেহ করিয়া গ্রহণ। যবন-উপরে ক্রত করে বরিষণ 🖡 অগ্নি সম ক্রগণ মহাতেজ ধরে। মহাবীর্য্য বিরাজিত স্বার শ্রীরে॥ রোষভরে অস্ত্র রাজি করে বরিষণ। তাহাতে পতিত হয় অসংখ্য যবন॥ সহস্র সহস্র শ্লেচ্ছ রণমাঝে পড়ে। দারুণ বাধিল যুদ্ধ কে বর্ণিতে পারে॥ এইরপে যুদ্ধ হয় অতি বিভীষণ। হেরিয়া বিস্মিত হয় দরশকগণ॥ দারুণ সমর হেরি সবার শবীরে। রোমাঞ্চ জনমে সব বিক্রিত অন্তরে॥ মুনিগণ সেই রূপ করি দরশন। বিশ্বরে হলেন সবে বিযোহিত্যন॥ এইরপে কত্রগণ জয় বাসনায়। ঘোরতেজে রণমাঝে ভ্রমিয়া বেড়ায়॥ (बहेक्राट्य महावल यं के कार्या । यवन मार्गत तर्ग कतिरह यथन ॥ (इनकारण महाम्हर्या अनह मकरल। जियाक्रशा नाती अक जारम त्रवहरण।। मोबामिनी मग कास्ति অতি गर्दनाश्त । हजूतक पल मरक अठि छत्रकत ॥ मोलायत পরিধান छहाक-शामिनी। वाजुनी वत्रमी वाला मध्य आधिनी॥ ৰন্দ মন্দ ছাস্ত খোভে কমল বদনে। অঙ্গ খোভা কব কত নানাবিভূষণে॥ भनटपरण र्माञ भाग्न काक्टनतं राज । रेम्नोवज मम जात मग्रम विभाग ॥

क्रिकरकनी मत्नोरला छ। चंजीय क्षमंत्र । शंकीत निर्माप क्रत चंजि खत्रकरत ॥ पानवमे किनी छ्छी जानिया नमरतः। পড़ित्नन महारवरत यवन-छे नेत्र॥ मश्राकी मरे परी कनप्रापिनी। ग्न ठान लाए करत त्यांकेक शक्तिभी॥ ৰ্ণুশাৰো নৃত্য করে অতি বিভীষণ। রথোপরি আছে দেবী করি আরোহণ॥ আইরেপে রণ্চতী আসিয়া সম্বর। য্বনগণেরে কছে জলদ গভীরে॥ শোন্ শোন্ মূঢ় গণ আমার বচন। তোদের সমান পাপী নাছি কোন জন।। শোন ছেরে মেচ্ছ জাতি বিহৃত আকার। শোন্ শোন্ মুম বাক্য সবে দুরাচার। ্মহাত্মা সৈমবরাজ অতি মহাত্মন্। তাঁর রাজ্য হরিয়াছে যেই নরাধম॥ ভাহার মন্তক আমি স্থাণিত বাণে। ছেদন করিব রাজি শোন্রে এবণে॥ ভাহার মন্তক আজি করিয়া ছেদন। মাংসাশী বিহঙ্গণে করিব অর্পণ॥ শিবাগণ তার শির করিবে আহার। কুকুরেরা খাবে তারে শোন্ তুরাচার ॥ খ্রুতঞাৰ শোন শোন্ যবন অধম। যক্তপি বাসনা থাকে রাখিতে জীবন॥ ্পিনারন কর্ম অবে অতি ক্রত করে। নতুবা বধিব আজি জানিবে অন্তরে॥ ্রেইরপে রোষভরে বলিয়া চচন। শশুধনি করে বামা অতি ঘন ঘন॥ বৈষাররবে শশ্বধনি ঘন ঘন করে। ঘণ্টাবাদ্য করে কত কে বর্ণিতে পারে॥ শহিষ অহর যবে হয় নিপাতন। সহস্র ভূজেতে দেবী ব্যাপিয়া ভূবন॥ कद्विक मः मर्फन यथा दिक्जागर्ग। अप्रेहामा करत्रिक राज्ञेश यहरन॥ **८गरेब्र** १ अर्गप्या अटनिया त्र। यन्तत रेम्चर्गर करतन भथन॥ मूल्यू हः दोना (परी करतं (यात चरता भतकान वर्ष कठ यवन उपरत ॥ খন খন ধুমুকেতে দিতেছে টক্ষার। তাহে কত সৈন্তগণ পচ্ছে অনিবার॥ ं খড়গাঘাত করে দেবী কাহার উপরে। শূলেতে কাহার দেহ ছিন্নভিন্ন করে॥ ভিন্দিপাল কারোপরি করিয়া প্রহার। কার কলেবর দেবী করে ছারখার॥ পট্টিশ মারেন দেবী কাহার উপরে। মুদ্দার মারেন কত কে বর্ণিতে পারে॥ শতদ্মী যারেন দেবী অতি ঘন ঘন। গদা প্রাদ কত যারে কে করে গণন॥ विनः या यवन পড়ে সমর- অব্দনে। ছিন্ন মুপ্ত কত পড়ে না যায় বর্ণনে॥ ভাইরোসে বায়ুবেগে ঘণা তালফল। সবেগে পতিত, হয় ধরণী উপর॥ নেইরপ মেচ্ছমুও হতেছে পতন। অসংখ্য অসংখ্য তার্ছা কে করে গণন॥ 'ক্তেছ কেছ রণমাঝে পতিত ছইয়ে। কৃষির বমন ক্রে বিকব ছদয়ে॥ কেশণাশ আলুলিত কোন কোন জন। রণাঙ্গনে পড়ি জারা হতেছে লুঠন॥ ত্রনাম্পীবন পাছে ভাবের শরীরে ৷উঠিবার শক্তি কোশা উঠিতে না পারে अध्यान अहै केंद्रिया नेपन अभरता कठ देवन शांचे करने ना योग करतन ।।

ভালিভারে মবে করেন নিধন। সেই কালে করেছিল যে মুন্তি নারণ।
কারিপে খোর মূর্তি ধরিয়া সমরে। জগদ্যা ঘন ঘন বিচন্ন করেন
এরপে সমর চলে অতি বিভীষণ। হেরিলে ভয়েতে হয় সকাতর্ন মন।
মাঝে মাঝে জগদ্যা করেন ছকার। ঘন ঘন থলুকেতে দিতেছে টকারা।
মূর্ড্র্যুত্তঃ অট্রাস্য শোভিছে বদনে। এইরপে একাকিনী ভ্রমিছেন রবে।
অসংখ্য অসংখ্য ভল্ল করেন বর্ষণ। অসির আঘাত দেবী করে ঘন ঘন।
নিশিত কত বা শর বরিষণ করে। মুগল মুলার কত কে বর্ণিতে পারে।
রণমাঝে ঘন ঘন করিয়া নৃত্যন। জগদ্যা চারিদিকে করেন ভ্রমণ।
প্রইরপে অস্ত্রাঘাতে যত শক্রগণে। ব্যথিত করেন দেবী সহাস্যবদনে।
সম্বর্জকঘনাকারা ঘণ্টানিনাদিনী। জগদ্যা মহাঘোরা দানব-নাশিনী।
এইরপে কত জনে বিমোহিত করে। পার্চালেন কত জন্তন শমন-আগারে।
কাহারো মন্তক দেবী করেন ছেদন। চুর্ণিত হইয়া কেহ হতেছে লুগুন।

এইরেপে অত্যাশ্চর্য্য করি দরশন। ববনের পতি হন অতি ক্রেদ্রমন । সম্বোধন করি পরে সেনাপতিগণে। কহিলেন রোষভরে জলদ্বিচনে ॥। আমার বচন সবে করহ প্রবণ। ছদয়ে উৎসাহরাশি করহ ধারণ 🗗 বিশাল-ছাদয় যত ক্ষত্রিয় নিকর। সকলেরে বিম্থিত কর মহাবল ধর দবে ঘবন-শরীরে। তবে বল কারে ভয় ভূবন মাঝারে॥ কিরাতের সৈন্যগণ হতেছে দর্শন। অস্ত্রাঘাতে সকলেরে করহ ছেদন। পাঞ্চালের সৈত্য দেখ রয়েছে সমরে। সবারে বিনাশ কর অতি ক্রত করে।। ভুরন্ধী মাতঙ্গী যত হতেছে দর্শন। পদাতি রথী বা যত হয় নিরীকণ।। সবারে মধিত কব আমার বচনে। কিবা ভয় কিবা ভয় এ তিন ভুবনে।। গদাঘাতে মর সবে পতঙ্গ স্থান। কেবা আছে মহাবল যবন স্মান 🕏 আমার বচন কে্ছ না কর ছেলন। নামে যেন নাছি কর ক**লক্ষ রোপণ। ।** রাজার আদেশ শুনি যত দৈলগণ। কোলাহল করি রণে পশিল তখন॥ লোহিত-লোচন সবে ভীষণ আকার। ছুরাধর্ষ সমরেতে সবে বলাধারু॥ ঘন ঘন শরজাল করেয়ে বর্ষণ। শরেতে ব্যথিত হয় যত সৈন্যগণ। এদিকৈতে রণচণ্ডী ভীষণা সুবতী। একাকিনী কত সৈতা নাশে নির্ব্ধি॥ তাহা দেখি ঘবনেরা অতি রোষভরে। ঘন ঘন শরজাল বরষে ভাঁহারে॥ তাঁছার শরীর বিদ্ধ শরজালে হয়। কিরাতের দেনা হৈল ব্যথিত-ছদর্ম **এইরূপে খোর মুদ্ধ করিছে ঘবন। ভাহা দৈখি সিমুনাথ রোবেতে দগন।** তাহা ছেরি মহাবল দিদ্ধু অধিপতি। যবনের অভিমুখে ধার ক্রউসতি॥

পাঞ্চালের সৈক্তগণ সঙ্গে সঙ্গে চলে। প্রবেশিল \_\_\_\_ণে অতি রোরভরে। धवन महित्छ मत्व कतिरह मगत। पांकृष मगत त्मरे अि अवि अवस्ता। হত্তী অৰ রথ আর কত বা পদাতি। করিছে সমর সবে নাহিক অবধি॥ পদভরে বস্থমতী কাঁপে ঘন ঘন। বিকম্পিত হয় যত মহীধরগণ ॥ ঘন খ্রীন শক্ষ করে জলদ-নিকর। কম্পিত হইতে থাকে যতেক সাগর॥ শ্রলয় সময যেন সমাগত হয়। চারিদিকে কোলাহল ওছে ঋষিচয়॥ তাহা দেখি মহাকুদ্ধ যবন-ঈখর। রোযভরে শরজাল বর্ষে নিরস্তর॥ নারাচ পরিঘ কত ঘন ঘন মারে। অস্থ শস্ত কত ফেলে কে বর্ণিতে পারে॥ জলদে আরত হয় আকাশ যেমন। শরেতে ঢাকিল শৃত্য জানিবে তেমন॥ ষহাভাষে কত্রগণ মহাবলধব। যবনের ভাব দেখি কুপিত-অন্তর॥ . আফি সম জ্বলে সবে অতি ভীমকাষ। চারিদিকে রণ মাঝে ভ্রমিয়া বেড়াষ॥ जगः भा जगः भा भंत करत वित्रवं। विद्यानिक छ्छक्षात करत घन घन॥ শাক্ষালন করে সবে অতি রোষভরে।বাহ্বাক্ষোট করে কেছ পশিয়া সমরে॥ । **তিন্দিপাল কেহ** করে করিয়া গহণ। শত্রুর উপরে তাহা করে নিক্ষেপণ॥ 🗫ত অস্ত্র মারে দবে কে বর্ণিতে পারে। যবনের সৈত্য কত পড়িল সমরে॥ রণেতে তুর্মাদ যত যবন-নিকর। ক্রমে ক্রমে পড়ে সবে ধরণী-উপর॥ কৈণ্টি কোটি যবনেরা রণ্ভূমে পড়ে। মদোৎকট তারা দবে জানিবে দমরে॥ ফ্লধিরের নদী কত বহিতে থাকিল। কত মুগু রণনাঝে লুপিত হইল॥ দাংসভোজী জন্তুগণ সমরে আসিযে। মৃত্যাৎস খায় কত প্রফুল্ল-ছদয়ে॥ হেমকালে মহাবল যবন-রাজন। নেত্রপাত করি অত্যে ক্লরেন দর্শন।। শ্রামাকী যুবতী এক পশিয়া সমরে। ত্মোর রবে রণমাঝে ভত্ত্বার করে॥ ষ্কন উপরে করে শর বরিষণ। অস্ত্র শস্ত্র হাতে কত হতেছে শোভন॥ ইনীবে সম চকু অতীব বিশাল। অজ্ঞ শস্ত্র কত শোভে হাতেতে তাঁহার॥ किंवाक्रभा मंद्रे (प्रवी तर्ग जेवाकिनी। नवीना युवजी मछी महाश्र-वप्रनी॥ 🖟 বীনোম্নত প্যোধর অতি মনোহর। পুরুগন্তে আমোদিত তাঁর কলেবর॥ সৌদামিনী সম তেজ শোভিত্তে শরীর। নানারত্ব ধরে দেরী নিজ কলেবরে॥ ক্ষীণ কটি শোভে কিবা কেশরী সমান। চিকুণ চিকুর শিद्धेत করে অবস্থান॥ ँ কন্দর্পের রতি সম বিরাজে স্থনরী। মুনিমনোহরা সতী 🖟 আহা মরি মরি॥ শ্লেচ্ছণতি পুনঃ পুনঃ করি দরশন। বিহবল হইয়া পাঁড়ে সমরে তখন॥ वागारत मरकाधि शरत महाय्य-वर्णन। किहरनम शीरत-धीरत मधूत वहरन॥ তেন বালে বরারোহে আফার বচন। কোর্থা হতে আলিয়াছ বলহ এখন।

জীকুগণ ভয় পায় হৈরিয়া তোমারে। কি হেতু এেলেছ বল বিষম সময়ে মু काशांत निक्नी पूर्वि वनर रहन। वन वंन गंगिश्रट आगारत अस्त ॥ পরম যুবতী তুমি অতি মনোহর। করিবে স্থরত ক্রীড়া তুমি নিরন্তর 🛭 তাহা ছাড়ি রণমাঝে করি আগমন। শস্ত্র ক্রীড়া করিতেছ কিসের কারণ । আমার বচন শুন চপল-লোচনে। মম পাশে এসে। সতি সহাস্থ-বদক্রে আমার অন্দরে আছে যতেক রমণী। তাহাদের মাঝে তুমি হবে শিরোমণি॥ সত্য করি বলিতেছি তোমার গোচরে। স্থখেতে রাখিব আমি নিজ অন্তঃ**পুরে** ছুরাত্মা লম্পট সেই যবনের পতি। দেবীরে সম্বোধি কহে এরপ ভারতী 🛊 তাহা গুনি মহারুট ক্ষত্রিয়-নিকর। অধর দংশন করে রোধে নিরম্ভর। বাহ্বাম্ফোট করি সবে কুপিত অন্তরে। অস্ত্র শস্ত্র মারে কত ঘবন-উপত্নে 🛭 ত্রন্দ অন্ত ঘন ঘন করয়ে কেপ।। ঐত্র অস্ত্র কত মারে কে করে গণন।। অস্ত্র শস্ত্র কত মারে কে গণিতে পরে। দশদিক সমাচ্ছন্ন ক্রমে শ**রজালে**॥ প্রলয়ে যেরূপ হয় এই বসুমতী। সেরূপ হইল ধরা অন্ধকারে অভি। যবন উপরে অস্ত্র হয় বরিষণ। ব্যথিত হইল তাহে স্লেচ্ছ**দৈন্যগণ।** কত দৈল্য পড়ে ক্রনে ধরণী-উপরে। রক্তনদী বছে কত সমরের স্থলে। প্রলয় সমযে পরা কাঁপাযে যেমন। সেইরূপ বসুমতী কাঁপে ঘন ঘন। সৈক্তগণ পদভরে টলমল করে। হেরিয়া দর্শকগণ হৃদয়ে শিহরে 🛚 এত বলি সমোধিয়া যত ঋষিগণে। বলিলেন পুনরার মধুর-বচনে। শুন শুন ঋষিগণ আমার বচন। যেই সভী রণমাঝে করিতেছে রণু≇ ঘাহাবে সম্বোধি সেই যবনের পতি। কামভরে বলেছিল দারুণ ভারতী । কিরাত-নন্দিনা তিনি পরম স্কুনরী। যাঁর চিত্ত বিমোহিত সিদ্ধুরাজোপরি। রণচণ্ডীরূপে তিনি করেন সমর। রণেতে নিপুণা সতী অবনী ভিতর। কামার্ত্ত হইয়া সেই যবন-রাজন। কটুবাক্য কহে কত তাঁহারে তখন 🖫 তাহা শুনি সিমুরাজ কুপিত অন্তরে। ঘন ঘন দৃষ্টি করে যবন ঈশ্বরে।। তার পর সার্থিতে কংহন বচন। আমার আদেশ শীঘ্র করহ পালন। মেচছপতি ষেই স্থালে করে অবস্থিতি। রথ লয়ে সেই স্থানে চল ক্রতগতি॥ কটুকথা কহে হুট কিরাত-ক্তারে। সমুচিত ফল দিব এখনি তাহারে ॥ ছুর্মতির দর্প চুর্ন করিব এখন। চল চল সেই স্থানে আমার বচন। এরপ আদেশ পেয়ে সারখি তখন। ক্রতগতি সেই স্থানে করয়ে গমন। ষবনের সৈম্মগণে 🚁 রি বিলোড়ন। মহাবেগে ক্রত চলে সিমুর রাজন 🕸 হাহা দেখি ছুরাধর্ষ যবনের পৃতি। সিমুরাজ অভিমুখে আদে ক্রতগতি।

"অক্তের ভৈরব রবে বিজ্ঞান্ত ইইয়ে। চারিধিকে ধার সবে সবনে পলায়ে॥ কেছ কেছ নিজ প্রাণ রক্ষার কারণ। জন্ত শস্ত রণহলে করি বিসজ্জ'ন। প্রশারন করে চকু যেই দিকে যায়। রোদন করিয়া কেছ সঘনে দৌভুরি। হা পিত হা ভাত বলি কোন কোন জন। ক্রতগতি রণ হতে করে পলায়ন। েকেছ কেই পিতদেবে করি সম্বোধন। হা পিত বলিয়া ভাকে করিয়া রোদন। ্ৰল পিতঃ কোথা যাও আমারে ত্যজিয়ে।ক্লপা করি লহ মোরে সক্লেতে করিছে এইরপে ভীত হয়ে দ্লেছে সৈত্যগণ। নানা মতে চারিদিকে করে পলায়ন। ্রুষধির বমন কেহ ঘন ঘন করে। মহাবেগে পড়ে দব বিকল শরীরে॥ ্লিপ্রবল বায়ুর বশে জলদ যেমন। ছিন্ন ভিন্ন হয়ে করে শূন্যেতে গমন। প্রেইরপ শ্লেচ্ছপতি বিনিহত হলে। অবশিষ্ট যত সেনা ছিল রণ্ছলে॥ ছিল্ল ভিন্ন হয়ে দবে করে পলায়ন। তাহাদের তুঃখ হায় কি করি বর্ণন। ্রমূহতী দেনার ছুঃখ হেরিলে নয়নে। কিব। কট হয তাহা কি বলি বদনে॥ এইরপে হত হলে যবন-রাজন। অকমাৎ রণমাঝে আদে এক জন॥ শ্বনরাজার ভাতা অতি মহাবন। অবিলয়ে উপনীত আদি রণ্ডল॥ षदातार উপনীত অখ আরোহণে। বেটিত হইয়া আদে বহুদৈএগনে॥ সবার করেতে শোভে অস্ত্র বিভীষণ। সবার নয়ন যেন লোহিত বরণ॥ বৈর্নির্যাতন ইচ্ছা করিয়া অন্তরে। উপনীত হয আসি সমর ভিতরে॥ জ্ঞাতার নিধনে রুট হয়ে মহাবল। প্রতিশোধ দিতে আদে সংগ্রাম ভিতর॥ মহাবল ধরে সেই যবনের রায়। মহামর্দ্দ নাম তার অতি ভীমকায়॥ ্থাইক্লপে পুনরায় ফ্লেচ্ছ-দৈত্যগণ। একত্র হইল আসি করিবাবে রণ॥ ্মহাক্রুর তারা সব কর্কশমূবতি। ক্ষিপ্রহন্ত তুরাধর্ষ আসে জ্বতগতি॥ वर्षाकात्न (भय यथा करत वित्रयण। यवरन ना करत ज्था अयु निरक्ष्पण॥ পুনশ্চ যবনদৈশ্য করি নিরীক্ষণ। ক্রোধ ভরে জ্বলি উঠে যত ক্ষত্রগণ॥ অঘি সম জ্বলে সবে আপন অন্তরে। পুনঃ পুনঃ দৃষ্টি করে কুপিত অন্তরে॥ मूर्व्या छ १ कत्र मत्व वलत्न वहन। यवन निधन कत्र यवन निधन।। এত বলি ফ্লেচ্ছেনৈত পুনঃ ভেদ করি। কত্রগণ পশে গিরা সংগ্রাম ভিতরি॥ ক্ষা প্রের এই ঔদ্ধত্য হেরিয়া। মহামর্দ ধনু লয় করেতে ধরিয়া॥ হাসিতে হাসিতে লয় নিজ শরাসন। টক্ষার শব্দেতে কর্ট্র বিন্ময়োৎপাদন ॥ মহাবেগে অএগামী মহামর্দ হয়। কার্লভুল্য মূর্ত্তি জার নাহিক সংশয়॥ জরাবত সম তার দেহ বিভীষণ। হেরিলৈ বিশুর্ধ হয় দর্শকের মন॥ ৰিনির। রয়েছে বীর প্রশত বারণে। সচল পর্বত সম চলিছে লখনে।

খন খন সিংহনার করিয়া তৃখন। সিমুরাজ প্রতি আসে যুবন-রাজন 📲 দুর হতে তাহা দেখি কিরাতের রায়। দৈরবের প্রাণরকা করা বাসনার ॥ मरेगरना (मर्थारन क्रञ करत व्यागयन। यवरनता जोश हरक करत मत्रभन # মহামর্দ্ধ তাহা দেখি কুপিত অন্তরে। প্রবৃত্ত হইল পরে দারুণ সমরে॥ কিবাত সহিত যুদ্ধ বাধিল ভীষণ। মহাগদা নিজ হত্তে করিয়া গ্রহণ 👫 নিক্ষেপ করিল তাহা কিরাত-ঈশ্বরে। মহাবেগে আদে গদা বক্ষের উপরে 🜬 তাহা দেখি রোষভরে কিরাত-রাজন। লক্ষ দিয়া সেই গদা করিল এছণ। 🖟 অনায়াদে দেই গদা ধরি নিজ করে। নিকেপ করিল তাহা যবন উপরে॥ গদাঘাতে বিচুৰ্ণিত শ্লেচ্ছ দেনাপতি। তাহাদেখি যোদ্ধাগণ বিমোহিও অতি॥ অন্তত ব্যাপার এই করিয়া দর্শন। যোদ্ধাগণ বিমোহিত হইল তখন। 🕆 সেই কালে রোবভরে কিরাত-নদিনী। অধর দংশন করে শুন যত মুনি॥ তার পর ওন শুন আশ্রুষ্ট্য ঘটন। মহাশূল রূপবতী করিল এহণ॥ পূর্বকালে ভার্গবেরে শুশ্রষা করিয়ে। পেয়েছিল এই শূল সানন্দ হৃদয়ে॥ দাকাং কুতাত দম দেই শূল হয়। জ্বত অনল দম নাহিক সংশয়॥ ত্রিশিখাবিশিষ্ট সেই শূল বিভাষণ। কিরাত-নন্দিনী তাহা করিল গ্রহণ॥ · মন্ত্রপুত করি তাহা সানন অন্তরে। মেদ্দেরাজ ভ্রাতৃপরে নিক্ষেপণ করে। মহাবেগে সেই শূল উঠিয়া গগন। ঘন যন ঘোররবে করয়ে গর্জ্জন॥ তেজোর। শি তাহা হতে ঘন বাহিরায়। সূর্য্যবিদ্ধ সম ইহা কি বলি স্বায়॥ ' ঘোর শদ করি উহ। গগন উপরে। সবেগে পড়িল গিয়া ঘবনের পরে॥ মহাশূলে ভিন্ন হৈল ভাহার হৃদয়। বিদীর্ণ হইয়া গেল ওহে ঋষিচয়॥ গজোপারি সেই বীর করি অবস্থান। ফুধির বমন করে নাহিক বিরাম। নিম্নপতি তাহা দেখি কুপিত অন্তরে। খজাাঘাতে যবনের শিরশ্ছেদ করে॥ পুনরায় করি এক অসির প্রহার। পাঠালেন গজরাজে শমন আগার॥ এইরূপে হত হলে যবনের পতি। ফত্রগণ জয় শব্দ করে নিরবধি॥ নাথহীন হয়ে পড়ে ফ্লেচ্ছিসভাগণ। কেহ কেহ প্রাণ হেতু করে পলায়ন॥ ব্যুহতক করি সব আলুলিতকেশে। পলায়ন করি যায় ইচ্ছা যেই দেশে॥ জীবন ত্যজিয়া যারা হয়েছে পতন। শিবাগণ তার পাশে করি আগমন॥ ছিঁ ড়িয়া স্বার মাংস ঘন ঘন খার। চারিদিক বেড়ি আসি স্কল দাঁড়ায়।। শকুনি বায়স আদি করে আগমন। আকর্ষণ করি মাৎস করয়ে ভক্ষণ॥ ভীষণ রাক্ষস আর পেশাচের দল। হর্ষভরে সমাগত হয় রণহল। विकष्ठे शामिया मृदय करत विषय। त्रख्यभान क्षि मृदय आने किए मन।।

्यन पन गार्म थात्र भूमक व्यवस्ता अरेक्स्य जंगवरन विष्क्रम करत ॥ शादन श्रादम गद्दांचल विद्वन्तर्भाग । विद्वार्थ-आकात मत्त्र श्रीम प्रमान ॥ ট্রীৎকার করিয়া সবে ভয়ন্ধর যুরে। বিবাদ করিছে কত তারা পরস্পারে॥ क्नर क्रतरम् मटन भारत्मत कार्त्र । धरेक्र र्राप्टल रम् प्रमान।। ছুত্র প্রেভ আদি করি যভ নিশাচর। উপনীত হয় আদি সমর ভিতর॥ भौषिष-कर्दम इय तारे अपद्राल । विकृष्टे श्रीमिया मत्य विष्ठत्र करता। (अक्र. ११ विनके इटन यवन- ताजन। जाहां यटक देन इहेन निधन। ক্ষাহার অনুজ শেষে পড়িলে সমরে। কত্তকুল জয় ধনি ঘন ঘন করে॥ শূকু হতে পুষ্পার্ফি হয় ঘন ঘন। আনন্দেতে নৃত্য করে অমরের গণ॥ স্পর্বেত তুন্দুভি বাজে সুমধুর স্বরে। গন্ধর্কেরা গান করে হরিষ অন্তরে॥ চারিদিক প্রকাশিত হইল তখন। জ্যোতিক্ষণ্ডল করে প্রতিভ। ধারণ।। স্থান্সর্শ সমীরণ বহিতে লাগিল। ভাস্কর অপূর্ব্ব প্রভা ধারণ করিল॥ প্রস্থালিত হৈল অগ্নি পূর্বের সমান। সকলে করিতে থাকে আছতি প্রদান। এইরেপে জয়লাভ করিয়া সমরে। সিমুরাজ পুলকিত আপন অন্তরে॥ পৈতৃক নাডাজ্য পুনঃ করেন উদ্ধার। পুনরায় হাদ্যমুখ হইল তাহার॥ 'পরমপ্রস্থাই হয়ে সিমুর রাজন। কিরাত রাজারে করে গাঢ় আলি**ল**ন॥ আশিক্ষন করে আর পঞ্চাল রাজনে। করিলেন অভ্যর্থনা মধুর ভাষণে॥ এইক্লপে যবন দৈন্য করিয়া মধন। বিপক্ষ সাগর হতে উঠেন রাজন॥ ৰাত্তবলে দ্বা করে যবন-নিকরে। মহাবল নরপতি জানে সর্ব্ব নরে॥ পুনরায় স্বীয় পদে অধিষ্ঠিতি হন। স্থপ্রসন্ন তাঁর প্রতি স্থর্যোর নন্দন॥ পুনরায় তুট হন এহ শনৈশ্র। অধিক বলিব কিবা তাপসনিকর॥ **এইর**পে শত্রুক্ল করিয়া নিধন। মনোব্যথা দূর করে সিম্বুর নন্দন। পুনরায় প্রজাগণে করিয়া উদ্ধার। শাসন করেন সবে রাজা গুণাধার॥ ইন্দ্রের সমাম প্রজা করেন পালন। তাঁহার গুণের কথা না যার বর্ণন।। व्यक्ति विभथन कत्रि निम्नुत देशता । श्रिकांगरण धनम्येन करतन विखत।। শাভিতণ ধরি প্রজা করেন পালন। তাঁহার তংগতে বৈশ যত প্রজাগণ।। পুরের সমান প্রজা পালিতে লাগিল। জাঁহার ষশেতে পৃথী পৃরিত হইল।। এদিকে শুনহ পরে ওছে ঋষিগণ। রণমাঝে মহাবুল কিরাত রাজন।। क्षात्र প্রভাব দেখি আপুন নয়নে। বিশ্বিত হয়েন कैত না যায় কহনে। অলৌকিক বল তাঁর করি দর্শন। স্নেহ, পরবশ ইন কিরাত রাজন। भानत्मरक अक्षेत्राप्ति चन यन भटक । क्षारद्व नित्नन पूनि अरक्त उभरत ॥

যিকভাষে সম্বোধিয়া কহেন তখন। এসো বংসে মম বাক্য করই প্রবণ 🛊 आकि जूबि ब्रवेश्टल करि आंगमन। राज्य करतह व राम वल श्रामन 🎼 ষেরপে ঘ্রনকুল করিলে বিনাশ। ইহাতে হইল কীর্ত্তি জগতে প্রকাশ ॥ লোকাতীত কার্য্য ইহা নাহিক সংশয়। হেন কাজ মালুষের কভু সাধ্য নয়॥ অধিক বলিব কিবা শুনহ কল্যাণি। আমি তব পিতা বটে তুমি যে নিদ্দনী॥ কিন্তু এক কথা বলি করহ প্রবণ। অদ্বিকা সদৃশ ভাবি তোমারে এখন॥ এমন নৈপুণ্য রণে কভু নাহি হেরি। অধিক বলিব কিবা গুনহ কুমারি॥ আরো এক কথা বলি করহ প্রবন। অনুরক্তা সিদ্ধুরাজে হয়েছ এখন॥ তাহা দেখি মোরা ভাসি সানন-সাগবে। অতএব শুন বংসে বলি যে তোমারে পাঞালের অধিপতি করুন্ দর্শন। দেখুক্ যতেক আছে মম দৈশুগণ। স্বার সমক্ষে আমি নানন অন্তরে। তোমারে অর্পির আমি সৈন্ধব-ঈশ্বরে॥ এত বলি বীরবর কিরাত-রাজন। ছহিতার করপদ্ম করিয়া ধারণ। সিমুরাজকর সহ যোজিত করিযে। বলিলেন সিমুনাথে সানন হদয়ে॥ ত্রন তার বারবর আমার বচন। সর্বস্থেলকণা কলা কর দরশন। হইবাছে অনুরক্তা তোমার উপরে। অতএব ক্যালান করি তব করে॥ পত্নীতে ইহারে তুমি করহ গ্রহণ। তাহে তুট হব আমি শুনহ রাজন॥ সাধুশীলা এই কন্তা হৈরিছ নবনে। অযোগ্যা নছেক তব ভাবি দেখ মনে॥ কেবল নছেক কন্তা মাত্র রূপবতী। বত্তর গুণ আছে ওছে মহীপতি॥ শাস্ত্রাদিতে ভ্রান আছে শুনহ বচন। রণদক্ষা এই কন্তা করিলে দর্শন॥ মধিক বলিব কিবা এহে মহীপতি। গ্রহণ করহ এবে কহিনু সংপ্রতি॥ তব পাশে কিবা আর কহিব বচন। সমরে পাণ্ডিত্য এর করিলে দর্শন॥ নামের সদৃশ কার্য্য করেছেন ইনি। বীরা নামে খ্যাত ইনি ওছে নৃপমণি॥ অধিক বলিব কিবা শুনহ রাজন। তোমা প্রতি একমাত্র অনুরাগী মন। বিবেচনা করি দেখ আপন অন্তবে। একমাত্র তব র।জ্য উদ্ধারের তরে॥ আমার নিদিনী করে,রণে আগমন। অধিক বলিব কিবা সিম্বর রাজন॥ বিবেচিয়া দেখ রাজা এ ভবসংসারে । প্রণয়ে বিমুগ্ধ যদি নাহি হয় নরে ॥ তবে কি উত্যত হয় দিতে নিজ্প্রাণ। প্রাণ দিতে কেবা আদে ওহে মতিমান্। এই সব বিবেচিয়া আপন অন্তরে। প্রাণ্সমা নন্দিনীরে দিমু তব করে॥ জগতে নাহিক হেরি তোমার স্থান। সকলের কর তুমি উচিত সম্বান॥ বেই জন বেইরপ মাননীয় হয়। তাহারে সেরপ মাল্ত কর মহোদয়॥ দিতেছি কক্সারে তব করে উপহার। মম অনুরোধ রক্ষা কর গুণাধার॥

খোট তুৰি মৰ কলা করছ এহণ। অবশা হইবে মম বাসনা প্রণ। भूनकिङ रव जामि जाशन जलदा। जिथक वीनिय जात कि वन राजांगारत ॥ এইরূপ সুললিত বচন-বিস্থানে। কিরাতের অধিপতি বায়না প্রকাশে॥ জন্মর করে কত সেই মতিমান্। শুনিয়া প্রবণে তাহা সৈত্মর ধীমান॥ কহিলেন শুন শুন কিরাত-রাজন। আজ্ঞা কৈলে মোরে যাহা ওছে মহাত্মন॥ অবিচারে তাহা আমি করিব পালন। আপনার আজ্ঞা করি শিরেতে ধারণ। ক্কতত্ম নহেক কভূ সিশ্ব-অধিপতি। অন্তরে জানিবে ইহা ওহে মহামতি॥ তোমার নন্দিনী হয় পর্ম রূপদী। তাহার রূপের কথা ভাবি দিবানিশি॥ লশনাকুশের তিনি প্রধান ভূষণ। সমাদরে তাঁরে আমি করিব এছণ।। জ্লগতে নাহিক কেহ ডাঁহার সমান । সাদরে লইব তাঁরে ওহে মতিমান ॥ এত বলি ধর্মনিষ্ঠ সিদ্ধুর রাজন্। সবার সমকে কতা করেন গ্রহণ॥ শক্ষীরে এহণ যথা করে নারায়ণ। সেইরূপ বহাবীর সিম্বুর রাজন। পত্নীত্বে এহণ করে কিরাত-কন্সারে। জয় জয় শব্দ করে যত সব নরে॥ এইরপে সিম্বরাজ করিয়া সমর। পিতৃরাজ্য পুনরায় করে করতল।। কিরাতরাজের আর পাঞ্চালপতির। সাহায্য লইয়া সেই দৈদ্ধব প্রবীর॥ ত্বরাত্মা যবনগণে করিয়া নিধন। পৈতৃক সাম্রাজ্য পুনঃ করেন গ্রহণ॥ নিঙ্গহত্তে শত্রুগাণ করিয়া সংহার। সিংহাসনে অধিরঢ় হন পুনর্বার॥ শুরুজন পাশে আজ্ঞা করিয়া এহণ। লইলেন পুনরায় রাজ সিংহাসন॥ যেমন বসিল রাজা রাজসিংহাসনে। মার্গধ আসিল সব নৃপবিজ্ঞমান॥ মাগধেরা চারিদিকে করি অবস্থান। স্তুতিপাঠ আরম্ভিল নুপবিগ্রমানে॥ রাজার যতেক গুণ করিয়া কীর্ত্তন। পরম আনন্দ করে সেই সব জন॥ হেনকালে জিতেন্দ্রির ত্রাহ্মণ-নিকর। উপনীত হয় আসি রাজার গোচর॥ দুর্ব্বাক্ষত করে সবে করিয়া এহণ। আশীর্বাদ করে তারা কে করে বর্ণন। পুরনারী সবে আদি রাজার গোচরে। লাজ বর্যে চারিদিকে হর্ষ সহকারে॥ চারিদিক হতে যত আসিয়া রাজন। নতশিরে রাজপুদে করিল বন্দন॥ মুকুট সবার শিরে কিবা শোভা পায়। মণিতে খচিত তাহা কি বলি সবায়॥ সেই শিরে নতি করে সৈশ্বর-চরণে। আনদ উঠিল আঁহা সৈশ্বর ভবনে॥ অসংখ্য অসংখ্য দীন দরিদ্রনিকর। উপনীত হয় আর্দ্ধি রাজার গোচর॥ অভিমৃত অর্থ পাবে এই সে কারণে। রাজগুণ গান কর্ট্র একান্ত যতনে॥ रः मंत्र भाराष्ट्रा-कथा कतिया कीर्डन। त्राकांत्र क्षमः मा करत रमरे मर जन॥ ন্ততিবাদ করে কন্ত বণিবার নর। নগরী হইল জ্বে কোলাহলময়॥

ভার পর বীরসেন সিম্ব-অধিপতি। রাজসিংহাসনে বসি সেই মহামতি। বিধিষত বেদমন্ত্র করি উচ্চারণ। কিরাতের নন্দিনীরে করেন আহণ্ট দিব্যরপা সেই নারী কি বলিব আর। তাহে সিদ্ধু-অধিপতি অতি গুণাধার 🕷 যোগ্য পতি সনে হৈল যেগ্যোর যিলন। কললারে লয় যথা দেব নারায়ণ 🎉 আনন্দে পূরিত হৈল দৈশ্বব নগরী।সে কালের স্থাধের কথা বর্ণিবারে নারি 🕊 তদবধি নৃপবর সৈম্বব-ঈশর। সর্বে শাস্ত্র বিশারদ গুণীর প্রবর ।। क्नां शिशा भारत कतिया धारत। धारताक मनिरमर करतन शृक्त । শনিবারে সুসংযত হইয়া রাজন। সূর্য্যসূতে যথাবিধি করেন অর্চন 🗚 স্তব পাঠ করে রাজা মধুর-বচনে। প্রসন্ন করেন এতে একান্ত যতনে। এইরূপে সমতীত হইল বংসর। গ্রহরাজ সূপ্রসন্ন রাজার উপর।। পরিতৃত হয়ে তিনি রাজার উপরে। শান্তভাবে আবিভূতি হন শ্রুভরে । শু জলদগন্তীর রবে করি সন্তাষণ। কহিলেন সিম্ধুনাথে মধুর বচন। 🗗 ভন ভন সিন্ধুপতি বচন আমার। সর্বেওণে গুণবান্ তুমি গুণাধার। 🚎 আমার প্রদানে তুমি অতীব অচিরে। রাজচক্রবর্তী হবে কহিনু তোমারে। সার্বভৌমপদে তুমি হবে অধিষ্ঠিত। আমার বচন রাজা জানিকে নিশ্চিত। যাবং করিবে তুমি ভূমে অবস্থান। বিপদ না হবে তব ওতে মতিমান্ 🕊 বিত্ব না করিবে কভূ তোমা আক্রমণ। আরো যাহা বলি রাজা করহ এবণ lr, আধি ব্যাধি না রহিবে রাজ্যের ভিতরে। অকালমরণ যাবে রাজ্য হতে मृत्त ॥ मतिक्र ना तदित्व अकात जिल्ता । जागात जातम देश उट नत्र বর ॥ তুঃখঙ্গালে মুক্ত হবে যত প্রজাগণ । পরম মুখেতে রবে জানিবে রাজন।। আর এক কথা বলি শুন গুণাধার। যেই ব্যক্তি দেহ ধরি ধরণী মাঝার।। তব সম ভক্তিভাবে আমার বাসরে। বিধানে করিবে পূজা আমারে সাঁদরে। ভক্তিভরে মম শুব করিবে পঠন। অথবা ভক্তি করি করিবে এবণ 🗷 প্রসন্ন হইব আমি তাহার উপর। সুখেতে রহিবে সেই অবনীভিতর 📭 বিপদ ভাছারে নাহি ঘেরিবে কখন। সুখেতে রহিবে সেই আমার বচন। েএত বলি পুনরায় মধুর বচনে। বিধিস্ত কহে পুন যত ঋষিগণে। শুন শুনি ঋষিগণ বলি তার পর . রাজারে এতেক বলি এতের ঈশার।। অবিলম্বে অন্তহিত হলেন গগনে। নরপতি পুলকিত নিজ মনে মনে।। সভাতে আছিল যত মানব নিকর। জয় জয় ধুনি করি করে কোলাইল। 🖈 व्यानत्मन्न अन्त्र श्रुनि नवातः वल्ता । क्छ धन तमन जाका पीनकृश्यीगर्ग ।। পর্য স্থাতে ব্রুহে যত প্রজাগণ। পুর দাঁয় প্রজা রাজা করেন পালন ik

 किंगाज्याक शाकान-क्षेत्र। पूरे कत्न किंद्रमिन तरह लिंदे क्ल ॥ लागत वाजिल ज्वात निश्चताक मरन। हरे जरन किहमिन तरह सिर बारन । তার পর রাজপাশে যাচেন বিদার। তাহা শুনি সিম্বুপতি বিচ্গিত কায়॥ অবিরল অঞ্চবারি করে বিসর্জ্জন। তার পর মনোবেগ করিয়া দমন।। ছুই জনে নরপতি দিলেন বিদায়। বিদায় লইয়া তারা ছুই জনে যায়॥ নিজ রাজ্যে যাত্রা করে উভয় রাজন। যথাকালে উপনীত হন দুই জন॥ **এরপে খণ্ডর** আর মুহন-প্রবরে। বিদায় প্রদান করি আপন অন্তরে॥ বিষাদ লভেন সেই সিশ্বর রাজন। তার পর ধৈর্য্য ধরি ওতে ঋষিগণ॥ প্রশার পালন করে একান্ত যতনে। বিধিমতে পূজা করে যত দেবগণে॥ , স্বাভিথি গণেরে সদা করেন পূজন। দীনছু:খীজনে ধন করেন অর্পণ॥ যাগ যজ্ঞ কত করে বর্ণিবার নয়। তাঁহার শাসনে সুখী প্রজাগণ হয়॥ कनरम श्रेष्ट्रत भना धत्री माबादत। यथाकारल कन वर्द जनमनिकरत।। अनाइकि নাহি হয় রাজ্যের ভিতর। অকালদরণ নাহি জানে কোন নর॥ পারম সুখেতে থাকে যত প্রজাগণ। নারায়ণ সম রাজ। করেন শাসন॥ **তাঁহার শাসন গুণে নুপতি-নিকর।** বশীভূত হয়ে কাছে রহে নিরন্তর॥ ব্রীরত্ব যেরপ ধরে সিন্ধু-নরপতি। বিখ্যাত আছয়ে তাহা দর্ব্ব বস্থ্যতী॥ **ঠাঁহার বীরত্বভরে অরাতি-নিকর।** নিব্তর হয়ে রহে সভয়-অন্তর॥ মিত্রবর্গে সদা সুখী রাখেন রাজন। যাগ যজ্ঞ কত করে অমিত-বিক্রম। ্বর্নানাবিধ যজ্ঞ করি দিন্ধ অধিপতি। দেবতাগণের তৃষ্টি করে নিরবধি॥ বেষবাণ ভূষ্ট হয়ে পুলক-অন্তরে। অভিমত বর দেন নৃপতি-প্রবরে॥ ্ৰির পেয়ে নরপতি আদন্দে মগন। বিপ্রগণে নানামতে করান ভোজন॥ স্বান্ত আমু-ব্যঞ্জনাদি দেন বিপ্রগণে। বসন দিলেন কত না যায় কছনে। নানাবিধ অলম্বার করেন প্রদান। এইরূপে বিপ্রগণে তোষেণ ধীমান॥ **ঁতার পর নারায়ণে শ্বরেন অন্তরে। অন্তি**মে কাণ্ডারী যিনি ভবপারাবারে॥ সর্বেজ্ঞানময় যিনি শুমঙ্গলময়। সেই দেবে সরে হুদে রাজা গুণময়।। **এইরপে বাস্থদে**বে করিয়া মরণ। দিথিজয়-অভিলাষ করেন রাজন॥ চ্ছুরক অক্ষেহিণী সেনা সহকারে। চলিলেন নরপতি ক্লেশদেশান্তরে॥ ি জৈজেরথে বাহনাদি করিয়া যোজন। সেই রথে বীরসেন করি আরোহণ॥ । ক্রিলেন শুভ্যাত্রা দিখিজয় তরে। চারিদিকে রণবাদ্য বাঞ্চে খোরস্বরে॥ জারতাদি যত রাজ্যে করিয়া গমন। একে একে পরাজয়, কুরেন রাজন॥ ভারত কিল্পুরু হরি ইলারত আদি। সব রাজাগণে জয় করেন নৃপতি॥ আরণ্য পার্বত্য খশ বর্বর য্বন। ক্রমে ক্রমে পরাক্তিত হর নব জন 🎉 এইরপে নরনাথ অতীব অচিরে। করিলেন পরাজয় সকল রাজারে 🛊 বশীভূত হয় তাহে যত রাজগণ। কত ধন রত্ন আদি করে বিভরণ। কত অশ্ব হক্তী রাজা উপহার পায়। কত দ্রব্য পান তাহা কি বলি নবায় 🛭 এইরপে বহু ধন করিয়া এছণ। পুনশ্চ স্বরাজ্যে রাজা প্রত্যাগত হন। মুখণ্ডিত ভুক্ত প্রতাপে রাজন। যাবতীয় শত্রুগণে করিয়া ত্রুন। মহারাজ সিরুপতি আপনার বলে। করিলেন স্বীয় বশ অরাতি মণ্ডলে॥ নির্বিষ ভুজন সম হতদর্প হয়ে। রহিল তাহারা সবে বিকল-ছাদয়ে॥ তাহাদের পাশে কর করিয়া গ্রহণ। আপন রাজ্যেতে আদে সিম্বুর নন্দন॥ এইরপে নরপতি আদিয়া নগরে। রাজদুয় জজ্ঞ করে অতি ভক্তিভরে॥ অশ্বমেধ যজ্ঞ করে যেমত বিধান। দীনছুঃখী জনে ধন করেন প্রদান ॥ প্রভূত দক্ষিণা দেন যত বিপ্রগণে। সন্মান করেন কত অভ্যাগত জনে॥ যত রাজা এসেছিল তাঁহার আলয়। স্বারে সন্মান করে রাজা মহোদয়। এইরূপে যজ্ঞাবাধ হলে সমাপন। সবারে বিদায় দেন সিরুর রাজন। অভ্যর্থনা সম্বর্জনা বরিয়া যতনে। বিদায় দিলেন সবে বিহিত বিধানে । বিদায় পাইয়া সবে কর্ষে গ্রন। আপন আপন স্থানে উপনীত হন॥ এইরপে যজ্ঞ আদি করি সমাপন। বিশ্রাম কারণে রাজা সমূদ্যত হন। রাজকার্য্য সমর্পিরা মন্ত্রার উপরে। পশিলেন নৃপবর অন্দর ভিতরে॥ কিরাত-নন্দিনা সহ করেন বিহার। আরো যত নারী ছিল অন্তঃপুরে তাঁর॥ ধর্ম অবিরোমে করে বিহার রাজন। স্বাকার মনস্তুটি করেন সাধন॥ এইরপে কিছুকাল করিয়া বিহার। পুন রাজকাজে মন দেন গুণাধার॥ কিরাত নিদনীগর্ভে জনমে নদন। পর্ম সুন্দর সেই অতি বিমোহন॥ আনন্দে পূরিত হয় রাজার নগর। ঘরে ঘরে মহোৎসব করে সব নর॥ কদলী রোপিত হয় প্রতিদারে দারে। পুষ্পমাল্য শোভে কত কে বর্ণিতে পারে দারে দারে পূর্ণ কুল্ল কর্যে স্থাপন। আনন্দে মগন যত হয় প্রজাগণ॥ স্থের সাগরে ভাদে সিম্নু নরপতি। অন্তঃপুরে নারীগণ মঙাহুখী অতি॥ দীনজনে ধন রাজা করেন অর্পণ.।'বিপ্রগণে নানামতে করান ভোজন। দেবতা উদ্দেশে পুজা করেন যতনে। এইরূপে শুভকার্য্য পুত্রের কারণে ॥ धरेक्राल महायूर्य यूची नज्ञ नज्ञ । मत्नज्ञ हित्र कान याल निज्ञविध। অধিক বলিব কিবা ওছে ঋষিগণ। জিজ্ঞাসিয়াছিলে যাহা করিমু বর্ণন।। এ হেন মাহাত্ম্যকথা বহিন্ন স্বারে। ভক্তিভরে তাঁর পদ ভাবহ পত্তরে।

উহার আগাধ্য নাহি জগত ভিতর। তাঁহার প্রসাদে হুখী হার বত নর।।
উক্ত জনে নীচ করে প্র্যার নন্দন। নীচ জনে উক্ত করে দেই বহাজন।।
বিধানে তাঁহার পূজা করিলে যতনে। বিন্নরাশি নাহি আনে তার বিপ্রমানে।।
তাঁর তব ভক্তিভরে করিলে পঠন। বাসনা পূরণ হয় ওতে ঋষিপণ।
অধনীর ধন হয় তাঁহার রুপায়। তাঁর বরে পূজহীন পূজ আদি পায়।
কামার্শীর কাম পূর্ণ প্রসাদে তাঁহার। ধর্মার্থীর ধর্ম হয় জগত-মাঝার।।
অধিক বলিব কিবা ওতে ঋষিগণ। যাহার যেমত আছে উভিত নিয়ম।।
কেইরপে ধর্মরক্ষা করিলে যতনে। কর্ত্ব্য সাধন কৈলে ঐকান্তিকমনে।।
বিপদ তাহারে নাহি করে আক্রমণ। বেদের বিধান এই শাস্ত্রের বচন।।
ধর্মনিষ্ঠ বিচক্ষণ সিমুনরপতি। কর্ত্ব্য সাধন কৈলে ঐই দহামতি॥
কামার্শীর রাজ। হৈল বিদূরণ। রাজচক্রবন্তী হৈল এই দে কারণ।।
রাজগণ রাজধর্ম পালিলে যতনে। বিপদ নাহিক আসে তার বিজ্ঞমানে।।
বাহার যেমন আছে কর্ত্ব্য বিধান। সেরপ করিবে কাজ সেই মতিমান্।।
পুরাণে ধর্মের কথা অতি মনে।হর। শুনিলে পাতক তার যায় দূরান্তর ॥

দ্বি পঞ্চাশান্তম অধ্যায়। রাজার সাধারণতঃ কর্ত্ব্য। সন্থকুমার উবাচ।

ব্যসনানি ত্যক্তব্যানি মূলোচ্ছেদকরাণি চ। কর্ত্তব্যা মন্ত্রণা গূঢ়া ন প্রকাশ্যা কলাচন॥

থতেক বচন তানি যত খাদিগণ। মধুর বচনে পুনঃ করি সম্বোধন।।
জিজ্ঞাসা করেন সবে সনত-ক্মারে। শুন শুন শুন নিবেদন করি হে তোমারে।।
তোমার মুখেতে তানি অপূর্ব্ব কাছিনী। বলবতা হয় ইচ্ছা পুনঃ পুনঃ শুনি।
নিজ কর্ম বিধানেতে করিল সাধন। সে হেতু পর্ম সুখী সিমুর রাজন।।
একথা কছিলে তুমি মোদের গোচরে।তাই পুনঃ জিজ্ঞা সিছি জানিবে তোমারে
কি কাজ উচিত হয় করিতে রাজার। সেই কথা প্রকাশিয়া কছ গুণাধার॥
সামান্ততঃ কিবা কাজ করিলে সাধন। সুখে কাল রাজগণ করয়ে যাপন॥
করিণ কর্মের বল কি আছে বিধান। এই সব বিবরিয়া কছ মতিমান॥
করিণ করিলে কনি বিধির নন্দন। কহিলেন শুন, শুন যত খবিগণ।।
জিল্লানা করিলে, মাহা অতি মধুমর।, বর্ণন করিন তাহা ওহে খবিচয়।।

দার্জপদে প্রতিষ্ঠিত হইয়া রাজন। ধর্ম অবিরোধে প্রজা করিবে পালন।। श्रम लाश नाहि हरू अपन ध्वकारत। यथाविधि नित्रसत शानित धनारत है এই ত কর্ত্তব্য কর্ম হতেছে রাজার। বেদের বচন ইহা শাল্তের বিচার॥ রাজ্য নট হয় যাহে ওহে খবিগণ। সমূলে রাজ্যের নাশ করে যে করম ॥ সে সব করম রাজা ত্যজিবে যতনে। জানিবে ব্যসন উহা শাস্ত্রের বচনে 🛢 মন্ত্রণা করিবে যাহা মন্ত্রীর সহিত। গুঢভাবে তা রাখিবে শান্ত্রের বিহিত্ত 🛊 প্রকাশ কাহারো পাশে কভূ না করিবে। গুপ্ত থাকে যাহে তাহে মহুবান হবে। বিবেচিয়া মন্ত্রীগণে করিবে স্থাপন। কেবা দুষ্ট কেবা ভাল দেখিবে রাজন। কোন দোষ নাহি কভু যাঙার শরীরে। মন্ত্রীত্মে বরণ তারে করিবে भाषात ॥ कि प्लाय करति ए भेक कतिया पर्यन । जात शत (महे कान कतिरव শাসন ॥গুপুচর সর্বস্থানে রাখিতে হইবে। সকল বিষয় তারা দেখিয়া বেডাবে রাজ্যের সর্বত্ত তারা করিবে ভ্রমণ। কোন্ ব্যক্তি কিবা করে করিবে দর্শন # সেই সব নিবেদিবে রাজার গোচরে। বুঝিয়া করিবে রাজা ঘাছা হয় পরে। কিবা বন্ধ কিবা মিত্র কিবা আপ্তজন। কাহারে বিখাস নাহি করিবে রাজন কিন্তু কার্য্যকাল যদি উপস্থিত হয়। বিশ্বাস করিবে শক্ত প্রতি সে সময়॥ শাস্ত্র আদি যেই কার্য্য করিতে হইবে। তাহাতে নূপতি সদা কৌশল দেখাবে ক্ষ রৃদ্ধি পরিশৃত হবেন বাজন। মন্ত্রীগণে নিজবশে করিষে স্থাপন।। ভূত্যগণে বশীভূত সদত রাখিবে। পৌরএনে নিজায়ত্ত নিয়ত করিবে ॥ বিরোধ কবিতে হয় শক্রর সহিত। কিন্তু কাল বিচারিবে যেমন বিহিত ॥ বশীভূত নাহি করি নিজ ভূত্যগণে। আয়ত্ত না করি আর যত মন্ত্রীগণে॥ শক্র জয়ে বাঞ্চা করে যেই নরপতি। বিশ্বরাশি আদি তারে খেরে নিরবিश। তাহার বাদনা পূর্ণ না হয় কখন। অজিতাত্মা দেই জন শান্তের বচন॥ শক্র হতে পরাভূত সেই জন হয়। নিশ্চয় নিশ্চয় ইহা নাহিক সংশয়।। कांभ क्वांथ ना कतित्व नृপতि कथन। अहे मव क्रिक टिंक फिरव विमर्कन॥ কাম আদি না রাখিবে আপন অন্তরে। অন্তর হইতে তাহা বিসর্জ্জিবে দুরে॥ কাম ক্রোধ যেই রাজা করে পরাজয়। শত্রুগণ তার কাছে পরাস্থত হয়। কাম আদি জয় যদি করিবারে নারে। শত্রুগণ নাশে তারে জানিবে অন্তরে তাহার রাজত্ব নাহি বহুদিন রয়। অচিরে জীবন সেই ত্যুজয়ে নিশ্চয়॥ কাম ক্রোধ লোভ মোহ মান হর্ধ.আর। এই ছয় মহা রিপু শান্তের বিচার । রাজার পরম শত্রু এই ছয় । হয়। শাস্ত্রের প্রমাণ ইহা নাহিক সংশয় ॥ কাম হেডু পাগুরাত্ব লভেছে পত্ন। অনুহলাদ শোক পান ক্রোধের, কারণ॥

কোষ হেতু তার পুত্র অকাশেতে মরে। লোভ হেতু ঐল মরে জানে সর্বনরে মদ হেতু বেণ রাজা শভিল বিনাশ। মান হেতু অনায়ুর পুত্র পায় নাশ।। হর্ষ হেড় বিনাশিত হয় পুরঞ্জয়। অতএব মহাশত্রু এই ছয় হয়।। এই সব পুনঃ পুনঃ করিয়া ধরণ। অই সব দোষ রাজা করিবে বর্জন। कड़ ना द्रांचित्व त्माय जालन भंतीत्त । उत्व उ तिहत्व छत्थ ७ छतमः मात्त्र ष्यदे नव লোৰ যদি করয়ে বৰ্জন। প্রম সুখেতে তবে রবে দে রাজন। শক্রগণ তার কাছে বশীভূত রবে। তাঁহার বিনাশে শক্র উন্যত না হবে॥ এই ত রাজার কর্ম ওহে ঋষিগণ। যতনে এ দব রাজা করিবে সাধন॥ বার্স কোকিল ভ্রু মুগ ভুজ্জম। ময়ূর কুরুট হংস লোহ নর জন॥ ইছাদের স্বভাবাদি করি দরশন। নরপতি সেইরূপ করিবে বিপক্ উপরে রাজা একান্ত অন্তরে। কীকটের সম ক্রিয়া করিবে সাদরে।। উপহাস কালে রাজা করিয়া যতন। করিবেক পিপীলিকা-চেষ্টা প্রদর্শন॥ শাল্মণীবীজের চেষ্টা ষেইরূপ হয়। অবগত হবে তাহা নৃপ মহোদয়।। চল্ডের বরপ রাজা অবগত হবে। হুর্য্যের বরপ রাজা অবশ্য জানিবে॥ কুলটা রমণী পল্ল শরভ ও শুনী। গুর্বিণীর শুন আর গোপের এদের নিকটে প্রজ্ঞা করিলে এহণ। রাজার মঙ্গল হয় ওতে ঋষিগণ॥ 😎ন শুন ঋষিগণ বলি পুনর্বার। যে সব উচিত হয় করিতে রাজার ॥ যখন সাম্রাজ্য রাজা করিবে পালন। করিবেক ইন্দ্র সম আকার ধারণ।। সম সোম আর বায়ুর আফুতি। ধারণ করিবে সেই কালে নরপতি।। বর্ষা-কালে চারিমাস দেবেক্র যেমন। আপ্যায়িত করে ধরা করি বরিষণ। সেই-রূপ দান দ্বারা বিবেকী রাজন। সবার হৃদয়তুষ্টি করিবে সাধন॥ মাস যেইরূপ দেব দিবাকর। আকর্ষণ করে জল দিয়া নিজকর।। সেরূপ করিয়া রাজা হুসূক্ম উপায়। শুল্ক আদি কর যত করিবে আদায়।। উপস্থিত হলে শঘন যেমন। প্রিয় বা অপ্রিয় সব করেন নিধন।। সেরূপ দৃপতি যদি অপরাধ হেরে। সমভাবে দণ্ড দিবে প্রজা সবাকারে।। প্রিয়া-প্রিয় বিচার না করিবে কখন। এইত রাজার কার্য্য ওবে ঋষিগণ।। থেই-রূপ পূর্ণচন্দ্র করি দরশন। প্রীতিমান হয় যত ভূবনের; জন। সেইরূপ নিরীকণ করিয়া রাজারে। সকলে সন্তুটি খদি লভয়ে অন্তরে।। তাহা হলে শশিতত হয় অনুষ্ঠান। বলিনু রাজার ধর্ম সবা বিদ্যমান।। সবার व्यख्य बाट्य প्रवन रयमन। निशृं क्रार्ट्स मणा करत स्थान्य।। स्टिक्स **छत्र पात्रा विद्यको त्राजन। नराज अस्त्रमाद्य कतिके स्मर्थ।** 

भटनत कांव कांनिटकं इंदर्व । उत्व उ मक्त नृश अवगा निकट्व ॥ अधीखा বান্ধব পৌর যেই কোন জন। রাজার উপরে ভাব রাখেন কেমন চর দার। এই মব জানিবে নৃপতি। মঙ্গল হইবে তাহে শান্তের ভারতী 🚛 माहात क्रवर स्वां ना आहि क्थन। (यह ताजा क्रांत काम ना करत शांत्रणे। অন্তর আরুষ্ট যার কিছুতে না হয়। দেই রাজা বর্গভোগী জানিবে নিশ্চয়া। কুপথে গমন যদি কবে প্রজাগণ। অথবা স্বধর্ম তারা করে বিদর্জ্জন। শাসন করিবে রাজা বিহিত বিধানে। এই ত রাজার কর্ম কহি স্বা স্থানে। পুনত ষ্থর্মেরত যেই রূপে হয়। করিবেন সেই কাজ রাজা মহোদয়। স্থপথে গমন করে যাহে প্রজাগণ। কায়মনে সেই কাজ করিবে সাধন॥ এইরূপে নিজকার্য্য করিলে নুপতি। অভিমে তাহার হয় পরমা **সুগতি** 🕸 অন্তকালে দিব্য যানে করি আরোহণ। স্বর্গপুবে সেই রাজ। করেন গখন। শান্তের বচন ইহা নাহিক সংশয়। বলিলাম সবা পাশে ওছে ঋষিচয়॥ মঙ্গল কামনা কবে যেই নররায়। সর্ব্বথা করিবে দেই এ দব উপায়॥ বিপ্র সাদি চতুর্বণ রাজত্তে যাহার। আপন স্বাপন ধর্ম করে অনিবার। নিজ ধর্ম কভু নাহি করয়ে বর্জন। সেই রাজা অবসর নাহয় ক**খন।** ইহকালে স্বাধে থাকে মেই নরপতি। সভিমে তাহার হয় প্রমা সুগতি 🛚 শক্রগণ তারে নাহি করে আ ক্রণ। তাহার নিকটে বশ অন্য রাজগণ। শামন্ত রাজারা সব বিনত-বদনে। বঁদনা নিয়ত করে তাঁহার চরণে। বিল্পরাশি দেই দৃপে করি দরশন। ক্রতপদে দূরস্থানে করে পলায়ন। ইহকালে নিত্য সুথ দেই রাজা পায়। পরকালে দিব্যরথে দিব্য পুরে যায়। তুর্ঘতি যদ্যপি হয় রাজ্যের ভিতর। অগুজনে কুমন্ত্রণা দিয়া সেই নর। স্বধর্ম হইতে তারে বিচলিত কবে। রাখিবেন দৃষ্টি রাজা তাহার উপরে 1 স্বধর্মে তাহারে পুনঃ করিবে ভাপন। হুটিমনে বিধিমতে করিবে শাসন॥ এই ত রাজার ধর্ম ওহে ঋষিচয়। শাস্ত্রের প্রমাণ ইহা নাহিক সংশয়। এই সৰ'বিরেচিয়া আপন অন্তরে। ্যেই রাজা প্রজা পালে অতি যত্ন করে। প্রজার ধর্মের অংশ পায় দে রাজন। স্বর্গবাদী হন পরে শাদ্রের বচন। রাজধর্ম যেইরূপ করেছি শ্রবণ। স্বাপাংশ সেইরূপ করিনু কীর্ত্তন॥অধিক বলিব কিবা তাপদ-নিকর। রাজধর্ম পালিবেক সদা নৃপবর॥ এইরপে নরজন্ম করিয়া ধারণ। অন্ত অন্ত নরগণ করিবে করম। যাহার যেমন কর্ম আছমে নির্ণয়। নেরপ করিতে হবে ওহে ঋষিচয়।। কিন্তু এক কথা। বলি শুন সর্বজন। পাশন করম বৃচে করিবে সাধন॥ বিপ্রের উচিত কাজ

দাশ্বণে করিবে। ক্ষত্রিয়েরা নিজ কাজ যতনে দাধিকে। বৈশ্যগণ নিজকর্ম করিবে শাধন। শূদ্রগণ করিবেক যেমত নিয়ম।। নারীগণ নিজ ক্রার্য্য করিবে যতনে। যেমন নির্দিষ্ট আছে শাল্তের বিধানে। নানাবিধ ত্রত আছে শান্তের ভিতর। নারীরা করিবে তাহা করিয়া আদর। বিধানে যতেক ত্রত করিলে শাধন। অনুত্রম ফল পায় নারীজাতিগণ।। নর নারী শবে ত্রত করিবে যতনে। যেমত নির্দিষ্ট আছে শাল্তের বচনে।। অধিক যশিব কিবা ওহে ঋষিগণ। জিজ্ঞানিয়াছিলে যাহা করিমু কীর্ত্তন।। পুরাণে মর্শের কথা অতি মনোহর। শুনিলে পাতক নাশ পূত কলেবর।।

## ত্রিপঞ্চাশত্তম অধ্যায়।

ত্রত মাহাত্ম।
সনৎকুমার উবাচ।
ত্রহ্মণা সমুপদিষ্টা ষষ্ঠী পাতকনাশিনী।
স্বর্ণোৎপলৈশ্চ বিধিনা পূজিতব্যোন সংশযঃ॥

' পুনশ্চ জিজ্ঞাসা করে যত মুনিগণ। নিবেদন করি ওহে বিধির নন্দন।। ত্রতের মাহাত্ম কথা শুনিতে বাসনা। বর্ণন করিয়া তাহা পুরাও কামনা॥ কোন্ এতফলে হয় কি পুণ্য দঞ্চার। প্রকাশ করিয়া কহ ওহে গুণাধার॥ তব পাশে পুণ্যকথা করিয়া অবণ। সার্থক হউক এবে মোলের জীবন॥ \*ঋষিদের মুখে শুনি এতেক কাহিনী। সনংকুমার কহে সুমধুর বাণী॥ ৰিলিতেছি ঋষিগণ করহ শ্রবণ। ত্রতের মাহাত্ম কথা অতি অনুভ্রম। ষষ্ঠীত্রত নামে আছে ত্রতের প্রধান। পাতক বিনাশ পায় কৈলে অনুষ্ঠান॥ এই ত্রত উপদেশ দেন প্রজাপতি। পাতক বিনাশ পায় শাস্ত্রের ভারতী॥ ষের্ণেৎপুল বিনির্মাণ করিয়া যতনে। তাহা দিয়া পুজিবেক দেব নারায়ণে॥ এই রূপে যেই করে ত্রতের সাধন। বিষ্ণুপদ পায় সেই শাস্ত্রের বচন॥ আ্বাহাড়ের চারিদিন অভ্যন্স ত্যঙ্গিলে। প্রীতিত্রত নাম ভার শাস্ত্রে হেন বলে অইক্লপ যেই জন করয়ে সাধন। এইরি পরম তুই তার প্রতি রন॥ शृ्गुपित इत्रांत्री कतिया शृष्क । विधारन नियम जाकि कतिरल शालन॥ হরগৌরী পরিতৃষ্ট তাহার উপরে। গৌরীত্রত নাম তার্ব্ব জানিবে 'অন্তরে। धकाषणी पितन रवरे हरत अकिंगान्। अत्नाकं क्ष्म शर्देन कतिशा निर्मान ॥ विशास वर्षमा कत्रि एव नात्राहर्त। कार्क्टनत शूल अपूर विकारन॥

ভার পর এছরির প্রতির কারণ। বিপ্রগণে বস্ত্র দেয় জার বিভূরণ্যা কম্পকাল সেই জন রহে বিষ্ণুপুরে শোক নাহি ঘেরে কভূ তাহার শরীরেঞ কাষ্যত্তত নামে এই ত্রতের নির্ণয়। বলিলাম স্বাপাশে ওছে ৠবিচয় 🗱 কার্ত্তিকমাসেতে ষেই হয়ে ভক্তিমান। স্বর্ণপল্ল মনোরম করিয়া নির্মাণ 🏗 রুদ্রের অর্চনা করি বিহিত বিধানে। সেই পুপ্প দান করে যে কোন ভাল্গণে রুদ্রেশাকে যায় সেই ত্যজি কলেবর। তথায় প্রম্পুখে রহে নিরম্ভর ॥ শিব্রত বলি ইহা বিদিত ভুবনে। মহাফলপ্রদ ত্রত শাস্ত্রের বচনে 🕸 হেমন্ত কালেতে কিম্বা শিশির-সময়ে। যেই জন পুষ্প সেবা যতনে ত্যজিয়ে। অপরাকে ষহেশের প্রীতির কারণ। অথবা হরির তুটি করিতে সাধন 🏗 স্থান্ধি কুসুম দের বোক্ষণের করে। নিত্য পদ পায় সেই মহেশের বরে। নোমত্রত বলি ইহা বিখ্যাত ভুবন। বলিলাম সবা পাশে ওছে ঋষিপণ 🏗 ভাগ্যত্তত কথা বলি শুনহ এখন। অনুত্তম ত্রত সেই শাস্ত্রের বচন। ফাল্কুনের তৃতীয়াতে বিধিত বিধানে। করিবে লবণ দান বিশুদ্ধ ভাদ্মণে।। বিপ্রদেশ তারে পরে করিবে পূজন। অর্পণ করিবে তারে গুহোপকরণ ॥ এইরূপে ভাগ্যত্রত যেই জন করে।গৌরীলোকে রহে সেই কম্পকাল তরে॥ যেই জন মৌনত্রত করিয়া ধারণ। সন্ধাকালে যথাবিধি করিয়া অর্চন ir বস্ত্র তৈল দান করে তাদ্ধ্য-নিকরে। সম্বংসর এইরপ প্রতিদিন করে॥ সরম্বতী লোকে যায় সেই সাধুজন। সারম্বত তত ইহা ওহে প্রতিমাসে শুক্লপক্ষে পঞ্চমী তিথিতে। নর নারী ষেই কেছ ভক্তিযুক্ত চিতে॥ কমলার পুজা আদি করিয়া দাধন। উপবাদী হয়ে থাকে ওতে ঋষিগণ। সম্বংসর এইরূপ নিয়মে থাকিয়া। উন্যাপন করে শেষে পবিক্র হইর। Ib অশ্বেধ ফল পায় সেই সাধুনরে। স্বৰ্ণ পদ্ম সহ ধেনু দক্ষিণা বিভরে। কীর্তিশালী হয় সেই শাস্ত্রের বচন ॥ এই ব্রত যেই জন কর্রে সাধন! কীর্ত্তিত্তত বলি ইহা বিখ্যাত ভূবনে। বলিলাম সার কথা সবা বিদ্যুদানে॥ (यहे नव नाधुक्त धर्मभताय्। যথাবিধি নিয়মাদি করিয়া ধারণ 🌬 সিনান করায় কিম্বা কেশব দেবেলে 1 অহরহ গ্নত হার। দেবদেব হরে। সাফীঙ্গ হইরা পরে করয়ে প্রণাম। বিপ্রগণে ধেমু পরে করয়ে প্রদান। স্থাপদ দান করে ত্রাদ্ধণের করে। শিবলোকে যায় সেই মহেশের বরে। শিবত্তত বলি ইহা বিদিত ভূবন। প্রম প্রিত্ত ত্ত শান্তের বচন। প্রত্যেক নবনী তিপি পেয়ে যেই জন। এক বেলা অন্ন শাত্র করিয়া ভোজন। দশমীতে উপবাদ ফারিধি করে। ভোজন করার বিথে তৎপর্কাশুরে

্পরিতোষরপে সবে করীরে ভোজন। বসন ভূষণ আদি করে বিতরণ। শিবপদ পায় সেই নাহিক সংশয়। শাস্তের বচন ইহা ওহে গ্রিচয় n কিছুদিন শিবলোকে করি অবস্থিতি। মানবকুলেতে করে অবশেষে গতি॥ সুরূপ হইয়া নেই লভয়ে জনম। তার বশীভূত রহে ষত শত্রুগণ। অর্ব্যুদ জনম তার এইরূপে যায়। গুভগাত পায় শেষে কহিনু স্বায়॥ ৰীরবৈত বলি ইহা জানে সর্বজন। ব্রতের প্রধান ব্রত অতি অনুভ্য॥ প্রত্যেক পূর্ণিমা তিথি পেয়ে যেই জন। ছুগ্ধ য়ত দিবাকরে করে সমর্পণ। এইরপে এক বর্ষ পরিপূর্ণ হলে। পঞ্চদশ গাভীদান করে বিপ্রকরে॥ বসন ভূষণ আদি ক্ষে সম্পূৰ্ণ। বৈষ্ণ্য লোকেতে যায় সেই সাধুজন॥ ভার পিতৃগণ যত থাকে স্বর্গপুরে। মহাতৃগু রহে তারা বছকপ্প তরে॥ **র্ণপিতৃত্তত নাম তার ওহে ঋষিগণ। মহাফলপ্রদ ব্রত শান্ত্রের বচন।** হৈত্র-আদি চারিমাস অ্যাচিত হযে। তিল্দান করে যেই সানন্দ-হৃদয়ে॥ বসন হির্ণ্য আর করে সমর্প। ত্রন্নলোকে যায সেই শান্তের বচন। তাহার আনন্দত্তত জানিবে আখ্যান। সেই জন ব্রহ্মলোকে লভয়ে সন্মান। প্রতিদিন পঞ্চামৃত করিয়া অর্পণ। কেশবের স্থানবিধি করে সমাপন।। একবর্ষ এইরূপ পালিয়া নিয়মে। বর্ষ পূর্ণে শুগুলান করয়ে ত্রাক্ষণে। **িশিবলোকে যায় সেই শান্ত্রের বচন।** জন্মান্তরে রাজ্যলাভ করে। সেই জন।। জানিবেক শ্বতিব্ৰত আখ্যান ইহার। বলিলাম নবাগাশে শান্তেব বিচার॥ এক বর্ষ মাংস ত্যাগ করি যেই জন। বর্ষ সমতীতে করে ধেনু সমর্পণ॥ অশ্বমেধ ফল পায় দেই সাধুনর। বৈফব ধামেতে যান্ন হরির গোচর॥ বিষ্ণুত্তত বলি ইহা জানে সর্বজনে। ত্রতগ্রেষ্ঠ বলি ইহা বিখ্যাত ভুবনে॥ বৈশাথেতে পুষ্পদেবা করিয়া বর্জ্জন। পরিত্যাগ করি আর যতেক লবণ॥ প্রতিদিন বিপ্রগণে ধেনু দান করে। বিষ্ণুলোকে রছে সেই কম্পকাল তরে॥ জন্মান্তরে রাজপদ পায সেই জন। শান্তিত্রত বলি ইহা বিদিত **ভু**বন । মহাফল ইথে হয় কীর্ত্তি রদ্ধি হয়। শান্তের প্রমাণ ইয়া নাহিক সংশয়॥ প্রতিদিন স্বর্ণ সহ তিলরাশি লয়ে। উৎসর্গ করিয়া মেই বিশুদ্ধ-শ্বদয়ে॥ বিপ্রকরে সেই তিল করয়ে প্রদান। সে জন অবশ্য পায় ∮অন্তিমে নির্বাণ ॥ ব্ৰন্ধত মুনিগণ ইহারেই কয়। কহিলাম সবা পার্ট্নে ওছে ঋষিচয়॥ একমাস উপবাস করি যেই জন। বিপ্রকরে ধেমুদান করে জ্গণন॥ বৈষ্ণব পদেতে যায় সেই সাধুমতি। তীত্ত্ত বলি বৃহী খ্যাত বহুমতী॥ कार्किकी भूर्निमा পেয়ে यह माइकन। इत्याप्मर्ग यथानि में कंत्रिका माधन॥

নক্তত্তত অনুষ্ঠান বিধানেতৈ করে। শৈব পদ পায় সেই জানিবে অন্তরে 🖡 ব্লুক ত্রত হয় এই ত্রতের <sup>'</sup>আখ্যান। শাস্ত্রের বচন ইছা বেদের, বিধান । সপ্তরাত্র উপবাস করি যেই জন। বিপ্রকরে য়তকুন্ত করে সম**র্পণ** 🞼 ত্রন্ধলোকে যায় সেই নাহিক সংশয়। শাস্ত্রের বচন ইহা ওহে ঋষিচয় 🖟 বীরত্রত বলি ইহা বিদিত ভূবন। বলিলমে স্বাপাশে শান্ত্রের বচন 💵 🛊 व्यावाज़ कार्क्टिक याच दिनाथ (य व्यात । এই हात्रियातम त्यहे माधू खनाथात ॥ र পূর্ণিমাতে পয়ন্বিনী ধেনু দান করে। কল্পকাল রহে দেই ইন্দ্রের নগরে 🗓 মিত্রত বলি ইহা বিদিত ভুবন। বলিলাম সবা পাশে ওছে ঋষিগণ॥ ভূতীয়া তিথিতে যেই কোন সাধুমতি। বিসর্জ্জন করি অগ্নিপক্ক বস্তু আদি॥ 🖔 অক্ত অক্ত দেব্য আদি করিয়া ভোজন। বিপ্রকরে ধেনুদান করে সমর্পণ্-পুন নাহি আদে সেই এ ভবসংসারে। নির্বাণ পাইয়া যায় হরির গোর্চরে ॥ তিনদিন উপবাদ করি যেই জন। ফাল্গুণের পূর্ণিমাতে হয়ে শুদ্ধমন॥ বিপ্রকরে গৃহদান ভক্তিভরে করে। আদিত্য লোকেতে সেই নিবসতি করে॥ ঋত-ত্রত বলি ইহা বিদিত ভূবন। কহিলাম সবা পাশে ওছে ঋষিগণ ॥ প্রতিদিন ইন্দদেবে করিলে পূজন। ইন্দ্রত ঘণাবিধি হয় সমাপন। ইহার প্রদাদে যায় ইন্দ্রের নগরে। তথা গিয়া মহাস্থাধে নিবসতি করে॥ প্রতি শুক দ্বিতীবাতে লবণ ভাজন। যেই জন বিপ্রকরে করে সমর্পণ॥ বর্ষ পূর্ণে বেনুদান বিপ্রগণে করে। সন্ত্রিমে নেজন যায় শিবের গোচরে॥ সোমত্রত বলি ইহা খ্যাত চরাচর। বলিলাম সবা পাশে তাপসনিকর॥ প্রতিমাসে শুক্রপক্ষে প্রতিপদ বিনে। একভক্ত হতে রহে বিহিত বিধানে॥ বর্ধ পূর্ণে বিপ্রে করে কাঞ্চন প্রদান। বৈশানর-পদে যায় সেই মতিমান॥ শিবত্ত বলি ইছ। জানে সর্বজন। ত্রতের প্রধান ইছা শান্তের বচন।। প্রতি প্রতিপদ দিনে একভক্ত হয়ে। যেই অন বর্য যাপে একান্ত হৃদয়ে॥ ভ্রত স্মাপনে করে কাঞ্চন প্রদান। দশ সংখ্য ধেনু কেয় যেই মতিমান॥ ব্রদাণ্ডের আধিপভা লভে সেই জন। শিবত্রত বলি ইহা বিখ্যাত ভুবন॥ कार्डिकी शृनिंगा क्टिन (यह माधुकन। পবিত্র পুদর তীর্থে করিয়া গমন॥ কন্তা দান করে যথাবিধি অনুসারে। তাহার পুণ্যের কথা কে বলিতে পারে॥ আই দিন তিলপিটে গঠিয়া বারণ। রতনে ভূষিত তাহা করি সাধুজন॥ বিপ্রকরে যদি দের অতি ভাক্তভরে। ইন্দ্রলোকে পায় সেই শাস্ত্রের বিচারে॥ ত্রতের মাহাত্মা এই করিনু বর্ম। অধিক বলিব কিবা ওহে ঋষিগণ।। 

শাত যথন্তর কাল , সেই সাধুজন। গন্ধর্ব কুলের তিনি অধিপতি হন।
শানব-হলেতে দেহ ধারণ করিয়ে। অধ্যয়ন করে যদি একান্ত-হলমে।
বাঞ্চা পূর্ব হার নাহিক সংশয়। শাস্ত্রের বচন কভু মিথ্যা নাহি হয়।
ধনার্থী হইয়া যদি কবে অধ্যয়ন। অভিমত ধন পায় শাস্ত্রের বচন ॥
'বিদার্থী হইয়া যদি করে অধ্যয়ন। অবশ্য হইবে তার কামনা পুরণ ॥
কামার্থী হইয়া যদি করে অধ্যয়ন। অবশ্য হইবে তার কামনা পুরণ ॥
কামার্থী হইয়া যদি করে অধ্যয়ন। অবশ্য হইবে তার কামনা পুরণ ॥
বিদ্যা নারী যদি শুনে অতি ভক্তিভরে। স্পুল্ল লভয়ে সেই অচিরে জঠরে ॥
শ্বত-পূজা যদি কভু কর্বে শ্রবণ। দীর্ঘজীবী হয় তার সকল নন্দন ॥
অধিক বলিব কিবা তাপদনিকর। ত্রতের মাহায়্য কথা অতীব বিস্তর ॥
সংক্রেপে কিঞ্চিত মাত্র করিলু বর্ণন। কিন্তু এক কথা বলি করহ শ্রবণ ॥
আন বিনা ভাবশুদ্দি কভু নহি হয়। নৈর্ম্বা জনমে নাহি ওহে ঋষিচয় ॥
'বিধানেতে স্কান করি ওহে ঋবিগণ। তার পর পূজাত্রত করিবে সাধন ॥
বাসনা আছিল যাহ। স্বার অস্তরে । বর্ণন করিলু তাহা স্বার গোচরে ॥
'আর কি শুনিতে বাঞ্জা কহ ঋবিগণ। জিজ্ঞানা করিবে যাহা করিব বর্ণন ॥

# চতুঃপঞ্চাশক্তন অধ্যায়।

চিত্তজ্বার্থ মানবিবি।

• সনংক্ষার উবাচ।

বিনা স্নানং মনঃশুদ্ধিদেহশুদ্ধিন জাযতে। তমালাদো হি স্নানঞ্চ ক্তব্যং নাগুভিন্তিরঃ॥

এতেক বচন শুনি যত খাষিগণ। পুনশ্চ মধুরবাকো করি সম্বোধন।
কহিলেন শুন শুন সনত-কুমার। বিধির তনয় তুমি গুণের আধার।
আমাবিধি স্বাপাশে করহ কীর্তন। তব মুখে আই কথা করিব শ্রবণ।
আমিদের বাক্য শুনি বিধির তনয়। কহিলেন শুন্বলি ওহে ঋষিচয়।
আমান বিনা নাহি হয় মনের শোধন। দেহ শুদ্ধি নাহি হয় শাস্তের বচন।
এহেতু অগ্রেত্তে আন করিয়া বিধানে। তার,পর পূজা আদি করিবে যতনে।
যেইরপে মন আদি শুদ্ধির কারণ। সিনান করিতে হয় শুনহ এখন।
গৃহমধ্যে স্মান্ত যেই জল হয়। তাহাতেও হয় আমা ওহে মুনিচয়।
কিন্তু আনকালে সেই সলিল ভিতরে। কল্পনা করিবে তীর্থ ওহে ঋষিসণ।
আমাহত হয়ে অথা করি আচ্মন। কল্পনা করিবে তীর্থ ওহে ঋষিসণ।

চতুর্ত্ত পরিমিত চতুরত্র স্থান। তীর্থবং কল্পনা করি সেই মজিমান॥ তন্মধ্যেতে মক্ট্রোচ্চারি গঙ্গা আবাহন। করিবেক ভক্তিভরে ওহে ঋষিগ্ৰ 🞼 "তুমি দেবি বিষ্ণুপদে লভেছ জনম। তোমারে এইরি সদা করে**ন পূর্বন**া ঘত পাপ করিয়াছি জন্ম জন্মান্তরে। তাহা হতে ত্রাণ কর আমা সবাকারে 🞷 দেবতারা এই কথা করেন কার্তন। ভূতলে স্বরগ আর মধ্যেতে গুগন্ 📸 তিন স্থলে সাৰ্দ্ধ তিন কোটি তীৰ্ণ রয়। সে সব তোমাতে স্থিত নাহিক সংশঙ্ক<sup>ী</sup> এই মন্ত্র পাঠ করি।অতি ভক্তিভরে। কম্পেনা ক্রিবে তীর্থ শুন তার পরে 💱 জাহ্নবীর সপ্ত নাম করিবে কার্ত্তন। করিবেক তার পর মৃতিকা এছণ 🕷 পড়িবেক এই মন্ত্র অতি ভক্তিভরে। "শুন শুন বস্তুদ্ধরে নিবেদি তোমারে॥ 🖔 অশ দারা নমাক্রান্ত হয়েছিলে ভূমি। রথেতে আক্রান্ত হযেছিলে হে অবনী ু বিষ্ণু দারা সমাক্রান্ত হও তার পর। করিবাছি পুর্নের যাহা পাতক-মিকর॥ সেই সব তুমি দেবী করহ হরণ"। এই মন্ত্র হথাবিধি করি উচ্চারণ॥ যথাবিধি করিবেক পরে নমস্কার। শুন শুন বলি এবে মন্ত্র যে তাহার॥ अ 'শতবাহু হয়ে দেবি এহার তোমারে। রসাতলতল হতে সহজে উদ্ধারে ॥ 🕆 অতএব করি আমি তোমারে প্রণাম।" এই মন্ত্রে প্রণমিষা করিবেক স্পান॥ তার পর দেহ আদি করিয়া মার্জ্জন। উপরে উঠিয়া পরে পরিবে বসন 🗤 তর্পণ করিবে পরে বিহিত বিধানে। একার তর্পণ দাধু করিবে প্রথমে॥ বিষ্ণুর তর্পণ আর রুদ্রের তর্পণ। যথাবিধি স্থাপিয়া ওতে ঋষিগণ॥ প্রজাপতি-তর্পণাদি করি ভক্তিভরে। দেব যক্ষ নাগ আদি তর্পিবেক পরে॥ গন্ধর্ব তর্পণ আর অপ্রর তর্পা। সম্থর তর্পণ পবে করিয়া সাধন। ক্রুর দর্প স্থপর্ণাদি ভূষিবার তরে। তর্পণ করিবে লাগু একান্ত অন্তরে॥ 🕻 তরু সরীসৃপ খগ আর বিদ্যাধর। তর্পিবেক এই সবে আর জলধর। 🖟 🤾 শৃত্যগামী নিরাধার পাপে রত জন। ধর্মরত জাবদের তৃপ্তির কারণ। জলদান করি পরে বিহিত বিধানে। করিবেক যাহা পরে শুনহ এবণে॥ দৈবপঁকে উপবীত্রী হইয়া তর্পন। করিবেক সাধুজন শান্ত্রের বচন্।। পিতৃপকে তর্পণার্দি করিতে হইলে। করিবে প্রাচীনাবীতী হইথা সাদরে॥ তার পর সনকাদি ঋষির তর্পণ। করিবেক সাধুমতি শাস্ত্রের বচন॥ भतौछानि मश्रिवित जर्नित्वक भेरत। यत्मत जर्भन भरत कतित्व नामरत॥ করিবেক কুশহন্তে পরে দাধুজন। অগ্নিষাতা আদি পিতৃ-লোকের তর্পণ।। পিতৃ-আদি তিন মাতামছ আদি ত্রয়। করিবেক তর্পণাদি দেই মছোদয়॥ তার পর অন্য অর্থ বাদ্ধব-জনেরে। করিবেক জলদান বিধি অনুসারে ॥

ভার পর স্থা-আর্থ্য করিবে প্রদান। যথাবিধি করিবেক ভাকরে প্রণাম।।
শিস্বার দৃষর তুমি ওহে দিবাকর। সুপ্ত জনৈ জাগরিত করে নিরন্তর ॥
স্কুক্ত চূক্ত তুমি দেখ স্বাকার। তোমারে প্রত্যহ আমি করি নম্কার ॥
এই মন্ত্রে প্রণমিরা দেব দিবাকরে। কাঞ্চন স্পর্শিরা কিল্বা বিপ্রে স্পর্শি পরে ॥
নিজগৃহে সাধ্বতি করিবে গমন। এইত স্থানের বিধি ওহে ঋষিগণ॥
এইরপে প্রতিদিন সিনান করিলে। চিত্ত দ্বি হয় তার সেই পুণ্যকলে॥
ভাবত দ্বি হয় তার শাস্ত্রের বচন। নাহিক সন্দেহ ইথে ওহে ঋষিগণ॥
ক্রিক্তাসিরা ছিলে যাহা কহিলু স্বারে। বল ২ল কিবা আর বাসনা অন্তরে।

#### পঞ্চপঞ্চাশত্তন অধ্যায়।

বিভূতি দ্বাদশীত্রত-মাহাত্য।

প্রসাদাদক্ষ ত্র হস্যারাধনেন তথা হরে:। ধনবান্ কার্ত্রমাং শৈচব বং রাজা নরপুক্ষর॥

এতেক বচন শুনি যত ঋষিগণ। মধুর বচনে পুনঃ জিজ্ঞাসে তখন ॥ ৬ নিমু তোমার মুখে ত্রতের কাহিনী। কিন্তু এক কথা বলি প্রহে মহামুনি॥ এলভকলে মহাস্থী হয় কোন জন। সেই কথা প্রকাশিয়া বলহ এখন॥ ুকোন্ সাধু কোন্ তাত করিয়া সাধন। অনুভাষ ফল পায় কহ মহাত্মন্॥ ্রেভ ভনি বিধিমূত কহৈ ধীরে ধীরে। শুন শুন বলিতেছি স্বার গোচরে। **ত্তিরে মাহাত্ম কত** করিব বর্ণন। কত ফল লভিয়াছে কত **সা**ধুজন॥ তার মধ্যে এক রাজা কুমুম-বাহন। অনুত্রম ফল পার শুন সর্বজন॥ শিব-উপাসক ছিল সেই নরপতি। হরগৌরী পূজা সদা করে সাধুমতি॥ পঞ্চানন মহাতৃষ্ট তাহার উপরে। মধ্যে মধ্যে যায় রাজ। শিবের গোচরে॥ কৈলাস-শিবরে রাজা করিয়া গমন। ভক্তিভরে শিবপদ করয়ে বন্দন॥ বিধানে তাঁহার পূজা করিয়া সাদরে। ফিরিয়া আসেন পুনঃ আপন নগরে॥ - একদিন নরপতি হয়ে ফুল্ল-মন। কৈলাস-গিরিতে গিয়া উপনীত হন।। দেখিলেন হরগোরী বসি একাসনে। মিই ভাবে কত কথা কহেন ছু-জনে॥ পুরোভাষে নরপতি করিয়া গমন। দোঁহার চরণপঞ্জে করিল কদন॥ আশীর করিয়া শিব নৃপতি-প্রবরে। স্বর্ণসিংহাসন দেন বসিবার তরে॥ मिरवत आरम्प्रभ ताका विमिन ज्यान । क्यान किञ्जामा कृदत (पव शकानन ॥ , प्रदेवतन नानाकथा- চলিতে नाजिन । धर्यकथां छन् ताका वानत्य छानिन ॥

छात भन्न कथार्ष्ट्रण विकारम ताजन। अन छन निरंत्रम ७८६ शकानम् ॥ অতুল ঐথব্য কত হয়েছে আমার। সন্তান জন্মেছে বহু ওণের সাধীর 🞉 পতিরতা রূপবতী পেয়েছি রমণী। কিন্তু নিবেদন এক ওহে শূলপাণি । অতি পাপাচার আমি অতি নশ্ধম। আমার স্মান হীন নাহি কোন জন ॥ । ধর্মকর্ম কিবা জানি আমি মচমতি। ধর্মতত্ত্ব নাহি বুঝি ওছে পশুপতি॥ এত ধন হৈল মম কিলের কারণ। কোন্কর্ম ফলে পাই এমন নশন। পতিব্রতা রূপবতী হয়েছে রন্ধী। কিসের কাবণ বল ওহে শূলপাণি 🖟 🦼 হৈন ধর্ম কিবা আমি করি আচরণ। আমার উপরে ক্লপা কিদের কারণ॥ এতেক বচন শুনি দেব শুলপ। বি । কহিলেন শুন খুন ওছে নুপুম্বি ॥ পুর্বাজন্ম ছিলে তুমি ব্যাধের নন্দন। হয়েছিল ব্যাধকুলে তোমার জনম ॥ পিতৃ-মাতৃহীন তুমি হয়ে বান্যকালে। কোনরূপে সর্কিত হলে তার পরে॥<sup>\*</sup>় যৌবনকালেতে দার। করিলে এহণ। এইরূপে কিছুকাল করহ যাপন। একদিন রাজ্য মধ্যে অনার্টি হয়। নিজ গৃহে বদেছিলে তুমি মহোদয়। ভার্যাার সাঁহতে ছিলে আপন ভবন। মনে মনে কোন কিছু করিছ চিন্তন॥ टश्नकारन देवनाधी अगिरन এববে। निम्हा कतिर७ তার অর্থ মনে মনে॥ । এইরপ দৈববাণী হইল তখন। শুন শুন নরপতি করিব বর্ণন।। ''বৈশ্যকুলে কোন নারী একান্ত যতনে। যাঘ্যাদে শুক্লপক্ষে হাদশীর দিনের বিভূতি দ্বাদশীরত করি সমাপন। নবণ অচল বিপ্রে করিয়া অর্পণ ॥ গুরুকে সর্বায় দান করিলেন পরে।" এইরূপ দৈববাণী আকাশ-উপরে 🛊 এইরূপ দৈববাণী করিয়া অবণ। আপন ভার্য্যারে সঙ্গে লইয়া তখন। লবণ-অচল স্থানে করিলে গখন। সেই স্থানে কেশবেরে করিলে পুজন॥ ষেই বালা দান করে লবণ অচল। দেখিল তোমার কার্য্য ওছে নরবর ম **७व कार्या जुछे हरा (महे खनवर्जी। जिन थानि वञ्ज मारन मिल जनूमिज 🛚 ।** কিন্তু তুমি তাহা নাহি করিলে এছণ। তাহা দেখি সেই বালা হয়ে খুল্লমন 🛊 চারি খানি বস্ত্র দিতে কহে অসুগরে। তরু তুমি নাহি নিলে শুন তার পরে। চারি খানি নিতে তুমি কর অম্বীকার।হেন কালে তব পত্নী সক্ষেতে তোমার বিনয় করিয়া করে সেই অবলারে। গ্রেগরা হয়েছ যদি মোদের উপরে গ বস্ত্র স্পাদি কিছু নাহি করিব গ্রহণ। একবার চাহি যাহা কর বিতরণ । এই স্থানে থাকি যোৱা পৃথিব হরিরে ।এইমাত্র ভিক্ষা চাহি কহিন্দু তোমারে মদ্যপি করুণা হয় ওলো রূপবতী। এই ভিকা দিতে তবে কর অনুষ্তি ।

त्मातना नम्बा जाटब (महेकर्। इस। उव नाती दिन जाटज श्रमूब-सरसंस



## বষ্ঠপঞ্চাশত্তম অধ্যায়।

পুদরমাহাত্ম্য প্রসঙ্গে পুষ্পবাহনোপাথ্যান।

সনংক্ষার উবাচ।

হেমপদ্মং দদৌ তদ্ম রাজে ততঃ প্রজাপতিঃ।
বহেত্যুক্তা চ তথাছি পুষ্পবাহনসংজ্ঞকঃ॥

শবিগণ জিজ্ঞাসিল সনত-ক্মারে। শুন শুন নিবেদন বলি গো তোমারে।
শুনিতু তোমার মুখে অপূর্ব কাহিনী। পবিত্র হইত্ব মোরা ওছে মহামুনি।
ক্রেখন জিজ্ঞাসি যাহা করহ বর্ণন। বাসনা করহ পূর্ণ করিয়া কীর্ত্তন।
কি কারণে নরপতি সেই মতিমান্। ধরিলেন বল পুপ্রবাহন আখ্যান।
বলিলে প্রধান তীর্থ পবিত্র পুকর। তাহার প্রমাণ ক্রিবা ওহে মুনিবর।
এই সব বিবরিয়া করহ বর্ণন। শ্রবণ করিতে সবে করি আকিঞ্চন।
শ্রমিত্বের কৌত্তল দরশন করি। বিধির তনয় নিজ মনেতে বিচারি।
কহিলেন শুন শুন ওছে শ্রিগণ। জিজ্ঞাসিলে যাহা তাহা করিব বর্ণন।
নরপতি বছলিন প্রকান্ত অন্তরে। পুকর তীর্থেতে জুণ আহরণ করে।

भागाशास्त्र ७० व्यर्गा करत्रन गायन। अरेत्ररंग वहकान करत्रम धाराम # তাঁহার তপেতে তুউ হয়ে প্রজাপতি। রাজারে দর্শন দিতে যান ক্রতগতি 📭 সত্ত্র গ্যন করি রাজার গোচরে। আবির্ভূত হন একা শাস্ত কলেকরে 🗱 बाजाटत जाशन पूर्वि कतादत पर्यन। काकेन कमल এक कटतन जर्शन 🖟 রাজার হত্তেতে পদ্ম দিয়া প্রজাপতি। বলিলেন শুন শুন ওহে নরণতি 🛎 তব করে দিব্য পুষ্প করিনু অর্পণ। বহন করহ তুমি ওছে মহাজ্মন্।। এই কথা বলি একা করেন প্রদান। সেই হেডু হৈল পুষ্পবাহন আখ্যান। পুন্ধর রাজার করে অতি শোভা পায়। তাহা লয়ে নবপতি ভ্রমিয়া বেড়ার 🕷 রাজার হাতেতে করি পুকর দর্শন। তথাকার লোকে দব করয়ে পূজন 🛊 সেই হেতু দেই স্থান পুদ্ধর নামেতে। প্রসিদ্ধ হইল পরে এ তিন জগতে। পরম পবিত্র স্থান ধরণীমাঝার। হেন তীর্থ নাহি হেরি এ তিন সংসার । শুন শুন ঝযিগণ অদ্ভূত ঘটন। অপূর্বে আখ্যান এক করিব বর্ণন 🛊 পুপাবাহনের রাজ্যে বহুদিন পরে। অনার্ফি হয় কভু জানিবে অন্তরে 🗈 অতি কট পায় তাহে যত প্রজাগণ। শস্তহীন হয় ধরা ওহে ঋষিগণ।। অল্লাভাবে খিল্ল হয় মানবনিকর। ভাবিয়া সকলে হয় ব্যাকুল অন্তর॥ রাজ্যের এতেক দশা করি দরশন। ব্যাকুলিত হয়ে রাজা করেন চিত্তন 🕏 কি করিবে কেথা যাবে না দেখি উপায়। ঋষিগণ-সকাশেতে অবশেষে যায়॥ ভাঁছাদের পুরোভাগে করিয়া গমন। বিনয়-বচনে রাজা কছেন তখন 🛊 ভন শুন ঋষিগণ নিবেদি স্বারে। বিপ্রেরে করিবে দান শাস্ত্রে হেন বলে# প্রতিগ্রহ বিপ্রকরে করিলে অর্পণ। ধর্ম উপার্জন হয় ওহে ঋষিগণ। ধর্ম হতে সুখে থাকে মানবনিকর। রাজার যতেক কট বিনাশে সত্রর № অতএব শুন শুন ওছে ঋষিগ্ৰ। হৰ্ণ রৌপ্য আদি আমি করি আনয়ন 🖪 এহণ করুন সবে হরিষ অন্তরে। নিবেদন এই মম কহি স্বাকারে 🕸

রাজার এতেক বাক্য করিয়া প্রবণ। মিফ্টানে ঋষিগণ কছেন তথন ।

যা কহিলে সত্য বটে ওছে নরপতি। কিন্তু ইহা না পারিবজানিবে সম্প্রতি ।

তাহার কারণ বলি করহ প্রবণ। প্রতিএই ভয়কর শাস্ত্রের বচন । মনের

সন্তোষ বটে জনমে প্রথমে। বিষবৎ হয় কিন্তু উহা পরিণামে । অতঞ্জক

অই সব করি প্রদর্শন। শৈখাতেছ লোভ কেন বলহ রাজন্ । শান্তের

প্রমাণ শুন বলি হে তোমারে। যুঝিবে তা হোলে পরে আপন অন্তরে ।

দলটা ক্রুর সম কলু জাতি হয়। দশ কলু সম হয় রজক নিশ্রে ।

দলটা রজক্ সম্বাহ্র বেখা জাতি। দলটা বেশ্বার সম্কানিবে স্পতি ॥

দলটা রজক্ সম্বাহর বেখা জাতি। দলটা বেশ্বার সম্কানিবে স্পতি ॥

স্বাহ্র বিষয়ে জাতি । দলটা বেশ্বার সম্কানিবে স্পতি ॥

স্বাহ্র বিষয়ে জাতি । দলটা বেশ্বার সম্কানিবে স্পতি ॥

স্বাহ্র বিষয়ে জাতি । দলটা বেশ্বার সম্কানিবে স্পতি ॥

স্বাহ্র বিষয়ে জাতি । দলটা বেশ্বার সম্কানিবে স্পতি ॥

স্বাহ্র বিষয়ে জাতি । দলটা বেশ্বার সম্কানিবে স্পতি ॥

স্বাহ্র বিষয়ে জাতি । দলটা বেশ্বার সম্বাহ্র বিশ্বার স্বাহ্র স

आद्या এक कथा विन श्वेसर बाजन्। य कुतूबजीवी जूरम लिया जनग । শ্বযুত কুরুর শরে ব্যবসায় করে। জঘতা তথিার তৃল্য জানিবে রাজারে। এই হেতু বলিতেছি শুনহ রাজন্। রাজপ্রতিগ্রহ মোরা না লব কখন। (यरे विश्व लाज्यत्म विमुक्ष इरेरा। ताज्य जिलाह नम् मानक-सपरम । क्टिमिक्स मंत्रदक त्मेरे कद्रद्य श्रमा। भारखंद वहन शिशा नरह कलाहन॥ জ্বজ্ঞ বে যাহ রাজা অন্য কোন হলে। অর্পণ কর্হ দান অন্য কোন নরে॥ ঋষিদের এই বাক্য শুনি নরপতি। আপন নগরে পুনঃ করিলেন গতি॥ ্**শলিনবদনে গৃহে** করি আগমন। মন্ত্রীগণে সম্বোধিয়া কছেন তথন। গ্ন্মন করহ সবে যথায় তথায়। বিপ্র অন্বেদণ কর আমার আজ্ঞায়॥ <sup>ই</sup>মম প্রতি**গ্রহ যেই** করয়ে গ্রহণ। হেন বিপ্র সবিলফে কর **অন্নে**ষণ্॥ মতুৰা সাম্ৰাজ্য নাশ হইবে আচিরে! প্রজাগণ কত কট্ট লভিছে অন্তরে॥ রাজার এতেক বাক্য করিয়া প্রবণ। মন্ত্রীগণ অবিলয়ে করিল গমন॥ व्यक्ति মূনি সহ দেখা পথিমাঝে হয়। ভাহারে সম্বোধি যত মন্ত্রীগণ কয়। শুন শুন মহামূনে করি নিবেদন। রাজদত নানারত্ব কর দরশন॥ স্বর্ণ 📾 প্য আদি করি যতেক রতন। রয়েছে মোদের পাশে ওহে মহাজ্বন্ ॥ বিপ্রকরে এই সব করিব প্রদান। অত এব লহ ইছা ওতে মতিমান্॥ **'ঞ্ডিক বচন শুনি অত্রি ঋষিবর। কহিলেন শুন শুন মত মন্ত্রীবর॥ স্থাজপ্রতিগ্রহ মোরা** লইবারে নারি। তাহার কারণ বলি শাদ্রের বিচারি॥ স্নাজপ্রতিগ্রহ হয় অতি ভরম্বর। তাহে স্বর্ণ রৌপা আদি রতননিকর॥ এই সব যদি আমি করি হে এহণ। তুর্গতি লভিব তবে শাস্থের বচন। অতএব লোভ নাহি দেখাবে আমারে। অন্তত্র গমন কর কহিনু সবারে॥ অত্রির এতেক বাক্য করিয়া শ্রবণ। মন্ত্রীগণ মনোদুঃখে অতি খিল্ল হন।। সকলে আদেন ফিরি রাজার ভবনে। সর্বশ্রেষ্ঠ মন্ত্রী যান বিপ্র অন্তেরণে॥ দক্ষেতে রহিল মাত্র ছুই অনুচর। এইরূপে বিপ্র হেতু যান মন্ত্রীবর॥ জ্ঞমিতে ভ্রমিতে যান বশিষ্ঠ-আগ্রমে। দেখিলেন বসি ঋষি কুশের আসনে।। ভাঁহার নিকটে মন্ত্রী করিয়া গমন। ভজিভাবে পদকলে করেন বন্দন।॥ · ঝবির আদেশে বদে কুশের আদনে। কুশল জিজ্ঞাসা ৠবি করেন যতনে॥ ভার পর জিজ্ঞাদেন আসার কারণ। বিনয়-বচনে মঞ্জী কছেন তখন। তুমি প্রভু দয়াময় অবনীমাঝারে। ঋষির প্রধান তুমি क्লানি গো অন্তরে॥ जिकान विविध पूर्वि ७८६ मशामूनि। निर्वतन कति आर्व कर भरत जामि॥ মোবের সর্পতি কুমুন-বাহন। সতত ব্যাক্ল্ডিটে আছেন এখন।।

(धरे (रेष्ट्र वर्ग (जोश) विविध तजन। विधकतं महाताक कतित्व कर्णा ॥ সেই দক এই আমি লইয়া সাদরে। আসিরাছি ঋষিবর তোমার গোচরে 🎎 हाइक्ए खरे गर विविध त्रज्ञ। धर्ग कत्र श्रज् खरे व्याकिका ही মন্ত্রীর এতেক বাক্য করিয়া প্রবণ। মিটভাবে ঋষিবর কছেন তথন 👢 😊ন শুন মন্ত্রীবর বচন আমার। ভোমাদের নরপতি অতি গুণাধার 🞼 मानधर्म त्रु थाटक ताजात धत्र। म॰काज कतित्व ममा धताग्र ता<del>ज</del>न ॥ শুদ্ধ অর্থ সঞ্চয়েতে যে রাজা ত২পর। বিম্নরাশি ঘেরে তারে ওহে মন্ত্রীবর 💵 খর্ণ আদি দান দিতে তোমার রাজন্। হয়েছেন যত্নান করিত্ব প্রবণ । প্রশংসার যোগ্য বটে ইথে নরপতি। কিন্তু এক কথা কহি শুন মহামতি # প্রতিগ্রহ নিকটেতে হলে উপস্থিত। তাহা পরিত্যাগ করি অতীব ত্বরিত 🛊 माजात প্রশংসা করি আপন বদনে। युमञ्जूषे হন যিনি নিজ মনে মনে ॥ জন্মতেজঃ রুদ্ধিশীল নেই জনের হয়। এই হেতু স্লিতেছি ওহে মহোদয় । এ দান লইতে আমি কভূ নাহি পারি। অন্যের নিকটে তুমি যাহ ত্রা করি॥ আর এক কথা বলি করহ এব।। পৃশিকালে হযেছিল অদ্ভত ঘটন।। রাজত্ব অকিঞ্চনত্ব এই বস্তুদ্ধরে। তুলাদুতে রেখেছিল যুতুবান হয়ে॥ রাজত্ব বিশ্রের পকে মূান যে হইল। আফিঞ্জ দমধিক হইয়া পড়িল 🛊 এই হেতু বলিতেছি করহ শ্রবণ ৷ রাজ-প্রতিগ্রহ নাহি করিব শ্রহর 🗈 এতেক বচন শুনি স্মাত্য-প্রের। বিষাদে ছলেন অতি বিষয়-অন্তর। विषाय नहेया शदत विषय-विषय । श्रीत श्रीत जेशनोज कमाश-वाज्य । খবির পদেতে মন্ত্রী করিয়া বন্দন। রাজ-প্রতিগ্রহ কথা করে উত্থাপন। কহিলেন কত কথা বিনয়-বচনে। শুনিয়া কহেন মুনি মন্ত্রার সদনে 🏚 শুন শুন মন্ত্রীবর আমার বচন। এই যে অখিল বিশ্ব করিছ দর্শন॥ ইহাতে অর্থই যত অনর্থ ঘটায়। পুরুষের মোহ অর্থ কহিনু তোমায় । নরকের হেতু অর্থ শাদ্রের বচন। এই ছেতু বল্যাণার্থী যত নরগণ। অর্থ পরিত্যাগ করে একান্ত অন্তরে। তাহে মুগ নাহি হয় কহিত্ব তোমারে । অর্থ হতে ধর্ম বটে হয় উপার্জন। ধর্মার্থ অর্থের চেন্টা করিবে বর্জন। কেননা লেপন করি পরে প্রকালন। কভু নাহি যুক্তিযুক্ত ওহে মহাত্মন্। তদপেকা পঞ্চপর্শ নাছি করা ভাল। সতা কিনা মন্ত্রীবর বিচারিয়া বল ॥ অতএব আমি নাহি করিব এহণ। অন্যের নিকটে তুমি করহ গমর্ম (६७ विन श्रीववत्, भोन गांदेव त्रत्र। श्रीनत्रा ताजात में तिया-शास्त्र।) श्वित এতেक बाका कतियां अवन । शिटत शिटत कांत्र शरण कतिता वणन ॥

किलिएनन मंद्रीयम वियम वर्गन। उनाम हहेटच किया छावि महन महन ह बाहात्र निकटहे जिनि करतम श्रमना निर्ताम छथात्र हम जाम्हर्या घरेन। প্রকালে মরিল প্রজা নাহিক সংশর। রাজকীতি লোপ পায় জানিতু নিল্ছু॥ এত ভাবি মন্ত্রীবর করেন গমন। ভরদ্বাজ-খবিপাশে উপনীত হন। ৈ বেশিলেন খাষিবর বসিয়া আসনে। দিবাকর সম তেজ ছেরেন ময়নে। - **শিরোপরে খেত**বর্ণ শোতে জটাভার। চারিদিকে শিষ্যগণ **প্রশান্ত-আকার॥** डाँडांत्र निकटं मञ्जी कतिया भगन। পদতলে ভক্তिভतে करतन वसन॥ শাখার মানস মন্ত্রী জানালেন পরে। কহিলেন কত কথা সবিনয় করে॥ यद्भीत মুখেতে দৰ করিয়া এব।। ভরবাজ মিউভাষে কহেন তখন॥ ভন ভন মন্ত্রীবর বচন আমার। বুদ্ধে বিচক্ষণ তুমি গুণের আধার॥ • এই যে অসীম বিশ্ব করিছ দর্শন। কত জীব আছে ইণে কে করে গ্রান। बाना कारन कौड़ा करत यठ जीवग्रा। योवरन योवनमाथ कतरत श्रुत्र ॥ লরাতুর হয় যবে ওহে মন্ত্রীবর। কেশজাল শুদ্র হয় মন্তক উপর॥ হশন বিশীর্ণ হয় জরাতুর হলে। তথাপি ধনাশা রহে তাহার অন্তরে॥ **ঁজীবিতাশা হুদে দে** করয়ে ধারণ। আশ্চর্য্য ভাবিয়া দেখ ওছে মহাত্মন।। ছুরত্যরা ভৃষ্ণা হয় এ ভবসংসারে। বিবেচনা করি ইহা আপন অন্তরে। , সর্বাথা তৃষ্ণারে আমি করেছি বর্জ্জন। প্রতিগ্রহ কণা নাহি কর উত্থাপন॥ क्ष अकुरताथ आभि तकिवादत नाति। विष्क न वृति मतन त्यथह विष्ठाति॥ আফুরোর পুনঃ নাহি করিও আমারে! গমন করছ তুমি অত্যের গোচরে॥ শামা হোতে তব কার্য্য না হবে সাধন। অতএব যাহ ফিরি ওতে মহাত্মন্॥ আতেক বচন ফনি অমাত্য-প্রবর। নিরাশ হইয়া রন কাতর অন্তর। ক্ষগত্যা বিদার লয়ে মুনির গোচরে। ভ্রমিতে ভ্রমিতে যান আপন অন্তরে॥ **শ্বিমাবে গো**ডমের অপুর্ব আশ্রম। মন্ত্রীর নয়নপথে হইল পতন॥ শ্ববির আশ্রম দেখি প্রফুল অপরে। প্রবেশ করেন মন্ত্রী তাহার ভিডরে॥ লেখিলেন মহাতপ। দেই ঋষিবর। বদিয়া আছেন সূত্রে আদন উপর॥ क्षांकम्ख प्रदा आणि नहेश उथन। अधित नम्पूर्थ में की उपनी उद्मा। পুরোভাগে দেই সব রাখিয়া যতনে। বন্দন করেন মৃদ্রী ঋষির চরণে॥ कांत्र भन्न कतंत्वाद शीत शीत क्या अने छन महामूर्वन अटह मह्दानश । এই দৰ রাজদত্ত অমূল্য রতন। এহণ করহ প্রভাে এই আকৃঞ্ন॥ বিপ্রকরে দিতে বাঞ্চা করিয়া অন্তরে। পাঠালেন নরপঞ্চি ভোমার গোচরে॥ ক্ষত এব. এই স্ব াকরিয়া এছণ। রাজারে ক্রতার্থ কর ওছে মহাতান।

कृषि क्षक्र प्रामग्र विषिकं मश्मादत । निर्वतन এই मम लामान त्राहद्य । শন্ত্রীর এতেক বাক্য করিয়। প্রবণ । গৌতম মধুর বাক্যে কছেন ভর্ষা 👢 শুন শুন মন্ত্রীবর বচন আমার। সর্ববদা সপ্তট রহে মানস খাছার 🞉 পরম মঞ্জ লাভ সে জনের হয়। শাস্ত্রের বচন ইহা নাছিক সংশয় 🚛 সম্ভোষ-অমৃতে তৃপ্ত যাহার অন্তর। ধনেতে তাহার বল কিবা আছে ফল 🚎 এই সব ভাবি আমি আপন অন্তরে। সভোষ ধবেছি সদা বলিমু ভোষারে 🛊 অতএব প্রতিগ্রহে কিবা প্রয়োজন। স্বর্ণ রৌপ্যে কিবা কাজ ওহে মহাত্মন 📳 রতন লইযা বল কি কাজ আমার। বুঝিতে পারাহ সব তুমি গুণাধার 🛭 অতএব মন বাক্য করহ শ্রবণ। অনুরোধ মোরে আর না কর কখন 🛊 গমন করছ তুমি আপন আগারে। অথবা চলিয়া যাও অন্যের গোচরে ॥ ধনবাঞ্ছা ধরাধামে করে যেই জন। তাহার নিকটে তুমি করহ গমন । তাহা হলে মনোবাঞ্চা সফল হইবে। তাহার কে: তে তুমি এ সব অর্পিবে 🖁 লোভের বশগ মোরে না ভাব কখন। সন্তোব হৃদয়ে মম রহে সর্বকণ 🏗 . ঋষির বচন শুনি আমাত্য প্রবর। ধারে ধীরে পদতলে বন্দি ভার পর 🛚 কার্য্য সিদ্ধি উদ্দেশেতে করেন গমন। দানযোগ্য বিপ্রবর করে অন্বেষণ 🛚 জমদ্মি মহামুনি বিদিত ধরায়। তাহার আশ্রমে মন্ত্রী ধীরে ধীরে যায় 🛊 জমদ্মি পাশে মন্ত্রী করিয়া গমন। নিবেদন করে নিজ আসার কারণ্ 🛚 তাহা শুনি জমদগ্নি হাসি হাসি কয়। শুন শুন ওতে মন্ত্রী তুমি মহোদয় ॥ অর্থেতে আমার কিছু নাহি প্রয়োজন। অর্থ লয়ে কি করিব ও**হে মহাত্মন॥** তথাপি রাজার হিত সাধিবার তরে। এইণ করিব ইহা কহিনু তোমারে সামর্থ্য থাকিতে নাহি লয় যেই জন। তাহার শাখত লোক হয় বিনাশন # বিশেষ রাজার রাজ্য বিলোপিত হয়। এ হেতু লইব ইহা ওতে মহোদর ॥ স্বর্ণ রেপ্য আর এই যতেক রতন। করিয়াছ মম পাশে যাহা আনয়ন। ताक्षण्ख धारे मव लहेव मान्दत । अर्भन कत्र मञ्जी धा मव आभारत ॥ এত বলি জমদগ্রি তাপদপ্রবর। নিলেন দে দব দান অতি ক্তত্র॥ তাহা দেখি রাজমন্ত্রী আনন্দে মগন। যতন করিয়া সব করেন ব্দর্পণ।। রাজদত্ত রত্ন আদি অর্পিয়া ঋষিরে। তাঁহার চরণ বন্দি অতি ভক্তিভারে ম রাজ পাশে মন্ত্রীবর করিয়া গীমন। যতেক রতান্ত সব করে নিবেদন। আনন্দে যগন হন সেই নরপতি। দীনজনে ধন দান করে ক্রতগতি ॥ मजन जोडात करत विविध श्रकारत। जर्थी गर्ग कड वर्ष एक जका उरह ।। चनाइकि पूरत (अने पूर्वन इये। सानम नागरत कारन यक शकाहता।

किन अन समिनं। अर्थ्य घडेंन। क्रिंग क्रिंग मेर्च आमि कितिय न्यां। 'धकिषिन श्वित्रिंग शिनिया मकत्न। ख्यें केरतेन मेर देख्याये 'इत्न। প্রতিপ্রষ্ঠ নাহি লন যেই ঋষিগণ। একতা ছইয়া তাঁরা করেন ভ্রমণ।। স্ত্রবিতে ভ্রমিতে তাঁরা কানন ভিতরে। প্রাপ্ত ক্লান্ত হয়ে বসে পাদপের মূলে।। শুধার্ড হইয়া সবে হলেন কাতর। ফলমূল হেতু ভ্রমে বনের ভিতর।। কিছ কিছু ভক্য নাহি কুত্রাপিও পায়। অভিন হইয়া সবে পড়েন কুধায়॥ অতি কট পায় সবে আপন অন্তরে। নাহি পারে কিছুমাত্র স্থির করিবারে।। **কাতর হইয়া সবে কহে পরস্পর।** তত্ত্বমূল এই বিশ্ব এই চরাচর।। আমে প্রতিষ্ঠিত হয় এ ভব সংসার। অন্নয় হয় সবে শাস্তের বিচার।। দৈব দৈত্য পিতৃ যক্ষ রাক্ষস কির্র। গ্রহ্ম মনুষ্য সর্প পত্য অপ্সর।। আরমর হয় সব নাহিক সংশয়। অরদান এই হেভু সর্বশ্রেষ্ঠ হয়।। **ধার্মিক যাহার। হ**য় এ ভব সংসারে । অরদান দিবে তারা অতি যতু করে॥ আরদ পুরুষ হয় যেই সারুজন। ভাঁহাদের পুণাকণা কি করি বর্ণন।। **শিন্তকালে সেই জন যায় স্থরপুরে। নিতা ভৃপ্তি পায ভারা জানিবে অন্তরে।। ক্সাদান প্রপাদান আছে যত দান।** কিছুই নহেক অন্নদারে স্মান। অম্বরণান সর্বেদান হতে গ্রেষ্ঠ হয়। যেবা কোন দান আছে এই বিশ্বময়।। क्षत्र पात्न त्यरे भूगा रह डेभार्ड्जन। यग्र त्कान पात्न नारि करेत्व त्वमन।। **প্রদাযুক্ত হয়ে যেই অতি সমাদরে। অরদান করে সদা ফুধিত জনেরে।** ব্রিশ্বলোকে সেই জন অন্তকালে যার। ব্রহ্ম সহ অবস্থিতি করয়ে তথার।। চিরদিন সুখভোগে রহে দেই জন। তাহার সমান নাই এ তিন ভুবন।। **এইরূপে নানা** কথা ঋষিগণ কয়। আশ্চর্য্য ঘটনা পরে অন্ত দিকে হয়।। হৈনকালে রাজমন্ত্রী বিশেষ কারণে । সেই পথে যেতেছিল অন্ত কোন স্থানে ॥ भिषि भारत श्रविगरन करतन मर्भन। छाँशारमत कथा मन करतन धारन।। भंबिनर्ग क्यांजूत कति एतमन। मस्तोत कररत राथा जनरम ज्यन। শ্বাস্ত হয়ে রাজপাশে গমন করিয়ে। অর আদি আনিলেন সাদর হাদয়ে।। क्षांकरेख छेलहात कविता धहन। अधिर्गन लाटन भूनें करत जागमन।। রাজ-প্রতিগ্রহ দেখি তাপসনিকর। আনন্দে নিলেন তাই। করিয়া আদর।। স্থাহা দেখি মন্ত্রীবর আনন্দে মগন। বিধিগতে তাঁহাদের করাম ভোজন।। আছার করিয়া সবে মহাতৃপ্তি পায়। তার ∙পর মন্ত্রী কর্ট্ে সম্বোধি সবার॥ भाग अन अधिशन भग निट्यमा। मटलह इटब्रट्ड व्यक्त कन्न विमूत्रन।। किन्न किन्नानित्ज मम इदेरज्दक क्या शादंह नवाकात हेत ब्राह्यत जेरत मे

খনাপি অভগ্ন দান করুহ সকলে। নিবেদন পাদপত্রে করি তাহা ছলে॥ এতেক বচন তানি যত ঋষিগণ ৷ হাসিতে হাসিতে কহে ম্বুর বচন # কি ভয় তোমার মন্ত্রী আমা স্বাকার। জিজ্ঞাসা করহ তুমি যাহা ইচ্ছা সারা খুধার্ত হইয়া মোরা বনের ভিতরে। কাতর হইয়াছিনু পাদপের মূলে॥ দয়া করি তুমি আনি অরাদি ব্যঞ্জন। আমা স্বাকার কৈলে জীবন রক্ষণ ।। পর্য সম্ভূষ্ট যোরা তোমার উপরে। জিজ্ঞাসা করহ ঘাহা সন্দেহ অন্তরে। কিছুমাত্র ভয় নাহি কর মহাজান্। তোমার উপরে ভুট যত ঋষিজন ।। নির্ভর পাইয়া তবে অমাত্য এবর। ব রে থীবে বিন্যেতে করেন উত্তর । কি আব বলিব এভ্ তোমারা সকলে। সবাকার পুলনীয় এই ভূবওলে॥ তোমাদের সাধ্যতিত কিছমাত নাই। অন্তর্গামী সবে হও ভানহ গোঁলাই # ইতিপুর্বের রাজদর প্রতিগ্রহ লযে। সিয়াছিকু আমি অতি যুহুবান হয়ে। কিন্তু তাহে প্রত্যাখ্যান ক<sup>ি</sup>লে সকলে।এবে প্রতিগ্রহ সবে নিলে **এই স্থলে** ইহার কারণ কিবা কহ খানগণ। জানিবারে এই কখা করি স্মাকিঞ্চন 🕊 প্রথমেতে ভোষা সবে করি অস্বাকার। এখন সকলো নিলে এ কোন বিচার॥ মন্ত্রীর এতেক বাকা করিনা শ্রণ। নিউভাবে খ্যিগণ কহেন তখন॥ শুন শুন মন্ত্রীবর বলি তে তোমারে। বিচক্ষণ মন্ত্রী ভূমি রাজার সংসারে 🛊 অতিক বলিব কিবা ওয়ে মহাত্র । দেখিবে যে কালে হয় প্রাণ বিস্তুল ॥ দেই কালে প্রতিগ্রহ নংকারে পারে।তাহে কোন নাহি দোর জানিবে অন্তরে প্রাণা হায় কান ঘবে করে আগমন। স্বাকার নান নিতে পারিবে তখন ॥ তাহাতে পাতক ভাগাঁ কভু নাহি হবে।শান্ত্রের বিচার ইহা অন্তরে জানিবে আরো এক কথা বলি করহ এবণ। জামরা তণদী হই পহে মহাজুন্॥ এই প্রতিগ্রহ হেতু দ্যেত যদি হয়। তপোবলে বিনাশিব সেই সমুদয়॥ বিশেষতঃ শুন শুন মৌদের বচন। পুদ্ধর তীর্থেতে মোরা যাইব এখন । গুরুতর পাপ যদি হয় আচরণ। পুকরেতে দেই দব হবে বিমোচন। তাহার সমান তীর্থ নাহি কোথা আর । বলিশাম সার কথা ওহে গুণাধার॥ যেই রূপ পাপ আদি করি আচরণ। পুডর তীর্থেতে যদি করয়ে গমন॥ ুম্থাবিধি স্নান আদি সেই হানে করে। অমনি পাতক তার চলি যায় দূরে। তাছার শরীরে পাপ না রহে কখন। তাহারে হেরিলে হয় পুণা উপার্জ্জন। অধিক বলিব কিবা অমাত্য-প্রবর। সকল তীর্থের শ্রেষ্ঠ জানিবে পু্ষর॥ সেই তীর্থে বেই জন করিয়া গমন। তিনরাত্রি উপবাসে করয়ে যাপন ॥ তাহার অনন্ত ফল শান্তে হেন কর। বলিমু তোমার পাশে ওহে মহাশর 🛚

শ্বিমণ একমনে বসি তপোবনে। ভাদশ বর্ব আপ করিলে যুজনে ।
বিই কল লাভ হর ওছে মন্ত্রাবর। তাহান্ন অধিক কল দিবেন পুকর॥
পুকরে বারেকমাত্র যেই করে স্নান। সে জন সে ফল পায় ওছে মতিমান্॥
পুকর তীর্ণেতে যাত্রা যেই জন করে। পাতক নাহিক রহে তাহার শরীরে॥
হুর্গতি তাহার নাহি কলাচই হয়। শান্তের বিধান ইহা নাহিক সংশয়॥
এত বলি ঋবিগণ অমাত্য-প্রবরে। এইরি মারিয়া যান পবিত্র পুকরে॥
ভাদিমাঝে এইরি করিয়া মারণ। পুকর তীর্থেতে বাত্রা করেন তখন॥
এদিকেতে মন্ত্রীবর পুলকিত মনে। আনন্দে চলিয়া যান আপন ভবনে॥
এত বলি ঋষিগণে বিধির নন্দন। কহিলেন শুন শুন ওছে ঋবিগণ॥
পুকর-মাহাত্ম কথা শুনিলে সকলে। হেন তীর্থ নাহি আর এই ভূমগুলে॥
বিই...জন এই সব করয়ে গ্রবণ। অন্তিমে স্থগতি তার শান্তের বচন॥
স্বর্ব পাপে মুক্ত হয় সেই সাধুনর। দেহ অন্তে যায় সেই অমর-নগর॥
পুরাণে ধর্মের কথা সার হতে সার। মন দিয়া শুন যদি যাবে ভবপার॥

### मक्षेत्रकागलय वसारा।

বিশোক দ্বাদশী ও শবণ ধেমু প্রভৃতি এতের বিসরণ।
সনৎকুমার উবাচ।
দশম্যাং সংখ্রুতো ভূত্বা কুর্য্যাদৈ লঘুভোজনং।

পরেন্থি নিত্যক্রিয়ঃ স পূজরেৎ কেশবং স্থাীঃ॥

শ্ববিগণ সম্বোধিয়া সনত-কুমারে। কহিলেন ধীরে ধীরে স্থমধুর স্বরে ॥ তন শুন বিধিস্থত করি নিবেদন। শুনিতেছি তব মুখে অপূর্বে কথন॥ ইতি পূর্বের কত ত্রত বলেছ সবারে। আরো কিছু জিজ্ঞাসিছি এখন তোমারে কোন কোন ত্রত নর কৈলে অনুষ্ঠান। শোক দূর হয় তাহা ক্র মতিমান ॥ কোন দিনে উপবাস করিলে বিধানে। শোক দূর হয় তাহা ক্র সবা স্থানে॥ কিনে বছ এখাগাদি ভূমওলে হয়। অথবা কিরপে। ইয় ভবভীতিলয়॥ এই সব সবা পাশে করহ কীর্ত্তন। শুনিতে বাসনা বড়; করিতেছে মন॥ এত শুনি বিধিস্থত কহে মধুস্বরে। শুন শুন শ্বিগণ বলি সবাকারে॥ শিক্ষাসা করিলে যাহা করিব কীর্ত্তন। মন দিয়া শুন শ্বিত ওছে শ্বিগণ॥ ধর্ম হতে ধরাতলে নাহি কিছু আর। ধর্মই পরম বদু সার হতে সার॥ ধর্মের প্রসাদে হয় আশ্বর্ম্য ঘটন। ধর্মের প্রসাদে হয় আশ্বর্ম ঘটন।

वर्षे कर्षे (यह क्रम करत अनुकाम। अखिरम जाशात इत अतनूरत साम ॥ क्यां खरत करम मिडे मजारखर चरत। विश्व थेयर्ग इरा क्रानित करात में রহৎ ক্ষেত্র নরপতি তাহার প্রমাণ। মহাস্ত্রখে ছিল সেই ব্যাত কর্বস্থান 🎉 धर्यकर्षवरन रमरे नज्ञभिक रहा। धर्मज अमारि रह ज्वतक क्रा এত শুনি পুনঃ কহে যত ঋষিগণ। শুন শুন নিবেদন বিধির নন্দন 🎉 কি কার্য্য করিয়াছিল সেই নরপতি। সেই কথা কহ আগে ওহে মহামতি 🛭 সেই কলে কিবা সুখ পায় নররায়। সেই কথা কহ দেব আমা সবাকায়। শ্বিদের এই বাক্য করিয়া অবণ। शीटत शीटत বিধিস্থত কছেন তখন॥ খন শুন ঋষিগণ অপূর্বে কাহিনী। রহংক্ষেত্র নামে ছিল এক নৃপমণি ।। শৌর্ষে বার্ষ্যে তার সম কেও নাহি ছিল। তাঁহার গুণের কথা খ্যাত ভূমওলা। কোন কালে দৈভাগণে করিতে নিধন। দেবরাজ চিন্তাকুল নিরম্ভর রন 🛊 🤈 তার পর রহৎক্ষেত্রে লইয়া দাদরে। দৈত্য ধ্বংস করে ইন্দ্র জ্ঞানিবে অন্তরে 🖫 রাজার সাসাধ্য লয়ে দেব শচীপতি। দৈত্যগণে ধ্বংস করে খ্যাত বস্ত্রমতী। এই হেতু সেই রাজা দদা সর্বকণ। করিতেন সুরলোকে গ্রমনাগ্রম 🎚 চক্দ স্থ্য আদি করি যত গ্রহচয়। নৃপতির তেজে সবে পরাভুত **হয় ॥** তাঁহার দমান তেজ না ছিল কাহার। একচ্ছত্ত সেই রাজা অবনীমাঝার। বিপক ভাঁছার নাহি আছিল ধরায। সকলে অধীন ছিল জানিবে স্বায়। ভামুমতা নামে চিল উাহার মহিষা। ধরামাঝে সেই নারী অপূর্ব্ব রূপসী । দ্বিতীয় লক্ষ্মীর সম সেই সে ললনা। অনুপ্যা সতী সাধা সুন্দরী প্রমা । জাঁহার শাবণ্য রূপ করি দর্শন। সুরান্ধনা মূল সবে সুলজ্জিতা হন। নারীমাঝে যদি বলে সেই ভানুমতী। লক্ষ্মী সম শোভা ধরে সেই কান্তিমতী এই হেতু নরপতি একান্ত অন্তরে। বাসিতেন ভাল সদা সেই মহিয়ারে 🛊 মহিষী সহিতে রাজা হয়ে একমন। করিতেন ধর্মকর্ম স্থা সর্বক্ষণ 👪 গাহ স্থ্য ধরম কর্ম করি অনুষ্ঠান। নরপতি অনুক্ষণ করে অবস্থান। একদা বিশিষ্ঠ মুনি বিদিত ভূবনে। উপনীত হন আসি রাজার সদনে । মুনিবরে সমাগত করি দরশন। নরপতি অভ্যর্থনা কবেন তথন। বিধানে সংকার তাঁর করে নরপতি। সুখাদনে বদিলেন ঋষি মহামতি॥ বিনয় বচনে পরে নরপতি কয় ৷ শুন শুন নিবেদন ওহে ঘহোদয় ॥. পূর্বজন্মে কিবা ধর্ম করেছিত্ব আমি। যেই ফলে রাজ্য আদি লভেছি ইদানী।। এ হেন সম্পদ মম ক্লিসের কারণ। এত বল দেহে মম ওছে মহাজ্ম । **धरे मन जानिवादत बामना जागात। ज**ङ्खन कर छारा ७८२ संगोधांत्र ॥

চরিতার্থ কর নোরে করিয়া বর্ণন। চিন্তা দূর কর মদ ওতে মহাজ্ম। রাজাব এতেক বাক্য করিয়া অব্ণ। মিউভাবে ঋষিবর কহেন তখন। ওন ওন নরপতি কহিব তোমারে। ীলাবতী নামে নারী ছিল পুর্বকালে। বৈশ্যার তনয়া ছিল সেই লীলাবতী। শিবপরায়ণা নাগ্নী আছিল যুবতী॥ তার মন দল ছিল ধর্ম-কর্মে। ধর্মকর্ম অনুষ্ঠান করিত ধতনে॥ চাতুর্দাস্ত ভ্রত করি সেই লীলাবতী। লবণ-অচল দেয় ওহে মহামতি॥ পুষ্ণর তীর্থেতে দেয় লবণ-অচল। শুন শুন তার পর ওছে নরবর॥ 'বর্ণকার ছিলে তুমি জনম-অন্তরে। দৈবযোগে ঘটে যাহা ওন তার পরে॥ শীলাবতী অলস্কার করিতে নির্মাণ। তোমারে নিযুক্ত করে ওহে মতিমান॥ একদিন লীলাবতী প্রতিষ্ঠা কারণ। করিতে আদেশ দেন প্রতিমা গঠন।। শ্রমাযুক্ত হয়ে তুনি যত্ন সহকারে। প্রতিমা গড়িয়া ভূনি দিলেই তাহারে॥ ভব শিল্পনৈপুণ্যাদি করি দরশন। লালাবতী মনে মনে পুলকিত হন॥ স্মধিক মূল্য দিতে চাহিলেন ভিনি। কিন্তু তুনি নাছি নিলে এছে নৃপ্মণি। শ্ৰীকাৰ্য্য বলি তুমি মূল্য নাহি নিলে। পুরক্ষার নাহি নিলে তাহার গোচবে॥ এই যে তোমার পত্নী ভাত্মতী সভী। পূর্বজন্ম তব ভাত্যা কাছিল সুবতী॥ **্লীলাবতী স্থ**রিক করিতে নির্মাণ । ইহাঁরে আচেশ দেন ওছে মতিমান।। ভিজি করি নিরমিয়া দেষ ভাতুরতী। মূলা বা বেতন নাহি নিলেন যুবতী॥ **প্রেচুর ধনের কর্ত্রী ছিল লৌলাবতা। ধর্মকর্মে নিভব্য**য় করিদেন সতী॥ কালবশে মৃত্যু তাঁর হইল যখন। নিবলোকে সেই সতী কবিল গমন। সেই জন্মে তুমি নৃপ আছিলে নিধন। সংসার-যাভাষ কফ পেতে সর্ককণ। মহাকটে ছিলে তুমি ওহে নররায়। তার পর ঘটে যাহা বলি হে তোমায়। শীলাবতী ধর্মকর্ম করে আচরণ। সহাবতা তৃমি তাহে করিলে সাধন॥ সেই ফলে ইহ জন্মে ধনের ঈশ্বর। হইযাছ নহামতি তুমি নরবর॥ হুর্ব্যসম মহাতেজ। তুমি সেই ফলে। সপ্তদ্বীপ-অধিপতি জানিবে অভুরে॥ তব ভার্ব্যা ভানুমতা নিজ কর্মফলে। হয়েছে মহিনী তব জানিবে জন্তরে। যাহা হোক এক কথ করহ ভাবণ। যথেট বিভব তর রয়েছে এখন। খালাচল দান ভুমি করহ যতনে। ত্রত উপবাস কর ইবিহিত বিধানে॥ शर्ष कर्प अमूछीन करत (यह जन। जात कन त्महे वर्षे करत छेपार्ड्यन॥ কিন্তু উপদেশ দেয় বেই মহামতি। কিন্তা সহায়তা করে হৈই মহামতি। तिहे कम महाकल करत छेलार्क्टन। व्यञ्क्षतं यम युक्ति। कत्रह व्यवन॥ প্ররম ধার্ষিক তুমি ওবে নররায়। অধিক বলিব কিবা এখন তোমায়॥

জার্মার বচন নাহি করিও হেলন। ধর্মকর্মে সদা মন কর নিয়োজন । এত বলি ঋষিবর করেন প্রস্থান। নরপতি ধর্ম কর্ম করে অমুষ্ঠান ।

এত বলি বিধিত্বত কহে পুনরায়। শুন শুন ঋষিগণ বলি স্বাকায় ॥ ইতি পূর্বে যেই কথা জিজ্ঞানা করিলে। বলিতেছি নেই কথা শুনহ সাদরে॥ নানাবিধ ত্রত আছে শাত্রের বিধান। উপসাস কত আছে শাত্রের প্রমাণ 🛊 সকলি জানিবে নরহিতের কারণ। একে একে বলিতেছি শুন সর্বজন॥ . বিশোক-দাদশী ত্রত অতি অনুত্রম। দেই কথা আগে বলি করহ ভাবণ 🐩 সংযত হইরা রবে দশ্মীর দিনে। আহার করিবে লঘু বিহিত বিধানে॥ পরদিন প্রত্যুষেতে করি গাত্রোত্থান। প্রাতঃ ক্রিয়া সমাপিয়া করিবেক স্নান॥ তার পর যথাসাধ্য নানা উপহারে। পূজিবে কেশ্ব দেবে সম্যক্ প্রকারে॥ উপবাদে সেই দিন করিবে যাপন। তার পর দিন শুন ওছে ঋষিপ ॥ সর্বেবিধিজলে আর পঞ্চাব্য জলে। স্নান করি শুভ মাল্য ধরিবেক গলে॥ শুল্ল বস্ত্র নিজ অঙ্গে করিবে ধারণ। শ্রীপতির পূজা পরে করিবে দাধন॥ বিশোকার নম বলি পুজি পদহয়ে। বরদার নম এই মন্ত্রে জঞ্চাছরে॥। গণেশায় নম এ মন্ত্র করি উক্তারণ। জানুদ্বয়ে পূজা আদি করিবে गাধন॥ कम्पर्शिय नम वान भृषि एक एमर्ग । मार्याय नम मरख शृष्टि कि एरिमर्ग । ' বৈকুপায় নম বলি কপ্তেতে পৃজিবে। বামনায় নমঃ ব**লি সানন্দ হৃদেয়ে॥** ললাটেতে পুজ। আদি করিবে সাধন। স্থতিল কুণ্ডাদি পরে করিয়া গঠন॥ তার মঝে দোম সূর্যা লহ্মীরে পূজিবে। তুক্তি পুষ্টিসিদ্ধি ঋদ্ধি শ্রীহরে অর্পিবে। ''অশেষ সন্তাপহারী শোকবিনাশন। বরপ্রদ ভারবান্দেব নারায়ণ॥ বিশোক করুন মোরে"এই মন্ত্র পড়ে। পূজিবেক নারায়ণে অতীব সাদরে॥. যথাবিধি কুণ্ড পরে করিয়া ভাগন। বিধানে করিবে হোম ওহে ঋষিগণ। তার পর নৃত্যগীত উৎসব করিবে। এইত ব্রতের বিধি অন্তরে জানিবে॥ পর দিন নিমন্ত্রণ করিয়া যতনে। কিপ্রদম্পতিরে খাল্য দিবেক বিধানে॥ বিধানে সবারে পরে করাবে ভোলে। যথাশক্তি বসনাদি করিবে অর্পণ ॥ অলক্ষার মাল্য আদি দিবেক নাদরে। বিপ্রদম্পতির পূদা করিবেক পরে॥ **এहेक्राल मारम मारम जेंड जाइत्। कित्रिक यथाविधि ७ एड संविध् ॥** . সমাপন কাল ঘবে হবে উপন্থিত। শ্যাদান দিবে পরে লবণ সহিত।। শুড়ধেনু সহ কিলা করিবে অর্পণ। এই ত শান্তের বিধি ওহে ঋবিগণ ॥ বিপুল এখার্যা বাঞ্চা করে ঘেই জন। সর্ণায়ী স্থ্যমূতি করিয়া গঠন । नको मह (नहे मूर्कि कतिदव अतान। এইত जाउत विधि भाज नर्स दान।

देश यह यह पूष्ट कतिरव वर्णन। वनिरुष्टि महे कथा खन मर्वेखना। উৎপদ করবী জাতি আর সিম্বুবার। মলিকা কর্দম আদি আর যে মন্দার॥ , এই সব পুষ্প দিবে শান্তের বচন। কহিলাম স্বাপাশে ওছে ঋষিগণ। এত শুনি শ্বাযিগণ জিজ্ঞাসে সাদরে। শুন শুন বিধিনুত নিবেদি তোমারে॥ লবণ ধেনুর বিধি করহ বর্ণন। তাহার স্বরূপ কিবা ওহে মহাত্মন। কি মন্ত্রে কবিবে দান ওছে মহাশয। এই সব শুনিবারে উৎস্ক কাদয়॥ এত শুনি বিধিমুঠ কছেন তথন। শুন শুন ঋষিগণ করিব 'বুর্ণন।। লবণ ধেনুর বিধি বলিব সবারে। তাহার স্বরূপ শুন একান্ত জন্তরে॥ , কিবা ফল হয় তাহে করিব বর্ণন। মন দিয়া শুন তাহা ৩হে ঋবিগণ। গোময়ে লেপন করি ভূমির উপর। দর্ভ আত্তরণ তাহে করিবে সত্তর॥ ক্কেলার চর্ম পরে করিবে হাপন। মুওশুদ্ধ শুদ্ধ চর্ম ওছে ঋষিগণ।। চারি হন্ত পরিমিত সেই চর্ম হবে। পূর্ববাস্য করিরা তাহা স্থাপন করিবে॥ ্বরে তাহা লবণেতে করিয়া পূরণ। তদপেকা কুদ্র এক মুগের চরম॥ দিশইয়া তাহাতে পূর্ণ করিবে লবণ। করিবেক বৎসাকার ওছে ঋষিগণা পরে দেই হুই ধেনু আর যে বংদেরে।করিবে খেতকদ্বলে আচ্ছাদিত পরে। পৃষ্ঠদেশে তাত্রপাত্র করিবে অর্পণ। রোমস্থানে চামর থেত দিবে সাধুজন॥ **জন্বয়ে বিক্রম আর ন**বনীত স্তনে। অপিয়া আরক্তপরে করিবে বিধানে। করিবে কৌষেয় বস্ত্রে তাহা আচ্ছাদন। এরপে সবংস ধেনু করিয়া গঠন॥ भूभ कीभ जाति तिया जर्कना कतिरव। श्रार्थना कतिरव भरत छन वनि मरव॥ <sup>ধ</sup> কামধেনু রূপে লক্ষা দেবমধ্যে রর। সেই ধেনু এই ধেনু নাহিক সংশয়॥ আমার সকল পাপ করুন মোচন। এই ডিক্সা মার্গি আমি ধেমুর সদন॥ যেই লক্ষী অবস্থিতা বিষ্ণু-বক্ষঃস্থলে। সেই লক্ষী এই ধেনু জানিগো অন্তরে॥ চন্দ্র-সূর্য্যে শক্তিরূপে যেই লক্ষ্মী রয়। সেই লক্ষ্মী এই ধেনু নাহিক সংশয়॥ সর্বশান্তি এই ধেনু করুন আমার।" প্রার্থনা করিয়া দায়ু এ হেন প্রকার॥ বিপ্রগণে সেই ধেনু করিবে অর্পন। বলিলাম বিধি এই ওতে ঋষিগণ॥ অন্ত অন্ত ধেমু যাহা পাপ নাশ করে। বলিতেছি সেই কথা ভনহ সাদরে॥ বছবিধ ধেনু আছে শাস্ত্রের বচন। কত বা বলিব তাহা ওছে ঋগণ । প্রথেতু মৃতথেতু তিলথেতু আর। জলথেতু ক্লীরথেতু সার হতে সার॥ মধুধৈকু রসংধকু কত ধেকু হয়। শর্করা লবণ আদি ওছে ঋষিচয়। पृक्तिपृक्ति देवहां करत राहे माध्यम । शर्य्य शर्य्य (वह द्विन कतिरव वर्शन ॥ বিশোক স্বার্থশী এত করি অনুষ্ঠান। গুড়বেনু সমর্পিবে শাস্তের বিধান॥

বিশোক দাদশী কল অতি চমংকার। পাপরাশি ভশা হয় প্রভাবে তাহার॥ সকল সৌভাগ্য লভে সেই অতীজন। বিষ্ণুপুরে অন্তকালে করয়ে গমন। এই ত্রত যথাবিধি করি আচরণ। গুড়ধেনু সমর্পিলে ওচে ঋষিগণ। মহাফল পার সেই শান্তের প্রমাণ। বলিলাম স্বাপাশে শান্তের বিধান॥ বচন শুনি যত ঋষিগণ। জিজ্ঞাসেন পুন ওহে বিধির নন্দন।। যে যে দান **(मर्दलादक नाहि इत कत्। सिर्ट म**व कल कह छट मटहाम्स ॥ বলে পুনঃ বিধির নন্দন। শুন শুন বলিতেছি ওহে ঋষিগণ ॥ খাচুল দানেতে পুণ্য হয় যে অকর। দশধ। অচল দান শাত্তের নির্ণয় । ধারা। । শ্রমতঃ জানিবে জন্তরে। লবণ অচল হুই গুড়াচল পরে।। চতুর্থ সুবর্ণাচল পরে তিলাচল। কার্পাস অচল আর মতের অচল॥ রহ্লাচল তার পর জানিবে অন্তরে। রজত অচল পরে কহি সবাকারে॥ দশম শর্কবাচল শাস্ত্রের বচন। সংক্রেপে বলিকু সব ওহে ঋষিগণ॥ অয়ন িষুবদ্ধ আরু ব্যতীপাতে। দিনক্ষয়ে বিবাহেতে আর উৎসবেতে ॥যজ্ঞদিনে দ্বাদশীতে পৌর্ণমাসীদিনে। কর্ত্তব্য অচল দান শাস্ত্রের বিধানে ॥ ভূমির উপরে করি গোপয় লেপন 🗓 তার পর দর্ভরাশি দিবে আন্তরণ॥ তার পর ধান্তাচল স্থাপন করিবে। সহস্র দ্রোণ প্রমাণ ধান্ত দিতে হবে॥ তিনটী স্বর্ণের ব্লক্ষ করিয়া গঠন। মধ্যভাগে পরে তাহা করিবে স্থাপন॥ চারিটী রজতশৃঙ্গ চারিদিকে দিবে। এরপেতে ধান্যাচল স্থাপন করিবে॥ যুক্তাফল সম শুল্র লইয়া বসন। তাহার উপরে পরে দিবে আচ্ছাদন॥ রতনে ভূষিত তাহা করিবেক পরে। আনাইবে লোকপালগণেরে সাদরে ॥ নানাবিধ ফলগুষ্প মাল্য আদি দিয়ে । শোভিত করিবে পরে সানন্দ হৃদয়ে। এইরূপে ধান্যাচল করিয়া স্থাপন 🔏 যথাবিধি পূজা পরে করিবে দাধন।। প্রাথনা করিবে পরে যেই মন্ত্র পড়ে। মন দিল্লা শুন তাহা সবাকারে বলি॥ "অচল তোমার কাছে প্রার্থনা আফার। হয়েছ আমার গৃছে পর্বত-আকার।। পর্বতের নাম তুমি করেছ ধারণ। আমার শক্ষল তুমি করহ সাধন।। পূজিত হইয়া তুমি আমার আগারে। কল্যাণ বিধান কর নিবেদি তোমারে॥ পরা শান্তি দেও তৃমি ওহে গিরি-বর। ভগবান ঈশ তুমি অচল-ঈশব ॥ তুমি ত্রন্ধা তুমি বিফু তুমি দিবাকর। তুমি সনাতন ওছে অচলপ্রবর ॥ সদত আমার রক্ষা করছ বিধান।" এরুপ প্রার্থনা করি সাধু মতিমান। বছবিধ উপচারে করিয়ে পুজন। উৎসর্গ করিবে পরে ওবৈ ঋষিগণ ॥ অর্পণ করিবে পরে তাছগু-নিকরে। শান্তের বিধান এই कहि नवाकारत ॥ धरेक्सर्भ धामाइन कतित वर्णे। यशकन भाष महे भारतत

बिहाना देश कर तो देश केंग्र कान देशिन कारण । जोरविश कार के कि

এখন শুনৰ যত ওহে ঋষিগণ। লবণ-জচলবিধি করিব কীর্তনীয়, দশ জার লবণেতে করিলে নির্মাণ। উত্তম অচল হয় শাস্ত্রের বিধান॥ 🚣 পাঁচ ভার লবণেতে জানিবে মধ্যম। তিন ভারে অধম যে শান্তের বচন । 'ম্বর্ণ-क्षक वर्गमुक माजात्व मानत्त । सिक्षण निव्रम आर् शास्त्र अरुल ॥ हेस আদি লোকপাল করি আবাহন। যথাবি ধ পূর্ব্বমত করিবে পূজন ।।, থৈয়াপ ্বিপ্রার্থনা মন্ত্র শুন ঝবিগণ। যেরূপ প্রার্থনা বাকা করিবে পঠন।। "दिवशेष , মধ্যে যথা ভোষ্ঠ নারায়ণ। যোগীর প্রধান যথা দেব পঞ্চানন।। সমস্ত ্মন্ত্রের শ্রেষ্ঠ যেমন ওঙ্কার। দেরূপ প্রধান তুমি সামগ্রী-মাঝার॥ এওঁ কিছু দ্বাহে আছে জগত-মাঝারে। সবার প্রধান তুনি জানিগো অন্তরে॥ আমার সৌভাগ্য তুমি করহ বিধান। সম্পদ বিস্তাব কর অতল ধীমান।।" এরপ পার্থনা করি অতি ভক্তিভরে। বিধানে অর্চ্চনা পরে করিবে সাদরে॥ ্রীর পর বিপ্রকরে করিবে প্রদান। এই ত শাস্তের বিধি খ্যাত সর্ব্বস্থান। **রবণ-অচল দান করে যেই জন।** ত্রনলোকে অন্তকালে সে করে গমন। ্রিশেপকোটি ত্রন্ধানে সেই জন রয়। শান্তের বচন এই নাঞ্চক সংশ্রা। কুনক অচল দান যেই রূপে করে। বলিতেছি দেই কথা শুনহ সাদরে !! ্রিছত্ত্রেক প্রশ্নিত কাঞ্চন লইয়ে। করিবেক স্থাচল একান্ত সমযে।। ্ট্রিতম অচল এই শান্তের বিধান। মধ্যম পঞ্চাশ পলে খ্যাত সক্ষান॥ তিদর্ধ প্রমাণে হয় অচল অধম। এই ত শাস্ত্রের বিধি ওছে শ্রীৰ্থাণ।। ্রোকপালগণে ইথে করিয়া স্থাপন। বথাবিধি আবাহন করিবে সাধন।। পুজিবেক তার পর বিহিত বিধানে। প্রার্থনা করিবে পরে ভক্তিযুক্ত খনে॥ . শকনক অচল তুমি অচলপ্রবর। স্থাপিয়াছি মম গৃহে তন অভ্ঞাপর।। ু 🚰 📆 বির্বাধ্য তেজোমূর্ত্তি তুমি হে কাঞ্চন। তোমারে প্রণাম করি অচল-শ্লাজন।। সবে রক্ষা কর অচল-ঈশর।" এরপে প্রার্থনা করি পুজিবেক পার।। মর্গ করিয়া পরে বিপ্রগণ-করে। করিবেক সমর্গ সামন আন্তরে।। এইরেপে অর্ণাচল যে করে অর্পণ। বৃদ্ধলোকে যায় ক্লেই শাহের্য্ন, বচন ॥ ্ কপুপকোটি ভ্রদ্ধলোকে তাহার বসতি। পর্য আনন্দে তঞ্চা করে অরুস্থিতি।! ভোগ অতে ধরাধানে সে করে গমন। মহাসুখী হয় লেই লভিয়া জনম।। ভিলাচন যেই রূপে করিবে প্রদান। বলিতেছি সেই কথা করে অবধান।। विकारन (यह कन करत नगर्यो। विक्रानांक तनहे, कन, कनता गमन।।

क्लिकोइ जिले क्रियो बार्क मेटिया । उद्धर जहरा क्यू मारिक दूसने वरण ह मराम शक्य छोटेने व्यक्त य जिल्ला भारता विश्वन अर्थ कहि न्याक्टिन তিলাচ্দ মুখাবিধি করিয়া গঠন। পূর্বেমত দেব আদি করিয়া ष्पात्राचेन यशाविधि कतिया माल्टत । शार्थना कतित्व शत्त कि मनाकाटक "বিশ্বংহ হতে তুমি লভেছ জনম। হব্যকব্যে সুপৰিত্ৰ তুমি মহাজ্মন 👸 আমাকে পবিত্র করি করহ উদ্ধাব।" প্রার্থনা কবিবে বিধি এ হেন প্রকার এইরেপে আমন্ত্রণ করি যেই জন। তিলাচল দান করে ওহে ঋষিগণ 🕍 তুল্ বিক্লব পদ সেই জন পায়। বদ্ধ নাহি হয় ছেই ভববদ্ধ দায়॥ পুনর বি নাহি আদে ভবকারাগারে। নিত্যানন্দে রহে সেই বৈকুণ্ঠ-নগরে॥ তিলাচশ্ দান বংগা করিলে শ্রমণ। কার্পাস অচলদান মলিব এখন॥ বিংশ ভারে। সর্কোত্তম কার্পাস-অচল। মধ্যম দশমভারে জানে সর্কানর॥ স্কাধ্য শাস্ত্রের বচন। যেমন শক্তি যার করিবে তেমন॥ এইরূপে নির-। মিয়া কার্পাস-অচল। পূর্বমত পূজা আদি করিয়া সকল।। প্রার্থনা করিবে ' পরে একার মন্তরে। শুন শুন দেই মন্ত্র কহি সবাকারে॥ "তোমা হতে লোক সব লভেছে জনম। নম্কার তব পদে ওহে মহাত্মন।। আমাক্ষে পাত্তক হতে করহ উদ্ধার।" প্রার্থনা করিবে এই শান্ত্রের বিচার। কার্পান্স অচল দান করিনু কীর্ত্তন। যেই জন এই দান কবে সমর্পণ॥ অন্তকার্টে লভে দেই পরমা স্থগতি। করতলে রহে তার ভুকতি মুকতি॥ ষেই দ্ধাপে করিবে অর্পণ। বি তিছি সেই কথা কবহ প্রবণ॥ পরিষ্ক্রিছ মুতেতে গঠিলে। উত্তথ অচণ হয় শাস্ত্রে হেন বলে॥ जिह्ना दिक्दल मनाम ऋहत। शांह कुछ नर्वराथम स्य श्रुटाह्न ॥ মুতার্টুর্ল করিষা স্থাপন। পূর্বমত লোকপালে করি আবাহন॥ পৃজ্ঞ জাদি করিয়া সাদরে। প্রার্থনা করিবে পরে অতি ভক্তি ভরে। "অর্ঠির তেজমোগে চোমার জনম। বিঞুর সদৃশ তুমি ওছে মহাস্থান্ ॥ ভোষাতৃত সংস্থিত ত্রন্ধ যিনি তেন্দোময়।পরিত্রাণ কর মোরে ওহে মহোর এরপ প্রার্থনা করি অতি ভক্তিভরে। উৎদর্গ করিবে তাহা একান্ত অন্তরে তার পর্কুবিপ্রগণে করিবে অর্পণ। প্রই ত শান্তের বিধি ওছে ঋষিগণ য়তাচল সাম করে যেই মহামতি। মহাপাপে সেই সাধু পাঘ অব্যাহতি॥ অন্তকালে দেই জন ত্যজি কলেবর। শিবের স্মীপে যায কৈলাস ন্যুর্॥ व्यानत्य देकलामभूदतं करत व्यवसान । कल्भरकारि तरह उथा रमहे मिनान धरेक्ररण पूर्वारकार्य कतिया कथाता। मानवरकारकटक रमहे कारम पून

बहुठ कृत्मारण दश छाद। ब्राह्मका मिनक्क रश तिहे बार्ट्यक राज्न पार चिन्नवन्त्र जिल्लामी तिहे केन दश मोर्ट्यत नहने देश कक् पिया महा।

व्यक्तित तञ्चाहन नाटनत विधान । वनिट्छि छन नटव भाटिखे व्यापान ॥ সহত্র মুক্তাকল লইয়া শাদরে। অচল যদ্যপি করে অতি ভক্তিতরে॥ উত্তম অচল তারে কছে ঋষিগণ। শাস্ত্রের প্রমাণ এই মন্ত্রপ বচন । পঞ্চলত খুকা দিয়া করিলে গঠন। মধ্যম তাহারে কহে ওহে ঋষিগণ।। ছুইশত শকাশেতে অধন যে হয়। কহিনু সবার পালে ওহে ঋষিচয়। এইরপে ক্রিলা জারা অচল গঠিয়ে। প্রকলিকে বজ্র তার বিন্যাস করিয়ে॥ দক্ষিণেতে বিশান করিবে বিশাস। নিয়ম আছয়ে এই শাস্ত্রেতে প্রকাশ। বিশাস ক্রিবে পরে বৈদূর্ঘ্য পশ্চিমে। পদ্মরাগ বিন্যাসিবে উত্তরেতে ক্রমে। ভার শর ভন ভন ওছে ঋষিগণ। পূর্বমত লোকপালে ক্ররিবে স্থাপন।। আবাহন পুরুমাদি করিবে যতনে। প্রার্থনা করিবে পরে শুন সর্বজনে॥ "শুন শুন <mark>রত্নাচল আ</mark>মার বচন। "রত্নমধ্যে ব্যবস্থিত যত দেবগণ।। তুমি সেই রত্নময় 🕶 🚅 অচল। আমারে উদ্ধার কর ওহে গিরিবর॥ রত্নদান হেতু দেই দৈব নারায়ণ। করিছেন জগতেতে সবার সৃজন। বজ্র দান হেতৃ তিনি পুজ্য স্বাকার। অতএব ওন শুন ওহে গুণাধার।। তোমাকে অর্পণ **দামি করিব যতনে। আমারে উদ্ধার কর কহি তব স্থানে॥'' এর**পে র্থিনা করি সাধু তার পর। বিপ্রগণে দিবে তাহা করি যোড়কর॥ এইরুপে ্রীচল যে করে প্রদান। কোটিকপ্প বিষ্ণুলোকে করে অবস্থান। বেন্ধহত্যা ্রীদি পাপ হয় বিনাশন। তভানে বা অভ্তানে যদি করয়ে সাধন। রত্নাচল-ান কথা শুনিশে সকলে। রজত অচল দান শুন অতঃপরে॥ রজত অযুত শলৈ করিলে নির্মাণ। উত্তম অচল হয় শান্তের বিধান।। তাহার অর্দ্ধেকে ছার মধ্যম অচল। তদর্ষে কনিষ্ঠ ওহে তাপদ সকল॥ ইথেও অশক্ত যদি ইয় কোন জন। বিশপল রজতেতে করিবে গঠন। তার পর পূর্বেগত ক্রিবাদি করি। প্রার্থনা করিতে পারে করযোড় করি॥ "রক্ত, অচল ন আমার বচন। পিতৃলোকপ্রিয় তুমি ওছে মহাজুন।। ধর্মের বল্লভ ভূমি ইন্দ্রপ্রিয়তম। তোমারে বাসেন ভাল দেব পুঞানন। অতএব নিবেদন তোমার গোচরে। সংসার-সাগর হতে উদ্ধার আমারে।। শোক हु । सात्र यक कत विनामन। जामात हत्रत्य कति अहे निरंदर्ग ॥ अ अत्रथ द्यार्थमा कति त्रज्ञ - अठटन । अर्थन कतिर्च शरत दिजाँ केंद्र करत् ॥ अरेतर्थ [बर्ड अने करते नगर्भा । नद्धा (श्राकानकन, शांत क्वरे अम । अस्कारन

मह जन निवद्गादक यात्र। (कार्षिकण्य महानत्म तदित उथाय ॥ श्रादकारी जहरू शहर ताई मार्कन । पर्छ क्रान्ट जानि ल**ड्डा जनग** ॥ अहेक नार्कित विधि कहिन् भवादत । भर्कताहरलत कथा अन अज्ञान अविकास स्व রাতে করিলে গঠন। উত্তম অচল হয় শাস্ত্রের বচন।। তদর্পে মধ্য रक्ष क्रानित्व व्यख्टत । जन्दर्भ किनक्षे क्रान किर मवाकादत । जिनक्ष हर् পারে শান্তের বচন। যাহার যেরপ শক্তি করিবে গঠন।। জচল গঠিয়া পরে মন্তকে তাহার। রচিবে মন্দর-আদি শাস্ত্রের বিচার।। আদি পরে, রচিবে যতনে। পূর্বেমত আকাহিবে লোকপালগণে। যথাবি তাঁহা দবে করিয়া পূজন। প্রার্থনা করিবে পরে ওহে খবিগণ।। "হরিধ মধ্য হতে শর্করা জনমে। তা দিয়ে অচল এই গঠেছি যতনে।। আছঞ্জ ইনি মোরে করুন্ উদ্ধার। বিনয়ে প্রার্থনা করি নিকটে ইহার।।" এরে প্রার্থনা করি শর্করা-অচণে। উৎসর্গ করিবে পরে অতিভক্তিভরে 📳 তার পর বিপ্রগণে করিবে প্রদান। কহিমু স্বার পাশে শাস্ত্রের বিধান 🛍 (धरेक्नार्भ (यरे जन करत मगर्भन। मर्क्नार्भ मुक्त रहा (मरे माधुजन।। अख-কালে শিবলোকে সেই জন যায়। আনন্দে বসতি করে যাইয়া তথার 🎁 অচলদানের কথা করিনু বর্ণন। অধিক বলিব কিবা ওছে ঋষিগণ্।। বে কোন অচল দান করিতে হইবে। অকার লবণ পূর্ববিদনেতে খাইবে॥ পর উৎসর্গ সাধু করিবে বিধানে। এই ত শান্তের বিধি কহি স্বাস্থানে। অচল দানের কথা করিনু বর্ণন। আর কি শুনিতে বাঞ্ছা কছ ঋষিগণ।

এত শুনি ঋষিগণ কছে পুনরায়। নিবেদন করি প্রভু এখন তোমার ।
সংসারে নিন্তার হয় যেরপ করিলে। দে সব অতের কথা কহ সবাকারে ।
এত শুনি পুনঃ কহে বিধির নন্দন। শুন শুন বলিতেছি ওছে ঋষিগণ ।
কল্যাণ-সপ্তনী নামে এক এত হয়। বিশোক সপ্তনী নামে ওহে ঋষিচয় ।
পূর্য্য সম্বন্ধীয় এত জানিবে অন্তরে। এ ছুয়ে অনন্ত কল শান্তের বিচারে।
শুনু পক্ষে সপ্তনীতে রবিবার হয়। কল্যাণ-স্পুনী এত তাহারেই কয় ।
আন আদি সমাপিয়া দে দিন প্রভাতে। বসিবে পূর্বাস্য হয়ে ভতিমুক্ত
ভিতে । অকদল পদ্ম করি সন্মুখে নির্দাণ। আবাহিবে বিফুদেবে সেই মৃতি
মান । পুলা আদি দিয়া তাঁরে করি আবাহন। ঘণাবিধি যথাশক্তি করিকে
পূজন। ভার শার মধাশক্তি নানা উপচারে। অর্চনা করিবে সাধু একার
অন্তরে। ওর্গণ সপ্তনীযুক্ত প্রতি রবিবারে। তারোদশ মাসাবিধি প্রত্তিম

भागरत ॥ जांत्र भेत्र जरशोषण ८४म् पिर्व पान । तुळ जनकात पिता माधू यि मान ॥ कल्यान-मश्रमी जिल देशारत केता। यह जन करत हेश अरह श्राविष्य। ঁসর্বপাপে মুক্ত হয় সেই সাধুজন। জারোগ্য লভয়ে সেই শান্তের বচন व्यक्तारल वर्षारलारक त्महे जन याय। यत्नत व्यानत्म त्रद्ध यादेश छ्याय ব্দমন্ত কলত ত্রত শান্তের বচন। দেবগণ করে ইহা ওহে ঋষিগণ॥ কল্যাণ मध्यो कथा खनित्न मकत्न । वित्माकमध्यो छन करि नवाकाद्र । विशाद এই ত্রত করে ভক্তিভরে। শোক নাহি পায় সেই আপন অন্তরে॥ মাখ-मारम एक्र शिक्ष शिक्षीत पिता। এक छक्त राय तरव विश्वि विश्वासना ৰুদ্দ ভূষণ আদি করিয়া অর্পণ। পূজিবে ভাক্ষরদেবে ওহে ঋষিগণ।। তার পার ষষ্ঠীদিনে একার অন্তবে। পূজিবে পুনশ্চ তথা অতি ভব্তিভরে। উপবাদে ষষ্ঠীদিন করিবে ঘাপন। সপ্তমীতে বিধানেতে করিবে ভোজন। **লবণ তৈলাদি ভিন্ন ক**রিবে আহার। একভক্ত হয়ে রবে শাস্ত্রের বিচার॥ এক্সপে বিশোক ত্রত করে যেই জন। ইহ লোকে শোক তুঃখ না পায় কখনা। প্রলোকে ইন্দ্রপদ সেই জন পার। শাস্ত্রের প্রমাণ এই কহিনু স্বার॥ আয় এক বত আছে শুন সর্বজনে। যেরপ বিধান আছে শাস্ত্রের বচনে। মার্গণীর্ষে শুক্লাষষ্ঠী পেয়ে সাধুজন। উপবাস করি রবে ওছে ঋষিগণ। **সপ্তমীতে শর্করাতে পদ্ম বিরচিয়ে। কুটুম্ব বিপ্রেরে দিবে একান্ত হৃদ**য়ে। বর্ষাবধি এইরূপ যেই করে দান। সে পায় অনন্ত ফল শান্ত্রের বিধান। এই ত ত্রনিলে সব ওহে ঋষিগণ। মন্দার সপ্তমী ত্রত ত্রনহ এখন। মাঘ-স্থানে শুক্লপক্ষে পঞ্চমীর দিনে । সংযত হইয়া রবে বিহিত বিধানে॥ **শবুভোজী হয়ে রবে ওহে ঋষিগণ।** ষ্ঠীতে প্রভাতে পরে উঠিয়া তখন॥ নিত্যক্রিয়া সমাপিয়া বিহিত বিধানে। উপবাস করি রবে শাস্তের প্রমাণে। শর্মদিন প্রাতঃকালে করি গাত্রোত্থান। নিত্যক্রিয়া সমাপিবে সেই মতিমান॥ ত্বর্ণ পুরুষ এক গঠিয়া সাদরে। ভাক্তর সমান জ্ঞান করিবে অন্তরে। धेथाण क्रि উপচারে করিবে পূজন। একভক্ত হয়ে রবে নিজে সাধুজন। তৈল ও লবণ নাহি সেবন করিবে। বিত্তশাঠ্য বিসর্জ্জন করিতে হইবে॥ এইরূপে তাত করে যেই সাধুজন। সৌভাগ্য সম্পদ পাৰ্দ্ধ শাস্ত্রের বচন n এই ত্রত কথা ওনে যেই সাধুনর। অতীব পবিত্র হয় তাহার অন্তর॥ किছू পাপ নাহি রহে তাহার শরীরে। সর্বপূর্ণে মুক্ত হয় শাত্মের বিচারে॥ শুভ নগুদীর কথা ওনহ এখন। মহাশ্রেষ্ঠ ত্রত সেই শাক্তের বচন॥ তিতি উপবাস করে যেই সাধু-নর। রোগ শোক নাহি ঘেরে তার ক**লেবর**্ট আৰিন মানেতে শুক্লা সপ্তমীর দিনে। স্নান আদি নিত্যক্রিয়া করিয়া বিধানে ঘথাবিধি স্বস্তিবাক্য করি উচ্চারণ। কপিলা দেবীর পূজা করিবে সাধন। গন্ধ মাল্য আদি দিয়া পৃঞ্জিবে যতনে। তার পর শুন শুন কহি সবাস্থানে 🏗 এক প্রস্থ তিল রাখি তাত্রের আধারে। কাঞ্চনের র্য এক রাখিবে দাদরে। উৎসর্গ করিবে তাহা সেই সাধুজন। সূর্য্যের প্রীত্যর্থে মাত্র ওচে ঋষিগ্ৰ ॥ এইরূপ ত্রত যেই করে অনুষ্ঠান। জম্মে জমে হয় সেই অতি কীর্তিমান। সুরবালাগণ তারে অমরনগরে। সেবা করে নিরস্তর অতি ভক্তিভরে॥ পুণ্যভোগ অত্তে পরে সেই সাধুজন। মর্ত্যলোকে পুনরায় লভ্যে জন।। সপ্তদ্বীপ-অধিপতি সেই জন হয়। শান্ত্রের বচন ইহা কভু মিথ্যা নুয়া। শত শত বেদাহত্যা করি যেই জন। জ্রণহত্যা কত শত করিয়া সাধন ॥ ' এই ব্রত যদি করে একান্ত অন্তরে। সর্বপাপে মুক্ত হয় শান্তের বিচারে॥ <sup>†</sup> ব্রতের মাহাত্ম্য যেই করয়ে প্রবণ। অথবা ভক্তি করি করে অধ্যয়ন। বিস্তাধর-নায়কত্ব সেই জন পায়। শাত্রের বচন এই কহিনু স্বায়॥ এতেক বচন শুনি যত ঋষিগণ। বিধিমতে পুনঃ কহে ওহে মহাস্মন॥ সপ্ত দেবলোক আছে শাস্ত্রে হেন কয়। ভূলোক করিয়া আদি ওতে মহোদয়॥ সর্বলোকে আ'ধপত্য হয় কি প্রকারে। সেই কথা কহ দেব আমা সবাকারে শুভ আয়ু কিবা রূপে পায় নরগণ। আরোগ্য লভয়ে কিসে ওছে মহাজ্ম।। লক্ষীবস্ত কিলে হয় বল কুপা করে। এই সব শুনিবারে বাসনা অন্তরে॥ এত শুনি বিধিমূত কহেন তখন। শুন শুন বলিতেছি ওহে ঋষিগণ॥ পুর্বেকালে দেবরাজ অমর-নগরে। অসুরগণেরে ধ্রংস করিবার তরে॥ 🗒 जारनम निर्लन रेम्डा ध्रःरमत कांत्र।। বায়ু সহ অনলেরে করি সম্বোধন। আজ্ঞা পেয়ে অগ্নিদেব বায়ু সহকারে। অসংখ্য অসংখ্য দৈত্য বিনাশিত করে ্ কমলাকু কালদংক্র আর বিরোচন। সংহাদ তারক আদি ওছে ঋষিগণ॥ কভিপয় দৈত্যমাত্র প্রাণে বেচে রয়। সমুদ্রে প্রবেশ করে সেই দৈত্যচয় ॥ দৈত্যগণ পশে সেই সাগরের জলে। আপন আপন প্রাণ রক্ষিবার তরে॥ তাহাদিগে বিনাশিতে হইয়া অ্কম। বায়ু সহ অগ্নিদেব করেন গমন ॥ গ্রুবন করেন দোঁতে আপনার স্থানে। মনে যনে ক্ষুগ্রুবন এই সে কারণে॥ নানা উপদ্রব করে দেবগণ পরে 🗗 अमिटक सानवन्। थाकिया मानटेत । একবার জল হতে করি গাত্রোত্মান। এখানে সেখানে সবে যায় নানাস্থান। পুনরায় জলগর্ভে হয় নিম্পন।। मूनि श्रवि क्रमग्रल कंत्रिश शीउन।

धारेत्रदेश करहर्त कृतिया चांध्रय। मकरमदत शिक् रामविकास । कारा प्रिय दम्बताम स्टा क्रूबमन। शूनक अनलद्वर किन मरमाथन॥ मारमण निरमन भूनः नानव निधरन। अन अन अधिरस्व करि उद भारन । শাসরের জল ভূমি করহ শোষণ। তাহা হলে দানবেরা **হবে বিদাশন**। ইচ্ছের এতেক বাক্য করিয়া প্রবণ। তায়িদেব ধীবে ধীরে কংহন তখন॥ 🐯ন তান দেবরাজ বচন আমার। দেবের অধিপ তুমি ততের আধার॥ তোমার আবেশে কৈলে সাগর শোষণ। অধর্ম হইবে মম শুনহ রাজন।। কোটি কোটি জীবকুল যাহার আশ্রয়ে। ছীবন ধরিয়া আছে সানন্দ হৃদয়ে॥ জাহারে বিনাশ করা নহেত উচিত। বলিতেছ যাহা নহে শাক্তের বিহিত। অগ্নির এতেক বাকা করিয়া প্রবণ। হইলেন দেবরাজ অতি ক্রেদ্ধমন। রোসভরে অগ্নিদেবে সঘোধিয়া পরে। বলিলেন শুন শুন কহি যা তোমারে ধর্মাধর্ম নাহি কভু দেবের শরীরে। আদেশ পালন কর বলি যা ভোমারে॥ আমার আদেশ তুমি করিলে লজ্ঞান। অতএব মম বাক্য কর্ছ প্রবণ।। বায়ু সহ জন্ম লও অবনামগুলে। মানুষ ইইয়া রহ মনুষ্যভিতরে॥ আরো এক কথা বলি শুনহ দহন। তোমার গণ্ডুষে হবে সাগর শোষণ॥ এ কার্য্যে কখন তুমি না পাবে নিস্তার। বিফল নাহিক হবে বচন আমার॥ ইক্রের শাপেতে পরে বায়ুও দহন। মানবকুলেতে গিয়া লভেন জনম। কুম্বন্ধা হয়ে জন্মে সেই ছুই জন। তপদী হইলেন দোঁতে ওছে ঋষিগণ॥ বশিষ্ঠ একের নাম হইল ধরায়। অগস্ত্য হইল আর শুন্হ স্বায়॥ কুম্ভ হতে যে প্রকারে অগস্য জনমে। বলিতেছি সেই কথা শুনছ প্রবণে। পূর্ব্বকালে দেবদেব নিত্য ভগবান । ধর্মপুত্র হয়ে জন্মে খ্যাত দর্ব্ব স্থান। সেই বিষ্ণু ধরাধামে লভিয়া জনম। বিপুল তপস্থা করে ওহে ঋষিগণ॥ কঠোর তপস্থা তার করি দরশন। ভীত হন দেবরাজ ওছে ঋষিগণ॥ ভপস্থার বিশ্ব তার করিবার তরে। উপনীত হন গিয়া পর্বত-উ্পরে॥ অপ্সরা সহিতে তথা কবেন গমন। • সঙ্গেতে চলিল আর ৰসন্ত মদন॥ অশ্সরারা সেই স্থানে হরিষ অন্তরে। নৃত্যগীত করে কর আমোদের ভরে॥ শর্মপুত হবে কিলে বিমোহিতমন। সেই জন্ম অপ্সঞ্জার। করয়ে মতন॥ কিছুতে তপস্থাভক করিতে নারিল। কামদেব তাছা দে<del>ৰ্দুখ মনেতে ভা</del>বিল। বহুড়িতা করি কাম আপনার মনে। নারীর সূজন এক করিল মুতনে॥ অপ্নরার উরুদেশ হইতে তাহার। জন্ম হইল ট্রেরুপের আধার॥ ছাহার মোহন রূপ করি দর্শন। বিগোহিত-মন, হয় । ঘত দেবগণ ।।

केंग्रेटर प्रस्क प्रस्कृत समजी। ७ (१० उसमा माम स्टब्स (महे नाही। উর্বাদী হইতে হৈল তপসাভগ্রন। শুন শুন তার প্র ওবে ধ্যিগণ্ ইন্দ্র নিজে মুগ্ধ হন ভাহার রূপেতে ৷তাহারে আহান করে নিজ সমীপেতে कहिटलन शेटब शेटब मधुत वहन। वतानरन मम वाका कत्र ध्ववन আত্মদান কর যোরে তুমি গো স্থলরী। তোমার দৌন্দর্য্য আমি হৃদিমারে শারি॥ ইন্দ্রের এতেক বাক্য করিয়া এবণ। উর্বেশী সম্বতা তাহে হলেন তথা তার পর মিত্র আর বরুণ প্রবর। উর্কশীরে সংগাধিয়া কহে অতঃ প্র 🕸 মোদের দোঁহারে তুমি করহ বরণ। তব রূপে মোরা দোঁছে বিমোহিতমন 🛔 ভ বিশী এতেক বাক্য করিয়া প্রবণ। কহিলেন শুন শুন আমার বচন ॥ আংগ দেবরাজে আমি করেছি বরণ। তোমাদিগে ভজিবারে না পারি এখন। এতেক বচন শুনি সেই দেবদ্বয়। হইলেন ক্রোধবশে মোহিত-দ্বদয়া। অভিশাপ দিয়া কছে দেই রূপদীরে। জন্ম লভহ গিয়া মান্ব-আগারে 🕊 সোমোন্তব নরপতি হবে তব পতি। তাহার নিকটে যাও তুমি লো যুবতী 🏴 এত বলি অভিশাপ দিলেন তখন। শুন শুন তার পর ওহে ঋষিগণ ॥ মিফ্রাবরুণের রেত পড়ে সেই কালে। কুজের মধ্যেতে পড়ে জানিবে অস্তরে তাহাতে অগন্ত্য ঋষি লভেন জনম। এই ত নিগুঢ় তত্ত্ব ওছে ঋষিগণ 👬 আরো এক কথা বলি শুনহ সকলে। নিমি নামে রাজা এক ছিল পুর্বকালে॥ একদা করেন তিনি যক্ত অনুষ্ঠান। কত ঋষি মুনি আদে দেই যক্ত স্থান। মহর্ষি বশিষ্ঠ আনে সেই ষজ্ঞস্থলে। আরো কভ ঋষি আনে কে গণিতে পারে সকলের অভ্যর্থনা করিল রাজন। ভ্রমবশে বশিষ্ঠের না করে পুজন।। বশিষ্ঠ কুপিত হয়ে আপন অন্তরে। অভিশাপ দেন সেই নূপতিপ্রবরে। বিদেহত্ব হোক তব বচনে আমার। এত শুনি শাপ দেন নিমি গুণাধার॥ মানবকুলেতে জন্ম ধর তপোধন। আমার বচন মিথ্যা নহে কদাচন।! পরস্পার শাপ দোঁতে দিয়া সেইক্ষণে। উপনীত হন গিয়া বেন্ধার সদনে।। ভ্রমার আদেশে পরে নিমি নরপতি। লোকের নিমেষে গিয়া করে অব-ব্িতি। বিশিষ্ঠ দশিকুত্তে লভেন জনম। অবিলয়ে কুন্ত হতে করি নির্গমন 🛊 অক্তুত্ত কমওলু করিয়া ধারণ ৷ হইলেন ত্রেলচারী ওতে ঋষিগণা। অগ্ৰু নামেতে খ্যাত হলেন ধরায়। বলিত্ব নিগুঢ় তত্ত্ব তোমা সবাকায়।। এরপে অগন্ত্য ঋষি লভিয়া জনম। ভার্যা সহ গিরি পরে রহেন তখন । ভারণ তপতা করে মহি সেই হানে। এইরপে বছকাল গত হয় জেমে ।। ভার শার ভারকাদি মুক্তিতাগ্র। পুনত করিতে থাকে জগত পীড়ম।।

THE RELEASE CONTRACTOR OF THE PROPERTY OF THE PARTY OF TH क्षात शास्त्र (परार्थ कविया प्रथम । कश्रितन गामरत्रक कविर्द्ध व्यापन ॥ विश्वा मध्यम शान करतक मात्रव। जाहा (गीप उपरकृष्ठ (प्रवणानिकत्।। जना विकू जानि कति यठ (प्रत्राग। वश्रु मग्रा वानि उन्हों इन।। ক্রিলেন শুন খন ওহে ঋষিবর। অবিলম্বে চাহ যাহা দিব নেই বর।। শাৰীয়া এতেক বাক্য করিয়া ভাষণ। कहित्नन छन छन छट (एवंश्री।। সহত্রেক যুগ থেন ওতে সুরগ্। শৃত্যচারী হয়ে রহি সদা সর্বৃষ্ণ।। आभात विमान घटव रहेटव छेपया। साहे कारण कर्षा पिटव स्वर्हे नजहा ॥ জাহার। হইবে সপ্ত লোকের ঈশর। এই বর দেহ **যোরে দেবতানিকর**॥ कार्य सार्व (सरे जन कतित्व कीर्जन। गग नारम श्रुकरहरू कहिर्द श्रेमन ॥ লভিবে অক্য় পুণ্য সেই সাধুনর। এই বর দেহ ঘোরে অমরনিকর।। শামারে কারিয়া যেই সাধু সব জন। শ্রদা করি দিজে দান করিবে অর্পণ।। ভাহাদের পিতৃগণ আমার সহিতে। করিবৈ সর্গেতে বাদ প্রম স্থাখতে ॥ ্রতক বচন শুনি ষত দেবগণ। তথাস্ত বলিয়া বর দিলেন তখন।। অগন্ত্যার্ধ্য দিবে ভূমে যত সব নর। 🎮 তএব শুন শুন তাপসনিকর। সুই জন অর্ঘ্যদান করে ভক্তিভরে। সপ্র স্বর্গ আধিপত্য লভয়ে অচিরে॥ 💓 🔊 नि পুনঃ কহে যত ঋষিগণ। নিবেদন ওহে প্রভু বিধির নন্দন।। ক্রপেতে অর্ধ্যদান করিবে প্রদান। সেই কথা কহ এবে ওছে মতিমান॥ পুজার বিধান কছ আমা দবা ভানে। ভানিতে বাদনা বড় হইতেছে মনে ॥ 🏟 ড । বিধিমুভ কহেন তথন। শুন শুন বলিতেছি ওহে ঋষিগণ!। স্থাত্রিতে অগস্তা যদি হয়েন উদয়। প্রভাতেতে দিবে অর্ঘ্য শাস্ত্রে হেন কয়। ্রভাক্ন পুষ্পাদিতে অধ্য করিবে প্রদান। এইরূপ আছে শান্ত্রে খ্যাত সর্বস্থান॥ বস্ত্র মাল্য দিয়া কুম্ভ করিবে স্থাপন। পঞ্চরত্ন ততুপরি করিবে অর্পণ।। বর্গেতে ত্রন্দার মূর্ত্তি নিরখিয়া পরে। স্থাপিবেক কুন্ত স্থাখে অতি ভক্তিভরে॥ ্র্রিপাকত হিরণ্যাদি প্রতিমাতে দিয়ে। বিপ্রেরে করিবে দান একান্ত হৃদয়ে ুশুভবর্ণ গাভী পরে লইয়া সাদরে। অলক্ষারে বিভূষিত করিবে ভাছারে।। রোপাষর খুর তার করিবে গঠন। স্বর্ণের হইবে শৃত্ম ওছে ঋষিগণ।। ্র্টান্ত্রময় পৃষ্ঠ হবে জানিবে অন্তরে। গন্ধ পুষ্প আদি দিয়া পৃজ্ঞিবে তাহারে॥ ্রেইরবেপ পূজা আদি করিয়া সাধন। বেদজ্ঞ ত্রান্দণগর্গে, করিবে অপুন।। স্বরুপেরে অভ্যর্থনা করিয়া যতনে। অগস্ত্য উদ্দেশে দিবে বিহিত বিধানে। ক্ষাৰ্থ মন্ত্ৰ পড়ি করিবে অর্চন ৷ শান্তের বিধান এই কছে গাধুজন ট

থেই কে জাবা দিলে বিধি জনুসারে। জাবোগ্য সে জানু লাভ শান্তের দিন্দ্র দিপুরি দিপুরি দিশে করি জাবা করি তারে জাবা করি তারে জাবা করি জাবা করি জাবা করি জাবা করি তারে করি করে একান্ত আতরে জাবাদান করি। তানে যেই সাধুজন। কিয়া অধ্যয়ন করে হয়ে প্রেক্তি জাবালে সেই জন তাজি কলেবর। বিমানে চড়িয়া যায় বৈক্তি করে

এত শুনি ঋষিগণ কহে পুনবায। শুন শুন বিধিস্থত নিবেদি তোৰার সৌভাগ্য কি কর্ম্মে হয় কহ তপোধন। আরোগ্য লভয়ে নর কিসের কারণ। কি কাজ করিলে নর বিনাশিত হয়। ভোগ মোক হয় কিলে ওছে মহোদয়। এই সব রূপা করি করহ বর্ণন। শুনিবারে বিধিমুত করি আর্কিঞ্চন। এতেক শুনিরা কহে সনতকুমার। শুন শুন ঋষিগণ করিব বিস্তার ॥পূর্ব্বকালে পার্কতীরে দেব পঞ্চানন। বলিয়াছিলেন যাহা করিব বর্ণন।। তৃতীয়া নামে ত্রতের উত্তম। দেই কথা বলিতেছি শুন সর্বজন॥ দেই ত্রত জানিবে অস্তরে। নরনারী উভযেতে করিবারে পারে॥ প্রসানে ব্যু সৌভাগ্য উদয়। শাস্ত্রের বচন ইহা কভূ , মিথ্যা নয়॥ 'অথবা অপ্রহায়ণ মাদেতে। অথবা শ্রাবণ মাদে ভক্তিযুত চিতে॥ শুক্লপক্রে ভূতীয়াতে হযে একমন। বিধানে করিবে স্নান ওহে ঋষিগণ॥ সরিষার দারা সিনান করিবে। বিধানে তিলক শেষে ললাটেতে দিবে গোরোচনা দ্বত দধি আর যে চন্দন। এসবে তিলক দিবে ওতে ঋষিগণ শোভাগ্য কামন। আর আরোগ্য কামনা। করিবে ভকতি ভরে নর বা **শুলনা্।।** তদবধি প্রতি শুক্ল তৃতীযার দিনে। ঐরপে পবিত্র হয়ে বিহিত বিধানে রক্তবন্ত্র দিয়া পূজা করিবে কুমারী। দেবীরে করিবে পূজা শুন পরে বলি। পঞ্চাব। কীর দিয়া করিবে স্নপন। নানা উপচারে পূজা কবিবে সাধন 🛊 অর্চনা করিবে পরে যে যে দেবাগণে। তাহাদের নাম বলি শুন একমনে,॥ बद्रमा ज्यानाका डिमा मञ्जनमायिनी । 🕮 পাर्व्य डी कामरमयी मी जानाशिसी॥ পদ্মেদিরা কাত্যায়নী গৌরী সুমন্দলা। বাসুদেবী ও জীরম্যা ললিতা উৎপলা। পন্ধ পুষ্প আদি দিয়া এ সব দেবীরে। পৃজিবেক যথাবিধি ভক্তি সহকারে 💃 ভার পর অগ্রভাগে ওছে ঋষিগণ। কমন দ্বাদশদল করিবে রচন॥ পুরব দিকে গৌরীর প্রতিমা। 'বিন্যাস করিবে পবে অতি অনুপমা॥ অনন্ত দেবেরে পরে করিবে স্থাপন। তার পব শুন শুন ওচে ঋষিগণ॥ রুদ্রাণী স্থাপন পরে, করিবে ,দক্ষিণে। মদনবাদিনী স্থাপি পরেতে প্শিচমে॥ वाबृटकार्त शार्डेनारत कतिरव शालन। उपारत उखरत शालि शरत मीबुक्त ॥ ্রিয়াথা পদা সোমানেতী ভতা মঞ্চলারে। কুমুধা দেবীরে আর ইংশি মধ্যসলো বিধানে করিবে শেষে দবে আবাহন। তার পর শুন বলি ওছে ৠবিগণ। আনাহিবৈ লনিভায়ে কর্নিকাউপর। পৃজ্জিবেক গদ্ধ পুষ্প দিয়া ভার পর। 🤹 গীত বাদ্য তার পর করিবে সাদরে। করিবে মঙ্গল ধুনি অতি ভক্তিভরে॥ কুমারী পূজন শেষে করিবে সাধন। রক্ত বস্তারক্ত মাল্য করিবে অর্পণ।। 🎜বিধানে গুরুর পূজা করিতে হইবে। নতুবা সকল কর্ম বিফলে যাইবে॥ ় যেই কাজে গুরুপূজা কভু নাহি হয়। তাহার বিফল সব জানিবে নিশ্চয়। ৈ জার পর নানাবিধ গমপুষ্প দিয়ে। করিবে ক্লফের পূজা একান্ত হৃদয়ে॥ মানাবিধ্ উপহার করিবে অর্প। এই ত শান্তের বিধি ওছে ঋষিগ্ৰ।। ্রিষেই মাসে যেই পুর্পে করিবে পুজন। বলিতেছি সেই কথা শুনহ এখন॥ 🖣 🎜 🚾 टब कार्डिक भारम वसूक क्यूरम। मार्गभी दर्श ज्ञां छे পूष्प जिरवक विधारन ॥ । भाषमात्म शीउवर्ग क्रकणे क्यूरम । शृक्तित्वक यथाविधि लेकास्त्रिक मत्ने॥ 🎠 🛪 🗷 কুন্থম মাঘে করিবে অর্পণ। ফাল্কনেতে সিম্বুবার শান্ত্রের বচন ॥জাতি-🎢 শুষ্প দিতে পারে ফাল্কন মাদেতে। মন্নিকা অশোক কিবা দিবেক চৈত্রেতে॥ ै दुवगार्थ সম্বাটল শাস্ত্রের বিধান। কমল মন্দার জ্যৈতে কহি সবা স্থান॥ 🌉 বা কিম্বা পদ্ম দিবে আষাঢ় মাসেতে।গ্রাবণে পৃজিবে পদ্মে মালতী পুষ্পেতে ত্র গোময় কীর দধি কুশোদক। মৃত ছুগ্ধ বিল্লপত্র আর গদ্ধোদক॥ াদে এই দব নানা উপহারে। স্থপন করিবে সাধু অতি ভক্তিভরে॥ - অভিযেক করি পরে সাধু ভক্তিমান। পূজিবেক নানাপুপে যেমত বিধান॥ িশ্বীষিন মাসে ঐরপ পুজিয়া ষতনে। সাধন করিবে হোম বিহিত বিধানে।। হিছেইরপ যথাবিধি করিয়া পূজন। ভক্তিভরে বিপ্রগণে করাবে ভোজন॥ ছিজগণে বস্তু দান করিবে সাদরে। মহাফল হবে তাহে শান্তের বিচারে॥ 🍇 🚁 েষ যদ্যপি করে ত্রত অদুষ্ঠান। পট্রাম্বর ত্রতকালে পরিবে ধীমান। মারীরা কৌষেয় বস্ত্র করিবে ধারণ। এই ত শাস্ত্রের বিধি ওতে ঋষিগণ॥ क्षेिभारम यथाविधि পृष्णियो यज्या । প্रार्थना कतिरव भरत रेपवीन्। श्रारेन ॥ क्रांनी क्यूषा निवा क्र्यूपविमला। नन्ना शोही मठी आह निका कम्ना॥ 🌉 কলের প্রীতি হেতু প্রার্থনা করিবে। ইথে ভগবতী হুত্তা অবশাই হবে॥ জানদ তৃতীয়া বত করিমু কীর্তন। ভক্তিভাবে যেই জিন করয়ে সাধন॥ ুসর্বপাপে মুক্ত হয় সেই সাধুমতি। সৌভাগ্য আরোগ্য হুদ্ধি শান্ত্রের ভারতী॥ श्रतमाञ्च इक्ति श्रेश नोहिक मर्शव। विलिल् मवात श्रीरण जात्वत्र निर्गत्र॥ শরস্ত শঠত। করি আপন অন্তরে। এই এড় অমুষ্ঠান ফৈই কন করে।

and the second of the second o

प्रमान को अपिक शुक्रका । असीन स्टेटक त्यार्क का मिल्ट क्वानित (अर्थ न्यार्गन इरेट्ड । जांदर एव इर एर कामितक हिट्ड দবে পূজা নাহি করি যেই জন। যোহবণে অর আদি কররে জেজিন বৈষ রহে দেই পিশাচ আকারে। তাহার যাতনা দেখি হদয় বিশক্তে এব মহেলেরে না করি পুজন। কভু না বাইব আমি ওছে তপোৰ ক ৰচন শুনি ভগমালী কয়। ধন্ত থন্ত তুমি দ্বিজ অতি মহোদ্য ভক্তি তব শিবের উপরে। এখন জিজ্ঞাসি কিছু তোমার গোচরে। বর মাহাত্ম্য ভূমি করহ বর্ণন। ভক্তিভরে তাহা আমি করিব এবণ इत्त प्रभारत वल किया कल इया। शृक्षत्व या किया कल अरह मरहापया। নতে কিবা ফল করহ বর্ণন। অভিষেকে কিবা ফল ওছে সহাত্মন কুবচন শুনি বিপ্রবর কয়। শুন শুন বলিতেছি, ওটেছ শুহৈ। পুর ভরে শিবলিক করিলে দর্শন। সহস্রাখ্যেষ্ ফল পায় নেই জন কালেতে যেই শিবলিকে হেরে। আজন্ম ছরিত তার অবশাই হরে লাকে যায় সেই শান্তের বচন। শান্তের বচন মিথ্যা নহে করাছ াশ্বাকিলে শিবলিন্ধ যেই জন হেরে। সে জন যে ফল পায় তনহ লাদে ইহ লোকে মহাত্রখ সেই জন পায়। অন্তকালে শিবলোকে বিবানেতে যা नकीश्वेत जूना इत (महे यहाजान्। भिवतनारक मनस्रूर्थ कन्नद्र गिम माञ्चलान मर्दाटार्क जानित्व जलत्त्र। महाकन इत्र जाट्ट द्हित्न निद् क्षाकारन निवनिक य कटत पर्नत । निवजूना इस मार्ट नाट्या वहन প্রেদোবে শক্ষর দেবে নয়নে হেরিলে। ত্রন্ধহত্যা আদি পাপ ধংকে অবহৈছে পাতক তাহার যত হয় বিনাশন। শিবদেহে লীন হয় সেই সাহু ন প্রতিদিন শিবলিঙ্গ যেই জন হেরে। শিবপ্রিয় হয় সেই জানিবে অভরে। কার্ত্তিক গণেশ যথা শিবপ্রিরতম। সেই রূপ প্রির হয় সেই নায়ুক্তর । নিবলিকে পূজা নাহি করি ভক্তিভরে। যেই জন অন নাহি উপজোম করে। শিবজুল্য হয় সেই নাহিক সংশয়। শান্তের বচন মিথ্যা কভু নাহি হয় কোশান্তর ভুমি বেই শিবলিম হেরে। অখ্যেধ ফল সেই উপাৰ্ক্তন করে त्र कालन नाहि कति (यहे जन। निवित्य वाख्यां करते प्रमास क्षेत्र ।।
या जया कर्या राहे प्रतिरक्षत परत। निवित्र जारमण हेश कहिस राहित पक्ति। कतिवात कारल (यह जन। जगवरण करत माम्युक विकास নের ফল ভার কল্প নাহি হয়। শিবের দর্শন ভার বিকল

P ACT OF THE PROPERTY OF THE PROPERTY OF एन्टे राज **अक्टिना** निम पत्रमन करते थार यूनिव হরে নেই লাখু মহামতি। কৈশান নগরে গিয়া করয়ে বল - b-- प्रति। (ए जन भिरत्य दिर्व अख्युक गर সেই নাছিক সংশয়। শান্তের বচন যিখা। কড় মাহি देशक (यह मामकनाशदत। किया मत किया मात्री अधिकहरू वै वर्गन। यन पिशा छन छाई। ७१६ कर ্ৰাক ন্ত্র ক্লায়। ধনকামা পায় ধন কহিনু ভোষা वामनी खटल करत त्यरे अने। मर्करताशन्त्र इस त्मरे पराज्य ो इस मिटवर अमारम । द्वनद्वा इस विश्व कामिरवक हिरा 1 পার ৩হে চপোধন। পরাগতি দেন তারে দেব তিনয় 7 क्रि किर्ते करिय करित । निर्वालिक प्रमान करित माध्यार পূর্ব অবশাই হয়। তাহার উপরে তুট শিব बादक निविध्य-मनिधारन। निवर्गमा वनि छाटा विपिछ छुवर ৰ স্বাম আদি করিলে সাধন। শিবলোকে যায় সেই শিবের সদ स्थिकिन करें (यह जन। निकिष्ट जात शरक देकनान छव লৈরে নেই সিয়া ভক্তিভরে। দণ্ডবৎ নতি করে একান্ত অন্তরে TV ্রেই সন্দির ভিতর। তত বর্ষ কৈলাসেতে রহে সেই ন त्ने कतिशे धर्ग। निवलिटक यथाविधि (4) চড়ি সেই মহামতি। স্বৰ্গলোকে গিয়া তথা করয়ে বস, दिस कहारेटन स्नान। विकृत्नादक अस्कातन तम करत १ िनिद्दं द्वरे कतात्र अशन। त्नाग्रलाटक यात्र दनरे ७८१ म केत्रस वन्छि। शङ्किन विकामान शास्क প্রতি जाबुबन्। भिर्माटक यशीविधि कत्राय Wat:

কুর প্রক্রিক নাম নাজের বছন মিপ্যা কভু লালি প্রথম জনকে ভাম করে। প্রথম জনকে ভাম করে।

गातक गाउंचा रसक दवर काब्रि फिलाइगा कर्य प्राता निर्वालिक स्वर्

বিত্তশাস্ত্য করি কিন্তা করিয়ে সাধন। বিফল তাহার ইয় যতেক কর্ম। জত লবে রজয়লা যদি নারী হয়। অথবা গতিণী হয় ওছে ঋষিচরা অথবা স্তিকা হলে ওহে ঋষিগণ। অশু দ্বারা ত্রতকার্য্য করাবে সাধন। আনদ-তৃতীয়া ত্রত শুনিলে সকলে। আরো এক ত্রত বলি শুন অভঃপরে।

কল্যাণ তৃতীয়া হয় ত্রতের উত্তম। তাহার মাহাআন বলি শুন ঋষিপণ । ,মাঘমাদে শুক্রপক্ষে ভৃতীয়া দিবদে। তিলম্বান করি পরে মনের হরি**ষে** . मधु रेकृतम जात मगन मिला। लिला (परोदत जान करादिक भरत॥ मानाविध উপচারে করিয়া পূজন। দক্ষিণেতে অন্তদেবে করিবে অর্চন। রোম সকলের পূজা সমাপিয়া পরে। পূজিবেক পদদ্বয় ষথা উপচারে॥ জামুতে শান্তির পূজা করিবে সাধন।জজ্ঞাদেশে এরে পরে করিবে পূজন। কটিদেশে মদালসা পুজিবেক পরে। পৃজিবেক অমলারে পরেতে উদ্ধরে । পৃজিবেক শুনদ্বয়ে মদনবাসিনী। কন্দরে কুমুদা দেবী শুন মত মুনি।। পৃজিবে कुकाट्य शदत गामना (पवीदत। मूर्यरप्रभ शृक्तित्वक कमना मठौदत्र । ब्लर्पर गनार्षे आत हनात शृक्त। अनकार्ण गक्कतीरत कतिरव अर्धन l ननारि मननপृजा कतिरा हरेरा। পরেতে জারুয়ে মহেশুরীরে পূজিবে 🕸 এইরূপে পূজাবিধি করিয়া সাধন। ত্রান্ধণ দম্পতী পরে করিবে পূজন 🛱 ভোজন করাবে পরে সে ছুই জনেরে। সুবর্ণ দক্ষিণা দিবে হরিব অন্তরে 🌶 এইরূপে তুই করি তাঁহাদের মন। বিদায় করিবে পরে ওহে ঋষিগণ । এইরূপে যাসে যাসে পূজা যেই করে। অনস্ত তাহার ফল শাস্ত্রের বিচারে। এই ব্রত অনুষ্ঠান . করি সাধুজন ৷ যাঘ্যাদে নাহি খাবে লবণ কখন ॥ কাল্ভনেতে গুড় নাহি সেবন করিবে। চৈত্র মাসে ইক্ষু সেবা দর্কথা ভ্যক্তিবে। বৈশাবেতে মধু লাহি করিবে দেবন। না করিবে জৈ। ঠিমানে তায়ুল ভক্ষণ। আষাঢ়ে জীরক নাহি ভোজন করিবে।প্রাবণেতে ক্ষীর সেবা সর্বধা ভ্যজিকে ুভাক্রমানে দধি নাহি করিবে ভোজন। আখিন মানেতে য়ত করিবে বর্জন। কার্ত্তিক যাসেতে চুগ্ধ না করিবে পান। মার্গশীর্ষে ধান্তত্যার্গ করিবে ধীমান॥ করিবেক পৌষমাদে শর্করা বর্জ্জন। এইরূপে ত্রতক্রিয়া করিবে সাধন। ত্রত পূর্ণ হলে পরে ভোজন আধারে। সেই সেই দ্রেয় দিয়া পূরিবে সাদস্ক্রো বিপ্রকরে সেই পাত্র করিবে অর্পণ। এই ত শাস্থের বিধি ওহে ঋষিগণ। भाषमात्म यथाविधि পূজিয়া যতনে। প্রার্থনা করিবে প্রীতি ক্রুদা সদনে ॥ कास्त्रमानजी भारम क्तिरव आर्थन। त्रसाभारम रिज्यमारम मारखत रहन ॥ বৈশাখে রাধার পাঁলে জৈনতে ভুঁলে পাশে। প্রার্থনা করিবে জয়া পাশে শুটি-

ুঁমানে ॥ প্রাবণে শিবার পালে করিবে ঘাচন। ভাট্রেমার্টের উমা পার্শে এইউ নিয়ম अ প্রার্থনা করিবে গৌরী-গোচরে আখিনে। কার্ডিকে প্রার্থিবে পরে कीय औं महत्म। প্रार्थना कतित्व পत्ति मकलात्गा छत् । मार्ग मीर्य मारम मार् हर्य একান্তর । প্রার্থনা করিবে পৌষে কমলাগোচরে। এই ত শান্তের বিধি হিন্দু সবারে॥ এই ত্রতে উপবাস শাস্ত্রের নিয়ম। অশক্তে করিতে পারে তে ভোজন। কল্যাণ তৃতীয়া ত্রত যেই জন করে। সর্ববপাপে মুক্ত হয়। ক্রির বিচারে ॥ সহস্র বরষ সেই ছুঃখ নাহি পায়। শাস্ত্রের বচন এই কহিন্দু সবায়॥ অগ্নিষ্টোম সহত্রেক করিলে সাধন।যেই ফল সাধুগণ করে উপার্জ্জন॥ এই ত্রতে মেই ফল অনায়াসে হয়। শাস্ত্রের প্রমাণ এই নাধিক সংশয়॥ বিধবা কুমারী বন্ধা। যেই কোন জন। এ ত্রত করিতে পারে শান্তের বচন।। ভৃতীয়ার ত্রত আছে অপর প্রকার। বলিতেছি সেই কথা করিয়া বিস্তার॥ ্ফাত্মাননকারী ত্রত তাহার আখ্যান। অনুত্রম ব্রত এই খ্যাত সর্কহান॥ ্**ষাঘ্মানে শুক্লপক্ষে তৃতীয়া দিবদে। স্থান করি দাধুজন মনের হরি**ষে॥ 📆 মাল্য গলদেশে করিয়া ধারণ। সাধ্যমতে ভবানীরে করিবে অর্চন॥ যথীলাজি উপচারে পৃজিবে সাদরে। কমল করিবে দান উদ্দেশে শিবেরে॥ পাদদায়ে বিশ্বেদেবী করিবেক ধ্যান। জজ্ঞাদ্বয়ে পরে শোকবিনাশিনী ধ্যান॥ শানন্দিনী ধ্রাপুন করি কটিদেশে পরে। না,ভহুলে শান্তবীরে চিন্তিবে সাদরে **বাহুদ্বরে হত্যা√প্রি**য়া করিয়া চিন্তন। সবারে বিধান মতে করিবে পূজন॥ তার পর স্বর্ণপাত্তি লয়ে চতু উয়। পরিপূর্ণ ঘট লয়ে ওহে ঋষিচয়। উৎসর্গ করিবে সাধু অতি ভক্তিভরে! প্রদান করিবে তাহা ত্রান্সণের করে॥ যেই কালে বিপ্রকরে করিবে প্রদান। গৌনীর প্রীতি প্রার্থনা করিবে ধীমান॥ সম্রীকা বিপ্রেরে পরে করিয়া পূজন। দক্ষিণা করিবে দান ক্ষমতা যেমন। এইরপে ভক্তি। করি ত্রত েই চরে। সে পায় প্রম পদ জানিবে অন্তরে॥ আয়ু রাদ্ধি ধন রাদ্ধি বিভ রাদ্ধি হয়। আরোগ্য তাহার হয় নাহিক, স-শয়॥ ছঃখ নাহি হয় তার জানিবে কখন। মহাসূখে থাকে সেই ুশান্ত্রের বচন। এই ত্রত কথা যেই শুনে ভক্তিভরে। অন্তিমে সে জন বায় বর্গরে॥ দেবগণ তার পূজা করেন সাধন। শাস্ত্রের বচন মিথ্যা नर् कराठन॥

এত শুনি ঋষিগণ কহে পুনরায়। শুন শুন বিধিসুকু নিবেদি তোমায়॥
কোন এত কলে হয় মধুর বচন। সৌভাগ্য উদয় হয় ওছে মহাতান॥
সুখু হয় বিদ্যা হয় আয়ু রদ্ধি হয়। ব্যুদ্ধন্ সহ সদা অবিচেছদে রয়॥

(धरे मत विखातिशां केंत्रर वर्गन। ' धरे मत छनिवादत कति आकिश्रमं॥ বিধিমুত ইছা শুনি মধুর বর্চনে। কহিলেন শুন শুন কহি সবাস্থান। সারস্বত নার্মে আছে এতের উত্তম। শুন শুন বলিতেছি তার বিধরণ॥ ইহার কীর্ত্তনমাত্র দেবী সরস্বতী। অন্তরে লডেন দেবী পরম পীরিতি॥ মাঘমাদে শুক্লপক্ষে পঞ্চমীদিবদে। প্রভাব সময়ে উঠি মনের হরিবে॥ ক্লতস্থান হয়ে পরে যেই সাধুজন। সরম্বতীর পূজা আদি করিবে সাধন॥ পড়িবে তাঁহার স্তব একাস্ত অন্তরে। ত্রাহ্মণ ভোজন পরে করাবে সাদরে॥ করাবে ত্রাহ্মণগণে পায়স ভোজন। সাধ্যমত শুক্র চন্দ্র করিবে অর্পণ।। হিরণ্য দক্ষিণ। দিবে দ্বিজাতি-নিকরে। বিদায় করিবে পরে স্তুতি নতি করে॥ 🕮 সরস্বতীরে পরে করিয়া বন্দন। তাঁহার পরম স্তব করি অধ্যযন॥ মৌনী হয়ে নিজে পরে করিবে ভোজন। এইত শাস্ত্রের বিধি ওহে ঋষিপণ। প্রতিমানে শুক্রপক্ষে পঞ্চমী দিবনে। এরপে করিবে পূজা মনের হরিষে॥ একবর্ষ এইরূপ করিয়া পুজন। করিবেক যথাবিধি ত্রত সমাপন॥ শুক্ল তণ্ডলের ভোজ্য উৎসর্গ করিয়ে। বস্ত্র সহ দিবে বিপ্রে সানন্দ হৃদয়ে॥ আরো এক কথা বলি শুন ঋষিগণ। এই ত্রতে উপদেশ দেয় যেই জন॥ যথাশক্তি পূজা তার করিবে যতনে। নতুবা বিফল সব শান্তের বচনে॥ সারস্বত ত্রত করে যেই সাধু জন। সর্কবিতা। পারদশী সেই জন হন। শান্ত্রের বচন ইহা কভু মিখ্যা নয়॥ দৌভাগ্য তাহার হয় নাহিক সংশয়। যেই নারী এই ত্রত করে অনুষ্ঠান। তিন কম্প ত্রন্ধলোকে করে অধিষ্ঠান॥ শ্রদ্ধা করি ত্রত কথা যেই জন শুনে। বিজাধর পুরে যায় সে জন অন্তিমে॥ নানাবিধ ব্রতকথা করিক কীর্তন। মহাফল পায় ইহা করিলে সাধন॥ এত শুনি ঋষিগণ সুমধুর ষরে। জিজ্ঞাসা করেন পুনঃ সনত-কুমারে॥ শুন শুন বিধিমুত করি নিবেদন। শুনিতেছি তব মুখে অপূর্ব্ব কথন॥ কিন্তু এক কথা বলি ওহে মহোদয়। উপবাদে বারা নাহি ক্মবান হয়॥ ष्यन्छांमवर्गं किया (तारात कात्। উপবাদে শক্ত নাহি হয় যেই জন॥ অপচ বাসনা করে উলবাসফল। কি ত্রত করিবে তারা কহ বিজ্ঞবর।। এত শুনি বিধিমূত কহেন তখা। শুন বলি মুম বাক্য ওহে ঋষিগণ # উপবাদে শক্ত নাহি যেই জন হয়। রাত্রিতে ভোজন তারা করিবে নিশ্চয়॥ ইহাতে ফলের হানি কভূ নাহি হবে। উপবাস ফল তাহে অবশ্য পাইবেঞ্চী ষাহা হোক্ তন তন, ওছে ঋষিগণ। আদিত্যশয়ন ত্রত করিব বর্ণনা मश्री य्छा वि इत त्रविवात क्रिंटन। नक्क इटेटव देखा जानित्वक महिन॥

किया इदर (सर्वे किन इति मश्क्रमण। महाकनश्रक किम भारत्रज्ञ यहने ह े पूर्वानाम बाजा त्मरे भविज निवत्म। अर्कना कांत्रत्व माधू छेवा ख मह्हर्म॥ ্ৰ শ্ৰিক বলিব কিবা ওছে ঋৰিগণ। উঘাপতি দিনপতি অভৈদাত্মা হন। র।বর কর্চনা যদি উক্তিভরে করে। শিবের অর্চনা হয় জানিকে অন্তরে॥ 🗬 হর্ণ্যার নম মন্ত্র করি উচ্চারণ। হস্তানকত্ত্তেতে সাধু হয়ে একমন॥ ষ্টমাপতি-পদদ্বয়ে অর্চ্চনা করিবে। অক্ষয় পরম কল তাহাতে হইবে॥ চিত্রাতে অর্কায় নম করি উচ্চারণ। গুছাদেশে পূজা তার করিবে সাধন। পুরুষোত্তমায় নম বলি তাব পবে। স্বাতীতে করিবে পূজা জজ্ঞার যুগলে॥ বিশাখাতে জামুদেশে ঐ মন্ত্রে পূজন। অনুরাধা নক্ষত্রেতে উহাই নিয়ম॥ অমুরাধা নক্ষত্রেতে উরুর যুগলে। অর্চনা করিবে সাধু একান্ত অন্তরে॥ জ্যেষ্ঠাতে ইন্দ্রায় নম করি উচ্চারণ। গুছদেশে পূজা অদি করিবে সাধন॥ মুলাতে ভীমায় নম বলি ভক্তিভরে। পূজিবেক কটিদেশে শাক্তের বিচার॥ ত্বক্রে নম এই মন্ত্র করি উচ্চারণ। প্রকাষাঢ়া নক্ষত্রেতে করিবে পুজন॥ নাভিদেশে অই পূজা করিতে হইবে। উত্তরাবাঢাবত তথা অন্তরে জানিবে॥ সপ্তভুরন্দায় নম করি উচ্চারণ। উত্তরাষাঢাতে পূজা করিবে সাধন॥ অবণা নক্ষত্রে তীক্ষাংশবে নমঃ বলে। পূজিবেক কুক্ষিদেশে এদ্ধাসহকারে॥ **ঐবিকর্ত্ত**নায় নম করি উচ্চারণ। ধনিষ্ঠাতে বক্ষঃস্থলে করিবে পৃ**জ্ঞন**॥ ভাদ্রপদে বাহুদ্বয়ে রেবত তৈ করে। অধিনী নন্ধত্রে পূজা করিবে নখরে॥ ভরণীতে বাহুদেশে করিবে পূজন। ক্রডিকাতে আস্থদেশে শাস্ত্রের বচন।। রোহিণীতে পূজাবিধি হয় ওষ্ঠাগরে। দশনে করিবে পূজা আর মুগশিরে॥ পুনর্বস্থ নক্ষত্রেতে সর্বাক্ষে পূজন। পুষ্যাতে ললাটে পূজা শাস্ত্রের বচন॥ পূর্বকল্কনীতে পূজিবেক নেত্রদ্বয়ে। উত্তবকল্কনে পূজা হয় কর্ণদ্বয়ে॥ এইরপে পূজা আদি করিয়া সাধন।পাশাদি অস্ত্রেরে পরে করিবে পূজন। পাশাঙ্কুশ গদা পদ্ম শূল আদি করে। অস্ত্রের কুরিবে পূজা একান্ত অন্তরে। - 
 শ্রীবিশেশরায় নম করি উচ্চারণ। সর্বশেষে মস্তকেতে করিবে পৃজন॥ এইরপে পূজা আদি সমাপিত হলে। অতৈল অকার খাবে শান্তে হেন বলে। এইরপে ত্রতকার্য্য করি সমাপন। শালিতগুলের প্রিস্থ করিবে অর্পণ॥ উৎদর্গ করিয়া তাহা দিবে বিপ্রকরে।ভোজন করাবে বিপ্রে অতি দ্যাদরে।। যথাখাকি সম্পিতি দক্ষিণা কাঞ্চন। তার পর তের্দ শুন পছে ঋষিগণ ॥ বিশক্ষণা শয্যা করি হরিষ অন্তরে। পাত্নকা চামর ছৈত্র দর্পণাদি করে॥ छिৎनर्ग कतित्रा नव त्महे नांबुक्न ! वश्न नइ (धन्न भटत नांकाद उथन ॥

হেম শৃঞ্চ রৌপ্য শুর কাংস্থ ক্রোড় দিয়ে।ধেসুরে ভুবিত করি দানন ছদয়ে। যথাবিধি মন্ত্র পাঠ করিয়া হজন। প্রদান করিবে তাহা শান্তের বচন 🛊 প্রার্থনা করিবে পরে যেমন প্রকারে। বলিতেছি সেই কথা স্বার গোচরে । " হে আদিত্য তুমি দেব অতি মহাজ্মন। অশ্য নিয়ত প্রভু তোমার শর্ম। 🖟 কান্তিমান্ তুমি দেব তুমিই এমান। তোমার সমান নাছি কোথাও বিদ্বান । তোমা ভিন্ন নাহি জানি অপর কাহারে। রক্ষা কর মোরে তুমি সংসারসাগরে॥ এরপ প্রার্থনা করি পরেতে সুজন। করিবে প্রণাম করি শেষে বিস্তুত্তন । যেই ষেই ঐব্য দান করিতে হইবে। বিপ্রের গৃহেতে তাহা পাঠাইয়া দিবে॥ শুন শুন খবিগণ আমার বচন। দান্তিক বিদেষী হয় যেই সব জন॥ এ ব্রত তাদের কাছে কভু নাহি কবে । প্রকাশে সিদ্ধির হানি সর্বাধা জানিবে। বেদজ্ঞ ভক্ত হয় যেই সব জন। তাদের নিকটে ইহা করিবে কীর্ত্তন॥ আদ্ধা সহ এই ব্রত যেই জন করে। মহাপপে উপপাপে সেই জন তরে। এই ত্রত ষ্পাবিধি করিলে দাধন। আত্মীয় বিয়োগ নাহি হয় কদাচন # রোগ শে।ক ছঃথ মোহ তারে নাহি ঘেরে। পিতৃগণ মহাতৃষ্ট তাহার উপরো। এত শুনি পুনঃ কহে যত ঋষিগণ। আহা কি আ চর্য্য ত্রত করিতু প্রবণ॥ পুরুষ দীর্ঘায়ু হয় কি ত্রত করিলে। আরোগ্য লভয়ে বল কোন্ত্রতফলে॥ ধনসম্পাদাদি যুক্ত কোন অতে হয। বর্ণন করহ তাহা ওহে মহোদয়॥ বিধিমুত কহে শুন ওহে ঋষিগণ। কত ত্রত আছে তাহা কে করে বর্ণন। জিজ্ঞাসিলে যাহ। তাহা অতীব গোপন। বলিতেছি শুন শুন ওহে মুনিগণ॥ রোহিণীচন্দ্রশয়ন ত্রতের আখ্যান। বাঞ্জিত সুসিদ্ধ হয় কৈলে অনুষ্ঠান॥ চন্দ্রের পবিত্র নাম করি উচ্চারণ। এই ত্রতে নারায়ণে করিবে পুজন।। **শুক্র পক্ষে সোমবারে একাদশী হলে।** রেবতী নক্ষত্র কিয়া পূর্ণিমাতে পেলে॥ পঞ্চাব্য ও সর্যপে করিবেক স্থান। যথাবিধি জপ পরে করিবে ধীমান॥ তার পর গৃহে আসি নানা উপচারে। এীমধু স্দনে পূজা করিবে সাদরে॥ আছরির নাম গান করিবে কীর্তন। তার পর ওন শুন ওহে ঋষিগণ 🖫 भनपात भारापात वर्षा कतित्व। व्यवस्थारमत कब्यायूगाल शृक्तित ॥ গণেশেরে জামুদ্বয়ে করিবে পূজন। অনস্তের পূজা মেট্রে করিবে সাধন॥ কামসুখাজ্বকে পরে পুজি কটিদেশে। শশাক্তে পুজিতে হবে শেষে নাভি प्रत्न ॥ अर्थप्रदा औष्मनि शिरात शृष्यत । नामाष्ट्र ओक्नेगान कतिरव वर्ष्यता । নেত্রদ্বরে পদ্মনাভে পূজিরে সাদরে। ছন্দের করিবে পূজা তার পর করে ॥ উদারপ্রিয়ের পুঞা ললাটে করিবে। পুণ্যাধিপতিরে কেশে প্রজিতে ইইবে।।

ুবিখেশরে মন্তকেতে করিবে পূজন। রোহিণী দেবীরে পর্টেকরিবে অর্চন।। किरेग्नाल चर्याविधि शुक्तिया मानदा। जनश्र्र कुछ मान मिर्दे विश्वकद्य॥ খুষ্ই মৰ পুল্পে চক্সে করিবে পূজন। বলিতেছি সেই কথা ভনাই এখন। ক্ষুদ্ধ কেতক জাতি নীলোৎপল আর। মল্লিকা করবী শতপত্ত সিদ্ধুধার।। ঁঞাই সব পুষ্পে চক্রে করিবে পুজন। এইরূপে এক বর্ষ ব্রতের নিয়ম॥ ৰ্ষপুৰ্ণে ভোজ্য সব করিয়া সজ্জিত। বিপ্রের হত্তেতে তাহা দিবেক ত্রিত॥ স্বর্ণের প্রতিমা করি করিবে পূজন। বিপ্রকরে সেই মূর্ত্তি করিবে অর্পণ।। चर्नित প্রতিমা যাহা করিবে নির্মাণ। চন্দ্রের ইইবে তাহা শাক্তের বিধান। রোহিণীর অইরপ মূরতি গঠিয়ে। অর্পণ করিবে তাহা দানদ হৃদরে।। এইরপে ত্রত করে যেই সাধুজন। চন্দ্রলোকে অন্তকালে সে করে গমন।। নাখ্ৰীজাতি এই ব্ৰত কৈলে অনুষ্ঠান। সৌভাগ্য লভয়ে সেই রোহিণী সমান। ইহলোকে পুত্র পৌত্র দেই নারী পায়। অন্তকালে মহাস্থথে সুরপুরে যায়। পুরাণে ধর্মের কথা অতি মনোরম। শুনিলে পাতক তার হয় বিমোচন। ভিক্তি করি যেই জন অধ্যয়ন করে। অথবা যে জন শুনে একান্ত অন্তরে। কোন পাপ নাহি রহে শরীরে তাহার। অবহেলে তরে সেই ভব কারাগার ভবভোর তারে নাহি করয়ে বন্ধন। তারে প্রতিকূল নহে যত এহগণ ' '**শ্বরুড়ে হেরিয়া যথা ভুজক্ত**-নিকর। প্লাযন করি যায় অতি ক্তত্তর সেইরপ তারে হেরি বিপদ নিচয়। পলাইয়া যায় দুরে নাহিক সংসয়॥ যাহার মানস রহে ধর্মের উপরে। ধর্ম বোধ সদা রহে যাহার অন্তরে॥ ভারে পরাভব করে সাধ্য হেন কার। ত্রিলোক বিজয়ী হয় সেই গুণাধার।। ধর্ম বিনা নাহি কিছু এভব সংসারে। ধর্ম গতি ধর্ম বন্ধু জানিবে অন্তরে।। অতএব শুন শুন ওহে ঋষিগণ। ধর্মের উপরে সদা রাখিবেক মন।। ধর্ম রকা করে সদা ধার্মিক জনেরে। ধর্মের সমান নাহি জগত সংসারে।। জিজ্ঞাসা করিয়াছিলে যাহা ঋষিগ্র। সংক্ষেপে সকল আমি করিমু কীর্ত্তনা। ' এখন শুনিতে আর কিবা বাঞা হয়। বল বল তাহা এবে ওহে ঋষিচয়॥ ধর্মের সমান নাহি জগত ভিতর। ধর্ম পিতা ধর্ম মাঝা ধর্ম বন্ধুবর॥ এ ধর্ম পালন নাহি যেই জন করে। অন্তির্দে দে জন ঘার সরক ভিতরে 🕯 স্পতএব 🌬 ने 😎 न ७ टर अधिश्रा। धर्मार्शीत मना मत्ये ब्राचित्यकै मान 🛭

## অফ্টপঞাশত্তন অধ্যায়।

### তড়াগাদি জলাশয় ও রক্ষাদি প্রতিষ্ঠা। সনংক্ষার উবাচ।

কৃপবাপীতড়াগানামারামমন্দিরস্য ৮। প্রতিষ্ঠাৎ কার্ত্তিবিদ্যামি পুরাবিদ্যিঃ প্রকীর্ত্তিতাং॥

জিজ্ঞাদিল ঋষিগণ মধুর বচনে। নিবেদন ওচে প্রভু করি তব স্থানে। ষাপীকৃপ তড়াগাদি দেব-আগতন। ইত্যাদি প্রতিষ্ঠাবিধি করহ কীর্ত্তন। কিরপ ঋত্বিক হবে অই সব কাজে।বিস্তারিয়া কহ তাহা আমাদের কাছে। ষাদৃশ হইবে বেদী করহ বর্ণন। দক্ষিণা কত বা দিবে ওছে মহাত্মন। কিরেণ, ছইবে বল স্থানের নির্ণয়। কিরূপ আচার্য্য হবে ওছে মহোদয়। এই সব বিবরিষা করহ কীর্তন। শুনিবারে মোরা সবে করি আকিঞ্চন। এত শুনি বিধিমুত সুমধুর ষরে। কহিলেন ওন শুন বলি স্বাকারে। তড়াগাদি প্রতিষ্ঠার যেরূপ বিগান কহিব সে সব আমি স্বাকার স্থান। যেৰূপ কীর্ত্তিৎ আছে পুরাণ আদিতে। বলিব সে সব কথা সবার সাক্ষাতে॥ ঘখন আগত হবে উত্তর অয়ন। শুভদিন দেই কালে করি দরশন॥ বিপ্রগণ দারা স্বস্তিবাচন করিলে। তড়াগ সমীপে ফাবে পুলক হৃদয়ে॥ চতুহ স্ত বেদা তথা করিবে নির্মাণ। চতুকোণ হবে উহা শাস্ত্রের বিধান॥ অপর বোড়শ হন্ত পরিমিত করে। মণ্ডপ করিবে এক জানিবে অন্তরে॥ চতুর্দ্ধ হবে উহা ওহে ঋষিগণ। ওন হুন তার পর করিব বর্ণন॥ বেদির উত্তর ্দিকে অরত্নি প্রমাণ। মেখলা করিবে এক শাস্ত্রের বিধান॥ ধৃজ প**াকা দি** দিয়া বেদীবে সাজাবে। প্রতিদিকে দার এক করিতে ইইবে॥ প্লক্ষ্ বট ভুম্বর অশ্রথশাখার। করিবেক দার চারি কহিন্ত স্বার॥ বেদি মধ্যে অন্ট হোতা অন্ট দ্বারপাল। জ'পক থাকিবে অন্ট শাস্থের বিচার। দেবজ্ঞ হইবে সবে আর ফলকণ। জিতে ক্রিয় কুলশীলে অতি মান্তম॥ পূর্ণ ক্তে 🛣 তাত্রপাত্র রতন আসন। মণ্ডপের প্রতিস্তন্তে করিবে হাপন॥ যজ্জ-উপ- " করণাদি আছত হইবে। অরত্নিপ্রথিত যুগ নির্মিত করিবে॥ শীরিকারে ্যজ্ঞযুপ করিৰে নিৰ্দাণ। এই ত শাজের বিধি খ্যাত সর্বহান॥ । अञ्चिक 🛶

**अट्रांट्स किट्स वर्ग विक्रूयन । উত্তम वमन फिट्स कुकिंद्र काइन ॥ छन छन** শ্বীষাবিগণ বলি তার পরে। তড়াগ প্রতিষ্ঠা বাঞা করিলে অন্তরে। স্বর্ণমৎসা , বর্ণকূর্ম মর্ণশিশুমার। গঠিবে ইত্যাদি জন্তু শাস্তের বিচার। করিবেক মুণ-পাত্র আরো আহরণ। এই সব যথাবিধি করি সঙ্কলন।। তক্র মাল্য শুক্র यख धति यखगान। मर्द्योषधिकल भरव कतिरवक स्थान॥ शुंख कलखानि **সহ পশ্চিম তু**য়ারে। অবশেষে যাবে সাধু হরিষ অন্তরে॥ সেই দ্বার দিয়া খাগমগুপে যাইবে। তুরী ভেরী নানা বাজ্য বাজিতে থাকিবে॥ মঙ্গল নিনাদ 'হবে অতি ঘন ঘন। শুন তার পর ওহে খাষিগণ।। পঞ্চবর্ণ তাঁডি দারা বোল কোণ করি। মণ্ডল আঁকিবে এক বেদীর উপরি। তার মাঝে এহ আর এহপতিগণে। স্থাপন করিবে নাধু বিহিত বিধানে॥ এই-ক্লপে ব্রহ্মা বিষ্ণু দেব মহেশ্বরে। স্থাপন করিতে হবে শাস্থের বিচারে॥ দার রক্ষা হেতু পরে সাধু যজমান। বরণ করিবে দিকে শাস্তের বিধান॥ **অবশেষে আচার্য্যেরে করিয়া বরণ। বেদীপূর্ব্বে করিবেক বহুবৃচ স্থাপন।।** ছুই জন বহন চেরে স্থাপিতে হইবে। যজুর্কেদী ছুই জন দক্ষিণে থাকিবে॥ পশ্চিমে সামগ ছুই করিয়া স্থাপন। উত্তরে আথর্ফ ছুই স্থাপিবে তখন। দক্ষিণ ভাগেতে পরে উত্তরাস্য হয়ে। বসিবেক যুদ্ধান সানন স্বদুয়ে। ঋত্বিক গণেরে পরে কহিবে বচন। বেদ পাঠ কর সবে ওচে মহাজ্ম।। খ্য কার্য্য কর সবে বিহিত বিধানে। জাপকগণেরে পরে কহিবে বদনে॥ স্পাপনারা জপকার্য্য কর আরম্ভন। এইরূপ নিবেদন করিয়া শ্রবণ॥ জপ-কার্য্যে জাপকেরা নিযুক্ত হইবে। যজমান হোমকার্য্য সমাধা করিবে॥ চারিদিকে হোতাগণ বসিয়া তখন। বিধি অনুসারে হোম করিয়া সাধন॥ জ্যেষ্ঠ সামগেরা দবে হরিষ অন্তরে। বৈরাজাদি স্থক্ত পাঠ করিবে সাদরে ॥ করিবেক সামবেদী যত দ্বিজগণ। রহৎ সোম রথন্তর স্কু অধ্যয়ন॥ অথর্ব বেদজ্ঞগণ হরিষ অন্তরে। শান্তি পৌষ্টিকাদি স্ত্রু পড়িবে সাদরে॥ পূর্বেদিনে অধিবাদ করার কারণ। গোকুল হইতে মাটি করি আনয়ন॥ **दिषि भट्धा मिट्टे भाषे विट्यम्य कित्रिय। द्वीप्रमा इन्मन छात्रिपिटकट्ड आ**थिद সিদ্ধার্থ গুগুজু আদি করি আনয়ন। চারিদিকে সেই সব করিবে স্থাপন॥ হোম আদি যথাবিধি সমাপিত হলে। তড়াগ সমীপে বাবে বাদ্য সহকারে॥ ত্বৰ্ণ অলম্বারে এক গাভীরে সাজায়ে। জলমধ্যে সেই স্নাভী দিবেক নামায়ে॥ ভার পর সেই গাভী করিবে প্রদান। বিপ্রের করেতে উহা শাস্ত্রের প্রমাণ॥ मर्गा कृषी जारि পরে করিয়া এহণ। জলমধ্যে দিবে কৈলি শাজের বচন॥

শহানতী প্রভৃতির সলিলে আনায়ে। জলমধ্যে দিবে কেলি সানদ হৃদরে ।
সহত্র বাহ্মণে পরে করাবে ভোজন। অটোত্তর শত কিম্বা না হলে সক্ষ ।
এইরপে কর্ম সাঙ্গ করিবে থীমান। বলিনু সনার পাশে শান্তের বিধান ।
বাপী কৃপ পুকরিণী প্রতিষ্ঠা করিতে। এইরপ বিধি আছে জানিবেক চিত্তা।
তড়াগ প্রতিষ্ঠা আদি করে যেই জন। অনন্ত ফলের ভাগী হয় সেই জন।
তড়াগে ঘদ্যপি জল রহে গ্রীয়কালে। অগ্নিটোম ফল হয় জানিবে অন্তরে ॥
শরংকালে জল যদি রহে বিদ্যান। মথা মহা ফল হয় শান্তের প্রমাণ॥
হেমন্তে শিশিরে কিম্বা জল যদি রয়। বাজপেয় ভুল্য ফল হইবে নিশ্চয়॥
ঘদ্যপি সলিল থাকে বসন্ত সময়ে। অশ্বমেধ ফল হয় জানিবে হৃদয়ে॥
তড়াগ প্রতিষ্ঠা আদি করে যেই জন। ব্রহ্মলোকে সেই জন করয়ে গম্ন॥
কল্পকাল দেই হানে করে অবস্থান। ভবডোরে নহে বন্দী সেই মতিমান॥
চিরদিন স্থরপুরে কবে অবস্থান। ভবডোরে নহে বন্দী সেই মতিমান॥

এত শুনি ঋবিগণ কচে পুনরায়। শুন শুন বিধিয়ত নিবেদি তোমায়। রকের প্রতিষ্ঠা করে কিরূপ বিধানে। সেই কথা কহ প্রভু মোদের সদনে॥ রক্ষের প্রতিষ্ঠা করে যেই সাধুজন। অন্তিমে কি কল পায় করহ কীর্ত্তন। এত শুনি বিধিয়ত যুমপুর স্বরে। কহিলেন শুন শুন বলি স্বাকারে॥ পাদপ প্রতিষ্ঠাবিধি করিব কার্ত্তন। মন দিয়া শুন সবে ওছে ঋষিগণ। তড়াগ প্রতিষ্ঠা হয় যেরূপ বিধানে। পাদপ প্রতিষ্ঠা হবে দেরূপ নিয়মে ম প্রভেদ আছয়ে যাহা শুন ঋবিগণ। ক্রমে ক্রমে সেই সব করিব কীর্ত্তন॥ যধাৰিধি বেদী অত্যে করিয়া নির্দাণ। নানা দ্রব্য আয়োজন করিবে ধীমান। স্থান করি শুদ্ধমনে প্রথমে ত্রাহ্মণে। স্বর্ণ বস্ত্র দিয়া পূজা করিবে বিধানে 🗈 গন্ধ অনুলেপনাদি করিবে প্রদান। সর্কৌষধিজলে রক্ষে করাইবে স্থান॥ থৌতবস্ত্র দ্বারা পরে করিয়া বেষ্টন। পুষ্পমাল্য চন্দনেতে সাজাবে তখন 🛭 म्हि बाजा कर्गटवंश कतिए इरेटव। कार्कनमानाकायुक कूछन शंजारव। " আটটা স্থর্ণের ফল করায়ে গঠন। রুক্তেতে লাম্বত ভাবে করিবে স্থাপন। তান্ত্রপাত্তে ধূপ আদি করিবে প্রদান। উত্তম গুগুগুলু দিবে ত্রতী মতিমান ॥ এক এক ধান্তপূর্ণ কলস লইয়ে। প্রতি রক্ষ তলে দিবে সানন্দ ফদরে।। সেই কুন্ত সুশোভিত করিবে বসনে। গন্ধ আদি দিবে তাহে বিহিত বিধানে অপরাকে সেই সব করিয়া পুজন। বিনয়ে করিবে যত দিজে নিমন্ত্রণ & রক্ষবরে অধিবাস করিতে হইবে । অধিবাস লোকপালগণেরে করিবে # পর দিন প্রাতঃকালে ত্রতী যজ্মান। করিবেক শুক্ল বস্ত্র অব্দে পরিধান॥

इक्टरन (४ मू এक कतिरवं दानन। शर्वनी जटक मिर्ट मानाविज्यन ह স্থবর্ণ মুকুট দিবে তার শিরোপরে। মর্ণ শৃক্ষ কাৎস্য ক্রোড়ে সাজাবে তাহারে উত্তরমুখেতে ধেনু করায়ে স্থাপন। উৎসর্গ করিবে মন্ত্র করি উচ্চারণ।। গীত বাদ্য নানারূপ হবে চারি ভিতে। করিবেক বেদপাঠ হর্ষিত চিতে। 🚁 জ্বজ্বলে রক্ষে পরে করাইবে স্থান। বেন্টন করিবে শুক্ল বস্ত্রেতে ধীমান॥ মৎস্যাদি আমিষ হার। বলি দিতে হবে। তার পর যথাবিধি আত্তি অর্পিবে ষ্কৃত সহ রুষ্ণ তিলে হোমের বিধান। পলাশ সমিধে হোম করিবে ধীমান॥ ্রিইরূপে যথাবিধি করি সমাপন। দক্ষিণা বিভব মত করিবে অর্পণ। দ্বিশুণ দক্ষিণা দিবে আচার্য্যের করে। প্রণানাদি দ্বারা তুটি করিবেক পরে॥ পাদেপ প্রতিষ্ঠা করে যেই সাধুজন। ইছলোকে স্থাখে সেই করয়ে যাপন॥ শনোবাঞ্জা পূর্ণ তার অবশ্যই হয়। অন্তকালে অর্গে যায় নাহিক সংশয়॥ নমাহিত হয়ে রক্ষ করিলে স্থাপন। স্বৰ্গলোকে বাস তার শাস্ত্রের তিন শত ইন্দ্রপাত যত দিনে হয়। তাবত স্বর্গেতে সেই রহিবে নিশ্চয়॥ উৰ্দ্ধ তিন অধ তিন পুৰুষ লইয়ে। মোকভাগী হয় শেষে জানিবে স্থলয়ে॥ পাদপ প্রতিষ্ঠাবিধি শুনে যেই জন। অথবা বিধানে যেই করে অধ্যয়ন॥ জেন্দলোকে বাস করে সেই সাধুমতি। দেবগণ তার পূজা করে নিরবিধি॥ পাদপ প্রতিষ্ঠা যদি করয়ে সাধন। অপুত্রের পুত্র হয় শাস্ত্রের বচন॥ পরম ধার্মিক হয় সেই পুতরর। যশেতে পূরিত হয় দিক দিগন্তর॥ ্ত্রশ্বর্থ প্রতিষ্ঠা করে যেই সাধুজন। মহাফল পায় সেই শান্তের বচন।। ্ধনবান হয় সেই নারায়ণবরে। শোক নাহি রহে কভু তাহার শরীরে। বটরক প্রতিষ্ঠাতে যজ্ঞ ফল হয়। নিম্বরুকে আয়ুরুদ্ধি শাস্ত্রে হেন কয়॥ ্চশক প্রতিষ্ঠা করে যেই সাধুজন। अर्थवामी रशं मिरे नाट्यत वहन। ্পাডিম্ব প্রতিষ্ঠা যদি ভক্তিভরে করে।ভার্য্যালাভ করে দেই জানিবে অন্তরে ্উড়ম্বর প্রতিষ্ঠাতা যেই সাধুজন। আরোগ্য লভয়ে সেই শান্তের বচন। েশলাশ প্রতিষ্ঠা যদি ভক্তি করি করে। ত্রন্ধলাভ হয় ড়ার জানিবে অন্তরে। এ হেতু প্রতিষ্ঠা করে যেই শতিমান। ্ত্রক রকে সূর্য্যদেব করে অধিষ্ঠান। ্দ্র্য্যদেব তার প্রতি পরিতুই হন। মহাফল হয় তাহে শাস্ত্রের বচন। শঙ্কর তাহার প্রতি পরিতৃষ্ট অতি। ্রীরক প্রতিষ্ঠা করে যেই মহামতি। ्र भाषेन श्राजिक्षे। करत्र (यह माधुकन। পার্বতী তাহার প্রতি পরিতৃষ্ট হন। শিংশপা প্রতিষ্ঠা যদি ভক্তিভরে করে। অপুসরারা ভূট হয় তাহার উপরে कुम्पन्तम अधिकाला इस त्यरे जन। श्रवत्स्त्रा जात श्रवि शतिकृषे रन

নিতীতক প্রতিষ্ঠাতা যেই মহামতি। দাসর্দ্ধি হয় তার শান্ত্রের ভারতী।
বান্দ্রল প্রতিষ্ঠাতা যদি করে কোন জন। দাসক্ষয় হয় তার শান্ত্রের বচন ।
তালরক্ষ প্রতিষ্ঠাতা যেই জন হয়। পুত্র নাশ হয় তার শান্ত্রের বচন ।
বক্লে বংশের রদ্ধি শাস্ত্রেব বচন। নারিকেলে বহু ভার্য্যা পায় সাধুজন।
দ্রাক্ষাতে স্কল্ব অঙ্গ সাধুজন পায়। কেলীরকে রতি লাভ কহিন্তু স্বায় ।
কেতকী প্রতিষ্ঠা যদি করে কোন জন। সর্বনাশ হয় তার শান্তের বচন ।
বিরক্ষে খ্যাতি লাভ শাস্ত্রে হেন কয়। বলিন্তু স্বার পাশে ওহে খ্যাবিচয়।
ক্রিজ্ঞানা করিয়াছিলে যাহা খ্যাগা। স্বার পাশেতে তাহা করিন্তু কীর্ত্তন ।।
প্রাণে ধর্মের কথা অতি মনোরম। শুনিলে ভকতিভরে পাপের মোচন ।
পুরাণে ধর্মের কথা অতি মনোরম। শুনিলে ভকতিভরে পাপের মোচন ।

পৃঞ্চপঞ্চাশন্ত্রন অধ্যায় ।

কৌভাগ্যশখন ব্রত্ত ।

সনংক্রমার উবাচ।
পুরা মহাপ্রলয়ে হু দক্ষে প্রলয়বহ্নিনা।
কৌভাগ্যং প্রথয়ে সর্বর্ধং বৈকুত্তং হরিবক্ষনি॥

সনতকুমারে কহে যত ঋষিগণ। শুন শুন বিধিম্বত করি নিবেদন। সৌভাগ্য শয়ন এত শুনেছি প্রবণে। বিস্তার করিয়া তাহা কহ সবা স্থানে॥ এত শুনি বিধিম্বত কলেন তখন। জিজ্ঞাস। বরিলে বটে প্রশ্ন মনোরম॥ শুন শুন সেই কথা কহিব সবারে। অনুস্তম কথা সেই জানিবে অস্তরে॥ প্রলম্ন পূর্কেতে যবে হইল ঘটন। দগ্ধ হয় সেই কালে অখিল ভূবন। শুলোকাদি সর্ব্ব লোক দগ্ধীভূত হলে। সৌভাগ্য একত্র হয় জানিবে অস্তরে॥ সেই সেই লোকবাসী ছিল যত জন। সবার সৌভাগ্য হয় একত্র তখন॥ এইরপে কিছুকাল অতীত হইল। স্ফির সময় ক্রমে আসিয়া পড়িল॥ তখন সৌভাগ্যরাশি বছিশিখাক।রে। পিকল বরণ হয়ে বিশ্ব আলো করে॥ বিশ্বর নিকটে যাহা উপনীত হয়। রত্ত্রপে পরিণত সেই সমুদ্র। রত্ত্রপে ধরাত্বলে করিল গমন। শুন শুন তার পর ওহে ঋষিগণ। সৌজাগ্য আছিল যাহা অন্ধার গোচরে। গমন করিল দক্ষ প্রজাপতি পরে॥

मिर एक एक दश्म पर्यायमयोग। ऋशमायगापि शांत कोत य विकाम । विकास कि कि साहा मो आ कि न । जाहाँ हैं उ परहो यह नकन असिन ॥ কিছুকাল এইরপে অতীত হইলে। সৌভাগ্য যতেক ছিল দকের শরীরে॥ ভাহা হতে সতী কন্যা লভিল জনম। তাঁহারে শঙ্কর করে পত্নীত্বে বরণ॥ নে দৰ শুনেছ পূর্বের ওছে ঋষিগণ। অধিক বলিয়া আর কিবা প্রয়োজন॥ . মর নারী যেই কেছ সতী সেবা করে। মহাফল পায় সেই জানিবে অন্তরে॥ মতী আরাধনা যদি করে কোন জন। সৌভাগ্য লভয়ে সেই শান্তের বচন॥ এত শুনি ঋষিবর কহে পুনরায। শুন শুন বিধিস্থত নিবেদি তোমায়॥ কাত্যায়নী আরাধনা করছ কীর্ত্তন। শুনিবারে দবে গোরা করি আকিঞ্চন॥ এত শুনি বিধিম্বত কছেন তখন। শুন শুন ঋষিগণ করিব বর্ণন॥ বাসন্তী ড়ভীয়া তিথি হবে যেই কালে। পূর্বাহ্নেতে তিলম্পান করিবে সাদরে॥ नानाविध ফলমূল করি আহরণ। ধূপ দীপ নৈবেল্যাদি করি আয়োজন॥ মহেশ সহিত পূজা করিবে সতীরে। বিধান বলিব সব শুনহ সাদরে॥ স্বর্ণপ্রতিমাতে অত্যে করাইবে স্নান। পঞ্চগব্যে গদ্ধোদকে এইত বিধান। কোটিচন্দ্র সমতুল্যা দেবীরে তখন। হৃদয-আকাশে সাধু করিবে চিন্তন॥ তার পর পাদদ্রয়ে পূজিবে পার্বতী। শিবাকে পূজিবে গুল ফে এতী মহা-মতি॥ জঙ্গাছয়ে রুদ্রাণীরে করিবে পূজন। জানুযুগ্মে বিজয়ারে করিবে অর্চন। কটিতে কোটনীপুজা করিতে হইবে। শূলপাণি সহ পুজা অন্তরে कानित्व॥ मक्नारक উपरत्र कित्रा शुक्रन। क्रेमानीरत खनम्बत्म कतित्व অর্চন ॥ সর্বাত্মা সহিতে পূজা করিবে ঈশনীে। কণ্ঠেতে চিদাহা সহ পূজিবে রুদাণী। ত্রিপুরনাশিনীপূজা গ্রীবাতে করিবে। করদ্বয়ে অনস্তারে পূজিতে হইবে॥ কালাননপ্রভা পুঞ্চা বাহুদ্বয়ে হয়। ত্রিলোচন সহ উহা শান্ত্রের নির্ণয় সৌভাগ্যাভরণা পূজা ভূষণে করিবে। শাস্ত্রের প্রমাণ ইহা অন্তরে জানিবে॥ অশোকবনবাসিনী সম্পতিলায়িনী। ওঠাধরে পূজা তাঁর শুন যত মুনি॥ - ক্রমুখঞীকে পূজা করিবে বদনে। স্থাণু সহ অই পূজা শাস্ত্রের বিধানে॥ ভীমোগ্রভীমরূপিণী পরেতে পূজন। সর্বাত্মা সহিতে শিরে শান্ত্রের বচন। ছার পর অ্টমুর্ত্তি দেব মহেশবে। বিধানে করিবে পৃক্তা কহিনু স্বারে॥ भीवात क्षूप कीह नोत पाता शतत । त्मरे यात्न विल पिहेव ब्रानित व्यख्ता। পর দিন প্রভাতেতে করি গারোখান। যথাবিধি প্রাতঃ ক্ষত্য করি প্রাতঃ-স্মান।। ওদ্ধাচারে জপ আদি সমাধা করিবে। ত্রাহ্মণ-দ্বশৈতি পরে সাদরে व्यानित्व ॥ विक्र भाना व्यापि पित्रा कतित्व शृष्टन । जात्र शेत्र मत्हचतत्र कतित्व

অর্চন। পর্যায় উপরে পরে হর-পার্বতীরে। শয়ন করাবে ত্রতী অতি ভক্তি-ভরে॥র্ষ দহ গাভী দহ দে প্রতিমাদ্য ।বিপ্রের করেতে দিবে শান্তের নির্ব্ প্রতিমানে শুক্লপক্ষে দাদশী তিথিতে। পূজিবেক বন্ধা বিফু ভক্তিযুত চিতে। মহালক্ষী পূজা বতা করিবে সাধন। একবর্য এই রূপ জানিবে নিয়ম। সৌভাগ্য শরন ত্রত ইহারেই কয়। সৌভাগ্য-আরোগ্যপ্রদ শাস্ত্রের নির্ণয়॥ দশ অফ কিম্বা সপ্ত বরষ ধরিয়ে। এই ত্রত করে যেই সানন্দ হৃদয়ে ॥; মনোবাঞ্ছা সিদ্ধ হয় জানিবে তাহার। অমুতেক কল্প বাস পুরপুরে তার # অমরগণেরা পূজা করে দেই জনে। নিত্যানন্দ পায় সেই নিজ মনে মনে ॥ বিষ্ণুলোকে ব্রদ্ধলোকে শঙ্করগোচরে।সে জন যাইতে পায়ে ইচ্ছা অনুসারে॥ বালক বালিকা আর নর কিন্ধা নারী। এই ত্রতে সবে হয় সম অধিকারী 🛚 ইহার মাহাত্ম্য কণা যে করে বর্ণন। অথবা একান্তমনে করয়ে প্রৰণ॥ কিম্বা উপদেশ দেয় এ ত্রত করিতে। বিজ্ঞাপর হয় সেই জানিবেক চিতে ॥ বহুকাল স্বর্গে বাস করে যেই জন। শাস্ত্রের বচন মিথ্যা নছে বঢ়াচন । পুর্বকালে উমা সতী একান্ত অন্তরে। ভক্তিভরে এই ত্রত অনুষ্ঠান করে। উপদেশ দেন তাঁরে দেব পঞ্চানন। কহিনু স্বার পাশে ওহে ঋষিগণ॥ ইংার যতেক ফল কে বর্ণিতে পারে। অনন্ত অনন্ত মুখে বর্ণিবারে নারে॥ আরো এক বত আছে ওহে ঋষিগণ। রম্ভাতৃতীয়ার ব্রত অতি অনুত্তম 🛭 তাহার বিধান বলি শুনহ সকলে। শুনিলে পাতক পুঞ্চ চলি যায় দুরে॥ পার্বতীর প্রিয় হেতু দেব পঞ্চানন। এই ব্রত তাঁর পাশে করেন কীর্ত্তন ॥ মার্গশীর্ঘে শুক্লপক্ষে তৃতীয়া দিবদে ৷ প্রাতঃকানে গাত্রোত্থান করিয়া হরিষে দম্বধাবনাদি কার্য্য করি সমাধান। যথাবিধি শুদ্ধজলে করিবেক স্নান ! তদন্তর নিত্যক্রিয়া করি সমাপন। ভক্তিভাবে উপবাস করিবে সাধন। নিয়ম করিয়া পরে সংকল্প করিবে। ওন শুন শুন দেই কথা বলিতেছি তবে॥ " শুন শুন ওগো দেবি করি নিবেদন। বর্ষাবধি আমি এই করিমু নিয়ম॥ প্রতিমানে তৃতীয়াতে উপবাসী হয়ে। করিব ত্রতের কাজ সানন্দ-হৃদয়ে॥ পরদিন যথাবিধি করিব পারণ। অনু এহ মমোপরি কর বিভরণ। নির্বিত্বে আমার ত্রত যেন সিদ্ধ হয় 'এই ভিক্ষা চাহি আমিহও গো সদর॥'' এরপে সংকল্প করি পরে সাধুর্জন। নদীতে তড়াগে কিবা করিবে গমন। যথাশক্তি উপচারে একান্ত অন্তরে। বিধানে করিবে পূজা হরপার্বতীরে । তার পর কুশোদক করিবেক পান। অরণ করিবে সদা হরগোরী নাম। এইরপে রাজিকাল করিয়া যাপর। প্রাতঃকালে গাজোখান করিয়া স্কুল।

े गिरुचक भोत्रीचंक वास्तर्गिकरतः। त्वाक्रम कर्तारा गर्न कि एकि करता। লবণ রুঞ্জন দিবে দক্ষিণা স্বায়। এরূপে করিলে ত্রত মহাকল পায় । ষেই জন এই ত্রত করয়ে সাধন। শত কুল পরিত্রাণ করে সেই জন। ইহকালে মহৈশ্ব্য সেই সাধু পায়। প্রকালে স্থরপুরে বিমানেতে যায়॥ শাস্ত্রের বিধান এই ওহে ঋষিগণ। ইহাতে সংশয় নাহি জানিবে কখন॥ .শিবের মুখের বাক্য কে খণ্ডাতে পাবে। নিজে উমা এই ত্রত ভক্তিভরে করে মার্গশীর্ষে এইরূপ করিয়া পূজন। উপবাদে স্থানিয়মে করিয়া যাপন॥ পৌষ মাদে তৃতীয়াতে একাও অন্তরে।অর্চন। করিবে ব্রতী গিরিজা সতীরে গিরিজ। নামেতে হবে পার্বতী-পূজন। তার পর ওন ওন ওহে ঋষিগণ। রাত্রিতে গোমূত্র মাত্র করিবেক পান। আর কিছু নাহি খাবে এইত বিধান॥ পর দিন প্রাতঃকালে ব্রাহ্মণ-নিকরে (ভোজন করাবে ব্রতী আতি ভক্তিভরে॥ ভোজন করায়ে বিপ্রে দক্ষিণা অর্পিবে। নতুবা সকল কর্ম বিফলে যাইবে॥ এইরপে ত্রত করে যেই সাধুজন। বাজপেয় ফল পায় শাস্থ্রের বচন। অতি-রাত্র যাগজন্য যেই ফল হয়। সে জন লভগে তাহা নাহিক সংশয॥ তার পর মাথমাসেঁ তৃতীয়া দিবসে। পার্কতীর পুজা বতী করিবে হরিষে॥ স্থানেবী নামেতে হবে দেবীর পূজন। এই ত শাস্ত্রের বিপি ওচে ঋষিগণ। লাভিতে গোময় মাত্র করিবেক পান। বলিলাম সরা পালে এই ত বিধান। প্রাতঃকালে নিতাক্রিয়া করি ন্যাপন। ব্রাহ্মণগণেরে ত্রতী করাবে ভোকন। মুবর্ণ দক্ষিণা দিবে দ্বিজাতিনিকরে। এই ত শাস্ত্রের বিধি কহিনু স্বারে ॥ এইরপে প্রদেবীরে করিলে পূজন। বিফুলোকে চলি যায় সেই সাধুজন। শিবের সাযুজ্য পায নাহিক সংশয়। ব্রতের নাহাত্ম কভু অল্পা না হয়॥ তার পর ফাল্কেনের তৃতীয়া দিবদে। করিবে দেবীর পূজা মনের ছরিবে॥ গৌরী নামে পার্বভারে করিবে পূজন। রাত্রিকালে উপবাসে রহিমে হুজন॥ পোষ্টার কেবলমাত্র করিবেক পান। এই ত নিষম আছে শাস্ত্রের বিধান॥ তার পর প্রাতঃকালে নিত্যক্রিয়া সারি। শিবভক্ত বিপ্রগণে নিমন্ত্রণ করি॥ ভোজন করাবে সাধু তাহা সবাকায়। দক্ষিণা প্রচুর দিয়া করিবে বিদায়। কুমারীগণেরে পরে করাবে ভোজন। কাঞ্চন দক্ষণা দিবে ওছে ঋষির্গণ।। এইরপে গৌরীপূজা কাল্কনে করিলে। বার্জপেয় ফল পায় শান্তে ছেন বলে। অতিরাত্র যাগফল পায় সেই জন। শান্তের বচন মিথ্যা নছে কদাচন।। ভার পর চৈত্রমাসে ভৃতীয়া দিবলে। ভক্তিযুক্ত হরে সাধু মনের হরিবে।। বিশালাকী পূজা আদি করিবে সাধন। পর্বিতীর পূজামাত্র মতে অন্তেম।

श्वीतिकाहल परिमार्ख (छोजन कतित्य। विधारन तिरित वजी छेनवानी स्ट्रा॥ পন্নধিন প্রাতঃকালে দিজাতি নিকরে।ভোগন করাবে ত্রতী অতি ভক্তিভৱে কাঞ্চন দক্ষিণা দিবে কুল্পুম সহিত। বলিলাম মবা পাশে শাস্ত্রে বিহিত॥ এইরপে বিশালাকী করিলে পূজন। অতুল দৌভাগ্য পার দেই সাধুজন॥ বিশালাক্ষী ভগবতী হয়ে রূপাবতী। নিঃসলেং করে তারে অতি ভাগ্যবতী। বৈশাখ মাদেতে পরে ওহে ঋষিগণ। স্বতিথি তৃতীয়া ববে দিবে দরশন॥ **এমুখী নামিক। সেই পার্ব্বতা দেবীরে। সদ্দনা করিবে ত্রতা অতি ভক্তিভরে** নিশাকালে স্তমাত্র করিয়ে ভোজন। উপবাসে রবে ত্রতী এই ত নিয়ম॥ প্রাতঃকালে নিত্যক্রিয়া সমাপিয়া পরে।ভোজন করাবে বিপ্রে অতি ভক্তি-ভরে ॥ স্থবর্ণ দক্ষিণা দিয়া করিবে বিদায । কামনা সফল হবে হেন অর্চ্চনায়া। এইরপে যেই জন কর্যে পুজন। সর্ক্কাম দিদ্ধ তার শান্তের বচন। তার পন্ন জ্যৈষ্ঠমানে বিবিধ কুমুমে। পার্কভীর পূজা পুনঃ করিবে বিধানে॥ তৃতীয়া দিবস মবে দিবে দরশন। বিধানে করিবে পূজা ওছে মুনিগণ।। নারান্নী নামে তাঁরে পুজিতে হইবে। ভক্তিভারে নানাবিধ কুমুম অর্পিবে॥ রাত্রিতে কেবলমাত্র খাইবে লবণ। উপবাসে নিশাকাল করিবে যাপন॥ প্রাতঃকালে শিবভক্ত যত বিপ্রগণে। নিমন্ত্রণ করি সবে "আনিবে সদনে॥ ভোজন করাবে দবে নানা উপহার। তাসূল অর্পিবে পরে ত্রতী **গুণা**ধার॥ লবণ দক্ষিণা দিলা কৰিবে বিদায়। এই ও শান্তের বিধি কহি সবাকায়॥ এইরপে পূজা করে যেই কোন জন। পুত্র লাভ হয় তার শান্তের বচন॥ আষাঢ় মানেতে পরে ভৃতীয়ার দিনে।অই রূপে পার্ব্বতীরে পূজিবে বিধানে॥ माधवी नाटमट इटव (प्रवीत शृजन। ताजिकाटः छेशवाटम तिहिटव युजन॥ ভিলোদক পান মাত্র করিবে নিশায়। উপবাসী রবে তাতী কহি নবাকায়॥ তার পর প্রাতঃকালে উঠি ভক্তিভরে।নিত্যক্রিয়া সমাপিনা একান্ত অন্তরে॥ বিপ্রগণে নিমন্ত্রণ করি তার পর। ভোজন করাবে ত্রতী হয়ে একান্তর॥ স্থৃত্ত রূপেতে সবে করায়ে ভোজন। কাঞ্চন দক্ষিণা দিবে শাস্ত্রের বচন॥ অথবা দক্ষিণা দিবেঁ এড় মাত্র করে । এই ত শাস্ত্রের বিধি কহিনু সবারে ॥ এইরপে মাধবীরে করিলে পূজন। শুভগতি ইয় তার শিবের বচন।। -শিবের আদেশ কভু মিথ্যা নাহি হয়। শুভ লোকে যাবে দেই নাহিক সংশয় আবেণ মানেতে পরে তৃতীয়া দিবসে। ভগবতী-পূজা ত্রতী করিবে হরিষে ॥ 🔊 নামে অর্চনা ভাঁর করিতে হইবে। শান্তের বিধান এই জানিবেক দৰে ॥ গোশৃক-নিঃস্ভশাত জল করি পান। রাত্রে উপ্বাদী রবে এই ত বিধান॥

প্রাতঃকালে শিবভক্ত দিজাতি-নিকরে। যথাাবাধ পূজা করি অভি ভক্তিভবো जिन मह वर्गमांन कतिरव मंताह। विनय कतिया शत्त मिरवक विमाय॥ এইরপে জীর পূজা করিলে দাধন। ইহলোকে রাজ্যভোগ করে দেই জন॥ **শন্তকালে গোলো**কেতে করে নিবসতি।কহিন্ম সবার পাশে শাস্ত্রের ভারতী। তার পর ভাদ্রে মাদে ভৃতীয়ার দিনে। পুনশ্চ পজিবে ব্রতী বিহিত বিধানে॥ ভদা নামে পার্কতীরে করিবে পূজন। রাত্তিকালে বিল্পত্র করিষা ভোজন। উপবাসে নিশাপাত করিতে হইবে। শাস্ত্রের বিধান এই সকলে জানিবে॥ প্রাতঃকালে বিপ্রগণে কুমারী-নিকরে।ভোজন করাবে ত্রতী অতি ভক্তিভরে নানাবিধ মিউদ্রেব্য করায়ে ভোজন। বস্ত্র মর্ণ করিবেক দক্ষিণা অর্পণ॥ **এরপে ভদার পূজা** বেই জন করে। হতুন সম্পত্তি আমে তার করতলে॥ সকল কামন। তার হটবে পুরণ। শিবের আদেশ মিখ্য। নহে কদাচন॥ আখিন মাসেতে পুনঃ তৃতীয়। দিবসে। গিরিপুত্রী এই নামে পূলিবে হরিষে॥ তপুলের জল মাত্র করিয়া ভোজন। রাত্রিকালে ইপবাসে রহিবে সুজন॥ পাতঃকালে স্নান আদি নিত্যক্রিয়া করে।বিশ্রগণে নিমন্ত্রিয়া আনিবে কাদ্রে ভোজন করাবে পরে তাঁহা স্বাকাষ। দ্বিদা অপিনা স্বে লিবেক বিদায়॥ এইরপে ততকার্য্য কৈলে অনুষ্ঠান। মন্তকারে গ্রা. বিলোকে লে করে পরাণ। পুজিত হইয়া তথা করে নিবসতি। মিখ্যা কন্ত নহে ২২। শিবের ভারতী।। কার্ত্তিক মাসেতে পরে তৃতীয়া দিবসে। পুনশ্ত করিবে প্রসা মনের হরিবে॥ পদোভবা এই নামে করিবে পূজন। পান্যৌর পূসামাত নহে অক্তম॥ রাত্রিকালে পঞ্চাব্য করিবেক পান। জাগরণ করি রবে এই ত বিধান॥ প্রাতঃকালে শুদ্ধাচারে গাত্রোথান করে। বিপ্রগণে নিমন্ত্রিয়া জানিবের ঘরে ॥ কুমারীগণেরে পবে করি আন্যন। স্বারে বিধানে এতী করাবে ভোজন।। এরপে ভাদশ মাস পূর্ণ হলে পরে। যথাবিধি উদ্যাপন করিবে সাদেরে ॥সাধ্যমত নানাদ্রব্য করি আহরণ। বিপ্রস্বেণে সেই সব করিবে অর্প্ণ॥ খেতচহত্ত কমগুলু আসন লইয়ে। বিপ্রগণে দিবে তাহা প্রফুল-ফুদরে॥ পাদুক। নর্পণ আদি করিবে প্রদান। যজ্ঞ-উপবীত দিহেব শান্তের বিধান॥ ভার পর নানাবিধ উপচার দিয়ে। উদার করিবে পূজা সানন স্বদরে॥ মহেশ্বরে পৃজিবেক হবে একমন। এই ত শাস্ত্রের বিধি ওহে ঋঘিগুণ।। নৈবেদ্য মোদক পুষ্পমাল্য করি আদি। নানাদ্রব্য দিবে ব্রতী করিয়া ভকতি বাজপুর মৃতপক্ক লড্ডুক অর্পিবে। দাড়িম ও নারিকেল ভক্তিভরে দিবে॥ <u>क्रेक्स प्रमासिया क्रिय वर्षा । मध्य व्यापि योगा ध्री इत्य यन यन ॥</u>

তার পর বেদশন উচ্চারণ করি। আরতি করিবে পরে অতি ভক্তি করি॥
রস্তাত্তীয়ার ত্রত এইরূপ হয়। ইহাতে অনন্ত ফল নাহিক সংশয়॥ এই কর
রপে ব্রত করে যেই সাধুজন। দেবগণ তারে সদা করেন পূজন॥ এই ত্রত
ভূমিতলে যেই জন করে। কল্পকোটি রহে সেই স্থাধে স্থরপুরে॥ শিবের সাযুজ্য পরে পায় সেই জন। ইহাতে সন্দেহ নাহি শান্তের বচন॥ রস্তা শতা এই ব্রত সর্ব আগে করে। সেই তেতু এই নাম হয়েছে সংসারে॥ যোসিনীরা এই পূজা করিয়া সাধন। পার্ক্তীর প্রিয়তমা হয় সব জন।
নিরস্তর রহে তারা পার্ক্তী সদনে। সৌভাগা লভিন সবে এই সে কারণে॥
অধিক বলিব কিবা ওছে শ্রিগে। গ্রাণে ধর্মের ক্র্যা মভি বিমোহন।

### ेबन्धि डम अशाश।

শেলিন গণের ক্পেতি।
প্রত্য হি সানেন স্থাই ব্যক্তি ছোজনির্ত্য ।
নার প্রত্য প্রত্য গ্রাণ প্রিত্র প্রত্য মহই।
নোলিন্তাই ভিক্থন নৈলোক্যজাণি জল্ল ৬ং।
ত সম্ভাবের ভেলোক্যক্ষাণিজ্য ।

এতে শুন ক্রিগণ কর্বা করে। তি আন। করে ন পুনঃ বিধির কুমারে। শুন শুন নিবেদন চিহিচ নকন। ক্রিচেট্ তব মুখে অপুর্ব কথন। यात्रिमोद्या (पर जन का ना मानद्य। छेगां ध्यम र दर (यह खर कटनाः তোমার মুখেতে তাহা করিত্ব এবণ। এখন জিজ্ঞানি যাহা করহ বর্ণন 🕸 (महे मव (यात्रिनोत्रा दिक्त्र ए जनरम। বর্ণন করহ তাহা স্বার্**স্দ্রে**॥ অই স্ব শুনিবারে করি আকিঞ্চন। বিবরিঘা কৌ রুচল করহ পূরণ। এত শুনি বিথিওত ক্রছে ধারে ধারে। শুন শুন সেই কথা বালব স্বারে। यमन विनिशाष्ट्रित (पर श्रक्षानन। विनिव (म मव आमि गर्वात महन॥ विनेत করিয়া উমা অতি ধারে ধীরে। সম্বোধিলা কহিলেন দেব মহেশ্বে 🛭 নিবেদন করি দেব করছ এবণ। শুনিনু তোমার মুখে িবিধ সাধন॥ যোগিনীগণের জ্ম শুনিতে বাদনা। অতএব ক্লপা করি বলহ অধুনা। এত শুনি হাসি ভানি কহে পঞানন। বিশ্বত হয়েছ প্রিয়ে পর্কের ঘটন। সরণ করায়ে আমি দিতেছি তোমারে। শুনিলে অবশ্য সব উদিবে অন্তরে॥ সারাৎসার পরাৎপর কর**হ এব**৭ # অতি গোপনীয় ইহা অতি পুরাতন।

মহাপ্রলয়ের কাল ঘটিল যেকালে। সর্কুসত্বিবর্জ্জিত সংসার হইলে। ভূমি আদি পঞ্চত্ত্ব কেবল-আত্মায়। হইল তখন হিত কছিল তোমায়। অন শুন মহেশ্বরি আমার বচন। সেই কালে শৃত্য হয় এ ভিন ভুবন। জুমি জার আমি ভিন্ন কেহ নাহি ছিল। তন তন তার পর যা মাহা ঘটিল। জিজ্ঞাদা করিনু আমি দহাদ্যে তখন। শুন শুন প্রিয়তমে আমার বচন। আমা হতে ভব শক্তি অধিক কি কম। বিবেচনা করি তাহা দেখহ এখন॥ ত্রনাওমণ্ডল এই দেখ শূন্তাকার। কুত্রাপি নাহিক স্থান দেখি থাকিবার॥ বনহ ভাবিনি এবে রহিব কোথায়।এ হেতু জিজ্ঞাসা করি পার্বতী তোমায়। যাহা যাহা করেছিনু কর দরশন। বিগত হয়েছে তাহা নাহিক এখন। সকল জানহ তুমি ওগো সুলোচনে। যেরূপেতে থাকি আমি সংসার করমে। সংস্পর্শবিহীন হয়ে রহি নিরন্তর। এইমাত্র ইচ্ছা করে সদত অন্তর। অবস্থিতি স্থান এবে করহ নির্ণয়। উচিত করহ যাহা বিবেচনা হয়। আমার এতেক বাক্য করিয়া শ্রবণ। রোমবশে হলো তব লোহিত লোচন॥ নিষ্ঠুর বচনে তুমি কহিলে আমারে। "শুন শুন মহেশ্বর বলি হে তোমারে॥ ষ্থন যে কোন কার্য্য কর আচরণ। আমাতে নির্ভা সব কর পঞ্চানন। আমি ভিন্ন শব রূপে কর অবস্থান। এই ত তোমার শক্তি ওছে মতিমান। যোগ্যতা তোমায় কিছু দেখিতে না পাই। অধিক বলিব কিবা কছ তব ঠাই॥ কারণ-অবস্থাপরা বিধাতর পিণী। আমারে জানিবে তুমি ওছে শুলপাণি॥ অকার্য্য কিছুই নাহি জানিবে আমার। সতত এক্য়া আমি জগত মাঝার॥ পরমা রূপেতে আমি আহি বিদ্যমান। কার্য্যভাবসমাযুক্তা ওতে মতিমান। কার্যাভাব যবে আমি করিয়া আশ্রয়। প্রকৃতিরূপেতে থাকি ওহে সদাশয়॥ ব্রহ্মাদিরা আবিভূতি হয় সেই কালে। অধিক বলিব কিবা ভোমার গোচরে। এই চরাচর বিশ্ব আমারই মায়ায়। হইয়াছে বিনির্মিত কহিনু তোমায়॥ তুই শক্তি আছে মম জানিবে অন্তরে। আবরণ এক আর বিক্লেপ ,অপরে॥ এই ছুই শক্তিবলে সর্ক্রকার্য্য হয়। কহিলাম তব পাশে ওহে সদাশয়॥"

তোমার এতেক বাক্য করিয়া প্রবণ। বজ্রাখাত যেন শিরে হলো নিপতন।।
কিছুমাত্র নাহি আর কহিন্ত তোমারে। তৃফীভূত হয়ে রহি মৌনভাব ধরে।
আন্তরিক হঃখভারে হইয়া তাপিত। মৌনভাবে কিছুকাল রহি অবস্থিত।।
তোমার নিগ্রহ হেতু ওন তার পরে। একটা, উপায় স্থির করিন্তু অন্তরে।
ভাষাপ্রের পশ্চিমেতে করিয়া গমন। নিজ্ঞাকার তার অতি মহাকার।
তাহা দিয়া দৈত্য এক সৃষ্ধিন্ত স্থরায়। বিকট্ট আকার তার অতি মহাকার।

মহাঘোর দেখি তারে হরিয় অন্তরে। ঘোর নাম দিনু তারে জানিবে অচিরো, দৈর্ব্যে কোটি যোজন যে তার কলেবর। বিস্তারে বত্রিশ লক অর্ডি ভয়ক্কর 📭 কোটি সংখ্য হাত আর উজ্জ্ল লোচন। পঞ্চাশৎ লক্ষ তার ভীষণ বদন ॥ এইরূপে দৈত্যবরে সৃজন করিয়ে। অফ সিদ্ধি দিনু ভারে সানন হই**রে** 🛱 আমার সদৃশ 'হলে। দানবরাজন। তখন আসিনু আমি তোমার সদ্ম ॥ এদিকে দানবপতি বিকট আকারে। জলার্ণব ােদ যেন করে একবারে 📸 আমার মনের ভাব রঝিয়া তখন। আমারে সলোগি তুমি কহিলে বচন 🗗 " এন শুন মহেশ্বর বচন আমার। জীবহীন দেখ এই জগত সংসার॥ আজ্ঞা কর সব পুন করি দরশন।" তোমাব এতেক বাক্য করিয়া শ্রবণ॥ হাসিতে 🕏 হাসিতে আমি কহিনু তোমারে। শুন শুন মহাদেবি একান্ত অন্তরে ॥ আমার সঙ্গেতে তুমি কর আগমন। পশ্চিম দিকেতে যাই চলহ 'এখন॥" আমার এতেক বাক্য শুনিয়া তখনি। পশ্চাৎ পশ্চাৎ ভূমি হলে অনুগামী॥ প্রথম তঃ নানাস্থান করিয়া ভ্রমণ । পশ্চিমে ঘাইতে শেষে করিলে মনন।। প্রথমে নিসেধ আমি করিনু তোমারে। মম বাক্য নাহি তুমি ধরিলে অন্তরে। আমার সহিতে তুমি করিলে গমন। উপনীত সেই স্থানে হলে সেইক্ষণ। কেলারকেশ্বর তথা আছে বিরাজিত। সেই স্থানে দৈত্যবব করে অবস্থিত। তোমারে দেখিয়া সেই দৈত্যের রাজন। কামশরে অভিতৃত হইল তখন। হস্ত প্রসারণ করি সেই তুরাচার। তোমারে ধরিতে তুট হয় আ**গুসার**॥ কামশরে জর্জ্জরিত হইয়া ছুর্জ্জন। তব প্রতি চাটুবাক্য ক**হিল তখন।** তোমারে সম্বোধি কহে সেই তুরাচার। "শুন শুন বরীননে বচন আমার॥ ত্বনা করি এসো মম অঙ্কের উপরে। জুড়াও আমার হৃদি অতি ত্বরা করে॥ সর্বেশ্রী হও মম বচনে আমার। অঞ্চ দান করি মোরে করছ উদ্ধার II নিমগ্ন হয়েছি আমি মদন সাগরে। তাণ কর তাণ কর প্রেয়সী আমারে 🎼 ত্যেমাবে ছাড়িয়া আমি রহিবারে নারি। পতিভাবে অঙ্গান দেহলোঁ স্থাপরি॥"

এইরপে চাট্বাক্য কহে তুরাচার।রোনেতে লোহিত হয় লোচন তোমারা।
কটাক্ষ করিয়া তুমি তাহার উপরে। বলিতে লাগিলে প্রিয়ে সুগভীর স্বরে।
ভান শুন দৈত্যরাজ আমার বচন। দৈত্য-অধিপতি তুমি বিদিত ভূবন।
স্বর্গভোগী তুমি দৈত্য নাহিক সংশয়। দেবগণাপেক্ষা বলা তুমি মহোদয়।
সর্বসংহারক কোমা করিছি দর্শন। বার্য্যান্ নাহি কেহ তোমার মতন।
আমার প্রতিজ্ঞা যদি সাধিবারে পার। বরণ করিব তোমা দিমু প্রেই বর।

উনহ প্রভিজ্ঞা মুন ওহে দৈত্যরায়। একে একে দুব কথা কহিব ভোমায়॥ আমার শ্রতিক্রা এই শুনহ এখন। আমার সহিতে যেবা করিবেক রণ।। ্ আমারে হারাতে যদি সেই জন পারে।বরণ করিব আমি জানিবে তাহারে॥ ু মতুবা স্বপর কেহ নাহি হবে পতি। প্রতিজ্ঞা আমার এই ওহে দৈতাপতি॥ ,हैरप यि বাঞ্চা হয় তোমার অন্তরে। ত্রা করি হণ তবে উত্তত সমরে।" তৌশার এতেক বাক্য করিয়া প্রবণ। ঘন ঘন দৈতারাজ করয়ে গর্জ্জন। ি**প্রেলয়-জলধির মত ঘবঘর ষ্বে। ভুর্মনা ক্রিল ক্ত জানিবে তোমারে॥ রোষবশে** করি পরে লোহিত লোচন। উঠিন দানববর সমর-কারণ।। তথন ্র<mark>িভাহার</mark> রূপ দরশন করি। বিহরণ হইনু এামি জানিবে স্থনরি॥ তাহারে দেখিয়া মনে হলে। অনুমান। ন'াব করিবে বিশ নাছি পরিত্রাণ॥ তোমারে ্**ধরিতে** নেই দুট ছুরজন। পাবিত হইয়া চলে অতি ঘন ঘন॥ কি**ন্ধ সা**ধ্য কিবা তার ধরিতে তোমারে। ধরে ধরে এই ধরে পরিবারে নারে॥বেগেতে ্**দানবরাজ** করিছে গমন। হস্তস্পর্ণে চুণ ভুত হয গিরিগণ।। পদাঘাতে কত গিরি বিক্ষিপ্ত হইষে। সলেগে পাঁড়ল সব সাগবেতে গিয়ে॥ ভদীয় ্**অফের বায়ু বহিতে** লাগিন। জল্বি ওন তাহে উচ্ছ লিভ হৈন॥ শুন শুন **মিহামায়ে আমার বচন। ভোমাত**ক থরিতে নেই নারতে গ্রন॥ কিছুতেই ্**কিন্তু নাহি ধরিবারে পারে। পা**র পাছ বার এন পিতে ভোমারে॥ ভার ্**পর তুইজনে বাধি**। ন্যর। নাহি ফেরি হেন যুদ্ধ*ে* ি ভ্ষলব।। যুদ্ধ দেখি **ভয় জন্মে আমার অন্তরে।** জলান সনিতে বিশ্ব নাণে গরে থরে॥ আস্ত্র সেই তুট করিল দেপ।। সকলি বিফন কিন্ত হইল তখন।। সেই সব ্**অস্ত্র পড়ি তোমার শ**রীরে। ভন্মীভূত হয়ে পড়ে ভূতল উপরে॥ তাহা দৈখি ক্রোধভরে দানবরাজন। ভয়ক্ষর তেজোরাশি করে প্রদর্শন॥ শুন 😜ন তার পর আশ্চর্চঘটন। এইরপে যুদ্ধ হয় অতি বিভাষণ॥ কেহ নাহি ুর্সেই যুদ্ধে হারে কিবা জিনে। কোটবর্ষ সেই যুদ্ধ চলে অবিরামে॥ দেখি ভয়াতুর হইরা তখন। যোগবলে স্কাতনু করিয়া ধারণ॥ তোমারে অভার করি রহি নিরওর। শুনহ আশ্চর্য্য যাহা ঘটে তার পর। কোনরপে কৈত্য তোমা ধরিবারে নারে। অথবা কিছুতে নাহি বিধিবারে পারে॥ তোমারে বধিতে করে বিবিধ উপায়। আকুল হইয়া পড়ে চিন্তায় চিন্তায়॥ ্শরীর বিদ্ধিত দুট করে তার পরে। বাহু ঘরষণ করে আপন শরীরে॥ মনে মনে শেষে ছুই করয়ে ডিন্তন। নারীরে বেরপে পারি করিব নিধন॥ ক্ষিতাহে নিক্তি করি করিব সংহার। মনে মনৈ এইরপ ভাবি ছুরাচার॥

বিদ্ধিত করিতে খাকে নিজ কলেবর। একাও ব্যাপিল ক্রমে অতি ভর্কর 🛭 কলেবর রদ্ধি দেখি দানবরাজন। মনে মনে অতি হুফ হুইল তখন। তোমারে সন্বোধি পরে কহে ত্রাচার। " শুন শুন কুটা নারী বচন আমার। প্লায়ন্ত্র কর তুমি কি হেতু বলনা। কভু না পূরিবে তব মনের বাসনা॥ এখরি তোমারে আমি করিব নিধন। পরিত্রাণ করে কেবা বলহ এখন।। পলাইতে আর সাধ্য নাহিক তোমার।" এইরপ রটু কথা কহে ছুরাচার॥ ভাহার বচন তুমি করিয়া শ্রবণ। রোষভরে গরজিয়া কহিলে তখন॥ " শোন শোন" মম বাক্য ওরে ছুরাচার। অবলীলাক্রমে ভোরে কবিব সংহার॥ জানিতে না পারিছিদ্ তুই রে. আমাবে। এই সুক্তি আমা হতে জানিবি অন্তরে॥ আমাতেই পুনরার হযে যায় লয। আমা ২তে রক্ষা পার নাহিক সংশর্॥ এই যে অখিল বিশ্ব করিছ দর্শন। নামিই স্বার করি লালন পালন॥ : জগত-সংসার সব মম মাবাময়। আমা হতে ি একভু কিছুমাত্র নয়। সনাতন্ ব্রহ্ম যারে কর বিবেচনা। আমি হই মেই ত্রহ্ম লাহা কি জাননা।। আমার মঙ্গল ভাব করছ জবন। মূচমতি জ্ঞান গাবি মন্ত্রাপ্রতন। ভুইভাবে শিষ্ট-ভাবে যে কোন প্রকারে। ধে জন ভজনা করে সদত আমারে। যে ভাবে। যে জন মোরে কর্যে ভজন। গেই ভাবে তারে ফ্র কার বিতর্ণ॥ কামনা পূর্ণ সেই ভাগে করি। এই ত ১ক্ষলভাব জানিবে বিচারি ॥ অনুত্তম মহাফল জানিবে আমারে। আমার প্রসাদে মুক্তি পায় সব নরে॥ নির্বাণ মুকতি আমি করি যে প্রদান। অভএব শুন শুন ওচে মতিয়ান॥ তুমি মোরে করিলে ভজন। এই ২েতু তব প্রাত সম্ভেট এখন। দুফভাবে মোরে তুমি শভিবার তবে। বাদনা করে≥ দৈত্য আপন অন্তবে॥তাহাতেও মহা প্রীত হইয়াছি আমি। তোমারে নির্বি আমি যেন শ্লপাণি॥ শিবের সদৃশ ভাবি **ু**তামাবে এখন। বহু শ্রম করিয়াছ আমার কারণ । এখন আমার রূপ কর দরশন। পরম মঙ্গলময় অখিল-কাবণ॥ ত্রন্ধানন সেই রূপ অতি মনোহর। দেখাব তোমারে তাহা ওহে দৈত্যবর॥ দেরপ পরম পদ জানিবে অন্তরে। শিবময় সেই রূপ কহিন্য তোমারে ॥ বহু ধ্যান করিয়াও যত যোগীগণ। সেই রূপ হেরিবারে না হয় সক্ষম। সম্ভট হয়েছি আমি তোমার উপরে। 'এ হেতু সে রূপ আমি দেখাব তোমারে 🛭 অবিলয়ে তাহা তৃমি কর দরশন ৷ বিলয়েতে বল আর কিবা প্রযৌজন 🎚 অকসাৎ অন্ত কেছ আদ্িবারে পারে। সবার বাসনা হয় তাহা দেখিবারে॥ কিবা হার অহরাদি গরার কিরব। যক রক পরগাদি পিশাচ অপার ॥



🌋 में केरल বাসনা করে সেরূপ হেরিতে। কিরুপে দর্শন ইয় সত্ত্ব ভাবে চিত্ত। ্ষ্তিতএব শীঘ্র উহা কর দরশন। কালীরূপণ দেই রূপ অতি মনোর্ম। পরত্রক্ষে তাহা ভিন্ন অন্য রূপ নাই। নিগুঢ তত্ত্বের কথা কহি তব ঠাই॥" 'এত বলি তুমি নেবী ভববিমোচনী। ধেয়াইলে পরম রূপ তুমি সনাতনী॥ নিজরপ মনে মনোকরিয়া চিন্তন । ' আমি কালী আমি কালী' কৈলে উচ্চারণ॥ ' आप्यानि কালিকামূর্ত্তি ধরিলে আপনি। আহামরি কিবারপ ধ্যানে নাহি ষানি ॥ রুষ্ণবর্ণা যোররূপা অতি মনোহর। অবস্থিতি করি মহাকালের উপর॥ মুওমাল। শোভে গলে আহা মরি মরি। মুক্তকেশী হাস্তমুখী হাতে অসি ষরি॥ লোল জিহ্বা লহ লহ দেখি ভয় হয়। রক্তবর্ণ কিবা তাহে শোভে নেত্রতায়।। কিরীট শোভিছে শিরে অতি মনোহর। অমাকলা সম শোভা অতীর বিমল।। তেজোরাশি দেহ হতে সদা বাহিরায়। ঘোররৰ ঘন ঘন বছনে তাহায়। সহস্র সহস্র শিবা চারিদিকে বেড়ি । রহিয়াছে কিবা শোভা আহা মরি মরি॥ দেখিতে দেখিতে শুন আশ্চর্য্য ঘটন। কালীদেহ হতে স্থাপিড়ে ঘন ঘন।। চারি দিকে রশিবিন্দু বিত্ত হইল। সে রশি হইতে যত যোগিনী জন্মিল। কোটি কোটি যোগিনারা লভিয়া জনম। চারিদিকে কালিকারে বেড়িল তখন।। যুদ্ধ লাগি সমুস্তত তাহারা সকলে। ঘন ঘনকালী-खद বদনেতে বলে॥ সূর্য্য সম দাপ্তিমতী যোগিনীর দল। ঘন ঘন হুত্জার ছাড়ে ভয়ক্ষর॥ অপূর্ব্ব পুন্দরী দবে অতি মনোরম। নবাকার অঙ্গে শোভে দিব্য বিভূষণ।। এইরপে, যোগিনীর। জনম লভিয়ে। কালকারে বেড়ি রহে मानम इतरा ॥ जाँदात जारम मिरत कतिया थात्र। आङ्वादर द्रा थारक ওতে ঋষিগণ।। জিজ্ঞানা করিয়াছিলে যে দব আমায়। বলিলাম দেই কথা শুনিলে স্বায়॥ ভক্তি করি যেই ইছা কবে অধ্যয়ন। অথবা একান্তমনে কররে এবণ। পাতক তাহার দেহে কভু নাহি রয়। অন্তিমেু সে জন যায় কৈলাস-আলয়॥ এইরূপে কালিধান যেই জন করে। অন্তিমে কন যায় व्यमत्रमग्रदत् ॥ विद्यतां मि जात कार्ट्स ना करत् ग्रम्म व्यमस्तत् । स्मेर कर्म কর য়ে পূজন ॥ কালীর আশ্রয়ে রহে সদা মহেশ্র। ওকবা বুঝে সেই তত্ত্ব জগত ভিতর॥

# যিষ্টিউম অধ্যার।

ঘোরদৈত্যবধ। সনংকুমার উবাচ।

প্রবং তাং কালিকাং দৃষ্ট্বী মূর্চ্ছিতো দানবেশ্বরঃ। পুর্ত্রীতোদৌ মহাকাল্যা দৃষ্ট্বা শ্রীমুখমগুলং॥

এতে 🖰 নি ঋষিগণ সুমধুর স্বরে। পুনশ্চ জিজ্ঞাদা করে বিধির কুমারে॥ শুনিকু,তোমার মুখে অপূর্ব্ব কখন। কিন্তু এক কথা বলি ওহে মহাজুন্।। তার পর খোর দৈত্য কিবা কাজ করে। সেই কথা রূপা করি কহ সবাকারে॥ তাহা শুনি বিধিমত কলেন উত্তর। ওন ওন বলিতেছি তাপ্সনিকর॥ তাব পব শিব কহে পার্ব্বতী সতীরে। এইরূপে কালীমূর্ত্বি মহাদেবী ধরে॥ দেবীর শরীরে শোভে জগত-সংসার। কত যে ত্রহ্মাণ্ড তাহে নহে বর্ণিবার॥ ব্রন্ধান্ত কত যে শোভে প্রত্যেক রোমেতে। হেরিশে আশ্চর্য্য সব লাগিবেক সিতে॥ দেবীর এতেক রূপ করি দরশন। মূর্চ্চিত হইয়া দৈত্য পড়িল তখন॥ দেবীর বদনপদ্ম দরশন করে। পরম আনন্দ লভে আপন অন্তরে॥ ব্ৰহ্মজ্ঞান জনমিল অন্তরে তাহার। জানিল সে কালী দেবী সার হতে সার॥ করপুট করি পরে দানব-রাজন। দেবীরে গদগদ বাক্যে করিল স্তবন। নমো নমঃ মহাদেবি চরণে তোমার। অপরাধ ফুলা কর আমি তুরাচার॥ না বুঝে করেছি দোষ শুন গো জননি। অপরাধ ক্ষমা কর তোমারে নমামি॥ সম্ভানের দোষ মাতা কভু নাহি লয়। জগতের মাতা তুমি নাহিক সংশয়॥ প্রক্ষতিরূপিণী তুমি নিত্যা সনাতনী। সৃষ্টিস্থিতি-লয়কর্ত্রী তুমি গো ভবানী। ব্যোমার নিমেষে হয় বিশ্বের প্রলয়। তোমার স্কার এই বিশ্ব সৃষ্টি ১৫। প্রকৃতি রূপেতে তুমি ইক্ষা প্রকাশিলে। দেব নর জাব আদি জম্মে ভূমগুরে। নিদ্রোকাল যবে তব হয় উপস্থিত। প্রলয় সেকালে ঘটে জানিসে নিশ্চিত॥ বিশেশরপ্রিয়া তুমি তুমি বিশেশরী। সংসার তারিণী দেবী তুমি বিভাধরী ॥ এখন স্ফল হইল আমার জন্ম। তব পাদপদ্ম নেত্রে করি দরশান। কত তথা করেছিনু জন্মজন্মান্তরে। সেই ফলে তব রূপ নেহারি অন্তরে॥ **একমাত্র গৃতি ভূষি সংসার-মাঝার।** অধিক বলিব কিবা নিকটে তোমার # পরাৎপর অশ্ব ত্মি নাহিক সংশয়। তোমার প্রসাদে যায় শমনের ভয় ॥

ভূমি যাল্লে রূপা কর ওবৈগা ভগবতী। অতিয়ে তাহার হয় পরমা হুগতি॥ যে রূপ তোমার আমি করি দরশন। কার ভাগ্যে হেন রূপ হয় সংঘটন। শঙ্গারণ শইমু দেবি নিকটে ভোমার। পূর্বে অপরাধ যত ক্ষত্ আয়ার॥ भैगानि পরমেশ্বরি করি নিবেদন। তোমার চরণে যেন সদা খাকে মন 1 একমাত্র মম গতি তুনি সনাতনী। আমার আধার তুমি শুনগো জননী॥ আহা কিবা তব রূপ বিকার বিহীন। তোমার রূপায় হয় ভববন্ধ কীণ॥ ত্যোগুণ-পরবর্ত্তী তুমি গো জননী। তোমার চরণপল্লে নতি করি আমি॥ 'এইরপে স্তব করে দানবরাজন। স্তবে পরিভৃষ্ট দেবী হলেন তখন। व्रगमात्य लालिक्वा अमातिया शत्त । जाकर्षण कतित्वन पानव्यत्तत्त्व ॥ **एपिएड (पिएड)** डाट्स क्रिय़ा हर्स्त। अविलक्ष क्रग्मर्था क्रायम निधन ॥ স্থাসিতে হাসিতে দৈত্য ত্যক্তে কলেবর। মহাকালী অট্রহাম্ম করে নিরন্তর॥ কালীমূর্ত্তি তেয়াগিয়া পূর্ব্ব রূপ ধরে। জয় জয় ধ্বনি যত যোগিনীরা করে॥ প্রাকা তুলিয়া সবে গগন উপর। কালী কালীরব মুখে করে নিরন্তর॥ **জয় বাল্য চারিদিকে বাজিতে লাগিল। বিমানে চডিয়া দৈত্য কৈলাদে** চলিল। এইরূপে খোর দৈত্যে করিয়া নিধন। মহাদেবী তার পর স্থিরচিত্ত হন। ঘটেছিল এই সব অতি পূর্ব্বকালে। বিশ্বত হয়েছ কি তা আপন অস্তরে।। তোমার কথায় আমি করিতু বর্ণন। সেই সব পূর্বকথা করছ স্মরণ। এত বলি মহেশ্বর পার্বতী সতীরে। হাস্যমুখে কৈলাসেতে মৌনভাব ধরে॥ জিজ্ঞাসা করিয়াছিলে যাহা ঋষিগণ। নাধ্যমতে তাহা সব করিমু বর্ণন॥

### এক্যক্টিত ন অধ্যায়।

দেবীর দেহাভ্যস্তরে শিবের অদ্ভূত দর্শন । সনৎকুমার উবাচ।

শ্বয়বাবপ্রনা দেবি তত্ত গৃত্বা ময়া কিল।,
সমুদ্দিটং প্রতং যদ্যং কথিতৃং নৈব শ্কাতে।
সর্বোশ্চর্যাময়ং দেবি ন দৃষ্টং ন প্রতং কৃটিৎ।
শ্বতীব রহদাকারাঃ ব্রন্ধাণ্ডাঃ কোটিকোটিশঃ॥

শ্বিগণ এই সব করিয়া শ্রবণ। পুনণ্চ জিজ্ঞানে এছে বিধির জন্দন ॥
শর্ম আশ্বর্যা কথা শুনিমু শ্রবণে। সন্দেহ আছ্য়ে কিন্তু কহি তব ছানে॥
দেত্য'সহ মুদ্ধ হবে করে সনাতনী। উয়েতে কাতর হারে দেব স্লাণাণি॥

দেই কালে শিবালীরে করিয়া আগ্রয়। কুকা তকু ধরেছিল সেই মছোদয় । ইতিপর্বের এই কথা করেছ কীর্ত্তন। তালাতে সন্দেহ আছে ওছে মহাজ্বন # रिष्ठावंश हरल शरत राष्ट्र भरहभत । कि कतिल किथा राज कह अडिश्न है এত শুনি ধীরে ধীরে বিধির নন্দন। মধুর বচনে কহে ওহে খবিগণ জিজ্ঞাসা করিলে যাহা বলিব সবারে। অদ্ভত ঘটনা সব শুনহ সাদরে॥ শিবারে সম্বোধি কহে দেব পঞ্চানন। অতঃপর প্রিয়ত্তমে করহ প্রবণ ॥ তব দেহমধ্যে ছিন্দু লইয়া আশ্রয় । এইরূপ দৈত্যবধ যেই কালে হয়॥ পথেতে পশি দেহের ভিতরে। দেখিলাম কিবাশ্চ্য্য বলিব ভোমারে॥ কভু কোথা দেই রূপ না করি দর্শন। কুত্রাপি কাহার মুখে না করি এবণ ॥ দেখিলাম কোটি কোটি ব্রন্ধাণ্ড-মণ্ডল। সদত শরীর মাঝে বিরাজে সকল।। অগণ্য ত্রন্ধাণ্ড সেই কে করে গণন। কত ত্রন্ধা কত বিষ্ণু কত পঞ্চানন'। কোটি কোটি মুখ ভদ্মা বিরাজে তথায় ।কোটি কোটি মুখ বিষ্ণু পুলকিতকায়।। অটিসিদ্ধি সহ শোভে কত মহেশর। বিচরণ করে সবে শরীর ভিতর॥ এই সব দেহমধ্যে করি দরশন। ভয়েতে বিহবল হয়ে রহি কতকণ।। বিশ্বত हरेल यम वृत्यिवारत नाति। जामि (क विश्व छ रू रू मह सुनि । मत्म यत्म এই চিন্তা করিমু তখন। আমি কেবা কোথা হতে কৈনু আগমন॥ কেইই জিজ্ঞাসা কিছু না করিল মোরে। কি হইনু কিবা ছিনু না বুঝি জন্তরে॥ এইরূপ নানাবিধ করিয়া চিন্তন। বিশ্বত হইনু আমি এ তিন ভুবন।। দেহ-মধ্যে নামান্তানে বিচরণ করি। তবু কিছু স্মতিপথে না উদে শঙ্করি॥ এই রূপে কোটিবর্ঘ ভ্রমিবার পরে। উপনীত হু আসি হৃদয়-ক্মলে॥ তোমার হৃদয়-পদ্মে করি আগমন। পরিতৃপ্ত হই তবে শুনহ বচন।। হৃদয়-পরেতে গিয়া দেখিলু নয়নে। কি বলিব কি আশ্চর্য্য না যায় কছনে॥ দেখিলাম ধর্মশাস্ত্র বিরাজে তথায়। স্থ-মোক-হেতু তাহা কহিতু তোমায়॥ জীব-আত্মা সেই স্থানে করি দরশন। ইন্দ্রিয় সমূহ তথা করে বিচরণ ॥ বিরাশ করিছে তথা যতেক পুরাণ। সাকোপাল স্মৃতিশান্ত আছে বিদ্যান। भारत-शरपटम (मार्ट अंशुर्व कमन। हातिपिटक (मार्ट किना मरनाइत पना। পত্র-অব্যে প্রমধ্যে পত্র-অন্তবেশ। কি দেখির কি বলিব ভোমার সকাশে। বিভিন্ন রিচিত্র কত করি দরশন। শুভকরা কার্মণী করি নিগ্রাফণ।। তীত্র-जिल्लामकी (यहे वर्गायनी क्या। पर्णन कतिया हरे विचिष्ठ-वनस्। (क्यां किय নিক্সক্ত ছন্দ কণ্প কাজারুগ। শিক্ষা আদি যত শান্ত করি **দ**র্শন। अगुक्त गांत्र और विलामान : • उथात निताम करत मन अनिताम।

দিব্যতেজে সেই স্থান আলোকিত হয়। হেন ক্যোতি নাহি কোঁখা জ্বন-जिजस् ॥ (महे जारमारकरा जामि कति एतमन । कर्निकामरशारक वर्नभूक मरनातम সেই সব বর্ণরাশি অতি সমুজ্জল। তেজেতে বিরাজে যেন কোটি দিবাকর। কোটি কোটি চক্র সম অপুর্ব্ব কিরণ। বর্ণপুঞ্জে শোভা পায় কি করি বর্ণন কোটি কোটি মহাবহি যেন শোভা পায়। জগতের তেজ দেখি হারিয়া পলায়। জেমজ্ঞান সেই স্থানে করি দরশন। সর্বযজ্ঞময় উহা অন্তত দর্শন॥ সর্ব-তীর্থময় উহা সর্বপুণ্যময়। সর্বব ধর্মময উহা এক্ষানন্দময়॥ বিরাজ করিছে তথা শান্তের প্রমাণ। বিল্লমান আছে তথা সাক্ষাত নির্বোণ। আগম তথায়। আমি করিমুদর্শন। সর্কাসিদ্ধমিয় উহা অতি মনোরম॥ সর্ববেদময় উহা স্ক্রেলোকময়। স্ক্রেলোগময় উহা স্ক্রণাস্ত্রময়। স্ক্রিক্তময় উহা স্ক্রেদময়। স্ব্রানন্দ্রম তাতে পূর্ণানন্দ্রম ॥ এই সব অত্যন্তুত করি দরশন। প্রম আনক ছাদে লভিনু তখন। অজ্ঞানার বিদ্য়িত হইল আমার। চারিদিক হেরি আমি অতি চমৎকার॥ সূর্য্যোদয়ে অন্ধকার বিনাশে যেমন। মোহান বিগত তথা আমার তেমন।। কালীর প্রসাদে আমি দ ন বরাননে। শিখিনু ' সে সাব শাস্ত্র অতীব যতনে॥ কিঞ্জল্কপুঞ্জেতে পরে করিয়া গমন। **(एथिलाम याहा याहा अनह अथन।।** देवटमशिक পाउछल मीमारमा ७ साइ। সাংখ্য আদি শোভে দব বর্ণপুঞ্জময়॥ এই দব দেই স্থানে করি দরশন। অভ্যন্ত করিনু আমি জানিবে তখন।। কর্ণিকার প্রান্তদেশে দেখিলার। শেষে । বর্ণাবলী দীপ্তিমতা অপূর্ব্ব বিকাশে।। শতমুর্ব্য সম শোভে সেই वर्गायनी । तक्षमकारियो उँश अि पी शियानी ।। तम् सात्म आरहा तिथ শোভে সামুর্ফোদ। বিরাজ করিছে তথা কিবা ভিষ্প্রেদ।। সেই স্ব দেখি আমি করিনু অভ্যান। মনের আঁধার ঘুচি হইল বিকাশ।। দেখি-লাম তার পর যতেক পুরাণ। ইতিহাস আদি করি আছে বিদ্যমান॥ তখনি সে দব আমি করি অধ্যয়ন। লভিন্ম পরম জ্ঞান অন্তরে তখন।। হোমের পদ্ধতি আমি দেখিলাম পরে।বেদান্ত রয়েছে তথা দিক আলো করে বেদান্ত শোভিছে কোটি ভূর্য্যের সমান। ত্রন্ধতেকে শুরীর্ড সক্ষে ত্রন্ধজান।। অচিরে অভ্যাস আমি করিনু সকল। আমার অন্তর্ন হৈল অভীক বিমল।। 'वर्भभूटक ब्लंटर जामि कति एतमन। माय जानि हाँ ति तम जानि मस्तातम।। র্দ্দর্বজ্ঞানময় উহা সর্বতীর্থময়। সর্বব্যজ্ঞময় উহা সর্ববর্থমিয়া। সকল শান্তের হয় প্রমাণ বরূপ। কি বলিব চারিবেদ' অ্ত্যক্তুক্ত রূপ।। কোটি क्ष्याः मन मीखि ठातिरवन श्रःत । (काष्टि ठळ मन त्रिक कानिरवः जलरत ॥

unit मन यथायथ कति एतमन। उथानि मरखाय मने मो इस उथन। যত দেখি তত ইচছা হয় বলবতী। শুন শুন তার পর শুন গো পার্বভী,। চারি বেদ অধ্যয়ন করিকু তখন। তার পর অন্ত দিকে করি দরশন। **जिटम जिटम इहे आभि नर्वनिधि ग्रा मर्वनिख्या हहे नर्वछ। नम्हा** प्रिंमाय जात शत कानी रून ·ां। मर्दिएन नमक्रुज। उक्तरक्रिशि। শিবাগণে পবিরতা হইযা তথন। আনন্দে করিছে নৃত্য অতি ঘন ঘন। চারিদিকে বেড়ি আছে যোগিনার দল। তাহারাও নৃত্য করি হরিষে বিহরে খাকি থাকি নৃত্য করে দেবী সনাতনী। তাহা হেরি হলে প্রীতি লভিলায় আমি ॥ দেবীর এীমুখ আমি করি দরশন। দ্বিদল পারেতে পারে করিতু গমন। জ্রদ্বয়ের মধ্যস্থিত আজ্ঞাচক্রে গিয়ে। অবস্থিতি করি তথা সানন্দ হৃদয়ে॥ ব্ৰহ্মা বিফু স্মৃতি পথে উদিল তখন। শুন শুন তাব পর আশ্রহ্ম ঘটন। অমনি সন্মুখে দেখি দেবী সনাতনী। নৃত্য করে অবিরাম ব্রহ্মস্বরূপিণী॥ তাঁহার চিরুকদ্বয় হইতে তখন। স্বেদবিন্দু দ্ব পড়ে করি দরশন॥ বিন্দু দ্বর হতে একা নারায়ণ। তুই জনে অবিলম্বে লভিল জনম॥ জনে জনমিয়া দেবীরে হেরিয়ে। পলাইয়া চলি যায় ভয়েতে কাঁপিয়ে॥ নাসারক্র দিয়া দোহে করিল গ্রম। পিঙ্গলাতে বিধি গিয়া রহিল তখন। ইড়াতে গমন করে বিফু মহামতি। দেখিলাম এইরূপ শুনহ যুবতি॥ ইড়া পিঙ্গলাতে দোঁহে করি অবস্থান। রোদন করিতে থাকে আমা বিদ্যমান। পূৰ্ব্বকালে ঘটেছিল এ সব ঘটন। বিশ্বত হতেছ প্ৰিয়ে কেন গো এখন ॥ ব্রন্ধা বিষ্ণু দুই জনে দুঃখিত অন্তরে। ইত্ত ে বিচরণ দুই জনে করে॥ বিষ্ণুর পাশেতে আমি যাইযা তখন। জ্ঞানমন্ত্র অবিলম্বে করিমু অর্পা জ্ঞানমন্ত্র লাভ করি বিষ্ণু মহামতি। হইলেন মম তুল্য তন গো পার্ব 🕞 আমার বামাঙ্গে তিনি রহেন তখন। সর্বশাস্ত্র তাঁরে আমি করিক অর্পণ ॥ কেবল আগমমাত্র নাহি দিনু তাঁরে। শুন শুন তার পর বলিব তোমারে।। তদবধি গরুড়েতে করি আরোহণ। ছট পুট হতে থাকে বিষ্ণু মহাত্মন। তার পর জন্মাপাঁশে গমন করিয়ে। মন্ত্রজান দিনু তাঁরে সানন্দ হৃদরে ॥: পরম অন্তুত জ্ঞান করিমু প্রদান। লভিলেন একা তাহে অতি মহাজ্ঞান 🛚 আমার সদৃশ জন্ধা হলেন তখন। আমার দক্ষিণ অকে রছে পদাসন। আমার আদেশ পেয়ে বিষ্ণু মহামতি। ত্রনারে যতেক শান্ত দিলেন সুমতি। গতব্যধ হয়ে তাহে কমল-জানন। হৃষ্ট পুষ্ট হতে থাকে জানিবে তখন।। জাদি শুরু ব্লি মোরে করেন স্বীকার। আনন্দ লভিন্ন আমি অন্তর মাবার।

क्षेत्र अन विश्व उद्देश कहि जो इ नहा । महान्छा कृति कानी क्षांसदम् विस्त्र ॥ अधिरका फिरा वर्ष विश्व इरेग। उरू नृत्वा भराकानी **काल** मा ब्रिका। সংক সংক যোগিনীরা করিছে নর্তন। শিবাগণ নাচি নাচি ভারতে মগন॥ कांत्रिपिटक नोनादाण वाटक पन घन। भटहालाग कति (परी आंनटम मधन॥ ্রী অসন্ধার কিবা শোভে দেবীর শরীরে। নির্জ্জনে নর্ন্তন করে জানন্দের ভরে। ুপতাকা শোভিছে কত কে করে গণন। এই সব মহাস্থাধে করি দরশন ॥ ্ষামি জন্মা বিঞু এই ভিনজন মিলি। নানামতে গুববাক্যে কালিকারে বলি॥ ্শিষ্মত স্তব করে কমল-আসন। শান্ত্রযুক্ত বেদবাক্য করি উচ্চারণ॥ ভূমি শিবা তুমি উমা পরমা শকতি। অন তা নিক্ষলা শান্তি অপূর্বে মূরতি॥ ্রিক্টিন্তা কেবলা স্তদ্ধা তুমি দিগন্ধরী। চরাচর তব হৃদে সতত নেহারি॥ তিগানার শবীরে শোভে জ্বন্ধাণ্ড নিচয়।তোমার নিমেষে হয় সৃষ্টি স্থিতি লয়॥ তৰ তত্ত্ব বুঝিবাবে কোন্জন পারে। ত্রিগুণ অতীত তুমি জানি গো অন্তরে 🛭 প্রবিষ্ঠিকা বিদ্যা তুমি সর্বন্ধরূপিণী। তোমার চরণে মাতঃ সদত প্রণমি। ্রিক্রাণা কটাক্ষ কর অধীন উপরে। ভক্তি যেন রহে সদা তব পাদোপরে॥ 🖟 ় কোটি বর্ধ স্তব করে কমল আসন। তার পর দেবী ভারে কহেন তখন॥ 👼 শুন হে বিধাতঃ বচন আমার। সর্বশাস্ত্র জ্ঞাত তুমি হৃদয় মাঝার॥ ষ্ঠিকর্তা হও তুমি আমার বচনে। পুনঃ বিশ্ব সৃষ্টি কর যেমত বিধানে॥ दिवतीत आएम পেয়ে কমল আসন। ক্লতার্থ হলেন অতি অস্তরে তখন॥ ্ষার পর স্তব করে বিঞু মহামতি। শুন শুন ওগো দেবি নিবেদি সম্প্রতি॥ কি বলি করিব স্তব আমি যে অজ্ঞান। তোমার রূপায় হয় পরম নির্বাণ॥ শুরুত্রন্ধরণা তুমি নাহিক সংশয়। তব তত্ত্তানী নাহি কোন জন হয়॥ विकातिकोन হয় তোমার স্বরূপ। আদি মধ্য অন্ত শৃত্য তব দিব্য রূপ॥ ধ্যাসীগণ একদ্নে একান্ত অন্তরে। ওক্ষারএপেতে ধ্যান করয়ে তোমারে॥ পুর্রভূত-অন্তরেতে বিরাজ আপনি। ত্রিজগতীতলে দেবি তুমি অন্তর্যামী # সেই রূপে জলোপরি কর অবস্থান। ছতুদিশ লোকাত্মক জগদও নাম। 🅦 জিভরে তব পয়দ প্রণিপাত করি। পরবেষ্ঠিরূপ তব কড়িমাঝে শ্রি॥ সহজ মন্তক কভূ করহ ধারণ! শর্ন করিয়া থাক কুর্দৈর উপরে ॥ শক্তি ধরি আন্তর্য্য আকারে। কাল নামে তব দংক্রা অতীব করাল। তাছাতে করছ ভূমি কাড সংশার। कत्रणा कृष्टांक कत्र अशास्त्र केणदत्त ॥ প্রাণিণাত করি আমি দেই দন্তবরে। ঞ্ক রূপ আছে তব সর্পের আকার। সহত্রেক মলা তাত্ত আছল্ম,বিস্তার,॥

অসংখ্য'অসংখ্য সর্বাচারিভিতে বেড়ি। স্তব করে তোমা ধনে দিবা বিভাবরায় সেই রূপে নমস্কার করি ভক্তিভরে। করুণা কটাক্ষ কর অধীন-উপরে অত্যাশ্চর্য্য তব রূপ বর্ণিবার নয়। অব্যাহত তবৈশ্ব্য খ্যাত জগ্ময় 👪 কিবা ভব তব দেবি করিব এখন। অধীন উপরে কর দয়া বিতরণ। এইরপে তব করে বিষ্ণু মহামতি। কোটি বর্ষ গত হল ভন গো পার্বতী 🗓 তার পর সম্বোধিয়া বিফুরে তথন। গন্তীর রবেতে কালী কছেন বচন॥ শুন তন মহাবিফো বচন আমার। বেদজ্ঞ হস্তক্ত তুমি জগত মাঝার॥ ধর্মজানী তুমি হও গুণের আকর। আমার আদেশ তুমি পাল অতঃপর ॥ ; পালক হইয়া কর সৃষ্টির রক্ষণ। করিবেন পুন সৃষ্টি কমল-আসন॥ দেবীর আদেশ পেয়ে বিষ্ণু মহামতি। মানিলেন ক্লতার্থতা জানিবে পার্ব্বতিয়া, আগম-বাক্যেতে পরে আমি পঞ্চানন। নানামতে কালিকারে করিমু গুরুম॥ পর্মাত্তা নিত্যা তুমি বন্ধ দনাতনী। তব স্তব করিবারে কিবা জানি আমি। নিয়ত রুষেছি তোমা করিয়া আশ্রয়। তব হুদে শোভা পায় ত্রন্ধাণ্ড-নিচয় ॥ তোমার মায়ায় হয় জগত সূজন। তোমাতেই লয় পায় অখিল ভূবন॥ এ হেডু পরমা গতি ভোমারেই জানি। অধিক বলিব কিবা হুগো সনাতনী। আদিমা প্রকৃতি তোমা কেহ কেহ বলে। প্রকৃতি-অতীতা কেহ কহেন তোমারে॥ আগ্রয় করিয়া তোমা রহিয়।ছি আমি। এ হেতু শিবা নাম ধর সনাতনী ॥ অবিক্রা নিষ্ঠি মায়া মহদাদি করি। তব মায়াবশে হয় শুন গো সুদরী॥ সর্বভেদবিরহিতা তুমি সর্বকণ । অভয় প্রদান কর স্বারে এখন ॥ এইরপে স্তব করি কালিকা সতীরে। বিংশ কোটি বর্ষ গত হল তার পরে। তখন সম্বোধি যোৱে কহেন বচন। সদাশিব মম বাক্য করহ প্রবণ 🛊 আগমেতে বিশারদ তুমি মহামতি। সগুণ নির্মম তুমি মহাযোগী অতি। অতএব মুম বাক্য করহ পালন। সৃষ্টিসংহারক তুমি হও ত্রিলোচন॥ দেবীর আদেশ আমি ধরি শিরোপরে। পুনবায় তব করি একান্ড অন্তরে। পঞ্ কোটি দিব্য বর্ধ পুনুরায় যায়। তার পর মহাকালী কহেন আমায়॥ अन ঙন সদাশিব আমার বচন। তোমার স্থবেতে তুই হয়েছি এখন॥ কি বাসনা আহে বল তোমার অন্তরে। তাহাই অপিব আমি বলহ আমারে॥ এউ ভনি আমি তাঁরে কহিনু তখন। অন্ত কোন বাঞ্চা মম নাহি কদাচন।। এই মাত্র চাহি আমি তোমার গোচরে। সদা যেন স্থান পাই চরণ-কমদে है আমার এতেই বাস্ক্য করিয়া প্রবণ। মহাকালী মিউবাক্যে কংহন তখন ।। 

क्र तर रटें रेलंडा मिल्रा कनमा आमात महिट्ड क्र बहिन। বৈর্গ সমূর কৈল দানবের পতি। হেন যুদ্ধ নাহি হেরি ভঁছে প্রপ্রতি ॥ িকোটি অংশ এক অংশ এরপ সমর। যে করিবে মম সনে ওছে মতেশর। मर्शिक अञ्चत नाम হইবে তাহার। ভদ্রকালীরূপে তারে করিব সংহার॥ দেই কালে বামাসুষ্ঠ তোমার হাদয়ে। স্থাপন করিব আমি পুলকিত হয়ে॥ ্ঞাবে তুমি শবরূপে হইয়া আদন। থাক থাক মহেশ্বর আমার বচন। **্রেবীর এতেক বাক্য শুনিয়া শ্রবণে। উপনীত হই তাঁর পদসন্নিধানে**॥ নিণতিত হয়ে পদে করিতু প্রণাম। লক্ষ বর্ষ এইরূপে করি অবস্থান।। আশা বিষ্ণু তুই জনে করিয়া বন্দন। নত শিরে অইরপে করেন যাপন। িশকে বর্ষ পরে সবে করি গাত্তোখান। চারিদিকে দেখি সবে বিহ্বল সমান। ছেবীরে কোথাও নাহি দেখিবারে পাই। রোদন করিয়া সবে চারিদিকে ্ভাই।। নিমগ্ন হইনু সবে শোকের সাগরে। দুঃখিত হইয়া ভাকি উদ্দেশে উহিত্রে॥ কোথ। ওগো মহাকালী দেহ দরশন। নাহি হেরি আর তব কমল বছন ।কোটি কোটি চন্দ্র জিনি বদন ভোমার। করুণা সাগর তুমি দয়ার আ-শ্বার ॥তব নখ জ্যোতিঃ ছদে হতেছে মরণ। তোম। বিনা কোথা মোরা করিব **'গর্মন॥ আহা মরি তব রূপ অক্ষ্ম অব্যয়। হেন রূপ নাহি আর জগত্রিত্য॥** বালকে যেরপ ভবে করিয়া রোদন। দেবপ হয়েছি মোরা কাতর এখন। এরপে রোদন করি আমরা সকলে। পঞ্চ লক্ষ বর্ধ ক্রমে গত হয় পরে॥ ছারাপি দেবীর নাহি পাই দরশন। উচ্চঃম্বরে পুনঃ পুনঃ করি যে রোদন॥ কেন দেবি নিকেপিলে ছঃখের সাগরে। রূপাকর রূপাময়ি স্বার উপরে।। যদি তুম রক্ষা নাহি কর সবাকায়। তবে বল মোরা সবে যাইব কোথায়।। "কৈবা বল আমা সবে করিবে রক্ষণ। তোম। ভিন্ন নাহি জানি অন্ত কোন "জন।। নিশ্চর আনরা সবে ত্যজিব পরাণ। যদি নাহি ভূমি দেবি কর পরি-। এইরূপে মোরা সবে হইয়া কাতর। রূপা ভিক্ষা করিতেছি দেবীর পৌচর ॥ হেনকালে সেই নিত্যা দেবা সনাতনা। নিরাকারে থাকি কতে चूमबुत्र वांगी। अन अम जगवन कमल जामन। अन अन माम वांका अदह शंका-্রীনী ।।শুন শুন বিষ্ণু সবে বচন আমার। উয় নাহি রাখ ক্রেছ অন্তর মাঝার।। वित्र छत्र आहि आदि गरा मित्रिशाता। अगुरा जानित्व त्यौद्य मत्व मदन यदन॥ भक्तिश-ष्यानमत्रें शी जानित्व प्रामाय। पापि (महे श्रद्धेक कि नेवाकाय ! ' एम एम अरव मटव जामात वहन। जामात निर्मल क्रेश करब्रह प्रयाग लामात्र महीत मद्भा कति व्यवसाम। (य ज्ञान त्यर्ष क्या महस्मितिमान प 44.75-7-2014

है केन बे क्यारिक कंप्रच कितन। तार मन जन कत करत आकर् धारेक्षण यनि कत रकायता जकतन। अविदत मणन स्त करिन् मनाहि क्रम क्रम अटह विरक्षा आभात वहन। धरे य दि ति बन्ना क्रमन-आनम् প্রবেশ ,করহ তুমি ইহার শরীরে। থাকিবে যাবত তথা শুন অতঃপরে 🞉 জ্ঞান জিয়াময়ী সৃষ্টি যাবত না হয়। তাবত থাকিবে তুমি ওছে মহোদয় 🖟 **षरे मृष्टि , अना नाहि करतन** यावज । छेशाँत महीरत **पूमि शांकिरव छावछ ॥** अन अनमहर्यत जागांत वहन। पृथि जन्नांत (एटर প্রবেশ এখন। ষত দিন বিষ্ণু তথা করে অবস্থান। তুমিও তাবত থাক ওছে মতিমান॥ দেবার এতেক বাক্য করিয়া শ্রবণ। শিরোপরি আজ্ঞা তাঁর করিন্দু ধারণ ॥ তখন সে মহাকালী হরিব অন্তরে। তিন শক্তি আমা তিনে দিলেন সাদতে 🖟 ইচ্ছাশক্তি জ্ঞানশক্তি ক্রিয়াশক্তি আর। দিলেন এ তিনশক্তি করিয়া বিহার 🛍 ইচ্ছাশক্তি বিষ্ণুদেবে করেন অর্প। পাইলেন ক্রিয়া শক্তি কমল-আসন॥ জ্ঞানশক্তি সমর্পণ করিলেন মোরে। তিন শক্তি তিন জনে দিলেন সাদরে। এইরেশে তিন শক্তি করিয়া অর্পণ। মধুর বচনে দেবী কহেন তখন॥ শুন শুন প্রমেশ তোমরা সকলে। তোমাদিগে ছাড়ি নাহি যাব কোন কালে। তিনের শরীরে আমি করিব প্রবেশ। কিন্ত তাতে আছে কিছু শুনহ বিশেষ॥ পুর্ণরূপে প্রবেশিব শঙ্কর-শরীরে। তাহার কারণ শুন কহি স্বাকারে॥ मर्द्रश्कु क्र किर नाहिक मः भग्न। अत्राध्त विभिन्न मना नता प्राध्य ।। मर्खगान्तवका हिन कानित्व जाउत् । हेर्डांत मभान किर नाहिक मः मारत ॥ কিবা হরি কিবা ত্রনা তোমা ছুই জন। শিবের স্থান দোঁহে না হওক**খন**। অপর কেছই নাহি শিবের স্থান। কহিনু নিগু কথা ভোষাদের স্থান । সরিশাস্ত্রে সুপণ্ডিত দেব মহেশ্বর। আগম নিগমবেতা দয়ার সাগর 📂 সর্ব-তন্ত্র-মন্ত্রবেতা এই পঞানন। সকল অপর ফল ইনি মাত্রহন॥ এত বলি মহাকালী সানন্দ অন্তরে। প্রবেশ করেন পরে মোদের শরারে॥ বিধির শরীরে আমি প্রবেশি তখন। তাহে মহাজ্ঞান পান, কমল-আসন ॥ অধিকন্ত প্রবেশিনু বিষ্ণুর শরীরে। তার পর শুন শুন বলিব তোমারে॥ জ্ঞান লাভ করি ত্রন্ধ। পুলক অন্ত । হেম অনুষ্ঠান কবে দেব দয়াকর ॥ মহাকালী উদ্দেশেতে একান্ত অন্তরে। বিধাতা ক্রেন হোম বিধি অনুসারে॥ सूत्रः , त्वतः (द्राम कट्त (वरे तम कात्र)। सत्र हु नार्यरण, साज हम भवायन ॥ তার পর চিত্তা করে ক্রল-আক্র। কোথায় যাইব নাহি বুঝি অতংশর । गाञ्च कत्र इ दिन दिनाशा मदद्यकी मे कि कतिय कि माज दिवाया

किरेक्रण ठिछा क्रिके क्षण-जानन। अक वर्ष क्रारम क्राप्त कर्यन बालन॥ महर करनत भरत करतम मुक्त। तम जम वाभिन धरे व्यक्ति कृतन॥ ্ শুণ-অভিমানঘুক্ত সেই জল হয়। কারণ-অর্ণবরূপী নাহিক সংশয়॥ নেই জলে অধিষ্ঠিত থাকি পদাসন। হেমরপ বীর্য্য তাহে করেন কেপণ। क्रारं वीर्या উপনীত বৃদ্ধু আকারে। ত্রন্নাণ্ড নামেতে খ্যাত হল ভার পরে॥ কারণ-অর্ণবে উছা হয় ভাস্যান। শুন শুন তার পর কহি তব স্থান॥ क्रांट्रिक खक्तां ख्रेल प्रकार प्रकार कारण क्रिक् भातन ॥ আৰি নিজে রুদ্রে বিধারণ করিয়ে। ত্রনাও-রক্ষণ করি একান্ত ক্রমেয়॥ ্রিশ্বার সংহার করি আমিই সাধন। তোমার আদেশ শিরে করিয়া ধারণ॥ **প্রতি অন্নাত্তর পার্থে রু**দ্ররপ ধরি। শূলপাণি হয়ে রহি জানিবে সুন্দরী। শীঘার আদেশে বিফু হরে একমন। ত্রনাও পালনকার্য্য করেন সাধন। প্রত্যেক ব্রহ্মাণ্ডমধ্যে এ ছেন প্রকারে। তিন জনে রহি মোরা জানিবে অন্তরে॥ ভার পর জগদিধি কম্ল-আসন। ত্রন্ধাতের অভ্যন্তরে প্রবেশি তখন। এক একরপে সৃজে তত্ত্ত্ত্র। ভূমি অগ্নি বায়ু শ্ন্য এই চারি হয়॥ ৰেই চারি আর জল পঞ্ তত্ত্ব লয়ে। সকলি সৃজেন বিধি সানন্দ হৃদয়ে॥ আপিন ইচ্ছাতে বিষ্ণু করেন পালন। রুদ্রেরপে আমি করি সকলি নিধন॥ আৰিক বলিব কিবা তন গো পাৰ্কতি। আদিমা প্ৰকৃতি তুমি আদিমা শকতি॥ खेर नव পূর্বকথা ছলে বিষয়গ। সেই হেতু কহিলাম ভোমার সদন॥ ভৌষার যায়াতে হয় বিধের সূজন। তোমার মায়ায় হয় বিধের পালন॥ ভোষার যারার হয় ইহার সংহার। পরাৎপরা দেবী তুমি সার হতে সার॥ पर्कानी पूर्वि (पर्वी यादात उपद्रि । भवत महुके। थाक मानस अस्द्रत ॥ 'নির্বাণ মুক্তি তার করতলে রয়। ভববন্ধ ঘুচে তাম নাহিক সংশয়॥ এতে বলি বিধিস্থত যত ঋষিগণে। কহিলেন সম্বোধিয়া মধুর বচনে॥ 'জিজাসা করিয়াছিলে যাহ। ঋষিগণ। বলিলাম সবিস্তার স্বার সদন । প্রাকৃতি বা মহাকাশী যে কোন আখ্যান। ত্রন্ধের অর্পণ কর সবে মতিমান ॥ खिषा किञ्च गर्गा एक পरिज्ञागरा। कार्या ७ काजग्राना उक्त माज रहा। (तरे खरक धरे विश्व जारक जवविछ। जस्रत जानित्व देशे कहिनू निन्छि।। "भड़क्ष रमदे खरम ज्ञापिरक मन । एका छिन्न शकि नाहि मानिर कर्पन ॥ खंड .विनि विविद्यंड क्षीनकाव वरत । जागरमत्रो पराष्ट्रके जागन चालु रत्र ॥

# বিবিধি তম অধ্যায়।

ত্রশে বিখের বিতি প্রসঙ্গে শুক্রের অপূর্ব রস্তান্ত।
সনৎকুমার উবাচ।
পুরা ভৃতীন্তপন্তেপে মন্দরে ভূধরে সানো।
শুক্রন্দ তম্ম পুরোভূদতিবাদক এব চ।

সহাস্থবদনে পরে যত ঋষিগণ। সম্বোধিয়া বিধিয়তে জিজ্ঞাসে তখন 🖁 বিভদ্ধ ত্রেমেতে বিভ এই বিশ হয়। বলিলে এ কথা প্রভু ভূমি দ্য়াময় 🛊 ইহার প্রমাণ কিবা করহ বর্ণন। বুঝিবারে নাহি মোরা হতেছি সক্ষা। এত শুনি বিধিমৃত সুমগুর যরে। কহিলেন শুন শুন বলি স্বাকারে 🛭 मार्याग्र आकाम याहा इस प्रमान । देटथ हेन्द्रकाल यथा इस अपर्यन ॥ किया স্বপ্নে মণা এল প্রকাশিত হয়। সেরপ বিচিত্র বিশ্ব জানিবে নিশ্বয়॥ এই বিশ্ব প্রকাশিত হয় চিদাকাশে। তাহার কারণ বলি সবার সকাশে॥ চিং-স্বরূপ সব জান ওহে ঋষিগণ। চিহাতীত অন্ত কিছু নাহিক কখন। অতঞ্জব कर्छ। नाइ एको एकर नाइ। अक्षमम विश्व धर एपियादा भारे॥ निर्धाकादन ষপু যথা হয়-দরশন। সেরপ জগত এই হয় নিরীকণ।। মুখ-প্রতিবিশ্ব পড়ে বেমন দর্পণে। সেরূপ চিদাত্তা জান কহি সবা স্থানে॥ চিদাত্তা মায়াতে প্রতিবিশ্বিত হইয়ে। জগত প্রকাশ করে জানিবে হৃদরে॥ কার্য্য ও কারণ-শৃশু বিশুদ্ধ ত্রন্ধেতে। যেইরপে স্থিত বিশ্ব শুনহ পরেতে।। এক ত্রন্ধ আহু মাত্র জান অখণ্ডিত। চিদাকাশরপ তিনি জানিবে নিশ্চিত। ওদ্যতীত অনু কিছুমাত্র আর নাই। এইরূপ চিন্তা কর তনহ স্বাই॥ চিত্রের চাঞ্চা साखि कतिया यज्ञा । এইরপ চিন্তা কর নিজ মনে মনে॥ একটা শিলার রেখা বেশহ যেমন। অন্য উপরেখা সহ হয় সিমিলন।। সেইরূপ এক ব্রুমার भावां श्री । द्विरमारका यिनिज इन जानमनिकत । अहेत्रन यदन यदन कतिका ভিত্তন। এই ভাবে জগতেরে কর্ম দর্শন। যতেক উৎপত্তিশীল পদার্শ জনকে। স্বারি কারণ আছে জানিবেক চিতে। কিন্তু পরবন্ধ अक्षात एम । जाहात विजीय नारे जानित निक्त । कार्या नारे कि नारे माहिक कारता। अज्ञान ठीशादा मणा कतिरव विखन ॥ अन अन मही-তপা ভাগদ করে। ভকের বভান্ত কহি স্বার গোচর। তাহা হলে

লব কথা বুঝিতে পারিবে। মনের জাঁধার ঘুচি বিশ্বাস হইবে॥ উৎপত্তি। বিহীন বিশ্ব যেইরূপে রয়। বুঝিতে পানিবে তাহা তাপসনিচয়॥

যন্দর পর্বত খ্যাত এ তিন ভূবন। মনোরম শৃঙ্গ তার অতি স্থাভান॥ পূর্বকালে যেই স্থানে ভৃগু মহামতি। বল্দিন তপ করে করি অবস্থিতি॥ বছকাল তপ করে অতি ঘোরতর। তথু হেরি দেবকুল ভয়েতে কাতর। ত্তুর তনয় ছিল শুক্র নাম তার। অতি শিশু মেই শুক্র রূপের আধার॥ শিশু বটে তরু তেজ সূর্য্যের স্থান। পিতার নিকটে স্থা করে অবস্থান। বাল্যকালে অবস্থিতি করি পিতৃপাশে। তপস্থায় স্বীয় মন বালক নিবেশে॥ পিতার নিকটে থাকি শুক্র মহামতি। তার উপাসনা করে করিয়া ভকতি॥ কিন্তু এক কথা শুন ওহে ঋষিগণ। ত্রিশস্কু নুপতি ছিল শুলোতে যেমন।। গমন করিতে নারি অমর-নগরে। শূতামার্গে ছিল যথা জানহ অন্তরে॥ সেরপ শুক্রের ভাগ্যে অবস্থা ঘটিল। মধ্যাবহু হযে শিশু তখন রহিল। বিজ্ঞাবিতা তুই দৃষ্টি-মধ্যগত হযে। রহিলেন শিশু শুকু বিকল হৃদযে॥ একদিন তার পিতা ভ্ঞ মহামতি। বাফভেদজ্ঞানশন্য হলেন সুমতি॥ সেই কালে শিশু 🖰 ক্রু সম্ভূল অন্তরে। বিশাম করিতে থ'কে গিরি শুঙ্গো পরে।। সহসা অপনা এক সেই পথে যাব। শুকাচার্য্য সেই দিকে নবন কিরায়। তাহার অপুর্ব রূপ করি দরশন। শুনের অন্তর হয় চঞ্চল তখন। শূকামার্গ দিয়া বেশ্যা করিছে গমন। কিরুগে ভাহারে 👺 🕸 ক্বিবে ধারণ। ভাবিয়া চিন্তিয়া নাহি দেখেন উপায়। বিহনল ২ইয়া শুক্র চারি দিকে চায়॥ তার পর ছুই চক্ষু করিয়। মুদ্রণ। অপ্ররার রূপ গ্যান করেন ভখন।। মনে মনে রূপ ধ্যান করি খ বব। সজোগ করেন স্তখ সানন অন্তর। মনে মনে এইরপ করেন ১০০। "অপ্রাসহিতে মম হইল মিলন। এই আমি সুরপুবে অপার। সহিতে। বিচরণ করিতেছি অনান্দিতচিতে॥ কামমদে মত্ত হযে দেবনারীগণ। দেবেজ সহিতে স্থাপ করে আলিঞ্চন। আমিও ইন্দ্রের কাছে আছি উপস্থিত। অপার। বামেতে মম রয়েছে নিশ্চিত॥ ইন্দ্রকে প্রণাম আমি করিছি এখন।" এইরপ মনে ফনে করেন চিন্তন॥ তার পর পুন চিন্তা করেন অন্তরে। " আসন হইতে ইন্দ্র উঠিয়া সত্তরে॥ অঙ্যর্থনা দম্বর্দ্ধনা করেন আমায়। রতন আসনে খোরে তুরিতে বসায।। ইন্দ্রের আদেশে যত স্বর্গবাসীগণ। প্রত্যুত্থান সন্মাননা করেন তথন।। এইরপ নানা চিন্তা করি মনে মনে। আবার ভাবেন যেন অপ্ররার সনে॥ বিছার করিছে স্থাপে অমর-নগরে। অপারা ভাঁহার মুখে চুম্বনাদি করে॥

মনে মনে এইরূপ করিয়া চিন্তন। কিছু কাল শুক্রাচার্য্য করেন যাপন। দ্বাত্রিংশ বরষ শুক্র এ হেন প্রকারে। মনো দ্বারা স্বর্গহুখ অনুভব করে॥ তার পর স্থুল দৈহ করি বিসর্জ্জন। অমর নগরে শুক্ত করেন গমন॥ পুণ্যক্ষ হলে পরে ওছে ক্ষিগ্ণ। ভার জীব খ্যাচাত হইল তখন॥ প্রবেশ করিল তাহা চন্দ্রের জ্যোতিতে। ধাগ্ররূপ হলপরে জানিবেক চিতে॥ দশার্ণদেশেতে সেইধান্ত জনমিল। জনেক ব্রাহ্মণ তাহা ভোজন করিল। সেই ধান্স জীর্ণ হযে বিপ্রের উদরে। রেচনপে পরিণত হল তার পরে॥ সেই রেতে বিপ্রনারী গর্ভবতী হয়। পুল্ল জনমে শুক্র ওহে ঋষিচয়। এইরবেপ পুন উক্র ধরিষা জনম। ঋষপুরগণ সহ লভেন মিলন॥। অবশেষে যান তিনি সুমের-শিখরে। তপস্থাতে নিজ মন নিবেশিত করে॥ একদা অপারা এক হয় দবশন। শুক্রের নয়নে রূপ হয় নিপ্তন। পুনরায় কামবেগ জন্মিল অন্তবে। রেতঃপাত হল তাব ভূমির উপরে। সেই রেতঃ এক মুগী করিল ভন্দণ। গর্ভবতী হল সেই তাই সে কারণ॥ যথাক।লে ২ুগা এক প্রদবে সন্থান। মনুষ্য-স্মাকার তার স্ততি রূপবান্। প্রস্থত হইয়। পুদ্র ভূমিষ্ঠ হইলে। শুক্রাচার্য্য সেই পুদ্রে অতীব সাদবে॥ ষতন করিয়। তারে করেন পালন। পুনরায় সংলারেতে মজে তার মন। সদত চিন্তেন শুক্র আপন অন্তরে। াকরূপে আমার পুত্র রহিবে সংসারে॥ কিকপেতে ধনবান হইবে দকান। কিকপেতে ধরামাঝে হবে বিভাবান্। কিরপেতে দীর্ঘ আ মুধরিবে তন্য। এইরপ সদা চিন্তে শুক্র মহোদয়॥ এইরূপ মনে মনে করিয়া চিন্তন। বৃদ্ধচিন্ত। আদি হতে দেন বিস্তুদ্ধন । এইরূপে বহুচিন্তা করিতে অন্তরে। জীর্ণ শীর্ণ হন ক্রমে সংসার মাঝারে॥ ल्ट को। মন की। হইনা পড়িব। সুতুঃসহ ব্যাধি আসি ভাঁহারে **খেরিল॥** আপন জীবন শেবে দেন বিদর্জ্জন। কোথা গেল জপ তপ ত্রন্মের চিন্তন॥ আজীবন ভোগচিন্তা করিল অন্তরে। এই ছেতু শুন শুন ঘটে যাহা পরে॥ এই রাপে সেই দেহ করি বিসর্জ্জন। মদ্রদেশে পুনরায লভেন জনম॥ মদ্রদেশে রাজকুলে জনম ধরিল। শশিকল। নম ক্রমে বাড়িতে থাকিল ॥ বাল্যকালে বিদ্যাশিকা করেন যত ে সোমুক্যিদ্যা ধনু কিদ্যা শিখিলেন ক্রমে॥ উপনীত इয় জেমে যৌবন সময়। অপূর্বে ধরিলেন 🕮 শুক্র মহোদয়॥ উপযুক্তা কলা সহ বিবাহ হইল। যৌবরাজ্যে অভিষেক নৃপতি করিল॥ রাজপদ লভি শেষে একান্ত অন্তরে। প্রজাগণে পুত্র সম শাসনাদি করে॥ তাহার শাসনে তুষ্ট যত প্রজাগণ। পুত্রনির্বিশেষে করে প্রজার পাশন॥

हिस शाका स्थाकाटन कीवन जिल्हा। व्ययत-नगरत रोल मीनक-स्वरहा ें बनायन আদ্ধকার্য্য করি সম্পাদন। শুক্রাচার্য্য সদা করে রাজ্যের শাসন॥ ধর্ম রক্ষা করি করে রমণী-বিহার। চারিদিকে হলো ভার ঘশের বিভায়। জনে পুত্র জনমিল ভাঁহার ঔরসে। যতনে পালেন পুত্রে অশেষ-বিশেষে॥ <sup>র</sup> মধাকালে পুত্রকরে দিয়া রাজ্যভার। জীবন ত্যজেন শুক্র গুণের **আ**ধার॥ ভোগ অত্তে নিজদেহ করি বিসর্জ্জন। সমঙ্গা-তীরেতে গিয়া লভেন জনম ॥ নেই স্থানে ছিল এক তপষী ধীমান্। জনমিল শুক্র তার হইয়া সন্তান॥ শুন শুন তার পর ওহে ঋষিগ্র। এদিকেতে ভুগু ছিল তপে নিম্প্র।। 🛚 😎 ক্রমবে দেহত্যাগ করেন তথায়। যেকালে অপ্সরা শূন্যপথে চলি যায়॥ নেই দেহ পড়েছিল ভূমির উপরে। রৌদ্র লাগি ক্রমে তাহা ওক হয়ে পড়ে॥ , হিংত্র জীব নাহি ছিল ভৃগুর আশ্রমে। হিংসা দ্বেম নাহিছিল জানিবেক মনে॥ এই হেতু তথাকার পশুপক্ষীগণ। শুক্র-মৃতদেহ নাহি করিল ভক্ষণ।। ু **সহস্র বরষ শব প**ড়িয়া রহিল। তথাপি ভক্ষণ নাহি কেহই করিল। ার পর ধ্যানভঙ্গে ভ্ঞ মহামতি। দেখিলেন পুরোভাগে আপন সন্ততি॥ ্রিপেশিলেন অস্থিমাত্র পতিত ধরায়। পক্ষীতে করেছে ছিক্র করিতে কুলায়।। অবিষধ্যে ছিদ্র করি যত পক্ষীগণ। কুলায় নিশ্যণ করি রয়েছে তখন॥ ্রি**শুক্ত নাড়ী স্থবিস্থ**ত রয়েছে ধরায়। ভেকেরা। রয়েছে স্থাখে তাহার ছায়ায়।। : পুত্রের এরপ দশা করি দরশন। মহাযতি ভ্ত ঋণি ছঃখেতে মগন।। ু কিছুমাত্র বিবেচনা না করি অন্তরে। অতি ক্রুদ্ধ হন মুনি কালের উপরে।। • **কালেরে** উদ্দেশ করি কহেন তখন। এ কি কাল হেরি তব মন্দ আচরণ।। ষ্মকালে আমার পুত্রে করিলে বিনাশ। ইহার কারণ কিবা করছ প্রকাশ।। ্রেখনি তোমারে আমি করিব শাসন। সমুচিত ফল পাবে শুনহ বচন।। **এইরপে মহামুনি** কুপিভ অন্তরে। ভয়ে কাল কম্পান্থিত হন থরে থরে।! कत्रर्यार्ड उपनी उ अधिमित्रिधान । विनय्-विद्यान कर्ट ७ रह पित्रान्।। ্প্রণমি তোমার পদে ওচে ঋষিবর। দয়ার আধার ভূমি গুণের আকর।। বিবেচনা কর প্রভু আপন অন্তরে। কি হেতু করিছ কোপ অধীন উপরে।। কিবা দোৰ ইথে মম ওছে মহাজ্যন্। পরের অধীন আমি সদা সর্বকণ।। নিয়ম করেছে যাহা পরম-ঈশর। দেরপ করম করি ওতে মুনিবর।। निय़रमत्र वांधा इत्य त्रि नर्स्वक्षण। इच्छामर् कान कांक् ना कृति क्ष्न।। প্রনীয় হও তুমি ওহে মহামতি। তোমার উপরে রাখি সদত ভকতি।। इथा तोष कत तकन व्यापन व्यवस्त । जपःकृत रह रेष 'तम्बर निर्मारत ।।

তোমারে সতত মোরা করি সজম্পূন। মনোপরি কেন রোষ কর অকারণ ॥ ক্ষকা কর ক্ষাশীল দরার্জ হইরে। তোমারে প্রণমি দেব একান্ত-হৃদরে । যেরপ নিয়ম আছে আমার উপরে। শুন শুন বলিতেছি ভোমার গোচরে॥ গ্রাস করিয়াছি আমি অসংখ্য সংসার। কত রুদ্রে নাশিযাছি নহে গণিবার II অসংখ্য বিষ্ণুকে আমি করেছি ভোজন। কত ত্রন্ধা নাশিয়াছি কে করে গুণনা ঈশের নিয়ম এই আমার উপরে। ইথে কিবা দোষ মম ভাব**হ অন্তরে**॥ নিজ ইচছাবশে কিছু করিবারে, নারি। মনে মনে তুমি দেব দেখহ বিচারি ॥ মায়াবশে রক্ষে যথা পুষ্প ফল হয়। সেইরপ জীবগণ জানিবে নিশ্চয় ॥ সৃষ্টিকালে ধরাতলে করে আগমন। প্রলযে পুনশ্চ লয় এই ত নিয়ম॥ অত-এব তুমি জ্ঞানী জগত-সংসারে। তবে কেন কর কোপ অধীন উপরে 🛔 বিমুগ্ধ হতেছ কেন অজ্ঞান-সমান। স্থিরচিত্তে ভাবি দেখ ওছে মতিমান্।। বিল্লা ও অবিল্লা দুই জানহ আপনি। অধিক তোমার পাশে কি বলিৰ व्याभि । निक कर्मरपारव उर शुज गरहापय। लिखारह रहन पना कानिरत নিশ্য ॥ ২০৭ কেন কোভ কর ওহে মহামতি। আমার উপরে কেন কুপিত সংপ্রতি॥ অভিশাপ কেন দিবে আমার উপরে। কিবা দোষ **অধীনের বলহ**ু বিচারে ॥ এই যে মানবজাতি কর দরশন। মনই প্রধান ইথে ওহে মহাজ্বন্॥ মন দ্বারা যাহা ক্লত হইবে সংসারে। তাহারেই ক্লত কছে জানিবে অন্তরে॥ যখন সমাধিত্ব তুমি হলে মহাত্মন্। সেই কালে আপনার তনয়ের মন॥ আপনার বীর্য্যজাত শরীর ত্যজিয়ে। গিয়াছিল সরপুরে সানন্দ হৃদয়ে॥ তথায় অপারা সহ করিল বিহার! শুন শুন তার পর ওহে গুণাধার ম ষর্গভোগ অবসানে দশার্ণ দেশেতে। বিপ্রগৃহে জনমিল তাহার পরেতে॥ তদন্তর পুনরায় ত্যজিয়া জীবন। সূরপুরে কিছুকাল করেন যাপন॥ তার পর নানাযোনি ভ্রমণ করিয়ে। অধুনা সমঙ্গা-তীরে সানন্দ হৃদয়ে॥ তথ্যস্থা করিছে তব পুত্র মহাত্মন। জটাধারী হয়ে আছে মুদিত লোচন॥ আটশত বর্ষ হৈল সমন্বার তীরে। তব পুত্র ঘোরতর তপশ্র্যা করে॥ অতএব শুন শুন ওতে মহাজ্বন্। মনোভ্রম নিবন্ধন তোমার নন্ন। নানা দেহ প্রভিয়াছে জানিবে অন্তরে। জ্ঞান: কু দিয়া প্রভু দেখহ অন্তরে॥

কালের এতেক বাক্য করিয়া প্রবণ। জ্ঞানচক্ষে শ্বিবন দেখেন তখন।।
পুত্রের ব্যন্তার যত দেখিতে পাইল। পুত্রের রক্তান্ত হদে প্রতিভাত হৈল।।
ক্ষেপ ফরেপ করে তাঁহার নন্দন। বুদ্ধি দর্পণেতে সব দেই নাতখন।।
প্রান্তন্ত সকল কার্য্য দেখিবার পরে। জ্ঞাননেত্রে দেখিলেন সম্পার তীরে।।

তাহা দেখি ভৃগুছদে লাগিল বিশায়। কালকে কহেন তিনি করিয়া বিনয়॥ শুন শুন ওহে কাল ভূমিই ঈশ্র। সকলি করিতে পার জগত-ভিতর॥ অজ্ঞান সামরা দবে ওহে মহামতি। অধিক বলিব কিবা ভোমারে দম্প্রতি॥ বুঝি**সু বুঝিসু দব এখন** অন্তরে। নমস্কার করি তোমা ভক্তির ভরে॥ ভূথর এতেক বাক্য করিয়া শ্রবণ। হাস্তমুখে তাঁর হস্ত করিয়া ধারণ॥ কহিলেন তন শুন ভূত মহামতি। সমঞ্চা-তারেতে এবে চলহ সম্প্রতি॥ এত বলি ছুই জনে করেন গমন। উপনীত তথা গিয়া হন সেইক্ষণ।। দেখি-লেন সেই স্থানে ভুগু মহোদয়। আপন সন্তান তথা সমাধিত রয়॥ তাঁছারে দেখিয়া ভুগু স্নেহনিবন্ধন। মনে মনে এইরূপ ক্রেন তখন।। সমাধি করিয ত্যাগ আমার নন্দন। বোধযুক্ত ত্বরা করি হোক এইক্ষণ।। এরুণ সংকল্প ভ্ত করেন যেমন। অমনি পরুদ্ধ হন তাহার নন্দন।। ৫ফু মে: 👺ক্রার্গ্য হেরেন তথায়। প্রোভাগে পিতা তার অতি শোভাপায়। ব্যক্তভাবে গাত্রোত্থান করি তার পর। প্রণাম করেন পিতৃচরণ-উপর। বিনয় বচনে কহে অতি ধারে ধারে। শুন শুন ওহে পিতঃ নিবেদি তোমারে। তব পদ এবে আমি করি দরশন। হইনু পরম সুখী ওহে মহাত্মন্। এইরপে পিতৃস্তব করে মহামতি। তাহে পরিতুট ভ্ও হইলেন অতি। অনন্তর শুক্রাচার্য্যে করি সম্বোধন। মহামতি ভ্ঞ কহে মধুর বচন। শুন শুন মম বাক্য ওহে শুণাধার। বিশ্বত না হও আতা বচন আমার। আহাকে দর্ণ কর ওহে মহাত্মন। অজ্ঞানী নহ ত তুমি অতি বিজ্ঞাতম। তোমার স্থান নাহি হেরি জ্ঞানবান্। জ্ঞানখোগে দ্ব জান ওছে মতিমান। ভূতর এতেক বাক্য করিয়া প্রবণ। ক্ষণকাল শুক্রাচার্য্য মৌনভাবে রন। क्या खती कथा नव करतन अत्रेग। ज्ञान हरक नव शरत करत एतमन। তখন বিষয় লাগে তাঁহার অন্তরে। হাসিয়া কছেন পরে পিতার গোচরে। শুন শুন ওছে পিতঃ আমার বচন। তোমার নিকটে কহি সব বিবরণ। অমরণ কোন দৃষ্টি চিতেতে আমার। প্রকাশ পাইয়াছিল ওতে গুণাধার। সেই হেতু পূর্বের হই আত্মবিষারণ। ভোগযুক্ত বিশ্ব মন্দে উদে সে কারণ। এখন জ্ঞাতব্য বস্তু বিদেত হইল। অগয় দ্রুটবা বস্তু পরিদুষ্ট হৈল।। এখন কানিকু আমি আপন অন্তরে। চিন্মাত্র বস্তুই সত্য কহিনু তোমারে। চিদ্বিকার সত্য নহে জানিবে কখন। চিৎভিন্ন নাহি কিছু ওহে মহাত্মন্। একমাত্র চৈতত্যেতে ভ্রমনিবন্ধন। জগৎ প্রকাশ পায় ওছে মহাঁত্রন। স্থানত্য জগত কিন্তু জানিবে অন্তরে। অধিক বুলিব কিবা তোমার গোচরে

্র ছয়ে এতকাল অসত্য জগতে। ভ্রমণ করিমু আমি জানিবেক চিতে। অম বিদুরিড এবে হইল আমার। এত দিনে ঘুচিয়াছে মনের আঁধার 🛊 স্বস্তরপ পরত্তকে আমি হে এখন। বিশ্রাম করিব পিতঃ কহিন্দু বচন,॥ চল চল পিত এবে মন্দর ভূধরে। নেহারিব পূর্বদেহ বাদনা অস্তুরে 👢 কৌতু হ হতেতে উহা করিতে দর্শন। আরো এক কথা বলি শুনহ বছন 🗷 সেই দেছে বিছরিব আরো একবার। এরূপ বাসনা হৃদে হতেছে আমার ॥ কিন্তু তব পাশে শুন বলি হে বচন। কিছুতেই বাঞ্ছা কিন্তু নাহিক এখন ॥ জগতে বাঞ্চিত মম কিছুমাত্র নাই। অবাঞ্চিত নাহি কিছু কহি তব ঠাই ॥. এইরপে কথাবার্তা কহিতে কহিতে। তিন জন সমবেত হইয়া পরেতে ॥ \* জগতের স্বভাবাদি করেন বিচার। ত্রন্মজ্ঞানী তিন জন গুণের আধার 🗈 कथाय कथाय मत्त रूप निगर्गन। मगन्नात जीत ज्ञान करिया वर्ड्डन । উননীত হন গিয়া মন্দর ভূধরে। শুক্রাচার্য্য হাসি হাসি কহেন পিতারে॥ এই দেখ পূর্বদেহ রযেছে আমার। প্রাক্তন শরীর ইহা ওহে গুণাধার॥ এদেহ হয়েতে ওক কর দরশন। এই দেহ তুমি পিত করেছ পালন॥ নানারপ সুখভোগে অতীব যতনে। রক্ষেছিলে এই দেহ ভাবি দেখ মনে ॥ करनिष्टित मण्डरन आभारत शालन। सिर एक एए इरा इराउर लुईन ! এত শুনি মহাকাল সম্বোধি শুক্রেরে। কহিলেন শুন শুন বলি হে ভোমারে॥ শুন শুন ওছে সাধু আমার বচন। নিজ রাজ্যে নরপতি প্রেবেশে যেমন। সেইরূপ এই দেহে প্রবেশ আপনি। এই দেহে হবে তুমি অতি মহাজ্ঞানী॥ অমুরের গুরু তুমি হবে এ শরীরে। করিবে মে গুরুকর্ম একান্ত অন্তরে॥ শুক্রেরে এতেক বলি কাল মতিমান্। দেখিতে গেখিতে তথা হন অন্তর্জান॥ অন্তহিত হলে কাল শুকু মহামতি। পূর্ব্ব শনীরেতে পুনঃ পশিল স্কমতি 🛭 নিয়তির বশীভত হইয়া তখন। নিজদেহে পশিলেন শুক্র মহাত্মন॥ প্রবিষ্ট হইলে জীব পুত্র-কলেবরে। মহামতি ভুগু ঋষি সানন্দ অন্তরে॥ কমওঁলু হতে জল করিয়া গ্রহণ। ততুপরি অবিলম্বে করেন প্রোক্ষণ ॥ স্ক্রিক সম্পন্ন দেহ তাহাতে হইল ৷ মাংস ১খ বসা আদি সকলি জন্মিল ॥ অন্থিমাত্র হয়ে ছিল সেই কলেলে। সম্পূর্ণ হইল এবে পেয়ে ভৃগুজল। পঞ্চ বায়ু প্রবেশিল তাহার শরীরে। যথাযথ রহে সবে সানন্দ অন্তরে॥ পূর্ব্ব দেহ লভি শুক্র করি গাত্রোখান। আনন্দে পিতার পদে করেন প্রণায়। ্তার পর ছুই জানে নানাকথা কয়। এক জ্ঞান কথামাত্র আর কিছু নয় 🛊 জগৃৎ স্থিত সেই কথা লয়ে। থাপিলেন কিছুকাল সানন্দ হাদরে॥

स्टनद्र यनन भटत कति विमर्ध्यन । निखत्र इपज्ना स्टा हरे जन ॥ नगामि নিশ্চল দোঁহে হন পুনরায়। শুনিলে এ ত্রন্ধ জ্ঞান খুচে ভবদায়॥ এত বলি বিধিমুর্ভ করেন তখন। শুন শুন ঋষিগণ করহ প্রবণ।। ভবতুঃখ বিনাশনে যদি ইচ্ছা হয়। মনের নিগ্রহ কর কহিনু নিশ্চয়॥ এমন উপায় আর কিছুমাত্র নাই। ভববন্ধ ঘুচে ইথে কহি সবা ঠাই। ভোগেচ্ছার নাম বন্ধ **জানিবে অন্তরে।ভোগত্যাগ যাহা তাহা মোক্ষ বলি ধরে ॥অন্য শাস্ত্র অভ্যা-**সেতে কিবা প্রয়োজন। ভোগত্যাগে দব কাজ হয় স্থদাধন॥ যাহে যাহে কাম লোভ জনমে অন্তরে। তেয়াগ করিবে তাহা অতি যত্ন করে॥ করিবে বিবাগি সম তাহা দরশন। তবে ত ঘুচিবে জান ভবের বন্ধন॥ বিষয়-সকল-ভোগ অতীব বিষম। পরিণামে ছঃখপ্রদ ওহে ঋনিগণ॥ এই সব মনে মনে করিয়া বিচার। যদ্যপি ভদ্রপ কার্য্য কর অনিবার॥ তবে ত পরম **স্থ্য লভিবে অন্তরে। কহিনু নি**গুঢ় কথা স্বার গোচরে॥ ভোগার্থ মনেতে হলে ওৎস্ক্য উদয়। নিবারণ করি তাহা ওহে ঋষিচয়॥ ঔদা-শীক্ত শমাশ্রয় যদি করা যায়। মনো নাশ কহে তারে কহিন্তু স্বায়॥ তত্ত্তামী যারা হয় এ ভবসংসারে। তৃঞাশুর হয় তারা জানিবে অন্তরে॥ এই হেতু তাহাদের মনোলয় হয়। অজ্ঞানীর নাহি যাহা ঘটিবে নিশ্চয়॥ **শ্বজানী যাহারা হয় এ** ভব-সংসারে। লুক্ষমন। হয় তাহা জানিবে অন্তরে 🖪 জ্ঞাযুক্ত নদা রহে তাহাদের মন। স্কুতরাং তাদেব বন্ধ না হয় মোচন॥ বন্ধন-রজ্জুর সম তাহাদের মন। ভবতুঃখ পায় তারা শাস্থের বচন। **জ্ঞানবান্ যেই জন এ** ভব-সংসারে।বিচলিত সেই জনে কে করিতে পারে॥ শানন্দ তাদের মন নহেত কখন। নিরাবন্দ নহে কভু ওহে ঋষিগ্ণ॥ তাহাদের মন নহে কখন চঞ্চল। অচঞ্চল নহে কভু তাদের অন্তর ॥ সৎ নহে किया नार व्याप कथन। किन्ता जाएत यन महा मर्का ना धा १ इन् ভাদের মন সকল বস্তুতে। সদা অবস্থিত রক্ষে জানিবেক চিতে॥

এত শুনি শ্বিগণ জিজ্ঞালে তখন। শুন শুন বিধিস্কৃত মোদের বঁচন॥
চিদাত্মাতে এই বিশ্ব স্থিত বে প্রকারে। বিশেষ করিয়া তাঁহা কই সবাকারে॥
সমাক বুঝিতে মোরা না হই সক্ষম। বিশেষিয়া কহ তাহা ওহে মহাত্মন্॥
এত শুনি বিধিস্কৃত কহে পুনরায়। শুন শুন শ্বিগণ কহিব সবায়॥
ইক্রিয়-বিষয় নহে আকাশ যেমন। চিত্রপ ওক্রেরে সবে জ্ঞানিবে তেম্ন॥
সর্বহানে অবস্থিত সেই ওলা রয়। তবু তাঁরে জানা বড় কঠিন নিশ্চয়॥
ইক্রিয়-গোচর তিনি নহেন কখন। মন দারা, কেবা পারে করিতে এহণ॥

আকশি হতেও কৃষ্ম জানিবে তাঁহারে। অবিনাশী সেই জন জানিবে অস্তরে॥ সর্বসংজ্ঞাবিবর্জ্জিত সেইজন হন। ত্রন্ধ বলি তাঁরে ডাকে যত জ্ঞানী-জন । কেহ কেহ তত্ত্ব নাম করয়ে অর্পণ। কলাদি বিহীন তিনি ওছে ঋষি-গণ॥ সাগরের জল যথা তরঙ্গ আকারে। আন্দোলিত হয় সদা জানে সর্ব-নরে॥ রুদ্ধ আকার কোপা করয়ে ধারণ। বিদ্ধরূপ হয় কোপা ওছে ঋষিপ্রণ। শেই রূপ সর্বব্যাপী চিতেরে জানিবে। চিৎ-সমুদ্রেতে মোরা রহিয়াছি সবে॥ তুমি আমি নারী নর যত সব জন। চিং-সমুদ্রেতে সবে আছি সর্বকণ।। চিৎ হতে ভিন্ন কিছু নহেক কখন। একমাত্র সেই চিৎ ওছে ঋষিগণ॥ এক ব্রহ্ম মাত্র উহা জ্ঞানীর গোচরে। অখিল জগংরপে অজ্ঞানীরা হেরে॥ চিদুদ্বের অন্ত নাই নাহিক ্রয়। ক্রিযাশূন্য হয় উহা জানিবে নিশ্চয়॥ গ্যনাগ্যনশূন্য জানিবে চিতেরে । উত্থান ও স্থিতিহীন জানিবে তাঁহারে। অথচ এমন স্থান কুত্রাপিও নাই। যথায় তাঁহাতে নাহি দেখিবারে পাই। নাস্তিত্বদপেতে ভারে দেখে মূর্যজন। জানীরা অস্তিত্রপে করে দরশন। চিদ্বস্তু আক।রশুর জানিবে অন্তরে। আপনাতে হয়ংস্থিত কহিছু সবারে॥ মায়াযোগে সেই চি২ তগং নাম গরে। প্রকাশ পাইতেছে **সদা জানিবে** আন্তরে॥ চিদুদ্র উদযশালী সদা সক্ষণ। নিরাকার সদা তিনি ওছে ঋষি-গ্ৰা। সংকল্প যখন তিনি করেন অন্তরে। সে কালে আশ্রয় করে জানিবে আমারে॥ " আমি বহু হই " এই সংকল্প করিয়ে। মায়ারে আশ্রয় করে জানিবে হৃদয়ে॥ তখন প্রকাশরূপী দেই ত্রন্ম হয়। অবয়বযুক্ত হয় জানিবে নিশ্চয়॥ অপকাশবস্তুরূপ হন তার পরে। কহিনু িগুড় তত্ত্ব সবার গোচরে। অনিত্য বস্তুরে পরে করিয়া শ্রণ। ভাবাভাব চিদ্ এন্ন করেন এছণ।। তদবস্থকালে তিনি সামান্ত বিষয়ে। স্থিতি প্রাপু হয়ে থাকে জানিবে কদয়ে। श्रूलप्रिशः श्वाता करवन मृक्ता अञ्चत्र कि क्रूमां व ना करत क्रयन ॥ এইরপে চরাচর ঘাবত সংসার। তাদ হতে সমাগত হয় অনিবার।। পুনশ্চ ত্রেলেতে পরে লয় প্রাপ্ত হয়। ত্রনাই জানিবে সব্তহে ঋষিচয়।। একমাক্র হয় জীব মন্ততা কারণ। প্রকাশিত হয় অন্যরপেতে যেমন।। সদা-নন্দরূপ ব্রহ্ম তদ্রপ প্রকারে। মায়া োগে জীববৎ অবস্থিতি করে॥ বস্তুত তাঁহার ভেদ কিছুমাত্র নাই। উপাধিকম্পিত ভেদ দেখিবারে পাই। অধিক বলিব কিবা ওহে ঋষিগণ। যে বিজ্ঞান বলে কর শবাদি এহণ ৷ ক্ষাত্মা ও পরম ত্রন্ধ দে বিজ্ঞান হয়। জগত ব্যাপিয়া তিনি আছেন নিশ্চয়। গ্রাক যে সব বস্তু হয় দর্শন। সকলই এক্ষাত্র নহে অশুভদ।

ভ্রমেতে রজ্জুতে যথা সর্পভ্রম হয়।এই বিশ্ব সেইরূপ জানিবে নিশ্যয়॥ অজ্ঞান বশতঃ সেই পরম ত্রেষতে। জগত কল্পিত হুর জানিবেক চিতে। সাগর-তর্প যথা কর দরশন। নানারূপে প্রকাশিত হয় সর্বক্ষণ।। স্বরূপতঃ জল ভিন্ন অন্য কিছু নয়। দেরপ জানিবে এই জগত নিশ্চয়। নানারপে প্রকাশিত হয় দয়শন। ত্রন্ধ ভিন্ন কিন্তু উহা নহে অগ্রতম। বস্তুগতা ব্ৰহ্ম ভিন্ন অন্যু, বস্তু নাই। যাহা দেখি তাহা ব্ৰহ্ম জানিবে স্বাই। ব্ৰহ্ম শিকা যেইরপে করিবে প্রদান। বলিভেছি সেই কথা দ্বা বিভাষান s প্রথমতঃ শম দম আদি শিক্ষা দিয়ে। শিষ্যকে করিবে শান্ত একান্ত-হৃদয়ে॥ বেদ্ধ উপদেশ পরে করিবে প্রদান। এই ত নিয়ম আছে শাস্ত্রের প্রমাণ॥ ব্রদ-উপদেশ নাহি দিবেক ভাহারে॥ **,অর্দ্ধজ্ঞান** জন্মিয়াছে যাহার অন্তরে। ত্রদা উপদেশ তারে করিলে প্রদান। নরকে সে জন করে অন্তিমে প্রাণ॥ ভোগ ইচ্ছা নাহি কভু যাহার অন্তরে। যে জন নিদ্যামভাবে অবস্থিতি করে। জ্ঞানযুক্ত যেই জন সদা সর্বঞ্চণ। ত্রন্ধ উপদেশ ভারে করিবে অর্পণ। সেই জনে উপদেশ করিলে প্রদান। অবিদ্যা বিনাশ পায় শাস্তের প্রমাণ॥ যেমন প্রদীপ থাকে উদ্ধল যাবত। সমানভাবেতে থাকে অলোক তাবভা। তাবত পৰ্যান্ত দিবা থাকে বিদামান !৷ সূর্য্যদেব যতকণ করে অবস্থান! নিকটেতে পুপ্ত আদি রহে যতক্ষ। সৌগন্ধ তাবত রহে ওহে খবিগণ॥ তজপ যাবত ত্রন্ম তাবৎ পরিমাণ। জগৎ প্রকাশ পায় কহি স্বাহান । ত্রিন্ধের সভাতে হয় জগৎ-পরিচয়। প্রতিবিদ্ধরপ বিশ্ব জানিবে নিশ্চয় ॥ বস্তুগত্যা সত্য নহে জগত কখন। বেদের সভাতে মাত্র হয় **দর্**শন ম এত শুনি ঋষিগণ কহে পুনরায়। নিবেদন ওহে প্রভু করি গো তোমায়। বলিলে হে এই কথা ওহে মহোদয়॥ **জগত ক**ম্পিত সেই চিদ্ৰেক্ষে হয়। সম্যক বুঝিতে ইহা আমরা অক্ষ। প্রকাশ করিয়া বল ওহে মহাজ্ন॥ বিধিম্বত কহে শুন তাপদনিকর। কহিলাম যাহা যাহা সবার গোচর॥ অযুক্ত কিছুই নাহি করিবেক জ্ঞান। কহিলাম অর্থয়ুক্ত সবা বিদ্যমান॥ অসঙ্গত কথা আমি না কহি কখন। বিরুদ্ধ বচন নাহি করি উচ্চারণ॥ জ্ঞানদৃষ্টি প্রকাশিত হইলে অন্তরে। তত্ত্বজ্ঞান সমুদিলে হৃদয়-মাঝারে॥ আমার বাক্যের মর্ম রুঝে সেই জন। অধিক বলিব কিবা ওছে ঋষিগণ।। व्यविष्ठा नार्भंत भून कानित्व मःमाद्त । व्यविष्ठा वर्भवः साह कनत्म व्यव्दत। অবিদ্যাই আতারুদ্ধি করে বিনাশন। কিন্তু এক কথা বলি শুন ঋষিগণ।। আবার অবিদ্যা হতে বিদ্যালাভ হয়। তাহার কারণ বলি ওন ঋষিচয়।।

এক অস্ত্র হস্তে যথা করিয়া ধারণ। তাহা দিয়া অন্ত অস্ত্র করয়ে ছেদন।। এক মল দারা অতা মল নিউ হয়। এক বিষে বিষান্তর প্রশ্মিত রয়॥ এক শত্রু দিয়া অন্ত রিপুর দমন। দেকপ অবিদ্যা দিয়া বিদ্যাবিনাশন।। কি বলিব ঋষিগণ মাযার বিষয়। যখন শরীর নাশ উপস্থিত হয়॥ তখনো 🔏 আনন্দ মায়া করয়ে এদান। ছুজেলি গায়ায় বল খ্যাত সর্ব্ব স্থান। কিন্তু জ্ঞানী হয় যেই এ ভব-সংসারে। বিবেক ছারাতে মায়া দরশন করে॥ তাহার নিকটে মায়া বিনাশিত হয। কছিত্ব নিগৃত কথা ওছে ঋষিচয় । অতএব জ্ঞানলাভ করহ সকলে। অবিজ্ঞা কোথায় যাবে ত্যজিয়া সবারে 🕻 🥳 ত্রদ্ধজান বিরাজিত অন্তরে যাহার। মুক্তি লাভ হয তার শাস্ত্রের বিচার॥ 🖏 জগতের যাহা কিছু হয় দরশন। এদোর ২রূপ সব ওহে ঋষিগণ॥ এইরূপ জ্ঞান যার সদত অন্তরে। মুক্তি লাভ হয় তার কহিনু স্বার্টের। আমি তুমি ভেদজ্ঞান ভাবে যেই জন। অবিদ্যু তাহার নাম ওহে ঋষিগণ॥ অবিশ্যা সর্বাথা ত্যাগ করিবে যতনে।তবে ত লভিবে ফল কহি সবা স্থানে॥ 🟅 ত্রদজ্ঞান থদি নাহি করয়ে সর্জ্জন। অবিদ্যা কিরপে বল হবে বিনাশন॥ অবিদ্যা নদীর পারে যেতে ইচ্ছা হলে। এক্ষজ্ঞান ভিন্ন তাহা কভু নাহি ফলে। অবিদ্যা উত্তীৰ্ হয় যেই কোন জন। ত্ৰহ্মলাভ হয় তার বরপ বচন। ভন শুন ঋষিগণ বলি সবাকারে। কোনু বস্তু হতে মায়া জনমে সংসারে॥ শে বিচারে কাজ নাই জানিবে স্বাই। কিরুপে হইবে নাশ বুঝিবারে চাই॥ অবিদ্যা বিনাশ হয় যে কোন প্রকারে । বিচার করিবে তাহা স্বাই অন্তরে। অবিদ্যা বিনাশ প্রাপ্ত হইবে যখন। তখন জানিতে পাবে উহার জনম॥ যাবত অবিদ্যা নাহি বিনাশিত হয়। তাবত জনম নাহি বুঝিবে নিশ্য়। অবিদ্যা কেবল হয় রোগের আগার। অবিদ্যা বিনাশে যতু কর অনিবার॥ অবিদ্যা যাহাতে নাহি জনমে অন্তরে। ছুঃখ নাহি হুদে আদি ঘেরিবারে । পারে॥ তাহার উপায় সবে কর সর্বক্ষণ। যতুবানু হও তাহে আমার বচন॥ আপনি আকাশে যায় বাতাস যেমন। আত্মাকেও ঋষিগণ জানিবে তেমন।। স্বীয় শক্তি দারা আত্মা আপন আত্মাতে। চঞ্চলতা প্রাপ্ত হয় জানিবেক চিতে॥ সাগরে তরঙ্গ পায় প্রকা , ষেমন। সেইরূপ চিদ্ ব্রহ্ম ওহে ঋষিগণ॥ তিৎশক্তি বিক্ষৃভিত হয় যেই কালে। চিদ্ত্রন্ধ প্রকাশিত হয় দেই কালে॥ " তৃত্বস্তু আমার" বলি প্রকাশিত হয়। সর্বাশক্তিযুত চিৎ নাহিক সংশয়॥ চিতেরে জীবাঁত্মা বলি জানিবে অন্তরে। ক্ষেত্রজ্ঞ পুরুষ যিনি খ্যাত চরাচরে॥ क्लिंड वामनायूक इरायन , यथन। अश्कात स्मिर्ट काल मण्डा जनम।

অহঙ্কার কর্তা হয়ে ক্রুযে তার পর। মনবুদ্ধিযুক্ত হয় তাপদনিকর॥ সঙ্কপ্র-সংযুক্ত হয়ে ক্রমে ক্রমে পরে। ইন্দ্রিয় স্বরূপ হয় কহিনু স্বারে॥ **এরপে সঙ্গপ** জার বাসনা-রজ্জাতে।সদা জাব বদ্ধ আছে জানিবেক চিতে।। ক্ষেত্রজ্ঞ পুরুষ ছঃখে হইয়া কাতর। চিন্তা দারা চিন্তরূপী হন তার পর॥ শেই চিত্ত মনরূপ তার পর হয়। অহন্ধাররূপ হয় জানিবে নিশ্চয়॥ কোষকারক্ষমিবৎ তিত্ত তার পরে। বাসনাদি যোগে বদ্ধ হয়ে স্থিতি করে॥ সন্ধশ্পিত জগদ্বস্ত করিয়া সৃদ্ধন । তার মধ্যবর্ত্ত<sup>া</sup> হয় ওছে ঋষিগণ॥ পরস্তু শৃত্বলাবদ্ধ দিংহের মতন। দে চিত্ত বিরক্ত আশু হয় ঋষিগণ॥ সেই চিত্ত কভু কভু মনোরপী হয়। বুদ্ধিরপী হয় কভু নাহিক সংশয়।। জ্ঞানরপী ক্রিয়ারপী কখন কখন। অহঙ্কাররপী হয় ওহে ঋষিগণ।। পুর্বাষ্টক-জীবরূপী কভু কভু হয়। নিজরূপে ব্যক্ত হয় কভু বা নিশ্চয়।। প্রকৃতিরূপেতে হয় কল্পিত কখন। মাসাকপে কিম্বা অর্থরূপেতে কখন।। অবিদ্যা লোকেতে গলে কখন তাহার। ইচ্ছা বলি সদ্যোধন কখন বা করে॥ যাহা হোক এক কথা শুন ঋদিগ্। বটর্ফ বট্ধার। ধর্থে যেমন।। ''(সইরপ মন ধরে অখিল সংসারে। বলিনু নিগৃত কথা নিকটে সকার।। চিতানলে দগ্রীভূত মানবের মন। কোপকপ সর্পানে করিছে দান।। কাষরপ সাগরের তরজ-মাঝারে। সদা মন কিও হয জানিবে অন্তরে।। · **এই হেতু হ**য় মন জন্ম বিষরণ। এই জন্ম বলি শুন ওং খবিগণ।। মনেরে উদ্ধার আগে করিবে মৃত্রে। তবে ত হইবে কাজ জানিবেক মনে।। অন্ম মৃত্যু হর্ষ ছঃখ শুভাশুভ ফলে। আত্মন মুক্ত হয় জানিবে অন্তরে।। **অতএব সেই** মনে করহ উদ্ধার। ফলিবে মনের বাঞ্চা জানিবেক সার ।। অধিক বলিব কিবা ওহে ঋষিগণ। বলিনু নিগৃত তত্ত্ব সবার সদন॥ এই সব যোগতত্ত্ব দেব মহেশ্র। বর্ণন করিয়াছিল পার্ব্বতী-গোচর ॥ আ**দিশু**রু পেবদেব দেব পঞ্চানন। একবক্তু কভু ধরে পঞ্চম কখন।। ভাছার বচন রুষা কভু নাহি হয়। তাঁহার কুপায় পূরে বাসনা নিশ্বয়।। পঞ্চবক্ত বলি তিনি বিখ্যাত ভূবনে। তাঁরে পূজা করে যেই ঐকান্তিক মনে।। তাহার , অসাধ্য নাহি জগত ভিতর। শিবতুল্য হয় সেই তাপদনিকর॥

# ত্রিখন্টিত অধ্যায়।

পঞ্চবক্ত্ পূজা। সনৎকুমার উবাচ।

ওঁ নগো বিফাবে আদিভূতায় তদনস্তর:।

সর্কাধার পদং প্রোচা মূর্ন্তয়েচ সমুচ্চরেৎ। অত্তে বহ্বিধূং প্রোচ্য সত্যোজাতং প্রপূত্রয়ে২॥

এত শুনি ঋষিগণ জিজ্ঞাদে তখন। শুন শুন নিবেদন বিধির নন্দন॥ পঞ্চবক্ত পূজা বিধি শুনিতে বাসনা। বর্ণন করিয়া তাহা পূরাও কামনা॥ তখন বিধির গুত সহাস্থা-বদনে। কহিলেন শুন শুন বলি দ্বা স্থানে॥ পঞ্চবক্ত পূজাবিধি করিব কীর্ত্তন। ভোগ মোক্ষপ্রদ ইহা ওহে ঋষিগণ॥ ওঁ নমে। বিষ্ণবে আদি করি উচ্চারণ। ভূচায এ শব্দ পরে করিবে পঠন॥ সর্কাধার পদ মুখে বলি তার পরে। মূর্ত্তিয়ে স্বাহা এ শব্দ উচ্চারণ করে॥ প্রথমতঃ সদ্যোজাতে করিবে পুজন। \* তার পর শুন শুন ওহে ঋষিগণ॥ অন্টকলা পূজা পরে করিবে সুজন। যেরূপ বিধান আছে শাস্ত্রের নিয়ম॥ সিদ্ধি ঋদ্ধি ধতি লক্ষী মেধা কান্তি ছয়। স্বধা স্থিতি এই আট অফকলা হয়॥ ইহাদের যথাবিধি করিয়া পুজন। বামদেবে তার পর করিবে অর্চন। ত্রয়োদশ কলা পরে পুজিতে হইবে। তাহাদের নাম শুন বলিতেছি তবে ॥ বলাক্ষতা রাত্রি পাল্যা কান্তি তৃষ্ণা মতি। ক্রিয়া কামা রদ্ধি রূপা মোহনী ও রতি 🛭 এই সবে যথাবিধি করিয়া পূজন । পুন অন্দ্র স্ফকলা করিবে অর্চন॥ উমা মোহা ক্ষুধা কলা নিদ্রা মৃত্যু মায়া। এই সপ্ত শেষ আর জানিবে অভয়া॥ এই অন্ত কলাপুজা করিয়া যতনে। অবশিষ্ট কলাপূজা করিবে বিধানে॥ অঙ্গনা মরীচি ছুই কলারে পুজিয়ে। পুজিবেক ত্বালিনীরে একান্ত অন্তরে॥ এইরপে যথাবিধি করিবে পূজন। পাতা অর্ঘ্য আদি দিয়া যেমত নিয়ম॥ পঞ্চবন্ধু পূজা যেই করয়ে যতনে। অসাধ্য তাহার নাহি এ তিন ভূবনে॥ ইহকালে ভোগ সুখ লভে সেই জন। অন্তকালে মোক পায় শান্ত্রের বচন॥ অন্তর্ম শিবপূজা আছয়ে বিধান। এলিতেছি সেই কথা সবাকার স্থান ॥ मद्य अखिलाय भून ठाहार उरे हर्ग । भिरतत आरन्भ हेरा कानिरत निष्ठत ॥ ় **স্বাহান্ত মন্ত্রেতে** আগে করি আচমন। জ্ঞানেন্দ্রিয় সাধুবর করিবে স্পর্শন॥

<sup>•</sup> ७ नत्मा विकाद व्यामिज्जात मर्काशात्र मूर्जात नारा। ५३ मट्ड भूजा नित्र ।

মাতৃকাদিন্যাস' করি পরে মতিমান। করিবেক তার পর স্ধ্য উপস্থান। তার পর স্ব্যাদন্তে স্ব্রোরে পূজিবে। ভদ্রাচার বিভূতিরে পূজিতে ইইবে॥ তার পর আদিত্যেরে করিবে পূজন। চন্দ্র কুষ্ণ বুধ গুরু করিবে অর্চন। ওক শনি রাছ কেতু পূজি ভক্তিভরে। পুনরায় ন্যাস যত করিবে সা্দরে॥ তার পর অর্ঘ্যপাত্র করিয়া গ্রহণ। সেই জলে পুজাদ্রব্য করিবে প্রেশিকণ্॥ নন্দি মহাকাল গঙ্গা লক্ষা সরস্বতী। যমুনা ও ব্রহ্মা সাত আর গণ্পুতি॥ षात (पर्म এই আটে করিবে পূজন। মগ্রন্থলে ধর্মাধির করিবে অজিন॥ পূর্ব্বাদি ক্রেমেতে পূজা করিতে হইবে।শিব-অগে গণেশেরে সাদরে পৃজ্ঞিবে॥ তার পর আবাহন দ্বিতীয় স্থাপন। তৃতীয় স্ত্রিধাপন পরে বিব্যোধন॥ সুকলীকরণ আদি মুদ্রা প্রদর্শিয়ে। স্নপন করিবে পরে একান্ত ছাদয়ে॥ নির্দাঞ্জন করি পরে বিহিত বিধানে। বস্ত্র অলক্ষার দিবে অতীব যতনে॥ নানাবিধ উপচারে করিবে পুজন। যথাশক্তি জপ পরে করিবে সাধন॥ স্তুতি নতি করি পরে ভকতির ভরে। জপ সমর্পিতে হবে একান্ত অন্তরে॥ প্রার্থনা করিবে পরে যেমত বিধান। তুন ওন ঋষিগণ কহি দবা হান॥ " নিবেদন ওহে দেব তোমার গোচারে। স্থক্ত তুক্ত মম নাশহ অচিরে। শিবস্বরূপতা পাই এই নিবেদন। শিব দাতা শিব ভোক্তা নহে অন্যতম। এই যে জগত বিশ্ব হয় দরশন। শিবময় ইয় সব ওছে ভগবন॥ সেই বিশ্বময় আমি নাহিক সংশয়। কুপা কর কুপাম্য হইয়া সদয়॥ ষাহা যাহা ওহে দেব করেছি সাধন। পরেতে করিব যাহা ওহে ভগবন। সেই সব আপনাতে করিত্ব অর্পণ। দয়া কর দয়াময় অগানে এখন॥ পৃথী জল বহ্নি শব্দ উপস্থ পবন। পাণি পাদ ৮ কু শ্রোত্র আর যে গগন॥ রস গন্ধ জিহবা দ্রাণ ত্বক্মন বুদি। স্পর্শ রূপ বাক পায়ু আর যে প্রকৃতি॥ এই সব যাহা কিছু আছে বিদ্যমান। তোমার স্বরূপ সব ওছে ভগবান। তোমার অরপ যেই করে বিবেচনা। তব তুল্য হয় সেই পূর্রে কামনা।" এইরপেতে প্রার্থনা করিতে হইবে। ভূতশুদ্দি বলিতেছি শুন পরে मবে। সংক্ষেপেতে ভুতশুদ্ধি করিব কীর্ত্তন। ইথে শুদ্দ হয় দেহ শাস্ত্রের নিয়ম। সাক্ষাৎ শিবের তুল্য ইথে হ(ও)য়া যায়।নাহিক সন্দেহ ইথে কহিনু সবায়॥ পৃথিব্যাদি তত্ত্ব টিস্তি হৃদয়-কমলে। পাপ পুরুষেরে দশ্ধ করিবেক পরে॥ তথার বিরাজ করে যেই শশধর। তাহা হতে করে যেই অমৃতনিকর তাহা দারা জীবাত্মাকে স্থন্থির করিয়ে। ভাবিবেক নিজদেহে দৃঢ় চিত ইংয়ে। ইচ্ছাশক্তি জ্ঞানশক্তি ক্রিয়াশক্তি তিনে। আত্মন্থ করিবে জ্ঞান জানিবেক মনে॥ এইরূপ জ্ঞান করি সাধু মহামতি। নিবতুল্য আপনাকে ভাবিবে সমতি॥ এইরপে ভুতগুদি করি যেই জন। শিবের অর্চনা করে নহে শ্লমিগ্র ॥ শিবতুল্য হন তিনি নাহিক সংশ্য॥ শাদের বছন থিপ। এই লাহি যে॥ এইরপে মৃত্যুঞ্জের পূ'জ বেই জন। চতুর্বর্গ পায় সেই স। । বহন। প্রথমতঃ বীজোদ্ধার করিয়া যতনে। गुज् র মন্ত্রেবে গরে সাধিবে 🕫 🖂 ॥ একশনে মেই মন্ত্র দেপে মেই জনা পাণ্ডির হয় গার শাকেন বচন # মৃত্যু জঘ করে সেই জানিবে দন্তরে। মৃত্যুথ্য তার দেহে সদা বাস করে॥ শর্ড সংখ্য জপ যদি করে কোন জন। বেদপার্চ ফল সেই করে উপার্জ্জন। দর্বতীর্থ পর্যাটনে যেই ফন হয়। সেই ফন হয় তার নাহিক সংশয়॥ তিন সন্ধা পর্টোতর শত জপ করে। মৃত্যু জ্যা হয সেই জানিবে অপত্রে॥ জপকালে যেইরূপ করিবেক গান। বলিতেচি সেই কণা নবা বিভাগীন।। শ্বেতপদ্ম শোভিতেছে দেবতাৰ করে। মভ্য ও বর আছে অতি শোভা করে॥ রহিষাতে বাম অজে সহাণ সক্লা থকিবা শোভা হয তাছে আহা মরি মরি॥ দেবার দক্ষিণ কবে রু রু শোভা পাল। বামকরে শেতপদ্ম মরি কিবা <mark>ভার॥</mark> এইরপ ধ্যান করি যেই নাগ ছন। তিন বন্ধা। মঞ্জ জপ করে অনুক্ষণ।। একমাস এইকপ যেই জন করে। এবা মৃত্যু নাহি আদে তাহার গোচরে। ব্যাধি নাহি তারে কভ্ করে। আক্রণ। শত্রনাশ হয় তার শান্তের বচন।। পরাশান্তি লভে দেই লাহক সংশ্ব। শাহের বচন মিথা। কভু নাহি হয়। তার পার যথাবিণি করিয়। পুক্র। তাস খাদি যথায়থ করিবে সাধন। আত্মারে তাহার পর কবিষ**্পিজন জোগতিও কণ**ানে মনে করিবে চি**ন্তনা** সঙ্গপুজা স্তুতিপাঠ পরেতে করিবে। তাতে তারার মত কামনা পুরিবে॥ এইরপে পুজ। করে যেই সা বুজন। ভোগমোক পায সেই শাস্ত্রের বচন॥ তীর্থস্থানে এই পূজা যদি কেই করে। দ্বিগুণ লভ্যে ফল জানিবে অভৱে॥ অধিক বলিব কিবা ৬৫ মনিগ্ৰ। তীৰ্ণেতে দ্বিগুৰ্ণ ফল হয় উপাৰ্জ্জন।। গয়া ধামে পিওদানে যেই ফল হয়। শিবপূজা কৈলে তাই। লভথে নিশ্চয়॥ পিগুদানে তিন কুল উদ্ধারে থেমন। সেইরপ ফ দেয় শিবের পূজন॥ শিবের সমান নাহি এ তিন ভুবনে। সদা ভাব তার পদ ঐকান্তিক মনে॥

### ষষ্ঠযাইতিম অধ্যায়।

#### পিওদানমাহাত্য।

#### সন্থকুমার উবাচ।

গ্যায়াং পিওদানেন যং ফলং লভতে নরঃ। ভংফলঞ্চ ন কুব্রাপি সতাং সতাং ন সংশয়ঃ॥

এত শুনি ঋষিগণ জিজ্ঞাদে তখন। শুন শুন নিবেদন ওছে মহাত্মন॥ গয়ার মাহাত্ম্য কথা শুনিতে বাসনা। বর্ণন করিয়া তাহা পূরাও কামনা॥ এত শুনি বিধিমুত কছেন তখন। শুন শুন খাষিগণ আমার বচন॥ গন্ধার মাহাত্ম্য কথা কে বলিতে পারে। অনন্ত অনন্তমুখে বর্ণিবারে নারে॥ গ্যাধামে পিওদান করে যেই জন। পিতৃকুল তার প্রতি মহাতুষ্ট হন॥ সপ্ত পিতৃকূল তার পরিজাণ পায়। নাহিক সন্দেহ ইথে কহিনু সবায়॥ বত কিছু পাপ আছে এ তিন সংসারে। সেই সব পাপ যদি কোন জন করে॥ তাহার মরণ অস্তে তাহার উদ্দেশে। গ্রাশ্রাদ্ধ করে কেই বিফুপদ পাশে॥ পাতক তাহার যত হয় বিমোচন। বিমানে চড়িয়া থায় বৈকুণ্ঠভুবন॥ ইতিহাস বলি এক শুনহ সকলে। বুঝিতে পারিবে সব সে কথা শুনিলে॥ বিশালা নগরে এক ছিল মহীপাল। দয়াবান্ ক্মাশীল নামেতে বিশাল॥ সন্তান সন্ততি তাঁর কিছু নাহি হয়। এই হেতু নরপতি সদা তুঃখে রয়॥ সংসারে নাহিক সুথ পুত্তের বিহনে। এত তাবি রহে নৃপ বিষাদিত মনে॥ মনে মনে নরপতি করেন চিন্তন। পুত্রধনে প্রবঞ্চিত যেই কোন জন॥ माना जिजादात नाहि পরলোকে হয়। नताथम महे जन नाहिक मः ग्रा॥ এইরপ মনে মনে করিয়া চিন্তন। বিচক্ষণ বিপ্রগণে করি আমন্ত্রণ॥ মনের বাসনা সব নিবেদন করে। কহিলেন তার পর সবিনয় স্থরে॥ শুন শুন বিপ্রগণ করি নিবেদন। যজ্ঞ বাঞ্ছা করি আমি পুড্রের কারণ॥ কিরপ করিব যজ্ঞ দেহ অনুমতি। করিব সেরপ কা**ন্ধ** করিয়া ভকতি॥ এত শুনি যিউভাবে কহে বিপ্রগণ। শুন শুন হিতবাকা শুনহ রাজন ॥ পুত্রবাঞ্ছা যদি কর আপন অন্তরে। অবিলঙ্গে গয়াধামে যাহ তুরা করে॥ দেই স্থানে পিতৃপ্রাদ্ধ করিয়া বিধানে। অন্নদান কর তুমি মৃত পিতৃগণে॥

তবোপরি যদি প্রীত হন পিতৃগণ। সম্ভান জন্মিবে তব অতীব উত্তম॥ এতেক বচন শুনি বাদাণ-বদনে। মহা আনন্দিত রাজা ছইলেন মনে॥ অবিলম্বে গয়া যাত্রা করেন তথনি। উপনীত হন তথা আশু নূপমণি॥ শ্রদ্ধা ভক্তি সংকারে গিয়া সেই স্থানে। যথাবিধি পিওদান করে পিতৃগণে। মঘায়ুক্তা ত্রেরাদনী দিন দেই হয়। পিতৃগণে পিগু দেয় নৃপ মহোদর ॥ হেনকালে অনুমান করে নৃপ্মণি। তিনটা পুরুষ যেন সন্মুখে তখনি॥ উপনাত হন আদি দেখিতে দেখিতে। ভাহা দেখি সবিষয় নরপতি চিতে॥ তিন বর্ণ তিন জন করেন ধারণ। খেত পাত রুফ এই ওচে ঋষিগ্ৰ। তাঁহাদিগে দরশন করি নূপবর। কৌ ভূহলপরবশ হইগা সত্র॥ জিজ্জাসা করেন নূপ বিনয় বচনে। আপনারা কেবা কছ আমার মদনে॥ कि भानरम (इथा) मटव दिकरल जाग्रम्म। मरमत राममा किया कत्र वर्गमा। রাজার এতেক বাক্য শুনিয়া প্রবণে। খেতবর্ণ বাজি কহে মধুর বচনে॥ শুন শুন ৭২০ ্ণবে আমার বচন। তোমার জনক আমি নহি অল জন 🛭 মহা খ্যাতি ছিল মম অবনা ভিতরে। বংশের মধ্যাদা ছিল খ্যাত চরাচরে॥ নেই যেই কাক আমি করেছি সাধন। তাহাতে স্বখ্যাতি লামি করেছি জজন। চাা 🗷 সানি পার জনক আমার। একছ গা করি দোঁহে শুন ওণাধার॥ সেই হেতু ৬ই জনে মহাপাপা হই। কহিলাম পূর্বকথা বং**দ তব** সাঁই॥ মম পিভামহ ছিল খ্যাত অধীধর। কুংদিত আচারে তিনি ছিলেন ৩২পর ॥ বহু ঋষি পুদ জন্মে করেন হনন। এহেতু - লিন হন জানিবে রাজন্। কাজে কাজে তিন জনেনরক ভি : রে। নিমগ্ন হইনু মোরা কহিনু ভোমারে। বহুদিন ছিন্তু যোর। নবক ভিতর। উদ্ধার করিলে তুমি এতে গুণধর॥ তোমাঃ হতে তিন জনে লতিনু উদ্ধার। সেই হেতু আসিয়াছি নিকটে তোমার॥ গ্যাধামে পিও তুমি করিলে অর্পণ। ইহার মাহাত্মা বল কি করি বর্ণন 🛊 हेरांत अमार्प (পতে পाति इंन्स्रोमन। अधिक विनव किया छन्ह नम्बन। তর্পণ করেছ তুমি এই তীর্থপামে। ইহার মাহাত্ম্য শুন কহি তব স্থানে 🛭 পিড়লোকে মোরা সবে করিব গ্ন । রহিব প্রম সুখে তথা সককে।। মম পিতা পিতামহ আছেন দাঁড়িরে। কর্মফলে ছিল সবে বিষম নির্রে। ুকর্মফলে দুরগতি লভেছে বিস্তর। সে যাতনা কি বনিব ওছে বংশধর। বুদ্ধরের পুত্র বলি সকলে আমারে। অবজ্ঞা করিত বংস নরক ভিতরে॥ দত্ত পিও পেয়ে এবে তিন জন। উদ্ধার হইনু মোরা তবহ নদন। তি গোচন বৎস হলো এতদিনে। প্রকৃত তনয় তুমি জানিলাম মনে।

ভোমা হতে হৈল এবে মহা উপকার। এই হেতু আদিয়াছি নিকটে তোমার। তোমার বদনপদ্ম করিব দর্শন। মনে মনে সবে মোরা করি আকি-গুন। "আশীর্বাদ করি তোমা একান্ত অন্তরে। এখন যাইব মোরা স্থাখের আগারে॥ তুমি যেই আদ্ধ আর করিলে তর্পণ। তার ফল ভোগ এবে করি তিন জন ॥ ধন্য ধন্য তুমি পুত্র এ তিন ভুবনে । আসিয়াছ পরাতীর্থে এই সে কারণে॥ গয়াতীর্থে আগমন অত্ত'ব দুল্লভ। ইথে পিও দান নহে কখন স্থলত।। ভাগাবশে পিণ্ড দান যতে এই খানে। সৌভাগ্য বশেতে নর আমে এই ধামে॥ এই স্থানে তুমি বংস করি আগমন। করিয়াছ পিওদান আর যে তর্পা। তোমার পুণেরে দামা কে বনিতে পারে। বয় বয় তৃমি বংস এতিন সংসারে॥ অহরহ গদাপানি দেব নারায়ণ। এই স্থানে বিরা**জি**ত সদা সর্বকণ। সেই হেতৃ গ্রাতীর্ব আখ্যান ইহার। কহিলাম তব পাশে ওছে खनाशात ॥ সেই নারায়ণে ভূমি নদ। সর্বেদ। ভক্তি ভয়ে তুনয়নে করিছ দর্শন॥ অতএব ধনা তুমি জগত সংসারে। তোমার প্রণার সীমা কেবা দিতে পারে। এখন আমার বাকা কর্ম এবণ। একমনে গ্রাণরে কর্ম স্তবন।। তাঁহার প্রদাদে হবে পূর্ণ মনোরথ। অবশ্য লভিবে পুল্ল অতি মহা-রথ॥ এত বলি পিতৃগণ হন তিরোধান। পিতৃলোকে চলি যান চড়িয়া বিমান॥ পিতার মুখেতে শুনি এতেক বচন। সানন্দে প্রিভ হয় দুগতির মন॥ একমনে কর্যোড়ে ক্রিতার পর। গদাধনে ক্রেন্ডণ কোণা হে ঈশ্র॥ বিরুধগণের স্তত্য যেই মহোদয়। ক্ষমাশীল ছুঃখহারী সদা ওভময়। ক্ষভিত জনের দুঃখ যেই জন হরে। অন্তরান্তকারী যিনি এ ভবসংসারে॥ যাহার প্রিত্র নাম করিলে করণ। সকল অশুভ দূর হয় সেইফণ। ভক্তিতরে তাঁরে আমি প্রণিপাত করি। কোথায় হে দয়। ব্য বিপতি কাণ্ডারী॥ পুরাণ পুরুষ ষিনি অতীব বিমল। সকল লোকের গতি খ্যাত চরাচর ।। স্বর্গ মন্ত্য পাতা-, লেতে বিক্রম যাহার। সদত প্রকাশ পায় এতিন সংসারে॥ ধরণী উদ্ধার - করে যেই মহাজ্মন। সদা জদে ভাবি আমি ভাঁহার চবণা। বিশুদ্ধ স্বভাব যিনি জগত মাঝারে। বিবিধ বিভবে যুক্ত হইয়া বিহরে॥ লক্ষী সমন্ত্রিত যিনি সদা সর্ককণ। নির্মাল নিজাপ পুথীপতি বিচক্ষণ।। সকলে আহার স্তব করে নিরন্তর। ভাঁহারে প্রণাম আমি তিনি গদাধর॥ ঘাঁহারে প্রণাম কৈলে নিত্য স্থব্য হয়। ভক্তগণে যেই প্রভু সদত সদয়॥ বাঁর পাদপদ্ম मना अत्रान (भरव। भन्छ अर्फन करत अञ्चरत्रतां मरव॥ कित्रृत अव्यन খন বাদি বিভূবণ। নিয়ত বাঁহার **অন্দে হতেছে শোভন॥ - বেই** 

एवर मना थारक मागरत भंशान। गंशांरकरख मारे एवर मना विनामान॥ চক্রপাণি গদাধর দয়ার আকর। ভাঁহার চরণে নতি করি নিরস্তর॥ তাঁহারে প্রণাম যদি করে ভক্তিভরে। মহাত্রখ পায় সেই থাকিয়া সংসারে। সুখের ইয়তা তার কভু নাহি হয়। অতএব কোথা প্রভু ওহে দয়াময় 🛭 সত্যযুগে শুল্রবর্ণ ধরে যেই জন। ত্রেতায় অরুণ বর্ণ করেন ধারণ 🖁 দ্বাপরেতে পীতবর্ণ রুঞ্চ কলিকালে। সেই দেবে বন্দি সদা একান্ত অন্তরে 🖁 চতুর্থ রূপে যিনি করেন সৃজন। বিফ্রুপে যিনি বিশ্ব করেন পালন॥ রুদ্রূপে যেই জন করেন সংহার। সেই দেব গদাধর সার হতে সার 🛭 সত্ত্বরজ তম এই তিন গুণ হতে। বিশ্বের উত্তব হয় বিদিত জগতে॥ গদাধর দেই তিন করেন ধারণ। তাহা হতে গুণত্র হয় উৎপাদনু॥ প্রত্যক্ষ নেহারি এই সংসার-সাগব। ভাসিতেছি সদা ইথে ওছে গদাধর॥ সংযোগ বিয়োগ রূপ নক্র ভয়ঙ্কর। সদত ঘেরিয়া আছে সংসার-সাগর॥ বিপন্ন হমেরি ইথে ওরে ভগবন্। কাণ্ডারী ইহাতে প্রভূ হও হে একণ। উদ্ধার করহ गোরে রুপাদৃষ্টি করে। পোত্রম হও প্রভু সাগর-<mark>মাঝারে।।</mark> তিন মূর্ত্তি ধর তুমি ওহে ভগবন্। নিজশক্তি বলে বিশ্ব করেছ সুজন। প্রণিম ভোমার পদে ওচে দয়াময়। করণা কটাম্ব কর হইয়া সদয়। যজ্ঞমূর্ত্তি ধরি ভূমি বিশের মাঝারে। দেবগণে পালিতেছ রূপাদৃষ্টি করে॥ মনোরথ পূর্ণ প্রভু করহ আযার। তোমার চরণে নতি করি বার বার।। রাজার এতেক তব করিয়া এব। গদাধর পরিতৃষ্ট হলেন তখন।। আবিভূত হন আদি গঞ্জু বাহনে। আহা মরি কিবা রূপ না যায় বর্ণনে।। পীতবাস পরিধান অতি মনোহর। শঙা চক্র গদা পলে শোভে কলেবর॥ রাজার নিকটে আসি দিয়া দরশন। গর্ডার স্বরেতে প্রভু ক**হেন তখন**॥ তব স্তুতি শুনি ভূষ্টি লভিনু অন্তরে। তব সম ভক্ত নাহি হেরি চরাচরে॥ সস্তুট, ছইল তাহে আমার হৃদয়। আসিয়াছি সেই হেতু ওহে মহোদয়।। বরদান হেতৃ এবে শুম আগমন। । কিবা বাঞ্চা কর হৃদে কহ নৃপোত্র ।। প্রভুর এতেক বাক্য শুনিয়া প্রবণে। কর্যোড়ে কছে রাজ। বিনীত-বদনে॥ যদি তুট হয়ে থাক ওতে দয়ায়য়। মনের বাসনা মম পূর্ণ যেন হয়।। তব ভক্ত পুল্র এক যেন লাভ করি। এই ভিন্দা দেহ প্রভু ভবের কাণ্ডারী॥ রাজার এতেক বাক্য করিয়া এবণ। মধুর বচনে কহে দেব জনার্দন।। শুন শুন নৃপবর বচন 'আমার। অতি বিচক্ষণ তুমি শুণের আধার।। গয়াতীর্থ মহাকেত্র অবুনীমাঝারে। আদিয়াছ তুনি দুপ ভক্তির ভরে।।

পিগুলান এই স্থানে করেছ অর্প। যথারিখি পিতৃগণে করেছ তর্পণ॥ তাহাতেই তব বাঞ্জা হয়েছে দকল। অচিরে পভিবে তুঁমি বিজ্ঞ পুল্রবর॥ পিতৃগণ মহাপ্রীত তোমার উপরে। সেই হেতু পুত্র লাভ হইবে অচিরে॥ আর কি মনেতে কাঞ্জা বলহ রাজন। যা মাগিবে পিব তাহা আমার বচন॥ এতেক বচন শুনি কহে নরপতি। কি বলিব ওহে প্রভু অগতির গতি।। খ্যানে নাহি যাঁরে পায় যত যোগীজন। যাঁহার স্বরূপ চিন্তা করে সুরগণ॥ সেই চিন্তামণি ধন সন্মুখে আমার। ইহাপেক। শ্রেষ্ঠ বল কিবা আছে আর॥ আর কোন বরে মম নাহি প্রয়োজন। তোমার চরণে যেন সদা থাকে মন।। তব পদে থাকে যেন নিয়ত ভকতি। অন্তকলে পাই যেন প্রমা স্কুগতি॥ আতে যেন স্থান পাই তোমার চরণে। এই ভিক্ষা ওছে প্রভু তোমার সদনে॥ এত বলি নরপতি করেন প্রণাম। তথাস্ত বলিয়া হরি ইন অন্তর্ধান।। षाधिक বলিব কিবা ওহে ঋষিগণ। সেই ফলে পুল লাভ করিল রাজন।! নরপতি দান ধ্যান করিল বিস্তর। স্থাপন করিল শিবলিঞ্চ বত্তর॥ ষেব দেবী মূর্ত্তি কভ প্রতিষ্ঠা করিল। রাজার যশেতে দিক দিগন্ত পুরিল। শিবলিক শংস্থাপন ফলে নরপতি। লভিলেন অন্তকালে প্রমা সুগতি।। পুরাণের সার হয় এশিবপুরাণ। শুনিবেন সাধর্ণ হযে ভিজ্ঞান।।

# পঞ্চবষ্টিত অধাায়।

শিবলিক স্থাগন, স্থপন, পুজ্জান ক্রিণিব ফল ও শিবের সন্নাট্টবিধান

লিক্ষণ স্থাপনে কিঞ্চ পুষ্পাদানে চ কিং ফলং।
অভ্যক্তে চৈব কিং প্রোক্তং ক্ষীরত্বানেন কিং ফলং।
উদকত্বপনে কিঞ্চ মুখবাদ্যেন কিং ফলং।
এতচ্চ তত্ত্তো ক্রহি প্রশ্নং বৃদ্ধিমতাম্বর॥

খনিদের অভিলাষ করিয়া শ্রবণ। পুনশ্চ বলিতে থাকে বিধির নন্দন।।
বহুসংখ্য স্বর্ণদানে যেই ফল হয়। শিবলিক স্থাপনেতে কে ফল নিশ্চয়।।
কিবা নারী কিবা নর যেই কোন জন। কিবা যতি কিবা ক্লীব ওছে ঋষিগণ॥
শিবলিক যেই জন করয়ে স্থাপন। পুনর্জ্জন্ম নাহি হয় তাহার কখন।।
ভূমিদানে স্বর্ণদানে যেই ফল হয়। গন্ধ দিলোঁ মহেশ্বরে সে ফল নিশ্চম।।

নমকার করে যেই দেব মহেশবে । সর্বে কাম সিদ্ধ তার জানিবে অন্তরে।। য়ত দারা শহেশ্রে স্থান করাইলে। রুদ্রলোকে যায় নেই শিবের গোচরে ॥ চৌষট্রী হাজার থেনু করিলে প্রদান। যেই ফল লাভ করে সেই পুণ্যবান।! ক্ষার দ্বারা মহেশবে স্থান ক্য়েইলে। সেই ফল লভে সেই অতি কুতৃহলে॥ পক্ষে পক্ষে একবার করিলে ভোজন ৷ কিন্দা মাদে তিনবার করিলে অশন ॥ যেই ফল লাভ করে সেই সাধুমতি। উদকম্বপনে তাহা জানিবে সুমতি॥ শত সহত্রেক ধেনু করিলে অর্প।। যেই ফল লাভ করে সেই সাধুজন।। পুপেদানে সেই ফল হইবে নিশ্চয়। শাস্ত্রের বচন মিধ্যা কভু নাহি হয়। ধুস্তুর কুন্তম বক পুণে<mark>।র আধার।।</mark> করৰীর অর্ক পদ্ম বিল্পপত্র আর। এই সব পুষ্প শিবে করিবে অর্প। অনুত্রম ফল ইথে ওছে ঋষিগণ। শ্রাবণে উৎপল দিবে পদ্ম ভাদ্রমাসে। আশ্বিনেতে অপামার্গ দিবে ভক্তি-বশে।। সহস্র কন্নবী হতে উৎপল প্রধান। সহস্র উৎপল এক অর্কের সমানা। সহস্র পদ্রাণেতে যেই ফল হয়। একমাত্র বকে তাহা জানিবে নিশ্চয়। বক হতে শ্রেষ্ঠ পুষ্প আর কিচু নাই। বলিয়াছে নিজে ইহা মহেশ গোঁসাই॥ সহস্র জাতীর চেয়ে চম্পক প্রবর। ধৃস্কুর চম্পক **হতে শ্রেষ্ঠ বহুতর।**। সিম্নুপুপ শ্রেষ্ঠ হয় গুল্ডুর ইইতে। পুরাগ তাহার শ্রেষ্ঠ জানিবেক চিতে 🛭 সহস্র পুরাগ হতে শ্রেষ্ঠ কর্ণিকার। বহুতী তাহার চেয়ে জানিবেক সার।। সর্বপুষ্প হতে শ্রেষ্ঠ বিল্পত্র হয়। ইহাতে পরম তুট শঙ্কর নিশ্যা। ঘেই সব পুষ্প আমি করিনু কীর্ত্তন। সভাবে ইছার পত্র করিবে অর্পণ।। এই সব পুষ্প পত্র করিলে প্রদান। তুর্গতি তাহারে ছাড়ি করয়ে প্রস্থান। শ্রদ্ধাভ কিসমন্ত্রিত হযে যেই জন। শিবের উদ্দেশে দীপ করয়ে অর্পণ।। অশ্বমেধ হতে ফল দ্বিগুণ সে পায়। পূপদানে রুক্তলোকে সেই সাধু যায়॥ এত শুনি ব্যাস কহে ওহে মতিমান্। কিনে তুই হন শিব কহ ভক্তিমান॥ সনত কুমার কহে শুনহ বচন। নন্দীমুখে পূর্বে বাহা করেছি এবণ।! বলেছিল মহেশ্বর পার্ব্বতী-সকাশে। যে জন আমার শিক্ষ স্থাপে ভক্তিবশে॥ তার গৃহ मना तमा देवनाम ममान। তুনি আমি দোঁতে তথা করি অধিষ্ঠান॥ আমারে উদ্দেশ করি যেই কোন জন। ধেনু দান করে কিম্বা হিরণ্য অর্পণ।। কামছ্বা পৃথী দান করি সেই জনে। কহিলাম সত্য প্রিয়ে তোমার সদনে।। इरामान अब मान अथवा क्राज़ । आगात छेटम्हरा एवर एवर कान नत ॥ রবযুক্ত রথে সেই কৈশাসেতে যায়। তাহার বিনাশ নাই কহিনু তোমায়।। नानादिश उपदात पित्रा ভिक्जिटत । त्यात यह शृत्क शीजवीमामहकारत ॥

जन्मारक रमहे जम करात्र भनन। जाहारतु अकेना करत जनवानिभन्।। অগ্নিটোম যজ্ঞ দ্বারা আমারে পুজিলে। যক্তরু হয় সেই নিজ বীর্যাবলে॥ গন্ধ অনুলেপনাদি মাল্য ও অপন। ইত্যাদিতে মম পূজা করিলে সাধন॥ মন পার্শ্বর হয় সেই সধুমতি। কহিলান তব পাশে শুন গো পার্বতী॥ वर्ग (जोपा निया निष्य पृष्ठ (यह जन। कृप्तानारक यात्र मह यागात वहन॥ গাণপত্য পায় দেই নাহিক সংশয়। আমার বচন মিথ্যা কভু নাহি হয়। অভাঞ্জনে পঞ্চলত ফল লাভ হয়। স্পানে দ্বিগুণ তার ক্রানিবে নিশ্চয়। গানোদক পঞ্চাব্য কপুর অপিলে। চারিগুণ ফল হ্য জানিবে সন্তরে। ক্ষীরস্থানে পঞ্চল হাভ হয়। কপিনার ভুগ্ন দিলে দ্বিগুণ নিশ্বয়॥ শাল্য দিয়া গাঁতবাদ্যে করিলে পূজন। কক্রলোকে যায় সেই আমার বচন॥ গাঁণপত্যে তারে আমি নিয়োজিত কবি।বলিলাম তব পাশে শুন গো স্থন্দরী অশুক অর্পিলে মোরে যেই ফল হয। ৮ দনে ছিগুণ তার জানিবে নি "চ্য।। ওগ্ওলু ও রুফ সার য়ত্যুক্ত করি। সামারে যে জন দেয় শুনগো সুন্দরী। नकी मम इस मिटे श्रामात नहन। ज्यामात प्रक्रिनामाई कतितन प्रक्रंग॥ ক্ষন্দ সম হয় সেই জানিবে সম্ভৱে। কৈনাসেতে থাকে সেই আমার গোচায়ে। ঘতরূপ চরু আছে শাস্ত্রের প্রমাণ। যাবকায় সর্ক্তেট কহি তব স্থান।। যাবকার মমোদেশে করিনে অর্পণ। ভার এতি পরিভৃষ্ট ঘত পিড়গণ॥ ম্বতে অভিষেক মোরে যেই জন কবে। যমভ্য নাহি থাকে তাহার স্মন্তরে॥ গাণপত্য লাভ করে দেই সাধুজন। আনার উদ্দেশে দীপ করিলে মর্পণ।। क्रफ नम इर्घ त्मई व्रव ब्यारताइर्। विष्ठत् करत् मन ब्यानिक भरत्।। অইমী বা চতুর্দেশী এই ছুই দিনে। যে জন আমারে প্রজেটু একা স্তিকমনে॥ অনিয়ম্যত মদি হয় সেই জন। কিন্তা যদি হয় অলচ্যাপ্রায়ণ।। ব্যোমচারী হযে সেই বিহঙ্গ স্থান। সর্বভূত স্থাদৃত হয় সর্বস্থান॥ ষর্গধানে যায় সেই ত্যক্তি কলেবর। প্রচ্ছন্দে বস্তি করে সেই সাধু নর।। মম নাম,শুনি যদি ভক্তি করে মনে। গাণ্ণপত্য দিই তারে ওগো বরাননে॥ মম অভিপ্ৰেত স্থান যথ। যথ। হয়। সেই জন তথা থাকে জানিবে নিশ্চয়॥ মুত্যুত্য নাহি থাকে তাহার কখন। আরো এক কথা শ্রিয়ে করহ শ্রবণ॥ বাসনা ত্যঙ্গিয়ে যেই একভক্ত হয়ে। কার্মনে মোরে পুজে একান্ত-হৃদয়ে॥ প্রলয় অবধি দেই স্বর্গপুরে রয়। আমার বচন ইছা জানিবে নিশ্চয়॥ সতাসর জি তেক্রিয় হয়ে যেই জন। একমনে মোরে করে নিতা দরশন। কোটিশত যুগে তার নাছিক সংশয়। নির্বাণ মুকতি পায় জানিবে নিশ্চয়॥

😎ন শুন মম বাক্য কমলপোচনে। লিক্ষোপরি মম পূজা করিলে ঘতনে॥ সর্বদেব পূজা তাতে হয় সুসাধন। জরামৃত্যুশ্র হয় সেই সাধুজন॥ মাল্য পন্ধ ধূপ বস্ত্র ইত্যাদি অপিয়ে। যে জন আমারে পূজে একান্ত স্বদয়ে॥ গাণপত্য তারে আমি করি সমর্পণ। আমার বচন মিথ্যা নহে কদাচন। একরাত্রি উপবাস করিয়া বিধানে। যেই জন মোরে পুরে অতীব যতনে॥ পুগুরীক ফল পায় দেই মহামতি। স্বর্গেতে বিপুল ফল লভয়ে পার্কতি॥ পবিত্র হইয়া যেই ভক্তি সহকারে। অপন করায়ে পরে পুজয়ে আমাবে॥ তিন লোক অতি ক্রম করি সেই জন ' রুদ্র লোকে মনস্থাই করয়ে গ্রমন।। সাংখ্যযোগবিশারদ মম ভক্তগণ। মদীয় লোকেতে হুখে করয়ে গমন॥ দেবগণ মোরে নাহি দেখিবারে পায়।যোগীগণ ধ্যানে দেখে কহিনু তোমায় চরাচর সর্বজুত বিনাশিত হয়। স্বামার ভক্তের কিন্তু না**হি কভু ক্**য়ু <del>গা</del> গত কিছু তীয় স্বাচ্ছে ধরণী-মাঝারে। আমার পদেকে সব জানিবে অন্তরে॥ পর্ম দেবতা জ্ঞান করিখা আমারে। যে জন অর্চ্চনা করে ভক্তি সহকারে॥ দুর্তিমানু ২২ খ্যাম তাহার গোচর। প্রসন্ন সদত রহি তাহার উপর॥ সক্ষত্ত গোরে যেই করে দরশন। সামাতে ব্লাও যেই করে নিরীকণ॥ তাহার বিনাশ নাই জানিবে কখন। তাহার নিকটে থাকি সদা সর্বক্ষণ॥ মন বৃদ্ধি সমর্পণ করি মনোপরে। যেই জন চিন্তে মোরে একান্ত অন্তরে॥ ধামার প্রদাদে দেই পাপে মুক্তি পায়।কহিলাম তথ্য কথা পার্ব্বতি ভোগায় যে কোন অবস্থাগত হযে ভক্তিভরে। যদি দেবি শ্বরে কে**হ স**দত আগারে॥ রুত্রলোকে যায় সেই আমার বচন। 🖫 সমুজ-মূর্তি পদা করে দরশন 🛭 সভৃষ্ণ যোগেতে মোরে অর্জনা করিলে।গ্রবেশে সে জন দেবি আমার শরীরে॥ ধুস্তুর চম্পক বক বিল্পত্র আরে। কবরীব আদি করি বিবিধ প্রকার 🎚 এই সব পুল্পে নোরে পুজে বেই জন। গাণপত্য তারে আমি করি সমর্পণ॥ উগ্রমূর্তি মম গণ পুজে সেই জনে। কহিলাম তব পাশে কমল-আননে॥ ধূত্র সবার শ্রেষ্ঠ পুলেশর মাঝার। উহাতে পর্ম তুট অন্তর আমার॥ একমনে মম পূজা করে যেই জন। মম তুল্য হয় সেই আমার বচন॥ কুত্রাপি তাহার গতি রুদ্ধ নাহি হয়। ১,য়ৢর সমান গতি লভয়ে নিশ্চয়॥ নিত্য নিত্য মোর পূজা করে যেই জন। মনোবাঞা হয় তার সকলি পূরণ॥ কহিলাম যাহা যাহা ওগো বরাননে। যদ্যপি এ নব কেই পড়ে একমনে॥ **অবিবা অনিচছাবশে করে অধায়ন।** রুদ্রে লোকে যায় সেই আবার বচন॥ এত শুনি ব্যাস আদি যত ঋষিগণ। পুনশ্চ জিজ্ঞাসা করে ওতে মহাজ্মনু॥

পুনশ্চ বিস্তারি কহ শবার দদনে। কিলে প্রীতি মহেশ্বর লভে নিজ মনে॥ পরিমাণ কিবা তার ক**হ অতঃ**পর ॥ কিরপ কুমুম হয় অতি প্রাতিকর। ধুপের বিধান বল ওছে মহাত্মন। উপাদনা কিবা রূপ করহ কীর্তন॥ এত শুনি বিধিমূত ভ্রমধুর স্বরে। কহিলেন শুন শুন বলি স্বাকারে॥ তেকদিন মহেশ্বরী বিনীত বচনে। এই कथा जिड्डानिन गर्स्स नगरन। া । শুনি হাস্য করি দেব পঞানন। কহিলেন শুন প্রিয়ে করিব কীর্তুন॥ শ্বতম গুল্ল করিরাছ মোরে। ভক্তগণে রূপা হেতু বলিব তৌমারে॥ ে ন পীত শ্বেত কিন্তা যেই পুপে হয়। তুর্গন্ধ না হবে কিছু জানিবে নিশ্চয়। গন্ধহীন নাহি হবে কহি তব স্থানৈ॥ ै গ্ৰগন্ধ নাহি হবে ওগো বরাননে। অভঃপর দলি যাহা করহ এবণ।। এইরূপ পুষ্প মোরে করিবে অর্পণ। কল জব্যের মধ্যে স্থবর্ণ প্রধান। আমার উদ্দেশে তাহা করিলে প্রদান॥ ন্দ লোকে সেই জন অন্তকালে যায়। সংশ্বা সহিতে তথা হরিয়ে বেড়ায়॥ স্থুত বরষ তথা রহে দেই জন। আমার বচন মিখ্যা নহে কদাচন॥ দোণপুষ্প কুন্দপুষ্প বিল্পত্র আরে। ইহাতে যেই জন পূজা করয়ে আমার॥ স্বর্ণ পূজনফল সেই জন পায। শাস্তের প্রমাণ এই কহিনু তোমায়। কংশুক কুমুমে কিন্তা উজ্জন্ন ফুলে। আমারে যে জন পুজে মন কুত্হলে॥ র্ণ-পূজন ফল লভে সেই জন। কোটি বর্ধ রহে সেই কৈলাস-ভবন॥ शदर रेडल मील राइ करत मान। नितवर मना खान राइ मिडिमान्॥ ামনির যেই করে স্মার্জন। শত ওণ ফল পায় সেই মহাজন॥ .লপনে সহস্র গুণ ফল হয়। ঘূপে তার শতগুণ জানিবে নিশ্চয়॥ রণ পুল্পে মোবে করিলে পুজন। দশ ধর্ণ সম ফল লভে সেই জন॥ াঃ হ শন্মলেপ করিবে প্রদান। দ্বত সহ মিশাইবে সেই মতিয়ান॥ 🛂 জারা মম লিক্ষে স্নান করাইবে। কিবা দেব নর ইথে সুফল লভিবে॥ ধক নম াগ পিতৃ গন্ধর্ব নিকর। ইহাদের হিত হেতু জগত-ভিতর॥ তোমার নিকটে সব করিতু কীর্ত্তন। এই রূপে ষেই জন করয়ে পূজন॥ পমার লখান হয় সেই সাধুমতি। নন্দীগণ আদি সহ রুহে নিরবধি॥ এত ব ল বিধিসুত যত ঋশিগণে। কহিলেন সম্বোধিয়া মধুর-বচনে॥ অধিক বলিব কিবা তাপস-নিকর। নিত্য পাঠ করে যেই হয়ে একান্তর॥ অথবা ৭বণ করে। ভকতির ভরে। নিষ্পাপী হইয়া বায় কৈলাস-নগরে॥ অধিক ্ৰ বিবা ওহে ঋষিগণ। আর কি শুনিতে রাঞ্চা বলহ এখন॥

# সপ্তংফিতম দধার।

# মাস ও দিনবিশেষ উপবাসের ফল। মহেশ্বর উবাচ।

শৃণু দেবি যথান্তাযমুপবাসফলং শুভং। উপবাসফলং স্বৰ্গমোক্ত্ৰণপি ন সংশ্যঃ। সৰ্ব্যেতদশেষেণ প্ৰবন্ধ্যাম্যনুপূৰ্ব্বশঃ॥

পুনশ্চ জিজ্ঞাদা করে য়ত ক্ষিগণ। উপবাদবিধি কছ ওছে মহাত্মন।।\* এ > শুনি বিধিম্বত কহে ধীরে ধীরে। উপবাস বিধি ওন কহি সবাকারে॥ শাব্দতাসকাশে দেবদেব পঞ্চানন। বলেছিল যেই রূপ করিব বর্ণন।। শার্ধতীরে সম্বোব্যা দেব পশুপতি। কহিলেন শুন শুন ওগো ভগবতি॥ উপবাদে যেই ফল করিব বর্ণন। স্বর্গ থোক হয় ইথে শাস্ত্রের বচন। গ্রাস তথ্যসূত্রে যেই দিনে। **ওন** তাহা বলিতেছি তোমার সদনে॥ 'কিমা প্রতিমাতে আন্তর্গত দিবতে । তেই জন দিনপাত করে উপবাসে। 'নবান পুলবান যেই চন হয়। বিদ্যাবান হয় সেই নাহিক সংশয়॥ াৰ্মীতে একবেলা ক্রিয়া ভোজন। যে জন বিধানে করে দিবস যাপন।। ন্দের মূরতি ধরে সেই গুণাধার। ধনে ।রিপূর্ণ হয়, ধনের আগার। ।।। শীতে এক ভক্ত হযে থেই জন। বিধানে মদীঘ লিক্ষে কর্মে পূজন॥ নবান জ্ঞানবান দেই জন হয়। ক্রিভাগী হয় সেই নাহিক সংশয়॥ ার্ষাবিধি অমাবস্যা দিনে খেই জন। উপবাস করি করে দিবস যাপন।। াক বর্ষ স্বর্গলোকে দেই জন রয। ভোগ অত্তে ধনী-গৃহে জনমে নিশ্চয়॥ শাৰ্ষি মানে নামে যেই কোন জন। বিধানে ত্ৰিরাৰ এত কর্ষে সাধন ॥ বমানে চড়িয়া দেই পুরপুরে যায়। 'অপ্সরাগণের সহ আনন্দে বেড়ায়। ণামার উদ্দেশে ষেই কার্ত্তিকমাসেতে। প্রদী । প্রদান করি যখাবিধানেতে।। ।কভক্ত হয়ে দিন কব্যে যাপন। ভুগ্নাত্র পান করে করিয়া সংয্য॥ 'দ অত্তে মোর পূজা করিয়া বিধানে। ভোজন করায় যত সারু ছিজগণে ॥ কিণা শক্তিমত করে সমর্পণ। কামচারী হয় সেই শাস্ত্রের বচন। ঃখের কনিকা ভার না রহে অন্তরে। অন্তকালে যায় সেই অমর-নগরে॥ त्यादर्य महत्यक (महे सारन तय़। नाहिक मत्मर हेत्थ कानित्व निन्हम म

একভক্ত হয়ে যদি রহে পৌষমাসে। মাস অত্তে মোরে পূজে অশেষ বিশেষে। বিপ্রগণে অন্ন পান করে সমর্পণ। দক্ষিণা শকতিমত দেয় যেই জন। ছংসদারদাদিযুক্ত বিমানে চড়িয়ে। স্বৰ্গলোকে যায় সেই আনন্দ হৃদয়ে॥ দিব্য বর্ষ সহত্তেক সেই স্থানে রয়। তাহারে বন্দনা করে দেবতানিচয়॥ জাতিমর হয়ে পরে লভয়ে জনম। মহাধনে ধনবান হয় সেই জন॥ মাথমাসে মোরে চিন্তা করিয়া অতরে। যেই জন একবেলা উপবাস করে॥ স্বর্গধামে সেই জন করথে গমন। বহুবর্ষ তথা গিয়া করে বিচরণ॥ একভক্ত হয়ে যদি রহে ফাল্কনেতে। মান অতে পূজে মোরে ঐকান্তিক চিতে॥ বিপ্রগণে অমুপান করে বিভরণ। সাধ্যমতে দক্ষিণাদি করে সমর্পণ॥ বরুণ লোকেতে যায় সেই সাধুমতি। বত বর্ষ সেই পুরে করে নিবসতি। বৈশাখ মাসেতে যেই একভক্ত হয়ে। দিনপাত করে স্থে সানন্দ হৃদয়ে। মাস অন্তে যোরে পূজি যত দ্বিজগণে। ভোজন করায়ে দেব দ্বিণা বিধানে। वर्ग (लारक मिहे जन कतरा गरना (जाग वर्ष धनागुरह न ७ र जनम ॥ জ্যৈষ্ঠমানে একভক্ত হইয়া থাকিলে। অখিল পাতকে মুক্ত হয় অবহেলে॥ জ্ঞণ হত্যা জন্মহত্যা পাপনাশ হয়। মাদ আন্তে মোরে কিন্তু পুক্তিবে নিশ্চয়॥ বিপ্রগণে পরিতৃপ্ত করিবে যতনে। ভববন্ধ ২চে তার কহি চব স্থানে। একবিংশবার দেই জাতিমর হয়। শাকের প্রমাণ এই জানিবে নিশ্চয়॥ আষাতে অন্ট্রমীদিনে একভক্ত হযে। শুঙ্গাইকে মন লিন্দ সন্নিপানে গিযে॥ মম জারাধনা করে যেই সাধুজন। পুণ্যফলে থায় সেই অমর ভবন ॥ শ্রাবণেতে একাহারী হইয়া থাকিলে।মান অত্তে মোব পূজা বিধানে করিলে বিপ্রগণে অন্ন পান করিলে প্রদান। দক্ষিণা শক্তি মত যদি করে। দান।। পিতৃগণ তুট থাকে ভাষার উপরে॥ অমুত বরষ সেই রহে স্বর্গপুরে। व्यर्कार्य जिल्मारम कतिरल यायन। लक्ष वर्ष वायुरलारक तरह रमहे जन। বেদজ্ঞ আহ্মণ হয়ে জন্মে তার পর। বলিমু নিগুট কথা সবার গোচর॥ একভক্ত হয়ে যদি আশ্বিনেতে রয়। भागारख शृकत्त्र • रहा **এकाल-कारा**॥ তিন গুণ ফল পায় রাজস্য় হতে। বাইট হাজার বর্ধ র**হিবে স্বর্গেতে।** তার পর ধনীগৃহে লভয়ে জনম। মেধাবান বার্যান হয় সেই জন ॥ চাতুর্মাস্য যথাবিধি করিলে সাধন। ভক্তিভরে মম লিক্স করিলে পূজন॥ অমূত বরষ রহে অমর ভবনে। দেবগণ সহ থাকে পুলকিভ মনে॥ धौयकारम পঞ্চতপা করে যেই জন। বর্ষাকালে 'বর্ষাজ্বলে রহে সর্বক্ষণ॥ অহিংসা নাহিক রাখে আপন অন্তরে। অয়ুত বর্ব সেই থাকে স্বর্গপুরে॥

ভোগ অতে ধনীবরে লভয়ে জনম। রোগহীন দীর্ঘজীবী হয় সেই জন 🛚 দ্বাদশ বরষ যেই একাহারে রয়। আমারে পূজ্যে হয়ে একান্ত হৃদয় # সর্বব্যক্ত ফল পায় সেই সাপুজন। বিমানে চড়িয়া যায় অমর ভবন 🖁 ভোগ অত্তে মহাকুলে লভয়ে জনম। রোগহীন দীর্ঘ আয়ু হয় সেই জন ॥ ত্রান্ধণে অথবা দেবে দীপদান দিলে। সে জন আমাকে পায মন-কুভূছলে ! এত বলি মৌনভাব ধরে পঞ্চানন। পার্বেতী শুনিয়া ছাদে পুলকিত হন। এত শুনি ব্যাস আদি যত ঋনিগণ। পুনশ্চ জিজ্ঞাসা করে ওহে মহাজ্মৰা। বিপ্রগণে দান দিলে কিবা ফল হয়। সেই কথা কহ এবে হইয়া সদর ॥ বিপ্রগণে জল দান যেই জন করে ৷ যমালয়ে জল পায় জানিবে অন্তরে ॥ছত্ত-দান বিপ্রকরে করে থেই জন। সে জন অবশ্য পায় হর্ম্য মনোরম । ধেকুদান বিপ্রগণে যদি কেই করে। রূপবান্ শীলবান্ হয় পেই নরে॥ বসন দানের ফল ক্ষম নাহি হয়। লক্ষ্য ধর্গপুরে সেই জন্বয়॥ কপিলা যদ্যপি দান করে কোন এন। রোমসংখ্য বর্ষ রহে জমর-ভবন। বিপ্রকরে কলাদানে যেই ফল হয়। বলিতেছি দেই কথা শুন পরিচয়॥ বহুকাল স্বর্গধামে থাকি শেহ জন। ভোগ কতে মহাকুলে লভয়ে জনম।। শ্যাদান যদি দেয় ত্রান্ধণের করে। ষ**টি** ব্য সহপ্রেক রহে স্থরপুরে॥ উপবাসবিধি **এই** করিমু কার্ত্তন। কহিলাম দানবিধি ওহে ঋষিগণ॥ পর্বের পর্বের এই কথা যেই জন পড়ে। পুণ্যলাভ হয় তার জানিবে অন্তরে॥ তাহার ঘতেক পাপ বিনাশিত হয়। লোগ শোক ধ্রংস হয় নাহিক সংশয়॥

## অফ্টবন্ধিতম অধ্যায়।

পদীনিধি।
্ত্রীদেব্যবাচ।

যক্ষরকঃপ্রমথন শ্লপাণে ধনঞ্জয়।
প্রমথাধিপতে দেব নীলকগারিস্থান।
কপদিন্ভূতসংসর্গ ব্যাঘ্রচর্মনিবাসন।
ভগবংস্তায়দে কেন ভক্তানাং ভক্তবংসল।।

সনত কুমার কহে শুন ঋষিগণ। যেরূপ বলিয়াছিল দেব পঞ্চানন।। সমোধিয়া মুহেশেরে দেবী শুস্বতী। কহিলেন শুন শুন প্রহে পশুপতি॥ विक রক ধ্রণ্য কর তুমি ভগবম্। শ্লপাণি ধনঞ্জ অরি-নিস্দন ॥ কপদ্দী ্ত্রামথপতি ব্যাছচর্ঘাধর। ভূতগণসংসর্গেতে রছ ন্নিরন্তর॥ ভকতবৎসল তুমি ভকত উপরে। কিসে তুট হও তুমি বলহ আমারে॥ দেবীর এতেক বা নু করিয়া শ্রবণ। মধুর বচনে কহে দেব পঞ্চানন॥ চতু-क्री पिटन किया अधियोत पिटन। (यह जन ७ कियु क इर्य निष्प मटन ॥ সত্যবাদী জিলে ক্রিয় দুচত্রত হয়ে। আমার অর্চনা করে অনাহারে রয়ে॥ গন্ধ মালা অপ্নাদি মন্ত্র জপ আর। এই সব সমাপিয়া করে নমস্কার॥ ভূমিষ্ঠ হইয়া মোরে কর্ষে বন্দন। গীত বাজ করে ক্ত আর যে নর্তন। দে পূজা এছণ করি অতীব আদবে। শরন সম্রুট থাকি তাহার উপরে॥ ভক্তিহীন হয়ে যদি কোন অভাজন। দ্বত আদি দিব্য দ্রব্য করে সমর্পণ। মে দেবা অগ্রাহা করি জানিবে অন্তরে। বিমুখ দর্মদা আমি তাহার উপরে॥ যথাবিধি মন্ত্র মুখে করি উচ্চারণ। আমার অর্চনা থাদি করিবে সাগন। ষ্টে মন্ত্র পড়ি মোরে করিবে প্রণাম। বলিতেছি সেই মন্ত্র তব বিদ্যুমান।। " নমোস্ত তে মহাদেব ভক্তানাং ভক্তবৎসল। সদ্ধং মাহেশ্বং রূপং হরে वर्षक कर्मकर ॥ व्हार्ट तर्ज (भवमः चार्ट) अमेरम अर परेमक मा। (यारमंबर) सम्यामि (एवस वत्रप' शतिः॥ जिन्नाध्यिषि (एवः मध्य प्रमाध्यः। পঞ্চাধরং নমস্থামি দেবং ত্রিভুবনেশ্বরং ॥ উমাপতিং নমস্থামি তথা জমুপতিং **शिक्टि । हार्ट्यट**ो (प्रवम धार्ट) श्रीरप्रका भेराकपा।"

এই মন্ত্র পাঠ করি একান্ত অন্তবে। প্রণাম করিবে মোরে অতি ভক্তিভরে ॥
প্রতিদিন ঘদি ইছা করে অব্যথন। দিনরা দিরত পাপ হব বিমোচন॥
রক্তবলা নারী যথা অবহিত করে। অনে নাহি ইছা কভু পড়িবে সে হলে॥
কিবা গৃহে কিবা পথে যেই কোন জন। একমনে এই মন্ত্র করে অধ্যয়ন॥
তাহার উপরে তুট সদা রহি আমি। অওভ না রহে তার জানিবে ভবানী॥
চতুর্দেশী অইমীতে পূজার বিধান। কহিলাম বিস্তারিয়া তব বিস্তমান॥
আর কি শুনিতে বাঞ্ছা বলহ এখন। যা কহিবে তা বিশিব স্বরূপ বচন॥
তখন পার্ববি কহে আমার সদনে। শুনিতে বাসনা বড় হইতেছে মনে॥
এত শুনি পশুপতি কহেন তখন। শুন হন বরাননে করিব বর্ণন॥
এবণ করিলে ইছা রুদ্রলোকে যায়। শুন শুন বরাননে করিব বর্ণন॥
মার্গশীর্বে অইমীতে একান্ত অন্তরে। নানাবিধ গর্মপুর্ন্পে পৃজিয়া আমারে॥
মার্গশীর্বে অইমীতে একান্ত অন্তরে। নানাবিধ গর্মপুর্ন্পে পৃজিয়া আমারে॥
গোমুত্র শেবন করি করিবে যাপন। সর্ব্বপাধি মক্ত হবে সেই সাধজন।

শোষদাসে অইরপ অফদীর দিনে। প্জিবেক পশুপতি একান্ত যতনে॥ য়তমাত্র দেই দিন করিয়া দেবন। যাপন করিবে দিন যেই সাধুজন # লিভিবে অক্ষ্রাপুণ্য এরপ করিলে। নাহিক সন্দেহ ইথে কহিনু ভোমারে # অইরপ মাঘমাদে অফমী দিবদে। পুজিবেক নহেশ্বে অশেষ বিশেষে ॥ ক্ষীর মাত্র সেই দিন করিয়া সেবন। উপবাসে পুলকেতে করিবে যাপন॥ ধর্ম লাভ হবে ইথে নাহিক সংশয়। বর্ণন করিতে ভাষা কেবা শক্ত হয়। ফাল্কন মানেতে পরে অউমী তিথিতে। পূজিবেক মহাদেবে ভক্তিযুতচিতে॥ তিলমাত্র সেই, দিন করিয়া ভোজন। জিলেন্দ্রিয় হয়ে কাল করিবে যাপন # যে রূপ হইবে পুণ্য এরূপ করিলে। বলিতে না পারি তাহা তোমার গোচরে॥ তার পর তৈত্রমানে অইমা পাইযে। পূজিবেক মহেশরে ভক্তিযুক্ত হয়ে। গোময় অশনমাত্র করি সেই দিন। দাপন করিবে সাধু সুমতি প্রবীণ।। বৈশাখেতে অইরূপ করিবে পুজন। যবগাত্র সেই দিন করিবে ভোজন॥ জ্যৈতে প্রশাসমাত্র করিয়া আহার। পূজিবেক একচিত্তে সাধু গুণাধার॥ আষাঢ়েতে অইরপ করিবে পুজন। গঙ্গা জল শুদ্ধ যাত্র কবিবে ভোজন॥ শ্রাবণে, লবণোদক পান করি পরে। সর্চ্চনা করিবে সাধু অতি ভক্তিরে॥ বিল্পত্র ভাড়েশাদে করিয়া দেবন। একমনে মহেশেরে করিবে পুজন॥ তণ্ডল-উদক পান করিয়া সাথিনে। পুজিবেক ভগবানে একান্ত ঘতনে॥ কার্ত্তিকে পূজিবে পুনঃ দিধি পান করি। মহাপুণ্য হবে ইথে শুন গো সুন্দরী॥ এর পে বাদশমানে করিবে পূজন। যে নামে যে শানে পূজা করহ অবণ॥ শঙ্কর নামেতে পূজা প্রথমে করিবে। দেবদেব নামে পৌষে পূজিতে হইবে॥ মহেশ্বর নামে পূজা মাঘমাদে হয। ফাল্পনে ত্রাসক নাম শাস্ত্রেতে নির্ণয়॥ ভগবান নামে পূজা চৈত্রেতে করিবে। বৈশাথে পিঙ্গল নামে পূজিতে হইবে॥ पिक्नामूर्खरत्र विल रेक्नार्छर पृक्त। আধাঢ়েতে নীলকণ্ঠ করি উচ্চারণ॥ স্থাণু নামে পূজা পরে, করিবে প্রাবণে । শভু নামে ভাতমাদে পূজিবে বিধানে। আখিনে ঈশ্বর নামে করিবে পূজন। দক্ষিণামূর্ভয়ে বলি কার্ত্তিকে অর্চন॥ এরপে অউমীপূজা যেই জন করে। গন্ধ মাল্য আদি নেয় ভক্তি সহকারে ! শান্ত্রমত তব পাশে করিমু কীর্ত্তন।। মহাফল হয় তার শাস্ত্রের বচন। স্বর্ণ দক্ষিণা দিবে অতি ভক্তিভরে॥ সমাপ্ত করিয়া পূজা ভান্মণের করে। যেই ব্যক্তি এইরূপ করে আচরণ। দেহাত্তে সেজন যায় কৈলাস ভবন॥ অপরাগণের সহ মিলিয়া তথায়। মনের আনন্দে ক্রীড়া করিয়া বেড়ায়॥ উদ্বেগ কিছুই তার না রহে অন্তরে। ব্যযুক্ত রথে সদা সাদন্দে বিহরে॥ পুণ্যকর অবসানে সেই মহাজান্। ধনীর আগারে গিয়া লভরে জনম।
সর্বস্থা ভোগ করে ঘাইয়া তথায়। মনের বাসনামত সর্ব দ্ব্যে পায়॥
বিজ্ঞাবিশারদ হয় ভূমে সেই জন। সর্বত্র তাহারে মাতা করে নরগণ॥
দত্ত মোহ নাহি রহে তাহার অন্তরে। শিবপূজা করে সদা ভক্তি সহকারে॥
এইরপে স্থাধ কাল করিয়া যাপন। দেহ-সংগুপুন যায় অমর-ভবন॥
আইমীবিধান এই করিত্ব কীর্তন। মহাকলপ্রদ ইহা শাস্ত্রের বচন।
আচরণ করে জীব অতি ভাগ্যবশে। অধিক বলিব কিবা তোমার সকাশে॥
পুরাণের সার ঞীশিবপুরাণ হয়। শুনিলে শভ্যে জীব আত্মতব্রজান।

## ঊনসত্তম অধাায়।

लक्षनास्थी।

মহেশ্র ট্রাচা

শুণু দেবি পর' দিব্যমুপ্রাস্পরং ম্য ' লক্ষণাউমী বক্ষ্যামি শুণুদায় ১লোচনে।

কাকণ অন্তন্য কথা করিতে প্রবণ। জিজাসা করিল যত তাপসের গণ।।
ভাহা শুনি বিধিস্ত কহে মধুষ্রে। শুন শুন বলিতেছি তোমা স্বাকারে।।
বলেছিল মহেশর যেনন যেনন। বলিতেছি সেই কণা করহ প্রবণ।।
শার্কতীরে সম্বোধিয়া কহে পশুপতি। লক্ষণ অন্তন্যকার গুন ভগবতি।।
কার্জিকে অন্তন্য তিথি আসিবে যখন। ভক্তিভরে উপবাস করিয়া তখন॥
শিব নামে স্যতনে পৃজিবে আমারে। গন্ধ মাল্য ধূপ আদি নানা উপহারে।।
রোচনা নিবের মুখে করিবে অর্পণ। এরপে পৃজিলে হয় ফল অনুন্তম।
বেই ছানে যেই নামে করিবে পৃজন। বলিতেছি সেই কথা করহ প্রবণ।
নেখে শিরে পদে আর শক্ষর নামেতে। অর্চনা করিবে সাধু ভক্তিযুক্ত চিতাে।
ক্রেনামে জ্লাদেশে করিবে পৃজন। কটিতে ইশান নামে করিবে অর্চন॥
ব্যামক নামেতে মেন্তু পৃজিতে হইবে।। কাস্মক নামেতে অক্লে যতনে পুজিবে॥
ধলপাণি বলি বক্লে করিবে পৃজন। রবধ্য নামেত পরে গ্রীবাতে পৃজিবে।
উমাপতি পশুপতি এই তুই নামে। প্রতিরেক কর্ণন্যে বিহিত বিধানে।।
বিশ্ব নামেতে পুন: চক্ষুতে পূজন। জনধ্য শ্রানবাসী বামেতে পৃজন।।

কপালে ভূতেশ নামে পৃজিতে হইবে। বরহর নামে তারে চিবুকে পৃজিবে॥ হর নামে ওপ্ঠন্থ করিবে পৃজন। দক্ষমজ্ঞনাশী বলি দন্তেতে আর্চন॥ এইরপে যথাবিধি নানা উপহারে। আর্চনা করিবে সাধু অতি ভক্তিভরে॥ সমাপ্ত হইলে পরে করি নিমন্ত্রণ। বিপ্রগণে ভক্তিভরে করালে ভৌজন॥ জলপূর্ণ তাম্রঘট করিবে অর্পণ। দক্ষিণা শক্তিমত শান্তের নিয়ন॥ মুখ্ময় পাত্রেতে তিল পৃথিয়া ঘতনে। করিবেক বিতরণ যত বিপ্রগণে এইরপ ঘেই জন করে আচরণ। শিক্রোকে যায় সেই আমার বচন॥ অপ্সরা গণের সহ রহে সেই হানে। সহস্র বর্ষ দিবা পুলকিত মনে॥ ভোগ হাল পুনরায় ধরাধামে ঘায়। ধর্মিষ্ঠ কর্মিষ্ঠ হয় নাহিক সংশয়॥ সার্ব্রভৌম হয় সেই গিয়া ধরাতলে। আনন্দে সভত থাকে মনকুতৃহলে॥ লক্ষণ অন্টমী কথাকরিকু কর্মির বরাতলে। আনন্দে সভত থাকে মনকুতৃহলে॥ লক্ষণ অন্টমী কথাকরিকু কর্মির বরাতলে। আনন্দে সভত থাকে মনকুতৃহলে॥ লক্ষণ অন্টমী কথাকরিকু কর্মির বরাতলে। আনন্দে হয় ইথে শাস্তের নিয়ম॥ মনের বাসনা পূর্ণ হয় এই ফণে। নাহিক সন্দেহ ইথে জানিবে সকলে॥ পুরাণে ধর্মের কথা ভ্রিত্র মনোহর। শুনিলে তাহার হয় পবিত্র অন্তর॥

#### সপ্ততিত্য সধ্যায়।

#### দানধর্গ বিধি 1

সম্বদানাং পরং দান নৈব কিঞ্চিদিশ্যতে। অমান্তবন্তি ভূতানি তমাত্তদ্বিকং স্মৃতং। শ্বঃ যায় সুসংস্কৃত্য প্রযক্ততি দ্বিজাত্যে। সুসুক্কামমাপ্রোতি পূজাতে চ ত্রিপিউপে॥

পুনরায় সম্বোধিয়া দেব পঞ্চানন। কহিলেন পার্কতীরে করছ প্রবণ।।
দারধর্ম বিধি কহি তোমার গোচরে। অর দান সর্কপ্রেষ্ঠ জানিবে সংমারে।।
ইহা হতে প্রেষ্ঠ দান নাহি কিছু আরে। অর হতে জন্মে জীব জগত মাঝার।।
সংস্থৃত করিয়া অর যেই কোন জন। বিপ্রজনে পুলকেতে বর সম্পূর্ণ।।
মনের বাসনা তার পরিপূর্ণ, হয়। স্ববধানে পূকে তারে দেবতাহি চর।।
হংসময়ুরাদিযুক্ত উত্তম বিমানে। চাড়য়া সে জন যায় অমর-ভবনে।।
ভাগ অত্তে পুনঃ সেই ররাতল যায়। মহাস্থ্য মনস্থ লভয়ে তথার।।
ধনধানো পরিপূর্ণ ভাহার আগার। অধিক বলিব কিবা নিকটে তোলার।
প্রতিদিন অর্দান করে যেই জন। তাহার ফলের কথা কি করি বর্ণন।।

শ্রজাপতি সলোকতা সেই জন পায়। কহিন্ত নিগুড় তত্ত্ব পার্বভী তোমায়॥ মধ্যে মধ্যে যেই জন অন্ন দান করে। সুখভোগ করে সেই গিয়া সুত্মপুরে।। অসংস্কৃত অন্ন দান করে যেই জন। অদ্রিমে সে জন করে নরকে গমন॥ নরক ভোগের পর মানব-আগারে। তিথ্যক যোনিতে গিয়া নিজ জমা ধরে। বহুজমে যদি খরে মানব-জনম! জন্মিদে মেচ্ছের ঘরে শাস্তের বচন॥ প্রজাপতি সম অন্ন জানিতে অন্তরে। তন্ন দান সক্ষেত্র কহিনু তোমারে॥ (यहे जन जन पान करत विज्ञा। गर्क युद्ध हम जात मन्त्रीर्ग माधन॥ जन হতে জন্মে এই বিশ্বচরাচর। এই ছেবু অন শ্রেষ্ঠ জগনে সর্কনর॥ সুগর শীতশ জল যেই কং দোন। তাহার ফলেব কং । কহি তব স্থান॥ সূর্যাসম बीखियान वियादन इंडिएयं। वक्षण लादिक यांच मानम सप्राथा। अर्थे অযুতেক বর্ম সেই স্থানে রয। দেবতুল্য স্থী সেই নাহিক সংশয॥ ভোগ অত্তে ধনীগৃহে লভযে জনম । ধনদান্যে পূণ হল ভাষার ভবন॥ अञ्च-পূর্ণ ধাতুপাত্র যেই করে দান। পিতৃসণ তার প্রতি সদ। প্রতিমান্॥ গরুগণে জল দিতে করিয়া মনন। তড়াগ খনন করে যেই সাপুজন॥ পিড়-গণ দেবগণ ভাষার উপরে। সদত সম্বুট্ট থাকে জানিবে অন্তরে॥ অন্ত-कारल मिहे कन युत्रभूरत याता। भन्न युर्चर व्याटक याह्या व्यासा। यन-দান ভূমিদান গন্ধ দান দিলে! তান শুন বলিতেছি যেই ফল ফলে॥ মনো-বাঞ্ছা পূর্ণ হয় জানিবে তাহার। বিমানে চড়িয়। যায় ইন্দের আগার॥ **দেবগণ সহ তথা আনন্দেতে** থাকে। বহু দিব্য বর্ষ রহে অন্তবের সুখে॥ ভোগ অত্তে ধরাতলে লভয়ে জনম। নোকেশর সুখভোগী হয় সেই জন। পথিমধ্যে যেই করে পাদপরোপণ। পথিকের শ্রমক্রম করিতে বারণ॥ ্র .তুগণ পরিক্রাণ লভয়ে তাহার। সর্ম পাপ হতে সবে লভযে উদ্ধার॥ যত পত্র বিদ্যাদান থাকে ভরুবরে। ৩5 বর্ষ রছে সেই অম্র-নগ্রে॥ পিতৃগণ তত বর্ষ স্বর্গধামে রয়। শাস্ত্রেব বচন ইছা নাহিক সংশয়।। জন্তুগণ রক্ষপত্র কর্যে ভক্ষণ। তাহাতেই যত পাপু•হয বিনাশন॥ ফলদান বিপ্রগণে যেই জন করে। কপবান্সেই জন হইবে সংসারে॥ ঐশ্ব্যসম্পন্ন হয় সেই সাধুজন। শাস্ত্রের প্রমাণ ইহা বেদের বচন॥ ছেমস্ত काल्टि यिन भयानान करता अधिलाक याय महे महे भूगकल ॥ (इम-রত্ন বিভূষিত অমূল্য-ভাজন। যেই জন বিপ্রগণে, করে বিভরণ॥ অপ্রবা महिट्ड (महे हिंखा विभारत। आनत्य विद्यंत करते क्रांतिदक मरत॥ तक एक शांख यकि विध्य करत नाम। शक्त-शनवी शांत्र महे मिलमान्॥

ভিক্রশী সহিতে সেই ছরিষ-অন্তরে। দিবানিশি বিমানেতে বিচরণ করে॥ তাত্রপাত্র বিপ্রকরে যদি করে দান। যক্ষ-অধিপতি হয় সেই মতিমান॥ বিবিধ রতনপূর্ণ সৃহদান দিলে। বন্ধলোকে যায় সেই মনকুতৃছলে। সর্বকাম পূর্ণ হয় জানিবে তাহার। মপু বুল সেই ব্যক্তি করুয়ে উদ্ধার॥ ব্রন্ধলোকে কোটি বর্ষ করিয়া যাপন। গৃহমেধী হয়ে পুন লভয়ে জনম॥ ঔষধী বিজেবে যেই করে বিভরণ। মনোরথ তার যত হয় সম্পূরণ। অন্ত-কালে সেই জন সোমলোকে যায। সপত হাজার বর্ষ রহিবে তথায়॥ তার পর ধনীগৃহে লভযে জনম। মহাবুদ্বিশান্ হয় সেই সাধুজন॥ ভূমিদান বিপ্রকরে যেই জন করে। সর্কলোকে সুখী সেই জানিবে অন্তরে॥ । মহা-তেজ দেহে ভার হয় উৎপাদন। দিব্য দেহে বিমানেতে করে আরোহণ॥ कामक्रभी इर्घ (महे मह । विहात। वह वर्ष थारक (मह ७ (इन अकारक्रा) তার পর যদি গরে পুন ৮ জনম। ধনবান বৃদ্ধিমান হয় সেই জন॥ গুইীর প্রধান সেই হয় সাপুষতি। চারিদিকে ৫টে তার অতুল সুখ্যাতি। বিপ্র-करत शिरुपान । पर जन करता साम लिएक यांच सार सारे भूगाकरला। বিস্তুত অমূল্য শ্যা। যদি করে দান। ভার্য্যা সহ হয তার সুরপুরে স্থান। ষ্ক্রিখ লভে ভথা সেই চুইজন। সনেব বাসনা যত হয় সম্পূরণ॥ উত্তম্ পারেতে কন্যাদান ঘেট করে। পিতৃলোকে যায় সেই সেই পুণ্যকলে। শতাযুত বর্ষ তথা পুলকেতে রয়। তার পর জন্মে আসি ধনীর <mark>আলয়।</mark> রূপবতী ভার্য্যা লাভ করে সেই জন। পুত্রবান হয় সেই শান্তের বচন। বিচিত্র অপূর্ব্ব রথ ঘেই করে দান। গ্রুড় লোকেতে যায় সেই মতিমান ॥ অশ্ব গজ দাসী দান যেই জন করে। রাজা হয় সেই জন জানিবে অন্তরে। দ্বিজকরে ধেনুদান করে যেই জন। কুপ্রান করে কিন্তা যেই মহাত্মন 🕨 জলপূর্ণ কুন্ত কিন্তা করে বিতরণ। ইন্দলোকে যায় সেই শান্তের বচন। গোদানেতে মহাপুণ্য জানিবে অশবে। সর্বকাম পূর্ণ হয় সেই পুণ্যকলে॥ অন্তকালে দেই জন পুরপুরে যায়। পরম স্থাতে থাকে হাইয়া তথায় 🛦 তার পর মহাকুলে লভ্যে জনম। মহাবল মহামনা হয় সেই জন॥ রূপবান্ বলবান্ দেই জন হয়। ধন ধানা েকু পূর্ণ ভাষার আলয়॥ ছয়বতী ধেন্ত দান যেই জন করে। স্বর্গেতে সাজায়ে শৃঙ্গ অতি সমাদরে॥ রজ-তের খুর করি করে বিতরণ। •মহা সুখ পায় মেই অমর-ভবন॥ ভোগ অত্তে জাতিমর হইয়। জনমে। শাত্রের বিধান এই কহি তব স্থানে॥ বেমন তেমন ধেকু কৈলে বিভরণ। ত্বাপি নর চ তার হয বিলোচন।

যতি বেলচারীজনে ক্ষণজিন দিলে। পৃথিবীর অধিপতি হয় পুণ্জলো।

যোগী বেলচারী দিজ এই সব জনে। গৃহদান দেয় যেই অতীব ্যতনে ॥

অশ্বনেধ ফল পায় সেই সাধুজন। জাতিয়তি জন্মে তার শান্তের বচন॥

যোগলাভ করে সেই জানিবে অন্তরে। শান্তের প্রমাণ ইহা কহিমু তোমারে

বিপ্রকরে কমগুলু যদি করে দান। অশ্বনেধ ফল পায় সেই মতিমান্॥

সেই ফলে ধর্মে মতি জনমে তাহার। অন্তিমে সে জন যায় অময়-আগায়॥

ব্যাধিত দিজেরে কৈলে ঔষধ অর্পণ। মহাপুণ্য হয় তার শাস্তের বচন॥

বেলহত্যা পাপ মদি থাকয়ে শরীরে। অবিলম্বে নাশ পায় জানিবে অন্তরে॥

বিশুল্প বিপ্রেরে ফদি দেয় স্বর্ণ দান। দশ সম্বনেধ ফল পায় মতিমান্।।

অধিক বলিব কিবা তোমার সদন। এই যে দানের কপা করিলু কীর্ত্তন॥

সমস্ত এ সব দান যেই জন করে। এক হল রাজা হয় জোনিবে অন্তরে॥

কি বলিব তব পাশে ওগো ভগবতি। গুমহ জন পড়েইছা করিয়া ভকতি॥

অধিবা প্রবণ করে হথে একমন। স্বর্ণধানে যায় সেই শাভের বচন ॥

অধিবা প্রবণ করে হয়ে একমন। স্বর্ণধানে যায় সেই শাভের বচন ॥

## একসপ্ততিভ্য অধায়।

দান এবং প্রাক্তাপতা ও শান্তপ্রাদির ফল ঈশ্বর উবাচ । একভক্তেন থো দেবি মাসং মার্গনিরঃ ফপেং। স তেন কর্মণা দেবি ভজতে মাঞ্চ নিতাশঃ॥

সনতকুমার কচে যত ঋষিগণে। শুন শুন তার পর কহি সবাস্থানে ।
কেবীরে সন্মোধি পুন কহে পশুপতি। শুন শুন তার পর ওগো ভগবতি।
মার্গনির্ধে একাহারে রহে যেই জন। আমারে সে জন পায় স্বরূপ বচন ।
মাঘমানে একাহারী হইয়া থাকিলে। রূপবতী নারী পায় সেই পুণাফলে॥
কাল্কনেতে অই ফল জানিবে অস্তরে। হৈরমানে যেই জন রহে একাহারে॥
খনধান্যবান্ হয় সেই সাধু জন। রূপবান্ হয় সেই শাস্তের বচন।।
বৈশাখেতে একাহারী হইয়া থাকিলে। মান্য করে সবে ভারে এই ভূমগুলে
খনধান্য যুক্ত হয় তাহার আগার। জন্তিমে সে জন যায় জমর-আগার॥
জ্যোধা মূলা তু নক্তের যেই সাধুজন। একাহার করি করে দিবস যাপন।।
জন্মান্তরে জ্যেষ্ঠপুল হয় সেই জন। স্বাভাগ করে সেই শাস্তের বচন।।

আষাঢ়েতে একভক্ত হইয়া থাকিলে। মহামান্য হয় সেই রাজার গোচরে॥ প্রাবণেতে একাহার করে যেই জন। সেনাধ্যক হয় সেই। শান্তের বচন॥ মহা বল হয় তার জানিবে শরীরে। কারো পাশে সেই জন কভু নাহি হারে॥ আশ্বিনেতে একাহার কৈরে যেই জন। অগ্নিলোকে যায় সেই ত্যক্তিয়া জীবন॥ কার্ত্তিকমানেতে যদি একাছারে রয়। বিমানে চড়িয়া (যায় অমর-আলয়॥ সম্বংসর একাহার করিয়া থাকিলে। মহীপতি হয় সেই সেই পুণ্যকলে॥ যাবত জীবন যেই অনাহারে রয়। নির্বাণ মুক্তি তার জানিবে নিশ্চয়।। মাদে মাদে অহোরাত্র কৈলে অনাহার। ধার্মিক প্রধান হয় সেই গুণাধার।। কিবা শুক্ল কিবা ক্লফ্ট উভয় পক্ষেতে। চতুর্দ্দশা দিনে কিন্দা অইমী তিথিতে অহোরাত্র অনাহারে রহে যেই জন। সর্কপাপশূল হয় সেই মহাজ্ম। यमानम তারে নাহি দেখিবারে হয়। কভু নাহি দেখে দেই দারণ নিরম। মাসে মাসে তিন দিন উপবাদী হলে। ক্ববের লোকেতে যায় দেই পুণ্ট্হলে মহাস্থ্রখে সেই স্থানে করে নিবস্তি। দেবলোকে রটে তার অতুল স্থখ্যাতি॥ তিন দিন ডপ্যান করি যেই জন। চতুর্গ দিনেতে করে বিহিত ভোজন।। পুনরায় তিন দিন করি অনাহার। ঐরপ চতুর্ণ দিনে করয়ে আহার।। পর্যায়ক্রমেতে গেই এইরূপ করে। গন্ধর্ব পদবী পার জানিবে অন্তরে॥ ইন্দ্র মম মহাস্থার পাকে সেই জন। শাস্ত্রের বচন মিথ্যা নহে কদাচন।। ঐরপ পঞ্চম দিনে করিলে আহার। বায়ুলোক লাভ করে সেই গুণাধার। অইরপে ষষ্ঠ দিনে করিলে ভোজন। বারুণ লোকেতে যায় সেই মহাআ্ন। আপদ তাহারে নাহি ঘেরিবারে পারে।কহিলাম শাস্ত্রকথা তোমার গোচরে ঐরপ সপ্তমদিনে করিলে ভোজন। সুর্য্যসম তেজ সেই করয়ে ধারণ॥ সকলের প্রিয় হয় সেই মহামতি। দশদিকে রটে তার অতুল সুখ্যাতি॥ দশভার্য্য হয় তার শাস্ত্রের বচন। অকালে মরণ তার না হয় কখন॥ একাদশ দিনে যেই করয়ে ভোজন। একাদশীফল পায় সেই মহাত্মন॥ রুদ্রে সম হয় সেই জানিবে অন্তরে। শাস্ত্রের বচন এই কাহনু তোমারে।। রুদ্রলোকে সেই জন অন্তকালে থায়। অঞ্চ শত দিব্য বর্য থাকয়ে তথায়॥ তার পর বিপ্রকুলে লভয়ে জনম। । স্থের প্রমাণ মিখ্যা নহে কদাচন। मापन पिर्वास (यह क्रायु आहात। जसकारन यात्र महे हेट्स्त आगात्र। সেই স্থানে বৃত্তকাল সুখভোগ করি। জনম লভয়ে গিয়া মানবের পুরী॥ - ताजगद्धी दर्रा त्महे मः मात्र भाषात्त । धनदान् विसावान् जानित्व जछत्त्र ॥ ত্রোদশ দিনে ষেই করয়ে ভোজন। ভ্গুণোকে অন্তকালে দে করে গমন॥

দিব্য ভোগে বহু কাল করিয়া বিধার। তার পর জন্ম লভে মানব-আগার ॥ थनशास्त्रमभायुक रहा (महे जन। महातः (भे न्हर जात क्रांनित क्रन्म॥ চতুর্দণ দিবসেতে করিলে আহার। নৈথিষ লোকেতে যায় সেই গুণাধার॥ একমাস অনাহারে থাকি যেই জন। তার পর শুদ্ধভাবে করয়ে ভোজন। জিতে জিলার জিলার দেই জন হয়। বিমানে চড়িয়া সেই মনসুখে রয়॥ অপরা সহিতে থাকে হরিষ অন্তরে। দেবগণ তারে স্তব নিরস্তর করে। অগ্নিছতে দিব্য তেজ সে করে ধারণ। গণপতি সম হয় সেই সাধু জন॥ এত বলি মহেশ্বর পার্ব্বতা সতীরে। পুনশ্চ সংঘাধি কহে সুমধুর স্বরে॥ উপবাসভেদফল করিত্ব কীর্তন। ইহাপেকা শ্রেষ্ঠ কাজ শুনহ এখন॥ স্পান করি শুদ্ধভাবে সমাহিত হয়ে। তিনরাত্রি উপবাস বিধানে করিয়ে॥ ব্ধাবিধি অগ্নিছোম করিয়া সাধন। হুদি হতে দন্ত রোদ করিয়া বর্জ্জন।। শত্যবাদী ধর্মনিষ্ঠ হইয়া যতনে। গায়ত্রী করিবে জপ পুলকিত মনে॥ গণপতি পূজা পরে করিয়া সাধন। মম লিক্ষ যথাবিধি করিবে পূজন॥ द्वाञिकारल कुमामरन भग्नन कतिरन। नाती मृत् निवर्क्कन कतिरु इहेरव ॥ শাংস্থা অন্তরে নাহি রাখিবে কখন। বিপ্রগণে ভক্তিভরে করি নিমন্ত্রণ। এক শত অন্ট বিপ্রে ভোজন করাবে। সক্ষমে সহস্র বিপ্রে খ্যাস্ত দান দিবে। হবিষ্য ভোজন কিন্তু করাবে স্থগন। স্বর্ণপার প্রত্যেকেরে করিবে অর্পণ। এইরূপ যেই জন করে আচরণ। তাহার পুণ্যের কথা কে করে বর্ণন।। কখন তাহার ফল বলা নাহি যায়। সে জন তুর্লভ অতি জানিবে ধরায়। नीलवर्ग द्वाय (धरे कति जानग्रन। विधारन छेश्मर्ग कति करत विजत्र।॥ অথবা তাহার মূল্য দ্বিজে দান করে। পিতৃগণ মহাতুষ্ট তাহার উপরে॥ ভার পিতৃগণ যত গুণের আধার। সেজন মহাত্মা অতি সংসার মাঝার । মত রোম বিদ্যমান হবের শরীরে। সহস্র বরষ তত রহে সুরপুরে। তিলপাত্র বিপ্রে দান করে যেই জন। অমাবস্থা তিথি কিন্তু হবে সেই কণ। সোমলোকে সেই জন মহাগ্রখে যায়। মহাস্থখ লাভ করে ঘাইয়া তথার॥ পরিত্রাণ লাভ করে তার পিতৃগণ। শাঁস্থের বচন মিখ্যা নহে কলাচন॥ চান্দ্রায়ণ ব্রত করে যেই মহামতি। <sup>\*</sup> অন্তকালে হয় তার সোমলোকে গতি। সোমের সদৃশ হয় সেই সাধুজন। মহাস্তথে তথা গিয়া করয়ে যাপন॥ প্রাজাপত্য অনুষ্ঠান যেই জন করে। প্রজাপতি সম হয় এভবসং দারে॥ প্রজাপতি লোকে যায় সেই সাধুজন। শান্তের বচন,মিথ্যা নছে কলাচন॥ ফুচ্ছ শান্তপন এত যেই জন করে। ,অগ্নিলোকে মায় সেই জানিবে অন্তরে॥

মহাশান্তপন যদি করে কোন জন। সক্ষত্তত বভি যায় একার সদন॥ তুলাপুরুষক করে যেই মহামতি। নর্কাপাপে সেই জন লভয়ে মুকডি॥ স্বর্গলোকে দবে তারে করয়ে পূজন। স্বচ্ছদে বিহার করে দেই মহাজ্মন॥ কটকর ধর্মকর্ম করে যেই জন। মনোরথ সব তার হয় সম্পূবণ॥ ক্লচ্ছ ব্রস্ত যদি করে একান্ত অন্তরে। সিদ্ধ হয় সেই জন ঈশ্বরের বরে॥ দুর্থীমান্ত যেই জন করিয়া ভোজন। একবর্ষ নিরন্তর করয়ে যাপন॥ অথবা যাবক অন্ন গোমূত্র মিশায়ে। বর্ণাবধি খায় ঘেই একান্ত-ছদয়ে॥ শিবের উপরে ভক্তি রাখে নিরন্তর। লবণ ত্যজিষা থাকে যেই সাগুনর॥ অখেমেইফল পায় দেই মহামতি। অন্তকালে হয় তার এন্দলোকে গতি॥ মোচন লভয়ে সেই যতেক বন্ধনে। সর্কপাপে যুক্ত হয় জানিবেক মনে॥ রক্তবুর্ণ বিশানেতে করি আবোহণ। ত্রহ্ম সম নিরন্তর করয়ে ভ্রমণ॥ দানবিধি, ধাহা যাহা করিনু কার্ত্তন। যথাবিধি মন্ত্র পড়ি করিবে অর্পণ।। শৃক্তগর্ণ কিছু মন্ত্র কভু না পড়িবে। অমন্ত্রক শৃদ্রগণ অন্তরে জানিবে॥ কিছু এক কথা বলি শুনগো পাকতি। যত কিছু কার্য্য বল নারীজাতি প্রতি॥ কিছুই কিছুই নহে জানিবে অন্তরে। একমাত্র সার পতি এভবসংশারে॥ নারীর দেবতা পতি একমাত্র ইয়। পতিদেবা মহাধর্ম জানিবে নিশ্চয়॥ পতিসেবাফলে যাহা হয উপাৰ্চ্জন। কোন ধর্মে ফল কভু না হয় তেমন॥ দানবিধি ধর্মবিধি বতবিধি আর। কীর্ত্তন করিমু এই সার হতে সার॥ ধর্মকর্মে মতি যার রহে নিরন্তর। তাহার অসাধ্য কিবা ভূবন ভিতর॥ তাহার সমান কেহ নাহিক ভুবনে। সদা ভয় করে তারে যত দেবগণে॥ অতএব ধর্মপথে সদা রাখ মন। মনের বাসনা হবে অবশ্য পূর্ণ॥

# দ্বিসপ্ততিত্ব অধ্যায়।

শিবশিরে চক্রোৎ**পত্তি।** পার্ধতী উবাচ।

একঞ্চ শ্রোত্মিক্ছামি রহস্তং ভুবনেশ্বর। ধার্যাতেসৌ কলা চান্দ্রী কথমেব ত্বমা প্রভো। কারণকৈব দেবেশ মম বক্তুমিহার্স ম

পুনশ্চ জিজ্ঞাসা করে দেবী ভগরতী। নিবেদন মম প্রভু শুন পশুপতি॥
শুনিলাম নাদাকথা তোমার বদনে। যত শুনি তত ইচছ। পুনশ্চ শ্রবণে॥

রহন্য আছয়ে এক শুনিতে বাস্না। বর্ণন করিয়া তাই। প্রাও কামনা। নিরস্তর চক্রকশা ধর শিরোপরে। ইহার কারণ কিবা বলহ আমারে॥ प्रियोत এতেক বাক্য করিয়া অবণ। নীলকণ্ঠ মিউভাবে কহেন তখন॥ বাছপাশে পার্বতীরে আণিজন করি। কহিলেন মৃত্তভাবে দেব ত্রিপুরারি॥ पृक्षि यम প্রাণিথিয়ে ওগো ফলোচনে। এক অঞ্চ छूरे জনে জানিবেক মনে॥ ভিপকা ছাড়িয়া যথা তাপস না রয়। তুমি আমি দেইরপ জানিবে নিশ্চয়॥ তোঁমারে ছাড়িয়া আমি না রহি কখন। তুমিং পরাণ মম তুমিং জীবন॥ শ্হাঁ হোক শুন শুন কহিব তোমারে। জিজ্ঞাসা করিলে ধাহা আমার গোচরে ॥ একদা তোমার সহ অতি পূর্বকালে। বিচ্ছেদ হইয়া ছিল ভাবহ ႅ বৃত্তরে।। পরম নির্বেদ আমি লভিনু তাহায়। ভ্রমণ করিয়া ফিরি যথায় 🕻 ভথায়।। কখন গৃহেতে থাকি কখন পুলিনে। তীর্থে তীর্থে ঘূরি কভূ নাঁনা খানে স্থানে।। কভু থাকি গিরিপরে রক্ষের উপর। কভু বা আশ্রয় হয় বিস্তৃত প্রান্তর।। যেখানে যেখানে রক্ষে করি অবস্থান। সেই সেই রক্ষ সব 🗮 হয় দহ্যমান।। মম তপ-অনলেতে ইইয়া দহন। গিরি রক্ষ স্বাদি করি হয় ্ নিপতন।। মম তেজে গিরিশৃত্ব দগ্ধীভূত হয়। ত্রিলোক হেরিয়া তাহাঁ অতীব বিষয় ।। হানতেজা দিনমণি হলেন তখন। অদার মলিন হলে। বিষয় ভুবন।। তাহা দেখি দেবগণ মিলিয়া সকলে। উপনীত হন আসি অমর-নগরে।। ক্টিপনীত হলে সবে নন্দন কানন। ব্রহ্মারে দেবেন্দ্র কহে করি সম্বোধন। কারণ কিব। কই ভগবন্। তেজোহান হই মোরা কিসের কারণ ॥ 👣 অভয় প্রদান কর তুমি মহামতি। আমাদের প্রভুতুমি অগতির গতি॥ ু জলদগন্তীর রবে দেবের রাজন। একারে এতেক বলি মৌনভাবে রন।। ভাঁহার এতেক বাক্য করিয়া প্রবণ। পিতামহ ধীরে ধীরে কহেন তখন।। , জিজ্ঞাসা করিলে যাহা ওহে শচীপতি। বলিতেছি সেই কথা কর অবগতি॥ শিবের প্রভাবে দশ্ব হতেছে ভুবন। জগত মলিন দেখি ইহার কারণ।। উপায় বিধান এবে করহ নকলে। যাহে শিব সৌযাভাব অবিলয়ে ধরে।। . रेख करर कि विनय अधिक वहना। चित्र कतिवारत किছू ना ; रहे मक्या। অগতির গতি তুমি প্রভূমহোদয়। তোমার প্রভাবে হয় সৃষ্টি স্থিতি লয়॥ বিষেচনা কর তুমি আপন অন্তরে। যাহে মোরা রক্ষা পাই এভব-সংসারে॥ দেখ দেখা ঘত সৃষ্টি হতেছে দহন। নিস্তেজ হইল স্থ্য কর দরশন॥
স্বায় মালন হের আপন নয়নে। তারকা নিস্তেজ দেখ সবা বিদ্যানে।। **अटबेक बहुन छोने क्यल-आमन। क्लकाल अट्यूम्ट्स** योगजाद इन ॥ ভার পর । মহম্বরে দেবের রাজনৈ । ক্ছিলেন তন তন কছি তব স্থানে।। শিবতেজ নিবারিতে পাঁরে কোন্ জন। হৈন জন ত্রিভুবনে না করি দর্শন ॥ অন্ত কেহ হরতেজ নিবারিতে নারে। অতএব বলি শুন বিবেচি অন্তরে। **যাহাতে** বিশ্বের হিত হয় সম্পাদন। অবশ্য করিব তাহা দেবের রাজন 🗽 চক্রকে লইয়া চল করিব গমন। ভাষা হলে ছরতেজ হবে নিবশ্রণ॥ ভার্যার বিরহে নেই দেব পত্পতি। প্রদীপ্ত অনল সম হইয়াছে জ্রিটিট্ট সেই তেজে বিশ্বসৃষ্টি হতেছে দহন। চন্দ্র হতে হতে পারে তাগ নিবারণ 📲 ভাঁহার ললাটে ইন্দু স্থাপন করিলে। নিবারিত হবে তেজ অতি অবংগে 🕫 আমাদের মনোবাঞ্চা হবে সুসাধন। অধিকন্তু চূট হবে দেব পঞানন । চন্দ্রে প্রভাব ভাহে রটিবে ধরায। এত বলি পিতামহ মৌনভাবে রয় 👫 ব্রনার এতেক বাক্য করিষা অবণ। মনে বনে আনন্দিত যত দেবগণ 🚉 চক্রকে লইয়া দবে মনকুতুসলে। উপনীত হয় আসি আমার গোচরে, অমৃত পূরিত কন্তু সক্ষেতে স্বার। তার মধ্যে ইন্দুদেব গুণের আধার । च्यामात निकटडे चामि ए० एवता। विनय्न-वहरन वट्ट छट्ट शक्षासन । भी পীড়িত হুইগা মোরা এমেছি সকলে। পরিত্রাণ কর প্রভু মুপাদৃষ্টি করে। ভোমার তেতেতে এ লু জগদ সংসার। ফণীনুত হয়ে দেখ হয় ছারখার সত এব রুপা কর স্বার উপরে। এই। করহ প্রভু চল্মা দেবেরে॥ অমু পুরিত ক্লয় কর দরশন। পান কর ইহা প্রভু এই নিবেদন। দেবভাগণে 💒 স্তব শুনিয়া শ্রবণে। আনন্দিত হই আমি নিজ মনে মনে॥ অঙ্গুলী দ্বারাই সুধা করিতে এহণ। কৃষ্ণদেশ্য হস্ত দিই করহ প্রণ॥ ন্ধাঘাতে অর্কিন্দ্র আসিল হাতেতে। সেই চন্দ্র রাখি খামি নিজ ললাটেতে। আমার তেজ হয় নিবারণ। বিশক্ষপে করে তেজ কণ্ঠেতে গমন॥ দেই ছেতু নীলুক্ত নাম যে আমার। কছিলাম গুট কথা নিকটে তোমার। যেরপে ' আমার শিবে রছে শশধর। বলিলাম মেই কণা তোমার গোচর॥ এক-মনে যেই ইহা করয়ে প্রবণ। গাণগত্য লভে সেই আমাব বচন। কৰি পাপ ভারে নাছি ঘেরিবারে পারে। মহাপুণ্য হয তার জানিবে অন্তরে॥

# ত্রিসপ্ততিতম দ্ধ্যায়

বিভূতিকীর্ত্তন প্রসঞ্চে পর্ণাদ ঋষির

উপাখ্যान।

শ্ৰীশিব উবাচ।

অদ্রিজে চন্দ্রদনে চারুপক্ষরাসিনি। শুণু দেবি যথা ভূতিবিলেপনমভূম্ম ॥

্ সনভক্ষার কহে শুন ঋষিগণ। পার্বেতী পুনণ্চ কহে ওছে পঞ্চানন॥ ় কিব্লুপে বিভুতি হৈল ভোমার শরীরে। কেন বা ধরিছ ইহা বলহ আমারে॥ ্রেত শুনি মিউভাষে দেব পঞ্চানন। কহিলেন পার্ন্ন তীরে করি সম্বোধন॥ 🖦 নহ অদ্রিজে চারুপক্তজবাদিনি। ভূতিবিলেপনকণা বলিব এখনি॥ শবিস্থৃতি যেরপে হয় আমার ভুষণ। সেই কথা শুন প্রিয়ে করিব বর্ণন॥ পূর্বকালে ভৃগুবংশে বৈদর্ভ নামেতে। ব্রাহ্মণ আছিল এক জানিবেক চিত্রে। নিয়ম করিয়া সেই স্তপা জান্ধা। যোরণর গুশ্চর্য্যা করে আচরণ।। 🎙 এীয়ে পঞ্চপা করে সেই মহামতি। হেমফেচে দলাশয়ে করে অবস্থিতি॥ অনিল আছার করি সেই মতিমান ॥ ্ৰিষ্বাকালে শৃত্যস্থানে করে অবস্থান। धाक दूरे जिन कवि कंटम पिन गांत । ্প্রথমতঃ মিতাহার করিয়া কাটায়॥ ্প্িত্র ভার পর কর্যে ভক্ষণী। আশ্চর্যা শুনহ দেবি করিব বর্ণন॥ । उनकु भ्राः शक निश्**र णापि क**ति। যত সব জাব জম্ব আগ্রম-ভিতরি॥ ্রো মব কর ১:১ করি আহরণ। ফল মূল জানি দেয় বিপ্লের কারণ॥ , - বা কার্য্য করে তাহারা সকলে। এইরপ ঘটে উদ্ধ তপস্থার বলে মাংসাশী আরণ্য আর ঘত জন্তুগণ ॥ ্, ব জারুরা চুণ করয়ে ভক্ষণ। ে , দ্বেদ পরিহরি তাহারা সকলে। সখ্যভাবে আশ্রমেতে বিচরণ করে॥ । তেজেতে দীপ্ত সেই ঋষিবর। জ্বলন্ত অনল সম জ্বলে কলেবর॥ র কালেতে রবি প্রস্থলে যেমন। তাহার তেজেতে দহে এতিন ভুবন॥ ্র্টার্য বিপ্রতেজে বেন্দর্যি সকলে। দিবানিশি দ্ধীভূত জানিবে অন্তরে॥ া ঘত ইব্য আদি করিয়া বর্জন। পর্ণপাত্র সেই বিপ্র করয়ে ভক্ষ।। ় হুপর্ণাদ নাম রটিল ভাহার। এইরূপে তপ করে শুণের আধার। · १९ किছू पिन कन्नद्रा (ভाष्ट्रना) शक्कु १९ (च्रेट्स श्रद्धा कत्रद्रा याश्रन॥

ক্রমে পর্ণ পরিত্যাগ করি রিপ্রবর। বার্যাত্র খেয়ে শুক করে কলেবর॥ এইরপে বছকাল সমতীত হয়। মম চিন্তা করে সদা তাহার স্বদয় ॥ আমার স্বরূপ চিন্তা করে সেই জন। মন রূপ হাদি মাঝে সুরে জনুক্র # এই হেতু সুপবিত্র হইল হৃদয়। কলাদ-বিহীন হয় দেই মহে। দুয়য় দুয়র তপস্থা তার করি দরশন। পরম সম্ভূষ্ট হই আমি পঞ্চানন॥ যোগায়িতে শুক বপু সেই বিপ্রবর। একদা পতিত হয় ধরণী উপর॥ ডাছা দেখি আমি তথা হয়ে উপস্থিত। তুলিলাম করে ধরি অতীব ত্ররিত॥ জিজ্ঞাসা করিন্ম তারে শুন বরাননে। এরপ বিকার তব কিসের কারণে॥ তব অভিলাব বলহ এখন। যা চাহিবে দিব তাহা কহিনু বচন॥ আমার এতেক বাক্য শুনি বিপ্রবর। বিনয়-বচনে মোরে করিল উত্তর॥ শুন খন एर्गा अङ्गम निरंत्रान । शाम्भरत् (पर ए।न खरे आंक्किन ॥ **ভবर्दम** পুনঃ যাহে বন্দী নাহি হই। তাহার উপায় কর তুমি গো গোঁদাই। বিপ্রের এতেক শকা করিয়া প্রবণ। উত্তর করিত্ব আমি করি সম্বোধন॥ এ বাঞ্ছ। এখন ভ্যাগ কর বিপ্রবর। কালেতে হইবে তব বাসনা নফল।। এত বলিঃ বিপ্রে ত্যাগ করিয়া তখনি। আপন আলয়ে যাই শুনগো ভবানি॥ এদি-(कर्ड विश्वत निव रहन घरना विस्वहन। करत यादा खन वतानरन॥ " কীর্ত্তি যশ ধরাতলে করিব স্থাপন।" এইরূপ চিন্তা করি দিজের নন্দন॥ যোগা শ্রেষ করি বিপ্র বদে তার পর। নিশ্চল নিস্পন্দ করে নিজ কলেবর। ভাষার অরপ মনে করিয়া মরণ। ষ্ট্চক ্েদ ক্রে সেই ন্রোভ্য # অ চন্মাৎ যোগতেজ উদিয়া শরীরে। দেখিতে দেখিতে তারে ভন্মীভূত করে॥ খ্রিমল অন্তরাত্মা জানিবে তাহার। মম পদে প্রবেশিল কহিলাম সার॥ যধন ভাহার দেহ ভ্রসাৎ হয়। তখন অপূর্ব্ব ভর হইল উদয়॥ সেই ভদ্ম আমি দেবি করি দরশন। মনে মনে এইরপ করিমু চিন্তন। আহা কি অপূর্বে ভদ দরশন করি। মনের মালিতা যায় ইহারে নেহারি॥ कोत थाता मग প্রভা নেহারি ইহার। দর্শন করিলে ইয় আনন্দ मঞ্চার॥ ঘনধারা শোভে যথা অন্ব্র-উপরে। শোভিতেছে ভর্মধারা তক্রপ ভূতলে। এত বলি সেই ভশ্ন করিয়া এহণ। আপন অঙ্গেতে আমি করিন্ধ লেপন 🕻 ভক্তের শরীরভন্ম হরিষে লইয়ে। স্বিতিদ লেপন করি লেপিমু স্বদরে। দে বিভূতি ধরি আমি আপন,শরীরে। অপূর্ব শোভিন্ম প্রিয়ে কি বলি তোমারে॥ ভূতিস্নান করি আমি জানন্দে মগন। হেন কালে শুন দেৰি অদ্ভুড গঠন॥ দিব্য দেহ ধরি সেই বিপ্রের কুমার। আবিস্কৃত অক্সাৎ সম্পুথেআমার।

প্রণাম করিয়া মম চরণ উপব। নানামতে স্তর করে সেই বিপ্রবর॥ আমার পরম রূপ দেখাই তাহারে। পুলকে পুরিল বিপ্র মজিল অন্তরে॥ আমার চরণে পরে করিয়া বন্দন। নানামতে যোর স্তব করিল তথন। জেমারপী জুমি প্রভু তোমা নমস্কার। মহাদেব শূলপাণি ওহে গুণাধার॥ ত্রনা ইন্দ নিষ্ণু আদি যত দেবগণ। সকলে ভোমার পূজা করে অনুষ্ণ। পর-ব্ৰহ্ম ত্বি দেব ভোষারে প্রণমি। ভদ্ধ-বিভ্ষিত আক তুমি শূলপাণি॥ উৎপত্তি-বিকাবহীন তুমি মহাত্র। দ্ব খাশোব হারী প্রভূ ফলের কারণ । বিপ্রের এতেক স্তব শুনিয়া প্রবণে। কহিলাম শুন বিপ্র কহি তব স্থানে। ভোমার স্তবেতে তৃষ্ট হইয়াছি আমি। বিশুদ্ধ- এ ৮র তব জিতেনিয় ভূমি ॥ আতে প্রিয়তম তুমি হইলে আমার। গণাধিপ হবে তুমি কহিলাম সার। व्यामात वर्णान रमसे विष्युत नक्ता। भूषाधिश स्ट्यातस्य किलाम ७ वत्। পরম আনন্দে তথা করে অবস্থিতি। কহিলাম তব পাশে ওগো ভগবতী। ধেরপে হুগন্ধী ভূতি জন্মে সলোচনে। অঙ্গেতে যেরপে গরি পুলাক ভ্রমনে। দেই সব তব পাশে করিকু কীর্ত্তন। গ্রহ্ম প্রির কথা অতি অনুতম। প্রাগে পুরুরে পায় যেই পুণ্যকল। ভৃতিহানে হয পোব যে ফল সকল।। প্রভাষেতে যেই ফল লভে নরগ্ৰা বিভাত নানেতে হয তাহা উপার্জন । ভ্ও বুস্বতীর্থে কিন্দা জ্রীগোরীশিখনে। যেই পুল্ গায় নর ক্রিয়া আদি করে। ভূতিআনে সেই ফল অবশাই হয়। নাহিক দনেহ ইথে কহিনু নিশ্চয়। সাগরে মহেন্দ্র সৈলে গৈলে ঘেই ফল। অপত্য জন্মিলে পুণ্য হয় যে সকল॥ ভূতিমানে দেই পুণ্য পায় নরগণ। সত্য সত্য ওগো প্রিয়ে আমার বচন।। বেদা বিফু ইন্দ্র অগ্নি বরুণ শমন। ভুতি স্নান যদি কেহ করে আচরণ । সর্ব্বসিদ্ধি লাভ করে জানিবে অন্তরে। কহিলাম সার কথা ভোমার পোচরে। আদিতা মরুৎ বসু রুদ্র আদি বরি। অখিনীকুমার কিন্বা ওগো সুরেশ্রি। যেই কেহ ভূতিস্নান করে আচরণ। দেবদেব-অণিপতি হয় দেই জন ॥ গন্ধর্ব চারণ দিদ্ধ তণোধনগণ। মজুপি বিভূতিমান করে আঁচরণ।। তাহার প্রভাবে সিদ্ধি লভিবারে পারে। কছিলাম সার কথা তোমার গোচরে । ভক্তিভরে ভৃতিসান করে ঘেই জন। যক্ষ-রক্ষভয় তার না রহে-কখন ॥ পিশাচ হইতে ভয় কভু নাহি হয়। মম তুলা হয় সেই নাহিক সংশয়॥ भग ज्याचा इटा इटा उटा कार्य जा अभिष्ठा नाम करत विष्ठत्।। नर्व তীর্থ-অবগাহে ষেই ফল হয়। তদপেক্ষা-ভূতিস্নানে অধিক নিশ্যয়॥ ভুতি-শ্বান সম কিছু নাহিক সংসারে। ভুতি মম নাহি শান্তি জানিবে অন্তরে॥ উহার সমান তপ আর কিছু নাই। নিগুড় তত্ত্বের কথা কহি তব ঠাই। বিভূতি অকেতে যেই করে বিলেপন। যমভয় নাহি তার থাকে, কদাচন॥ বিংসকেরা তারে নাহি হিংসিবারে পারে। পিশাচাদি তারে হেরে চলি যায় দূরে॥ যেরপে পর্ণাদ হতে ভৃতির জনম। তোমার নিকটে দেবি করিমুক কার্তন॥ অমর-সেবিতা ভৃতি জানিবে অন্তরে। অমৃতবচন দেবি কহিমুকে তোমারে॥ পরম পবিত্র কথা করিলে শ্ব। বিমোচন হয় তার ভবের বন্ধনা

## চতুঃসপ্ততিতন অধ্যায়।

মহাদেবের অফ্টনামের ব্যুৎপত্তি ও লিঙ্গার্চ্চনের ফল। এশিব উবাচ।

মাঞ্চ সর পাণিনা স্পৃষ্ট্র লোকেশঃ প্রান্থ সত্তরং। যুদ্দান্ত রুণ্যতেইত্যুগ্রিকুত্তে নাম পুত্রক॥

সনতকুমার কহে শুন ঋষিগণ। জিজ্ঞানে পার্ব্বতী পুনঃ ওছে পঞ্চানন॥ জগতের কর্ত্তা তুমি ওহে পশুপতি। শাশানে মশানে সদা কর অবহিতি॥ ভদাস্থি-ভুবিত স্থান যথা হয়। তথায় তথায় তুমি ভ্রমহ নি চয়॥ সিদ্ধচারণের। থাকে যেই যেই স্থানে। ভ্রমণ করছ তুমি ভাদৃশ শ্রশানে॥ প্রেতভূত-সমাকীর্ণ যেই যেই স্থান। তথায় তথায় তুমি কর অবস্থান॥ বায়স উলুকে সদা যেধানে বেড়ায়। শিবারব কর্ণে যথা সদা শুনা যা**য়।** কেশজাল সুবিস্তৃত যেখানে যেখানে। সদা তুমি থাক প্রভূ সেখানে সেখানে রাক্ষসগণেরা যথা করে বিচরণ। খট্টাপাটকাদি যথা হয় দরশন॥ বীভৎস রসের যথা সদত উদয়। সদা তথা থাক তুমি ওছে মহোদয়॥ কালসম ছুরাসদ যেই যেই হান। তথায় তথায় তুমি কর অবস্থান॥ তব নাম মহাদেব জগত সংসারে। কিরুপে হইল নাম বলহ আমারে॥ কত নাম আছে তব ওগো পঞ্চানন। 'প্রধান ভাহার কিবা করছ বর্ণন॥ এই সব শুনিবারে কৌ তুহনবতী। অতএব বল বল ওহে পশুপতি ॥দেবীর এতেক বাক্য করিয়া শ্রবণ। হাসিতে হাসিতে কছে দেব পঞ্চানন॥ শুন শুন ওবেগা দেবি বলিক। তোমারে। অতিগুহা মহা খহা জানিবে অন্তরে॥ তুমি মম অর্জা জনী প্রাণের ঈশ্বরী। তব কাছে অবক্তব্য কি আছে স্থনরী॥ আমি আর কাল দৌহে জিমিনু ঘ্ধন। ঈশ্বর, হইতে দেবি শুনহ তখন।। পুরাণ অব্যয়

সেই অনাদি ইশ্র ৷ আমার দিকেতে চাকি রহে নিরন্তর ॥ . যখন শুনহ দেবি লভিন্ম জনম। তখন সদত করেছিলাম রোদন॥ কান্দিতে কান্দিতে আ'ম কহিন্ম ভাঁহায়। কি করিব তাহা প্রভূ বলহ আমায়॥;কিনের কারণে মম হইল জনম। প্রকাশ করিয়া তাহা বলহ এখন।। কিবা নাম মোর তাহা বলহ আঘারে। এই নিবেদন প্রভু করি গে। তোমারে॥ আমার এতেক বাক্য করিয়া ভাবণ। কর দার। মম অঙ্গ করিয়া স্পর্শন।। বলিলেন শুন শুন ওছে মহামতি। ধির হয়ে মম বাক্য কর অবগতি। জনমিয়া অবি-রত করিছ রোদন। এই হেতু রুদ্র নাম করিলে ধারণ॥ আরো তব অক্ত নাম শুন তোমা শলি। মহাদেব দিনু নাম অন্তরে বিচারি॥ সকল বিষয়-বেতা এই দে কারণ। মহাদেব এই নাম বরিন্ন অর্পণ॥ আরো এক কথা বলি শুনহ অবণে। বিশ্ব বিদ্রাবিত হবে তোমার সদনে॥ এই হেতু রুদ্র নাম হইল তোমার। মহাকাল নাম মোরে দিল গুণাধার॥ সকল সংহার আমি কালরপে করি। এই ছেতু অই নাম হইল সুন্দরি॥ আমা হতে এই ৰিখ হমেছে সৃজন। আমাতেই প্রতিষ্ঠিত আছে সর্ক্ষণ।। এই হেডু সর্ক নাম হইল আমার। কহিলাম গুড় কথা নিকটে ভোমার॥ করিতে দুসম 🚧 মি বিশের রক্ষণ। আত্মারে উদ্ভব করি এই সে কারণ॥ ভব নাম হলো মম জানিবে অন্বিকে। কহিলাম গুত কথা ভোমার সম্মুখে॥ দেব দৈত্য আদি করি যেই কোন জন। মম তেজ নিবারিতে না পারে কখন॥ আমার ধর্মণে যোগা কেছ নাহি হ্ব। এই ছেতু উগ্র নাম ধরিন্তু নিশ্চয়॥ সহস্র হতেও মহা আমি মাত্র হই। জগতের অধীখর কহি তব চাঁই॥ এ হেতু মহেশ নাম হইল আমার। কহিলাম তব পাশে করিয়া বিস্তার॥ ঈশরের - ছুই আমি জানিবে ঈশ্বর। কর্তা হর্তা সক্রণতা জগত ভিতর॥ পরিমেশ্বর হলো মম নাম। নিগুঢ় রক্তান্ত এই কহি তব স্থান॥ মম অফ নাম জাই করিমু কীর্ত্ব। যেই জন এই নামে করয়ে পৃজন॥ ত্রিদশ-বন্দিত হয় দেই মহামতি। কহিলাম তব পাশে নিগুড ভারতী॥ মম অফ নাম মেই করয়ে ধারণ। শাশভী পদবা পায় সেই মহাজ্মন্॥ গাণপত্য লভে 'সেই নাহিক সংশয়। কহিলাম তব পাশে জানিবে নিশ্চয়॥ আমার মহিমা ্র্বিল কে জানিতে পারে। একমাত্র জান তুমি এ ভব সংসারে॥ তোমার नियान नांद्री नाहि कान बन। शूक्त आयांत मय नाहिक कथन॥ शूना-ুংকত যেই স্থান ধরণী-মাঝারে। মনোরম সিদ্ধকেত্র ভারত-ভিতরে॥ যথায় - ৰখার দেবি বিরাজে শাশান। তথায় তথায় আ্মি ক্রি অবস্থান॥

এতেক বচন শুনি দেবী ভগৰতী। কহিলেন শুন শুন ওগো পশুপতি॥ লিকোপরি তব পূজা করে যেই জন। কি ফল ণভয়ে সেই কহ মহাতানু॥ মৃত্য গীতে তব পূজা যেই জন করে। নমস্কার করে তোমা একান্ত অস্তরে॥ স্বত দ্বারা দ্বি দ্বারা ক্ষীর দ্বারা আর ।তোমানে যেজন গুলে ওহে গুণাধার॥ গোমবেতে তব গৃহ কর্ণে মার্জিন। মুতদীপ তৈল দাশ ক্রমে অর্পণ।। নানাবিধ মাল্য আর দিয়া উপহার। যে ত্রন তোমারে পজে ওহে গুণাধার॥ কি ফল লভয়ে তারা কহ ত্রিলোচন। এই সব শুনিবারে করি আকিঞ্চন।। পর্যাবিত মাল্য যদি অপ্যে তোমারে। কিবা ফল ঘটে তাহে বলহ আমারো। দেবীর এতেক বাক্য করিয়া প্রবণ। হাসিতে হাসিতে কহে দেব পঞ্চানন॥ শুন শুন গিরিম্বতে বচন আমার। প্রশ্ন করিয়াত তুমি দার হতে দার॥ জল দারা মোরে স্নান করায় যে জন। অগ্রিটোমফল পায় সেই মহারীন॥ স্কান্ধ তৈলেতে মোরে করাইলে স্নান। অশ্বনেধ ফল করি তাহারে প্রদান॥ লিসোপরি মম পূজা করে যেই জন। অতি প্রিয়তম মম সেই মহাজুন। তাহাপেজ। প্রিয় মম নাহি কেহ আর। কহিলাম সত্য কথা নিকটে তোমার॥ মুত দারা হুদ্দ দারা দধি দাবা আব। ক্ষীর দারা কিদা স্থান করায় আমার 👢 এরগে আমারে সান করাযে যে জন। চতুর্দ্দী দিনে লিঙ্গে করয়ে পূজন # অজর অমর হয় সেই মহামতি। তার সম ভক্ত নাহি হেরি বস্তমতী 🛚 ইচ্ছামত লোকে যায় সেই সাধুজন। ব্ৰহ্ম বিফুলোক কিন্তা গোলোক ভূবন॥ व्यथरा किमामभूतत (महे कन याया। नाहिक मत्मह हेरथ कहिनू लामाया। ইন্দ্র সোম বায়ু অগ্নি আর দিবাকর। সতত পূজ্যে তারে দেবতা-নিকর॥ লিঙ্গার্চ্চনরত থাকে যেই কোন জন। সে জন আযার প্রিয় স্বরূপ বচন॥ গন্ধর্ব অপ্সরা আদি পর্গবাদীগণ। নৃত্যগীতে তারে পূজা করে সর্বক্ষণ।। 💂 লিঙ্গে মন পূজা কৈলে যেই ফল হয। জ্ঞাত আছে তাহা দেব-ঋষি মহোদয়॥ নর নারায়ণ আর জৈগীৰতা জানে। কহিলাদ তথ্য কথা তোমার সদনে 📜 এক বর্ষ ভক্তিযুত হয়ে যেই জন। লিকোপরি মমোদেশে করয়ে অর্চনী সক্ষকাম পূর্ণ হয় -জানিবে তাহার। অত্তেমম পুরে যায় সেই গুণাধার 🖟 নানাবিধ উপহার করিয়া অর্পণ। যে জন আমার পূজা করয়ে সাধন । মহাগণপতি হয় দেই মহামতি। আমার বচন মিখ্যা নহে ভগবজি। পशू विक माना विन कतरा व्यर्गन। उत् वर्गनूरत यात्र राहे प्रहाधन। অনন্ত পুৰের ভাগী সেই জন হয়। আমার বচন সত্য জানিবে নিশ্চয়। वह्रमः भागा (यह कतिया पर्शन। पिश कीत यु पिया करोरा मर्शनः

লিক্ষোপরি মন পূজা করে ভক্তিভরে। বিদার্নে চড়িয়া ধার কৈলাসনগরে॥
কৈলাসেতে মন গণ সেই জন হয়। বল্লালেরহে তথা জানিবে নিশ্রন।
আনার সহিত্রে জ্রীড়া করে সেই জন। আমিও তাহার সহ রহি অনুক্রণ।।
তোমার সহিতে যথা আনন্দে বিহরি। সেরুণ তাহার সহ জানিবে সুন্দরী॥
লিক্ষোপরি কৃত্রপূজা করে যেই জন। দেবপুল্ল হয় সেই আমার বচন।।
এই কথা যেই জন ভক্তিভরে পড়ে। সে জন কৈলাসে যায় আমার গোচরে॥
গুজিত হইয়া তথা করে অবস্থিতি। আমার সহিত্রে তথা থাকে নিরবধি।
লিক্ষের মাহাত্ম্য এই করিমু বর্ণন। আরো কি শুনিতে বাঞ্জা বলহ এখন।।

## পঞ্চাপ্ততিত্য অধায়।

শিবের 'গ্রন্টনিইসংখ্যক অবস্থানপীঠ ও নন্দীশ্বহোগ। সন্থকুমার উবাচ। কৈলাসস্থং স্থাসীনং দেবী পৃচ্ছতি শঙ্কর'। কেমু কেমু চ স্থানেমু ড্রন্টব্যেসি ময়া প্রভো॥

সনতকুমার কহে শুন ঋষিগণ। পার্ক্র জ্বানাশে গাহ। কহে পঞ্চানন।।
কৈলাস-শিথরে বসি আছে পশুপতি। সন্বোধন করি কহে দেব ভগবতী।।
শুন শুন নিবেদন ওহে ভগবন্। কোথার কোথার তৃমি থাক দর্বকণ।।
কোথার কোথার দেথ। পাইব তোমারে। ক্লপা করি বল তাহা আমার গোচরে
এত শুনি মিউভাসে কহে পঞ্চানন। জিজ্ঞাসা করিলে যাহা করিব বর্ণন।।
মুহাদেব মন নাম বারাণসী ধামে। প্রয়াগেতে মহেশ্বর জানিবেক মনে।।
মুহাদেব মন নাম বারাণসী ধামে। প্রাগেতে মহেশ্বর জানিবেক মনে।।
মুহাদেব মন নাম বারাণসী আখ্যান। দেবদেব নৈমিবেতে খ্যাত সর্ক্রখান॥
শুলার প্রপিতামহ আখ্যান আখ্যান। ক্রুক্লেত্রে মহাদেব পুণ্যের আথার॥
শুলার মন নাম পবিত্র পুজরে। বিশল-উশ্বর নাম- বিদ্ধাগিরিপরে।।
শুলার মহানাদ আমার আখ্যান। আকটেতে মহেশ্বর কহি তব স্থান।।
শুকেবি মহানাদ আমার আখ্যান। আকটেতে মহেশ্বর কহি তব স্থান।।
শুকেবি ভীর্ণে মন মহাযোগ নাম। স্থলেশ্বরে যমলিক শ্যাত সর্ক্র স্থান।।
পথে হর্ধনাম জানে সর্ক্রজন। মহেশ্বরে স্ক্রেম্থ্য শাস্তের বচন।।
শোরে দিশান দেব ওগো গুলোতনে। হিমাল্যে ক্রেম্বের কহি তব স্থানে॥

মুবর্ণাকে गरভাক আমার অখ্যান। রবে রবধ্ব নাম কহি তব ছান॥ ভৈরবে ভৈত্রবাকার ওগো ভাগবতী। বস্ত্রাপথে ভব নাম ওগো গুণবভি॥ कन भटन छेश नाम कानित्व जागात। जिल्का निवद्ग कानित्वंक मात्र॥ पछी नाम मम (पवि (पवपाक वरन। जृमिक मत्व हु कारन मर्वसहन ।। তুদণ্ডেতে উদ্ধারেতা আমার আখ্যান। কপদ্ধী ছাগল-সতে কহি তব স্থান ॥ वंद्रम आभात नाम क्रिविवारम रहा। आखाउरकश्वरत स्था नाम य निम्ह्य ॥ নীলকণ্ঠ মম নাম গিরি কালঞ্জেরে। একিণ্ঠ আমার নাম মপ্তল-ঈশবে॥ थ्यानत्यात्रांचत्र भग त्यांश नाग इय् । छे जत-द्रेचत्त्र इय् शायका निम्ध्य ॥ যম-অক্ষে স্থাণু নাম জানিবে আমার। কপালী করম-ঈশে জানিবেক সার । রেণুকরে কামবেতা আমার আখ্যান। দেবিকাতে উমাণতি কহি তব স্থানী হরিণ্চত্তে হরি নাম ওগো ভগবতি। শঙ্কর যে ভদ্রচক্তে কাহ ওগো মৃতি॥ বামেশ্বরে জটি নাম কহিনু তোমায়। কুরুটকে সৌম্য নাম বিশ্যাত ধরায়। বিশ্বায় ত্রাম্বক নাম ওগো বরাননে ।ত্রিলোকেতে ত্রিলোচন কহি তব স্থানে ত্রিশুলী আমাব নাম শান জম্পেশ্বরে। ঐতিশলে ত্রিপুরান্তক জানিবে অন্তরে॥ নেপালেতে মন নাম হয় পশুপতি। অক্ষেশ্বরে দীপ্ত নাম ওগো ভগবতি 📭 গলাসাগরেতে নাম অমর জামার। অমরকণ্টকে নাম জানিবে ওদ্ধার 🐉 সপ্তগোদাবরে মম ভাম নাম হয়। পাতালে হাটকেশ্বর জানিবে নিশ্চম 🛊 গ্ৰাধ্যক মম নাম জান কি কিবে। গ্ৰাধিপ ওগো দেবি কৈলান নগরে। হেমকটে বিরপাক আমার আখ্যান। গন্ধমাদনেতে হন্তা কহি তব স্থান॥ নাম হ্য দণ্ডধর। জলেখনে জললিক খ্যাত চরাচর 🕻 হুতেশ্বর গণাগ্যক্ষ আমার আখ্যান। কৈরাত নিরাতকেতে কহি তব স্থান 🌡 দানববদের জন্ম বিদ্যানিরিপরে। বরাছ আমার নাম জানিবে অন্তরে। 🕻 গঙ্গাহ্রদে হিমন্থান আমার আখ্যান। অমল কত্বামুখে কহি তব স্থান 🛤 কোটেশ্বর তীর্থে মন শ্রেষ্ঠ নাম হয। বরেষ্ট ইষ্টকাপথে কহিন্দু নিশ্ব 🞎 অলক-ঈশ্বর নাম লকানগরীতে মি প্রহন আমার নাম কুমুমপুরেতে। অষ্ট্যুক্টি নাম এই করিত্র কীর্তন। পুরাণে কীর্তিত আছে জানে সর্বজন 🕍 পবিত্র প্রয়ত হয়ে যেই সাধুমতি ৷ ছুই সন্ধ্যা পাঠ করে ওগো ভগবতি 🎉 দশ অশ্বনেধফল সেই জনপায়। কহিলাম সার কথা পার্বতী তোমায়ী 📢 সনতকুষার-মুখে শুনি ঋষিগণ। পুনশ্চ জিজ্ঞাসা করে ওছে মহাজন॥

तिङ्जि जासंत्र अनि मत्ति वृत्ति । श्रिज्य स्ता कि अर प्राम्ति ॥ विङ्जि जासंत्र अनि मत्ति वृत्ति । य्ति क्तिया एक श्री के कामना ॥

ছত নি বিধিয়ত,কটে বীরে ধীরে। তন তন খবিগণ কহি স্বাকারে॥ वस्तत तितिष्ठ वनि चौष्ट शकानन। नसीयत देनकारम जिल्लारम वहन॥ ওন শুন ত্রিপুরারে বচন আমার। তোমার মাহাত্য কছ ওহে দয়াধার। এতেক বচন শুনি দেব পঞ্চানন। কহিলেন শুন নন্দী করিব বর্ণন। একারা ইইয়া শুন বচন আমার। যেই কালে সতী দেহ করে পরিহার। ব্যার ব হংয়া জামি হঃখিত অন্তরে। ঘধায় তথায় জামি এমি ঘূরে ঘূরে। অধিল ংরণা আমি করি বিচরণ। সসাগরা সপ্তদ্বীপা অখিল ভুবন॥ যথার তথার মম তৃপ্তি বোধ হয়। তথায় তথায় আমি অমিকু নিশ্র॥ পুর্বতে পর্কভে আমি হারি অবস্থান। কহিলাম তব পাশে ওছে মতিমান্। শ্বায় তথায় আগি করিতু বসতি। মহাপুণা দেই দেই ওহে মহামতি॥ সেই সেই দেশ যদি প্রদক্ষিণ করে। মহাধল হয় তার জানিবে অন্তরে। পায়ুত সহত্রে ধেনু দানে যেই ফণ। সেই ফল পায় সেই জানিবে নকল। আমি চন্দ্র আমি তুর্ব্য অরুণ অনল। পৃথী দিন রাত্তি সন্ধ্যা আমিই সকল॥ আমি মৃত্যু আমি কাল জানিবে অন্তরে। প্রলয়ে বড়বা-রূপী জানিবে আমারে॥ ই দিয় ই দ্রিয়-অর্থ নকলই আমি। অম্য় সদত আমি জানিবেক তুমি। স্মামি জল জলবাদী জলের ঈশ্র। প্রন দহন আমি ভূগর দাগর॥ আমা হতে হয় সর্ব্ব ভূতের সৃজন। যুগে যুগে পুন করি সকলি হরণ। আখার সায়ায় যত জীব জন্তুগণ। শত শত ধোনি মধ্যে করে বিচরণ। ত্রিপুর জিলুরে আমি করেছি সংহার। ব্যয়াছি তারকেরে ওহে গুণাধার। কত কৈতা মারিয়াছি কে বলিতে পারে। যাহাদের বল বীর্যা খ্যাত চরাচর॥ ষীদের নিশাস বায়ু হইয়া প্রবল। ভূবন কম্পিত করে খ্যাত চরাচরে॥ সেই শিষ দৈতাগণে করেছি নিধন। আমার মাহাত্যা বল জানে কোন্জন। লৈওভূতে নিরস্তর করি অবস্থান। সর্বভূতে ক্ষয় আঘি করি মতিমান॥ ,ইভিহাস পুরাণেতে দদ। মম স্থিতি। বেদমাঝে নিরস্তর করি অবস্থিতি॥ হেন **দেশ ন**ি বেবি জগত সংসারে। মম স্থিতি কভু নাবি আছে যেই স্থলে॥ ্বামা-শৃত্য স্থান নাহি করি দরশন। ওকত-বৎসল আমি ওহে মহাত্মন॥ সামার শরণ লয় যেই মহামতি। অনক্ত মনেতে মোরে পুজে নিরবিধি। ভাষার উপরে ভূট রহি দর্বকণ। গাণপত্য তারে আমি করি সমর্পণ। পি বদ সম্ভট হই তাহার উপরে। নারীর যৌবন আমি জানিবে অন্তরে। শন দম নিয়মাদি আমি মাত্র নাই। কহিনু নিগূঢ় কথা এবে তব ঠাই॥ সত্ত্ব রজ তম আমি আমি অহঙ্কার। কহিনু ভোমার পাশে ওহে গুণাধার॥

আমার মাহাত্ম্য কথা যেই জন্ম পড়ে। নর্বে তীর্থফল পায় জা উপবাদে यहे कन इत्र छेलार्ड्जन। म कन व्यक्ति करत्र मिहे ग्रहापू ব্যাধি কভু নাহি থেরে তাহার শরীরে।কামজর করে দেই নিজ শক্তিব জন্তর্য্য অনুষ্ঠানে যেই কল পায়। সত্যবাদিতায় যাহা ফলে মহোদ ইহার পাঠেতে হাসা হয উপার্জ্জন। তোমার নিকটে নন্দী করিনু কীৰ্ত্তন। ভক্তিভরে ষেই জন অধ্যয়ন করে। পাপশূল হয দেই জানিবে অন্তরে॥ मानव-প্রধান হয় সেই মহাত্ন। সর্ক্রপাপ দেহ ছতে হয় বিমোচন। অন্তকালে রুদ্রলোকে সেই জন যায।কহিনু মাহাত্য কথা নন্দি গো ভোমায় এত তানি নন্দী কছে ওছে ভগবন্। যোগের নিগৃত কথা বলহ এখন॥ সর্ববানফল হয় কি কাজ করিলে। সর্বযক্তফল পায় যানবনিকরে॥ চণ্ডাল ক্রব্যাদ ব্যাধ পশুযোনিগণ। কি কাজ করিলে মুক্ত হয ভগবনু॥ এই সব ক্লপা করি বলহ আমারে। নিবেদন করি প্রভু তোমাব গোচরে। এতেক বচন ওনি দেব প্রথতি। কহিলেন শুন শুন ওহে মহামতি॥ যত দিন ধ্যানযোগ না ক্রমে অন্তরে। তাবত ভ্রমরে জীব এ ভ্রম-সারে॥ জন্মকর্মাবশ্বতী তত্দিন রয়। বনিমু নিগুচ কথা ওছে মহোদয়। দেব দৈ ভা ঋষি পি ভূ অধাদি সকলে। ধানিযোগ হেতু দীপ্তি ধরে কলেবরে। কিবা গৃহী বাণপ্রস্ক ভ্রদ্ধচারী আর । অথবা ভিশ্বক আদি ওহে গুণাধার। मकत्नई शान र्यारा पी थि ना ७ करत । कर्प निश्व नर छात्र। कानिर অন্তরে ॥ ব্রাহ্মণ ক্ষতিয় বৈশ্য কিন্দা শূদুজাতি। গ্রানযোগ যদি লাভ করে মহামতি॥ মহাদীপ্তি ধরে তার। নিজ কলেবরে। কর্মে লিপ্ত নাহি হয় জানিবে অন্তরে॥ চণ্ডাল হইযা যদি ধ্যানযোগ পায়। গুভলোক পায় তারা কৃষ্টিকু তোমায় ॥ যাবত পাতক তার হয় বিনাশন । নাহিক সন্দেহ ইথে ওহে মহাজুন্।। গোপনাম ধ্যানযোগ লভে যেই জন। সর্বপাপে মুক্ত হয় দেই মহাত্মন॥ शाना যোগমাহা ন্যাদি শুন মহামতি। মাহাত্মের নাৰি সীমা নাহিক অবঞ্চি॥ অগম্যা গর্মন যদি করে কোন কন। ত্রন্ধহাতী সুরা-পায়ী যেই নবাধম।। গুরুদারা অপহরি যেই জন লয়। গ্যানযোগ সেই যদি লভে মহোদয়॥ যতেক পাতক তার হয় বিমোচন। কাষ্ঠরাশি দগ্ধ করে, **यमन परन ॥** कूमांती-भमन भाभ धानियांत रति। जलकालक (पास বিনাশে অচিরে॥ যে,জন অপের পান করে সক্ষণ। ধ্যানষোগ সেই যদি করে আচরণ॥ তাহার যতেক পাপ বিনাশিত হয়। কহিলাম তব পালে अट्ठा मद्वीपम । शानिद्यागविधि कात्न त्यहे पराश्चन । मुक्तिमार्श्न नटक ८ उ न विधिक्यः न । जनवा (समेन हेक्का कत्रदश्र] जलदश (महेक्कण स्थापन याश ্র হিন্ম তোমারে॥ ব্রহ্মালোকে সেই জন করয়ে গমন। অর্থবা সে জন যায় বৈকুণ্ঠ ভূবন । সোমলোকে স্থ্যলোকে কিন্তা সেই যায়। প্রবলোকে ময়ে কিম্বা কহিন্দ তোমায়॥ ধ্যানযোগ উপার্জ্জন করে যেই জন। আমারে দে জন পার স্বরূপ বচন ॥ চারি বেদ অধ্যয়নে যেই ফল হয়। তদপেকা ধ্যান-যোগে জানিবে নিশ্চয়। অখনেধ সহত্রেতে হয় যেই ফল। রাজস্য় শতে হয় य कन मकन ॥ (महे कन शानरपांगी करत डेपार्ड्वन । भारञ्जत वहन विया। নহে কদাচন। যেমন আকাশ ব্যাপি আছে নর্বস্থানে। অথচ কিছুতে লিপ্ত নছেক ভুবনে॥ সেইরূপ পাপে লিগু ধ্যানী নাহি হয়। কহিনু নিগৃ তত্ত্ব ওহে মহোদয়। সহত্র গৃহত্ব আর একচারী শত। সহত্রেক বাণপ্রস্থ ওহে মুহারথ।। এই সব হতে ধ্যানা অতীব প্রধান। কহিনু নিগুঢ় কথা তব বিদ্য-মান ॥ ধ্যানযোগী পরিতৃষ্ট যাহার উপরে। বংশহদ্ধি হর ভার জানিবে অন্তরে।। ধ্যানযোগী যেই দেশে করয়ে গমন। পবিত্র সে দেশ হয় শান্তের বচন। প্রতিগ্রহ ধ্যানযোগী যদি কভু করে। পাপে লিণ্ড নাহি দেহ হয় কোনকালে।। পর্বত আশ্রয় করি গজ আদি গণ। সেই এপ অবস্থান করে সর্বকণ ॥ পর্বত তাজিয়া কভু কোথা নাহি যায়। যোগীগণ হেইরূপ কহিসু ভোমার ॥যোগীরে ছাড়িয়া যোগ না যায় কখন। বলিন্ত তোমার পাশে ওছে শহাত্মন॥ ধ্যানযোগ বলিলাম তোমার গোচরে। বিবেচিয়া ঘাহা হয় করহ অন্তরে ॥ একমনে যদি ইহা করে অধায়ন। স্থবা ভক্তি করি করয়ে এবণ ॥ মহাপুণ্য হয় তার জানিবে অন্তবে । তারে হেরি বিপ্নরাশি চলি যায় দুরে ॥ অমর-নিকর দদা পূজয়ে তাহারে। অপারারা দদা তারে অভিলাষ করে॥ তাহারে হেরিতে বাঞ্ছা করে দিদ্ধগণ। তার পরে পরিভুষ্ট যত পিতৃগণ॥ রোগ শোক তারে নাহি করে আক্রমণ। শমন তাহার পাশে সদত দমন॥ হিংস্র খাপদেরা তারে নেহারি নয়নে। ভয়ে ভীত হয়ে পশে গহন কাননে॥ ছুন্তর প্রান্তরে কিম্বা কানন ভিতর। যদ্যপি প্রবেশ করে সেই বিজ্ঞবর॥ বিশ্ব নাহি হয় তার জানিবে অন্তরে। দেব সম রহে সেই জগত সংসারে॥ পুরাণের সার হয় শ্রীশিবপুরাণ। শুনিলে অন্তরে হয় দিব্য তত্ত্বজ্ঞান ॥

## ় সপ্তস্ততিত্য অধ্যায়।

#### ধ্যানের ফল।

ধ্যানং কতিবিধং দেব যেন ত্বাং চিন্তয়েন্নরঃ। এতমে সংশয়ো দেব তত্ত্ববাধ্যাহি স্থুত্রত।

সনতকুমার কহে শুন ঝিবিগণ। যেরূপ বলিবাছিল দেব পঞ্চানন। নন্দীর নিকটে যথা কহে পশুপতি। বলিব সে সব কথা কর অবগতি॥ জিজ্ঞাসা করিল নন্দী দেব মহেশ্বরে। শুন প্রভূ নিবেদন করি যে তোমারে॥ কিরূপ তোমার ধ্যান করহ বর্ণন। কিরূপে করিবে চিন্তা কহ মহা**জ্ন্।** দন্দেহ আছ্যে মম এদৰ জানিতে। রূপা করি কহ দেব ন্যামি পদেতে । নন্দীর এতেক বাক্য করিয়া এবণ। হাসি হাসি কহে তাহে দেব পঞ্চানন। **এই যে হে**রিছ নন্দী মম কলেবর। একা বিষ্ণু ক্রচে ইথে আছে নিরন্তর।। দক্ষিণ পার্শ্বেড রকে কমল- আসন। বামভাগে অংক্টিড দেব নারায়ণ ॥ মধ্যভাগে রুদ্রুদেব জানিবে অন্তরে। এরপে করিবে চিন্তা সদত আমারে। একমনে এইরপে করিলে চিন্তন। ! নিজাণী হহবে ধ্যানী আমার বচন॥ যেই জন এইরূপে চিন্তয়ে আমারে। রুক্সাযুজ্যতা পার জানিবে অন্তরে।। প্রতিদিন মোরে ঘেই করয়ে মবণ। পাতক তাহাব দেহে না রহে কখন। ওঙ্কাররপক মোরে জানিবে অন্তরে। ওঙ্কাররপেতে ধ্যান করিবে আমারে॥ তিন বর্ণ মিলি হয় ওঙ্কার আকার। অকার উকার আর জানিবে মকার।। মকারেতে স্বয়ং ত্রন্ধা ওহে বিজ্ঞবর।। অকারেতে নারায়ণ উতে মহেশ্বর। অকারেতে সেই তুই করিবে যোজন ॥ উকার মকার মাত্রা করিয়া যোজন। তার পর সেই ওম্ চিন্তিবে অন্তরে। এরপ করিলে তুষ্ট জানিবে আমারে ॥ নিত্য ধামে যায় সেই আমার বচন।। ষেই ব্যক্তি এইরূপে করয়ে চিন্তন । পুনঃ নাহি আদে সেই এই বসুমতী। নিৰ্বাণ মুকতি পায় দেই মহামতি। ত্র্যেকর-আ্রাক্ত ওম্জানিবে অন্তরে। উহাই পর্ম বেন্ধ কহিনু তোনারে॥ সদত হৃদয়ে ধ্যান করিবে ওঙ্কার।। যোগরত যেই জন এ ভবমাঝার ৷ সকল মন্ত্রের শ্রেষ্ঠ ওুম্ মাত্র হয়। আমার বচন সত্য জানিবে নিশ্চয় 11 পুনর্জন্ম নাহি সেই ধর্ময়ে কখন।। ওঙ্কার নিয়ত ধ্যান করে থেই জন। जिरएर म्रांच ने का नित् एका है। আমি একা আর সেই বিষ গুণাধার ॥

ওন্ধার-যোগীর পুণ্য কি করি বর্ণন। অক্ষর অজর সেই জানিবে বচন।। একমনে ওক্ষারেরে করিবে মরণ।। ইন্দ্রিয় নিগ্রহ করি যোগবিৎ জন। এইরূপ দদা চিন্তা করিবে অন্তরে। বিরাজে পুরুষ এক ছাদ্ম মাঝারে।। অঙ্গুষ্ঠ-প্রমাণ সেই পুরুষ-প্রবর। ওঁরূপী হয়েন তিনি খ্যাত চরাচর।। এইরূপ চিন্তা করে যেই মহামতি। ওদ্ধার সদত জপ করে যে স্থমতি।। ত্রন্থ-আরাধনা হয় জানিবে তাহার। কৃষ্টিনু নিগুড় ওত্ত্ব নিকটে তোমার।। 🎤 🎢 प्राप्त प्रमाधन करत (यहे जन। ই ক্রিয় নি এই করি হয়ে একমন।। ৰ্মৰ্বপাপ হতে মুক্তি সেই জন পায়। শান্ত্রের প্রমাণ এই ক**হিন্দু ভোমায়**।। অব্যয় শিবের পদ পায় সেই জন। অত্যদ্ভত তেজ করে শরীরে ধারণ।। সেইমত থাকে সেই নাহিক সংশয়।। वाश्रुद्दीन स्थारन भील व्यहेमछ त्रश्र। **७कांत यथेन** भान कतिर युक्त। কম্পিত শরীর নাহি করিবে তখন ৷৷ বিশুদ্ধ অন্তরে ধ্যান করিতে হইবে। তবে ত মনের বাঞ্চা অবশ্য প্রিবে।। ইন্দ্রিগণেরে বশ প্রাণায়ামে করি। ওঁঙ্কারে করিবে ধ্যান শাছের বিচারি॥ অকার উকার আর জানিবে মকার।এতিনে চিন্তিবে যোগী ওহে গুণাধার॥ ইহাতেই মোর চিন্তা হইবে সাধন। কহিনু শান্তের কথা তেমোর সদন।। অকারেরে ঋগু বেদ জানিবে অন্তরে। যজুবেদদ বিবেচনা করিবে উকারে॥ মকারেরে সামবেদ করিবেক জ্ঞান। **अकर**न अथर्व त्वम ७८२ मिलमान्।। ওন্ধার পর্ম স্কা শাস্ত্রের বচন। ওন্ধার পরম প্রভু ওহে মহাত্মন।। यभ-नियमापि कति हत्य धकमन। ওম্বারেরে ছদিনাবো করিবে মরণ 11 সহস্র সহস্র পাপ যেই জন করে। ওদ্ধার ঘতাপি সেই ছদিমাঝে শরে।। তাহার পাতকরাশি হয় বিমোচন। भारञ्जत वहन मिथा। नट्ड कपाइन।। শিবের সমান হয় জানিবে ওঙ্কার। ভঙ্কার প্রমারন্ধ কহিলাম সার।। বন্ধা আদি দেবগণ একান্ত অন্তরে। निवस्त अक्षारतरत क्षिमारब यस्त ॥ होत अमारम मुक्ति मर्वकन शाव। কহিত্ব নিগুঢ় তত্ত্ব জানিৰে তেশ্ধয়।। ামাত্ত যোগের কথা করিত্ব কীর্তন। ইহাতে মহৎ পুণ্য পার জীবগণ।। র্গাক্তভরে যেই জন অধ্যয়ন করে। অথবা প্রবণ করে একান্ত অন্তরে।। মথবা দিজের দারা করায় পঠন। প্রবণ করায় কিন্তা যেই কোন জন।। ব্বেতীর্থফল পার দেই মহামতি। মিখ্যা কভু নহে এই শাস্ত্রের ভারতী।। রোণের দার এই ঐশিবপুরাণ। পড়িলে শুনিলে পায় দিব্য তত্ত্বজান॥

# অফ্ট্যপ্রতিতম অধ্যায়

ধ্যানযোগ ও প্রাণায়ানাদি। ভগবন শ্রোত্মিচ্ছামি ধ্যানযোগত বিস্তরং। কথয়স্ব মহাভাগ গ্রোতৃং কৌতৃহলং মম।

পুনশ্চ জিজ্ঞাসে নন্দী ওহে ভগবন্। শুনিকু তোমোর মুখে অপূর্ব্ব কথন।। যত শুনি তত ইচ্ছা হয় বলবতী। অতএব বল বল ওহে পশুপতি।। বিস্তারেতে ধান যোগ করহ কীর্তন। শুনিবারে কৌতুছলী হইতেছে মন॥ নন্দীর এতেক বাক্য শুনি পশুপতি। কহিলেন শুন শুন ওহে মহামতি।। জিজ্ঞাসা করিলে যাহা করিব বর্ণন। শুনিলে লভিবে মুক্তি ওমে মহাত্মন্।। প্রাণায়াম যোগে হয় সকল সাধন। তিনরূপ প্রাণায়াম শান্তের বচন।। উত্তম মধ্যম হয় অধম যে আর। শুন শুন বলিতেছি ওহে গুণাধার।। বত্রিশ মাত্রায় যদি করে প্রাণায়াম। উত্তয তাহারে কহে শাস্থের প্রমাণ।। চবিবশ মাত্রায় হয় জানিবে মধ্যম। অধম দ্বাদশমাত্রা ওহে মহাজ্মন। ত্রিবিধ লক্ষণ এই করিনু কীর্তুন। শক্তি অনুসারে ইছা করিবে সাধন। মদমত্ত সিংহ ঘণা ছুরাধর্য হয়। আরণ্য কুঞ্জর ঘণা ওচে মহোদয়।। সেইরূপ হয় যোগী প্রাণায়ামবলে। মনের বাসনা তার অবশ্যই ফলে।। ক্রমে ক্রমে প্রাণায়াম অভ্যাস করিলে। বায়ুসিদ্ধি হয় তার জানিবে অন্তরে।। অধিক বলিব কিবা ওহে মহাত্মন । প্রাণচিত্য যেই জন করয়ে দাধন।। নাহি ধাকে জগতেতে অসাধ্য ভাহার।কহিনু নিগুঢ় তত্ত্ব নিকটে ভোমার॥ প্রাণচিন্তা করি আমি ওছে মহাত্মন। চিত্ত প্রান্তি অনুভব করি সর্বকণ।। শুভদৃষ্টিবলে আমি মেরুর সমান। অচল হইয়া আছি ওহে মতিমান।। জাএথ সুষুপ্তি স্বপ্ন কোন অবস্থাতে। বিচলিত নাহি আমি জানিবেক চিতে।। প্রাণ ও অপান ছুয়ে হয়ে অনুগামী। আত্মারে নিয়ত ছদে নিরখি যে আমি তাহাতে অশোক পদ হয়েছে আমার। স্থিরচিত্ত হয়ে আছি সংশার-মাঝার . প্রশয় যশ্পন আদি দিবে দরশন। তখন দেখিব আমি জীবের পতন।। ভূত কিম্বা ভবিষ্যৎ তিন্তা নাহি করি । নিরন্তর আছি আমি স্থির দৃষ্টিকরি॥ कनवाश किছू मम नाहिक अंग्रद्ध। निकल ममान आहि मरमात मावादि ॥ ভাবাভাবময়ী চিন্তা করি সর্বকণ। আত্মতে সংস্থিত আমি আছি মহাজ্যন।

এই হৈছু নিরন্তর হয়ে অনাময়। চিরজীবী হয়ে আছি ওহে মহোদয়। প্রাণাপান সমাযোগ যে সময় হয়। তাহা' মারি তৃষ্ট মম হয় যে হাদয়।। এই হেতু অনাময় আছি সর্বকণ। চিরজীবী হয়ে আছি ওহে মহাজ্মন্।। "এ সব হয়েছে লাভ অন্তই আমার। পেযেছি উত্তম দ্রব্য সার হতে সার॥" এইরপ চিন্তা নাহি আমার অন্তরে। অনাময় হযে আছি এই জ্ঞানবলে॥ প্রাণচিন্তা করি আমি ওহে মহামতি। লভিয়াছি এই ফল জানিবে স্থমতি॥ দেহের মধাস্থ যত অসংখ্য নাড়ীতে। সঞ্চারিত হয় বায়ু জানিবেক চিতে॥ তার নাম প্রাণ বায়ু ওহে মহাজ্মন। পঞ্চ ভাগে স্থবিভক্ত সেই বায়ু হন॥ এ বায়ু স্পন্দিত হলে অন্তর মাঝারে। কম্পনা উল্লুখী সন্ধিং অমনি সঞ্চারে॥ তাহাকেই তিত্ত কহে যত স্থাগণ। প্রাণ রোধে তিত্তশান্তি হয় উৎপাদন ॥ চিতৃ শান্তি হয় গবে গুহে মহোদয। জগতেব লয হয় তখনি নিশ্চয়॥ এতেক বচন শুনি কহে মন্দারা। শুন শুন নিবেদন ওহে দিগদার॥ প্রাণ বায়ু দেহমাঝে করে সঞ্চরণ। কিরপে রোধিবে তারে কহ মহাজ্মে।

শিব কহে শুন শুন বলিব ভোমারে।যেই রূপে, প্রাণ্বোধ করিবারে পারে॥ শাস্ত্রহর্চা সাধুসঙ্গ। বৈরাগ্য যে আর। এই তিন হতে হয় সংসারে বিকার॥ সংসারে অনিজ্ঞ। জন্মে জানিবে যখন। ব্রহ্ম ধ্যানে মন হ্য নির্ভ তখন॥ এইরপে ধ্যানযোগ হলে গাঁওতর। প্রাণের স্পন্দন নাহি থাকে তার পর। পুরুক কুদ্রুক আর রেচক সহায়ে। প্রাণায়াম স্থ-অভ্যন্ত করিলে হৃদয়ে। ঘনতর ধ্যানযোগ হয় উংপাদন। প্রাণের ম্পন্দন আর না রছে তখন॥ সম্বিদ সুষ্পু হলে ওক্কারোচ্চাবণে। স্পন্দহীন হয় প্রাণ জানিবেক মনে॥ রেচক অভ্যাদ হেতু প্রাণের স্পদ্দন । তিরোহিত হয়ে যায় ওহে মহাত্মন॥ পুরক বলেতে রুদ্ধ হয় যে সঞ্চার। তাহে প্রাণ স্পন্দহীন জানিবেক সার॥ কুম্বক অভ্যাস যদি করে কোন জন। স্তম্ভিত শরীর হয় জানিবে তখন॥ কাজে কাজে প্রাণ স্পন্দহীন হয়ে রয়। কহিনু নিগৃঢ় তত্ত্ব ওতে মহোদয় ॥ জিহ্ব। দ্বারা ক্ষুদ্র জিহ্ব। কৈলে আক্রমণ। উর্দ্ধগতি হেতু প্রাণনা হয় স্প্রাননা निर्विकण्य मर्गाधिए अपय-व्याकारम । मधिरपत व्यक्तान इय योगवरम ॥ ুপ্রাণবায়ু সেই হেতু স্পন্দহীন হয়। এইত নিয়ম আছে জানিবে নিশ্চয়॥ ছাদশ অঙ্গুল স্থান নাসাথা-বাহিরে। প্রাণের সঞ্চার স্থল জানিবে অন্তরে॥ मिर शान जात्र मन निरुष कतित्य । मिर्पिएक त्रांथ किटल अकांग्र शप्त्य ॥ তখন নাহিক রহে প্রাণের স্পদ্দ। এই ড বিধান আছে ওহে মহাত্মন।। তালু হতে অম্বরমে অভ্যানের বলে। প্রাণে আনি সম্বিৎ রুদ্ধ করিতে পারিলে প্রাণের স্পন্দ আর না রচে তখন। অধিক বলিব কিবা ওচে মহাত্মনু।। জ্রার মধ্যে অক্ষিতারা করি নিয়োজন। জ্ঞানেন্দ্রিয় রোধ করি যোগুবিং জন্ম জিহ্বা ও প্রাণবায়ুকে কপালকুহরে। ত্রদ্ধারে সংস্থাপিত করিতে পারিলে। প্রাণের স্পন্দন আর না রহে তখন। প্রাণরোধ কথা এই করিতু কীর্ত্তন 🕷 আরো এক কথা বলি শুন মহোদয়। সংসার কিঙুই নহে জানিবে নিশ্চয়। কল্পনা কল্পিত হয় অখিল সংসার। শূক্তময় এই সব ওছে গুণাধার॥ এইরপ মনে যনে করি বিবেচন। বর্জন ম্যাপি কবে যতেক বাসনা। তখন নাহিক রহে প্রাণের স্পন্ন। অধিক বলিব কিবা ওছে মহাজ্মন ॥ क्तरम क्रांप श्रीनात्राम कतिरव गायन। नजुरी निक्न गव इश जकातन॥ ধীরে ধ'রে কার্য্য যদি কভু নাহি করে। বিপদ ঘটিবে ভার জানিবে অস্তরে প্রাণচিন্তা তব পাশে করিত্ব কীর্তন। গ্যানযোগ বলি ইছা প্রদিদ্ধ ভূবন। একমাত্র যোগীজন হৃদয়-মাঝাবে। দিবানিশি প্রাণতিতা ম্যতনে করে । তাদের অসাধ্য কিছু নাহি থাকে সার। ত্রিলোক-বিজয়ী তারা ভবের মারার॥ এতেক বচন বলি বিধির নন্দন। কহিলেন ঋষিগণে করি সম্বোধন। শুনিতে বাসনা যাহা আছিল নবার ৷ সাধ্যমত সেই সব করিমু বিস্তার ॥ মুক্তিনাভে বাঞ্চা থাকে যাহার অভরে। নে জন সাধিবে ইহা অতি যবু করে । যোগের স্থান ভূমে নাহি কিছু আর । শিবের বচন ইছা জানিবেক সার॥

# উनामी िं उन अक्षात ।

(गांत्रनाथन।

শ্রোত্মিজামি ভগবন্ যোগদ্য পরম: বিধিং।
তদহং জ্ঞাত্মিজামি তৎপ্রদাদাদ্যিজাতা।
ভগবন্ধেন মুচ্যন্তে নরাঃ পাপেষু যে রতাঃ।
ব্রাদ্ধাঃ ক্রিয়া বৈশ্যাঃ শুদ্রোক্তিব তথা বিভো।

ব্যাস আদি ঋবিগণ সনত-কুমারে। পুনশ্চ জিন্ডাসা করে প্রমণ্ডর স্বরে।
তন তন ভগবন করি নিবেদন। যোগের বিধান কই ওহে মহাত্মন ॥
পাপীগণ কিবা রূপে মুক্তিলাভ করে। এই কথা কহ দেব মোদের সোচরে।।
ভাদ্ধণ ক্তিয়া বৈশ্য শ্রু আদিগণ। মুক্তি লাভ করে কিলে কহ মহাত্মন।

( প্র )

এত শুনি বিধিমূত কৰে মধুস্বরে। শুন শুন বলিতেছি তোমা স্বাকারে॥ যেরপ বলিয়াছিল দেব পঞ্চানন। বলিতেছি সেই কথা করছ প্রবণ॥ যোগের বিধান শুন কহিব সবারে। যোগ হতে মুক্তিলাভ খ্যাত চরাচরে॥ জীবের হৃদয়ে পদ্ম আছে মনোহর। শোভিতেছে সেই পদ্মে দ্বাদশটী দল।। রক্তবর্ণ সেই পদ্ম জানিবে অন্তরে। শোভিতেছে সেই পদ্ম দাদশ অক্রে॥ ককারাদি ঠ পর্যান্ত দাদশ অকর। দ্বাদশ দলেতে শোভে অতি মনোহর॥ প্রমধ্যে শোভা পায় যেই কর্ণিকার।তার মাঝে আছে পীঠ ত্রিকোণ-স্থাকার দে পীঠে যৎবীজ শোভে ওহে ঋষিগণ। বায়ুযন্ত্র তার নাম বিদিত ভুবন॥ সেই যন্ত্রে প্রাণবায়ু করে অবস্থিতি। প্রাপ্ত-অভিমানী প্রাণ জান নিরবধি॥ বাসনাতে অলক্ষত হইয়া পরাণ। জীবের হৃদয়ে সদা করে অবস্থান। কার্য্য-ভেদে প্রাণবায়ু নানা নাম ধরে। নেকথা বাহুল্য বলা শুন তার পরে॥ সংক্রেপে স্কল কথা কহিব বর্ণন। মন দিয়া শুন তাহা প্রহে ঋষিগ্র। ছুইরূপ গ্রাণ হয় জানিবে অন্তরে। অন্তত্ম বহিঃস্থ এই খ্যাত চরাচরে॥ অন্তঃস্থ প্রাণের নাম শুনহ এখন। তাহার মানোতে প্রাণ জানিবে প্রথম।। অপান সমান পরে উদান যে হয়। ব্যানবায়ু তার পর জানিবে নিশ্চয ॥ অন্তঃস্থ পাঁচটা প্রাণ করিবু কীর্তন। বহিঃস্থ প্রাণের কথা করহ এবণ। নাগ কুর্ম এই ছুই তৃতীয় ক্লকর। দেবদত্ত ধনঞ্জয় খ্যত চরাচর॥ এই দশ প্রাণ থাকি জীবের শরীরে। স্ব-আধিকারিক কার্যা স্পাদন করে॥ বহিঃস্থ হইতে জান অন্তঃস্থ প্রধান। তার মাঝে শ্রেষ্ঠ প্রাণ আর যে অপান॥ স্থাদরেতে প্রাণ রহে গুহেয়তে অপান। নাভিদেশে অবস্থিত জানিবে সমান॥ কঠেতে উপান বায়ু করে অবস্থিতি। ব্যানবায়ু সর্ব্বদেহে আছে নিরবিধি॥ नात जापि शक वाधू विश्विता तय। वित्नित्र वित्निय कार्या नाधरस निक्तस ॥ নাগ বায়ু সম্পাদন করয়ে উদ্গার! কুর্মের করম হয় উন্মীলন আর॥ ক্লকরের কর্ম ক্লুধা জানিবে অন্তরে। দেবদত্ত তৃফাকার্য্য সম্পাদন করে॥ ধনপ্রর সম্পাদন কররে জ্ঞা। নাগাদি বায়ুর কার্য্য কবিন্যু বর্ণন ॥ এইরপ বিধানেতে সাধকপ্রবর ৷ যদাণি জানিতে পারে নিজ কলেবর ॥ সর্বপাপে মুক্ত হয়ে সেই সাধুজন। বিঞ্চপদ লাভ করে স্বরূপ বচন॥ গুরুদেব উপ-ছেশ দিবেন যেমন। সেরপে সাধনা সাধু করিবে সাধন॥ কপোলকলিপত কার্য্য নতুবা করিলে। ফলহীন হয় কার্য্য জানিবে অন্তরে॥ নিজ্যুক্তি ষেই জন করিয়া আশ্রয়। সাধনা কার্য্যেতে রত নিরম্ভর হয়॥ তাহার কার্য্য হইবে দকল। নিরর্থক প্রঃখমাত্র হয় তার ফল্ট।।

শস্তুষ্ট করি অতীব যতনে। বিদ্যা উপাসনা যেই করয়ে বিধানে॥ অচিরে इकन भाग्न (मई माधू-जन। भारयुत वहन विथा। नरह कलाहन॥ मर्दकर्डाः গুরুদেব নাহিক সংয়য়। পিতা মাতা সেই জন জানিবে নি দর ॥ কায়-মনোবাক্য দ্বারা সদা যেই জনে। সম্ভুট করিবে সাধু বিহিত বিধানে॥ প্রফ আরাধ্য তিনি দেবনীয় হন। সর্বকার্য্য শুভ হয় তাঁহার কারণ। ইহার অক্তথা হলে ঘটে অমঞ্চল। কহিলাম সার কথা তোমার গোচর॥ তিনবার প্রদক্ষিণ করিয়া শুরুরে। ও্রুর চরণ পদা স্পর্শি দক্ষকরে। পুনঃ পুনঃ প্রদক্ষিণ করি তার পর। প্রণাম করিবে সাব চরণ-উপর॥ আত্মবান্ যেই জন এ ভবসংসারে। সুদুঢ় বিশ্বাস যার আছয়ে অন্তরে॥ আশু সিদ্ধি হয় তার জানিবে বচন। নতুবা বিফল সব হয় অকারণ। যাহার অন্তক্ষে শ্রদ্ধা নাহিক কখন। সনাতা পুরুষ হয় যেই অভাজন॥ সিদ্ধিলাভ • সেই জন করিবারে নারে। শান্ত্রের প্রমাণ এই কহিনু তোমারে। এই হেন্তু শ্রদাবান হইয়া সুজন। সাপনা সাধিবে সদা ওচে ঋষিগণ॥ ইন্দ্রিয়ের বশীভুত যেই জন হয়। অসতের মধ্যে সদা যেই জন রয়॥ অবিশাস হাদি মাঝে যেই জন ধরে। গুকপুজা ষেই জন কভু নাহি করে।। বহুসঞ্জ সদা করে যেই অভাজন! লোলুপ সদত রহে যে জনের মন্।। মিখ্যাবাকে। অনুরত যেই জন রয়। নিঠ্রবচনে সদা কট কথা কয়। ওচর সভোষ যেই কভ নাহি করে। সিদ্ধি নাহি সেই তন শভিবারে পারে॥

সিদ্ধির লক্ষণ এবে করহ প্রবণ। "অবশা কর্মের ফন হইবে সাধন॥"
সিদ্ধির এই ত হয় প্রথম লক্ষণ। প্রদাবান হলে তাহা দ্বিতীয় লক্ষণ।
ভৃতীয় লক্ষণ হয় গুরু আরাধনা। পরমমক্ষল ইথে পূর্রে কামনা॥ সর্বধজীবে সমদৃষ্টি চতুর্থ লক্ষণ। জিতেন্দ্রিয় হলে তাহা জানিবে পঞ্চম॥ শাস্ত্রউক্ত পরিনিষ্ঠা ষষ্ঠ বলি জান। সিদ্ধির লক্ষণ এই করিবেক জ্ঞান॥ ইহা
ভিন্ন নাহি আর অপর লক্ষণ। শাস্তের বিধান এই করিবেক জ্ঞান॥ ইহা
ভিন্ন নাহি আর অপর লক্ষণ। শাস্তের বিধান এই করিবেক জ্ঞান॥ ইফা
ভিন্ন নাহি আর অপর লক্ষণ। শাস্তের বিধান এই করিবেক জ্ঞান॥ হক্ষর
শোভন মঠে কুশাসনোপরে। সেরপে, সাধনা সদা করিবে সাধন॥ হক্ষর
শোভন মঠে কুশাসনোপরে। বিস্বেক যোগীবর একান্ত অস্তরে॥ প্রাণা⇒
গাম সাধনার্থ পরে যোগীজন। পবন-অভ্যাসক্রমে করিবে সাধন॥ বক্র~
ভাবে না রাখিবে নিজ কলেবর। বসিবেক সমভাবে করি যোড়কর॥ জার
পর শুরুজনে করিবে প্রণাম। বামভাগে গণেশেরে এই ত বিধান॥ প্রণমিকে
দিক্ষিণেতে ক্ষেত্রপালগণে। অন্বিকারে নমস্কার করিবে মতনে। তার প্র
দক্ষ হতে স্বৃষ্ঠ-ছারায়। করিবেক অবরোধ দক্ষিণ নাসায়॥ ইড়া নাজী-

রক্তে পরে বাম নাসিকাতে। পূরণ করিবে বায়ু মধাসংখ্যামতে॥ মাড়ীরক্তে পরে সংখ্যা অমুসারে। পূরিত বায়কে রোধ করিবে সাদরে॥ র্জবৈগে বায়ুত্বক পরে ত্যজিবে সুজন। তাহার বিধান বলি কর্ছ প্রবণ।। যথাশক্তি সংখ্যামতে দক্ষিণ নাসাতে। পিঞ্চলার ছিত্র দিয়া ত্যজিবে ক্রমেতে। বিলোমমার্গেতে পুনঃ দক্ষিণনাসায়। যথাসংখ্য বায়ু পূরি স্তন্তিবে তাহায়॥ মধানাতীরক্তে উহা করিয়া ভন্তন। অপ্পে অপ্পে যথাশক্তি করিবে বর্জ্জন॥ প্রাণায়াম যোগ এই অভ্যাসসময়ে। একাসনে বিংশবার করিবে বসিয়ে॥ অলসতা পরিত্যাগ করিয়া সুজন। বিংশতি কুন্তুক ক্রমে করিবে সাধন॥ করিবেক এইরূপ ক্রমে চারিবার। প্রাতঃকালে প্রথমতঃ হয় একবার। মধ্যাহ্নালেতে পুনঃ দ্বিতীর সময়। তৃতীয় সন্ধ্যার কালে জানিবে নিশ্চয় ॥ চতুর্থ-মধ্যমরাত্রে জানিবে অন্তরে। কুন্তকের বিধি এই কহিনু স্বারে॥ আলস্য ত্যজিয়া যেই একান্ত অন্তরে। ভিন্মান এইরূপ প্রাণায়াম করে॥ নাডীশুদ্ধি হয় তার নাহিক সংশয়। কাজে কাজে কলে ফল জানিবে নিশ্যয়। মাড়ী শুদ্ধি এইরপে হইবে যখন। সম্ত্র দোষের ক্ষয় জানিবে তখন॥ नভীশুদ্ধি হলে পরে দাধক শরীরে। যেই যেই চিহ্ন হয় কহি সবাকারে॥ ্লি নাতি ক্লশ নাতি স্থল নাতি বক্র হয়। সমকায় হয়ে সেই সাধুবর রয়। স্থান্ধ বাহির হয় তাহার শরীরে। লাবণ্য কত যে ধরে কে বলিতে পারে॥ ্ইহাকেই যোগাবস্থা কহে সুধীগণ। অতা অতা চিহ্ন বলি করহ শ্রবণ॥ ্র নাড়ীঙদ্ধি থেই কালে লভে সুধীজন। জঠর∹গনল য়দ্ধি ২ইবে তখন॥ উত্তম ্র ভোগেতে শক্ত দেই কালে হয়। সুখগুহে রহে চিত্ত নাহিক সংশয়॥ ক্রমনা নাহি হয় যোগীর প্রবর॥ যোগীর সর্বাঙ্গ হয় অতীব স্থনর। উৎসাহ-বিশিষ্ট হয় অন্তর তাহার। বলাগান হয় দেহে জানিবেক সার॥ ে এই সব চিহ্ন হয় যোগীর শরীরে। কহিলাম সংক্ষেপেতে সবার গোচরে॥ এখন শুনহ বলি ওচে ঋবিগণ। যাহে যাহে যোগবিত্ব হয় সম্পাদন॥

এখন শুনহ বলি ওহে ঋবিগণ। যাহে যাহে যোগবিত্ব হয় সম্পাদন॥
বিত্বকর দ্রব্য যদি পরিত্যাগ করে। অনায়াসে তরে সেই, তুঃখপারাবারে॥
আম ক্রক্ষ ঝাল দ্র্ব্য করিবে বর্জ্জন। কটুদ্রব্য সর্ধপাদি ত্যজিবে লবণ॥
অনেক ভ্রমণ নাহি কদাচ করিবে। তৈল-আদি শৈত্যদ্রব্য সর্বেথা ত্যজিবে॥
অন্যাহ্রে করিবে নাহি পরশ হরণ। প্রাণিহিংসা লোকদ্বেয় করিবে রর্জ্জন॥
অহঙ্কার না রাখিবে আপন অন্তরে। ক্টিলতা ত্য়োগিবে অতি যত্ন করে॥
ভ্রমে নাহি কহিবেক অসত্য বচন। কদাচ করিবে নাহি জীবের পীড়ন॥
ত্যজিবেক নারীসক্ষ একান্ত অন্তরে। বহু কথা না কহিবে কাহার গোচরে॥

व्यधिक ভोजन नाहि कतिरव कथन। योगवित्र इस हैरथ ७ एह सहित्रन। আশু সিদ্ধি হয় যাহে ওনহ দকলে। শাস্ত্রে বিধান মত বলিব স্বারে। ঘুত ছুগ্ধ মিষ্ট অন্ন করিবে ভোজন। কপুরিবাসিত পান করিবে সেবন। বশিবেক প্রিয়বাক্য স্বার গোচরে। মিউবাক্যে সম্ভোষিবে স্বার অন্তরে । কুজন্বার মন্দিরাদি করিয়া গঠন। তাহার মধ্যেতে বাস করিবে সুজন ॥ সিদ্ধান্ত বচন সদা শুনিবে সাদরে। তর্ক কভু না করিবে জানিবে অন্তরে॥ সংসারের কার্য্য বটে করিবে সাধন। বৈরাগ্য চিত্তেতে কিন্তু করিবে স্থাপন লাভে হর্ধ না করিবে আপন অন্তরে।অলাভে করিবে ত্যাগ সদা বিবাদেরে কিবা স্তব কিবা নিন্দা করিয়া এবণ। সমভাব সদা জ্ঞান করিবে সুজন ! হরিনাম সংকীর্ত্তন করিবে সাদরে। ব্যাকুলতা না রাখিবে অন্তর মাঝারে॥ দদত করিবে ছদে ধৈর্যাবলয়ন। ক্ষাশীল হবে সদা দেই মহাজ্ন । স্থা-ণাস্ত্র তপশ্চর্য্যা করিবে যতনে। রহিবেক শৌচাচারে বিহিত বিধানে । দশাদি দ্বাবায় বাহ্য হবে পরিকার। সন্তোষে করিবে শুদ্ধ চিত্তের মাঝার॥ ভগবদ্বিষয়ে বুদ্দি করিবেক স্থির। করিবেক গুরুসেবা হইয়া সুধীর॥ পিললা নাড়ীতে বায় পশিবে যখন। সেই কালে যোগীজন করিবে ভোজন॥ প্রাণবায়ু যেই কালে পশিবে হড়াতে। শ্যুন করিবে বোগী তখন শ্য্যাতে ॥ গামনাদিকাতে বায়ু বহিবে যখন। কুওলীর নিজাকাল জানিবে তখন॥ সই কালে যোগীজন নিজারে ভক্তিবে। দক্ষিণ নাসাতে বায়ু যখন বহিবে॥ দাগ্রত অবস্থা সেই বুগুলীর হয়। তখন আহার যোগী করিবে নিশ্রে ॥ 'কননা ভখন যদি করয়ে ভোজন। বুগুলী মুখেতে ২বে আত্তি অর্পণ।। চ্ওলী মুখেতে যোগী আছতি অর্পিনে। থোগীর আহার ভদ্ধি হয় সেই চালে॥ আহারের পরক্ষণে প্রদ-অভ্যাস। কভু না করিষে যোগী শান্তেতে মকাশ॥ কুধার্ত্ত কালেতে নাহি করিবে ভজন। তাহার কারণ বলি কর**হ** গ্রবণ।। যেই কোন জীব কিছু আহার করিলে। নাড়ীরক্স রসান্বিত হয় সেই চালে ॥ বায়ুর গতির বিল্ল জনমে তাহাতে। শ্বাস আদি রোগ জ**ল্মে এই** চারণেতে॥ কুধিত ব্যক্তির ধাতু অনিক্ষীণ হয়। সেকাণে প্রনাভ্যাস সমু-চত নয়॥ প্রন-অভ্যাস যদি করয়ে তথন। ক্ষয় রোগ তাহা হলে হয় ইংপাদন ॥ প্রথম অভ্যাসকালে কিছু নাহি খাবে। য়ুও চুগ্ধ অন্ন মাত্র ভোজন নরিবে॥ অভ্যাস ক্রমেতে হির ইইবে যখন। সেই কালে নিয়মের নাছি এয়োজন। ইতিপূর্ব্ধে ঘেইরূপ করেছি কীর্ত্তন। সেরূপে কুন্তক সার্দ্ধ করিবে াধন॥ বারুর অভ্যাস যবে হিৱীভূত হয়। ইচ্ছামত শক্তি জৰ্মে জানিবে নিশ্চয়॥ যোগীর ফেন ইচ্ছা সেই অনুসারে । বায়ু ধারণেতে শক্তি জনগে অন্তরে । সেই শক্তি জন্মিলে জানিবে তখন। কুম্ভক হয়েছে সিদ্ধ ওচে ঋবিগণ।। প্রাণায়াম সাধনেতে প্রথম প্রথম। সাধকের দেহে ঘর্ম হয় উৎপাদন ঘর্ষোদয় যবে যোগী দেখিবে শরীরে। মর্দ্রন করিবে দেহে অতি যত্ত করে॥ সেরপ যন্যপি নাহি করে যোগীজন। ধাতু ক্ষয় হবে তবে ওছে ঋষিগণ। প্রথমেতে এই চিহ্ন যোগীর জনমে। তার পর হয় যাহা ওনহ প্রবণে॥ দ্বিতীয় কম্পেতে দেহে কম্পেব উদয়। ততায় কম্পেতে ভেকসম গতি হয়। সেই কালে প্রাদনন্থিত যোগীবরে। প্রাণ্বায়ু পাকি পাকি বিচালিত করে॥ অভ্যাদবশেতে ক্রমে যেই যোগীজন। বায়ুকে রোধিতে পারে অতি ৰহুক্ৰ।। তাহা হলে অবিলয়ে ভূতল ত্যাজিয়ে। শূলেতে উঠিতে পারে সামক ছাদ্রয়। শুন্তে বিচরণ যোগী করিবারে পারে। ভাহার অসাধ্য নাহি জগত মাঝারে ॥ পদাসনে থাকি যোগী ত্যজি ধরাতল। যখন উঠিতে পারে শুরের উপর॥ শেই কালে বায়ুসিদ্ধি হৃচবে তাহার। ভবঘোর-বিনাশিনী সার হতে পার ॥ যাবং এরপে বায় সিদ্ধি নাহি হয়। তাবং নিয়মবশ রহিবে নিশ্চয ॥ তার পর কোন কিছু নাহিক নিয়ম। যথা ইচ্ছা যোগীবর করিবে তেমন॥ যোগদিদি হলে পরে অলপ নিদ্রা হয়। মল মত্র অলপ হয় জানিবে নিশ্চয । সংসার মাঝারে যেই হয় যোগীজন। রোগ শোক ভার দেহে না রহে কখন॥ শারীরিক মানসিক রোগ নাফি থাকে। সদা কাল যায় তার অন্তরের স্বথে। সদত প্রফুল রহে তাহান অন্তর। ঘর্ম কাম কফ তার খাড়ে কণেবর॥ কক বায়ু আর পিত্ত তাহার শরীরে। সমভাবে সদাকাল অবস্থিতি করে। শেইকালে পথ্যাপথ্য যে কোন ভোজন। কিছুতে নিয়ম নাহি করিবে এহণা ষোগীজন যদি রহে করি অনাহার। অথবা যদ্যপি করে অত্যম্প আহার। কিন্তা বহুবিধ দ্রব্য করয়ে ভোজন। রোগ শোক দেহে তার না হয় কখন। সাধক ভূচরী সিদ্ধি পভিবারে পারে। গ্যাগ্যাস্য সর্বস্থানে পারে যাইবারে॥ যেরপে করিবে জপ যোগীবর জন। বলিতেছি সেই কথা করহ অবণ।। ইন্দ্রিয় সংঘত করি জনশৃত্য স্থানে। উপবিষ্ট হইবে সাধু বিহিত জাসনে। দীর্ঘমাত্র। ওম জপ করিবে তখন। যাবতীয় যোগবিদ্ন করিতে বারণ॥ \* প্রাণায়াম যথাবিধি সাধন করিলে। পূর্বজন্মার্জ্জিত কর্ম বিনাশে আচিরে। ইহ জন্মকৃত কর্ম বিনাশিত হয়। শাস্ত্রের প্র্মাণ এই জানিবে নিশুচয়। বোড়শ স্ংখ্যক যোগী করি প্রাণায়ায়। পাপ পুণ্য সহ ধ্বংস করিবে ধীমান্।

<sup>•</sup> अव्दर्भ मोर्चमाका जन्म प्यदर्भ म्याकान्यत्त्र अन्यक्षण वृत्विदङ इर्दन ।

প্রাণান্ত্রাম দারা যোগী পুলক অন্তরে। অণিমাদি অটেশর্য্য লভিবারে পারে॥ ত্রিলোক বুঁঅটন করে সেই যোগীবর। সদা সর্বকণ তার প্রফুল অন্তর 🖁 অভ্যাস বঁশেতে ক্রমে যেই যোগীজন। তিন ঘণ্টা প্রাণায়ান করয়ে সাধন॥ বাক্যাসদ্ধি হয় তার নাহিক সংশয়। দূরদৃষ্টি শক্তি জন্মে জানিবে নিশ্চয়। ই**চ্ছামত সর্বস্থানে** যাইবারে পারে। দূরশ্রুতি শক্তি জ্বে জানিবে **স্বস্তরে** 🛊 পরকায়ে পশিবারে পারে সেই জন। তিরোধান শক্তি জন্মে শান্তের বচন ॥ তাহার পুরীন মূত্র লেপন করিলে। অত্য ধাতু স্বর্ণ হয জানিবে অন্তরে॥ শৃষ্ঠপথে অবিরোধে করে বিচরণ। তাহার অসাধ্য নাহি এ তিন ভুবন॥ প্রহর অবধি বায়ু রোধিতে পারিলে। প্রত্যাহার শক্তি তার জনমে অন্তরে॥ সাধনার বিদ্ন আর না রহে তখন। এই ত শান্তের বিধি ওছে ঋবিগণ। যোগীজন যাহা কিছু দর্শন করে। আত্মা বলি বিবেচনা কর্বে স্বারে॥ আত্মা ভিন্ন নহে বিশ্ব এই করে জ্ঞান। সে জন जানিতে পারে ইন্দ্রিয়-বিধান ইন্দ্রিয়েরে পরাজয় সেই জন করে। বলিলাম গূঢ তত্ত্ব সবার গোচরে॥ কুন্তক প্রহরকাল করে যেই জন। তাহার শকতি বল কি করি বর্ণন॥ অফুষ্ঠে নির্ভর করি দাঁড়াইতে পাবে। বাতুলের মত সেই যথা তথা খুরে॥ আপন জ্ঞানের ভাব করিয়া গোপন। পাগলস্মান ভ্রমে এ তিন ভূবন॥ পিঙ্গলাকে ত্যাগ করি ইড়া যেই কালে। নিশ্চল ছইয়া বায়ু রহে সেই স্থলো। সুষুমার ছিজমধ্যে প্রাণবায় রয। পরিচ্যাবস্থা দেই যোগীর নিশ্য ॥ পরিচয়াবন্থা হয় যোগীর যখন। কর্মের নিকৃট হয় তখন দর্শন॥ সাধক প্রণব জপ করি তার পর। তিবিধ তাপের ধ্বংস করে অতঃপর॥ পুনর্জ্জন আর যোগী না করে গ্রহণ। নির্ব্বাণ মুক্তি পায় শাস্ত্রের বচন॥ সেই কালে প্রতি চক্রে যোগীর প্রবর। পঞ্চধা ধারণ করে তাপসনিকর॥ এক এক চক্রে পঞ্চ কুন্তুক করিবে। পঞ্চভূত সিদ্ধি তাহে নিশ্য জানিবে॥ পৃথী আদি পঞ্চভূত খ্যাত ত্রিভূবন। ইহা হতে লয় তার না রহে ক**খ**ন॥

खैन छन जात शत उद्द अधिगा। योगममाशित कोल कित्र वर्गन॥
जिस्तात्क जालूत मर्था कित्रिया छार्गन। व्यागनाय शान यि करत योगीजन॥
माधना ममिशि द्य जानित्व (मकार्ग। जश उर्थ जात जात किया कल कर्म॥
ये जिन जहेत्र थान इय मक्त्र। जोवज माधना योगी कित्रित्व माधन॥
यि जिहा नाहि करत जालमा कित्रिया। मकल हरेत्व न जीनित्व छारत ॥
क्षिनी हरेत्व हम्र ज्यूठ कंत्र। नापितिकृ पिया जोहा कित्रित्व (मयन ॥
धिरेत्रथ (यह योगी कित्रवाद शादा। जीवमूक् रय (मरे जानित्व जरुरत ॥

প্রতিদিন এইরূপে যেই করে পান।রোগ শোক তার দেহে নাছি পায় খান। শ্রম দাছ জরা নাহি খেরিবারে পারে। জীবন্মুক্ত হয় দেই জানিবে অন্তরে॥ किस्ता साता जालूग्ल किशा भी एन। क्थलीटक श्विमाटक कतियां किसन ॥ ৰায়ু সহ স্থাধারা যেই করে পান। মহাকবি হয় সেই শান্ত্রের প্রমাণ ॥ ছর মাস মধ্যে তার কবিত্ব জনমে। কহিলাম ঋষিগণ স্বার সদনে॥ কুণ্ডলিনী-স্বাপান যেই গোগী করে। ক্ষয়রোগ নাহি থাকে তাহার শরীরে॥ দূরদৃষ্টি দূরত্রুতি শক্তি তার হয়। অসাধ্য সাধন সেই করয়ে নিশ্চয়॥ দন্ত षात्रा एउ চাপি যেই যোগী জন। রমনাকে উর্ন্নপথে করি আনয়ন। অপে ফুল্পে প্রাণ বায়ু যদি করে পান। মৃত্যুঞ্জয় হতে পারে সেই মতিমান্॥ যথাবিধি ছয় মান সাধনা করিলে। সর্বপাপে সেই যোগী মুক্তি লাভ করে॥ সুর্ব্বোগে অব্যাহতি সেই জন পায়। শাস্তেব প্রমাণ এই কহিনু সবায়॥ একবর্ষ যেই জন করয়ে সাধন। অণিগাদি অফৈশ্চর্য্য লভে সেই জন॥ সর্বভৃতে শেই যোগী করি পরাজয়। ভৈরব হরপ হয় নাহিক সংশয়॥ রসনাকে উর্ন্ধামী করি কোন জন। ক্ষণার্দ্ধ যদ্যপি হয় থাকিতে সক্ষম। জরা ব্যাধি মৃত্যুমুক্ত गেই জন হয়। নাহিক সন্দেহ ইথে জানিবে নিশ্চয়॥ প্রাণসহ রসনাকে করি নিস্পীতৃন। ধ্যানপার সদা থাকে যেই যোগীজন॥ স্বৃত্যু নাহি তারে কভু আক্রমিতে পারে। কামদেব তুন্য রূপ দেই জন ধরে॥ কুবা তৃষ্ণা নিদ্রা মূচ্ছ। না রহে তখন। পরম নির্বোণ পায় সেই যোগী জন॥ এরপ বিধিতে যোগ ফেই জন করে। কামচারী হয় সেই এ ভব-সংসারে॥ ইচ্ছামত যথা তথা করে বিচরণ। দূরীভূত হয় তার ভবের रक्षन॥ সদা বাদ করে দেই অমর-নগরে। দেবগণ সহ সদা আনন্দে বিহরে।। পুণ্য পাপে লিপ্ত নাহি হয় দেই জন। জীবন্মুক্ত দেই জন শান্তের বচন॥ আরো এক কথা বলি শুনহ সকলে। আসন করিবে যোগী সাধনার কালে॥ ষোগ সাধনাতে আছে অনেক আসন। চারিটী প্রধান তাহে ওহে ঋষিগ্রা সিদ্ধাসন পদ্মাসন উএ তার পরে। চতুর্গ খন্তিক হয় জানিবে অর্প্তরে॥ চারির লক্ষণ এবে করিব কীর্ত্তন। মন দিয়া শুন সবে পছে ঋষিগণ। পাদমূল দিয়া যোনি করিয়া পীড়ন। অন্য পাদমূল শিশ্বে করিবে ভাপন॥ জিতেন্দ্রির হবে আর নিশ্চল-হৃদয়। উর্দ্ধি হয়ে রবে জানিবে নিশ্চয়। দ্ধর মধ্যভাগ পরে করিবে পর্শন। সিদ্ধাসন কছে এরে শাস্ত্রের বচন॥ श्रवक-भंतीत रूप्त निर्द्धन अप्तर्भ। विमित्वर्क निष्वांमस्न मस्तत रित्रिय ॥ निक्षिना इंश हैरिय नाहिक मः भग्न । भारत्र त तहन विथ्या ककू नाहि इत्र ॥

ঘোগের নিজান্তি হয় ইহার প্রসাদে। সর্বভেষ্ঠ এ আর্সন কহিনু সাক্ষাতে ॥ পদ্মাদন কথা এবে করহ প্রবণ । পরা গতি লভে যাহে যোগী মহাজুন ॥ সংসারের মায়া যোগী পরিত্যাগ করি। দিবানিশি ভাবে সেই ভেতরর কাণ্ডারী। গুহা হতে গুহা হয় এই পদাসন।সর্বব্যাধি ইহা হতে হয় বিনাশন বাম ভীরপরি রাখি দক্ষিণ চরণ। বাম হস্ত উত্তানেতে করিবে স্থাপন। নাসা-অথে দৃষ্টি পরে রাখিতে হইবে। দওমূলে রসনারে স্থাপন করিবে॥ চিবুক উন্নত করি সার বক্ষঃস্থল। পূরিবেক অপ্পে অপ্পে বায়ু তার পর ॥ শক্তি অনুসারে পরে করিবে রেচন। পরাসন কথা এই করিমু বর্ণন॥ অতীব তুর্ল ভ এই পদানন হয়। সকল জনের পক্ষে কতু সাধ্য নয়॥ যেই জন পলাসন অনুষ্ঠান করে। সমস্ত বন্ধনে সেই মুক্তিলাভ করে॥ প্রাণবার্থ সমভাবে নাডীরল্পে তার। অবশ্য সরল ভাবে কর**রে** সঞ্চার ॥ উগ্রা**সন** কথা এবে করছ এব। শাস্ত্রমত বিবরিব তাহণর লক্ষণ।। পদন্তর প্রসারিত করি পরস্পর। অসংযুক্ত করি তাহা তাপসনিকর ॥ ছুই হাতে দুঢ়রূপে করিবে ধারণ। জানুদ্রে শিরোদেশ করিবে হাপন॥ উথাসন এই হয় শাস্ত্রের প্রমাণ। আসনের মধ্যে ইহা জানিবে প্রধান। উগ্রাসনে ममानीन रश (परे जन। जता यात्रि जात (पर ना तर कथन। व्यक्ति खरा উগ্রাসন জানিবে অন্তরে। প্রকাশ করিবে নাহি সবার গোচরে। বায়ুসিদ্ধি হয় ইথে শাস্ত্রের বচন। শোক জুঃখ অতিরেতে হয় বিনাশন॥ স্বস্তিক-লক্ষণ এবে বলিব সবারে। মন দিয়া শুন তাহা শ্রবণ-বিবরে॥ জানু উরু দোহামাঝে পাদতলদ্বয়। স্থাপন করিবে যোগী হয়ে সমকায়॥ স্থাধে সমা-সীন হবে শাস্ত্রের বচন। খস্তিক আসনকথা করিন্দু বর্ণন।। ইহার প্র**সাদে** ব্যাধি বিদুরিত হয়। বায়ু সিদ্ধি হয় ইথে নাহিক সংশয়॥ স্থাসন বলি ইহা বিদিত সংসারে। যাবতীয় ছুঃখরাশি বিনাশিত করে॥ দেছের সুস্তা লাভ ইহাতেই হয়। গুহা হতে গুহা ইহা জানিবে নিশ্চয়॥ আসনের কথা এই করিনু বর্ণন। তার পর শুন শুন ওহে ঋষিগণ। পুরক-অভ্যাস্থোগ ছারার প্রথমে। প্রিবে আধারপদ্ম বার্ সহ যনে॥ মনকে বাধুর সহ করিবে পূরণ। শাত্রের নিয়ম এই করিত্র বর্ণন॥ তথ্য হতে শিখাশ্রি যাবতীর হান। যোনি বলি পরিগণ্য শাস্ত্রের বিধান॥ গো'নহান আফুক্তিত করিয়া যতনে। প্রবৃত্ত হইবে পরে মুদ্রার বন্ধনে।। মনে মনে কামদেখে করিবে ভিন্তন। বন্ধুক পুঞ্জোর সম ভাঁছার বরণ॥ কোটি প্র্যা সম দািপ্তি भरत करलबुरत । कां हि हम्म मम् श्रिक कानित्व व्यख्त ॥ धरे त्रर्भ काम-

দেবে করিয়া চিন্তন। তার উর্দ্ধে পরমাত্মা করিবে ভাবন॥ পরমাত্মা শক্তি সহ বিরাজে তথায়। চিন্তিবে একপে যোগী পরম-আত্মায় । কুগুলী হইতে স্থা হতেছে করণ। পান করিবেক তাহা সেই যোগীজন॥ এইরপে যেই যোগী চিন্তরে অসরে। না থাকে অসাগ্য তাব জগত-সংসারে॥ মুদ্রা বন্ধনের যেরূপ নিয়ম। শাস্থ্রেতে বণিত আছে ওছে ঋষিগণ ॥সেই রূপে সুদ্রোবন্ধ যদি কেই করে। হাবত পাতক ভার সমূলে সংহারে॥ শত শত করে যেই জন। জীবনধন করে বিনাশন॥ গুরুছভা। স্থরাপান চৌর্যার্ক্তি করে। গুর্ক্ত্রনা মহ যেই আনন্দে বিহরে॥ বে যদি করত্বে যোনিমুদার বন্ধন। যাবত পাতক গার হয বিনাশন। মোকবাঞ্জা হৈ যোগী কবরে অন্তরে। যোনিমুদ্র বাচলণ করিবে দাদরে । অভ্যাস করিলে সিদ্ধি অবশাই হা। যোজলাভ হয় ইথে নাহিক সংশয়॥অভ্যাসেতে জ্ঞানলাত জানিবে অসরে। অভ্যাসে মুদ্রার নিকি খ্যাত চরাচরে॥ জভ্যা-সেতে মু মুঞ্জর হয় যোগীজন। বাক্যসিদি লাভ হয শান্তের বচন॥ কামচাধী হতে পারে অভ্যাদের নলে। যোগেতে এরত্তি করে অভ্যাদের ফলে। যোনিমুদা অতি গুহাা শিবের বচন। গোপনেতে এই মুদা করিবে দাধন॥ **প্রকাশ করিবে নাহি স্বার গোচরে। প্রকাশে সিদ্ধির হানি জানিবে অফরে** কণ্ঠাগত প্রাণ যদি কোন কালে হয়। তথাপি প্রবাণ নাহি করিবে নিশ্চয়॥ অধিকারী বিবেচনা করিয়া অন্তরে। প্রকাশ করিবে যোগী ভাষার গোচরে আরো দশ মুদ্রা আছে শান্তের এখা।। কমে কমে বলি েছি ভাষার বিধান মহামুদ্র। মহাবন্ধ মহাবেধ পরে। খেচরা ও জাসদর জানিবে অন্তরে॥ মূল-বন্ধ বিপরীত করণ উড্ডান। বঙ্গোণি শন্দিচালন শাত্রের প্রমাণ॥ দশ মুদ্র হয় স্বার প্রধান । ইহার প্রসাদে সিদ্ধি পার মতিমান ॥ এ দশ मुक्तात क्रांस विलय लचन। यन पिया छन गरव छट स्थिमिन।।

মহামুদ্রা গোপনীয়া সর্বভদ্তে হয়। তাহার লক্ষণ বলি শুন পরিচর॥ বামপাদমূল অথ্যে করি প্রদারণ। যোনিমগুলেরে যোগী করিবে পীড়ন॥ দক্ষিণ চরণ পরে প্রসারিত করি। ধরিবেক ছই হাছে অতি দৃঢ় করি॥ নবদ্বার সংঘদন করি যোগীজন। করিবেক হৃদ্যেতে চিবুক স্থাপন॥ চিত্তকে চৈত্যুমার্গে করে। কুন্তক করিবে যোগী একান্ত অন্তরে॥ মহামুদ্রা এরে বলে জানিবে অন্তরে। ইহার প্রসাদে যোগী সিদ্ধি লাভ করে॥ বামান্তে প্রথমে ইহা করিয়া অভ্যাস। দক্ষিণ অন্তেরে পরে করিবে অভ্যাস॥ উভয অন্তেরে বিহিত বিধানে। করিবেক প্রাণায়াম অতীব মহনে॥

कृत निकटि देश कृतिया धार्म। यथाविधि योगी यणि कटत जाहत्। াপ্পভাগা যদি হয় নেই যোগীবর। তর্ সিদ্ধি লভে সেই মহেশের বর।। ।ই মুদ্রা যথাবিধি করিলে সাধন। নমস্ত নাড়ীর তাতে হর সঞ্চালন॥ শুক্র-দ্ভ হয় ইথে নাহিক সংশ্য। জীবনকে আকর্মিত করেয়ে নিশ্চর॥ ইছার ।সাদে পাপ হর বিনাশন। রোগ শোক দেহবারে না আনে কখন॥ জঠর-।নল রুদ্ধি ইহাতেই হয়। নাফিক সন্দেহ ইথে জানিবে নিশ্চয়॥ নিশ্বল াবণ্য জন্মে শরীর মাঝানে। জরা মত্যু ধ্র'ম হয় জানিবে অন্তরে॥ গোপনে ि । বিবে মুদ্র। শাস্ত্রের বচন। ইছার গ্রনাদে খুডে ভবের বহান॥ যেই াগী এই মুদা আচরণ করে। অনারাদে তরে সেই ভবপারাবারে॥ কাম-বন্ধ রূপা এই মহাযুদ্রা এল। বাহিতে সফল হুম জানিবে নিশ্চয়।। গোপন াখিয়া ইহা করিবে সাধন। স্থার নিক্টে নাহি লালবে কখন॥ মহামুদ্র থা এই শুনিলে দ্বাল। মহাব্য শুন এবে কহি স্বা ঠাই॥ বাম উরু-রি রাখি ।। । । তরণ। ওহাদেশ খোনিদেশ করি আকুঞ্চন॥ অপান-ারুর সহ সমান বারুবে। সংযুক্ত করিবে ঘোগী একাত-অন্তরে॥ কুন্তক রিবে পরে যেমত বিধান। মহাবন এই হয় শাত্রের প্রমাণ॥ এইরবেপ ।ই যোগী করমে কাধন। মনোবাঞা হয় তার অবশ্য পূরণ।। দেহস্থ ারীর রম উঠে শিরোপরে। কহিলাম তথ্য কথা মবাব গোচরে॥ মহা-ন্ধ যেই জন করে আচরণ। তাহার শরীরে হয় পুঞ্জির সাধন।। সুধুনা--াবরে বায়ু যাতায়তে করে। বিল্প নাহি হয় তার জানিবে অপ্তরে॥ সর্বদা দ্বুষ্ট রতে তাহার অন্তর। মহাসুখা হয় সেই যোগার এবর॥ থা এবে শুন্হ সকলে। ইহার প্রসাদে জবা মৃত্যু নাশ করে॥ াদ্ধি বাঞ্জাসিদ্ধি সেজনে । হয়। শাম্পের প্রমাণ এই জানিবে নিশ্চয় ॥ াণবায়ু সহ ঐক্য করিয়া অপান। বায়তে উদর পুরি যোগী মতিমান্। ভয় পার্যকে পরে করিবে তাড়ন। মহাবেদ কথা এই করিনু কীর্ত্তন । ্যামুদ্রা মহাবন্ধ করে থেই জন। মহাবেধ সেই জন করিবে সাধন॥ বেধুছীন লে ফল কিছু নাহি হয়। শান্তের বচন সত্য জানিবে নিশ্চয়॥ মহাবন্ধ ামুদ্রা মহাবেধ আর়। এ তিনে সাধন করে সেই গুণাধার॥ ছ্যমাস .भा মুতা সেই করে জয়। জীবয়ুক্ত হয় সেই নাহিক দংশয়। ইহার হাত্ম জানে যত সিদ্ধগণ। অপরে জানিতে নারে ওহে ঋষিগণ।।গোপনে থিবে ইং। অতীব যতনে। মুদ্রীসিদ্ধি নাহি ফলে অন্তথাচরণে॥ • খেছরী वात निधि केतिन नर्ग। मन पिशा अन अदन अदन अधिन। उन्यादन

শুন্ত স্থানে বাসিয়া বিধানে। ক্ষুদ্রমাঝারে দুটি রাখিবে যতমে। বত্ন করি বিপরীতগামিনী জিহ্বারে। যোজনা করিবে সাধু তালুর কুহরে॥ সিদ্ধির জননারপা এই মুদ্রা হয়। পবিত্র শরীর হয় জানিবে নিশ্বয়। ইহার অভ্যাস করি যেই সাধুজন। সহস্রারাচ্যুত স্থধা করয়ে সেবন। পবিত্র তাহার বেহ সর্বধাই হয়। শাস্ত্রের বচন এই জানিবে নিশ্চয়।। প্রত্যুহ ক্ষণার্দ্ধ কাল যে করে সাধন। পাপরাশি দেহে তার না রহে কখন। অংশ লভে দেই অমর নগরে। দেবগণ সহ দেই আনন্দে বিহরে॥ ভোগ অতে ধরাতলে লভয়ে জনন। সংকুলেতে জন্ম হয় ওহে ঋষিগণ। শেচরী । মুদোর ি.দ্ধি থেই জন করে। দীর্ঘ আয়ু হয় তার মহেশের বরে॥ শত অন্ধণাত দেখে সেই সাধুজন। প্রাণের সদৃশী মুদা করিন্মু বর্ণন।। প্রকাশ ক্রিবে নাহি সবার গোচরে। গোপনে রাখিবে ইহা অতি যত্ন করে॥ জালম্বরন্ধ এবে কর্ছ প্রবণ। গলনির। আকুঞ্চিত করিবে প্রথম।। চিরুক স্থাপন হৃদে করিতে ইইবে। ভার পর ম্থাবিধি কুন্তুক করিবে॥ জালন্ধর-বন্ধ এই করিনু কীর্তন। জঠরাগ্রি রুদ্ধি হয় ইচার কারণ।। শিরঃস্থ সহস্রদল কমল হইতে। যে সুধা পতিত হয় বিদিত জগতে॥ সে ধারা পতিত হয় জঠর-অনলে। অনুতত্ব হয় ইথে ঐবের শরীরে । কামী যোগীগণ যারা যারা হয়। করিবেক তালন্ধর তাহারা নিশ্চয়। মূলবন্ধ এইবার করিব কীর্তন। মন দিয়া শুন সবে ওচে ঋষিগণ n পাদ-মুল দারা গুরু করিয়া পীড়ন। করিবে অপান বায়ু উর্ব্বে আকর্ষণ। ইহার প্রসাদে জরা বিনাশিত হয়। মরণ বিনাশ পায় জানিবে নিশ্চয়। মূলবন্ধ আচরণ করি যেই জন। প্রাণাপান দোঁহা ঐক্য করয়ে সাধন॥ যোনিমুদ্রা অসম্পন্ন সে জনের হয়। শাস্ত্রের বচন সভ্য জানিবে নিশ্চয়॥ যোনিমুক্তা সুসাধন করিতে পারিলে। অসাধ্য কি রহে তার বসুমতীতলে॥ সর্বমুদ্রা সিদ্ধ হয় জানিবে তাহার। বাললাম সার কথা নিকটে সবার॥ বিপরীতকরা মুদ্রা শুনহ সকলে। গোপনীয় এই মুদ্রা শান্ত্রের বিচারে॥ ভূমিতলে নিজ শিরঃ করিয়া স্থাপন। চারিদিকে পাদদ্য করিবে কেপণ।। वाशु (ज्ञांभ कति श्रेटत कूछक कतिरव। मरनत वामना जारह मकल इहेरव॥ প্রহর যাবত ইহা করিলে সাধন। মৃত্যু পরাজয় করে সেই সাধুজন। প্রলয়েতে অবয়য় কভু নাহি হয়। শাস্তের বচনু ইহা জানিবে নিশ্চয়॥ উজ্ঞানবন্ধের কথা করহ প্রবন। অনুত্রম কথা এই ওহে ঋষিগ্রন। নাভির . निम्बद्ध शादक दम् नाड़ी मकत्न । छेट्छानित्व छक्क्यारम छाई। रम्भीवत्र ॥ করিবেক ক্সতেকতে ভাষা উভোলন। উভ্ডানবদ্ধের এই কহিনু লক্ষ্ণ।। প্রতিদিন চারিবার এ বন্ধ করিলে। নাভিশুদ্ধি হয় তার জানিবে অন্তরে # নিবিবরোধ বায়্ত দি সেজনের হয়। ছয় নাসমধ্যে তার মৃত্রু হয় জয় # ' এই বন্ধ যেই জন করে আচরণ। সংবদ্ধিত হয় তার জঠর-দুহন। আহারীয় পরিপাক দে জনের হয়। শান্তের বচন সত্য জানিবে নিশ্চয় ! ष्याधि नाधि तरह राशीत भतौरत। स्रोग वर्ग एएह पारक कानिरव অন্তরে। গুরুর নিকট শিক্ষা লইয়া বিধানে। নিজ্জন স্থানেতে গিরা বসিবে 🔻 যতনে ॥ তার পর এই বন্ধ করিবে সাধন। গোপন হইতে ইহা অতীব গোপন ॥ ভব-অন্ধকার ইথে বিনাশিত হয়। শাস্ত্রে বচন এই কহিনু নিশ্চয়॥ বজ্বোণী মুদ্রার কথা শুনহ এখন। গোপন হইতে ইহা অতীব গোপন। যোনিদেশ হতে রজঃ করি আকর্ষণ। শিগদারা নিজদেহে পশাবে ত্রান-নিজ বিন্দু তার পর করিয়া বন্ধন। বরিবেক যোনিদেশে শিশ্পের চালন॥ দৈবংশে বিন্দু যদি প্রচলিত হয়। যোনিমুদ্রা দ্বারা তাহা রোধিবে নিশ্চয়॥ সেই বিন্দু বামভাগে ইড়া নাড়ী যোগে। স্থাপন করিয়া পরে অতি ধীরবেশে শিশ্নের চালনা ক্রমে করিবে বারণ। স্থিরভাবে যোগীবর রহিবে তথন। ক্ষণকাল এইরূপে অবস্থান করে। চালনা করিবে পুনঃ एক্ষার উচ্চারে॥ অপান বায়ুকে পরে করি আকুঞ্চন। করিবে সবলে পরে রজ আকর্ষণ # এইরূপ করি ক্রমে কুন্তক করিবে। বজোণী ইহার নাম **অতরে জানিবে #** বিন্দুপাত হলে মৃত্যু জানিবে নিশ্চয়। বিন্দুধারণেতে আয়ু-সন্দৰ্দ্ধিত হর। এই হেতু যত্ন করি যত যোগীজন। বিহিত বিধানে বিন্দু করিবে ধারণ ॥ বিন্দু হতে জন্মে জীব নাহিক সংশয়। ক্লহিলাম গুত কথা ওহে ঋষিচয় 🕯 বিন্দু ধারণের শক্তি যন্তাপি জনমে। অসাধ্য কি রছে তার এ তিন ভূবনে ॥, শিবের মহিমা যত করিছ দর্শন। ইহার প্রসাদে মাত্র ওহে ঋষিগণ॥ বিন্দু হতে শুখ ছঃখ জানিবে অন্তরে। শুভকর যোগ এই কহিনু সবারে। সক্ষভোগসুক্ত হয় যেই কোন জ্ম। যন্যপি সে জন করে এযোগ সাধন॥ সিদ্ধিলাভ হয় তার নাহিক সংশ্র। সুখা হয় সেই যোগী জানিবে নিশ্চয় ॥ অকমাৎ বিন্দু যদি প্রপতিত হয়। ১ন্দ্র সূর্য্য মিলে তাহে নাছিক সংশব্ধ॥ \* অমরাণী মুদ্রা জান ইছারই নাম। বজ্রোণীর এক মূর্তি শান্তের প্রমাণ ॥ গলিত বিন্দুকে যোগী যোনিমুদ্রাবলে। রাখিবেক বন্ধ করি ষতু সহক কারে॥ সহজোনিমুদ্রা হয় ইছারই নাম। অতি গোপনীয় ইহা শান্তের বিধানঃ

<sup>•</sup> ইহার তাৎুপধ্য এই যে, শুক্ত ও পোণিতের একর মিদন হয়।

একমাত্র ভক্তপাশে করিবে কীর্ত্তন। অগ্রথা সিদ্ধির হানি শাম্পের বচন। ইহা হতে গুপ্ত কিছু নাহিক ভূতনে। শ্রেষ্ঠ হতে শ্রেষ্ঠ ইহা জানিবে অন্তরে। मूज्जान त्यरे कारण कतिवादत रहा। तारे कारण वल कति त्यरे मरहापरा। বায়ু দ'রা মূত্রবেগ ক্তি ভাক্র্ণ। অবেগে অবেগে মূত্র করয়ে বর্জন n প্রভূত মূত্রকে পুনঃ জাকর্ষণ করে। স্যত্তনে উদ্ধৃতাগে লইবারে পারে॥ ওক উপদিষ্ট পথে কর্ষে গ্রন। বিন্দুসিদ্ধি হয তার শিবের বচন। যথাবিধি শুরুপাশে উপদেশ লয়ে। যোগা গাস করিবেক একান্ত ছাদুরে। এইরপে যোগাত্যান করিবে সজন। শত নারী ভোগে যেন যে হয় সক্ষম। তরু দেম বিন্দুপ।ত না হয তাহার। এইত নিম্ম পাছে শাস্ত্রেব বিচার॥ **বিন্দুসিদ্ধি হলে** আর কিন্যে থাকে ৩৭। অসাধ্য সাধন করে সেই মহোদয় ॥ •বিস্কৃতিদ্ধিবলৈ শিব স্বাৰ উপা। নিশ্চর জানিবে ওছে তাপ্দ নিক্র<sup>\*</sup>। এখন শুনহ সবে শক্তির চালন। এই মুদাবনে হয় অসাধ্য সাধন ॥ মুলাধারপলে আছে কলকুওলিনা। প্রস্থা আছেন িনি শুন মত মুনি॥ **অপান বা**শুতে তারে করি আরোপণ। আক্ষণ ক্রি বলে করিবে চানন। এই ত মুদোর কথা কহিনু সবাবে। শক্তিচালনের চর্চা ঘেই জন কবে॥ প্রতিদিন ইহা থেই করয়ে সাধন। তাহার সমস্ত রোগ হয় বিনাশন n শরমায়ু রিনি পায় জানিবে তাহার। কহিনু নিগৃত কথা ¦নিকটে স্বার॥ এই মুদ্রা যেই জন আচরণ করে। মৃত্যুভ্য নাহি খাকে এ ভবসংসারে॥ অণিনাদি অটেথর্য্য সেই জিন পায়। শাবের প্রমাণ এই কহিন্তু স্বায়।। দশ্টী মুদ্রার কথা করিত্ব কার্ত্তন। যেরূপ বনিয়াছিল দেব পঞ্চানন।। এত বলি বিধিসূত মৌনভাব ধরে। ঋষিরা জিজ্ঞানে পুনঃ তাহার গোচরে॥ শুন শুন বিধিয়ত করি নিবেদন। শুনিতেছি তব মুখে অপুর্ব্ব কথন।। যোগবিদ্ব শুনিবারে হতেছে বাসনা। রূপা করি আমাদের পূলাও কামনা। এত শুনি বিধিস্কৃত ক হেন তখন। শুন শুন ঋনিগণ করিব বর্ণন।। যেরপ ্বনিয়াছিল দেব পশুপতি। বিবরিব নেই কথা কর অবগতি। নারীভোগ স্থশয্যা উত্তম বসন। ধনের আকাজ্ঞা আর তায়ুল সেবন।। এই সব যোগবিত্ম জানিবে অন্তরে। এ সব ত্যজিবে যোগী অতিযত্ন করে। भक्रे भिविका किस्रा রথে আরোহণ। ভ্রমে কভু না করিবে যোগী যেই জন भेचेर्या হইতে হয় মুক্তির ব্যাঘাত। ঐশর্যো ঘটাল জান কত উৎপাত। ৰ্প রোপ্য তান্ত হীরা প্রবাল রতন। গর্কব্য গোধনীদি বিবিধ ভূষণ॥ পাতিতোর অভিমান নৃত্য গীত আদি ৷ জানিবে এ সব হয় ব্যাঘাত স্ভুতি

হোগীজন 🐿 ই সত্র করিবে বর্জন। নত্বা বিফল তার সব অকারণ।। ক্রীপুত্রাদি ধরা মাঝে যতেক বিষয়। ভোগরূপ বিল্প সব জানিবে নিশ্চয়॥ ধর্মকেপ বিল্ল এবে করিব কীর্তন। মন দিয়া শুন সবে ওতে ঋবিগ্রা। উপবাস ত্রত আর যতেক নিয়ম। কভু না করিবে ইছা যারা যোগীজন।। যশোগান কীর্তিগান কারো ন। করিবে । দান আদি যত কাজ **সর্বাথা** তাজিবে ।।না করিবে বাণী কপ তড়াগ নির্দাণ ।অট্টালিকা না করিবে যোগী মতিমান্।। মন্দির প্রতিষ্ঠা নাহি করিবে সেজন। চাত্রায়ণ আদি নাহি করিবে সাধন।। প্রায়শ্চিত্ত না করিবে কভূ কোনকালে। তীর্থপর্যাটনে তার কিবা ফল ফলে।। ধর্মকর্ম বটে ইহা নাহিক সংশ্য। যোগবিত্ম বিস্ত ইহা জানিবে নিশ্চয়। এসব করম তিত্ত দ্বিব কারণ। যোগীর এ সবে বল কিবা প্রয়োজন।। যত দিন নাহি হয চিত্তের শোধন। তাবত করিবে প্রেই সব আচরণ।। যোগীজন যাহা যাহা করিবে লগণ। বলিতেছি সেই কথা। শুন সর্বজন॥ ভুতন সরস বস্তু সেবন করিবে। যোগীজন শুগীচর্ণ যতকে थारेरत ॥ माध्रमञ्ज मय ज्यान कतिर व अर्द्धन । पूर्व्हा तत मरक नारि वाकिरत , কখন । যোগাভ্যাসে যেই কালে প্রবৃত্ত হইবে। এইরূপ আচরণ তথন করিবে এত শুনি জিজাসিল যত ঋষিগ্ৰ। সাধক কাহারে বলে করহ বর্ণন।। তাহার লক্ষণ বল কিব। রূপ হয়। এই সব ওনিবারে কৌতুকী হৃদয়।। এত শুনি বিধিমুত কহে মিটফরে। শুন শুন খাষিগণ কহি স্বাকারে॥ মন্ত্রযোগ হটযোগ লঘবোগ আর। রাজযোগ আদি করি জানিবেক সার।। চতুর্বিধ যোগ হয় বিদিত ভুবন। তার মংারাজযোগ উত্তম-উত্তম। সকলের নাহি হয় তাহে অধিকার। কহিনু নিগুট তত্ত্ব নিকটে সবার॥ মুদু মধ্য অধিমাত্র অধিমাত্রতম। সাধক এ চারিবিধ জানে সর্বজন।। অধিমাত্রতম তাহে সবার প্রধান। ভববন্ধ ধুচে তার শাস্ত্রের প্রমাণ॥ মৃদ্ধ সাধকের এবে শুনহ লক্ষণ। মুঞ্চিত নিমন্তর হয় সেই জন।। অলপ উৎসাহযুক্ত সেই জন রয়। কুষ্ঠরোগী সেই জন নাহিক সংশয়।। শুরু উপ-দেশ দেই করয়ে লজ্জন। লোভের উপরে দদারহে তার মন।। কর্মেরত থাকে সেই মহামতি। অনেক ভোজনে তার নাহি হয় তৃপ্তি।। নারীসক্ষে সদা রহে. সেই অভাজন। চপল সতত রহে সেজনের মন।। সহিষ্ণুতা নাহি থাকে তাহার অন্তরে।পরাধীন রহে সদা পরের আগারে॥-দরাশুন্ত হয় তার জানিবে স্থায়। কুৎসিত আচারে রত নিরন্তর রয়। ष्णावीर्य, द्या (महे भारखत वहन। यह माधरकत धरे कश्चि वहन॥

ेमाধনা করিতে ইচ্ছা মৃদু যদি করে। মন্ত্রযোগ অত্যে শিক্ষা করিটিব সাদরে মন্ত্রোগে অধিকারী মৃত্র গোণী হয়। এ হেতু শিখিবে তাহা ওছে ঋষিচয়॥ দ্বাদশ বর্ষ মৃত্তু অভ্যাস করিলে। চিত্তক্তদ্ধি হবে তার জানিবে অত্তরে॥ ভার পর হঠযোগে অধিকারী হয়। এইত নিয়ম আছে জানিবে নিশ্চয়॥ मधामाधरकत कथा कतह जावन । मभवूषि इत्व तमहे भारखत वहन ॥ क्यामीन প্রিরবাদী সেই জন হবে। পুণ্যকর্ষে অভিলায় সর্ব্বদা করিবে॥ সর্ব্বত্তে गम्जा जान कतिरव (म जन। मधा माधरकत अर्थ जानिरव लक्ष्म ॥ क्रियारम व्यक्षिकाती अरे बन रय। अथरम निर्दिर्व छेरा नार्छव निर्नग्र॥ বর্ষ শিক্ষা করিবার পরে। চিত্তগুদ্ধি হবে তার জানিবে অন্তরে। যোগে অধিকাবী হইবে তখন। মধ্য সাধকের এই কহিনু লক্ষণ॥ ্প্রার্ক কথা এবে কহিব স্বারে। মন দিয়া শুন তাহ। অতি স্মাদরে॥ স্থির-বুদ্ধি বীর্যান হয় সেই জন। সমাধিযোগেতে সেই হয় যে সক্ষ । পরের অধানে সেই কভু নাহি রয়। সর্বজাবে দয়াবান্ সে জন নিশ্য ॥ ক্ষাগুণ ⊮**সদা থাকে তাহার অন্ত**রে। সত্যবাক্য সদা কহে স্বার গোচরে॥ **স্থা**ন আশায় তার অতি উচ্চতর। সমাধিতে বিশ্বাস সে রাখে নিরম্বর।। খারু-শারণার পূজা করে সর্কাকণ। যোগাভ্যাদে রত থাকে সলা ভার মন ॥অধি-মাত্র সাধকের কহিতু লক্ষণ। ছয় বর্ষে সিদ্ধ ছয় ইহার সাধন।। তার পব রাজযোগে অধিকারী হয়। শাস্ত্রের বিধান এই জানিবে নিশ্চম॥ অধিমাত্র **ভম কথা শুনহ একণে।** ইহার সমান যোগী নাহিক ভুবনে॥ ं विभिष्ठे त्मरे महावीधावान्। यदमास्त कत्नवत अठीव शीयान्॥ मर्द्रभात्य পারদর্শী অতি প্রতিধর। মোহ না আক্রমে কভু তাহার অন্তর॥ আকুলতা নাহি থাকে তাহার ছদযে। ভরশ্য রহে দদা জিতে ক্রিয় হয়ে।। নবীন বৌবন তার অতি মনোরম। পরিমিতরূপে সদা কর্যে ভোজন।। শৌচা-চারে সদা রহে দেই সাধুবর। আত্রিত-রক্ষক সদা দানেতে তৎপর।। স্থির বুদ্ধি ধরে সেই অন্তর মাঝারে। সন্তোষ নিয়ত হলে অবস্থিতি করে।। ক্ষমাঞ্চণে বিভূষিত সদা সঞ্চকণ। সরল ষ্ঠাব তার অভীব উত্তম।। বাসনা সমত করে ধর্ম অনুষ্ঠানে। সর্বকার্য্য সুসম্পন্ন করয়ে গোপনে।। প্রিয়বাক্য সত্য বাকা নিরস্তর কয়। শ্রনাবান্ শান্ত হয়ে অনুক্ষণ রয়।। গুরুপূজা महा करत अजीव यज्ञा । जिल्ल असा तार्थ महा यज रहवर्गा। तिरे नाहि क्रतरत कथन। महात्याधि (एह नाहि र्कटत , आक्रमण।। अधिमांख-তম হয় যেই সাধুবর। তাহার লক্ষণ এই খ্যাত চরাচর।। সর্ক্যোগে

অধিকারী হয় এই জন। তিনবর্ষে সিদ্ধ হয় শাস্তের বচন॥ জ্ঞানযোগ জন্মে তার হৃদয় মাঝারে। 'প্রতীকোপাদনা পরে যেই জন করে॥ প্রতীক সাধক হয় যেই সাধুজন। তাহারে দেখিলে হয় মুপবিত্র মন।। প্রগাঞ্ রোজেতে সেই আকাশমগুরে। ঈশরের এতিবিদ দর্শন হরে॥ ব্যাকৃশ णांशत कक् कलू नाहि इर! । अकरूटि स्वांशात काहि ताहे तह ॥ ककूर व्यक्तिये नाहि इहेरव यथन। क्षेत्रवा एकिविय (परित्त उपन ॥ न्स्राह्म প্রতিবিত্ব আকাশ উপরে। দেই জন নিরন্তর দর্শন করে॥ আপ্রাই এন্ডি-বিশ্ব দেখিবারে পাষ। কহিনু নিগুত তত্ত্ব তোমা স্বাকায়। প্রতাকোপা-সনা কহে জানিবে ইহারে। আপনার প্রতিবিদ্ন দর্শন করে॥ ঈশ্বরের বিদ্ব সদা করে দরশন। সাধনার ত্রেষ্ঠ হয এরপ সাধন॥ প্রতিদিন ষপ্রতীক আকাশ উপরে। যেই জন নিজ চক্ষে দরশন করে॥ পরমায়ু রুদ্ধি হয় জানিবে তাহার। মৃত্যু জয় করে সেই শাংসর বিচার॥ সার্কণ স্থাতীক হেরে যেই জন। তাহার যোগেতে সার কিবা প্রযোজন।। সমস্ত ধরণী জয় শেই জন করে। বায়ু জয় করে দেই এতি অবছেলে॥ আত্মবশে অনুকর্ করে বিচরণ। প্রমাজা পায় দেই শাস্ত্রে বচন। আত্মার সাযুজ্য পায় সেই শাপুনর। হুদি মাঝে হুএতাক হেরে নিরস্তর॥ ক্রমে ক্রমে মুক্তি লাভ করে শেই জন। ইচ্ছামৃত্যু হয় সেই ওহে ঋণিগণ॥ জীবন্**ক** সেই জন জানিবে মন্তরে। অবহেলে তরে দেই ভবপারাবারে॥ সানন্দে ত্রিলোফ সেই করে বিচরণ। যথা ইচ্ছা তথা ঘাম কে করে বারণ।। শরীর ত্যাগের ইচ্ছা যেই কালে হয়। পরাত্মাতে সেই কানে হয়ে যায় স্য॥

প্রতীকোপাসনা কথা করিনু বর্ণন। রাজযোগ কথা এবে করহ প্রবণ ॥
অনুষ্ঠযুগল দারা ধবি কর্ণদ্য। গরিবেক তর্জ্জনীতে আর নেত্রদ্য॥ মণ্যমাদ্বয়ের দারা ধরিবে বদন। কুন্তুনেতে বায়ু শেষ করিবে পুরণ॥ এইরূপ
ঘেই যোগী করিবারে পারে। জ্যোতিরূপী হেরে সেই আপন শরীরে॥
জ্যোতির্দ্য নিজ-আত্মা কবে দরশন। সর্কুপাপে মুক্ত হয় সেই সাধুজন॥
পরম পদেতে শেবে হয়ে যায়' লয়। কহিলাম গৃড় তত্ত্ব ওরে ঋষিচাম।
ভদ্ধতিত্ব যেই যোগী সদা সর্কক্ষণ। এই যোগ শিলা করে হয় একমন॥
দেহধর্মে লিপ্ত নাহি সেই জন হয়। আত্মাতে অভিন্ন হয় জানিবে নি মে।
যে যোগী অভ্যাস করে অতি গুপুচারে। পাপ মহাপাপ ঘলি নেই নন
করে॥ তরু পরত্রক্ষে লীন সৈই জন হয়। আনন্দে হইযা রহে সদা তক্ষাম ॥
এই যোগ শিবপ্রিয় জানিবে অন্তরে। নির্কাণকলদ ইহা শাত্মের বিচারে॥

यउत्त मद्य देश कतित्व तीर्गन। धरे यात्र मिका करत यहे- माधुकन ॥ নাছোৎপত্তি হয় তার জানিবে অন্তরে। শুন শুন বলিভতছি বিশেষি স্বারে শধুকর যেইরূপ করয়ে ঝঙ্কার। প্রথমে সেরূপ ধুনি হইবে প্রচার ॥ তার পর বেৰুগুনি হইবে শ্রবণ। বীণাবাদ হবে শেষে ওহে ঋষিগণ।। ঘণ্টান'দে আচ্চিগত হয়। মেৰ শব্দ হয় শেষে জানিবে নিশ্চয়॥ সেই শব্দে মন বিয়া ধৰি যোগী জন। নির্ভয়ে থাকিতে ক্রমে হয় সে সক্ষম।। মুক্তিপ্রদ শয় হয় জানিতে দেকালে। শাস্তেৰ প্রমাণ এই কহিনু স্বারে॥ শে নাদে চিত্ত করিবে রমণ। বাহ্যজ্ঞান না রহিবে জানিবে তথা ॥ এইরপে যোগাভাগে করিতে করিতে। স্থাকিংশ গান হয় জানিবে ক্রমেডে। অতিক বলিব কিবা ওছে খ্যিগণ। এইরণে গোগশিক্ষা কারবে মুজন।। সিদ্ধাদনে বসি যোগ কবিতে ২ইবে। আসন ইহার নম নাহি আর ভবে॥ (रिहर्ने श्रुष्टांत्र मर मूखा न! दि पाता। नाष्ट्रमर नग्न नाहि विष्यंत यायात्र॥ মুক্তাবস্থা কারে বলে করহ প্রবণ। একে একে সেই কথা করিব বর্ণন।। সাধক ঘদ্যপি পাপে অনুরক্ত রয়। তরু মুক্তি হবে তার নাহিক সংশ্য॥ 🖣 খরেরে বিধিমতে করিয়া পূজন। ধোপাসনে উপবিষ্ট হযে সাধুজন॥ প্রতক সমাক রূপে সম্রুট করিয়ে। যোগশিক্ষা লবে পরে সান্দ হৃদ্ধে।। **শুরুর উপরে সব করিয়া অর্পণ। ভাষাতে করিবে কট ওচে ভার্মিণ।** ভার পর যোগ শিকা এহণ করিবে। তবে ত সফল কাজ সকল হইবে।। আরম্ভ করিবে যোগী মনে সাধুজন। বিপ্রাগণে পরিতুট করিবে তখন॥ यक्तिविधि हर्ष विविध धकारत । शिवित इहेगा घारव भिरतत मिलित ॥ সেই খানে শুরুণাশে করিবে এহন। এই ত শাস্ত্রে বিধি ভতে ঋষিগ্ৰা। একমনে চিন্তা গোগ করিবে অন্তরে। দেহ আদি দিলু সব এঞ্চদেবেরে॥ अकृत अमारिए (वर्षे भग करलवत । श्रीति मगान श्राम । একাকা বদিবে যোগী নির্জ্ঞান আসনে। নিশ্চল করিবে মন অতাব যতনে॥ অঙ্গুলীযোগেতে পরে বিজ্ঞান নাড়ীরে।\* নিরোধ করিবে সাধু অতীব সাদেরে। এই যোগ যেই জন করয়ে সাধন। তাহার যতেক তুঃখ হয় বিনাশন চৈতন্যের আবির্ভাব তাহার যে হয়। শাস্ত্রের বচন সত্য জানিবে নিশ্চয়॥ नितरात धरे योग अच्छान कतित्व। छेननोच इस निष्कि जात कत्रजंदन॥ বায়ু সিদ্ধি হয় তার জানিবে নিক্ষা। সুখ্যাতি লভয়ে সেই নাহিক সংশ্রা।

<sup>।</sup> বিজ্ঞাননাড়ী অর্থাৎ ইড়া ও পিল্ললা।

# इट्ट भिय-शूतागा

প্রতিদিন একবার করিলে সাধন। পাপরাশি তার দেহে না থাকে ইবেন। দেবগণ পূজা করে জানিবে তাহারে। দেবতা সমান সেই ত্রিলোকে বিচরে যোগাভ্যাদে পরিশ্রম করিবে যেমন। তাহার স্ইবে সিদ্ধি জানিবে তেনন ॥ প্রকাশ করিবে নাহি সবার গোচরে। কহিলাম গৃত কথা তোমা সবাকারে 👪 পরাসনে স্থানীন হয়ে যোগীজন। কণ্ঠকুপে নিজ মন করিয়া যোজন 🕊 তালুমূলে জিহ্বা দিয়া ক্ষুণা পিপাদায়। নিরত করিবে দদা কভিন্ন স্বায়। কঠকুপ হতে নিচে আরো অধস্থানে।কূর্ণ নামে নাড়ী আছে বিদিত ভ্রনে॥ **मरे नाफ़ीट मरनारयां ग मिल रागी करत । छिटलत फ्रित्र इस कानित्य** অন্তরে॥ শিবনেত্র হয়ে যদি একান্ত অন্তরে। চিন্তা করে যোগী জন আপন্ত আত্মারে। দ্বাকাশে পরজ্যোতি প্রকাশিত হয। নাহিক সন্দেহ ইথে জানিবে নিশ্চয়॥ এই রূপ চিন্তা করে যেই বোগী জন। কিছুমাত্র পাপশ তার নারহে কখন॥ খলাকাশে জ্যোতি সদা করিলে দর্শন। দেবতাঃ তাহার প্রতি পরিতুট হন। দেবতা সহি.ত কথা সেই জন কয়। শাস্ত্রের বচন সভ্য জানিবে নিশ্চর।। গ্রম কালেতে কিঘা গ্রমের কালে। অথবা আছার কানে এ হান্ত মন্তরে॥ প্রম আতারে সেই করয়ে চিন্তন। দিন্ধি লাভ করে সেই শাস্ত্রের বচন॥ মিদ্ধির বাসনা থাকে ঘাহার অন্তরে। যোগাভ্যান সেই জন ক্রিবে মাদ্রে। যোগাভ্যাম যেই জন করে স্ব্ৰুপ। শিবের পরম প্রিয় হয় সেই জন॥ যাবতীয় ভুতগণে করি পরাক্ষয়। বাসনা তেয়াগ করি যেই মহোদয়॥ পদাসনে স্থাসীন ইইরা ঘত্রে। নাসাত্রতে দৃষ্টি পাত করে সর্বনিশে। আত্মাতে তাহার মন লয় হযে ঘায়। নিগুঢ় কথা ভোষা স্বাকায়॥ মনোলয় হলে পার সেই সাধুজন। খেচরস্ক লাভ করে জানিবে তখন॥ দেবতুলা হয়ে সেই এ তিন ভূবনে। ইচ্ছামত-विहत्र करत मर्क्षात ॥ भत्र पा (जार्ग जित्र मन किवितन पर्मन । जात जात অকু যোগে কিবা প্রয়োজন॥ যেমন কামনা করে আপন অন্তরে। क्रिया नाज तम्हे जन करता। .मः क्लिएट योगकथा कतिचू की ईन । যেরপ বলিয়াছিল দৈব পঞ্চানন॥ এবণ করিলে ইহা ভক্তি সহকারে ! আত্মতত্ত্ব বোধ হয় জানিবে অস্তরে॥

# অশীতিত্য অধ্যায়।

### বারাণদীমাহাত্য।

অবিমুক্তস্য মাহাজ্যং শ্রোতুমিচ্ছামি তজ্তঃ ! তথা ওল্লারদেবতা মাহাজ্যক বদ্ধ যে॥

ব্যাস আদি ঋষিগণ সুমধুর হুরে ।পুনশ্চ জিচ্ছাসা করে বিধির কুষারে 🛊 ভনিত্ব তোমার মুখে অপূর্ব কাহিনী। এখন জিজ্ঞাসি ঘাহা কহ মহামুনি ॥ কাশীর মাহাত্ম কথা ওনিতে বাসনা। বর্ণন করিয়া তাহা পরাও কামনা॥ ভিকার মাহাত্মা তুমি করহ বর্ণন। এই সব শুনিবারে করি আকিঞ্চন। এতেক বচন শুনি বিধির তন্য। কহিলেন শুন শুন ওহে ঋষিচয়। শুহা হতে অতি শুহা এনৰ কাহিনী। বর্ণন করিয়াছিল দেব শূলপাণি॥ উমার নিকটে তিনি করেন কীর্ত্তন। বলিতেছি সেই কথা শুন ঋষিগণ ॥ দেবগণ এই কথা জানিবারে নারে। জানিতে বাসনা করে আপন অন্তরে । অতীব চুল্ল ভ কথা ওছে খদিগণ। শিবের ক্লপায় আমি করিব বর্ণন। উমারে সম্বোধি কহে দেব শূলপাণি। শুন শুন ওগো দেবি তুমি কাত্যায়নী॥ বারাণ্দীপুরী মম অতি প্রিয়তম। তথা অবস্থিতি আমি করি সর্ককণ॥ ্লেই স্থানে শিবপূজা যেই জন করে। আমারে দর্শন করে অতি উক্তিভরে॥ অন্তক্রালে পরা গতি সেই জন পায়। বিমানে চড়িয়া সেই মম লোকে যায়॥ গৃহস্থ অথবা যতি যেই কোন জন। পাশুপত ব্ৰত্পারী কিম্বা শৈবগণ॥ ত্রিদ্রু অথবা একদন্ত আদি নর। সেই স্থানে যারা বাস করে নিরন্তর ॥ নিজ নিজ ত্রত সবে করিয়া ধারণ। মম উপাসনা করে হয়ে একমন॥ স্বার শরীরে আমি করি অবস্থিতি। মোক্ষপদ দিই সবে জানিবে পার্বতী। তথায় শুশান আছে অতি মনোরম। মুক্তিপ্রদ দেই স্থার বিদিত ভূবন।। পাশুপত দ্বিজগণ একান্ত অম্ভরে। মনের সুখেতে তথা অবস্থিতি করে॥ দেবতা গন্ধর্যে তথা করে অবস্থান। তথা আমি নিমন্তর করি অধিষ্ঠান॥ বারা ঘারা সেই স্থানে করে অবস্থিতি। সবার নিকটে আমি রহিগোপার্বতি मर्द्रकीर बामि उथा कति পतिजा। वादांगमी शास मम मना अवसान॥ বারাণদী ধামে যারা করে অবস্থিতি। বিশেশরে দদা দেখে করিয়া প্রণতি॥ ু সংসার-বন্ধনে তারা হয় বিমোচনা পুনর্জ্ম নাহি হয় তালের কখন 📭 সেই স্থানে দরশন করি বিশেষরে। ওকার জপয়ে যেই অতি ভক্তিভরে ।।
ভববদ্ধ ঘুচে তার নাহিক সংশয়। কহিলাম সার কথা এহে ঋষিচয় ৠ
সিদ্ধন্দেত্র তপক্ষেত্র বারাণসীধাম। অবিমৃক্তেশ্বর দেব করে পরিত্রাণ ॥
বাপীজল আছে তথা অতি মনোহর। স্পর্শন মদ্যাপি তাহা করে বোন নর ॥
কৃতার্থ সেজন হয় এই ধরাধামে। ছল ভ সে জন হয় এতিন ভ্রনে ॥
অয়ত সমান জল মতি মনোহর। তারণ পাচন উহ৷ খ্যাত চরাচর ॥
কৃত্রে জল পান যদি করে কোন তন। ক্ষিল পাভন তার হয় বিনাশন ॥
দেবনদী গলাদেবী বারাণদী গামে। বিভ্রেম ভাতুকণ আন্দিত মনে ॥
অতএব বিশালান্দি কি বলিব আর। কাশীতে পাবিতে কচি না হয় কাহার
কাশীব সমান স্থান নাহিক ভূবনে। পাপে তরে জীবগণ ঘেই পুণ্য স্থানে ॥

## একাণীতিত্য অধ্যায়।

হরিকেশ নামক যদের উপাখ্যান।
পূর্ণভক্তস্থ যক্ষত্ত আসীৎ পুল্রঃ প্রভাপবান্।
হরিকেশ ইতি খ্যাতো ত্রদ্ধ্যো ধার্মিক্স্চ সঃ।
তস্থ জন্মপ্রভৃত্যের সর্ব্বে ভক্তিরনুত্তমা।

দনতকুমার কহে শুন ঋষিগণ। বলিতেছি অতঃপর অদ্ভূত ঘটনা পূর্ণ ছদ্র নামে যক্ষ ছিল পূর্বকালে। পুত্র এক ডায় তার ইরিকেশ বলে॥ পরম ধার্মিক পুত্র অতি বীর্যাবান্। অন্ধানা নাহিক ছিল তাহার সমান॥ জন্মাবিথি সেই পুত্র শঙ্কর উপরে। অন্ধৃত্রমা ভক্তি রাখে একান্ত অন্তরে॥ দিবানিধি শিবরপ করয়ে চিত্তন। তয়য় হইযা করে নেত্র নিমীলন॥ তাহার এতেক ভাব করি দরশন। পূর্ণ তল্র সদ্যোধিয়া কহিল তখন॥ শুন ভবে বংস বঢ়ন আমার। যক্ষরণে অনিয়াছ গুণের আধার ॥ যক্ষের উচিত কার্য্য কেন নাহি কর। চক্ষু মিদি সদা ভাব কিবা তাহারল॥ আমার বচন হাদে করহ ধারণ। অন্তরের এই ভাব কর বিসর্ভ্রন। যশো উচিত কার্য্য করহ ধারণ। অন্তরের এই ভাব কর বিসর্ভ্রন। বশো উচিত কার্য্য করহ ধারণ। অধিক বলিব কিবা তোমার সন্তন ॥ পিতার এত্কে বাক্য করিয়া গ্রব্ণ। বিনয়-বচনে কহে তনয় তখন॥ আনত্য সংসারে জন্ম ধরিয়াছি আমি। সংসারের সারবতা কত্ব নাহি জানি॥ ইহাতে বাসনা মন কিছুমাত্র, নাই। কহিন্ম মনের কথা তাত তব ঠাই॥

পুজের এতেক বাক্য করিয়া প্রুবণ। রোব্বশে পূর্ণভক্ত কহিল তখন। তবে আর কিবা কাজ থাকিয়া আগায়ে। ,যথা ইচ্ছা তথা যাহ অতি ক্রত করে। পিতার এতেক বাক্য করিয়া শ্রবণ। হরিকেশ গৃহ হতে করি নিজ মুণু । অবিলধে গেল চলি বারাণ্সীপুরে। তপ আরম্ভিল তথা একান্ত অন্তরে চৰ্দুর নিমেব ভার না হর পতন। স্থাণু সম হয়ে তপ করে আচরণ। শুক কাঠ সম তার হলে। কলেবর। সদা ভাবে কোথা সেই যোগীর ঈশর॥ ইজিয় সংয্য করি সেই মহালুন্। নিশ্চণ হইয়া তপ করে আচরণ॥ সহস্র বর্ষ দিব্য অহীত হইল। তথাপি শিবের নাহি করুণা জন্মিল॥ বল্মীক **জ্ঞান ক্র**নে তাহার শরারে। পিপীলিকা তার মাঝে নিবস্তি করে॥ স্কৃতিমুখ মুখ দিয়া পিণীলিকাগন। ভাছার দেহেতে সদা করয়ে দংশন। ক্লিধিরের বিন্দু তাহে ঘন ঘন পড়ে। সংজ্ঞা নাহি তরু চিন্তে একান্ত অন্তরে প্রেইরপে তপ করে যকের নন্দন। দিবানিশি ভাবে কোথা দেব প্রধানন ॥ 🌯 হেনকালে উমালেবী দেব মহেশ্বরে। নিবেদন করি কহে স্থমগুর খরে ॥ 🐯ন শুন ভগবন্ করি নিবেদন। উদ্যান দর্শনে বাঞ্চা হতেছে এখন॥ কাশীর উল্যানমাঝে করি বিভরণ। কাশীর মাছা গ্রাকথা করিব প্রবণ।। পেবীর এতেক বাক্য তিনি মহেশ্র। সহাস্ত বদনে হন প্রফুল অওর॥ পার্বতী সহিতে পরে হরিদ অন্তরে। বাহির হলেন প্রভু ভ্রমণের তরে॥ উব্যান্যাঝেতে ক্রমে করিয়া গ্যন। দেবীরে ঘতেক দ্রব্য করান দর্শন॥ একে একে কত শোভা দেখাতে লাগিল। উদ্যান হেরিয়া হুদে আনন্দ জন্মিল।। অশোক পুরাগ আদি পুপাতরুগণ। উদ্যান্মাঝেতে সব হতেছে শোভন। শত শত ভ্রমরের। পুলক অন্তরে। কুসুমে কুসুমে গিয়া বসিছে সাদরে॥ স্থানে স্থানে সরোবরে কত শতদল। ফুটিয়া রয়েছে কিবা অতি সুবিমল।। দাত্যুহ সারস আদি বিহঙ্গমগণ। সরোবরে জলকেলি করে শৰ্কণ।। চক্ৰবাক স্থানে স্থানে বিচরণ করে। কপোত ভ্রমিছে কত না যায় গণনে ॥কাদজ্য-কদন্ব ভ্রমে পুলকে মগন। কারগুব রৰ করে আতি বিযোহন॥ মন্ত শলিতুল কত ওন্ গুন্ করি। ভাষিতেছে চারিছিকে সবে সারি সারি॥ বিকঁদিত পুপ্ত হরে যত তরুগণ। শোভিতেছে কিবা আহা অতীব মোহন॥ লহকার পুষ্প কত শোভে তরুপরে। তুলিতেছে মন্দ্র মন্দ প্রনহিলোলে॥ শিশু সনে মুগীগণ করে বিচরণ। নব নব খাস সবে করিছে ভক্ষণ॥ আনেকে মুসেক্রগণ বিচরণ করে। হিৎসা ছেবু নাহি কভু কাহারো অন্তরে॥ ওড়াগ শোভিছে কিবা উদ্যান-ভিতর। ফুটিয়া রঙ্গ্নেছে তাহে কত্ব শতদণ॥

ফলভারে, অবনত হয়ে তরগণ। নমন্তার ভূমিতলে করে খন খন। তর্ক গণ রক্ষোপরি উপবিষ্ট হয়ে। কলবর করে কত সানন্দ হাদরে॥ মাধবী লতিকা যত বেড়ি সহকারে। আনন্দে করিছে ফিতি প্রণয়ের খোরে॥ গার্কুর কিম্নর সব করে বিচরণ। সবার হৃদয় সদা আনন্দে মগন॥ উদ্যানের শোভা কেবা বর্ণিবারে পরে। হেন স্থান নাহি আর ভূবন মাঝারে॥ রাত্তিকাশে সদা চন্দ্র করে অব্ফিতি। কানন শোভিত করে চন্দ্রমার দীপ্তি॥ শিকিকুরা সদা বসি তরুর উপরে। তালে তালে মদগ্রখে সদান্ত্য করে॥ স্থানে স্থানে শোভে পুল্প কাঞ্চন সমান। রজত সমান কত শোভে স্থানে স্থানে স্থানে লতাকুঞ্জ হতেছে শোভন। বসিলে জুড়ায় তথা তাপিত জীবন॥

এইরপে বনশোভা দেখিতে দেখিতে। ভ্রমণ করিছে শিব দেবীর সহিতে। সজে সঙ্গে অনুগামী আছে গণগণ! মুখবাদ্য কক্ষবাদ্য করে ঘন ঘন॥ তখন গিরিজা সতী পুলকিত্যনে। জিজাসা করেন শিবে মধুর বচনে॥ উদ্যামের শোভা প্রভু করিছি দর্শন। এখন তোমার কাছে করি নিবেদন ॥ ক্ষেত্রের মাহাত্ম্য পুনঃ বলহ আমারে। শুনিতে কৌতুকী বড় হতেছি অন্তরে এতেক বচন শুনি দেব পঞ্চানন। কহিলেন শুন শুন করিব বর্ণন H গুফ হতে গুফ্ এই বারাণদীধন। ইহার প্রদাদে জীব শভয়ে নির্দাণ । কত সিদ্ধ **এই স্থানে** করে স্বেক্তি। কেবা সংখ্যা করে **ভার ভন গো** পার্বতি॥ মম লোক অভিলাষে পুণ্যবান্গণ। কতরূপ ধর্মকর্ম করে সর্বক্ষণ॥ জিতেন্দ্রিয় পুরুষেরা একান্ত অন্তরে। যোগ অনুষ্ঠান সবে স্যতনে করে॥ (एथ एएथ कड शकी करत विष्ठत्। काकर्ष तव करत विश्वमागण। দেখ দেখ প্রিয়তমে অই সরোবরে। ফুটিয়া রয়েছে পদ্ম কিবা শোভা ধরে॥ এই স্থানে অপ্ররারা সদা সর্কক্ষণ। নৃত্য গীত করি হয় পুলকে মগন। গদ্ধর্বগণেরা হেথা করে অবস্থান। গান করি স্থা তারা জুড়ায় পরাণ॥ আমার পরম প্রিয় বারাণ্মী পুরী। তাহার কারণ বলি শুন গো স্থানরী॥ আমার পরম ভক্ত পুণ্যবান্গণ। আমার উপরে মন করিয়া অর্পণ॥ পরম সুখেতে হেথা করে অবস্থিতি। এ হেতু পরম প্রিয় জানিবে পার্ববিী॥ এই স্থানে যারা যারা করে অবস্থান। অন্তিনে তাহাণে পাল প্রমনির্ব্বাণ॥ তহ হতে অতি গুছ বারাণদী পুরী। কি বলিব তব পাশে তন গো সুন্রী॥ ইহার মাহাত্ম্য জানে ব্রহ্মা আদি সূবে। মম প্রিয়ত্ম ক্ষেত্র জানিবেক ভবে ॥ यथन यथन श्रुवी कति एतमन। आनत्म आर्थीत यन इस निमन्ता।

यहारमाक हर रहित अवारन थाकिरल। यहारक जाय छाहे जानित जिल्हा অবিমুক্ত নাম তাই বিদিত ভূবন। তোমার নিকটে দেবি করিত্ম কীর্তন॥ কুরুকেত্রে গদাদারে নৈমিষ কাননে। পুক্তর তীর্থেতে কিদা অন্য তীর্থস্থানে॥ स्रान स्राप्ति भूगाकर्ष कतित्व माधन। त्यांक नाहि कीन्श्री गटक कपांडन॥ এইস্থানে কিন্তু প্রাণ বিসর্জ্জন দিলে। মুক্তিলাভ হয় তার সেই পুণ্যফলে॥ প্রয়াগ হইতে শ্রেষ্ঠ এই স্থান হয়। সন্দেহ নাহিক ইথে জানিবে নিশ্চয়॥ এই স্থানে জৈগীষব্য করি অবস্থিতি। আরাধনা করেছিল করিয়া ভকতি॥ করেছিল মম রূপ নদত চিন্তন। সেই হেতু মহাসিদ্ধি লভে যেই জন॥ এইস্থানে ধ্যানযোগ করিলে সাধন। প্রম কৈবল্য হয় শাস্ত্রের বচন ॥ দেবভাতুর ভ স্থান বারাণদী পুরী। যোগীগণ চিন্তা করে দিবাবিভাবরী॥ এই ছানে যোক লাভ শাত্রের বচন। অতা স্থানে মুক্তি নাহি হয় কলাচন। কুবের তপস্থা করি বারাণদীধামে। যক্ষ অধিপতি হলো জানিবেক মনে॥ পরাশরমুত ব্যাস যোগী মহোদয়। ইহার প্রসাদে সিদ্ধি পেয়েছে নিশ্চয়। ইহার প্রদাদে তিনি পুরাণ- গ্রেণতা। বেদের বিভাগকর্তা ধর্মের ভরত। ॥ এই স্থানে বেদ্ব্যাস করি অবস্থান। ঋণি-অধিপতি হলো সেই মতিমানু॥ इक्त हुन वक्ष भाषि यह (प्रवर्ग । कामी छेशांगना करत इरा धक्मन।। অনুসমনেতে ভারা করি অবভিতি। দিবানিশি হুদে ভাবে কোথা পশুপতি॥ আমার প্রসাদে ইন্র দেবের রাজন। পেয়েছে অমরান্টা মতি বিযোহন॥ চতু দর্ণ এই হানে করে অবস্থান। জনপদ কর আছে কে করে নন্ধান। এই স্থানে বাস করি আমার উপরে। মন প্রাণ যেই জন সমর্পণ করে॥ তুল্ল ভ নির্বাণ পায় সেই সাধু জন। আমার বচন মিথ্য নহে কদাচন॥ কাশীর মাছাত্ম কথা কি বলিব আরে। যত বলি তত হয ক্রমশঃ বিস্তার॥ সংক্ষেপে তোমার পাশে করিনু কীর্তন। গুহু হতে গুহু ইহা অতি গুহুত্ম॥ কহিলাম গুঢ় তত্ত্ব দেবি তব ঠাই॥ ইহা হতে গুপু মম আর কিছু নাই। পরত্রশা সম এই বারাণসী পুরী। পরম স্তরম্য ইহা জানিবে সুন্দরী॥ এইরপে কত কণা কহে পঞ্চানন। তার পর গিয়িজারে করি সাম্বাধন। কহিলেন শুন শুন ওগে। প্রিয়তমে। একবার ফিরি দেখ আপন নয়নে॥ অই দেখ যক্ষযুত একান্ত অন্তরে। দিবানিশি তপ করে থাকি অনাহাবে॥ উহার উপরে দয়া কর বিতরণ। চল চল অই স্থানে করি গো গমন।

এত বলি পশুপতি পাৰ্মতী সহিতে।

उथा तिशा (एरएपर एपर প्रकानन।

উপনীত ख्रा कति यक मित्रिटि ॥

যক্ষতে দিব্যচকু ক্লুরেন অর্পণ॥

কহিলেনু শুন শুন খকের নদন। বর দান হৈতু আদি করি , ভাগৰন ॥ চকু মেলি ধরশন করহ আমারে। দিব্য চকু সমর্পণ করিমু ভোমারে ॥ দেবের এতেক বাক্য করিয়া শ্রবণ। পুলকে পুরিত ইয় যকৈর নৃদ্দন প্রণাম করিয়া পরে শিবের চরণে। করবোড় করি রহে ভব্তিযুত মলে। भीदा शीदा मृत्रांकः कहिल उभन। छन छन निद्यपन छह छन्रस ॥ একমাত্র ভক্তি চাহি তোমার গোচরে। প্রোজন নাহি কিছু অন্ত কোন বরে॥ অবিমুক্তে সদা আমি করি অবস্থিতি। এই ভিক্ষা তব পাশে ওকো পশুপতি। এই মাত্র হৃদে আমি করি আকিঞ্ন। তব পদ স্বিরত করিব দর্শন।। এতেক বচন শুনি দেব পশুপতি। কহিলেন শুন শুন ওকে মহামতি॥ জরা মৃত্যু বিবর্তিজ্ঞ হয়ে সংকক্ষণ। কাশীলামে থাক ভুমি আমার সদন ॥ গণাধ্যক হবে তুমি আমার প্রদাদে। কহিলাম সার কলে তব সন্নিহিতে॥ সকলে সর্বদা প্রা করিবে তোমার। অজের হুট্রে তুমি কহিলাম সার ॥ ক্ষেত্রপাল হবে তুমি আমার বচনে। মহাবল মহাসম্ভ ভানিবেক মনে॥ মহাযে। গ্রী ধণ্ডপাণি হবে মহাজ্বন। তোমার সেবক সদা রবে ছুক্তিন॥ অভ্রম সংভ্রম নাম সেই দোহে ধরে।তব আজ্ঞা শিকোপরি ধরিবে সাদরে॥ তোমার আদেশ তার। করিয়া এহণ। করিবে লোকের মনে ভ্রম উৎপাদন। ংএত বলি দেবদেব শিব পশুপতি। যুক্ততে কুপাবশে করি গণুগতি। আপন আবাদে সুখে করেন গ্রন। কহিলাম দিব্য কথা স্বার সদন॥ ভক্তিভরে এই কথা থেই জন পডে। অথবা শ্রবণ করে একান্ত অন্তরে॥ শোক তাপ তার দেহে না রহে কখন। অন্তিমে দে জন যায় অমর ভবন। পুরাণ কাহিনী এই কহিনু সবারে। আর কি ওনিতে বাঞ্চা বলহ আমারে ! পুরাণের সার এই শ্রীশিবপুরাণ। ইছার প্রসাদে হয় মুরপুরে স্থান।

## দ্বাণীতিত্য অধার।

শিবের তপশ্চরণাদি ত্রতানুষ্ঠানের কারণ ও তৎপ্রসঙ্গে অপূর্ব্ব উপাখ্যান।

শ্বিগণ জিজ্ঞাদিল স্নত-কুমারে। মিবেদন করি প্রভূ তোমার গোচরে॥
ভার পর ক্রি করিল দেব শূলপাণি। আরো কিবা পুনেছিল দেবী কাত্যায়দীয়

তার পর ওন তন ওগো হৈমবঁতী। অপ্র ঘটন। ক্রমে কর অ্বগতি॥ যে রক্ত সঞ্চিত হলো কপাল ভিতরে। মন্থন করিতু তাহা অতি যত্ন করে॥ কল্ল প্রথমে তাহে হয় উৎপাদন। বৃদুদ ক্রমেতে পরে হইল সৃজন। তাহা হতে ক্রমে এক পুরুষ হইল। ধনুর্ববাণ করে তার শোভিতে লাগিল॥ অপুর্ব্ব কিরাট শোভে মন্তক উপরে। শোণিতের বর্ণ ধরে লোচন যুগলে॥ পৃষ্ঠদেশে তৃণ শোভে অতি মনোহর। কবচ শোভিত করে তার কলেবর॥ অঙ্গুলীতে অঙ্গুলিত্র হতেছে শোভন। রূপ হেরি হই আমি আনন্দিত মন॥ ভাহারে হেরিয়া বিষ্ণু জিজ্ঞাদেন মোরে। কোন নর আছে তব কপাল-ভিতরে। বিফুর এতেক বাক্য করিয়া শ্রবণ। মধুর বচনে আমি কহিনু তখন।। নর নামা এই বাক্তি জানিবে অন্তরে। বিশারদ এই নর অভীব সমরে॥ মর বলি জিজ্ঞাসিলে তুমি নারায়ণ। এই হেতু নরনামা হলো এই জন।। ইহার সহিতে তুমি মিলি কলিকালে। সংগ্রাম করিবে কত হার্য অন্তরে॥ দেবকার্য্য শত শত করিব সাধন। লোকপালগণে সদা করিবে রক্ষণ।। তোমার হইবে দখা এই মহামতি। কহিনু নিগুঢ কথা কর অবগতি॥ তব ভুজরক্তে হলো ইহার জনম। এই হেতু মধাতে জা হবে এই জন॥ **ত্রন্ধার পঞ্চমমুখ ম্বরূপ হইবে।** সমরে অমিতবীর্য্য হইয়া থাকিবে॥ অব-হেলে যত শত্রু কবিবে নিখন। অজেয় অবধ্য হবে আমার ব্যন্তা দেবগণ সদা ভয় করিবে ইহারে। দেবরাজ রবে সদা সভ্য অন্তরে॥ বচন আমি বলিয়া তখন। বিফুর দাক্ষাতে মৌন করিনু ধারণ॥ পর সেই নর করঘোড় করে। বিশুরে আমারে তব কবিল সাদরে।। নানামতে স্তব আদি করি উচ্চারণ। কহিল কি আছ্রা হয় বলছ এখন।।

তাহার স্তবেতে তুই হইলাম আঘি। কহিলাম সংবাধিরা শুন গুণ্মণি।।
আমার বচনে তুমি অতীব অচিরে। ত্রন্ধার বিনাশ হেতু যাহ ত্ররা করে।।
এত বলি তার হস্ত করিয়া ধারণ। ভিক্ষাপাত্র মধ্য হতে তুলিকু তথন।।
সম্বোধি কহিন্দু পরে দেব নারায়ণে। শুন শুন নিবেদন তোমার সদনে।।
যে বীর আসিয়াছিল পশ্চাতে আমার। কর্ণে শুনি সেই জান তোমার ছন্ধার।
বিমুগ্ধ হইয়া আছে কর দরশন। উহারে অচিরে তুমি করহ চেতন।।
এত বলি আমি তথা হই অশুর্ধান। বিষ্ণু বীরবরে, ক্রাহ ওছে মতিমান।।
উঠি উঠি মম বাক্য করহ শুবণ। অবিলক্ষে গাত্রোখান করে সেই জন।।
এইরপে কত কহে দেব নারায়ণ। তরু নাহি গাত্রোখান করে সেই জন।।
ভাহা দেখি বিষ্ণু করে পদাঘাত তারে। তখন উঠিল বীর অভি ফুত করে।।

ध्कार्थ शांतिरव শিবে করিবে নিধন। আমার বচন নাহি করিও লক্ষ্ম ॥ লার এতেক বাক্য শুনি বীরবর। ধনুখানি রাখে সেই পৃষ্ঠের উপর 🕴 নজ করে বাণ পরে করিয়া ধারণ। মম অভিমুখে ক্রত আদে সেই জন 🕷 গামার বিনাশ হেতু সেই বীরবর। জ্ঞাতগতি ঘন ঘন হয় অগ্রসর॥ होरा पूर्वि করি দরশন। আমাব হৃদ্য মন কাঁপে ঘন ঘন॥ প্লায়ন নরি আমি সভয় অন্তরে। উপনীত হহ গিয়া বিফুর গোচরে। তাহি ।ছি বলি আমি করি আর্ডনাদ। বিফুর চরণে গিয়া করি প্রণিপাত 🕸 বনয় বচনে পরে কহিন্ম তাহারে। নিবেদন করি বিক্ত শুনহ তোমাবে ॥ ।ই দেখ পাপ নর করে আগমন। আমার বিনাশ অই করিতে সাধন॥ ালা হতে অই বীর লভেছে জনম। পশ্চাতে পশ্চাতে দেখ করে আগমন। াহে রক্ষা পাই আনি পাপাত্মার করে।তাহার উপায় কর নিবেদি তোমার্বর। আমার এতেক বাক্য করিয়া শ্রবণ। হুকাব নিনাদ করে দেব নারায়ণ 🕨 দই শব্দে শিয়োহিত পুরুষ হইন। আমাতে সম্বোধি পরে কহিতে লাগিলাঃ গয় নাই উয় নাই ওহে পঞ্চানন। অভিলাগ কিবা তব বলহ এখন। হ কাজ করিব তব বলহ আমারে। তোমার বাসনা আমি পুরিব সাদবে॥ ।তেক বচন আমি করিষা ভাব।। কবযোড়ে বিফুপাশে করি নিবেদন 🛊 ন ত্রন ভাগবন কহি যে তোমাবে। কপাল রবেছে প্রভু দেখ মম বরে। ভশ। কিচু দেহ তুমি ইহার ভিতর। এইমাত্র চাহি আমি ওহে গদাধর। ামার এতেক বাক্য করিয়া শ্রণ। মনে মনে নারায়ণ করেন চিন্তন। কব। ভিক্ষা দিব আমি মহেশের করে। ইহার উচিত কিবা না বুঝি অন্তরে হুম্প এইরূপ করিয়া চিত্তন। দক হস্ত ভিক্ষাপাত্রে করেন অর্পণ।। াহা দেখি আমি নিজ শূলের প্রহারে।সে হস্ত কর্ত্তন করি অতি ফত করে। ল্ল হস্ত হতে রক্ত অবিরল ধারে। পতিত হইতে থাকে ভূমির উপরে॥ ारे ब्रह्क नेमी अक उथनि रहेन। विश्विभा मम जोश विश्व नागिन u हारवर्ग (मई नहीं .इत वहमान। महञ्ज वत्रय नही तरह विन्रमान # ইরূপে হন্ত ভিকা দিয়া নারায়ণ। কহিলেন মোরে পুনঃ করি সম্বোধন ॥ ন শুন মহেশ্বর বচন আমার। ভিক্ষা দিনু তোমা করে ওহে গুণাধার। খন বলই দেখি ষরপ বচন। ভিকাপাত্র হলো কি না সম্পূর্ণ গুরণ । তেক বচন শুনি ইরিষ অন্তরে। চাহিলাম একদৃষ্টে কপাল ভিতরে॥ হিলাম তার পর করি সম্বোধন। পূর্ণ হলো ভিক্ষাপাত্র ওহে নারায়ণ ॥ ামার এতেক বাক্য শুনিয়া এবণে। শোণিত সংহারে বিষ্ণু আনন্দিত মনে

তার পর শুন শুন ওগো হৈমবঁতী। অপূর্বর ঘটন। ক্রেমে কর অ্বগতি। যে রক্ত সঞ্চিত হলো কপাল ভিতরে। মন্ত্রন করিনু তাহা অভি ষতু করে। তাহা হতে ক্রমে এক পুরুষ হইল। ধন্মর্ববাণ করে তার শোভিতে লাগিল। অপুর্বে কিরাট শোভে মন্তক উপরে। শোণিতের বর্ণ ধরে লোচন যুগলে। পৃষ্ঠতেশে তৃণ শোভে অতি মনোহর। কবচ শোভিত করে তার কলেবর॥ অঙ্গুলীতে অঙ্গুলিত্র হতেছে শোভন। রূপ হেরি হই আমি আনন্দিত মন। তাহারে হেরিয়া বিষ্ণু জিজ্ঞাদেন মোরে। কোন নর আছে তব কপাল ভিতরে। বিফ্র এতেক বাক্য করিয়া শ্রুবণ। মধুর বচনে আমি কহিন্দু তখন। মর নামা এই ব্যক্তি জানিবে অন্তরে। বিশারদ এই নর অতীব সমরে। মর বলি জিজ্ঞাসিলে তুমি নারায়ণ। এই হেতু নরনামা হলো এই জন। ইহার সহিতে তুমি মিলি কলিকালে। সংগ্রাম করিবে কত হারিষ অন্তরে॥ দেবকার্য্য শত শত করিব সাধন। লোকপালগণে সদা করিবে রক্ষণ। তোমার হইবে দখা এই মহামতি। কহিলু নিগুড় কথা কর অবগতি। তব ভুজরকে হলো ইহার জনম। এই হেতু মহাতে জা হবে এই জন। ব্রন্ধার পঞ্চমমুখ অরপ হইবে। সমরে অমিতবীর্যা ২ইয়া থাকিবে॥ হেলে যত শক্ত কবিবে নিধন। অজেয় অবধা হবে আমার বচন।। দেবগণ স্দা ভর করিবে ইহারে। দেবরাজ রবে সদা সভ্য অন্তরে॥ বচন আমি বলিয়া তখন। বিফুর সাক্ষাতে মৌন করিনু ধারণ॥ পর সেই নর কর্যোড় করে। বিফুরে আমারে ভব করিল সাদরে।। নানামতে স্তব আদি করি উচ্চারণ। কহিল কি আজা হয় বলহ এখন।।

তাহার স্তবেতে তুই হইলাম আযি। কহিলাম সংঘাধিরা শুন গুণমণি॥
আমার বচনে তুমি অতীব অচিরে। ত্রন্ধার বিনাশ হেতু যাহ ত্রা করে॥
এত বলি তার হস্ত করিয়। ধারণ। ভিক্লাপাত্র মধ্য হতে তুলিকু তথন॥
সম্বোধি কহিলু পরে দেব নারায়ণে। শুন শুন নিবেদন তোমার সদনে॥
যে বীর আসিয়াছিল পশ্চাতে আমার। কর্ণে শুনি সেই, র্জন তোমার হন্ধার॥
বিমুদ্ধ হইয়া আছে কর দরশন। উহারে অচিরে তুমি করহ চেতন॥
এত বলি আমি তথা ইই অন্তর্ধান। বিষ্ণু বীরবরে, কহে ওহে মতিমান॥
ভিঠ উঠ মম বাক্য করহ প্রবণ। অবিলফে গাজোখান করহ প্রখন॥
এইয়পে কভ কহে দেব নারায়ণ। তরু নাহি গাজোখান করে সেই জন॥
ভাহা দেখি বিষ্ণু করে পদাঘাত তারে। তথন উঠিল বীর অতি কৃত করে॥

যেরপে পারিবে শিবে করিবে নিধন। আমার বচন নাহি করিও লক্ষন। বিদার এতেক বাক্য শুনি বীরবর। ধনুখানি রাখে দেই পৃষ্ঠের উপর॥ নিজ করে বাণ পরে করিয়া পারণ। মম অভিমুখে ক্রত আদে দেই জন। আমার বিনাশ হেতু দেই বীরবর। ক্রতগতি ঘন ঘন হয় অগ্রসর। তাহার ভৌষণ মূর্ত্তি করি দরশন। আমার হৃদর মন কাঁপে ঘন ঘন॥ পলায়ন করি আমি সভয় অন্তরে। উপনীত হই গিয়া বিফুর গোচরে। তাহি ত্তাহি বলি আমি করি আর্জনাদ। বিফুর চরণে গিয়া করি প্রণিপাত। বিনয় বচনে পরে কহিন্দু তাহারে। নিবেদন করি বিফু শুনহ তোমারে। কাই দেখ পাপ নর করে আগমন। আমার বিনাশ অই করিতে সাধন। তাহা হতে অই বীর লভেছে জনম। পালাতে পালাতে দেখ করে আগমন। যাহে রক্ষা পাই আমি পাপাজার করে। তাহার উপায় কর নিবেদি তোমারে। যাহে রক্ষা পাই আমি পাপাজার করে। তাহার উপায় কর নিবেদি তোমারে।

আমার এতেক বাকা করিয়া শ্রবণ। তন্ধার নিনাদ করে দেব নারায়ণ 🗈 সেই শব্দে বিমোহিত পুরুষ হইল। আমারে সম্বোধি পরে কহিতে লাগিলাঃ ভয় নাই ভয় নাই ওচে পঞানন। অভিলাষ কিবা তব বলহ এখন। কি কাজ করিব তব বলহ আমারে। তোমার বাসনা আমি পুরিব সাদরে। এতেক বচন আমি করিয়া এবং। কর্যোতে বিফুপাশে করি নিবেদন । শুন শুন ভর্বন্কহি যে তোমারে। কপাল রয়েছে প্রভু দেখ মম করে॥ ভিক। কিছু দেহ ভূমি ইহার ভিতর। এইমাত্র চাহি আমি ওহে গদাধর। আমার এতেক বাক্য করিয়া প্রবণ। মনে মনে নারায়ণ করেন চিন্তন। কিবা ভিক্ষা দিব আমি মহেশের করে। ইহার উচিত কিবা না বুঝি অন্তরে বভুক্ষণ এইরূপ করিয়া চিন্তন। দক্ষ হস্ত ভিক্ষাপাত্তে করেন অর্পণ। ভাহা দেখি আমি নিজ শূলের প্রহারে।সে হস্ত কর্ত্তন করি অতি জ্রুত করে। ছিন্ন হস্ত হতে রক্ত অবিরল ধারে। পতিত হইতে থাকে ভূমির উপরে॥ শেই রহক্ত নদী এক তখনি হইল। বহিশিখা সম তাহা বহিতে লাগিল 🛚 महार्टिंग (मई नहीं .इय़ वहमान।' महत्र वब्र नहीं तरह विनामान # এইরপে হন্ত ভিকা দিয়া নারায়ণ। কহিলেন মোরে পুনঃ করি সম্বোধন। - শুন শুন মহেশ্র বচন আমার। ভিক্ষা দিনু তোমা করে ওহে গুণাধার॥ এখন বলহ দেখি স্বরূপ বচন। ভিক্ষাপাত্র হলে। কি না সম্পূর্ণ পূরণ। এতেক বচন শুনি হরিব অন্তরে। চাহিলাম একদৃষ্টে কপাল ভিতরে॥ কহিলাম তার পর করি সংঘাধন। পূর্ণ হলো ভিক্ষাপাত ওতে নারায়ণ । আমার এতেক বাক্য শুনিয়া এবণে। শোণিত সংহারে বিষ্ণু আনন্দিত মনে े ज्ञाप অবতার যবে হয়েছিলে ভূমি। বনবাসে গিয়াছিলে ওহে চিন্তামণি।। সুগ্রীবের হিতাকাজ্য। করিয়া তখন। করেছিলে মম পুত্র বালিরে নিধন। সে ছঃখ এখনো আছে আমার অন্তরে। জাগরুক্ আছে তাহা ছদয় বিবরে॥ দেই হেতু অনুরোধ করি মছোদয়। অবতীর্ণ হও তুমি হইয়া সদয়॥ যপুক্লে অবভীর্ণ হয়ে ভগবন্। আমার পুত্রের কর সাহায্য সাধন॥ ইন্দ্রের এতেক বাক্য করিয়া শ্রবণ। মধুর বচনে কছে দেব নারায়ণ॥ মুর্ব ত মানবভারে এই বসুমতী। হইরাছে প্রপীড়িতা ওছে মহামতি॥ সেই ভার যথাসাধ্য করিতে হরণ। অধিকস্তু কুরুকুল করিতে নিধন॥ অবতীর্ণ হব আমি অবনীমাঝারে। তোমার বচন আমি পালিব সাদরে॥ এতেক বচন শুনি দেব-অধিপতি । লভিলেন মনে মনে মতীব পীরিতি॥ ংক্তৰাদ দিয়া কহে ওছে ভগবন্। আপনাব বাক্য মত্য হউক্ এখন॥ তার পর দেবেক্রকে বিদায় করিয়ে। উপনীত হন বিঞু ত্রন্ধার আলয়ে॥ ং **কহিলেন শুন শু**ন ওহে পদ্বাসন। ত্রিভ্বন তুমি দেব করেছ নৃজন॥ আমি ও মহেশ দোঁহে সহায় তোমার। কিন্তু এক কথা বলি শুন গুণাধার॥ সুজন করিয়া নিজে বিনাশ সাধন। কভু নহে উপায়ৃক ওছে মহাত্মন॥ হিংসা করিয়াছ তুমি মহেশ-উপরে। গুণ্ডি কর্ম ইহা জানিবে অন্তরে॥ যাহা হোক মম বাক্য করহ অবণ। প্রারশ্ভিত কর এবে ওহে প্রাসন। আয়িহোত্র অনুষ্ঠান করহ যতনে। গমন বরহ শীঘ্র কোন পুণ্যস্থানে॥ পুশ্রতীর্থে অবিলম্বে করিয়া গমন। যতন করিয়া কর যজ্ঞ আয়োজন॥ **জগতের পতি তুমি পরম দেবতা। তুমি রুক্ত ও আদিত্য নকলের পাতা।** তোমার আদেশ সবে করয়ে পালন। মকলের প্রভু বুমি ওহে পদাসন॥ তোমার আদেশ লভ্যে হেন সাগ্য কার। কহিলাম সার কথা নিকটে তোমার গাহ'পত্য দাকিগাত্য ও আহবনীয়। শান্তের বিধানে এই হয় অগ্নিত্র॥ অগ্নিত্রর যথাবিধি করিয়া এহণ। যক্ত অনুষ্ঠান কর ওহে মহাজুর ॥ যজ হেতু কুঁও কর বিধানে নির্মাণ। শিরের তর্পণ কর তাংহে মতিমান্ ॥ আমারো তর্পণ তুমি করিবে তাহাতে।প্রায়শ্চিত হবে তাহে জানিবেক চিতে এইরপে হোমক্রিয়া করিলে সাধন। পর্য ঐখর্য্য পাবে ওছে মহাত্মন্॥ আ্যানরে পাইবে তুমি নাহিক সংশয়। শাস্ত্রের বিধান এই ওছে মহোদয়॥ অগ্নিহোত্ত হতে শুদ্ধ আর কিছু নাই। ইহাতে সকল সিদ্ধ জানিবে গোসাই॥ ইহার প্রসাদে হয় পরমা স্থগতি। এক অগ্নি পুজে যদি আছে যথাবিধি॥ पाणीके माधन रह जानित्य निक्हा। भारखद यहन विथा क्छू नांदि इहा।

এতেক বচন শুনি পার্বতী তখন।পুনশ্চ জিল্ঞানা করে ওহে পঞ্চানন॥ আপনার ভিকাপাত্তে যে পুরুষ জনমে। কর্মবশে জয়ে কি না কহ ময় হেনো কিলা বিষ্ণু হতে হয় জনম তাহার। এই কথা বিবরিয়া কহ গুণাধার॥ আরো এক কথা বলি ভন প্রাসন। চারি মুখ প্রাসন বিদিত ভুবন॥ পঞ্ মুখ কিবা রূপে তাহার হইল। এই কথা প্রকাশিয়া মম পাশে বল। সত্ত্তে বেজ নাহি হয় দরশন। সত্ত্ব নাহি থাকে কভু রজতে কখন॥ সত্ত্তণরূপী ত্রদা বিকিত ভূবনে। সে পুরুষ কিরুপে গত হলো পলাসনে 🛭 কেন না সেজন হয় রজগুণধারী। অভএব বল নাথ করুণা বিভরি ॥ এতেক বচন শুনি দেব পঞানন। কহিলেন শুন দেবি করিব বর্ণন॥ যে তুই পুক্ষকথা কহিনু ভোমাবে। আমার শরীরে দোঁহে নিজ জন্ম ধরে॥ মহাত্মা আছিল দোঁহে ওহে ভগবতি। অসাধ্য তাদের কিছু নাহি বসুমতী॥ তার মধ্যে একজন ভ্রেদারোপরে। প্রাক্ষম ব্রন্নরূপে অবস্থিতি করে ॥ দেই হেতু রজোগুণী হয় পদাসন। বিমোহিত ভাবে রহে নদা সক্ষক।। আপনার সৃষ্টি বলি অভিমান করে। অহন্ধার ঘটে তার অন্তব-মাঝারে ॥ মনে মনে চিন্তা করে দেব পলাসন। সৃষ্টিকর্তা মম সম আছে কোন্জন॥ পঞ্চমুখ হয়ে বেদ্ধা এ হেন প্রকারে। নিগ্র ইইয়া রহে আপন অন্তরে॥ পূর্ব্বেতে তোমার কাছে ওগে। কাত্যায়নী। বলেছিনু এই সব অপূর্ব্ব কাহিনী এখন সে সব কেন হও বিদরণ। সংক্ষেপে পুর্বের কথা করিত্ব বর্ণন॥ পঞ্চ মুখ পিতামহ করেন ধারণ। প্রথম মুখেতে হয় ঋথেদ নিক্রম॥ ষজুর্ব্বেদ প্রকাশিত দ্বিতীয় বদনে। সামবেদ বহির্গত তৃজীয় আননে॥ অথবর্ষ নিঃসূত করে চতুর্থ বদন। পঞ্চম বদনে ঘাহা করহ প্রবণ।। সাজো-পাঙ্গ ইতিহাস প্রকাশিত হয়। রহস্ত করিয়া আদি জানিবে নিশ্চয়॥ পঞ্চম মুখেতে পিতামহ প্রাসন। কখন কখন বেদ করে অধ্যয়ন ॥ মুখ তুঃসহ তেজ করয়ে ধারণ। কার লাধ্য তার প্রতি করে দরশন।। উ**হার তেজে**তে যত দেবতা দকল। নিস্তেজ হইয়া রহে দবে নিরস্তর ॥ महाना कतिन পर्त एक (प्रवर्ग। वनरनत एक प्रांता निरस्क धर्म।। অভএব ভগবান্ শিবের গোচরে। চল চল যাই মোরা অতি ত্রা করে।। এইরপ পরামর্শ করিয়া তখন। দেবগণ মম পাশে উপনীত হন।। প্রথমতঃ স্তব করে বিহিত বিধানে। মহেশ্বর তুমি শিব বিদিত ভূবনে। नकलं जीदात छुमि इ७ दंद देवत। नमकात उर शरफ ७८६ फिरायत।। জগতের যোনি তুমি ওহে মহোদয়। তোমারে সকল জীব লভরে আগ্রয়॥ , বিহু বছ ভূমি দেব জগত-কারণ। ন্যস্তার তব পদে ওচেই মহাআন।। এইরপে শুব করে দেবতা সকলে। শুব শুনি তৃষ্ট হই স্বার উপরে।। অলক্ষ্যে, থাকিয়া আমি কহিন্দু তখন। শুন শুন দেবগণ আমার বচন।। স্তবেতে সম্ভুষ্ট আমি হয়েছি অন্তরে। কিবা বাঞ্চা কর সবে বলহ আমারে।। আমার এতেক বাক্য করিয়া শ্রবণ। কহিলেন দেবগণ ওছে ভগবন।। করুণা যদ্যপি থাকে মোদের উপরে। বরদান কর প্রস্থু রূপাদৃষ্টি করে।। জন্মার পঞ্ম মুথ অতি তেজীয়ান। তাহে মোরা তেজহীন হইয়াছি স্লান।। নিঃসত্ত্র হয়েছি যোর। কর দরশন। পূর্ববৎ তেজ আর নাহিক এখন।। পূর্বতেজ যেইরপে লভিবারে পারি। তাহার উপায় কর ওহে ত্রিপুরারি॥ খাহে নিপতিত হয় পঞ্চন বদন। তাহার উপায় কর ওছে ভগবন।। দেবতাদিগের বাক্য করিয়া শ্রবণ। তখনি গেলেম আমি ব্রদার ভবন।। রজোভণে একা ছিল আরত তখন। আমারে সন্থান নাহি করে পদাসন।। যথোচিত অভ্যর্থনা না করিল মোরে। অবজ্ঞা করিল কত আপন অন্তরে॥ সিংহাসনে বসি আছে দেব পদাসন। তেজে দশদিক হয় উজ্জ্ল তখন।। আমারে দেখিরা নাহি উঠে পদুযোনি। থেমন বসিয়া আছে রহিল তেমনি॥ ভাঁহার নিকটে আমি করিয়া গ্রন। কহিলাম শুন শুন ওছে পলাসন॥ অতিরিক্ত মুখ তব করি দরশন। আহা মরি কিবা তেজ অতি মনোরম। এত বলি অট্রাম্য করিয়া তখন। নথ দ্বারা কাটি লই পঞ্চম বদন।। পঞ্চম ৰদন কাটি এ হেন প্রকারে। লফে খপে নৃচ্য করি আনন্দের ভরে।। **উদ্ধার বদন যবে হইল কর্ত্তন। দেবগণ স্তবপাঠ করিল তথন।। আমারে** সম্বোধি কহে অমরনিকর। তুমি দেব্দয়াময় ওতে দিগদর।। মহাকাল জ্ঞানযুক্ত ভূমি পঞ্চানন। তোমার চরণে মোরা করি গো বন্ধন।। দর্পহারী जुमि (पर जूनमायीदा। कारमदा मश्रीत जुमि कत यथीकाता। ভত্তের যাতনা তুমি কর বিনাশন। নমস্কার তব পদে ওহে পঞ্চানন।। ভক্তের কুল্যাণ তুমি কর নিরস্তর। তোমার চরণ বন্দি তুমি ছে শঙ্কর।। ত্রদার পঞ্চ মুখ করিয়া ছেদন। কপাল হস্তেতে তুমি করিছ ধারণ।। এ হেতু কপালী নাম হইল তোমার। প্রসন্ন হউন দেব ওহে গুণাধার।। এইরূপে শুব করি যত দেবগণ। আপন আপন স্থানে করিল গমন।। তিরে।হিত হই আমি দেখিতে দেখিতে। তার পর যাহা ঘটে শুনহ পরেতে জন্ধার পঞ্চম মুখ করিয়া ছেদন। মনে মনে চিন্তা আমি করিন্দু তখন॥ অদহত্যা-আক্রমণ করিল লরীরে। কিরপে পাপের ক্ষম হইবারে পারে॥

বহুবিধরপ মনে করি। ডিওন। একার উদ্দেশে শুব করি অধ্যান। কহিলাম শুন শুন এব ভগবন। পরিমাত্মা তুমি দেব করিগো বন্দন। তোমা হতে পদার্থের উৎপত্তি হয়। তেজের অব্যয় নিধি তুমি মহোদয়'। নিজ্জনমারাবশে তুমি করহ সূজন। আপনাকে নমকার ওহে পদাসন। জলক্ষ কমল হতে জন্মিরাছ তুমি। জলই তোমার স্থান ওহে পদাযোনি। কমলপত্তের সম তোমার নরন। পরম আনন্দে তুমি রহ সর্ক্ষণ। যত্তের স্বরূপ তুমি মহামতি। নমকার করি তোমা ওহে পদাকর। পদার্গর্ভ বেদগর্ভ তুমি মহামতি। ভোমার চরণে আমি করি গো প্রণতি। স্বধা স্থাহা ব্যক্ত কার তুমি শুণাধার। তোমার পদেতে আমি করি নমকার। দেবতার মাক্য আমি করিয়া প্রবণ। তোমার মন্তক দেব করেছি ছেদন। একছত্যা পাপ আদি বিরেছে আমারে। পরিত্রাণ কর মেতের ক্রপাদ্টি করে।

আমার এতেক স্তব করিয়া শ্রণ। প্রম সন্তুট হন দেব প্রাসন। কহিলেন শুন শুন ওহে পশুপতি। তোমার স্তবেতে তুট হইয়াছি অতি॥ ইহাতেই হ**েল**। তব থত পাপ কয়। নাণিক সন্দেহ ইথে জানিবে নিশ্চয়। আমার মন্তক তুমি করেছ ছেদন। এ হেতু কপালী নাম করিলে ধারণ॥ ভোম। হতে যত বিপ্র লভিবে উদ্ধার।কত পাপী তরি যাবে ওহে গুণাধার॥ পাপক্ষ হলো বটে ওহে পঞ্চানন। তবু এক কাজ কর শুদ্ধির কারণ । পৃথক কামনা করি প্রায়শ্চিত কর। বহু ফল পাবে তাহে ওছে দিগম্বর। এত বলি পদাসন হন তিরোধান। আপন স্থানেতে আমি করিনু প্রস্থান, একান্ত অন্তরে করি বিষ্ণুর চিন্তন। অকমাৎ আবিভুতি দেব নারায়ণ। ভাঁছারে প্রণাম আমি করিয়া বিধানে। বলিলাম ভগবন্ নমামি চরণে॥ পরাংপর তুমি দেব স্বাব প্রধান। তোমার চরণে করি নিয়ত প্রণাম।। স্বার ঈশ্বর তুমি পর হতে পর। বহ্নি ত্রয় রূপী তুমি যজ্ঞের ঈশ্বর॥ তোমা ছতে চতুর্বর্ণ হয়েছে সূজন। কমল পত্রের সম যুগল নয়ন॥ জগৎ ব্যাপিয়া তুমি কর অবস্থান। কেবা জানে তব তত্ত্ব ওছে মতিমান॥ \* যেদিকে ফিরাই আঁখি ওহৈ ভগবন্। সেই দিকে তব রূপ করি দরশন॥ তোমা ভিন্ন কিছু নাহি দেখিবারে পাই। তোমার চরণে নতি করি গো গোঁদাই ॥ আমার এতেক বাক্য ক্রিয়া এবণ। পরিতৃষ্ট হয়ে বিভূ কছেন তখন ॥ প্রসন্ন হয়েছি আমি তোমার উপরে। বর লহ যাহা হয় বাসনা অন্তরে॥ এতেক বচন আদি করিয়া শ্বণ। বিনয় করিয়া তারে কহিনু ত্রন। ভন ভন ভ্ৰাবন নিবেদি তোমারে। কি রূপে হইব মুক্ত বলহ 'আমারে #

কিরপে আমার পশি হবে বিমোচন। রূপা করি কহ তাহা ওছে ভগবন। ভোমা বিনা এই পাপে কে ভারিভে পারে। জক্ষহত্যা পাপ মোর ঘিরেছে শরীরে॥'হইয়াছে অপবিত্র মম কলেবর। কিরুপে পবিত্র হব কছ গদাধর॥ আমার এতেক বাক্য করিয়া শ্রবণ। মধুর বচনে বিফু কছেন তখন। জন্মহত্যা উগ্ৰ পাপ হয় অতিশয়। যাতনাদায়ক ইহা জানিবে নিশ্চয়॥ এই হেতু মনে মনে পাপের চিন্তন। ।কভু না করিবে জান ওহে মহাত্মন ॥ ভক্মিানু হলে তুমি আমার গোচরে। পরিত্রাণ হেতু ভিক্লা করিছ সাদরে।। এই হেডু বলি শুন ৩ হে পঞ্চানন। বেলচ্ব্য আচরণ করহ সাধন॥ তাহা হলে পাপ নাশ হইবে তোমার। আমার বচন সভ্য ওবে গুণাধার॥ এত বলি অন্তর্হিত হন নারায়ণ। লক্ষ্মী সহ নিজ স্থানে করেন গ্রাম ॥ ত্রশহত্যা পাপে আমি হইযা কাতর। নানাতীপ পর্যাটন করি নিরন্তর **॥** প্রথমতঃ কামরূপে করিনু গ্রম। প্রভাস ভীর্থেডে পরে করি প্রাটন॥ এইরূপে নানাস্থান বিচরণ করি। श्वान नाशि পारे किन्नु जानित्व युन्नती॥ শব্জিত হইয়া পরে আপন অন্তরে। অনুতাপ করি কত কি কব ভোষারে॥ অকমাৎ হদে হয় বুদ্ধির উদয়। পুদ্ধর তীর্ণেতে ধাব ষধা পাপক্ষয়॥ यत्न यत्न এहेत्र श कहिशा विखन। अविलाध एउं शास कहिनू शयन ! **উদ্যান শোভিছে** তথা অতি মনোহর। ফলফুলে অবনত কত তরুবর**।** মুগপক্ষী স্থানে স্থানে করে বিচরণ। প্রবেশি তথায় হই আনন্দে মগন।। এই ছানে যেই জন আগমন করে। কভু নাহি থাকে পাপ তাহার শরীরে॥ সেই স্থানে ব্রতবিধি করি অনুষ্ঠান। তার পর কাশীধামে করিনু প্রস্থান॥ নয়ন মুদিয়া তথা একান্ত অন্তরে। ভগবানে সরি দদা ভকতির ভরে॥ **আমার পরম ভক্তিকরি দরশন! পু**নরায় ত্রন্ধা আসি আবিভূতি হন॥ প্রত্যক আসিয়া মোরে কহে পদ্মযোনি। আরাধনা করিতেছ ওতে শূলপাণি ভোমার ভকতি আমি করি দরশন। পর্ম সম্রুষ্ট হরে করি আগমন॥ ষধাষ্থ এতী হয়ে উপাসা করিলে। আবিভূতি হই আমি তাহার গোচরে ॥ কায়্রমনে মম সেবা করিতেছ তুমি। সেই হেতৃ পরিতুর্ট হইয়াছি আমি॥ অকুক্তম বর তোমা করিব প্রদান। গ্রহণ করহ তাহা ওহে মতিমান।। এতেক বচন ভাঁর করিয়া প্রবণ। কহিলাম শুন:শুন ওহে পলাসন।। জগতের কন্ধা তুমি জগতের যোনি। তোমা হতে সৃষ্টি হিতি প্রলয় যে জানি প্রত্যক্ষে তোষারে আমি করিকু দর্শন। এই ম্ম মহাবর ওতে পলাসনঃ। বহুকাল বছ কফে তপক্তা করিলে। দর্শন তোমার তরু কভু মাহি খিলে॥

क एक जिमादित व्यामि कतिन्त्र पर्णन। देशार्थिका किया वत अरह छत्रवन् । कक्रना यनानि रत्र आयात उपरत । धरे रत एर धक् क्रनामुक्ति करता। ত্তক্ত্যাপাপ মম হোক্ বিনাশন। পবিত্র ইউক্ দেহ ওছে ভগবদু॥ আমার বচন শুনি দেব পদুযোনি। কহিলেন শুন শুন শুহে শূলপাণি॥ যে তীর্থে বিদিয়া তপ করিছ সাধন। এখানে কপাল তব ছবেছে পতন। কপাল হাতেতে তব ছিল বিরাজিত। এখানেতে সে কণাল হয়েছে পতিত। कशालरमाहन नाम अञ्चल इहेल। भूगायन এই सान मकत्न कानिल॥ ইহার স্থান স্থান আর কোথ। নাই। প্রসিদ্ধ হইবে ইহা কহি তব গাঁই। এই **হানে** যেই ব্যক্তি করি আগমন। গোমারে ৩কতি ভরে করিবে দর্শন। মহাপাপী যদি হয় দেই নরাগম। তথাপি পাতক তার হবে বিমোচন। পবিত্র হইয়া সেই জগত-সংসারে। নানাম্বধ ভোগ সদা করিবে অন্তরে॥ পঞ্চ ক্রোশপরিমিত এই স্থান হয়। প্রম প্রিত্র তীর্থ জ্ঞানিবে নিশ্চয়। এই তীপ্ষধ্য দিয়া জাহ্নবী সুন্দরী। গমন করিবে জান তহে ত্রিপুরারি॥ সর্বাদেব সহ আমি মিলিত হইয়ে। এখানে করিব বাস সান্দ-ছদয়ে॥ বারাণদী নামে খ্যাত এন্থান হইবে। এই খানে যেই জন পরাণ ত্যজিবে॥ রুদ্র শভিবে তারা নাহিক সংশ্য। আমার বচন মিখ্যা কভু নাহি হয় ॥ পূজা জপ হোম আদি করিলে সাধন। অনন্ত হইবে ফল আমার বচন। অধিক বলিব কিবা ওহে মহামতি। ইহার প্রসাদে হবে নির্বরণ মুক্তি॥ অত্তর মম বাক্য কর্ছ শ্রবণ। ভাগ্যা সহ এই স্থানে থাক পঞ্চানন। যাবত পাতক তৰ হলো বিনাশন। বৃদ্ধহতা পাপ আর নাহিক এখন : বিধির তাদৃশ বাক্য শুনিয়া তথনি। বিনয-বচনে কহি ওহে পল্যোনি। নিবেদন করি এক তোমার সদন। ঘদ্যপি প্রসন্ন তুমি ওছে পলাসন। ষত তীর্থ ধরাধামে করে অবস্থিতি। সবার প্রধান ই**হা হ**উক**্ সম্প্র**ি॥ বিষ্ণু সৃহ যেন আমি সদা স√বক্ষণ। এই স্থানে বাদ করি ওহে ভূগবন।। কিবা দেব কিবা দৈত্য গন্ধর্ব কিরুর। উরগ পরগ আদি ঘক্ষাদিনিকর 🕨 সকলের বরপ্রদ আমি ধেন হই। এ২ মাত্র ভিক্ষা মম জানিবে গোঁসাই॥ আমি ভিন্ন অন্য কেহ যেন এই স্থানে। বরপ্রদ নাহি হয় জানিবেক মনে # আমার এতেক বাক্য করিয়া এবণ । মিউভাষে কছে মোরে দেব পদাসন॥ যাহা থাহা মন পালে করিলে কীর্ত্তন। অবশ্য সে সব হবে সম্পূর্ণ পূরণ। নারায়ণ বশীভূত রহিবে তোমার। সলা রবে এই স্থানে ওহে তাণাধার॥ न विजीर्श इर्ड (अर्ड कोर्श इरन। जायरतत विक्षा यह अथारन पृतिरव ॥ আমারে এতেক বাক্য বলিয়া তখন। অবিলয়ে অন্তর্হিত হন পদাসন॥
তার পর মনসুখে অতীব ষতনে। বারাণসা পুরী আমি করিয়া বিধানে।
দিবানিশি ভোমা সহ করি অবস্থান। পাপীগণে এই স্থানে করি পরিত্রাণ॥
সকলি বিদিত আছ তুমি স্থলোচনে। তবে কেন যাও ভুলি আপনার মনে॥
এ সব রভান্ত পূর্বেক করেছ এবেণ। স্ববণ কারণে পুনঃ করিসু বর্ণন॥
কত্ত কই লভিয়াছি শুনিলে এবণে। অধিক বলিব কিবা চোমার সদনে॥
সভ্য বটে আমি হই জগত ঈথর। তবু পাপে লিপ্ত হই খ্যাত চরাচর॥ জন্দহত্যা পাপ হেতু যত কই পাই। কহিলাম সবিস্তার এবে তব ঠাই॥ পাপের
নিকটে কারে। নাহিক নিস্তার। যেনন করম যোগ্য শান্তি আছে তার॥
অধিক বলিব কিবা ওগো প্রিয়তমে। জিজ্ঞাসিয়াছিলে যাহা শুনিলে এবণে॥
এখন বাসনা কিবা করহ বর্ণন। জিজ্ঞাসিয়াছিলে যাহা তাহা বলিব এখন॥
এত বলি বিধিস্ত যত ঋবিগণে। কহিলেন শুন শুন কহি সবা স্থানে॥
এইরপ নানাকথা কহি পঞ্চানন। মৌনভাবে উমা সহ করেন গ্যন॥
সপ্রে আখ্যান এই কহিন্দু সবারে। শুনিলে পাতক নাশ শান্তের বিচারে।
সপ্রে আখ্যান এই কহিন্দু সবারে। শুনিলে পাতক নাশ শান্তের বিচারে।
সপ্রের আখ্যান এই কহিন্দু সবারে। শুনিলে পাতক নাশ শান্তের বিচারে।
স্বি

## ত্রাণীতিত্য অধ্যায়।

নারাফণের মাহাত্যপ্রসঙ্গে গালব তপস্থীর উপাখ্যান। ভগবন্ পদ্পত্রাক দীনৈকশরণ প্রভা। অভীষ্ণ দেহি মে বক্ষন্ যদ্যন্তি করুণা ময়ি॥

পুনরায় ঋবিগণ মধুর বচনে। জিজ্ঞাসেন মিউভাবে বিধির নদনে। ভার পর কি করিল ভগবতী সতী। পুনবায় কিবা কহে দেব পশুপ্তিনা সেই সব প্রকাশিয়া করহ বর্ণন। শুনিবারে সবে স্বাদ্ধে করি আকিঞ্চন। প্রেডক বচন শুনি বিধির তনয়। কহিলেন শুন শুন ওহে ঋষিচয়॥ পুনশ্চ জিজ্ঞাসা করে দেবী ভগবতী। শুন শুন নিবেদন ওহে পশুপতি॥ ইতিপুর্বের্বি দেব করিলে বর্ণন। বিফুর সহিতে তুমি থাক সর্বেক্ষণ। ইহার কারণ কিবা বলহ আমারে। কেন এত প্রিয় বিফু জগত-সংসারে॥ তাঁহার মাহাত্মা কিবা করহ বর্ণন। এত শুনি হাল্য করি কহে পঞ্চানন॥ শুন দেবি মনোগরি বচন আমার। বিফু হতে ইইয়াছে জগত-সংসার॥ বিফু

শারাবশে মুদ্ধ হয়ে জীবগণ্। অহনিশি ভববদ্ধে হতেছে বন্ধন॥ পারম বৈশ্ববী তুমি ওগো সুলোচনে। অধিক বলিব কিবা তোমার সদনে॥
ক্ষিতিরূপ তেজারূপ শায়ুরূপ তিনি। আকাশধর্প তিনি ওগো কাত্যায়নী ॥
সকল ভূতের আআা সেই নারায়ণ। অন্তর্গ্রামী সেই দেব জানে সর্বজন ॥
ভূলোক করিয়া আদি যত লোক আছে। সকলি তন্মর দেবি কহিত্ব কাছে॥
আমাতে বিষ্ণুতে ভেদ কিছুমার নাই। যেখন আমারে হের তথা সে গোঁসাই
তাঁহার অসাধ্য কিবা জগত-ভিতরে। তিনি বিনা কোন্দ্রন ভবপারে তরে
যাগ যজ্ঞ প্রতিষ্ঠিত সকলি তাঁহায়। কহিন্তু নিগৃত তত্ত্ব পার্বন্তি তোমায়॥
তাঁহা হতে সর্বশাস্ত্র হয উৎপাদন। তাঁহা হতে বুচে যত ভবের বন্ধন।
পশু পদ্দী সর্প আদি যত জীবগণ। বৈফ্রবী মারাতে সব লভেছে জন্ম॥
ভাহোলে মাহাত্ম্য তাঁর জানিবে স্কারী। অগলির গতি সেই ভবের কান্তারী॥

গালব নামেতে ঋষি ছিল পূর্বকালে। সদত করিত বাস চিত্রকৃট গিরে॥ আশ্রম করিয়া তথা করে অবস্থিতি। সদা হৃদে ভাবে কোথা অগতির গতি॥ পরম ধার্ম্মিক ঋষি বিষ্ণুপরারণ। বিষ্ণু ভিন্ন কোন দিকে নাহি ছিল মন।। একদা বসিয়া ঋষি আছেন আসনে। হৃদি মাঝে দদা জপ করে বিষ্ণুধনে॥ দেহের তেজেতে দিক সমুক্ষ্ণ হয়। চারিদিকে বসি আছে যত মুনিচয়। নানাবিধ ধর্ম কথা হয় আলাপন। আনন্দে সবার ছাদি হয় নিমগন। হেন-কালে কলরব পশিল এবণে। ধূলিরাশি আচ্ছাদিত করিল গগণে॥ চমকিত হয়ে সবে করে নিরীক্ষণ। দেখিতে দেখিতে ক্রমে হয় দরশন॥ তথাকার নরপতি সেনাগণ সনে। আসিয়াছে বন্যাঝে মুগ্য়া কারণে॥ মুগ্য়া করিয়া যবে করিবে গমন। দূব ছতে তপোবন হয় দরশন॥ তপোবন হেরি মনে আনন্দ জন্মিল। মুনিপদে প্রণমিতে বাসনা করিল। যথাবিধি ঋষিপদ করিয়া वन्तन। পরেতে আপন বাসে করিবে গমন॥ ক্রমে ক্রমে দশবল শয়ে নরপতি। আশ্রমনিকটে সবে আ্বাসে ক্রতগতি॥ আশ্রম মধ্যেতে ক্রমে করি আগমন। ঋষির চরণ তলে করিল বন্দন॥ রাজারে ছেরিয়া মুনি পুলকিত মনে। বসিতে আদেশ েন কুশের আসনে॥ যথাবিধি অভ্যর্থনা করিয়া সংকার। জিজাসা করেন নৃপে ওহে গুণাধার। রাজ্যের কুশলবার্তা বলহ এখন। সুখেতে আছুয়ে তব যত প্রজাগণ ৷ সময়ে হয় ত রুক্তি অবনী-উপরে। শাসন করত'তুমি ছরাত্মা নিকরে॥ এরপে জিজ্ঞাসা করে ঋষি মহাজুন। প্রণমিয়া রাজা কছে ওচে ভগবন্॥ আপনার আশীর্কাদ ধরি

নিরোপরে। অন্তল কোথা সব চলি ধায় দুরে,॥ তোমার প্রসাদে ঋবে সকলি কুণুল। পদে পদে লভিতেছি অতি সুমন্তল॥ মৃগয়া কারণে আসিয়াছিনু কাননে। ফিরিয়া যেতেছি এবে আপন ভবনে॥ তোমার চরপ-পদ করিতে দর্শন। আশ্রমভিতরে এবে করি আগমন॥ ক্লতার্থ হইনু এবে হেরিয়া তোমারে। আনীর্বাদ কর প্রভু ঘাইব আগারে॥

এতেক বচন শুনি ঋষি মহা হুন্। কহিলেন নূপবর শুনহ বচন॥ রূপ। করি আসিয়াছ আমার আগারে। রাজ্যের ঈশ্বর ভূমি খ্যাত চরাচরে। তোমার গুণেতে মোরা করি অবস্থিতি। আতিথা স্বীকাব কর ওহে নরপতি। বনশাঝে অতি কটি হয়েছে তোমার। বিশ্রাম করিয়া কর প্রান্তি পরিহার॥ প্রমু সম্লুট আমি হইব তাহাতে। অধিক বলিব কিবা তোমার সাক্ষাতে॥ এতেফ বচন শুনি নুপতি তখন। মনে মনে এইরূপ করেন চিত্তন॥ ঋষির আদেশ লব্সি যদি চলি যাই। নিওয় কুপিত হবে ঠাবর গোঁাসাই॥ এত জাবি করিপেন আতিথ্য স্বীকার। রহিলেন দৈশ্য সহ আশ্রমমাঝার॥ শুনহ পার্বিতি পরে অন্তুত ঘটন। রাজারে নিমন্ত্রি ঋষি ব্যাকুলিত হন॥ মনে ভাবে কিবা র.প ভোজন করাব। রাজার উচিত দ্রব্য কোথায় পাইব॥ भरन भरन अरेल कतिया ि छन। किमिरिय नातायर करतन मत्।। वरन কোথা দরাময় রক্ষ্য আমারে। তোম। বিনা কেবা দল বিপদেতে ভারে। ং তোমা বিনা নাহি জানি অন্ত কোন জন। রক্ষা কর কোথ। হরি এমধুসুদন॥ করিলাম নিমন্ত্রণ রাজ্যের ঈশ্বরে। কিরুপে আতিখ্য বল কবিব সবারে॥ উপায় নাহিক কিছু করি দরশন। রক্ষা কর দয়াময় কোথা ভগবন ॥ অকি-ঞ্চন আমি অতি কিছুমাত্র নাই। এই হেতু নিবেদন করিগো গোঁসাই॥ আতিথ্য উচিত দ্রবা করি আহরণ। আমারে অর্পণ কর ওতে ভগবন। হস্ত দ্বারা যেই তরু করিব স্পর্শন। লতা তৃণ কিম্বা যাহা স্পর্শিব এখন॥ দর্শন করিব যাহা আপন নয়নে। অন্নরপী সেই দব হউক এক্ষণে। চুর্ব্য চুষ্য লেহ্য পেয় এ চারি প্রকার। আহারীয় হোক তাহা তহে গুণাধার॥ মনে মনে যাহা আমি করিব চিন্তন। ব্যবহার্যা দ্রব্য তাহা হউক্ একণ। আমার প্রার্থনা প্রভূ করহ সাধন। তোমার চরণে আমি করি গো বন্দন।। ঋষির শুবেতে তুই হয়ে জগৎপতি। তাঁহার উদ্ধার ইেত্রু করিলেন মতি॥ আবিভুত হন আসি দেখিতে দেখিতে 1 খীয় রূপ দেখালেন ঋষির সাক্ষাতে প্রসন্ন বদনে পরে কছেন তখন। শুন শুন ওকে খবে আমার বচন।। অভি-মত বর লছ আমার গোচরে। যাহা ত্র বাঞ্চিহর বল ত্রা করে। ধ্যানেতে

গেন ছিল ঋষি মহাত্মন্। আই কথা শুনি নেত্র করে উদ্মীলন। দেখে

মন্দ্রে বিরাজিত বনমালাধারী। শশ্বচক্রগদাধর ভবের কাণ্ডারী। গরুড়

উপরে প্রাভু করি আরোহণ। পুরোভাগে উপনীত প্রান্তার। কত যে

আদিত্য সম বরণ তাঁহার। হেরিলেন ঋষিবর অদ্ভুত ব্যাপার। কত যে

বন্ধান্ত শোভে প্রভুর শরীরে। কত ব্রন্ধা চন্দ্র আদি তাহে শোভা ধরে।

এই সব নির্বিয়া ঋষি মহাত্মন্। বিনয় বচনে কহে ওহে ভগবন্। বর্দ

বদ্যাপি হও অধীন উপরে। এই ভিক্ষা দেহ নাথ কহি যে তোমারে। বাহন্

বাদি সহ এই এসেছে নূপতি। আতিথ্য করিতে সবে করিয়াছি মতি।।

বিবিধ অশন পান যেইরপে পাই। তাহার উপায় কর ঠাকুর গোঁসাই।।

খাষিব এতেক বাক্য করিয়া শ্রবণ। প্রসন্ন হইয়া বিকু কছেন তখন॥ ভাষার বাসনা পূর্ণ হবে মহাজান্। আমাব বচন এবে করহ এবণ॥ **এই** য অপুর্বে মণি দিকু হে তোমারে। এইণ করহ ইছা অতীব দাদরে॥ ইছা <sup>न</sup>রে মাহা তুমি করিবে চিন্তন। তাহাই তখন পাবে ওছে মহাত্মন্॥ ভিতামণি শ্বি এই লইরা যতনে। মনের বাসনা পূর্ণ করু বিধানে॥ বিল ভগবান হন তিরোধান। ঋষিবর মনে মনে মহানক পান॥ µষিবর মণি লয়ে করে। এইরূপ বিবেচনা কর্যে অন্তরে॥ লক্ষ লক্ষ গৃহ এবে হউক সুজন। হিমালয় সম উচ্চ অতি বিমোহন॥ সুধাধবলিত হবে দ সব আগার। বাদ্যোগ্য হবে উহা ঘতেক রাজার॥ মনে মনে এত চিন্তি ঋষি মহাত্মন। আপন করেতে মণি করিল স্পর্শন॥ অমনি বাসনামত গাগার হইল। প্রম শোভায় সব শোভিতে লাগিল। পুনরায় ঋষিবর চরেন চিন্তন। আশ্রমে যে সব গৃহ হয়েছে সূজন॥ তার চারিদিকে হোক প্রা**নির বিস্তার।** উদ্যান হউক যত অতি শোভাধার॥ যেমন **এসব**় টন্তা করে ঋষিবর। অমনি হইল তাহা আশ্রম-ভিতর॥ ফলপুপ্রযুত তরু দনমিল কত। তপোবন হলো কিবা উদ্যানে শোভিত।। নানাবিধ শকীপণ বৃদ্র তরুপরে। কলনাদ করে কিবা স্থুমুর স্বরে।। ভার পর ানে চিন্তা করে ঋরিবর। অশ্বগঙ্গশালা হোক আত্রম ভিতর।। हिल जोहा (कवा मः था) करता (इतिल (म मव भांछ। जनमन हरता। মখনালা হস্তিশালা গোশালাদি করি। সমস্ত শোভিত হলো আশ্রমভিতরি। গার পার খাদ্য দেব্য হইল সূজন। চর্ক্য চুব্য লেহ্য পেয় কে করে গণন 🕴 এক এক চিন্তা করি সেই ঋষিবর। যেমন স্পর্শন করে সেই মণিবর। । মনি তখন, তাহা হয় উৎপাদন। হরির মাহাত্য বল কে করে বর্ণন ।

এইরপে নানাদ্রব্য সৃজন করিয়ে। নৃপপাশে যায় য়ুনি ছরিষ ছদয়ে॥
কহিলেন শুন শুন ওছে নরপতি। তোমার নিকটে আমি করি গো মিনতি॥
দগণে আপনি এবে কর আগমন। ফ্লণা করি আছারায় করছ এছে।॥
কিঞ্জিয়াত্র আরোজন করিয়াছি আমি। ক্লপা করি লছ ডাহা ওছে নৃপমিণি॥
ঋযির এতেক বাক্য করিয়া এবণ। আগ্রম- ভিতরে নৃপ বাসল তখন॥
অন্দর ভিতরে রাজা করিয়া গমন। বিসয়ের শুমিত ছন করি দরশন॥ হেম
অট্রালিকা নাছি নয়নে নেহারে। হেন শোভা নাছি কিন্তু তাঁহার আগারেন
এই সব নরপতি করি দরশন। সবিশ্বয়ে মনে মনে করেন চিন্তন। কিরপে
এসব ছলো মুনির আগ্রমে। হেন শোভা কভু নাহি হেরেছি নয়নে॥ বিসয়ে
আক্ল রাজা হইয়া তখন। ঋষিদত্ত দ্রব্য আদি করেন ভোজন।। অপূর্ব্ব
পদার্থ সব করিয়া ভোজন। মনে মনে পুলকিত নৃপতি তখন।। পরিতোধ
রূপে দ্রব্য ভোজন করিয়ে। আশ্রম্য মানিল সবে বিশ্বত-শ্বদয়ে॥

এইরূপে ভোজনাদি হলে সমাপন। নূপপাশে ঋষিবর আসিয়া তখন॥ কহিলেন শুন শুন ওহে মহোলয়। পথপ্রমে ক্লান্ত অতি হয়েছে নিশ্চব॥ অভএৰ মম বাক্য করহ প্রবণ। বিপ্রাম আগারে এবে করহ গ্রম। দাসীগণ দিব আমি শুশ্রধার তরে। এত বলি মণি লগে হরিষ অন্তবে॥ যেমন ় রাজার পার্বে করেন স্থাপন। অমনি জিমালে দাসী কে করে গণন। অতি ক্লপবতী সবে সূচারু হাসিনী। অলফার অঞ্চে শোচে মধুর ভাষিণী॥ ইহা ভিন্ন কত ভূতা জিমিল তখন। নঠকী গায়কী কত লভিল জনম॥ জনম . ধরিয়া সবে অতীব যতনে। রাজার সন্তোষ সিদ্ধি করিন বিধানে॥ এই শব অত্যন্তুত করি দরশন। রাজার হৃদয় হয় বিশ্বয়ে মগন॥ মনে মনে নান চিন্তা করে নরপতি। কিরুপে জিমিল এত মুনির শক্তি॥ তপ্স্যা বলেতে কিবা হতেছে সকল। কিছুই বুঝিতে নারি অন্তরে বিকল॥ মণির প্রভাবে কিম্বা হতেছে সৃজন। বুঝিবারে কিছু নাহি হতেছি সক্ষম। এইরূপ তিস্তা-**ফুল হইয়া রাজন। দিবাভাগ মনসুখে করেন যাপন॥ দেখিতে দেখিতে** নিশা হলো উপস্থিত। দারুণা তামসী আর্দি হলো উপনীত॥ মণির প্রভাবে জ্যোৎস্মা অপূর্ব্ব হইল। দিবা সম নিশাকাল প্রকাশ পাইল॥ নির্দ্ধিট হইন খর সকলের তরে। প্রত্যেকে রহিবে স্থর্থে এক এক বরে।। প্রত্যেব পর্যকোপরি করিবে শয়ন। কাছে রবে দাস দাসী এক এক জন। এরুণ নির্মে সব চলিল আগারে। শয়ন করিল সবে পর্যক্ষ উপরে।। মুর্বতীর সেবা সরে করিতে লাগিল। পর্ম স্থােতে সবে নিদ্রিত হইল।। পর

পরম স্থাবৈত নিশা করমে যাপন। হরির হৃপার যাত্র এসব ঘটন। অভএব কি বলিব পা পিতী তোমারে। হরি বিনা নাহি গতি এ ভব-সংসারে॥ সত্য বটে অভেদাত্মা ঘোরা দুই জন। হরি রূপে রক্ষি কিন্তু এ তিন ভূখন॥ অভএব মর সদা হরিরে অন্তরে। ভজিলে ভাঁহারে তরে ভবপাবারে॥

## চতুর ীতত্য অধ্যার।

तृष्ठि गर भीता । नित युक्त ।

ख्डा द्वा सर्यभरनो कृष्णा नन् गिनम्ब न्यः। यदारु यिज्ञ शोभान् फिरिन् ५ मृदिमुख्य॥

অপুর্ব কাহিনী ভনি দেবী কাত্যায়নী। ক্থিলেন নিক্লেন করি শ্ল-পাণি॥ অপুর্ব্ধ ঘটনা এড় করিত্ব এবণ। তার পর কিনা ঘটে বছ ভগবা।। প্রভাতে উঠিয়া রাজা কি কাণ বলি। প্রিকাচ অট্টালিক, কে,পশা হহিলা। বিজ্ঞারিয়া সেই সব করহ বর্ণন। শুনিবারে জামি প্রভু করি আলিখন ১ এতেক বচন শুনি দেব প্রপতি। কহিলেন শুন শুন ওলো নেম্বলী। इजनी था अ इतन अवनी ता कन। निर्मा ७ १ ता प्राप्त कर निर्माण अपन वाह्नाणि मत्व कागुं इन्न। निज्ञािक्या घर्णाविध रत्य न्या न গাত্রোত্থান করি রাজা করেন দর্শন (কাথ) অট্টার্গ কো কিলা কেওার পান্ত বসন ভূষণ আদি কিছুমাত্র নাই। আশ্রম পুর্বেরে মত দেখিবালে গাই। তাহা দেখি মনে রাজা করেন চিন্তন। কোপা গেল এই সব না বুলি এখন। যেমন আশ্রম পুর্বের দেখেছি নয়নে। দেইরপ শ্বিক্ল কেরিছি কা । অমুমানে বুরিতেছি মণির কারণ। মতেক শ্রুত ধার্যা হয় সংহাল। মি বির চিতাতে সব আদে কর তলে। মণি হতে হৈছোমাতে মনোবাঞা ফলে। कल्लेड्य मम मिन नौहिक निष्मय। (यक्तर्भि भारित मिने लेप्च किए।।। **याहिका कतित्व प्रति विद्य उ**रशाधन । अनुभारप द्वावे छोश ना शर्य कथा, । **रक्षन कहित गि (यक्राल्य शांतित।** गिंग नाहि नाय कर्जू गृंदर व ,य ता म मत्न मत्न (बहेत्रथा कतिया किखना मूनित निकटके कांत्र विनाध अरग भ বলবাহনাদি নছ আশ্রম বাহিরে। আসিলেন ক্রতগতি ব্যাকুল ত সরে। রাহিরে থাকিয়া পরে অবনীরাজন। অমাত্যেরে ঋষিপাশে করেন প্রেরণা। রাজার আদেশ পেয়ে অমাত্যপ্রবর। উপনীত হুন আসি মুনির গোচর॥ প্রণাম করিয়া পরে মুনির চরণে। কহিলেন শুন শুন কহি তব স্থানে॥ মণিটা রাজারে মুনে করহ প্রদান। সন্তুট হবেন তাহে নুপতি ধীয়ান।।

মন্ত্রীর এেতেক বাক্য করিয়া শুবণ। মুনিবর ক্রুদ্ধ হয়ে কছেন তখন। এ কি কথা কহ মন্ত্রী বুঝিবারে নারি। স্থির করিয়াছ বুঝি অন্তরে বিচারি॥ প্রাসিদ্ধ আছরে ভূমে শান্তের বচন। ত্রান্ধণেরা প্রতিগ্রহ করিবে গ্রহণ॥ হাজারা করিবে দান বিনিত সকলে। এরপ বচন আজি বলিছ কি বলে॥ তব প্রভু মহাকাশ হয়ে নরপতি। নিরুপে করেন হেন ওতে মহামতি॥ যাটিঞা করেন তিনি কিদের কারণ। বল লেখি স্প্রতির হারণে বচন।। এখন বুটিলু আমি পাপন অন্তরে। অপদার্গ ভব রাচা এতব সংসারে॥ মাহ এই শীপু হাহ এই মন্ত্রীবর। অবিলয়ে যাই বিরি নুপতি গোচর॥ খল গিয়া তাঁর পাশে আমার বচন। ভাল কন্তু লহে তাঁর হেন আচরণ।। পুনত করিলে খেন মন্দ ব্যবহার। প্রতিফল দিব আমি উচিত ইহার॥ এতেক বলিয়া ঋষি মত্রীর গোচতে। বিদায় করিফা নিয়া যান ক্রোধভরে॥ সমিপ বুশাদি করিবারে আহরণ। কানন ভিত্তা গ্যি করেন গমন॥ ঋষির এতেক বাক্য শুনি মন্ত্রীবর। অবিনধ্যে চলি তাদে দুপতি গোচর।। উ। হার নিকটে স্ব করে নিবেদন। শুনিধা চুপ্ডি ছন লোবে নিগ্ন॥ ক্রোধভরে সৈত্রাধ্যক্ষে করিয়া আহ্বান। কহিলেন গুন ওনে ওছে মতিয়ান॥ ক্ষবিলম্বে যাহ চলি আশ্রম ভিতরে। সবলে হরণ কর সেই ফনিবরে॥ অবিলয়ে সেই মাণ করিয়া হরণ। আমাব নিকটে শীঘ্র কর আগমন।। রাজার এতেক বাক্য শুনি দেনাগতি। আশ্রম ভিতরে চলে অতি ক্রতগতি বৈৰুগণে পরিব্রত হইয়া তখন। পশিন আশ্রমণ্ডে মণির কারণ।। অগ্নিছোত্র গৃহে গিয়া দেখে তার পরে। চিন্তামণি মণি তথা আছে আলো করে। তাহা দেখি রথ হতে নামিয়া তখন। সেনাপতি মণিপানে করিল গমন।। সৈনাপভি দরশন করিয়া নয়নে। মণিতেজ রিদ্ধি হয় না যায় বর্ণনে॥ কার সাধ্য সেই তেজ করে দরশন। করিতে লাগিল 'যেন জগত দহন।। দেখিতে দেখিতে শুন আশ্চর্য্য ঘটন। মণি হতে কত যোদ্ধা লভিল জনম।। ্স্র শস্ত্র কত শোভে তাহাদের করে।তেজের ছটায় দবে দিক আলো করে া । भ সজে কত রথ হয় শোভনান। কত অথ কত গজ কে করে সন্ধান॥ াকা শোভিছে কত রথের উপরে। কত প্রসি শোভা পায় সেনাগণকরে॥ ্থাবল প্রাক্রম ধরে মূব জন। রণপটু ভারা দবে অমিত-বিক্রম॥

ভাষাদের মধ্যে যারা শ্রেষ্ঠতর হয়। তাহাদের নাম বলি শুন পরিচয়॥ স্ভদ স্রশাি জার শুভদরশন। স্কান্তি স্কুনর সুন্দ শতু জার সোম 🕸 প্রচহন্ন সুযশা শুভ সুশীল যে আর। সুখদ মুশান্ত এই বলের জাধার॥ এই কয় জন হয় স্বার প্রধান। স্বার হাতেতে অস্ত্র হয় শোভ্যান ॥ মণি হতে ষারা বারা লভিল জনম। সবে নানা অস্ত্র করে ক্রয়ে ধারণ। জন্ম ধরিয়া দবে অতি রোষভরে। রাজ দৈতা দহ ক্রমে মাতিল সমরে॥ ঘন ঘন ধনুকেতে দিতেছে টক্কার। ভীষণ ভীষণ শর কেপে জনিবার।k খন খন খড়ুগাখাত বিপক্ষ উপরে। রোষবশে সৈতুগণ ক্রতকরে করে 🖟 অখগণে অখগণে মহাযুদ্ধ হয়। গজে গজে যুদ্ধ ঘটে বর্ণিবার নয়॥ তুমুল সংগ্রাম ঘটে অতি বিভীবণ। শুনিলে হুদ্য কাঁলেপ অতি ঘন ঘন।। রাজার ষতেক দৈশ্য ক্রমে ক্রমে পড়ে। রণ্মাঝে পড়ি যায় শ্নন-আগারে॥ নৃপ-তির সেনাপতি হইল পতন। নরপতি ভাষা শুনি রোদে নিম্পন।। র্থ আরোহণ করি অভি রোষভরে সৈত্রণ নহ নিজে আনেন সমরে॥ অবিলবে রণ্ধাঝে করি আগ্রামন। বিপক্ষ নৈত্যের সহ আর্ম্ভিল রণ্ম মণিজ নৈত্যেরা তাহা দেখি রোম্ভরে। রাজার সহিতে যুদ্ধ ত্রা করি করে॥ শূল মারে শেল মারে মারয়ে শাহতি। অসি কেপ করে সবে অতি জ্ঞত-গতি। পট্রিশ তোমর মারে অতি ধন ধন। করম উঠিছে কত কে করে গণনাঃ এইরপে মহাযুদ্ধ করে রোযভাগে। রাজার খতেক দৈতা পড়িল সমরে॥

এরপে তুর্গতি পায় দেই নরপতি। সংবাদ রটিল ক্রমে সর্ব্র ব্রম্থ ।।
হেত্ ও প্রহেত্ নামে দৈতা তুই জন! রাজার শুলর ছিল জনিতবিক্রম ॥
রাজার তুর্গতিকথা শুনিয়া এবলে। ক্রতগতি আয়ে তারা সমরকারণে॥
বহুদৈলা সঙ্গে লয়ে তারা তুইজন। অনিলমে রণক্ষেত্রে করে আগসন ॥
পঞ্চদশ দেনাপতি সহিতে দোঁহার। মহাবল ধরে সবে শুণের আথার॥
আকোছিণী দেনা দঙ্গে প্রত্যেকের হয়। সমরে তুর্গদ সবে অতীব ভূর্জ্র॥
ধরণী,কাঁপায়ে সবে করি আগমন। মণিজ সৈত্রের সহ আরম্ভিল রণ॥
পরক্ষর মারে সব অতি ক্রত করে। রণভূনে পড়ি সব যায় যমপুরে ॥
ক্রমে ক্রমে দৈতাদৈল হয় নিপতেন। জয় ধনি করে যত মণিভ্রণণ ॥
ক্রমেতে পড়িল সবে সমর-অঙ্গনে। দৈত্রপ গেল সবে শমন-ভবনে॥
এইরপে যুদ্ধ হয় অতি ভয়য়রে। হেনকালে গৃহে আসে তাপসপ্ররে॥
সমিধ কুশাদি ঋষি করি আহরণ। গৃহ-অভিমুখে হর্ষে করে আগমন ॥
সহসা সংগ্রাম ঋষি করি দরশনী। ভয়েতে ব্যাকুল হন বিময়ে মগন।
দহসা সংগ্রাম ঋষি করি দরশনী।

বুঝিলেন মনে মনে সেই মহামতি। মণির কারণে যুদ্ধ করিছে নৃপতি। নূপবরে পরাত্ব করিবার তরে। চিন্তামণি 'এই যুদ্ধ করে রোষভরে। এত ভাষি ঋষিবর আনন্দে মগন। হৃদিমাঝে এইরিরে করেন গরে।। ধ্যানখোগে ভাবে হরি হৃদয় মাধারে। ঐহিন্নি জানিল তাহা আপন অন্তরে। পীত বাস পরিধান করিয়া তখনি। আবির্ভুত হন হরি যিনি চিতামণি॥ মণি হতে প্রকাশিত হায়া তখন। ঋষিরে সম্বোধি কন মধুর ৰচন।। শুন শুন ফানিবর বলন আমার। কি কাজ করিব তব বল গুণাধার। এতেক বচন শুনি তার্পাপ্রর। চহিলেন শুন এভু ভূমি গদাধর॥ নুপতি দৌবাজ্য কবে অশ্মার উপরে। ইহার উপায় প্রভু কর রুপা করে॥ এতেক বচন ংনি জীঘ্ৰস্দ্দন। তথায় বলিখা ৮ফ করেন এছণ।। সুদর্শন হত্তে লথে পতি রোশ্ভরে। নিমেপ করেন তাহ। রাজার উপরে॥ শ্রিটেটকে করিল গমন। রাজার মঙক গিয়া করিল ছেদন। স্পতির এই শার্ক যাত সৈতা ছিল। ভারী চুত করে সবে ব্যস্থারে গেল।। এইরূপে হন কেবিয়া নিখন। ধ্বিরে সফোধি কহে দেব নারায়ণ॥ শুন ন মহাব্যে ১৮ন আমার। তক্তির আধার তুমি গুণের আধার॥ এই স্বাচ্চেত বৈতা হলো নিপতন। ভাষণ দং গ্রাণ হেল। হইল ঘটন।। পবিত हरेल राम कामित मः मारत। भरापूषा ७३ साम अदमीमाबारत॥ মজেশ্বর রূপে আমি তহে নহাণতি। দিবানিশি এই তানে করিব বসতি॥ এই স্থানে যেই জন করি আগ্রন। ভক্তিভাবে প্রাদ্ধ আর করিবে তর্পণ ॥ স্থান আদি ন্যাধান যে জন করিবে। এবহেলে দেইজন সংসারে ভরিবে॥ এই স্থানে ফেই জন র ি সাগ্রন। ইত্রিয়পটন করি বিধানে সংঘম॥ তিন দিন উপবাস করিয়া যতনে। বস্তি করিবে হেথা ভক্তিয়ত মনে॥ তাহার পুণ্যের কথা কি বলিব আর। অনারাদে তরে দেই ভবপারাবার॥ অন্তকালে সেই জন ত্যজিয়া জীবন। বিমানে চড়িয়া যায় অমর-ভবন॥ অপ্রবারা নধা দেবা করয়ে তাহারে। দেব গণ সহ গিয়া রহে সুরপুরে ॥ ৰত্কাল পুণ্যভোগ ারিয়া তথায়। মহত বংশেতে শেরে জনমে ধরায়॥ একাহারে থাকি যেই অতি ভক্তিভরে। দ্বাদশ বরষ হেথা নিবসতি করে ॥ পুনর্জ্ম নাহি তার হইবে কখন। অব্দা ঘুচিবে তার ভবের বন্ধন।। নির্বাণ পদবী পেয়ে সেই মহাত্মন্। অন্তকালে যাবে চলি অমর-ভবন ॥ গমন করিবে দেই বৈকুণ্ঠ-আগারে। হরিদাস হয়ে রবে হরিষ অন্তরে॥ মণি হতৈ জন্মেছিল যারা বীরবর॥ পারো এক কথা বলি ওন ঋষিধর।

ধরাধাদে হবে তারা প্রবল নৃপতি। ভূতলে রটিবে জান তাদের সুখ্যাতি॥
তন শুন খাবিবর আমার বচন'। পরম ভকত ভূমি অতি মহাল্রন॥ অন্তকালে
তান পাবে আমার আগারে। অধিক বলিব কিবা তোমার গোচরে॥ এত
বলি নারারণ হন তিরোধান। ঋষিবর মনে মনে মহানদ পান।। এত বলি
মহেশ্বর গিরিজা সভীবে। কহিনেন শুন প্রিয়ে কি বলি তোমারে।। হরির
মাহাত্ম্য বল কি করি বর্ণন। যেই হরি দেই আমি হই পঞ্চানন।। আমারে
প্রজিলে হয় হরির অর্চনা। হরিরে অর্চিলে হয় আমার সাধনা॥ অভেদাত্মা দোঁহে মোরা জানিবে অন্তরে।গোপনীয় কথা আজি কহিলু তোমারে
ভক্তিভরে যেই জন করে অধ্যয়ন। অথবা একান্তমনে করয়ে প্রবণ॥ গাতক
তাহার দেহে কভু নাহি রয়। দে জন ভকত মম পুণ্যের আলয়॥ ধর্মকথা
যেই জন করয়ে প্রবণ। মহাপুণ্য হয় তার শাস্তের বচন॥

## পঞ্চাশীতিত্য অধ্যায়।

ত্রন্ধার বরে ত্রিপুরনগরা নির্মাণ, ত্রিপুরাল্পরের দৌরাজ্যে।
শিবের নিকট দেবগণের গমন ও স্তব।

ন্মঃ সদা মোহবিনাশনায় অজ্ঞাননাশায় চ তেন্মোইস্ত ! ন্মঃ সদা মোক্ষবর প্রদায় ন্মঃ সদা চামূতসংস্থিতায় ॥

ঋষিগণ কছে পুনঃ সনতকুমারে। শুন প্রভূ নিবেদন করি গো তোমারে॥ ত্রিপুরারি নাম ধরে দেব পঞ্চানন। তাহার কারণ কিবা করহ বর্ণন । বর্ণন করিয়া তাহা পুরাধ কামনা॥ ত্রিপুর রুত্তান্ত শুনি মনেতে বাসনা। কহিলেন শুন শুন ৩হে শ্ৰিগণ॥ এতেক বচন শুনি বিধির নন্দন। দেবতা দানবে যুদ্ধ'পুর্বাকালে হয়।' দৈত্যগণ হারে ভাহে ভহে হ'লায়। ময় নামে ছিল দৈত্য স্বার প্রধান। দৈত্যের ছুর্দশা দেখি ব্যাকুল শারাণ। ত্রলা-আরাধনা করে হয়ে একমন।। यत्नाष्ट्रहृद्ध वनगां व क्तिया गमन। উৰ্ন্নায়ুখে রহে কভু দেই বলাধার।। কভু একপদে রহে করি অনাহার। বর্ধাকালে বর্ধাজলে রহে সর্বংকণ।। আীয়াকালে পঞ্চপ। কর্য়ে সাধন। তপ আচরণ করে দেই মতিযান্।। শীতকালে জ্লমধ্যে করি অবহান।

এইরূপ তপস্যাতে বহুর্কার্ল যায়। অস্থিমাত্র হলে। সার ক্রেমে শুক্ষকায়। তাহার দারুণ তপ করি দরশন। মনে মনে পিতামহ অতি ভুষ্ট হন।। আবিভুত হন আসি তাহার গোচরে। বলিলেন ওন দৈত্য কহি যে তো-মানে। তে।মার কঠোর তপ করি দর্শন। প্রম সম্ভূষ্ট আমি হয়েছি এখন। শভিষত বর লহ ওহে মহামতি। বরধান হেতু আমি আসি ক্রতগতি।। বেংগার এেটেক বাক্য ক্রিয়া তবেও। চরও বন্দিয়া দৈত্য কহিল তখন।। ক্লুশা যদি হয়ে থাকে আমার উপরে। এই বর দেহ প্রভু নিবেদি ভোমারে॥ মহাবল দেহে যেন করি গো ধারণ। অবধ্য নবার হই ওছে মহাত্মন।। আমার বাদের জন্ম দিব্য হান হয়। অমর হইব আমি ওছে মহোদয়।। যেখানে দেখানে ভামি যাইতে পারিব। কুত্রাশি গতির বাধা কভু না পাইব॥ বৈজ্যের এতেক বাক্য করিয়া প্রবণ। মিষ্টভাবে কছে তাঁরে দেব পদ্মাসন 🐰 ওন ওন দৈত্যবর বচন আমার। সব বর দিতে পারি ওছে গুণাধার।। অমরত্ব কিলু নাহি করিব জপাণ। জার ঘাহা চাবে তাহা পাবে মহাত্ন্।। এতেক ওনিয়া দৈত্য কহিল তখন। গুন শুন নিবেদন ওছে ভগবন।। তবে এক কথাবলি শুনহ এবণে। সেই বর দেহ প্রভু রুপা বিতরণে। তিন পুরী বিনিথিমা করিব বসতি। দিব্য পুরী হবে ভাষা ওতে মহামতি।। এক বাণে তিন পুরী করি বিদারণ। আমাবে মারিতে যেই ছইবে সক্ষ।। তাহার করেতে আমি ত্যজিব পরাণ। ক্লপ ক্রি এই বর দেহ ভগবান্।। বৈত্যের এতেক বাণী করিয়া শবণ। পুলকিত হলে এন্ধা কহেন তখন।। যা বলিলে হবে ভাগ ওচে দৈভাবব। মনের বাসনা পূর্ণ হইবে সত্তর।। এত বলি বর দিমা দেব পরামন। অবিলধে সেই স্থানে তিরোহিত হন॥ ভার পব দৈত্যাল পুলচিত মনে। ত্রিপুর নগরী করে অতীব যতনে।। শূভোর উপর পুরি করিব নৃজন। শব্মত লৌহময় অতি মনোরম।। ভার উর্নেরে প্রেপ্র করিল নগরী। তদুর্বে নির্মিত হলো স্বর্ণময় পুরী। পইর.। তিনপুরী করিয়া নির্ণাণ। স্বর্ণপূরে নিজে বার করে অবস্থান। पा छूरे পুরে রাখে সভা ছুই জনে। তিন জনে তিন স্থানে রহে হুটমনে। "পের্গি সমান পুরী করিল গঠন। মনোরম কত দার করিল যোজন।। কত যে भेजाक इरला (क ग्रिटिक शास्त्र । क्र्यम्य स्मरे मव क्रामित्व खखरत ॥ भीजन প্ৰন য়ায় হিলোলে হিলোলে। গ্ৰাক্ষ সকল শোভে মুকুতা প্ৰবাণে। কত শত মণি শোভে গৃহের ভিতয়। বিচিত্র কত বাচিত্র অতি মনোহর ॥ গৃহেণ-পরি কত ধুজা অতি শোভা পায়। পবনে কাঁপিছে তাহা কিবা শোভে তায় দুরীমান্থে উপবন অতি মনোরম। বিক্ষিত পুস্পে পর হতেছে শোভন॥
দকল ঋতুর পুস্প সদা সর্বৃদ্ধণ । আলোকিত করি আছে কুসুম-কানন॥
দ্রন্থ তান রব করি জ্বয়র-নিকর। ঘূরিয়া ঘূরিয়া বায় পুস্পের গোচর॥
দরোবর কিবা শোভে অতি বিমোহন। হংস্মারসাদি তাহে করে বিচরণ॥
গতদল ফুটি আছে সরোবরোপরে। হেরিলে দর্শক হয় হরিষ অন্তরে॥
শিখিগণ রক্ষোপরি করি আরোহণ।বেকারব করি হয় আনন্দে মগন॥ এইরূপে পুরী করি দৈত্যের রাজন। আনন্দে করয়ে বাস সদ। সর্বৃদ্ধণ॥
কৈত্যনারী রূপবতী কে করে গণন। দৈত্যপুরে অবভান করে সর্বৃদ্ধণ॥
শীনোরত পরোধরা তাহারা সকলে। হত্ মৃত্ হাস্য শোভে বদনকমলে॥
এইরপে নারীগণে লয়ে সর্বৃদ্ধণ। মনের আনন্দেরহে দৈত্যের রাজন।
ভূত্যপণ সেবা করে বিহিত বিধানে। পরম স্থেতে হহে পুল্কিত মুনে॥
এইরপে দৈত্যরাজ করি অবস্থিতি। দেবগণে জংশীভিত করে নির্বৃধি॥
মর্গধানে কভু কভু করিয়া গনন। দেবের ঐন্থ্যা সব করয়ে হরণ॥ দৌরাজ্য
করিয়া কভ আপন আগারে। অনুচর সহ আসে আনন্দেতে ফিরে॥

দেবগণ উৎপীড়িত হইযা তখন। ত্রদার নিকটে সব করিল গমন।। বিনর করিয়া কছে দেব পদাসনে। নিবেদন করি প্রভু তোমার সদনে॥ দানব-দৌরাক্যে মোরা ভিষ্ঠিবারে নারি। তালার উপায় কর তুমি হে কাপ্তারী॥ এতেক বচন শুনি দেব প্রামন। কহিলেন শুন শুন ওছে দেব গ্রণ॥ আমা হতে দৈতানাশ ককু নাহি হবে। প্রবল হয়েছে দৈত্য আমার প্রভাবে॥ ইহার উপায় বলি করহ শ্রাণ। আমার সহিতে চল শিবের সদন॥ উপায় করিবে সেই দেব শূলপাণি। এত বলি মোনভাব ধরে পদ্রযোনি॥ তার পর বিষ্ণু আর দেব পলাদন। দেবগণে সঙ্গে করি করিল গমন॥ উপনীত হয়ে সবে কৈলাস আগারে। প্রণাম করেন গিয়া দেব মহেশ্বরে॥ ভক্তিউরে সবে শুব করেন তখন। ত্রিলোক ঈশ্বর প্রভু করি গো বন্দন॥ সকলের বন্দনীয় তুমি মহামতি। তব বিঞ্মের প্রভু নাহিক . অবধি॥ শোভিতেছে চক্রকলা তব শিরোপরে তাহার ছটায় দিক্ আলোকিত করে পিনাক তোমার করে হতেছে শোন্ম। প্রশ্বধ শোভে কিবা অতি বিমো-হন॥ বিরাজ করিছে শৃহ তব দিব্য করে। নমস্কার করি তব চরণ উপরে॥ मणीवत्रश्रीम তুমি मवात कात्रण। • স্কুরেখর তব পদে করি গো বন্দন॥ যদের দিশ্বর তুমি ওতে পশুপতি। ভকত জনের হও একমাত গতি॥ নর্বাকণ কর বাস কৈলাস-শিখরে। শর্শীধৃজ তুমি দেব নমামি তোমারে । ইংশপরি

সদা তুমি কর আরোহণ। পরিধান দিক বস্ত্র ওহে পঞ্চানম॥ স্থ্য চন্দ্র দেবরাজ বরুণ অনল। আর আর যত কেছ দৈবতা সকল।। তোমা হতে জিমাহে নাহিক সংশয়। তোমার ক্রপায় হয় ভববন্ধ ক্য়॥ স্ক্রহতে স্কা তুনি পরম ঈশর। মঞ্জ-কারণ হেতু নাম যে শক্ষর। ধনুর্ব্ধর তুমি দেব করি নম্কার। তোনার সমান নাহি এ তিন সংসার॥ অই মূর্ত্তি খ্যাত তব জগত-সংসারে। নমস্থার নমস্কার চরণ উপরে। কামদর্শহারী তুমি ওছে পঞ্চানন। ধুর্জ্জটি তোমার নাম জানে সর্বজন॥ যোগীর ঈশ্বর তুমি ওছে মহাত্মন্।রুদ্রুণী তুমি দেব বিখ্যাত ভুবন॥ দেব দৈত্য তোমা হতে হয়েছে मुक्त। नीलकर्भ कृषि (एव পूत्रम-छेख्य।) न्यानीत्न न्यानीत्न नामा कत অবস্থিতি। অজ্ঞান করহ নাশ ওহে মহামতি॥ মোক্ষদাতা তুমি প্রভূ জগত-সংসারে। পরানন্দে সদা রহ হরিব অতরে॥ ত্রন্ধ-আত্মা ত্রন্ধ-আত্ম তুমি মহাজ্ব। ধাতা ও ৰিধাতা তুমি বিখ্যাত ভুবন। ভক্তবংসল ত্মি অ'ভির গতি। হর্জা বর্জা তুমি প্রভু সকলের পতি॥ ত্রিগুণ-অতীত তুমি ওহে মহেশ্বর। ক্লপা কর পণিপাত চরণ উপর॥ তালা ইন্দ্র বিশ্ব-কর্মা আদি দেবগণ। এইরুণে শুব করে হয়ে একমন॥ ভাঁহাদের ভক্তি ৰেখি দেব পশুপতি। লভিলেন মনে মনে সভীব পিরীতি॥ মধুর বচনে পরে করি সম্বোধন। কহিলেন দেশগণে ওহে স্থরগণ।। পরিতুট হংয়াছি সবার উপরে। অভিলাব কিবা বল ত্রায় আমারে॥ অভিমত বর যাহা করত গ্রহণ। ষা চাহিবে- দিব তাহা ওছে দেবগণ॥ অদেয় আছয়ে কিবা এ তিন সংসারে। বল বল কিবা বাঞ্চা বল তুরা করে।

## ষ্ডুণীতিত্ম অধ্যায়।

जिश्रतायदतत यूष्कापनारा

ত্রদ্বদত্তবরৈর্দেব ময়ালৈয়দানবৈস্তিভিঃ। স্কৃতাঃ স্বাধিকারাঃ সর্কে ধ্বংসিতানি বলানি চ॥

শিবের এতেক বাক্য করিয়া প্রবণ। দেবগণ করফোড়ে কছেন তখন।
শুন দেব নিবেদন করি গো তোমারে।কাতর হয়েছি মোরা দৈত্য-অস্মাচারে
ময় আদি তিন জন দানবপ্রধান। ত্রিপুর করিয়া শ্ন্য করে অবস্থান।
ভক্ষার নিকটে বর করিয়া এহণ। আমাদের অধিকার করেছে হরণ।

দার্থানের বল আ'দ লয়েছে হারীরে। তাহার উপায় কর করণা করিয়া।
দেবজাগণের বাক্য শুনিয়া অবণে। মহাদেব কহিলেন মধুর বচনে ছ শুন শুন দেবগণ বচন আমার। ছদে হতে ভ্য এবে কর পরিহার। আমার দ্বাংশ ভেজ করহ এহণ। রুদ্ধতেজাময় হবে গুছে দেবগণ।। তাহা হলে দেত্যুখংনে ক্মবান্ হবে। মনের বাসনা যত অবশ্য ফলিবে।। এতেক বচন শুনি যত দেবগণ। কহিলেন নিবেদন ওহে পঞ্চানন।। তব ভেজ লইবারে মোরা নাহি পারি। কিরপে গরিব তাহা গুহে দৈত্য-জরি।। বিহার পরম গোদের বল গুহে পঞ্চানন। তোমার ভীমণ ভেজ করিব পারণ।। যাহার পরম তেজ করিতে দর্শন। শিলুবনে শক্ত নাহি হয় কোন জন।। তাঁর ভেজ ধরি-গারে কিরপে পারিব। ছেন কাজে মোরা নাহি সক্ষম হইব।। অভএব রূপা কর ওহে ভগবন্। প্রসন্ন হইযা সবে করহ বন্দণ।। দিয়াছেন দৈত্যবুরে বর গারিবে। তবে সেই দৈতাবর যমালয়ে যাবে।। অভএব সোরা নাহি হইব ক্ষম। পুমি দেব দয়া কর এহে পঞ্চানন।।

এতেক বচন শুনি দেব দিগখর। কৃথিনেন শুন শুন, দেবভানিকর॥ ভামাদের ৰাঞ্। আমি করিব পূরণ। দৈত্যত্রয সহ ছুর্গ করিব নিগন 🕸 তিন পুরী করি দৈত্য করে অবস্থিতি। এথম পুরীতে রহে তারক ছুর্ঘাতি॥ দ্বতীয় পুরীতে বিজ্ঞালী বাদ করে। ময় দৈত্য নিজে রহে দবার উপরে॥ তন জনে আও আমি করিব নিধন। আমার বচন তন ওহে দেশগা॥ মনুভাম রথ এক করহ নির্মাণ। যাহাতে করিতে খামি পারি অবস্থান॥ এতেক বচন শুনি যত দেবগণ। অনুভিন দিবা রথ করিল গঠন ॥ দেবতার সংশেরথ করিল নির্মাণ। অনুত্রম দিব্য রপ হলে। শোভমান॥ চক্র হুৰ্য্য ধাতা ষম ধনদ পাবন। ইন্দ্র গুক্ত বসু ক্রন্ত গদ্ধর্ম পাবন। গ্রুড় কিন্তর াগ মহোদধি আদি। যক রক এহ খাবি गিল দাণ্য যতি॥ দিবদ মুহুর গঠা কলা আর কণ্। অয়ন বরদ মাদ স্থাবর জন্ম॥ অইবস্থ নক্তাদি মংশেতে নবার। অনুত্রম রথ হলো অতি শোভাধার। কোন দেব রথ-ক্রেরপেতে রহিল। কেহ ধূদা কেহ এজে প্রতোদ হইল॥ শৈল সম উষ্ঠ লে। সেই রথবর। জারেপেতে জগৎপতি রহে ততুপর॥ এইরপে দিব্য थ क्रिज्ञा मुक्त। जिलाविषु, क्रिंटिश्यान भिरवत मनन ॥ कशिरणन तथ-। জ্জা হয়েছে বিবানে । 'এত শুনি মহেশ্ব আনন্দিত মনে ॥ দিবা দেবময় রথ করি দরশন। সাধুবাদে ধ্যুবাদ দেন পঞ্চানন॥ তার পর শ্রাসন ধরি নিজ করে। অধ উর্নঃ চারিদিকে বারেক নেছারে॥ জ্যারূপেতে
নারায়ণে করেন এছণ। অগ্নিদেবে শররপে লয় পঞানন।। শরপুশ্ব
লোমদেবে করি নহেশ্বর। একারে সদোধি আনে আপন গোচর ॥ কহিলেন
শুন শুন ওহে পদ্মাসন। সার্থির পদ তৃথি করহ এছণ॥ তথান্ত বলিয়া
দ্রেক্ষা করিলে থাকার। রথোপরি আরোহিল দেব দ্যাধার॥ শিব-পারিবদ যত আছিল সহিতে। অরোহণ করে সবে শিবের রথেতে॥ শক্ত্রকর্ণ
নদ্দীশ্বর আর দত্তেশ্বর। মহাযোগ ত্রাফ বীর জার গণেশ্বর॥ ইহারা
সকলে অন্ত করিয়া এছণ। রথের উপরে ত্রা করে আরোহণ॥ যুদ্ধবিশারদ সবে অভি ভরক্তর। মূরতি হেরিলে বাঁপে লঘনে অন্তর। রণবাদ্য
করে সবে অভি অন ঘন। শশ্ববিদ্য ভেরীবাদ্য করে কোন জন॥ ঘন ঘন
পুর্লাবৃত্তি রথোপরি হয়। কক্ষবাদ্য করে গণচয়॥ এইরপে রণসক্তর। করি পঞ্চানন। ত্রিপুর নিধনে যাত্রা কবেন তখন॥

আশ্চর্যা ঘটনা ঘটে শুন ছেন কালে। নারণ ত্রায় যায় দানব-গোচরে।। भानव निरुष्टि शिया करहन उथन। छन छन रिम्ञाताङ आयात रहन॥ ত্রিপুর দাহন হেতু দেব মহেশ্বর । আসিতেছে রথোপরি সঞ্চে অফুচর॥ এদবময় রেণে চিভি দেব পশুপতি। আদিতেছে অই দেখ বিধাত। সারিথি॥ নারদের এই বাক্য করিয়া শ্রবণ। বোষেতে ক্রিচ হয় দানব তখন॥ তারক ও বিছানালী এই ছুই জনে। ডাকিলেক আবিলয়ে নিজ সরিধানে॥ আজ্ঞামাত্র উপনীত হয় তুই জন। তাহাদিণে সফোধিয়া কহিল তখন॥ িশ্চিন্ত বসিয়া আছ কিন্তু নাহি জান। দেব-ঋষি কহে কিবা তুই জনে শুন। ত্রিপুর দহন হেতু দেব পঞ্চানন। আসিছেন রপোপরি লযে সৈত্যগণ॥ এতেক বচন শুনি তারক ধীমান্। কহিলেক কিবা ভয় ওহে মতিমান্॥ ভোমার সমান কেবা আছে ধরাতলে। ত্রিলোক ঈশর তুমি খ্যাত চরাচরে॥ ভোষার সহিত মুদ্ধ করে কোন্জন। কেন রুথা চিন্তা কর ওহে মহাত্মন্। ত্রিপুর ছহনে শক্তি কোন্জন ধরে। হেন জন নাহি দেখি ভুবনমাঝারে॥ সর্ব্ধের মিলি যদি করে আগমন। তরু না করিতে গারে ত্রিপুর দহন॥ একা আমি সর্বদেবে বিনাশিতে পারি।কি ছার দেবতাগণ কভু নাহি ভরি॥ দুর্বেশ যাহারা ছর এ ভবদং সারে। তাহারাই দিবা নিশি চিন্তা করে মরে। একা আমি সর্বদেবে করি পরাজয়। তোগারে কল্লিব সুখী ওহে মহোদয়॥ তারক এতেক বলি মৌনভাব ধরে। বিহ্নামালী কছে পরে দানব-ঈশ্বরে॥ क्षत क्षत्र पूरि प्रायात क्रता जिश्रेत पर्दन कर रत दकान कर।।

বলহীন দেবগণ বিদিত সংসারে। কিরপে করিবে যুদ্ধ ভাবহ জন্তরে। মাদের সহিতে তারা যদি করে রণ। গমন করিবে আশু শমন-ভবনা। প্রশিদ্ধ আছয়ে সদা ভবনমাঝারে। যখন তখন যুদ্ধে দেবগণ হারে॥ যথা তথা যুদ্ধে হয় দানবের জয়। তবে কেন চিন্তা কর ওহে মহোদয়॥ আমারাবচন নৃপ করহ প্রবণ। স্থেখ তুমি ভোগ কর এ তিন ভুবন॥ করিবেনা তব দাস্য দেব শচীপতি। কেন রথা চিন্তা কর ওহে দৈত্যপতি॥

এতেক বচন শুনি দানব-রাজন। মনে মনে নানাচিন্তা করবের তখন। মনে ভাবে সদাশিব জগতের পতি। তারে পরাজয় করে কাহার শকতি IP সৃজন করেন যিনি এ তিন ভুবন। কিরপে করিব হায় তার সহ রণ॥ ব্রহা আদি দেবগণ একান্ত অন্তরে। শরণ এছণ করে বিপদে ঘাহারে॥ তাঁহার সহিতে যুদ্ধ কি রূপেতে করি। সেজন ছইবে আজি ত্রিপুরের জুরি 🟗 কাজ নাই যুদ্ধে আর কিবা প্রয়োজন। শিবের নিকটে গিয়া দইব শরণ। মনে মনে এত ভাবি দানবের পতি। কহিলেন শুন দোঁহে ওহে মহামতি 🗈 আমার বচন দোঁহে করহ শ্রবণ। কাজ নাই মুদ্ধে আর কিবা প্রয়োজন॥ যখন আদিবে দেই দেব মহেশুর। শরণ লইব গিয়া তাঁহার গোচর॥ এইরূপ মনে মনে করি হে চিন্তন। নজুবা ত্রিপুর হবে সমূলে দহন॥ এত শুনি দেব-ঋষি কহে হীরে ধীরে। কেন দুপ কব ভয় আপন অন্তরে 🗈 কাপুরুষ সম বাক্য কহ কি কারণ। রাজার উচিত ইহা নহে কদাচন। তোমারে জিনিতে বল পারে কোন্জন। এিভুবনে হেন জন না করি দর্শন তারকাখ্য বিদ্যুত্মালী দৈত্য ছুইজন। সরোধবচনে কহে ওছে মহাত্মন্। শরণ লইব ভূমে বলহ কাহারে ৷ কোন্জনে ভর বল করিছে ঘন্তরে N হেন জন ধরাতলে না করি দর্শন। মোদের সহিতে কবে সম্মুখেতে রণ। যদ্যপি রণেতে হারি কিবা ছঃখ তায়। রটিবে অতুল যশ এ তিন ধরায়॥ কাপুরুষ হলে হয় তুর্গতি বিস্তব। অয়শ ঘোষণা হয় ভূবন ভিতর।। অতএব किन रंट िखा कित मूत । ममूना इंट प्रति किति विश्वा धार्यक वहन छनि नात्रम शीर्यान्। मात्रु मात्रु विन करत् थर्मरमा थमान्॥ दिण्डारेमक যত ছিল ত্রিপুর-ভবনে। মাতিয়া উঠিল দবে রণের কারণে॥ তাহা দেখি দৈত্যপত্তি যুদ্ধ সক্তা করে। জয় জয় শব্দ উঠে ত্রিপুর নগরে॥ নানা অস্ত্র করে লয় যত. সৈন্যগণ।, ত্তুজার করে সবে অতি ঘন ঘন॥ শেল শ্ল শক্তি আদি লয়ে সবে করে। লফ্ক ঝপ্প দেয় কত পুলক অন্তরে॥ মনে মনে ভাবে সবে পতিয়াছি জয়। ধরাধামে কোন্জনে আছে কিবা ভয়।

এইরূপে যুদ্ধশজ্জ। দৈত্যগণ করে। রণবাদ্য উঠে কত ত্রিপুরনগরে॥ এই কর্ণ। যেই জন করমে শ্রবণ। রোগ শোক দূরে যায় বিপদ ভঞ্জন॥

## সঙাণীতিতম অধ্যায়।

#### डिপुरपश्न।

তে বীক্ষ্য ছুর্গং ত্রিপুরং গণেশা নন্দীধরাদ্যাঃ প্রমথাঃ সমর্থাঃ।
নাদং প্রচক্রেঃ সহিতাঃ প্রবীরা যুযুৎসবো দানবসিংহমুখ্যাঃ॥

সনতকুমার কহে শুন ঋষিগণ। ত্রিপুর নগরে হয় যুদ্ধ আয়োজন # পতাকা উঠিল কত আকাশ উপরে। স্থাম্য ধ্রু সব কিবা শোলা ধরে॥ দূর হতে পুরী শোভা করি দরশন। ননীথা আদি সবে রোষেতে মগন।। খন খন সিংহনাদ শোবেশে কৰে। শক্ষ বাফ করে কত আমনদ অন্তরে।। **চণ্ডেশ্বর অস্ত্র করের। ধারণ। তুলিতে লাগিল যেন জ্বলন্ত দহন।** শিবের অত্থেতে রহে হরিষ অন্তরে। মনে ইচ্ছাক চম ণে মাতিব সমরে॥ প্রদীপ ত্রিশূল করে করিয়া ধারণ। ত্রাক্ত নামা বার রহে আনন্দে মগন। শস্কুকর্ণ শিবপার্যে করে অবহিতি। ক্রমে ক্রমে আমে সবে সহ পশুপতি॥ र्मिनरेमच क्रा क्रा करित क्रमन। मगरत छेपाठ इस यह रेपछान्।। क्रिंस क्रिंस छूरे (मना अकत इरेल। जीया मगरत मरत आंनरम भाविल। শেল শূল শক্তি সবে মারে ঘন ঘন। খড়োর আঘাত কভ করে কোন জন।। বাণে বাণে সমাজ্য গগন হইল। জ্মিকৃটি শুন্যে যেন হইতে থাকিল। দকুপুত্রগণ দব অতি রোবভরে। শি⊲দৈত দহ যুদ্ধ ভয়ানক করে॥ বিদ্যুৎপ্রভ নামে দৈত্য মহাবলধর। দশবাণ ক্ষেপ করে ভূঞ্গীর উপর॥ ভ্রিকিরিটি সেই বাণ করি বিনাশন। তাহার পৃষ্ঠেতে শূল করিল ক্ষেপ্।। সেই শূল বিচ্যুৎপ্রভ ধরি নিজ করে। কেপণ করিল তাহা বিনায়কোপরে॥ বিনায়ক সেই শুল করি বিদারণ। পুন ত্রিশ বাণ মারে হয়ে ক্রেদ্রমন। रमहे वार्ष रिष्ठाभित इहेल (ছपन। धतां विताल अधिलस्य हहेल श्रेजन॥ অচল সমান শির শোভে ধরাতলে।তাহা দেখি দৈত্যপতি আনে রোষভরে শঙ্কুকর্ণে পুরোভাগে করি দরশন। তাহার সহিতে যুদ্ধে হয়, নিমগন॥ একবারে নানাবাণ মারে তার পরে। বলে বাণে বিদ্ধ করে তাহার শরীরে। তাহা দেখি শঙ্কুকর্ণ হয়ে ক্রেদ্ধখন। একেরারে শত বাণ করিল কেপণ । দেই বাণে রথ আভ করিল ছেদন। অহা রথে দৈত্যপতি করে "আরোহণ॥

আয় দিকে দৈতাপতি করিল গমন। দৈয়াধ্যক তুই জন করে আগমন।
গণেশের সঙ্গে দোহে মাতিল সমরে। বহুক্ষণ যুদ্ধ করে অতি রোষভরে ॥
গণপতি-হত্তে দোঁহে হয়ে নিপতন। অবিলয়ে যদালয়ে করিল গমন ॥
এদিকে তারক সহ যুদ্ধ ঘোরতর। হেরিলে সঘনে কাঁপে দশ্কি-অন্তর ॥
শঙ্কের্প তার সহ করে ঘোর রগ। কেহ নাহি হারে জিনে সম তুই জন ॥
এইরূপে মহাযুদ্ধ ত্রিপুর-নগরে। দেবগণ হেরে সব রিল্ গ্রুপর ॥কত দৈতা
রণমাঝে হয় নিপতন। কার সাধ্য সেই সব করিবে গণন॥ ঘন ঘন উঠে
কত কবন্ধ গগনে। মুগু উঠি ঘূরে কত না যায় কহনে॥

এইরূপ মহাযুদ্ধ করি দরশন। শিবেরে সদ্যোধি কছে দেব প্রাসন।। 👺ন শুন দেবদেব নিবেদি তোমারে। বহুদিনুহলো লিপ্ত রয়েছ সমরে 🖁 সহত্র বরষ গত ক্রমেতে হইল। এিপুর তথাপি নাহি এখনো দুহিল। এতেক বচন তানি দেব পঞ্চানন। রোফবশে করি উঠে আরক্ত নয়ন। শরাসন আকর্ষণ করিয়া যতনে। বসিলেন পঞ্চানন প্রলীত-আসনে॥ ধনুকে টক্ষার দিয়া অতি ঘন ঘন। শরাসনে শর দেব করিল যোজন॥ মহাতেজ শর হতে বাহির হইল। তেজ উঠি দশ দিক্ আলোক করিল। সে অ**লো** ক্রমেতে উর্চে গগন উপরে। অগত নিম্পদ হয় দেবতা শিহরে । তেজের অপুর্বে রূপ করি দরশন। মনে মনে ভাবে সব যত দেবগণ ॥ বৃবিং বা ক্ষিবে তেজ ত্রিলোক দহন। এত ভাবি দেবগণ ভয়াকুল হন॥ ্লখিতে দেশিতে শর ছাড়ে মহেশ্র। আলোকিত করি উঠে গুগুন-উপর॥ দিবাশর দর্শন করি দন্মপতি। কর্যোভে স্তব করে ওহে পশুপতি॥ পর্ম সৌভাগ্য প্রভু করি দরশন। তোমার হাতেতে যাবে অধীন-জীবন। সৃষ্টি স্থিতি কর্ত্তা ভূমি ওছে শূলপাণি। ভোমা হতে সমুংপন্ন হসেছে অবনী॥ खिखन অতীত তুমি ওছে ভগবন্। ভোমার চরণে সদা করি গো বন্দন॥ মুক্ত কর শীঘ্র করি ওছে দয়াময়। তেমার চরণে যেন অত্তে পাই লয়॥ কিছু-মাত্র বাঞ্চা নাহি করি গো অন্তরে। স্থান পাই যেন প্রভু তব পদতলে। সিদ্ধির ঈশ্বর তুমি ধ্বাগের ঈশ্বর । দয়া কর দয়ায়য় প্রভীন উপর ॥ এইরপে করযোড় করি দৈত্যপতি। মহেশ্বরে করে স্তব করিয়' ভকতি॥ দেখিতে দেখিতে অস্ত্র হয়ে ঘোরতর। ত্ত্সার করি পড়ে ত্রিপুব উপর॥ তিন পুরী দগ্ধ হয় অসুর সহিতে। জয় জয় ধ্বনি উঠে দেবলা-মুখেতে।। খন খন পুত্র-র্ফি হয় নিপতন। আনন্দে ম্গুন হয় যত দেবগণ॥ অপ্ররারা নৃত্য করে পুলকিত । মনে। গন্ধর্বেরা দিল মন স্থললিত গানে। এরপে ত্রিপুর

যদি হইল নিখন। অবশিত যত ছিল দানবের গণ।। ভয়েতে পশিল গিয়া সাগর-ভিতরে। দেবতা-ভবেতে গিয়া তথা বাদ করে॥ দেবগণ মহা-নন্দে হয় নিম্পন। আপন আপন স্থান করিল এছণ॥ এছণ করিল সবে নিজ অধিকার। পুরিল হরিষে হৃদি তাঁহা সবাকার॥ নিম্ব করি দেব পঞ্চানন। গণ সহ কৈলাসেতে করেন গমল। চারিদিকে खेव करत (एवडा-निकन। कक्षवीषा भीनवाषा करत अगूहत्।। मसी पृत्री आर्षि मत्त जानत्क मगन। जय जय क्ष्मि कत्त अठि घन घन॥ छन **ওদ** খ্ৰিগণ কি বলি স্বারে। শিবেব বিচিত্র কর্ম এ ভ্রসংসারে॥ তাঁহার কবম বুঝে হেন সাধ্য কার। সগতির গতি সেই রূপার আধার॥ এইরপে তিপুরেরে করিষা দহন। িপুরারি নাম ধরে দেব পঞ্চানন॥ উত্তিদের শুচি হযে থেই কোন নর। ত্রিপুর ব্রতান্ত পাঠ করে নিরম্বর ॥ পাতক তাহার দেহে কভু নাহি রম। পরম পবিত্র সেই জানিবে নিশ্চয়॥ অন্তকালে সেই জন ত্যজিয়া জীবন। প্ররণামে মনপ্রখে কর্যে গ্রমন ।। দিব্য বিমানেতে চড়ি সেই মহোদয়। দেবতা সহিতে যায় স্বরগ-আলয়। অপরারা দলা দেবা করে দেই জনে। দিবানারী গণ তারে বীজ্যে যতনে॥ বিত্কাল স্বৰ্গ ভোগ কৰি সেই জন। মহত ব্ৰেচে পুনঃ লভ্যে জন্ম॥ পারম স্থাবেত দেই করে অবস্থিতি। দাস দাসা সেবা ভারে করে নিরবধি। भीनजरन अञ्चलान करत (महे जन। मवात हुः १४८० ०००) मण जात मन॥ ্ পারত্বংখ দরশনে তাহার দ্বদ্য। অতীব বিকল হয় নাহিফ সংশ্য॥ অধিক বিশিব কিবা ওছে ঋষিগ্ৰ। জিজ্ঞানিয়াছিলে যাহা করিনু বর্ণন।। শিবের " সমান মাছি এ তিন ভুবনে। তিনি মুক্তি তিনি গতি শাস্তের বিধানে॥ **অণিমাদি** অইওণে বিভূষিত তিনি। তাঁহার রূপাঁয সৃটি হুংহেছে অবনী ! অতএব শুন শুন ওতে খ্রিগণ। একন্তি অত্তরে সদা ভাব পঞ্চানন।

## অক্টাশীতিতম অধ্যায়।

মাহেশ্বর যোগ।
সনৎকুমার উবাচ।
শৃণু ঋষে পরং জ্ঞানং ঈশব্রধ্যানকারণং।
সেচছয়া যেন মুচান্তে যোগিনো জ্ঞানতৎপরাঃ॥
ব্যাস আদি শ্বরিগণ সুমধুর স্বরে। পুনশ্চ জিজ্ঞাসা করে সনত কুমারে।

তব মুখে পুণ্যকথা করিয়া এবণ। ধর্মজ্ঞান সবে মোরা করি উপার্জন। আখন জিজ্ঞাদি যাহা করিয়া বর্ণনা। আমা সবাকার ছদে পুরাও কামনা॥ কিরপেতে যোগিগণ মুক্তি লাভ করে। মাহেশ্বর যোগ বল বলা যায় কারে এই সব রূপা করি করহ বর্ণন। শুনিতে আমরা দলে করি আকিঞ্চন # এতেক বচন শুনি দনত-কুমার। কহিলেন শুন শুন করিব বিস্তার ॥ জ্ঞানপরায়ণ যোগী নিজ ইচ্ছাবশে। যেরূপে মুক্তি পায কহিব বিশেষে 🛭 দেহমধ্যে যত নাড়ী আছে বিদামান। প্রাণনাড়ী তার মধ্যে নবার প্রধান ॥ শিবের সমান উহা জানিবে নিশ্চয়। গিবরূপে রহে দেহে নাছিক সংশয়॥ সেই নাড়ী রোধ করি একান্ত অন্তরে। যেইজন মহেশেরে দিবানিশি করে॥ তাহার ভাবনা কিবা ওহে ঋষিগণ। অনায়াদে মুচে তার ভবের বন্ধন॥ শে দাভীর তেজ ক্রমে হইযা বিস্তার। যোগবলে মর্বদেহে হয় যে সঞ্চার ॥ ইন্দ্রিয় নিগ্রহ করি একান্ত অন্তরে। ত্রাণ নাড়ী নিপীড়ন করিয়া गौर्पदत ॥ হট্চক্র ভেদ করি ভহে খ্যিগণ।। মূলাধার হতে চিন্তা করি যোগীজন। শিরোপরি সহস্রারে ভাবনা করিবে। গুরুরূপী মহেশরে তথায় চি**ন্তিবে।** সহসারসুধাপান করিবে সে জন॥ এইরূপ পুনঃ পুনঃ করিবে চিন্তন। তশ্বয় ভাবিয়া পরে সেই যোগাবর। আপনারে নেহারিতে যেমন শক্ষর॥ মাহেশ্বর যোগ এই জানিবে অন্তরে। মুক্তিদার্ক ইহা এইব-সংসারে ॥ কিবা যজ্ঞ কিবা ত্রত ধর্ম কর্ম। ইহার ন্যান কিছু নহে কদাচন॥ যেই জন এই যোগ ভক্তি ভরে করে॥ পাশুপত ত্রত এই জানিবে অন্তরে। মহাদেবপরায়ণ হয়ে দেই জন। কৈলাদ-পুরেতে যার শিবের বচন। নিকল পর: জ্ঞান জানিবে অন্তরে॥ পরম মুক্তির বিধি কহিমু সবারে। শিবের সমান আর নাহি কোন জন। সৃষ্টি হিতি তাঁহা হতে হতেছে সাধন তাঁহা হতে জিম্মাছে বৈফ্বী প্রকৃতি। প্রম ধামেতে তিনি করেন বসতি 🛭 মহাতেজ তাঁর ধাম করছে ধারণ। সহস্র ভাসর সম অভ্ত দর্শন॥ মণিমুক্তা বিভুষিত শোভে চারি দার। জরা মৃহ্যু ব্যাধি তথা না করে সঞ্চার ॥ ইন্দ্রনীল স্থানে স্থানে কিধা শোভা পায়।খেতবর্ণ র্ষ কিবা শোভি-ভেছে ভার॥ সিদ্ধ সাধ্য দেব আদি করি অবস্থান। নিরহর শিবগুণ মুখে করে গান ॥ শিবের পুরম তত্ত্ব রুঝিবারে নারি। ছদিমাঝে সরে সদা কোথা ত্তিপুরারি॥ কিবা দেব কিবা মুনি কিবা পিতৃগণ। শিবের নিগৃঢ় তত্ত্ব না জানে কখন । ষ্ঠুদয়ে কেবল চিন্তা করে ভক্তিভরে। রূপ চিত্তি ছাই হয় আপন অন্তরে॥ মেই স্থানে অবস্থান করে পঞ্চানন । তার শোভা কার সাধ

করয়ে বর্ণন।। বৈদুর্য্যের শোভা কোষা হয় দর্শন। স্ফটিক সমান কোপা অতীব শোভন। কোন স্থান শোভা পায় প্রবাদ সমান। অর্করূপী দেখা ঘায় কোন কোন স্থান। কামৰ পাদপগণ শোভে নানাস্থানে। জুড়ায় দর্শকমন হেরিলে নয়নে । সর্বলোকোপরি স্থিত শঙ্কর-আলয়। মহেশর ছাইমনে সদা তথা রয়।। লক্ষা মেধা ধৃতি কীর্ত্তি 🕮 ও সরস্বতী। উমা সন্থ সবে তথা করে নিবস্তি ॥ দিব্যরূপী ঘোগে রত যত মুনিগণ ৷ দেবদেবী সহ তথা আছে সর্ব-ক্ষণ।। মনের স্থাপতে তথা গণপতি রয়। কামরূপী মহাবল প্রমথনিচয়।। মহাকাল ননীখর করি অবস্থান। পট্টিশ হাতেতে তথা হয় শোভমান। ষ্ণয়া ও বিজয়া আছে দেবীর গোচরে। কুমার করিছে বাস হরিষ অন্তরে॥ শিবের পরম ভক্ত যেই দব জন। শহুর-আল্যে তারা রহে দক্ষণ॥ নন্দন্ সনক আমি আর সনাতন। প্রাণাখ ঘাজ্ঞবলকা অন্য ঋষিগণ॥ পরম আনন্দে তথা করি নিব্যতি। তাঁহার উপরে রাখি সদত ভকতি॥ শিবের প্রমন্থান যথা যথা হয়। বলিতেছি সেই সব শুন ঋষিচয়॥ কেদার গ্রি সিরি আর জীগঙ্গার দ্বারে। গোকর্বে ও শঙ্গুকর্বে বারাণ্নীপুরে । এই সাব স্থানে প্রভু করে স্বস্থান। এই সব স্থান হয় মুক্তির ধাম॥ পা উপ্ত ্থোগ এই করিনু কীর্ত্তন। ইথে ভক্তি র'শে সলা যেই নরগণ।। ভাষারা জীবন ত্যাজি শিবপুরে যায়। নন্দীখরদম হযে রহিবে তথার॥ রুক্রপে में बर्ट में इत গোচরে। কহিলু নিগুড় কথা তোমা নবাকালে॥ এই সব যোগজ্ঞান জানে যেই জন্। তাহার ষতেক বন্ধ হয় বিমোচন॥ যোগশীল হয় সেই জ্ঞানের প্রভাবে। অতথ্য শুন শুন বলিতেছি তবে। এই জ্ঞান नानाविध श्रुतांगापि कत वित्रहम । शकि मार्य कतिया शति। আমার বচন মিথ্যা কভু নাহি হয়॥ এতেক शहरव जुमि नेथत-जानग्। অন্তরে জিমাল তার পরম ভকতি॥ ৰচন শুনি ব্যাস মহামতি। महौटित मनसूर्य करत विष्तु।। যোগ তার পর করিয়া ধারণ। क्यांत्र शार्म धहेत्रत्थ छनि। শ্রীশিবপুরাণ করে ব্যাস মহামুনি।। পরম ষ্পানন্দ লভে করিয়া রচন। পুরাণ ইহার সম নাহি অগ্যতম।। যেই জন ওনে ভবিভেরে। অসাধ্য কি রহে তার জগত ভিতরে।। , शूर्तार तर्य ४७ इरला ममार्थन। इपि गार्य इत हित छात मर्यक्रम ॥

श्ववंश्व मन्त्र्री

# ক্রহং শিব–পুরাণ।

### উত্তর খণ্ড।

প্রথম অধ্যায়।

## প্ররাগে বাদদেবাশ্রমে তুণ্ডি ঋবির গদন 1

७ नातात्रगर नमक्र्या नतिक्षेत्र नत्त्राख्यः ।
 ८ पतीर मतक्ष्यिक्षेत्र चट्या क्रम्भीत्रत्तः ॥

भूतम् छिष्ट्रः ।

দ্দশিভিঃ শিবমাছাত্মাং পুণ্যং ত্তত্তঃ প্রতং বত । ইদানীং গুণকর্মাণি পুনর্ক্রাহ বিশেষতঃ॥

নৈ যিবকানন বাসী যত খালিগা। অপূর্ব্ব পুরাণকথা করেন প্রবণ মা
হতেরে সম্বোধি কহে স্থাপুর পরে। শুন গুন ওচে স্ত নিবেদি ভোমারে ।

মাবের মাহা খ্যাকথা বদনে ভোমার। শুনিরা খদরে হলো জ্ঞানের সংশার মা
পুনরার শিবশুণ করহ কীর্ত্তন। শুনিবারে সবে মোরা করি আকিওন ।

মামুত্ত সেবনে ভৃপ্তি বল কার হয়। যত শুনি তত ইচ্ছা বাবতী রয় ।

এতেক বচন শুনি প্রত মহামতি। কহিলেন ধ্যা সবে ভোমরা স্থাতি ।

রোর নাম ছদিমাঝে করিলে সরে। মুক্তিভাগী হতে পারে মত পাণীজন ।

ইয়াছ ভক্তিযুত ভাহার উপরে। ধ্যা ধ্যা তোমা সবে এতিন সংসারে ।

বদব্যাসমুখে ঘণা করেছি প্রবণ। ঘেরপ আপান চক্ষে করেছি দর্শন ।

বদব্যাসমুখে ঘণা করেছি প্রবণ। মেরপ আপান চক্ষে করেছি দর্শন ।

কিন্তু কিরোপরি শোভিছে ঘাহার। ক্ষাজিন পরিধান সত্যের আধার ।

সই স্ত্যবতীয়ত ব্যাসের চরণে। ভক্তিভরে নতি করি ঐকা্ডিকমনে আ

একদিন কুরুকেত্তে যত মুনিগণ। শান্ত ,দান্ত নিকলুষ শিবপরায়ণ দ কমওলুগারী সবে কৃষ্ণাজিনধারী। জটাজুট শোভা করে মন্তক-উপরি॥ সদাচারে রত সবে বেদ-পরায়ণ। যথাবিধি শিবপূজা করিয়া সাধন। শিবতাণ শুনিবারে করিয়া মনন। পরস্পর নানাকথা কহেন তথন। কিরুপে জানিব যোরা দেব মহেশবে। তাঁহার হরপ গুণ জানি কি প্রকারে॥ কৃথায় বিগত হলো মোদের জীবন। বেদজ্ঞান রুথা হলো দব অকারণ॥ শঙ্করের গুণ নাহি শুনিনু প্রবণে। কি ফল মোদের আর এছার জীবনে॥ এইরূপ পরস্পর কত কথা কয়। হেনকালে আদে তথা ভৃত্ত মহোদয়॥ উত খ্যি সেই ভানে করি আগমন। কহিলেন শুন শুন ওছে খ্যিগ্ৰা। যেরপ বাসনা সবে করিছ অন্তরে। শুনিবে সে সব কথা ব্যাসের গোচুরে॥ সক্ষরিনী প্রাক্ত সত্যবতীর নন্দন। থেই হানে অবস্থান করিছে একণ।। চল চল সেই স্থানে যোৱা সবে ঘাই। মনের বাসনা গিয়া ভাঁহারে সুধাই॥ ভূশুর এতেক বাক্য করিয়া শ্রবণ। পুলকিত মনে সবে করিল গমন॥ উপনীত সবে নর-নারায়ণাশ্রমে। দূর হতে দেখি ব্যাস যত ঋষিগণে॥ व्यर्धा व्यक्ति निया मत्व कतिया शृजन। मगानत्त कत्रत्यात् करहन उथन॥ অংশন সকল অবা হইল আমার। সকল হইল ক্রিয়। দর্শনে স্বার॥ ছইন মম যত পিতৃগণ। বিশ্বপতি স্কল্সন্ন জানিন্দু এখন।। পুণ্যকর্মা সাধুগণ একান্ত অন্তরে। তোমাদের দরশন সদা বাঞ্জা করে॥ আমারে **দেখিতে হেথা আসি**য়াছ সবে। ধতা ধতা আমি ধতা জানিলাম ভবে॥ লোক-কর্ত্তা তোমা সবে ওতে ঋষিগণ। তোমরা করিছ সদা জগত পালন।। তোমরা সকলে হও শিবপরায়ণ। পবিত্র হইন্মু আমি করি দরশন।। পরম আহলাদ यम अधिन अपराय । कि कतिए एर वन गइत कतिराय । তোমরা मकरन ছও শক্তর সমান। কি করিব বল বল দবে মতিমান॥ ব্যাসের এতেক याका क्तिया धार्व। विनय्न-विहास करह ये अधिरात्। या कहिरल अहर ব্যাস নিজ মহাওণে। সর্বত্তে ওণঝান, তুমি ত্রিভূবনে। শিবের পর্ম তত্ত্ব করিতে প্রবণ। আদিরাছি তব পাশে ওছে মহাত্মন্ ।। তব মুখপদ্দকথা শুনিয়া সকলে। শভিব পরম এীতি আপন অন্তরে। মোদের পরম দেব ংখৰ পঞ্চানম। একমাত্ৰ গতি তিনি ওছে মহাত্মন্॥ শিবগুণ তুমি দেব বৰ্ণন कतिह्य । ख्रधा-अक्टियक कर त्योरपेत चप्रस्य ॥.

এত্কে বচন ভনি ক্লাইৰণায়ন। কছিলেন ভন ভন ভতে খবিগ্ৰা সুধাবহ প্ৰশ্ন দৰে করিয়াছ গোৱে। পুণ্যপ্ৰ গোক্ষপ্ৰদ জানিবে অনুরে॥ শৈব পুরাণ হয় অতি অনুভ্য। স্বার নিকটে তাহা করিব কীর্ত্রনা।
ই জন শুনে ইহা একান্ত অন্তরে। শক্ষর-আলয়ে সেই সুখে লীলা করে।
ভিনাম মহাঝিষ অতি পূর্বেকালে। গিরাছিল প্রয়াগেতে তীর্থযান্তাচ্ছলে।
রম ধর্মজ্ঞ ঝিষ শিবপরায়ণ। মাঘ্যাসে প্রয়াগেতে উপনীত হন। তথায়
মলজলে করিয়া সিনান। মাধ্য দর্শন করে সেই মতিমান। তার পর
ন বামদেবের আশ্রমে। সুন্দর আশ্রম সেই বিদিত ভূবনে। যে স্ব
ভান্ত তথা হয় সংঘটন। বলিতেছি সেই কথা করহ শ্রবণ। স্থখাবহ
বা সেই পাতকনাশন। জীশেব পুরাণ হয় অতি মনোরম। যেই জন ভক্তিরে অধ্যয়ন করে। বলিতেছি ফল তার শুনহ সকলে। এতগুলি বর্ণ আছেরাণ ভিতর। তত বর্ষ স্বর্গুরে রহে সেই নর।। ভাহার শরীরে থাকে যুক্ত
নামচয়। তাবত সহস্রবর্গ স্থরপুরে রয়। ইন্দ্র আদি দেবগণ পুজে সেই
নে। পরম মুক্তি হয় জিশিবপুরাণে।।

## দ্বিতীয় অধ্যায়।

তুতির নিকট বামদেবের শিবগুণ বর্ণনপ্রদক্ষে একার্ণব**মধ্যে শিব**-লিক্ষের উৎপত্তি, ভ্রন্ধা ও বিফুকর্তৃক শিক্ষের সীমাধ্যেষণ, কেতকীর প্রতি অভিশাপ এবং শিবের আদেশে ভ্রন্ধার সৃষ্টি আরম্ভ ও বিফুকর্তৃক পালন।

> ইতি তদ্য বচঃ প্রাক্ষা বেদব্যাদদ্য তেংনঘাঃ। প্রপ্রচছূর্ব্যাদ্যিকার্থং পুত্রাঃ ম্বপিতরং যথা॥

ব্যাদের মুখেতে শুনি এতেক বচন। পাপই ন ঋষিগণ আনন্দে মগন ।।
বিগতপ্রাণ সবে একান্ত অন্তরে। চিন্তা করে যেন মুক্তি এলো করতলে।
ক্রেপ পিতৃপাশে জিজ্ঞালে যেমন। সেইরপ ব্যাসদেবে কহিল তখন ।
ন শুন ব্যাসদেব ওহে মহামতি। কোনায় আছিল তুতি কহ শীল্রগতি।।
ায়াগ ধামেতে আসে কিসের কারণ। কেন বা গেলেন বামদেবের আশ্রম।
দই স্থানে তুই জনে কিবা কথা হয়। দেই সব যত্ন করি কহ মহোদয়।।
বিতেক বচন শুনি রুফ্দ্রিপায়ন। কহিলেন শুন শুন ওহে ঋষিগণ।। পূর্বন্দিল ছিল তুপ্তি পঞ্বেটী বনে। শিবরূপ সদা চিন্তা করে সেই মনে।

ম

শিবনাম গান করে হয়ে একমন। এইরপে কিছুকাল করয়ে যাপন। মাঘ্যাস ক্রমে আসি উপনীত হয়। পাপীর শুদ্ধির হেতু নাহিক সংশয়॥ সাধুজনে মুক্তিদান করিবার তরে। যাঘ্যাদ উপনীত এ ভব সংসারে॥ মাঘমাদে শীত-জলে যেবা কবে আন। একলোকে অন্তকালে সে করে পরাণ॥ ত্রন্ধাতী যদি হয় দেই নরাধন। তথাপি সে জন হবে পাপে বিমোচন ॥ শীতল সলিল থাকে যেই কোন স্থানে । সম্পিক পুণ্য হয় তথায় मिनादन ॥ মনে মনে এই দব করিয়া হিন্তন। তুণ্ডি ঋষি প্রয়াগেতে করেন গমন। দেই স্থানে উপনীত হয়ে ভক্তিভবে। মন্ত্র পড়ি জলে স্থান তুতি ঋষি করে॥\* জপ স্তোত্ত প্রাণায়াম করিয়া নাধন। শিবের পরম তোষ করে বেস্ই জন ॥ শঙ্খচক্র-গদাধর মাধ্বেরে পরে। নির্মিখ সাফীজে নতি করিল ফুতকে।। স্তব পাঠ করে পরে সেই মহাজুন্। এরফ পুণ্রপ্রবণ কমললোচন।। জগদ্যোনি বাস্থদের নমানি ভোষারে। এইরপে মাধ্বেরে কত শুব করে॥ এইরেপে শুব করি তুভি ক্ষিবর। রু০রুত্য বিবেচনা করিল অন্তর॥ তার পর যান বামদেবের আশ্রমে। মনোহর তপোবন এ তিন ভুবনে॥ নানাবিধ তরুবর হতেছে শোভন। চারিদিকে বেড়ি আছে সেই তপোবন॥ দেখিলেন বামদেব বসিয়া আসনে। শিবজ্ঞান শোভিত্তভে শশাক্ষ বদনে॥ অবলদ্য়ি সম তেজ করেন ধারণ। জটাভূট শোভে শিরে বিছ্যুত-বরণ॥ ভবের ত্রিপুঞ্ শোভে ললাট প্রদেশে। ভব্মেতে শোভিত হেরে ঋদিবক্ষ-দেশে। তুতিখনি পুণ্যকর্মা শিবপরায়ণ। প্রণমিয়া বামদেবে কহেন তখন।। শুন শুন নিবেদন ওহে ঋষিবর। শিবপাদপল্মধু পীয় নিরন্তর॥ সে হেতু দ্রিজ্ঞাসা করি ভোষার গোচরে। শিবগুণ কহ প্রভু রূপা দৃষ্টি করে॥ रियागीत क्रम्य शत्य तरह राहे जन। रायशीत देशत यिनि कामनियुनन ॥ ভাঁর গুণ বর্ণিবারে কোন্ জন পারে। এক্মাত্র ক্ষম তুমি জানি গো অন্তরে। বলিয়াছিলেন পুর্বের দেব পদাসন। বামদেম মহাজ্ঞানী শঙ্কর যেমন॥ শিবগুণ বর্ণিবারে সেই জন পারে। এইরূপ পিতামহ বলেছিল মোরে॥ এই হেতু জিজ্ঞাসিছি তোমার সদন। রূপা করি শিবগুণ করহ কীর্তন ।

তৃতির এতেক বাক্য করিয়া শ্রাণ। বামদেব বলিবারে সমুদ্যত হন॥
শথ্যফুল হইল মুখ বলিবার তবে। তাহা দেখি তুডি ঋষি প্রফুল অন্তরে॥
কহিলেন বামদেব শুন মহাত্মন্। শিবগুণ বর্ণিবারে কে হয় সক্ষম॥

<sup>\*</sup>শর মুখা বিজুপাদার্গ্যসংভূতে গঙ্গে ত্রিপথকামিন।
ধর্মার বীঞি বিধনতে পাপং দে হর জাহুবি।

কিবা জন্ম। কিবা বিষ্ণু কিবা শঙ্গীপতি। শিবগুণ বর্ণিবারে কাহার শক্তি 🛭 শিব-অনুগ্রহ বিনা কোন্ জন পারে। সাধ্যমত বিবরিব্তোমার গোচরে॥ শুন শুন তুতিঋবি আমার বচন। যখন জগতে হয় প্রলয় ঘটন॥ প্র**লয়**-বায়ুতে বিশ্ব বিন্ত হইলে। ভদ হলে ১রাচর প্রনয়-অনলে॥ ভূমি আদি দর্বভূত জানিবে ভখন। একাণ্য হয়ে পড়ে পছে মহাজ্ম। তার মাঝে আবিভূতি হন মহেশর। কুন্দেলু-ফটিকনিভ অভাব সুন্দর 🖪 জগত-ঈশ্বর তিনি দেব ত্রিনরন। মা ভয় মা ভয় শব্দ করিছে বদন। কটিতটে শোভিতেছে ব্যাস্তর্ঘাধর। প্রাপ্নভূতি হন আসি অম্বর-উপর॥ চক্রমা যেমন উঠে গিরিশিরোপরে। আবিভূতি প্রভু তথা গগন উপরে॥ তাঁহার দক্ষিণ অংশ হটতে তখন। জিলালেন পদুযোনি দেব পদায়ন ॥ জনম লভিল বিফু বামাঙ্গ হইতে। ক্রদ্রদেব জনমিল হাদয়দেশেতে । 'ক্রদ্র-দেব জনমিয়া হন তিরোধান। একা বিফু ছুই ভনে করে অবস্থান॥ ছুই জনে পরস্পর কত কণা কয়। "বিধকন্তা আমি" কহে এদা মহোদয়। তুমি বিফু বিশ্বপাতা বিদিত ভূবনে। সংহারের কর্তা বল গেল কোন্সানো। এইরূপে নানাকণা কহে ছুই জন। অকবাত জলমধ্যে অন্তত ঘটন। সপ্রমেয় মহানিদ্ধ জলের ভিতরে। আবিভূতি অক্সাত এপা বিষ্ণু হেরে॥ স্থালা-মালাসমাকুণ নেই লিম্বর। যোজন আয়ত উহা খ্যাত চরাচর। তাহা निर्म छूरे जरन विश्वरत्र मधन। এ कि এ कि विल स्मेरिक कैं। पि घन घन। বিফু কেহে সম্বোধিয়া দেব পদাসনে। মাহেশ্ব লিঙ্গ এই বুঝিতেছি মনে॥ ক্লপা করি আমা দোঁহে দিতে দরশন।আমা দোঁহে হান দিতে লিম্নের জনম নৈলে ইহা অন্য কিচু হইবারে নারে। তুর্ণিরীক্ষ্য ভেজ রেশ, লিজবর ধরে।। দরশন করি হলো প্রফুল অন্তর। কিরুপে জানিব ইহা ৩০২ মৃষ্টিকর।। বিষ্ণুর এতেক বাক্য করিয়া প্রবণ। ত্রন্ধা কছে মত্য শত্য ওদে প্রাসন। শঙ্করের মায়া এই নাহিক সংশয়। কি বুঝিব মোরা বল ওছে মহোদয়।! ইহার নিগুড় তত্ত্ব,জানিবার তরে | মোরা দোঁহে যাব অধো আর যে উপরের छूँ জনে এইরূপ বলিয়া তখন। লিক উর্দ্ধে লিঞ্চ-অংশ করেন গ্রন।।

তুই জনে এইরপ বালয়া তথন। লিপ ভর্মো লিপ-অবে করেন স্থান। উর্দ্ধভাগে যান ব্রন্ধা অতি ক্রতগতি। অধোভাগে নারায়ণ কবিলেন গতি।।, উর্দ্ধভাগে পদ্মানন করিয়া গমন। সীমা না পাইয়া হন উংকাষ্টত মন ।। শিরলিকে ন্তব করে আপন অন্তরে। লিজ-শির হতে পুষ্প পড়ে হেনকালে স্থানর কেতকী পুষ্প হয় নিপতন। ব্রন্ধার হন্তেতে আসি পড়িল তথন।।। বেই পুষ্প লয়ে ব্রন্ধা হরষি অন্তরে। অধ্যেভাগে আগম্ন করেন সুত্রে।।

এে দিক্তে অংখাদেশ নিরূপিতে নারি। জাসিয়া রয়েছে বিষ্ণু কুর্মন ফিরি॥ ভাঁহারে দর্শন করি দেব প্রাসন। কহিলেন শুন শুন শুহে নারায়ণ॥ লিক উর্ন্তাগ আমি দরশন করি। কেতকী লইয়া এই আসিয়াছি ফিরি॥ ভূমি কিবা আনিয়াছ অধোভাগ হতে। ত্ররা করি বল বিঞ্ আমার সাক্ষাতে॥ ব্রন্ধার এতেক বাক্য করিয়া শ্রবণ। কেতকীরে সম্বোধিয়া কহে নারায়ণ॥ সত্য বল হে কেতকী আমার সদনে। আনিয়াছে ত্রদা কি গো তোমারে এবিখানে।। বিফুর এতেক বাক্য করিয়া প্রবণ। বিনয়-বচনে কছে কেতকী তখন॥ ষিণ্যা নাহি কহি আমিজানিবে অন্তরে। এনেছেন বন্ধা মোরে নিজ-সক্ষে করে॥ লিঙ্গ হতে ব্রন্ধা মোরে করে আনয়ন। মিথ্যা নাহি কছি আমি তোমার মদন ।কেতকীর বাক্য শুনি দেব নারায়ণ।মনে মনে তার প্রতি অতি ক্রুদ্ধ হন। অন্তর্যামী বিষ্ণু তিনি বুঝিল অন্তরে। অভিশাপ কেতকীরে দেন রোষভরে॥ শুনহ কেত্রকি এবৈ আমার বচন। শিবের মস্তকে স্থান না পাবে কখন॥ আমার নিকটে মিথ্যা বলিয়াছ তুমি। এ ছেতু ভোমারে নাহি লবে শূলপাণি ॥ বিষ্ণুর এতেক বাক্য করিয়া প্রবণ। ভবেতে বিহ্বল হয় কেতকী তখন।। অবনতশিরে পড়ি বিফুর চরণে। কহিতে লাগিল পরে গদাদ বচনে। ন্মতে মুরাচরে হরে ফুপাপরায়ণ। দীননাথ মোরে রক্ষা করহ এখন। প জুয়াছিলাম আমি শিবশির হতে। শইয়া আদেন ব্রহ্মা আমারে সঙ্গেতে। অপরাধ করিয়াছি চরণে তোমার। রূপা করি দ্যাম্য় করহ উদ্ধার 🛭 কেত-কীর বাক্য শুনি শশুচ কুধারী। কহিলেন শুন শুন কেতকী সুন্দরী॥ প্রসন্ন ছইনু আমি তোমার উপরে। ক্তিতেছি অনুগ্রহ শুনহ দাদরে। যেই দিনে শিবরাত্তি চতুর্দশী হবে। সেই দিন শিনশিরে বসতি পাইবে॥ শিবরাত্তি-কালে ভক্তি করি যেই জন। কেতকীকুমুমে শিবে করিবে পুজন॥ সহত্রেক অশ্যেধে যেই ফল হয়। সে ফল লভিবে সেই নাহিক সংশয়॥ व्यस्कारन त्मरे कम भिवभूत यात्व। आगात वहन मिथा कचू नाहि हत्व॥ চক্রীর এতেক বাকা করিয়া অবণ। ক্রত্রুত্যা জ্ঞান করে কেতকী তথন।। প্রধাম করিয়া পরে বিঘুর চরণে। মনস্থথে যায় চলি ইচ্ছামড ু স্থানে। ত্রনার সহিতে মিলি শু**ষ্**চক্রণারী। এইরপে কেতকীরে বরদান করি। প্লানামতে স্তৰ করে দেব পঞ্চাননে।বেদবাক্যে প্রুতিবাক্যে বিহিতবি্ধানে॥ শুন প্রভু নিবেদন করি গো ভোমারে। বেদবিদ জনে ভোমা জানিবারে পারে ॥ অনাদি অনম্ভ ভূমি অখিল কারণ। রজোরপে এই বিখ করেছ সূজন॥ শত্রপে পাল তুমি জগত-সংসারে। তমোরপে অন্তকালে সংহয় স্বারে॥

ভোষার বিভূতি বল বুবো কোন্ জন। বিভূতি-বলেতে প্রজা করিছ পালম । চরাচর জীবগণে মৃত্তি দান তরে। লিক্সরপে উঠিয়াছ দাগর-উপরে,॥ তোষার করণা ভিকা করি ছই জন। চরণ-তলেতে স্থান করছ অর্পণ।। তাঁহাদের শুববাক্য শুনি মহেশ্র। লিঙ্গে আবিভূতি হয়ে করেন উত্তর।। রক্তবর্ণ বেদা তৃমি করছ শ্রবণ। রজোরপে বিশ্ব তৃমি করছ স্তরন। বিষ্ণু তৃমি দত্ত্রপে পালহ সংসারে। তথােরপে সংহারিব আমি অন্তকালে ॥ ভোমা দোঁহে মৃত্তি আমি করিব প্রদান। মম এই লিঙ্গ পুজ দোঁহে মতিমান্।। শিবের এতেক বাক্য করিয়া শ্রবণ। পুলকিত হন ব্রদ্ধা বিষ্ণু ভূই জন।। করিয়ো কৃতি পরে একান্ত অন্তরে। বিবিধ ভাবেতে পূজা করি মহেশ্রে।। নানাবিধ শুববাক্য করে অধ্যয়ন। দেবতারা সবে লিঙ্গা করিলেন পরে।। শিবের আদেশে বেদ্ধা একান্ত অন্তরে। সৃষ্টিকার্য্য সমারন্ত করিলেন পরে।। আজ্ঞা অনুসারে বিষ্ণু করেন পালন। পুরাণে ধর্মের কথা অতি মনোরম।। আজ্ঞা অনুসারে বিষ্ণু করেন পালন। পুরাণে ধর্মের কথা অতি মনোরম।।

## তৃতীয় অধ্যায়।

হিমালয়ে ত্রন্ধার তপদা।, শিবদাক্ষাৎ, শিবকর্ত্ক তদীয় প্রধান দ্বাদশলিক । কীর্ত্তন ও ত্রিভূবনেশ্বর লিক্ষের মাহাত্ম্য বর্ণন।

বামদেব উবাচ।

জগংকতা জগনাথো ত্রনা দেবগণৈয় জঃ।
বিফুৎ সহায়মাসাদ্য যথো হিমনতো গুহাং॥
তত্রাসো ভক্তিমাস্থায় শিবস্য পরমাত্মনঃ।
পূজাং ক্রত্বা যথান্তায়মস্তৌবীজ্ঞগতাং পতিং॥

রামদেব মিউবাক্যে করি সম্বোধন। তুওি ঋষিবরে কহে শুন্হ বচন।।
জগাইকর্তা জগনাপ দেব প্রজাপতিন। দেবগণ সহ মিলি অতি ক্রতগতি।।
বিকুর সহিতে যান হিমগিরিবরে। গিরিগুহা পেয়ে তথা রহৈ ভক্তিভরে।।
শিবের উপরে ভক্তি রাখিয়া তখন। ঘথাবিধি পূজা আদি করিয়া সাধন।।
জগতের পতি সেই দেব মহেখরে। স্তৃতিবাদ করে কত একান্ত অন্যরে।।
চারিবেদ-উক্ত বাক্যে করিয়া শুবন। সহক্রেক নামমালা করি অধ্যয়ন।
দশুবহ প্রণ্মিল ভূতল-উপরে। তাহা দেখি মহেশর প্রফুল্ল অন্তরে।।
দশুবহ প্রণ্মিল ভূতল-উপরে। তাহা দেখি মহেশর প্রফুল্ল অন্তরে।।
দশুবর প্রণ্মিক কুরি দুর্শন। তার ক্বত শুব্বাক্য করিয়া শ্রবণ।।

মহাতৃ্ট হয়ে শিঁব আপন অন্তরে। প্রত্যক্ষ হলেন আদি বন্ধার গোচরে ॥ আবিভু ত হযে কহে দেব পঞ্চানন। আমার বচন শুন ওছে পদাসন॥ উঠ উঠ ইরা করি ভূমিতল হতে। বর মাগ যাহা ইচ্ছা হয় তব চিতে। ভোমার স্তব্দেত তুট ধইয়াছি আমি। অতএব বর মাগ ওহে পল্লযোনি॥ শিবের এতেক বাক্য করিয়া শ্রবণ। করযোড়ে ব্রহ্মা কছে ওছে পঞ্চানন। অক্তবরে অভিলাষ কিছুমাত্র নাই। তব পাদপদ্মে ভক্তি এইমাত্র চাই। এক-মাত্র গতি তুমি নাহিক সংশয়। অদৃশ্যরপেতে থাক ওছে দয়াময়॥ কোথায় কোথায় তুমি কর অবস্থান। কিছুই বুঝিতে নারি ওহে ভগবানু॥ তব পাদ-পদপুজা এই ধরাতলে। করিব কোথায় প্রভু দেহ তাহা বলে॥ এন্ধার এতেক বাক্য করিয়া এবণ। মিউভাসে কছে শিব ওছে পলাসন। ভায়-বুদ্ধি ধরিয়াছে আপন সন্তরে। পরম ভকত তুনি জানিত্ব সংসারে ॥ পূর্ব-কালে বিফু সহ তুমি পদাসন। মলগর্ভে যেই লিঞ্জ করেছ দর্শন ॥ জ্যোতি-র্মায় সেই িঙ্গ জানিবে অন্তরে। নেই নিঙ্গ আবির্ভুত ংয়েছে সংসারে॥ ভারত-বরবে তাহা বিরাজিত হয়। চাদশ আকারে আহে জানিবে নিশ্চয়॥ শেই সেই লিজ পূজা কর পলাসন। মনের বাসন। হবে অবশ্য পূরণ॥ এতেক বচন শুনি দেব পরবোনি। কহিলেন শুন শুন ওছে শ্লপাণি।। ,**অসুগ্রহ যদি কর আ**মার উপরে। কোথায় কোথায় লিম্ম বল তুরা করে॥ জ্যোতির্দায় লিক যার দ্বাদশ আখ্যান। সেই সেই স্থান কহ ওছে ভগবানু।। জনার এতেক বাক্য করিয়া এব। মিষ্টভাবে কছে ভারে দেব পঞ্চানম।। আদ্যন্থান কাশীক্ষেত্র জানিবে অন্তরে। মম প্রিয়তম স্থান এ তবসংসারে।। বিশেশর নামে তথা আদ্যালিক রয়। সর্বব শ্রেষ্ঠ সেই লিক হয় জ্যোতির্ঘয়।। বিরাজে দ্বিতীয় লিঙ্গ বদরিকার্থমে। কেদার ঈগর নাম জানিবেক মনে।। ঞীশৈলে তৃতীয় লিঞ্চ বিরাজিত রয়। মল্লিকা-অর্জুন নাম জানিবে নিশ্চয়।। ভोषপুরে মম লিজ নাম যে শঙ্কর। ভীষশক্ষর আখ্যান বলে কোন নর।। ওল্পারেতে অমরেশ লিক্ষের আখ্যান । পঞ্স বলিয়া খ্যত, আছে সর্বস্থান।। यर्छ निष्क भाञक्रभाव ऎष्क्रविनीशूरत। महाकारनथत नामं कानिरव व्यउँदित ।। সোমপুরে সোমনাথ লিজ যে সপ্তম। পাবনীতে বৈদ্যনাথ জানিবে অউম।। প্রভুদেশে নাগনাথ লিঙ্গের আখ্যান। নবম লিঙ্গের এই জানিবেক, স্থান।। শৈবলে দশম লিঙ্গ ভুষণ-ঈশর। একাদশ লিঞ্গ রছে, ভদ্দগিরিপর॥ ত্যস্বক তাহার নাম জানিবে অন্তরে। জ্যোতির্ঘয় লিঞ্চ উহ। এ ভবসংসারে॥ সেত্বদ্ধে ব্রাইনখর লিজের আখ্যান। এ লিজ ছাদশ হয় ওছে 'মতিমানু !!

এই সব জ্যোতি লক্ষ করিন, কীর্ত্তন। ভূকি সুক্তিপ্রদ সব বিধিত ভূকন 👪 ক্লাদৃতি করি আমি জীবের উপরে। কহিনু লিসের কথা জোমার গোচতে এই সব লিক তুমি করহ পজন। আয়ার বতন সংশ্ করছ পারবা পদস্থিতি বাঞ্চা যেই দেব করে। এই মার বিজ্ঞা কল কলে । এতেক বাক্য করিয়া প্রবণ। দেবগণ সহ মি গ ৮েব প্ ভকতি রাখি ছদয় মাঝারে। প্রণমিন শি প্রে য়বন প্র। **जापि एरवर्ग भूलटक मर्गन।** ङङ्जिस्ट । ४ , भटल । व नस **जानि दिवशन रियमन विकित्त । मरह** ३त जिस्तीयान जारीय हरू ।॥ शीर धर्मानी করি পরে দেব পদাসন। শিবেরে নংনে খাব না ছোল ভবন।। বিহ্নল হইরা খেদ করিতে নাগিল। ১ছগত চিমামাণ ঘেন দেবা গোলা। একা ' কহে মূর্মতি আমি সভাক্ষ। মন এগালোহে লোপা গেল ত্রিলাচন। भारतिक भूक्ष भारति । अने भारति । अनिहास्ति इति नाम ीव जलकरत्रोह বামন হইবা চকু ধরিতে বাদনা। কে. ছিত্র নেইরূপ শিবের কান্না। উপ-হাস এবে মোরে করিবে কেনে। ক্লপা কবি কল প্রাস্থা চলি রেনে। এইরতেপ খেল করে দেব প্রান্ন। তাহা গেখি ্ বাবাশ হন প্রান্ন। শুকোপরি আবিভূতি হবে শূলগাণি। কবিলেন শুন শুন ওতে পায়োন। পরম ভকত তুমি জানিত্র সামার। অওরাত্মা যথা হরি ০হে ও পার॥ যত লিঙ্গ আছে মম কাশী আদি স্থানে। অর্জনা করহ গ্রহণ বিশিকে বিষ্ণু আর অগ্র অন্ত দেবগণে এবে। অর্চনা কর তাহা এন। ও হা রে। শিবের এতেক বাকা করিয়া শ্ৰণ। ৩গাও বেলি এক) বঙ্গা ত্ৰম ওঞ্চাবস্বরূপ তুনি ওছে বিশেষর। সদা ভাবি তব রূণ হ য িতর॥ ১ ত বলি মতি করি শিবের চরণে । বিদ পুটা করে বিধি কাটা আচে আহে দ তার অনুসামী ২য় যত দেবগণ। ভারতি করিয়া রে ভি র ।।। विकूट्षात করে পূজা লিঙ্গ বিখেশনে। প্রশানন নারে, ১৮র-मिलिका-अर्जूरन अधि दरतन 'পুনন। ক্রীমাণ পুন। বার অনরেশে ভক্তি করে প্রজিল নি ভি। 🕫 🖰 ব 🕝 ি।। रमामनारथ वाश्रुरक्रव करतम अध्याः स्मानिहा नाथ रिक নাপনাথ প্রিক প্রেক অন্ত ধ্যান্। ভা -ীখবে 🔻 🗧 **इसमा जामुक भूकां** करत ङिख्डिट । राज्य पर किर्मार पर करता है। **ब्बिंग्रिंग विक्रुराग्य मिक्ति। क्षेत्रा क्षेत्रा ५ ५ ते १ ते १ हिल्ला** त्रारम्भत्र लिक किमि शूर्कन मान्यत् । तावरण करतन कत्र हरित् पाउरन ॥

এইরপে প্রতিদিন দেব পদার্শন। ভব্তিভরে পুর্ভে লিকে লয়ে দেবগণ।। এইক্লপে বছকাল সমতীত হয়। উৎকণ্টিত চিভ হন বিধি মহোদয়॥ পুন দেবগণে লয়ে সমভিব্যাহারে। উপনীত হন আসি হিমগিরিপরে॥ পূর্ববং শিবপূজা করিয়া সাধন। চন্দ্রশেখরেরে স্তব করে পদাসন॥ একার উরেতে তুষ্ট হয়ে পশুপতি। আবিভূতি হন আদি ঘথা সৃষ্টিপতি।। চন্দ্রকলা কিবা শোভে কপাল উপরে। পিনাক শোভিছে কিবা দেবদেব-করে॥ রষের উপরে প্রভু করে আরোহণ। ত্রিশূল তমক করে হতেছে শোভন॥ এইরূপে নীলকণ্ঠ কল্পি আগমন। ওদ্ধার নিকটে আসি উপনীত হন॥ দেবগণে পদ্মা-দ্দে সম্বোধন করি। কহিলেন মিউবাক্যে দেব ত্রিপুরারি॥ মনোগত বাঞা কিশা কহ স্বাকার। যাহা চাবে দিব তাহা বচন আমার। আমার মায়ায় মুশ্ধ হইয়া সকলে। জীবন ধরিয়া আছ অবনীমণ্ডলে॥ আমার মায়ার বলে এই পদাসন। করিছেন বিশ্বমাঝে স্বার সৃজন॥ এই যে দেখিছ বিষ্ণু অখিলের পতি। আমার মায়ায় রক্ষা করে বহুমতী॥ আমার মায়ার বশে এই মহাজ্যন। দশ অবতার কালে করেন গ্রহণ।। স্বাধার মায়ায় বদে ধধে দৈতাগণে। আমার আজ্ঞায় চন্দ্র উদেন গগনে।। আমার আজ্ঞায় সূর্য্য করে করদান। আমার আজ্ঞায় ত্মণে অগ্নি মতিখান।। মম আজ্ঞাবশে বায়ু হতেছে বছন। অন্বরে আসিয়া মেব করে বরিষণ।। শিবের এতেক খাক্য করিয়া প্রবণ। অবনতশিরে নতি করে পঢ়াসন।। দেবগণ প্রণমিল ভক্তির ভরে। তার পর কহে ব্রন্ধা শিবের গোচরে॥

ত্রেমা কহে শুন শুন ওহে পঞ্চানন! মোদের পরম হিত করেছ সাধন॥
তামার মাদেশে মোরা যাইয়া ভূতলে। জ্যোভিনিক্ষ পূজা সবে করেছি
সাদরে॥ কিন্তু এক কথা বলি ওহে ভগবন্। প্রতিদিন নাহি পারি করিতে
শুজন ॥ নালাস্থানে তব লিন্দ করে অধিষ্ঠান।সর্বনে কিরুপে যাই ওহে, মতিমান্॥ প্রতিদিন নাহি যেতে পারি সর্বহানে। ইহার উপায় কর রুপা বিতরণে॥ সকল লিন্দের শ্রেষ্ঠ যেই লিক্ষ হয়। সনাতন জ্যোতিরূপ যে লিক্ষ
নিশ্চয়॥ নিরূপন কর কাহা ওহে ভগবন্। প্রতিদিন' তথা গিয়া করিব
গ্রুন ॥ একলিন্দে হলে পূজা সর্বলিক্ষে ববে। হেন স্থান কোধা আছে কহ
এই ভবে॥ সেই ক্ষেত্রে মোরা সবে করিয়া গমন। একান্ত অন্তরে পূজা
করিব সাধন॥ এতেক বচন শুনি দেব পশুপতি। কহিলেন শুন শুন ওহে
স্কিপতি.॥ আমার পরম গুহা যেই লিক্ষ হয়। বলিতেছি সেই কথা শুন
মহোধয়॥ বিক্ষুর সহিতে ভূমি করেছ দর্শন। উৎকলদেশেতে ভাহা হতেছে

শোভন । সেই লিক্ষ শোভা পায় একাত্র-কাননে। সনাতন লিক্ষ সেই জানিবেক মনে। তাহার আখ্যান হয় ত্রিভুবনেশ্র। সর্বে জ্যোতির্ণ্য় লিক্ষ খ্যাত্র
চরাচর । পরমগোপন লিক্ষ জানিবে অন্তরে। সদা তথা রহি আমি অতি
হর্ষভরে । যে সব লিক্ষের পূজা করেছ সাধন। তার অংশমাত্র হয় ওছে
পদাসনা অত এব গিয়া সেই একাত্রকাননে। দেবগণ সহ লিক্ষে পূজা করছ
বিধানে । নানাবিধ দিব্য দ্রব্য করি আয়োজন। বিধানে লিক্ষের পূজা করছ
সাধন । আমার নৈবেদ্য পরে ভোজন করিবে। পরম পবিত্র দেহ তাহাতে
হইবে । প্রভুর এতেক বাক্য করিয়া এবণ। বিনয়-বচনে কহে দেব প্যাসনা।
শিবলিক্ষে পূজা করি একান্ত অন্তরে। না থাবে নৈবেদ্য কভু ঋষির বিচারে
এইরূপ অবগত আছি ভগবন্। কিরুপে করিব তবে নৈবেদ্য ভক্ষণ ।
ইহার মাহাত্য কিছু বুঝিবারে নারি। সংশ্য ছেদন কর ওহে ত্রিপুরারি ।
যাহে জ্ঞান লাভ করে সর্ক্রদেবগণ। তাহার উপায় কর ওহে ভগবন্।

এতেক বান শ্বনি দেৰ শূলপাণি। কছিলেন শুন শুন পত্ত প্ৰযো**নি।** গুন তান মম বাক্য ওছে দেবগণ। শুনিলে স্বার হবে সংশয় ছেদন।। শুন শুন প্রযোনি আমার বচন। সে লিজ্মাহাত্ম তুমি না জান কখন॥ বিফু নাহি জানে কভু মাহাজ্য তাহার। দেবগণ নাহি জানি ওহে গুণাধার॥ ' অগ্রাহ্য নৈবেদ্য বটে শাস্থের বিচারে। সে বিধি নহেক কিন্তু ত্রিভূবনেখনে অন্য অন্য লিঙ্গে আছে যেরূপ বিধান। ইথে তার বিপরীত ওতে মতিমান্। অতত্রব সঙ্গে করি মত দেবগণে। স্মবিলম্বে যাহ চলি একাত্র-কাননে॥ তথা গিয়া যথাবিধি করিয়া পূজন। একান্ত অন্তরে কর নৈবেদ্য এহণ।৮ এও বলি তিরোধান হলেন শক্ষর। একাদ্রকাননে চলে দেবতানিকর 👪 অবিলম্বে সেই হানে করিয়া গ্রন। অার্ব্য জীশিব শঙ্গ করেন দর্শন॥. তাহা দেখি পদাসন এক। ও অন্তরে। দেবগণ সন্থ মিলি শিব পুজা করে॥ থানহোতের পদাসন হন নিম্পান। তাঁহার পর্য তাজি হেরে প্রানন॥, সাজ্বিকী ভকতি দেখি হরিষ অন্তরে। বরুপ দেখান শিব দেব পদাকরে॥ মধুর বচনে পরে করি সম্বোধন। কহিলেন কিবা চাহ ওবে পঁছাসন॥এতেক বচন শুনি দেব সৃষ্টিপতি। কহিলেন প্রণিপাত করি প্রপতি॥ শশাক্ষ मगोन उक् वत्र । धवल । मूल सूत्र शिनाकां पि धतिष्ठ भक्त ॥ ऐक आपि শোভিতেছে তৃব দিব্য করে। কটিতটে ব্যায়চর্ম কিবা শোভাধরে॥ পর-মার্থ বীজ তুমি ওতে সনাতন। ভোমার চরণে করি মতত বন্দন ॥, তোমার ভীষণ রূপ দর্শন করি। তবে প্রভু দূবে মোরা অতরে জীহার॥ শাস্ত

্রমূর্তি কুপা করি কর প্রদর্শন। এই ভিক্ষা তব পদে ওচে ভগবন্। এত নানি পদ্রযোনি ভুতল উপরে। অই-অঙ্গে প্রণিপাত করে ভক্তিভরে॥ জ মিডালে পতি করে মুত দেবগণ। অবিলয়ে গ্রাত্রোপান করে সর্বজন ॥ গ' লোখান করি মবে লাগিল বিষয়। হয়েছেন ভিন্নমূর্ত্তি শিব দ্যাময়।। ৫ 12 বছন কিলা পাহা মরি মরি। মুবটেন্দু শোভে কিবা মস্তক উপরি॥ কর্ম্বরুমুখরাগ োভে ভাশতটে। বিঘাম রক্ত আভা শোভিতেছে ও**ঠে**॥ মুর মধুর হান্য কিবা শোভ। পার। পীযুষ ঝরিছে যেন বদনে তাহার॥ মাণিক্য কুণ্ডল শোভে দিব্য গণ্ড হলে। মীলবর্ণ কণ্ঠ কিবা শোভিতেছে গলে শ্বৰ্ণ-মণি-মুক্তামালা শোভিছে ত্রীবায়। পীন দীর্ঘ চারি ভুজ শোভিতেছে 👼 য়ে॥ গারি হত্তে শোভিতেছে স্থন্দর কন্ধণ। নুগান্ধিত টক্ষ দেব করিছে ;<sup>\*</sup>শারণ॥ বরাভয় শোভা পায দেবদেব-করে। কণুর-চন্দন শোভে **তাহা**র ুউপরে ॥ মালতী চম্পক আর কাঞ্চনকমলে। মালা গাঁথি ধরিয়াছে মনোময় शाल ॥ বিব্যু পট্টাম্বর দেব করেন ধারণ। ঘণ্টিকাতে কটিদেশ হতেছে শোভন ॥ কদলী জিনিয়া কিবা শোভে উরুদ্বয়। মুপুরে শোভিত হয় পাদ-পুরিদার । ধুক্রবজ্রাক্সুশটিহ্ন শোভিছে চরণে। অন্তর ভূলিরা যায় হেরিলে ্ট্রীনয়নে ৮এইরুপে শিবরূপ করি দরশন। ত্রন্ধা আদি দেবগণ বিমোহিত হন॥ দেবগণ সহ পরে দেব গ্রুযোনি। স্তৃতিবাদ করি কহে ওহে শূলপাণি॥ চ্চব ভব করিবারে কি সাধ্য স্বার। গুণের আধার ভুষি রূপার আধার॥ ্ষ্টিশ্রত বলি বিজ্ঞারণ করি দর্শন। বিষয়ে মগন ২ন ছেব পদাসন॥ দেখিতে দেখিতে শিব হন ভিরোধন। বিজ পূজা করে পরে বিধি মতিমান॥দেবগণ ্সহ মিলি হারষ অন্তরে। ভক্তি ক্রি করে পূজা ত্রিভুবনেশ্বে॥ নানারিধ উশহার করিয়া অর্পণ। প্রম আনন্দ লভে দেব প্রাসন॥ যথাবিধি পুজা আদি করিয়া সাধন। নৈলেদ্য প্রাশন করে যত দেবগণ।। তার পর যায় সবে নিজ নিজ স্থানে। সদা ভক্তি রাখে সেই শিবের চরণে।। লিঙ্গের মাহাত্ম্য যদি শুনে কোন জন। যাবত পাতক তার হয় বিমোচন॥ অন্তকালে मिवशूदत तमहे जन यात्र । यदनत जानत्म विक मिवछन शात्र ॥

# চতুর্থ অধ্যায়।

# দেবগণ কর্ত্বক দ্বাদশ জ্যোতিলি ক্ল পূজন। তৃত্তিরুবাচ।

শ্রুতং ত্রিভুবনেশন্য চরিতঞ্চ তবাজ্ঞা।
নাতিস্পর্টং পুরা তানি কথিতানি ত্রয়া মম ।
তেষামিদানীং চরিতং জমাদ্ ক্রহি যথার্থতঃ।
কাশ্যাদিষু চ কৈস্তানি পৃজিতানি কঞ্চ তুরৈঃ॥

कहित्न वामरापव ७ नह मकत्न। वामरापव धरेकारण धर्मकथा वतन॥ বামদেব-মুখপদে করিয়া এবণ। পরম আনন্দ লভে তুণ্ডি মহাতান্।। বামদেবে সম্বোষিয়া কছে পুনরায়। নমস্কার নমস্কার করি গো তোমায়॥ শিবের পরন ওণ করিতে শ্রবণ ৷ পুনশ্চ আমার হৃদি করে আকিঞ্চন 👢 ত্রিভুবনেশ্বরকথা তোমার বদনে। ভনিয়া পরম ভুটি লভিয়াছি মনে। যে সব লিঙ্কের নাম করেছ কীর্ত্তন।বিস্তারিয়া তাহা নাহি করেছি এবণ ॥ যথার্থত বিস্তারিয়া সে সব কাহিনী। আমার নিকটে কহে ওহে মহামূনি॥ কাশী আদি সর্বস্থানে যত দেবগ্। কিয়পে সকল লিঙ্গে করিল পূজন ॥ এতেক বচন শুনি তু খির বদনে। কহিলেন বামলেব মধুর-বচনে॥ শিব-পাশে বর লাভ করি পদাসন। হিম্পিরি হতে আসে সহ দেবগ্য। আগমন করি সবে অবনীমণ্ডলে। একে একে কিঙ্গপুজ। করে ভক্তিভরে 🛚 তার পর মহাবাত শঙ্চক্রধারী। দেবগণ সহ যান বারাণসী পুরী॥ পরম আনন্দ লাভ করে নারায়ণ 🏻 সেই স্থানে জ্যোতিশি স্ক করি দরশন। বিধেশ্বর অভিধান সেই শিন্ধ ধরে। ইন্দ্রনীশ সম প্রভা কিবা কশেবরে॥ মোক্ষচিন্তামণি তিনি সাহিক সংশয়। তাঁহার রূপায় ভূমে মোক্ষপদ হয়॥ সেই স্থানে নারায়ণ করিয়া গ্রম। নানাবিধ উপচারে করেন পুজন ই মনে মনে এই চিন্তা করে বনমালী। পূর্কের বাঁরে দেখিয়াছি হিমালয়োপরি॥ এখানেও দেই দেবে করি দরশন। এত ভাবি খ্যানপর হন নারায়ণ॥ বিষ্ণুর সাত্ত্বিকভাব দেখিয়া নয়নে। পরম সম্ভটি জন্মে শঙ্করের মনে। পর্ম সম্ভট হয়ে দেব উমাপতি। বিষ্ণুর স্মক্ষে আসি করে অবস্থিতি॥

আবিভুত হন আসি বিফুর সদন। শরচ্জ সুস্ম কিবা অকের বরণ॥ জটাজুট শোভা পায় যন্তক-উপরে। ত্রিনেত্র লালাটোপরি কিবা শোভা ধরে তিশুল পিনাক আদি করে শোভা পায়। বরাভীতি শোভিতেছে মরি কিবা তায়। দিগদর বেশে প্রভু করি আগমন। মনের হরিষে নৃত্য করে ঘন ঘন।। তাহা দেখি নারারণ হরিষ অন্তরে। পাঞ্জন্ত শঙাধনি ঘন ঘন করে।। শিবের চরণে নতি করি। তখন। করতালি করি বাদ্য করে পদাসন।। তাহা দেখি মত্ত হয়ে দেব মহেশর। ঘন ঘন নৃত্য করে ভূতল উপর॥ স্পুরের শব্দ হয় চরণ কমলে। পদকা ডিছটা পড়ে দিক দিগন্তরে॥ বাহ-দরে কিন্তু হয়ে ঘত দেবগণ। বঙ্দুরে সবে গিয়া হয় নিপতন॥ এইরপে **দৃত্য করে দেব দিগদর।** তাহা দেখি এফা বিক্যু ব্যক্তিল অস্তর॥ ক্তি**র** হইয়া কহে বিনয় বচনে। রক্ষা কর ওহে ত্রভূ এ তিন ভুবনে॥ এতেক বচন শুনি দেব পঞ্চানন। নৃত্য ত্যালি কহে পরে গঞ্জীর বচন॥ শিব কহে . . তাম তাম প্রামান। তাম তাম বাক্য দেব নারায়ণ।। তোমাদের ভাকি হেরি আপন নয়নে। করিতেছিলাম নৃত্যু আনন্দিত মনে॥ হিংসা করি নৃত্য নাহি করেছি কখন। আখার নর্তন শুদ্ধ মগল কারণ॥ সদ। শাস্ত্রপৃত্তি আমি জানিবে অন্তরে। আমা হতে সমে জন্ম ধরেছ সংসারে॥ পিত। হয়ে পুত্রে নাহি করে বিনাশন। হৃদয়ে সংশয় নাহি রাখিও কথন 🛭 ছান শুন জগ্ৰপতে বচন আমার। কাণী প্রামে সন্নিহিত রহি অনিবার॥ ক্রপা করি ভোষাদিগে দিয়াছি দর্শন। এত বলি মহেশ্র ভিরোহিত হন॥ এত বলি বামদেব কছেন তুণ্ডিরে। কহিলাম পূর্বকথা তোমার গোচরে॥ এই রূপে শিবপূজা কাশীধামে হয়। কহিনাম দেই সব এচে মহোদয় II ভার পর দেবরাজ স্থরগণ দনে। বিফুরে সম্বোধি আর দেব পদাদনে॥ शक्की द-वहर्त करह अन পলাদন। শুন अन ওহে হরি আমার বচন । বাসনা করেছি যেতে বদরিকাশ্রমে। কেদার-ঈশ্বরে পূজা করিতে বিধানে॥ ज्था तिशां शानत्यात्र इत्य नियमन। होषण वत्य त्यता कतिय माधन॥ এইরপ কহি ইন্র সবার গোচরে। অবিলমে যান চলি কেদার গোচরে॥ তথা, উপনীত হয়ে সহ দেবগণ। ভক্তিভরে কেদারেরে করেন দর্শন।। বটরক্ষুলে আছে লিকের প্রবর। তাহা দেখি প্রণমির্ক দেবতানিকর॥ বিধানে করিয়া পূজা দেব শচীপতি। নয়ন মুদিয়া ধ্যান করে পশুপতি॥ ভাছার পর্ম ভক্তি করি দরশন। পর্ম সম্ভূট হন দেব পঞ্চানন॥ ্ শ্ট্রীণতি করে ব্যানু একান্ত অভরে শ্লোত্রির্ভুত উদাকান্ত হন হেন কালে ॥

লারদীয় চক্র সম শোভিছে বদন। ইব্রু আদি দেবগণে করে সংবাধন। অমনি অমররাজ ধ্যানভঙ্গ কবি। দেখিলেন পুরোভাগে দেব ত্রিপুরারি॥ টক্ক মুগ আদি তাঁর শোভিতেছে করে।কটিতট শোভা পায় অজিন-অন্বরে॥ ভালতটে নেত্রর করেন ধারণ॥ यन यन शांत्रा (गांट कमल-वषन। আবির্ভুত হয়ে দেব মধুর-বচনে। কহিলেন ওন ইন্দ্র কহি তব স্থানে॥ তোঁশার পরম ভক্তি করি দরশন। পর্ম সম্ভূট আমি হয়েছি এখন 🌃 হইয়াছি আবির্ভুত তোমার গোচরে 🏾 অভিযুত্ত বর দান করিবার তরে। যা চাহিবে দিব তাহা অমব-রাজন # भर्नुत वामना घांटा कत्रह याहन। এতেক বচন শুনি দেব শচীপতি। কহিলেন শুন প্রভু ভুগি পশুপতি॥ তপ পাদপদ্ম বিনা কিবা আছে বর ৷ অই পদ মাত্র চাহি ওহে দিগম্বর। অনুগ্রহ যদি থাকে অধীন উপরে। এই ভিমা দেহ প্রভু ক্পাদৃটি করে॥ অহরহঃ যেন পাই তোমার চরণ। অন্য কোন বলে মম নাছি প্রায়াজম।। এত বলি মৌনভাব গরে শচীপতি। তথাস্ত বলিয়া তিরোহিত উমাপতি॥ নানামতে করে স্তব দেব প্রকাননে ॥ তার পর দেবরাজ বিহিত বিধানে। ভক্তিভরে লিঙ্গপদে কবিষা প্রণাম। আপন পাপন স্থানে করেন প্রয়াণ॥, যেরপে অর্চনা হয় বদরিকাপ্রমে। কহিলাম:ভাহা ভূতে ভোমার সদনে। স্কলোকস্থাবছ এ সৰ ঘটন। ঘটেছিল বত্পুৰ্ণে ওছে মহাত্মন॥

তার পর ঘটে যাহা অপূর্ব্ব কাহিনী। ওকতি করিয় শুন ওহে তু**ণ্ডিমুনি**॥ অগ্নিদেব তার পর করি যোড়কর। কহিলেন শুন শুন দেবতানিকর 💵 বাসনা করেছি মনে শ্রীশৈলে যাইতে ৷ গুজিব মাহেশলিকে ভক্তিযুত চিতে তথাস্ত বলিয়া সবে করিল খীকার। এিশেন উদ্দেশে সবে হয় আগুসার॥ উপনীত সবে তথা হরিষ অন্তরে। জীশৈল শোভিছে সবে নয়নে নেহারে॥ ষড়ঋতু ফলপুষ্পে অতি সুশোভন। মনোহর গিরি সেই অতি বিমোহন॥ মল্লিকা-অর্জুন লিঞ্চ শোভিছে তথায়। লিঞ্চ দেখি দবে হয় হরণিতকায়॥ **দেখিলেন শোভে** তথা শশান্ধ-শেখর। মন মন হাস্যে কিবা শোভে ওষ্ঠাধর বিভূতি অঙ্গেতে শোভে অতি মনোরম। দ্বীপিচর্ম পরিধান পতীব মোহন॥ উপনীত হয়ে তথা একান্ত অন্তরে। ১ গ্লিদেব স্তব বরে তক্তির ভূরে॥ জয় জয় মহাদেব জয় দৈত্য অরে। পাতক খোচন দেব জয় ত্রিপুরারে॥ জয়ৢশয়য়৾ সর্বাত্মন্ বিশ্বপ্রবর্তক। একাও-অধিপ এভো পাতকনাশক॥ বেন্ধাদি-ৰন্দিত দেব জয় জয়, জয়। জর সর্বব জগন্নাথ ওহে দলাসর্থী গুজিলেন অগ্নিদেব আনন্দিত মনে ম এইরপে শ্ব'ব করি বিহিতবিধানে।

শিমির ক্লান্টি দেখি প্রভু পঞ্চানন। আবিভূতি হয়ে কহে মুর্র-ইচন। বর লহ অমিদেব বালনা যা হয়। বরদান হৈতু আমি এলোছ বিভয়ে। অভীক প্রদান আমি করিব ভোমারে। তুমি মন মুর্তিভেদ জানিবে অন্তরে। তুমি মন মুর্তিভেদ জানিবে অন্তরে। তব পাদপল প্রভু হেরিমু নয়নে। ইহাপেকা বর আর কি আছে ভুবুনে। ইহা হতে প্রেষ্ঠ বর আর কিভু নাই। জগদা রের জগরাথ নিবেদি গোলাই। এতেক বচন শুনি চন্দ্রকলাধর। নিকাম অমিরে জানি করেন উত্তর। প্রতেক বচন শুনি চন্দ্রকলাধর। নিকাম অমিরে জানি করেন উত্তর। প্রতেক বাক জানি করেন উত্তর। প্রতেক বাক জানি করেন উত্তর। প্রতেক বাক জানি হইয়াছি মনে। প্রতিবাধান ত্রি বিলোধান হন পঞ্চানন। পরম পুলকে পূর্ণ হয় দেবগণ্। প্রতিবাধান হন পঞ্চানন। পরম পুলকে পূর্ণ হয় দেবগণ্।

এত বলি বাদদেব তুণ্ডি ঋষিবরে। কহিলেন পুনরায় সুমধুর সুরে॥ জিলৈলমাহাত্ম্যকথা করিলে শ্রবণ। ভীমশন্ধরের কথা শুনহ এখন॥ যমরাজ একত্রিত হয়ে দেবগণে। উপনীত হয় ভীনশঙ্কর-সদনে॥ নানা-বিধ উপচারে করেন পূজন। আবিভূতি হন আসি দেব তিন্যন॥ 🧝 ডমরু ত্রিশূল ধরি আপনার করে। হাস্যমুখে উপনীত বরদান তরে॥ প্রস্তুরে নিকটবর্ত্তী করি দরশন। নতশিরে ভূমে নতি করিল শমন॥ . আশীর্বাদ করি যমে কহেন শঙ্কর। উঠ উঠ তথী হও ওহে দওধর॥ বিনয় বচনে কহে শমন রাজন। তন প্রতু গৌরীপতি করি নিবেদন॥ তোমার দর্শনে বাঞা হইল দফল। তরু এেক ⊲র মাগি ওহে ইন্দুধর॥ 🙀 ই হানে সদা যেন দরশন পাই। তথান্ত বলিয়া বর দিলেন গোঁসাই॥ ভার পর তিরোধান হলেন শন্ধর। আনলে মগন হয় দেবভানিকর॥ নিঋতি সম্বোধি পরে যত দেবগণে। কহিলেন নিম্ফার স্বার চরণে॥ ষম উপকার কর ওহে দেবগণ। ওঞ্চার ক্ষেত্রেতে আনি করিব গমন॥ মহেশের লিক্ষ তথা পুবি যতনে। অমর-ইশ্বর নাম বিদিত ভুবনে॥ ভ্রমাধি সকলে তাহা করিয়া প্রবণ। অবিলয়ে সেই স্থানে করেন সমন। নানাবিধ উপচারে একান্ত অন্তরে। নিশ্বতি ভকতি করি পূজে মহেশ্বরে॥ পুষ্পককর্মেতে করে একারে বরণ। রতোলি বলিয়া জন্ম করেন আহণ।। বথাবিধি পূজাক্রিয়া হলে সমাপন। নিঋতি ভকতিভরে করেন বন্দন।। উহিন্দ্র ভকতি দেখি হরিষ অন্তরে। মহেশ্বর উপনীত জাঁহার গ্লোচরে।। ্ষ্ম শূল খট্ট-অঙ্গ ক্রিয়া ধারণ। আবিভূতি হল আঙ্গি দেব প্রকানন॥ বৈষ্ট্র ব্যান্ত চর্যা রুষভবাহনে ৷ উপনীত হন আসি নিখতি-সদনে ॥ गर आर्थिश निक्षाजित करहम उथम्। यत माग याचा याक्षा रह महाजान्।

নিশ্ব তি কহিল প্রভূ নিবেঁদি তোমারে। সদা যেন তোমা হেরি স্বদয়-মাঝারে তথাস্ত বলিয়া প্রভূ ছন তিরোধান। আনন্দে দেবতাগণ সবে ভাসমান্ত্রাঃ মহাকালেশরে পরে করিতে পূজন। দেবগণ সহ করে বরুণ গমন॥ উপনীজ হয়ে তথা একান্ত অন্তরে। পূজিলেন শিল্বরে নানা উপচারে॥ যথাবিধি পূজা আদি করিয়া নাখন। বদ্যা শিবের পদে করিল স্তবন॥ তান্তারে গর্ম উক্তি দেখির। নয়নে। পঞ্চানন উপন ত সহাস্ত্য-বদনে ॥ত্রিশূল করে, ত প্রভূ করিয়া ধারণ। চিতাভ্য সর্বে অপে করিয়া লেপন॥ বরুণ-সক্রাণী আসি পূলক-অন্তরে। কহিলেন স্বানা হিয়া হ্রমন্তর মরে॥ বরু মানা হান খাহা অভিলাব হয়। আসিমাহি বর দিতে ওহে মহোদ্য ॥ একমাত্র ভ ক্রি বরুণ ধীমান্। কহিলেন নিবেদন ওহে ভগবান্॥ একমাত্র ভ ক্রি বরুণ ধীমান্। কহিলেন নিবেদন ওহে ভগবান্॥ একমাত্র ভ ক্রি বরুণ ধীমান্। কহিলেন নিবেদন ওহে ভগবান্॥ একমাত্র ভ ক্রি বরুণ ধীমান্। কহিলেন নিবেদন ওহে ভগবান্॥ একমাত্র ভ ক্রি বরুণ ধীমান্। কহিলেন নিবেদন ওহে ভগবান্॥ একমাত্র ভ ক্রি বরুণ ধীমান্। ক্রিলেনে বিবেদন ওহে ভগবান্॥ একমাত্র ভ ক্রি তিয়ার উপরে। মনেতে বামনা আর ন,হি ক্লেব্রে। তথান্ত ব লিয়া

ব।ম**দে**ব পনি॰ কহে সুমধুর ধরে। ভনে তান চুড়ে খাবে কহি তার পারে॥ মেমিনাথে পুজিলারে করিয়া মনন। দেবভাগণের সহ চলেন প্রন ॥ উপনীত ২রে ভপা হরিও অওরে। পুজিনেন মহেশ্বরে নান। উপচাবে॥ ভাঁহারী খুলার ভুট হয়ে পঞানন। আগিত তহলে কছে শুন্থ প্রন॥ ব্রুমাগ মাহা বাঞ্চা হয়হে অভরে। এত শুনি বামদেব করে ভক্তিভরে॥ তোমার সন্নিধি ঢাহি ওয়ে ভগান। দিবারপ যোরে নদা করাবে দশন। সর্বাদা তোবার পূজা করিবার তরে। দিবা রূপ তব যেন দেখিগো অভারে। এতেক বচন শুনি দেব পঞ্চানন। কহিবেল শুন ওল ওছে : হাতুন ॥ পাশানুন বর্পদ চন্দ্রার্থির। শুলুমুর্ভি ব্যাঘাজিন-বিধৃত অধর॥ এই মৃতি সদ্ বুমি হেরিবে নয়নে। এত বলি তিবোচিত ইন সেই খানে॥ ভার পর ধনাধিপ কুবের স্থাতি। বৈদ্যনাথে পূজিবারে কণিলেন থতি। ব্রহ্মা জারি (पराप्त निष्य कि. द्या । हिन्दा रेकामात्थ मानम कराय ॥ किरा धर्न-পরে আর ইন্দুবিল্দুলে। পূজিলেন ১ছেশেরে ভত্তি সহকারে॥ তাঁথার পূজায় ভুট হয়ে ভগবান্। কুবের গোচবে দিন দর্শ প্রদান। আহা মরি কিবা রূপ বৈদ্যনাথ ধরে। পন্নগভূষণ কিবা শোভে কলেবমে॥ ললাট্টেক শশিকলা কিবা শোভা পায়। বিছ্যত বরণ বাডি মরি কিবা তায়॥ ত্রিগুল করেতে প্রভু করেন ধারণ। কুবের স্থীণে আসি দিলেন দর্শন। কংলেন মিউভাষে দেব পশুপতি। বর লহ যাহ। বাঞা ক্বের স্মাত। এতেক বচন ওনি যুক্ষপতি কয়। অন্ত বরে রিবা প্রভু আছে ফলোদয়॥ তব প্রশুদ্ধা

শ্বন করি সর্বাদণ । এই মাত্র চাহি বর ওহে ভ্গবন্ ॥ তথান্ত বলিয়া শিব সানুদ্দ অন্তরে। তিরোহিত হয়ে যান আপন আগারে॥ অনন্ত তাহার পর দেবগণে কয়। চল চল নাগনাথে ৬হে দেবচয়॥ এত বলি সবে মিলি করিল গমন। নাগনাথ লিম্ব পূজা করিল সাধন॥ দেখিলেন শিবে তথা ফ্রান্টাভূট শিরে। অর্দ্ধচন্দ্র শোভে কিবা ললাট উপরে॥ পিনাক ত্রিশ্বল শোচে করন্বয়ে তার। উদ্যাত রয়েছে বাহু শোভার আধার॥ অনন্ত তাহারে নাতি করি ভিত্তিভারে। নানাবিধ পুলা দিয়। পুজেন সাদরে॥ আবিভূতি হুয়ে শিব কহেন তথন। বর মাগ যাহা বাঞা ওহে মহাজ্বন্॥ অনন্ত কহিল প্রাভূ নিবেনি তোমারে। একমার ভক্তি চাহি তব পাদোপরে॥ অনন্ত কিন্তা তাতেক বলি চরে প্রাণিণাত। তথান্ত বনিয়া তিরোহিত নাগনাথ॥

ভুতিরে সম্বোধি পরে বামদেৰ কয়। শুন শুন তাব পর এছে মহোদয়॥ ' ভীক্ষর তাহার পর দেবগণে লয়ে। বৈশবলে গমন করে দানক-ছদয়ে॥ ভূদণ-कियात उथा करत्र मर्भन । विश्व कार्रिक सम प्रत्येत यत्।। मीशिष्टर्य শারিধান অতি মনোহর। অভয় ধরিছে আর অসি শূল বর॥ ভালতটে ্র্রিন্দুকলা অতি বিমোহন। দেখিয়া ভাস্কর দেব সানদে মগন॥ পূজিনেন দ্বিন্দণি পঞ্চ-উপচারে। পূজাতে সমুষ্ট শিব আপন অমরে॥ আবিভূতি **ছয়ে কহে শুনহ ভাক্ষর। অ**ভিলায ঘাহা হয় মাগ সেহ বর॥ ুদিনমণি কৰেন তখন। তোমার উপরে ভক্তি চাহি নর্প্রকণ।। জন্ম আৰে চাহি শুদ্ধ তোমাতে ভকতি। অন্ত কোন বরে বাঞ্চা নাহিক স্থমতি॥ ধ্রীরীপতি এই বাক্য করিয়া শ্রবণ। তথাস্ত বলিয়া তথা তিরোহিত হন। ফোর পর চক্রদেব লয়ে দেবগণে। ব্রহ্মগিরিবরে যান পুলক্তি মনে । তাদক লিলেরে তথা করেন দর্শন। মনোছর কিবা রূপ অতি বিমোহন॥ স্বহস্তে क्ष पत्र कुलि क्षानिक घरन। हस्यो कहान क्षान माधरनह धरन॥ नानाविध উপগরে করেন পূজন। আবির্ভুত হয়ে বর দেন গঞানন॥ অন্তর্হিত হন পরে জগত-ঈশর। আনন্দে মগ্ন হয় দেবতা-নিকর। তার পর বীণাপণি হরিষ অন্তরে। দেবগণ সহ যান দক্ষিণ সাগরে॥ সাগর তীরেতে আশু ক্রিয়া গ্রাম রামেশ্র লিন্দ তথা করেন দর্শন। ভারতী ভকতি-যুতা হয়ে যেই খানে। পুজিলেন মংখারে ঐকান্তিক খনে॥ যোড়দুোপচারে প্রজা করেন সাধন। রাথেশ্বর তুটি হয়ে আবির্ভুত হন॥ পূর্ণচন্দ্র সম , তাঁর বদ**ন কমল। ইন্দুকলা শোভা পার ল**লাট উপর<sup>ন</sup>। জিলোচন শোভিতেছে ল্লাট উপরে। কটিউট শোভা পার দ্বীপ্রিচর্মান্বরে॥ চরণে হুপুরধনি

হয় খন খন। হাস্যমুশে ভারতীরে কহেন তখন। শুন শুন গুন ওছে হেকি বচন আমার। বর লহ যাহা বাঞ্ছা অন্তরে তোমার।। যাহা চাবে দিই তাহা স্বরূপ বচন। তোমার উপরে প্রীত আমি সর্পদ্ধণ।। এতেক বচন শুনি কহেন ভারতী। শুন শুন নিবেদন প্রহে পশুপতি।। তব গুণ সদা আমি করিব কীর্ত্তন। এই মাত্র বর মাগি ওহে ভগবন্। অন্ত বরে কিবা কার্ম ওহে পশুপতি। এত বলি মৌনভাব ধরেন ভারতী।। এতেক বচন শুনি দেব ত্রিলোচন। তথাস্ত বলিয়া বর করেন অর্পণ।। এইরূপে লিস্পৃত্তা করিয়া সাধন। ভারতী সহিতে যান যত দেবগণ।। আনন্দে চলেন স্বেশ্ অমর-নগরে। রহিলেন সবে তথা ইরিষ সন্তরে। তৃথিরে এতেক বিশি বামদেব কয়। শুনিলে অপূর্বর কথা ওহে মহোদয়।। দ্রাদশলিক্ষের কথা। করিমু কীর্ত্তন। আর কি শুনিতে বাঞ্চা বলহ এখন।। অপূর্বর ধর্মের কথা। শুনিব-পুরাণে। ভবপারে তরে সেই শুনিলে শুবণ।।

## গঞ্চন ভাষাায়।

নিগুণ শিবএকোর সপ্তণত্বের কারণ বর্ণনপ্রসঙ্গে বিপুর কর্তৃক দেবরাজ্য এবং বিফ্র-ধ্য- বরুণাদির বল বাহন হরণ ও এক্ষপাম হরণে আগমন, তদ্দর্শনে হিমালয় দেবগণের প্রায়ন।

#### ভুণ্ডিক্ৰবাচ !

ক্রাক্রোন লিকানি তেয়াঞ্চরিতং তথা। পুনর্বে শুক্রা জাতা বামদেবকথামূতে। নির্নেশং নিশুণং জন্ম স্চিদানন্দর্গ যথ। তথ কথং রূপবান্ জত্যে স্মাং জ্রিং স্বিভ্রাং॥

তৃথি কহে বামদেশে ওহে মহাত্মন্। লিফের চরিত এই করিলু প্রবণ।।
তব স্থাবাণী পুনঃ শুনিতে বাসনা। বর্ণন করিয়া তাহা পূরাত কামনা।।
নিলেপ নিগুণ তকা চিলানন্দ্র। কিরপেতে সেই জন গুণবান্হয়।

্র এই কথা কহ প্রভু আমার গোচরে। তানি তত্ত্তান আমি লভিব অন্তরে॥ ু এতেক বচন শুনি বামদেব কয়। শুন শুন তুলিখাৰে তুমি মহোদয়॥ ু ধেরতে নিঞ্গু অকা হন শুণবান্। বলিতেছি সেই কথা শুন মতিমান্॥ দ্রিপুর-নামেতে দৈত্য ছিল গ্রাকালে। প্রম ছুর্চ্চর সেই খ্যাত চরাচরে॥ উদয়-অচলে পূর্ব্বে করিয়া গমন। সে দৈত্য প্রকর তপ করয়ে সাধন॥ বৈদেশক্য-বিজয়বাঞ্চা করিয়া অন্তরে। সেই দৈত্য দিবানিশি যোরতপ করে দুক্তন তপদ্যা তার করি দরশন। পদ্যোনি মনে যনে পুলকিত হন। আবির্ভ্রত হযে পরে কংখন দৈত্যেরে। বর মাগ যাহা বাঞ্চাভোমার অন্তরে এতেক বচন তানি দৈত্যবর ক্ষ। তান তান নিবেদন ওচে মহোদয়॥ অজেয় হইব আমি ব্রিলোব ভিতরে। মন স্ব কেন্দ্র নাহি ম্ন্ট্রে সম্বে॥ কিবা দেব কিবা নৈত্য কিবা অন্ত জন। কেহল আমার সম না হবে কখন। ঞ্কবার্ণে ত্রিলোক যেই ভেদিতে পারিবে।সেই জন মন প্রাণনংহার করিবে এই বর চাহি আমি ওহে ভগবন। তথা স্ত বি-রো একা তিরোহিত হন। ব্ৰেক্ষার বরেতে দৈত্য বাভি্যা উঠিল। ইন্দুকে জিনিবা রাজ্য হরিয়া। লহন ॥ কুবের বরুণ যম অনিল অনল। ত্রিবিক্ম বিফ আর দেবভানিকর॥ সবে প্রাজয় হয় দানব-গোচরে। দৌরাম্য বর্থে দৈত্য ভ্রন-ভিতরে॥ তাহা দেখি ইল আদি যত দেবগণ। জনাদিনে পুরোগামী করিয়া তখন। সত্যলোকে উপনীত হইয়া সকলে। পিতামতে তব করে প্রকাও অভরে॥ প্রজাপতি তব পদে করি নমক।র। তব প্রজা নাশ করে দৈত্য তুরাচার॥ আমাদিগে বর্গ হতে দিয়াছে তাড়ায়ে। ধবাতলে ভ্রমি মোরা বিফনহৃদয়ে॥ বানর স্মান মোরা করি বিচরণ। তোমার আখ্রে এবে লইনু শরণ। এতেক বচন শুনি দেব পল্যোনি। দেখিলেন পুরোভাগে বিক্ত চিন্তামণি॥ তাহা দেখি পদুযোনি কহেন তখন। অপরাণ খ্যা বর ওতে নারায়ণ॥ शान ( या दिल अकार अस्त । प्रस्त म्यान मम उर भरताभरत ॥ কোটি কোটি বিশ্ব শোভে হাৰয়ে ভোমার।ত্রিলোক ন্যাপিয়া তুমি রহ গুণাধার তব পাদপলজলে পবিত্র অবনী। বলিংর করেছ ধ্ংম তুমি চিন্তামণি॥ দুসিংহ রূপেতে তুমি নখর-প্রহারে। নিধন করিয়াছিলে দানব-প্রবরে॥ এতেক বচন শুনি কহে নারায়ণ। সত্য বটে বহু দৈক্য করেছি নিধন।।

প্রেরণ করেছি আমি বলিরে পাতালে।তাহতে অধিক কিন্তু জানিবে ত্রিপুরে তোমার বরেতে সেই দানব প্রবর। বিজয়ী হইয়া আছে ত্রিলোকভিতর॥ নিখিল দেৰতাগণে করি প্রাজয়। একুচ্ছত্র রাজারুপে আছে হরাশুয়॥ ইন্দ্রদেত্ব পরাজয় করি দৈত্যাধন। বজ্র আর এরাবতে করেছে হরণ॥ নন্দন কানন দেই এবে ভোগ করে॥ উচৈচঃশ্রবা অশ্বরাজে লইয়াছে হরে। পতিব্রতা শচীরে সে করেছে হরণ। रेक्टरक युठाधा स्थान ना (पत्र व्यथम॥ ধরা হতে ইন্দ্রশন্দ করেছে বিলোপ। দেবরাজ-প্রতি ভার এভদূর কোপ॥ लाराह महिस ५७ यामत हतिया। বক্তবের পাখা আরু সামন্দ হৃদ্ধে। মকর বাহন আরো করেছে হর।। র্নেরের র<sup>ণ</sup> গ্ল' লয়েছে অধ্য।। স্থের চন্দ্রে গতি রুধিয়াছে কলে। দেবগণ যেতে নাহি পারে সুরপুরে ॥ ইন্দ্র আদি সবে গিয়া ক্ষীরোদ সাগরে। আমারে করিল তুব একান্ত সন্তরে ইহাঁদের রশা হেতু হইয়া সদর। গিয়াছিলু চক্রুহস্তে ওছে মহোদয়॥ আমারে দেখিয়া দৈও। অতি রোযভরে। বজ অত্র নিদেপিল মম বক্ষোপর।। ৰক্ষেতে পড়িয়। বজ্ৰ শীৰ্ণ শীৰ্ষ হয়। তাহা হেরি হলো মম রোষের উদয়॥ ক্রোধভরে স্থদর্শন করিল্প ক্ষেপণ। নৈত্যভাগে চক্র গিয়া হয় নিপতন। নিজহত্তে দেই চক্র ধরে দৈ গুবর। স্থার্শন গেছে মম ওহে পদাকর॥ ভার পর মহা শস্ত্র করিয়া ক্ষেপ্র। কীরোদ সাগর দৈত্য করিল শোষ্য ॥ কম্পাক্রম সব ভগ্ন করে রোমভরে। স্থারভি লইম। সেই গেল মহাবলে। এখন উপায় কিবা করি প্রাদ্ধ। এিলোক বণ্পিয়া আছে সেই দৈত্যাধ্যা গেখানে থেখানে আমি করি হে গংন। সেই খানে সেই ছুটে করি দরশন ॥ লযেছে সকল অস্ত্র সেই জুরমতি। গ্রুত্ বাইন মাত্র আছে মহামতি। আরো আছে লক্ষ্মীদেবী আমার গোচরে। আর তিছু নাহি মম জানিবে অন্তরে॥ বিফুর এতেক বাক্য করিয়া শব্দ। এদার সদয় হয় কম্পিড তখনা। বিষ্ণবদনে পরে গ্রুডবাহনে। কহিলেন শুন তন কহি ভব ছানে॥ স্বার ঈশ্বর তুমি ওহে ভগবন্। তব পালে দণ্ড, আণি হতেহি এখন। यागन काँ शिष्ट यम (पर मरहापता। ভায়েতে ব্যাকুন মম ₹তেছে হৃদয়। এইরপে কথাবার্তা হয় বিষ্ণু দলে। সহসা ত্রিপুর দৈত্য আদিল সেখানে॥ मरारदर्ग रेपजाकत करत आंगमन॥ বেদার কমলাসন করিতে হরণ। যেই দিকে যায় চলু চুলিল পলায়ে । তাহা দেখি দেবগণ বিহ্বল ইইয়ে । ভিষ্ঠ ভিষ্ঠ কহি যাহা ভনহ এবণে। তাহা দেখি বিষ্ণু কহে যত দেবগণে। বিকুর এতেক বাক্য কৃরিয়া শ্রবণ। ভয়েতে সকলে তার লভিল শরণা এই দেখ দেবগণ ভারেতে কাতর॥ বিষ্ণু কছে পদাসনে ওছে পদাকর। উপীয় কি হবে বল ওহে পদাসন। কোথার থাকিবে বল যত দেবগুণ ॥ এত শুনি বিধি কহে শুনহ মুরারি। চল চল যাই মোরা হিমনিরিপরি॥

তথা গিয়া শক্ষেবে ভূষিব যতনে। উপায় করিবে প্রভূ ভাবিয়াছি মনে॥
এত বলি দেবগণে সচ্জতে লইয়ে। এদা বিফু দেনৈছে যান গিরি হিমালয়ে॥
অবিলম্বে গিরিবরে উপনীত হন। আহা কিবা গিরিশোর্ডা অতি বিমোহন॥
হার্থেতে তথায় সবে সদত বিহরে। নানাবর্ণ ধাতু শোভে গিরিশ্লোপরে॥
পুশক্ষে অবনত কত তক্রবর। নির্ভর শোভা পায় পর্বত-উপর॥
কোকিলেরা বাস ভালে পুলকে মগন। কুত্ রুত রবে সদা করিছে কুজন॥
তর তর শব্দে বহে গঙ্গা ভরমুনী। ভাসিমা চলিছে পাল কত বল গণি॥
বড় ঋতু সদা তথা করে অবস্থান। শিবপাদপদ্যচিক্ত আছে শোভমান॥
বিশুদ্ধ ফাটিবর্ণ শোভে শ্রেবর। অসপথা লিহজ আছে শোভমান॥
বিশুদ্ধ ফাটিবর্ণ শোভে শ্রেবর। অসপথা লিহজ আছে দেবগণ॥ মনে
মনে দেবগণ এই চিন্তা বরে। অবস্থা মন্ন হনে মহেশের বরে॥ "মজল
কবিবে দেই দেব পঞ্চানন। হুবনে বিদিত ঘিনি মঞ্জকারণ॥ পুরাণের
সার এই এশিবপুরাণ। শুনিলে ভাগর হয় দিল্যতন্ত্রভান॥ ভবপারে
ভরিবারে ইচ্ছা যেই করে। পজিবে শুনিবে কিলা এচা ও অভরে॥ ভাই
বলে দ্বিজ কালী ওরে মুচমন। একাও অভরে ভা। শিবের চরণ॥

## য়ও অধার।

खन्ना फिरफ्रवर्गरनंत निक्रे छेप्यन्ता श्रमित शार्थयन, छेप्यन्त्रायूर्थ भिरवत निर्मित्राणि छप्यन्न, जन्ना फिक्ड्क सिर्वतः ख्रव, ज्रवर सिर्वत शार्विक्वा

বামদেব উবাত।

হিন্দানং স্থাগারং গ্রা হরিপিতামহে। হরিদখমুখৈর্দেবৈশ্চিন্তমামাসত্হরং । এতিমিন্ন ভরে তত্র উপমন্তাম হামশাঃ। মুনিরাগতবান সাক্ষাদীগুবহিসমপ্রভঃ॥

বাদদেব তার পর সম্বোধি তুতিবে। কছিলেন থারে ধীরে স্থমধুর স্বরো। শুন শুন ওছে খবে অপূর্ব ঘটন। তার পর ঘটে যাহা করিব বর্ণন॥ রেক্ষা বিষ্ণু ছুই জন দেবগণ সুনে: হিমাল্র-স্থাগারে গিরা ফুলমনে॥ পূর্ব্ব মুখে বসিলেন যত দেববণ। ভাঁদের সহিতে মিলি একা নারায়ণ॥
ছিলিমাঝে চিন্তা করে দেবদেব হরে। উপগন্য ধ্যি তথা আসে হেন কালা॥
ঘহাযশা মহাতেজা সেই মুনিবর। প্রদাও অনল সম যেন কলেবর॥ একা
বিক্তু তুই জনে করি দরশন। অবনত শিরে ধ্যি করিল বন্দন॥ কর্যোড়ে
কহে মন জনন সফল। এত দিনে হলো মন শিবপুজাফল॥ একা বিক্তু দুই
জনে প্রত্যক্ত নয়নে। হেরিতেছি গ্র আলি আনার জীবনে॥ ইন্দ্র আদি
দেবগণ সদা স্পাক্ষণ। নয়নে দর্শন করে এমিগুল্লন॥ অতথ্য ধ্রা স্ব
দেবতা সকলে। আমি শ্র আসি আজি গ্রার গোচরে॥ অব্যাহ বহন সদা
করিছ হরিবে। ধ্র প্রত হংস তুমি বহিছ বিহিরে॥ এইনাে কত ক্যা
কহে তপোধন। প্রবিরে সলোাগ কহে বিহাত। তখন॥ উপ্লেতে বহন সদা
তোমার সমান। ধরাগামে কোন জন নাহি বিদ্যানন॥ তব সম কেই নাহি
হবে ধরাতলে। শিব সম জুমি খন্দ ভাবিহে অন্তরে॥ এখন জিজ্ঞানি
তোমা কহ ত্যাগন। কিরপে প্রস্ম হবে কেব পঞ্চানন॥

এত শুনি উপমন্তা কহে পিরে । গিলোলা করেছ প্রশ্ন দুরুছ আমারে॥ নিলেপ নিগুণ সেই সামাৎ শহর। বিগ্রহবিহান তিনি খ্যাত চরাচর ॥ সাধারণে কিবারণে জানিবে ভাষারে। সজ্জনের গতি তিনি ভব-পারাবারে॥ শুন শুন পিতারহ আমার বচন। শিব এই শব্দ মাত্র করি উচ্চারণ॥ শক্ষাত্র জ্ঞান আছে আমার অভ্রে। কিরূপ ভাঁহার রূপ বলি কিবা করে॥ কোনু পথে গেলে তিনি প্সন্ন যে হন। কিরূপে বলিব তাহা ওহে প্রাসন॥ সে স্ব কিছুই নাছি জানি গো অন্তরে। এক্ষাত্র জানি শিব এ তুই অঙ্গরে॥ এতেক ষচন শুনি দেব প্রাসন। দেবগণে সম্বোধিয়া কহেন তখন॥শুন শুন দেবগণ একান্ত অন্তরে। উপমন্যু শিবতুল্য এ ভবসংসারে॥ যখন ইহাঁরে খোরা করিন্ম দর্শন। দর্শন-প্রসাদে পাব শিবের দর্শন॥ বিধি হয়ে আমি নাহি শিবতত্ব জানি। অত্যে পরে কিব। কথা বল দেখি শুনি॥ বিরূপাকে এবে আমি করিব স্তবন। অবশ্য প্রসন্ত হৈ ববে জিনয়ন এত বলি কছে এদা কোথায় ঈশ্বর! সহত্র-মন্তক চুমি গুন্ধ-এবর॥ সহত্র লোচন তব রহস্র চরণ। জগতে কেবল তুমি মদল-কারণ॥ বিরাট পুরুষ যিনি খ্যাত চরাচরে। তোমা হতে জন্ম তাঁর জানি গে। অওরে॥ সাম ঋক যজু আ দি দেবচতুষীয়। তোমা হতে সমুংপর নাহিক সংশর॥ হইয়াছে তোমা হতে ছন্দের জনম। জন্মিরাছে দিদ্ধ সাধ্য আর দেবগুণ্য

ভোমার বদন হতে জম্মেছে দ্বিজাতি। বাত্ত্যুগো জম্মে করে ওহে পশুপতি॥ छेक इटउ रेक्णार्य नाजरात्र खनम। अनम्रतः इटल इत्र मृद्ध छे९ शामन॥ চক্রমা মানস হতে জনমে তোমার। চকু হতে জন্মে দিনমণি গুণাধার॥ শোতা হতে বায়ুদেব লভেন জনম। নথ হতে জিমিয়াছে জুলন্ত দহন।। জিমিয়াছে অন্তরীক্ষ নাভিদেশ হতে। শীর্ষ হতে দিবলোক বিদিত জগতে।। পদ হতে সমুংপন্ন পাতাল নগরী। কি বুঝিব তব তত্ত্ব ওছে দৈত্য-ভারি॥ এইরপে পদাদন করিয়া স্তবন। সৌনভাব ধরি তথা করেন চিম্বন।। তার পর বেদ্য বাক্ট করি উচ্চাবণ। শিবস্থব করে পাঠ দেব নারায়ণ॥ অন্ধায়রপ তুমি ওছে ভগবান্। তোমার উদ্দেশে করি সদত প্রণাম।। গোবাক্ণ-হিতকার তুমি মহাত্মন । বিশ্বহিত সদা প্রস্করিছ সাধন।। শশিকলা শোভিতেছে তব শিরোপরে। নমস্কার করি তব পাদপদ্মোপীরে।। নিগুণ সঁজিলানদ পয়ত্রদা বিনি। নিলেপ ও নিরাভাস যিনি শূলপাণি।। ভাঁহারে প্রণাম করি একান্ড অন্তরে। প্রসম হ দিন্তিনি আমা স্বাপরে।। এইরপে শুব করে দেব নারায়ণ। যৌনভাবে মহেশেবে করেন চিন্তন। এদিকে প্রদন্ন হযে দেব মহেশর। অদুশ্যভাবেতে গাকি গগন উপর॥ দৈৰবাণীচ্ছলে কহে হুন প্ৰামন। শুন শুন দেৰগণ আমার বচন।। এমেছ এখানে সবে কিসের কারণে। বল বল শীঘ্র করি আমর সদনে॥ বিবাদ অন্তর্মাঝে না রাখ কখন। আগমন-হেতু মবে বনহ এখন। এইরপে रिषयां भी अभिया अवर्ष । इहेरलन एवर्ष ग्विया गति ॥ श्राम्ब वर्ष সবে একি বা ঘটন। শুঅপরে দৈববাণী করে কোন্ভন॥ কিরপে দেখিব তাঁরে ভাৰিয়া না পাই। চিন্তায় চিন্তায় মোরা ব্যাকুলিত হই॥ এইরূপ চিতা করি কহে দেবগণ। কোথায় রয়েছ প্রস্তু ওছে ভগবন।। অঞ্চতার্থ মোরা সবে নাহিক সংশায়। দেখিবারে তব রূপ ব্যার্ল-ছদয়॥ ত্রিপুল-অমুর দুপ্ত জন্দত ববে। মোদের পদবা দব লইয়াছে হরে॥ তব পাশে লয়েছি র্ণুশ। ত্রিপুর-হস্তেতে রক্ষা কর ভগবন্॥

দেবতাগণের বাক্য করিয়া এবণ। অদৃশ্যরপেতে থাকি কিছে পঞ্চানন॥
শুন শুন দেবগণ বচন আমার। সেই দৈত্য বল ধরে বল কিপ্রকার॥
কিরূপ তাহার রূপ বলহ এখন। কি কথা সেজন কহে ওহে দেবগণ॥
কি কারণে তারে বর দেন প্রযোনি। ত্যা করি সেই সব বল দেখি শুনি॥
এত শুনি এলা কহে ওহে ভগবন্। গগন্মূরতি তোমা করি গো বদন॥
পরমাত্মরূপী, তুমি স্কভূতাত্মন্। ভূত ভব্য ভরপ্রভু অধিলকারণ।।

जिलूत-इंखें छ विन अर्थे छ वर्र । नशाक्त्रमारा महे छ्तांचा जनरमें তিন লোকে পুজা হর দেই তুরাজান্। এ হেতু ত্রিপুর নাম করয়ে ধারণ জনমিয়া তিন লোকে আধিপত্য চায়। এত শুনি মিউভাষে কহিলাম ভায়॥ তপদ্যাতে মনোরথ সম্পাদিত হয়। নতুবা অধ্যা গতি জানিবে নিশ্চয়॥ এত শুনি গেল বৈত্য উদয়-অচলে। দারুণ তপদ্যা করে গিয়া সেই স্থলে ॥ স্বীয় দেহ হতে মাংস করিয়া কর্ত্র। অনলে আছতি দৈত্য কর্ষে অর্পণ ॥ বিবা বর্ষশভায়ত এইরূপে যায়। তপ হেরি তুট আমি হলেম তাছায়। তাহার নিকটে আমি করিয়া গমন। বর মাগ বলি কছি । গুরু বচন । কল্যাণ হউক্ তব ওহে দৈতাবর। বাসনা মনের কিবা এলহ এতার॥ এত শুনি দৈত্যবর কহিল ৬খন। অনুভাষ বার দেহ ওবে ভাগ্যন্।। েলাক্য-বিজয় প্রভু আমি যেন হই। গারো এক কবা বলি শুনহ গোলাই । এক বাণ কেপ করি যেই কোন জন। ত্রিলোক করিবে ভেদ ওছে ভগ্রন।। তার হাতে যাব আমি শমন আগারে। এই বর দেং প্রতুদ্ধানুতি করে॥ তথাস্ত বলিয়া বর করিয়া অর্পন। আপেন ভানে ফিনি করিছে প্রনা। মুম ববে অহন্তত হয়ে দৈত্যবর। দেবগণে জয় করে অতীব সত্র।। নারায়ণে পরাজয় করে হুরামুন্। হরিয়া লয়েছে দুষ্ট আমার আমন । এে হেতু শরণাগত তোমার চরণে। আমাদের গতি হও রুপা বিভয়ণে॥ কিপুর নিধন করি ওহে ভগবন। রক্ষা কর দয়াময় এ তিন ভুবন॥ দেবগণে পরিত্রাণ করিবার তরে। অবতার হও তুমি রূপ:দৃষ্টি করে॥ বেবভাগণের বাক্য করিয়া প্রবণ। গগনে থাকিয়া কহে কামনিছদ । জন ভন মদ বাস্ত ওহে পদাকর। আনার বচন তান দেবতা-নিকর॥ খানিকেশ মন 'দ্যা করহ প্রবণ। রৌদ্রকার্য্য হেতু গোরে করিছ ঘাচন। এতেতু করা কোমি তোমা স্বাকার। সাধ্যমতে সম্পাদিব যক উপকার। ধানি ঠে তে.।। সবে হও হে এখন। আমার স্বরূপ সবে করাব দর্শন । যোগীৰ গুল ভ রূপ कानिरंद असुरत । (१७ विन भरम्बत (योनकाव धरव ॥ । ५१ किन किन ये उपनितृति । जितिकार्ष भागित्यार्ग इन नियंगन ॥ "अन्तर्यार्ग (पर्थ मर्व রূপ মনোহর। বিশুদ্ধ ক্ষটিক সম শুল্র কলেবর॥ জতীব নির্মণ হিমনু-নেনু স্থান্। চন্দ্র স্থ তার অতি শোভ্যান॥ চাল হাস্য শোভা পার कमलदुष्टन । ठाक्न , ठन्म ভालजा दे देशदान नयदन ॥ नृग पेक्ष दर्ता छी जि कदत শোভা পায়। দ্বীপিচর্ম পরিধান কিবা শোভে তায়।। উপেজ্র। দি বর্গা এ হেন্ প্রকারে। রূপ হেরি মহানন্দ লভেন অন্তরে॥ ভক্তিভরে প্রণমিল

চরণে তাঁহার। আশ্বাস প্রদান করে শিব গুণাধার॥ কহিলেন দেবগণে শুনহ বচন । রুদ্রেময় বপু আমি করিব ধারণ॥ একবাণে বিনাশিব ত্রিপুর অসুরে। শুন ত্রন্ধা শুন বিঞু কহি সবাকারে॥ অবিলয়ে সবে কর যুদ্ধ-আয়োজন। যুদ্ধে নিমগন হব ওহে দেবগণ॥ দেবগণে এত বলি দেব মহেশ্বর। অবিলয়ে সবাকার হন অগোচর॥ রুতক্রত্য বোধ করি আপন অস্তরে। দেবগণ মনে মনে সুখলাভ করে॥ পুরাণে ধর্মের কথা অতি বিমোহন। শুনিলে তাহার হয় পাতকনাশন॥

## সপ্তম অধ্যায়।

শিব কর্ত্ক একবাণে ত্রিপুর সহ সমস্ত জগৎ দহন।
বামদেব উবাচ।

মহাদেবে গতে ভদিনুপেক্রান্যাপ্ত তেমরাঃ। উপায়ৎ চক্রিরে দিব্যং ত্রিপুরস্য বধায় চ॥

বামদেব কহে শুন ওহে মহাজুন। মহাদেব এইরপে করিলে গমন।
উপেন্দ্রাদি দেবগণ মিলিয়া সকলে। তিপুর বধের জন্ত আয়োজন করে।
পৃথিবীকে করিল যে মোহন স্থানন। চন্দ্র স্থর্য্যে চক্র করে যত দেবগণ।
বাহন করিল পরে বেদচভুষ্টয়ে। নারথি হলেন ক্রনা পুলকছনয়ে॥
জনল্ত ধকুর ছিলা হরসেতে হয়। স্থানরপ্রক করে পত্ম দেবতানিচয়॥
দিব্য শররপী হন দেব নারায়ণ। এইরপে হয় রথ অতি মনোরম॥
য়ুদ্ধাদ্যোগ এইরপে করি দেবগণ। কর্যোড়ে শিবোদ্দেশে কহেন তখন॥
ব্রুছে প্রভুদিগন্তর তুমি মহেশর। রথ-অঞ্চ হর মোরা দেবতানিকয়॥
ভারণ ত্রিপুর হতে করহ রক্ষণ। চ্রাচর ত্রাণ কর ওহে ভগবন্।
ভূমি সাক্ষী ভগবান এই চরাচরে। কার্য্যকারণের কর্তী জানিগো তোমারে॥
এইরপে দেবগণ স্ততিবাক্য কয়। তুন্দুভির মহাশন্দ হেনকালে হয়॥
বীণাবেণু পণবাদি বাজে খন খন। কাংস্য শশ্ব কড বাজে কে করে গণন॥
খন খন পুলার্কি হয় শ্লোপরে। জয় শন্ধ উঠে কড় ছলয় শিহরে॥
কেই সব দেবগণ করিয়া শ্রবণ। উর্দ্ধানে খন খন করেন দর্শন॥ দেখিনেন ভগবান্ বিধি দিগশ্বয়। আনিছেন রণবেশে লয়ে জার্ট্রয়॥ সহত্র

আদিত্য সম কিরণ তাঁহার। বাছদতে ব্যাপি আছে জগত সংসার ।।
চিতিভ্য শোভা পায় দিব্য কলৈবরে। গজাজিন-উত্তরীয় শোভিছে শরীরে ।
মুগুমালা শোভা পায় জতি বিমোহন। পদাঘাতে ভূমি যেন হয় বিদারণ ॥
বালেন্দু-কিরণ পড়ি দিব্য গগুস্বলে। বিমোহিত হয় মন নয়নে হেরিলে ॥
নাগ-আভরণে দেহ হতেছে শোভন। নীলবর্ণ কণ্ঠ তাহে জতি বিমোহন ॥
এইরপ দিব্য শোভা করি দরশন। অন্ধা-আদি দেবগণ হরিযে মগন ॥
দেবগণে নির্ধিয়া দেব মহেশর। কহিলেন শুন শুন অমর-নিকর ॥
শক্ষর বলিয়া মোরে জানিবে অশুরে। নাহি ভয় নাহি ভয় কহিন্দু সবারে ॥
রৌজকর্মে মোরে সবে করেছ বরণ। রুদ্রাংশে এ দেহ তাই করেছি ধারণ॥
ভূর্ত্ব চরাচর করিছ দর্শন। রৌজগুণে সব পারি করিতে নিধন॥ একবাণে বিনাশিব ত্রিপুরেরে আমি। তবে কেন ভয় কর কল দেখি, শুনি ॥
তোমাদিগে স্বীয় পদ করিব অর্পণ। ভয় নাহি নাণি ভয ওহে দেবগণ॥

শিবের এতেক বাক্য করিয়া শ্রবণ। স্থাপেতি হন যেন যত দেবগণ॥ঃ কব্যোত্তে ক্রে পরে শশাক্ষ শেখরে। তুমি দেব গতিমাত্র ভব পারাবারে 🌬 দেবতাগণের বাক্য করিয়া প্রবণ। আনকে মগন হন দেব পঞ্চানন। ব্রদারে সার্থি পরে করি দর্শন। পৃথিবীরে রথরূপী দেখিয়া তখন 🕼 किंटिनन मट्टश्वंत छन (प्रवर्गा। मम প्रपाचाट्ड शृथीः ना तट्व এक्स्ना। ক্ষয় হবে বস্থমতী নাহিক সংশয়। কিরুপে বহিবে মোরে দেবভানিচয় 🕼 এত বলি পদার্পণ করে রখোপরে। পৃথী সহ রথ যায় পাতাল নগরে॥ ভাহা দেখি পদাসুষ্ঠে সেই রথ তুলি। বরিলেন মন্ত্রণত ভবের কাঞ্চারী।। তখন তাহার পরে করি আরোহণ। করতলে শরাসন করেন এহণ।। भोकी আরোপণ তাহে যেমন করিন। বাতবলে ছিন্ন হযে অমনি পড়িন। তাহা দেখি মহেশ্র সহাস্য-বদন। পাশুপত মন্ত্র মূখে করে উচ্চারণ। मख পि इ कि सार्की योजना क दिन। उत्र धन् जानि मत अनृ इहेन। তখন ব্রহ্মারে কহে দেব পঞ্চানন। ত্বরিতে চালাও তবে যতেক বাহন । শিবের এতেক বাকা শুনিয়া প্রবর্ণে। কত চেটা করে ব্রহ্মা রথের চালনে॥ किছू एउई तथ नाहि विलल उथन। जार, त्मि अर्थायूर्य तरह भागन॥ তাহা দেখি হাস্যমুখে দেব দিগম্বর। পদহত্তে স্পর্শ করে প্রন্ধাশের। পঞ্চাকর শিবমন্ত্র করি উচ্চারণ। শিরোপরি করে জপ দেব ত্রিনয়ন॥ তাহে মহাবল ধরে দেব পদ্ময়েনি। বাহন চালাতে থাকে হয়ে দণ্ডপাণি॥ धारेकर्ण द्रारंथ हाल (पन पित्रवत। पृत शट (श्रत हाश पामन-धानदा।

প্রানার জল ধি সম করিয়ে গর্জন। মহেশেরে সামোধিয়া কহিল তথন।
শোন্শোন্ ওরে মূঢ় তুই কোন্জন। গমন করিস্কোথা বলরে এখন।
কোথা হতে এলেছিস্ আমার গোচরে। ত্রৈলোক্য বিজয়ী আমি জাননা
অন্তরে ॥আমার শরণ শীদ্র করহ গ্রহণ। নৈলে পরিক্রাণ তোর নাহি কদাহন
এতেক বচন শুনি কহেন শঙ্কর। শোন্ ওরে ত্রাজান্দানব-প্রবর্গ।
তোমার নিধন হেতু আমি পঞ্চানন। আসিয়াছি এই খানে লয়ে দেবগণ।
দেবগণে শান্তিদান করিবার তরে। আসিয়াছি ওরে দৈত্য তোমার গোচরে

এতেক বচন শুনি ত্রিপুর তখন। রোগভরে কহে শুন ওছে পঞ্চানন। পরাজয় করিয়াছি দেব নারায়ণে। জিনিয়াছি ইন্দ্র চন্দ্র যম ত্তাশনে॥ কুবের বরুণ সূর্য্য আমার গোচর। হারিয়া কোথায় গেছে ওনহ শকর। হেন জন কেবা আছে ত্রন্ধাণ্ড-মাঝারে। আমারে সমরে বল বিনাশিতে পারে॥ অন্ধাপ্র ব্যাপিয়া আমি করি অবহান। স্থির হও মূঢ়মতে নাহি পরিত্রাণ ॥ দৈত্যের এতেক বাক্য করিয়া এবণ । হাস্য করি মহেশ্বর কহেন তখন ॥ বিষ্ণু নহি ইন্দু নহি অগ্নি নহি আধি ৷ কুবের বরুণ নহি নহি দিনমণি আমারে না ভাব তুমি দেব শশধর। তোমার ক্বতান্ত আমি ওহে দৈতাবর॥ ভোমারে অদ্যই আমি করিব ভক্ষণ। গ্রাস করি বিনাশিব এ তিন ভুবন॥ শিবের এতেক বাক্য শুনিয়া প্রবণে। ক্রেছ হয়ে দৈত্যবর ধরে শরাসনে। সহস্র সহস্র শর করিয়া যোজন। একেবারে শিবোপরি করে নিজেপ্।। শিবতেজে শর মব ভন্মীভূত হয়। তাহা দেখি দৈতাল্পে লাগিল বিষয়॥ ডার পর মহেশ্বরে বধিবার তরে । বজ্র অন্ত্র লয় দৈত্য আপনার করে॥ মহাবেগে বক্ত অস্ত্র করিল গমন। শঙ্কর-পদেতে গিয়া হয় নিপতন॥ ভক্তিভরে প্রণমিয়া শিবের চরণে। নিবর্ত্তিত হয় পরে ক্নতক্ষতামনে॥ ভাহা দেখি দৈত্যবর রোষেতে মগন। পুনরায় স্থদর্শন করেন এছণ। দক্ষকরে স্থদর্শন লয়ে ক্রোথভরে। উদ্যত হইল দৈত্য শিবে ব্ধিবারে॥ চোমা দেখি প্রমাতা কহেন তখন। দ্বির হও মূচ্মতে শুনহ এখন। তোমার নিকট দেখ রুতান্ত নগরী। কোঁথা রবে বল দেখি তব এই পুরী॥ এেতেক বচন শুনি কহে দৈত্যবর। বাতুল সমান কথা কহিছ শঙ্কর। চক্রাঘাতে যাবে তব অল্লই পরাণ। র্থা কেন বকিচেছ উন্মাদ স্থান। এত বলি সুদর্শন করিল কেপণ। চক্র গিয়া শিৰপদে হয় নিপতন। গৌরীপতি-পদে নতি করি ভাক্তভরে। তিরোহিত হয় চক্র সবার গোচরে। তাহা দেখি ক্রোধে দৈত্য হয় নিমগন। কোটিমুর্য্য সম শূল কদ্মিল এছণ।

মহাবেগে নিকেপিল শিবের উপরে। শিবতেকে সেই শূল ভদ হয়ে পড়ে॥ রোষভরে পঞ্চানন কহেন তখন। দেখ্দেখ্ মম শক্তি ভরে ছরাত্মন্। তোমা সহ সর্ববিশ্ব ভদীভূত হবে। তবে ত আমার শক্তি জানিতে পারিবে॥ এত বলি পিতামহে করি সম্বোধন। মধুর বচনে কছে দেব পঞ্চা-নন ॥ বেদধনি কর তুমি হরষিত মনে। বাহন চালাও শীঘ্র বিহিতবিধানে॥ শিবের আদেশ পেয়ে দেব পদাসন। পর্য আনন্দনীরে হন নিম্প্র।। সামবেদ উচ্চারণ করিয়া বদনে। চালালেন বেগগামী ষতেক বাহ**নে॥** বামকরে রজ্জু তিনি করিয়া ধারণ। দক্ষহন্তে যতি লযে করেন ঢালন॥ রথের ঘর্ষর শব্দ উঠিয়া গগদে। প্রতিনিনাদিত করে এ তিন ভুবনে॥ জ্যাশন শ্রবণ করি দানব প্রবর। মোহিত ইইয়া হয় বিশ্বিত অন্তর॥ कश्टितन छन छन क्षेकाखिकम्दन॥ তার° পর মহেশ্বর যত দেবগণে। জিপুর সহিতে উদ হবে জিজুবন। আমার নিবটে সব কর আগমন॥ আশারে মরণ কর হৃদয় মাঝারে। একবাণে ত্রিভূবন নাশিব অচিরে ॥ শিবের মু.খেতে গুনি এতেক বচন। দেবগণ শিবপাশে করে আগমন॥ শিবের শরণ লয় একান্ত অন্তরে। শিব নাম হৃদিমাবো অনুকণ করে॥ মনে মনে দেবগণ কহিল তখন। শিবময় মোরা সবে হই সর্ককণ 🛙 শঙ্কুময় মোরা সবে এ ভবসংসারে। শস্তু নামে তরি সব ভবপারাবারে॥ এইরপে দেবগণে করিয়া স্থাপন। শরাসনে শর শিব করেন যোজন॥ সপ্রশীর্ম সেই শর ভীষণ আকার। মহাতেজে ব্যাপি উঠে জগত-সংসার॥ সাকাৎ বিকুর সম সেই শর বর। প্রলয়-অমল সম জ্বলে নিরন্তর॥ প্রলয় সূর্য্যের সম মহাতেজ ধরে। পাশুপত নামে শর খ্যাত চরাচরে 1 (नई भंत निष्क्षिल (५व शकानन। দেখিতে দেখিতে শর উঠিল গগন॥ ভূলোক হইতে স্বর্গ প্র্যান্ত সকলে। সেই শার দ্ব্যাভূত জবিলম্বে করে। তার পর দৈত্যদে হ হয় নিপতন। গুহুদেশে প্রবেশিন দে শর তখন॥ ধরাপৃষ্ঠে দৈত্যবর অমনি পড়িল । भिर**ज्ञोटम्भ इ**टच भरत वाहित इहेल। অঞ্জন-পর্বত সম পড়িল ভূতলে। 'দৈত্যগণ ঘন ঘন হাহাকার করে॥ তার পর পদ্মাসন হরিবে মগন। অমৃতকুঙে: জল কবেন ক্ষেপণ॥ চারিদিকে সেই জল হয় নিপতন ৷ পূৰ্ববং সৰ্ব্ব বিশ্ব হইল সৃজন ॥ স্বর্গেতে ছুন্দু জি ধনি ঘন'ঘন হয়। নিপতিত হয় কত কুসুমনিচয়॥ শিবের অপুর্ব লীলা কে বুঝিতে পারে। বুঝিলে দে জন তরে ভবপারাবারে॥

## অন্টম অধ্যায়।

ত্রিপুরবধান্তে তদীয় বক্ষোপরি শিবের নৃত্য, দেবগণের: বাদ্যকরণ, মহামায়ার আবির্ভাব, এবং হরি কর্তৃক শিবকে রুষপ্রদান।

> বামদেব উবাচ। পতিতে ত্রিপুরে ভূমাবঞ্জনাচলসন্নিভে। ননর্ত্ত ত্রিপুরারিশ্চ গীর্ব্বাণা ননৃত্যুন্তদা॥

বামদেব কহে ওন ওহে মুনিবর। অপূর্ব্ব ঘটনা যাহা ঘটে তার প্র॥ ত্তিপুর পতিত হয় ধরণী উপরে। অঞ্জন-অচল সম কিবা শোভা থরে॥ আনক্ষে করেন নৃত্য দেব পঞ্চানন। খন ঘন নৃত্য করে যত দেবগণ।। মুদঞ্চ বাদন করে দেব পরবোনি। কাংদ্য তাল করে বাদ্য বিফু চিন্তামনি॥ মত্মা তুকু ভিত্তনি করে ঘন ঘন। বরুণ লইয়া শদ্ধ করেন বাদন॥ পটছ বাদন করে শমন রাজন। কাহল বাজায় ধনপতি ঘন ঘন॥ বীণাযন্ত্র বাদ্য করে দেব ঋষিবর। গন্ধর্বগণেরা গীত করে নিরন্তর॥ স্থখরে সংগীত করে স্থমতি প্রন। সামবেদ গান করে যত খাবিগণ।। খানিগণ স্তব করে দেব সহেশরে। অপুত বরষ যায় এহেন প্রকারে॥ এইরপে নৃত্য করে দেব ত্রিলোচন। নিজেজ হইল গ্রহ-নক্ষত্রাদি গণ॥ নিম্পন্দ সমান হয় দেবতা-নিকর। পৃথিবী চলিল যেন ক্রমে রসাতল।। তাহা দেখি দেবগণ করি সম্খোলন। বিনয় বচনে কহে জন্ধারে তখন।। দরশন কর চক্ষে ওহে পল-যোনি। রদাতলগত ক্রমে হতেছে অবনী॥ কোটি কোটি বিশ্ব করে ঘে জন ধারণ। সেই শিব রথে আছে করি আরোহণ।। আমরা ভাঁহারে আর বহিবারে নারি।, উপায় তাহার তুমি কর শীম করি॥ কোন জন শিবনৃত্য क्षित्व ख्लुन। यिषिनी दत्र मः शाशिक करत कान् क्षेत्र॥ निक्षत्र धत्री এেবে হইবে যে কয়। ইহার উপায় কর ওতে মহোদয়।। দৈবতাগণের বাক্য निवखब शार्क करत (पव श्रेषामन । दंगवर्गण मर्श मिलि করিবা ভাবণ। এकाल जल्दत । निर्दात मस्याधि खन करत जिल्लाहत । निर्दानमः मर्द्य-খর জগতের পতি। শিরোপরি হংশরপী অগতির পতি॥ স্বাহাকার স্বধা কার তুমি ব্যট্কার। তোমা হতে স্মুৎপন্ন এ তিন সংসার। বিরাদ্ধ করহ তুমি স্বার অন্তরে। সর্ক্রাফী তুমি দেব এই চরাচরে॥ স্ক্রেল্ফ পিতা তুমি নাহিক সংশয়। ন্মন্তে প্রম-ঈশ ওহে দ্রাময়॥ শ্রণ লয়েছে। তব্যত দেবগণ। রূপা করি স্বাকারে করহ রক্ষণ॥

এইরপে স্তব করে যত দেবগণ। স্তবে তুই হযে শিব কছেন তখন॥ শুন শুন দেবগণ বচন আমার। ত্রিপুর অমুর এই অতি ছুরাচার॥ সমস্ত জগত ধংস করেছে ছুর্ল্জন। হরিয়াছে বঞ্জ আর চক্র সুদর্শন। উলৈঃপ্রবা হরিয়াছে এই ছুইমতি। একার আসন হরে এই মূঢ়মতি॥ এত বলি রোষভরে দেব পঞ্চানন। ত্রিপুরের বক্ষঃভলে কবি আরোছণ ॥ পুনত নাচিতে থাকে আনন্দের ভরে। কক্ষবাদ্য গালবাদ্য ঘন ঘন করে। তাহা দেখি জন্ম আদি যত দেবগণ। ভয়েতে বিহন্দ হয়ে স্বাপে ঘন ঘন ॥ মনে মনে ভাবে সবে হইয়া বিষয়। ভাগ্যদোধে ঘটে রুবি। অকালে প্রলয়। বিষয়বদন হেরি যত দেবগণ। কহিলেন পঞানন মধুর-ভাষণে॥ বিষয়-বদনে কেন ওতে দেবগণ। আনন্দে সকলে বাদ্য করহ বাদন।। শুন শুন দেবগণ বচন আমার। নৃত্য করি হয় মম আনন্দ লঞ্চার। ঈশ-রের আজ্ঞা পেয়ে যত দেবগণ। তাঁর প্রীতি হেতু বাদ্য করে ঘন ঘন॥ তাঁছাদের বাদ্য গীত করিয়া প্রবণ। পুলকে পূরিত হয় মহেশের মন॥ "জগত-বিনাশী এই দৈত্য তুরাচার।" এত বলি বক্ষে তার উঠি দয়াধার॥ ঘন ঘন নৃত্য করে আনন্দের ভরে ৷ ব্যথিত হইয়া পৃথী কাঁপে থরে থরে ॥ বিষ্ণুর নিকটে গিয়া লভিল শরণ। কহে বিষ্ণো তব পদে করি গো বন্দন॥ জগত পাশনে তুমি সদা ততপর। রক্ষা কর মোরে তুমি ওছে গদাধর॥ পুথীর এতেক বাক্য করিয়া শ্রবণ। মহামায়া-স্তব করে দেব নারায়ণ॥ মহামায়ে নমস্ত ভাং মহাদেবপ্রিয়ে। মহাদেবে তাত কর করণা করিয়ে॥ ক্রোধানলে জ্বলিতেছে দেব পঞ্চানন। শান্ত কর স্থির কর এ তিস ভ্রন॥ नत्या नम क्रमहाजी कन्गानकातिनी। टामान आक्रांत वम निर्मित अवनी॥ এইরপে শুব কঁরে দেবদেব হরি। শুবেতে সম্ভূট হন পর্য-উত্থারী 1 আবিভূত জগমাতা গগন উপরে। দিব্যরপে দরশন দিনে স্বাবে॥ বিছ্যাতবরণী সতী মশ্বথমর্দিনী। ত্রিভুবনমোছকরী পূর্ণেন্দু-বদনী॥ পুরো-ভাগে আদি শক্তি করি দরশন। নৃত্য হতে ক্ষান্ত হন দেব পঞ্চানন॥ ত্তিপুরের বক হতে নামিয়া তথনি। দেবগণে সন্মোধিয়া কহে পদ্যোনি॥ দেবতার আদি ঘণা আমি পঞ্চানন। তেমতি আদিমা শক্তি কর দরশন॥

হের হের আদি শক্তি সম্মুধে আমার। শান্তি প্রদায়িনী মম জানিবেক সার॥ যেরপ নিত্ত ণ ত্রনা জানহ আমারে। সেরপ নিত্ত ণা ইনি জানিবে অন্তরে॥ সম্ভণ যেরপ আমি ওহে দেবগণ। তথা গুণবতী ইনি বিদিত ভুবন।। নিশু'ণা অথচ ইনি সগুণরূপিণী। আদিমা প্রকৃতি সভী ভ্রদ্ম সনাতনী॥ ইহাঁরে দেখিতে বাঞ্চা করেছ সকলে। দেখ দেখ সনাতনী কিবা শোভা ধরে আদ্যাশক্তি সহ আমি করিব রমণ। এতেক বাসনা মনে করেছি এখন॥ দেবগণে এত বলি শশাক্ষ-শেখর। বাহুপাশে মহেশীরে ধরেন সত্তর॥ দেবতা-সমীপে শিবে তথাভূত হেরি। দশ দিক উন্তাসিয়া কহেন শঙ্কণী॥ পাগন-উপরে রছি কহেন তখন। শুন শুন ভগবন্ আখার বচন॥ নমো নমঃ ভগবন তোমার চরণে। অপরাধ কম। কর রুপা বিতরণে॥ ধরা-তলে করিবারে ধর্মের সংস্থান। নির্ভণ হইয়া তুমি হয় গুণবান॥ उर পाम्श्रम आगि कतिए पर्मन। आगिशाहि धरे सारन ७८२ जिल्लाहन॥ জনম ধরিব আমি দক্ষের আগারে। আমারে করিবে বিভা ধর্ম অনুসারে॥ এত বলি সনাতনী তিরোহিতা হন। প্রণাম করেন তাঁরে যত দেবগণ।। দেবীর এতেক বাক্য শুনিয়া শ্রবণে। কহিলেন মহেশর যত দেবগণে॥ আদিশক্তি যা বলিল ওহে দেবগণ। তোমরা সকলে তাহা করিলে প্রবর্ণ॥ যাবত শঙ্করী নাহি ধরিবে জনম। হিমালযে তত দিন করিব যাপন।। তোমরা সকলে যাও নিজ নিজ পুরে। নিংশত হইয়া বাস করহ সকলে।। (খ उद्योर पान हिन जी पशुरुएन ।। জন্মপুরে পদাসন করেন গমন। এতেক বচন শুনি দেব পদ্যোনি। কহিলেন শুন শুন ও ইে শূলপাণি।। সকলের হিতকারী তুমি দিগম্বর।। নমস্কার তব পদে সর্কলোকেশর। অবতার হলে তুমি রূপার্টি করে।। আমাদের উপকার করিবার তরে। আদি মধ্য অন্ত তব জানে কোন্জন। যোগিজন জানিবারে না হয় সক্ষম॥ নিলেপ নিগুণ যিনি এ ভবসংসারে। তাঁর তত্ত্ব বল কেবা জানিবে কি করে।। পর্ম-কল্যাণকর তোমা নমস্কার। পরানন্দময় ভূমি ওতে দয়াধার॥ **उद शामशम्बद्ध (**मात्रा (न्दर्गा। इहेलाम निक्रलूप 'खटह श्रकानन।। তব শান্তরূপ হেরি এ তিন সংসার। পাইল প্রমা শান্তি ওছে গুণাধার॥ এইরপে শুব করি দেব পদাসন। নতশিরে শিবপ্রটে করেন বন্দন।। हेम आपि पिरा परिक उति हत। श्री श्री श्री रहेन अखरत।। जात शत राष्ट्रक अभिभूष्या । मरश्रमात मान करते इस मरनाते।। धर्मक्री मिहे तथ स्वर्ताज-जन्म। वाहनार्थ मक्स्टात्त एन स्टाप्स।।

ধর্ম কাভ করি পঞ্চানন। পরম আনন্দনীরে, হন নিমগন।। তার পর জ্বনা আদি দেবতা-নিক্র। ভক্তিতরে প্রণমিরা শিবপদাপর । আবারে অর্পণ করি উাহার চরণে। আনন্দে চলিযা যান নিজ নিজ স্থানে। স্ব লাভ করি জন্ট দেব পঞ্চানন। পরম সন্তুন্ট-ছদে করেন যাপন।। হিমাচনে তার পা করিলেন গতি। মনস্থে সেই স্থানে করেন বসতি।। এত বলি বামদেব সুভি শবিবরে। কহিলেন সম্বোধিয়া স্মসন্তর স্বরে । নিশুণ পরমক্রল হযে পঞ্চানন। গুণবাণ কপ্বান সেই রূপে হন।। বলিমু তোমার পাশে দে সব কাহিনা। আব কি শুনিতে বাঞ্জা কহ মহামুনি।। এই সম পর্মকথা যেই জন শুনে। শুভা গতি হয় তার লানিবে অন্তিয়ে।। গাতক তাহার দেহে কতু নাহি বন। বিসরে স্বর্গরে নাহিক সংশয়।। দেবর্গণ তারে পূজা করে সক্রকণ। স্পন্ব। গাতের ক্বে সদত সেরন।। শীশব পুবাণ কথা অতি মনোহর। শুনিলে তান হয় প্রিত্ত সম্ভর ।

## নবল ভাষা ।

ভ্ৰমা কঠ্ক দক্ষসকাশে প্ৰাৰ্থনা ক্রিয়া মতাকে গ্ৰহণ এব হিমালয়গুছাম লইয়া শিৰকরে সমর্পণ।

#### প্ঠিক্লবাচ।

গ্রেভান্ত্, তা বচন্তেইহং ক্লভক্তে তাইন্তরাজ্না।
নানজলগো মগ্রঃ শিথীব ঘননিঃস্থনং।
না কংশ বামদেবর্ষে জত্তে দক্তি পুরা।
তদ্যাশ্চ শুভমুদ্বাহং ক্লভবান ভগবান কংগ।
গ্রেভিদিছোম্যহং শ্রোভুং চরিতং শূলিনো মুনে॥

যাগদেবে তুওি ঋষি করি নলোধন। জিজ্ঞানা করেন পূন্য ওহে মহাত্মন্।
তব মুখে সুধাকথা করিরা শ্রবণ। ক্তৃত্য হলো মম জন্তর-আজন্
।
জলদ-গ্রুত্ম ঘথা পশিলে শ্রবণে। স্থারিসে ম্যুর হয় পুলকিত মনে॥
দেরপ ভাসিত্ম জামি আনন্দ-সাগরে। এখন জিজ্ঞানি মুনে তোমার গোচরে
দক্ষণ্হে কিরুপেতে জনমে পার্রিতী। কিরুপে তাঁহারে বিভা করে পশুপতি
এই স্ব শুনিবারে করি গো কামনা। বর্ণন করিয়া মম পুরাও বাসনা।

ভব মুখে সুধাকীপা করিয়া ভাবণ। তৃত্তি নাহি হয় মম ওছে মহাতান ॥ ঈশ্বর-চরিত শুনি প্রবণ-বিবরে। কোন্জন বল ভূমে কান্ত হতে পারে॥ শিব শব্দ কর্ণে আমি করিয়া প্রবণ। পরম আনন্দ-নীরে হই নিমগ্ন॥ এত শুনি বামদেব কহে থিট স্ববে। সাধু সাধু মহাভাগ ভূমি হে লংসারে॥ ধন্য ধন্য তুমি মুনে ওহে মহাত্মন্। শিবোপরে তব মতি হয়েছে ঘখন॥ শিবভক্ত নর বাস কর্যে যথায়। জনাদিন নির্ভর রহেন তথায়॥ ৩০% রহে ইন্দ্র আদি যত দেবগণ। তত্র গজা সরিদ্ধণা শাস্থের বচন।। পুজরাদি শৈক্তি থি বিরাজে সেখানে। শাসের বচন এই কহি তব স্থানে॥ শিবভক্ত সাথে যদি করে স্থাবণ। সর্বভীর্থ স্থান ফল পায় সেই জন॥ অভএব শুন তুত্তে তুমি মহোদয়। আমিও পবিত্র হৈনু নাহিক সংশয়॥ কেননা তোমার সহ মম সভাবণ। হৃহতেছে বৃতক্ষণ ওছে মহাত্ন্। ভাভময় শিবে মতি হয়েছে তোমার। শিব তুল্য তুমি তুত্তে জগত-মাঝার॥ শিবের চরিত পুনঃ করিব কীর্ত্ন। মন দিয়া ওন ওছে শিবপরাযণ॥ ত্রদাহাদি ছতে জন্মে দক-প্রজাপতি। বেদশাস্থে বিশারদ সেই মহামতি॥ ষ্ফিনংখ্য কলা তার লভয়ে জনম। পীনোমতশুনী সবে পূর্ণেন্দুবদন॥ স্বীণকটি ক্লপবতী তাহারা সকলে। সক্ষজ্যেষ্ঠ গুণবতী জানিবে অন্তরে॥ পর্ম প্রকরী তিনি নাম তার সতী। গুণবতী সতী সাগ্রী ধর্মে তার মতি॥ শিব-প্রিয়া আদি শক্তি জানিয়া তাঁহারে।পদ্রযোনি সম্বোধিযা কহেন দক্ষেরে॥ ভন দক্ষ মহাভাগ আমার বচন। অতি পুণ্যবান্তুমি ওচে মহাজুন্॥ আদ্যাশক্তি লোকমাতা তোমার আগারে। কন্সারূপে জিম্মাছে জানিবে অম্তরে ।জগতের হিত হেতু তুমি মহাজুন্। শিবকরে এই কন্সা করহ অর্প্।। শিবা দহ মহেশের হইবে মিলন। পরম তুর্ল ভ ইহা ওহে মহাতান ॥ এলার এতেক বাক্য শুনি প্রজাপতি। বিনয়-বচনে কহে ওহে মহামতি॥ ক্লতার্থ ছইনু আজি তব দরশনে। এখন নিবেদি যাহা ওনং শ্রবণে। আগেতে দেখিবে বরপাত্র যে বে মন। দেখিবে তাহার পর বিদ্যা কুল ধন॥ এই ত শাস্ত্রের বিধি ,জানিগো অন্তরে। অতঞ্ব নিবেদন তোমার গোচরে॥ মহাদেব কিবা রূপ বলহ এখন। কোন বেদে দেই জন হয় পরায়ণ॥ কিবা গোত্র কার পৌত্র কাহার তনয়। কিবা ধন আছে ঠার কহ মহোদয়॥ দাতা কিম্বা সেই জন হবে বা রূপণ। কিরূপ চরিত্র তার বলহ এখন ॥ এতেক বচন শুনি কমল-আকর। কিংলেন শুন শুন ওছে গুণধর॥ তত্ত্বিশারত তুমি জানি গো অন্তরে। সাধু কথা জিজাসিলে আমার গোচরে

শিবের রক্তান্ত সব করিব বর্ণন। একে একে সব তুমি করছ প্রবণ।। কি বলিব তব পাশে ওহে বিজ্ঞান । রূপের তুলনা নাহি জগত-ভিতর ॥ সহস্রু বদন তিনি করেন ধারণ। একবক্ত্র কভু হন কভু পঞ্চানন । সহস্র-চরণ কভু দেই জন ধরে। একপদে কভু রহে সংসার-ভিতরে॥ সহস্র মন্তক কভূ হয় দরশন। একশির কভূ দেখি ওহে মহাত্মন্। ত্রিনেত্র কখন দেখি দেই মতেশ্বর। শতচক্ষ্র হয় কভু নয়নগোঁচর॥ সহত্র নয়ন কভু দরশন করি। কখন কি ভাব ধরে রঝিবারে নারি॥ হিম কৃদ ইন্দু সম তাহার বরণ। ধূমারণ কভু কভু হয় দরশন॥ বিজ্ত ত-স্বর্ণবর্ণ কভু বা নেহারি। নীল মেঘ সম বর্ণ কখন বা হেরি॥ কিরূপ ভাষার বিদ্যা ওছে মহাত্মহা। বিদ্যাবৃত্যে তাহা কেহনা জানে কখন॥ সর্কবিদ্যাময় হয় সেই দিগদর। অবিদ্যাতন্ময় সেই জগত-ঈশ্বর। বেদেতে ভাঁহার সীমা জানিবারে। নারি। সর্কবেদময় তিনি ভবের কাণ্ডারী। ও।হার গোত্রের কিছু নাহিক নির্ণা । দদা সর্ব্রেগ্ তিনি সর্ব্রেগাত্রময়। গোতাগোত্রময় হন সেই শূলপাণি। গোত্রের অধিপ তিনি অন্তরেতে জানি॥ নির্ধন সতত বটে সেই পঞ্চানন। সব জনে ধন কিন্তু করেন অর্পণ॥ পরম স্থান তিনিং এভব সংসারে। অভিদাতা মুক্তিদাতা জানি গো অন্তরে॥ ভুর্তুবস্থ চরাচর করিয়া সংহার। দিবানিশি শশানেতে করেন বিহার॥ তাঁহার স্বভাব এই করি দরশন। জিজাসিয়াছিলে যাহা করিনু বর্ণন॥ উচিত পাত্র সেই পশুপতি। তাঁরে কল্যাদান কর ওহে প্রজাপতি।। দক্ষ কংহ মহাদেবে বরের লক্ষণ। কিছুমাত্র নাহি দেখি ওছে শলাসন। তবে কেন। ক্**তা দান** করিব তাহারে। রাজাব-লোচনা ক্তা বিদিও সংসারে॥ ক্রিয়াকাণ্ড-বহিত্ ত সেই শস্ত হয়। কিরূপে তাহারে কন্সা দিব মহোদয়॥

এতেক বচন শুনি বিধি প্রজাপতি। কহিলেন শুন ওন ওহে মহামতি। লকল ভূতের হন শক্ষর শক্ষর। সকল দেবতা হতে তিনিই প্রবন্ধ। তিপুর বিনাশ হয় পূর্বেত্তে যখন। নিশুন নহেশ হন সন্তণ তখন। অভএক কিবা বল আর গুণ চাই। তাঁহার সমান বর জন্ম কোথা নাই। অন্ধার মুখেতে শুনি এতেক বচন। দক্ষ প্রজাপাত কহে ওহে পরাসন। তুমি আর বিফু দোঁহে আমার শক্ষর। আর কারে নাহি জানি অভর-ভিতর। তোমারে তনয়া আমি করিব প্রদান। তুমি লয়ে যাহ ইচ্ছা হয় যেই খান। দক্ষের এতেক বাক্য করিয়া গেবণ। পর্মেতী পিতামহ পুলকে মগন। মতীরে আপন সক্ষেকরিয়া তথুনি। অবিল্যে চলি ম্নি ম্থা শ্লপাণি।

হিশালয় গিরিপরে করিয়া গমন। বিধানে শিবেরে করে সভী সমর্পণ।।
দেবতা গম্বর্ব সিদ্ধ সপ্তথায়ি সবে। মনের হরিবে সবে মাতিল উৎসবে॥
শিবশিবাশিরে হয় কুসুম-পতন। এরপে বিবাহ কার্য্য হয় সমাপন॥
তার পর যান এক। আপনার পুরে। দেবগণ গেল চলি নিজ নিজ হলে॥
শিবের বিবাহ কথা পড়ে যেই জন। অথবা একাত্তমনে করয়ে প্রবে।
বংশধর পুত্র তার জনমে আগারে। সন্দেহ নাহিক ইথে কহিনু সবারে॥
তাই বলে দ্বিজ কালী ওহে মূদ্মন। হদিপ্তে ভাব সদা শিবের চণ॥

## मन्य ज्याश ।

হিমালয় পরিত্যাগ করিয়। সভীসহ শিবের কৈলাসবাস, একছা গগনে ধুমশিখা দর্শনে সভার বিস্ফ ও তদিব্যে ক্ষোপ্রথন, এবং সভীর পিতৃগৃহে গমন ও স্থাঃ প্রবেশ।

#### বামদেৰ উনাচ।

প্রাপ্য দাক্ষায়ণীং দেবঃ শিখরে হিমবছরে। পুলোমকক্তরেকেক্তমা রেমে যথোটিতং।

বাদদেব কহে শুন ওচে খাদিবর। দাং বাদী নাত করি দেব দিগদের।
শাচী সহ ইন্দ্র যথা করয়ে রবন। উমা সহ শিব ক্রাড়া করেন তেমন।
গঙ্গাদেবী প্রবাহিত হতেছে বেখানে। শীতন স্থার বয় স্বয়ন্ত্র-বহনে।
ভ্রমরেরা শুনু শুনু করিয়া বেড়ায়। শিব শিবা ক্রীড়া করে তথায়॥
ধাতৃময় কন্দরেতে করেন বিহার। মরোবরে জলকেলি করে জনিবার॥
কৃচভরে অবনত সতীরে লইয়ে। বিহার করেন প্রভু আনন্দ- হলয়ে॥
এইয়পে জগংগিতা জগন্যাতা সনে। বহুকাল বাস করে পর্ববভর্তন।
একদিন আসিলেন দেব পদ্মমোনি। দেখিতে বাসনা করি প্রভু শূলপাণি॥
কেখিলেন বসি আছে দেব পঞ্চানন। বিদ্যাধ্যে মৃছু হাস্য হতেছে শোভন॥
উত্তরীয় শোভা পায় ব্যান্তর্কান্বরে। বসিয়া আছেন প্রভু আসন উপরে॥
বামপার্শ্বে আছে বসি দেবী সনাতনী। কর্মলাচনা সতী ভ্রমাসনাতনী॥
চামর আপন হাতে করিয়া এছণ। জগন্তুক মহেশেরে কারছে বীজন॥
ভুগাভূত দোহাকারে করি দরশন্ । প্রমেন্ঠা পিতাম্থ করেন বন্দন॥

সঙ্গেতে আছিল যত দেবতানিকর! অন্তাঙ্গে প্রণাম করে ধরণী উপর॥ কর্যোত করি পরে দেব পদ্যাসন। শিবশিবা দোঁছাপদে করে নিবেদন। নমস্তভাং ভগবতে পরম-ঈশ্রি। এনর ছুজনে হও মোদের উপরি॥ আমি ব্রন্ধা এই হরি এই দেবগণ। তোমার চরণক্রপা যাতি অমুক্ষণ॥ टामांत धनारेष भाता तव यथाचारन। नियाम बाहरस हेश निरविष हतरन ॥ বত্দিন ছিনু মোরা মাতৃহীন হয়ে। এখন লভেছি মাতা সতীরে পাইয়ে 🛭 তোমাদের হুই জনে করিতে দর্শন। আদিয়াছি দেবগণ ওহে ভগবন্॥ যুরে যুরে পরিরক্ষা করছ সবারে। সর্কাকার্য্যে লই মোরা শরণ ভোমারে॥ আমাদের হিত হেতু হইয়ে নিগুণ। রূপা করি হলে প্রভু তুমি গো সগুণু॥ জগতের নাথ তুমি ওছে মছোদয়। তব অংশে জলিয়াছি যত দেবচয়॥ অনু গ্রহ যেন থাকে স্বার উপরে। এই ভিন্গ করি প্রভু তোমার গোচরে॥ এতেক বচন শুনি শশাক্ষ-শেখর। কহিলেন এন শুন অমর-নিকর॥ অনুগ্রহ রবে মন স্বার উপরে। যেরপ ত্রিপুর হতে রক্ষেছি স্বারে॥ এত শুনি কহে এখা ওহে ভগবন্। পামাদেরো বাঞ্চা এই করি নিবেদন। যুগে যুগে রেখে। দবে ভোষার চরণে। এখন আদেশ দেহ যাই নিজস্থানে। দেবগণ নিজ্জানে ককুন গমন। আমি হরি দোঁহে যাই আপন ভবন॥ এরপে প্রার্থনা করি বন্দিয়। চরণে। বিদায় লইয়া সবে যায় নিজ স্থানে। সভ্যলোকে পিভামহ করেন গমন। বৈকুঠ নগরে যান দেব নারায়ণ # অন্য অন্য দেবতারা নিজ স্থানে যায়। শিবশিবা পূর্ববং রহেন তথায় ॥

ব্রহ্মা আদি দেবগণ করিলে গমন। সভীরে সক্রাধি প্রভু কহেন ত**খন**॥ তোমারে লইয়া প্রিযে যাব অক্সভানে। যাবত দেবতাগণ জেনেছে এখানে॥ তথাস্ত বলিয়া দেবী করেন সীকার। উভয়ে গেলেন পরে কৈলাদ-আগার॥ নানাধাতুময় হয় কৈলাসশিখর। ষড় ঋতু িরাজিত তথা নিরন্তর 🛭 মুমুকু ষে জন ইয় এ ভ্ৰসংসারে। তাহারাই যেতে পারে কৈলাসশিখরে॥ কপ্পতরু চারিদিকে হয় শোভমান। প্রভা শোভে যেন কোটিচক্রের সমান॥ भागत्यारण (परथ इंड्रा यज रयाणी हुत्र ॥ শিবের প্রম প্রিয় এই স্থান হয়। ীরন্তর সেই ভানে করে বিচরণ 🛊 व्यापिमा जननी मह (प्रव श्रकानन। হেন স্থান নাহি আর জগত-ভিতরে॥ শিবের রুষভ তথ। অগনন্দে বিচরে। छन छन जुि शास अपूर्व घटेन। এইরপে কিছুকাল ,করিলে যাপন॥ यञ्जधूम दश উহা জানিবেক মনে॥ এক দিন ধুমশিখা উঠিল গগনে। পূথিৰীতে'কোন যুজ্ঞ হতেছে সাধন। তার ধূমরাশি উঠি স্পর্শিছে গগন॥ আশ্বর্ধা দেখি জগত-জননী। চিদানন্দময় শিবে কংখন তখনি।
ভান ভান জগনাথ আমার বচন। ধূমরাশি উঠিতেছে কর দরশন।
পাণ্ডবর্ণ ধূমশিখা উঠিয়া গগনে। জলদ করিছে ভেদ দেখ এন্মে ক্রেমে।
বিদি তব স্বেহ থাকে আমার উপর। এ ধূম কিসের হয় বলহ শঙ্কর।
জগদ্ভক বিশ্বনাথ করিয়া প্রবণ। সহাস্যবদনে কহে গড়ীর-বচন। ভান
ভান ওগো সতি বচন আমার। তব পিতা প্রজাপতি গুণের আধার।। যজ্জঅনুষ্ঠান করে দেবগণ সনে। সেই ধূমশিখা উঠি স্পর্ণিছে গগনে।।

এত শুনি সতী দেবী ধীরে ধীরে কয়। সর্বাদেবেশ্বর তুমি প্রাফে মহোদয় তবে কেন তব নাহি হয় নিমন্ত্রণ। পিতা মম মূর্থ অতি করি দরশন॥ এত শুনি শিব কহে শুন প্রিয়তমে। যে সব দেবতা গেছে যজ্ঞ-আয়তনে।। তাহারা করিবে তথা যজ্ঞাংশ ভোজন। তাহাতেই মম প্রীতি হবে সম্পাদন॥ সেই সব দেবরূপী জানিবে আমারে। নিও ণ পুরুষ আমি সত্য হে সংসারে॥ দেই সব দেবগণ গুণবানু হন। তাদের উদ্দেশে যজ্ঞ হতেছে সাধন॥ শিবের এতেক বাক্য শুনিয়া তখনি। বিন্য-বচনে কছে জগত-জননী। জগতের পতি ভূমি ওহে পঞ্চানন। আজ্ঞা কর পিতৃগৃহে করিব গমন॥ মাতৃ-পিতৃপদ আমি দর্শন করিব। সেই সব দেবগণে নযনে হেরিব॥ মজ্জেতে পিতার শ্রদ্ধা দেখি অতিশয। অতএব আজ্ঞা কর যাই মহোদয়॥ এত শুনি মিটভাবে কহে পঞ্চানন। যাহ পিয়ে পিত্যজ্ঞে করহ গমন॥ পিতৃমাতৃ-পদ আর দেবগণে হেরি। অবিলয়ে এসো প্রিয়ে কৈলাদেতে ফিরি॥ আদেশ পাইয়া সতী করিল গমন। স্বিল্যে পিতৃগৃহে উপনী ১ হন॥ **ভাঁহাবে হে**রিয়া ত্রন্ধা বন্দে নতশিরে। ইন্দ্রোপেব্রু বরুণাদি নমে ভব্তিভরে কিন্তু দক ভাঁরে দেখি না কহে বচন। কিছুই আদর নাহি করিল তখন।। বরঞ্জ ক্রোধের ভরে যত দেবগণে। সম্বোধিয়া কছে দক্ষ লোহিতনয়নে॥ অশুদ্ধ হইল মম যজ্ঞ-আয়তন। যে হেতু শিবের প্রিয়া করে আগমন॥ পুর মাংস অ স্থিয় শাশানে শাশানে। সতত বেড়ায় যেই নিজপতি সনে॥ আমার যজ্ঞেতে মেই আদে কি কারণ। অতীব অভন্ধ হলো যজ্ঞ-আয়তন॥ এত শুনি দক্ষে কহে দেব পদ্রযোনি।এ কি কথা কহ দক্ষ পাপিষ্ঠ যে তুম। শিবপ্রিয়া কেবা হয় জাননা ইহাঁরে। আত্যা শক্তি এই দেবী জগত সংসারে॥ ইহাঁ হতে জগত্র হয় উৎপাদন। তবে হেন ক্থা কছ কেন অকারণ,॥ শঙ্কর যে কেবা হন কিরুপে জানিবে। তাঁর তত্ত্ব ভবধামে বল কে বুঝিবে॥ অন্ধনিষ্ঠ হয়ে আমি জানিবারে নারি: ভাগ্যবশে লভিয়াছ কলা মঁহেমরী 🕸 শ্বীহারে করিলে তুট মোরা দেবগণ। মহাপ্রীতি লাভ করি ওহে মহাত্মন্॥ ত্তিনয়ন শোভা পায় যাহার কগালে। হবি দান কর দক্ষ সেই মহেশ্বরে॥ দধীচি দক্ষেরে কছে শুন মহামতি। অন্ধার বচন রক্ষা করছ দংপ্রতি। ধর্মবৃদ্ধি হবে তব জানিবে অন্তরে। আমার বচন ধর হৃদয-মাঝারে। এতেক বচন শুনি কহে দক্ষরায়। শুন শুন নিবেদন করি স্বাকার॥ শ্মশানে শ্মশানে যেই করে বিচরণ। হবিদান তারে নাহি করিব কখন 🛚 বিঞ্র উদ্দেশে দান যাহা কিছু হয়। অনন্ত তাহার ফল ওতে মহোদয়॥ দ্বীচি এতেক শুনি কহিল তখন। শিব হতে শ্রেষ্ঠ দেব না হেরি কথন। অতএব হবিভাগ অর্পহ তাহারে। বুদ্ধে বিচক্ষণ তুমি ভাবহ অন্তরে॥ দক কহে শুন শুন আমার বচন। রক্ষক আছেন যজ্ঞে স্থাৎ নারার্থি॥ তখন যজের হবি না দিব ফুদ্রেরে। কি ভয় তাহাকে বল আছুয়ে সং সারে। মম আজ্ঞাবহ আছে যত দেবগা। ইহাদিগে যজ্ঞ হযি করিব অর্পণ। যল্প কুপিত হয় সেই মহেশ্র। তাহে কিবা আছে ভয় দেবতা-নিকর॥ এতেক বদন শুন দ্ধীচি তখন। কহিলেন ওন গুন ওহে মহাতান ॥ কিবা ব্ৰহ্মা কিবা বিহু কিবা দেবগণ। যেই কেহ এই যভে থাক্ দৰ্ককণ।। যল্পি কুপিত হন দেব পশুপতি। যজ্ঞজ হবে তব ওহে মহামতি॥ ভাহা হতে সৃষ্টি হয় এ তিন ভুবন। তাহা হতে সদা রক্ষা হতেছে সাধন॥ তাহা হতে পুনঃ হয় সবার সংহার। এই হেতু রুদ্রে নাম ধরে গুণাধার॥ দ্ধীচির এই বাক্য করিয়া শ্রবণ। দক্ষ কহে শুন শুন ওহে মহাত্মন্।। শিবের মাহাত্ম্য যত দেবগণ জানে। লজ্জাহীন সদা ভ্রমে শ্মশানে শ্মশানে॥ উলঙ্গ হইয়া সদা করে বিচরণ। কুর্চারত্র তার সম 'পাছে কোন্জন। অতএব মম বাক্য শুনহ দকলে। তার গুণ গান ফেন কেহ নাহি করে।। তার গুণ কেছ নাছি করিও কীর্ত্তন। আমার বচন সবে করহ রক্ষণ।। এত শুনি দক্ষে কহে দধীচি সুমতি। শুন শুন মন বাক্য ওহে মহামতি॥ তাঁহারে হাদয়মাঝে করিলে সর্ব। অথিন যাতনারাশি হয় বিযোচন॥ মুক্তিলাভ হয় তার নাহিক সংশয়। হলয়ে ভানিয়া দেখ ওছে মহোদয়॥ তাঁর নিন্দাবাদ করে যেই অভাজন। স্থ মুক্তি তার নাহি হয় কদাচন॥ আমার বচন যদি না. কর পালন। যজ্ঞ ভঙ্গ হবে তব ওহে মহাত্মন।। রুদ্রের উপরে দ্বেয করেছ যখন। মঙ্গল তোমার নাহি হবে কদাচন।। এরপে দ্বীচি করে প্রবোধ প্রদান। বুঝালেন নানামতে জন্ম মতিমান্।। কিন্তু সে পাপিষ্ঠ দক্ষ না বুঝি অন্তরে। শিশনিন্দা নিজমুখে নালামতে করে পতিনিদা নিজ কর্ণে করিয়া প্রবন্ধ মনে মনে সতীদেবী মহারুট হন।।
দেবগণ-সমক্ষেতে অতি রোমভরে। প্রবেশ করেন সতী মন্ত্রীয় অনলে।।
আদিমা প্রকৃতি সতী মহাজ্যোভিম য়ী। বহ্নিজ্যোতি সঙ্গে মিলি চিলানকময়ী।। দেখিতে দেখিতে দেবী হন অদর্শন। দেখালেন পতিভক্তি স্বার্ম লালন।। শিবশিবালীলা বুঝে হেন কোন্জন। তাই বলি দোঁহাপদে
মঙ্গ ওবে মন।।

### এক দশ ভাধ্যায়।

দক্ষজ্ঞধ্যসপ্রসক্ষে বীরভদ্রেব জন্ম, শিবকর্তৃক তাহাকে অভেদ্যনামক কবচ, সক্ষর তুণ, পদ্ধজ্ঞমালা ও বজু নামক পরশু প্রদান।

বামদেব উবাচ।

তস্যাদশ্রে প্রবিষ্টায়াং দক্ষবোনাত্তথা মুনে। বিষয়াবিষ্টমনসো বভূবস্ত্রিদিবৌকসঃ॥ তাং দক্ষন্ত তথাভূতাং দৃষ্ট্। বিহলেমানসঃ। যজ্ঞস্য প্রবয়ং নিত্যং মেনে স্থনিকটিস্থিতং।।

বামদেব কহে শুন ওহে মহামতি। এরপে অগ্নিতে পশে আদিমা প্রকৃতি । দক্ষপ্রতি রোদ করি দেবী দনাওনী। পশিলেন অগ্নি মাঝে ওহে মহামুনি॥ তাহা দেখি দেবগণ বিদ্ধরে মগন। বিহুবল ইইয়া দক্ষ করয়ে চিন্তন ॥ যজে বুঝি বিত্ব হয় বুঝিবারে নারি। প্রশ্নির ঘটে বা বুঝি কি উপায় করি॥ এদিকে কৈলাদপুরে শশাক্ষণেধর। জানিলেন জ্ঞানচক্ষে দব দিগম্বর রোম উপজিল আদি ভাঁহার অন্তরে। ধরিলেন রুদ্রে ভাঁষণ আকারে॥ প্রলয়ে যেরপ রূপ করেন ধারণ। ধরিলেন রুদ্রে ভাঁষণ আকারে॥ প্রদরে বেরপ রূপ করেন ধারণ। ধরিলেন দেইরপ দেব পঞ্চানন॥ যেনন উপজে রোষ অন্তরে তাঁহার। অননি বদন ভাঁয় হয় রক্তাকার॥ ললাট হইতে ঘর্ম পড়ে ধরাতলে। ঘর্ম হতে এক বার জান্মে ত্রা করে॥ মহাবীর জন্ম এক করি সন্থোধন। মহেশেরে কহে শুন ওহে পঞ্চানন॥ কি করিতে হবে মোরে দেহ অনুমতি।ভোমার আনুদ্র রক্ষা করিব সংপ্রতি

এতেক বচন তাব করিয়া প্রবণ। গদাদ বচনে শতু কহেন তখন। মম ক্রোধ হতে জন্ম হযেছে তোমার। বীরভদ্র নাম ভব হইল প্রচার ॥ শীব্র করি যাহ তুনি । কের আগারে। দক্ষয় প্রংস কর কহিনু ভোষারে। এত বলি ভগাবন দেব পঞ্চানন। অভেদ্য কবচ তারে করেন অপ্।। অক্ষ তুণ প্রদান করিল তাহারে। অপিলেন প্রমালা হরিষ অন্তরে। বজাধ্য পরও আরো করেন প্রদান। প্রশুর সাভা শভস্থারে স্থান॥ শিবের আদেশ শিরে করিয়া পারণ। অবিবাদে বারভদ করিল গ্রম। এমথগণেরে মঙ্গে ১ইয়া হরিদে। চলিলেন ত্রোধভরে যজের উদ্দেশে॥ প্রমথগণের রূপ কি করি বর্ণন। গ্রুমুখ কেছ কেছ কেছ অখানন u बार्ड्यात गमान प्रथ (कान जन धरत। वाक्यूथ (कान जन हरल दर्श्वति। সপ্মুখ কেছ কেছ নৰ্লবদন। শতমুখ কেছ কেছ সংশ্ৰদন। এক মুখ ছুই ুখ কাহার কাহার। হিন্নত কেহ কেহ হয আওমাব। একপদ কেই কেহ করিছে গ্রন। জটাতট কেহ শিরে কর্যে প্রণ।। চিতিভদ্ম কারো কারো শোভিছে শ: তে । এইকপে শিবদৈশ জতগতি করে॥ বীরভদ্র মহাবেগে কর্যে গ্রন। পদভতে ধরা দেবা কাঁপে ঘন ঘন॥ খেচর ঘাহারা ছিল গগন উপবে। ভয় পেয়ে ক্রতগতি পলায়ন করে॥

মহাতেজ বারভদ্র শূল লযে করে। উপনীত এমে আদি যজের আগারে। 
ভারদেশে ক্রতগতি করি আগমন। বি গুরে স্থোধি কহে উন মহাত্মন্।। 
পথ ছাড় আমি যাব যজ আয়তনে। শিবদেয়া নাহি হও কহি তব হানে।। 
দক্ষয়ত্র ধ্ব সহত্ব দেব পঞ্চানন। আমাকে যজের স্থানে করেছে প্রেরণ। 
তুমিও শিবের ভক্ত ওহে নারারণ। আমিও শিবের ভক্ত বিদিত ভুবন ॥ 
তুমিও শিবের ভক্ত ওহে নারারণ। আমিও শিবের ভক্ত বিদিত ভুবন ॥ 
বিরোধ তোমার সহ উচিত না হয়। এত শুনি বিফ কহে শুন মহোদয়।। 
দত্য বটে যাহা তুমি কহিলে বচন। পরা গতি হন মম দেব পঞ্চানন।। 
তরু যাহা বলি ত'হা শুনহ শ্রবণে। শুনি ভাছা বিবেচনা কর নিজমনে।। 
প্রতিজ্ঞা করেছি পুনের দক্ষের গোচবে। রাখিব ব্যাঘাত হতে তদীয় 
যজেরে।। অরথা ভাহার নাহি করিব এখন। মনে মনে বুঝ ইহা ওহে মহাতান্। বিবেচনা এই সব করিয়া অন্তরে। সমুচিত যাহা হয় করহ বিচারে॥ 
এতেক ব্চন শুনি ব্রারভক্ত কয়। শুন শুন নারায়ণ তুমি মহোদয়॥ 
অগতির গতি সেই দেব পঞ্চানন। তোমারে পূর্কেতে দিয়াছেন স্মুদর্শন ॥ 
ভাহার ক্রপায় ভব হয়েছে উন্নতি। এখন প্রতিজ্ঞা নাহি লজিবের স্থাত।। 
তোমার প্রতিজ্ঞা আজি করিব ভঞ্জন। সব দেবগণে আজি করির নিধন ॥

খাঁহার ক্রকেপে হয় ভ্রন্ধাণ্ড প্রলয়। তাঁর আজ্ঞাবহ আমি জানিবে নিশ্চয়। অতএব মম বাক্য করহ প্রবণ। আমার সম্মুখ হতে করহ গমন॥ কেন বল প্রবেশিবে ক্লডান্ত-বদনে। মন্দভাগ্য অতি তুমি জানিলাম মনে॥ এতেক বচন শুনি নারায়ণ কয়। সত্য ভঙ্গ কি প্রকারে করি মহোদয়॥ আমার সহিতে যুদ্ধ করি বীরবর। দক্ষ যত্ত বিনাশন কর তার পর॥ ষীরভদ্র হাসি হাসি কহিল বচন। কালগতি বুঝিবারে নারে যোগীজন॥ সমর করিতে বিফো হবে তব সনে। হেন কথা কভু নাহি শুনেছি প্রবণে॥ কালেতে এমন কথা শুনিতে হইল। কালের বিচিত্র গতি কে বুঝিবে বল।। এতেক বচন শুনি কছে নারায়ণ। সভ্যবটে যা বলিলে ওতে মহাজুনু ॥ তোমাতে আমাতে কভু নহেত সমান। খলোতে ভাঙ্গরে সম হয় কোন স্থান ॥ এত শুনি বীরভক্র করে রোযভরে। কোন্ মুখে বল তুমি খাদ্যাত আমারে॥ ভাল ভাল বীর্যা তব করহ প্রকাশ। দক্ষ হক্ত আশু আমি করিব বিনাশ। তোমার উপরে অস্ত্র করিব কেপণ। নিজ দেহ রক্ষা কর ওহে মারায়ণ॥ ইন্দ্রাদি সকল দেবে করিব সংহার। দেখি দেখি কভ বল ধর खुनाशात । এত বলি বীরভাক অতি রোষভারে। প্রমথগণেরে ডাকি কছে উচ্চম্বরে॥ দক্ষয়জ্ঞ অবিলয়ে করহ নিধন। শুনিয়া প্রমথগণ আনন্দে মগন॥ ইতস্তত প্রধাবিত হয়ে ক্রোধভরে। দক্ষ্যজ্ঞ ধ্রংস সবে আনন্দেতে করে॥ তাহা দেখি ক্রেদ্ধ হয়ে দেব নারায়ণ। বীরভক্ত সহ ধুদ্ধ করেন তখন॥ রথে রথে গজে গজে মহাযুদ্ধ হয়। অথে অথে কত হর কে করে নির্ণয়॥ পদাতি পদাতি সহ মহাযুদ্ধ করে। বীরভদ্দ শত বাণ বিফুবকে মারে॥ रम वांग (इलन कांत्र (पव नांतांग्रण। नग्न वांरण वीत अर्फ विरम्भन ज्यान। কর্ত্তন করিয়া তাহা শিবের কিঙ্কর। গোবিন্দ উপরে মারে সহত্রেক শর॥ দে বাণ ছেদন করি দেব নারায়ণ। দিব্য স্থদর্শন পরে করেন ক্পেণ্॥ কিন্তু কি আশ্চর্য্য দেখ অদ্ভুত ব্যাপার। চক্র গিয়া বীরগলে হয় কণ্ঠহার॥ মাল্য সম গলদেশে কিবা শোভা পায়।তাহা দেখি নারায়ণ ভয়েতে পলায়॥ নারায়ণে পলায়ন করিতে দেখিয়ে। 'দেবগণ পলায়ন' করিল সভয়ে॥ বিহ্বল হইয়া দক্ষ করয়ে চিন্তন। অবাক্ হইয়া রহে যত মুনিগণ॥ প্রমধেরা মুনিগণে কতমতে মারে। হাহাকার করি মবে কাঁদে উচ্চৈঃখরে॥ তাহা দেখি কশ্যপাদি মহাত্মানিকর। বীরভদ্রে করে স্তব হয়ে একান্তর॥ নানারপে স্তব করে মত মহাত্মন্। তরু নাহি বীরভদ্র শান্তিভিত হন। ্তখন সকৰ দেব কহেন দক্ষেরে। বীরভদ্রে কর পূজা একান্ড অন্তরে॥

এইরেপে দেবগণ কছেন বচন। এদিকে হেরছ ঘটে আঁশ্চর্য্য ঘটন। মহারোমে বীরভদ্র পাণির প্রহারে। দকের মন্তক ছেদি, ফেলিল ভূতলে h দক্ষের মন্তক বীর করিয়া ছেদন। লক্ষ ঝম্প দিয়া নৃত্য করে ঘন খন।। ভাহা দেখি মনোছঃখে দেবতানিকর। দক্ষের লাগিয়ে শোক করিল বিস্তর ইতন্তত সবে ভয়ে করে প্রায়ন। পশু প্রা রূপ ধরে যত দেবগণ॥ মুগরূপধারী হয় দেব প্রাদ্র । bifa বেদ হলো তার চারিটা চরণ ॥ মন্তক হইল তার জানিবে ওঙ্কার। এইরূপে প্লায়ন করে গুণাধার॥ মুগরূপ ধরি ভাঁরে পলাতে দেখিয়ে। ত্রিপুরারি নিজে আদে কুপিত হইয়ে. বিধির বিনাশ হেতু দেব পঞানন। বামহাতে সেই মুগ করেন ধারণ্ডু ভাহ। দেখি স্বিনয়ে দেব প্রাস্ন। মহেশের পাদপুরে করিল বন্দ্র। তখন শঙ্কর কহে শুন প্রজাপতি। উঠ উঠ গারোখান কর শীঘুগতি॥ অভিলাব কিবা তব বলহ অন্তরে। যা জানিবে চাহিত্ব তা দিবহে তোমারে ত্রদা কহে 😘ন প্রভু ওহে ত্রিনয়ন। জীবিত হউক্ পুনঃ দক্ষ মহাত্ম। যে যে দেবতা যুদ্ধে হয়েছে নিখন। পুনশ্চ ভাহারা ছোক্ জীবিত এখন॥ এতেক বচন শুনি কংখন শহর। শুন খন মম বাকা ওংই পদাকর।। এই যতে যেই পশু সংঘছে ছেদন। ভাষার মন্তক শীঘ করি আনখন। ভাছার মন্তক স্থানি দক্ষের ক্ষমেতে। যোজনা করহ শীঘ্র কহিনু দাক্ষাতে॥ তাহা হলে পানঃ দল লভিবে নীবন। আর যাহা বলি তাহ। করহ এবণ। ক্মপ্তলু জল দেই মূত দেবগণে। পুনশ্চ উঠিবে সবে কহি তব স্থানে 🕨 অপরাধ ক্লিছে দক্ষহাত্ন॥ অধিক বিশ্ব কিবা ওহে প্রামন। ভাহার উচিত শাত্তি এইত বিহিত। অধিক বলিব বিবা যাও হে ত্রিত। শিবের এঙেক বাক্য করিয়া শ্রবণ। পশুমুও ককশিরে দেন পদাসন 🌬 मकान উঠিয়া उत्म आनिम उ-भत्न॥ কমওলুজল দেন যত দেবগণে। মহেশেরে করে স্তব করিয়া প্রণতি। করযোড় করি পরে দক্ষ মহামতি। স্কভূতপতি ভূমি দেব ত্রি·য়ন॥ সকলের আত্মা তুমি ওহে ভগবন্। না বুবে করেছি কাজ ক্ষমহ আমারে।। সন্তণ নিশুণ তুমি জগত-সংসারে। বহার উটিত শান্তি দিয়াছ আমায়। নিমন্ত্রণ নাহি করিয়াছিত্র তোমায়। यथाविधि यङ कार्या करत मगानन॥ এইরূপে শুব করি দক্ষ মহাত্মন্। শিবের পরম তুটি করেন বিধান॥ ष র্পত্র সহ হবি শিবে করে দান। কহিলেন মিউস্থরে দেব পঞ্চানন॥ जूषे रुष्य वीत्रভट्य क्षि मरश्रांशन। গ্ৰ-অধিপতি তুমি হলে "মতিমান্। मुकल कुराजंत पूरि श्रेल ध्रान।

এত বলি কৈলাসেতে করেন গমন। সত্য লোকে যান চলি দেব পদাসন ।
দেবগণ সবে যায় নিজ নিজ স্থানে। সকলে করিল স্থিতি আনন্দিত মনে।
বলিমু সকল কথা তৃতি ঋষিবর। পুরাণে ধর্মের কথা অতি মনোহর।
ভক্তিভরে যেই জন করয়ে প্রবণ। পাতক তাহার দেহে না থাকে কখন।

## দ্বনশ তাধাায়।

ষীয় কন্সা সন্ধ্যার প্রতি জন্ধার কামভাব, জন্ম ও সন্ধ্যার মুগরপধারণ, শিবকর্তৃক মুগরপী জন্মার শিরশ্ছেদ।

বামদেব উবাচ।

ততস্ত্র শেবপ্রতিয় শিবস্থ চরিতং শৃণু। দক্ষমজান্তরে শদ্ভূর্যথা চক্রে কুতৃহলং॥

বামদেব সম্বোধিয়া তুণ্ডিরে তখন। কহিলেন শুন শুন ওহে তপোধনঃ শিবের সন্তুষ্টি হেতু চরিত তাঁহার। বর্ণন করিব শামি সমকে তোমার॥ দক্ষত এইরপে হলে সমাপন। যেরপ অন্ত কার্য্য করে পঞ্চানন॥ সে সব বলিব আমি তোমার গোচরে। পবিত্র ছইবে হৃদি প্রবণ করিলে।। বীরভদ্রে আখাসিয়া দেব ত্রিলোচন। কৈলাসেতে মনস্থা করেন গমন। বহুকাল এইরপে সমতীত হয়। শুন শুন তার পার ওছে মহোদায়। এক দিন নিজগৃতে পশি পলাসন। তন্যা সন্ত্যারে চক্ষে করেন দর্শন।। (शीतांकी नीत्नकीवत मर्भाम नयुना। विखमम ७ छ छोत महानश्यमा। ক্ষীণকটি পৃথুস্তনী সেই রূপবভী। ক্যুগ্রীবা স্থলক্ষণা কিবা দেহজ্যোতি॥ কটাকে বিমুদ্ধ করে এতিন ভ্রন। এইরূপে নিজকতা দেখে পদাসন।। তাহার পরম রপ দেখি প্রজাপতি। কামবশে জর জর হইলেন অতি।। रिश्वा धित्रवादत नाहि हत्तन मक्ता। कामवात्व क्रिन जात हत्ता विमात्ते।।। পিতারে কামার্ড দেখি সন্ধ্যা রূপবতী। লজ্জাবশে নতশিরা হইলেন অতি।। অধোমুখে অন্তর্গ হে করেন গমন। পাছু পাছু দেই স্থানে যান পদাসন।। বিনয় করিয়া জন্ধা কহেন তখন। শুন শুন জন্মাতঃ আমার বচন।। তোমার কটাক্ষ আমি হেরিয়া নয়নে ।ধৈর্য্য নাঙ্গি ধরিবারে পারিতেছি মনে ফদয় কানেতে মম হয় জর জর। কি করি উপায় নাহি জগত-ভিতর॥ রতিতে নিপুণা তুমি ওবে রপবতী। আমার উপরে রুপা কর শীজগতি॥ ভোষার কটাক্ষে যোহে এ তিন ভূবন। মদন-অত্ত্রেতে মােরে রক্ষ এখন।।
তােষার সহিতে ক্রীড়া যদি আমি করি। লভিব পরম তুক্তি শুন গাে সুক্ষরী॥
তােষার কটাক্ষরপ কুঠার আঘাতে। ধৈর্য্যতরু ছিন্ন মম হারেছ সাক্ষাতে।।
পতিত হয়েছি আমি মদন-সাগরে। রক্ষা কর ও সুন্দরী অধীন আমারে।।
অঞ্চলান কর মােরে শুন গাে সুন্দরি। বিরহজ্বালায় আমি নিরন্তর জ্বলি॥
যদি মােরে তুমি নাহি কর অঙ্কদান। তা হােলে ত্যজিব আমি এ ছার পরাাণ॥

এতেক বচন শুনি সন্ধা দতী কয়। শুন শুন ধর্মনিষ্ঠ তুমি মহোদয়॥ ধরাতলে ধর্মদেবে করিতে স্থাপন। তোমারে কেশব দেব করেছে স্থাপন॥ তোমার ছহিতা আমি শুন ওহে তাত। স্বধর্ম করহ রক্ষা যেমন বিহ্নিত।। ধর্মের উপর হিংসা না কর কখন। জগতের নাথ ভূমি ওহে পদ্মাসন॥ ভুমি যদি পাপ কর এ হেন প্রকারে। তবে কেবা ধর্ম রক্ষা করিরে ভূতলে॥ অত এব ধর্ম রক্ষা কর পদাসন। পাপের উপর হিংসা কর সর্বক্ষণ॥ তুমি যদি পাপ কর এ হেন প্রকারে। জগত হইবে নাশ জানিবে অন্তরে॥ হাদিপলে থৈয়া দেবে করিয়া হাপন। নিজ স্থানে ওছে পিত করহ গমন। স্বধর্ম করহ রক্ষা একান্ত অন্তরে। নতুবা মজিবে পাপে কহিনু তোমারে॥ এতেক বচন শুনি দেব পদাসন। কহিলেন শুন সন্ধ্যে আখার বচন॥ সব ধর্ম জানি আমি শুন গো সুন্দরী। আমা হতে জন্মে ধর্ম অধনী-ভিতরি॥ কিন্তু বৈর্য্য ধরিবারে না হই সক্ষম ৷ তোমার কটাক্ষে মম মজিরাছে মন ॥ বিষময় শেল মম বিষ্ণেছে শ্বীরে। আলিক্ষন কর দান কুপাদৃটি করে॥ নত্বা পূৰ্বেত হতে হব নিপতন। অথবা অনংল পশি ত্যজিব জীবন॥ এতেক বচন শুনি সন্ধা সতা কয়। শুন শুন ওহে পিত তুমি মহোদয়॥ স্বীয় কন্যা সহ রতি করিয়া সুখেতে। যে জন বাসনা করে জাবিত থাকিতো। মরণ মঙ্গল তার ওছে পদাসন। তাহার জীবনে বল কিবা প্রয়োজন ॥ আমার নিকট হতে করহ প্রাণ। নাহি কর নাহি কর পাপ অনুষ্ঠান। পিতারে এতেক বলি সন্ধ্যা রূপ্রতা। বদনে বসন দেন লজ্জাবশৈ অতি॥ এ দিকে বিমুগ্ধ হয়ে দেব পদাসন। পীনোরত কুচ্চয় করেন ধারণ।। পিতার এরপ কাজ দেখিয়া সুন্দরী। সবলে ছাড়ায় হাত অতি ক্রত করি। মুগীরপ অৰিলত্বে করিয়া ধারণ। তথা হতে ক্তপদে করেন গমন॥ তাহা দেখি মুগরুপ ধরে প্রক্লাপতি। পশ্চাতে পশ্চাতে চলে অতি ক্রতগতি॥ মনেতে সঙ্কপে তাঁর যে ব্লুপে পারিব। সদ্যার সহিতে রতি অবশ্য করিব॥ পিডার मःकण्य जानि मक्ता क्रथवणी। वर्गशूद्र हिन यान वि क्रिक्षिण वाहि ভাবি করি মুখে করেন গ্রম। ইন্দ্রের নিকটে গিয়া লভেন শরণ॥ মুগীরূপ দেখি ইন্দ্র ধ্যানযোগবলে। জানিলেন সব কথা আপন অন্তরে॥ তখন ব্রহ্মারে কহে দেব শচীপতি। শুন শুন পদাসন তুমি মহামতি॥ পুরশ্রেষ্ঠ জগদ্ভরু তুমি হে সংসারে। কেন বল বাঞ্ছা কর আপন কন্যারে॥ উচিত নহেত ইহা জানিবে তোমার। দকল ধর্মের মূল তুমি গুণাধার॥ মহাপাপ কেন ভূমি কর আচরণ। স্বান্ত হও ক্ষান্ত হও ভহে পদাসন॥ এতেক বাক্য শুনিয়া শ্রবণে। মুগরূপী বিধি কহে সহাস্যবদনে ॥ উপভোগ-ব্যতিক্রম যদি কভু হয়। তির্ঘ্যক জাতীয়দের কিবা তাহে ভয়॥ ইচাতে তারের পাপ না হয় কখন। অন্তরে জানিবে ইহা অমর-রাজন। মুগর্কপ হইয়াছি দেখিছ নয়নে। মুগীরূপী সন্ত্যা এই তোমার সদনে॥ উহারে যদ্যপি ভোগ করিছে রাজন। পাতক তাহাতে মোর নাহবে কখন॥ <mark>উহার সহিতে রতি যদি আ</mark>শি করি। পরম সন্তোষ পাব ওহে রুর-অরি॥ এতেক বচন শুনি অমর-রাজন। কহিলেন শুন শুন ওছে প্রাসন॥ তোমারে অধিক বলি হেন সাধ্য নাই। যেমন বাসনা তব করছ ভাছাই॥ এত শুনি সন্ধ্যা দেবী চকিত-অন্তরে। ক্রতপদে তথা হতে পলায়ন করে॥ মুগরশী পদাসন পিছু পিছু যায়। ধরিবারে নাছি পারে ভ্রমিয়া বেড়ায়॥ এইরূপে কতকাল করয়ে ভ্রমণ। শুম্তে শুম্যে ছুই জনে করে বিচরণ॥'অকমাৎ **একদিন ভ্রমিতে ভ্রমিতে। প**ড়িলেন তুই জনে শিবের চলেতে ॥ গ্রাহাদিগে দেখি শিব করেন চিন্তন। মুগী এই কেবা হয় মুগ কোন তন।। বহুকাৰ **ভ্রমিতেছে গগন-উপরে। ছুই জন** কেবা হয় না জানি অন্তরে॥ এত ভাবি शास्त हिन्दा करत পঞ্চানন। জানিলেন সব তত্ত্ব অখিল-কারণ॥ গুগরুপো নিজ কন্যা হরিবার তরে। এইরপে পদাসন ভ্রমে শূন্যোপরে॥ ইহা জানি রোষবশে দেব পঞ্চানন। বিধিরে নাশিতে হন উদ্যত তখন॥ এইরপ করেন চিন্তন। মুগবধে নাহি পাপ হবে কদাচন॥ আরো শিব চিন্তা করে আপন অন্তরে। মহাপাপপরায়ণ দেখিছি বিধিরে॥ পাপিষ্ঠ-वर्षि शांभ ना इस कर्मन। व्याजित विधान धरे विषिठ चूंबन॥ यपि देख পাপ হয় তাহে কিব। ভয়। নিলেপ নিও ণ আমি খ্যাত জগল্রয়। পাপ-পুণ্যভোগী আমি নহি কদাচন। অতএব কিবা ভয় কয়িতে নিধন॥ ধর্শের ভাপন্মাত্র করিবার তরে। নিশুণ ইইয়া রহি সগুণ আকা্রে॥ অভএব ধর্ম আমি করিব রক্ষণ। সকলের হিতকাজ করিব সাধন।। যদ্যুপি প্রশ্রয় দিই এই মুগবঁরে। চলিবে সকলে এই পথ অনুসারে॥ এই মুগবঁরে আফি কৈরিলে নিধন। হইবে জগতে মম যশের ঘোষণ॥ কীর্তিমান্ যেই জন অবনীমগুলে। তারে পূজা করৈ ভবে জানি যে সকলে॥ অকীর্তি যাহার হয় বিনাশ তাহার। এইরূপ খ্যাত আছে জগত-সংসার॥

এইরপ মনে মনে ভাবি পঞ্চানন। দিব্য বাণ শরাসনে করেন যোজন। মন্ত্রপৃত করি বাণ ক্ষেপণ করিলে। তাহে ত্রন্ধনির কাটি ফেলে ধরাতলে॥ भूटशदेत निरुठ तिथि रितिशी उथन। मनसूरथ वर्गशास कतरत शमन॥ सूशक्रेश পরিত্যাগ করি প্রজাপতি। শিবের সমুখে তাদা করে অবস্থিতি। কুতাঞ্জালি ল্যে ক্ছে ভ্রে প্লানন। ভোষা হতে ভূমে হয় ধর্মের স্থাপন। পাপ হতে রক্ষা তুমি করিলে আমারে। প্রমকল্যাণদায়ী তুমি হে সংসারে॥ ণাপ হতে গোরে তুমি কর পরিত্রাণ। মৎসম পাতকী ভূমে নাহি বিদ্যুমান॥ ভব সম পাপহারী নাহি কোন জন।পাপ হতে মোরে রক্ষ ওহে ত্রিলোচন॥ যার নাম উচ্চারণ করিলে বদনে। পাতক বিলয় হয় শাস্ত্রের বিধানে॥ দেই তুমি মূর্ত্তিমান সন্মুখে আমার। তোমার দর্শনে পাপ নাহি রবে আর॥ তব নাম সংক্রী হন যেই জন করে। মহাপাপে সেই জন অবহেলে তরে॥ এখন জিজ্ঞাদি তোমা ওহে পঞ্চানন। আদি শক্তি জগদ্মাতা কোথায় এখন॥ কোথায় জনম বল ধরিবে জননী। এত শুনি মিন্টভাষে কহে শূলপাণি॥ দক্ষ-অপরাধে সতী ত্যজেছে জীবন। দক্ত উচিত শাস্তি পেয়েছে এখন॥ দক্ষের স্থগতি নাহি দেখি কোন স্থানে। নরকেও নাহি স্থান জানিবেক মনে॥ আমার উপরে দ্বের করি যেই জন। একমনে নারায়ণে করিবে ভজন॥ দক্ষ-সম গতি হবে জানিবে তাহার। দক্ষ্ম অজমুখ ২বে পুরাচার॥ আমারে বিদ্বেষ করি যেই কোন জন। নারায়ণে একমনে করিবে ভজন॥ নিন্দনীয় ছবে সেই জগত-ভিতরে । করিবেক মে য়ে শব্দ মরণের কালে ॥ যাহা হোক দে কথায় নাহি প্রয়োজন। এবে যাহা বলি তাহা করহ প্রবণ। জন্মবেন দক্ষপুত্রী হিমালয়-ঘরে। সেই হেতু বাঞ্ছা আমি করেছি অন্তরে। যাবত তাঁহার নাহি হইবে জনম। হিমালয়ে ততকাল করিব যাপন।। এত বলি মহেশ্বর হন তিরোধান। সত্যলোকে যান ভ্রগা করিয়া প্রণাম॥

हिमालरा उपनी उदा निगमत । प्रान्त मध थात र रा प्राचितिष्ठी । तिथ (तथ प्राप्त अतिष्ठी । तथ (तथ प्राप्त अतिष्ठी । तथ प्राप्त अतिष्ठी । तथ प्राप्त अतिष्ठ (वह प्राप्त । तथ प्राप्त । तथ प्राप्त । तथ प्राप्त । तथ प्राप्त । पर्म प्राप्त । पर्म प्राप्त । पर्म प्राप्त कानित प्राप्त । प्राप्त भग वह करत (एव प्राप्त । भग वह निज्ञ । भग वह करत (एव प्राप्त । भग वह निज्ञ । भग वह करत (एव प्राप्त । भग वह निज्ञ । भग वह करत । प्राप्त । भग वह निज्ञ । भग वह निज्ञ ।

মুগের শোণিতে আর্দ্র হয়েছিল বলে। ইইয়াছে আর্দ্রী নাম খ্যাত চরাচরে॥ উহার দর্শনে হয় পাতকের কয়। মহেশের কীর্দ্তি উহা জানিবে নিশ্চয়॥ শিবের চরিত এই অতি বিমোহন। অধ্যয়ন করে যদি অথবা প্রবণ॥ পাপে শিপ্ত কভু নাহি সেই জন হয়। শাস্ত্রেব বিধান এই জানিবে নিশ্চয়॥ দক্ষের চরিত কথা যেই জন শুনে। দৃঢ়া ভক্তি জন্মে তার দেব পঞ্চাননে॥ কিবা তপ কিবা যজ্ঞ কিবা কিছু দান। ইত্যাদি ধরম কর্ম করে যে ধীমান॥ শিব আরাধনা যদি সেই নাহি করে। সকল বিফল তার জানিবে অন্তরে॥ শর্কাদেব হতে শ্রেষ্ঠ দেব পঞ্চানন। ভক্তির আধার তিনি সাধনের ধন॥ তাঁহারে ভজিলে হয় পূর্ণ মনোরথ।উল্লুক্ত তাহার হয় প্রগতির পথ॥ তাঁহার ভজনা ছাড়ে যেই মুদ্ধতি। পদে পদে লভে সেই অসীম তুর্গতি॥ একমনে যদি পুজে দেব মহেশরে। পাপ উপপাপ যদি সেই জন করে॥ তথাপি প্রগতি হবে অন্তিমে তাহার। পাতক তাহার দেহে নাহি রবে আর॥ তাই বলে দ্বিজ কালী ওরে মূদ্মন। একান্ত অন্তরে ভাব শিবের চরণ॥ পুরাণেব সার এই শ্রীশিবপুরাণ। শুনিলে তাহার হয় দেবলোকে ধাম॥

#### ত্রোদশ অধ্যায়।

নারদের নিকট হিমালয়ের শিবমন্ত্র গ্রহণ ও তৎকর্তৃক শিবপুজা এবং দাদশবর্ষ গর্ভ ধারণের পর মেনকার গৌরীকে প্রসব।

#### वामराग्य छेवाछ।

অতঃপরং প্রবন্ধ্যামি মহাদেবকা তে কথাং। যাং প্রক্রা মুমিশার্দ্ধিল নৈব মোহং গ্রিষ্যানি।।

বামদেব কহে শুন ওছে তপোধন। অতঃপর শিবকথা করিব কীর্ত্তন।
শ্রেবণ করিলে ইছা মোহ দুর হয়। মহাপাপ ধংস হয় জানিবে নিশ্চয়।
মহেন্দ্রাদি দেবগণ একান্ত অন্তরে। শিবকথা সদা শুনে শ্রেবণ-বিকরে।
মুক্তিলাভ করে ইথে মহাত্মা-নিকর। অতএব মন দিয়া শুন বিশ্তবের।
শিবের পরমন্তক তুমি মহামতি। তার পর শুন যাহা করে পশুপতি।।
মুনিগণ-বন্দনায় দেব পঞ্চানন। এইরূপে মুগবরে করিয়া নিধন।।
গমন করেন প্রভু হিমালয়-গিরে। তথায় করেন বাস সানন্দ অন্তরে।।
কিছুকাল এইরূপে করিলে যাপন। হিমপত্মী মেনা গর্ভ করেন ধারণ।।

শেনকার গর্ভ হের যত পুরবাদী। আনন্দে উৎসব সবে করে দিবানিশি ॥ त्ममात विखण तथ वाड़िल उथन। मृत्यमजादव मछो कतरण भगन॥ তাহা দেখি সম্বোধিষা কহে হিম্সিবি। সামার বচন এবে শুন গো পুন্দরী। গর্ভ ভরে অবনত ইইয়াছ সুমি। কপের তুলনা নাহি শুন ওলো ধনী।।" ভোমার এ হেন রূপ করিলে দর্শন। যোগ র ভূলিদা যায যোগরত মন।। এত তানি কহে মেনা জতি ধীরে গারে। ওন ভন প্রাণনাথ বলি হে তোমারে।। গর্ভ রে আমি অতি হয়ে ছ কাতর। ইহার উপায় কর তুমি দিপদর। বাঁচিব না জার বুঝি হেন মনে গণি। গর্ভ ভার স্তুঃসহ হযেছে ইদানী।। চারি বর্ষ গর্ভ আমি করেছি ধার।। তুরু নাহি হলো কোন অপ্লভ্য জনম ॥ দশম স ধৰি গৰ্ভ প্ৰদ্ৰ হৈ হয়। এই ১ সকৰে জানে ৬তে মহোদয় এত কাল কিন্তু মম না হলো স্তান। ইথে অনুমানে বুঝি নাহি পরিতাণ ॥ জীবন আমার বুঝি হবে বিসর্ফান। গ্রন্থ-উপাব দেখ ওহে মহাত্ম K মেনার করণবাক্য শুনি গিরিএর। বিষয়-বদন হন না করে উত্তর ॥ অধো-मार्थ आर्घ वर्ग निम्त-अरुद्र। (इनकाटन एक-श्रवि आर्म मिहे इटन म ্পরিরে বিষয় দেখি জিজ্ঞানে তথন। এতিন হইফা আছ কিনেব কারণ। নারদেব এই বাক্য করিবা প্রবণ। স্থাদ্যোপান্ত গিরিরাজ কহিল তথন॥ ্রাহা শুনি দেবগুনি ক্ছে দিউপরে। ইহার কারণ বলি শুন্**হ সাদরে॥** দক্ষকন্যা মেনাগর্ভে করে অব্হিতি। দক্ষজ্ঞে অনিমারে পশে যেই সতী র তোমার জীবন ধন্য ওহে গিরিবর। এত দিনে হলো তব তপ্রা সকল।। 'আদ্যাশক্তি জগন্মতা তব পুনী হবে। হহার অপেক্ষা ভাগ্য বিবা আহে ভবে ॥ নতীর জনমাকাজ্ফা করি পঞ্চানন। তোমার শিখরে আছে ধ্যানেতে ম্যান ॥ দশমাস গত হলে ঘতেক রম্পী। প্রস্ব হইয়া থাকে ওছে গিরিম্পি। কিন্তু এক কথা বনি শুন গিরিবর। ঈশ্রী জনম লবে বারো বর্ষ পর॥ অতএব নাহি রাখ ফিশদ অন্তবে। ঈথরের পূজা কর ভ**ক্তি সহকারে ছ** সাক্ষাই ইবর যিনি, শশাস্ক-শেখর। ভোষার শিখরে বাস করে নিরন্তর ॥ মঙ্গলকাবণ সেই দেব পঞ্চাননে। পূজা কর মহাভাগ ভক্তিকুত মনে ॥এতেক বচন ত্রি হিমালয় কয়। তন তন নিবেশন ওচে মহোদ্য । কিরুপে জানিব আমি দেব মহেশ্বরে। কি রূপে করিব পূলা বলহ আমারে॥ কিরূপ পূজার বিধি ফরহ কীর্তন্। তোমার প্রসাদে তারে করিব পূজন ॥

এত শুনি দেব-ঋষি কহে হীবে ধীরে। শুন গিরি শুরু মন্ত্র বিলি ছে । তোমারে॥ এই মন্ত্রে পূজা কর ওহে গিরিবর। ইহার প্রসাদে হুঁবে বা

मकन ॥ रेशांत अमारक जन्मा जांत्र नातांत्रण। यमुष्टरण जारह मना ७ रह भरा-प्रम ॥ उँ नमः निवात धरे मटलुत अधान । रेशांत अधार इस प्रतिरंग निर्दा । পরম অভীষ্ট মন্ত্র জানিবে অন্তরে। বেদে শিবাগ্যে খ্যাত জানে দর্বনেরে॥ ্বভুক্তর মন্ত্র এই মুক্তির কারণ। পঞ্চাক্তর কিলা হয় ওহে মগাত্মন্॥ প্রাণব ছাড়িয়া দিলে পঞ্চাকর হয়। সর্বমন্ত্রশ্রেষ্ঠ এই নাহিক সংশয়। সপ্তকোটি মহামন্ত্র শিবের বদনে। হইয়াছে বহিগত জানিবেক খনে ম তার মাঝে ুপঞ্চাক্তর সবার প্রধান। কোন মন্ত্র নাহি হয় ইহার সমান॥ ঋষিক্তন্দ এ মন্ত্রের করহ প্রবণ । বামদেব মুনি হন ওহে মহাত্মন ॥ পংক্তি ছন্দ এই শিছে ওবে গিরিবর। দেবতা ইহার হন জানিবে ঈশ্বর॥ সর্বকাম অর্থে বিনিয়োগ যে হয়। ওঙ্কার ইহার বীজ ওহে মহোদয়। পার্বভী শক্তি ্হয় ওখে মহাতান্। এই মন্ত্রে তাঁর পূজা করহ সাধন॥ নারদ এ মন্ত্র কিয়া হিমগিরিবরে। সঙ্গে করি লয়ে যায় শিবের গোচরে। মহেশেরে শরশন করি গিরিবর। সাফীঙ্গে প্রণতি করে ধরণী-উপর॥ প্রণমিয়া বিরিরাজ উঠিল যেমন। দেখে তথা আর নাহি সেই পঞ্চানন॥ বিহবল হইয়া পরে নানা চিন্তা করি। নারদেরে সম্বোধিয়া কহিলেন গিরি॥ অতাব বিচিত্র ঋষি করি দরশন। কোথায় গেলেন সেই দেব পঞ্চানন। ভোগার প্রসাদে আমি হেরিমু ভাঁহারে। কিন্তু কোথা গেল এবে বলহ আমারে॥ এতেক বচন তানি নারদ তখন। কহিলেন শুন শুন ওতে মহাস্মন্॥ তে ভ্রধর মহাভাগ সেই পশুপতি। ভকতবংদল হন অগতির গতি॥ মহিমা তাঁর কি বলি তোমারে। আছেন সে দেবদেব তোমার শিখরে॥ আরাধনা কর তাঁর ওতে মহাজুন্। অবশ্য বাসনা তব হইবে পুরণ॥ মেনা-গর্ভে যেই কন্তা লভিবে জনম। পঞ্চাননে সেই কন্তা করিবে অর্পণ।। এই-তাহা হইলে তুট হবে দেব মহেশ্বর। মেনার কল্যাণ হবে ওহে গিরিবর॥ এত বলি দেবগাষি করেন প্রস্থান। তাঁর আজ্ঞামত কার্য্য করে হিম্বান্॥ তার পর একদিন হৈম গিরিবর। শিবেরে দর্শন কুঁরে নিজশুঙ্গোপর॥ তাহা দেখি করযোড়ে কহে হিমালয়। মহাদেব নমক্টেম্ভ ওগো মহোদয়॥ আমারে করহ রকা মঞ্জল-কারণ। একান্ত তোমারে আমি লভিন্ম শরণ॥ এত শুনি মহেশর কহে মিউস্বরে। তোগার বচনে পুর্ফি লভিনু অস্তরে। তব ভার্য্যা মেনাগর্কে স্থামার রমণী। জনম পভিবে ক্রেই নিত্যা সনাতনী॥ क्षक वित् मदद्वत इन जिद्धाधान । मनपूर्व निक्रगृद्द जादम हिमवान ॥

আব্যীরগণেরে পরে করি সম্বোধন। শিবের রভাত সৰ করে নিবেছন । এইরূপে কিছুকাল সমতীত হয়। তার পর ঘটে যাহা শুন মছোদয়॥ ভাদশ বরষ গর্ভ করিলে ধারণ। মেনকার গর্ভে কন্সা জনমে তখন । ঘখন জিমিল কঞা মেনার উদরে। মৃত্ মৃত্ সমীরণ বহে ধীরে গীরে॥ চারিদিক পুপ্র-সন্ন হইল তখন। শঙ্খধনি গগনেতে হয় ঘন ঘন॥ পুষ্পার্ফি অবিরত ধরা-তলে পড়ে। আনন্দের ধনি উঠে হিমালযপুরে । মেনার দিগুণ রূপ বাড়িল তখন। তাঁহার শোভার কথা না যায় বর্ণন॥ জনমিয়া দিব্যক্ষা তাঁহার উদরে। হিমপুরী দিন্যরূপে আলোকিত করে॥ জনমিয়া সেই কলা: বাড়ে দিন দিন। সুলগতে অঙ্গতার কটিদেশ ক্ষীণ । দেখিতে দেখিতে বাল্য কাল গত হয়। ক্রমেতে হইল আদি যৌবন উদয়॥ তাহা দেখি হিমা-লয় জাকিয়া কলারে। কহিলেন শুন গৌরি কহি যে তোমারে॥ আমার নিখরে বাদ করে পঞ্চানন। তাহার অর্চনা তুমি করছ দাখন॥ ইহ পর উভ লোকে লভিবে কল্যাণ। ত্যক্তসঙ্গ হযে আছে শিব মতিমানু॥ দক্ষয়ে মরিয়াছে স े লাকাষণী। তদক্ষি ত্যক্তসঙ্গ আছে শুলপাণি॥ তদক্ষি মম শুষ্টেক করি আরোহণ। ৬পেতে মগন আছে দেব পঞ্চানন। অতএব তার দেবা কর ভক্তিকরে। প্রম মঙ্গা হবে কহিনু তোমারে॥ পিতার এতেক বাক্য করিয়া প্রবণ। মনে মনে হাল্য করে পার্বতী তখন॥ তথাস্ত বলিয়। তিনি করেন ধীকার। জ্যা বিজ্যাব সঙ্গে হন আগুসার॥ স্থীদ্য-সঙ্গে তিনি একান্ত অন্তরে। শিবের করেন সেবা অতি ভক্তিভরে॥ কেবল শেকের শিক্ষা ধিবার কারণ। এইরূপ কাজ করে পার্বভী তখন।। সদা চিন্তা করে দেবা আপন অন্তরে। করিব যে পতি লাভ দেব মহেশ্বরে 🕊 পুবাণে পীঘূৰ কথা অতি ননোহর। শুনিলে পবিৰ তার হয় কলেবর॥

# ठकुर्मग अभागा।

° শিবসাহাত্য বর্ণন প্রসক্ষে তৃণ্ডির নিকট মদনদহন বর্ণন। বামদেব উবাচ।

এতি বিদ্যাল কালে তু তারকেণ দিবৌকসঃ। আজে পরাজিতা আসন্ শক্রদর্পবিঘাতিনা॥

बामार्यंत करह छन ७ दर उर्लाधन। ज उ. शत घरि यह जड़ु च घरेन 🏨

ভারক নামেতে দৈতা আত তুরাশয়। যুদ্ধেতে দেবতাগণে করে পরাজয়। 'দেবেজের বলবীর্ষ্য করি বিনাশন। স্বর্গাজ্য হরি লয় সেই ছুরাস্থান্।। ভাষা দেখি দেবগণ একতা হইয়ে। উপনীত হন আসি অকার আলয়ে॥ সত্যলোকে পদ্মাসনে করি নিরীক্ষণ। জানন্দে মগন হন যত দেবগণ। প্রশিপাত করি পরে বিধির চরণে। কহিলেন, নতশিরে বিনয়-বচনে॥ তোমা হতে হয় বিধি বিশের সুজন। ভোমার চরণে করি সতত বন্দন। কল্প-অন্তে রুদ্রেপী হও পল্লেনি। বিফ্রপে পাল বিশ্বে তুমি চিন্তামণি। নৃষ্টিস্থিতি প্রলয়ের তুমিই কারণ। প্রকৃতি পুক্ষ তুমি দহে মহাত্মন্॥ করুণা কটাক কর মোদের উপরে। প্রিত ইয়েছি মোরা বিপদ সাগরে॥ এতেক বচন শুনি দেব পদাসন। কহিলেন শুন শুন ওছে দেবগণ ॥ কি হেতু রয়েছ সবে মলিন অন্তরে। বিসাদের হেজু কিবা বলহ আমারে। ইচ্দের বজের তেজ না হেরি এখন। বফণের পাশ কেন বিকল এমন॥ কুবেরের গদা নাহি স্থবিশাল করে। বিষয় বদনে যম আছে নতশিরে॥ ষাদশ আদিত্যে দেখি তেজোহীনঅভি। ক্য়িদেব হীনতেজ আছে নিরব্ধি নিস্তেজ হইয়া আছে যতেক প্রন। স্থাহীন সম আছে চন্দ্রা এখন। **এরাবত-দন্ত ভগ্ন নেহা**রি ন্যনে । উক্তৈঃপ্রবা হীন্তেল কিনের কারণে ॥ বুধদেব কাঁপিতেছে অতি পর থর। ইহার কারণ কিবা অমর নিকর॥ এতেক বচন শুনি গুরু রহস্পতি। কহিলেন শুন শুন এহে মহামতি। ষা বলিলে সত্য বটে কিছু.মিখ্যা নয়। অন্তর্যামী ভূমি প্রভু জান সমুদ্য॥ হতরাজ্য হয়ে এবে যত দেবগণ। ভিক্লক সমান ভূমে করে বিচরণ॥ তারক নামেতে দৈত্য অতি হুরাশ্র। আনিয়াছে সব দেবে ওুছে মহোদ্য় ॥ মুর্য্যদেবে রাখিয়াছে আপন আগারে। দীদিকাতে পদ্মরাশি উৎপাদনভরে।। নিরন্তর বানে তার করি অবস্থান। বহিতেছে মৃতু মৃতু পবন ধীমান্॥ ষ্ডু ঋতু নিরস্তর চকিত অন্তরে। ভাষার উদ্যান্মাঝে নিবস্তি করে। धूर्वकला द्वांता हन्स महा मर्वकिं। তात छेशामना करत छट्ट श्वामन॥ পুমুদ্রে যতেক রত্ন লইয়া সাদরে। তাহার নিকটে সদা অবস্থিতি করে॥ দ্ণিতেজ বিতরিয়া সদা সর্বকণ। বাহাকি দানবরাজে করয়ে সেবন ॥ মন্দাকিনীজল ছুট করিয়া এহণ। আপনার দীধিকাছে করেছে ভাপন॥ অতএব তব পদে করি নিবেদন। সেনাপতি একজন করহ স্জন॥ শেই জন তারকেরে করিবে সংহার। নতুবা মোদৈর নাহি কিছুতে উদ্ধার।। মহাবীৰ্যপরাক্রম হবে সেনাপতি। পরসৈত্যে বিনাশিবে ওতে সৃষ্টিপতি॥

দেবগণে দেই জন করিবে রক্ষণ। অধিক বলিব কিবা ওছে পালাসন॥ এক মাত্র গতি তুমি ওছে পদাকির। রূপাদৃষ্টি কর এবে দেবতা-উপর॥

এতেক বচন শুনি বেব পদাসন। কহিলেন শুন শুন ভুহে দেবগণ। ভোমাদের কাঞ্চা পর্ণ হবে হ' : গলে। এখন যে কথা বলি ধরহ অন্তরে । তপ্তা-বলেতে সেই দানব্ধবর। হয়েছে ছুর্ম্ব ওছে দেবভানিকর # তপ্সার ফলশেষ ২০ দিনে ইবে। তত্দিন ছুরাণ্ধ সে জন র**হিবে।** নিজে আমি তারে বর করেছি অর্পণ।নিজে তারে কিরপেতে করিব নিধন। বিষর**কে সম্ব**র্দ্ধিত করিয়া আপনি। কেবা কোথা করে ছেদ বল দেখি শুনি॥ বিশেষতঃ এক কথা করছ শ্রবা। যুদ্ধে তারে কোনু জন করিবে নিধন 🛚 হেন জন কেবা আছে অবনীমণ্ডলে। হেন জয়ী কেহ নাহি জগত- ভিতরে। এখন যে কথা বলি করছ প্রবণ। দক্ষয্জে সতী বেছ করে বিস্তুলন। সেই সতী উমারপে হিমালয়োপরে। শিব-আরাধনা এবে করিছে সাদরে॥ শিবধনে পতিলাভ করিবার তরে। একান্ত অন্তরে সতী আছে গিরিপরে॥ অতএব শুন শুন ওতে দেবগণ। বাহে গৌরী বিভা করে দেব পঞ্চানন্য তাহার উপায় কর তোমরা সকলে। অভ কেহ শিবতেজ ধরিবারে নারে॥ পরম পুরুষ দেই দেব তিনরন। আদিমা প্রকৃতি সতী বিদিত ভুবন। পার্বতী-জঠরে পুল লভিলে জনম। মঙ্গল ছইবে তবে ওছে সুরগণ॥ এত বলি পদ্যোনি অমর-নিকরে। এবেশ করেন পুনঃ গৃছের ভিতরে। ক্লতক্ষত্য হলে পরে যত দেবগণ। নিজ নিজ ধামে পুনঃ করেন গমন ॥ কন্দর্পেরে কার্য্যদক্ষ ভাবিয়া অন্তরে। দধ্যোধিয়া দেবরাজ কছে মধুস্বরে ॥ শুন শুন কামদেব বচন আখার। তোমা হতে হয় বিখে মোহের সঞ্চার॥ আমার বচনে রক্ষ এ তিন ভূবন। অব্যর্থ তোখার শর জানে সর্বজন। এতেক বচন শুনি কামদেব কয়। ধন্ত ধন্ত আমি ধন্ত ওতে মহোদয়॥ অনুমহ আছে তব আমার উপরে। কি করিতে হবে প্রভু আজ্ঞা দেহ খোরে সভীরে আনিব কি হে গোমার গোচর। বল বল শীঘ্র করি ওছে বজ্লধর॥ বজ্র অথা তব আজ্ঞা করয়ে পালন। সেরপ করিব আমি ওছে মহাজ্মন্। পুষ্পা অন্তে সুরাস্থরে মোহিবারে পারি।শিবের ধৈরয়চ্যুতি আজ্ঞা দিলে করি কিবা দেব কিবা দৈত্য যেই কেহ হয়। তাহারে করিব মুগ্ধ ওহে মহোদয়।

কাংমর এতেক বাক্য ক্রিয়। শ্রবণ। মিইভাষে দেবরাজ কছেন তথ্ন জানিছে অনঙ্গ দৈব তব পরাক্রম। শিববৈধ্য নাশিবারে তুমিই সক্ষ্মী অতএব সেই কাজ করহ ত্রায়। দেবের মুসল হবে জানিবে ইহায়

ৰর্গের কল্যাণ হবে ওছে মহাজুন। অতএব মম বাক্য করছ পালন। যেখানে আছেন শিব হিমালয়োপরে। সেখানে আছেন সতী হরিষ অন্তরে। অবিলম্বে তথা তুমি করহ গমন। উমাপ্রতি শিবমন কর নিয়োজন॥ আদেশ পাইয়া কাম তখনি চলিল। অবিলম্বে হিষালয়ে উপস্থিত হৈল।। কামের সাহায্য হেডু মলয় পবন। আনন্দেতে পিছু পিছু করেন গমন । ছুই জনে উপনীত হইয়া দেখানে । যথাস্থানে উপবিষ্ট হন দুই জনে॥ অলক্ষ্যেতে বায়ুদেব করে অবস্থান। বদিলেন জান্থ পাতি কন্দর্প ধীমান্॥ শরাসনে শর পরে করিয়া যোজন। শিবের অন্তর কাম করেন যোহন ॥ মনের বিক্লতি ভাব দরশন করি। একি একি মনে ভাবে দেব ত্রিপুবারি॥ কেন মম থৈর্য্য-চ্যুতি হইল এখন। এত ভাবি চারিদিকে চাহে পঞ্চানন ॥ দেখিলেন পৃষ্ঠ-ভাগে আছেন মদন। শরাসন হাতে তার হতেছে শোভন ॥ তখন উপজে ক্রোধ শিবের অন্তরে। নয়ন লোহিত বর্ণ অবিলথে ধরে ॥ তৃতীয় নয়ন হতে **অমি বাহিরায়।** চারিদিকে দেবগণ করে হার হায়।। সম্বর সম্পর রোষ ওচে পঞ্চানন। শূন্যমার্গে এইরূপ কছে দেবগণ ।। বলিতে বলিতে সেই নয়ন-অনলে। ভদ্মীভূত হয়ে কাম পড়িল ভূতলে।। মহাবিল্ন সমুৎপন্ন করি দরশন। অবিশব্দে তিরোহিত হন পঞ্চানন।। শুনিলে হে তুণ্ডি ঋষি অপূর্ব্ব কাহিনী। দেবের দেবতা হন দেব শূলপাণি॥ উাহার হইলে ক্রোগ যেই দশা হয়। শুনিলে কর্ণেতে তাহা ওহে মহোদয়।। ভক্তিভরে এই কথা कतिरल धारन । পाপ-छेपभाप जात रय विरमाहन ।। देशकारल मशासूर्य সেই জন রয়। অত্তে শিবপুরে যায় নাহিক সংশয়।। অগ্নিভয় নাহি थारक जाहात कथन। जाहात निकटि इस मधन प्रमा। जाहे वटल विष-कानी अन माधूनর। মুক্তি হেতু ভক্তি রাখ শিবের উপর।।

## পঞ্চদশ অধ্যায়।

মদন-শোকে রতির বিলাপ, রতির শিবারাধনা, শিরুকর্ত্ক বরদান এবং তাঁহার আদেশে রতির শম্বরাস্থরগৃহে অবস্থিতি।

বামদেব উবাচ।

অন্তর্হ তৈ ভগবতি দা শৈলতনয়া মুনে।
নিরাশা জাতত্বংখার্ডা দখীভ্যাৎ ভবনং যুয়ো।।

বামবের কতে শুন ওতে ঋষিবর। তিরোধান হলে পুরে শশাঞ্চ-শেখর।

ইশলেশ-নন্দিনী উমা ছঃখিত অন্তরে। সখাদ্য সহ যান আপন আগারে॥ বিষর্গবদনা তাঁরে করি দর্গন। কারণ জিজ্ঞানা করে পর্বত রাজন॥ শুন শুন ওপো বংদে আমার বচন। কি হেতু তোমার হেরি মলিন বদন॥ শুশ্রমার ত্রুটি বুঝি করেছিলে তুমি। হয়েছে কুপিত তাহে বুঝি শূলপাণি॥ এত তনি উমা দতী কহেন তখন। আমার দেবায় তুট দলা পঞ্চানন॥ কর্মফলে দেই দেবা হয়েছে বিফল। ভাহার কারণ বলি ওন গিরিবর । নারী এক সঙ্গে করি পুরুষ ধীমান। উপনীত হয়েছিল শিব বিদ্যুমান॥ পুষ্পধন্ম তার হাতে কিবা শোভা পায়। সঙ্গে অনুচর মৃত্র পবন তাহায়॥ যেমন সে জন তথা করে আগমন। সর্বাশ্বত্-জাত পুষ্প ফুটিল তথন॥ কোকিলের। কুত্রব করিতে লাগিল। বসন্ত প্রত্যক্ষ আদি আগত ইইল। নিতকৈর কাঞী মম হইল চঞ্চল। শিবের ধৈর্য চ্যুতি হলো গিরিবর ॥ তাহা দেখি চারি দিকে গাহে পঞ্চানন। পৃষ্ঠভাগে পাই জনে করেন দর্শন॥ অমনি উপজে ক্রোধ তাঁহার অন্তরে। নয়ন আরক্তবর্ণ দেই ক্ষণে ধরে॥ তৃতীয় নয়ন হতে অগ্নি বাহিরায়। অবিলম্বে ভদীভূত করিল তাহায়॥ এতেক বচন শুনি হিমগিরিবর। প্রবোধিয়া ছহিতারে গেলেন অন্দর॥ অন্তঃপুরে লয়ে কন্তা করেন স্থাপন। পিতৃগৃহে করে উমা দিবস যাপন॥ . এদিকে কামের পত্নী রতি মনোরমা। পতির লাগিয়া খেদ করয়ে ললনা॥ অগ্নিতে প্রবেশ পরে করিবারে যায়। অকশাত দৈবাণী হইল তথায়॥ " শুন শুন রতি সতী আমার বচন। ঘেই কালে মুগরূপ ধরে পদাসন॥ ঘবে বিধি বাঞ্ছা করে আপন কন্সারে। যবে দেব এজাপতি মুগরূপ ধরে॥ সেমুগ যখন বধ করে পঞ্চানন। তখন কভিজ্ঞ হয়ে দেব পদাসন। অভিশাপ দিয়াছিল কন্দর্পদেবেরে। 'হরকোণে হবে ভশ্ব' এই কথা বলে॥ সেই হেতু ভশ্মীভূত হইল মদন। অতএব শুন রতি আমার বচন। শোক তাপ নাহি রাখ ছদয়-মাঝারে। कि ফল হইবে বল অনলে পশিলে। একমনে শিবে তুমি কর আরোধন। পুনরায় পাবে পতি আমার বচন॥" दिनवर्तां शिक्ष में जी आनत्म मार्जन। শিবেরে একান্তমনে পুজিতে থাকিল॥ মুক্তিকার লিঞ্চ গড়ি বিহিতবিধানে ' গন্ধপুপ্প দিয়া পূজে ঐকান্তিক মনে॥ পুজিতে অযুত লিঙ্গ-করিয়া মনন। একে একে রতি সতী করয়ে অর্চ্চন॥ পুজিতে পুজিতে মন প্রফুল হইল। ফুংখরাশি গিয়া চিত হইল বিমল॥ অযুত সংখ্যক লিক্স হইলে পূজুন। তিল-হোম ঘথাবিধি করেন সাধন॥ ख्येन धन्यं हत्य त्रव छोतान्। आंविष्ट्र इन आंगि तिष्ठि विषामान॥

শক্ষরেরে পুরেষভাগে করি দরশন। করপুটে তাব রতি করেন তথন। তাব তাব নাহি জানে নারায়ণ ওছে শুলপাণি॥

করেদেতে তোমার তাব কেহ নাহি পায়। অবলা হইয়া কিলে জানিব তোমায়॥

এইরপে স্তব করে মদনরমণী। স্তব শুনি তুই হন দেব শুলপাণি॥ **শোরিভূতি হন্ আসি রতির সদন। যিউভাবে সমোধিয়া কছেন তথন**।। অব শুনি তুর্ফ হৈনু তোমার উপরে। অভিমত বর এবে দিব যে তোমারে॥ এতেক বচন তনি রতি সতী কয়। অকু কোন বরে বাঞ্চা নাহি মহোদয়॥ ক্ষামদেবে কর দান ওহে শূলপাণি। এই মাত্র বর চাহি করি যোড়পাণি॥ এতেক বচন ভানি কহে পঞ্চানন। এ বর অপিতে আমি না পারি কখন॥ স্মামার পরম শক্ত কামদেব হয়। বাঞ্ছা করে কেবা বল শক্তর উদয়॥ আশার অর্চনা তুমি করেছ সাধন। মন তাব করিয়াছ তুমি অধায়ন॥ ্**তাহাতে তোমা**র পাশে ঋণী আছি অামি। অতএব মাগ বর মদন ভামিনি॥ **ংঅন্য বর যাহা ডুমি করিবে যাচন। তাহাই অপিবি আমি ধরুপ বচন॥** এতেক বচন শুনি রতি সতা কয়। শুন শুন নিবেদন ওছে মহোদয়॥ ক্ষেপরাধী জনে ক্ষমা সাধুজন করে। জগতে বিদিত আছে শাত্রের বিচারে॥ নিশুণ পুরুষ তুমি জগত-ঈশর। অসাণ্য কি আছে তব জগত-ভিতর॥ আমার প্রার্থনা তুমি করিলে পূবণ। অতুল অখ্যাতি হবে জগতে রটন॥ এতেক বচন শুনি দেব ত্রিপুরারি। কহিলেদ শুন শুন বলি গো স্থলরি॥ কামেরে পাইতে বাঞ্চা করিছ এখন। কিন্তু তাহা নাহি হবে শুনহ বচন॥ **শম্বর নামেতে দৈত্য আছে** ধরাতলে তেবে তুমি গিয়া থাক তাহার আগারে **ছাপর যুগেতে প**রে দেব নারাণ। রুঞ্জপে ধরতেলে লভিবে জনম। ধরার তুর্বহ ভার হরিবার ভবে। অবতীর্ণ হবে হরি জগত-মাঝারে।। উহার পরমা ভার্য্যা হবেন ক্রিণী। লক্ষারপা সেই দেবী সবার জননী।। জনমিবে তাঁর গর্ভে তখন মদন। প্রত্নায় হইবে নাম বিদিত ভূবন। প্রত্নায় সম্বর বধ করি বাত্তবলে। তোমারে আনিবে হরি দারকানগরে॥ 'সেই कारल পতि नर रहेरव मिलन। आभात वहनं मिथ्या नरह कर्लाहन ॥ कतिलाम কোনে ভন্ম আমি গো সুন্দরি। এই কীর্ত্তি রবে মম জগত-ভিতরি॥ রতিরে এতেক বলি করি বরদান। অবিলয়ে মহেশ্র হন ভিরোধান॥ তাঁহার আদেশে রতি সম্বর-আগারে। পতিলাভ আশা করি নিবসতি করে॥ শিবের মাছাত্ম এই করিনু কীর্ত্তন। পরম মঙ্গলপ্রদ দেব পঞ্চানন। যে জন শরণ লয় দেব মহেখনে। কি ভয় তাহার বল জগত-সংসারে।। শঙ্কর

ছইলে তৃষ্টি কি ভাবনা তার। অমঙ্গল যায় দূরে কহিলাম সার।। অভএব শুন প্রে ঘত সাধুজন। একান্ত অন্তরে কর শিবের পূজন॥ শিবরূপ শুদ্পিদ্যে ভাব নিরন্তর। অশিব বিনাশ হবে কহে দ্বিজবর।।

## বোডশ অধ্যায়।

উমার তপ, জটিলবেশে শিবের আবির্ভাব ও বরণান।

#### তুণ্ডিকবাচ।

ইদানীং গ্রোভুমিচ্ছামি শঙ্করেন্তর্হিত মুনে। গতা গেহং হিমবতঃ কিঞ্কার ন্গেল্রজা॥

বামদেবে পুনরাথ করি সধোধন। তুতিঝ্বি বিষ্ট্রবে জিজাসে তখন। ্চিরোছিত ২ান শিব নগেল্র-নন্দিনী। পিতৃগৃহে কিবা করে কছ মহামুনি॥ এই কথা শুনিবারে কবি সাকিঞ্চন। বর্ণন করিয়া কর বাসনা পূরণ॥ ্ণত শুনি বাম্দেব ক্তে থিউস্ববে। শুন শুন মুনিবর বলিছে ভোম।রে 🛊 পিতৃগুহে গিথা মতা বিষয় বদন। পিতৃ-মাঠু দোহাপদে করিয়া বন্দন॥ परित्मन एम एन भिडा भटरावता। विकल ३३ल मम (मन, मद्रुष्य। জনম বিফল মম বিফল যৌল। আছে। কর করি আমি তপ্সাচরণ। শুজোপরি বন্ধাঝে গমন করিযে। করিব দাকণ তপ শিবের লাগিযে॥ ত্রন্ধা বিঞু গাঁরে নাহি ধ্যানহোগে পায়। বিনা তপে কিপ্রকারে লভিব তাঁহার উমার এতেক বাক্য করিয়া শ্রণ। পিতা মাতা ছুই জন কছেন তখন॥ বলিলে তুমি গো বাছ। দেব মহেশ্র। একমাত্র তপোগম্য জগত-ভিতর॥ অতএব মম বাকা কর্ম এবণ। ছদিমাখে ভক্তিধনে করিয়া স্থাপন।। একান্ত অন্তরে সেব শশক্ষ শেখরে। কিন্তু এক এখা বলি বুকাছ, অন্তরে॥ এकांकिनी दनमात्य किंत्रत्थिक त्रा॥ मातीत কাননে বাস সমূচিত ন্য i मूनिएनत वामक्न जामिएव कानन॥ অতএব বনে নাহি করিও গ্রমন। সবার অন্তরে আছে সেই শ্লপাণি॥ क्रिकांना मरस्यत मर्ख अखरीयी। ভক্তি মুক্তি দকলের তিনিই কারণ॥ मृद्धिगते पि इन एक पक्षानन। ভক্তের হাদয় পদে তিনিই ভাস্কর 🖠 धथ। उथा नर्कशान चितारक गहत। उ गा (युव नार्गा क्लू कानन गांबाहर ! ज्यक अन्। शृक त्मन मत्र्यदत् ।

কানন কেবল হয় বিদের কারণ। আমাদের বাক্য মাতঃ করই রক্ষণ 🖢 •পিতার মাতার বাকা শুনিয়া প্রবণে। পার্বভী উত্তর করে বিক্সিত্যনে। যা কহিলে সভ্য বটে গৃহস্থ-ধরম। কিন্তু আমি তাহা নাহি করিব পালন ॥ শুহধর্ম হতে মোরে জানিবে বাহিলে। ত্রদ্যারী হব আমি কহিনু তোমারে॥ ত্রন্মচারী-ধর্ম যেই করে আচরণ। বনবাস বিধি তার শাস্থের বচন॥ অতএব যাব বনে শিবের কারণে। ব্রহ্মচর্য্য অবলম্বি রব সেই খানে॥ বিশেষতঃ মহাদেব বনে বনে রয়। শুনিয়াছি এই কথা মুনিগণ কয়॥ বন-মাঝে যদি আমি করি নিবসতি। অচিরে হবেন তুট সেই পশুপতি॥ এত বলি গিরিস্থতা কমল-লোচনী। হৃদয়-মাঝারে ভাবে কোথা শূলপাণি॥ মহেথেরে ছাদিমাঝে করিয়া করণ। আনন্দান্য অবিরত করে বরিষণ। তার পর গুরুজনে প্রণাম করিয়ে। তপ হেতু যান বনে প্রফুল-হাদয়ে। জঁয়া ও विजंगा नात्म पूरे मथी हिल। अनुगामी पूरे जन आनत्म रहेल॥ मथी हत् ্সহ গৌরী হরিষ অন্তরে। অবিলম্বে চলি যান পর্বত-শিখরে॥ শিখরের কিবা শেভো কি করি বর্ণন। অশোক পুরাগ আদি শোভে তরুগণ॥ আন্তাতক পনসাদি যত তরুবর। ফলভরে অবনত ধরার উপর । বিল্ আম नकी आत कত বা মানতী। দেখিলে জনমে কত নয়নের প্রতি॥ সুশীতল সরোবর কিবা শোভা পায়। অপ্ররারা স্নান করে স্বর্খেতে ভাহায়॥ এই-জ্ঞপ মনোহর সুর্ম্য-শিখরে । স্থীদ্বর সহ গৌরী তথা বাস করে॥ গৌরীর বসতি হেতু সেই দিব্যস্থান। ঞীগৌরীশিখর এই লভিল আখ্যান॥সেই স্থানে পোরী সতী করি অবস্থিতি। দিবানিশি হ্লদে ভাবে কোথা পশুপতি॥ ভপক্তা করেন তথা হয়ে একমন। হুদিপদে সদা চিন্তে কোথা পঞ্চানন॥ এইরপে বছদিন সমতীত হলে। জটিল পুরুষ এক আসে সেই স্থলে॥ মুনিবেশধারী দেই পুরুষপ্রবর। উপনীত হয় আসি উমার গোচর॥ नीनान उपराम करतन अर्थ। उपराम छनि शीही भूलक मनन॥ পঞ্চাক্ষর-শিবমন্ত্র ছাদে জপ করে। দিবানিশি ভাবে সেই দেব মহেখারে॥ नीजकारल शकांकरल कति व्यवसान । इस किए काथा रमेर मरहण धीमान्॥ আর্দ্রবস্তে শীতকালে করি অবস্থিতি। হাদয় কমলে ভাবে কোথা পশুপতি॥ বসত্তে বাসন্তীপুল্পে পূজে পঞ্চাননে। এদা ভক্তি হদিয়া বৈ রাখিয়া বিধানে প্রীয়ে পঞ্চায়ির মধ্যে থাকিয়া স্থলরী। ছদর-কমলে ভাবে কোথা প্রিপুরারি वर्षाकारल इक्टिकरल करि अवसान। मना विद्यु काथ। टमरें रह अनवान्॥ क्लपूल माज . (परी कतिया (ভाजन। এইक्रर्ल भेडर्व करतन यालन॥

তার পর জলমাত্র করিয়া সেবন। আর এক শত বর্ষ করেন যাপন। তার-পর শত বর্ষ শীর্ণপর্ণাহারে। খাপন করেন সতী একান্ত অন্তরে॥ তার পর প্রণাহার করি বিসর্জ্জন। এক শত বর্ধ দেবী করেন যাপন।। এ ছেতু অপর্ণা নাম ধরেন স্কুন্দরী। তার পর বায়ু মাত্র সেবা করি গৌরী॥ এক শতः বর্ষ কাল করেন যাপন। পঞ্চশত বর্ষ করে এরূপে গ্র্মন।। ভাঁহার কঠোর তপ দরশন করি। পর্ম সম্ভুট হন দেব ত্রিপুরারি॥ পরীক্ষা করিতে বাঞ্ করিয়া অন্তরে। ত্রন্দচাবী বেশ প্রভু ধরেন সত্তরে॥ অজিন আসাঢ় দণ্ড করিয়া ধারণ। ধীরে ধীরে গৌরীপাশে কবেন গমন॥ অতিথি আগত দেখি গিরিজা সুন্দরী। বসিতে আসন দেন অতি তরা করি। ভক্ষ্য ভোজ্য নানাবিধ করি আঘোজন। অতিথি সংকার দেবী করেন তখন॥-দেই স্ব প্রতিগ্রহ করি ব্রদ্ধারী। উয়ারে কহিতে থাকে সম্বোধন করি।১ কেমন ভপস্থা সতি ক'রছ এখানে। কার্ছ ত সর কাজ বিহিত বিশানে॥ ংপের আবিশাকীয় পুসাক্ষাবাবি। এই সব স্কুলভ ত এখানে সুস্ধরী। শক্তি বুঝি হ। শা ত করিছ সালন। ভাল ভাল এক কথা জিজ্ঞানি এখন॥ যৌবন তোমার এই নযনে নেহারি। তপস্থার যোগ্যকাল নহে ত পুন্দরী। র্দ্ধাবত। তপস্থার সমুচিত-কাল। সেই কালে না রাখিবে বিষয়-জঞ্জাল। থেবনে খলক লবাস করেছ ধারণ। শিকোপরি জটাপাশ করেছ বন্ধন।৮ উপযুক্ত নহে ইহা শুন গো ভাবিনি। ইহার কারণ কিবা বল দেখি শুনি॥ ঘোরতর তপ কর কিদের কারণ। মনোরথ কিবা তব করহ বর্ণন॥ পতির কারণ যদি রয়েছ এখানে। উপযুক্ত নং তাহা কহি তব স্থানে॥ তোমারে গুঁজিয়া লবে যেই পতি হবে। তোমার আরাধ্য পান কভু নহে ভবে॥ খাহা হোক কু হুহল হতেছে আমার। যথাযথক্রপে কহ কারণ ইহার॥

खक्किन निर्धं श्री अटिक वहन । हाम् प्राप्तं करा करह श्री महाकृत ॥
हिमान समू वा हेनि कमन लाहिनी । कार्ता मर्क्ष कथा नाहि कहिरवन धनी ॥
हे हैं। त हे हो त कमन लाहिनी । किन विन मन निर्देश विभाग निर्देश वा पिक करित वर्तन । श्री विन मन निर्देश विभाग निर्देश । यथन कर्रा कर्ता किन्तु ता । विन विन विन विन प्रकार प्रकार ।
कारमर्त्त स्मा कर्ता किन्तु ता । कार्त्र मिथु कर्ता कर्ति हा मन ॥
विक श्री किमा था (पर श्राह् श्री प्रता । कार्त्र मिश्र प्रति व्या करित्र आखर ।
हे स्मानि केमः था (पर श्राह श्री प्रता । कार्त्र मिश्र श्री कार्त्र कार्त्र वा आखर ।
कार्त्र कार्त्र कार्त्र कर्ता कर्त्र । किन वा वा कर्त्र कर्त्र कर्त्र कर्त्र । किन वा क्रि प्रता करित क्रित क्रित क्रित कर्त्र ।
किवा स्मा करित क्रित क्रित क्रित कर्त्र । क्रित वा क्रित क्

লাক্ষারত্তে স্করঞ্জিত তব পদন্তয়। শিবের চরণযুগ পুতিগন্ধম । দক্ষ ভারে নিমন্ত্রণ কভু নাহি করে। তুমি তবে কেন বাঞ্চা করিছ অন্তরে॥ কপান नरेंगा (यहे कंतरत खमन। कुछत्वजाना कि मरक यात मर्कमन।। छैनक हहेय, থেই সদত বিচরে। লজ্জাবোধ নাহি যার অন্তর-মাঝারে॥ তাহারে করিবে পতি কিদের কারণ। যেই জন এই কথা করিবে ভাবণ।। উপহাস করিবেক দেই-ই তোমারে। অতএব মম বাক্য ধরহ অন্তরে।। মন হতে দেই বাঞ্ছা করহ বৰ্জ্জন। শিবেরে বরিলে কট পাবে সর্বংশণ।। দেবে<u>শ</u> উপেক্র আদি আছে দেবগণ। তাহাদের একজনে করহ বরণ।। বচন শুনি পার্বতী ফুলরী। কহিলেন রোস্বশে মৌনভঙ্গ কবি।। শুন শুন ন্ম থাক্য তুমি হে জাহ্মণ। সভাবটে যা কহিলে আমারে এখন।। সভা ৰটে ভ্ৰমে শিব শুশানে শুশানে। কিন্তু যাহা বলি ভাষা ভাব দেখি মনে। আবক্ষ স্তম্ভ পর্যান্ত এই চরাচর । প্রলযে যখন ভদ্ম হয় মুনিবর।। তখনে, ভ্রমের শিব প্রলয় শুশানে। ভাষার বিনাশ নাছি এ তিন ছুবনে।। সদান দান করে যেই পঞ্চানন। তাঁহারে কহিছ তুমি নিন্দিত এখন।। জ্টা ব্ শোভা পায় শিবশিরোপরে। সামাত্র নহেক জটা জানিবে ক্রবে॥ তিঃ বেদ জটারূপে শিরোদেশে রয়। সে ছেতু জটিল নাম হযেছে নিশ্চয়। ভাঁহার তুলনা নাহি জগত-সংসারে। এ হেতু বাতুল হাঁরে বলে চরাচরে। যাঁহার নাহিক শেব শেষ নামধারী। সেই শেষ ভূষারূপে আছে গারোপরি। সর্ব-পাপ নাশ পায় সরণে ভাঁহার। মহাপাপীযদা জামি জগত-মাঝার।। স্থতরাং ভাঁহার যোগ্য কভু আমি নই বেলিকু তোমার পাশে জানিবে গোঁদাই॥ সত্য বটে দক্ষ নাহি করে নিমন্ত্রণ। তার ফল চক্ষে চক্ষে হয়েছে দর্শন।। যজেতে ভাঁহারে যেই পূজা নাহি করে। মুগতি না হয তার জানিবে অন্তরে তাঁহা হতে পৃথিব্যাদি ভূতের উৎপত্তি। ভূতের প্রধান হয় বেতাল স্কুমতি। এই হেতু ভূতপতি তাঁহার আখ্যান। ভূতরত নাম তার ওছে মতিমান্। চরণ পাতাল তাঁর কটি নরধাম। শিরোদেশ বর্গলোক খ্যাত সক্ষরধান।। किक्मपृष्ट वख जाँद अहे एन कांद्रग। किथामा श्रद्धन मांग एमई श्रकानन।। যবে বিধি বাঞ্ছা করে নিজক্তাপরে। মহেশ্বর তার লজ্জা ভাঙ্গে সেই কালে এহেতু বিগতরীড় শিবের আখ্যান। অধিক বলিব কিবা তব বিদ্যমান।। বেদেতে ভাঁহার তত্ত্ব না হয় নির্ণয়। কিরুপে ব্রিব তাঁট্র ওছে বহোদ্য ॥ मामाना त्रमणी हरस वाञ्चिष्टि ठाँहारत । मठा वर्ष्टं अहे कथा कहिन्यू जामारता। কটিল গৌরীর মুখে করিয়া শ্রব। শিবনিনা হেতু পুনঃ উলাত তখন।।

তাহা দেখি গৌরী দতী বিজয়ারে কয়। শুন দখি এই ব্যক্তি অভ্যাগত ২য়॥ স্থানান্তরে যেতে এরে বলই এখন। এখানে থাকার আর নাহি প্রয়োজন॥ শিবনিন্দা যেই করে আপন বদনে। তার সম পাপী নাহি এ তিন ভুবনে 1 শিবনিকা যেই জন করয়ে প্রবণ। ততোধিক পাপী সেই শাস্তের বচন ॥ অতএব যেতে বল এই বিপ্রবরে। শিবপাশে অপরাধী জানিবে ইহারে # শিবদ্বেষী লোক যথা করে অবস্থান। ধর্ম কভু নাহি তথা থাকে বিদ্যুমান॥ দেবীর এতেক বাক্য করিয়া অবণ। জটিল মধুরভাবে কহিল তখন॥ জানি জানি মহাভাগে জগত-জননী। সতা বটে হও তুমি হরের গৃহিণী॥ এত বলি দেবদেব প্রভু পঞ্চানন। নিজমূর্ত্তি দেই স্থানে করেন ধারণ॥ বলিলেন শুন শুন কমললোচনে। আযার গৃহিণী হও পুলকিত মনে। জীতদাস তব পাশে জানিবে আমারে। আমারে কিনিলে তুমি তপদারে রলে॥ হিষালয়-পৃহে এবে করহ গমন। তোমারে করিব আমি ধর্মত এছণ।। ধর্ম সনুসারে যদি বিবাহ না করি। কে জানিবে শান্ত্রবিধি তবে গো সুন্দরী। আদ্যাশতি তুমি দেবি বিদিত ভুবন। দক্ষবজ্ঞে দেহ পূর্বের কর বিসর্জ্জন।। উ इरा भिलन भूनः स्हल हेलानो । विरुधत मक्कल हेरथ हरव राग छाविनौ ॥ এখন আমার বাক্য করহ শ্রবণ। সখী সহ পিতৃগৃহে করহ গ্রম। ছয়ম্বর অনুষ্ঠান করিবেন গিরি। দেই স্থানে থাব আমি শুন গো স্থন্দরী॥ মহত্ত দেখাব আমি স্বার গোচরে। অতএব যাহ শীঘ্র হিমালয়-ঘরে॥ এত বলি অন্তর্ধান হন পঞ্চানন। স্থী সহ গিরিক্তা করেন গ্রম ॥ জটিলসংবাদ ঘেই ভক্তিভরে পড়ে। অথবা শ্রবণ করে একাত্ত তত্তরে॥ শুভগতি হয় তার নাহিক সংশয়। শিবপদে লয় পায় দে জন নিশ্চয় ॥ অতএব শুন কন यन লাধুগ্ণ। শিবপদে মহাভক্তি রাখ দর্বকণ।।

#### সপ্তদশ অধ্যায়।

শিবের কুন্দ্রীর মূর্ত্তি ধারণ ও শিশুরপ ধরিয়া পার্কতীর ক্রোড়ে উপবেশন এবং শিবের উমালাভ।

• বামদেব উবাচ।

> গিরীন্দ্রতনয়া সা তুঁ গড়া হিমবতঃ প্রীং। পিতরং দক্ষরভাতেং কথয়ামাদ পার্কতী॥

वागर्पत करह छन ७८६ जर्भावन । मशीवम मह भोती कर्तुन भगन ॥

🛊 হেমালয়- ১০হে। সয়া স্বানন্দ অন্তরে। কছেন স্কল কথা পিতার গোচরে 🕷 ুক্তামুখে সব কথা করিয়া ভাবণ। কৃতক্ত্য জ্ঞান করে পর্বত-রাজন॥ বিবাহের আয়োজন করে তার পরে। করিলেন বেদী এক মহা উচ্চ করে॥ দুতগণে চারিদিকে করেন প্রেরণ। স্বয়ন্তর বিবরণ করিতে ঘোষণ॥ পৃথিবী স্থ রাজগণে নিমন্ত্রণ করে। পাঠালেন দূতগণে পাতালনগরে॥ স্বর্গধামে দেব-গণে করে নিমন্ত্রণ। স্বয়ন্থর কথা সবে করিল শ্রবণ॥ উমামুখ দেখিবারে উৎকণ্টিত হয়ে। সকলে আসিতে থাকে সানন্দ-ছদয়ে ॥ গরুড়-বাহনে আসে বৈকৃষ্ঠ-বিহারী। নীলোৎপলদলশ্যাম আহা মরি মরি॥ পল্পত্র সম তাঁর युग्ल मयम । मकत-कूप्पल कर्ण स्टाउ ल्या हम ॥ कोर मापकी श्राप्त हम निम-কাদি করি। ধারণ করিযা শোভে চতুক্ত জধারী॥ শিবের আদেশ পেয়ে দেব পদাসন। মরাল-ব'হনে তারা করে আগমন। শারদীয় মেঘ সম গঁজ-রাজোপরে। শচীপতি দেবরাজ তাগ্যন করে॥ বজ অস্ত্র করে তাঁর হয় শোভমান। পারিজাত মালা গলে হয় লম্মান।। সঙ্গে সঙ্গে অনুগামী যত দেবগণ। হিমালয় গৃহে দবে করে আগমন॥ সবার হাতেতে শোভে অক মনোহর। গলে দিব্যমাল্য শোভে মরি কি স্থনর।। কিরীট শোভিছে কিবা সকলের শিরে। কুগুন পোছুলামান প্রবণ-যুগলে। বাস্থকি-প্রমুখ ষত পাতালস্থ্য। একে একে হিম্যুহে করে আগ্রমন।। নর নাগ স্থাগণে পুরিল নগরী। তথকালীন শোভা কিবা বর্ণিবারে নারি। গৌরীর বদনপদ করিতে দর্শন। উৎসুক হইয়া রহে আগন্তুকগণ॥

এদিকে আশ্চর্যা ঘটে শুনহ সকলে। শিবের অন্তুত লীলা কে বুঝিতে পারে॥ উমার পরীক্ষা হেতু করিয়া মনন। আহরপ ধরে প্রভু দেব পঞ্চানন॥ মায়াবলেশিশু এক করেন সৃজন। আহ সেই শিশুবরে করে আক্রমণ॥ পর্বত-উপরে সেই সরোবর-নীরে। চীৎকার করয়ে শিশু অতি উচ্চৈঃম্বরে॥ উচ্চেঃম্বরে কহে শিশু কে আছ কোথায়। অনাথ বালক আমি রক্ষহ আমায় দেখহ কৃত্তীর মোরে করয়ে ভক্ষণ। জলমধ্যে মগ্র হয়ে আছি গো এক্ষণ॥ শুন শুন দেবগণ বচন আমার। ক্রপা করি মোরে সবে করাই উদ্ধার॥ মাতা, পিতা নাহি মম কেই সংসারে। হায় হায় কে রক্ষিবে বিপদ-সাগরে॥ শিশুর এতেক বাক্য করিয়া এবণ। কেই নাহি রক্ষিবারের করিল গমন॥ কিবা দেব কিবা দৈত্য নাগ আদি করে। কেই নাহিক গেল র্মিতে শিশুরে॥ শিশুর রোদনধনি করিয়া এবণ। ক্তুপদে গৌরী দেবী বহিগত হন॥ স্থীদ্বর্য সহ আদি অচিরে বাহিরে। দেখেন শিশুরে মারে ভীষণঃ

'কুট্টীরে ॥রক-রক্ষ বর্লি শিন্তু করয়ে রোদন। তাহা দেখি উমা সতী বিষাদে মগন ॥ ক্জীরে সম্বোধি উমা কহেন তখন। শুন শুন গ্রাহবর আমার বচন॥ ছাড় ছাড় শীঘ্র ছাড় এই বালকেরে। পিতৃ-মাতৃ-হীন শিশু জগত-সংসারে। কুদ্ভীর তখন কহে কিরুপেতে ছাড়ি। আহার পেয়েছি আমি শুন গো হৃদ্ধী ঈশ্বর-ক্লপায় আমি পেয়েছি আহার। কিরুপে পাইয়া বল করি পরিহার॥ ক্ষুধার্ত হইয়া আমি আছি সরোবরে। এখানে আহার বল পার কিবা করে॥ এতেক বচন শুনি পার্কতী তখন। কহিলেন শুন শুন আমার বচন॥ এ হতে দ্বিগুণ খাদ্য দিব হে তোমারে। অতীব স্থবাত্ন তাহা জানিবে অন্তরে। এ দীন বালকে আত করহ মোচন। আমার নিকটে শিশু লয়েছে. গ্রন্থ। তখন কুন্তীর কবে নগেন্দ্র-নন্দিনী। শাস্ত্রজ্ঞান আছে তব অন্তরেতে জানি 🛚 কিবাঁ খাদ্য দিবে মোরে বলহ এখন। কুধাতে কাতর আমি কর 'দরশন॥ এতেক বচন শুনি উমা সতী কয়। শুন শুন ৬ হে আহ তুমি মহোদয়॥ স্বাস্থ্যক ফল মূল করিব প্রদান। য়ত প্রুদিব্য অন্ন দিব মতিমান্॥ এত শুনি দে কুন্তীর কহিল তখন। ফলমূলে কিবা মম আছে প্রয়োজন॥ ফল মূল মূনিজনে করয়ে আহার। অন্ন আদি নরগণ খায় অনিবার॥. রক্ত মাংস খাই মোরা বিধির নিয়ম। ফল মূলে অন্ন মতে কিবা প্রয়োজন।। রক্ত মাংস যদি পাই করিতে ভক্ষণ। তবে ত আমার হয় সভোষ সাধন॥ এতেক বচন শুনি উমা দেবী কয়। সত্য বটে যা কহিলে ওহে মহোদয়॥ ছাগ এক আহারীয় কবিব প্রদান। তুমি এই বালকেরে কর পরিত্রাণ॥ এত শুনি পুনঃ সেই আহরাজ কয়। তোমার এতেক বাক্য সমুচিত নয়॥ এক জনে রক্ষিবারে মারিবে অন্সেরে। উপযুক্ত নহে ইহা জানিবে অন্তরে॥ এত শুনি উদাসতী কহেন তখন। ধর্ম আচরণ কর কুন্তীর-রাজন॥ বালকেরে পরিত্যাগ করহ অচিরে। সেই পুণ্যে ঘাছ তুমি অমর-নগরে॥ তখন কুন্তীর কহে ওগো পদাননে। ধর্মাধর্ম নাহি কিছু আমার ভক্ষণে॥ অধর্ম যে জন নাহি করয়ে কখন। ধর্ম কর্ম তার পক্ষে শাত্রের বচন॥ ধর্মফলে যায় বটে অমর-নগরে। স্থ্যামে আমি বল যাব কি প্রকারে ॥ কিরপে স্বরগপুরে করিব গমন॥ চির কাল পাপকর্ম করি আচরণ। অতএব বালকেরে কিলপেতে ছাড়ি। বিবেচনা করি তুমি বলহ স্থানরী॥ এতেক রচন শুনি উমা দেবী কয়। খন খন আহবর তুমি মহোদয়॥

(यक्त त्रान खान खान खान करा। उन उन धार्यक पूर्ण पररागन प्रान एक्ता एक एक्ता या विताल करा। विताल करा करा खान खान खान वान करा। वान करा विवास करा। वान करा विवास करा विवास करा वान क

অধিষ্ঠান করি আদি হিমর্গিরিবরে। যে সব ক্রেছি তপ একান্ত অন্তর্গে॥ ति निव पूर्व व्यापि क्लिम जिमात्र । तिहे पूर्वा वर्गधारम यां इ दि द्वतात्र ।। স্থরগণ সবে তোমা পূজিবে সেখানে। শীঘ্র করি ছাড়ি দেহ এই শিশুধনে।। এতেক বচন শুনি আহবর কয়। পর্য সন্তুষ্ট মম হইল হৃদয়।। লহ লহ বালকেরে লহ ত্রা করি। চলিলাম তব বাক্যে অমর-নগরী ॥ এভ বলি জলমধ্যে হয় ,নিমগন। দেখিতে দেখিতে হয় অদৃশ্য তথন।। এদিকে পার্ব্বতা সন্তী সেই শিশু লয়ে। অন্তঃপুরে বসে আসি কোলেতে করিয়ে॥ মনে মনে তিত্তে সভী এই শিশুবর। শিবের স্মান করি ন্যুন-গোচর॥ র্ দিকে উমার কোলে দেখিয়া শিশুরে। শচীপতি অস্ত্র ধরে মহাক্রোধ-ভরে॥ তাহার বিনাশ হেতু করিয়া মনন। ইন্দ্রদেব করে অস্ত্র করেন গ্রহণা। তাহা দেখি কটাক্ষেতে শিশুবর চায়। দেবরাজ হয়ে রহে শুদ্ধিতের প্রায়॥ খাসৰে গুলিত দেখি যত দেবগণ। আশ্চৰ্য্য ভাবিয়া দৰে বিশয়ে মগন। ভয়াকুল দেবগণে করি দরশন। ধাানযোগ অবলফি দেখে প্রাসন।। ধ্যানেতে সকল দেব জানিশেন মনে। তখন শিশুরে স্তব করেন বিধানে॥ জগতের নাথ তুমি শুনহ শক্ষর। দেবরাজে রক্ষা কর হুছে দিগপর॥ ব্রদার এতেক স্তব করিয়া এবণ। শিশুরূপী ম হেশ্বর অন্তর্হি ক হন। ছার পর পর্যোনি ডাকি দেবগণে। কহিলেন শুন শুন কহি স্বা স্থানে। আমরা সকলে হই অতি মূঢ়মতি। জানিতে নারিত্র হায় দেব প্রপতি। উমার কোলেতে ছিল যেই শিশুবর। শিশু নহে তিনি হন নেব মহেশুর। শীঘ্র ভাঁরে মনে মনে করহ ফরণ। একাত্ত অন্তরে লও ভাঁহারে শরণ। वुक्षिरणार्य कार्या नके कतियां ह मरव। এकां उ अष्टरत এरव ভाव महे निर्ना বিধির এতেক বাক্য করিয়া শ্রবণ। শিবেরে মরণ করে যত দেবগণ॥ এ पिटक शार्वि है। में हो विषश वर्षा । जयादि महाधि करह छन स्टूला हत्न। ণক্ষর লাগিয়া তপ করিতু ছকর। হইলেন তিরোহিত দেই দিগদর॥ ফুদ্রীর-হাতেতে রক্ষা করিনু শিউরে। হতনে রাখিনু তারে বক্কের উপঁরে॥ ভাহারেও হারালাম হায় হায়-হায়। তপভা বিফল মঁম কি কব তোমায়॥ কি আছে কপালে যোর বুঝিবারে নারি। দৈব প্রতিকূল মম জানিবে স্নরী এত বলি গিরি সূতা তপস্থ। কারণ। পুন্ত কাননে ইয়তে করেন মনন॥ अस्टर् कानिय़ा जोश (पव श्रकानन। उँगांत माक्तारक व्यामि पिटनैन पूर्णन। উথারে আলিশিয়া কহে দেব মহেশর। কি হেতু যাইৰে আর কানন ভিতর॥ শানিই আ্নিয়াছিত্র ক্ত্রীর আকারে। শিতরপে বর্গেছিত্ব তব অংশাপরে।

মহাধেৰ বলি থোরে জেনো ওগো দতি। কেন আর বন্দাবে করিবে বস্তি ज्यमात्र कर्न उर रहनी अउदिता वियोग ना ताथ जात जायनात गरन !. এইরেপে প্রবোধিয়া দেব পঞ্চানন। বিধানে উমারে পরে করেম আহণ। বিধানে উমারে প্রভু বিবাহ করিল। দেই কালে জগতায় রমণীয় হৈল 🕷 ক্লতক্ষত্য এতদিনে হলোহিমবান। মনম্বথে হিম্পিরি করে কত দান॥ উমারে সম্বোধি কহে মেনকা তখন। ধল ধল তুমি সতি এ তিন ভূবন ॥ পুণ্যবতী তব সম কেবা আছে আর। শিবেরে পাইলে পতি যিনি বিশ্বাধার। প্রিত্র আমার দেহ হলে। এতদিনে। হিয়ালয় ক্রতক্রতা হইলেন মনে। শিবের চরণ-রেণু গৃহেতে পড়িল। পরম পবিত্র গৃহ ভাহাতে হইল। এতেক খচন শুনি দেব মহেশর। প্রসন্ধ-বদনে প্রভু করেন উত্তর ॥ সর্বদা সকর टलारंक रलव रेलच्छान्। श्चिमलञ्जानी नारम कति मस्याधन॥ আরাধন। জামারে গন্তরে। মহাত্থী হব তাহে কহিবু স্বারে॥ স্কাদা তোমাতে গিরে করিব বসভি। মাবে মাঝে কৈলাদেতে হবে অবস্থিতি 🛊 স্ক্ষ্ডের ্রভাগী ছবে হিমাল্য। আমার বচন সভ্য জানিবে নিশ্চয় ॥ এত বলি পঞ্চানন মৌনভাব ধরে। ব্রকাদি দেবতাগণ স্তবপাঠ করে॥ বেদ-বাক্যে শ্রুতিবাক্যে কর্ষে স্তবন। স্তব শুনি হুট হন দেব পঞ্চানন।। আনন্দ উৎসবে পুরী কোলাছণময়। নৃত্য গীত হানে স্থানে নানামতে হয়॥ পুষ্পর্যি শ্যু হতে পড়ে থন ঘন। ছুনুভির বাদ্য সং। হয় যে বাদন। এইরপে শুভ কার্য্য সমাধা হইলে ।দেবগণ চলি যান নিজ নিজ হলে ॥মূনি ঋষি সবে করে ষ্কানে গমন। গোরী সহ শিব তথা বাহন তখন। ভক্তিভরে এই কৃথ ८एई क्रम छत्न। नक्षत-अन्वी भाग्न तम क्रम किराम। भीमिवभूतान-कथा अविद कारिनो । ভिक्तिভत यि एत नत वा तम्भी ॥ यत्नत वामना शूर्व अवनाः হয়। পাতক তাহার দেহে কভু নাহি রয়।

# ञ्कोषण अधाः ।

তারকাম্বর নিপাত ও মর্ণোৎপত্তি।
বামদেব উবাচ।
পার্কত্যা সহ:শভুস্ত রেমে হিমবতো গৃছে।
নানাকামকলাভিশ্চ দশব্যাণি পঞ্চ ।
শার্কতী সহিত শভু থাকি হিমপুরে। উনা সহ নানামতে নানা লীলা কর্মে।

শক্দণ বর্ষ কাল এইরূপে যায়। ধরণী একান্ত ক্লিট হলেন ভাছায়॥ ভাঁছাদের ভার সহ্য করিবারে নারি। হুর্যাপাশে উপনীত ধর্ণী মুন্দরী। করযোড় করি তথা করিয়া গমন। একান্ত অন্তরে লন ভাস্করে শবণ।। তাঁহারে আগত দেখি দেব দিনমণি। কহেন কি হেতু হেথা তুমি গো অবনী॥ মলিন বদন কেন করি দরশন। সর্বভার সহ ভূমি বিদিত ভুবন।। এত ভনি বরা সভী কহে ধীরে ধীরে। মম আগমন ছেতু নিবেদি ভোমারে। শিবেরে বহিতে আমি আর নাহি পারি ভোঁর পদাঘাত আর সহিবারে নারি শিবা সহ রতি করে দেব পঞ্চানন। পঞ্চদশ বর্ষ ক্রমে হয়েছে যাপন। অদ্যাপি নির্ভ নাহি হতেছে তাহাব। আমার যাতনা কথা কহিনু তোমার॥ এত ভানি সুর্যাদের কহেন তখন। যা বলিলে সত্য নটে ছঃখের কারণ॥ অতএব যাহ তুমি ইন্দ্রের গোচরে। উচিত উপায় ইন্দ্র করিবে অটিরে॥ স্ব্যের এতেক বাক্য করিয়া প্রবণ। পরা দেবী ইন্দ্রপুরে করেন গমন। ছঃখের কাহিনী কহে স্বার গোচরে। শুনিলে স্কল দেব প্রবণ-বিবরে॥ ভার পর পরামর্শ করি দেবগণ। হিমালয়-শিখরেতে কবেন গমন॥ তথা গিয়া শুব করে পার্শ্বতী-হরেরে। শুব শুনি লক্ষা পান মহেশ অন্তরে॥ পুহ হতে বহিগত হয়ে পঞ্চানন। দেবগণে এই বাক্য কহেন তখন॥ মম রেড বিসর্ভিব বল কোন্ হানে। এত শুনি দেবগণ কছেন দহনে॥ শুন শুন বহ্নিদের মোদের বচন। শিরোপরি তুমি রেভ করহ ধারণ॥ এত **७**नि (त्रेष्ठ जार्ग करत मरस्थत । मर्गानिथार्यार्ग जाहा धरितन जनन ॥ তথাপি স্ক্ম নাহি হইল ধারণে। অবিলম্বে ফেলি তাহা দেয় শরবনে॥ প্রেই হেতু শরজ্ঞা ইহার আখ্যান। তার পর শুন শুন ওবে মতিমান্॥ **শর্বন হতে তাহা লইয়া পবন ৷ ক্**ত্তিকা ছয়ের পাশে করিল গমন॥ ছয় ভাগ করি রেত সানদ অন্তরে। ক্রতিকাগণের গর্ভে প্রবেশিত করে॥ ভাছারা ধরিতে নাহি হইল সক্ষ। কন্দ স্থান দিয়া তাহা করে নির্গমন॥ সেই হেডু ক্ষন্দ নাম হইল প্রচার। কাষ্ঠকোষে সেই রেড রাখি পুনর্কার॥ किनिन क्रांखिकारान शकात उपरत । धार्च्यू कार्चिक नाथ महे निर्ध धरत ॥ याधाष्ट्रत नाम रस अरे रम कांत्रण। जात शत अन अन रम रस प्रेन ॥ कार्छ-কোর एत्रभन করি পদ্মযোনি। অবিলম্বে তুলি তাহা নিল্নে তখনি ॥ অখ-यूक शृतिभाष्ठ करतन ज्यान । यथा य गानक जारह करतम पर्यन । प्राप्तन লোচন তার অতি শোভা পায়। বারো হাত শোভে অঙ্কে মরি কিবা তায়॥ (महे पिटन मटहा९मव कंट्र शवामन । अप्राणि उद्याप द्य धर्माय पर्यन ॥

তার পর পদ্মযোনি সেই শিশুবরে। সেনানীপদেতে বরে দানন্দ অন্তরে॥ আনন্দে দিলেন তারে ময়ূর বাহন। কোটিসূর্য্যসম শক্তি।করেন অর্পণ। আরোহণ করি রুদ্দ ময়ুর বাহনে। শক্তি উত্তোলিত করি আনন্দিতমনে 🕒 তারক অসুরে বধ করিবার তরে। जिन्छ रेन्ग नर युद्धशेखा करता। সেনা সহ কার্ত্তিকেয় করেন গমন। তারক অস্থর তাহা করিল দর্শন ॥ তাহা দেখি ক্রোধভরে সিংহনাদ করে। সমুদ্যত হয় ক্ষদে বধিবার তরে॥ ক্রমে দেঁতে যুদ্ধ বাধে অতি বিভীষণ। ছয় বাণ দৈত্যরাজ মারিল তখন 🌬 অর্দ্ধচন্দ্র বাণে ভাষা করিয়া ছেদন। দৈত্যবক্ষে দশ বাণ মারে ষ্ড়ানন॥-ভাহাতে পীড়িত হয়ে দানব-প্রবর। নিজ করে মহাশ্ল ধরিল সত্তর॥• সেই শূল নিক্ষেপিল কার্ত্তিক উপরে। নিজশূলে স্তন্দ তাহা ভন্মীভূত করে ॥। তাহা দৈখি দৈত্যবর হয়ে ক্রেমন। কার্তিকে ব্ধিতে করে খড়গ এছ্ণ॥, পরশ্বধ অত্তে তাহা ছেদিয়া সত্তরে। দানবের হস্ত ক্ষদ্দ কাটে স্বরা করে॥, ছিন্নভুজ হয়ে দৈত্য রোষেতে মগন। পরিঘ লইয়া তাহা করিল কেপণ।।. অব্ধিচন্দ্র বাংণ গ্রাহা কাটিয়া সত্তর। কেলিলেন দৈত্যে ক্ষন্দ ধরার উপর ॥+ পুনশ্চ শক্তি মারে তার বক্ষঃস্থলে। নৃত্যু করে কার্দ্তিকেয় আনন্দের ভরে।। দানব করিতে থাকে রুধির বমন। তাহার ভরেতে ধরা কাঁপে ঘন ঘন॥ পুস্পর্ক্তি পড়ে কত জন-শিরোপরে। ত্কুভির ধনি মত দেবগণ করে॥ সারুবাক্যে ধন্মবাদ দেয় দেবগণ। অঘ্য আনি সবে ক্সন্দে করে সম্পূর্ণ 🏗 নানামতে কার্তিকেরে করয়ে পূজন। আনদে মগন হয় যত দেবগণ॥· শিবরেতে থেই রূপে জনমে কুমার। বলিনু সে সব পুতে নিকটে ভোমার॥ আরো এক কথা বলি করহ শ্রবণ। অগ্নি হতে েত লয় প্রন যথন॥ অর্দ্ধেক তখন বায়ু এছণ করিল। অর্দ্ধেক আগ্নির মধ্যে অবস্থিত ছিল। অগ্নিস্থিত রেত হতে জনমে কাঞ্চন। শিবের মাহাল্য এই করিন্দু কীর্ত্তন॥ শিবের মহিমা বল কে বলিতে পারে। ছেন জন নাহি কেহ জগত-সংসারে 📭 गर्दभार मूल इत महे महाजून।। পুরাণের এ অধ্যায় পড়ে যেই জন। ইহকালে সুখে সেই করে অবস্থিতি। অন্তকালে হয় তার স্কর্ণলোকে গতি॥ এ শস্ত অন্তরে ইহ; করে অধ্যয়ন॥ কত্রগণ যৃদি হয়ে ভক্তিপরায়ণ। রণজয়ীহয় সেই নাহিক সংশয়। কহিছ নিগুঢ কথা ওহে মহোদয়॥ শুনিলে অম্বর পৃত ওছে তপোধন॥ व्यक्त कोहिनी अहे कतिन वर्गन। সদা ভক্তি রেখো সেই শিবের চরণে। কোন ভয় না রহিবে এ তিন ভূবনে ইহ পর উভ লোকে লভিবে কল্যাণ1 অংক ব'লব কিবা তব বিদ্যামান ১

## श्वर भिंव भूताने।

পরম ভকতি তব আছে শিবোপরে। শিব সম তুমি মুনে জানিশু অন্তরে । তোমার সহিতে মম হতেছে কথন। ইহাতে হইল মম সন্তোষিত মন ॥ অধিক বলিব কিবা ভোমার গোচর। জগত-ঈশ্বর সেই দেব দিগদ্বর ॥ ভাষার সমান নাহি এ তিন তুবনে। সদা মন রাশ মুনে তাঁহার চরণে ॥ মোক্ষগতি হবে তব নাহিক সংশয়। শিবের প্রসাদে হয় ভববদ্ধ কয় ॥ শিবের প্রসাদে হয় ভববদ্ধ কয় ॥

## छेमविश्न अधारा।

कार्जिटकरम् जोर्थयाजा, अवः भर्तारमत योवताजा ७ भन्भिज्ञिना ।

. বামদেব উবাচ। শৃণু তুণ্ডে প্রবক্ষ্যামি জনকৌ তুকমুওনং। শিবস্থনোর্গণেশস্থ স্কন্দ্রমান উর্দ্ধতঃ॥

তুতি কহে শুন শুন ওহে ঋষিবর। ধর্মকথ। শুনি হলে। প্রিত্র জন্তর। , গণেশের বিবরণ শুনিতে বাদনা। বর্ণন করিয়া ভাছা পুরাও কামনা।। **এত শুনি বামদেব কছেন তখন। শুন শুন তুতি** শ্বেষ করিব বর্ণন ॥গণেশেঃ জন্মকথা কৌতুহলময়। বর্ণন করিব তাহা ওন মহোদয় ॥ কার্ত্তিক জনিতে পরে দেব পঞ্চানন। উমা সহ ধরাধানে করে আগমন॥ ক্রীড়া হেতু যান এক বনের ভিতরে। নানাজাতি পুষ্ণাতরু কিবা শোভা ধরে॥ কপোত শারিকার্ন আছে অগণন। কোকিলেরা কুহু কুহু করে সর্বাঞ্চ। দিব্য পুষ্ণরিণী সব শোভে চারিভিতে। সেই বনে রহে শিব উমার সহিতে। একদা উমারে ত্যাগ করি পঞ্চানন। কানন-অমণে ঝান লয়ে গণগণ। ্ এদিকে পার্বাতী দেবী একান্ত অন্তরে। হরিদ্রাপুত্তলি এক বিনির্দিত করে। পুরুষ-আরুতি এক করিয়া গঠন। জীবদান করিলেন তাহারে তথন।। ভার পর কহিলেন পুরুষ-প্রবর। আমরে বচন ধর আপন অন্তরে॥ যতকণ স্থান আমি সলিলেতে করি। তাবত থাকহ তুমি হইয়া ছুয়ারী॥ ্ এত বলি স্নান হেতু করেন গমন। দারীরূপে সে পুরুষ রহিল তখন। क्षीम जिन्न नत्र जाननात करत। धकां छ ज्ञाउत रमें हे दात तका करत॥ नकारल शकानन करत जागमन। मरक ,मरक जन्मामी अभरवंत्र ग्रन ॥ नेशा (क्रियन भिव छैं। होत ह्यारत । जिन्नी शुक्य अक दात तका करत ॥ দে পুরুষ শিবপথ ক'রল রোধন। শিবেরে গৃহেতে যেতে না দেয় তথন।
তাহা দেখি পঞ্চানন অতি রোবভরে। পরত আঘাত করে পুরুষ-প্রবরে॥
তাহাতে চুর্ণিত হলো মস্তক তাহার। ঘন ঘন রক্তংগরা বহে অনিবার॥
দেই রক্তে শোননদ বাহিত হইল। চিরদিন তরে ভূমে প্রত্যক্ষ রহিল।
তার পর অন্তঃপুরে শশে পঞ্চানন। সকাঞ্চ রুধিরে লিপ্ত হ্য দরশন।
উজ্জ্বল পরত করে কিবা শোভা পায। হেনকালে গিরিস্থতা আসেন তথায়
তাহা দেখি জিজ্ঞাসিল দেব পঞ্চাননে। এ কি একি প্রভু শীঘ্র কহ মম স্থানে।
তথ্ন উত্তর করে দেব মহেশর। ত্ব্যারে আছিল এক পুরুষ প্রবর।
আগমনপথ রুদ্ধ সেই জন করে। এ হেতু পরত মারি তাহার উপরে।
তাহাতে মন্তক চুর্ণ হয়েছে তাহার। সে রক্তে পরত আর্দ্র হয়েছে আমার।।

°এতেক বচন শুনি পাৰ্কতী তখন। কহিলেন শুন শুন গুহে পঞ্চানন॥ কি করিলে জগন্নাথ দাকণ করম। সে জন জাশিবে হয় আমার নন্দন। হরিক্রা দ্বারায় তারে করিয়া নির্দ্বাণ। গিয়াছিনু তার পর করিবারে স্নান। পুরহন্তা হলে খুমি ওহে পঞ্চানন। অকীর্ত্তি রটিবে তব এ তিন ভূবন। অতএব মম বাক্য ধরহ অন্তরে। জীবিত কবহ প্রভু তাহারে অচিরে॥ এতেক বচন ওনি দেব পঞ্চানন। কণকাল মৌনভাবে করেন চি**ন্তন॥** তাগারে চিধিত দেখি দেবী মহেশ্বরী। কহিলেন শুন শুন এংে ত্রিপুরারি॥ পুত্র হতে শ্রেষ্ঠ আর নাহি ধরাতলে। পুত্রমুখ দেখি লোক শোকতাপ ভুলে এত এব পু ভ্রদান করহ আমায়। এত শুনি মহেশ্বর কহেন তাঁহায়॥ নির্লিপ্ত আমি হে দেবি জগত-সংসারে। যে।গতপ মম শক্ত জানিবে অন্তরে। পুত্র লয়ে মোর কিবা আছে প্রযোজন। অতএব শোক তাপ করহ বর্জ্জন॥ এত শুনি মহেশ্রী বিলয় অন্তরে। কহিলেন পুনরায় দেব মহেশ্রে। শুন প্রভু নিবেদন করি যে তোমারে। পুত্র হতে নাহি কিছু জগত-সংসারে। এত বলি ছারে গিয়া করেন দর্শন। ছিম্মণিবা দে পুরুষ ধরায় পতন। তাহারে লইরা কোলে কান্দিতে কান্দিতে। পুনরায় আদে হৈনী শিবের তাকাতে।। বিনয় করিয়া কহে ওগো পঞ্চানন। যদি স্বেহ মম প্রতি কর অনুক্।। পুত্র ধন দেহ গোরে করু।, বিতরি। নতুবা ত্যজিব প্রাণ ওছে ত্তিপুরারি ॥এতেক বচন শুনি দেব পঞ্চানন।রক্তবর্ণ বস্ত্র এক করিয়া এছণ।। পুটুরী করিয়া তাহা দিলেন ফেলিযে। উমার অক্ষেতে পড়ে নেই বস্ত্র গিয়ে॥ বলিলেন মুহেশ্বর শুন গো পার্বেডী। লহ এই লহ এই তোমার সন্ততি॥ পুল্ধনে স্থতনে ক্রহ প্রালন থেহভরে পুল্মুখ ক্রহ চুছন॥

উপহাস ভাবি তাহা পার্বভী স্থনরী। মনে ভাবে বস্ত্র সয়ে এবে কিবঃ কৈরি॥ উপহাস করে মোরে দেব পঞ্চানন। বিফল জীবন মম বিফল জসম॥ এত ভাবি কণকাল অধোমুশে রয়। আশ্চর্য্য হেরিয়া পরে হলেন বিষয়। - इक्ट वर्ग वक्ष नाहि बिद्र शित्र। नाहे। অপূর্ব তনয় কোলে দেখিবারে পাই। আশ্তর্য হইর। দেবী পার্বে তা তখন। পঞাননে নান মতে করেন স্তবন। ' সেই পুত্র গণপতি নামেতে বিখ্যাত। বিদিত আছয়ে ইহা অখিল জগত॥ ্দিরমুখ দেই পুল বেরপেতে হয়। বর্ণিত হরেছে পূর্বের দেই সমুদয়। উন শুন তার পর আশ্চর্য্য ঘটন। শুনিলে হইবে তুওে সবিশয়-মন। - একদা কৈলাদে বিদ আছে পঞ্চানন। বামেতে বদিয়া গৌরী পুলকিত ूमन ॥ कोर्डिक शर्मा (काँटि আছেন विशिष्ट)। जनूहत श्रेष आहि सानम 🚜 বাদয়ে॥ তখন শঙ্কর কহে শুন গো পার্বতী। লভিয়াছ তুমি এই ছুইটী ু**রত্তি। আ**মার গণের পতি কোন জনে করি। সেই কথা বল শীদ্র প্রম-্ষিশ্বরী । এতেক বচন শুনি কছেন পার্ব্বতী। সেনানী হয়েছে এই কার্ত্তিক · স্থমতি Ir তুই কাজ নাহি দিব জানিবে ইহারে। গণপতি করি প্রভু গণেশ দেবেরে॥ এত শুনি কার্ভিকেয় কহেন তখন। শুন শুন ওগো মাত মম বিবেদন।। জ্যেষ্ঠপুত্র আমি হই জানহ অন্তরে। গণপতি হব আমি শাস্ত্রের , **বিচারে ॥ এত শুনি** উমাদেবী কহেন বচন।শুন শুন মম বাক্য 'ওরে বাছাধন ্রপুণাবলে গণপতি হইবারে পারে। বিনা পুণ্যে এই পদ বন কোথা নিলে॥ ্র<mark>িজারতবরবে আ</mark>ছে যত তীর্থ স্থান। সে সবে ভ্রমিবে হেই ওহে মতিমান। এ পদ পাইবে সেই জানিতে নিশ্চয়। মনে মনে ইছা ভাবি কর যাহা হয়॥ এতেক বচন শুনি কার্ত্তিক তখন। তীর্থযাত্রা হেতু করে অচিরে গমন॥ '**আরোহণ করি দেব** ময়ূর-উপরে। পিতৃ-মাতৃ-পদে নতি করি ভক্তিভরে॥ তীর্থমাত্রা হেতু পরে করেন গমন। এদিকেতে শুন শুন পরের ঘটন॥ ্রিপিতৃ-মাতৃপদে নতি করি গজানন। বিনয়ে জিজ্ঞাসা করে মম নিবেদন॥ **ভীর্থাতা ধ**রাধামে যেই জন করে। কিবা পুণ্য হয় তার,বলহ আমারে ॥ পিতৃ-মাতৃ-নমস্কারে কিবা ফল হয়। শুনিতে কৌতুকী বঁড় হতেছে ছাদয়॥ এত ভানি পঞ্চানন কছেন তখন। সাধু সাধু ভাল প্রশ্ন করেছ এখন॥ বলিব এ সৰ কথা তোমার গোচরে। সমাহিত হয়ে শুন একাপ্ত অন্তরে । সর্বাতীর্থ ,গদনেতে যেই ফল হয়। তা হতে অধিক পিতৃদেবায় बिक्य ॥ পিতৃদের। ষেই জন করয়ে সাধন। তাছার, উপরে তুষ্ট যত দৈবগণ।। পিতাগাতা-ुत्नवा करव राष्ट्र माध्यकि। विकृत समाने त्महे ७८६ मुहामि। सुर्वाकीर्थ

শাল হয় পিতৃ-সেবাবলে। অধিক বলিব কিবা ভোষার গোচরে ॥ রাজস্থয়সহত্রেতে যেই ফল হয়। পিতৃমাতৃ-সেবাফলে অধিক নিশ্চয় ॥ সহস্থা,
সহস্র বিপ্রে করালে ভোজন। বে ফল ভাহাতে পায় সেই সাধুজন ॥ পিতৃমাতৃ-সেবাফলে ততোধিক ফল। শাস্থের বিধান এই ওহে বিজ্ঞবর ॥ গ্রায়,
গঙ্গা কুরুক্ষেত্র নৈমিন পুলর। ইত্যাদি যতেক তীর্থ ভারত-ভিতর ॥ পিতৃমাতৃসেবাপাশে কোন তীর্থ নয়। শাস্থের বিধান এই জানিবে নিশ্চয় ॥ ফর্পিক্
লোকে যত তীর্থ আছে বিরাজিত। তাহে স্নান কৈলে হয় যে ফল বিহিত ॥
পিতৃ-মাতৃ-সেবীগণ সেই কল পায়। আরো এক কথা বলি শুনহ ভোষায়॥
পূর্বকালে প্রজাপতি দেব পদ্মানন। তুলাদতে তৌল করি করেছে দুর্শন ॥
পূর্বকালে প্রজাপতি দেব পদ্মান। অত্য দিকে পিতৃসেবা বিহিত বিধানে ॥
পিতৃনৈবা সেই কালে গুরুতর হয়। কহিত্ব ভোষার পাশে ওহে মহে। দয় ॥

এতেক বচন শুনি গণপতি কয়। নিবেদন করি পিত তুমি মহোদয়া। জননীর মুখে পূর্বের করেছি প্রবণ। দর্বেতীর্থ দরশন করে যেই জন॥ তীর্থেরু মাহাত্ম্য ২০ জানিবারে পারে। উপযুক্ত পুত্র সেই শাস্ত্রের বিচারে **॥গণপতি** দেই পুত্রে করিবে নিশ্চর। অতএব নিবেদন শুন মহোদয়॥ পিতৃমাতৃপদ্ ব্দামি করিছি দর্শন। ইহার মাহাত্ম আমি করিনু প্রবণ ॥ অতএব সর্বতীর্থ। হয়েছে জামার। এখন উচিত যাহা করহ বিচার॥ এত শুনি পঞ্চানন ক্ৰেন তখন। শুন শুন মম বাক্য ওচে বাছাধন॥ সত্য বটে তব বাক্য নাহি তাহে আন। যুবরাজ হলে তুমি ওহে মতিমান্। গণ-অধিপতি এবে করিনু ভোমারে। সকলে অজেতে পূজ। করিবে োমারে। তোমা না পুজিয়া অত্যে করিলে পূজন। বিফলা হইবে পূজা ওহে মহাত্মন। এত বলি গণেশেরে দেব পঞ্চানন। গণ-অধিপতি-পদ করেন অর্পণ॥ পারিজাত্দালা দেন দেব গণেশেরে। রক্তবর্ণ অনুদেপ দিলেন সাদরে॥ উত্তম বসন ভাঁরে করেন প্রদান। দুই ভাষ্যা দেন তাঁরে মহেশ ধীমান্। দুই ভাষ্যাগর্ভে হয়, দ্বাদশ তনর। ভুবনে বিদিত আছে সেই পুত্রচয়॥ একের গর্ভেতে হয় চারিটী নন্দন। আট পুত্র অন্ত ভার্যা করে উৎপাদন॥ কনিষ্ঠার গর্ভে হয় छातिष्टी नुम्मन। ভাহাদের নাম বলি কর≺ প্রবণ॥ লম্বোদর ও বিকট বিশ্ব-রাচ পরে। চতুর্থ সে ধূদ্রবর্ণ জানিবে অন্তরে॥ এই চারিজনে যদি করয়ে স্মরণ । বিশ্ব রাশি তার নাহি: থাকে কদাচন॥ গণেশ-রতান্ত এই করিনু বর্ণন। ভক্তিভরে যেই জন করয়ে প্রবণু॥ কিন্বা অধ্যয়ন করে একান্ত অন্তরে। विष्वतानि नाहि जारम जाहात शाहरतं॥ श्रतारमत मात अहे जैनिकश्रताम।

পড়িলে শুনিলে অত্তে যার যোক্ষাম ॥তাই বলে ছিজ কালী একান্ত অন্তরে। একান্ত অন্তরে সদা ভাব পরাৎপরে।

## विश्म अधाय।

ষড়াননের বিবিধ তীর্থ ভ্রমণ।
বামদেব উবাচ 1

জতোহং তে প্রবক্ষ্যামি সর্ব্বপাপবিনাশিনীং।
তীর্থবাত্রাং মহাদেব বচনাচ্ছরজন্মনঃ॥
তত্র মাতৃর্ব চঃ শুজা তীর্থবাত্রাসমূত্তবং।
পুণ্যং কর্ত্ত্বং মধ্যনানীরাজগাম মহীতলং॥

<table-cell-columns> বামদেব কৰে শুন ওছে ছপোধন। তীর্থযাত্রা তব পাশে করিব কীর্তন।! সর্ব্বপাপ বিনাশিত ইহাতেই হয়। নাহিক সন্দেহ ইথে জানিবে নিশ্চয়॥ শাতার বচৰ শুনি দেব ষড়ানন। ভীর্থক্ত পুণ্যরাশি করিতে অর্জ্জন ॥ ধরাধামে । শাগ্রমন করেন সত্রে। প্রথমতঃ উপনীত শ্রীগঙ্গার ছারে। সেই খানে युश्राविधि कतिलान स्नाम। प्रिथिलन क्रमांक्रिस क्रय लेकियान्।। उथा वा कि कि एक अपित । इतिপুরে যায় সেই জানিবে অভিমে॥ কর্মার তীর্ণেতে পরে করেন গমন। যথাবিধি স্নান আদি করিয়া সাধন॥ ্রিপাই জল পান করি অতি ভক্তিভরে। শত সংখ্য ধেনু দান করেন সাদরে।। 綱 র নারায়ণ তথা করিয়া দর্শন। তার পর তপোবনে করেন গমন।। পুর্বেইতে রাবণ হেথা মহাতপ করে। তপোবন নাম তাই হয়েছে ভূতলে।। সেই স্থানে যথাবিমি করি স্থানদান। চলিলেন কৌশিকীতে ক্ষন মতিথান্।। হৈ হাঁত দেবতা আর যত মুনিগণে। প্রণিপাত বন্দনাদি করেন বিধানন। সরষ্ औँ র্ণেতে পরে করিয়া গমন। ত্রত্য দেবতাগরে করেন দর্শন । এই 'ইছিন যেই জন করে স্থান দান। রামের বরেতে সেই পায় মোক্ষধাম॥' ক্রার পার প্রয়াগেতে করেন গমন। তীর্ণরাজ বলি ভাষা বিদিত ভুবন। मिर्जामिक क्रांल उथा कतित्वन क्षान । (पत्ठा উদ্দেশে पास कर्ह मुडिमान्।। भार्धार्युतः (महे खाटन करतन पर्णन। जमः था जंमः था मुनिः करत निक्रीकन।। कालिमी मृद्धि भेषा अहे विवादात्न । शन्तिमां युपी हत्त वरह कूलगतन ॥ প্রাবার মান্তান্ত্রা করিবে বর্ণন। তিন্যান সেই হানে রহে মড়ানন।।

'রিকের্ত্তে তার পর চলিল ধীমান। পুলহ-আশ্রম যার জগতেতে নাম।। र्मर (मरवरत जथा ज्याता गंजरन। छेननीज रन नरत त्रीजमी-मपरम ■ সই ছানে যথাবিধি করি স্থান দান।গণ্ডকী বিপাশা পরে হেরে মতিমান্॥ ' शंत शंत लान मटक करतन गमन। मरहशत एकरत उथा करतन क्र्यन ॥ াণপতি দরশন করিয়া তথায়। কাশীধামে তার পর ষড়ানন যায়॥ তথায় বিরাজ করে দেব বিশেশর। উত্তরবাহিনী গঙ্গা বহে কলকল। এমিশি-कर्निक विनि जग्र - जननी। ज्थाय विज्ञां करत दिवमशामिनी॥ कामीत গাহাত্ম্য কেবা বর্ণিবারে পারে। সেই স্থানে ষড়ানন স্থান আদি করে॥ ভক্তিভরে বিশেশরে করেন দর্শন। তার পর গয়াধামে করেন গমন॥ दथाविश्वि कार्या जथा कतिया माधन। मागत-मक्तरम भरत करतन भगन 🛊 তথার পবিত্র জলে করিলেন স্নান। মাধবেরে দরশন করেন ধীমান্। পঞ্চ বর্ষ দেই স্থানে থাকি ষড়ানন। বিজয় ক্ষেত্রেতে পরে করেন গমন 🛊 বৈতরণী নদী তথা কিবা শোভা পায়।ক্রোড়রপী হরি তথা বিরাজে তাহায়। হরি আর রেফ বেদী করি দরশন। একানদীতীরে পরে করেন গমন। यथाविधि स्नान जथा कति महामि । পर्यामुङ जीर्थ পत्त कतित्वन गि ॥ একাজকাননে পরে করেন গ্রামন। এই স্থানে রাসলীলা করে পঞ্চানন 🛊 🤻 গোপবেশ ধরি পূর্ব্বে দেব পশুপতি। করেছিল রাসলীলা সহিতে পার্ব্বতী ॥ এই সব দরশন করি ষড়ানন। ক্রমে ক্রমে অন্য তীর্থে করেন গ্রমন ॥ সর্মতী চক্রভাগা ঋষিকুল্যা আর। মহোদধি নীলাচল পুণ্যের আধার॥ মহেক্র পर्वा दिशी शका जीमतथी। मिलक-वर्जन वाकि नारिक व्यवि॥ अहे मंदे তীর্থরাশি করি দরশন। বেঙ্কট পর্বতে পরে করেন গমন॥ কামকোটি তথা কাঞ্চী নহাকালেশর। এই সব স্থানে যান সন্দ গুণধর। সর্ব্বপাপ-বিনাশিনী কাবেরীতে পরে। তথা হতে রক্ষণৈলে রক্ষনাথে হেরে॥ ঋষি-ভাদি দরশন করি ষড়ানন। মথুরানগরে পরে করেন গমন॥ যান সৈত্বৰ রাদেখনে । রাদেখন লিকে নতি করে ভক্তিভরে ॥ ক্রডমালা তাত্রপূর্ণী আর কুলাচল। মলয় পর্বত আর কোলার্ণব জল।। দওক-অরণ্য তাপ্তী পয়োঞ্চীতে পরে। উপনীত হন কম ভক্তি সহকারে॥ এডাস ও কুরুকের রেবা নদী আর। এই সব তীর্থে যান ক্ষদ গুণাধার। তীর্ণরাশি করি দরশন। পুনশ্চ প্রয়াগতীর্থে করেন গদন ॥ এই সব তীর্থ র রাজি ভামি ক্রমে ক্রমে । প্রত্যাগড় হন জাসি কৈলাস-ভূরনে ॥ মর্ণেশের স্প্রগণে করি দরশন। জিজ্ঞাসা করেন সবে স্থমিয় বচন ॥ ভোমরা কাহার। ত্ও কর ত্বরা করি। কি তেতু রয়েছ এই কৈলাস নগরী। 'পুর্ত্তপণ কছে
তন ওবে মহাত্মন্। গণেশের ঘোরা হই ঘাদশ নদন । মহেশের পৌল
দোরা ওবে মহামতি। আমাদের পিতা হন গণ-অধিপতি। এতেক বচন
ভানি দেব বড়ানন। ক্রোধেতে ফিরিয়া পরে করেন গমন। উপনীত হন
আসি নাগরের তীরে। এ কথা শুনিল দেবী কাত্যায়নী পরে। পুত্র-সেহবশবর্ত্তী হইয়া সুন্দরী। সাগর-তীরেতে যান অভি তরা করি।। কার্তিকনিকটে গিয়া করেন রোদন। নানামতে কহে তারে প্রবোধ বচন।। অপ্রশপাত হয় তাঁর ভূমির উপরে। অঞ্চন পর্বেত তাহে জন্মিল উতলে। হয়েছিল
পার্বতীর ক্রোধের উদয়। খালামুখী জন্মে তাহে জানে নরচয়।। সিন্দুর
পতিত হয় ললাট হইতে। গৌরিক পর্বত তাহে জনমে ধরাতে।। পুত্র লয়ে
দেবদেব দেব পঞ্চানন। দক্ষিণ ঘারেতে কন্দে করে নিবেদন। তাহাঁ শুনি
দেবদেব দেব পঞ্চানন। দক্ষিণ ঘারেতে কন্দে করে নিবেদন। দক্ষিণ
ঘারের রক্ষী করিলেন তারে। তুই হয়ে বড়ানন অবস্থিতি করে। কন্দের
চরিত এই পড়ে যেই জন। অথবা ভক্তি করি করয়ে প্রবণ। সন্দলোকে
খায় সেই নাহিক সংশ্র। পাতক তাহার দেহে কভু নাহি রয়।।

## একবিৎশ অধ্যায়।

উবাশাপে জয়ার মর্ছ্যে অবতরণ ও হরিশ্চন্দ্রকে পতিত্ত্বে বরণ এবং ওদ্গর্ভে নন্দী ও ভূজীর জন্ম।

### তুণ্ডিক্লবাচ।

নকীশ্বরঃ কৃতো জাতো মহাদেবগণেয়ু সঃ। কথং শ্রেকো ভবেলোকে পূজ্যতে কথমাদরাৎ॥

তুঁ কিছে তন তন তহে তপোধন। তনিসু তোমার মুখে অপূর্ক কথন।।
কৈরপে জনমে নন্দী বলহ আমারে। সর্বশ্রেষ্ঠ হয় সেই বল কি প্রকারে॥
বামদেব কহে তন ওবে মহাআন্। বিভারিয়া সেই সব করিব বর্ণন॥
হরিশ্দ্র মামে রাজা ছিল পূর্বকালে। মহাশ্র মহাপ্রাক্ত জানে সর্বনরে॥
বিখামিত্র-প্রিয় হেতু সেই মহাআন্। আআারে বিক্রেয় করে ওবে তপোধনু॥
আল্যাপি তাহার কীর্তি জগতে প্রচার। সর্বতিণে ত্রণবাম্ সেই ত্রণাধার॥
জন্ম দেবী গৌরীশাপে বিয়া ধরাতশে। তাহার রম্পী হয় খ্যাত চরাচবে

ত্যবতী নাম হয় ধর্মায় রউন। পরম স্কলরী লেবী বিদিত ভূবন॥ । কি কুতি ঋষি কহে পুনরায়। কি কারণে গৌরী শাপ দিলেন জয়ায় ॥ ाभरमच कर्ड छन ७ टर मराजान्। यक्तरभ घरेना घरि कतिव वर्गनः॥ দন শিৰলোতেক দেব পশুপতি। মনসুখে উদা সহ করিছেন রতি॥ দখি জয়া-ছাদে কামের সঞ্চার। শিব সহ রতি হেতু মন হয় তার॥ তাহা গানি উমা দেবী কহে রোষভরে। ত্রাশা করিছ জয়ে আপন অন্তরে 🐌 वेट्याय মোদের রতি করিলে দর্শন। এ হেতৃ ভূতলে তুমি লঙহ জনম॥ নরপতি পাবে পতি শুন গো সুন্দরী। কিছুকাল রহ গিয়া মানবের পুরী॥. গার পর পুন হেথা করে। আগমন। এত শুনি জয়া করে ভূতণে গমন॥ র্থিকে হু-পৃত্তে হয় জনম তাহার। হরিণ্ডন্দ্র নরপতি করিলেন দার॥ এক দিন নম্নপতি সত্যবতী দলে। শায়ন করিয়া আছে আনন্দিত মনে॥ দে**খেন**, প্রিয়ার ভালে শোভে ত্রিনয়ন। তাহা দেখি সরিষয় হলেন রাজন্। মনে ভাবে মম ভার্য্যা সামাত্তা না হয়। নিশ্চয় পাবিতী দেবী নাহিক সংশয়॥ এত ভাবি মহা উচ্চ অট্টালিকা করি। তাহাতে ভার্য্যারে প্লাথে অভি যত্ন कति ॥ এই क्रिट्र यनस्ट्र तट्य ताजन । जात शत अन अन आकर्षा घरेन ॥ এদিকে পার্কতী সতী দেব মহেখবে। জিজ্ঞাসা করেন প্রভূ নিবেদি ্ডামারে॥ ধরাতলে কোন্ স্থান তব প্রিয় হয়। বল বল সেই কথা ওছে মহোদয়॥ শিব কহে শুন শুন পার্বেতী সুন্দরী। আমার প্রমপ্রিয় বারাণ্দী পুরী॥ শিবা কহে চল তথা করিব গমন। এতবলি কাশীঘাতা করে ছুইজন। নিরন্ন হইয়া পূর্বের যত প্রজাগ্ণ। কাশীধামে মহাকট পায় অনুকণ।। মহাদেবী তথা আদি হলে উপনীত। নগরী ছইল জুরি আক্রেড পূরিত॥ मেই হেতু অনুপূর্ণা আখ্যান প্রচার। মহাস্থে প্রজাগণ রহে অনিবার॥ অন্ধ-পূর্ণা-পূজা সৰে করে ভক্তিভরে। একান্ত-অন্তরে হেরে দেব বিশেষরে॥ এইরাপে সুখী হয় যত প্রজাগণ। র্য-ক্ষমে পঞ্চানন করেন জমণ॥ এক দিন পুরস্বরে লইয়া সঙ্গেতে। মনস্থাংশ পঞ্চানন আছেন ভ্রমিতে॥ অক্যাত অট্টালিকা করেন দর্মন। সভ্যবতী ভতুপরি করিয়া শয়ন॥ মনে মনে চিত্তা করে দেব মহেশর। জয়া আসি জিয়াছে ধরার উপর।। মবে উমঃ তপ করে হিম্পিয়ি পরে। জয়াও আছিল তাঁর সম্ভিব্যাহারে॥ তপঃফল-আংশভাগী জয়া রূপবতী। ইহারে নেহারি আমি সমান পার্বতী॥ করেছিল পূর্বকালে বাসনা আমারে। অতএব রতিদান করিব ইছারে॥ মনে মনে

(अठ ভাবি त्वे প्रकानन। পूज्बत्य /विमर्ज्यन कतिया <u>उथन॥</u> . जाशनिः

় প্রবেশ করে ক্তাবভাশ্বরে। নার্কাহতে রতি দান করেন ভাহারে। নৃপতির বেশ ধরি দেব পঞ্চানন। ভাছার সহিতে কেলি করিয়া তখন।। কহিলেন শুন শুন পুর্বা, রূপবতি। নহি আমি হরিশ্চন্দ্র তব প্রাণপতি॥ মহেশঃ স্পামি দেবি করহ মরণ। জন্না দেবী তুমি হও ওহে অন্যজন।। অভিশাপে আসিয়াছ মানব-আগারে। ভোষার বাসনা পূর্ণ করিত্ব এবারে॥ এব শুনি জয়া সতী করেন রোদন। বলে প্রভু কর ত্রাণ ওহে পঞ্চানন॥ শিট कटर किছूकान तर धरे शाता। श्रुनतात्र गांदव पूर्वि देकलाम-खब्दन॥ धर ৰলি পঞ্চানন করেন গমন। জয়া সতী ক্রমে করে জঠর ধারণ॥ পার্বতী-সকাশে আসি দেব পঞ্চানন। সকল ব্রভান্ত করে যাবত বর্ণন॥ তাহা ্তিনি উদা সতী হরিষ অন্তরে। কহিলেন হাস্যমুখে পতির গোচরে॥ ভাল কান্ধ করিয়াছ ওতে পঞ্চানন। জয়াতে আমাতে ভেদ না আছে কখন। জরার গর্ভেতে হবে ছুইটা রস্তান। কার্ছিক গণেশ যথা ওতে মতিমান।। এত বলি উমা সতী হরিষ অন্তরে। পতি সহ রহে সদা কৈলাস নগরে॥ এদিকেতে সত্যবতী গর্ভবতী হয়। তাহা দেখি নূপতির প্রফুল হৃদয়॥ দশমাস হশ দিন অতীত হইলে। যমজ সন্তান জন্মে তাহার জঠরে॥ **(एथि** इतिम्हञ्च जानत्म मजन। नामकत्रगांपि करत लाख वसूर्यगा। जानम धान करत धरे तम काता। ननी नाम अथायत करतन तक।। সম সহঞ্চল দ্বিতীয় তনয়। ভূকীরিটি নাম তাহে রাখে মহোণয়।। পুলুদ্বয় আটা ধরে নিজ নিজ শিরে। তাহা দেখি হরিশ্চন্দ্র জিজ্ঞাদে স্বারে। মুনিগণ তাহা শুনি কহেন বচন। শুন ওহে নরপতি ইহার কারণ॥ শিবরেত হতে জয়ে এ ছুই সন্তান। শিবের তনয় দোঁহে নাহি তাহে আন॥ অতএব শিবকাজে কর নিয়োজন। কাশীধামে ছুই জনে করহ প্রেরণ॥ শিবশিবা সদা তথা করে অবস্থিতি। করুন তাঁদের সেবা এ ছুই সম্ভতি॥ এতেক বচন শুনি হরিশ্চন্দ্র রায়। পুত্রদ্বয় সঙ্গে তথা কাশীধামে যায়। পুভারত্যে, দিয়া তথা বিশেশর-করে॥ অমুচরগণ সহ আদিলেন কিরে॥ রূপবান ছুই পুত্র পাইরা তখন। আনন্দে মগন হন- গৌরী পঞ্চানন II পূর্বদ্বার-রক্ষাভার দিলেন নন্দীরে। নিযুক্ত হইল ভূকী পশ্চিম ছুয়ারে॥ পুত্র সম দুই জন করে অবস্থান। পবিত্র ফলদ এই অপূর্যবি আখ্যান।। যেই জন পড়ে ইহা ভকতির ভরে। দীর্ঘ আয়ু পুত্র লাভ সেই জন করে।। অপুত্রের পুত্র হয় নাহিক সংশয়। ইহার প্রসাদে হয় ভববদ্ধ করে।।

## দ্ববিংশ অধ্যায়।

#### যণিকর্ণিকার উৎপত্তি ও তন্মাহাত্ম্য । বামদেব উবাচ।

বারাণস্থান্চ মাহাত্ম্যং তুর্ন ভং লোকপাবনং। শ্রোতৃণাক্তিব বক্ত্রুণামপবর্গফলপ্রদং॥

তৃত্তি কহে নিবেদন ওহে তপোধন। আমার নিকটে কহ কালীবিবরণ 🔏 বামদেব কহে ওন ওহে মহামতি। কাশীর মাহাত্ম্য বলে কাহার শ্কতি 🎉 পড়িলে শুনিলে কিম্বা মুক্তিলাভ করে। অধিক বলিব কিবা ভোমার গোচরে॥ কীটপতঙ্গাদি করি যত জীবগণ। যদ্যপি কাশীতে করে প্রাণ-: বিসর্জ্জন ॥ খুক্তিলাভ করে সেই নাহিক সংশয়। শাস্ত্রের বচন মিথ্যা কডু নাহি হয়। ত্রন্মহত্যা আদি পাপ ষেই জন করে। কাশীধামে গেলে ভার সর্বপাপ হরে॥ একদিন কাশীধামে করিলে বসতি। কোটি অখনেধকল পায় দে অুমতি॥ এীমণিকর্ণিকা দম ভার্থ নাহি আর। পাপের বিলয় হয় প্রসাদে ইহার ॥ সিংহ দেখি মুগগণ যেমতি পলায়। সেই রূপ পাপ যত দুরে চলি যায়। পূৰ্বকালে এক দিন যত দেবগণ। কালী ধামে শিবপাশে করে আগমন ॥ দেবগণে নেহারিয়া দেব বিশেশর। আনন্দের ভরে নৃত্য করেন বিশুর॥ নাতিতে নাচিতে তাঁর কর্ণদয় হতে। কুগুলগুগল পড়ে সহসা ধরাতে ॥ভূমিতলে সে কুওল হইয়া পতন। ভূমি বিদারণ করি করয়ে গমনা তাহা দেখি নখ দিয়া দেব গুণাধার। কুগুলযুগলে ত্রা করেন উদ্ধার ॥ 🕮 মণিকণিকা নাম এ হেতু হইল। এখানে মরিলে হয় অপবর্গফল। যখন कुछन পढ़् अहे भूगा स्रात्। उथन मशास्त्रान जानित्वक मदन ॥ ७ (र्ष्ट् मधाक्रान जीं शूनाज्य। तमहे कात्न धहे द्वान कतित्न पर्णन ॥ जथना অর্চ্চনা আদি করিলে বিধানে। নির্কাণ মুক্তি পায় জানিবেক মনে॥ শিব-রাত্রিকালে যেই হয়ে পৃত্যন। এই স্থানে স্নান আদি করে সংগাদন। ভব্বৰ বিমোচন সে জনের হয়। শিবপুরে যায় সেই নাহিক সংশয়। नक्याकात्म (येरे जन मनिकर्गिजीदत । मित्रास जम करत धकांख अखदत ॥ भित्तत्र भागूका भाग्न तम् महाजान्। भारजन विधान मिथा नटह कलाहन॥

ए थिएक वामना कति मनिकर्निकारत। शकारमवी आई शारन वक्त भथ धरत के " পৰিত্ৰ হইব আমি দেখিয়া ইহায়।"এত ভাবি গঙ্গা দেবী বক্ৰপথে যায়॥ ् . **এड छनि छूछि कर**इ छट्ट ज्राधन। कान् काटन शका (परी) वकी-ছুতা ইন।। সেই কথা বিস্তারিয়া করহ বর্ণন। শুনিবারে কুতৃহলী হইতেছে भन ॥ এত छनि वामरत्व करहन उथन। छन छन महे मव कतिव वर्गन॥ সগরের পুত্রগণ কণিলের শাপে। ভশীভূত হয়ে যবে থাকে অন্ধকূপে॥ সেই কালে ভগীরথ করিতে উদ্ধার। গঙ্গার লাগিয়া তপ করে অনিবার 🖪 গকারে লইয়া পরে করে আগমন। কলকল রবে গকা চলিল তখন॥ প্রয়াগের কাছে আদি জাহ্নবী স্কুন্দরী। চলিলেন মহানন্দে বক্রপথ ধরি । তাহা দেখি ভগীরণ করে নিবেদন। বক্রপথে কেন দেবি করিছ গমন॥ এত শুনি গঙ্গা কছে শুন নররায়। বারাণদী যাব আমি কহিন্দু তোমার।। তথা অবস্থিতি করে আমার ভগেনী। এমণিকর্ণিকা নাম ওছে নৃপমণি। ভাহার সহিতে দেখা করিয়া ঘাইব। তব পিতৃপিতামহে উদ্ধার করিব॥ এত বলি বক্রপথে করেন গমন। পিছু পিছু অনুগামী রাজা মহাত্মন।। কাশীর নিকটে ক্রমে উপনীত হলে। একালভৈরব আদি পথরোধ করে॥ ৰলে হেথা দিয়া নাহি কভু যেতে দিব। যাইলে শুলের ঘায়ে মন্তক ভাঙ্গিব তাহা श्विन शका करह श्वनह वहन। यम जिल्लीरत जामि कतित पर्नन॥ **ত্রীয়ণিক ণিকা হয় আমার** ভগিনী। তাহারে দেখিয়া যাব শুন মম বাণী॥ श्रीभात मः रघारंग अहे वातानमी भाग। आरता श्रुगावकी हरव नाहि जारह ক্ষাম।। এতেক ৰচন শুনি ভৈরব তখন। কহিলেন শুন শুন করি নিবেদন।। প্রভুর আদেশ বিনা যেভে দিতে নারি। কণেক প্রতীকা হেপা কর গো সুন্দরী। এত বলি চলি যায় ভৈরব তখন। হিমালয়-গিরে যথা আছে পঞ্চা-মন । তথা গিয়া নিবেদন করিল প্রভূরে। প্রভূ কহে প্রদান করহ গলারে॥ কিন্তু এক কথা বলি শুনহ এখন। তিন হস্তমাত্র পথ করিবে অর্পণ।। তব তিন হস্কমিত পথ দিবে তারে। এত শুনি চলি আদে ভৈরব অচিরে॥ নিজ হত্তে তিন হাত করি পরিষাণ। গঞ্চায় গমন ছেতু পর্য করে দান॥ মণিকর্ণিকারে গঙ্গা করিতে দর্শন। উত্তরবাহিনী হয়ে করেন গমন। তাঁহার সহিতে দেখা করি তার পরে। ভগীরথ সহ বান জীগদাসাগরে । मनामत्म कर्निकारत करतम पर्मम। जानम्परेखतकी नाम अ रह्छू श्रवेन॥ शहर शविव कथा यहे जन छटन। मूक्ति शाह तिहे जन छटवह वस्त !

## ত্ৰীবিংশ অধ্যায়।

কাশীধামে গঙ্গস্থানের নিয়ম ও কাশীক্বত পাপের ফল। বামদেব উবাচ। সর্বত্রে জ্ঞায়তে গঙ্গা সর্ব্বপাপবিনাশিনী। বারাণস্থাং বিশেষেণ গঙ্গা চোজ্যবাহিনী।

বামদেব কহে শুন ওহে তপোধন। গলা দেবী সর্ব্ধপাপ করে বিনাশনা সমধিক ফলদাত্রী বারাণদী ধামে। উত্তরবাধিনী হয়ে রছেন এখানে। বিকাম হইয়া যেই রছে এই খানে। শিবলোকে যায় সেই শাস্তের বিধানা। গলামানে যেই কালে করিবে গমন। যথাবিধি মন্ত্র পাঠ করিবে তথম। \* তৈরবেরে এই মস্ত্রে প্রণমিয়া পরে। গলায় স্নানের জন্ম যাবে ভক্তিউরে। জাক্বীর তীরে হয়ে বদ্ধপদ্মাদন। ভূতশুদ্ধি আদি করি বিহিত যেমন। নানাবিধ উপচারে পূজিবে গলারে। প্রার্থনা করিবে মন্ত্র উচ্চারণ করে।। তার পর জলমধ্যে হয়ে নিমগন। বারুণ মন্ত্রেতে স্থান করিবে সাধন। তার পর জলমধ্যে হয়ে নিমগন। বারুণ মন্ত্রেতে স্থান করিবে সাধন। প্রণবমন্ত্রেতে জল করিবে পান। প্রবমন্ত্রেতে জল শইবে ঘতনে। প্রণবমন্ত্রেতে জল করিবেক পান। করণের শুদ্ধি তাহে হবে মডিমান্। কালভৈরবের কাছে গিয়া তার পরে। যতনে করিবে পূজা অভি ভক্তিভরে। ধন্দার কৃত্বম্ব জার লোহিত চন্দন। বটুকমন্ত্রেতে ভারে করিবে অর্পণ।

मिक अनुगात शूका कतिशा विधातन । श्रामा कतित्व भरत प्रथव कृत्य ॥ \* ক্রিপর বিষেশুক্রে করিবে দর্শন। নানাবিধ বাক্যে তাঁরে করিবে ভবন॥ এইরপে কর্ম মৈ কৈলে গঙ্গাম্বান। গঙ্গাধর সম হয় সেই পুণাবান্॥ " कानी याव उर्था स्नान कत्रिव मलिटल।" धरे कथा मत्न मदन रारे सन करता। ভববদ্ধে মুক্ত হয় সেই মহাত্মন। শিবপুরে যায় সেই শান্ত্রের বচন॥ कानीट मुकन जीर्थ जाटइ नर्वकः। कानीशाट्य नर्वजीर्थ टक कटत रागन॥ সেই সব তীর্থ আছে মণিকর্ণিকাতে। সর্ব্বপ্রেষ্ঠ মণিকর্ণী জানিবেক চিতে॥ उठानवाशी विज्ञां कि वाजाने मी भूटत । मर्व्य भाभ पूरत यात्र यकि स्नान करत ॥ জ্ঞানেশ্র লিজ তথা করিলে দর্শন। দিব্যজ্ঞান লাভ করে সেই মহাত্মন্॥ অন্তকালে শিবলোকে দেই জন যায়। প্রলয় যাবত বাদ করয়ে তথায়॥ এই স্থানে মাধবেরে করিলে পুজন। সে জন অন্তিমে যায় বৈকুঠ ভূবন।। ঘটাকর্ণে স্থান আদি করে যেই জন। ব্যাদেশ্বরে ভক্তিভরে করে দরশন॥ শিবলোকে যায় সেই নাহিক সংশয়। শাস্ত্রের বচন মিথ্যা কভু নাহি হয়॥ মরণ তুর ভ হয় বারাণসী ধামে। হেন স্থান নাহি আর এ তিন ভূবনে॥ কাশীর মাহাত্ম্য আর কি করি বর্ণন। একমাত্র জানে তাহা দেব পঞ্চানন॥ অঞ্চতীর্থে যঁদি কেহ কিছু পাপ করে। সে সব বিনাশ পায় জাহ্নবীর তীরে॥ গঙ্গাতীরে যেই পাপ করে উপার্জ্জন। গঙ্গাম্বান-পুণ্যে তাহা হয় বিনাশন॥ গঙ্গাঞ্চলে যেই পাপ নরগণ করে। কাশীতে বিন্ট ভাহা জানিবে অন্তরে॥ कानीशास यि भाभ करत छेंभार्ड्डन। अछ प्रिंटर मिरे मव रह विनामन॥ व्यक्षर्ग दर यह भाभ रहा छेभार्ड्कन । भक्षरकामी मिर्ट मन करत निर्मागन॥ পঞ্চক্রোশীক্বত পাপ মণিকর্ণী হরে। শান্তের বিধান এই কহিন্ম তোমারে॥ मनिकर्गिकाट्ड भाभ रेकत्न चाहत्र। वद्धत्नभ रत्न डारा मार्युत वहन॥ কাশীর মাহাত্ম্য এই কহিনু তোমারে। ইহার সমান স্থান নাহিক সংসারে॥ ভক্তিভরে যেই জন করে অধ্যয়ন। অথবা একান্তমনে করয়ে প্রবণ॥ পাতক তাহার দেহে কভু নাহি রয়। ভ্ববদ্ধ হয় তার ভাচেরেই কর।। পুরাণের সার এই ঐশিবপুরাণ। একমনে পড় যদি চাহ মোকধাম॥

## চঠুৰি: শ অধায়।

#### অন্তৰ্গৃহযাত্ৰা বিধি। তুণ্ডিক্লবাচ।

অন্তৰ্গৃহিদ্য যাত্ৰাং বৈ শ্ৰোতুমিচ্ছাম্যহং মূনে। প্ৰদন্ধবদনো ভূত্ৰা কথ্যস্ব ঘ্ৰাৰ্থতঃ॥

তৃতি কহে শুন শুন ওহে তপোধন। শুনিতেছি তব মুখে অপূর্ব কথন 🛚 অন্তর্গৃহ যাত্রা এবে শুনিতে বাসনা। বর্ণন করিয়া তাহা পুরাও কামনা॥ বামদেব কছে শুন ওছে মুনিবর। বলিতেচি শুন হয়ে একান্ত-অন্তর। প্রত্যুবে উঠিয়া স্নান করিয়া বিধানে। নিত্যক্রিরা যথাবিধি করিয়া যতনে॥ পঞ্চ-বিনায়কে পরে করিবে পূজন। গণ পুস্প আদি দিবে ওছে তপোধন। যাইরা পরেতে বিশেষরের দন্দিরে।প্রার্থনা করিবে তথা থাকি কর্যোডে॥\* তার পার মৌনভাব করিয়া ধারণ। ঐমণিক্রিকাতীরে করিবে গমন॥ বিধানেতে তথা মান করিয়া সাদরে। জপিবেক শিবমন্ত্র একান্ত অন্তরে॥ এত শুনি ভুণ্ডি খা। কচে পুনরায়। নিবেদন করি প্রভু এখন তোমায়। মণিকণিকামাহাত্ম করেছ বর্ণন। স্নানবিধি কিন্তু নাহি করেছি প্রবর্ণ॥ বামদেব করে শুন ওছে বিজ্ঞবর। একে একে শুন স্ব হয়ে একান্তর॥ মলিক্রিডিটে গিয়া মণীক্রীশ্বে। পুজিয়া প্রার্থনা পরে করিবে দাদরে॥ 🕈 তার পর জলমধ্যে করি নিমজ্জন। প্কাক্ষর শিব্যন্ত্র করিবে শ্রণ। শিবস্তে তার পর করিবেক স্নান। নদ্যোজাতাদিক পঞ্চ করিবে অপন। একনেত্র একঞ্চ অনত ভাকর। ত্রিমূর্ত্তি শিখণ্ডী আর ওছে বিজ্ঞবর II ইহাদের তর্পণাদি করিয়া যতনে । জীকণ্ঠে তর্পণ পরে করিবে বিধানে॥ তার পর পিতৃ নেবে করিয়া তর্গ। মণিকর্ণিপাশে পার করিবে প্রার্থন ॥

<sup>ে</sup> প্রার্থনামস্ত্র যথা—-ত্রিলোচন শক্তেন্ত নমতে চন্দ্রপর।
জানার্থনাগানোধ্য ভীর্বং শ্রীমণিকর্থিকাং।

স আগ্রাপর মহাভাগ ছিরা ভক্তি? হাস্ত মে । ব্রশ্বহত্যাদিপাপানি বিলরং যান্ত শকর ॥

<sup>ঃ</sup> প্লার্থনামন্ত্র যথা—মণিকর্ণিছাত্তাগে শিবপাণিসমৃত্তরে। শংশং নাশর মে দেবি দেহি ভারিং শিবেংমলাং ॥

এই ত ত্মানের বিধি করিমু কীর্তন। এইরূপে ত্মানকার্য্য করি সম্পাদন। মণিকণীখনে পরে করিবে পৃজন। কমণ ও অথতর নাগের অর্চন। তার পর বাস্ত্রকিয়ে পৃষিতে হইবে। পর্বতেশ গঙ্গা আর পৃজিবে কেশবে॥ পুজিবে ললিতা আর জয়দিদ্ধেশ্বর। সোমনাথ বরাহেরে পুজিবেক পর। खरकारण ও কশ্যপেশে করিবে পূজন। হিণিকেশে বৈদ্যনাথে করিবে অর্চন॥ গোকর্ণেশে হাটকেশে পুজিতে হইবে। অন্তক্ষেপ্রতী পূজা পরেতে করিবে॥ ব্রবেখন্টেশ্বরে পরে করিবে পূজন। চিত্রঘণ্টা পশুপতীশ্বরের যজন। পিতামহেশ্বরে নতি করিয়া বিধানে। কলস-ঈশ্ববে পূজা করিবে যতনে॥ চন্দ্রেশ বীরেশ পরে আর বিশেশর। নাগেশ ও হরিশ্চন্দ্র আর অগ্নীশর॥ চিন্তামণি-বিনায়ক সোম-বিনাযক। পূজিবেক এই সবে সুমতি সাধক॥ বশিষ্ঠেরে বামদেবে করিবে পুজন। সীমবিনায়কে পরে করিবে অর্জন। বরুণেশে ত্রিসম্বেদ্যশে পূজিতে হইবে। বিশালাকী পূজা পবে যতনে করিবে॥ ধর্ষেশরে বিশ্বদাহে করিবে পুজন। বাণীবিনাযকে আর করিবে অর্চন॥ ব্লদ্ধাদিত্য আর চণ্ডী চণ্ডেশে পুজিবে। ভবানী-শঙ্কর দেবে সর্ফিতে হইবে। নকুলী নকুলেখরে করিবে পূজন। পুরাণ-ঈশরে গরে করিবে শর্জন॥ পর ব্রেখনে আর প্রতিগ্রহেশনে। পুলিষা অর্চিনে পলে নিম্মান্থনের মার্ক ভেশবেরে পরে করিবে পুজন। অপার ঈশর পুশা করিবে দাধন॥ গকেশর পূজা পরে করিবে বিধানে। জ্ঞানবাপী পূজা পরে করিবে যতনে॥ नकीटकरण जाजरकरण कतिरं शृष्टन। महाकारनथरत शरत करिरव यक्रन ॥ দওপাণি মহেশেরে আর মোকেগরে। পূজি পঞ্বিনায়কে অর্চ্চিবে হাদরে॥ বিশ্বনাথে পূজা আর করিয়া প্রণাম। জানু পাতি তার পর করি অবস্থান। প্রার্থনা করিতে হবে করযোড় করি। তার পর নিজগৃহে যাবে ধীবি গারি॥ অন্তর্গৃহ যাত্র। এই করিনু কীর্ত্তন। যেই জন যথাবিধি করে আচরণ। कानीक्व भाभ जात विनामिक रय। नाहिक मत्नर देश भारयुत निर्भय। का नीशारम वाम करत (यह मव जन। वर्ष वर्ष এह तम कतिरव मीधन।। বিশেষ করিতে. হয় চতুর্দশীদিনে। কাশীবাস ফল হয় এরপ বিধানে॥ এ কাজ করিতে যেই সক্ষ না হয়। করিবেক অধ্যয়ন, ওতে মহোদয়। পড়িলে যাত্রার ফল লভিবে সে জন। নাহিক সন্দেহ ইঞ্ছে শাস্ত্রের বচন। অন্ত দেশ হতে আদি যেই সাধুনর। এইরূপ কার্য করে হয়ে ভিক্তিপর।

<sup>-</sup> मञ्जयथा-- इत्रमस्तृ हो या ब्याव्या कृषा मंता। स्नाष्टितिकता भाषा धीत्रजामुमा विष्क ॥

বিশেশর-প্রসাদেতে সেই সাধুজন। অন্তকালে কৈলাসেতে করয়ে গমন॥

দেহতা আদি পাপ যদি সেই করে। অনশ্য সে সব তার বিনাশে অচিরে

দতএব যতুবান্ হয়ে সর্বক্ষণ। অন্তগৃহ্যাত্তা নর করিবে সাধন॥ সর্বদা

ডিবে ইহা ভক্তি সহকারে। স্বিক বলিব কিবা তোমার গোচরে॥ যেই

দন এই সব করে অধ্যয়ন। ইহকালে স্থভোগ করি সেই জন॥ অন্তকালে

শের সেই কৈলাস-নগরে। নাহিক সন্দেহ ইথে কহিনু তোমারে॥ বাসনা

দরিয়াছিলে করিতে প্রবণ। এই সব যথাবিধি করিনু বর্ণন॥ শৈবের প্রম

ভক্ত তুমি মহামতি। অন্তিমে তোমার হবে অবশ্য স্থগতি॥ তোমারে

হরিয়া আমি সানন্দ-সাগরে। নিময় হয়েছি শ্বে কহিনু তোমারে॥ অধিক

কিবা ওহে তপোধন। একমনে ভাব সদা শিবের চরণ॥

## পঞ্চিংশ অধ্যায় (

প্রক্রোশীমহাধাত্রা, বাধরাজার সহপ্রবাচ্চ লাভ, হরিহর যুদ্ধ রুফ কর্তৃক বাণের বাতৃচ্ছেদ, উষাহরণ এবং মহাকালের উৎপত্তি। বামদেব উবাচ। ভ্রমিন্ বারাণনীক্ষেত্রে সর্বলোকস্থাবহে। প্রক্রোশীনহাযাত্রাং শুনু মত্তে। বদাম্যহং॥

বামদেব কহে শুন ওহে তপোধন। পঞ্চক্রোশী মহাণাত্রা করিব বর্ণন।।
দশলোকসুখাবহ বারাণদী ধামে। পঞ্চক্রোশী মহাযাত্রা করিবে বিধানে।।
বৈশাখের ক্রফ্রপক্ষে ত্রয়োদশীদিনে। রাত্রিকানে যথাবিধি রহিবে নির্মে।।
ভার পর প্রভাতেতে করি গাত্রোখান। নিত্যক্রিয়া সমাপিবে যেমত বিধান
মণিক্রিশ্লান করি পূজি বিশ্বেখরে। তিন্টী অঞ্জলি দিবে অপমার্গদলে।।
ভার পর মন্ত্র পড়ি করি নমস্কার। ২ জীকালভৈরব পাশে হবে আগুনার।।
ভাহারে পূজিয়া পরে সানন্দ অন্তরে। প্রাক্ষিণ করিবেক বারাণদীপুরে॥
পঞ্চক্রোশী বারাণদী বিদিত ভূবন। প্রদক্ষিণ স্বত্ন ভ শান্তের বচন। পঞ্চক্রোশী প্রদক্ষিণ করিবে দাধন। এ কথা করিলে মনে পাপের মোচন।।

मञ्ज यथा — व्यष्ट्रकाश्यामि ज्ञावन् मछालाक छात। इत ।
 शक्रिकाभीः महायाजाः कित्रामि मदिस्कत ॥

শাদিক করি পরে গিয়া বিশ্বের। যথাবিধি মন্ত্র পাঠ করিবে সাদরে ॥ । মানিক নিকাতে পরে করিয়া গমন। যথাযথ মন্ত্র পড়ি করিবে প্রার্থন ॥ † যথাবিধি স্নান আদি তথায় করিয়ে। কালভৈরবেরে পরে যতনে বন্দিয়ে॥ আপন আগারে পরে করিয়া গমন। নিবভ জ বিজগপে করাবে ভোজন ॥ প্রারায় পাবদিন করি গাত্রোথান। ভাগীরথীজলে স্নান করি নমাধান॥ গাত্রেখরে দরশন করি তার পর। পৃজিবে হরিকেশবে হয়ে একান্তর॥ তার পর বিশেষেরে করিবে পূজন। পঞ্জোশী যাত্রা এই ওহে তপোধন॥ এইরূপ যেই জন আচরণ করে। শিবলোকে যায় সেই পুলক অন্তরে॥ তত্র্দিশ ইন্দ্রপাত যতদিনে হয়। তাবত সেজন তথা মনস্থাধ রয়॥ তার পর ধরাধামে করি আগমন। রাজা হয়ে প্রজাগণে করয়ে শাসন॥ তার পর শিবলোকে পুনরায় যায়। শিবগণ হয়ে রহে স্থাখতে তথায়॥ •

তুতি কহে শুন শুন ওছে তপোধন। মহাকালগণোৎপত্তি করহ বর্ণনা । বামদেব কহে শুন ওছে মহামতি। পূর্ক কালে বলি নামে ছিল দৈত্যপতি ।। তাহার তনয় জন্মে বাণ অভিধান। সপ্তবিংশ কোটি লিজে পূজে মতিমান্ ।। তাহাতে হইয়া তুই দেব পঞ্চানন। কহিলেন বর মাগ ওহে মহাজ্মন্ ।। রাজা কহে বরে আর কি কাজ আমার। ত্রিভূবন স্রী আমি ওহে গুণাধার।। তামার প্রসাদে আমি ওহে পঞ্চানন। হইয়াছি সর্ক স্রী করহ প্রবণ।। তেথার প্রমাদে আমি ওহে পঞ্চানন। হইয়াছি সর্ক স্রী করহ প্রবণ।। তথান কহে শিব ওহে দৈতারায়। তর দিব বা আমি জানিবে তোমায়।। তথান দানব কহে ওহে পঞ্চানন। একান্ত যদ্যপি বর মরিবে অর্পণ।। সগণে আমার গৃহে কর অবস্থিতি। এই বর চাহি জামি ওহে পশুপতি।। তথান্ত বিলয়া বর দিয়া পঞ্চানন। শোণপুরে অবস্থিতি করেন তখন।। তথান্ত বিলয়া বর দিয়া পঞ্চানন। শোণপুরে অবস্থিতি করেন তখন।। একদিন বাণরাজ। তাঁরে পূজা করে। পূজায় হলেন শিব সন্তুট অন্তরে।। কৃছিলেন শুন শুন দানব রাজন। যাহা বাঞ্জা দেই বর করহ যাচন।।

<sup>\*</sup> মন্ত্র যথা -- মহাদের নমতে স্তু বিশ্বেশর জগনগুরো।

পঞ্চকালীপ্রসাদাতে শুদ্ধবৃদ্ধা মরা কৃতৃং ॥

আক্রমতসাহ শ্রৈহঁ পোপত্ত মরা কৃতং।

তৎ সর্মং ছিন্ধি দেবেল পঞ্চকোলীপ্রবর্তনাহ।।

মন্ত্র যথা -- সর্মতি প্রভান্তে শুক্তদে মণিকর্পিক।

প্রথমমি জ্বান্যাতঃ লিবপাণিতলোদ্ধরে।

পঞ্চকোল্যাঞ্চ মং পাপং মরা ভ্রানতঃ রতং।

তৎ সর্মং বিলরং যাতু তব বার্কিন্মজ্ঞাণ ।।

সাণ কৰে যদি প্ৰভূ সন্তুষ্ঠ আমারে। সহজ্ঞেক বাজ্ দেই ক্লপা দৃষ্টি করে॥
তথাস্ত বলিয়া বর দেন পঞ্চানন। সহজ্ঞেক বাজ্ রাজা করিল থারণ ।
এইরূপে কিছু দিন গত হলে পরে। পুনঃ পুজা করে দৈতা দেব মহেখরে ॥
তাহাতে ইইয়া ভূট দেব পঞ্চানন। বহিলেন বর মাগ ওহে মহাআন ॥
বাণ কহে তৰ সহ করিব সমর। ক্লপা করি এই বর দেহ দিগন্ধর ॥
যুদ্ধ হেতু বাজ্কণ্ড হরেছে আমার। সে কণ্ড করে নাশ ওহে দয়াধার॥
কুদ্ধ হয়ে শিব কহে ওহে মহামুন্। গর্মপুত্র হও ভূমি শাস্তের বচন॥
পিতাপুত্রে সুদ্ধ নাহি হয় কোন কালে। অন্ত বর বাঞ্চা কর যা হয় অন্তরে ॥
বাণ কহে অন্তবরে নাহি প্রয়োজন। মুদ্ধ দেহি মুদ্ধ দেহি ওহে পঞ্চানন॥
তখন কুপিত হয়ে দেব মহেশর। কহিলেন শুন শুন ওহে দৈতাবর ॥
আমার অংশেতে কৃষ্ণ লভেছে জনম। তাহার সহিতে মুদ্ধ হবে সংঘটন॥
সে জন তোমার কণ্ড করিবে সংহাব। এত বুলি অন্তহিত হন দয়াধার॥
সে জন তোমার কণ্ড করিবে সংহাব। এত বুলি অন্তহিত হন দয়াধার॥

শুন শুন তার পর আশ্চর্য্য ঘটন। উষা নামী বাণকন্যা বিদিত ভুবন 🛭 এক দিন রা ব্রিকালে হেরিল স্বপনে। স্থানর পুরুষ এক আসিল শয়নে॥ তাহার সহিতে রতি করে উমা সতী। বাহুপাশে ধরে তারে বলি প্রাণপতি॥ হেন কালে নিজাভত্ত হইল ভাহার। চারি দিক শৃত্তময় হেরে অন্ধকার॥ প্রভাতে উঠিয়া পরে বিষয়বদনে। হায় হার বলি করে রোদন সখনে॥ কোথা গেলে প্রাণকান্ত কর আগমন। তোমার বিরহে মম না রহে জীবন। সহচরী চিত্রনেখা এই ভাব হেরি। কহিলেন কেন ভাব শুন লো সুন্দরী॥ মজিরাছ কার প্রেমে বলহ এখন। তাহারে আনির। তোমা করিব অর্পণ 1 উষা বলে কি বলিব দৌন্দর্য্য তাহার। হেন রূপ নাগি হেরি জগত কাঝার॥ শীভাল্বরগর সেই কমল-লোচন। কন্দর্প সমান হেন শ্যামলবরণ।। ভার সহ রতি আমি করেছি অপনে। না রাখিব প্রাণ আমি তাহার বিহনে॥ চিত্র-লেখা কছে চিন্তা কিবা আছে তায়। সকলের তিত্রপট দেখাব তোমায়॥ তার মাঝে মনচোর তব যেই তন। তাহারে আমায় তুমি কর প্রদর্শন। এত বলি চিত্রপট, আর্কিল ত্রায়া যত লোক আছে এই অনন্ত ধরায় # উষারে সম্বোধি পরে কহিল তখন। কোনু জন মন চোর করাহ দর্শন॥ একে একে উষা সতী দেখি সমুদয়। অনিক্রদে নেহারিয়া দেখাইয়া কয়॥ দেখ দেখ সহচরী পুরুষ-প্রবর। ইহারে আনিয়া মোরে অর্পহ সত্র॥ এই মম প্রাণকান্ত জীবন-জীবন। হের স্থি আহা মরি যুগল নয়ন। এতেক বছন শুনি সেই সহচরী। ুযোগবণে অনিরুদ্ধে আ্বে জুরা করি।

কুন্দর্পের পুত্র সেই ক্লফের যে নাতি। যোগবলে তারে সাখী আনে রাতা-রাতি॥ তাহার সহিতে উষা করয়ে বিহার। এই কথা ক্রমে হয় বাজ্যেতে প্রচার ॥ দূভমুখে রাজা সব করিয়া প্রবণ। গোপনে উষার ঘলে পশিয়া তখন॥ নাগপাশে অনিরুদ্ধে বন্ধন করিয়ে। রাখিয়া দিলেন কারাগৃহেতে পুরিয়ে॥ এদিকে নারদ ঋষি গিয়া ছারকায়। ক্লফের নিকটে সব ব্রতান্ত লানায়॥ তাহা শুনি কৃষ্ণ হন রোষপরায়ণ। অবিলম্বে যুদ্ধ যাত্রা করেন তখন॥ দেবতাগণের সহ আসি শোণপুরে। বাণরাজ সহ মুদ্ধ অবিলম্বে করে॥ দেখিতে দেখিতে যুদ্ধ বাধে থোরতর। আকাশে থাকিয়া দেখে অমর-নিকর বাণেরে পীড়িত দেখি দেব পঞ্চানন। অবিলম্বে রণ্যাঝে করে আগমন॥ ক্বফের বহিতে যুদ্ধ ঘোরতর করে। ভীষণ সমর হেরি সকলে শিহরে॥ কার্ত্তিক গণেশ আদি করযে সংগ্রাম। হেন যুদ্ধ নাহি আর হেরি কোন স্থান ক্লুফের দিধন বাঞ্ছা করিয়া অন্তরে। পাত্তপত অন্তর শিব লইেলেন করে॥ তাহা দেখি ক্লফ মনে করেন চিন্তন। পাশুপত যদি শিব করেন কেপণ। ভাবিয়া জৃত্তণ অস্ত্র নিল মঠোদ্য॥ অকালে প্রলয় হবে নাহিক সংশয। জৃত্তণে স্তন্তিত হয়ে রচে পঞ্চানন। পাশুপত কেপে আর না হন সক্ষ॥ ছাহা দেখি ক্রুদ্ধ হযে দেব দিগন্বর। অটুহাম্ভে গরজিয়া উঠে 🦭 🐔 'অগ্লিয়ানা বাহিরিল বদন হইতে। উদ্যত হইন অগ্নি ব্ৰহ্মাণ্ড দহিতে॥ তাহা দেখি ভীত হযে দেব পদাসন। শঙ্গরেরে স্তব্বাক্যে হহেন তখন॥ ক্লফেতে তোমাতে ভেদ নাহি দিগদর। তুমিই বলেছ মুদ্ধ হবে ঘোর হর॥ ক্ষ সহ হবে মৃদ্ধ ওছে ক্লপাধার।। বাণের হাতের কণ্ড করিতে সংহার। তবে কেন যুদ্ধে তুমি কৈলে আগমন। আপনার বাক্য প্রভু করহ রক্ষণ॥ অতএব অগ্নিজ্বালা কর্ত সংহার॥ দেখ দেখ দা হয় জগত সংসার। এত তানি তুষ্ট হয়ে দেব পঞ্চানন। অগ্নিজালা সম্বরিয়া তিরোহিত হন। তাহা দেখি তুট হয়ে রুক্মিণীর পতি। বাণ সহ করে যুদ্ধ নাহিক অবধি॥ हाति वाङ् गा**ब** तार्थ कगनरलाहनः॥ বাণের যতেক বাত্ত করেন ছেলন। তনয়ের পুত্র আর পুত্রবধূ পয়ে। চলিলেন নিজরাজ্যে সানন্-ছদরে॥

এদিকেতে ছিন্নবাছ হয়ে দৈত্যরায়। অবিলফে ক্রতগতি কাশীধামে যায় বিশেশর-ছ্য়ারেতে করিয়া গ্রান। চারিবাছ বিতাড়িয়া করিয়ে বাদন॥ খন খন নৃত্য করে আনন্দের ভরে। তাহ। দেখি ভূষ্ট শিব হালেন জ্বারে॥ কহিলেন শুন শুন দানবরাজন্। বাছকঞু এত দিনে হলো বিনাশন॥ এখন ধাকহ ভূমি বারাণদী পুরে। মহাকাল হলে ভূমি জানিবে অন্তরে॥ শান্ত চেছ্দজন্ম পীড়া নাহি রবে আর। মনের প্রথেতে তুমি করহ বিহার॥
আমার দুযারী হয়ে কর অবস্থান। লহ লহ এই বস্তু ওংহে মতিমান্॥
এত বলি দিব্য বস্তু বাণশিরোপরে। বান্ধিয়া দিলেন শিব দানক অন্তরে॥
মহাকালগণ হয়ে বাণ নরপতি। কাশীধামে মনস্থা করে অবস্থিতি॥
জিজ্ঞাসা করিয়াছিলে যাহা তপোধন। বিস্তারিষা 'সেই সব করিত্ব বর্ণন॥
এই কথা যেই জন শুনে ভক্তিভরে। অন্তকালে যায় সেই কৈলাস নগরে॥

# বড় বিংশ অধ্যায়।

হরগোরীর গোপবেশ ধারণ পূর্ব্দক বিহার এবং কীর্ত্তিবাসাম্মর বধ।

তুণ্ডিরুবাচ।

পেবং কাশ্যাৎ স্থিতঃ শড্ঝঃ পার্ব্বত্যা সহিতে মুনে। কিঞ্চকার গগৈঃ সার্দ্ধং তম্মে ব্যাখ্যাতুম্হ সি॥

এত শুনি ভুণ্ডি কহে ওহে তপোধন। এরপে কাশীতে থাকি দেব পঞ্চানন ॥ পার্ব্ব ) সহিতে আর গণগণ সনে। কি কাজ করেন পরে বলহ একংগ। এত শুনি বামদেব কহেন তখন। শুন শুন তপোধন করিব বর্ণন।। কাশীধামে এইরপে রহে হরগৌরী। এক দিন সম্বোধিয়া কহে মহেশ্রী॥ শুন প্রভু তব পদে করি নিবেদন। বারাণদী তব প্রিয় করিতু দর্শন॥ ইঙ্গার সমান স্থান আর কোথা আছে। সেই কথা কন্প্রভু অধীনীর কাছে॥ এত বলি শিবপদে ইযে নিপতন। হৈমবতী পুনঃ পুনঃ করয়ে বন্দন॥ মহেশ্বর ক্রতগতি তুলিয়া ভাঁহারে। বস।লেন আপনার অক্টের উপরে॥ খন খন পদমুখ করিয়া চুধন। কহিলেন প্রিয়ে তুমি জীবনের ধন॥ অবৈক্তব্য তব পাশে কি আছে আমার। শুন শুন বলিতেছি করিয়া বিস্তার। কাশীসম গোপনীয় আছে মম স্থান। উৎকল দেশেতে তাতৃ। আছে বিদ্যমান॥ দক্ষিণ-সাগরতীরে সেই তীর্থ হয়। থেকাম্র-কানন না- জানিবে নিশ্চয়॥ ত্রিভুর্বনেশ্বর লিঞ্চ বিরাজে সেখানে। তার সম নাহি স্থান এ তিন ভুবনে॥ দেবৃতা ছুল্ল ভ স্থান সেই কেত্র হয়। সদা বাস করি আমি সেখানে নিশ্চয়॥ ৰড় ঋতু শোভা পায় সদত তৃথায়। কত তক্ত কত লতা কিবা শোভে তায়॥ কোকিল করিয়া আদি যত বিছর্জণ। হিরন্তর প্রেমভরে করে বিচরণ॥ এমন মোইন স্থান আর কোথা নাই। সেহবশে গুপ্ত কথা কহি তব ঠাই।
এত শুনি ধীরে ধীরে কহে মহেশ্বরী। দেখিতে বাসনা করি ওহে ত্রিপুরারি
শিব কহে যদি বাঞ্জা কবিয়াছ মনে। একাকী গমন কর সেই পুণাস্থানে॥
যে রূপ ধারণে হয বাসনা ভোমার। সেই রূপ ধরি তথা হও আগুসার॥
পশ্চাৎ যাইব আমি লয়ে গণগণ। এত বলি মৌনভাব ধরে পঞ্চানন॥

শিবের আবেশ পেয়ে দেবী মহেশ্বরী। চড়িলেন অবিলয়ে দিংছের উপরি॥ একান্ত কাননোদ্দেশে করেন গ্রুমন। অবিলম্বে সেই স্থানে উপনীত হন ॥দেখেন একাদ্রবন অতি মনোহর।শোভিতেতে চারিদিকে কত তরুবর॥ সরোবরে শতদল কিবা শোভা পায়। জলচর পক্ষী সব বিহরে তাহায়॥ সেই স্থানে মহেশ্বরী করিয়া গমন। অবস্থিতি করি থাকে হয়ে ফুল্লমন॥ ভক্তিভরে পূজা করে ভুবন-ঈশ্বনে। পঞ্চদশ বর্ষ যায় এ হেন প্রকারে॥ একদিন মহেশ্বরী করেন দর্শন। দাইকণ সাগর হতে আসে থেকুগণ॥ **শিবশিঙ্গ পাশে আসি হরিষ অন্তরে। স্তনকীর ধারা দে**য় লিঙ্গের উপরে॥ প্রদক্ষিণ বরি ভারা লিঙ্গে সাতবার। দক্ষিণ সাগরগর্ভে যায় পুনর্বার॥ তাহা দেখি মহেশ্বরী বিদ্ধরে মগন। গাভীগণে ধরিবারে করেন মনন॥ পরদিন পুনরায় আসি ধেমুগণ। পুর্বমত লিঙ্গবরে করায় স্থপন। তাহা-দিগে ধরি রাখে দেবী নছেমরী। গোপীবেশ নিজে ধরে গিবিজা ফুদরী॥ 'ফলমূল প্রতিদিন করি আহরণ। ধেনুতুগ্ধ দিয়া লিক্ষে করেন পূজন॥ এইরেপে কিছুদিন সমতীত হয়। আশ্চর্য্য ঘটনা পরে শুন মহোদয়॥ একদা গিরিজা করে কুসুম চয়ন। অকস্বাৎ ছুই দৈত্য করে জাগমন॥ कीर्फि नाम এक জन कतरत्र धातन। वाम नारम जन्म जन विक्रिंड पूरन। দৈত্য দ্বয় সেই স্থানে আগমন করি। দেখিল বিহরে এক গোপিকা সুন্দরী॥ তাঁহার পরম রূপ করি দরশন। কামে জর জর হয় দৈত্য ছুই জন॥ कामान रहेमा পরে জিজ্ঞানে দেবীরে। দেবী কি দানবী হও বল তুরা করে॥ অথবা কাবের রতি তুমি লো সুন্দরী। কিম্বা হও শচী দেবী বল শীঘ্র কণ্ণি॥ (एवो कटर निह (एवो निह देवजानाती। वटन वाम कित कांगि हहे (गांशी) নারী॥ এত শুনি পুনঃ কহে দৈত্য ছুই জন। শুন লো হুন্দরী এবে মোদের বচন । আলিখন দান কর আমা দোঁহাকারে। তোমারে হৈরিয়া মোরা মোহিত অন্তরে । এত শুনি ক্রেদ্ধ হয়ে কহে মহেশ্রি।কেন রে এন্সেছ হেথা যাবি ফশ্রী ॥ পরনারী প্রতি লোভ করিছ অন্তরে । পাপেতি ঘাইতে হবে শ্মন-আগারে ॥এত বলি মহেশ্বরী ভিরোহিত হন, তাহা হেরি মুগ্রচিত দৈত্য

कें अने भे यहन कि चन्न नाकि वृज्ञिवादत नाजि। त्रिचिटंड तम्ब क्षिथांत्र मुम्पती ॥ এত वनि छूरे अरन कतरम गमन। এ निरक शार्खकी करता मह्दर्भ मात्रे ।। कामीशार्य जानि जारा एक्व किरायत । अविनास हिन जारम একাকী সত্বর॥ গোপবেশ ধরি প্রভু করে আগ্রন। অবিল**ন্থে উপ্নীত**: পার্বেডী-দদন।। শিবিচূড়া শোভে শিরে অতি মনোহর। বংশীধুনি ঘদ ঘর कटत्र फिरायत ॥ यमुत वर्भीत माल कतिशा अवग । (थनूरान स्रारान उरक्त নয়ন॥ তাহ। দেখি গছেখনী জিজানে ভাঁহাবে। কেবা তুমি কোথা হতে এলে এই হলে। গোপবেশ হেবিতেছি তুমি কোন্জন। জ্রা করি বল বলু আমার সদন। শিব করে তুনি কেবা কছবে। স্থ দরী। কি হেতু রয়েছ তুমি গোপীবেশ ধরি॥ যথা হতে করিয়াছ তুমি আগমন। আমিও তথায় ছিন্তু করহ সরণ॥ এত শুনি হুট্মতি গিরিছা সুন্দরী। জানিলেন দেবদেব এই ত্রিপুরাবি॥ তখন তাঁহার পদে করিয়া বদন। পুনঃ পুনঃ প্রেমনেত্র করেন দর্শন॥ এইরপে ছুই জন গোপালের বেশে। কলিলেন কত লীল। মনের हतिया जानत्म गगन (पर्वो जिञ्चारम उथन। छन छन श्रक्षांनम कति নিবেদন ॥ দুই জন দৈত্য আদি খেরেছিল মোরে ! স্বরণ করিয়াছিত্ব এ হেতু ভোষারে॥ 'হত এব ভাষাদিরে করিয়া বিনাশ। অধীনী উপরে কর করুণা প্রকাশ।। এত শুনি মিট লাগে কছে পঞ্চানন। সামা হতে নাহি হবে তাদের নিধন ॥ ক্রমিল নামেতে রাজা ছিল পূর্ব্বকালে। ছই দৈত্য ভার পুত্র জানিবে অন্তরে॥ বত্কাল তপ করে ক্রমিল রাজন। ভাগতে সন্তুটি হয় যত দেবগণা। সম্ভূট দেখিয়া বর চাহে নরপতি। বলিঠ হইবে তার পুত্রদর অতি॥ পুরু-ষের হাতে নাহি হইবে মরণ। এই বর চাহে রাজা পুলের কারণ॥ হেতু পুলুদ্বয় অতীব প্রবল। কীর্ত্তি আর বাদ নাম খ্যাত চরাচর॥ অভঞ্ব শুন শুন ওতে মতুশরি। তুমি দৌহাকারে বধ কর ত্রা করি॥ এত শুনি মহেশ্রী করেন গমন। অবিলয়ে দৈতাপাশে উপনীত হন॥ ভাঁহারে হে तिया जाता कामान व्यस्तत । छे रहुल कहेगा कर समधूत स्टात्॥ (काथा গিয়াছিলে প্রিরে কর আগ্রান। ত্রা করি আলিক্ষন করহ অর্পণ।। এড अभि मरक्षी महामा वपरन। किश्लिन अन अन विन (लाई) आरन्। खड़ এক আছে মম করহ শ্রবণ। দেই ব্রত যেই জন করিবে পুরণ। তাহারে ধরিব অনুমি প্রতিজ্ঞা আমার। মনসুখে হব আমি রমনী তাহার॥ उत्वेष्यंत्र शति ८वरे कन । ऋतं रिकटा किया नी र्य कतिया जानन ॥ सूमि इटक भारत (यर कूलिटेंड भातित्व। (महें किन यम भिक अवनाहे करेंडा। दर्शाभीत

বিলেন শুনি দৈতা হুই জন। আনন্দে নগন হার কহিল উর্থন'॥ শুন শুন শুন বিলি বছন দেঁছার। শীর্ষদেশে পদদান করহ ঠোনার॥ তাহা শুনি মহে-শারী যুগণ চরণ। দৈতার্বর-শিরোপরি করিয়া হাপন॥ যেমন মর্দান দেবী-করিলেন বলে। অমনি মূর্ল্ডিড হয়ে বীরদ্বর পড়ে॥ পদভরে পুতিলেন দেশিহে মহেশ্ররী। প্রাণ ত্যক্তি গেল দেশিহে পাতাল নগরী॥ অনুভ্রম হ্রদ শুখা হইল সূজন। দেবীহুদ্র নাম তাব বিদিত ভুবন ॥ পবিত্র কাহিনী এই দেই জন শুনে। নিপ্পাপ সে জন হর শাস্তের বচনে।

## मखिरिय जनाम ।

় শিব কর্ত্ত্ক উমার পদদেবা, শূশাখাতে শঙ্কর-বাপীর উৎপত্তি ও উমাকে তজ্জল প্রদান এবং গোদাবরীর প্রতি স্বভিশাপ। বামদেব উবাচ।

কীর্তিবাসাত্মরাভাগং সা কৃত্যা সুদ্ধং মহন্তরং। দেবদানবয়োশ্চিত্রং ভৈরবং লোমহর্ষণং॥ শৃদ্ধাং তৌ প্রোথয়িত্বোষা শ্রমেণ মহতা তু সা। স্বর্ণকৃষ্ট সিরেঃ পৃষ্ঠে সুষাপ নগনন্দিনী॥

শাসদেব কহে শুন গুহে তপোধন। অপুরদ্ধরেব সহ করি থোর রণ ।
শাস্তরে তাহাদিসে প্রোথিত করিয়ে। শ্রম বোধ করে দেবী আপন হৃদয়ে॥
শাস্ত্রি বিরিপরে করিয়া গমন। নিজার বিরিজা দেবী হন অচেতন॥
শাস্ত্রি শিরে করিয়া গমন কবিল। ভূবন-ঈশ্বর তাহা নয়নে হেরিল॥
শাস্ত্রন করিয়া দেবী আছে কুঞ্জবনে। শোণিত বরণ কিবা য়ুগল চরণে॥
ভাহা দেখি ধীরে ধীরে ভূবন-ঈশ্বর। পদতল-সমীপেতে হন অগ্রসর॥
কোমল-করেতে পদ করেন সেবন। করম্পর্শে উমা সভী পভেন চেতন॥
দেখিলেন পদসেবা করিছেন পতি। বাম পদ সম্ভূচিত ক্রিলেন সভী॥
বিনর-বচনে কহে ওহে ভগবন্। অশ্রায় করম কেন কর আচরণ॥
লোকনিকা ববে ইবে জানিবে আমার। পতি হয়ে পদসেবা কেন কর আর॥
শান্তির হানী হই আনিবে অন্তরে। জন্ম জন্ম অই পাছ দিও গোজামারে॥
শান্তির হানী হই আনিবে অন্তরে। জন্ম জন্ম অই পাছ দিও গোজামারে॥
শোন্তির হানী হই আনিবে অন্তরে। জন্ম জন্ম অই পাছ দিও গোজামারে॥
শান্তির হানী হই আনিবে অন্তরে। জন্ম জন্ম আই পাছ দিও গোজামারে॥
শান্তির হানী হই আনিবে অন্তরে। জন্ম জন্ম আই পাছ দিও গোজামারে॥
শান্তির হানী হই আনিবে অন্তরে। জন্ম জন্ম আই পাছ দিও গোজামারে॥
শিক্তি শিক্তি জানির ভূবন-ইশ্বর। ইইয়াছ শ্রাম্ব দেবি করিয়া সদর ॥

পরিশ্রম বিদ্রণ করিতে তেমার। করিতেছি প্রসেবা হেই পদ সারা। ক্রীতরপে রহিয়াছি তোমার গোচরে।দাস তুল্য আমি হই জানিবে **অওরে**ঞ্ আদিমা প্রকৃতি তুমি শুন ওগো সতি।তোমার কুগায় আমি দেব প্রপ্তিট এতেক বচন শুনি পাদতী সুন্দরী। কহিলেন শুন শুন ওছে ত্রিপুরারি 🗱 ভকত- বৎসল তুমি করুণাসাগর। মন অপরাধ কম ওচে দিগ্রুর । কীর্ত্তি বাস সহ করি খোরতর রণ। তৃষ্ণায় কাতর আমি ইয়েছি এখন॥ জল দার্ছ কর মোরে অতি ত্রা করি। নতুবা অচিরে প্রভু প্রাণেতে যে মরি॥ তাই। শুনি দেবদেব প্রভূ পঞ্চানন। অবিদায়ে করে শুল করেন এছণ। পর্বেঞ বিদীর্ণ করি শুলের প্রহারে। উত্তম দীর্ঘিকা এক উৎপাদন করে॥ কুশেদ্ শশক্ষে সম সলিল ধবল। তর তর করিতেছে অভীব বিমল।। সেই জব **পঞ্**লিতে করিয়া এহণ। দেবীর নিকটে যান দেব পঞ্চানন।। কখিলে**ন শুন** দেবি আমার ভারতী। এই জল পান কর অতি ক্তগতি॥ এতেক বচন শুনি পার্বভী তখন। উর্ন্বায়ুখ হয়ে জল করেন এছণ। শিবের ছাতের জল পিয়া ভগবতী। পরমা পিরীতি লাভ করিলেন মতী॥ তার পর ভগবান ু দেব পঞ্চানন । আমুনে গিরিজারে করেন হাপন॥ আত্মলিজ-সন্নিধানে স্থাপিয়া তাঁহারে। সর্বতার্থ আনিবারে অভিলাব করে॥ রুষভেরে সম্বো-ধিয়া কহেন তথন। শুন শুন ওহে রয় আমার বচন॥ ভুভূবঃ য আদি করি যাবতীয় লোকে। অবিশলে যাহ তুমি উর্ন্ধাত-মুখে। সেই সেই স্থাৰে : আছে যত তীর্ণচয়। স্বাকারে এই স্থানে আন মহোদয়॥ এই স্থানে হুদ আমি করিব সুজন। জন্মারে আনহ তুমি প্রতিষ্ঠা-কারণ॥

আদেশ পাইয়া রব তথনি চলিল। অবিলয়ে একলোকে আগত হইল। বিকারে সম্বোধি কহে ওহে ভগবন্। শিবের আদেশে চল একাম কানন। রবের বচন শুনি দেব পর্যোনি। অমরগণের সহ চলেন তথনি চলিকনীত হয়ে শীত্র একাম কানন। শক্ষর-নির্দ্ধিত বাণী হেরেন নয়নে। তাহা দেখি দেবগণে কহে পদাসন। এই বিশেশর দেব ওহে স্বরগণ। ত্রীমণিকনিকা এই জানিবে অন্তরে। ফলিকালে অন্তহি তা জানিবে কাশীরোচ কিলিকালে এই হানে লভিবে মুক্তি। এত বলি শিবপদে করিলেন নতি। রক্ষারে মধ্যোধি কহে ভ্বন-ঈশ্বর। উঠ উঠ ওহে একান্ ভকত-প্রের চিলিবের বচন শুনি দেব পদাসন। ক্রতাক্তা জ্ঞান করে সহ দেবগণ্যা এণিবের বচন শুনি দেব পদাসন। ক্রতাক্তা জ্ঞান করে সহ দেবগণ্যা এণিবের বচন শুনি দেব পদাসন। ক্রতাক্তা জ্ঞান করে সহ দেবগণ্যা এণিবের বচন শুনি দেব পদাসন। ক্রতাক্তা জ্ঞান করে সহ দেবগণ্যা এণিবের বচন শুনি দেব পদাসন। ক্রতাক্তা জ্ঞান করে সহ দেবগণ্যা এণিবের বচন শুনি দেব পদাসন। ক্রতাক্তা জ্ঞান করে সহ দেবগণ্যা এণিবের বচন শুনি দেব পদাসন। ক্রতাক্তা জ্ঞান করে সহ দেবগণ্যা এণিবের বচন শুনি দেব পদাসন। ক্রতাক্তা জ্ঞান করে সহ দেবগণ্যা এণিবের বচন শুনি বিয়া ঘর্গধান্যে। মানসাঞ্চি সর্বতীর্থে আনে সেই স্থানে। মন্নাকিনী আদি যত খ্যুতীর্থগণ্য। স্বারে আনিল হ্য থ্রকান্ত কান্দা

ভার পর পৃথীতীর্থ নবাকারে আনে। প্রয়াগ পুকর আদি বিদিত ভুষনে। পাতালম্ব যত তীর্থে করে আনয়ন। কিন্তু এক কথা বলি শুন তপোধন। পোদাবরী নাহি আসে একাত্র কাননে। অহন্ধার করি কহে র্য-সরিধানে। কোথা তব শতু আর একাত্র কানন। নাহি যাব আয়ি তথা শুনহ বচন। জাহা শুনি রুষ হয়ে রোষিত অন্তর। শুক্ষর দিয়া করে তাড়না বিশুর॥ ভাহা দেখি গোদাবরী কহিল তখন। রজধলা আছি আমি না কর স্পর্শন। জাহা শুনি ধর্মরুপী সেই রুষবর। তাহারে ত্যজিয়া যান শিবের গোচর। শ্কল রভান্ত কহে শিবের গোচরে। তাহা শুনি হন প্রভূ কুপিত অন্তরে॥ রোষভ্রে অভিশাপ করেন অর্প। অস্প্রা হইবে তুমি এতিন ভূবন।। फात भन्न जीर्थना कित गरमाधन। किहारान मिकें जारम राज्य अर्थानन । আৰুত্তম গ্রদ আমি করিব হেথায়। সবে বারিবিন্দু পাত করহ ইহায়॥ এত বলি পুনঃ শূল করিয়া গ্রহণ। মহেশ পাঘাণস্তর করে বিদারণ। প্রসমুত্তম ব্রদ তাহে অচিরে হইল। তীর্থগণ নিজ নিজ বারি তাহে দিল। ভার পর ব্রহ্মা বিষ্ণু আদি দেবগণ। সেই জলে স্নানক্রিয়া বরেন সাধন। অম্বগণের সহ দেব পশুপতি। সেই জনে আন করি অতি ছাট্মতি।। কহিলেন মিউভাবে দেব তিপুরারি॥ ভার পর দেবগণে সম্বোধন করি। विन्दू इत नारम देश विश्वां इहरव। পরম পবিত্র হুদ জানিবেক ভবে॥ कुई जीर्थ अहे द्वारन इहेल मुजन। শঙ্করব-াপিকা বিষ্ণুদ অনুতম ৷ । এই ছয়ে ভিন্ন ভেদ কিছুমাত্র নাই। কহিলাম গুপুক্থা স্বাকার ঠাই॥ গুপ্তভাবে সক্ষেণ অবস্থিতি করে॥ শঙ্কর-বাপিকা বিন্দুহ্রদের অন্তরে। ইহাতে করিলে স্থান সেই সাধুজন। আমার সাগজ্য পাবে ওচে দেবগণ।। विन्द्रद्भान कति यम निक्रवतत । দর্শন করিবে যেই অতি ভক্তিভরে॥ পাতক কদাচ দেহে না রহিবে তার। মম লোকে যাবে অন্তে বচনে আমার॥ দেবগণে এত বলি প্রভু প্রকানন। জনাৰ্দ্দনে সম্বোধিয়া কহেন তখন॥ সকলের শ্রেষ্ঠ তুমি পুরুষ-উত্তম। অনন্ত সহিত তুমি অমিত-বিক্রম॥ আমার শ্লের অত্য এই তীর্থবর। रहेबाटक मगुः भन्न ५७८२: श्राप्ति ॥ মূর্তির্দ্ধয়ে ভূমি ইহা করছ রক্ষণ। এত বলি छुই খানি फिटलन वैमन॥ এক খানি দিল বান্ধি বিফুশিরোপরে। অতা খানি দেন প্রভু অনন্ত লেবেরে॥ তার পর পুনঃ কছে দেব পঞ্চানন গ क्किज्ञान राम बर ७८१ कर्नाक्रम ॥ নতওঁ আছেন তথা গদা হাতে ধরি॥ छएवधि नांजायुन एएवगरन मिलि। छात्र श्रीत (प्रवर्गदेश कट्टन शक्ते। अने छन सम् वाका अभव-निकृते॥ बाशीत

দেবতা উমা জালিবে অন্তরে। রক্ষিবেন জনার্দ্দন বিন্দুব্রদবরে॥ দেবীর, ছইল নাম পাদহরেশ্রী। যেই জন বিন্দুহ্লে সানক্রিয়া করি॥ পুরুষ-উত্তম দেখি ভকতির ভরে। দর্শন করিবে পরে জীপাদহরারে॥ তাহার পুণ্যের-কথা বলা নাহি যার। অন্তকালে লয় পানে দে জন আমায়॥ বিন্তুদ মম ভূণ্য নাহিক সংশয়। বাপিক। দেবীর সম জানিবে নিশ্চয়। আমাতে উমাতে ভেদ নাহিক যেমন। শক্ষর-বাপীতে বিন্দুর্দেতে তেমন।। শিবের মুখেতে ওনি এতেক ৰচন। ব্ৰহ্মা আদি দেবগণ পুলকে মগন॥ পুনঃ পুনঃ স্থান করে সেই হ্রদবরে। লিক্ষপূজা করে সবে হরিষ অওরে॥ বিপুলদক্ণি যুক্ত করে অনুষ্ঠান। ভক্তিভরে শিবপদে করেন প্রণাম॥ তার পর নিজ, নিজ বিমানে চড়িয়ে ! নিজ স্থানে যান সবে সানন্দ-ছাদয়ে ॥ বিন্দুব্রুদে কিছু কিছু করি জল দান। সর্বতীর্থ নিজ স্থানে করিল প্রাণ॥ শঙ্করপ্রদত্ত শাপ করিয়া প্রবণ। এদিকেতে গোদাবরী ব্যাকুলিতা ২ন॥ ত্বরাগতি চলি একান্ড কাননে। করগোড়ে পড়ে আ স শিবের চরণে॥ কহে শঙ্কো বিশ্বাত্মন তুমি ক্লপাময়। অধীনী উপরে প্রতু হও গো সদয় ॥ সর্বদা এখানে আমি করি অবস্থিতি। প্রবাহিতা হব ওগো প্রভু পশুপতি॥ এত বলি গোদাবরী ছরিষ অন্তরে। অবিলম্বে প্রবেশিল বিন্দুর্দবরে ॥ তাহা দেখি তুষ্ট হয়ে কছে পঞ্চানন। হ্রদজল রদ্ধি হলে। তোমার কারণ॥ সর্বদ। এখানে তুমি কর অবন্থিতি। পুলিতা হইবে তুমি আমার ভারতী॥ **আরো** এক কথা বলি করহ শ্রব। শহর-বাপীতে তুমি থাকহ এখন॥ রহস্পতি সিংহগত হবেন যেকালে। তখন পৃজিতা হবে আপুনার স্থলে॥ এত শুনি গোদাবরী কহিল তখন। কোথা তব দেই বাপী ওতে পঞ্চানন॥ শিব কহে পরস্পরে অতি গুপ্তভাবে। আছেন শঙ্কর-বাপী অন্তরে জানিবে॥ শিবের এতেক বাক্য করিয়া প্রবণ। সেই স্থানে গোদাব ীরহেন তথন।। শুনিলে ছে ভপেশধন অপূর্ব কাহিনী। অনন্ত-মহিমা দেই দেব শ্লপাণি॥ অপূর্ব মহিমা এই করিলে শ্রবণ। রোগ শোক আর তার না হয় কখন॥ পুরাণ হয় অতি মনোহর। ভাষায় রচিল কালী শুন সর্ব নর॥

## कार दि९ न काशास

इंद्ररगोशीत तामनीना । वामरभव छेवाठ ।

ক্লাং স্বচ্ছজলং দৃষ্ট্। বিক্লাংপক্ষজোৎপলং।
একাম্রপাদপচ্ছায়ং শীতলং সুমনোহরং।
গিরিরাজস্থতা দেবী প্রহ্ন্য মুগলোচনা।
ইত্যুবাচ মহাদেবং পূর্ণচন্দ্রনিভাননং।

শতদলে বিরাজিভ ব্রদ মনোহর। গিরিরাজস্থতা করি নয়ন-গোচর 🖟 সহাস্য বদনে কহে দেব পঞ্চাননে। ওহে প্রভূ মনোহর একাত্র-বিপিনে । রাসক্রীড়া তব সহ করিতে বাসনা। অতীব সুরম্য স্থান দেখনা । এতেক বচন শুনি শঙ্কর তখন। কহিলেন প্রিয়তমে শুনহ সর্ব্ধেক্ত ত্যজি আমি পুলকিতম্মে। বসতি করিব সদা একাম্-কান্নে॥ व्यक्तेम क्ति पूर्वि कत्र मुक्त। অভेपूर्ति यागि দেবি করিব ধারণ।। করিব জীরাসক্রীড়া মোরা তুই জনে। পতিবাকা শুনি দেবী পুলকিত মনে। विस्मारिनी व्यक्ते मिक्कि करतन मुक्तन। किठक) भए जेत सम स्वर्गीतवता ॥ পুর্ণচন্দ্র সম কিবা বদন সবার। বিস্ব সম ওঠাপর রূপের পীনোমত কুচ দব শোভে বক্ষোপরে। ত্রিবলি নাভির মূলে কিবা শোভা খরে॥ কদলী সমান কিবা মোহন জঘন। লাক্ষার্সে সুর্ঞ্জিত সবার চরণ॥ রুণু রুণু বাজে কিবা স্থপুর চরণে। আর্ত স্বার অজ স্কর্ম্য বসনে॥ ष्यके শক্তি এইরপে হইল সূজন। তাহাদের নাম বলি করহ প্রবণ॥ পুক্পোলা ও মায়িনী তৃতীয় মোহিনী। বিদ্বাগা চতুর্থ পবে জীঘারবাসিনী॥ **অমায়িনী নাম জান পঞ্**মের হয়। চন্দ্রগা ও উত্তরগা এই পরিচয়। व्यक्ते मिक्कि (बरेक्स्ट्रिंग कति पत्रगन। व्यक्टिप्य छेरशापन करत शकानन॥ ইন্দুকলা ধরে সবে ললাট উপরে। জটাজ্ট বিভূব্ি ক্বাকার °শিরে॥ স্বার ললাটে শোভে ডিনটী নরন। নালকণ্ঠ মহাবন্ধ অভুল্ল-বিক্রম॥ इंशादिक नाम विन छन उर्लाधन। क्रम खुक्त रिकानां के जिनिव-र्जेंखम ॥ একমূর্ষ্টি শ্রীঈশান পুত্রর তৎপর। কৈদার এ অটমূর্তি ওবে বিজ্ঞাবর।। কহিংলেন তন-ভন ভাছে শূলপাণি॥ अकेश्वि पत्रमन कृष्टि कांजाञ्चनी।

শ্রীরাসমণ্ডল এবে করহ রঁচন। তথাস্ত বলিয়া শিব কহেন তখন। করিব 
শ্রীরাসকীড়া পূর্ণিদানিশায়। তাহা শুনি হন সতী উৎক্রি গাপ্রায়॥ তায়
পর কিছুদিন হইলে যাপন। পূর্বিক্র আলি হয় উদিত তখন। মনোহর
জ্যোৎসালোকে এফাত্রকানন। পরম শোভিত হলো ওহে তপোধন।
ভাহা দেখি ক্রীড়াকামী হলেন শহর। মন্মথ খেরিল আদি উাহার অন্তর।
গিরিজারে সম্বোধিয়া কহেন তখন। অই শক্তি সহ প্রিয়ে কর আগমন।
তোমা সহ রামলীলা কবিব হলরী। দেখ দেখ বিন্দুহদ নয়নে নেহারি॥
কমলের দল দেখ কিবা শোভা পায়। কানন শীহল হের পাদপছায়ায়॥
মন্দ মন্দ বায়ুদেখ হতেছে বহন। রামক্রীড়া-উগয়ুক্ত সময় এখন। এত শুনি
দেবী কহে ওহে জগরাথ। ভোমার চরণপুগে করি প্রণিপাত। ক্রীড়া,করি
কর মম জীবন সকল। সধীগণে ভূট কর ওহে শূলধর। রাস হেতু কর থেবে
ফলিব বিধান। তার মাঝে হবে ক্রীড়া ওহে মহিমান্॥ ত্রিদশগণেরা সবে
করিবে দর্শন। ধরাতলে কীর্তি তব হবে সংস্থাপন॥

এতেক বদন শুনি দেব শূলপাণি। সখীগণে সংঘাধিয়া ক**হেন তখনি॥** এক এক দেবীপতে দেব একজন। অবস্থিতি করি কর মণ্ডল রচন । ভথাস্ত বলিয়া দ্বে তাহাই করিল। তার মাঝে মহেশ্বর নৃত্যু আরি দ্বিল। শিবা সহ নৃত্য কয়ে প্রভু পঞ্চানন। অই মূর্ত্তি অই শক্তি আনন্দে মগন॥ মানারেশে রক্ষভক্ষ করে দব জনে। কিবা শোভা হয তাহে না যায় কছনে। ভাহাদের ভক্তিভাব করিতে দর্শন। শিবা সহ অন্তর্হত হন পঞ্চানন॥ চুতরক-শাখা দোঁহে করিয়া আশ্রয়। কিছুক্ণ গুপভাবে পুদকেতে রয়॥ ওঁ। হাদিলে নাহি হেরি দেব∙দেবীগণ। বন্যাঝে নান্যে নে করে অস্বেষণ # চন্দ্রগারে পরিত্যাগ করিয়া সকলে। শিব অন্বেশণ হেতু যায নানাস্থলে। একাকিনী হয়ে বনে চন্দ্রগা তখন। সখী দখী বলি খেদ করে ঘন ঘন॥ हा एक जिल्ला एक रिंग कान कारन। प्रश्चिनी दे उन्नित्त का जिल्ल दे किरमत कांतरन्॥ श हत्स्वमदन भीति तरिल काथाय। ताजिकातन वनगात्य ভাজিলে আমায়। ফ্লণা করি দরশন দেহ গো সুন্রি। তব্পাদপদ্ম হেরি ছুই চকু ভরি । থাকিতে না পারি আর তোমাব বিহনে। কুপা কর কুপাময়ি করণ-লোচনে ॥ চন্দ্রগার খেদবাক্য করিয়া ভাবণ। গিরিহতা প্রাহ্ছুতা ছলেন তথ্য । কহিলেন শুন শুন ওগো সুলোচনে। অক্লব্ৰিষ ভঞ্জি তব হেরিছ নরনে ॥ সর্ক্রখন হতে শ্রেষ্ঠ ভূমি গো স্থ করী। আমারে ডাকিলে पूरि विन भीती भीती ॥ महे (इपू.भीती नाम हदेख अठात । अवह नादम

'হবে খ্যাত জগত সংসার।। শিবার এতেক বাক্য করিয়া প্রবশা । আনকে मगना रेश हक्कगा उपन ॥ अपिटक चान्हर्या कथा छन जांत्र शटत । चर्कपृष्टि শিবরূপ অবিশয়ে হবে॥ যোজন আয়ত সেই কাননমাঝারে। শক্তিগণ বাহ মবে বিচরণ করে ॥ইতিমধ্যে একমূর্ত্তি নামে যেই জন। তাহারে ত্যু জিরা नत्य कत्रदश्चमण ॥ ध्वकज क्रेश मत्य द्वमक्रि गाग्न। ध्वकाकी तम ध्वकपृष्टि কাননে বেড়ায়। পথ না পাইযা সেই করষে ভ্রমণ। দক্ষিণাভিমুখে পরে করবে গ্রমন ॥ কিছুদূরে গিয়া দেখে পর্বত স্থলর। আনন্দ লভিল তাছে সেই বীরবর ॥ পুনশ্চ ভূপ্থিত হযে করয়ে রোদন। ছাফ ছায় কিবা কট 'কোথা পঞ্চানন। অপরাধ কিবা প্রভু করিনু চরণে। ভোমা বিনা এ পর্বতে ভাজিব পরাণে॥ এত বলি কিছুদুর কবিযা গমন। সহসা পর্বত হতে হয় নিপতন । ভক্তি কবি সেই জনে পতিত দেখিয়ে। আবিভূতি হন. শিব সানন্দ খদবে ॥ মধুর বচনে তারে কছেন তখন। একমূর্ত্তে তব ভক্তি করিনু দর্শন।। পরিপ্রাপ্ত হইয়াছ তুমি অতিশয়। অতএব এই স্থানে থাক মহোদয়॥ জোমারে আনন্দ দান কৰেছে পর্বত। এ হেতু নন্দন নামে হইবে বিখ্যাত॥ রাসরক হতে তুমি এসেছ বাহিরে। বহিরকেশ্বর নাম কিলাম তোমারে॥ এখানে যে জন ভোমা করিবে পূজন। মম প্রাফল পাবে সেই মহাজ্যন্।। এত বলি দেবদেব শশাক্ত-শেখর। দেবদেবী স্বাপাশে গেলেন স্ত্র॥ একমূর্ত্তি-বিবরণ কছেন শবারে। চন্দ্রগা-রভাত্ত সভী কহিল তাঁহারে। ভার পর রাত্রিশেষে দেব মহেশ্র। উনা সহ রাসলীলা করেন বিশুর॥ भार्विजी मत्याधि करह या मधीगर्ग। कतिरल बितामनीमा इप-मित्रशास्त ॥ চ্ছত্রের তটে তটে কর অবস্থান। চন্দ্রগারে রাখি সবে করছ পয়াণ॥ আবেশ পাইয়া দৰে তাহাই করিল। স্ত্রপোলা পশ্চিমেতে অবস্থিত হৈল। ষায়িনী তাহার সহ করে অবস্থান। মোহিনী বিশ্বাগা কবে দক্ষিণে প্রাণ॥ পুর্বতটে স্থিত হয় জীবারবাদিনী। তাঙ্গার সহিতে আরোরছে অমায়িনী। উত্তরপা অবস্থিত উত্তর তাবেতে। চন্দ্রগা প্রথিত হলো প্রীগোরীনামেতে॥ সিদ্ধারণ্য সমাশ্রয় চত্রগা করিল। মনোহর কুও এক তথায় সৃদ্ধিল॥ তার পর অষ্ট্রন্তি শিবের আজায়। যাহা যাহা করে শুন বলিব তোষায়॥ ক্ষুদ্র দেব পূর্বেদিকে করে অবস্থিতি। অগ্রিকোণে রহে, সুমার্প ওবে মহামতি॥ क्षिर्भारत देवलामाथ करत्र अवदान । देशारत शृद्धि अ शृद्धि तावक धीमान्॥ म रिक् इहाँ साम तावन-क्षेत्र। विविच क्रिंटक हेर्ं अटर मूनोंच्त्रं॥ देन्स छ विस्कृतक तरह एस निर्वाक्ष । किनिन हेरीत श्रुका, करतेम माधन ॥

শে হেতু ইহার নাম কপিল-কথর। কশান বারব্য দিকে রহে নিরন্তর ।
উত্তর রহেন বিন্দুর্দের উত্তরে। কেদার রহেন গৌরীপার্যদেশে পরে ॥
গৌরীনামে গৌরীকৃণ্ড হইল প্রচার। অদ্যাপি প্রত্যক্ষ সবে করে অনিবার ॥
এইরপে একমাত্র দেব পঞ্চানন। অইমূর্ত্তি ইচ্ছাবশে করেন ধারণ ॥
রাসক্রীজা যেই জন শুনে ভজ্জিভরে। ভুবন ঈশ্বর ভুগ্ট তাহার উপরে ॥
ত্রিভূবনেশ্ব নাম শুনহ এখন। ক্রত্তিবাস এক নাম ওতে মহাত্মন ॥
লিক্ষরাজ মহেশ্বর স্বর্ক্টজেতে। ত্রিভূবনেশ্বর পরে জানিবেক চিতে ॥
প্রাণের সার এই শ্রীশিবপুরাণ। ধ্রাধামে নাহি কিছু ইহার স্মান ॥

## উন্তিংশ স্থায়।

িরভুবনেধরের অকৌওরশত নাম। লামদের উবাচ।

ব্যারে । ভূবনেশস্ত নাম্নামটোতার শহং। সর্ক্রাপ্রশ্নমনং মেটিক শ্লনদায়কং॥

ত্রিভ্বনেশের অন্টাবিক শত নাম। বলিতেছি এইকণ শুন্থ বীমান্ধ সক্ষণাপ দূরে বাদ ইহার প্রসাদে। মোককলপ্রদ ইহা জানিবেক চিতে ধ এই স্থোপে দ্বের বাদ ইহার প্রসাদে। মোককলপ্রদ ইহা জানিবেক চিতে ধ এই স্থোপে শ্বি হন মনতকুমার। বিরাট ইহার ছন্দ ওহে গুণাধার ॥ পদগর্ভ দেব আরে বাঞ্জিত অর্ণেতে।বিনিযোগ হয়ে গাকে জানিবেক চিতোধ ও শিবোহসিতাকঃ সংস্তুত্যো দিবারপধরো হয়ঃ। সন্দ্রুমারবরদো গৌরী-প্রমাত্র প্রদঃ ॥ মহা প্রলয়ক্তিকেব নিশুণো বিশ্বস্ক তথা। একাবিদ্যাপ্রদো বিশ্বে ধুমারিরন্ধকান্তকঃ ॥ কজঃ সৃষ্টিকরণের যুগপর্মপ্রকরিং। ক্রোকদিশিশতির্ভগো হিমাল্যনিকেতনঃ ॥ মুড়ো নণিবতীনাথো কৈনাসগিরিনাযকঃ । ক্রোক্রন্সকান্ত্রী শ্বিক্টাচ্নপ্রভূঃ ॥ জ্যোতিলি জী মহাদেবো বিশ্বরপ্রদেশকঃ। ক্রাক্রিপ্রদেশকঃ। ক্রাক্রিপ্রদেশকঃ। ক্রাক্রিপ্রদেশকঃ। ক্রাক্রিপ্রদেশকঃ। ক্রাক্রিপ্রদির্ভিনারিগ্রাকঃ ॥ নবাম্তপ্রদেশ্ ক্রিভ্বনেশ্রঃ। ভাক্ররাদ্যো য্যার্চ্যাক্রিক্রিপিন্তির বিশ্বরা বাহদেব-প্রতির্ভাতা শক্রেজহবিগ্রহঃ । বেন্ত্রসরঃকর্তা মাসত্রতনবপ্রিয়ঃ ॥ বাহদেব-প্রতির্ভাতা শক্রেজহবিগ্রহঃ । দেবাসুরাগ্রেমনানীর্গ্রন্তবিজয় প্রদঃ । ইরগ্র-ক্রিপ্রাতঃ শক্রাদিসুরসংস্তৃতঃ। দেবাপ্রাত্রদেশদংকর গোপবেণ্প্রাদকঃ ॥

ক্ষানি বিরুপাক্ষঃ পর্ক্রয়পরিপুলিতঃ। ফর্ল্যোত্তির্বরদক্ষির বদরীমুক্তিলারকঃ। কোর্টিম্পলকারাই ইন্দেশ্যর প্রদঃ। কপিলপ্রীতিদকৈর কোর্টি-ক্রিক্রিরঃ। প্রমোদেকর্মফলদঃ হ্রর্থফলদারকঃ। বালিখিলাপ্রীতিকরঃ ক্ষত্রোক্রপিরিরঃ। প্রমোদেকর্মফলদঃ হ্রর্থফলদারকঃ। বালিখিলাপ্রীতিকরঃ ক্ষত্রোক্রপির্বিরঃ। প্রমেণ্ডরেরির্ভালার রহুনাথবরপ্রদঃ। প্রমিণপুজিতপদ-ক্রের্থেলঃ। ক্রাম্থেরেরির্ভালার রহুনাথবরপ্রদঃ। প্রম্বিরুগ্রনার কর্মেরঃ। কার্তিকেরপিতা চৈব বিনায়কগুরুত্তথা। র্বধ্বত্তঃ কল্প-ক্রেঃ লাবিরীপ্রীতিবর্ধনঃ। প্রম্বিরঃ শস্ক্রামাতকররোং হ্রকঃ। সর্বন্দিরীপ্রতিকর ক্রামাতকররোং হ্রকঃ। সর্বন্দিরিরার প্রতিকর ক্রামাতকররোং হ্রকঃ। ক্রামানেরারী চ ঘোর্গিনীত্রয়ভূমিতঃ। ক্রম্পান্তরাক্রমের গাল্যানিরারী তিকরন্তথা। মহাশাশানেরারী চ ঘোর্গিনীত্রয়ভূমিতঃ। ক্রম্পান্তরারিনাশী চ দত্তকাপালিমীনরঃ। ভক্তাপ্রগদিকের ক্রেপ্রেপানবলিপ্রিয়ঃ। ভীমসেনবলোৎসাহঃ সিদ্ধিভিবরপ্রার (ক্রেপ্রেক্রির্বারিরিরেলোকেশো ভর্গবাংন স্বান্তরার প্রিয়িরিরেরেলাকেশো ভর্গবাংন স্বান্তর। তিপুরারিরিরেরেলাকেশো ভর্গবাংন স্বান্তিরঃ।

অতৌত্তর শত নাম করিত্ব কীর্ত্তন। পরম গোপন ইহা মুক্তির কারণ। তিন সন্ধ্যা ভক্তিভরে যেই জন পড়ে। অন্তকালে যায় সেই শিবের নগরে॥ আক জনে এই স্থোত্ত করিবে প্রদান। অভক্তেরে নাহি দিবে ওহে মতিমান প্রাভঃকালে গাত্তোথান করি যেই জন। ত্রিভূবনেগরে হুদে করিয়া মরেণ॥ এই কোত্ত অধ্যয়ন যেই জন করে। ত্রন্ধহত্যা পাপ তার চলি যায় দূরে॥ নামভোত্ত ওহে তুতে করিলে প্রবণ। আর কি শুনিতে বাঞ্চা বলহ এখন।

## जिश्न अभाग ।

একাডকাননের মাহাত্ম্য। বামদেব উবাচ্।

ভত্ত একো যতকান্তস্তমাদেকান্তকং বনং। সাবধানাৎ শৃগুৰাদ্য মাহাত্ম্যং ভূবি ছুল্লভিং॥

্ত্তি কৰে নিবেশন করি তপোধন। একাত্র-মাহাত্মা এবৈ করিল প্রবণ॥

রাসক্রীড়া সেই স্থানে করে হরগোরী। উহার মাহাত্ম্য-ঋষে বল রূপা করি॥

এত গুলি বাদদেব কহেন তথন। গুল গুল তপোধন করিব বর্ণন॥

একগাত্র আত্রতক বিরাজে দেখানে। একাত্র কানন নাম এই তেতু ভবে। তুর্ম ভ মাহাত্মা তার করিব বর্ণন। সাবধান হয়ে শুন ওছে তপোধন। বারাণদী সম তীথ একাম-কানন। জেত্রপাল হযে বিষ্ণু আছে অকুক্ষণ 👫 কীট পক্ষী নর আদি মরিলে এখানে। জীতারক তক্ষ নাম প্রবেশে **অবণে** कर्षमू एक भाग एक श्रामन । देशत ममान यान नाहि उर्शायम ॥ প্রোশ ব্যাপি আক্রছায়া করে অবহান। আত্রমূলে আত্রেশ্বর লিক্স-অধিষ্ঠান, ८नेट लिख्य पत्रगम करत (यह जन। गिरुशल भाग मिटे गारिखत राजने द्वा একামেশ্বরের পালে করিয়া গ্রমন। শিব্যাস যেই জন কর্যে **জপন।** দিদ্ধি লা ভ করে দেই নাহিক সংশ্য। শান্তের বচন মিথাা কভু নাহি হয়॥ ত্রিভূব-ঈথর লিঙ্গ বিণাজে এখানে। গোপিকা গিরিজামূর্ত্তি শো**ডে এই** ' न्धारंत ॥ अके माल्क अके इर्कि करत अवस्य न। अन अन्य त्वमूर्कि अरह विदा-भाग। अभयमायक याता वानीशारम हिला। तामनीला स्थिम मरव अभारम आमिल॥ माचगारम क्रव भरक ठजूर्दिनी पिरन। एक व विषक्ति रघरे करक শুরুমনে।। মুজন তাহার হয় নাহিক সংশ্য। শাস্ত্রের বচন মিখ্যা কভু নাহি হয়। একান কাননে যদি কিছু পাপ করে। প্রদক্ষিণ কৈলে পরে দেই পাপ হরে॥ মেক প্রদক্ষিণ করে ভাস্কর যেমন। এই ক্ষেত্র প্র**দক্ষিণ** করিনে তেমন ॥ থিকে। টি-জন্মজ পাপ বিনাশিত হয়। নাহিক সন্দেহ ইথে কৃষ্ঠিপু নিপ্তয়। ছায়া যাত্রা স্যত্তেন করে ঘেই জন। জন্তিমে সে জন যারু কৈলাস ভবন। বৈশাখেব পূর্ণিমাতে হযে একাওর। করিবেক ছাযাযাত্রা खर्ड विक्षवत् ॥ धरे द्वारन धार्ति भाष्ठ न्याहि विशक्तिक। यदागिकिटीन ভাষা জানিবে নিশ্চিত। এয়োদশ দিন সেই সমাহিত মনে। এখানে গ্ৰমন করে বিহিত বিধানে॥ মন্ত্রনিদ্ধি হয় তার নাহিক সংশ্য। দেবতা দর্শন হয় জানিবে নিশ্ব। এখানে ওভর লিজ আছে সর্বক্ষণ। এমহাশাশান পীঠ অতি মনোরম। বৈদ্যনাথ বিবাজিত আছেন এখানে। এখানে জপিলে মঞ্জ ঐকীস্তিক মনে॥ শাদমধ্যে সিদ্ধিপাভ করে সেই জন। কেত্রের মাহাত্ম এই করিমু বর্ণ " "

তীর্ষের মাহাত্ম এবে শুন মগার্যতি বিদ্তার্থে স্থান করি যে জন প্রয়তি॥
পাপহরা দেখি আরু পুরুষ-উভয়ে। ক্রিভুবনেখর পাশে যায় পূত্যনে॥
শিবভুলা হয় সেই নাহিক য়ংশব। সর্বাপাপে মুক্ত হয় সে জন নিশ্চয়॥
পাপহর কুণ্ড হেলা আছে বিদ্যান। তাহে স্থান আদি করি যেই মতিমান॥
বৈদ্যোল ও বায়বেশে করিয়ে পুরুষ। বরুণ নোকেতে বায় সেই মহাত্মন।

প্রস্থা-যমুনক তীর্থে স্থান আদি করি।গঙ্গেখনে দেখে যেই অতি ভক্তি করিছ শিব-অতুচর হয় সেই সাগুজন। শত্রের বচন মিথ্যা নহে কণাচন।। কোটি কীর্থ ভাষার দেহেখর। ইত্যাদি করিয়া তীর্থ আছে বছতর ॥ এই শ্ব তীর্থে আন করিলে সাধন। অমর-চুর্লভ গতি লভে সেই জন। মার্গ-শীৰ্ষে ক্ষুপ্ৰীকে অফমী তিথিতে। ৰহুফলপ্ৰদ তীৰ্থ জানিবেক চিতে। বিন্দুর্দ-জলে দেই করিলে বর্জন। শিবের সাযুজ্য পায় সেই সাধু জন।। নিজের দক্ষিণ ভাগে ধাত্রীরক্মুলে। যে জন জীবন তাজে বহুভাগাফালে॥ শিবের আলরে যায় সেই মহামতি। প্রলয় অবধি তথা করে অবস্থিতি॥ অনশন ব্রত হেথা করে যেই জন। ব্রন্মহত্যা তার দেহে না রহে কখন।। বিনায়ক মূর্ত্তি আছে দেবের অগ্রেতে। ভাষারে দেখিয়া বাক্য বলিবে মুখেতে । "বিষেশ্বর নমতে স্ত সর্কাসিদিকর। দরশন করি যেন ভুবন-ঈশর ।।" (को बाका बनि शद्य कतिरव गमन। (गांशानिनीशार्भ माधु रुद्य (क्रक्मन॥ केশান দিকেতে তাঁরে করি দরশন। ভক্তিভরে ভূমিতলে করিবে বদন।। আর্থনা করিবে পরে নিকটে ভাঁছার।"গোপালিনি তব পদে করি নমস্তার॥ क्रिकामनिएकनि ভূবন-ঈশরি। পুল পৌল কীর্তি লক্ষী দেহ ক্লপা করি॥" এত বলি প্রণমিয়া তাঁহার চরণে। কুমারনিকটে ঘাবে দক্ষিণ-বদনে॥ "ক্রেकेহত্তে নমস্তভ্যং পার্বভীনন্দন। স্থালোক রূপা করি করছ অর্পণ॥" এরপে প্রার্থনা করি কুমার-গোচরে। ঈশানে রুষের কাছে ঘাবে ভক্তিভরে॥ প্রার্থনা করিবে গিয়া হবের দদন। "সর্ব-তীর্ণপ্রদ তুমি আনন্দবর্দ্ধন॥ ৰজ্ঞোন্তব তুমি র্য করি নমস্কার। শিবপ্রীতি কর দান রূপার আধার॥" এত বলি প্রণমিয়া করিবে গ্রমন। উপনীত হবে গণচডের সদন॥ প্রার্থন। করিবে পিয়া ভাঁহার গোচরে। "দেবপ্রীভিবিবর্দ্ধন নমামি ভোমারে॥ তোমার প্রসাদে বীর্যা ধ্বতি তেজ-বল। পাই যেন ওছে প্রভু দেহ এই বর ॥" এত বলি প্রণমিয়া তাঁহার চরণে। যাইবে পরেতে কম্পতর সন্নিধানে । छथा शिक्षा क्षिपिक कित्र उद्भवत्त । अहे वाका वपत्तर विनाद नापत्त ॥ "বাঞ্গাসিদ্ধিপ্রদ তরু করি নমস্কার। ত্রন্ধবিষ্ণু-শিবারাধ্য জুমি গুণাধার ॥" এত বলি নৈখতেতে করিবে গমন। যেখানে সাবিত্রী দেবী কাছে অমুক্রণ।। थार्थमा क्रिट्ट डाँट्स एन मश्मूनि। "माविजीयत्रभा देवटनत क्रिनी॥ ত্রকপ্রজ্ঞা বেখা মোরে কর সমর্পণ।" এত বলি ভ্রিভরে করিবে বন্দন।। भूवन-क्रेश्वत भारम यादव जात भटत । विलिद्क (u) र वाकी वास्तिवरक ।। "कुछियोन नम्टिख छूपन-नेबत्। रभक्तिन एम्स स्माद्ध करूर्गा-नागत ॥ করিয়াছি প্রভু অফ মূর্ত্তি দরশন। সেই ফল হয় যেন ওছে ভগবন্॥" বলি নমকার করিয়া ভূতলে। কৃতকৃত্য জ্ঞান সাধু করিবে জন্তরে॥ এই-রূপে অউমূর্ত্তি হেরে যেই জন। অথ্যেধ-ফল পায় সেই মহাত্মন 🖈 বিশেষতঃ কৃষ্ণপক্ষে চতুর্দ্দশী দিনে। যে জন দর্শন করে ভক্তিযুক্ত মনে 🗗 **ত্তক্ত**্যা আদি পাপ নাহি তার রয়। কহিনু তোমার পাশে ওহে মহোদয়ঃ বিন্দুর্দে স্থান করি যেই মহাত্মন। ভক্তিভরে অইমূর্ত্তি করে দর্শন॥ কৃষ্ণচতুর্দশী যদি সেই দিন হয়। জন্মবন্ধ দুচে তার নাহিক সংশয়॥ ক্লম্খ किया खन्न शटक छ दुर्मनी पिटन। कु खिवारम प्रत्रभन कतिरल य उटन॥ क्रिविराम पूला रश (मरे भराजान । नाहिक मत्मह रेप भारयुत वहन ॥ তথা হতে উত্তরেতে লিঙ্গ রুদ্রেশ্র। ভক্তিভরে দরশন করে যেইগনর॥. থে কল তাহার হয় করহ প্রব। শুনিলে আশ্চর্য্য হবে ওতে তপোধন। দশলক লিকবরে হেরিলে নয়নে। যেই ফল হয় লাভ শাস্থের বিধানে # সেই কল হয় তার জানিবে নিশ্চয়। কহিনু তোমার পাশে ওছে মহোদয়॥ তথা হতে নৈঋতেতে লডচুক-ঈশর। বিরাজ করিছে লিঞ্জতি মনোহর॥ নবলক লিঙ্গ-প্রভূ এই লিঙ্গ হয়। শিবের আদেশ ইহা জানিবে নিশ্চয় ॥ नवलक लिक्ष्रभूका रिकल्ल (यह कन। इंशेरत शृक्तिल नत शांत्र मकल॥ শক্তেথর লিঙ্গ আছে নিকটে তাহার। পূজিলে দে জন যায় ইন্দ্রের আগার॥ অগ্রভাগে বিরাজিত লিঙ্গ বিধেশর। দশলক লিঙ্গ-প্রভু এই লিঙ্গবর।। প্রবিকে কুদ্রেশ্বর করে অধিষ্ঠান। দশলক লিঙ্গ-প্রভু খ্যাত সর্বস্থান। বৈদ্যনাথ তার পাশে আছে বিরাজিত।দশলকলিঞ্চ-এভূ জানিবে নিশ্চিত॥ তাহার নিকটে লিঙ্গ ঈশান আখ্যান। উত্তরে কেদার লিঙ্গ খ্যাত সর্বস্থান। वाग्रुटकार्ट भटरश्रंत्र नारम लिक्कवत । यमपछ नाम शांत्र हरत रार्ट नत ॥ পোসহঅ-ঈশ্বরের করিলে দর্শন। সহঅ-গোদানফল পায় সেই জন ॥ প্রদারেশ্বরে ষেই ভক্তিভরে হেরে। প্রদারকৃত পাপে সেই জন তরে॥ তথা হতে পূর্বাদিকে কুক্কট-ঈশ্বর। ভক্তিভরে হেরে তাঁরে যেই কোন নর॥ সর্বপোরেপ মুক্ত হয় পেই সাধুজন। গলর-পদবী পারে সেই মহাত্রন॥ ঈশান-कार १ कार कार किन मिरमधंत। छारा व पर्णन करत । यह कान नत्र॥ বৈকৃষ্ঠ নর্গরে বায় মেই সাধুজন। শান্তের বিধান এই ওছে তপোধন॥ ইহা ভিন্ন কত লিক্ষ একাত্র-কাননে। মুক্তেশ্বর চক্রেশ্বর নানাবিধ নামে॥ मिर नव एतमन केरत त्यहे जन। छारारएत श्री किया कतिरव वर्गन॥ टिक्रगाटन (येरे जन अकास-कानंदन । निवित्तक मृष्टि करत ७ कियुक भरत ह ত্রনহ গা আদি পাপ বিনাশে তাহার। মুক্তিলাভ হয় তার শাত্রের বিচার॥ একা ঘ মাহাত্মা কেবা বর্ণিবারে পারে। বহুবর্ষশতে কেহ বর্ণিবারে নারে॥ পুরাণের সার হয় শীশিবপুরাণ। পড়িলে সে জন পার অত্তে মোক্ষাম॥

## এব ত্রিংশ অধ্যায়।

বিকৃত্র সুদর্শন লাভ, হিরণ্যাক্ষ বধ এবং বিকৃত্র বর্হাহরপে ধরণী উদার। ভূজি দ্বাচ।

কর্মং বিকুঃ শিবং রাধ্য চকুমাপ স্থদর্শনং। এতদিন্দাম্যহং শ্রোহুং ক্লপয়া প্রয়া বদ।।

তুত্তি কহে নিবেদন ওহে তপোধন। কিকপে ঞীহরি পান চক্র প্রদশ্ন । **मिरे कथा শুনিবারে একান্ত বাসনা। রুপা করি বনি তাহা পুরাও কামনা॥** বামদেব কহে শুন ওতে মহাত্মন্। ছুই দৈত্য ছিল পর্ফো অতীন ছুর্দম।। বিরণ্যকশিপু আর হিরণ্যাক্ষ নাম। হিরণ্যাক্ষ ক্যেষ্ঠ তাতে খ্যাত সর্কস্থান।। হিরণ্যাক তুরজয় হরে ক্রমে ক্রমে। পরাজয় করে যত কর্গবাসীগণে॥ ইঞ্রের ইব্রুত্ব সেই করিয়া হরণ। আপনি ইন্দ্রপুদে বদে তুরজন।। সুর্য্যচন্দ্র তুই ব্দেষ্টে ধরাতলে। পূর্য্য চন্দ্র রূপে নিজে রহে পৃত্যভরে॥ রাজগণৈ করিয়। সংহার। পুত্রগণে সেই পদ দেয় বলাধার॥ দেবযজ্ঞ লোপ করে অবনীমণ্ডলে। যজ্ঞ-হবি থায় নিজে পুলক-অন্তরে॥ ভার পর পাতা-লেতে করিয়া গমন। যত নাগগণে জয় করে চুরজন॥ ৰাপ্তকির ফণাচেছদ করে খড়্গাঘাতে। বাস্ত্রকি মূচ্ছিত হযে পড়িল ভূমিতে॥ নিরাধারা হয়ে ধরা রসাতলে যায়। দেবগণ নাহি দেখে কিছুই উপায়। বেশা আদি দেখগণ মিলিয়া সকলে। উপনীত হন শেষে বৈষ্ঠ-আগারে॥ বিফুরে কহেন সবে বিনয় বচন। রক্ষা কর জগরাপ এ তিন ভূবন। হির্মণ্যাক্ষ হতে ধরা রশাতশে যায়। ত্বরা করি কর প্রভু ইহার উপায়। তাহা তনি ত্বরা করি দেখিরা ভাঁহারে। দানব জিজ্ঞাসা করে অগভীর করে॥ কেবা তুমি কোঁখা হতে কৈলে আগখন। তোমারে ছেরিয়া আমি আনকে মগন। তাহা

গুনি হাস্য করি কহিলেন হরি। জাল ভাল বলি শুন এতে সুর-আরি॥ আমারে হেরিয়া হর্ষ জন্মিল ভোমার। আমার অক্ষেতে লীন হও গুণাধার॥

এত শুনি দৈতাপতি কহে রোষভরে। কি কথা কহিলে তুমি শুনি শ্বদি কলে॥ ত্রিলোক-প্রধান আমি খ্যাত সর্বস্থান। তব দেহে লীন হব এ কোন বিধান।। বরঞ্জামার দেহে নীন হও তুমি। এত শুনি ক্রোধে খুলে দেব চিন্তামণি॥ অমনি দিব্যাস্ত্র প্রভু করেন ধারণ। চুই জনে যুদ্ধ ঘটে অতি বিভীষণ।। ছুই জনে কত অসু বরিষণ করে। দেবগণ ছেরি তাহা হৃদয়ে निहरत ॥ अहेत्रार्थ वहावर्ष ठानिन ममत । निःश्निव हटेन अस ভार्व अलाधत ॥ তার পর বাহুমুদ্ধ ছুই জনে করে। কত বর্য গত হয কেহ নাতি হারে । ক্রমেতে কাতর হন বৈকুণ্ঠ-বিহারী। মনে ভাবে হায় হায় কি উপায় করি॥ শৈবান্ত বিহনে নাহি জিনিতে পারিব। শৈবাস্ত্র লভিয়া পরে দানবে নাশিব॥ থেত ভাবি যুদ্ধ ত্যজি করি পলায়ন। জলমধ্যে লকাষিত হন নারামণ॥ जापन कामू त लिक कति विरवहना। धकमरन नित्रस्त करतन माधमा॥ প্রত্যহ সহত্র াতর করেন পূজন। এইরূপে বত্রকাল করেন যাপন ॥ ভক্তি পরীকা হেছু দেব মহেশ্র। হরণ করিবা লন একটী কমল।। এক এক করি পদ্মে পুজিছেন হরি। এক পদ্ম কম দেখে বৈকুণ্ঠ-বিহারী॥ অঙ্গহীন হয় পূজা করি দরশন। আপনার নেত্রপর্য করে উৎপাটন।। ভাহা বিয়া পূজা করে দেব মহেশ্বরে। তাহা দেখি শিব তুই আপন অন্তরে। আবিভূ*ত* হন আদি হরি-সরিধান। কহিলেন বর মাগ ওহে মতিমান্।। ছরি কছে ষ্মস্ত্র দেহ ওছে মহেশ্র। ঘাহাতে বধিকে পারি দানবপ্রবর। তাহা শুনি कूचे बद्ध (पव शकानन। अपर्यन नारम ठक करत्न व्यर्ग।। करिएमन শুন হরি আমার বচন। পূর্বেবৎ হবে চক্ষু ওহে নারায়ণ ॥ এত বলি অত-ছিত ছলে মহেশর। যুদ্ধ হেতু হরি পুনঃ হন অঞাসর॥ চক্র হাতে যুদ্ধ হেতু করেন গমন। তাহা দেখি দৈতা হয ক্রোধে নিমগন॥ পু॰ क বাধিক দৌহে দারুণ সমর। বত্ঞণ যুদ্ধ চলে আতি ঘোরতর॥ তার পর সুদর্শন করিয়া গ্রহার। 'হিদ্রণ্যাকে গদাধর করেন সংহার॥ বরাহ-জাকার পরের क किया शाक्त । जः कीट्या भक्तीरत श्रंकू रत उरखालन ॥ বাস্থকির ফণো-পরি স্থাপন করিয়ে। সানন্দে গেলেন প্রভূ বৈকুণ্ঠ-আলয়ে। শিবের মহিাত্ম্য কেবা করনে নর্বন। তাঁহার প্রসাদে চক্র পান নারায়ণ ॥ জিজ্ঞাসিয়াছিলে যাহা ওহে বিজ্ঞবর। বলিমু সকল তাহা তোমার গোচর॥ ভক্তিভরে থেই देश करत अधातन। अथवा अकार्य भरन कद्राम खेवन । निरम्नाहक माझ সেই নাহিক সংশয়। শান্তের বচন মিখ্যা কভু নাহি হয়॥ জীনিবপুরাণ হয় অতি মনোছর। ভাষায় রচিল কালী শুন সর্ব্য নর ॥

## माजिएम अशारा।

শিবের কালকৃট ভক্ণ !

বাদদেব উবাচ। অতঃ পরং মুনিশ্রেষ্ঠ শৃণু শক্তোম হাযশঃ। কালকটং যথা পীতা ররক্ষ চ চরাচরং ৃ।

वामराव करह छन छर छरणाधन। भिरवत अपूर्व की हिं कतिव वर्गम॥ कालकृषे-পান করি যেরপ প্রকারে। করিয়াছিলেন রক্ষা এই চরাররে॥ कीतार्गव मधामान (यह काटल इस। जाहाट अधाम हम विष्युत जिल्यु॥ তাহার তেজেতে হার কাঞ্চন-বরণ। দেখিতে দেখিতে করে কালিমা ধারণ। ভাহা দেখি দেবগণ মিলিয়া সকলে। উপনীত হন আসি বেলার গোচরে॥ বিনয় বচনে কহে ওবে প্রজাপতি। করুণাকটাক্ষ কর স্বাকার প্রতি॥ শমুদ্রেমখনে উঠে বিষ থোরতর। তাহার তেজেতে ধংস ইয় চরাচর॥ এই দেখ গৌরবর্ণ দেব নারায়ণ। হয়েছেন বিদতেকে কালিমা-বর্ণ। এত শুনি প্রজাপতি করি যোড়কর। শভুর করেন গুব কোথা দিগদর॥ যোগীর ঈশর তুমি সার হতে সার। তোমার চরণে করি কোটি নমস্কার॥ এইরূপে কত শুব করে প্রজাপতি। আবিভূতি হন আদি দেব পশুপতি॥ কহিলেন কিবা বাঞ্চা কর পলাসন। এত শুনি কহে এক। বিনয়-বচন। তোমার শর্প লই আমরা সকলে। রক্ষা কর রূপ। করি এই চরাচরে॥ সমুদ্র-মথনে উঠে বিষ ঘোরতর। তাহার তেজেতে নাশ হয় চরাচর॥ তাহার তেজেতে रित काक्षम-वत्। इत्यद्दन कृष्धवर्ग कंत पत्रभन ॥ **७७ छ**नि वास्त इत्य-দেব পশুপতি। বিষপান হেতু যান অতি ক্ষতগতি॥ সাগ়রের তীরে জ্বা कतिया गमन। अविनास्त्र विष भान करत भ्रक्षानन ॥ देवमन कर्रकट्ड विष व्यात्रमन करत । व्यश्रक्ष नी नियावर्ग ताहे कर्ण धर्त ॥ जाहा तिथि नियक्षाद কতে দেবগণ। অপূর্ব শোভিছে কঠ ওছে পৃঞ্চানন ॥ এত তুনি মহৈশর वृतिम जाउरता। तमहे विम कर्कटमत्म भटतम मामरत ॥ जाहा तमि पूछे इत्स

শত দেবদা। পুনশ্চ করিতে থাকে সাগ্র মন্তন।। চন্দ্র লক্ষ্মী উল্লৈঞ্জার কপ্সরক আর । ধহন্তরি আদি উঠে জানিবেক সার । তাহা দেখি 💥 লয়ে ষত দেবগণ। শিষের করেতে হর্ষে করে সমর্পণ।। দেখিতে দেখিয়ে শিব তুলিলেন শিরে। তাহা দেখি দেবগণ কহে মগুস্বরে॥ শিরঃপার্ট্র শোভা পায় কিবা শশধর। এত ওনি হাস্য করি দেব দিগম্র॥ উপরে তারে করেন স্থাপন। ভাষা দেখি দেবগণ ক্রেম তথ্য।। এক ক্লাই তব শিরে ধর মহেশ্বর। ক্রপা করি অপরার্দ্ধ দেহ দিগদ্বর॥ এত শুনি আর্থ চক্স ধরিলেন শিরে। অর্দ্ধেক দিলেন হর্ষে দেবতাগণেরে॥ কম্পরক উঠে-ছিল সাগর মন্তনে। স্থাপিলেন ত্রনা তাহা আপনার ধামে॥ লক্ষীরে এঃ কৈল দেব নারায়ণ। উচ্চিঃ এবা অশ্ব নিল দেবের রাজন॥ ধ**ণ্ডরি বর্গ**ন धारम कतिन गमन । जानरम मगन स्य यठ (प्रवर्गण ॥ जारता এक कथा विन्धे শুন তপোধন। মীলকও নাম শিব করিল ধারণ॥ ধরাতলে নীলকও মুরজি স্থাপিতে। বাসনা করি ব শিব আপন মনেতে॥ ভারত মাঝারে দেশ নেপাল আধ্যান : े লকণ্ঠ মূর্ত্তি প্রভু স্থাপে সেই স্থান ॥ যেই জন নীলকণ্ঠে করে দরশন। ভক্তিউরে কর দ্বারা করে পরশন॥ পাতক তাহার দেহে কতু নাহি রয়। অন্তকালে যায় দেই কৈলাস আলয়॥ শিবের মা**হাত্ম্য বর্গ** কি বলিব আর। ঐিশিবপুরাণ হয় সার হতে সার॥

## ত্রাস্ত্রিংশ অধ্যায়।

খিব পূজাফলে মার্কণ্ডেযের হিরজীবিত্ব লাভ। বামদেব উবাচ।

মাকতেয়ো যথা ভূতে সমারাধ্য মঙেশ্বং।

সপ্তকলপায়ুবং লেভে তল্মে নিগদতঃ শৃণু॥

মহাদের কহে শুন ওহে তপোধন। মার্কও যেরপে করে শিবের পুজরার লিওকপপ পরমায় যেইরপে পায়। শুন শুন সেই কথা কহিব ভোমার। মৃক্তু নামেতে থাবি ছিল পূর্বকালে। সত্যধর্মপরায়ণ বিনিত ভূতলে॥। শাস্ত দান্ত জিতকোধ সেই মহামতি। হরিভক্তি হৃদিমাঝে ধরেন স্কমতি । পুত্রহান সৈই থাবি বিদিত জগতে। পুত্র হেতু তপ করে ঐকাজিক চিতে॥।

अक्न काकात वर्ष अकेत्राण चात्र। उत्पाद मञ्जूषे बन्ना क्रान्न जाकात्र ह चारिकू उ रेख जमा चित्र भावत । कहित्यन यिके चार्य उरह स्वित्र ॥ দারণ তপদ্যা তব করি দরশন। হইয়াছি পরিতৃষ্ট ওহে তপোধন। বর যাগ শীঘ্র করি বাঞ্ছা যাহা হয়। বরদান হেতু আমি এনেছি নিশ্চর॥ এতেক ৰচন শুনি মুক্তু সুষ্তি। কহিলেন নিবেদন ওহে প্ৰজাপতি॥ অশুৰ্যামী ভূমি প্রভু জানহ সকল। তবে জিজ্ঞাসিয়া আর কেন কর ছল॥ যে বাঞ্চা 'ক্রেছে শ্রন্থ আমার অন্তরে। পরিপূর্ণ কর তাহা কুপাদৃষ্টি করে॥ এত শুনি \* একাপতি কহেন তথন। জানি জানি তব বাঞা ওছে তপোধন।। পুতার্থী ছঁইয়া তপ করিছ সাধন। অতএব যাহা বলি করহ প্রবণ॥ বহুসংখ্য পুত্র चिक ক্রছ কামনা। ছির্কিনীত হবে তারা কর বিবেচনা॥ মহাতেজা হবে ভারা অব্নীমগুলে। অধা-স্বাহাশ্র হবে জানিবে জন্তরে ॥ দীর্গজীবী ক্বে ৰতে তাহারা দকল। পাপেতে ইইবে রত কিন্তু মুনিবর।। যদ্যপি এ ছেন পুত্রে করহ বাসনা। অচিরে পূরাতে পারি তোমার কামনা॥ আর এক কথা বলি করহ প্রবণ। একমাত্র পুত্র যদি করহ যাচন॥ শান্ত দান্ত মহাতপা হতে কে সুমতি। বিনয় দেখাবে সেই সকলের এতি॥ সপ্তবর্ষ ব্যাক্ষ করিবে খোরণ। ক্লণদেহ হবে সাধু ধর্মপরায়ণ॥ অতএব বাঞা কিবা বলহ আমাবে। भा চাহিবে দিব তাহা জানিবে অন্তরে॥

তাতকে বচন শুনি মৃক্ঞু স্থাতি। কহিলেন শুন শুন ওলো প্রজাপতি॥
স্থার্থিক বহুপুত্র লভিলে জনম। তাহারা বংশের হয় নিধন-কারণ॥
ভাহাদের পিতা হয় নিন্দিত ভূতলে। ধিক্ ধিক্ সেই পিতা এ ভবসংসারে
ভাহাপেকা পুত্রহীন হয় প্রেয়ক্ষর। তাদৃশ পুত্রেতে বাঞ্চা নাহি পলাকর॥
ক্ষেরপ অনেক পুত্র লভিলে জনম। মম বংশ হবে ধংস ওহে পলাসন॥
সভকের ধর্মশীল এক পুত্রবরে। ক্রপা করি কর দান নিবেদি তোমারে॥
ক্ষেরপ শুনীল পুত্র বদি পাই আমি। নির্দাল হইবে বংশ ওহে পল্যোনি॥
ক্ষেত্রক বচন শুনি দেব পলাসন। তথাস্তা বিশিয়া বর দিলেন ভশ্বন॥
কহিলেন শুন ওন ওহে মুনিবর। অপুন্র লভিবে পুত্র থার্মতে তংপর॥
সপ্তর্থ পর্যায় হবে কিন্তা ভার। কহিনু নিগৃঢ় কথা নিকটে ভোষার॥
ক্রেক্তর বচন বিশি কেব, পদ্মাসন। দেবগণ সহ যান ব্রন্ধ-নিকেতন॥
ক্রেক্তর জ্ঞান করি মৃক্তু তখন। আপন আগ্রুমে ত্রা করে ক্যাগ্যন॥
কিছুকাল এইরপে অতীত হইলে। জ্মিল ত্নয় তাঁর দিক্ জালো করে॥
ভ্যালকাশ্বল ক্ষিয় দিব। কলেবর। কৈরিলে জুড়ার চুকু জুড়ার অন্তর য়

ভাষা ছেরি ধাবির আমন্দে মগন। মহেগৎসব নানামতে করেন তথানা দিনে দিনে বাড়ে শিশু যেন শশধর। হর্ষ-শোকে অভিভূত হন ঋষিবর 🟗 পুত্রের বছন হেরি আনন্দ জন্ম। অস্পায় ভাবিয়া শোকে দত্তে নিজ মনে তার পর বছচিন্তা করি তপোধন। পুনশ্চ তপেতে মন করে নিয়োজন। উপনীত হয়ে মুনি গোদাবরীতীরে। মনোরথ সিদ্ধি হেতু উতা তপ করে ॥ ভূমিতলে অগ্নিদেবে করিয়া স্থাপন। উর্দ্ধপদে রকশাখা করি আলম্বন ॥ খোরতর তপ করে সে<sup>ট</sup> মহামতি। তপ হেরি সবাকার হলে হর ভীতি 🚜 তাহা দেখি ভীত হয়ে যত দেবগণ। একার সহিত আদে ঋষির সদন ॥ ঋবিরে দখোপি কং২ দেব প্রজাপতি। শুনহ মুকণু ঋষে আমার ভারতী 🌇 তোমার দারণ তপ করি দরশন। বিফিত হযেছে ঋষে এ তিন্ ভুরন। পুত্র ভিন্ন অন্য কিবা বাঞ্চিতেছ বর। ত্বরা করি বল তাহা আখার গোচর 🕸 এত শুনি খাষিবর কহেন তখন। ঘেই পুত্র রূপা করি করেছ অর্পণ।। চিরজীবী বর 🗝 বে ওতে মহোদর। ইহা ভিন্ন অন্য কিছু বাঞ্চনীয় নয়।। এত শুনি পিতামহ কুপিত অন্তরে। কহিলেন শুন ঋষে বলি হে তোমারো এই বর দিতে আমি কভু না পারিব। আমার বচন মিখ্যা কভু না করিব। সপ্তব্য প্রমায়ু ববেচি ভাষার। আমার বচন নত্ত বিফল হবার 🕸 এ০ বলি এল। যান আগনভবন। বুফাতুত হয়ে রহে মহাতপোধন। তার পর পুনরাগ একা ও অন্তরে। বিশ্ব-আরাধনা করে দৃঢ় চিত্ত করে। তাঁহার দারুণ তপ করি দরশন। খুণাকালে প্রিকৃট হন নারায়ণ।।। আবিভুত হন আদি গরুত উপরে। শস্ত্র চক্র গদা,পল ধরি চারি করে। জীবৎস-লক্ষণ কিবা সাহা মরি মরি। বন মালা দোনে গলে বিপিনবিহারী।» মনোহর কিব। আহা শ্যামলবরণ। পর পর সম শোচে আযত নয়ন। ভাঁহারে হেরিয়া ঋষি আনন্দে বিহ্বল। অবন এশিরে বন্দে ভুতল উপর। তাহা- দেখি চিত্তামণি সুমধুর হরে। কহিলেন উঠ গাবে উঠ বুরা করে। ভোষার দারুণ তথা করি দরশন। পর্য সন্তুষ্ট জামি হয়েছি এখন। কিৰা ৰাঞ্ছা কর তুমি বলহ আমারে। কন ছেন তপ কর কানন-মাঝারে॥ এত 🐯 মি ঋবিবর কুছেন তখন। অন্তর্গামী তুমি প্রভূ ভবে ভগবন্ 🕸 দীর্ঘজীবী মন পুত্রে কর দয়া করি। এই ভিক্ষা করি আমি বৈক্ঠ-বিহারী।। ं क्टिक बहन अनि प्रत्य नाताश्य। कहिरलन अन अन अस्ट खरभावन ॥

শৈতিক বচন শুনি দেব নারায়ণ। কহিলেন শুন শুন ওতে জপোধন।
বে বর মালিছি তুমি আখার গোচর।, দিতে না পারিব তাহা ওতে ক্ষবিবর।
ব্যক্তপ নিয়ুষ বিধি করেছে স্থাপুন্ধ ভাহার অভ্যা নাছি হবে ক্লাচন।

अङ वित जिर्द्धादिक इन मोत्रोधन ! विश्व खखरत श्रवि मोनलार दम i ভার পর নিজগৃহে গিয়া ঋষিবর। সকল রভাত্ত কহে ভার্য্যার গোচর॥ ছাখিত হইরা পরে আপন আগারে। উপবাস করি রহে বিষয় অন্তরে । পিতার এতেক ভাব করি দরশন। মার্কণ্ডেয় মনে মনে বিধাদিত হন॥ পঞ্চ বর্ষ বয়ংক্রম নে শিশুর হয়। মাতারে সম্বোধি পুত্র সবিনয়ে কর।। কেন মাতঃ পিতা এত ছুঃখিত অন্তর। অনশনে কেন আছে গুহের ভিতর॥ वानित्व वामना देश कति (भा व्यस्त । क्रभा कति कर माउः नित्विक তোমারে॥ পুত্রের এতিক বাক্য করিয়। এবণ। ককণ-বচনে মাত। কছেন ড়খন ।। যাবত রুত্তান্ত কহে পুলেব গোচর। সে কথা শুনিয়া পুল করিল উত্তর ॥ শুন মাতঃ নিবেদন করিগো তোমারে। ইহার কারণে ছঃখ কেন গো অন্তরে । মৃত্যুরে করিতে নাশ আমি গো জননি । তপস্য। করিতে যাব ত্তন মম বাণী।। ইহাতে অবশ্য হবে পিতার মঙ্গল। মঙ্গল লভিব আমি জানিৰে সকল।। কৰ্ম বিনা কোন্জন দিল হতে পারে। কর্মবশ জগভ্র জানিবে অন্তরে॥ কর্মবশে অর্গে আর নরকে গমন। অবশ্য করিবে কর্ম ছত নরগণ। জননীরে এত বলি মার্কণ্ড স্কমতি। অরণ্য মাঝারে হ্রা করি-লেন গতি। পুলহ-আশ্রমে ত্রা করেন গমন। পুণ্যভূমি হরিক্ষেত্র পুলহ-আশ্রম। তথা উপনীত শিশু পুলহ-সদন। তথা গিয়া ঋষিবরে করেন দর্শন।। পুলছ চরণে শিশু করিয়া প্রণাম। করযোড়ে সেই স্থানে করে আবস্থান। পুশহ শিশুরে হেরি মধুর বচনে। জিজ্ঞাসা করেন তারে মিট माखायत्।। (काथा इटल, এই স্থানে কৈলে आগমন। किवा তব নাম বল ওতে সাছাধন ॥ কাহার তনয় জুমি বলহ সুমতি। কাহার নিকটে এবে করিতেছ পতি॥ এতেক বচন শুনি মার্কতেয় কয়। স্থাসিয়াছি তব পাশে ওগো মহোদয়॥ মুক্তু-তনয় আমি মার্কতের নাম। সপ্তবর্ধ আয়ু মম বিধির বিধান॥ চিরজীবী হতে পারি কিরুপ প্রকারে। তাহার উপায় প্রভু কহ ত্রা করে॥

পুলহ এতেক শুনি কহেন তখন। শিবপূজা কর শিশু হয়ে একমন।

কির্মীবী হতে তবে অবশ্য পারিবে। মনের বাসনা মত সফল হইবে।

শেষদ্থাক মহেখন বিদিত ভুবন। তাঁর আরাধনা কর হয়ে একমন। যদ্যপি
প্রাসম হন দেব পশুপতি। মনোরথ সিদ্ধ তবে হবে হে হার্মত । কওু নামে
প্রমি আছে শিবপর। য়াণ। দক্ষিণ সাগ্রতীরে আহে দেই জন। তাঁহার

নিকট ভুমি যাহ বুরা গতি। তাঁর পানেশ উপদেশ লহ মহামতি।। তার
নির্মান্ত ক্রম মতনে। ভাষােল সক্ষ্মান্ত ব্যাদ্ধন । প্রত্তের

এই বাক্য করিয়া ভাবণ। অবিলয়ে মার্কভের করিল গমন। উপনীত দক্ষিণ-সাগরে। বন্দনা করিল গিয়া মুনিপদতলে। শিশুরে হৈরিয়া কণ্ডু জিজ্ঞাসে ভখন। কি কারণে মম পাশে তব আগমন॥ শিশু কহে শুন ওন ওগো মহোদয়। 'সপ্ত বর্ষ আরু মম জানিবে নিশ্চয়॥ ৰাঞ্ছা করেছি অন্তরে। সে হেতৃ পূজিব শিবে অতি যত্ন করে॥ দেহ প্রভু করি রূপা দান। এই হেতু উপনীত তব বিদ্যমান। পুলহ-আদেশে আদি তোমার গোচরে। রক্ষা কর অধীনেরে রূপাদৃষ্টি করে॥ শিশুর এতেক ' ৰাক্য করিয়া প্রবণ। কণ্ডু ঋযি মনে মনে অতি প্রীত হন॥ যতন করিয়া পরে সেই শিশুবরে। মৃত্যুঞ্জয় মন্ত্র দান করে ত্রাকরে॥ মন্ত্রলাভ করি ি ও আনন্দে মগন। যথাবিধি নিজ এক করিয়া গঠন॥ বিধানে তাহার পূজা করিয়া যতনে। বসিলেক মন্ত্রজপে একান্তিক মনে॥ এইন্ধপে হুই বর্ষ সমতীত হয়। পরমায়ু শেব তার হয় সে সময় ॥ সপ্ত বর্ষ পরমায়ু বিধির বিধান। মৃত্যুর ভাকিয়া কহে শমন ধীমান। ওহে মৃত্যু মম বাক্য করছ শ্রবণ। মুক্ঞু-তনয়-পাশে করহ গমন॥ কাল পূর্ণ হইয়াছে বিধির নিয়মে। ত্বরা করি আন তারে আমার সদনে॥ যমের এতেক বাক্য করিয়া এবণ। অবিলম্বে যায় মৃত্যু মার্কগু-সদন॥ অদি করে যায় মৃত্যু লোহিত-লোচনে। ত্বরা করি মার্কতের জীবন নিধনে॥ দূর হতে দেখে মৃত্যু মার্কও-সদন। শ্লকরে বসি আছে দেব পঞ্চানন॥ তাঁহার তেজেতে মৃত্যু হয়ে হতজ্ঞান। ভূতলে পড়িয়া তথা করে অবস্থান। ক্ষণপরে সংজ্ঞা পেয়ে অসি ধরি করে। পুনশ্চ মারিতে যায় সেই শিশুবরে॥ যেমন শিশুর পাশে করে আগমন। অমনি ত্রিশূল লয়ে উঠে পঞ্চানন॥ ক্রোধভরে মুন্ট্রীঘাত করিয়া তাহারে॥ শিরশ্ছেদ করি তার ফেলিল ভূতলে॥ মৃত্যুর নিধনবার্তা করিয়া শ্রবণ। মমরাজ মনে মনে অতি ভীত হন॥ উপনীত হন গিয়া জন্ধার আলয়ে। রক্ষ রক্ষ ওং বিধে রক্ষ্য আমারে। নমকার করি কহে বিনয় করিয়ে॥ সপ্ত বর্ণ প্রমাযু মার্কত্তের হয়। মৃত্যুরে বংধছে শ্বিব জানিবে অন্তরে॥ क्रदबिष्ट्रिल এই বিবি ওতে মহোদয়॥

যদৈর এতেক বাক্য করিয়া প্রবা। ক্ষণকাল প্রজাপতি করেন চিন্তন ।
তার পুর, নিজ সনে লয়ে দেবগণে। উপনীত হন আসি শিবের সদনে।
ক্রিন মার্কও পালে দেব মহেশর। বন্দিলেন তাহা দেখি হয়ে ভক্তিপর।
কহিলেন ন্যক্ষার ওহে প্রধানন। স্ফিহিতিকর্তা ত্রি ওহে ভগবন।
গুরুত্ব ক্রেন্য ক্রিয়ক্ত হৃষ্তি। পুত্র বাহা করে দেই হন প্রশতি।

সপ্তবর্ষায়্য পুত্র করিল যাচন। সেই রূপ বর আমি করেছি অর্পণ।। আমার বচন সত্য ষেই রূপে হয়। স্কুপা করি কর তাহা ওছে বহোদয়॥ একার এতেক বাক্য করিয়া প্রবণ। রোবভরে রক্তনেক্ত হন পঞ্চানন॥ মার্কতেরে সমাখাস করিয়া প্রদান। জন্মারে সম্বোধি কছে শিব মতিমান্। জন জন মম বাক্য ওছে পদ্মানন। আমার পরম ভক্ত মুক্তু-নক্ষন॥ যেই জন মন ভক্ত অবনীমগুলে। তার প্রভু নহ তুমি জানিবে অন্তরে॥ তার প্রভু নহে কভু দেব নারায়ণ। ভার প্রতি অধিকারী নহে ভ শ্যন॥ শার্কণ্ডেরে ময ভক্ত জানিবে অন্তরে। ঘাহ যাহ নিজ স্থানে যাহ দবে ফিরে॥ শিবের এতেক বাক্য করিয়। শ্রবণ। লক্ষাবশে অধোমুখে রহে পলাসন॥ অফাজে , প্রাণাম করি ধরণী-উপরে। নাবাবাক্যে করে স্তব দেব মহেশ্বরে॥ কহিলেন 🖁 ওহে শভু করি নমকার। যোগের ঈশ্বর তুমি বিদিত সংসার॥ তোমার 'শহিমা প্রভু কে জানিতে পারে। নমস্কার করি তব চরণ-যুগলে॥ তোমার · প্রসাদে এই মৃক্তু-নন্দন। দীর্ষজীবী হযে রবে ওছে ভগবন্॥ সপ্ত কণ্প ্মার্কণ্ডেয় রহিবে জীকিত। আমার বচন মিথ্যা নহে কলাচিৎ॥ এবে নিবেদন করি ওহে ভগবন্। ভোমার কোপেতে স্বাু হয়েছে নিধন॥ এ হেতু তামার হলো মৃত্যুঞ্জর নাম। মৃত্যু-প্রতি এবে প্রভু কর ক্রপাদান॥ ধরাতলে তব কীর্ষি হইবে হাপন। অধিক বলিব কিবা ওহে ভগবন্। এদার এতেক বাক্য শুনি মহেশ্বর। সহাস্য-বৃদনে পরে করেন উত্তর ॥ শুন শুন পদাসন আৰার বচন। কমগুলু-জল তুমি করছ এছণ।। মৃত্যুর শরীরে তাহা করছ প্রধান। অবশ্য জীবিত হবে মৃত্যু মতিমান॥ এত বলি তিরোহিত হন াভাপতি। কমণ্ডলুজল হেখা লয়ে প্রজাপতি।। মৃত্যু মৃতবেংহাপরি করেন আদান। জীবিত হইয়া মৃত্যু উঠে দেই হান॥ তার পর শিবলিঞ্চ করিয়া গঠন। একান্ত অন্তরে যম করয়ে পূজন ॥গন্ধপুপ্প ধূপ দীপ আদি উপচারে। **गिरवत अर्फना करत এकास अस्टात ।** यगताल श्रृजा करत रहा এकमन । তার পর নিজগৃহে করেন গমন॥ সভ্যলোকে পদাসুন, করেন পয়াণ। দেবগণ সবে যায় নিজ নিজ হান।। সিমুতীরে শিবলিক সাপিল শমন। অন্যাপি জগতে তাহা হতেছে দর্শন॥ লবণ-সাগরে স্নান कृति ষেই জন। मथाविधि लिज्ञर्ग कतिया उर्लग ॥ यरमयत भिवलित्य प्रत्मेश्च करत् । ज्ववन বুচে তার জানিবে অন্তরে॥ শমনের ভয় তার'না রুছে কুখন। বঁৰিছে: তোষার পালে ভত্তে তপোধন।। হেরপে নিবের পূজা করিয়া সাধন। यार्करथम् बित्रकीयी दत्र जर्भाधन ॥ रम मन् इखास भरमध्य रिक् राज्यारत ।

শ্বতীব পবিত্র কথা জানিবে জন্তরে। ভক্তিভরে যেই ব্যক্তি করয়ে প্রবণ।
মৃত্যুঞ্জয় হয় দেই শান্তের বচন।। মৃত্যুঞ্জয় মহেশার বিদিত ভূবন। তাঁহার
মাহাত্ম্য বল জানে কোন জন।। একমাত্র মৃত্যু জানে ওহে মহামতি। আর
জানে দক্ষ রাজা যিনি প্রজাপতি।। আর জানে কামদেব পুপ্প-শরাসন।
অধিক বলিব কিবা ওহে তপোধন।। পবিত্র আখ্যান এই শুনিলে প্রবণ।
অধবা যদ্যপি পড়ে ঐকান্তিক মনে।। ইহ লোকে স্থভোগ করে দেই জন।
পুল্রপৌল্র হনধান্যে স্থী সর্ককণ। অকালে মরণ তার কভু নাহি হয়।
প্রাণান্তে কৈলাসপুরে যাইবে নিশ্বয়।। ত্রিংশং সহস্র বর্ষ রবে দেই স্থানে।
শিবের পার্ষদ্বপে আনন্দিত মনে।। শ্রীশিবপুরাণ-কথা অতি মনোহর।
শুনিলে পবিত্র হয় মন কলেবর।।

# চতুস্ত্রিংশ অধ্যায়।

শিবচ**তৃৰ্দশী ত্ৰত**বিধি। **তৃ**ণ্ডিক্লবাচ।

কালকূটং যখা শড়ুঃ পপো তক্ত ব্রুতং ময়া।
মার্কণ্ডেয়ানুগ্রহার্থং যথা মৃত্যুং জিতো মুনে।
ইদানীং ত্রামহৎ পৃচ্ছাং করোমি ভক্তিভাবতঃ।
কেন ব্রতেন শড়ুস্ত তুটো ভবেচ্চ তদ্বন।

বামদেবে সদোধিয়া তুণ্ডি ঋষিবর। কহিলেন শুন শুন গুন ওহে বিজ্ঞবর॥
থেই রূপে বিষপান করে পঞ্চানন। শুনিলাম সেই কথা তোমার সদন॥
মুত্যুজয়ী মার্কণ্ডেয় ঘেইরূপে হয়। শুনিলাম সেই কথা ওহে মহোদয়॥
এখন জিজ্ঞাসি পুনঃ ভক্তি সহকারে। কোন ত্রতে হন শিব সম্ভুট্ট অন্তরে॥
সেই কথা রূপা করি করহ বর্ণন। শুনিবারে কুতুহলী হইতেছে মন॥ এেতেক
বচন শুনি বামদেব কয়। বলিতেছি শিবত্রত শুন মহোদয়॥ হরগৌরী
ঘই জনে হিমগিরিপরে। যেই রূপ কথাবার্তা দুই জনে কয়ে॥ বলিতেছি
সেই কথা রূরহ প্রবর্ণ। অতীব পবিত্র কথা ওহে তপোধন। একদিন
দেইবেশিলাক-শেখয়। বসিয়া আছেন মুখে গিরিশ্বোপয়॥ প্রণাম
করিয়া ভারে পার্কতী সুনরী। জিজ্ঞাসা করেন প্রস্থু ভবে ত্রিপুরারিয়

ইকান্ ত্রতে তুই হও তুনি পঞ্চানন। করপ বিধান তার করহ বর্ণন। এত তানি মহেশর স্থানর হরে। কহিলেন শুন প্রিয়ে কহিব তোমারে।কান্তনেতে ক্ষণণাক তিথি চতুর্দ্দণা। অতীব পবিত্র দিন জানিবে রূপদা। দেই তিনি সর্বপাপ বিনাশিত করে। মন প্রীতিপ্রদা তিথি জানিবে অন্তরে। শিবরাত্রি নাম তার বিদিত ভ্রম। মৃক্তিদাত্রী শিবরাত্রি জানে সর্বজন। সেই দিন মন পূজা করিলে সাধন। আমার সামুজ্য পায় সেই মহাত্মন্। উপবাদ শেই দিন করিবে যতনে। যামিনী যাপন করিবেক জাগরণে।। পঞ্চামুতে মোরে সাধু করিয়া স্থপন। যামে যামে মম পূজা করিবে সাধন।। প্রহরে প্রহরে অর্ধ্য করিবে প্রদান। যেনত যেমত আছে শাস্ত্রেতে বিধান।। যেই মত্রে অর্ধ্য করিবে প্রদান। যেনত যেমত আছে শাস্ত্রেতে বিধান।। যেই মত্রে অর্ধ্য করিবে প্রদান। ত্রেতিছি সেই কথা শুনহ সাদরে। নলঃ শিবার শাস্তায় করি উজারণ। ভক্তিমুক্তিপ্রদায় চ করিবে পঠন।। শিবরাত্রে। দদাযুর্ধ্যং বলিয়া বদনে। ভক্ত্যা তৃভ্যমিণং প্রভো বলিবে যতনে।। \* এই মত্রে অর্ধ্য অত্যে করিয়া প্রদান। যথাযথ মন্ত্র পড়ি করিবে প্রণাম। শ্রেই রূপে অন্য অন্য করেক প্রহরে। করিবেক অর্ধ্যদান মন্ত্র পাঠ করে।। মন্ত্র পড়ি যথাবিধি করিবে প্রণাম। তার পর হোমকার্ধ্য

ा अज थवा-- श्विवर चिवकत्रः श्वाधर मर्व्याधामः चित्रादमः ।

निवमार्ज्ञात्वात्रः व्यवमानि नमानिवः॥

🕶 দিতীর প্রহরে অর্থ।দানের মন্ত্র যথা —

নমঃ শিবার শাস্তার ভুক্তিমুক্তিপ্রদার চ। শিবরাকৌ দদামার্ঘাঃ সর্বান্তিমত্যাধনং ॥

विजे बट्टर्वेत द्यनामम्ब गर्मा--

শাশুতং শোক্তনং পূর্ণং শাসকং দোষশোষকং। বিশ্বং বিশ্বেশারং শাস্তং শঙ্করং প্রণমাম্যতং॥

जुकीत क्षवरत अर्वामार नत मह यथां——

জ্ঞানাদজানতে। বাপি মধা দত্তত পঁহর। গুহাণার্য্যং মহাদেব শিবরাত্তো প্রসীদ মে ৫

তৃতীয় প্রহরে প্রণাম মৃত্র যথা -----

मर्स्सान्यक्तरः नाथः मर्स्सान्यक्तः शेवः । मर्स्सान्तर्भाः निखाः नमामार्विष्कः शेवः॥ः

क्ष्रिक्टरत्रत्र व्यक्तिमारमत्र मञ्ज यथा

लिय भक्त मर्बा बद्धा गणगढण एत । ग्रांगार्वाम्यानाय भियतारको अभीत स्म ॥

<sup>\*</sup> মন্ত্রধা—নম: শিবার শান্তাব ভক্তি।ক্তিপ্রদাব চ। শিবরাত্রৌ দল্যামার্বাং ভক্তা ভুজাবিমং প্রতো ॥

नाशित थीगान॥ शिवमटच ट्यामकार्या कतित्व माधन। भूगीछाँउ किर्द পরে যেমত নিয়ম॥ প্রার্থনা করিবে পরে মন্ত্রপাঠ করে। \* -সাধিকে স্কল্ কার্য্য এরপ প্রকারে॥ এইরপে রাত্রিকাল করিয়া যাপন। প্রাভঃকালে বিপ্রে দান কণিবে অর্পণ।। শক্ষর উদ্দেশে দান করিবে বিপ্রের। "भट्डल হউন তুষ্ট" ভাবিবে অন্তরে॥ তার পর শিবভক্ত বন্ধুগণে লং করিবে বতী সংযত ২ইযে॥ আমার উপরে ভক্তি করি যেই জন। এইরপে ব্রত্তকার্য্য করে স্থাপন। স্ক্রপাপ ক্ষত্ত জানিবে তাহার। **অন্তকালে** ষার দেই আমার পাগার॥ করিবেক উপবাস চহুদ্দশী দিনে। পারণ कतिर्व छ चूर्फिमी विन्त्रभारन ॥ यम এই खेंछ यहे कतरत माधन । आभाने সামুজ্য পায় সেই মহাত্মন ॥ অধিক বলিব কিবা ওগো মহেশ্রি। অকুগ্রহ পকাশিয়া ভক্তের উপবি॥ প্রকাশ করিত্ব স্ব শেষার গোচর । মহাফলপ্রঞ্ ব্রত খাতে চরাচর॥

এ চবলি বামদেক তুভি খাষিকরে। পুনশ্চ সমোধি ক**হে সুমধুর সংরো**ু মহেশ্রী-পাশে যথ। কচে প্রধানন। সেরপ তোমার পাশে করিনু কীর্তন। শিবরাত্রি এত পুণ্য পাতক-নাশন। এই এত আচরণ করে যেই জন i শিবের সাযুজ্য পায় সেই মহামতি। সত্য সত্য এই বাক্য শিবের ভারতী॥ তিথির বিধান এবে করছ শ্বণ। যেরপে পারণ আদি করিবে সাধন। অক্যান্ত তিথিতে আছে এইরূপ রীতি। তিথ্যন্তে পারণ **হয আছে হেন বিধি** ইহাতে সেক্রপ কিন্তু নতেক নিষ্ম। চতুর্দ্দশী দিলামানে করিবে পারণ॥ ঘণাবিণি পূজা করি দেব মতেথরে। শিবরাত্তি উপন্য যেই জন করে॥ भाज्छन शांस डारंत कतिए ना हय। भिरात जीरमध धरे छट भरहाम्य ্যেই ব্যক্তি শিবরাত্রি করে আচরণ। তাহার কামনা হয় সকলি পুরুণ ॥ অনুকালে দেহত্যাগ করি নেই জন। শিব সহ কৈলাসেতে রহে অফুক্ষণ 🏽 আরো এক কথা বলি শুন মহামতি। ত্রত আচরণে যার মাহিক শক্তি ॥ দে জন যদ্যপি করে নিশ জাগারণ। রুদ্রে সম হয় সেই শাক্সের বচ্ব

हर्ष १ ब्राज श्रीमाम के स्था - -

অস্থানং স্থানসংগান স্থিতিসংগ্রিতকারণং। चित्रमा शक्ति (यागञ्चः छात्रमः खनमामा इः॥

\* आर्थिशमञ् यथा-विषय उउर (मेर जुरश्मामार ममाणि ड- । क्षमञ्ज व्यागजाः नार्वे देवत्नाकः। विभए इत ॥ খর শহর দেবেশ ব্রত্নিং পরিপাদক। शिनतां जिवल (पन पुरक्षां मार कुछ॰ महा। ' ( 9b. )

## SEC PHETAIN

না করি জ্ভ কর্রে দাদন। তাহাই সকল হয় শিবের বচন ॥ চরিকা র যেই শিবরাত্তি করে। সর্কাপাণে সেই জন অবছেলে তরে॥ একবর্ষ র যেই কর্মে সাধন। ভাছার পুণ্যের কথা কি করি কীর্ত্তন ॥ ত্রন্ধা বিষ্ণু র পুণ্য বলিবারে নারে। অধিক বলিব কিবা ভোষার গোচরে॥ অমৃত্তম ণাকণা করিমু কীর্ত্তন। শুনিলে পাতক নাশ গাম্থের বচন ॥ যেই জন কি করি অধ্যয়ন করে। অথবা প্রবণ করে একান্ত অন্তরে॥ পর্বলাণে ক হয় দেই সাধুজন। অন্তকালে যায় সেই কৈলাস ভবন ॥ প্রতিদিন শিবপুজা করিয়া যতনে। অধ্যয়ন করে থেই ভক্তিযুক্ত মনে॥ শিবের নাযুজ্য শায় দেই মহামতি। সপ্ত কম্প হয় তার বৈলাসে বসতি॥ শিবরাত্তি দিনে করি শিবের পূজন। এই কথা যেই জন করে অধ্যয়ন॥ অথবা ভক্তি করি যেই জন শুনে। কৈলাদে তাহার পূজা করে গণগণে॥ পূনাণের সাব এই শ্রীশিবপুরাণ। ইহার প্রসাদে অন্তে পায় মোক্ষণাম॥

> প্রতিংশ অধ্যার। শিব্রবি প্রসজে রুফশর্মা নামক পিশাচের তথাখানে।

পূর্ তুওে প্রবন্ধ্যামি শিবরাত্ত্যা মহাফল । ফুফশর্মা পিশাচপ্ত মধা মুক্তঃ পুরাভবং॥

পুনঃ বাদদেব কহে তুতি খবিবরে। শুন শুন তুন তুতি খবে কহিব তোমারে।

লিবরাত্রি-ফল শুন করিব কার্তন। মনোহর উপাখ্যান কবহ প্রবণ।

ক্ষমণর্মা নামে পূর্বে ছিল এক জন। পিশাচ সে জন হর বিদিত ভুরুন।

মুক্তিলাভ করে সেই যেরপ প্রকারে। বর্ণন করিব তাহা তেনার গোচরে।
শুনিলে পবির ইবে তোমার জদর। অতি পুণ্যপ্রদ কথা ওছে মহোদর।

ক্ষমণর্মা রামে বিগ্র ছিল একজন। বেদজ প্রোত্রিয় পান্ত ধর্ম-শ্রায়ণ।

ক্ষমণর্মা রামে বিগ্র ছিল একজন। বেদজ প্রোত্রিয় পান্ত ধর্ম-শ্রায়ণ।

দিবানিশি মুক্ত আদি করে অনুষ্ঠান। ধর্মপ্রে সহা জিল করে অব্যান্।

একদিন স্থান হেতু পুকরিণী-ভীরে। দিজবর মনস্কর্মে ধান ধীরেহা। সোপান
গ্রিত্রিয়াই জিভি মনোহর। উপনীত হন আবিত্তথা দ্বিক্বর। বিষল

मिलिल (मादे कि महितावद्य । ज्या ज्या ज्या ज्या हिन इतिथ जालह्य ।। ज्या গিয়া ঋষিবর করেন দর্শন। ইউকের খণ্ড এক ভূতলে পতন।। তাহা দিয়া করে দ্বিজ চরণ ঘর্ষণ। স্নান করি পিতৃগণে করেন তর্পণ॥ যথাবিধি দেব-পূজ। করি তার পরে। শিষ্যগণ দহ আদে আপন আগারে। অন্ন আদি ুখড়রস করেন ভোজন। মহাপ্রীতি হাদে ভাচে হয় উৎপাদন॥ মল দূত্র ত্যাগ পরে করিবার তরে। চলিলেন বিএবর গৃহের বাহিরে॥ মল মূত্র বিসর্জ্ঞন করি দিজবর। দেখিলেন ৩খা এক মৃত্তিকা-গহরে॥ শৌচার্থ মুত্তিকা লবে বাসনা অন্তরে। হস্ত প্রবেশিত করে গহরে ভিতন্ধে॥ দৈবের লিখন ভুণ্ডে কর দরশন। গর্ভিযাগ্যে থাকে এক কাল ভুজ্জম।। যেমন্ ব্রাহ্মণ হস্ত দিলেন গহররে। অমনি ভুজঙ্গবর দংশিল ভাঁহারে॥' পীড়িত হইয়া বিপ্র অভীব বিহ্বল। মূচ্ছিত দইরা পড়ে ভুতল উপর॥ মরিশ্ব মরিশ্ব বলি কর্মে চীৎকার। নিকটে নাহিক কেহ করে হাহাকার॥ দেখিতে দেখিতে বিপ্র হয় অচেতন। অবিলম্বে বিপ্রবর ত্যজিল জীবন॥ এদিকেতে লোকমুখে করিয়া প্রবণ। উপনীত হয় আদি যত শিস্যগণ॥ গতামু ওরুরে হেরি যত শিষ্যগণ। হাছাকাৰ করি সবে করয়ে রোদন। চন্দনের কাষ্ঠভার আনিয়া সকলে। প্রত যোগে মৃত দেহ ভদ্মীভূত করে॥ তর্পণ করিয়া পরে যত শিষ্যগণ। গৃহ অভিমুখে সবে করিল গমন॥ এদিকেতে যমদূত অতি ভানকায। বিপ্রবরে বান্ধি লয়ে যমপাশে যায়। চর্মরজ্জু দিয়া বিথে করিয়া বন্ধন। ঘমালয়ে লয়ে ঘায় যুদ্দৃতগণ । ক্লেখৰণ ঘমরাজ সূতীক্ষ্ণ দশন। রহৎ রহৎ নখ জরি বিভীষণ॥ এক্তবর্ণ নেত্র কিবা অতি ভয়ঙ্গর। দেখিলে শিহরে অজ শিহরে অন্তর। ক্ষণর্যা বিপ্রবরে করি पत्रभन । वाक कित यगवाक करश्न जथन ॥ खन खन क्रथमधा अटश महामिछ । পুণ্যকর্ম করিয়াছ নাহিক অবধি॥ কিন্তু এক পাপ ভূমি করেছ সাধন। তাহাতে যতেক পুণ্য হয়েছে নিধন॥ স্নানকালে গিয়া ভূমি সরসীতীছেতে। চরণ ঘর্ষণ করেছিলে ইউকেতে। শিবের ইউক সেই জানিৰে আহ্ব শিবস্ব হয়েছে তব তাহাতে হরণ॥ শিবস্ব হরণ করে গেই নরাধ্য। রেরি নরতে পড়ে সেই হুরজন। স্লাবত বসুধা নাছি রসাতলে যায়। ভারত पूर्व्यन वाम कतिरवै उथाय ॥ श्रीत शत क्रियतरथ मां एतं क्रमा । साई है श्राच्याः রর্ঘ সেরতে যাপুন। অওএর শুন শুন ওবে বিপ্রবর। পিশাচ হইয়া তুর্বি त्महे महताबहत ॥ जाङ्गा बीदबट्ड पाहर दृष्टे जलकत । जथा निश्चा बान क

কের উপর । দৈববশে যদি তব কোন শিষ্যজন। সেই স্থানে তব পাশে; রে আগমন । শিবরাত্রি ফল যদি সেই দান করে। মুক্তিলাভ হবে তবে হিম্ম ভোমারে॥

**धाउक वहन छनि वि**ष्टां नयन। विनय वहन करह भगन महन॥ গবেদন করি প্রস্তু ভোষার গোচরে। সন্দেহ হইল এক আমার অন্তরে॥ উকে চরণ আমি করেছি ঘর্ষণ। সভ্য বটে এই কথা শমন রাজন॥ শিবস্থ উক কিন্তু হলো কি প্রকারে। দেই কথাবল প্রভ রূপাদ্টি করে॥ য হেছু মহ পাপ জন্মিল আমার। পৈশাচিকী গতি হলো ওহে দণ্ডধার। जागांत्र मूर्थरण श्विन हेशत कांत्र। किंगुळान इरव मम श्वर स्थापन ॥ কামার মুখেতে শুনি কারণ সকল। পিশাচ রূপেতে প্রভু যাব তার পর॥ ছতেক বচর্ন শুনি শমন রাজন। কহিলেন শুন বিপ্র অপুর্বে ঘটন॥ কান্টার জালেতে এক ছিল বিপ্রবর। শিবভক্তি-পরায়ণ ধার্মিক-প্রবর। প্রয়াগ ামেতে দেই জাসি মাঘমানে। গন্ধায়কমুনাতটে মনসুখে বলে॥ যথাবিধি ন্নান বিপ্রা করি সেই স্থানে। তর্পণ করিল ক্রমে দেব পিতৃগণে॥ ভগমালী। শ্রভাষেতে করিল গ্রামন । ঋষির চরণ বিথা করিতে দর্শন ॥ ভগ্যালী নাথে 🗱 অতি মহামতি। শিবের উপরে সদা তাহার ভক্তি॥ বিশোরে দেখিয়া সেই ঋষির প্রবর। আসন ইত্যাদি দিয়া করিল আদর॥ নানাবিধ ফল দুল করিল প্রধান। ভক্ষ্য ভোজ্য দিয়া কত রাখিল সন্মান॥ এই সব দেব্য বৈথো করিয়া অপ্। ভগমালী সবিনয়ে কহেন তখন॥ ভন্দণ করহ বিএ ক্ষি গো মিনতি। শিব সম তুমি ঋষে হয়েছ অতিথি। এতেক বচন শুনি বিপ্রাবর কর। ভক্ষণ করিতে নাহি পারি মহোদয়॥ শিবলিকে পূজা করি করিয়া দর্শন। তার পর অর আদি করিব ভোজন।। এত শুনি ভগমালী কৰে পুনরার। তন ভন বিপ্রবিব কহি যে তোমায়।। সর্বব্যাপী মহাদেব বিদিত সংসারে। সদা বাস করে শিব ছদয়-কমলে॥ অতএব ছদিমাঝে कृष्टिया পূজন। ছাদিমাঝে দেই দেবে করিয়া এর্শন ॥ ভোজন, করহ ইহা ৬৫ विदेवत । ভোজনে বিলম্বে বল কিবা আছে ফল ।এতেক বচন শুনি বিপ্রবর কর। না পারিব ভাহা কিন্তু ওহে মহোদয়॥ বরঞ্ ত্যজিব আমি এ ছার জীবন। বরঞ হইবে মন মন্তক ছেদন।। তরু নাৰি পূজা কবি द्भव जिल्लाहरन। मक्त्र ना रव श्रेष्ट्र कलाई खालकुरा। गिर्देशकुर ুজিয়া নাহি যেই নরাধ্য। জল গান করে প্রথে ওতে মহাত্মন্।। किलान अक्रम रंगरे कामिरन जखरत। नर्किश्वरीय रगहे भारता विकारत ।

## রছ**ে শিশু-সুরাশ**্

মর্শনে পর্ণনি হয় ঘেইরপ ফল। তোমার নিকটে তাহা কহিছু স্বর্জ আ ভাতবেক-ফল ঘাহা করিছু কীর্তুন। অতএব শুন কন ওছে তপোঁহন শিবপুজা করি আর হেরিয়া ভাঁহারে।তবে ত খাইব আমি কহিছু ভোমারে আ অনুগ্রহ কর মুদে আমার উপর। আপন আগ্রমে হাই ওছে ক্ষবিবর ।

বিপ্রের এতেক বাক্য করিয়া এবণ। আনন্দ সাগরে ভগমালী নিষ্ঠান বান্ধণের করপদ্র করিয়া গ্রহণ। ভগ্যালী মিষ্টবাকের ক্রেন তথ্য শুন শুন বিপ্রবর বচন আমার। জগতে না হেরি কারে স্থান তোমার এখন বিনয় করি তোমার সদন। আমার গৃহেতে কিছু করহ ভক্ত পবিত্র করহ তুমি আমার আগার। এই ভিক্ষা তব পাশে ওতে ওপাধার এত শুনি বিপ্রবর শিবপরায়ণ। মধুর বচনে কহে ওহে মহাতারু॥ বি ना भारेत जागि (जागात जागारत। जशीरन विषात एक क्रशामुक करहा তোমার বচনে মম সম্পোষিত মন। অধিক বলিব কিবা ওছে মহাত্র বিপ্রের এতেক বাক্য শুনিয় = বণে। ভগমালী কহে পুনঃ মধুর বচমে নিবেদন করি শুন ওহে মহাজ্বি। এই স্থানে শিবলিক করহ স্থাপন ্মই লিজ সদা আমি করিব অর্চনা। পুরিবে অবশ্য মম মনের বাসনা চিরকীর্ন্নি রবে তব ধর্ণী-মাঝারে। অভএব শিবলিক স্থাপ এই স্থলে আমার উপরে কর করণা নিপাত। শিবলিঙ্গ এই স্থানে স্থাপহ সাক্ষাত্রী যথাবিধি দেই লিঞ্চ করিয়া পূজন। আমার গৃহেতে কিছু করহ ভব এত তানি বিপ্রবর হরিষ অন্তরে। শিবলি**ল দেই ভানে সংখাপিত করে।** যথাবিধি সেই লিকে করিয়া পূজন। মুনির গৃহেতে কিছু করিল ভোজন रगरे फिन रगरे चारन कति अवसान। প্রাতঃকালে यथाविधि कति गारका থান॥ ঋষির পদেতে করি বিধানে বদন। বিদায় ভাঁহার পাশে করিছা বাহণ॥ আপন আলয়ে যায় দেই বিপ্রবর। আনন্দে পূরিত ভগ্যালী আহি वत ॥ निर्दाक्त निरूप निष्क करतन शूष्ट्रम । ভক্তিভরে निवनिष्क करते বন্দন।। নির্মাণ করেন তথা ইউক-আলয়। খনিলেন পুন্ধরিণী সচ্ছল্প শিবের মন্দির হলো অতি মনোহর। শিবগদা পুরুরিণী অতীব স্থান শুন শুন তার পর আণ্চর্য্য ধটন। কালবলে জীর্ণ হয় শিবনিকে আৰু मिलत क्रांचित जीर्ग रहेशा পिछ्ल। अश रास शास्त्र शास्त्र विक्ष रहेता थ ্কু ের ছুর্গ্য গতি কে বুঝিতে পারে। কালবশে সব হয় কার্ল সব করে। তিয় ইট পড়েছিল সরোবর তীরে। তাহাতে ঘর্ষণ পদ তুমি করেছিল। এই হেন্ত মহাশাপ হয়েছে তোমার। পৈশাতিকী গতি হলো এই ত বিচার

10

WS.

विद्वा भगन केंद्र तिहे महिश्वदेत् । व्यवद्या केंद्र भिया विद्वेदकाशदेत् ॥ ভরুশাখা অবলম্বি কর অবভান। পাপমুক্তি আশা করি রহ সেই স্থান।। ্তি ছমের এতেক বাক্য করিয়া শ্রবণ। ক্লফশর্মা মনে মনে বিয়াদিত হন।। ৰবিলেন অবিলয়ে পিশাচ-আকার। বটরক উদ্দেশেতে হন আগুসার॥ ব্যাদুক্ত খন খন করত্যে ভাড়ন। দৌড়িতে দৌড়িতে বিশ্র করিল গমন॥ অবি-🗱 বিদ্ব উপনীত সেই সরোবরে। বসতি করিল গিয়া বটরকোপরে॥ হায় হায় ক্রিষ্পাতি কে করে বওন। যেই বিপ্র ছিল অতি ধর্মপরায়ণ।। শিবস্থ হরণে জার হলো হেন গতি। কালগতি কে বুঝিবে ওহে মহামতি॥ এইরূপে ভৌক্রর স্বতীত হয়। তার পর ঘটে যাহা শুন মহোদয়॥ মেরপে ক্ষকতি পায় সেই তপোধন। বর্ণন করিব তাহা করহ শ্রবণ।। শিষ্য এক ্রিল ভার নির্ম নামেতে। বিনীত ধর্মজ্ঞ দান্ত বিদিত জগতে॥ করেন শিবলিকের পূজন। শিবের উপরে ভক্তি রাথে সর্বাকণ।। শিবরাত্তি বিদ্যান সেই শিব্য মহামতি। মহাদেবে পূজা করি করিয়া ভকতি॥ মনিরে ্রিকীপ দান করি ভার পর। জাগরণ করি রহে হয়ে ভক্তিপর॥ চতুর্থ ক্রিবৈতে পূ**জা** করি মহেশবে। প্রভাতে পারণ করি বিধি অমুসারে॥ সেই করোবরে শিষ্য করিলেন স্থান। যথাবিধি সন্ধ্যা আদি করে মতিমান॥ প্রাপ্ত অভিমুখে পরে করে করশন। হেনকালে ওন ওন আশ্চর্য্য ঘটন॥ ক্রিকার্য ছিল সেই বটরকোপরে। শিষেরে সম্বোধি কহে স্থগভীর স্বরে॥ ্ৰিয়াৰ অন্ত ভূমি অতি পুণাৰ্থান। শিবভক্ত অতি ভূমি বুদ্ধে বিচক্ষণ॥ সাহ সন্তাষণ কর কণকাল। দৈবগতি ভাগ্যে মম ঘটেছে জঞ্জাল।। এতেক তির তনি দেই শিধাবর। উৎফুল হইয়া চাহে রকের উপর॥ মনে মনে জ্বল করেন চিন্তন। কোথা হতে কেবা বলে এ হেন বচন।। এত ভাবি শিবপদ করিয়া অন্তরে। চাহিলেন ঊর্ল্লদুটে বটরকোপরে॥ ক্ষিলেন কেবা আছ রক্ষের উপর। সম্বোধিলে কেবা মোরে বলহ সত্তর॥ क्रिकारोकः করিয়া এবণ। শিষ্টের সম্বোধি কহে মধুর বচন॥ ভনহ নির্থ ভূমি বচন আমার। আমি তব তারু হই ওঁছে গুণাধার॥ ক্ষেপর্বা সম লাম জামিবে অন্তরে। দৈববশে আছি আমি পিশাচ-আকারে॥ আহি আমি বটশাখা করিয়া আগ্রয়। লভিয়াছি ছুরগতি ওহে মহোদয়॥

শুরুর এতিক বাক্য করিয়া শুরুণ। নির্ঘ বিনয় বাব্যে কহেন তেই । নামশ্রে গুরুবে ভূভ্যং দিবাজ্ঞানদাতা। আমার পর্য গুরু ভূমি মন্ত্রণাতা। বিশ্বশে বিশাহযোনি হলো আপনার। গুরুদের কহ তাহা নিক্টে আমার॥

এতেক বচন শুনি কৃষ্ণার্থা কয়। নির্থ-শুনহ বলি সেই সমুদর॥ খণ্ড এক ছিল এই স্থানে। ধর্ষণ করিয়াছিন্দু তাহাতে চরণে।। পুরুক্তি আছিল হেথা শিবের আলয়। ইউকে নির্শিত তাহা ওচে মহোরস 🕍 কালবশে জীর্ণ হয় শিব-আয়তন। ভগ্ন হয়ে চারিদিকে হয় নিপ্তৰ তাহার খণ্ডিক আদি করিয়া এহণ। অজ্ঞানে করিয়াছিল চরণ ঘর্ষণ 🛍 শিবস্ব হরণ তাঁহে হয়েছে আমার। মহাপাপ জন্মিয়াছে ওছে গুণাধার के সে পাপে পৈশাণী গতি লভিয়াছি আমি। রহিয়াছি বটরকে ওছে গুণমণি 🕷 এখন তোমারে কহি শুনছ বচন। শিবরাত্রি ত্রত তুনি করিলে সাধন 🎼 এই ফল দান তুমি করিয়া আমারে। পাপ হতে মোরে ত্রাণ কর ত্রা করে। বলেছেন ধর্মরাজ আমার সদন। "তোমার নিকটে শিষ্য আসি একজন ॥ শিবরাত্রি ব্রত ফল করিবে প্রদান। তাহাতে পাতক হতে পাবে পরিত্রাণা তাহার আদেশে আমি আশাপথ চেয়ে। এতকাল যাপিতেছি রক্ষের আশ্রস্কেরী ভাগ্যবশৈ তব সহ হলো দরশন। এখন ভোষার পুণ্য কর সমর্পণ॥ পাঞ্ ছতে মুক্ত কর তোমার শুরুরে। অধিক বলিব কিবা তোমার গোচছে IL গুরুর এতেক বাক্য করিয়া প্রবণ। বিদ্যিত ইইয়া রহে নির্ঘ তথন । নিজ-পুণা দান করি গুরুরে তারিতে। বাদনা করিল শিষ্য স্থাপনার চিতে 🖟 নরোবরে স্নানক্রিয়া করিয়া ত্রায়। কুশহত্তে গুরুপাশে ত্রাগতি যায় 🐞 কুশজল হাতে শিষ্য করিয়া এইণ। পুণ্যদান গুরুদেবে করিল एখন 🏗 অমনি ঐতিরুদেব দিব্য দেহ ধরে। নির্থ হেরিয়া তাছা প্রফুল অন্তরে॥ আপনারে কৃতক্ষত্য করিলেন জ্ঞান। কর্যোড়ে শুরু-অত্যে করে অবস্থান ዜ শিবের বিমান আদে দেখিতে দেখিতে। কুফ্রুশর্মা উঠে তাহে হরষিক চিতে ॥ দেখিতে দেখিতে যান শিবের ভবন। প্রমণগণেরা ভারে করছে; পুজন॥ এদিকে নিরঘ হয় আনন্দে মগন। গুরুর চরণে নতি করিয়া তখন ॥ ই আপন আলয়ে যায় হরিদ অন্তরে। বন্ধুগণে সব কথা নিবেদন করে। 🕌 এইরেপে ক্রফুশর্যা ধর্মপরায়ণ। অজ্ঞানে করিয়াছিল শিবস্ব হরণ।। সেই পাপে হলো তার পৈশাচিকী গতি। শিবরাত্রিকলে পুনঃ একতিল স্কাতি ॥, पिन्द्र विघारनट्ड भरत कति आरहार्ग। आनत्म हिन्द्रा (शन किमान-क्रक्सू: অধিক ৰলিব ভূতে কিবা বল আর। শিবরাত্রি ত্রত ফল জগতে প্রচাক্ত 🐗 🦫 . টুরুর প্রসাদে ছয় পাতক-নাশন। মনের বাসনা হয অবশ্যু প্রেণ। শিক্ লোকে নতি হয় ইংগর ফলেতে। শাজের প্রমাণ এই জানিবেক চিতে 🛝 'শৈবৰ হরণেহয় যেরপ ছুর্গড়। শুনিলে সে কথা ভূমি ওছে মহামভি.

শাবিদ কৰা কৰা বলি হে তোমারে। পুণ্যকামী যেই জন এ ভব সংসারে।
শিবিদ কদাচ নাহি করিবে হরণ। হরিলে তুপতি তার কে করে খণ্ডন।।
শিবের ঘাহাজ্য বল কে বলিতে পারে।হেন জন নাহি কেহ জগত-সংসারে॥
শিবের উপরে ভজি রাখে যেই জন। তাহার নিকটে সদা শমন দমন॥
রোগ শোক নাহি আসে তাহার গোচরে। অবহেলে তরে সেই ভবপারাবারে
তাহারে দেখিলে হয় পুণ্যের উদয়। তাহার বদতি স্থল অতি পুণ্যময়॥
তাহারে দেখিতে বাঞ্ছা করে দেবগণ। শিবের সাযুজ্য পায় সেই মহাজান্॥
ভিজ্ঞাসিরাছিলে তুণ্ডে যে সব বিষয়। কহিলাম তব পাশে সেই সমুদয়॥
ভিজ্ঞাসিরাছিলে তুণ্ডে যে সব বিষয়। কহিলাম তব পাশে সেই সমুদয়॥
ভিজ্ঞাসিরাছিলে তুণ্ডে যে সব বিষয়। কহিলাম তব পাশে সেই সমুদয়॥
ভিজ্ঞাসিরাছিলে তুণ্ডে যে সব বিষয়। কহিলাম তব পাশে সেই মহোদয়॥
ভিজ্ঞাসিরাছিলে তুণ্ডে যে সব বিষয়। কথবা একান্তমনে করে অধ্যয়ন
পিশাচযোনির ভয় নাহি তার হয়। নিতাপুখে সদ। থাকে সেই মহোদয়॥
ক্রফার্মা-উপাধ্যান যেই জন পড়ে। অথবা গ্রেণ করে লাদা সহকারে॥
মহাঘোর পাপ যদি করে সেই জন। তথাপি শাতক তার হয় বিমোচন।
শেসনের ভয় তার কভু নাহি রয়। ভববদ্ধ দচে শার নাচিক সংশ্য য়
পুরাণে পুণ্যের কথা পাতক-নালন। থিজ কালা বলে রাখ শিবপদে মন॥

## यहें जिश्य अक्षांत ।

চতুর্দ্দশীত্রতবিধি ও পুরাণফল শর্ণত । বামদেব উবাচ।

চতুর্দশীরতং তুড়ে কথয়ামি শৃণুদ্ব ৩৫।
নর্বপাপছরং পুণ্যং শিবলোকপ্রদায়কং॥
চতুর্দশ্যাং চতুর্দশ্যাং নম্বৎসরসমাছিতঃ।
যঃ কুর্যাাত্বপবাসঞ্চ ত্ন্য পুণ্যকলং শৃণু॥

বামদেব-মুখে শুনি এতেক বচন। আনন্দে মগন হয় তৃতি তলোধন।
পুনশ্চ জিজ্ঞাসা করে সুমধুর করে। নিবেদন ওহে ত্রহ্মন্ তোমার গোচরে।।
শুনিকু তোমার মুখে অপূর্বে কাহিনী। যত শুনি তত ইচ্ছ। বাড়ে মহামুনি।
শিবের মাহাত্ম্য কহ ওহে তপোধন। অন্তর শীতল হোক জুড়াক জাবন্।।
প্রতি শুনি বামদেব কহে পুনরায়। শুন শুন তৃতি ঋষে কহিব তোমায়।।
চতুর্বিশীত ত প্রেবে ব রিব কার্ডন। মহাপুণ্যপ্রদ ইহা পাতক-নাশন।।

ইহার প্রসাদে হয় শিবলোকে গতি। শুন শুন মন দিয়া ওচে মহামতি গ প্রতি চতুর্দশীদিনে যেই সাধুজন। উপবাস করি থাকে ওছে তপোধন । সম্বৎসর এইরূপ যথাবিধি করে। তাহার যতেক পুণ্য কহিব তোঁমারে 🛙 আজন্ম অৰ্জ্ঞিড পাপ যত থাকে তার। হইবে সে নব পাপ নমূলে নংহার॥ পুলপৌলসমন্তি হয়ে সেই জন। ইহকালে পুখভোগ করে সর্বকণ 🛚 অন্তকালে সেই জন শিবলোকে যায়। অশীতি হাজার বর্ষ রহিবে তথায়॥ মাদে মাদে চতুর্দশী দিনে যেই জন। যথাবিধি শিবলিক করিয়া পূজন য় দিবাভাগ উপবাদে সমতীত করে। রাত্রিকালে বিধিমতে ভোজনাদি করে। শিবলোকে যায় সেই ত্যজিয়া জীবন। শিবের বচন ইহা ওতে তপোধন॥ এতেক বচন শুনি তুভি ঋষি কয়। নিবেদন কবি এক ৬.০ মহোদয়॥ চতুর্দশীনক্তবিধি শুনিতে বাসনা। বর্ণন কবিষা মম পুরাভ কামনা। ঘাহার এনাদে গায় কৈলাস ভবন। সেই ধ্বা কুপা করি কহ ভগবন্। এত শুনি বামদেন ক্ষে ধীরে ধীরে। শুন শুন মন দিয়া ক**হিব তোমারে॥** চত্দিশী-নক্তাবিধি করিব বর্ণন। মন দিখা ভান তাহা ওছে তপোধন। চতুদশীরতক্থা শুনিয়া প্রবণে। সেই ব্রুত অফুঠান কর্ছ যতনে॥ চতু-र्फ़नी जिथि यद इदर व्यागमन। त्मरे पिन इद्य निवङ किन्द्रायुग ॥ শিবগঙ্গাজলে স্থান করিবে যতনে। যথাবিধি মন্ত্র পাঠ করিবে বদনে॥ \* দেবপিত্তর্পণাদি করি তার পর। আনন্দে পশিবে শিবমন্দির ভিতর ॥ রবের রুষণ স্পর্শ করি অত।জন। শিবলিঙ্গে তার পার করিবে দর্শন॥ প্রণক্র মন্ত্র পরে উচ্চারি বদনে। স্পর্ণন করিবে শিঙ্গ অতীব যতনে॥ মথাশক্তি গন পুষ্প ইত্যাদি অর্পিয়ে। অর্চনা করিবে লিক্ষে উক্তিযুত হয়ে। বিবিধ নৈবেদ্য আদি করিবে প্রদান। নতশিরে অই-অঙ্গে করিবে প্রণাম ह ক্লতাঞ্জলি হয়ে পরে শিবেব অগ্রেতে। পড়িবে বিহিত মন্ত্র ভাক্তিযুত।চতে॥ 🛊

অর্থাং হে শিবগঙ্গে। আমি তোমাকে নমহার করি, তুমি আমার সক্ষণাণ দিদরিত কর। আমি ঘুদীয় সলিলে সাম করিতেছি, আমাকে শিবলোক প্রদান কর।

<sup>\*</sup> মন্ত্র বংগ-----শিধগান্তে নম্প্রভাণ সর্কাপাপং ব্যপোহতু।
সানং করোমি তাভোয়ে শিশলোক প্রথক্ত মে॥

<sup>়</sup> শুর যথা - — চড়র্দ্দশীনক্তমদাকরিয়ামি মহেশুর। সংস্থান তথ্যকং দেখি শিবলোক্ষয়তমং॥

অর্থাৎ বে মহেশ্বর: আমি অদ্যাত চ্ছল্পীএত করিব, আমাকে তাহার সম্পূর্ণ কল প্রদান কর, আমাকে অনুষ্ঠাম শিবলোক দানু কর্

তার পর পুনরায় করিকে প্রণাম। পঞ্চাকর মন্ত্র পরে জপিবে ধীমান্।। অপিবে সহত্র বার এই ত নিয়ম। আসিবে তাছার পর আপন ভবন।। ব্রহ্মচর্যপ্রায়ণ হয়ে তার পরে। শিবশুণ গান ব্রতী করিবে লাদরে॥ ভক্তিভরে পুরাণাদি করিবে পঠন। একান্ত অন্তরে কিন্তা করিবে প্রবণ।। শিবকথা আন্দোলনে হরিষ অন্তরে। কাটাইবে দিবাভাগ পুভকলেবরে ॥ সন্ধ্যাকালে যথাবিধি করিবেক স্থান। প্লাত্রিকালে মহাদেবে পুজিবে ধীমান্। পৃজিতে হইবে শিবে শক্তি অনুসারে। গন্ধ পুপ ধুপ দীপ আদি উপচারে॥ ষথাবিধি শিবপুজা করিয়া সাধন। মৃতাক্ত শাল্যর শিবে করিবে অর্পণ। তাগ শের নীরাজনা করিবে যতনে। যেমন আছেয়ে বিধি ওচে মহামুদ্রে॥ শৈব লাগ্নি ঘথাবিধি করিয়া স্থাপন। অফোত্তর শত থোম করিবে সাধন।। অশক কান। পি হয় আহাতি অপিতে। জপিবেক শিবমন্ত্র ঐকান্তিক চিঁতে।। পঞ্চাকর শিবীমন্ত্র করিবে জপন। আছতির চতুগুণ এইত নিয়ম। তার পর বিপ্রার্গণে ভোজন করায়ে। আপনি খাইবে শেসে একাত ঋদয়ে।। **রাত্রিকালে স্থিরাতলে কুশের শ্যা**য়। শ্যুন করিবে ত্রকী কহিন্দু োনাস।। **क्रिनंभक्त कर्मनदात कतिर्व (ल्लाशन) नाना**वित्र विक्रूमण कतिरन्धात्रण। **এরপ বিধানে। ত্রত যেই জন করে। তাহার পুণ্যের কথা কে বলিতে পারে।** যাবত পাতক তার হয় বিনাশন। অবশ্য লভয়ে সেই স্থরূপ যৌবন।। **পিতৃগণ যদি <sup>প</sup>থাকে অধোগত** তার। অবশ্য হইবে মুক্ত শাম্মের বিচার।। শেতবর্ণ রফ', মুক্ত বিমানে চড়িয়ে। পিতৃগণ যায় স্বর্গে দানক হৃদয়ে॥ পিতৃগণ, সহ ত্রতী গিয়া শিবপুরে। বহুকাল মনমুখে নিংসতি করে।। <sup>মুল</sup>্রেল কামনা করে যেই কোন জন। এই ত্রত সেই জন করিবে সাধন।। আলা যাম শেষ যাম করিয়া বর্জন। মধ্য দুই যামে হয় নিশা নিরপণ।। নিশাকালে ত্রত যদি করয়ে সাধন। রাক্ষ্স যোনিতে সেই লভারে জনন।। পঞ্চদশ বর্ষ রত্থে দেরপ প্রকারে। শাক্ষেন বিধান এই কহিন্ম ভোমারে।। সন্ধাকাল সন্তীত হলে তার পর। করিবেক এতচ্চা এবে বিজ্ঞাবন।। এই ত্রত যেই জন করমে সাধন। তাহার পুণ্যের কথা কি করি ,বর্ণন। দেবগণ বাঞ্চা করে তাহারে হেরিতে। তাহার সমান কেবা আছরে ধরাতে॥ কৈলাদেতে প্রমথের। ছরিব অন্তরে। এই এতং আচরণ স্যত্নে :मानाविश छेशहारत कतरत शुक्रन। (महे कटल तटह जाता दिकन ততুর্দ্দশী নক্তবিধি কহিছ তোমারে। ইহার মাহাত্ম্য বল কে 👈

ধাপ ধ্বংস হয় প্রসাদে ইহার। শিবলোকপ্রদ ইহা শান্তের বিচার॥
তভরে যেই জন হয়ে একমন। প্রবণ করয়ে নক্তবিধি বিবরণ॥ চতুদ্দশীফলিংসেই জন পায়। শিবের আদেশ এই কহিন্ম ভোমায়॥ সর্বা পূর্ণ হর করিলে প্রবণ। শিবপ্রিয় এই এত ওহে তপোধন॥

এত বলি বামদেব তুণ্ডি ঋষিবরে। কহিলেন মিটভাষে সপোষন করে॥ াসিয়াছিলে যাহা ওহে মহাজ্মন। সকলি তোমার পাশে করিল কীৰ্তন । ণ বলিয়াছিল ব্যাস মহামতি। বলিনু তোমার পাশে সে সব ভারতী ॥ পুরাণ স্থার নাহি কোন স্থান। সর্বশ্রেষ্ঠ ওতে গবে এ শিবপুরাণ॥ র মাহাজ্য যাহা আছুয়ে বর্ণিত। মহাপুণ্যপ্রদ ইহা জানিবে নিশ্চিত। কামনা করে ঘেই সব জন। একমনে এ পুরাণ করিবে প্রণ। ৰে একান্ত চিতে ভক্তি সহকারে। সন্তর রাখিবে সদা শিবের উপুরে॥ া নাহিক আর শিবের স্থান। তাঁহার ক্লপায় নাধু পায় **যোক্ধাম॥** া উপরে তুট দেব পঞ্চানন। কি ভয় তাহার আর ওহে তপোধন॥ দমন থাকে তাহার গোচরে। অবহেলে তরে সেই ভব**পারাবারে॥** বপুরাণ এই করিকু কীর্তুন। পাপহর পুণ্যপ্রদ যশোবিবর্দ্ধন॥ ইহার ালোক বছধন পার। মহাপাপ ধ্ংস হয় ইহার ক্লপায়॥ যেই জন ভরে করে অধ্যয়ন। অথবা একান্তমনে করয়ে প্রবণ্॥ পাতক া দেহে কভু নাহি রয়। ভববন্ধ ঘুচে তার নাহিক সংশয়। অফৌত্তর র যেই জন পড়ে। অথবা প্রবণ করে ভক্তি সংকারে॥ অশ্বমেধ-ার সেই মহামতি। নাহিক সন্দেহ ইপে শিবের ভারতী॥ ঐশিব-পাঠ প্রত্যহ করিবে। অক্ষেতে শ্লোক একু অবণ্য পড়িবে॥ নতুবা যাবে কেবল বিফল। পদে পদে হবে ভার কত অমকল।। শৈব গাণপত্য বৈষ্ণবাদি করি। যত কেই আছে এই জগত ভিতরি॥ র প্রিয়তম ঐশিবপুরাণ। সর্কবাদী-অভিমত শাস্ত্রের বিধান। যোগ বলি সবে জানিবে ইহারে। অধ্যাত্মজ্ঞানদ ইহা শান্তের বিচারে াক বিপ্রদার। ইহা অধ্যয়ন। অনুত্রম পুণ্য তাহে হবে উপাৰ্জন।। अन हेश छनित्व खवल ।कालाकाल वित्वहनाना कतित्व गत्न ॥ खनित्छ নাহি করে যেই জন। শিবভক্তিহীন কিন্দা যেই নরাধ্য ॥ বিষ্ণুতে লেভেদ যেই জন করে। কভু না পড়িবে ইহা তাহার গোচরে॥ ু শান্ত শ্রীশবপুরাণ। শিবের পর্ম প্রেয় খ্যাঙি সর্বহান।। • . ্ন নাহি কিছু আর.। এ হেতু রহৎ নাম খান্তের বিচার १

स्थाकष्टरम चित्रवना करत्र देवशात्रन। व्यूक्तिक मध्येन स्मारमत्र कात्रन ॥ বিশুদ্ধ করিয়া ইহা লিখিয়া যতনে। যথাবিধি পূজা করি শাস্থের নিয়মে॥ যে জন গুত্ততে ইছ। কররে স্থাপন। মনোবাঞ্চা পূর্ণ তার করে পর্কানন॥ পুণাদিনে পর্বাদিনে উৎসবসময়ে। করিবেক অধ্যয়ন একান্ত ঋদয়ে॥ আদ্ধনালে এ পুরাণ করিবে পঠন। তাহে পরিতৃষ্ট হবে যত পিতৃগণ॥ প্রদাতীরে পুণ্যতীর্থে শিবের মন্দিরে। বিফুগৃহে শক্তিগৃহে সাধুর গোচরে ॥ এই সব ছামে ইহা করিবে পঠন। অথবা ভকতিভারে করিবে এবণ।। **জ্রীশিবপুরাণ** পাঠ ঘেই স্থানে হয়। পুণাক্ষেত্র সেই স্থান জানিবে নিশ্চয়॥ পাঠকালে অশু কথা কহে যেই জন। ত্রন্মহত্যা পাপ তারে করে আক্রমণ।। মুখাবিধি প্রায়ণ্ডিত যদি দেই করে। তবে মহাপাপ হতে তরিবারে পরির॥ ত্বসার অদীম এই দংদার-দাগর। ইহারে তরিতে ইচ্ছা করে ঘেই শ্র। পড়িবে সৈ জন এই ঐ শিবপুরাণ। শিবের প্রসাদে সেই পাবে মোক্ষণাম॥ ু পুতার্থীর পুত্র হয় ইহার প্রদাদে। ধনাথা লভয়ে ধন থাকিয়া জগতে॥ বিদ্যাথী যদ্যপি ইহা করে অধ্যয়ন। সর্কণাত্তে স্থাতিত হয় সেই জন॥ কবিত্ব শক্তি জন্মে ইহার রূপায়। যুক্তিকামী শিবগদে বিশানতা পায। তুর্গমে প্রান্তরে কিন্তা গছন কাননে। রাজন্বারে সভতেতে অথবা অণানে। शक्तिमार्स मरश्रमेरत কবিয়া করণ। জীশিবপুরাণ পাঠ করে থেই জন। সম্পূর্ণ অথবা অর্দ্ধ করে অধায়ন। কিবা পড়ে একমার স্লোক মনোরম। ঘতেক বিপদ তার দুরীভূত হয়। তাহারে করেন রখা শিব দয়। যা ভবৰদ্ধ কাটিবারে যদি থাকে মন। একান্ত অন্তরে লছ শিবেরে শরণ।। তিনি গতি তিনি মুক্তি ভ্বপারাবারে।ভবের কাণ্ডারী শিব জানিবে অন্তরে ভাঁহা হতে সৃষ্টি হিতি হতেছে সংহার। ত্রিগুণ-অতীত তিনি সার হতে সাব কভু নিরাকার তিনি সাকার কখন। তাঁহার নিগুত তত্ত্ব ব্রে কোন্জন॥ छोटे वटन चिक्र काली माधूकनगर। मिंठ ताथ मना मरव मिरवत हतर।॥ শিবপদ হাদিপদে করিয়া ধারণ। ঐশিবপুরাণ এই করি সমাপ্র।। জয় জয় देल সবে হরিষে বদনে। মর্জাও মজাও মন জীশিবপুরাণে।

সম্পূর্ণ :